सम्भाजी

सम्भाजी

(ऐतिहासिक उपन्यास)

सम्भाजी

विश्वास पाटील

अनुवाद

डॉ. रामजी तिवारी

भारतीय ज्ञानपीठ

राष्ट्रभारती
लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक 1035

ग्रन्थमाला सम्पादक
रवीन्द्र कालिया

सह सम्पादक
गुलाबचन्द्र जैन

ISBN 978-81-263-3091-1

प्रकाशक :
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड
नयी दिल्ली 110 003

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट, दिल्ली 110032

आवरण चित्र : राधेश्याम अग्रवाल
आवरण-सज्जा : ज्ञानपीठ कला प्रभाग

SAMBHAJI
(Novel)
by Vishwas Patil
Translated by : Dr. Ramji Tiwari

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road
New Delhi-110 003

अनुक्रम

खंड-एक

खंड-दो

खंड-तीन

पात्र-परिचय

नाम	उपाधि
सम्भाजी राजा	शिवपुत्र, हिन्दवी स्वराज के दूसरे छत्रपति
येसूबाई	सम्भाजी राजा की धर्मपत्नी
शिवाजी महाराज	हिन्दवी स्वराज के संस्थापक
पुतलाबाई	शिवाजी महाराज की धर्मपत्नी
राजाराम साहब	सम्भाजी राजा के सौतेले भाई
सोयराबाई	राजाराम साहब की माता
एकोजी उर्फ व्यंकोजी	शिवाजी महाराज के सौतेले भाई
दुर्गाबाई	सम्भाजी राजा की धर्मपत्नी
राणूबाई	सम्भाजी राजा की बहन
हरजीराजा महाडिक	सम्भाजी राजा के बहनोई
गणोजी शिर्के	सम्भाजी राजा के साले
अम्बिकाबाई	हरजी राजा की धर्मपत्नी
राजकुँवर	गणोजी शिर्के की पत्नी
महादजी निम्बालकर	सम्भाजी राजा के बहनोई
सकवराबाई उर्फ सखूबाई	महादजी निम्बालकर की धर्म पत्नी
पिलाजी शिर्के	येसूबाई के पिता
हिरोजी फर्जन्द	शहाजी राजा के अनौरस पुत्र
हंबीरराव मोहिते	मराठों के प्रधान सेनापति
बालाजी आवजी	स्वराज्य के मन्त्री
खंडो बल्लाल	बालाजी आवजी का पुत्र
मोरोपन्त पिंगले	स्वराज्य के पेशवा
केसो त्रिमल पिंगले	मोरोपन्त के छोटे भाई
निलोपन्त पिंगले	मोरोपन्त पिंगले के पुत्र
कवि कलश	छन्दोगामात्य, सम्भाजी राजा के प्रमुख
प्रहलाद निराजी	सहायक
अण्णाजी दत्तो	न्यायाधीश
सोमाजी दत्तो	सुरनवीस
काज़ी हैदर	अण्णाजी दत्तो के भाई
कोंडाजी फर्जन्द	न्यायाधीश, शिवाजी महाराज के मुंशी
येसाजी गंभीरराव	मराठा सरदार
येसाजी कंक	पुर्तगालियों के दरबार में मराठा वकील
कृष्णाजी कंक	मराठा सरदार
जोत्याजी केसकर	येसाजी कंक का पुत्र
दौलतखान	मराठा सरदार सम्भाजी के बाल मित्र

मराठा नासना क आधकारा	इखलासखान
दादजी प्रभु देशपांडे	मराठा सरदार
रायप्पा महार	सम्भाजी राजा का बाल मित्र
मियाँखान	मुसलमानी उमराव
भायनाक भंडारी	मराठी नौसेना के अधिकारी
जेताजी काटकर	मराठा सरदार
बासप्पा नाइक	इक्केरी के जागीरदार
दादजी काकडे	मराठा सरदार
म्हालोजी घोड़पड़े	मराठों के सेनापति
संताजी घोड़पड़े	म्हालोजी घोड़पड़े के पुत्र
धनाजी जाधव	मराठा सरदार
दुर्गादास राठौड	राजपूत सरदार
औरंगजेब	हिन्दुस्तान का बादशाह
उदयपुरी	औरंगजेब की बेगम
मुअज्जम	औरंगजेब का बड़ा शहजादा
असदखान	औरंगजेब का वजीर, चाचा
आज्जम (आजम)	औरंगजेब का छोटा शहजादा
जुल्फिकारखान	असदखान का पुत्र
अकबर	औरंगजेब का शहजादा
अनित उन्निसा	औरंगजेब की छोटी शहजादी
हसन अली खान	मुगल सरदार
दिलेरखान	औरंगजेब का सरदार
शहाबुद्दीनखान	मुगल सरदार
बहादुरखान कोकल्लाश	औरंगजेब का दूधभाई
काकरखान	मुगल सरदार
रूहुल्लाखान	औरंगजेब का बक्षी
सिद्दी कासम	जंजीरे का हब्शी
सिद्दी खैर्यत	जंजीरे का हब्शी
कांट दी आल्हांर	हिन्दुस्तान के लिए पुर्तगाली वाइसराय
चिक्कदेव राजा	मैसूर का राजा
केजविन	अंग्रेज गवनर
अबुल हसन तानाशाह	गोलकुंडा का कुतुबशाह
यादण्णा पंडित	कुतुबशाह का प्रधान
सिकन्दर आदिलशाह	बीजापुर का आदिलशाह
सर्जाखान	आदिलशाह का सरदार
मुकर्रबखान	आदिलशाह का सरदार
	मुकर्रबखान का पुत्र

खंड-एक

आफ़त

एक

आधी रात का समय। हड्डी कँपा देने वाली शीत लहर चल रही थी। हजार कोशिश करने पर भी आज गोदू को नींद नहीं आ रही थी। घर के पास पुराने पीपल के पेड़ की डालों और समीप के बाँसवन से वायु के वेग का पता चल रहा था। पीपल के छोटे-छोटे फल टप-टप की आवाज करते खपरैल की छत पर गिर रहे थे। गोदू ने करवट बदलने के लिए गर्दन घुमाई। उसकी कलाई पर हरी चूड़ियाँ चमक रही थीं। अभी उतारी नहीं गयी थीं (मराठी प्रथा के अनुसार शादी के अवसर पर पहनाई गयी चूड़ियाँ 17 दिन, 1 वर्ष या 12 महीना बाद उतारी जाती हैं और दूसरी चूड़ियाँ पहनाई जाती हैं)। अभी उसकी शादी हुए एक महीना भी पूरा नहीं हुआ था। संध्या समय की लालिमा ढल जाने के बाद मन्दिर के बाहर सासू माँ का बिछौना लगाकर गोदू अपने कमरे में आ जाती थी। अपने कमरे में लेटते ही गोदू को अपने पति के दबे पाँव आने की आहट सुनाई देती थी।

आज की रात गोदू को कुछ अजीब-सी लग रही थी। मन्दिर के दीये कब के बुझ चुके थे। दूसरी ओर से सासू माँ के खर्राटों की आवाज आ रही थी। रात बहुत हो चुकी थी। किन्तु कमरे के बाहर उसके पति निवासराव का कहीं अता-पता न था। हाँ, तबेले में जानवर और दड़बे में मुर्गे-मुर्गियाँ अभी भी जाग रहे थे।

आज की रात गोदू को बहुत अजीब, उदास और भयंकर लग रही थी।

बीच ही में वह बिस्तर से उठी। बरामदे को पार करके उसने धीरे-से आँगन की ओर आँख घुमाई। मुख्य दरवाजे के भीतरी हिस्से में एक तेज मशाल जल रही थी। गोदू के ससुर त्र्यम्बकराव चिन्तित मुद्रा में दोनो पैरों पर बैठे थे। उनके ठीक सामने निवासराव कुछ खोये-खोये से अपने पिताजी को एकटक देख रहे थे। उस मन्त्रणा में भयानक चेहरे वाले तीन व्यक्ति और थे जिन्हें गोदू नहीं पहचानती थी। त्र्यम्बकराव बारह गाँव के देशपांडे अर्थात् अधिकारी थे। गोदू ने सोचा देशपांडे नाम इसी पद के कारण बना होगा। गोदू ने इस मुद्दे को टालने की कोशिश की।

वैसे गोदू का मायका महाड़ के पास एक बहुत पिछड़े हुए गाँव में था, किन्तु गोदू का व्यावहारिक ज्ञान बहुत अच्छा था। उसके मौसा छत्रपति शिवाजी महाराज के अष्ट प्रधान मंडल में सुरनवीस थे। उनका नाम था अण्णाजी दत्तो प्रभुणीकर। प्रभुणीकर रायगढ़ किले के नीचे पाचाड़ गाँव में रहते थे। गोदू अनेक बार अपने मौसा-मौसी के पास पाचाड़ गाँव जाती थी। शिवाजी के राज्य में क्या चल रहा है, किन नयी लड़ाइयों की योजनाएँ बन रही हैं आदि बातें उसके कानों तक आती थीं। छत्रपति शिवराय पर गोदू की अपार भक्ति थी। वह उन्हें अपने प्राणों से भी अधिक महत्त्व देती थी। आसमान के सूर्य, चाँद और शिवाजी महाराज उसे प्राणों से भी अधिक प्रिय थे।

कुछ वर्ष पहले गोदू कोंकण के एक छोटे-से गाँव बिरवाड़ी में कुछ दिन रहने के लिए गयी थी। एक शाम को उसके रिश्तेदार के आँगन में कुछ गपशप चल रही थी तभी एक भयानक खबर वहाँ पहुँची। खबर थी कि पूना के समीप कोढाणा किले को जीतते-जीतते सरदार तानाजी भालुसरे युद्ध में शहीद हो गये। शिवाजी ने किला तो जीत लिया था किन्तु सिंह को खो दिया था। यह हृदय विदारक समाचार सुनकर सभी व्यथित हो गये। जैसे-जैसे यह खबर गली-कूचों में फैली चारों ओर दु:ख का ज्वार आ गया।

घाघरा-चोली पहने गोदू अपने छोटे-छोटे कानों से यह सब सुन रही थी।

"बहादुर तानाजी का शव पालकी में रखा गया है। डोली किले के दरवाजे पर आ रही है। डोली स्वयं शिवाजी महाराज ने अपने कन्धे पर उठाई है।"

इन समाचारों को सुनते-सुनते ही कुछ नवयुवक उत्साहित होकर खड़े हो गये। उन्होंने डोली के दर्शन का निश्चय किया। फिर क्या था। युवकों की टोली बन्दरों की तरह छलाँग लगाते, पर्वत घाटियों को पार करते, जंगलों को चीरते हुए कोढाणा की ओर बढ़ने लगी। एक घंटे के बाद जंगल से गुजरते बच्चों ने अनुभव किया कि उनके पीछे घास फूस और झाड़ियों के बीच से एक हल्की-सी आवाज आ रही थी। हिरनी की तेजी से कोई उनका पीछा कर रहा है। उनके पीछे-पीछे कोई दौड़ता हुआ आ रहा है। सभी पीछे मुड़कर देखने लगे। सभी ने देखा, आठ साल की गोदू उनके पीछे-पीछे दौड़ती चली आ रही है।

इस अविस्मरणीय शव यात्रा को गोदू कभी भी भूलने वाली नहीं थी। तानाजी का गिरना किसी अपराजेय किले के बुर्ज के गिर जाने जैसा था। वस्तुत: तानाजी नाम का शिवाजी महाराज का हाथ गिर गया था। शिवाजी महाराज के तेजस्वी मुखमंडल की कांति पूरी तरह से लुप्त हो गयी थी। चारों ओर सूतक की छाया मँडरा रही थी। जिसे देखना भी मुश्किल हो रहा था। आसपास के गाँवों से लोगों के झुंड के झुंड आकर इकट्ठे हो रहे थे, पालकी रोकी गयी। तानाजी के मुख

पर से कफन हटाया गया तो तानाजी का फूल जैसा मुरझाया चेहरा दिखाई पड़ा। शिवाजी महाराज जैसा धैर्यवान भी विह्वल हो उठा। पालकी के साथ जाने वाली दो-तीन हजार लोगों की भीड़, नदी के बाढ़ जैसा रोर-शोर करता उनका वेग, बलिदान के भाव से रोमांचित होने वाली बाँहें, जन समूह का महासागर, वेदनाबोध की तीव्रता, छिलते पाँव आदि आज भी गोदू के मन पर यथावत अंकित था।

गोदू फिर उठी और दरवाजे पर आकर खड़ी हो गयी। पहले से चलती हुई मन्त्रणा अभी समाप्त नहीं हुई थी। बल्कि जाड़े के दिनों में जिस तरह अलाव को चारों और घेरकर बैठते हैं उसी प्रकार एक दूसरे से सटे हुए बैठे थे। बातें बहुत मन्द स्वर में हो रही थीं। लोग बहुत धीमी आवाज में बोल रहे थे। उनके श्वासोच्छ्वास में षड्यन्त्र की तीव्र धार चढ़ी हुई थी। गोदू का ससुर एकाएक हा-हा करके हँसा। अपनी बिल्ली जैसी आँखें गोल-गोल घुमाते हुए व्यंग्य के स्वर में बोला, "बस! सिर्फ कल दोपहर होने की देर है। कल रायगढ़ की रंगपंचमी भोसले खानदान की होली बनेगी। सवेरे नौ बजे शिवाजी महाराज की सवारी के किले के होली माल पर आने की देर है। बाघ दरवाजे पर जो तोप है उसको पलीता लगाएँगे। रंगपंचमी का रंग उड़ाएँगे और रंग की आड़ में उन्मत्त शिवाजी की भोसले को भी उड़ा देंगे।"

"यदि कुछ गड़बड़ हो गयी तो?" आशंका भरे स्वर में भयभीत निवासराव ने पूछा।

"बहादुरगढ़ की छावनी जाकर हमने इस षड्यन्त्र की सारी बात खान साहब से कर ली है। त्योहार देखने के बहाने बारह लड़ाकू जवान पहले ही रायगढ़ पर पहुँच चुके हैं। शिवाजी के समाप्त होने का संकेत जैसे ही तोप द्वारा दिया जाएगा, पास की झाड़ियों में छिपी यवन सेना अपनी तोपों के साथ तीव्र गति से बाहर निकल आएगी और रायगढ़ के साथ मराठों की नाक काटकर रख देगी। षड्यन्त्र की यह बात इतनी स्पष्टता से बताते हुए त्र्यम्बकराव की आँखें भयानक दिखाई दे रही थीं।

त्र्यम्बकराव ने अपने दुपट्टे को प्रसन्नता से झटका। अपनी लम्बी चोटी की गाँठ बाँधी और सामने पसरे अँधेरे को विजेता की मुद्रा से देखने लगा।

गोदू का गला सूख गया था। वह इस भयंकर षड्यन्त्र की कल्पना करते ही घबरा गयी। वह अपनी साँस से भी भयभीत होने लगी। इसलिए उसने अपना आँचल मुँह में भर लिया। वह तेजी से घर के पीछे के दरवाजे की ओर भागी।

बाहर की तेज हवा गोदू के मस्तिष्क में भर गयी। उसके पैरों की गति तेज हो गयी। उसने तबेले में जाकर ऊपर टँगी हुई घोड़े की काठी निकाल ली। तबेले में बँधे साठ-सत्तर घोड़ों में से पंछी नामक तेज गति वाले घोड़े को चुना। यह पंखों वाले पंछी की भाँति फर्राटे से दौड़ने वाला घोड़ा था। वह झटपट छलाँग लगाकर

घोड़े पर बैठ गयी। उसने घोड़े को एड़ लगाकर लगाम को पीछे की ओर खींचा। रात की ठंडी हवा और गहरे अँधेरे में उसका घोड़ा रायगढ़ की ओर दौड़ने लगा।

गोदू मानो हवा पर सवार हो गयी थी। रास्ते में पड़ने वाले पेड़ों, नदी, नालों, झरनों आदि की उसने कोई चिन्ता नहीं की रिकाब में दृढ़तापूर्वक पैर टिकाए, पीठ को झुकाकर, पेट के बल पर झुककर, रिकाब के आधार पर वह आधी खड़ी हो जाती थी। 'चल मेरे बहादुर घोड़े, और तेज दौड़ो' कहकर चिल्ला उठती थी। घोड़े के मुँह से झाग निकलने लगी थी और छींटे उसके मुख पर पड़ रहे थे।

देखते-देखते गोदू पाचाड़ गाँव की सीमा पर जा पहुँची। रात समाप्त हो रही थी। पहाड़ की नुकीली चोटियाँ, किले का पहरे वाला मचान, हिरकणी बुर्ज, कीकण दिवे का ऊँचा पहाड़, सभी पहाड़ों की कतारें, पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ अँधेरे में से अपना सिर ऊपर उठा रहे थे।

"बापू। थोड़ी देर पहले अपने घर के पिछवाड़े किसी जानवर के पाँव की आहट सुनाई पड़ी थी। देखिए।" निवासराव ने अपनी आशंका व्यक्त की।

तीनों घबरा गये। आशंका के बिच्छू ने हृदय पर डंक मार दिया। बाड़े के पिछवाड़े कुछ गड़बड़ी हुई । सभी लोग जल्दी से अपनी मन्त्रणा वार्ता छोड़कर उठ गये और घर के पिछवाड़े की ओर दौड़े। पिछवाड़े का दरवाजा खुला था। तबेले का दरवाजा पूरा खुला था और सबसे आश्चर्य की बात यह भी थी कि पंछी नाम का सबसे तेज और तगड़ा घोड़ा अपनी जगह पर नहीं था। पत्तों की आवाज में बोलने वाले पीपल के पेड़ के नीचे सभी डरे हुए खड़े थे।

इतने में ही दहाड़ मारकर रोते हुए निवासराव भीतर से बाहर आये।

"बापू धोखा हुआ धोखा। भाग गयी आपकी बहू भाग गयी।"

"क्या मतलब है रे।"

"मैं सौगन्ध लेकर कहता हूँ। वह छिनाल, रंडी शिवाजी की भक्त है। वही घोड़ा लेकर रायगढ़ की ओर भागी होगी, अपने षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करने के लिए।" पिता पुत्र के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। छोटी दाढ़ी और भयानक चेहरे वाले मेहमान भी डर गये। एक के बाद एक पाँच-छह घोड़े तबेले से बाहर निकाले गये। सभी लोग वायुवेग से रायगढ़ की ओर घोड़े दौड़ाने लगे।

अन्त में चितदरवाजे की ऊपरी कमान दिखाई पड़ी। हाँफती हुई गोदू ने अपना घोड़ा रोक दिया। वह पसीने से तरबतर हो रही थी। घोड़ा भी थककर चूर हो गया था। घोड़े के मुँह से झाग का प्रवाह चालू था। हाथ में लिये भाले की लकड़ी के सहारे वह सीधी हुई और नट-कला दिखाने वाली किसी बाजीगर की कन्या की भाँति आगे की ओर उछलकर नीचे आ गयी। बिना एक क्षण विलम्ब किये वह तीर की तरह दरवाजे की ओर दौड़ी। दरवाजे को जोर-जोर से धक्का मारते हुए वह

ऊँची आवाज में चिल्लाने लगी, "अरे धोखा हुआ है धोखा। दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो।"

गोदू की चीख अँधेरे को चीरती चली गयी। रातभर जागकर पहरा देनेवाले दो-तीन पहरेदार दरवाजे की ड्योढ़ी तक आये। मशाल के लाल प्रकाश में उन्होंने नीचे खड़ी गोदू को देखा। गोदू के शरीर से लिपटी साड़ी फट गयी थी। वह पूरा जोर लगाकर चिल्लाई, विह्वल होकर बोली, "पहरेदार चाचा दरवाजा खोलो न, दरवाजा खोलो। मुझे महाराज से अविलम्ब मिलना है। अभी का अभी।"

"किलेदार सुबह सात बजे चाभियों का गुच्छा लेकर आएँगे। दरवाजा तभी खुलेगा। उसके पहले नहीं।" पहरेदार की रूखी आवाज आयी।

"मगर तब तक धोखा हो जाएगा। महाराज की जान को खतरा है। दया करो। मुझे अन्दर आने दो।"

पहरेदार हँस पड़े। रात-बिरात ऐसे बहुत से पागल और भूत-प्रेत दरवाजे के आसपास घूमते रहते हैं। ऐसा लोग कहते हैं।

गोदू पर पागलपन सवार हो गया। वह किसी भी तरह इस भयानक खबर को किले पर पहुँचाना चाहती थी। उसने पहरेदारों से बहुत विनती की, जोर-जोर से चिल्लायी। जब प्रार्थना करके थक गयी तब उसने अनुभव किया कि वहाँ रुककर समय बिताने का कोई उपयोग नहीं था।

गोदू वहाँ से धीरे-धीरे हट गयी। करौदों की झाड़ियों के बीच से वह चितदरवाजे से पश्चिम की ओर भूत की तरह सरकने लगी। माँ की गोद से ही वह हिरकणी की बहादुरी की कथा सुनती आयी। एक बार सन्ध्या समय तोप से दी गयी सूचना के अनुसार किले के दरवाजे बन्द हो गये। परिणाम यह हुआ कि दूध देने के लिए किले के अन्दर आयी हिरकणी अन्दर ही फँस गयी। किले के नीचे ही उसका गाँव था। उसका दूध पीता बच्चा घर में अकेला था। अपने बच्चे को दूध पिलाने के लिए उसकी ममता व्याकुल हो उठी। उसी भावावेश में वह रात के घने अँधेरे में किले की खतरनाक ढलान बहादुरी से उतर कर नीचे आ गयी थी। बच्चे की भूख के कारण एक माँ ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। यहाँ तो एक बहादुर महायोद्धा की जान को खतरा पैदा हो गया है। ऐसा योद्धा जिससे अस्तित्व से यहाँ के पत्थरों को बंजर जमीन को स्वराज्य की रोली लगाई गयी है। जिस शिवाजी के कारण गाँव-गाँव से, जंगल-जंगल सियार भाग गये थे। गरीब लोगों की बहू-बेटियों की इज्जत बची थी, उसी शिवाजी महाराज, मराठों के पंचप्राण की जान संकट में थी। इसके लिए तो कुछ-न कुछ करना ही चाहिए था।

कोढाणा जीतने वाली तानाजी की यशवन्ती गोह की भाँति गोदू की जान तिलमिलाने लगी। वह झाड़ियों से भरे घने जंगल को पार करते हुए ऊपर चढ़ने के

लिए किसी गुप्त रास्ते की तलाश कर रही थी। उसे अधिक देर तक खोज नहीं करनी पड़ी। वर्षा के पानी को बाहर निकालने के लिए पुसाटी बुर्ज के पास एक पतली-सी सुराख बनी हुई थी। वह सुराख उस समय खाली थी। गोदू ने बिना एक क्षण गँवाए, बिना कुछ आगा-पीछा सोचे उस सुराख में अपना सिर डाल दिया और अगल-बगल के पत्थरों पर अपनी कुहनी टिकाते सरकने लगी।

रायगढ़ किले पर अँधेरा छँट रहा था। भोर से ही रंगपंचमी उत्सव की तैयारी आरम्भ हो चुकी थी। किले के ऊपर के राजमार्ग फूल मालाओं और तोरणों से सजाये गये थे। शिवाजी महाराज के प्रासाद के सामने शहनाई बज रही थी। नये-नये झुल्ल डालकर और मस्तक पर नये-नये आभूषणों को पहनाकर हाथियों को सजाया जा रहा था। साधु, संन्यासी, छोटे बच्चे आदि सभी तरह-तरह के कपड़े पहन कर इधर-उधर घूम रहे थे। कमर में तलवार लटकाए, हाथ में भाला-बर्छी लिये पहरेदार महाराज के दरवाजे पर तत्परता से पहरा दे रहे थे।

इसी बीच घबराई हुई गोदू वहाँ दौड़ती हुई आयी। वह पहरेदारों से हाथ पैर जोड़ने लगी, अधीर होकर प्रार्थना करने लगी। पहरेदारों के बार-बार रोकने पर भी वह वहाँ से हटी नहीं। पहरेदार जोर से चिल्लाए, "आखिर क्यों मिलना चाहती है तू महाराज से?"

इसी समय दूसरी ओर से घोड़ों की टापों की तेज आवाज सुनाई पड़ी। सर्जा नामक एक ऊँचे और बादल के रंग वाले घोड़े पर एक बहुत सुन्दर राजकुमार बैठा था। उसकी पगड़ी में हरे रंग के रत्नों की झालर लगी थी। उसका रंग हल्का अरुणाभ, प्रशस्त भाल, गरूड़ जैसी नाक, काली गहरी आँखें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व का निर्माण करते थे जिसे देखकर कोई भी सहज रूप से आकर्षित हो जाता था। उसकी सुन्दर दाढ़ी घनी मूँछें, कन्धे पर लटकने वाली रेशमी अलकें आदि उसकी लोकोत्तर सुन्दरता में चार चाँद लगाती थीं।

वह बहादुर योद्धा घोड़ा दौड़ाते हुए वहीं आ पहुँचा। उसके आते ही लोग 'शम्भूराजा, संभाजी राजा' कहकर आपस में फुसफुसाने लगे। शम्भूराजा के पीछे घेरदार परिधान में जोत्याजी केसकर, कवि कलश, जगदेव राव जैसे राजा के कुछ सहयोगी भी घोड़े दौड़ाते वहीं आ गये। उनके साथ ही महार जाति का रायप्पा नाक भी चल रहा था। उसके सिर पर जरीदार टोपी नहीं थी, मराठों की पेचदार पगड़ी भी नहीं थी। उसके बदले सिर पर एक सादा साफा बँधा था और शरीर पर कम्बल से बना, आधे शरीर को ढकने वाला, कंचुकी जैसा वस्त्र था। वह काले रंग का, करारी मूँछों, भेदक आँखों वाला किसान था। किन्तु वह अपना घोड़ा शम्भूराजा और कवि कलश के साथ ही दौड़ा रहा था।

रंगपंचमी के दिन वैसे भी युवराज शम्भूमहाराज बहुत प्रसन्न और मनमौजी दिखते थे किन्तु आज उनके चेहरे पर रात्रि जागरण की थकान दिखाई पड़ रही थी।

उनकी आँखें बाज पक्षी की आँखों की तरह कुछ खोज रही थीं। उनके साथी भी आधी रात के बाद से युवराज के साथ ही भवानी कड़ा और टकमक टोक की ओर घूमकर आये थे। युवराज को आशंका थी कि रंगपंचमी के त्योहार पर कुछ गड़बड़ होने वाली है। यही कारण था कि उनकी पहले से सतेज और सावधान आँखें थकी होने पर भी तत्परता से चारों ओर देख रही थीं।

गोदू पहरेदारों से बड़ी व्यग्रतापूर्वक कह रही थी कि महाराज की जान को खतरा है। इसी समय शम्भूराजा का घोड़ा फुरफुर करता वहाँ आकर रुका। अपने फटे हुए कपड़ों, हड़बड़ाई हुई गोदू तीर की गति से शम्भूराजा की ओर दौड़ी। वह जोर से चिल्लाई, ''युवराज! युवराज अपने महाराज की जान को खतरा है। महाराज की जान को खतराऽऽ...''

शम्भूराजा ने जोत्याजी और रायप्पा को संकेत किया, ''सबके सामने इसे कुछ कहने का अवसर न दो, चलो, इस स्त्री को साथ लेकर चलो।''

शम्भूराजा का घोड़ा अपने महल की ओर चल पड़ा। उनके अन्य सहयोगी भी गोदू को साथ लेकर शीघ्रता से चले। अन्दर ले जाकर अपने व्यक्तिगत कक्ष में शम्भूराजा ने गोदू से पूछताछ आरम्भ की। गोदू ने अपने ससुर और पति की पाप कथा का आख्यान किया। शम्भू महाराज को गोदू की बात पर सहज ही विश्वास हो गया। बाहर की गड़बड़ी की भनक पाकर येसूबाई भी वहाँ आ गयीं।

गोदू की कहानी सुनकर युवराज ने कवि कलश से कहा, ''अब तो आपको यकीन हुआ न कविराज; मुझे तो यह विश्वास हो गया था कि इस रंगपंचमी पर कुछ-न-कुछ होगा।''

''आप समय पर सावधान हो गये, यह तो बहुत अच्छा हुआ। लेकिन राजन! किले के सारे पहरों, नाकों आदि की जाँच तो कर ली गयी है। अभी तक तो कोई धोखा नजर नहीं आ रहा है।''

''ऐसा कहने से नहीं चलेगा कविराज! जैसा कि हमारे पिताजी कहते हैं, हमें निरन्तर सावधान रहना चाहिए। चलिए हम सभी अपने-अपने मोर्चे पर चलें। और कविराज! वे वाड़कर पिता-पुत्र यहीं कहीं होंगे। उन्हें तुरन्त बन्दी बनाइए। आवश्यक हो तो किसी को उनके गाँव भेजिए लेकिन हर हालत में उन्हें आज ही बन्दी बनाइए।''

''जैसी आज्ञा राजन।'' ऐसा कहते हुए बिना मुड़े, युवराज को मुजरा करते हुए सभी साथी अपने-अपने कार्य के लिए बाहर निकले।

बहुत ही डरी, सहमी और काँपती हुई गोदू पर युवराज ने एक दृष्टि डाली। उन्होंने येसूबाई से कहा, ''इसको पहनने के लिए अच्छे कपड़े दे दो। हमें लग रहा है कि रायगढ़ पर आयी हुई महान विपत्ति इसी की वजह से टल गयी। इसकी जान को खतरा हो सकता है। इस गोदू को आप स्वयं सुरक्षा प्रदान करें।''

युवराज शीघ्रता से स्नानगृह की ओर मुड़े। उन्हें पूजा आदि समाप्त करके शीघ्र ही बाहर निकलना था।

अब तक रायगढ़ पर प्रकाश पूरी तरह फैल चुका था। जगह जगह पर लेज़िम और गतका खेलने वाले बच्चों के झुंड जमा हो रहे थे। शहनाई और नगाड़े बज रहे थे। फूलों की सजावट और रंगोलियाँ सज रही थीं। नवयुवक इधर-उधर घूम रहे थे। इस प्रकार शिवाजी महाराज के महल के सामने उत्सव का वातावरण बना हुआ था। इसी समय पूरी तरह भयभीत त्र्यम्वकराव और निवासराव वहाँ पहुँचे। वहीं पर उन्हें पता चला कि गोदू संभाजी महाराज के महल में गयी है। पिता पुत्र इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि यदि गोदू उनसे पहले शिवाजी महाराज के पास पहुँच गयी और उनके षड्यन्त्र का भंडाफोड़ कर दिया तो उनके लिए मारकर खाई में फेंक देने के अतिरिक्त कोई अन्य सजा नहीं होगी।

वाड़कर पिता-पुत्र कुछ डरे किन्तु तुरन्त ही सँभल गये। उन्होंने सोचा कि गोदू हमारे बारे में शिवाजी महाराज से कुछ कहे उससे पहले हम ही उसको बदनाम कर दें। यह मौका अपने आप उन्हें मिल गया था। यह मौका था अपने गले में पड़ी जलती फटाकों की माला को असावधान युवराज के गले में डाल देने का। औरतों के नाम पर युवराज को बदनाम करने का षड्यन्त्र पहले से ही चल रहा था। उसमें गोदू का एक नाम और जोड़ देना था। उन्होंने सोचा कि आयी हुई यह विपत्ति किसी प्रकार टल जाय तो अच्छा है।

वाड़कर पिता पुत्र युवराज के महल की ओर बढ़े। किन्तु महल के पास पहुँचने पर उनके पैर डर के मारे काँपने लगे। दोनों ने एक दूसरे को उकसाने का प्रयत्न किया किन्तु सिंह की गुफा में जाकर उसे ललकारने का साहस उनमें नहीं था। भयभीत होकर पिता पुत्र ने अपने घोड़े शिवाजी महाराज के महल की ओर दौड़ाए।

आज रंगपंचमी के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए महाराज के महल के सामने बहुत भीड़ जमा हो गयी थी। पाँच पाँच कोस की दूरी से शौकीन और उत्साही लोग उत्सव में भाग लेने के लिए आये थे।

थोड़ी ही देर में महाराज पालकी में बैठकर जगदीश्वर मन्दिर की ओर जाने वाले थे। इसी समय त्र्यम्बकराव उल्टी मुट्ठी मुँह पर रखकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "भगा ले गये हो भगा ले गये युवराज इस गरीब की पुत्रवधू को भगा ले गये!"

"अब मैं बिना पत्नी के कहाँ जाऊँ? अपने रिश्तेदारों को क्या मुँह दिखाऊँ?" अपने ही हाथों से अपने मुँह पर चपत लगाते हुए निवासराव जोर-जोर से रोने लगा।

वहाँ पर इकट्ठा हुए दर्शक और सरदार यह दृश्य देखकर चकरा गये। शिवाजी महाराज के ज्येष्ठ पुत्र पर कोई ऐसा आरोप लगाता है क्या! कल राजगद्दी

के स्वामी होने वाले पर कोई इस तरह कीचड़ उछालता है क्या! वह भी महाराज के राजमहल के ठीक सामने। चारों ओर से भीड़ बढ़ गयी। भीड़ को देखकर त्र्यम्बकराव और निवासराव ने और जोर से दहाड़ें मारना शुरू किया। अपने मुँह पर स्वयं थप्पड़ मारते हुए त्र्यम्बकराव चिल्लाए, "लोगो देखो न्याय के घर में ही ऐसा अन्याय होगा तो हम गरीब कहाँ जाएँगे! अमीर उमरावों की नजर मे बचाने के लिए क्या हमें अपनी बहू बेटियों को कत्ल कर देना होगा।

"ऐ बुड्ढे तुमको तोप के गोले खाकर मरना है क्या?" एक सिपाही ने सामने आकर पूछा।

"तुम्हारे पास क्या सबूत है?" दूसरे ने पूछा।

"उल्टे मुझसे क्या सबूत पूछते हो; जाओ युवराज के महल की ओर, दरवाजा खोलो और देखो अपनी आँखों से कि किस तरह वहाँ मेरी बहू को बन्दी बनाया है। हे भगवान अब मैं कहाँ जाऊँ!"

कुछ समय पश्चात् भीड़ के पीछे कुछ हलचल हुई। एक विशेष पालकी लेकर पालकी वाले शीघ्रता से वहाँ आये। शिवाजी महाराज के अष्टप्रधान मंडल में से एक न्यायाधीश प्रह्लाद निराजी पालकी से उतरे। वाड़कर पिता पुत्र का तमाशा वहाँ चालू था। 'सु' कहते ही सुरहुरपुर समझ लेने वाले प्रह्लाद निराजी के ध्यान में सारी बात आ गयी। उन्हें भी बहुत दुःख हुआ। उन्होंने बाहर के अशोभनीय प्रकरण को महाराज को बताया। इसके बाद हिन्दवी स्वराज्य के विद्वान काजी मुल्ला साबही वहाँ पर पहुँचे। वे भी घबराई निगाह से महाराज की ओर देखने लगे। महाराज ने तुरन्त निर्णय लिया। उन्होंने पिता पुत्र को अन्दर बुलाया। महाराज के चरणों पर अपना सिर जोर जोर से पटकते हुए चिल्लाकर बोला, "महाराज स्वयं युवराज ऐसी गलती करते रहेंगे तो हम जिन्दा कैसे रह सकेंगे? मुगलों के शासन में कहते हैं कि यदि कोई सुन्दर औरत रास्ते में दिखती है तो उसे अपने जनानखाने में खींच ले जाते हैं और यहाँ!"

"खामोशऽऽ," महाराज ऊँची और तीखी आवाज में बोले, "अपनी जबान सँभालो, अब तक बहुत बोल चुके हो।"

शिवाजी महाराज की मुद्रा बहुत गम्भीर दिखाई देने लगी। सच बात यह थी कि भोर में भगवान की पूजा करके कीमती वस्त्रों को पहन कर महाराज रंगपचमी मनाने के लिए बाहर निकलने वाले थे। इसकी तो उन्हें कल्पना तक न थी कि आज त्योहार मुहूर्त पर रंग के बदले उनके ऊपर बदनामी का अबीर फेंका जाएगा। युवराज शम्भूराजा की सौतेली माँ पुतलीबाई त्योहार के अवसर पर नीचे पाचाड़ गाँव के घर से किले पर आयी थीं। उन्होंने पोलादपुर के जौहरी से विशेष प्रकार के रत्नों की एक कंठमाला बनवायी थी। होली के विशेष अवसर पर वह अपने प्रिय युवराज शम्भूराजा को यह कंठमाला उपहारस्वरूप देना चाहती थी। किन्तु यहाँ पर यह

प्रकरण देखकर माँ पुतलीबाई आश्चर्य से हतवाक हो गयीं।

बड़े महाराज के साथ पूजा के लिए सोयराबाई बाहर निकलने वाली थीं। गले में रत्नहार, सोने की करधनी पहनकर, जरीदार शाल ओढ़े वे पूरी तरह तैयार खड़ी थीं। पर बाहर के इस अप्रत्याशित प्रकरण को देखकर वे भी आश्चर्य से ठगी-सी रह गयीं। वे प्रयत्न कर रही थीं कि उनके चेहरे पर उभरने वाले भावों को कोई समझ न पाये।

कुछ दिन पहले अण्णाजी दत्तो की पुत्री हंसा और शम्भूराजा के सम्बन्ध में कुछ ऐसी ही अफवाहें फैली थीं। शम्भूराजा के साथ ऐसा क्यों होता है? त्योहार के मांगलिक अवसर पर ऐसी बदनामी का प्रसंग क्यों आता है। यह सोचकर महाराज को दु:ख हो रहा था। औरंगजेब के साथ अन्य शत्रुओं के सामने सदैव उन्नत रहने वाला उनका सिर आज शर्म से झुका हुआ था। किन्तु उनके भीतर एक समझदार राजा बैठा था। उन्होंने भावना की बाढ़ को भीतर-ही भीतर नियन्त्रित कर लिया महाराज के मन में शम्भूराजा के लिए ममता का प्रवाह सूखने लगा था। कर्तव्य पालन वाला राजदंड महाराज ने अपने हाथ में कसकर पकड़ रखा था। वे शान्त भाव और धीमी आवाज में केवल इतना ही बोले, "देखा त्र्यम्बकराव! बाहर पालकी का उत्सव समाप्त होने दीजिए। तब तक तुम यहीं पर निश्चिन्त होकर बैठे रहो। गुनहगार चाहे जितना भी महान हो, उसकी पूछताछ ठीक ठीक करवाई जाएगी। तुमको न्याय अवश्य मिलेगा।"

बाहर निकलते हुए महाराज के कदम डगमगाये। उन्होंने काजी मुल्ला साहब को अपने पास बुलाया। उनकी सफेद लम्बी दाढ़ी पर महाराज को अत्यधिक विश्वास था। राज्य के एक नेक न्यायदाता के रूप में मुल्ला साहब मुसलमानों से भी अधिक मराठी प्रजा में लोकप्रिय थे। महाराज ने उन्हें कुछ सूचनाएँ दीं। मुल्ला साहब ने महाराज को बड़े आदर से कोर्निस की और अगली कार्यवाही के लिए तुरन्त बाहर निकल गये।

राजदरबार से बाहर निकलते हुए पुतलीबाई ने शम्भूराजा के महल पर एक नजर डाली, उनकी आँखों से गर्म आँसू ढल पड़े।
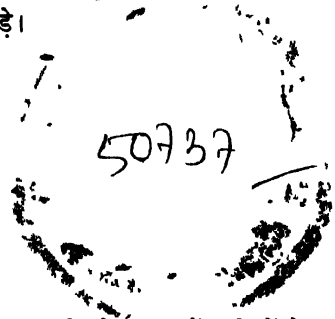
रायगढ़ की यह रंगपंचमी बदरंग हो गयी थी। आज की शोभायात्रा में हाथियों के

हौद, पालकी, ढोल-ताशे की आवाज आदि की ओर लोगों का ध्यान अधिक नहीं गया। उत्सव के दर्शक और रिश्तेदार तरह-तरह की बातें कर रहे थे। आपस में बड़बड़ा रहे थे।

"कैसा है यह युवराज का साहस! देखा दूसरे की स्त्री को घोड़े पर बिठाया और खींच लाये अपने राजमहल में और वह भी दिन दहाड़े।"

रंगपंचमी का उत्सव किसी प्रकार समाप्त हो गया। सूर्य पश्चिम दिशा में ढल गया। शिवाजी महाराज बैठे थे। उनकी मुखमुद्रा अत्यन्त तनावपूर्ण थी। ऐसा लगता था वे किसी बड़े बोझ के दबाव से बेचैन हो रहे हैं।

"शम्भूराजा को तुरन्त उपस्थित होना है।" ऐसे सन्देश नहीं बल्कि सख्त आदेश उन्होंने भेजा था। बैठक के सामने नीचे की गद्दी पर त्र्यम्बकराव और निवासराव अल्लाह की गाय की तरह असहाय की तरह उदास बैठे थे। वे अब भी इसी अभियोग की मुद्रा में थे कि उनके साथ बड़ा अन्याय हुआ था। इसी समय बाहर किसी के आने की आहट सुनाई पड़ी। अपने गले में पड़ी पाँच लड़ की माला के साथ खेलते हुए धीमी गति से किन्तु बड़े आत्मविश्वास के साथ शम्भूराजा वहाँ पर आ पहुँचे। एक दम गोरा रंग हल्की लाल मुद्रा, उन्नत भाल, कमानीदार भौंहें, काली-काली गहरी और बोलती हुई आँखें। राजकुमारों के बीच सभी से अलग दिखाई देनेवाला शम्भूराजा का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक था। उन्होंने महाराज की नजर से नजर मिलायी। किन्तु बड़े महाराज की आँखों में उमड़ते दुख के सागर को देखकर युवराज की आँखें नीचे झुक गयीं। पिता-पुत्र की उपस्थिति में उनकी शोभा से पूरा महल दमक रहा था। दोनों को ही विधाता ने अपार सौन्दर्य का उपहार दिया था। दोनों को एकत्र देखकर ऐसा लगता था मानो सूर्य से मिलने के लिए चाँद आकर खड़ा हो।

बैठक में तनाव बहुत बढ़ गया था। युवराज पर लगाये इस आरोप से उनके यार दोस्त भी हैरान थे। उनका बचपन का दोस्त रायप्पा महार और जोत्याजी केसकर महल के बाहर दुखी मन से मुँह लटकाए खड़े थे। युवराज के पीछे पीछे उनकी पत्नी येसूबाई भीतर आयीं। उनके अचानक वहाँ आने से बड़े महाराज आश्चर्यचकित हो गये। महाराज ने देखा कि येसूबाई के पीछे साफ सुथरे कपड़ों में एक अपरिचित नवयुवती खड़ी थी। उस नवयुवती की ओर वाड़कर पिता पुत्र की भी नजरें गयीं। महाराज ने अनुमान लगाया कि शम्भूराजा के अन्याय की शिकार यही अपरिचित युवती होगी। किन्तु येसुबाई जैसी समझदार पुत्रवधू की वहाँ उपस्थिति से महाराज की हैरानी बढ़ गयी थी। उन्होंने कहा—

"ध्यान से सुनो, बहूरानी। शम्भूराजा के अपराध और उनकी बढ़ती जा रही

हरकतों को पिता के रूप में एक बार नजरअन्दांज कर दूँ तो भी राजा को अपना राज दंड ममता के गहरे पानी में फेक देना सम्भव नहीं।"

गम्भीर मन्त्रघोष की तरह महाराज की आवाज गूँजने लगी।

येसूबाई एक भी शब्द बोल नहीं सकी। युवराज शंभाजी के चेहरे पर अपमान का भाव झलकने लगा। असाधारण तनाव के कारण उनकी गर्दन नीचे झुक गयी। इस स्थिति के कारण ऐसा लगा कि त्र्यम्बकराव और निवासराव का साहस कुछ बढ़ गया है। पिता-पुत्र साहस के साथ खड़े हो गये। त्र्यम्बकराव ने अपना उत्तरीय झटक दिया। वह पीपल के पत्ते की तरह काँप रहा था। उसने कहा, "महाराज मुझे अपनी पुत्रवधू चाहिए।"

"महाराज मुझ गरीब की पत्नी मुझे वापस दे दो न।" निवासराव ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

महाराज ने एक तीखी नजर संभाजी राजा की ओर घुमायी—"दुर्भाग्य केवल दुर्भाग्य। आज इस स्वराज में किसी भी स्त्री की इज्जत सुरक्षित नहीं है। हमारी प्रजा यदि खुलकर ऐसा बोलने लगी तो हम किसका मुँह देखेंगे।"

महल में पूरी स्तब्धता छा गयी। महाराज की कठोर वाणी से युवराज और युवराज्ञी की वाणी कुंठित हो गयी। वाड़कर पिता पुत्र के झूठ को बढ़ावा मिला किन्तु गोदू की साँस अटक गयी। इससे आगे उससे चुप न रहा गया। वह सीधे आकर महाराज के पैरों पर गिर पड़ी और व्याकुल होकर कहने लगी—

"महाराज, मैं माँ भवानी की कसम खाकर कहती हूँ कि ये दोनों स्वराज्य के दुश्मन और धोखेबांज हैं। आज रंगपंचमी की भीड़ का लाभ उठाकर रायगढ़ किले पर ही महाराज की हत्या का षड्यन्त्र इन दुष्टों ने रचा था।"

हमारे ऊपर शस्त्र उठाना। वह भी यहाँ रायगढ़ में, यहाँ आकर हमारे ऊपर? उस गम्भीर परिस्थिति में भी महाराज अपनी हँसी नहीं रोक सके। राजा के नौकर और पहरेदार भी हँस पड़े। त्र्यम्बकराव का साहस इससे और बढ़ गया। वह हाथ जोड़कर दीनता से बोला, "देखा न महाराज, आपके युवराज ने इस गरीब की पुत्रवधू पर कैसा जादू डाला है। महाराज ! युवराज तो रंग उठाते है किन्तु इस गरीब की इज्जत तो धूल में मिल गयी।"

महाराज ऊपर से थोड़ा ही विचलित दिखायी पड रहे थे किन्तु भीतर से उनका धैर्य छूट चुका था। महाराज को शम्भूराजा के पराक्रम के सम्बन्ध में तनिक भी सन्देह नहीं था किन्तु उनके चरित्र में आजकल उनका विश्वास डगमगा गया था। अष्टप्रधान ने, नौकरों ने, सरदारों ने महाराज को अनेक बार यह संकेत दिया था कि किसी सुन्दर स्त्री पर निगाह पड़ जाने पर युवराज किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।

इन्हीं सूचनाओं के कारण महाराज बहुत खिन्न थे।

इसी बीच दरवाजे के बाहर कुछ गड़बड़ी की आहट मिली। अपना जरी के किनारे वाला उत्तरीय सँभालते हुए, ऊँचे कद, मजबूत हड्डियों वाले अण्णाजी अचानक अन्दर आये। उनकी घनी मूँछें, बोलती आँखें, कानों के हिलते कुंडल, तेजस्वी साँवला रंग आदि अहंकारी व्यक्तित्व का प्रमाण दे रहे थे। पैंसठ वर्ष के अण्णाजी ने महाराज के साथ अनेक ग्रीष्म और वर्षा ऋतुएँ देखी थीं।

पन्त कुछ रुके। आगे का शब्द बोलने से पहले अण्णाजी दत्तो ने संभाजी राजा को गौर से देखा। युवराज ने भी क्रुद्ध होकर उनकी आँख से आँख मिलायी। युवराज की चमकती पुतलियाँ पन्त को बरछी के नोक जैसी धारदार और चमकदार दिखायी पड़ीं। ये दोनों एक-दूसरे को फूटी आँख नहीं सुहाते थे। अण्णाजी पन्त ने अपने माथे का पसीना उत्तरीय से पोंछ दिया। अपनी बात सँवारते हुए वे बोले, "महाराज यह बेचारी गोदू मेरी पत्नी की बहन की बेटी है। ये त्र्यम्बक मेरे करीबी रिश्तेदार हैं, महाराज!"

कहते कहते अण्णाजी की नजर गोदू के निश्छल निष्पाप चेहरे पर पड़ी और उनका मन फूट फूट कर रोने लगा। उनकी इकलौती बेटी हंसा की छवि उनको कल्पना में नाचने लगी। हंसा वस्तुत: एक जीती-जागती जीवन-लीला थी। पंछियों की तरह क्रीड़ाशील, मोर की तरह नाचने वाली, तितली की तरह पन्त के इर्द-गिर्द घूमने वाली हंसा और उसकी स्मृतियाँ अण्णाजी का पीछा छोड़ने को तैयार न थीं। रायगढ़ के परिसर में होने वाली बारिश और वर्षा के पानी से पग पग पर बहने वाले झरने और इन्हीं पवित्र झरनों की तरह हंसा यौवन के उत्सव में सदैव नाचती रहती थी। अण्णाजी पन्त ने हंसा की शादी कुछ जल्दीबाजी में रचा दी थी। वह अपनी ससुराल पेण से पहली बार मायके आयी थी। एक दिन मंगला गौर के बहाने हंसा राजमहल में गयी। वहाँ से दुखी नहीं घायल होकर वापस लौटी। दो तीन दिन के बाद पाचाड़ के एक भरे हुए कुएँ में लोगों ने उसका तैरता हुआ शव देखा। उसके इस तरह अचानक जाने से सारा परिसर व्यथित हो गया।

इस घटना के सम्बन्ध में जितने लोग उतनी बातें कर रहे थे। कोई कहता था कि हंसा पर बलात्कार हुआ। कोई कहता था कि उसके मन पर कोई गहरा आघात हुआ जिसके कारण उसने स्वयं ही मृत्यु को गले लगा लिया। किन्तु अण्णाजी पन्त तो अभी भी अपनी लाड़ली बेटी की याद में पागल हो जाते थे।

पन्त के आगमन से वातावरण और भी गम्भीर हो गया न्यायाधीश प्रह्लाद निराजी घबरा गये। त्र्यम्बकराव ने अपनी पगड़ी उतारकर शिवाजी महाराज के पैरों पर रख दी। वह दुखी स्वर में चिल्लाया—"महाराज! गरीब की बहू को वापस उसे करो।"

अण्णाजी दत्तो ने लज्जा से अपना-सिर झुका लिया। महाराज भी बहुत शर्मिन्दा दिखाई दे रहे थे। उन्होंने क्रोध से येसूबाई की ओर नजर घुमायी। येसूबाई पर इस घटना का कोई भी प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा था। बल्कि एक तरह के अभिमान और आत्मविश्वास से वह अधिक तेजस्विनी प्रतीत हो रही थी। येसूबाई ने पन्त की बात काटते हुए सीधा प्रश्न किया—"बिना प्रमाण के उल्टा-सीधा कोई भी आरोप लगाने का अधिकार किसी को भी नहीं है। जहाँ तक इज्जत का सवाल है, वह जैसे प्रजा को प्रिय होती है वैसे ही युवराज को भी।"

येसूबाई के इस अचानक आक्रमण से पन्त कुछ लज्जित हुए। परन्तु महाराज ने बीच में हस्तक्षेप करके येसूबाई को रोक दिया—"बहूरानी! हो सकता है कि तुम पर पतिप्रेम का जादू चढ़ गया हो किन्तु पिता होने के नाते युवराज को हम तुमसे अधिक अच्छी तरह पहचानते हैं।"

पहले से जिनके चारों ओर आरोपों की आँधी घूम रही थी। शम्भूराजा चुप थे। केवल सुन रहे थे। अब और अधिक उनसे चुप नहीं रहा गया। दुखी स्वर में शम्भूराजा बोले—

"पिताजी दुख इसी बात का है कि हमसे कोई अपराध नहीं हुआ है फिर भी हमें अपराधी ठहराया जा रहा है। यह बहुत बड़ा अन्याय है पिताजी। आज की घटना की जाँच पड़ताल आप अवश्य कीजिए। जाँच के बाद आपको भी विश्वास हो जाएगा कि आज होली मनाने की जगह पर, ठीक शोभा यात्रा के समय तोपों से पटाखों की बारूद के बदले असली बारूद के गोले दागे जाने वाले थे। षड्यन्त्रकारी आपकी जान लेने पर तुले हुए थे, पिताजी। यही सूचना देने के लिए यह निष्पाप गोदू दौड़ी-भागती आयी। वह मूर्ख मान ली गयी और मैं बदनाम हुआ।

"शम्भूराजा! केवल काल्पनिक कथाओं के आधार पर राज काज नहीं चलाया जाता। उसके लिए ठोस सबूत की आवश्यकता होती है।"

अण्णाजी पन्त का दबा हुआ गुस्सा भड़क उठा था। अपने उत्तराधिकारी पर खुलेआम आरोप लगाये जाने से बड़े महाराज भी बेचैन हो गये थे। इसी समय मुल्ला हैदर वहाँ आये। महाराज ने उन्हें बड़ी आशा भरी दृष्टि से देखा। उनकी न्यायबुद्धि पर महाराज को बहुत विश्वास था। साठ वर्ष के मुल्ला साहब अपनी पलकों को झपकाते हुए बोले, "महाराज! आपकी आज्ञा के अनुसार बाघ दरवाजे की ओर पहुँचाये गये बारूद की हमने बारीकी से जाँच की। पता चला कि उसमें पटाखे की बारूद थी ही नहीं।"

वहाँ उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये। हिन्दवी स्वराज की राजधानी में इस प्रकार का घातक षड्यन्त्र चिन्ता का विषय था। मुल्ला हैदर ने

अपनी जाँच का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत कर दिया था। किले के ऊपर के बारूदखाने से तोप के गोले बाघ दरवाजे पर ही नहीं कहीं भी नहीं भेजे गये थे। उसी दोपहर में काले हौज के पास सन्दिग्ध अवस्था में देखे गये छः-सात लोगों को गड़करी कान्होंजी भांडवलकर की बटालियन ने रोका था। ये चोर अपने को बचाने के लिए भवानी कड़ा की ओर भागे। उन्होंने उस भयानक कड़े के ऊपर से नीचे की करौदों की झाड़ियों में छलाँग लगायी। उस जगह पर अभी भी उनकी तलाश जारी है।

थोड़ी देर में कान्होंजी राव स्वयं दरबार में उपस्थित हुए। उन्होंने शिवाजी महाराज को बताया—"महाराज! उन सन्दिग्ध लोगों में से चार जनों के शव मिले हैं। लिबास को देखने से वे बाहर से आये हुए पठान दिखाई पड़ते हैं। इससे पहले इन्हें इस क्षेत्र में किसी ने नहीं देखा।"

शिवाजी महाराज के चेहरे पर उभरी तनाव की रेखायें ढीली पड़ गयीं! उन्होंने अपनी चमकती आँखों से गोदू की ओर कृतज्ञता से देखा। महाराज को विश्वास हो गया था कि शत्रुओं ने एक बहुत बड़ी साजिश का जाल बुना था।

महाराज शम्भूराजा की ओर रुख करके बोले, "इतनी जरूरी खबर थी तो बाघ दरवाजे की ओर दौड़ने से पहले आपने मुझे क्यों नहीं सूचित किया?"

"वहाँ दौड़कर पहुँचना और तोपों को नाकाम करके मराठों के प्राणों की रक्षा करना मेरा प्रथम कर्तव्य था, पिताजी।" शम्भूराज ने उत्तर दिया।

शिवाजी महाराज की तीखी नजर वाड़कर पिता-पुत्र पर पड़ी। वे दोनों बहुत घबरा रहे थे। वे हकलाते हुए महाराज की ओर देख रहे थे। सारा प्रसंग बता रहा था कि दाल में कुछ काला था। दाल में काले का अनुमान अण्णाजी को भी हो गया था। उनकी शुरू में चढ़ी हुई त्योरी अपने आप ढीली हो गयी। सभी की नजर महाराज की ओर उठी। बड़े महाराज की नीर-क्षीर विवेकीवाणी फूटी—

"अण्णाजी पन्त! यह घटना जटिल होती जा रही है। इसकी पूरी जाँच करना आवश्यक है। कान्होंजी! जाँच पड़ताल पूरा होने तक इन पिता-पुत्र को सामान्य कैद में रखो।"

त्र्यम्बकराव और निवासराव को ऐसा लगा जैसे उनकी पीठ में भाले की नोक चुभ गयी हो। उन्हें कैदखाने की ओर ले जाया गया। अण्णाजी उनकी कोई सहायता नहीं कर सके।

गोदू पहले की तरह ही सहमी खड़ी थी। अण्णाजी उसके पास गये और उसके सिर पर हाथ रखकर बोले, "चल बेटी! कल से तुम्हें बहुत परेशानी उठानी पड़ी है। चल अपनी मौसी के पास।"

गोदू ने अण्णाजी का हाथ झटक दिया। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह महाराज से इतना ही बोली, "महाराज! मुझे किसी रिश्तेदार के पास नहीं जाना है।

जो हो गया वही बहुत है।"

शिवाजी महाराज बड़े संकट में पड़ गये। गोदू के प्रति महाराज के मन में बड़ी दया उमड़ रही थी। यदि दूसरा अवसर होता तो महाराज उसकी बहादुरी के लिए अपने गले का रत्नहार उसे पहना देते। किन्तु वाड़कर पिता पुत्र के अपराधी सिद्ध होने पर भी वे अण्णाजी के रिश्तेदार थे। पूछताछ पूरी होने तक अपने अष्टप्रधानों में से किसी का भी अपमान होना महाराज की नीति के विरुद्ध था। वे किसी भी अधिकारी को अपमानित नहीं होने देते थे।

किन्तु गोदू का क्या किया जाय! महाराज इस बात को लेकर बहुत चिन्तित थे। अण्णाजी गोदू को अपने घर ले जाना चाहते थे। किन्तु उनके घर के लिए तैयार न थी।

महाराज ने अन्त में निर्णय सुनाते हुए कहा, "गोदू छोटी बच्ची नहीं है। वह अपने बारे में स्वयं निर्णय ले लेगी।"

महाराज अपना निर्णय सुनाकर मुक्त हो गये। किन्तु गोदू की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वो कहाँ जाय?

हवा की चपेट में आकर जिस तरह कोई सूखा पत्ता अटक जाता है उसी तरह गोदू भी कुछ समय तक खड़ी रही। उसने पहले शम्भूराजा की प्रशान्त और गम्भीर मुद्रा की ओर देखा। उसकी दृष्टि युवराज की बगल में खड़ी येसूबाई पर पड़ी। येसूबाई भगवान की मूर्ति के सामने जलती दीप शिखा की तरह तेजस्विनी, ममता की मूर्ति, स्वभाव से शीतल और कोमल मन की दिखाई पड़ रही थी। गोदू एकाएक भाव विभोर हो उठी। वह दौड़कर येसूबाई की बाँहों में समा गयी। वह व्याकुल होकर बोली, "युवराज्ञी आप ही मुझे अपने आँचल में सम्भाल लो। आपकी दासी बनकर मैं आपकी हर आज्ञा मानने और हर काम करने के लिए तैयार हूँ।"

जिसके कारण येसू के पति पर लाछन लगाया था वही उसके गले पड़ रही थी। अचानक घटित इस प्रसंग से सभी संकट का अनुभव कर रहे थे। गोदू का शरीर सहायता प्रतीक्षा में थर थर काँप रहा था। येसू ने गोदू के चेहरे पर ममता से इस तरह हाथ फेरा मानो मक्खन के पिंड को सहला रही हों। युवराज्ञी ने बड़ी बहादुरी से कहा, "ठीक है गोदू! जब तक तेरी कोई समुचित व्यवस्था नहीं हो जाती तू हमारे अन्त:पुर में रह सकती है।"

एक नौकर को आदेश देते हुए येसूबाई ने कहा, "इसको लेकर मेरे महल में जाओ। मैं भी पीछे आ रही हूँ।" पन्त का विचार था कि शिवाजी महाराज येसूबाई के इस व्यवहार में हस्तक्षेप करेंगे किन्तु महाराज ने उस ओर ध्यान ही नहीं दिया। इसके विपरीत उन्होंने मुल्ला हैदर को बाहर दरवाजे के पास घटी घटना अच्छी तरह

जाँच करने का आदेश दिया। अपने प्रति महाराज की बेरुखी और उपेक्षा से लज्जित हुए। अपनी नाराजगी को व्यक्त न करते हुए अपना उत्तरीय झटककर क्रोध से दरबार से बाहर चले गये।

अब महल में बड़े महाराज, सम्भाजी राजा और येसूबाई के अतिरिक्त और कोई नहीं था। महाराज बड़ी दुख भरी नजरों से युवराज को देख रहे थे। युवराज की मुख मुद्रा में अनेक प्रकार की भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा था। सम्भाजी राजा के धीरज का बाँध टूट गया। वे बड़ी विनम्रता से बोले, "पिताजी! क्षमा करें! मैंने आपको बड़ा कष्ट दिया है। किन्तु...।"

"पिताजी! कोई अपराध न करने पर भी किसी को अपराधी ठहराकर दंडित करना कहाँ का न्याय है? पिताजी थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाय कि आपका युवराज चरित्रहीन है। परन्तु रायगढ़ की सुरक्षा में इतनी शिथिलता कब से होने लगी?"

"मतलब?"

"चितदरवाजों के फौलादी किवाड़ आजकल कभी भी रात बिरात कैसे खोल दिये जाते हैं। स्वयं छत्रपति इस किले पर रहते हैं, तब भी?"

शिवाजी महाराज व्यंग्यपूर्वक हँसे और बोले, "पागल हो गये हो क्या बेटा? अरे, शाम को जब एकबार चितदरवाजा बन्द हो जाता है तो दूसरे दिन सुबह तक आदमी तो क्या कोई कीड़ा भी ऊपर नीचे नहीं हो सकता।"

महाराज की बात सुनकर संभाजी राजा ने कहा, "यदि ऐसी बात है तो उसी दरवाजे से, जैसा कि अण्णाजी पन्त और दूसरे लोग कहते हैं, भोर में आदमी जाते कैसे और सुबह होने से पहले वाड़कर की बहू, को भगाकर कैसे ले आते हैं?"

शम्भूराजा के इस प्रश्न पर शिवाजी महाराज बहुत विचलित हो गये। युवराज के ऊपर बदनामी के कीचड़ उछाले जाने और घटित हो रही घटनाओं के बीच निश्चय ही कुछ गड़बड़ है। यह महाराज भी अनुभव कर रहे थे। युवराज के शब्दों ने महाराज के हृदय के टुकड़े टुकड़े कर दिये—"पिताजी! आजकल हमारे दिन इतने बुरे हैं कि महाराज ने अपने दिल के दरवाजे शम्भू के लिए बन्द कर लिए हैं। और चोर डाकू कभी भी आ जा सकें इसलिए चितदरवाजे के किवाड़ों को पैर लग गये हैं।"

युवराज की बातें सुनकर महाराज के हृदय में ममता का बाँध टूट पड़ा। उन्होंने शम्भूराजा के कंधे पर हाथ रखकर बड़े प्यार से कहा, "मन को इतना खट्टा न करो बेटा! कहीं पर कुछ गड़बड़ी जरूर है। हम इसका पता अवश्य लगाएँगे।"

पिताजी! स्पष्ट रूप से बताता हूँ। आपको अपने प्यारे पुत्र से अलग करने के लिए सारी अच्छी बुरी ताकतें एकजुट हो गयी हैं।"

महाराज ने बड़े प्यार से शम्भूराजा को अपने समीप बिठाया। उनकी पीठ पर अपना ममता भरा हाथ फेरते हुए बोले, "हमारे कर्मचारियों से यदि कुछ त्रुटियाँ हुई होंगी तो निश्चय ही हम उनकी जाँच पड़ताल करेंगे। परन्तु बेटा, एक बात ध्यान रखना कि हमारे अष्ट प्रधान, हमारे सरदार, स्वराज्य का प्रासाद खड़ा करने में विगत चालीस वर्षों से रात-दिन, एक करने वाले हमारे प्राणों से भी प्रिय साथी रहे हैं। उनकी मान-मर्यादा उनके सम्मान का ध्यान रखना युवराज होने के नाते आपका भी कर्तव्य है। आप अपना व्यवहार सुधारें। नहीं तो...।"

"नहीं तो क्या?" शम्भूराजा की आँखों ने प्रश्न किया, "आपसे अलग अकेले में जीने की हमें आदत डालनी होगी।"

महाराज के इन कठोर शब्द को सुनते ही शम्भूराजा ने ऐसा अनुभव किया जैसे बाढ़ के बहाव में कोई बड़ा पेड़ उखड़ कर गिर गया हो। युवराज की आँखों में आँसू आ गये। उन्होंने कहा—

"पिताजी! आपसे अलग रहने की कल्पना भी हमारे हृदय को चिथड़े चिथड़े कर देती है। एक बार इस संभाजी को हाथी के पाँव के नीचे कुचलकर मार डालने की सजा भले दे दीजिए। वह सजा मैं खुशी-खुशी स्वीकार कर लूँगा। किन्तु आपसे अलग रहने की कल्पना से मेरा हृदय विकल हो उठता है।

अचानक शम्भूराजा को अपनी दादी जीजा माता का स्मरण हो आया। उन्होंने युवराज के कान में एक ही मन्त्र दिया था—"मेरे बच्चे शम्भु तू सदैव ही शिवाजी की छाया में रहना।" लेकिन अब समय बदल गया था। पूरी दुनिया को ममता की छाया देने वाले महाराज को शम्भू के लिए समय ही नहीं था। शम्भूराजा अचानक गद्गद स्वर में बोल पड़े—"पिताजी! कभी इस पागल संभाजी के बिना शिवाजी महाराज जीवित रह सकेंगे किन्तु आपकी छाया से दूर होकर इस संभाजी का जीवित रहना असम्भव है। बस वही हमारा दोष है।"

शिवाजी महाराज ने अनुभव किया कि कहीं कोई भूल हो रही है। शम्भूराजा ने अपनी जन्मदात्री माँ का मुँह कभी नहीं देखा था। पुत्र के समान प्रेम से पालने वाली उनकी दादी जीजा माता भी कभी की भगवान को प्यारी हो गयी थीं। शिवाजी महाराज सोचने लगे, राज्याभिषेक समारोह तक जिसे होनहार पुत्र मानते थे; जिसने छोटी उम्र में कर्नाटक में कोलार की वतनदारी सम्भाली थी; फ्रांसीसी, पुर्तगाली, अँग्रेज जैसे अनेक देशों के वकील महाराज से मिलने से पहले जिससे परामर्श करते थे, जिसकी प्रखर बुद्धि और दिलेरी को देखकर लोग कह उठते थे— "यह तो भविष्य का सवाई शिवाजी है।" इस प्रकार जिसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा होती थी वही अपना पुत्र पास होते हुए भी दूर जा रहा है। किसी-न-किसी से अवश्य चूक हो रही है। यह सोचकर शिवाजी विचलित हो उठे और शम्भूराजा को बाँहों में भर लेने के लिए आगे बढ़े लेकिन शम्भूराजा तो वहाँ थे ही नहीं। वे और

उनके पीछे येसूबाई राजमहल का आँगन पार करके बाहर निकल रहे थे। शिवाजी महाराज, आश्चर्यचकित होकर शम्भूराजा को पीछे से देखते रह गये।

तीन

उस दिन महादरवाजे के पहरे पर रायप्पा था। दोपहर में किले पर चहल-पहल कम होती है। उसी समय एक सजी हुई साँड़नी दरवाजे के सामने आकर खड़ी हुई। उसके साथ भास्कर ठाकुर और दो फिरंगी सवार थे। उनके आते ही पहरे पर तैनात सूबेदार ने अन्दर जाने का संकेत किया। वे लोग अन्दर प्रवेश करने ही वाले थे कि रायप्पा अड़ गया। वह कड़ी आवाज में पूछने लगा—

"कौन हैं आप? कहाँ से आये हैं?"

"जाने दे रे रायप्पा, गोवेकर वकील रामजी ठाकुर के लोग हैं। उनको अण्णाजी पन्त के बाड़े में जाना है।" ऐसा लगा कि सूबेदार को उनके आने के पहले से ही उनके बारे मं जानकारी थी। रायप्पा कुछ हड़बड़ाया किन्तु तत्काल सँभलते हुए बोला, "वकील के लोग हैं तो उन्हें महाराज को मिलना चाहिए।"

"परन्तु उनको पन्त सुरनवीस (एक पद) को मिलना होगा तो?"

"पर इस प्रकार का आदेश कहाँ सूबेदार?"

"रायप्पा किसलिए फालतू बखेड़ा करता है? बड़े महाराज आज किले में नहीं हैं।"

"तब ये लोग युवराज से मिलें।"

सूबेदार रायप्पा को मनाने लगा। इससे रायप्पा और सावधान हो गया। वह बाहर से भले ही जंगली और मतलबी दिखे लेकिन जंगली पक्षियों की धीमी आवाज की तरह चोरों की हल्की आवाज को सहज ही पहचानता था। इसलिए पुर्तगाली वाइसराय के वकील का अण्णाजी पन्त को चोरी से कुछ भेजने में उसे दाल में काले की शंका हुई। उसने गोवेकर लोगों को वहीं पर रोककर युवराज के पास सन्देश भेजा। शम्भूराजा का आदेश मिला तो रायप्पा ने सभी को ले जाकर शम्भूराजा के दरवाजे पर खड़ा किया।

शम्भूराजा ने भास्कर ठाकुर से कड़ी आवाज में पूछा, "सच-सच बताओ, किसका है यह सामान? क्या है इस सन्दूक में?"

लिपिक गोवेकर हड़बड़ा गया। उसने साफ-साफ बोल दिया—"दो बड़े

रत्नहार हैं। फिरंगियों के वकील रामजी ठाकुर ने गोवा से भेजे हैं।"

"किसके लिए?"

"सुरनवीस अण्णाजी पन्त के लिए।"

"ईनाम के रूप में?"

"वैसे नहीं। पर...।" भास्कर ठाकुर ने 'त...त...प...प' हकलाते हुए सारी बात साफ कर दी। उसने बताया—"क्या हुआ युवराज कि दो महीने पहले हमारे वकील स्वयं महाराज से मिलने के लिए रायगढ़ आये थे। तब उन्होंने वाइसराय की ओर से एक बहुमूल्य उपहार महाराज को दिया था।

"ठीक है। फिर?"

"परन्तु...परन्तु...उस समय सुरनवीस अण्णाजी पन्त और मोरोपन्त पेशवा के लिए कुछ ले आना भूल गये थे। मोरोपन्त ने तो इस विषय में एक शब्द भी नहीं कहा किन्तु अण्णाजी ने पिछले तीन महीने में तीन चिट्ठियाँ भेजीं। रामजी पन्त को बहुत पीड़ित किया। पन्त ने कहा— "राज्य के कार्य व्यापार में कर्मचारी असन्तुष्ट हो जाय तो बड़े-बड़े काम भी धूल में मिल जाते हैं। इसलिए..."

"आगे?"

"आगे बोले तो उन्होंने दो बड़े रत्नहार खरीद लिये। वही लेकर हम आज पन्त को मिलने के लिए आये हैं।

"ठीक है। युवराज की हैसियत से हम इसे स्वीकार करते हैं।"

शम्भूराजा ने बगल में देखा। वहाँ पर पीठ पर अपने लम्बे बालों को खुला छोड़े, ऐंठी मूँछों वाले, गेहुँए रंग के, तीस वर्ष के, बलिष्ठ और लम्बी कद काठी के कवि कलश खड़े थे। उनकी ओर देखते हुए युवराज ने कहा, "कविराज इन लोगों को लिखित रसीद दे दीजिए और इन्हें तुरन्त वापस जाने दीजिए।"

गोवेकर दूत चले गये तब हाथ जोड़कर कवि कलश ने युवराज से निवेदन किया—"राजन! थोड़े संयम से काम लें। रुकना सीखें।"

शम्भूराजा हँसते हुए बोले, "क्यों? अण्णाजी पन्त तो उठते बैठते नाक ऊँची करके ही बोलते हैं न कि, 'हम किसी लफड़े में पड़ते ही नहीं हैं। चालीस साल से बहुत ही ईमानदारी के साथ महाराज की सेवा की है। वे ऐसा ही दावा करते हैं न'?"

"परन्तु राजन! आप इन रत्नहारों का क्या करेंगे?"

"जिनकी चीज है उनको दे देंगे। परन्तु उसे माँगने के लिए उन्हें मुझसे मिलना चाहिए।" शम्भूराजा ने हँसते हुए कहा।

उसी शाम को अण्णाजी के छोटे भाई सोमाजी बड़ी शीघ्रता से शम्भूराजा के पास आये और कहने लगे, "युवराज दो महीने पहले बड़े भाई ने गोवा में पैसे भेजे

थे। वहाँ के एक फिरंगी मुनार को दो रत्नहार बनाने का काम दिया था।"

"तो?"

"बाकी कुछ नहीं, परन्तु परन्तु ऐसा मालूम पडा है कि आज वे लोग आकर भूल से आपसे मिलकर गये।" यह कहते-कहते सोमाजी का गला सूख गया।

"सोमाजी बाबा! आप जैमा कह रहे हैं उमी तरह मे वह चीज यहाँ पहुँच गयी है। आपकी बात मच है।"

"वाह! बहुत अच्छा।"

"लेकिन वह चीज यहाँ फिरंगी सुनार ने नहीं भेजी है। वह लेकर पुर्तगालियों के वकील रामजी ठाकुर के आदमी यहाँ आये थे। हमारी समझ में यह नहीं आ रहा है कि गाँव के सुनार अपनी चीजों को पहुँचाने के लिए वाइसराय के कर्मचारियों को कब से काम में लगाने लगे।"

शम्भूराजा की कठोर और हृदय को भेद देने वाली पूछताछ से सोमाजी बाबा हड़बड़ा गये। वे अपने माथे का पसीना उत्तरीय के छोर से पोंछने लगे। शम्भूराजा अधिक क्रुद्ध होकर बोले, "जाकर बोलो अण्णाजी चाचा को, बोलो कि सारी बात हमें मालूम है। स्वराज्य के छत्रपति हमारे पिताजी नियम के अनुसार स्वयं अपने उपहारों अथवा भेंट वस्तुओं को सरकारी रत्नशाला में जमा कराते हैं। क्योंकि यहाँ का प्रत्येक कण हिन्दवी स्वराज्य का है, राजा का नहीं है। ऐसी हमारी धारणा है। आप कर्मचारी लोग जबरदस्ती जो उपहार मँगाते हो उसे कहाँ जमा करते हो। बस इतना ही हमें बता दो।"

सोमाजी दत्तो बिना कुछ बोले, सिर नीचा किये निकल गये। बाद में अण्णाजी के यहाँ से वह उपहार माँगने कोई नहीं आया। चार दिनों बाद ही राजमहल में किसी कारण मे बड़े महाराज ने अष्टप्रधान और अन्य कर्मचारियों के लिए भोजन का आयोजन किया था। भोजन में महाराज के साथ अण्णाजी, शाहूजी, सोमनाथ, बालाजी और शम्भूराजा थे। बालाजी और आवजी शिवाजी महाराज के सबसे करीबी थे। महाराज उन्हें बहुत मानते थे। अण्णाजी पन्त साँवले, मजबूत हड्डियों वाले ही नहीं बहुत हट्टे कट्टे भी थे। मोरोपन्त लम्बे चेहरे और लम्बी नाक वाले थे। उनकी आँखें छोटी छोटी और मोती जैसी चमकदार थीं। मस्तक पर चन्दन की ऊँची सीधी रेखा। वाणी कुछ कुछ खरज में। बुढ़ापे की शरीर पर स्पष्ट छाया। पीठ थोड़ी झुकी हुई दिखती थी। किन्तु उनके शरीर में उत्साह की कमी न थी। बच्चों जैसे उत्साह से भरे वे दरबार में घूमते थे।

महाराज ने इससे पहले मोरोपन्त और अण्णाजी पर बहुत से जिम्मेदारो के काम सौंपे थे। दोनों ही महाराज के पुराने बुद्धिमान और कर्तव्यपरायण साथी थे। किन्तु उन दोनों में मनोमालिन्य और मनमुटाव बहुत था। राज्य के कार्यव्यापार कम-

से-कम बोलने वाले और फूँक-फूँक कर कदम रखने वाले अण्णाजी आज अपनी भीतरी बेचैनी रोक नहीं पाये। वे शम्भूराजा की ओर देखते हुए शिवाजी महाराज से बोले, "महाराज फिरंगी गढ़ाई के रत्नहार बहुत सुन्दर होते हैं। इसीलिए पैसे भेजकर गोवा से मैंने दो हार मँगवाये थे।"

"कुछ तो हम भी सुन चुके हैं।" महाराज ने कहा।

"परन्तु उनकी गढ़ाई इतनी अच्छी निकली, शम्भूराजा को इतनी अच्छी लगी कि क्या बताऊँ? उन्होंने उन हारों को अपने पास रख लिया।" अण्णाजी ने स्पष्ट किया।

अण्णाजी के तीरों के निशाने से शम्भूराजा तनिक भी विचलित न हुए। उन्होंने तत्काल अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की—

"आप इसी क्षण पता करवा सकते हैं। वह चीज मैंने सरकारी रत्नशाला में जमा की है। उसकी रसीद हमारे पास है।"

अण्णाजी एकदम चुप हो गये। सरकारी लिपिकों के चेहरे भी देखने लायक हो गये थे।

शम्भूराजा की तरुणाई और उनका चुलबुला स्वभाव उन्हें चुप नहीं बैठने दे रहे थे। महाराज की ओर देखते हुए उन्होंने कहा—

"पिताजी। आप ही हमेशा सबको बताते रहते हैं कि हमारे कर्मचारियों और सरदारों को दूसरे राजाओं के वकीलों और दीवानों का एहसानमन्द नहीं होना चाहिए। इसका परिणाम अपने राज्य के भीतर की कार्यप्रणाली पर होता है, राज्य को हानि पहुँचती है।"

शम्भूराजा की बात समाप्त होने पर राहुजी सोमनाथ को जोर की खाँसी आयी। अन्य लोगों की स्थिति भी कुछ विचित्र सी हो गयी। शम्भूराजा की बात पर बड़े महाराज कुछ नहीं बोले। इससे सभी को बहुत आश्चर्य हुआ।

दूसरे दिन शाम को अण्णाजी के घर पर शतरंज की बाजी खेली जा रही थी। राहुजी सोमनाथ को खेल के राजा, ऊँट और हाथी के बदले बाहर के गधे की याद आयी। सामने एक मोहरा रखते हुए वे बोले, "गधे के कान कभी लम्बे होने से कुछ नहीं बिगड़ता। लेकिन युवराज के कान लम्बे हो गये तो खतरा उत्पन्न करते हैं। करो रे करो। कुछ दवा दारू करो। वैद्य को बुलाओ।"

इस बात पर अण्णाजी विषादपूर्वक हँसते हुए इतना ही बोले—"चलता है राहुजी! अनादिकाल से चलता आया है, कर्मचारी और सैनिक अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उठाकर राज्य को बढ़ाते हैं। किन्तु थोड़े आराम के दिन आने पर वे जब खुली हवा खाने के मनसूबे बनाते हैं तो मन को मारना पड़ता है। उस समय तक सरलता से उपलब्ध सुख भोगने के लिए उत्तराधिकारी नाम के गुंडे राजमहल में तैयार हो ही जाते हैं। अपने भाग्य में ऐसा ही लिखा होगा तो हम क्या करेंगे?"

"नहीं, नहीं! चाहें तो अपने लेख को लपेट लीजिए। किन्तु इस प्रकार अनधिकारी व्यक्ति से ऐसा अपमान नहीं होना चाहिए।" गहुजी सोमनाथ ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया।

चार

सन्ध्या समय की शीतल वायु मन्द मन्द बह रही थी। शम्भूराजा के महल के पीछे एक छोटा सा बगीचा था। संभाजी और येसूबाई की गृहस्थी के साथ वह भी फलता फूलता गया। बगीचे में ही एक पुराना गूलर का पेड था और बेंत का वन था। उस वृक्ष की एक मोटी टहनी पर पीतल की जंजीरों से बना झूला पड़ा था। उसी झूले पर युवराज और युवराज्ञी बैठे कुछ बातें कर रहे थे। सामने हिरनों के बच्चे खेल रहे थे। बीच बीच में गूलर के फल नीचे टपक जाते थे।

युवराज और युवराज्ञी को इस प्रकार की शान्ति बहुत दिनों बाद मिली थी। येसूबाई ने युवराज को टटोलते हुए गम्भीरता से कहा "राजा को सभी प्रकार के अधिकार होते हैं। राजा की इच्छा ही अन्तिम आदेश बन जाती है। अपने राज्य की प्रत्येक उत्तम और सुन्दर वस्तु पर उसी का अधिकार होता है। इसीलिए राजा, यदि राज्य की यदि कोई सुन्दर युवती मन को भा गयी तो गाय बैल की तरह कभी भी उसे भगाकर अपने जनानखाने में कैद करके रखने का जुर्म भी करता है। ऐसा नहीं है क्या?"

"येसू! आप यह क्या कह रही हैं? ऐसे निर्लज्ज अत्याचार केवल यवनों और सुल्तानों के ही राज्य में होते हैं। शिवाजी महाराज के स्वराज्य में नहीं।"

"युवराज! सच बोल रहे हैं आप?" हँसते हँसते येसूबाई की पुतलियाँ कठोर हो गयीं—"तो फिर युवराज! महाराज के पुत्र संभाजी राजा द्वारा ऐसा अत्याचार क्यों किया गया?"

"कौन सा अत्याचार?"

"अण्णाजी दत्तो प्रभुणीकर तो शिवाजी महाराज के एक आधारस्तम्भ हैं। उनकी लाड़ली बेटी हंसा पर अत्याचार करके आपने कौन सी बहादुरी दिखायी?"

संभाजी राजा जैसा शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला व्यक्ति भी येसूबाई के अप्रत्याशित हमले से हड़बड़ा गया। रायगढ के परिसर में एक समय शिवाजी

महाराज की माता जीजाबाई के शब्दों का जो आदर और प्रभाव था, वही उत्तराधिकार येसूबाई के पास अपने आप चला आया था।

शम्भूराजा से वे एक-डेढ़ वर्ष छोटी थीं। किन्तु, उनके ममतालु, कर्तव्यपरायण और सर्वसमावेशक व्यक्तित्व ने एक अलग ऊँचाई प्राप्त कर ली थी। कद से ऊँची, लम्बोतरे चेहरे वाली, देखने में सुन्दर नाक नक्श वाली, तन्वंगिनी, झुमकेदार नथ पहनने वाली, उत्साही तरुणी येसूबाई रायगढ़ के अन्त:पुर में आकर्षण का केन्द्र थीं। शम्भूराजा की सोयराबाई जैसी अनेक मातायें वहाँ रह रही थीं। परन्तु येसूबाई जैसी चमक और आदर किसी के भी व्यक्तित्व को नहीं मिल पाया था।

संगमेश्वर नगर के पास, कुछ ही कोसों की दूरी पर अन्दर पहाड़ियों में शृंगारपुर की बस्ती थी। वहाँ के सूर्यराव सुर्वे स्वयं को शृंगारपुर का शाहंशाह मानते थे। उनका व्यवहार भी उसी तरह निरंकुश था। दाभोल और संगमेश्वर जैसे बड़े दो बन्दरगाह उनके अधिकार में थे। अनुमानत: सौ सौ से अधिक बड़े जहाज सूर्यराव ने बनवाये थे या चुराकर प्राप्त किये थे। रत्नागिरी, दाभोल से लेकर हरिहरेश्वर तक के समुद्र तट पर उनका शासन था। विशेषरूप से मक्का-मदीना जाने वाले यात्रियों और विदेशी जहाजों को लूटकर सारी सम्पत्ति हड़प लेना सूर्यराव का मुख्य कार्य था। यही सूर्यराव येसूबाई के नाना थे।

येसूबाई के पिता पिलाजी शिर्के एक प्रमुख सरदार के रूप में सूर्यराव के दरबार में सेवारत थे। वे वहीं समीप के कुटरे गाँव के निवासी थे। पिलाजी राव शिर्के भी शिवाजी महाराज के पराक्रम को वर्षों से सुनते आये थे। किन्तु महाराज ने जब से स्वराज्य की स्थापना की, तभी से महाराष्ट्र के मुसलमान और मुसलमानों का पक्ष लेने वाले जागीरदार मराठे उनका घोर विरोध कर रहे थे। ये तथाकथित जागीरदार एक ओर तो विदेशियों के जूते पोंछते थे और दूसरी ओर जाति और कुल के आधार पर स्वयं को शिवाजी महाराज से श्रेष्ठ मानते थे। सूर्यराव भी उसी जाति कुल के थे। शिवाजी महाराज के साथ सूर्यराव का द्वेष इतना बढ़ गया था कि वे महाराज के विरोध में ऐन मौके पर उनके विरोधी जावलीकर मोरे से जा मिले और महाराज के विरोध में लड़े थे। सिद्धी और जौहर ने जब पन्हाला पर घेरा डाला था तब भी सूर्यराव जौहर की सहायता के लिए दौड़े थे।

कुछ साल पहले शिवाजी महाराज कोंकण की लड़ाई के लिए गये थे। तभी उन्होंने सूर्यराव के सारे अपराध क्षमा करके सूर्यराव को सुधरने का एक अवसर दिया था। किन्तु अपने स्वभाव के अनुसार सूर्यराव साँप के तरह उन्हीं पर उलट पड़ा। उसने महाराज के सैनिकों को बहुत कष्ट दिया ही, महाराज के बुलाने पर भी पालवण में उनके सामने हाजिर नहीं हुआ। सूर्यराव के स्वराज्यद्रोह से महाराज बहुत क्रुद्ध हुए। एक बार इस संकट को मिटा देने का निश्चय करके महाराज ने

शृंगारपुर पर आक्रमण किया। इस खबर के मिलते ही सूर्यराव अपनी राजधानी छोड़कर पास के जंगलों में भाग गया।

सूर्यराव की गद्दारी से सन्तप्त शिवाजी महाराज ने उनके सिंहासन को पैर की ठोकर से गिरा दिया। संयम का बाँध टूट चुका था। महाराज ने शृंगारपुर पर छापा मारा था। सुर्वे की सम्पत्ति जब्त की जा रही थी। तभी छः-सात साल की गोदू कभी झरोखे से तो कभी पर्दे के पीछे से बड़े महाराज को बड़े आदर से, भयमिश्रित आदर से देख रही थी। अपने नानाजी का भाग जाना उसे बहुत बुरा लग रहा था। उसके पिता पिलाजी शिर्के बड़े धैर्य के साथ वहीं पर रुके हुए थे।

सुर्वे की सम्पत्ति की गिनती हो रही थी। कर्मचारी वहाँ के सोने चाँदी के बड़े बर्तन, सिर तक ऊँचे दीपाधार, नक्काशीदार बड़े बड़े हंडे, कलश आदि सामान बाँधे जा रहे थे। उसी ममय महाराज उन्हें देखने के लिए वहाँ आये। चमकते हुए दीपाधार और साफ सुथरे सोने चाँदी के बर्तन देखकर महाराज चौंक गये। उन्होंने कहा, "ऐसी वस्तुएँ राजमहलों में भरी पड़ी मिलती हैं किन्तु ऐसी स्वच्छता, सफाई, इतना सुन्दर रखरखाव, ऐसी सजावट बिना किसी जानकार और ममझदार स्त्री की देख-रेख असम्भव है।"

"महाराज! यह जादुई करामात मेरी कन्या येसू की है।"

पिलाजी ने निवेदन किया।

महाराज दूसरे दालान में प्रविष्ट हुए। तभी नौकरों को हिदायत देती हुई छोटी सी येसू उनको दिखी। वह बड़े आत्मविश्वासपूर्वक खड़ी थी। शीशे के सामान को बाँधते ममय क्या सावधानी रखनी चाहिए, ऊँचे सामानों को कैसे बाँधना चाहिए, ऐसी हिदायतें वह नौकरों को दे रही थी।

महाराज धीरे धीरे आगे बढ़े। उन्होंने येसू के मस्तक पर कोमलता से अपना हाथ रखा। उस हँसमुख, उत्साही, प्रसन्न, स्वच्छता और अनुशासन की आग्रही येसू को महाराज ने अपनी बाँहों में भर लिया। उन्होंने पिलाजी से कहा, "पिलाजी राव! आपके ससुर सूर्यराव पर हमें इतना क्रोध आया था कि सारे शृंगारपुर को भस्म कर देने का हमने निश्चय कर लिया था। किन्तु आपकी इस छोटी बच्ची ने हम पर जादू का असर डाला है। यह सारी सम्पदा तुम अपने पास रख लो। हम तुम्हारे राजमहल से केवल एक बहुमूल्य चीज लेकर जाने वाले हैं।"

महाराज की बातों से चिन्ताग्रस्त पिलाजी राव को सुखद धक्का लगा। महाराज ने कृतज्ञता के भाव से पिलाजी राव से कहा, "अपने शम्भूराजा के लिए हमें एक अच्छी कन्या की तलाश थी। ऐसी सुन्दर और कर्तव्यकुशल लड़की हमें दूसरी कहाँ मिलेगी?

पिलाजी राव की आँखों में आँसू उमड़ आये। उन्होंने महाराज के पैर पकड़

लिए। उन्होंने कहा, "महाराज! हम पराजित हैं। उससे भी अधिक हम स्वराज्यद्रोही हैं। आप मेरी बेटी को इतना बड़प्पन क्यों दे रहे हैं? आपके शम्भू के लिए ऐसी बहुत सी लड़कियाँ मिल जाएँगी।"

"नहीं पिलाजी राव, घर के किसी वर्तन पर जरा सा दाग लगने पर भी जिसकी जान निकलने लगती है, वही बच्ची कल जब गृहलक्ष्मी बनकर हमारे महल में आयेगी तो उसके चरण स्पर्श से हमारा राजमन्दिर असली मन्दिर के रूप में बदल जाएगा।"

उन दो तीन दिनो में बहुत सी घटनाएँ घटीं। शिवाजी महाराज ने येसूबाई और शम्भूराजा का विवाह तो निश्चित किया ही साथ ही पिलाजी राव और उनके घर के संस्कार को इतना पसन्द किया कि महाराज ने अपनी कन्या, नानीबाई उर्फ राजकुँवर की सगाई पिलाजी राव के पुत्र गणेशजी के साथ पक्की कर दी। सूर्यराव के उद्धत स्वभाव और निरंकुश व्यवहार की छाया पिलाजी राव ने अपने ऊपर नहीं पड़ने दी थी। पिलाजी राव के नेतृत्व में ही दूर दराज में बसा यह शृंगारपुर महाराष्ट्र की प्रतिष्ठित विद्यानगरी में परिवर्तित हो गया था। तमाम देशों के बहुत से पंडित, विद्वान, तान्त्रिक, अनेक विद्याशाखाओं के अगद्रन इस परिसर में अपना मठ बनाकर या गुफाओं मे पनाह लेकर विराजमान थे। पिलाजी राव ने केशव पंडित और रघुनाथ पंडित जैसे विद्वानों से अपने बच्चों को पढ़ाया था। किन्तु पढाई मे गणेशजी की अपेक्षा येसूबाई की लगन अधिक थी।

कर्तव्यपरायण पिलाजी राव ने येसूबाई के दहेज मे हीरे मोतियो से भरी बोरियाँ रायगढ़ नहीं भेजी थीं। परन्तु केशव पंडित और रघुनाथ पंडित दोनो बन्धुओं को ससुराल जाती गोद के साथ भेजना नहीं भूले।

रायगढ़ में पाठशाला आरम्भ हो गयी। अन्य बच्चों के साथ छोटी येसू और शम्भूराजा एक साथ हो पढ़ रहे थे। अपनी धर्मपत्नी समझने के पहले शम्भूराजा ने येसूबाई को अपनी सहपाठिनी और सहयोगिनी के रूप मे मन मे बिठा लिया।

आज अचानक येसूबाई ने हंसा की बात छेड़ी तो शम्भूराजा कुछ हड़बड़ा गये। येसूबाई का राजमहल और शम्भूराजा के हृदय में कुछ विशिष्ट स्थान था। इसीलिए शम्भूराजा उठ खड़े हुए और बेचैनी से इधर उधर घूमते हुए, हाथ हिलाकर बोले—

"युवराज्ञी! आप यह कैसे भूल रही हैं कि हम युवराज हैं। यदि कोइ युवती हमारे मन में बैठ गयी तो हम उसके साथ सीधे सीधे विवाह करेंगे और एक रानी के लिए महल बनवाने के लिए रायगढ़ में जगह की कमी है क्या?"

"मगर युवराज हंसा अण्णाजी पन्त की कन्या थी।"

"किसी को भी होने दो। परन्तु यहाँ तो सुन्दर स्त्रियों का नाम मेरे साथ

चिपकाने का सभी को शौक चढ़ा है।"

येसूबाई हल्के से हँसी। अपनी हँसी को दबाते हुए किन्तु बड़े आत्मविश्वास के साथ कहने लगी—"स्वामीजी के सौन्दर्य की प्रशंसा और वाहवाही की एक से बढ़कर एक कहानियाँ आजकल सुनने को मिलती हैं। परसों रायप्पा और जोत्याजी बता रहे थे..."

"क्या?"

"...स्वामी पर भगवान ने सौन्दर्य का सारा वैभव, सब कुछ इस तरह निछावर कर दिया है कि आजकल स्वामी कहीं शिकार खेलने जाते हैं तो नदी में या किसी खुली जगह पर स्नान नहीं करते। क्योंकि युवराज का कम कपड़ों में गोरा चिट्टा शरीर जादू का असर करने लगता है। कलशे लेकर पानी भरने आने वाली युवतियाँ वहीं पर बेहोश होकर गिर पड़ती हैं। ऐसा चार पाँच बार हो चुका है।"

"युवराज्ञी! ऐसा लगता है कि आपका भी अपने पति राजा पर पूरा ध्यान रहता है।"

"मेरे स्वामी में कितने विलक्षण गुणों का समन्वय है। तलवार हो या कलम दोनों ही स्वामी के वश में हैं। दोनों ही तेजी से चलती हैं। दोनों से संगी-साथी और शत्रु-मित्र डरते हैं। सौन्दर्य के बारे में तो कहना ही क्या? एक बार भूल से भी स्वामी मदन के महल के सामने से गुजरें तो मदनदेवता अपने आसन से तुरन्त खड़े हो जाएँगे और स्वामी का हाथ पकड़कर अपने साथ भोजन पर बिठाकर सम्मानित करेंगे।"

"परन्तु येसू, प्रेम करने की ठान लेने पर राजा को कोई कमी रहती है क्या? सत्ताधीश से अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले ऐसे दुष्ट नामर्दों की कमी है क्या जो अपनी पत्नियों, जवान बहू बेटियों का हाथ पकड़कर पीछे के दरवाजे से आ जाते हैं।

परन्तु एकतरफा प्रेम करके कोई हंसा मेरे लिए पागल हो जाय तो इसमें मेरा क्या दोष है?"

येसूबाई शम्भूराजा को एकटक देखने लगी। पवन की गति तेज हो गयी। झूले में लगी जंजीरों की कड़ियाँ करकराने लगीं। उसी समय किसी जरूरी काम से गोदू पीछे के दरवाजे से आयी। हंसा नाम जब उसके कान में पड़ा तो वह वहीं दीवार के साथ छिपकली-सी चिपककर अपने प्राण को कानों में रोककर सुनने लगी।

शम्भूराजा उसी वेग से आगे कहने लगे, "येसू! वह हंसा हर जगह मेरा पीछा करती थी। देखने में वह चित्र जैसी सुन्दर थी। बहुत ही सात्विक स्वभाव की। अण्णाजी काका की पुत्री होने के कारण वह छोटी उम्र से ही राजमहल में खेलती-

कूदती थी। बचपन में कभी हमारी पीठ पर भी बैठती थी। लड़कियाँ जवान होने लगती हैं तो तीन-चार सालों में ही बहुत बड़ी दिखने लगती हैं। एक कीट का रूपान्तर तितली के रूप में कब हो जाता है, पता ही नहीं चलता। बड़ी होने पर हंसा को मैं टालने लगा। अण्णाजी पन्त तो हमारे पिताजी के बड़े भाई जैसे हैं।''

''इसका मतलब भविष्य के परिणामों की कल्पना स्वामी को थी?''

''हमें ही नहीं अण्णाजी पन्त को भी हंसा के पागलपन का अनुमान हो गया था। इसीलिए उन्होंने आनन-फानन में उसकी शादी निश्चित कर दी। शादी के बाद वह पहली बार पाचाड़ अपने मायके आयी थी।''

उसी समय वसंत पंचमी का दुर्भाग्यपूर्ण त्योहार आया। दोपहर के समय उस पार के महल में महिलाओं और लड़कियों की हुड़दंग मची थी। उस समय येसू आप भी वहीं पर थीं। यह पागल लड़की उस भीड़ से बाहर निकल आयी। मैं उस समय अपने महल में कविताएँ रचने में विभोर था। मैंने पहरेदारों को आदेश दिया था कि वे किसी को भी अन्दर न आने दें। परन्तु हंसा यह झूठ बोलकर मेरे महल मे घुस आयी कि मैंने ही उसे बुलाया है। प्रेम के ज्वर ने उसे इतना उन्मत्त कर दिया था कि पीछे से आकर उसने मुझे अपनी बाँहों में भर लिया। वह अपने प्यासे ओठों से मेरे मस्तक को चूमने लगी। हमने उसके कान के नीचे एक जोर का तमाचा मारा और चिल्लाकर कहा, ''शर्म नहीं आती तुम्हें? पन्त काका की बेटी हो तुम! किसी की विवाहिता पत्नी हो तुम!'' मेरी बात सुनकर वह पागल की तरह हँसी और घायल पंछी की तरह हमारे पास आकर मेरा हाथ पकड़कर बोली, ''हमारी देह से जवानी फूटी पड़ रही है। उसका अभिषेक तुम पर कराने के लिए मैं आयी हूँ, राजा।'' मैंने उसको दूर ढकेल दिया और उससे कहा, ''मूर्ख लड़की! तेरी इस मूर्खतापूर्ण हरकत से महल में सुरंग लग जाएगी।'' तब भी वह जाने को तैयार न थी, हटने का नाम ही नहीं ले रही थी। तब मैंने उसे दो तीन तमाचे लगाये। हमने उससे पूछा, ''तुम पागल हो गयी हो क्या?'' वह जोर हँसी और बोली, ''राजा प्रेम में जो पंछी अन्धा हो जाता है उसे तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। इसीलिए तो परवाना शमा पर झपट पड़ता है और आग में मिट जाता है।''

अन्त में मैंने हंसा को समझाते हुए पूछा, ''तुमको क्या चाहिए?'' वह फिर से हँसने लगी। उसकी हँसी बहुत ही रहस्यमयी और भयानक थी। वह बोली, ''आपकी पौरुषेय सुन्दरता के सामने मुझे मेरा पति एकदम लल्लू लगता है, राजा। पिछले तीन सालों से मैं आपके लिए मशाल की तरह दिन-रात जल रही हूँ सिर्फ एक बार मुझे अपनी बाँहों में ले लो।''

वह किसी भी तरह मुझे छोड़ने को तैयार न थी। मेरी कमर को उसने मगरमच्छ की तरह लपेट रखा था। उसके इस पागलपन और पन्त के महल के साथ

रिश्ते आदि को समझाने का मैंने बहुत प्रयास किया। मैंने यह भी स्पष्ट शब्दों में कहा कि, "तुम्हारे इस पागलपन का मुझ पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है।" मेरा एक घूँसा उसके मुँह पर लगा। उसके दाँतों से खून टपकने लगा। उसके होंठ का एक कोना सृज गया। मेरे स्पष्ट अस्वीकार से वह दुखी और घायल हो गयी। हमारे महल से बाहर निकलते समय उसकी लाल लाल आँखों में आँसू टपक रहे थे। मुझे देकर आँखें नचाते हुए उसने केवल इतना कहा, "राजा तुम्हारी 'हाँ' का मैं सिर्फ तीन दिन प्रतीक्षा करूँगी। इसके बाद चौथे दिन आप मेरा शव देखेंगे।"

हमारे महल से हंसा तुरन्त बाहर निकली। उसी समय पन्त काका उसे ढूँढ़ते हुए आये और अस्त व्यस्त वस्त्रों में मेरे दरवाजे से उसे निकलते हुए देखा। किन्तु अपने लोगों को हर कठिनाई से बचाने के लिए संकल्पित मेरा मन किसे दिखाई पड़ता? येसू रानी इस घटना को मैं किस मुँह से तुम्हें, पिताजी को या पन्त काका को सुनाता? इसके अतिरिक्त भविष्य में ऐसा कुछ घटित होगा, इसकी कल्पना मुझे नहीं थी। चार पाँच दिन बाद लोगों ने पाचाड़ के एक कुएँ में हंसा के शव को देखा। मैंने भी यह खबर सुनी। मेरी तो बोलती ही बन्द हो गयी। जवानी की बेहोशी में, प्रेम के पागलपन में हंसा जैसी बहू इतनी सरलता से चली गयी। किन्तु जो अपराध हमारे हाथ से हुआ ही नहीं उस अपराध का लांछन हमारे कलेजे पर लगाने और बदनामी की आग में जलाने के लिए यह दुनिया हमारी कल्पित प्रेम कहानी को गढ़ती बैठी है और आगे भी गढ़ती रहेगी।

पाँच

शम्भूराजा ने रात का भोजन समाप्त किया। शयनकक्ष में जाने से पहले उन्होंने येसूबाई से सहज ही पूछा, "फिर क्या करना होगा गोदू का?"

"कहाँ जाएगी बेचारी?" येसूबाई ने कहा, "उसके तो न रही ससुराल और न रहा मायका।"

"यहाँ पर बहुत से लोग शरण लिए हैं। दास-दासी महल में रहते हैं। वह भी उन्हीं के साथ रह लेगी।"

वाड़कर का घर महाड़ के समीप था। वैसे वहाँ हर प्रकार की सुविधा थी। किन्तु गोदू के लिए वहाँ की दुनिया समाप्त हो चुकी थी उसके ससुर और पति किले में बन्दी होकर सजा भोग रहे थे। गोदू जब घबराई हुई शम्भूराजा के महल में

आयी थी तभी येसूबाई ने उसकी पीठ पर अपना कोमल हाथ रख दिया था। इतना बड़ा राजमहल छत से लटकती बड़ी-बड़ी झूमरें, कमर तक ऊँचे दीपाधार। यह महल गोदू को गन्धर्वनगरी के महल जैसा लगा था।

येसूबाई के महल के पीछे उनकी खास दासियों के कमरे थे। उसी में गोदू की व्यवस्था की गयी थी। किन्तु महल में आने के बाद से ही वह येसूबाई की छाया बन गयी थी। युवराज्ञी रसोईघर में, आँगन में, तुलसी वृन्दावन के पास, समीप के बगीचे में जहाँ कहीं भी हों, गोदू हर समय उनके साथ रहती थी। भगवान की पूजा के लिए फूल सजाकर रखना हो, दूर्वादल को साफ-सुथरा करके रखना हो या दीप जलाना हो, या जहाँ कहीं भी ऐसी आवश्यकता हो युवराज्ञी को गोदू की ही याद आती थी। गोदू भी सदैव उत्साह से तैयार रहती थी। गोदू जवाकुसुम के बड़े फूल जैसी हँसमुख और तेजस्वी थी। येसूबाई की सौत दुर्गादेवी को भी गोदू से प्यार हो गया था। राजमहल में हर जगह गोदू का आना जाना बढ़ गया था। अनेक वर्षों से महल में काम करने वाली दासियाँ और साफ-सफाई करने वाली नौकरानियाँ गोदू को शक और ईर्ष्या की दृष्टि से देखने लगी थीं। उनका मानना था—

"ये गोदू बहुत साहसी और षड्यन्त्रकारी दिखती है। वे गरीब इसके ससुर और पति शम्भूराजा पर आरोप लगाने गये थे और कैदखाने में सड़ रहे हैं। और यह औरत घुस गयी युवराज के महल में। युवराज पर तो पहले ही इसका जादू चल गया है। पर यह औरत इतनी होशियार है कि येसूबाई के हृदय में भी अपनी जगह बना ली है। पता नहीं किसी से यह सब कैसे हो पाता है?"

युवराज ने दोपहर को एक बार फिर पूछा, "येसू! क्या करना है गोदू का?"

"कितना खर्च होता है उसके पेट के लिए? रहने दो बेचारी को यहीं पर। हमें भी उससे सहायता मिलती है।"

"येसूबाई आपका हृदय बहुत बड़ा है। एकदम आसमान जैसा। परन्तु लोगों की जबान में जहरीले काँटे होते हैं। उनके भीतर का जहर जबान से टपके बिना नहीं रहता। फिर सामने चाहे राजा हो या रंक।"

कुछ और दिन इसी तरह बीते।

एक दिन राहुजी सोमनाथ के हाथ एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण थैली लगी। वाड़कर पिता पुत्र ने बहादुर गड़की और औरंगजेब के दूध भाई बहादुर खान कोकल्ताश को एक गुप्त सन्देश भेजकर कहा था—"जैसे पहले हमारी बात हुई है उसके अनुसार हमारी सहायता कीजिए। हमें मुक्त कराकर शाही सेवा का अवसर दीजिए। अन्ततः वाड़कर का भंडा फूट गया। 'धोखेबाज कैदी' के रूप में उन्हें लिंगाणा की काल कोठरी में भेज दिया गया। इस बात से गोदू की भूमिका दुनिया के सामने आ गयी। सभी को विश्वास हो गया कि अपने महाराज पर जो संकट

आया था वह गोदू की बहादुरी से ही टला।

इस सच्चाई का पता लगने पर युवराज और युवराज्ञी ने गोदू की बड़ी प्रशंसा की। येसूबाई ने कहा, "गोदू तू दिल की इतनी नेक और पाक है कि क्या कहूँ? तुमने अपनी ससुराल का सुख छोड़कर मराठों के राजा की जान बचाई।"

"युवराज्ञी! शिवाजी महाराज हम गरीबों के भगवान हैं।" भावना से अभिभूत गोदू ने अपने साहस के रहस्य को स्पष्ट कर दिया।

येसूबाई ने शम्भूराजा की ओर नजर घुमाते हुए कहा—

"युवराज! इस लड़की को भगाकर लाने का आरोप इसके परिजनों ने न लगाया होता तो आज इसकी बहादुरी का स्मरण करके महाराज ने इसके सम्मान में रायगढ़ पर आनन्द यात्रा निकाली होती।"

दिन बीत रहे थे। अपने सम्बन्धियों के राजद्रोही होने का धक्का अण्णाजी पन्त को भी लगा था। उन्होंने गोदू को अपने घर ले जाने का पुनः आग्रह किया। किन्तु गोदू के दृढ़ निश्चय के सामने किसी की कुछ न चली।

बीच में एक बार शम्भूराजा की बहन राणूबाई आक्का साहेब वाई से आयीं। वे अपने छोटे भाई के घर पर ठहरी थीं। उन्हें भी गोदू बहुत अच्छी लगी। किन्तु अपनी ससुराल वापस जाते हुए उन्होंने येसूबाई के कान में धीरे से कहा, "लड़की नक्षत्र जैसी है। गुणवान है। परन्तु जो भी हो है तो पराये घर की। उस पर भी इतनी स्वस्थ और सुन्दर। तुम किसका किसका मुँह बन्द करोगी, येसू!"

आक्काबाई साहेब के विचार से धीरे धीरे येसूबाई भी सहमत होने लगीं। एक दिन शम्भूराजा की उपस्थित में येसूबाई ने बात छेड़ी—"गोदू तेरे घर गृहस्थी का क्या होगा?"

"क्या करना है युवराज्ञी साहेब? पति स्वराज्य द्रोही हो गया, उसे जिन्दगी भर कैद काटना है। वह धोखेबाज जिन्दा रहे या मर जाय मेरे लिए बराबर है। अब उसका नाम भी जबान पर क्यों लाना?"

"फिर से शादी करो। हम लोग शादी के सारे खर्च, दहेज आदि की व्यवस्था करेंगे।"

"शादी! शादी करनी हो तो बस एक से ही।" गोदू स्वप्न देखती-सी बोली।

"कौन है वह?"

गोदू की नजर यकायक शम्भूराजा के ऊपर से उड़ती हुई खिड़की के रास्ते आसमान पर पहुँच गयी। आकाश में उसने एक सफेद बादल का गुच्छा देखा। एक लम्बी और गहरी साँस छोड़ते हुए वह चुपचाप बैठी रही। शम्भूराजा ने बड़े स्नेह से पूछा, "किसी के प्रेम-व्रेम में फँस गयी है क्या गोदू?"

युवराज के प्रश्न पर गोदू ने न हाँ कहा न ना। वह चुपचाप वैसे ही बैठी रही।

येसूबाई ने गोदू के लिए योग्य रिश्ता ढूँढ़ना आरम्भ क़र दिया। इस समाचार से गोदू एकदम जाग गयी। एक दिन उसने येसूबाई से कहा, "रानी साहेब एक बात कहूँ तो गुस्सा तो नहीं करेगी न?"

"बोलो।"

"उस पार की पहाड़ी में मेरी एक बुवा रहती हैं। बूढ़ी हो गयी हैं और अकेली रहती हैं। आप आज्ञा दें तो वहाँ जाकर रहूँ और उनकी सेवा करूँ।"

येसूबाई कुछ रुककर बोलीं, "ठीक है जैसी तेरी इच्छा।"

येसूबाई ने गोदू के लिए बहुत-सा सामान तैयार करवाया। राजा के कर्मचारी उसके संरक्षक बनकर साथ चले। शम्भूराजा ने सारवट गाँव के पाटिल के नाम एक पत्र लिखकर दिया। इसी गाँव में गोदू की बुवा रहती थी। शम्भूराजा ने पाटिल को लिखा था कि गोदू को जिस चीज की आवश्यकता हो उसकी व्यवस्था करें और खर्च हो उसे बाद में सरकार से माँग लें। येसूबाई से बिदा होते समय गोदू की आँखें डबडबा आयीं। महल के आँगन में चन्दन के झूले पर बैठे हुए शम्भूराजा ने झूले की जंजीरों को खींचते हुए कहा, "गोदू तुमने बड़ी बहादुरी से मेरे पिताजी की जान बचाई है। किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो अपना अधिकार समझकर माँग लेना।"

सिर हिलाकर, राजमहल और शम्भूराजा को एक बार उड़ती नजर से देखकर गोदू राजमहल से बाहर निकली।

छह

एक दिन बालाजी आवजी चिटणीस खास दरबार के पास बड़े महाराज की प्रतीक्षा करते बैठे थे। उसी समय शम्भूराजा वहाँ पर आ गये। उन दोनों के अतिरिक्त वहाँ और कोई नहीं था। एकान्त देखकर बालाजी ने शम्भूराजा से कहा, "युवराज! आजकल आप अष्टप्रधानों से बहुत सख्ती से पेश आते हैं, ऐसा लोगों का कहना है।"

"क्यों? बालाजी काका, मुझसे कोई भूल हो गयी है क्या? मैंने स्वराज्य की हानि वाला कोई कदम तो नहीं उठाया?" शम्भूराजा ने पूछा।

"ऐसा कुछ नहीं है किन्तु..." चिटणीस थोड़ा रुककर स्पष्ट रूप से बोले, "युवराज! आपकी यह सख्ती आपकी उम्र के लिए शोभाकारक नहीं है। दुनिया के

बुद्धिमान शासक अपने शत्रु से अन्धे होकर भिड़ते हैं किन्तु वही शासक अपने कर्मचारियों से शत्रुता मोल लेना टालते हैं। इसलिए जरा सँभलकर..."

बालाजी पन्त जैसे अनुभवी व्यक्ति ने ऐसी सलाह दी तो शम्भूराजा शर्मिन्दा हो गये। यह देखकर चिटणीस उनके पास सरक आये। प्यार से शम्भूराजा का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले, "युवराज! आपको हतोत्साह करने का मेरा उद्देश्य एकदम नहीं था। पर क्या किया जाय? यह दुनिया ही उल्टी है। योद्धाओं का रणभूमि में गिरा रक्त वर्षा की हल्की बौछार से धुल जाता है किन्तु लिपिकों द्वारा कागज पर गिराई गयी स्याही, लिखी गयी बातें, विशेष रूप से गुप्त बातें, अनेक पीढ़ियों के लिए जानलेवा बन सकती हैं। यह खतरा अपने आप क्यों निमन्त्रित करते हैं?"

विरह वेदना

एक

राज्याभिषेक के बाद शिवाजी महाराज पहली बार युद्ध के लिए बाहर निकल रहे थे। कर्नाटक के साथ युद्ध की तैयारी जोरों पर थी। चालीस हजार पैदल और बीस हजार घुड़सवार सैनिक लेकर शिवाजी महाराज और शम्भूराजा युद्ध के लिए निकलने वाले थे। दूसरे प्रदेश में इतनी बड़ी सेना के खाने पीने की उत्तम व्यवस्था भी आवश्यक थी। अस्त्र शस्त्र भी पूरे होने चाहिए थे। इस तैयारी के लिए किले के नीचे रायगढ़वाड़ी के जंगल में अठारह कारखाने रात दिन काम कर रहे थे। यन्त्रशालाओं, बारूदखानों और दरबार में बड़ी व्यस्तता थी।

बड़े महाराज के सामने अनेक प्रश्न थे। शम्भूराजा भोर में उठकर दिन निकलने से पहले ही दरबार में आकर बैठ जाते थे। उनसे भी पहले इनामी रायप्पा आकर युवराज की राह देखते रहते थे। रात को अपने महल में लौटने के लिए शम्भूराजा को विलम्ब हो जाता था। येसूबाई और दुर्गाबाई शम्भूराजा की बाट जोहती रहती थीं।

युवराज बहुत समझदार हो गये थे। बड़े महाराज द्वारा दी गयी प्रत्येक जिम्मेदारी बड़ी तत्परता से पूरी करते थे। समझदार पुत्र के सुख को महाराज पूरी तरह अनुभव कर रहे थे। सरदारों और मनसबदारों को अनेक बार वे स्वयं कहते थे—'इतने छोटे से कार्य के लिए मेरे पास क्यों दौड़ते हो? युवराज से मिलो। वे सक्षम हैं।' युद्ध में युवराज की महत्त्वपूर्ण भूमिका से उनके यार दोस्त बहुत प्रसन्न थे। शम्भूराजा की तैयारी के निरीक्षण और सहयोग के लिए महाराज ने बालाजी चिटणीस को अनेक हिदायतें दे रखी थीं। बालाजी पन्त युवराज के प्रत्येक कार्य पर बारीकी से ध्यान दे रहे थे। अपने साथियों के साथ घोड़ों को तेज दौड़ाते हुए शम्भूराजा आसपास के देहातों में जाते थे। चांदोशी गाँव में कोकर्णादिवा की ऊँची पहाड़ी की चोटी तक, लगभग चार हजार फीट की ऊँचाई तक दौड़ते हुए चढ़ने की

उनमें होड़ लगती थी। कभी शम्भूराजा अपने साथियों के साथ लिंगाड़े की भयंकर पहाड़ी पर रातभर रहते थे, कभी भरी हुई कालगंगा नदी में बड़ी-बड़ी जालियाँ बाँधकर मछलियाँ पकड़ते थे, कभी बाणगंगा की खाड़ी में जाकर अपने मित्रों के साथ समुद्र में स्नान करने का आनन्द लेते थे। छोटे गाँवों में गरीबों की शादी में सम्मिलित होकर युवराज लेजिम और गतका खेलते थे। इससे प्रजा युवराज की बड़ी प्रशंसा करती थी। पहाड़ियों में रहने वाले बहादुर युवक युवराज से मिलते थे और युवराज उन्हें अपनी सेना में भर्ती करते थे।

एक दिन भोगावती नदी के किनारे रहने वाला जोत्याजी कोल्हापुर से चलकर आया। उसके मन में यह देखने की बड़ी उत्सुकता थी कि शिवाजी महाराज का पुत्र कैसा है? युवराज से उसकी भेंट हो गयी। छोटी सी भेंट का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जोत्याजी जन्म भर के लिए युवराज का मित्र बन गया। एक जंगली सुअर युवराज के निशाने से छूटकर निकला तो रायप्पा ने उस पर छलाँग दी। सुअर अपने नुकीले दाँतों से उस पर वार करने लगा किन्तु रायप्पा ने उसकी गर्दन इस तरह दबोचा कि उसके प्राण ही निकल गये। इसी प्रसंग के प्रभाव से रायप्पा युवराज की सेवा में आ गया और आजन्म सेवक बना रहा। दरबार हो या मन्दिर, रायप्पा सच्चे मित्र की तरह युवराज के साथ सदैव बना रहता था। केवल कवि कलश युवराज से उम्र में दस वर्ष बड़े थे। शेष सभी यार दोस्त युवराज ने अपनी ही उम्र के अपने आसपास जमा किये थे। ये लोग अपने लाड़ले युवराज के लिए प्राण निछावर करने के लिए तैयार रहते थे।

विशेष रूप से राज्याभिषेक समारोह के बाद शम्भूराजा के व्यवहार से कुछ पंडित, शास्त्री, खानदानी मराठे रुष्ट हो गये थे। बड़े महाराज तक भी यह शिकायत गयी थी कि "संभाजी तेजस्वी हैं। बहादुर हैं। परन्तु आजकल उनका घोड़ा चारों दिशाओं में बेलगाम दौड़ने लगा है। युवराज के रूप में उनका मान सम्मान बचा नहीं है। कहीं भी—गलियों, घरों, पहाड़ों, जंगलों में भटकते रहते हैं। महार, माँग कोली, कोष्टी, धनगर, हटकरी जैसे नीच जाति के लोगों में घुले मिले रहते हैं।"

एक दिन दोपहर को शिवाजी महाराज ने युवराज को अपने पास बुलाया। उस समय महाराज मन्दिर में बैठे थे। युवराज भयभीत और सहमे हुए वहाँ पहुँचे। महाराज ने हँसकर कहा, "आप सिर्फ घाटियों में ही अपना घोड़ा बेलगाम करके न दौड़ाओ। ऐसे सच्चे लोग वहाँ रहते जिन्हें स्वार्थ की तनिक भी हवा नहीं लगी है। उन्हें जमा करो। वह धन जीवन भर आपके काम आएगा। शम्भू बेटे, तुम्हारा घोड़ा सही रास्ते पर दौड़ रहा है। ऐसे ही दौड़ते रहो।"

शिवाजी महाराज की मुख मुद्रा ऐसी लग रही थी जैसे कहीं दूसरे लोक में खो गये हों। उनके चेहरे पर ऐसी तेजस्वी आभा दमक रही थी जैसे आग के भीतर

सोना चमक रहा हो। देव सृष्टि लज्जित हो जाय ऐसा भव्य समारोह राज्याभिषेक के समय रायगढ़ पर हुआ था किन्तु तब भी शिवाजी महाराज के मुख पर ऐसी आभा दिखाई नहीं पड़ी थी। शम्भूराजा का हाथ अपने हाथ में लेकर महाराज भाव विभोर होकर बोले, "शम्भू बेटा! महाराष्ट्र केवल मराठों का राज्य नहीं है। यह देव या ब्राह्मण का भी राज्य नहीं है। महाराष्ट्र का अर्थ है महार लोगों का राज्य—परिश्रम करने वालों का राज्य। यहाँ हर एक किले के लिए एक-एक पत्थर गढ़ने के लिए, हथौड़े के साथ खेलते हुए जिन्होंने अपनी उँगलियाँ कुचल डालीं, किले के कलश की नींव में अपनी बलि चढ़ाई, उन सभी का राष्ट्र अर्थात् महाराष्ट्र।"

दो

मोरोपन्त ने अण्णाजी से कहा, "दत्तो बा, कल आन्ध्रभावल के कुनबी राजा से मिले।"

"अच्छा?" मोरोपन्त की बात सुनकर अण्णाजी दत्तो हड़बड़ा गये। बड़े महाराज मान गये। वहाँ भीषण अकाल पड़ा हुआ है। महाराज ने स्वीकृति दे दी। महसूल माफी का निर्णय भी उन्होंने तत्काल घोषित कर दिया।

अण्णाजी को यह तरीका अच्छा नहीं लगा। वे क्रोध के आवेश में बोलने लगे—"मैं उसी समय दरबार में सभी से कहकर आया था कि उस कुनबट सीधे महाराज के पास मत जाने देना। मन लगाकर खेती नहीं करेंगे, मेहनत नहीं करेंगे। राज्य के किस किस कोने से ये ग्रामीण लोग दौड़े दौड़े चले आते हैं। उठते बैठते शम्भूराजा, शम्भूराजा कहकर गला फाड़ते रहते हैं। वसूली और महसूल माफी में भी युवराज हस्तक्षेप करने लगे तो समझो कि बड़ा कठिन समय आने वाला है।"

अण्णाजी के आवेश पर मोरोपन्त ठठाकर हँसे। इस पर अण्णाजी की भौंहें और भी तन गयीं। उसी समय मोरोपन्त उन्हें शान्त करते हुए गम्भीर आवाज में बोले, "राज्य की प्रजा की शिकायतें युवराज को नहीं सुननी चाहिए क्या? क्या राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में युवराज केवल गोटियाँ खेलते रहेंगे?"

"बोलो मयूरेश्वर! आप सभी युवराज के पक्ष के हो।" अण्णाजी को क्रोध आ गया।

"अण्णाजी! प्रश्न यह नहीं है कि कौन किसके पक्ष का है। प्रश्न है प्रजा की

शिकायतों को दूर करने का। वह आवश्यक है।"

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मोरोपन्त ने अण्णाजी से कहा, "कुछ दिन पहले विशालगढ़ के कुछ लोग उनसे मिले। एक झरने पर बड़ा बाँध बाँधकर पानी को घुमाकर खेती के लिए उपयोग में लाने की माँग कर रहे थे। युवराज उसे उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लिए। चलता है अण्णाजी! जब नया खून कार्यभार उठाता है तो उसकी उड़ान भी फौवारे की तरह उछलती रहती है। हम जैसे बुजुर्गों को दो कदम पीछे
हटकर उन्हें रास्ता देना चाहिए।"

अण्णाजी दिल खोलकर हँसे। युवराज का उपहास करते कहने लगे—"अच्छा! तो अब झरनों के बहने की दिशा भी बदल देंगे। कल बहती नदियों पर बाँध बाँधकर पानी रोकने की बात करेंगे।"

"इतने विस्तार से तो मुझे कुछ नहीं ज्ञात है। किन्तु कर्नाटक की लड़ाई में शम्भूराजा अनेक नयी कल्पनाओं और योजनाओं को लेकर महाराज के साथ विचार विमर्श करने वाले हैं।"

"चलता है। हमारे युवराज को कवि कलश के साथ रहकर कविता का रोग लग गया है। कवियों और बैलों का दिमाग अलग अलग रहता है परन्तु उद्देश्य दोनों का एक ही होता है। एक कागज के साथ खेलता है तो दूसरा सींग से मिट्टी उखाड़ता है। सारा श्रम व्यर्थ।"

मोरोपन्त खास दरबार की ओर चले गये। किन्तु अण्णाजी के मस्तिष्क में एक ही विचार मन्थन चल रहा था। उन्हें चार दिन पहले की बात याद आ गयी। उस समय दरबार में कार्य में व्यस्त शिवाजी महाराज से मोरोपन्त ने प्रश्न किया था—"महाराज! कर्नाटक की लड़ाई में शम्भूराजा तो जाएँगे न?"

शिवाजी महाराज ने पेशवा की ओर चौंककर देखा। तब उन्होंने हँसते हुए उत्तर दिया—"मोरोपन्त अपनी सहायता के लिए भविष्य में तैयार होने वाले युवराज को राजा युद्ध में नहीं ले जाएगा तो क्या उसको घर में मुर्गी की तरह बन्द रखेगा?"

"युद्ध की तैयारी करने, योजना बनाने और राजकीय कार्य व्यापार की विभिन्न स्थितियां का ज्ञान युवराज को उचित उम्र में नहीं होना चाहिए क्या?" बालाजी आवजी बीच में ही बोल पड़े।

बिना पूछे ही बालाजी का बोलना अण्णाजी दत्तो को अच्छा नहीं लग रहा था। जिस संकट का अण्णाजी को भय था, वही घटित होने जा रहा था। कर्नाटक युद्ध में युवराज संभाजी को साथ ले जाने के लिए महाराज ने निश्चय कर लिया था। अण्णाजी के विचार से यहीं से दुष्टचक्र का आरम्भ होने वाला था। हजारों की भीड़

में शम्भूराजा का व्यक्तित्व चमकने वाला था। युद्ध में तलवार भाँजेंगे, बातचीत में हीरे की तरह चमकेंगे। भविष्य की बात सोचकर अण्णाजी अपना धीरज खो बैठे। दरबार में उनसे और अधिक रुका न गया। वे तेज गति से बाहर निकले। उनके पाँव उन्हें सोयराबाई के महल की ओर खींचे लिए जा रहे थे।

अष्टप्रधानों में अण्णाजी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। लम्बे शरीर मजबूत कद काठी, साँवले रंग, सिर पर तिरछी पगडी, कानों में झूमती मोतियों की बाली, शानदार चाल वाले अण्णाजी दरबार की शोभा थे। वे संगमेश्वर के कुलकर्णी परिवार के थे। उन पर शिवाजी महाराज की नजर पड़ी और उनके जीवन में परिवर्तन आ गया। वे हिन्दवी स्वराज्य के सुरनवीस बन गये। महाराज के निजी पत्राचार, राजनीति सम्बन्धी कार्य महसूल की वसूली जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य उन्हीं के पास थे। स्वराज्य की भूमि व्यवस्था का काम भी वही देखते थ। छोटी से छोटी त्रुटि भी उनकी नजर से छूटती नहीं थी। अण्णाजी का आतंक इतना भयानक था कि उनके नाम से ही लिपिक और अधिकारी भय से काँप उठते थे।

अण्णाजी ने स्वराज्य के लिए कुछ कम परिश्रम नहीं किया था। पन्हाला और रागणा किला जीतने के लिए अण्णाजी ने स्वयं तलवार चलाई थी। कोंकण प्रान्त में स्वराज्य की व्यवस्था करने के लिए उन्होंने घोर परिश्रम किया था। इसी श्रम के पुरस्कार के रूप में महाराज ने दक्षिण कोंकण का दाभोल, राजापुर कुडाल से लेकर फोंडा तक का भाग प्रशासनिक कार्यभार उन्हीं को सौंप दिया था। रायगढ़ के राजकीय कार्य व्यापार में अण्णाजी का स्थान एक किले की ही तरह मजबूत था।

सभाजी स्वभाव से मुँहतोड़ जवाब देने वाले व्यक्ति थे। युवावस्था के कारण अपेक्षाकृत निश्चिन्त भी थे। यहाँ तक तो ठीक था। किन्तु शम्भुराजा के तीखे स्वभाव की आग जब प्रमुख कर्मचारियों को लगने लगी तो अण्णाजी पूरी तरह सावधान हो गये। शिवाजी महाराज को मिलने के लिए रायगढ़ जब कोई अँग्रेज, डच या पुर्तगाली आते थे तो महाराज के साथ ही मोरोपन्त, अण्णाजी और राहुजी सोमनाथ इन तीनों के लिए भी उपहार ले आना नहीं भूलते थे। यदि द्रव्य थोड़ा भी कम हुआ तो अण्णाजी बहुत क्रुद्ध होते थे। कभी कभी इस प्रकार वसूली के लिए अपने कर्मचारियों को चुपके से फिरंगियों की कोठी तक भेज देते थे। दक्षिण कोंकण से आने वाली वसूली में अनेक बार कम रकम दिखाई जाती थी। अण्णाजी के कृपापात्र अनेक लिपिक और वरिष्ठ लिपिक तो वहाँ थे ही ।

सत्ता भी जब अचार की तरह पुरानी हो जाती है तो अधिकारियों के मुँह में भी पानी आने लगता है। शिवाजी महाराज को ज्ञात था कि इस प्रकार की गड़बड़ियाँ राज्य में चल रही हैं। परन्तु प्रमुख लिपिक की उम्र, उनके अनुभव, पहले के कार्य

उनके पूर्व चरित्र का स्मरण करके वे उस ओर अधिक ध्यान नहीं देते थे। किन्तु शम्भूराजा के उफनते हुए गर्म खून को ये बातें सह्य न थीं। उन्होंने अनेक लोगों की चोरी पकड़ी थी। जवानी के जोश में वे अनेक बार अण्णाजी की उम्र का ध्यान नहीं रख पाते थे। और भरी सभा में बोल देते थे—"देखो आ गये मुफ्त का खाने वाले। ये आ गये धन का अपहरण करने वाले।" युवराज के इस प्रकार के स्पष्ट उद्गार को सुनकर अण्णाजी जैसे अनुभवी लोगों के हृदय को ठेस लगती थी।

संभाजी अठारह उन्नीस वर्ष के हो गये थे। वे दिनोंदिन शक्तिशाली बनते जा रहे थे। उनके और सुरनबीस अण्णाजी के बीच एक दरार बढ़ती जा रही थी। हंसा की घटना के बाद से तो युवराज अण्णाजी को कई जन्मों के शत्रु से भी अधिक दुष्ट लगते थे। अण्णाजी को आया देखकर सोयराबाई आनन्दित हो गयीं। दोनों की राह का काँटा एक ही था। इसी कारण सोयराबाई ने अपने मन की बात अण्णाजी से कह दी। "अण्णाजी पन्त हमारे बेटे राजाराम यदि शम्भूराजा से उम्र में बड़े होते तो कितना अच्छा होता?"

राजगद्दी के लिए उम्र का ख्याल अनेक बार नहीं किया जाता, महारानी! गर्भ में स्थित राजमाता के पुत्र को आदर के कारण राजगद्दी का अधिकारी बनाया जाता है। ऐसे कितने उदाहरण मैं आपको दूँ? हमारे राजाराम साहेब तो छः सात साल के हो गये हैं।" राजाराम के राज्याभिषेक की कल्पनामात्र से ही अण्णाजी दत्तो प्रसन्न हो गये।

सोयराबाई थोड़ी देर तक चुप बैठी रहीं। फिर कुछ स्मरण करके बोलीं, "एक बात तो अच्छी हुई। बिना सोंठ के ही कुछ समय के लिए खाँसी चली गयी। शिवपुत्र कर्नाटक की लड़ाई में जा रहे हैं न? उनकी अनुपस्थिति में रायगढ़ के लोग कुछ महीने बिना किसी बाधा के बिताएँगे।"

"नहीं, नहीं महारानी जी! आप यह क्या कह रही हैं?" अण्णाजी कड़वाहट भरे स्वर में बोले, "कैसे भयंकर सपने आप देख रही हैं इसकी कल्पना क्या है आपको? इस लड़ाई में स्वयं को महाराज की दृष्टि में महापराक्रमी सिद्ध करने का अवसर शम्भूराजा बिलकुल नहीं छोड़ेंगे। उनके मुकुट में यह अतिरिक्त सम्मान चिह्न होगा। हिन्दवी स्वराज्य के योग्य उत्तराधिकारी बनकर वहाँ घूमेंगे।"

सोयराबाई ने माथे का पसीना अपने पल्लू से पोंछ लिया। लम्बी गहरी साँस लेकर बोलीं, "पन्त! वायु की दिशा कुछ अच्छी नहीं है।"

"परन्तु इसके लिए जिम्मेदार कौन है? आप या हम?" सोयराबाई चुप रहीं। उनके मन में द्वन्द्व चल रहा था। हंसा प्रसंग की जाँच का दायित्व मुझे क्यों दिया गया! शिवाजी महाराज के करोड़ों मुहरों के ज्येष्ठपुत्र, आम जनता की आशा के केन्द्र, हिन्दवी स्वराज्य के उत्तराधिकारी शम्भूराजा पर अत्यन्त हीन कोटि का कार्य

करने का आरोप लगाया गया था। वसन्त पंचमी कें त्योहार के दिन राजमहल में आयी एक ब्राह्मण कन्या के साथ अत्याचार करने का आरोप। वह भी दिन दहाड़े। वह कन्या भी किसी ऐरे-गैरे की नहीं, अष्टप्रधानों में से तीन क्रमांक के अधिकारी सुरनबीस अण्णाजी दत्तो की लाड़ली कन्या। सोयराबाई स्मृति भ्रमित हो गयी थीं। बड़े महाराज द्वारा दिये गये दायित्व को उन्होंने बड़ी निष्ठा से पूरा किया था। मूल प्रश्न यह था कि जब सभी बहू-बेटियाँ वसन्त पंचमी के उत्सव के लिए अन्त:पुर में एकत्र थीं तो हंसा उन सभी को छोड़कर दो महलों को छोड़कर तीसरे महल में क्यों गयी? सोयराबाई ने पहरेदारों, खिदमतदारों, महल की दासियों आदि सभी की साक्षी ली। दुख से विह्वल हंसा की माँ से भी मिली और उन्हें सान्त्वना दी। जिस कुएँ में हंसा ने आत्महत्या की थी उसका भी मुआयना किया। अन्त में उन्होंने शम्भूराजा को उपस्थित होने का आदेश दिया।

आरम्भ में युवराज कुछ भी बोलने के लिए तैयार न थे। अन्त में वे इतना ही बोले, "माताजी, हमारे हर महल के आसपास इतने मन्दिर हैं, तुलसी के वृदावन हैं, इतना ही नहीं हर दरवाजे की चौखट के साथ श्री गणेशजी की मूर्ति रखी है, हर गवाक्ष में भगवान प्रस्तर की मूर्तियाँ विराजमान हैं। इतने मंगलमय वातावरण और उसकी पवित्रता को हम कैसे भूल सकते हैं?"

"किन्तु शम्भूराजा! तुम पर जो आरोप लगाया गया है वह सच है, या झूठ? इसी का स्पष्ट उत्तर दो।"

"आप इस तरह पूछ ही कैसे सकती हैं, माताजी? इधर-उधर हजारों लोगों की भीड़ में दिन दहाड़े किसी जवान युवती को अपने पलंग पर खींचने वाले क्या हम कौवों की औलाद हैं? मैं सिंह का बच्चा हूँ, जंगल का तोता हूँ।"

सोयराबाई ने सारे बयान दर्ज कर लिए। साथ में बालाजी चिटणीस तो थे ही। उन्हीं के द्वारा सारा वृत्तान्त लिखकर तैयार हुआ। जब महाराजा ने सारे विवरण पर निगाह दौड़ाई तो एक लम्बी साँस लेकर राहत का अनुभव किया। महाराज ने सोयराबाई से केवल इतना पूछा, "रानी साहब यदि वास्तव में इस प्रकार का पाप घटित हुआ होता तो आप क्या करतीं?"

बिना एक क्षण रुके और बिना महाराज को देखे सोयराबाई ने कहा, "युगप्रवर्तक और पुण्यवान पिता ऐसा बदनाम पुत्र देखकर हमें अत्यन्त क्षोभ होता। मैंने महाराज से अनुरोध किया होता कि ऐसे अपराध के लिए किसी ऊँची पहाड़ी से खाई में गिरा देने का नया नियम बनायें।"

इस उद्गार से महाराज प्रसन्नतापूर्वक हँसे। सोयराबाई कुछ अचकचा गयीं। उन्होंने महाराज से पूछा, "दरबार में प्रह्लाद निराजी और काजी हैदर जैसे बड़े-बड़े न्यायाधीश के होते हुए इस जाँच का कार्य आपने मुझे क्यों सौपा?"

महाराज मन्द-मन्द मुस्कराते हुए बोले, "एक तो यह घटना ही बहुत संवेदनशील थी। दूसरे आप शम्भू की सौतेली माँ। इसलिए मुझे विश्वास था कि आरोपी के प्रति जरा भी सहानुभूति रखे बिना आप कठोरता से पूछताछ करेंगी। इससे जो सचाई होगी वह अन्त में सामने आ जाएगी। इसलिए आपको यह दायित्व सौंपा।"

वे सारी बातें सोयराबाई को स्मरण हो आयीं। वह अण्णाजी से स्पष्ट शब्दों में बोली, "हंसा ने एकतरफा प्यार में असफल होने के कारण कुएँ में कूदकर आत्महत्या की। अपना यह अनुमान मुझे आज भी सत्य लगता है, पन्त।"

"देखिए महारानी जी! शम्भूराजा नाम के युवराज के लिए मेरी बेटी अकारण अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठी। यही शम्भू हमारे सारे विनाश की जड़ है, यही शम्भू हमारा घातक है। इस बात को मैं अपनी आखिरी साँस तक नहीं भूल सकता।"

"फिर मुझे क्या करना चाहिए था, पन्त?"

"महारानी जी, भविष्य में बनने वाली राजमाता के जरीदार वस्त्रों और मंगल शहनाई की थोड़ी भी याद की होती तो आपके हाथ में आयी न्याय के तराजू की डंडी सही दिशा में झुक गयी होती।"

बहुत समय तक दोनों में बातचीत होती रही। अन्त में थके हुए अण्णाजी अलसाते हुए उठे। धीमी आवाज में सोयराबाई से बोले, "देखिए महारानी जी, आप ही सोचिए। यदि शम्भूराजा कर्नाटक गये तो लड़ाई में बहादुरी दिखाएँगे और महाराज की नाक का बाल बनेंगे।"

"परन्तु अण्णाजी पन्त, इस सम्बन्ध में महाराज के साथ मेरी बात हो चुकी है। वे शम्भूराजा को साथ ले जाने का निश्चय कर चुके हैं। उनका मन बदलना कठिन है।"

"क्यों?"

महाराज ने कहा, "जैसे रात के पीछे दिन दौड़ता है, उसी तरह राजा के साथ युवराज का युद्ध पर जाना योग्य और आवश्यक है। कल राज्य का कार्य भार युवराज को ही सँभालना है।"

"अच्छा। इसका मतलब बड़े महाराज ने एक बार उत्तर दे ही दिया है, तो?"

अण्णाजी ने पहेली सुलझाई। उस समय सोयराबाई की सारी हिम्मत समाप्त हो चुकी थी। वे पत्थर की मूर्ति जैसी चुपचाप बैठी थीं। उनके समीप सरककर अण्णाजी बोले, "यदि आपको स्मरण हो तो एक बार महाराज के मन में कर्नाटक राज्य और रायगढ़ राज्य ऐसे हिन्दवी राज्य के बँटवारे का विचार आया था। आप

केवल बँटवारे का आग्रह करिए और निर्णय महाराज पर ही छोड़ दीजिए कि वे बँटवारा चाहते हैं या शम्भूराजा को साथ लेकर युद्ध पर जाना। मेरी मानो तो शम्भूराजा का महाराजा के साथ जाना हमारे विनाश का कारण होगा। पहले से ही पिता-पुत्र का अच्छा मेल हो गया है। राज्याभिषेक के लिए काशी से गागा भट्ट आये थे। उस समय उनके साथ शिवपुत्र दिन रात संस्कृत काव्य पर चर्चा करते थे। युवराज ने उन्हें अभिभूत कर लिया था। आप जानती हैं क्या कि काशी के उस महन्त ने शिवाजी महाराज से क्या कहा था।''

''क्या?''

''उन्होंने कहा था कि 'यह सवाई शिवाजी बनेगा।' मेरी मानो तो युवराज को कर्नाटक युद्ध में जाने से रोको। नहीं तो चतुर युवराज शम्भूराजा अपने लिए वसीयत लिखवा ले आएँगे और आपके राजाराम के लिए रायगढ़ घास फूस की झोपड़ी के बाहरी कोने में भी जगह नहीं मिलेगी।''

तीन

रानी सोयराबाई बड़ी तेजी से महाराज के महल की ओर चली जा रही थीं। आजकल उनको किसी अज्ञात भय ने घेर रखा था। बिस्तर पर विश्राम कर रहे शिवाजी महाराज के पास जाकर सोयराबाई बैठ गयीं। इन दिनों वे बहुत सावधान रहने लगी थीं। भविष्य की चिन्ता सोयराबाई को उद्वेलित कर रही थी। समय ने ही उन्हें अपने और पराये का भेद करना सिखाया था। सोयराबाई अनेक मधुर कल्पनाएँ करती थीं। राजमहल में ठुमक ठुमक कर दौड़ने वाला उनका बेटा राजाराम अपने पिता के सिंहासन पर बैठना चाहिए। उसके पीछे आज के स्वराज्य सेनापति बन्धु हम्बीर राव मोहिते खड़े रहेंगे। माता भवानी के बहुत बहुत अशीर्वाद मिलेंगे। इन्हीं दिनों बड़े महाराज के साथ राज्य के कार्यव्यापार में शम्भुराजा की ख्याति और लोकप्रियता निरन्तर बढ़ती जा रही थी। गागा भट्ट ही नहीं, रायगढ़ पर आने वाले फ्रांसीसियों और पुर्तगालियों के वकील भी शम्भुराजा की प्रखर बुद्धि और कर्तव्यपरायणता की प्रशंसा करते थे। यही कारण था या कुछ और किन्तु आज कल जब भी शम्भूराजा सामने पड़ते थे, सोयराबाई के गोरे चिट्टे भाल की छोटी नस तन जाती थी। रंग में भंग डालने वाले शम्भूराजा उन्हें बिन बुलाये मेहमान जैसे पराये और ठग प्रतीत होते थे। महाराज के साथ थोड़ी इधर उधर की बात करने के बाद

सोयराबाई अपने मूल मुद्दे पर आयीं—"स्वामी, शम्भूराजा तो धधकती आग है। स्वामी के बाद उन्हें सँभालेगा कौन?"

शिवाजी महाराज हँसे उन्होंने सोयराबाई की आँखों में बदलती भावनाओं के रंग देखे। महाराज ने कहा, "अच्छा, तो आप यह सिफारिश करने आयी हैं कि कर्नाटक युद्ध में मुझे शम्भूराजा को साथ लेकर जाना चाहिए।"

सोयराबाई कुछ हड़बड़ा गयीं। उन्हें लगा कि अपनी बात कहते कहते कुछ और ही तो नहीं बोल गयीं। अपने को सँभालते हुए उन्होंने फिर कहा, "नहीं, नहीं मेरे कहने का आशय यह नहीं था। आज कल युवराज और राज्य कर्मचारियों में ताल मेल नहीं बैठता। आपके इतनी दूर चले जाने पर इनमें यदि विरोध की आग भड़की तो उसे बुझाएगा कौन?"

महाराज चुप हो गये। थोड़े समय के बाद सोयराबाई को तीखी नजर से देखते हुए बोले—"महारानी जी सच बताइये मुझे क्या करना चाहिए? हम अपने साथ उन्हें ले जाएँ या नहीं?"

"आजकल उनका व्यवहार सारी सीमाओं को तोड़ चुका है। मानसिक क्लेश के अतिरिक्त स्वामी के हाथ और कुछ नहीं लगेगा।"

महाराज थोड़ा रुके और फिर दर्द भरी आवाज में बोले, "आपकी ही तरह अष्ट प्रधान और विशेष रूप से अण्णाजी और राहुजी जैसे लोग भी शम्भूराजा के लिए आग्रह कर रहे हैं। वे हठ कर रहे हैं—कुछ भी कीजिए परन्तु अपनी अनुपस्थिति में उन्हें रायगढ़ पर मत छोड़िए। इसका अर्थ तो यह हुआ कि इस समृद्ध स्वराज्य में हमारे शम्भूराजा के लिए बहुत कठिन समय आया है।"

सोयराबाई डर गयीं। सँवारने वाली भाषा में एक एक शब्द अलग उच्चारित करते हुए बोलीं, "बहुत पहले महाराज के मन में स्वराज्य को दो भागों में विभाजित करने का विचार आया था।"

"आप यहीं पर रुक जाइए, महारानी।" शिवाजी महाराज की गरुड़ जैसी नाक पर पसीने की बूँदें छलक आयीं। उनका प्रशस्त मस्तक सिकुड़ गया। मस्तक पर रेखायें उभर आयीं। वे तीखी आवाज में बोले, "महारानी, हमारे हिन्दवी स्वराज्य के बँटवारे की कल्पना ही कितनी अशोभनीय और कष्टकारक है? यह राज्य या साम्राज्य हमारा है ही नहीं। पूर्वजों के पुण्य से, भगवान के आशीर्वाद से जन साधारण के खून-पसीने से हमें प्राप्त हुआ एक अमृत कलश है। उसे दो हिस्सों में कैसे बाँटा जा सकता है?"

सोयराबाई से रहा नहीं गया। उन्होंने कहा, "परन्तु महाराज, आपके अकेले शम्भूराजा ही नहीं एक और पुत्र भी हैं।"

"स्वीकार है। किन्तु यह महाराष्ट्र एक अच्छे आचार और विवेक से प्रतिबद्ध

है। शम्भू हों या राजाराम जो अपने कर्तृत्व से महान बनेगा, प्रजावर्ग और सैनिकों का लाड़ला होगा, वही अपने परिश्रम से उत्तराधिकारी बनेगा।"

सोयराबाई का मन टूट गया। एक सामान्य स्त्री की तरह वे दहाड़ें मारकर रोने लगीं। उनकी जैसी धीर-गम्भीर स्त्री का यह स्वरूप शिवाजी महाराज पहली बार देख रहे थे। महारानी किसी भी प्रकार हटने को तैयार न थीं। अन्त में उन्होंने कठोर शब्दों में महाराज से कहा, "महाराज या तो राजाराम के लिए राज्य बाँटकर दे दीजिए या फिर अकेले शम्भूराजा को साथ लेकर न जाइए। इनमें से यदि एक बात न मानी गयी तो मैं भोजन पानी छोड़कर भगवान को प्यारी हो जाऊँगी।"

शिवाजी महाराज ने किसी प्रकार समझा-बुझाकर सोयराबाई को अन्त:पुर में भेज दिया। किन्तु महाराज स्वयं अन्दर-बाहर से भयभीत हो गये थे। उन्हें हल्का सा बुखार आ गया। वे बेचैन हो गये। अन्ततः उन्होंने अपने समीपी बालाजी चिटणीस को बुलवाया। महाराज दुखभरी वाणी में बोले—

"चिटणीस, वीर पुरुष के कर्तृत्व की कोई सीमा नहीं होती। हो सकता है कि खुले मैदान बारूद के गोले से कोई बच जाय, किन्तु माया-ममता और स्वार्थ के जंजाल से कोई कभी बच पाया है क्या? चाहे राम हों या कृष्ण। इन धागों के जंजाल से महान लोग भी हैरान हो जाते हैं।"

बालाजी पन्त चिटणीस बहुत समय तक महाराज के साथ विचार विमर्श करते रहे। उनसे अधिक महाराज का मन जानने वाला दूसरा कौन था? बालाजी पन्त ने अपनी राय दी—"महाराज रानी साहेब की शपथ में इतना क्या उलझना। आपने मन में शम्भूराजा को युद्ध में साथ ले जाने का निश्चय किया है न? तो प्रसन्नतापूर्वक लेकर जाइए।"

शिवाजी महाराज खिन्नता से हँस दिये और बोले, "कोई व्यक्ति यदि पति पत्नी के रिश्ते को सारी जिन्दगी बिताए तो भी यह कहना ठीक नहीं कि वह उसे पूरी तरह जानता है। आज महारानी से मुझे जो अनुभव मिला वह बहुत ही विलक्षण और विस्मयकारक है।"

"महाराज।"

"हाँ बालाजी। हमें कठिनाई में डालने के लिए महारानी और अन्य लोगों ने जो समय चुना है वह भी बहुत कठिन है। कर्नाटक की लड़ाई दो-चार दिन में ही आरम्भ होने वाली है। आधी से अधिक सेना रायगढ़ से निकल चुकी है। ऐसे समय में घरेलू झगड़ों के कारण यदि मैंने युद्ध को स्थगित किया तो हमारी प्रतिष्ठा नहीं बचेगी। आज हम शम्भूराजा को ही नहीं अपनी न्यायबुद्धि को भी यथोचित न्याय नहीं दे पा रहे हैं। अभी भी भविष्य के गर्भ में क्या-क्या रचा जा रहा है इसे माता भवानी ही जाने।"

चार

येसूबाई बड़ी हड़बड़ी में अपने महल में लौट आयीं। रायप्पा ने उन्हें सूचित किया था कि शम्भूराजा आज रोज से बहुत पहले अन्त:पुर में लौट आये हैं। थके हुए युवराज सीधे अपने शयन कक्ष में चले गये थे। चिराग के लालप्रकाश में येसूबाई ने युवराज की क्लान्त मुद्रा को देखा। वे बहुत चिन्तित दिख रहे थे। युवराज के कन्धे पर हल्के से अपना हाथ रखकर येसूबाई ने कहा, "लगता है बहुत थक गये हैं। कर्नाटक युद्ध कहें तो कितनी बड़ी तैयारी। सीधे नीचे की ओर रामेश्वर, जिंजी तक की दौड़।"

"क्या आपको सचमुच ऐसा लगता है कि मुझे वहाँ जाना चाहिए?"

युवराज ने कुछ आवेश के साथ पूछा।

"क्यों नहीं? आप तो जब केवल आठ नौ वर्ष के थे तभी आगरा तक की दौड़ लगा आये थे।" शम्भूराजा के माथे पर हाथ फेरते हुए येसूबाई ने कहा, "अब तो आप हिन्दवी स्वराज्य के भावी उत्तराधिकारी हैं। ससुर जी ने युवराज के रूप में आपको पहले ही सम्मानित कर दिया है। दूसरी एक बात सम्भवत: आपके ध्यान में नहीं आ रही है।"

"कौन सी?"

"रायगढ़ के देवदुर्लभ राज्याभिषेक समारोह के बाद महाराज की यह पहली युद्ध यात्रा है। उसमें अपनी तलवार का जौहर दिखाने का सुअवसर आप क्यों छोड़ रहे हैं?"

येसूबाई के उत्साहवर्धक शब्दों से युवराज और भी उत्तेजित हो गये। वे बिस्तर से उठकर कक्ष में इधर उधर घूमते हुए बोले—

"येसू जरा रुक! यों ही खयाली पुलाव मत पका।"

"मतलब?"

"पिताजी ने मुझे युद्ध में न ले जाने का निर्णय ले लिया है।"

"क्या कह रहे हैं?" येसूबाई का चेहरा एकदम उतर गया। शम्भूराजा कुछ अधिक नहीं बोले। बहुत समय तक घायल सिंह की भाँति घूमते रहे। येसूबाई को कुछ सूझ ही नहीं रहा था। लगभग चार-पाँच घंटे तक, जब तक उनके पैर थक नहीं गये, शम्भूराजा उसी अस्वस्थता में घूमते रहे। उनकी आँखें पूरी तरह खुली थीं।

निद्रा किसी मुक्त पंछी की तरह कहीं दूर भाग गयी थी।

ऐसा कुछ घटित होगा, इसका अनुमान शम्भूराजा को बिलकुल न था। वैसे भी शम्भूराजा के लिए कर्नाटक प्रदेश कुछ नया नहीं था। छोटी उम्र में ही उनको कोलार और चिक्कबालपुर की जागीरदारी दी गयी थी। इस कारण उनका दक्षिण में बहुत बार आना-जाना हुआ था। अभी चार दिन पहले ही पिता-पुत्र में विचार विमर्श हुआ था कि दक्षिण में जाकर क्या-क्या करना है। उसी समय अपने पिता शाहजी राजा का नाम बड़े अभिमान से लेकर शिवाजी महाराज ने कहा था, "शम्भू बंगलूर की जागीर मेरे पिताजी के अधिकार में थी। आज उस नगर का जो वैभव और ठाट-बाट है, उसमें उनका बड़ा हाथ है।"

"जी, पिताजी।"

"किन्तु उनके बाद मेरे सौतेले भाई एकोजी राजा से एक बड़ी भूल हो गयी। उन्होंने अपना प्रशासन केन्द्र बंगलूर से हटाकर नीचे तंजौर को बनाया।"

"किन्तु पिताजी मैंने सुना है कि तंजौर, त्रिचनापल्ली और जिंजी की ओर प्रदश बहुत उर्वर और कृषि की दृष्टि से समृद्ध है।"

"वह सच है। किन्तु एकोजी राजा के सुदूर दक्षिण डेरा जमाने से विगत तीन चार वर्षो मे मैसूर का राजा चिक्कदेव बहुत धृष्ट होता जा रहा है। अपने दक्षिण के कर्नाटक और तमिल प्रदेशों मे जो कुछ प्राप्त होता है उसके कारण उसे भी खतरा पैदा हो गया है। एक न एक दिन आपको उसका भी सामना करना पड़ेगा। उसकी व्यवस्था करनी होगी।"

ये सारी बातें शम्भुराजा को रह रहकर स्मरण हो रही थीं।

शम्भूराजा बहुत देर तक वैसे छटपटाते रहे। थोड़ी देर बाद उन्हें गहरी नींद आ गयी, वे जोर जोर से खर्राटे भरने लगे। उनके क्रुद्ध मन और क्लान्त शरीर की येसूबाइ को पूरी जानकारी थी। वे सारी रात बिस्तर का एक कोना पकडे युवराज के सिर के पास बैठी रहीं। उनकी आँखों का चिराग सारी रात लगातार जलता रहा।

पाँच

शम्भूराजा के महल पर शोक की गहरी छाया घिर आयी थी। युवराज को प्राणों से भी अधिक प्यार करने वाले कवि कलश, जोत्याजी केसरकर, कृष्णाजी कंक जैसे

सभी सहयोगी उनके आसपास जमा हो गये थे। युवराज की मानसिक अवस्था अधिक न बिगड़े, कर्तृत्ववान पिता-पुत्र के बीच दुराव की दरार अधिक न बढ़े, इसके लिए येसूबाई बहुत चिन्तित थीं। किन्तु अण्णाजी दत्तो और उनके साथी सोयराबाई की सहायता से शम्भूराजा की पीठ में खंजर भोंक चुके थे। जो युवराज एक श्रेष्ठ वीर के रूप में युद्ध में सम्मिलित होने वाले थे, कुटिल राजनीति के कारण उसी युवराज के हौसले को मिट्टी में मिला दिया गया था।

शम्भूराजा की स्थिति शेर के घायल बच्चे जैसी हो गयी थी। स्थिति को सँभालने के उद्देश्य से येसूबाई ने कहा, ''कर्नाटक की एक लड़ाई से क्या होता है? ऐसी कितनी ही लड़ाइयाँ होंगी। स्वामी को धैर्य नहीं खोना चाहिए। ससुरजी महाराज ने स्वामी जी को कैद करने का आदेश थोड़े ही दिया है।''

''येसू! रायगढ़ के आसपास आज कल ऐसी प्रदूषित हवा चल रही है कि हम कल्पना नहीं कर सकते। मुझे तो घुटन-सी अनुभव होने लगी है।''

शम्भूराजा के साथ अन्य सभी को बालाजी आवजी के आने की व्यग्र प्रतीक्षा थी। शाम ढल चुकी थी। रात काफी बीत चुकी थी। इसी समय थके हारे बालाजी पन्त महल में आये।

रायप्पा द्वारा दिया गया जलपात्र उन्होंने मुँह से लगाया। बिना अधिक रुके चिटणीस ने घोषित किया, ''महाराज ने सुझाव दिया है कि कर्नाटक युद्ध समाप्त होने तक युवराज शृंगारपुर में जाकर रहेंगे।''

शम्भूराजा ने आश्चर्यचकित होकर बालाजी पन्त को देखा। करौंदे के काँटे के लगते ही जैसे रक्त बाहर निकल आता है वैसे ही उनकी आँखें भीग गयीं। वे बीमार से स्वर में बोले—

''इसका अर्थ तो यह हुआ कि महाराज की अनुपस्थिति में मुझे रायगढ़ पर नहीं रहना है।''

''चिटणीस और येसूबाई ने सिर नीचे झुका लिया। युवराज के इष्टमित्र विकल हो गये। इस घटना से बालाजी का मन भी विषाद से भर आया था। उन्होंने कहा, ''शम्भूराजा आपके पक्ष में मैंने बहुत प्रयास किया। परन्तु ऐसा लगता है कि आपके शत्रुओं का पलड़ा भारी हो गया है।''

''चिटणीस काका, केवल एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। राजा की अनुपस्थिति में युवराज गद्दी सँभालते हैं। यह नियम बहुत पहले से चलता आया है—बहुत पहले महाभारत काल से चलता आया है न?''

''अब जाने भी दीजिए न।'' येसूबाई ने कहा।

''क्यों जाने दूँ?'' शम्भूराजा की आँखों में अंगारे धधकने लगे। वे जोर से बोले, ''युद्ध में जाने में मेरा कोई स्वार्थ नहीं था। पिछले कुछ वर्षों में पिताजी का स्वास्थ्य अनेक बार खराब हो चुका है। बालाजी काका मुझे लग रहा था कि इस

युद्ध के बहाने अपने महान पिता के साथ चार दिन रहने का अवसर मिलेगा, कुछ नया सीखने को मिलेगा। किन्तु आज मेरे गले में यह दुर्दैवी फंदा क्यों डाला जा रहा है? हम अपने जन्मदाता के साथ युद्ध में नहीं जा सकते, उनकी अनुपस्थिति में यहाँ राजधानी में एक क्षण रह नहीं सकते। ऊपर से हमारे द्वेषियों के पक्ष के प्रतिनिधि बने राहुजी सोमनाथ जैसे नाचीज दरबारी को सारा शासन सूत्र सौंप दिया जा रहा है?"

शम्भूराजा का मन भर आया, "येसू मेरी आँखों के आगे एक चित्र उभर रहा है। करोड़ों मुहरों की जायदाद और तेजस्वी पिता के होने के बाद भी हम अनाथ हो गये हैं। किसी विवश लावारिस की तरह अपना हाथ बाँधे, कर्मचारियों का आदेश सिर आँखों पर लिए, किसी चोर उचक्के या अपराधी की तरह सिर झुकाये शृंगारपुर की ओर चला जाना है।"

येसूबाई ने कहा, "आप को शृंगारपुर में रहकर प्रभावली गाँव का कार्यभार सँभालना है।"

"बस! बस! इस तरह अपने सुसरजी के पक्ष में न बोलो। आज उनको युद्ध मे जाने से पहले केवल यह प्रदर्शित करना है कि शम्भूराजा के लिए उनके मन में कोई खोट नहीं है। यह सिद्ध करने के लिए ही वे शृंगारपुर की व्यवस्था का जुआ मेरे गले में बाँध रहे हैं। हमारे अपमान के कम करने के ऐसे प्रयत्न से कलेजे में लगी आग बुझने वाली थोड़े ही है।"

जिस प्रकार ग्रीष्म में वर्षा के बादल अचानक घिर आते हैं उसी प्रकार युवराज का मन भर आया।

येसूबाई ने युवराज को आँख भरकर देखा। उस अवस्था में भी वे हँसते हुए बोलीं "ऐसे पहाड़ जैसे दृढ़ पिता की छाया होते हुए भी आप इस तरह क्यों डगमगा रहे हैं?"

"येसू, शत्रुओं की उखली तोपों से हमारे सीने के चिथड़े चिथड़े हो जाएँ तो भी यह सभाजी जरा भी नहीं डगमगाएगा। किन्तु क्या बताऊँ येसू। अपने पक्ष के स्वार्थी लोगों से आजकल मुझे बहुत भय लगने लगा हैं।"

"मतलब?"

"येसू दुख होता है तो केवल इसी बात का कि जब मैं केवल आठ वर्ष का नाबालिग था तब औरंगजेब जैसे दुष्ट सियार की माँद में मुझे अकेले छोड़कर मेरे पिताजी निश्चिन्त भाव से दक्षिण की ओर चले आये थे। किन्तु आज सत्रह-अठारह साल के उसी युवराज को युद्ध में ले जाने से उन्हें डर लग रहा है कि वह वीरता में सवासेर सिद्ध हो जाएगा।"

"महाराज को?"

"नहीं उनके कर्मचारियों को! और मेरी माताजी सोयराबाई को लग रहा है

की युवराज रायगढ़ पर रह गये तो काल की तरह भयानक बन जाएँगे। सिंहासन की बात तो छोड़ो कल को संभाजी के लिए सिर टिकाने के लिए एक आसन भी न बच पाये, इसके लिए सभी राहु केतु एकजुट होकर कार्य कर रहे हैं।''

शम्भूराजा की बातों से उनके इष्टमित्र अत्यन्त दुखी हो गये। कवि कलश के चेहरे का लाल रंग तो कब का गायब हो चुका था।

शम्भूराजा ने बड़े दुख के साथ कहा, ''कर्नाटक की लड़ाई भले ही मेरे भाग्य में न हो, परन्तु मुझे इस बात का दुख है कि आज रायगढ़ के दरवाजे पर पहरा देने वाले दरबान पर पिताजी का जितना भरोसा है उतना उनके अपने बेटे पर नहीं रहा। इसी बात से मेरा कलेजा सागौन के सूखे पत्ते की तरह चूर-चूर हो रहा है।''

छह

संभाजी राजा महाराज के महल में आए। महाराज को प्रणाम करते हुए उन्होंने कहा, ''पिताजी! आशीर्वाद दीजिए, आज दोपहर में हम निकल रहे हैं।''

''कहाँ?''

''और कहाँ जाएँगे? शृंगारपुर के लिए आपकी आज्ञा सिर आँखों पर।''

शिवाजी महाराज क्षणभर चुप रहे, फिर ममतापूर्वक पुत्र के कन्धे पर हाथ रखकर बोले, ''ऐसे कैसे? कल तक रुकिए, उसी रास्ते से तो हमें भी कर्नाटक की ओर जाना है, बात करते-करते संगमेश्वर तक चलेंगे।''

दूसरे दिन दोपहर को दस बारह शाही पालकियाँ बाहर निकलीं, नाणे दरवाजे से नीचे की ओर उतरने लगीं। उसी समय तुरुही और तासे की आवाज से सारा परिसर प्रतिध्वनित हो उठा। कहार पालकी लेकर चितदरवाजे के पास पहुँच गये। शिवाजी महाराज और संभाजी राजा ने पाचाड़ के मैदान पर दृष्टि डाली। वहाँ पर बीस हजार घुड़सवार और चालीस हजार पैदल सैनिक खड़े थे। बहुत समय के विश्राम के बाद शिवाजी महाराज लड़ाई पर जा रहे थे। इस समाचार से ही जानवर और आदमी रोमांचित हो रहे थे।

आज महाराज को प्रभावशाली आशीर्वाद देने के लिए जीजा माता जिन्दा नहीं थीं। इसलिए लड़ाई के लिए प्रस्थान करने के पूर्व राजाओं की पालकियाँ जीजा माता की समाधि की ओर अपने आप मुड़ गयीं। काले पत्थरों से बनी छोटी सी समाधि पर महाराज ने जवाकुसुम और स्वर्णचम्पा के पुष्प अर्पित किये। उस पवित्र समाधि

के सम्मुख महाराज ने सिर झुकाया। दूसरी ओर मैदान में आनन्दराव, बाजी सर्जेराव, येमाजी कंक, सर्फोजी गायकवाड़ सूर्याजी मालुसरे जैसे एक से बढ़कर एक योद्धा और वीर सरदार प्रस्थान के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। परन्तु शिवाजी महाराज के पाँव समाधि के पास से हटने का नाम नहीं ले रहे थे। वहाँ के पवित्र वातावरण ने महाराज पर जादू सा कर दिया था। ऐसा लगा जैसे समाधि में आँखें निकल आयी थीं और जीजा माता महाराज को घूर कर देख रही थीं।

पुरन्दर की घटना के बाद वाले दिन महाराज को स्मरण हो रहे थे। मिर्जा राजा जयसिंह और दिलेरखान ने महाराष्ट्र को संकटग्रस्त कर दिया था। शिवाजी महाराज और सभाजी को औरंगजेब ने मिलने के लिए आगरा बुलवाया था।

पिता-पुत्र के आगरा जाते समय जब शम्भूराजा ने अपने छोटे छोटे हाथों को जीजा माता के पैरों पर रखा तो मानो जीजा माता पर आसमान ही टूट पड़ा। किसी मादा पंछी की भाँति उन्होंने शम्भूराजा को अपनी बाँहों में समेट लिया और व्याकुल होकर बोलीं, "शिवबा! मेरे शम्भू बेटे को किसलिए ले जा रहे हो? अभी तो पूरी आठ बरसातें भी नहीं देखी हैं इस बच्चे ने।"

"क्या करे माताजी! शर्तनामे ने हमारे हाथ बाँध रखे हैं।" किसी भी प्रकार और कुछ भी करके जीजा माता विलम्ब कर रही थीं। अपनी बाँहों से शम्भूराजा को अलग करना उनकी जान पर बन आया था। जीजा माता का वह व्यवहार शिवाजी महाराज से सहन नहीं हुआ। उन्होंने कठोर स्वर में कहा—"माताजी! कर्तव्य तो कर्तव्य ही है, छोड़ो युवराज को। यह जानकर भी कि अफजल खान से मिलने जाना मौत के मुँह में कदम रखना था, आपने कलेजे पर पत्थर रखकर कितनी निर्भयता से मुझे हँसते हँसते विदा किया था! याद है आपको?"

"राजा, आप जब स्वयं दादा बनोगे तभी जान पाओगे कि पौत्र की कीमत और ममता क्या होती है?"

"माताजी, आपकी पीड़ा हम समझ सकते हैं। किन्तु आप जानते हैं कि गिरगिट के बच्चे बिल में रहते हैं इसलिए जीवन भर जमीन पर रेंगते हैं। हमें तो गरुड़ के बच्चे को बड़ा करना है। उसे संकटपूर्ण मौत की खाई में नहीं फेंकेंगे तो उसके पंखों में शक्ति कहाँ से आएगी?" शिवाजी महाराज ने यह प्रश्न पूछा था।

स्मृति की उस खरोंच से महाराज कुछ विचलित हो गये। उन्हें लगा कि उनसे कुछ भूल हो रही है। यह सोचकर उनका मन और दुखी होने लगा। उस काली समाधि में मानो आँखें निकल आयी थीं। लगा जैसे जीजा माता शिवाजी महाराज से पूछ रही हैं—"क्यों शिवबा, गरुड़ के बच्चे को बड़ा करने की वह भाषा अब कहाँ चली गयी? इतने शूरवीर बहादुर बच्चे को शृंगारपुर की गुफा में बन्द करके आज अकेले कहाँ जा रहे हो?"

शिवाजी महाराज स्वयं को असहाय अनुभव करने लगे। उन्हें लगा कि कुछ भूल हो रही है। मराठी सेना चिपलूण की दिशा में प्रस्थान कर रही थी। महाराज ने जानबूझकर शम्भूराजा को अपने साथ हाथी के हौदे में बिठा लिया था। संगमेश्वर के पास शास्त्री नदी पार करने के बाद युवराज शृंगारपुर और महाराज कर्नाटक की ओर जाने वाले थे।

मार्ग में पिता पुत्र ने एक साथ कोंकण के स्वामी परशुराम के दर्शन किए। सेना समुद्र की तरह उमड़ती संगमेश्वर की दिशा में आगे बढ़ रही थी। घोड़े तेज चाल से चल रहे थे। हाथियों के गले में घंटे वातावरण में एक अलग ध्वनि अनुगूंजित कर रहे थे। सैनिकों के हाथ का भगवा झंडा हवा में लहरा रहा था।

संभाजी राजा का गला अचानक भर आया। उन्होंने कहा, "पिताजी ! आप अभी-अभी लम्बी बिमारी से उठे हैं। इस उम्र आप युद्ध के लिए जाएँगे और दाढ़ी-मूँछ वाले हम लाश की तरह शृंगारपुर की गुफा में पड़े रहेंगे। युद्ध की कल्पना मात्र से हमारी धमनियों मे आग भड़कने लगती है, पहना हुआ कपड़ा भी हमें जलाने लगता है। जाने दीजिए... हम कर भी क्या सकते हैं? हम तो महाराजा की नाराजी के शिकार हैं।"

शम्भूराजा के सीने की आग और ईर्ष्या की भाषा महाराज को अच्छी तरह समझ में आ रही थी। वे दुखी स्वर में बोले, "युवराज के साथ अन्याय हो जाने पर राजा से सीधे प्रश्न पूछा जा सकता है शम्भू बेटे। किन्तु जब राजा पर न्याय-अन्याय प्रत्यक्ष या परोक्ष वार होते हैं, तब उसके लिए न्याय की कोई सीढ़ी कहाँ रहती है?"

संगमेश्वर समीप आ गया। घने जंगलों के बीच से सैनिक आगे बढ़ने लगे। पिता-पुत्र दोनों वियोग की कल्पना से चिन्तित होने लगे। शम्भूराजा ने थोड़े धीमे स्वर में अपना असन्तोष व्यक्त किया—"पिताजी हमारा भाग्य ही फूट गया है। ऐसा ही कहना पड़ रहा है। मर्दों की तलवारें दीवारों पर लटकी जंग खा रही हैं और लिपिकों की कलमों में ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिशोध के दाँत निकल रहे हैं। इसीलिए तो हमारे भाग्य में युद्ध भूमि के बदले शृंगारपुर आया।"

"जाने दो शम्भू। आप अभी उम्र में बहुत छोटे हो।"

"आगरा दरबार में औरंगजेब से मिलने गये थे, तब तो हम केवल आठ वर्ष के थे। दस वर्ष की चौखट पार करने के पहले हम दो बार मुगलों के दरबार में मनसबदार बन चुके थे, पिताजी। आज बीस वर्ष की देहरी पर खड़े हम बच्चे, निन्दनीय और नादान कैसे ठहराये जा रहे हैं, पिताजी?"

संभाजी राजा के भीतर उछलते लहू उनकी भुजाओं में उद्वेलित पौरुष, आँखों में आशा की ज्योति आदि सभी कुछ महाराज की समझ में आ रहा था। विदा होते

समय युवा पुत्र को समझाना भी आवश्यक था। इसलिए उन्होंने कहा, "शम्भू आपको यहाँ पीछे छोड़ जाने में भी मेरा एक उद्देश्य है। हम सुदूर देश में अधिक समय तक अटके रहे तो राज्य की रक्षा के लिए तो यहाँ किसी जिम्मेदार व्यक्ति को रहना नहीं चाहिए क्या?"

"रक्षा की पूरी तैयारी और सेना रायगढ़ पर है। सारा कार्य व्यापार और सारी सम्पदा वहाँ पर है। यहाँ शृंगारपुर में रहकर हम किसकी और कितनी रक्षा करेंगे, पिताजी?"

कुछ छुपाने के प्रयत्न में जैसे भेद और भी खुल जाय, ऐसी स्थिति शिवाजी महाराज की हो गयी। उन्होंने ममता से शम्भूराजा का हाथ कसकर पकड़ लिया। कुछ देर में ही उनका दम घुटने लगा। पीड़ा से कराहती-सी आवाज में बोले, "बस! शम्भू बेटे, हम इतना ही कह सकते हैं कि आपके लिए आज रायगढ़ सुरक्षित नहीं है। दुर्भाग्य से आज हम तुम्हें रायगढ़ भी नहीं दे सकते। साथ ही हमें अपने होनहार और प्राणों से प्रिय शम्भू को खोना भी नहीं है।"

सेना शास्त्री नदी के पार जा रही थी। शिवाजी महाराज संगमेश्वर के आसपास जमकर बैठी पहाड़ी की कतारों, घने जंगल और नदी पार के नावड़ी बन्दरगाह के पास की खाड़ी को ध्यान से देख रहे थे। यहाँ का जंगल सघन दिखाई पड़ रहा था। घने जंगल की ओर देखते हुए महाराज बोले, "शम्भू बेटे, इसके बाद कुछ महीनों के लिए आपको शान्ति मिलेगी। अपने काव्य प्रेम के साथ विद्याभ्यास भी कर लें। साथ ही यहाँ की मिट्टी के अनेक रंगों को परखकर देखें। जिस प्रदेश पर आपको कल शासन करना है वहाँ के लोगों को परखना पढ़ना सीखें। ध्यान रखें कि हमारे मराठा लोगों में कुछ ऐसी नीच प्रवृत्ति के लोग हैं कि अपने छोटे से स्वार्थ के लिए अपने राज्य और राजा को डुबो देने में जरा भी आगा पीछा नहीं देखेंगे।"

श्रृंगारपुर में

एक

श्रृंगारपुर के पीछे की ओर सह्याद्रि की श्रेणियों की लम्बी कतार और ऊबड़ खाबड़ पहाड़ थे। बहुत ही दुर्गम प्रदेश, यहाँ दिन में अन्धकार बना रहता था, देखने में डरावना लगता था। यहीं से तिवरा घाट और भालेघाट के बहुत ही कठिन रास्ते सह्याद्रि की चोटी पर पहुँचते थे। कोंकण बन्दरगाह का माल यहाँ से बैलों की पीठ पर लादकर पहुँचाया जाता था। यहाँ का जंगल इतना घना था कि बाघ को भी यहाँ मे गुजरने में पसीना आ जाय। इसीलिए बैलों को खाने के साथ में घास लेकर जाते थे। उनके साथ पचास-साठ लोग नंगी तलवारें और भाले लेकर चलते थे। और किसी काम के लिए इस गस्ते से कोई आता-जाता नहीं था।

श्रृंगारपुर में लगभग पन्द्रह बीस हजार लोग रहते थे। इस बस्ती में सरदारों और सम्मानित लोगों के साठ बड़े बड़े मकान थे। बस्ती के बीचोबीच एक बड़ा झरना था। झरने के किनारे सूर्यराव सुर्वे का बहुत बड़ा मकान था। सुर्वे के बाद उनके दामाद शिर्के इस घर में आये। यहीं थी शम्भूराजा की ससुराल। इस घर के समीप ही शिवाजी महाराज ने एक बड़ा राजमहल बनवाया था। उसी में शम्भूराजा, येसूबाई और दुर्गादेवी रहते थे। बस्ती के मध्य में दो बड़े बगीचे, समकोण पर बने रास्ते और फौवारे थे। बगीचे की दूसरी ओर सुल्तान हवेली थी। उसमें युवराज के मित्र कवि कलश रहते थे।

श्रृंगारपुर में शाक्त पन्थियों का शक्तिपीठ बन गया था। तन्त्र मन्त्र का ज्ञान रखने वाले बहुत से ब्राह्मण श्रृंगारपुर क्षेत्र में रहते थे।

सह्याद्रि पर्वत की भव्य चोटियों पर शिवाजी महाराज ने अभी हाल ही में प्रतिचगढ़ नामक किले का निर्माण किया था। उस किले की चोटी पर भी बहुत से ब्रह्मर्षियों ने अपने मठ बना लिए थे। चारों ओर की गुफाएँ भी भर गयी थीं।

येसूबाई भी अपने अपमान और उपेक्षाभाव से भीतर भीतर जल रही थीं। वे

जब रायगढ़ से यहाँ आने के लिए पालकी में बैठीं, उस समय सोयराबाई ने उन्हें जिस उपेक्षाभरी दृष्टि से देखा था, उसे वे भूल नहीं पायी थीं। परन्तु शम्भूराजा जैसे ईट का जवाब पत्थर से देने वाले, अपमान और अन्याय के अवसर पर कपूर की तरह जल उठने वाले कुसुम कोमल और वज्र कठोर, समझदार किन्तु शीघ्र ही क्रुद्ध होने वाले के पति को सँभालना उनका प्रथम कर्तव्य था।

कठिनाइयों के बीच रहने और उनका सामना करने का येसूबाई को बचपन से अच्छा अभ्यास था। प्रथा के अनुसार उ. सात वर्ष की उम्र में ही शम्भूराजा के साथ उनका विवाह हो चुका था। स्वराज्य पर आने वाली विपत्तियों के साथ उनकी भावनाओं की नाल जुड़ी थी। महाराष्ट्र पर मुसलमानों ने पहला बडा आक्रमण किया था। तब पुरन्दर अपमानजनक सन्धिपत्र पर शिवाजी महाराज को हस्ताक्षर करने पडे थे। इसके अतिरिक्त शम्भूराजा जैसे अपने केवल आठ नौ वर्ष के पुत्र को लेकर आगरा की दास्ता वाली राह पर चलने के लिए विवश होना पड़ा था।

पिता-पुत्र को आगरा की ओर गये कई महीने हो चुके थे। यहाँ राजगढ़ पर जीजा माता बहुत चिन्तित होने लगीं। अपने पुत्र और प्रिय पौत्र की याद करके गत बेरात घबराकर उठ जाती थीं। भोर के घने अँधेरे में पद्मावती के तालाब पर जाती थीं। कलश भर भर कर वहाँ के महादेव का अखंड अभिषेक करती थीं। तब उनके साथ उनकी छोटी सी पौत्रवधू येसूबाई भी होती थी। उसी तालाब के किनारे ही शम्भूराजा की माताजी सईबाइ की भी समाधि थी। येसू उस पर भी सदैव जल से अभिषेक करती थी।

उत्तर से पिता पुत्र कब लौटेंगे, इसका कोई समाचार नहीं था। किन्तु अनेक बार पथिकों आदि से अप्रिय समाचार सुनने में आते थे। लोग कहते थे—"औरंगजेब जैसे मगरमच्छ के हाथ से शिवाजी सरलता से तो छूटेंगे नहीं। बादशाह के मन में खोट है। राजा को दूर कन्दहार में भेजकर बादशाह कोई घात करना चाहता है। वह राजा को अपने रास्ते से हटाना चाहता है। ऐसी खबरें सुनकर महाराज का परिवार चिन्तित हो उठता था।

देखते देखते वर्षा ऋतु समाप्त हो गयी। आसमान में बादलों का नामोनिशान न रहा। जंगल के झरने और नहरें सूख गये। हवा के साथ नाचनेवाली घास भी अपना रंग बदलने लगी। घास का रंग पीला होने लगा। ऐसे समय में जीजा माता और येसूबाई का धैर्य साथ छोडने लगा। दूध से भरे थनवाली गाय जिस तरह बछड़े की ममता में विकल होकर खूँटे के चारों ओर घूमती और चिल्लाती है उसी तरह जीजा माता भी व्यग्र होने लगीं। राज्य और परिवार पर आये महान संकट से दोनों व्यथित थीं। दोनों मन्दिर में घंटों तक पूरा दिन बैठी रहती थीं।

एक दिन महल के दरवाजे पर भगवाधारी साधुओं का एक झुंड आ गया।

मन्दिर में बैठी जीजा माता के पास छोटी येसू दौड़ती हुई गयी और उनके कन्धे पर हाथ रखकर कहने लगी—"दादीजी वे साधु आपका दर्शन करना चाहते हैं। उनमें से एक साधु तो कह रहा है कि दर्शन किये बिना जाऊँगा ही नहीं। एकदम हठ करके बैठा है।"

जीजा माता धीमे कदमों से बाहर आयीं। साधुओं के समूह में एक गोरा-चिट्टा, घुँघराले बालों वाला, बिना दाढ़ी के एक साधु था। जीजा माता के सामने आते ही दौड़कर उसने जीजा माता के चरणों में अपना सिर टिका दिया। उसके मुख से कराहने जैसी आवाज निकली—"माँ।"

आवाज सुनते ही जीजा माता आगे बढ़ी और 'शिवबा!' कहते हुए साधुवेशधारी शिवाजी को बाँहों में भर लिया। आखिर औरंगजेब की फौलादी सलाखों को तोड़कर महाराज पंछी की तरह गढ़ पर उपस्थित हो गये थे।

शहनाइयों, चौघड़ों और ढोलों की आवाजें ऊँची हो गयीं। राजगढ़ किले के हर बुर्ज से तोपें 'धुड़म धाम' 'धुड़म धाम' की आवाज में गरजने लगीं। किले में रहने वाले लोग, सभी सिपाही प्रसन्नता से नाचने लगे। राजधानी में गरजने वाली तोपों का आशय आसपास के बत्तीस किलों को ज्ञात हो गया। प्रत्येक किले की तोपें प्रत्युत्तर देने लगीं। ऐसा लगा जैसे चारों ओर दशहरा दीवाली का उत्सव हो रहा हो।

येसू की बावरी नजर केवल शम्भूराजा को ढूँढ़ रही थीं। वे कहाँ हैं? कहाँ रुक गये हैं वे? जीजा माता भी व्याकुल हो रही थीं। उन्होंने चिन्तित स्वर में पूछा, "शिवबा, अकेला ही आया है क्या तू? अरे मेरा शम्भू बेटा कहाँ है?"

शिवाजी महाराज चौंक गये। कुछ बात बनाते हुए बोले, "यहाँ सबके सामने क्यों? रात को सब बताऊँगा न आपको।"

शिवाजी महाराज की रहस्यमयी बातों से येसू भीतर ही भीतर डर गयीं। ऐसी क्या भेद की बात है जो महाराज छुपा रहे हैं? दूसरे दिन प्रातः महादेव का बड़ा अभिषेक किया गया। गढ़ और बुर्ज के सभी छोटे बड़े देवताओं की पूजा की गयी। सारी प्रजा को सामूहिक रूप से मीठा भोजन दिया गया।

तीसरे दिन प्रातःकाल महाराज अपने अन्तःपुर के मन्दिर में बैठे थे। उनके पास जीजा माता और शम्भूराजा की सौतेली माताएँ बैठी थीं। महाराज ने छोटी येसू को पास बुलाते हुए कहा, "आओ बेटा, मेरे पास आओ।" महाराज ने उसे अपनी गोद मे बिठा लिया। येसू की उम्र केवल सात वर्ष, ऊपर से बड़ी साड़ी का बोझ। वह साड़ी में लिपटी मेले की गुड़िया-सी दिख रही थी। महाराज ने ममता से उसके सिर पर हाथ फेरा और शीघ्रता से उसके माथे का कुमकुम मिटा दिया। जीजा माता

सहित सारा परिवार हतवाक हो उठा। सभी ने महाराज की ओर क्रोध से देखा। किन्तु महाराज की विषादग्रस्त मुद्रा सभी के लिए असह्य हो उठी। अपशकुन की कल्पना मात्र से जीजा माता के पैर के नीचे की जमीन खिसक गयी। वे 'शम्भू बेटाऽऽऽ' कहते हुए दहाड़ मारकर चिल्लायीं। यह देखते ही पूरा अन्त:पुर चीख-चिल्लाहट से भर गया।

छोटी येसू पूरी तरह हड़बड़ा गयी। उसका शिशुमन कुछ समझ नहीं पा रहा था। दोपहर में उसकी सहेलियों ने उससे कहा, "येसू तू बड़ा अभागी है। आगरा के रास्ते मे एक घने जंगल में शम्भूराजा घोड़े से गिर पड़े और उनका देहान्त हो गया।"

औरंगजेब के क्रूर चंगुल से छूटकर महाराज वापस आये। इसलिए उनसे मिलने के लिए झुंड-के झुंड लोग राजगढ़ की ओर आ रहे थे। किन्तु शम्भूराजा के देहान्त की खबर सुनते ही दु:ख विकल हो जाते थे। जीजा माता से लिपटकर सोयराबाई दहाड़ें मार कर रो रही थीं। उस समय तक उन्हें अपना पुत्र प्राप्त नहीं हुआ था। शम्भूराजा को ही अपना पुत्र मानकर उन्होंने आँखों की पुतली की तरह पाला था। उनके दु:खों का कोई आर पार नहीं था। पूरे राजगढ़ पर शोक छा गया था। इस कल्पना से ही जनता को रोना आ जाता था कि शिवाजी महाराज के सफेद घोड़े पर अनेक बार घूमने वाला रोबीला, स्फटिक सा गौरांग जितना सुन्दर उतना ही निर्भीक दिखने वाला शम्भू अब कभी नहीं दिखेगा।

महाराज ने शम्भूराजा के क्रिया कर्म की तैयारी की। जोधपुर, जयपुर से लेकर दक्षिण में जिंजी तक के सभी राजाओं ने शिवाजी महाराज को शोकपत्र भेजे। अन्तिम संस्कार से सम्बन्धित सारे अनुष्ठान हो रहे थे। महाराज ने हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया, साधु सन्तों और भिखारियों को दान दिया। येसू दुख से मुरझा गयी।

पाठशाला का सहपाठी मित्र, खेल का सहयोगी और जिसे उसका पति कहकर सारी सहेलियाँ उसे चिढ़ाती थीं, वह प्यारा शम्भूराजा अब कभी नहीं मिलेगा, यह सोचकर येसू बहुत उदास हो गयी! एक शाम को जीजा माता के गले लगकर येसू बोली, "दादीजी मुझे सती होना है।"

सती का अर्थ, उसका दाह, उसकी पीड़ा आदि येसू को कुछ भी ज्ञात न था। किन्तु येसू के भीतर एक पवित्र भाव था। येसू ने सुना था कि मृत पति के मोक्ष के लिए, उसके सम्मान में जलती चिता में स्वयं को जला देना, स्वयं का बलिदान कर देना बहुत पवित्र कार्य है। प्रथा के अनुसार छोटी उम्र की कोई बच्ची सती होने का निर्णय ले तो परिवार वालों के विरोध का कोई कारण ही नहीं था। इसके विपरीत ससुराल और मायके के लोग ऐसी लड़की को जबरदस्ती चिता में फेंक देते थे।

आधी अधूरी जली हुई स्त्री यदि चिता से बाहर आने का प्रयत्न करती थी तो उसके सम्बन्धी अमानवीय ढंग से भाले की नोक से छेदते हुए वापस चिता में ढकेल देते थे। येसू के निर्णय का मायके के शिर्के परिवार ने कोई विरोध नहीं प्रकट किया था।

येसू के इस निर्णय से शिवाजी महाराज बहुत विचलित हो गये थे। उनकी आँखों में आँसू छलकने लगे। उसे अपनी बाँहों में लेकर, अपनी सगी बेटी की तरह से चूमते हुए बोले, "चिन्ता मत कर बेटी, भगवान तेरा भला करेगा।"

सूखे पत्तों की तरह दिन उड़े जा रहे थे। किले पर घूमते हुए सफेद बादलों को उड़ते हुए देखकर येसू का कलेजा फटने लगता था। इसलिए वह सफेद कपड़ों में सारा समय मन्दिर में ही बिताती थी। वह दुखी और उदास बहुत समय तक मन्दिर में बैठी रहती थी।

शिवाजी महाराज को आगरा से राजगढ़ आये दो महीने आठ दिन बीत चुके थे। येसू मन्दिर के अँधेरे में बैठी थी। अचानक जोर-जोर की आवाजें आने लगीं। ऐसा लगा जैसे बिजली की कड़कन से आसमान फटा जा रहा हो। एक के बाद एक तोपें धड़कने लगीं। येसू डर गयी उसका कलेजा पानी पानी होने लगा। अपनी जगह से हिलने तक का साहस उसे नहीं हुआ। उसे लगा कुछ धोखा हो गया है, स्वराज्य के सभी शत्रुओं ने एक साथ मिलकर राजधानी पर आक्रमण कर दिया है, परन्तु तोपों के साथ ही तुरुही और शहनाई जैसे मंगलवाद्य भी बजने लगे तो येसू और भी भ्रमित होने लगी।

इतने में येसू को ढूँढ़ते हुए सोयराबाई दौड़ते हुए आती दिखाई दीं। उनके हाथ में शक्कर की थाली थी। चेहरे पर हँसी की लहरें दौड़ रही थीं। आगे बढ़कर उन्होंने येसू को प्रसन्नतापूर्वक बाँहों में भर लिया। उसे बार बार चूमते हुए सोयराबाई चिल्लायीं—"येसू अपना शम्भूराजा आ गया रे। अपना राजा बेटा सकुशल आ गया।" आनन्द का यह झोंका इतना तीव्र था कि येसू टिक नहीं पायी। वह मूर्छित होकर अपनी जगह पर ही गिर पड़ी।

मथुरा से विसाजी पन्त, काशी पन्त और कृष्णाजी पन्त ये त्रिमल बन्धु अपने जान की बाजी लगाकर, कदम-कदम पर संकटों का सामना करते हुए शम्भूराजा को लेकर राजगढ़ आये थे। उनके साथ बीस वर्ष उम्र के कवि कलश भी थे।

इन लोगों के सम्मान में महाराज ने खास दरबार बुलाया, अपने साथ बिठाकर भोजन कराया। महाराज के सम्मान से तीनों धन्य हो गये।

त्रिमल बन्धुओं के सम्मान में खास दरबार बुलाकर महाराज ने उन्हें 'विश्वासराव' की उपाधि प्रदान की। उन तीनों में से प्रत्येक को हाथी, पालकी और मूल्यवान वस्त्र देकर सम्मानित किया।

दरबार समाप्त होने पर महाराज ने तीनों बन्धुओं को अपने निजी महल में बुलाया। सम्मानपूर्वक अपने साथ बिठाकर उन्हें भोजन कराया। उस सम्मान से तीनों धन्य हो गये।

भोजन के बाद यात्रा वृत्तान्त आरम्भ हुआ। यहाँ पर शम्भूराजा जीजा माता की गोद में चिपके बैठे थे तो येसूबाई सोयराबाई की बाँहों में समाई थीं।

विसाजी पन्त ने कहना आरम्भ किया– "महाराज, यात्रा में हमने अनेक बार युवराज को धोती और जनेऊ पहनाकर ब्राह्मण बालक बना दिया था। उनके सिर के लम्बे बाल और भोली भाली आँखों को देखने से वे हमारे भांजे ही तो लगते थे।"

"किन्तु महाराज आप और छोटे राजा आगरा से भागकर निकल गये हैं, यह खबर हवा की तरह चारों ओर फैल गयी थी। उसके कारण रास्ते में जगह जगह पर बादशाह के सिपाहियों और थानेदारों से हमें बहुत परेशानी हुई। उन्हें बहुत धन देना पड़ता था। इसलिए हमने एक योजना बनायी।" बीच में ही कृष्णाजी खिलखिलाकर हँस पड़े साथ में तीनों भाई हँसने लगे परन्तु शम्भूराजा शर्म से पानी पानी हो गये। काशीपन्त ने कहा, "शम्भूराजा का बहुत ही गोरा रंग, तेजस्वी मुखमुद्रा और मूर्ति जैसा सुगठित शरीर देखकर लोगों का शक बढ़ने लगा तो आने वाली कठिनाइयों से बचने के लिए हमने युवराज को साड़ी पहना दी गले में जेवर पहना दिये आँखों में काजल डाल दिया। पूरी यात्रा में सभी उन्हें हमारी दासी समझते रहे। खास महल हँसी की लहरों से गूँज उठा। युवराज के स्त्री वेष की कल्पना करके येसू बहुत हँसी। इस कल्पना से उसका भरपूर मनोरंजन हुआ। त्रिमल बन्धु चले गये। कवि कलश के साथ शम्भूराजा की आगरा में ही मित्रता हो गयी थी। वे दोनों साथ में बाहर निकले तो रानियाँ शिवाजी महाराज पर टूट पड़ीं। युवराज के जीवित रहते हुए महाराज ने उनका अन्तिम संस्कार किया यह सोचकर सोयराबाई क्रोध से काँपने लगी।

जीजा माता की आँख से आँख मिलाने का साहस महाराज को नहीं हो रहा है। अपना सिर नीचे झुकाकर महाराज बोले "माताजी, हम और कर ही क्या सकते थे? वह औरंगजेब तो पूरा पशु है। उसने अपने तीनों भाइयों को धोखा देकर मार डाला।"

"तो क्या जीते जी उसका अन्तिम संस्कार करना चाहिए था?"

"माता जी! हम इतने कठोर न बनते तो सचमुच में बेटे के अन्तिम संस्कार करने का दुर्भाग्य हमें प्राप्त होता।"

इस संकट की कल्पना करके जीजा माता काँप उठी। उन्होंने शम्भूराजा को अपने पास बुलाया और धीरे से उन्हें चूम लिया। परन्तु उसी क्षण उन्होंने [illegible]

शब्दों में महाराज को चेतावनी दी—"शिवबा! इस तरह का अपराध भविष्य में कभी मत करना। आप राजनीति करते है और हमारी जान निकल जाती है।"

दो

शृंगारपुर की मूसलाधार बारिश ऐसी थी कि चार हाथ की दूरी पर खड़ा व्यक्ति खुली आँखों से दिखाई नहीं देता था। एक बार वर्षा जगल, पेड़, सारा परिसर धोकर चली जाती थी, फिर घने कुहरे के पीछे खड़ा प्रतिचगढ़ दुर्गम पहाड़ दिखाई देता था। ऊँचे पहाड़ से निकलकर नीचे की ओर घोड़े की तरह छलाँग लगाती तेज गति से बहती शास्त्री नदी, आसपास के झरने, बड़े बड़े जल प्रपात और बहते हुए पानी का कल कल छल छल संगीत आदि से समृद्ध विलक्षण निसर्ग शोभा युवराज पर जादू का प्रभाव डालती थी, वे धन्य हो जाते थे। वर्ष में एक बार गौरी पूजा के त्योहार में मायके आयी लड़कियों की तरह वर्षा की धाराये चार महीने ऊधम मचाती रहती थीं।

काव्यानन्द के नशे से दिमागी प्यास बुझ जाती थी। किन्तु शरीर में दौड़ने वाले पौरुषेय लहू का क्या करते। शम्भुराजा और कवि कलश में विचार विमर्श हुआ। व्यायाम के लिए पाँच बड़ी व्यायाम शालाओं को निर्मित करने का निर्णय लिया गया। शम्भुराजा के शृंगारपुर आने का समाचार पूरे प्रभावली क्षेत्र में फैल गया था। इसलिए बहुत से तरुण युवक रोज ही उनके आसपास इकट्ठे होने लगे। दाभोल और राजापुर के बन्दरगाह से आने वाले फिरंगियों को नया समाचार मिल रहा था। वहाँ सात समुद्र पार राज्य की सेना पूरे बारह महीने तैयार रहती है। मराठा सैनिकों की तरह बारिश मे चावल की खेती और ग्रीष्म तथा शीत में तलवार चलाने का काम नहीं करते थे। वहाँ के सैनिक सेना के लिए ही समर्पित रहते थे। सभी की अनुमति से निर्णय ले लिया गया। चेऊल, दाभोल और राजापुर बन्दरगाहों से मजबूत पीठ और अच्छी नस्लवाले हट्टे कट्टे घोड़े खरीदे जाएँ और प्रभावली से स्वस्थ और साहसी जवानों को चुनकर कम से कम दो हजार सैनिकों का अश्वदल बनाया जाय। इस निर्णय पर सरदार विश्वनाथ ने पूछा, "युवराज! शृंगारपुर में आपकी सेवा के लिए पाँच हजार की फौज के होते हुए यह अतिरिक्त सेना किसलिए?"

"हमारी यह नयी घुडसवार सेना बहुत बहादुर होगी। हम इस विश्वास से इसका गठन करेंगे कि भविष्य में जहाँ भी ये घोड़े दौड़ लगाएँगे वहाँ शृंगारपुरी अश्वदल के नाम से पहचाने जाएँगे।"

निर्णय के अनुसार योजना कार्यान्वित हो रही थी। अच्छे अच्छे नये घोड़े खरीदे गये। शम्भूराजा ने साधारण कुनबी बारा, बलूतेदार और अन्य समुदायों से परिश्रमी बहादुर युवकों को अपने आसपास इकट्ठा किया था। युवराज की सेना में युद्ध करने का अवसर मिलेगा यह सोचकर वहाँ के जवान बड़े उत्साह के साथ आगे आये।

घुडसवारों की नयी फौज तैयार होने लगी। दूर दूर की दौड़ आरम्भ हो गयी। सामने प्रतिचगढ की सीधी चढाई बहुत कठिन थी। फिर भी ये जवान बड़े उत्साह से उस सीधी चढाई पर दौड़ाते थे उस दुर्गभ रास्ते पर चलते हुए घोड़े झुक जाते थे पसीने पसीने हो जाते थे।

शम्भूराजा और कविराज कलश के अनुमान के अनुसार ही घटित हुआ। एक दिन रायगढ का सन्देश लेकर सरदार विश्वनाथ सामने उपस्थित हुए और दबी जबान में बोले—"युवराज राहुजी सोमनाथ का सन्देश आया है। उन्हे आपसे एक छोटा सा स्पष्टीकरण चाहिए।"

"किस बात का?"

"बड़े महाराज कर्नाटक में है। उनकी या राजगढ़ दरबार की अनुमति लिए बिना आप नयी सेना का गठन कैसे कर सकते हैं?"

"क्यों नहीं कर सकते?" कवि कलश ने कहा।

"कविराज, आप बीच में न बोले।"

"क्यों नहीं? हमारी ओर से वे ही बोलेंगे। वे हमारे गुरुबन्धु हैं, हमारे मन्त्री हैं।" युवराज ने कहा।

विश्वनाथ का दर्प कुछ टूटा। कविराज ने कहा—"सरदार विश्वनाथ जी, आप बेहिचक रायगढ़ पर हमारा उत्तर पहुँचा दें। उनसे कह दें—'बड़े राजा ने राज्याभिषेक समारोह में शम्भूराजा को युवराज घोषित किया है। धर्म, परम्परा और प्रथा के अनुसार अष्टप्रधानों जितना ही उनका भी अधिकार है। अपने राज्य के हित में वे कोई भी निर्णय ले सकते हैं'।"

सरदार विश्वनाथ ने सिर नीचे झुका लिया। वे जाने लगे तो युवराज ने उनके समीप जाकर कोमल वाणी में पूछा—"विश्वनाथ काका, इन कारकूनों के छल-कपट को क्या कहा जाए? इस प्रकार बार बार अपमानित करके ये लोग जानबूझकर मुझको क्यों सताते हैं? उनसे कहना कि यहाँ हमने अखाड़े शुरू किये हैं जनानखाने नहीं।"

तीन

प्रतिचगढ़ की चोटी पर कौओं की आँखों की तरह गहरे और साफ-सुथरे अनेक जलाशय थे। इस जल से प्यास को तृप्ति मिलती थी। सह्याद्रि की चोटी से युवराज की दृष्टि कभी कभी वारणा प्रदेश की ओर दौड़ जाती थी। उसी ओर कुछ दूरी पर पन्हालागढ़ था, उसी गढ़ की दिशा में आगे बीजापुर की ओर का कर्नाटक और तमिल प्रदेश है। वहीं पर युवराज की जिन्दगी का सर्वस्व, सत्य, शिव और सुन्दर सब कुछ अर्थात् शिवाजी महाराज थे। उनके मन्त्रपूत चरणों पर युवराज की दृष्टि सदैव टिकी रहती थी। हृदय धड़कता रहता था।

शाम के समय वन चरकर लौटती गाय के लिए जैसे बछड़ा अधीर होने लगता है, पंछियों से मिलने के लिए उनके शावकों को विकलता होती है, अपने प्रेमी को मिलने के लिए प्रेमिका पागल हो जाती है, उसी उत्सुकता, लगन और अभिलाषा से संभाजी अपने पिता की प्रतीक्षा कर रहे थे।

शृंगारपुर में ही येसूबाई के पाँव भारी हो गये थे। पेट में शिशु बड़ा हो रहा था। शयनकक्ष में येसू के पेट पर अपनी कोमल उँगलियाँ फेरते हुए युवराज पूछते थे—"येसू! हम पिताजी से कब मिलेंगे?"

"आप जब कहेंगे तब।"

"नहीं! ऐसे खाली हाथ नही जाएँगे। अब तो हाथ में बाल राजा को लेकर ही जाएँगे तभी रायगढ़ पर पिताजी और जगदीश्वर का दर्शन करेंगे।"

शृंगारपुर का सम्पूर्ण परिसर वनदेवता की अद्भुत देन प्रकृति का असीम आशीर्वाद है। यहाँ पर आषाढ़ की तेज वर्षा कुछ समय के लिए रुकी हुई थी। भाँग पिये हुए घोड़ों की तरह प्रतिचगढ़ के कन्धों से नीचे के ओर भागने वाले बड़े बड़े झरने मनुष्यों को उतरने का रास्ता देने लगे थे। कुछ दिनों से घने बादलों में दबी सूरज की किरणें धरती पर उतरने लगी थीं। श्रावण महीने में घड़ी-दो घड़ी के अन्तरात से हल्की बौछारें आती थीं और तितलियों के झुंड की तरह चली भी जाती थीं। शृंगारपुर के मैदान पर धूप हिरन के बच्चे की तरह नाच रही थी। पानी से लबालब भरे धान के खेत सन्तुष्ट दिखने लगे थे।

कवि कलश शम्भूराजा के मित्र, गुरु, दीवान और दीवाने सब कुछ थे। संभाजी के हृदय और दरबार में उनका विशिष्ट स्थान था। एक परकीय व्यक्ति का प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ते इतनी ऊँचाई पर पहुँच जाना बहुत लोगों से देखा नहीं जा

रहा था। कवि कलश इस स्थिति को भली भाँति जानते थे। इसलिए फूँक फूँक कर कदम रखते थे। वे सभी से अलग रहना पसन्द करते थे। सभाजी राजा के दरबार में कवि कलश का सम्मान दिनोंदिन बढ़ता जा रहा था इसलिए दरबार के बहुत से महत्त्वाकांक्षी और नये लोग कवि कलश से ईर्ष्या करने लगे थे।

कवि कलश ने अपने जीवन में शम्भुराजा का नाम जब पहली बार सुना तो उस समय उनकी उम्र बीस वर्ष थी। किन्तु उसी छोटी उम्र में उन्होंने ब्रजभाषा और संस्कृत का इतना गहन अध्ययन कर लिया था कि दोनों भाषायें उनकी आज्ञाकारी दासियाँ बन गयी थीं। वे इस उम्र में ही ब्रजभाषा के एक प्रतिष्ठित कवि बन चुके थे। उनका ननिहाल मथुरा में था। अपनी छोटी उम्र में ही कवि कलश ने मथुरा, प्रयाग, बनारस जैसे स्थानों पर वरिष्ठों के सम्मेलन में भाग लिया था। अनेक प्राचीन और समकालीन कवियों की श्रेष्ठ कविताएँ और लोकगीत उन्हें कंठस्थ थे। देखते देखते वे ब्रजभाषा के एक श्रेष्ट कवि ही नहीं बल्कि कवियों की सभा के कलश बन गये। इसी आधार पर इन्हें 'कवि कलश' नाम दिया गया।

प्रयाग के मुरलीधर शास्त्री का पुत्र उमाजी पंडित ही कवि कलश के रूप जाना गया। मुरलीधर शास्त्री बिठोजी भोसले के समय से भोसले परिवार के प्रयाग के पंडित थे। कवि भूषण के बाद उत्तर भारत में शिवाजी महाराज की खुलकर प्रशंसा करने वाले दूसरे विद्वान पंडित थे। इसी अपराध के लिए उन्हें एक बार इलाहाबाद की मुगल कोतवाली पर तलब किया गया था। उन्हें चेतावनी भी दी गयी थी।

एक दिन कवि कलश नित्य की भाँति भोर के समय संगम पर स्नान के लिए गये थे। स्नान करके गीले वस्त्रों में ही घर लौटे। उस समय उनके पिता मुरली धर शास्त्री तुलसी के पास खड़े बड़ी व्यग्रता से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कवि कलश के आते ही उन्होंने अपने घर के दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर लीं। वे गम्भीर किन्तु धीमी आवाज में बोले—

"चल जल्दी कर। एक क्षण भी बिना नष्ट किये घोड़े को बाहर निकाल।"

"बाबा! इतनी शीघ्रता क्यों?"

"रायगढ़ से सन्देश आया है। शिवाजी महाराज अपने पुत्र शम्भुराजा के साथ कुछ ही दिनों में आगरा पहुँचने वाले हैं। औरंगजेब की काली करतूतों का महाराज को कोई भरोसा नहीं है। इसलिए भोसले खानदान के साथ विश्वसनीय व्यवहार रखने वाले तीन चार परिवारों के श्रेष्ठ लोगों को उन्होंने उत्तर भारत से आगरा बुलाया है। ऐसी कठिन परिस्थिति में वस्तुतः मुझे ही जाना चाहिए किन्तु इस वृद्धावस्था में यात्रा का कष्ट मैं झेल नहीं पाऊँगा।"

कवि कलश ने तत्काल यात्रा के लिए आवश्यक अल्पतम सामग्री एक गठरी

में बाँधी। पानी पाने के लिए एक ढक्कन वाला कलश लिया। मुरलीधर शास्त्री पुत्र को विदा करते समय भाव विभोर होकर बोले, "अपने परिवार पर वर्षों से पंडित होने के नाते भोसले परिवार का बहुत विश्वास है। इसलिए शिवाजी महाराज और शम्भूराजा की सेवा का जो भी काम मिले उसे मन लगाकर करना। आज शत्रुओं के आक्रमण से पीड़ित भारत के तैंतीस कोटि देवी देवता शिवाजी महाराज की ओर बड़ी आशा से देख रहे हैं।"

अपने पिता के आदेश को शिरोधार्य कर कवि कलश ने आगरा के लिए प्रस्थान किया। वह शिवाजी महाराज की सेवा में प्रस्तुत हुआ। एक दिन भगवान की पूजा करते समय कवि कलश के मुख से महाराज ने शुद्ध संस्कृत पाठ सुना और उसी समय उन्हें संभाजी राजा की सेवा में नियुक्त कर दिया। कवि कलश शम्भूराजा से उम्र में लगभग दस वर्ष बड़े थे। शृंगारपुर के उमाजी पंडित ने शम्भूराजा के मन में संस्कृत भाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न कर दिया था। किन्तु कवि कलश की सुमधुर आवाज में संस्कृत और ब्रजभाषा की काव्य पंक्तियों को सुनकर युवराज विभोर हो जाते थे। आगरा प्रवास में दोनों के बीच इतनी आत्मीयता हो गयी कि कवि कलश यदि किसी कार्य से कुछ समय के लिए अन्यत्र चले जाते थे तो युवराज अन्यमनस्क हो जाते थे।

आगरा से निकलते समय बड़े महाराज ने अपनी आँखों को पोंछते हुए कवि कलश से कहा, "हम दक्षिण की ओर जा रहे हैं। हमारे जाने के बाद भी हमारे कलेजे का यह दीपक यहीं रहेगा। इसे सँभालना।" महाराज ने अपनी कनिष्ठिका से हीरे की अँगूठी निकाली और कवि कलश को भेंट स्वरूप प्रदान की। इसके बाद उन्होंने सभी से विदा ली। इसके बाद कवि कलश अपने मित्र सक्सेना के साथ कुछ दिनों तक आगरा में रहे। गुप्त रूप से वे वहाँ के समाचार एकत्र करते थे। एक दिन दोनों को संदिग्ध स्थिति में भटकते देखकर वहाँ के कोतवाल ने इन्हें कैद कर लिया। कोतवाल ने दोनों मित्रों को अनेक प्रकार की यातनाएँ देकर आगरा से बाहर निकाल दिया।

आगरा से निकलकर कवि कलश अपने ननिहाल मथुरा आये। एक दिन शाम को किसी कृष्ण मन्दिर में उन्होंने शम्भूराजा सुकुमार को ब्राह्मण कुमार के वेश में देखा। उन्होंने युवराज को तत्काल पहचान लिया, किन्तु वहाँ बाजार की भीड़ में कोई गड़बड़ी पैदा न हो जाय इसलिए वे अण्णाजी पन्त त्रिमल का दबे पाँव पीछा करते हुए धीरे धीरे उनके आवास तक आ पहुँचे। मथुरा निवासी त्रिमलबन्धु युवराज को लेकर जब दक्षिण की ओर जाने लगे तो कवि कलश भी उनके साथ हो लिए।

कालान्तर में कवि कलश और संभाजी का परस्पर प्रेम निरन्तर बढ़ता गया। युवराज ने कविराज से ब्रजभाषा के अनेक छन्द और गीत सीखे। कालिदास और

भवभूति की नाट्यकला का दोनों ने मिलकर अध्ययन किया। कृष्ण, राधा, मीरा ही नहीं पूरा गोकुल कविराज की जबान पर था। उनके साहचर्य में युवराज के भीतर साहित्य के प्रति आकर्षण पैदा हुआ। कवि कलश की संगति में युवराज ने 'नायिका भेद', 'नखशिख' और 'सात सप्तक ग्रन्थों के साथ तीन अन्य ग्रन्थ लिखे! ब्रजभाषा में लिखे गये 'नायिकाभेद' में युवराज ने श्रेष्ठतम शृंगार का वर्णन किया और बहुत-सी नायिकाओं पर मौलिक दृष्टि से विचार किया। युवराज 'नृपशंभु' के नाम से साहित्य लेखन करते थे।

संस्कृत वा ब्रजभाषा में किसी कविता का प्रारम्भिक लेखन हो जाने के बाद कवि कलश उसका सूक्ष्म निरीक्षण करते थे। संभाजी राजा ने कवि कलश को अपना वाङ्मयीन गुरु माना था। इसलिए वही उनके प्रथम पाठक और प्रशंसक बनते थे। आवश्यक होने पर कविराज परिशोधन और परिष्कार भी करते थे। दिन के समय कविराज और युवराज दरबार में मिलते थे। दरबार में राज्य का कार्यव्यापार अर्थात् प्रशासन, राज्य व्यवस्था, सूबेदारी, तवारीख, पत्राचार आदि कार्य युवराज द्वारा निपटाये जाते थे। दरबार में कविराज उनके साथ ही रहते थे। किन्तु शाम के समय या रात में युवराज की काव्य-आराधना आरम्भ होती थी। सरस्वती के दरबार की घंटियों के बजते ही युवराज मुक्त होकर आनन्दित हो जाते थे। राजनीति और कविता दोनों क्षेत्रों में गुरु-शिष्य की दौड़ सभी दिशाओं में चलती रहती थी।

शृंगारपुर के मनोहर स्थान में केशव पंडित, कवि कलश और शम्भूराजा की काव्य-गोष्ठी सजती थी। शम्भूराजा को छोड़कर शिवाजी महाराज दक्षिण की लड़ाई पर चले गये थे। इसके कारण युवराज के हृदय में उत्पन्न असन्तोष तात्कालिक था। अपने कर्तव्यनिष्ठ पिता, कुलदेवता, माताभवानी, विद्या के देवता गणेश, शिव और पार्वती उनके मन के कोनों को प्रकाशित करते रहते थे। काव्य की मधुर गन्ध युवराज को मिल गयी थी। शृंगारपुर में रहते हुए शम्भूराजा ने संस्कृत भाषा में 'बुधभूषणम्' नामक ग्रन्थ लिखने की घोषणा की।

जैसे जैसे युवराज श्लोक लिखते थे वैसे वैसे कवि कलश को देखने के लिए देते जाते थे। उसी सुबह अपने पुण्यप्रतापी पिता का वर्णन एक श्लोक लिखकर युवराज ने कवि कलश को दिया। कवि कलश उसे देखकर ऊँची आवाज में पढ़ने लगे

कलिकालभुजंगभावलीढं निखिलं धर्मवेक्ष्य विक्लवं यः!
जगतः पतिरंशतोवतापोः (तीर्णः) स शिवछत्रपतिजयत्यजेयः!

(कलिकाल भुजंग फेरा डाल रहा है।
धर्म का सर्वनाश कर रहा है।

धर्म का उद्धार करने धरती पर।
जग त्राता ने अवतार लिया है।
होने दो जयनाद शिवा दुन्दुभि का।)।

चार

उस रात युवराज कुछ जल्दी बिस्तर में चले गये थे। महल के चारों ओर घना अँधेरा छाया था। शृंगारपुर मानो सामने के पहाड़ों को तकिया बनाकर सोया था। बगल के घने पेड़ों से रह-रहकर लाल किरणें दिखाई पड़ती थीं। इससे पहरेदारों के हाथों की मशालें लहराने का आभास होता था। ऐसा लगता था जैसे जंगल में बैताल की पालकी चल रही है। थोड़े ही समय में महल के बाहर एक साँड़नी सवार कुछ घुड़सवारों के साथ आकर रुके। अचानक आये मेहमानों और दरवाजे पर बैठे कर्मचारियों के बीच धीमी आवाज मे कुछ बात चल रही थी। उनके ठीक बाद कवि कलश का घोड़ा आकर रुका। कविराज ऊपर कमरे में पहुँचे उसके पहले ही युवराज ने वस्त्र धारण कर लिए। घर में रखी कौड़ियों की माला पहन ली और अपने वस्त्राभूषण ठीक करते हुए द्वार पर आ पहुँचे। वहाँ तेज दीपकों के प्रकाश मे चार पाँच लोग बैठे थे, सफेद दाढ़ी वाला लगभग पचास वर्ष का एक मुसलमान युवराज की प्रतीक्षा कर रहा था। उसकी प्रत्येक गतिविधि पर कवि कलश अपनी सूक्ष्म दृष्टि टिकाए हुए थे। युवराज द्वार पर उपस्थित हुए तो सभी लोग उठकर खड़े हो गये। सभी ने युवराज का अभिवादन किया। संभाजी राजा ने बैठते हुए कवि कलश से आँखों के संकेत से पूछा। कविराज ने संकोच से कहा, "दिलेरखान के यहाँ से एक लिफाफा आया है।"

कवि कलश की बात सुनकर शम्भूराजा ने एक गहरी साँस छोड़ी। उन्होंने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। वे चुपचाप बैठे रहे। दिलेरखान कोई सामान्य व्यक्ति नहीं था। गंगा यमुना से लेकर भीमा कावेरी तक अनेक नदियों का पानी पिया हुआ साठ साल का अनुभवी बुड्ढा था। इस प्रकार का कुशल सरदार दो वर्ष पूर्व दक्षिण का सूबेदार बनकर आया था। तभी से वह संभाजी राजा से मित्रता करने का प्रयास कर रहा था।

शम्भूराजा ने कौड़ियों की माला हाथ में लेकर मन में ही मन्त्र का जाप किया।

उन्होंने दिलेरखान द्वारा दी गयी लिफाफे की थैली खोलकर देखी। अन्य लोग कमरे से निकलकर बाहर चले गये। शम्भूराजा ने कवि कलश को लिफाफा देकर पढ़ने के लिए कहा। कविराज की नजर उस सुन्दर हस्तलेख पर घूमने लगी।

"राजाधिराज, शेरसमशेर, संभाजी राजा भोसले।"

कोई व्यक्ति जब मित्रता के लिए अपना हाथ बढ़ाता है तो उसके मन का शत्रुता वाला ग्रंथिजाल जलकर खाक हो जाता है। यह बात हम आप जैसे शायर मराठा शाहजादे को हम क्या समझाएँगे। किन्तु आप भी इस बात को गाँठ बाँध लीजिएगा कि कमल के सुन्दर फूल केवल तालाब में ही खिलते हैं। शेर का बच्चा जंगल में ही शोभा पाता है। इस सम्बन्ध में हम आपसे सवाल करना चाहते हैं कि मराठी राज्य के योग्य शहजादे होते हुए भी शृंगारपुर की अँधेरी गुफा में अपने को बन्द करके आप क्यों बैठे हैं?

"रायगढ़ के अपने हक से वंचित होकर आप विस्थापित हैं। शेर शिवाजी जैसे पिता के होने पर भी आप प्यार के लिए यतीम हो गये हैं। आपके दिल की धड़कन हम जान गये हैं। आजतक आपने मुसलमानों की सिर्फ दुश्मनी के बारे में सुना होगा, दोस्ती के बारे में नहीं। हमारी दोस्ती की कोशिश को ठुकराना नहीं। आप पर जो तकलीफ आये मुझे सूचित करना, हमें आधी रात को जगा देना। उम्र और तजुर्बे की परवाह किये बिना यह बन्दा आपकी सेवा में हाजिर हो जाएगा।"

कवि कलश का चेहरा उतर गया। उनसे पत्र का अगला भाग पढ़ा नहीं जा रहा था।

शम्भूराजा मन ही-मन मुस्करा रहे थे। स्वयं को रोकने का प्रयास कर रहे थे। किन्तु पानी के बाँध की तरह उनकी हँसी बेकाबू हो गयी। वे पेट पकड़कर हा: हा: करके हँसने लगे। दुष्ट और अनोखा सूबेदार शेर शिवाजी के पुत्र को ही प्यार मुहब्बत का न्योता दे रहा है। इसकी कल्पना ही कितनी उपहासास्पद है। युवराज के साथ ही कवि कलश भी जोर जोर से हँसने लगे। येसूबाई दौड़ते हुए आकर दरवाजे के पास खड़ी हो गयी।

पत्र के सन्देश से पूरे महल में एक अप्रिय सन्नाटा फैल गया। पत्र का उत्तर पाने के लिए दिलेरखान के दूत महल के बाहर रुके हुए थे।

दूसरे दिन दोपहर हो गयी। दिलेरखान के दूतों से शृंगारपुर की तेज गर्मी सहन नहीं हो रही थी। उन्होंने शम्भूराजा से बार बार पूछना शुरू किया। तब युवराज दूत पर बरसते हुए बोले, "जाओ और अपने दिलेरखान से कहो कि छत से गिरे पानी का वापस छत पर चढ़ना जितना असम्भव है, नदी का सागर की बाँहों में समाने के बदले साँप की तरह उदगम की ओर जाना जितना असम्भव है, उतना ही किसी मुसलमान सूबेदार के लिए शिवाजी महाराज के पुत्र से मित्रता की इच्छा

करना। यह मूर्खता की नहीं महामूर्खता का लक्षण है।"

पाँच

युवराज-युवराज्ञी को लेकर पालकियाँ संगमेश्वर के नावड़ी बन्दगाह पर उतर गयी थीं। शम्भूराजा दूर तक फैली हुई छोटी सी खाड़ी की चमकती धारा को देख रहे थे। सन्ध्या समय वहाँ के ताड़वन में पवन ने अपना नृत्य आरम्भ कर दिया था। पश्चिम दिशा का अरुणाभ आकाश समुद्र के दर्पण में उतर आया था। इस सन्ध्या बेला में मछुवारों की छोटी-छोटी नौकाएँ लहरों पर मंथर गति से डोल रही थीं। कोली स्त्रियाँ नौ गज की साड़ी कुछ ऊपर पहने, पूरे गले में मनियों की माला पहने, बालों में जंगली फूलों को सजाये आनन्द से थिरक रही थीं। सिर पर छोटी लाल टोपी पहने या रूमाल बाँधे, घुटनों तक लुंगियाँ पहने कोली नाव की लकड़ी पर ताल से नाच रहे थे।

चलाओ रे नैया, चलाओ मुरारी
सागर तट थिरक रही नैया हमारी
छोड़ युवराज को श्रृंगारपुर नगर में?
गये क्यों महाराज दक्षिण नगर में
हमको बताओ हे भगवान मल्हारी।

इस गीत के कानों में पड़ते ही शम्भूराजा ने हँसते हुए येसूबाई और [illegible] कलश की ओर देखा। संगमेश्वर नगर ने संभाजी राजा के मन पर जादू का असर किया था। वरुणा और अलकनन्दा नदी के संगम पर बसी यह प्राचीन नगरी युवराज को बहुत अच्छी लगी। किसी समय इस नगर का नाम रामक्षेत्र था। कर्ण नामक चालुक्य राजा के शासनकाल में इस छोटे से नगर में लगभग तीन सौ नये मन्दिर और तालाब बनाये गये। शहर के चारों ओर एक प्राचीर बनाई गयी थी। शिवाजी महाराज से पहले बीजापुर के आदिलशाह का एक सूबेदार यहाँ रहता था। किन्तु जैसे जैसे हिन्दुओं का स्वराज्य बढ़ने लगा। वैसे वैसे अम्बा घाट उतरकर कोंकण में आने की आदिलशाही की हिम्मत टूटती गयी।

शम्भूराजा ने कर्णेश्वर मन्दिर में सपत्नीक-जाकर दर्शन किया।

युवराज ने नगर की बगल में एक कुछ ऊँची जगह देखी। इसके चारों ओर सुपारी और नारियल के पेड़ थे। पीछे ही ओर पास ही कल कल निनादनी नदी थी। चारों ओर पहरेदारों की तरह खड़े घने वृक्षों से घिरी यह हरी पहाड़ी थी। शम्भूराजा ने कहा, "कविराज, यह जगह मुझे बहुत पसन्द आयी है। यहीं पर हमारे लिए एक मुन्दर सा घर बनवाइए। यहाँ पर प्रकृति का साहचर्य मिलेगा साथ ही गोवा और कोल्हापुर से आने वाले रास्ते की अच्छी निगरानी भी रख सकेंगे।"

रात्रि भोजन के लिए युवराज को शृंगारपुर के महल में वापस जाना था। इसके लिए शम्भूराजा और येसूबाई ने पालकियों को छोड़कर मजबूत कद काठी वाले अरबी घोड़ों पर मवारी की। युवराज ने घोड़े की लगाम खींचकर शृंगारपुर की ओर दौड़ाया। उम ममय अगल बगल ताड़वृक्षों से घिरी घाटियों और खाइयों में अँधेरा उतर रहा था। झरनों और नालों के बीच से राह दिखाने वाले मशालची आगे-पीछे दौड़ने लगे।

शम्भूराजा नगर की सीमा पार कर रहे थे, उसी समय अचानक दो तीन सौ किमानों और कोलियों का झुंड युवराज के रास्ते में आकर खड़ा हो गया। तभी संगमेश्वर में नियुक्त पहरेदारों ने 'चलो! पीछे चलो, पीछे हटो।' कहकर उन्हें ढकेलना आरम्भ किया। किन्तु उसी समय 'ओ युवराज, ओ मालिक, ओ माई बाप, थोड़ा रुक जाओ' ऐसी चीख युवराज के कानों में पड़ी। इस व्याकुल और आर्त चीख को मुनते ही युवराज ने अपने घोडे की लगाम खींचकर उसे पीछे की ओर घुमाया।

युवराज को रुकता देखकर, पहरेदारों के बिना कोई चिन्ता किये, उन गरीब श्रमजीवियों ने चीखना-चिल्लाना शुरू किया—"माई बाप, सरकार हमको बचाओ।" संभाजी राजा को किमी गम्भीर प्रसंग की आशंका हुई। वे घोड़े मे उतर गये। उनके पीछे कवि कलश भी घोड़े से उतरे। उन दोनों को किसानों ने घेर लिया। एक बूढ़ा किसान दहाड़ मारकर चिल्लाया—"माई बाप, सरकार, हम कैसे जियें? ये जप्ती के हुकुमनामे देखिये।"

"किसने भेजे हैं इन्हें?"

"देखिये मीधे रायगढ से आये हैं।" दुबले पतले दो तीन किसान एक साथ बोल पड़े।

"कविराज देखिए तो इसमें जरूर कुछ गड़बड़ है।" शम्भूराजा व्यग्र होकर बोले, "यहाँ प्रभावली की सूबेदारी महाराज ने मुझे दी है। ऐसी स्थिति में बिना मुझसे पूछे ये हुकुमनामे रायगढ़ से कैसे आये?"

उन घबराये हुए किसानों के हाथ से कविराज ने हुकुमनामा लिया। वे धीमी आवाज में बोले, "बहुत सालों से लगान न भरने के कारण ये हुकुमनामे भेजे गये होंगे।"

"किन्तु, उस पर हस्ताक्षर किसके हैं?"

"राहुजी सोमनाथ के। अण्णाजी दत्तोपन्त के कहने पर ये हुकुमनामे भेजे गये हैं, ऐसा इसमें स्पष्ट उल्लेख है।"

पीठ से पेट चिपके किसानों में भय की लहर पुनः उमड़ पड़ी। आठ दस लोगों ने शम्भूराजा और येसूबाई के चरणों में स्वयं को समर्पित कर दिया। वे दहाड़ें मारकर शिकायत करने लगे—"हम भी क्या कर सकते हैं मालिक? पिछले छः सात सालों में अनाज कुछ पैदा ही नहीं हुआ। कितने ही लोगों ने निराश होकर आत्महत्या कर ली। हम पर दया करो, माई-बाप हमें न्याय दो।"

उन श्रमजीवियों के दुबले पतले निष्प्राण शरीर को देख लेने पर किसी दूसरे गवाह की आवश्यकता ही नहीं थी। फिर भी युवराज ने संगमेश्वर के थानेदार को पास बुलाया और किसानों की बदहाली की पक्की जाँच की। उन्होंने कविराज को तत्काल आदेश दिया—"कलशजी, इन सभी को लिखकर माफीनामा का हुक्म दे दो।" युवराज ने उसी जगह पर तत्काल न्याय व्यवस्था की। यह देखकर मेहनती कुनबी वहीं पर आनन्द से नाचने लगे। उन किसानों ने युवराज को बहुत बहुत आशीर्वाद दिया। युवराज की सेना पुनः शृंगारपुर की ओर चल पड़ी।

रात में कवि कलश ने हल्के से संकेत करने वाले शब्दों में शम्भूराजा से कहा, "आपके हुक्म की तामील कल प्रातः ही कर दूँगा। माफीनामा कल ही विशेष दूत से संगमेश्वर भेज दूँगा। परन्तु राजन! आपकी कार्यवाही की एक प्रति सूचनार्थ रायगढ़ को भी भेज देता हूँ।"

"हमारे हुक्मनामे के सम्बन्ध में कुछ सन्देह हो रहा है क्या?"

गरम तवे पर तेल पड़ने से जैसे छनछनाहट की आवाज आती है, वैसे ही शम्भूराजा उखड़े—

"कविराज! हम प्रभावली के बाकायदा सूबेदार हैं। अपने अधिकार से हम यह निर्णय ले सकते हैं और हिन्दवी स्वराज्य के युवराज हैं, खेत खड़ा किया गया धोखा नहीं हैं। किसी कारण से दुखी, लाचार और जरूरतमन्द प्रजा के लिए तत्काल निर्णय लेने का अधिकार युवराज के रूप में मुझे है।"

कवि कलश धीरे-से हँसे, और उतने ही शान्त स्वर में बोले, "राजन! आपके अधिकार के सम्बन्ध में प्रश्न करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। किन्तु एक प्रिय मित्र के नाते मुझे यह अवश्य कहना पड़ेगा कि जहाँ राजा होता है वहाँ दरबार होता है। दरबार की दीवारें षड्यन्त्रकारी कारनामों से खोखली होती हैं,

महत्त्वाकांक्षा की भूख मे बेचैन होती हैं। यह खेल बहुत पुराने जमाने से चला आ रहा है। आगे पीछे कोई समस्या न उत्पन्न हो इसलिए रायगढ दूत भेजकर सूचना दे देनी चाहिए, ऐसा मेरा विचार है।"

छह

आसमान मे उडने वाले सफेद बादलो की तरह दिन तेजी से गुजर रहे थे। शृगारपुर की दिनचर्या मे कोई विशेष अन्तर नही आया था। इसी बीच एक दिन दोपहर के समय बालाजी आवजी चिटणीस की पालकी महल के दरवाजे पर आ पहुँची।

पतले शरीर, गहरे गोरे रग, मजबूत काठी वाले साठ वर्षीय बालाजी पालकी से उतरे। बीस वर्षीय तरुण की भाँति तेजी मे महल की पचीस सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आये। बालाजी बीच के चौक पर आये तो येसूबाई ने सामने आकर उनका स्वागत किया। शम्भूराजा भी बालाजी के अचानक आगमन मे चौंक गये। दोनो एक-दूसरे की बाँहों में समा गये। शम्भूराजा ने हँसते हुए पूछा, "बालाजी काका एकदम बिना सूचना के कैसे आ गये?"

"शम्भूराजा! गढ़ पर अब मन नहीं लगता। महाराज का कर्नाटक गये कई महीने हो गये। सोचा कम से कम युवराज के ही साहचर्य मे दो दिन बिता लें।"

स्वराज्य की स्थापना करते समय शिवाजी महाराज ने अपने आसपास बहुत से नर रत्नों का समूह एकत्र कर रखा था। उनमें से तानाजी बाजीप्रभु देशपांडे शिवा काशीद जैसे अनेक रत्न शहीद हो चुके थे। कुछ वृद्धावस्था के कारण समाप्त हो गये थे। इस समय राजदरबार में हबीरराव, येसाजी कंक हिरोजी फर्जन्द, अण्णाजी दत्तो, मोरोपन्त पिगले, राहुजी सोमनाथ जैसे उँगलियों पर गिने जा सकने वाले लोग ही पुराने समय के बचे थे। उन्हीं मे बालाजी आवजी चिटणीस का समावेश था।

चिटणीस खानदान का स्वराज्य की सेवा में प्रवेश एक दुर्घटना और संयोग का परिणाम था। बालाजी के कर्मठ पिता आवजी हरि चित्रे जंजीरा के सिद्दी के यहाँ दीवान थे। मराठी प्रदेश पर भयानक अत्याचार करने के लिए सिद्दी कुख्यात था। किन्तु अपनी कार्यकुशलता और निष्ठा के कारण आवजी हरि सिद्दी के दीवान बने रहे। आवजी की दिनोंदिन बढती समृद्धि और प्रगति से अनेक मुसलमान कर्मचारी

और सरदार स्वभावत: ईर्ष्या करने लगे थे।

जेजुरी के खंडोवा आवजी हरि के पूज्य देवता थे। एक बार उनके सपने में मल्हारी मार्तंड के आने की घटना घटी। तभी अपनी सेवा के अनुशासन को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने बीमार मालिक के सामने नियमानुसार प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। अवकाश लेकर वे जेजुरी गये और खंडोवा की पूजा करके जंजीरा वापस लौट आये। इसके पश्चात सिद्दी बाबशीखान की तबीयत और भी खराब हो गयी। आवजी हरि से ईर्ष्या करने वाले मुस्लिम कर्मचारियों को अच्छा अवसर मिल गया। उन्होंने षड्यन्त्र रचकर यह कहना शुरू किया कि आवजी ने जेजुरी जाकर मालिक पर कुछ जादू टोना किया है। वे एक ही बात दुहराते थे—"आवजी ने सुल्तान पर भयानक जादू टोना किया है। वह राज्य को डुबाना चाहता है।" संयोग बाबशीखान मर गया। गद्दी पर कम उम्र का नया सिद्दी बैठा। कर्मचारियों ने उससे भी शिकायत करनी आरम्भ की कि आवजी ही सुल्तान की मृत्यु का कारण है। नये सिद्दी ने शिकायत को सच मान लिया। आवजी ने हाथ पैर जोड़कर सुल्तान से स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने की प्रार्थना की किन्तु सिद्दी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसके विपरीत नये सिद्दी ने जहर का प्याला आवजी के हाथ मे देकर उसे पीने के लिए सख्त आदेश दिया। आवजी और उनके भाई खण्डोजी को बोरे में बाँधकर समुद्र मे फेंक दिया गया।

हब्शी लोगों ने आवजी हरि का घर लूट लिया। उन्होंने आवजी के बालाजी चिमणाजी और श्यामजी तीनों पुत्रों को गुलाम के बच्चे मानकर ईरान इराक में बेचने का निश्चय किया। एक रात आवजी की पत्नी रखमाबाई के भाग्य फूट गये। उस समय बालाजी केवल ग्यारह वर्ष के थे। अभागी माता के साथ तीनो बच्चे नाव पर चीख-चिल्ला रहे थे। भरे समुद्र और आसमान को देख देखकर भाग्य और भगवान से सहायता की प्रार्थना कर रहे थे। भाग्य का फेर था या कुछ और स्वयं प्रकृति ही उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़ी। नाव राजापुर के किनारे तक पहुँची थी तभी अचानक हवा उल्टी दिशा में बहने लगी। विवश होकर नाविकों को किनारे की ओर जाना पड़ा।

यह योगायोग ही था कि रखमाबाई के भाई विसाजी शंकर राजापुर में व्यापार करते थे। वे ऐन मौके पर बहन की सहायता के लिए दौड़ पड़े। नाविकों और कर्मचारियों से बहुत-बहुत प्रार्थना करके और बहुत-सा धन उनकी झोली में डालकर विसाजी ने अपनी बहन और भांजों को मुक्त करा लिया।

एक बार बालाजी ने अपने मोतियों जैसे सुन्दर अक्षरों में शिवाजी महाराज को एक पत्र लिखा—'महाराज! हिन्दवी स्वराज्य के एक सिपाही के रूप में सेवा करने से मैं स्वयं को धन्य समझूँगा।'

संयोग से शिवाजी महाराज कुछ समय बाद राजापुर की लड़ाई पर आये। उन्होंने एक जौहरी की भाँति हीरे को पहचाना। उन्होंने रखमाबाई से कहा कि वे बालाजी को स्वराज्य की सेवा में ले रहे हैं। अपने परिवार के साथ घटित हादसे से वे अभी तक उबर नहीं पायी थीं। उनके करुण रुदन से महाराज का हृदय द्रवित हो उठा। महाराज ने बालाजी की माता को अभयदान देते हुए कहा, "माताजी आपके तीन पुत्र हैं। मुझे आप अपना चौथा पुत्र मानिए। आपका सुपुत्र स्वराज्य की चिन्ता करेगा, मैं आपकी चिन्ता करूँगा।"

अपनी ईमादारी, परिश्रम और कार्य कौशल से बालाजी पन्त राजसत्ता की एक एक सीढ़ी चढ़ते ऊपर गये। स्वराज्य के ब्राह्मण प्रधानों के प्रच्छन्न विरोध की अनदेखी करके महाराज ने बालाजी को सचिव (चिटणीस) बना दिया और राज्य के सभी किलों और गढ़ों का कार्यभार उन्हें सौंप दिया।

बालाजी पन्त ने प्रत्येक किले पर अपनी प्रभु जाति के योग्य और कर्मठ व्यक्तियों को नियुक्त किया। उन्हें महत्त्वपूर्ण पद दिये। अष्टप्रधानों में दो दल बन गये थे। एक ओर बालाजी आवजी चिटणीस तो दूसरी ओर अण्णाजी दत्तो और मोरोपन्त पिंगले थे। प्रभु और ब्राह्मण जाति में आश्चर्यजनक आन्तरिक बैर था। किन्तु शिवाजी महाराज के कठोर अनुशासन और निर्णायक दृष्टि के सम्मुख किसी की कुछ न चलती थी।

बालाजी आवजी को शम्भूराजा से पहले से ही बहुत स्नेह था। शम्भूराजा मातृ विहीन पुत्र और बडे महाराज हमेशा अपने राज-काज में व्यस्त रहते थे। ऐसी स्थिति में पहले राजगढ़ में और बाद में रायगढ़ में शम्भूराजा की हित चिन्ता करने वाले जो इने गिने लोग थे उनमें बालाजी आवजी एक थे।

सागौन का वृक्ष जिस गति से बढ़ता है, शम्भूराजा भी उसी गति से दिनोंदिन हृष्ट-पुष्ट होते जा रहे थे। राज्याभिषेक के पूर्व बड़े महाराज ने रायगढ और स्थानीय राज्य का कार्यभार सँभालने के लिए कहा था। शम्भूराजा ने बड़े उत्साह और बड़ी कुशलता से चार वर्षों तक यह कार्य सफलतापूर्वक सँभाला। कर्नाटक की कोलार और चिक्कबालापुर की जागीर भी स्वयं सँभाली थी। आगे अथणी, रायबाग गोलकुडा से लेकर हुबली, फोंडा और अकोला तक कर्नाटक और गोवा की सीमा तक धावा बोला था। कुतुब शाह के दीवान मादण्णा से मित्रता करके बहुत सा धन लूटकर रायगढ़ ले आये थे। शम्भूराजा के इस वीरता भरे उत्साह से बालाजी पन्त बहुत प्रभावित हुए थे।

कुछ समय बाद बालाजी पन्त शम्भूराजा के साथ भोजन कर रहे थे। सुस्वादु भोजन से उनका मन बहुत प्रसन्न था। परन्तु भोजन करते-करते यकायक जैसे मुँह में कोई पत्थर का टुकड़ा आ गया। बालाजी ने क्रुद्ध स्वर में पूछा—

"वह अघोरघट कपालिक कहाँ है?"

"कौन अघोरघट और कौन कापालिक?"

इस नये प्रसंग को लेकर बालाजी पन्त की मुद्रा अपना लुभावनापन छोड़कर क्रोधावेश में भयानक हो गयी। वे चिल्लाए—"जो हमेशा तुम पर अपना जादू चलाता है। जिसने अपनी पापी बुद्धि मे तुम्हें पागल बना दिया है। जो भैंसे की गीली पीठ पर सवारी करता है, जो काले जादू के काले-कारनामे करता है।"

"मगर है कौन?"

"जो अघोरी कार्य के लिए बैतालों के झुंड बुलाता है।"

संभाजी ने मुस्कराते हुए येसूबाई की ओर देखा। फिर दानों जोर से हँसने लगे। अपनी हँसी को रोकते हुए शम्भूराजा ने कहा, "औरों की तरह आपको भी संशय और ईर्ष्या के साँप ने डस लिया है क्या? इसीलिए कविराज आपको पराये लगने लगे हैं क्या?"

"सच कहूँ युवराज! इस सन्दर्भ में मैं अपने अष्टप्रधानों को जरा भी दोष नहीं देता। यह कलुष के रूप में शिवाजी महाराज के स्वराज्य में कलि प्रविष्ट हो गया है। यह पूरी तरह मच है। यदि ऐसा नहीं होता तो आपके जैसा कर्तव्यपरायण राजकुमार ने इतनी भयंकर चाल न चली होती।"

"कैसी चाल? बालाजी काका!"

"किसी अच्छे व्यक्ति के बुरी मंगति में पड़ने से बुराइयों का प्रभाव पड़ता ही है। इस शृंगारपुर के परिसर में मांस मच्छी खाने वाले, जादू-टोना करने वाले अधर्मी शाक्तपन्थियों ने उत्पात मचा रखा है। आप जैसा विद्वान युवराज उनका अन्धा शिकार हो जाय, यह बड़ा दुर्भाग्य है।"

"बालाजी काका मनुष्य के आचरण की शुद्धता के लिए ही प्रत्येक धर्म और पथ प्रयत्न करते हैं। कालान्तर में लोग धर्म को वशवर्ती बनाकर अनुचित मार्ग को अपनाते हैं। किन्तु धर्म का विकृत रूप वास्तविक धर्म नहीं होता। यह मानना भी ठीक नहीं होगा कि केवल शाक्त पन्थियों में ही सारी बुराइयाँ हैं और वैदिक धर्म इससे पूर्णतया मुक्त हैं।" शम्भूराजा ने आगे कहा, "शाक्त पंथ को हम कुछ अन्य नहीं समझते। वह तो वस्तुतः जगदम्बा की, शक्ति की ही पूजा है। उसमें हमारे भोसले खानदान की कुलदेवी तुलजा भवानी भी हैं। वे शस्त्रधारिणी और दुष्टों का नाश करने वाली हैं। उसे भोग लगता है तो उसी रक्त मांस का," बोलते-बोलते शम्भूराजा क्षणभर के लिए रुके फिर भरे हुए गले से बोले, "आज हमारा कोई अपराध न होने पर भी बहुतों की उपहास करने वाली दुष्ट दृष्टि हमें शाप देती है। बहुत से लोगों के द्वेष के, शाप के और उनकी गालियों के हम शिकार होते हैं। ऐसी दुष्ट प्रवृत्ति का सामना करने के लिए किसी शक्ति के आशीर्वाद और वरदान की आवश्यकता तो पड़ेगी ही, बालाजी काका।"

"शम्भूराजा! बड़े महाराज ने ऐसा सहारा कहाँ ढूँढ़ा था?"

"आपके जैसे व्यक्ति को क्या बताएँ चिटणीस काका?"

शम्भूराजा आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोले, "गागाभट्ट से पिताजी ने अपना राज्याभिषेक करवाया था। किन्तु उसमें कुछ दोष रह गये थे, कुछ अपूर्णताएँ थीं। यह ध्यान में आने पर पिताजी ने फिर दुबारा निश्चल गिरि गोसावी से तान्त्रिक अभिषेक करवाया था। आप इस बात को भूल गये क्या? यहीं पर महाराज ने निश्चल गिरि के लिए आश्रम बनवाया था और उनके लिए हर प्रकार की सुविधा करके दी थी। आपको इसे नहीं भूलना चाहिए।"

बालाजी कुछ नरम पड़े किन्तु तत्काल उन्होंने पूछा—

"मुझे यह नहीं मालूम था कि तुम्हें राजा बनने की इतनी जल्दी पड़ी है।"

"काका, आप यह क्या कह रहे हैं? अपने पिताजी राजगद्दी पर बैठे हैं तो राजपद के हम क्यों उतावले होंगे? इस तरह का आचरण करने वाले क्या हम आपको किसी सुल्तान या मुसलमान के दुष्ट शहजादे लग रहे हैं?

"यदि ऐसा नहीं था तो वह महाभयंकर अभिषेक क्यों करवाये?"

"कौन सा?"

"वह कलशाभिषेक था क्या?" आँखें सिकोड़ते हुए बालाजी ने पूछा।

"हाँ, वह किया मैंने।" शम्भूराजा ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"अरे यह क्या किया शम्भूराजा आपने?" बालाजी आवजी व्याकुल हो गये। उनका चेहरा उतर गया।

"क्या करते बालाजी काका? कद काठी का मजबूत तगडा घोड़ा दौड़ते दौड़ते अचानक ठोकर लगने से मर कैसे जाता है? हमारे महल के आगे पीछे हल्दी कुमकुम लगे नींबू, सुई से गुदे हुए भल्लातक, काली जादू टोने की गुड़्डियाँ जैसी अशुभ वस्तुएँ कहाँ से आकर भरी पड़ी रहती हैं?"

"परन्तु इसके लिए कलशाभिषेक?" बालाजी आवजी ने आँखें मटकायीं।

"दूसरा करते भी क्या काका? अन्त.पुर में, दरबार में घोड़ों के तबेलों में कहीं भी शान्ति नहीं, बहनोई गणोजी अलग नाराज। जिन्दगी को शर्मनाक बना देने वाली दरबारियों द्वारा की गयी बदनामी, व्यभिचार के गन्दे आरोप, मुझे हमेशा नीचा दिखाने की ताक में बैठे अष्टप्रधान और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह कि सारी दुनिया के लिए पहाड़ जैसा आधार देने वाले किन्तु मुझसे निरन्तर दूर होते जा रहे मेरे पिताजी, इन सारी परेशानियों का कटु अनुभव करते हुए सोचा एक बार शान्ति कर डालूँ।"

"शान्ति? इस प्रकार की शान्ति?" बालाजी आवजी संकुचित हुए। उनकी पुतलियाँ तेजी से गोल-गोल घूमने लगीं। उनका गला भर आया। वे व्याकुल स्वर

में चीखे—"इसका मतलब यह है युवराज कि जिन शिवाजी महाराज ने इस महाराष्ट्र का निर्माण किया उनको हमेशा के लिए शान्त करने को निकले हैं आप।"

बालाजी पन्त ने जो निष्कर्ष निकाला था उसकी कल्पना मात्र से शम्भूराजा के प्राण सूख गये। ऐसा लगा जैसे किसी ने तेज छुरी उनके कलेजे में उतार दी। आसन से उठकर वे दरी पर बैठ गये और अत्यन्त भयभीत स्वर में बोले, "कितनी भयंकर बात कर रहें है काका आप?

"युवराज! कलशाभिषेक फिर दूसरा अभिप्राय क्या है?" बालाजी पन्त दहाड़ें मारकर रोने जैसे स्वर में बोले, "एक राजा के गद्दी पर रहते दूसरा राजा उस गद्दी पर नहीं बैठ सकता। जिसको राजसत्ता प्राप्त करने की उतावली रहती है वही कलश जैसे धूर्त मांत्रिकों को एकत्र करता है और तन्त्र-मन्त्र की अघोरी विद्या के बल पर जीवित राजा का नाश करता है। दिवंगत राजा के श्राद्ध के दिन ही नये राजा का सिंहासनारोहण होता है। इसी के साथ कलशाभिषेक की पूर्णाहुति होती है। शात्रज्ञ पंडितों का ऐसा ही मानना है।"

शम्भूराजा की आँखों मे धारासार आँसू गिरने लगे। उन्होंने बालाजी से तत्काल पूछा, "कलशाभिषेक अनुष्ठान यह भयंकर आशय आपको किसने बताया?"

"अजी अब बताना किसको रह गया है। रायगढ़ से लेकर पनाल्हगढ़ तक हर जगह यह बात फल गयी हैं। आपके इस भयंकर कृत्य का समाचार राज्य क कुछ कर्मचारियों न महाराज के पास कर्नाटक भी भेजा है। अण्णाजी दत्तो और राहुजी सोमनाथ की शिष्यमंडली, उनके भांजे-भतीजे, स्वयं आपकी सौतेली माता सोयराबाई रानी सभी हर किसी से आपके इस कृत्य का वर्णन करते हैं। बच्चे वृद्धे सभी इस चर्चा में लिप्त हैं। बालाजी आवजी ने कपड़े से अपना चेहरा पोंछा।

बालाजी के मुँह से निकले धक्का देने वाले प्रत्येक शब्द को सुनकर युवराज और युवराज्ञी दोनें आश्चर्यचकित रह गये। अपनी आँसुओं और रुलाई के वेग को रोकते हुए शम्भूराजा ने कहा, "जिन नीच और दुष्ट लोगों के विकृत मस्तिष्क से ऐसे विषैले विचार निकलते हैं, कल उनके मुँह में राख भरने में गधे भी पाप कर्म का अनुभव करेंगे। अच्छा हुआ, आपने इतनी दूर आकर हमें सावधान किया।"

मरणासन्न, घायल मराठा सरदार की तरह शम्भूराजा नीचे गिर गये। जैसे किसी ने कलेजे पर गरम सरिया रख दिया हो। ऐसी पीड़ा से वे छटपटाये।

"बालाजी काका! जिस जीजा माता ने मेरी माँ के मरने के बाद मुझे पाल पोस कर छोटे से बड़ा किया उसी जीजा माता के पुत्र की मृत्यु का सपना संभाजी देखता होगा; ऐसा आप सोच कैसे सकते हैं?"

"नहीं-नहीं, एकदम असम्भव।" बालाजी पराजित स्वर में बोले।

संभाजी का हृदय घायल हो चुका था। इसलिए बालाजी पन्त भी कुछ लज्जित हुए। मन की बात को स्पष्ट रूप से कह देना सब के साथ सठता और उद्दंड के साथ उद्दंडता करना, सज्जनों के साथ विनम्र होना संभाजी का स्वभाव था। उनके स्वभाव की वह विशेषता बालाजी पन्त को अच्छी तरह ज्ञात थी। इतना ही नहीं, संभाजी का सारा बचपन बालाजी के सामने गुजरा था। इसलिए वे संभाजी के साफ मन को अच्छी तरह ज्ञात थी। इतना ही नहीं, संभाजी का सारा बचपन बालाजी के सामने गुजरा था। इसलिए वे संभाजी के साफ मन को अच्छी तरह जानते थे। वे बोले, "नहीं युवराज! लोग आपको दोष नहीं देते। उनकी दृष्टि में आपका कवि कलश ही सारी दुरावस्था का कारण है।"

"ऐसा बिलकुल नहीं है। इन अष्टप्रधानों और सरकारी अधिकारियों के लिए माध्यम कलश रहते किन्तु उनका निशाना मेरी ओर ही होता है। मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि इसे न पहचान सकूँ।"

"जाने दो युवराज! इन अधिकारियो के आक्रमण अथवा व्यर्थ की बातों से आप कभी भी विचलित नहीं होना। आज भी स्वयं को उच्च वश का ब्राह्मण समझने वाले और मराठा लोग शिवाजी महाराज को क्षत्रिय मानने के लिए तैयार नहीं हैं। इससे पहले ही उन्होंने महाराज के राज्याभिषेक का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से विरोध ही किया था।

"मतलब?" सभाजी ने आश्चर्य के साथ पूछा।

इन लोगों का कहना है कि परशुराम ने सारी धरती को क्षत्रिय विहीन कर दिया था। धरती पर कोई क्षत्रिय नहीं बचा था तो फिर शिवाजी कैसे क्षत्रिय कुल के हो सकते हैं? जब इन महानुभावों ने इस प्रकार का विवाद खडा किया था तब यह सिद्ध करने के लिए कि शिवाजी महाराज मूल में राजस्थान सिसोदिया वंश के है, यही बालीजी आवजी चित्रे राजस्थान गया था ओर सबूत जुटाकर ले आया था।" बालाजी ने सभाजी को यह विवरण दिया।

"ऐसा है क्या? तो ये बातें अण्णाजी दत्ता को समझाओ न" युवराज ने कहा। "अण्णाजी कार्यकुशल तो है ही। किन्तु कार्यकुशल होने पर भी उनकी प्रवृत्ति ठीक नहीं है। मराठा और प्रभुजाति कोई भी क्षत्रिय नहीं है, ऐसा मानने वालों में अण्णाजी प्रमुख हैं।

युवराज और युवराज्ञी के साथ बालाजी ने गम्भीर चर्चा की। शिवाजी महाराज के कर्नाटक से लौटने के पहले शम्भूराजा को अधिक से अधिक बदनाम करने की विरोधियों की योजना थी। इसीलिए उन्होंने कवि कलश का बड़ा भूत खड़ा किया था। उनका विश्वास था कि जितना कवि कलश बदनाम होंगे उतना संभाजी राज भी बदनाम होंगे। विचारमग्न शम्भूराजा के गम्भीर चेहरे पर अचानक हँसी खिल उठी।

उन्होंने बालाजी से पूछा—"काका, आपने पहले क्या कहा, कवि कलश बाघ की खाल पर बैठकर जादू टोना करते हैं?"

"बाघ नहीं युवराज। भैंसे की गीली खाल पर बैठकर।"

बालाजी आवजी के वाक्य पूरा होने के पहले ही युवराज जोर से हँस पड़े। उन्होंने कहा—"काका, मरे हुए चूहे की दुर्गन्ध से जिसकी धोती पीली हो जाती है उससे भैंसे की खाल की दुर्गन्ध कैसे सहन होगी?"

"इनमें से कोई गया था क्या कवि कलश को देखने के लिए? इस प्रकार का भयंकर कार्य यदि हमारे कवि कलश करते तो गाय चराने वाले बच्चे भी उन्हें पत्थर मारते। आरोप लगाने वालों को क्या इतना भी नहीं समझ में आता?"

"जाने दीजिए युवराज। इन सभी बातों का मतलब एक ही है। आपको बदनाम करने और अपयश देने के लिए रायगढ़ के आसपास बहुत से कारखाने रात दिन चल रहे हैं।" बालाजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

पन्त दो दिन शृंगारपुर में रुके रहे। अनेक मुद्दों पर युवराज के साथ उनकी गम्भीर चर्चा हुई। उसी समय कुछ स्मरण करते हुए बालाजी ने कहा, "युवराज, आजकल आप राज्य का आर्थिक हित भूलते जा रहे हैं। कर डुबाने वाले श्रमजीवियों और किसानों को तत्काल माफीनामा लिखकर दे देते हैं। गुंडों का अभयदान देकर कर्तव्यपरायण कर्मचारियों को बार बार अपमानित करते हैं। राहुजी सोमनाथ ने इसी प्रकार शोर राजधानी में मचा रखा है।"

"किस चीज का माफीनामा, बालाजी काका?" शम्भूराजा को संगमेश्वर के किसानों का प्रसंग स्मरण हो आया। वे दुखी होकर बोले, "वे नावड़ी के परिश्रमी लोग हैं। पिछले आठ वर्षो में अतिवृष्टि और बाढ़ के कारण वहाँ कोई फसल पैदा ही नहीं हुई। लिए कर्ज को चुकाने के लिए साहूकारों ने भी उन्हे सताया। ऐसी दुखी प्रजा के आँसू पोंछने का यदि मुझे अधिकार नहीं है तो हमारे इन हाथों को उखाड़कर फेंक देने में क्या बुराई है?" शम्भूराजा ने क्रोध के आवेश में पूछा।

बालाजी पन्त रायगढ़ के लिए निकले तो उनके बिदा करते समय शम्भूराजा को बहुत दुख हुआ। वे अधीर स्वर में बोले, "बालाजी काका इस बदली हुई परिस्थिति का हमें सचमुच कोई अनुमान नहीं था। इन षड्यन्त्रकारियों ने मुझे अपने प्रिय पिता के साथ दक्षिण की लड़ाई में नहीं जाने दिया। युवराज होने पर भी रायगढ के किसी कोने में जगह नहीं दी। मुझ पर अभद्र आरोप लगाया कि मैंने अपने महल में पर स्त्री के साथ वसन्त पंचमी के दिन व्यभिचार किया। एक के बाद एक होने वाले आघातों से संभाजी कभी डगमगाया नहीं। परन्तु ।"

बाढ़ के गहरे पानी में फँसी नाव की तरह शम्भूराजा की साँस अटक गयी। गरम आहें भरते हुए वे बोले "परन्तु बालाजी काका जब हमारे विरोधियों ने यह

आरोप लगाया कि राजगद्दी के लोभ में मैं अपने जन्मदाता शिवाजी महाराज जैसे युग प्रर्वतक पिता की जान का दुश्मन बन गया तो मेरे हृदय के टुकड़े टुकड़े हो गये।"

"रहने दें युवराज, आप शान्त रहें।"

"पिताजी की जान लेने का नीच विचार तो छोड़ ही दें, किन्तु कभी समय आने पर पिताजी के सपनों के लिए, उनके राष्ट्रधर्म के लिए और भगवान के लिए यह संभाजी अपने शरीर के फूल को काल की खाई में चढ़ाये बिना नहीं रहेगा।

सात

बड़े महाराज की याद आ गयी। याद आते ही शम्भुराजा की आँखों के सामने दुर्गम रायगढ़ आड़ा तिरछा खड़ा हो गया। वे गहरी साँस लेकर बोले

"युवराज्ञी, कितना विचित्र है यह मानव स्वभाव? समय के साथ लोग किस तरह बदल जाते हैं? इसी रायगढ़ ने यह दृश्य भी देखा है जब युवराज के साथ खेलते हुए माता सोयराबाई बच्चों में भी बच्चा बन जाती थी। कभी कभी शम्भुराजा के लिए सोयराबाई जीजा माता से भी झगड़ पड़ती थीं। किन्तु. ।"

"किन्तु क्या?" •

"जब से राजमहल में राजाराम का रोना सुना तब से राजमहल की दीवारों का रंग बदल गया।

"युवराज, मुझे तो ससुरजी साहब के राज्याभिषेक का वह भव्य समारोह याद आता है, जब ससुर जी ने आपको हिन्दवी स्वराज्य के युवराज अर्थात् भविष्य के उत्तराधिकारी के रूप में सम्मानित किया था। तब पटरानी के रूप में वहाँ बैठी थी तब बुवा साहब ने कोई रुकावट पैदा नहीं की थी।

"युवराज्ञी, आपने अच्छा स्मरण दिलाया।" वह प्रसंग अपनी आँखो के आगे प्रत्यक्ष करते हुए शम्भूराजा बोले, "आप कहें तो मैं सौगन्धपूर्वक कह सकता हूँ कि राज्याभिषेक के उस समारोह के बाद हमारी इन माताजी ने कभी भी पहले की तरह दिल खोलकर हँसी या बोली हो ऐसा मुझे स्मरण नहीं है।"

येसूबाई ने युवराज की हथेली पर अपनी कोमल उँगलियों को घुमाते हुए और युवराज को धीरज बँधाते हुए कहा, "आप इस तरह निराश और रुष्ट क्यों होते

हैं? जो ससुरजी मेरी जैसी पराये घर की लड़की को इतना प्यार देते हैं वे आप जैसे अपने होनहार पुत्र को कैसे भूल सकते हैं?''

''नहीं येसू, इस शम्भू के लिए अपने पिता के राज्य में न्याय नहीं है। उल्टे यह राज्य के बहुत से लोग उसके चेहरे पर कलंक के काले दाग लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारे शत्रु मुझे एक दुष्ट, मद्यप, उद्दंड, अहंकारी युवराज सिद्ध करने की होड़ में लगे हैं।''

''युवराज भगवान पर भरोसा रखें।''

''हम बहुत से देवी देवताओं की पूजा रोज करते हैं किन्तु सच्चे मन में शिवाजी महाराज नामक देवता के अतिरिक्त संभाजी ने न किसी देवता को अपने हृदय के मन्दिर में बिठाया और न ही पूजा की। उन्हें एक विशाल वटवृक्ष मानकर हम उनकी छाया के लिए व्यग्र हैं। किन्तु कुछ विरोधी शक्तियाँ इस महावृक्ष को मेरी जिन्दगी से दूर ले जाकर, मुझे जड़ से उखाड़ देने का प्रयास कर रही हैं।''

कोमल बिछौने पर भी शम्भूराजा को चैन की नींद नहीं आ रही थी। उनका जागना, मछली की तरह तड़पना, गरम और गहरी साँसें लेना आदि येसूबाई निकट से अनुभव कर रही थीं। उन्होंने धीरे से कहा—

''युवराज, राज्य के इन अधिकारियों ने भी स्वराज्य का निर्माण करने के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है। आप स्वयं उनके साथ बात क्यों नहीं करते? आप स्वयं जाकर अण्णाजी से क्यों नहीं मिलते?''

''क्या करेंगे उनसे मिलकर? उस अभागी हंसा ने आत्महत्या की और उसका सारा दोष मुझ पर लगाया गया। उसी समय वह गोदू आयी, वह अण्णाजी के साढू की लड़की निकली। यहाँ सारी परिस्थिति ने ही ऐसा विचित्र मोड़ लिया है कि समझदारी अँधेरे में अपना मुँह छुपा रही है।''

पुरानी पीड़ादायक स्मृतियाँ शम्भूराजा का पीछा नहीं छोड़ रही थीं। युवराज और युवराज्ञी सारी रात जागते रहे।

दूसरे दिन शम्भूराजा कुछ विलम्ब से बैठक में गये। कवि कलश पहले से ही उनकी प्रतीक्षा में वहाँ खड़े थे। उनके साथ संगमेश्वर का थानेदार भी खड़ा था। सवेरे सवेरे देर तक दौड़कर आने के कारण वह पसीने से तर हो रहा था। वह युवराज से मिलने के लिए उपस्थित हुआ था। शम्भूराजा उससे कुछ पूछें उससे पहले वही विनम्र शब्दों में निवेदन करने लगा—

''युवराज! सब कुछ गड़बड़ घोटाला हो गया है। कल रायगढ़ से एक सेना की टुकड़ी आयी। सैनिकों ने गरीब किसानों के बर्तन भाँड़े जब्त कर लिये। दूध देने वाली गायों और भैंसों को भी सरकारी क़ब्ज़े में ले लिया।''

"जप्ती! मगर किस लिए?" आश्चर्यचकित शम्भूराजा ने कवि कलश की ओर देखा। कविराज भी क्रुद्ध मुद्रा में नजरें झुकाए नीचे की ओर देख रहे थे। शम्भूराजा के मस्तिष्क में बात कौंधी। उन्होंने दाँत पीसते हुए कहा, "मैंने गरीब और मेहनती प्रजा को माफीनामा लिखकर दिया सम्भवतः इसीलिए इन बेचारे पर यह विपत्ति आयी है।"

"हाँ! हाँ सरकार।" थानेदार डरते हुए बोला, "मैंने उनको बहुत समझाया, उनसे कहा कि यह निर्णय स्वय युवराज ने लिया है और किसानों की हालत वास्तव में बहुत खराब है। मगर उन पर कोई प्रभाव नहीं पडा। वे बोले बोले "

"बताओ, बताओ, कुछ भी छुपाओ नहीं, साफ साफ बोलो।"

"उनका कहना है मतलब सैन टुकडी के साथ आया हुआ राहुजी सोमनाथ का कार्य व्यापार सँभालने वाला कह रहा था कि शम्भूराजा अभी तो गद्दी पर बैठे नहीं हैं जब बैठेंगे तब कर लेना मुजरा।"

"रुक क्यों गये? बोलो बोलो ।"

"वे कर्मचारी कहते थे कि यहाँ महाराज के जाने के बाद युवराज का हुक्म चलाना था तो महाराज ने कर्नाटक जाते समय रायगढ़ का कार्यभार शम्भूराजा को न दिया होता? उन्हें कंकड की तरह अलग करके शृगारपुर के जगलों में थोडे ही फेका होता?"

थानेदार किसी प्रकार घटित घटना का विवरण देकर मुक्त हो गया। शम्भूराजा की मुख मुद्रा वेदनायुक्त और सम्भ्रमित बनी रही। किन्तु येसूबाई और कवि कलश के चहरे उतर गये थे। युवराज के अपमान से दोनों बहुत क्रुद्ध हो गये थे। शम्भूराजा कुछ अधिक नहीं कह पाये। उन्होंने धीमी किन्तु कठोर आवाज में कवि कलश से कहा, "कविराज साथ में एक हजार सैनिक ले लो और इसी वक्त संगमेश्वर की ओर कूच करो। राहुजी सोमनाथ के कार्यभारी के साथ रायगढ़ के उन हृदयहीन गुंडों को गिरफ्तार करके यहाँ लेकर आओ और शृगारपुर के कारागार में बन्द कर दो।"

उसी दिन सूर्यास्त के पूर्व ही कवि कलश ने अपने मालिक के हुक्म की तामील कर दी। जब कविराज ने शम्भूराजा को आकर अभिवादन किया तो युवराज ने कहा "उन बदमाशों को चार दिन तक भूखे प्यासे रखो। उनको खूब पीटो।" शम्भूराजा की इस कार्यवाही से शृगारपुर उनकी ख्याति फैल गयी। इससे पहले जावली प्रान्त के सूबेदार स्वय अण्णाजी दत्तो ही थे। उनके कार्यकाल में वसूली करने वाले कर्मचारियों ने अनेक स्थानों पर अकारण किसानो को सताना आरम्भ कर दिया था। ऐसे लोगों को सबक सिखाने वाला कोई मिला था, इसलिए प्रभावली प्रान्त के परिश्रमी किसान बहुत प्रसन्न थे।

रात को शम्भूराजा ने येसूबाई से कहा, "येसू परसों बालाजी काका चिटणीस जो बताकर गये उसमें कुछ भी झूठ नहीं था। हवा का रुख बदल रहा है।"

येसूबाई ने अपने सात महीने के पेट पर शम्भूराजा का हाथ रखा। वे भरे गले से बोलीं, "युवराज! हवा के इस रुख से हमें अकारण ही भय लग रहा है। इसलिए थोड़ा धीरज रखें। ससुरजी के कर्नाटक से वापस आ जाने तक कोई भी साहसी कदम न उठाइए।"

बगावत

एक

राणूबाई आक्का की पालकियाँ कुछ ही दिन पहले वाई से आकर शृंगारपुर पहुँची थीं। राणूबाई को इस बात की बड़ी प्रसन्नता थी कि उनके छोटे भाई के घर झूला झूलने वाला है। शम्भूराजा को अपनी माँ का प्यार नहीं मिला था। युवराज केवल दो वर्ष के थे तभी उनकी माँ भगवान को प्यारी हो गई थीं। किन्तु संभाजी राजा पर तीनों बहनों की स्नेह छाया थी। बड़ी बहन सकवार बाई उर्फ सखूबाई फलटण के निम्बालकर से ब्याही गयी थीं। बीच वाली राणूबाई वाई के जाधव के यहाँ दी गयी थीं। सबसे छोटी अम्बिकाबाई तारला के हरजी महाडिक से ब्याही गयी थीं। तीनों बहनें शम्भूराजा से बड़ी थीं। सबसे छोटी अम्बिकाबाई पर युवराज की असीम ममता थी। किन्तु शम्भूराजा पर सर्वाधिक प्राण निछावर करनेवाली थीं राणूबाई।

शम्भूराजा अपने महल में जिस समय पहुँचे, बाहर घना अँधेरा घिर आया था। महल के चौक चिराग जल रहे थे। वे बीच के कमरे में आये। वहाँ पर येसूबाई ने हँसकर उनका स्वागत किया। बगल वाले मन्दिर की ओर संकेत करके वे बोलीं—

"युवराज! आज अपने यहाँ कौन मेहमान आये हैं आपने देखा नहीं क्या?"

शम्भूराजा ने मन्दिर की ओर देखा। एक स्त्री भगवान के सामने बैठी थी। शम्भूराजा सहजभाव से चार कदम आगे गये। उनकी आहट पाते ही उस स्त्री ने अपना चेहरा ऊपर करके उनकी ओर देखा। उसे देखते ही शम्भूराजा कुछ झेंप गये। गोदू सचमुच बहुत बदल गयी थी। उसके सुन्दर शरीर और पीठ पर लोटती काले घने बालों की नागिन जैसी चोटी में कोई अन्तर नहीं आया था। किन्तु उसका शोख बचपना खो गया था। आँखों के चारों ओर हल्का सा काला रंग चढ़ने लगा था। कोई चिन्ता उसे अन्दर से खाये जा रही थी। युवराज के कुछ कहने के पहले ही गोदू कहने लगी, "महाराज! आपने यहाँ जब से वसूली करने वाले कर्मचारियों को कैद किया है तब से वहाँ किले पर आपके विरुद्ध हर तरह के षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। अधिकारियों ने बहुत ऊधम मचा रखा है।"

"जाने दो गोदू! ये कलम बहादुर मेरा क्या बिगाड़ लेंगे?"

"युवराज! अण्णाजी काका की मदद से राहुजी पन्त और अन्य लोगों ने मिलकर शिवाजी महाराज को एक विशेष सन्देश भेजा है। सरकारी वसूली और राज्य के कार्य व्यापार में बाधा डालने के लिए आपको अपराधी ठहराकर आपको कैद किया जाय। यह भी प्रस्ताव है कि यदि महाराज युवराज को गिरफ्तार करने की आज्ञा नहीं देते तो जब तक महाराज के वापस लौटने तक के लिए उन्हें युवराज पद से हटा देना चाहिए। आपके विरोध में कार्यवाही की जाएगी। युवराज, इस प्रकार के कम से कम तीन प्रस्ताव भेजे गये हैं।"

इन सभी घटनाओं पर युवराज ने युवराज्ञी येसूबाई के साथ विचार विमर्श किया। चिन्तित युवराज को धैर्य बँधाती हुई येसूबाई बोलीं—

"युवराज, आपके पिताजी की बुद्धिमानी और हृदय की विशालता का ज्ञान मुझे आपसे भी ज्यादा है। वे रास्ता चलते व्यक्ति को भी न्याय देते हैं तो अपने पुत्र को न्याय से कैसे वंचित करेंगे?"

दूसरे दिन युवराज और कवि कलश शास्त्री नदी के पार के गाँवों में गये। वहाँ के किसानों ने आम के नये बगीचे लगाए थे। दोपहरी में युवराज और कवि कलश, परिश्रमी किसानों के साथ घुल मिलकर एक कुएँ के पास बैठे, किसानों के साथ चावल की रोटी, मक्खन और हरी मिर्च खायीं।

शम्भूराजा और कवि कलश के घोड़े शृंगारपुर की ओर लौट रहे थे, तभी युवराज की दृष्टि नदी की सूखी धारा के बीच से गुजरती शाही पालकी पर पड़ी। पालकी राजमहल की ही थी। येसूबाई के आदेश से कहार गोदू को लेकर मारवट गाँव की ओर जा रहे थे। पालकी को शम्भूराजा ने रोका। अन्दर बैठी गोदू तो क्या नदी की धारा को भी कुछ समझ में नहीं आया। कविराज भी अपना घोड़ा लेकर नदी के पार जाकर रुके। कहार भी थोड़ी दूर जाकर खड़े हो गये। युवराज गोदू की ओर देख रहे थे। व्यावहारिक जगत के कठोर आघात से उसका चेहरा मुरझा गया था।

"गोदू तुम्हार पति और ससुर...?"

महाराज, वे दोनों मेरे लिए जिन्दा नहीं हैं। उन्होंने जिस दिन स्वराज के विरुद्ध विद्रोह किया, मेरे लिए उसी दिन मर गये।"

शम्भूराजा कुछ रुक रुक कर बोले, "गोदू तू एक बार फिर से विवाह क्यों नहीं कर लेती?"

"विवाह करूँगी न! किन्तु सिर्फ एक ही व्यक्ति के साथ।" गोदू की आँखें चमक उठीं। गोदू ऐसे बोली थो जैसे स्वप्न में बोल रही हो।

"कोई भी हो, किन्तु गोदू समय से विवाह कर ले। तेरे दिल की भाषा तेरे

दिलवर की समझ में नहीं आती क्या?"

"वह तो भगवान को मालूम होगा।" गोदू धीमे स्वर में बोली, "मेरी समझ में तो इतना ही आता है कि उसकी पत्नी साक्षात् माता लक्ष्मी है। उसे दुखी करने का साहस मैं नहीं कर सकती।"

एक ओर तो रायगढ़ में दोषपूर्ण ढंग से शम्भूराजा के विरोध में योजनाबद्ध रूप से अफवाह फैलाई जा रही थी। इससे वे दुखी हो रहे थे। किन्तु दूसरी ओर उनका तन-मन कर्नाटक की लड़ाई की ओर लगा रहता था। प्रतिदिन विजय के समाचार उनके कानों तक आते थे। शिवाजी महाराज के स्वागत में पूरा भागानगर (हैदराबाद) रास्ते पर उतर आया था। गोलकोंडा के कुतुबशाह ने उनका खूब स्वागत किया था। कुतुबशाह के प्रमुख प्रधान की समझ में ही नहीं आ रहा था कि महाराज को कहाँ रखें कहाँ नहीं। सुदूर जिंजी के बुर्ज पर घोड़ों को चढ़ाकर मराठा सैनिकों ने हिन्दुस्तान का दक्षिणी दरवाजा अपने घोड़ों की टाप के नीचे कर लिया था। खुशी की ये खबरें सुनकर युवराज प्रसन्नचित हो जाते थे।

गोदू जिस दिन वापस गयी उसी दिन येसूबाई ने शम्भूराजा से कहा, "युवराज का गुस्सा ऐसा है जैसे गरजते गरजते बरस जाने वाली लहर। वह जितने वेग से आती है उसी गति से नष्ट हो जाती है।"

"नहीं, नहीं ऐसा कुछ नहीं है।" शम्भूराजा ने उत्तर दिया।

ऐसा नहीं है तो रायगढ़ के जिन वसूली कर्मचारियों को आप महीने भर की यातनापूर्ण सजा देने वाले थे, उन्हें दो दिन में ही मुक्त क्यों कर दिया? उल्टे कविकलश को हुक्म दिया कि उनके भोजन और आने-जाने की व्यवस्था करें।"

इस बात पर शम्भूराजा अपनी हँसी रोक नहीं पाये।

दो ही दिन में दिलेर खान के जासूस नया सन्देश लेकर, गुप्त रूप से शृंगारपुर में दाखिल हुए। कवि कलश ने वह सन्देश पत्र युवराज के सम्मुख प्रस्तुत किया। युवराज ने क्रुद्ध होकर कहा—

"क्या पागल हो गया है, वह बुड्ढा खान?"

उनकी दृष्टि तेजी से सन्देश पत्र की पंक्तियों पर दौड़ने लगी।

"रुस्तम ए दखखन संभाजी महाराज!"

मेहरबानी करो। हमारे पास आ जाओ। पातशाह औरंगजेब गाजी है। उसे सह्याद्रि के साथ पूरा दखखन देश जीतना है। गुस्ताखी माफ! हमें आपके शाही खानदानी मामले में दखल देने का कोई अधिकार नहीं हैं। मगर फिर भी हम आपके दिल का दर्द जानते हैं। आपके पिता की सच्ची मोहब्बत सोयराबाई और राजाराम से है। दरबार के सारे कारकून आपके जैसे स्वाभिमानी मर्द को दुश्मन की निगाह से

देखते हैं। इसीलिए तुम्हें रियासत के एक टुकड़े का शहजादा बनकर अपमान से रहना पड़ रहा है। इससे तो अच्छा आप आलमगीर के पास जाओ। हमारी दोस्ती का हाथ थाम लो। आज नहीं तो कल आलमगीर साहब दखन में आएँगे ही तुम्हारी और हमारी किस्मत रोशन हो जाएगी।''

अपनी आँखों के सामने से सन्देश पत्र को हटाते हुए शम्भूराजा ने कहा—

''कविराज! दिलेर को लगे हाथ जवाब दो। उसका खत बिना जवाब के नहीं रहना चाहिए।''

''राजन! इसका क्या अभिप्राय है?''

''हमारे चुप रहने का अर्थ वह हमारी मौन सहमति न लगा ले।'' शम्भूराजा के मुख से शब्द निकलने लगे। वहीं पर पैर मोड़कर, लिखने की मेज पर कागज रखकर कवि कलश उत्तर लिखने लगे—

''खान साहेब, हमें अपना मानकर, हमारे विषय में जो चिन्ता प्रकट करते हो उसके लिए हमें अल्लाह का शुक्रगुजार होना चाहिए। हमारे राजपरिवार में गृह-भेद, दरार पड़ने की खबर आपने जो सुनी है वह सच है। मगर उससे आपको जरा भी आनन्दित होने की आवश्यकता नहीं है। यह वतन हम सभी के हाथों में सौंपकर मेरे पिताजी कितने विश्वास से दूसरे प्रदेश में चले गये है। क्या आपका कहना है कि उनके पीछे हम गद्दारी करके राज्य को अपनी झोली में डाल लेंगे? हमारे हाथ से ऐसा कुछ घटित होने का मतलब होगा, मेरे प्यारे दिलेर भाई रावण की मदद के लिए श्रीराम का दशरथ से बगावत करना। शिवाजी महाराज जैसा पिता दैवी कृपा से मिला है उस वटवृक्ष की शीतल छाया छोड़कर तुम्हारी सोने की लंका का हमें क्या करना?''

खत की इबारत बोलते-बोलते संभाजी राजा की आँखें भर आयीं। उनका अपने पिता और स्वराज के प्रति प्रेम देखकर कवि कलश भी गद्‌गद हो गये। इसी बीच मन में कुछ सोचकर युवराज एकाएक रुके और पत्र को थैली में बाँधते हुए कवि कलश से बोले, ''रुको, मुझे लगता है कि इस पत्र में कुछ और जोड़ दें।''

''जैसी आज्ञा।''

दोनों फिर से नीचे बैठ गये। युवराज ने पुनः बोलना आरम्भ किया—

''दिलेर जी, यदि तुम्हें और तुम्हारे पातशाह को सचमुच हमारा पराक्रम बहुत पसन्द है तो हम दोनों एक हो जाएँ और दूसरा कोई देश जीतकर पातशाह को भेंट कर दें।''

''किन्तु राजन! जिससे हाथ नहीं मिलाना है उससे हाथ क्यों मिलाएँ?'' कवि कलश आवेश में पूछने लगे।

शम्भूराजा का मुख उतर गया। बनावटी मुस्कान के साथ, लम्बी साँस छोड़ते हुए बोले, "कविराज! मनुष्य की जिन्दगी में समय पूछकर नहीं आता।"

दो

राजमहल के अलिन्द पर येसूबाई खड़ी थीं। वे संगमेश्वर की ओर ध्यान से देख रही थीं। उन्हें घने जंगलों के बीच एक दल तेजी से दौड़ता दिखाई दिया। येसूबाई ने पैर उठाकर और ध्यान से देखा। यह घुड़सवारों का दल था। येसूबाई ने देखा कि सामने से आ रहे घुड़सवारों के हाथ में भगवा झंडा था। येसूबाई को तत्काल बड़े महाराज का स्मरण हो आया। उनके मन की कली खिल गयी। लगभग पौने दो वर्ष बाद शिवाजी महाराज पन्हालगढ़ लौटे थे। चार ही दिन पहले उनके आने का समाचार युवराज और युवराज्ञी के कानों तक पहुँचा था। तभी से दोनों के कान पन्हालगढ की ओर लगे थे कि कब वहाँ से बुलावा आ जाय।

पन्हाला से शृंगारपुर आये सवारों की खबर तुरन्त फैल गयी। कवि कलश तत्काल अपने आवास से दरबार में आ गये। शिवाजी महाराज का समाचार जानने के लिए मानो सारा चराचर उत्सुक हो उठा। दरबार में सरदार विश्वनाथ, कवि कलश, राणूबाई युवराज पर प्राण निछावर करने वाले अन्य साथी इकट्ठा हो गये थे। स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी बूढ़े पिताजी शिर्के भी कपडे ठीक ठाक करके उसी समय शम्भूराजा दरबार में आ गये थे। सभी के मन में उत्सुकता भरी थी। उसी समय शम्भूराजा दरबार में हाजिर हुए। सभी ने उनका अभिवादन किया। उनके पीछे ही येसूबाई आयीं और सामने वाले आसन पर प्रसन्न मुद्रा में बैठ गयीं। महत्त्वपूर्ण पत्र को कवि कलश ही पढ़ेंगे ऐसी दरबार की प्रथा बन गयी थी। उनकी ओर संकेत करके सभाजी राजा बोले, "कविराज चलो पढ़ो।"

"प्रिय शंभो! कर्नाटक अभियान में विजयी होकर हम प्रतिदिन बड़ी तेजी से दौड़े चले आ रहे थे। हम कितने उत्सुक थे कि वायु वेग से आकर हम आपको बाँहों में लेकर, गले मे लगाकर मिलेंगे। किन्तु "

कवि कलश भयभीत होकर वहीं रुक गये। उन्होंने लम्बी साँस ली। सुनने वालों ने अपने मन को समझाया कि 'किन्तु' शब्द का प्रयोग कवि कलश ने अपने मन से किया होगा। "किन्तु आपके आपके "

कविराज भय से काँप उठा। इसी समय युवराज की धीर गम्भीर वाणी दरबार

में गूँज उठी, "कलश जो भी हो पढ़कर सुनाओ।"

अपने को किसी प्रकार सँभालते हुए कविराज धीमी गति से एक-एक शब्द पढ़ने लगे—

"परन्तु आपके एक-एक कारनामे हमारे कानों तक आये और हम धन्य हो गये। युवराज! आप कोई बच्चे नहीं हैं, इक्कीस-बाइस वर्ष के जवाँमर्द हो चुके हैं। हमारी पीठ पीछे आपने न केवल कर डुबाने वालों को माफी दी बल्कि हमारे कर्मचारियों को बार-बार अपमानित किया। हमारे अष्टप्रधानों को आपने समझ क्या रखा है? विगत पचीस-पचीस तीस-तीस वर्षों से हमारे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वराज के हित में रात-दिन काम करने वाले, हमारे लिए प्राणों की बाजी लगाने वाले वे हमारे अभिन्न साथी हैं। उनकी आयु उनके अनुभव और उनकी सेवा का लिहाज न करके आपने सदैव ही उनका अपमान किया है और उन्हें सताया है। आप मुझसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं, ऐसा मैं समझता हूँ। किन्तु इसके बाद अपना मुँह दिखाने का कष्ट न करें। पत्र को विराम देते हैं।"

कवि कलश भय दुःख और आश्चर्य से मौन हो गये । उनका हाथ थरथराने लगा। दरबार में उपस्थित शम्भूराजा के सम्बन्धी हित मित्र सभी पत्थर की भाँति जड़ हो गये। कविराज ने शम्भूराजा की ओर दुखभरी दृष्टि फेरी। वे दुख की आग में जल रहे थे। फिर भी शम्भूराजा ने पत्र को आगे पढ़ने का संकेत किया। इतने में येसूबाई ने कड़े शब्दों में कहा, "रुक जाओ"। भरी सभा में लोगों के सामने अपना दुखड़ा रोने या बताने की उनकी इच्छा नहीं थी। फिर भी उनकी आँखें भर आयीं। येसूबाई ने फिर कहा, "बस! बस! कविराज । अब आगे एक भी शब्द हमसे सुना नहीं जाएगा।"

"कविराज! रुक जाना ही ठीक है।" राणूबाई ने कहा।

"क्यों? क्यों नहीं सुना जाएगा? ये शब्द अपने शिवप्रभु के ही हैं। कविराज रुको नहीं। क्योंकि आधा-अधूरा पत्र सुनकर लोग चले गये तो कल इससे भी अधिक अफवाहों के बुलबुले उठेंगे। उससे तो यही अच्छा है कि जो भी है वह लोगों के कानों तक जाए।"

कवि कलश पत्र आगे पढ़ने लगे—"अभी भी यदि भूले बिसरे आपमें कुछ विवेक बुद्धि बची हो तो हमारा सुझाव है कि मुझसे मिलने पन्हाला आने के बदले आप सज्जनगढ़ चले जाइए। वहाँ श्री रामदास स्वामी के सत्संग में कुछ समय रहिए। कुछ सदाचार और सद्व्यवहार सीखिए। समय से पहले समझदार हो जाइए। स्वामीजी का प्रसाद लेकर जीवन भर सुखी रहिए।"

यह पत्र सुनकर सारा दरबार अवाक रह गया। बिना कुछ कहे लोग धीरे-धीरे निकल गये। पिलाजी शिर्के भी बहुत दुखी मन से बाहर निकले। युवराज्ञी की ओर

तो देखा नहीं जाता था। उनका शरीर काँप रहा था। युवराज पत्थर की तरह जड़वत् होकर वहीं बैठ गये। बहुत समय तक कोई कुछ बोला नहीं। अन्त में शम्भूराजा एक गहरी साँस छोड़ते हुए निराश स्वर में बोले, "देखो वह दिलेर खान शत्रु होकर भी कितनी समझदारी की बात हमें सिखाता है। माया, ममता, नाते, रिश्ते सब झूठ हैं। अनेक बार शत्रुओं के मुख मे भी पवित्र सूक्तियाँ निकलती हैं।

"राजन् कृपा करें! आप धीरज न छोड़ें।" कविराज ने व्याकुलता से कहा।

"इसके अतिरिक्त आज तक हम कर ही क्या रहे हैं?" गहरी साँस छोड़ते हुए शम्भूराजा बोले, "पौने दो वर्ष तक पिताजी का असह्य वियोग के बाद उनसे मिलने की प्रतीक्षा हम कितनी उत्सुकता से कर रहे थे? कर्नाटक की ओर जाने से पहले पिताजी ने हमें वचन दिया था कि आने के बाद मेरी शिकायतों और अधिकारियों के आरोपो के सम्बन्ध में हमारे साथ गम्भीर चर्चा करेंगे। किन्तु

"युवराज?"

"हाँ। किन्तु अब न मिलना न सीधी नजर से देखना, न ही प्रेमपूर्ण कोई संवाद या पत्र। बिना स्पष्टीकरण का अवसर दिये हमें दोषी घोषित कर दिया गया है। महाराज ने हमारे लिए भेजा भी तो यह फटे जूतों का हार।"

जैसे किसी बाघ के बच्चे को तेजधार वाले तीरों से घायल करके छोड़ दिया जाता है और वह पीड़ा से छटपटाता रहता है, उसी तरह शम्भूराजा बेचैनी से छटपटा रहे थे। उन्होंने भोजन नहीं किया। दोपहर ढल गयी। परछाइयाँ लम्बी होने लगीं। थोडे समय बाद युवराज्ञी डरते डरते भोजन की थाली लेकर आयीं। शम्भूराजा ने उसे तत्काल दूर हटा दिया। युवराज बिस्तर पर छटपटा रहे थे। बिस्तर मानो अंगारों का ढेर बन गया था। उसमें युवराज का सारा शरीर जल रहा था।

युवराज्ञी आगे आयी। ज्वर से तपते शम्भूराजा गौर भाल पर हाथ हल्के से फेरती हुई बोलीं "इतना ग्लानिग्रस्त न हों। ये दिन भी बीत जाएँगे। खुद को सँभालें।"

"येसू कैसे सँभालूँ और कैसे सँवारू? यहाँ कर्मचारी लोग गन्दा कीचड़ उछाल रहे हैं। वहाँ माँ सोयराबाई महाराज के बिस्तर के चारों ओर मेरे विरोध में ईर्ष्या की अगरबत्ती रात दिन जला रखी है। केवल ममत्व के भूखे शिवाजी महाराज के पुत्र के भाग्य में पिता की छाया तक सम्भव नहीं है। आज रायगढ़ दुर्जनगढ़ बन गया है। येसू आज हम न किसी के रह गये हैं और न हमारा कहने के लिए ही कोई बचा है।"

विरोधियों के षड्यन्त्र रुक नहीं रहे थे। रायगढ और पन्हालगढ़ के आसपास मे शम्भूराजा के निजी जासूस भी खबरें ला रहे थे। उनके अनुसार अष्टप्रधानों के महलों शिवाजी महाराज के दरबार में कुछ अलग ही राजनीति चल रही थी। वहाँ

विचार हो रहा था कि हिन्दवी स्वराज को दो भागों में बाँट दिया जाय। रायगढ़ के साथ पूरे मावल प्रदेश को छोटे युवराज अर्थात राजाराम को दे दिया जाय और बिना भरोसे का जिंजी वाला हिस्सा शम्भूराजा को दिया जाय। विरोधी पक्ष के लोग शर्त लगाकर कह रहे थे कि शिवाजी महाराज का भी ऐसा ही विचार है।

शृंगारपुर का वनवास न तो सहन हो रहा था न ही समाप्त। इसी प्रकार घाव पर नमक छिड़कने की तरह दिलेरखान की ओर से एक और सन्देश आ पहुँचा।

"बदनसीब शहजादे, शम्भूराजे! अपने कार्यकर्ताओं द्वारा इतनी अच्छी सेवा करने के बाद भी तुम किसके फैसले का इन्तजार कर रहे हैं? वहाँ सुदूर जिंजी जाने की अपेक्षा भीमकाठ की बादशाह की छावनी शामियाना करीब नहीं है क्या? दिल में बिना कोई शंका रखे हमारे पास आ जाओ तुम्हारे स्वागत के लिए हमारे शामियानों के दरवाजे कब से बेसब्र हैं।"

दिलेरखान के इस ताजे खत से शम्भूराजा सावधान हो गये। मन्दिर के देवता पत्थर बनकर बैठे थे और दूर मस्जिद के ऊपर चाँद तारे उनके विवश मन को संकेत कर रहे थे।

मित्रता का हाथ बढ़ाने वाले दिलेरखान कोई सरल आदमी नहीं था। लम्बा नारियल के पेड़ जैसा, मजबूर काठी का दिलेरखान एक कट्टर रोहिला था। गंगा यमुना का पानी पिया हुआ, औरगंजेब के दरबार में सिर ऊँचा करके खड़ा होने वाला योद्धा था।

दिलेरखान को यही इच्छा हमेशा तड़पाती रहती थी कि वह आलमगीर औरगंजेब की कुछ ऐसी अद्भुत सेवा कर दे कि वे चकित रह जायँ। एक दिन कभी दरबार में उसे सबसे ऊँचा स्थान देकर उसकी पगड़ी में स्वयं सम्मान का चार चाँद लगाये। काबुल और कंधार से लेकर बंगाल तक औरगंजेब को चुनौती देने वाला कोई नहीं था। शिवाजी महाराज ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे। औरगंजेब अपने विशिष्ट मित्रों की मंडली में कहता था—"यदि हमने शिवाजी को जीत लिया तो समझो सारी दुनिया फतेह कर ली।" दिलेरखान सोचता था कि बादशाह की ऐसी मनोदशा में यदि वह शिवाजी के कलेजे के टुकड़े संभाजी को अलग करके औरगंजेब के कदमों में पेश कर दे तो कितने आनन्द की बात होगी? इसी इच्छा की पूर्ति के लिए वह दो बार फन्दा फेंककर अधीर होकर बैठा था। वह अपने गुप्तचरों से रायगढ़ में संभाजी की उपेक्षा और उनके अपमान की छोटी-छोटी खबरें लेता रहता था।

शम्भूराजा ने भी बड़ी चतुराई से नये नये दाव खेलना आरम्भ किया। उन्होंने जोत्याजी केसकर को गुप्त रूप से दिलेरखान के मुल्क में भेज दिया। उन्होंने परिस्थिति के सूक्ष्म निरीक्षण का आदेश दिया। इस बात का पता जब येसूबाई को

चला तो वे अत्यन्त चिन्तित हो गयीं।

एक दिन प्रात:काल संभाजी राजा ने अपनी लम्बी पूजा समाप्त की। पवित्र मन से नंगे शरीर मन्दिर से बाहर आये। उसी समय अचूक निशाना साधकर येसूबाई सामने आयीं और अत्यन्त विनम्र स्वर में बोलीं, "युवराज! इतनी तामसी वृत्ति ठीक नहीं है। संयम रखें और संघर्ष को टालें।" अपने पैरों में पड़ी युवराज्ञी की चिन्ता किये बिना शम्भूराजा बोले—

"युवराज्ञी तुम कुछ भी कहो या समझो। यह संभाजी अब तुम्हारे स्वराज के लिए निरर्थक हो गया है।"

"तो क्या इसीलिए आप उस दगाबाज दिलेरखान की गोद में अपना सिर रखने के लिए निकले हैं?" येसूबाई की आँखों में क्रोध की चिनगारियाँ नाचने लगीं। उन्होंने गरजते स्वर में पूछा, "आपको मालूम है कि कौन है यह दिलेरखान? पुरन्दर के घेराव में अपने वीर मुरार बाजी का सिर काटने वाला चंडाल यही है। युवराज धैर्य धारण करो। सोचो।"

"तो यहाँ रुककर हम करेंगे क्या? इस राज्य का युवराज होते हुए भी हमें युद्ध में जाना नहीं है, अपने राजमहल में रहना नहीं है हजार दो हजार घोड़ों की सेना भी हम तैयार नहीं कर सकते, प्रजा की छोटी सी फरियाद भी सुनने की आज्ञा हमें नहीं है। ऐसी स्थिति में क्या हमें सज्जनगढ़ पर जाकर केवल तालियाँ बजाते हुए जिन्दगी काटनी है।

शम्भूराजा के चेहरे पर दुख की छाया स्पष्ट दिख रही थी। वे अधीर स्वर में बोले, "येसू! आजकल मुझे अकारण भी भय लगने लगता है। अगले महीने हम दोनों छोटे युवराज राजाराम को लेकर पिताजी से मिलने जाने वाले थे। अपने कुल का दीपक उनके चरणों में समर्पित करने वाले थे। परन्तु उसकी जगह—उससे पहले हमें जंजीरों से जकड़कर जेरबन्द करके, गर्दन में फाँस लगाकर रायगढ़ में प्रस्तुत होने का आदेश पिताजी ने नहीं दिया, यही बहुत बड़ी कृपा है।"

"युवराज! एक पक्ष से ही इतना क्यों सोच रहे हो? अपने वीर पिता के सम्बन्ध में कुछ नहीं सोचते हो? जो कुछ भी चल रहा है, वह बहुत गलत चल रहा है।" येसूबाई ने युवराज से कहा।

संभाजी राजा ने अपनी उद्विग्नता और अपमान के ज्वार को भीतर ही भीतर दबाते हुए कहा, "अपने युवराज की निन्दा करने वाला इस प्रकार का पत्र पिताजी को नौकर के हाथ क्यों भेजना चाहिए था। सामने बुलाकर हमारी खाल भी खींच लेते तो भी मुझे इतना दुख न होता।"

येसूबाई एक महीने में ही बच्चे को जन्म देने वाली थीं! उनके पेट का आकार बहुत बढ़ गया था और शरीर शिथिलता आ गयी थी किन्तु ऐसे समय में भी अपने

पुरुषार्थी पति को अपमान की आग में जलते देखकर उनका हृदय चूर चूर हो रहा था। उनके महल की बगल में ही दुर्गाबाई का महल था। उन्होंने राणुबाई के सामने अपनी सौत दुर्गाबाई को रात में बुलाया था।

उन्हें विश्वास में लेते हुए येसूबाई ने कहा, "दुर्गावती युवराज की मानसिक अवस्था ठीक नहीं है। हमें उनको सँभालना चाहिए।" दुर्गाबाई ने चुपचाप अपना हाथ उनके हाथ पर रख दिया।

एक बार सुपे के जाधवराव के घर शम्भूराजा को भोजन के लिए आमन्त्रित किया गया था। उसी समय विशिष्ट अतिथियों को भोजन परोसने के लिए जाधवराव की रूपवती कन्या दुर्गा सामने आयी थी। उसकी स्त्री सुलभ विनम्रता, शालीन व्यवहार, मीठी वाणी आदि ने पहली नजर में ही शम्भूराजा को आकर्षित कर लिया था। दुर्गा येसूबाई की भाँति लम्बी और गोरी नहीं थी। इसके विपरीत वे कुछ नाटे कद की, थोड़ी मोटी किन्तु आकर्षक शरीर और सुन्दर तथा कोमल कपोलों वाली लड़की थीं। उनकी आँखें येसूबाई जैसी बड़ी-बड़ी हिरनी जैसी नहीं थीं, किन्तु छोटी दिखने वाली उनकी आँखों में किसी को भी वशीभूत कर लेने वाला विलक्षण जादू था।

दुर्गा के साथ एक-दो बार नजरें मिलीं और शम्भूराजा का सुपे और बारामती की ओर आना-जाना बढ़ गया। शिकार के बहाने वे करहा नदी के किनारे-किनारे सुपे के जाधवराव के घर पहुँच जाते थे। कुछ ही दिनों में शम्भूराजा की इस भेदभरी यात्रा का पता चल गया। उन्होंने स्वयं ही अपने पतिदेव के लिए दुर्गाबाई का हाथ माँग लिया। विवाह के बाद एक दिन दोपहरी में येसूबाई दुर्गा से मन्दिर में मिलीं। दुर्गा के कोमल हाथों को अपने हाथों में लेते हुए येसूबाई ने कहा, "एक बात ध्यान में रख! तुम्हें इस राजमहल में यों ही नहीं लाया गया है। शम्भूराजा जैसा जलता-धधकता अंगारा सँभालना मेरे अकेले के बस का नहीं है। इसीलिए तुम्हें अपनी बड़ी बहन की सहायता के लिए मैं तुम्हें ले आयी हूँ।"

येसूबाई का स्वभाव अधिक वोलने वाला था किन्तु दुर्गाबाई शान्त स्वभाव की और कम बोलने वाली थीं। येसूबाई ने उसे अपने समीप लाकर कहा, "दुर्गा! इसके बाद आने वाला समय तुम्हारे और मेरे लिए बहुत कठिन है। शरीर की शिथिलता और पेट में आठ महीने का बच्चा ले युवराज के पीछे भागना मेरे लिए सम्भव नहीं है। दुर्गा! युवराज को सँभालोगी न? करोगी न उनकी सहायता?"

"दीदी हम आपकी आज्ञा के बाहर हैं क्या?" दुर्गा ने कहा। एक रात शम्भूराजा सारी रात लगातार कुछ लिखते हुए बैठे रहे। उन्होंने बिना किसी लिपिक अथवा कवि कलश की सहायता लिए यह कार्य आरम्भ किया था। पलंग पर लेटी येसूबाई की आँखें जड़ हो रही थीं। बीच-बीच में उनकी नींद उचट जाती थी, तब

वे युवराज को देखती थीं। युवराज अपनी मेज पर बैठे लगातार लिखते ही रहे। भोर हो गयी। बगल के बरगद ओर पीपल के पेड़ों पर से चमगादड़ों की आवाजें आने लगीं, तब जाकर शम्भूराजा उठे और बिस्तर पर निढाल होकर लेट गये। येसूबाई अब पूरी तरह जग गयी थीं। उन्होंने मेज की और देखा। वहाँ चारों ओर बहुत से कागज बिखरे पड़े थे।

येसूबाई धीरे-से उठीं। उन्होंने सामने देखा तो मेज पर एक शाही थैली दिखाई पड़ी। उस पर लगी औरगंजेब की मुहर को येसूबाई ने तत्काल पहचाना। उनका मन अनेक शंकाओं से घिर गया। उनसे उस थैली में आया समाचार बिना पढ़े नहीं रहा गया। उसे पढ़ने के बाद उन्होंने जाना कि औरंगजेब का पुत्र शाहआलम दक्खन का सूबेदार बनकर आया है। शाहआलम के हस्ताक्षर और मुहर के साथ दिलेरखान ने शम्भूराजा के पास इस आशय का पत्र भेजा था कि यदि शम्भूराजा मुगलों से जाकर मिलें तो उन्हें अभयदान दिया जाएगा। शम्भूराजा की भावी दिशा येसूबाई की समझ में आ गयी। शम्भूराजा देर से सोकर उठे । येमूबाई आँसू भरी आँखों से उनके चरणों में नत थीं। युवराज के पैरों को पकड़कर येमृबाई उपाल्म्भ के स्वग में बोलीं, "दया करो युवराज! इस तरह का गलत निर्णय न लें। आपके जाने से शत्रु के महल पर विजय का ध्वज चढ़ेगा। राज्य कर्मचारियों से नाराज होकर शिवाजी महाराज के स्वराज्य का गला मत घोंटो युवराज।"

"आपको क्या पता युवराज्ञी? हम मूर्ख ही ठहराये जा रहे हैं। वहाँ पन्हाला पर पक्का निर्णय हो चुका है, बारा भावल और रायगढ़ का गज्य राजाराम को मिलेगा और हम जिंजी की ओर चलते बनेंगे।"

येसूबाई ने अपनी आँखों को आँचल से पोंछ लिया। युवराज की आँखों में आँखें डालते हुए उन्होने सीधा प्रश्न किया—"राज्य गया तो गया किन्तु युवराज! आप जैमे संस्कृत विद्वान, तलवार वीर और कवि हृदय विवेकी पुरुष को राज्य और सत्ता का लोभ कब मे मताने लगा? युवराज! एक ओर विशाल साम्राज्य और दूसरी ओर शिवाजी महाराज जैसा पिता इनमें से आप किसको चुनेंगे?"

"इस प्रश्न का उत्तर आपको पता है। इसलिए उसी प्रश्न को बार-बार पूछने का पागलपन मत करो। येसृरानी आपको यह भी पता है कि शिवाजी महाराज के बिना, उनके सपनों के बिना, यह संभाजी एक पल भी नहीं जी सकता। परन्तु जिस महाराज के हृदय में सारी दुनिया के लिए इतनी ममता है उसी के हृदय में आज इस शम्भू के लिए दया और ममता का एक कण भी शेष नहीं है? ऐसा क्यों है?"

येसूबाई मौन हो गयीं। युवराज का असह्य दुख देखकर उनकी आँखों से आँसू भी पलायन कर गये।

उसी रात में येसृबाई को तीव्र ज्वर चढ़ गया। वैद्यराज ने काढ़ा बनाया।

युवराज ने अपने हाथ से काढ़े का प्याला येसूबाई के होठों से लगाया। उनके ज्वर का सही कारण युवराज को ज्ञात था। अस्वस्थ येसू के चेहरे पर हल्के हाथ फेरते हुए उहोंने कहा, "डरो मत! अधिक सोचकर अपनी जान संकट में मत डालो, इतना कष्ट न उठाओ। मान लो कल को हम मुगलों से जाकर मिलें भी तो कौन-सा आसमान टूट पड़ने वाला है? इससे पहले स्वयं पिताजी ने हमारी छोटी उँगलियाँ पकड़कर मुगलों का शामियाना हमें नहीं दिखाया था क्या? दो बार मुगलों की अच्छी भली मनसबदारी की है, हमने।"

येसूबाई किसी तरह मुस्कराते हुए बोलीं, "उस समय आपका जाना ससुर जी की राजनीति का एक हिस्सा था।"

किन्तु अब भी हमें और कितना शान्त बैठना चाहिए? इन राज्य कर्मचारियों को लगता है कि शम्भू की गर्दन में रीड़ की हड्डी नहीं है, सीने में आग नहीं है। येसू अब हमें एक ही उपाय सूझता है। अपने अपमान को मिटाने के लिए, बाहर यश कमाकर पिताजी के सामने सिर ऊँचा करके खड़े होने के लिए हम भी थोड़ा खेल खेलें।

शम्भूराजा की बातें सुनकर भी येसूबाई का भ्रम दूर नहीं हुआ। इसलिए संभाजी राजा उन्हें समझाते हुए बोले, "फिलहाल तो कुछ समय के लिए हम भी मधुर भाव मे शुत्र से मिलेंगे और समय आने पर पेट फाड़कर बाहर निकल आएँगे।"

"युवराज, दिलेरखान कोई मछली नहीं पूरा मगरमच्छ है।"

"यह बालक भी नासमझ बच्चा नहीं है। यह शिवाजी महाराज का बेटा है, मुगलों का काल बनने वाला है।"

युवराज और युवराज्ञी सारी रात जागते रहे। येसूबाई की राय थी कि युवराज को मुगलों के पास जाना ही नहीं चाहिए। येसूबाई का मुरझाया चेहरा, चढ़ता हुआ ज्वर, धीरे से निकलने वाला स्वर आदि शम्भूराजा के सबल पावों में ममता की जंजीर डाल रहे थे। उसे तोड़कर बाहर निकलने के लिए शम्भूराजा छटपटा रहे थे। अन्त में येसूबाई ने अपने मातृत्व, स्त्रीत्व और मैत्रीभाव की शक्ति को एकत्र की। शम्भूराजा का हाथ अपने सीने पर रखते हुए बोलीं, "युवराज! अपनी नित्य सहचरी को एक वचन दोगे?"

"बोलो।"

"पहले महाराज की आज्ञानुसार सज्जनगढ़ जाएँगे। स्वामी रामदास का कृपाप्रसाद लेकर ही आगे जाएँगे?"

"हाँ! दिया वचन।"

तीन

शृंगारपुर के बाहर का शिवमन्दिर प्रात:काल ही शम्भूराजा के संगी-साथियों से खचाखच भर गया था। आसपास में घने बादल छाये थे। नयी ऊर्जा और नये धैर्य से मार्ग पर निकलना था। शम्भूराजा ने महादेव का अभिषेक आरम्भ किया था। अनेक शास्त्री पंडित बिना कुर्ता पहने शिवालय के गर्भगृह में उपस्थित थे। एक घंटे में अभिषेक पूर्ण हो गया। काले बादल भी छँट गये थे और सफेद बादल बाहर आ गये थे। दीवान सरदार विट्ठलराव मन्दिर से बाहर निकले। अब गर्भगृह में केवल शम्भूराजा और कवि कलश ही खड़े थे। कवि कलश से नहीं रहा गया, उन्होंने कहा, ''राजन् आगरा-मथुरा से लेकर आजतक हम आपकी छाया बने रहे हैं। यह मानकर कि आप ही हमारे घर बार और वतन हैं, आपके पीछे-पीछे घूमते रहे हैं।''

शम्भूराजा कवि कलश की ओर देखकर मन्द मन्द मुस्कराये। उन्होंने कहा, ''मुझे अकेले ही जाने दीजिए। यदि आप हमारे साथ आये तो जानते हैं कि ये जहरीली जुबान वाले राज्याधिकारी चिल्ला-चिल्लाकर क्या कहेंगे? दुष्ट दगाबाज कवि कलश ने ही सारी गड़बड़ी की है। पागल शम्भू को तन्त्र मन्त्र करके मुगलों के झुंड में खींच ले गया।''

कलश खिन्नता से हँसे। शम्भूराजा की जुदाई का दुख उनके चेहरे से हट नहीं रहा था! उनका धैर्य बँधाते हुए शम्भूराजा ने कहा, ''यदि आप यहाँ रहेंगे तो हमारे जाने के बाद भी शत्रुओं को आपकी दहशत बनी रहेगी। वहाँ मुझ पर कोई विपत्ति आयी तो आपको बुला तो सकेंगे।''

''राजन् आपकी जो आज्ञा।'' कवि कलश ने कहा, ''किन्तु युवराज आपके जाने के बाद भी धूर्त प्रवृत्ति शान्त नहीं रहेगी। महाराज से सीधे शिकायत करके हमें भी निष्कासित करवाने का आग्रह करेंगे। ये लोग कैसी भी शिकायत करते हैं। कहते हैं, हम भैंसे की खाल पर बैठकर साधना करते हैं।''

''ऐसे आरोप केवल अधिक चालाक बनने वाले लोग ही कर सकते हैं। भैंस की खाल कितनी मोटी होती है? उसे काटने और बिछाने के लिए कितने लोग लगते हैं? इसका ज्ञान क्या इन महानुभावों को है?'' कविराज को धीरज देते हुए शम्भूराजा ने कहा, ''आपकी बुद्धिमत्ता और मेरे ऊपर आपकी निष्ठा महाराज को भली-भाँति मालूम है। जैसा हमारे शत्रु कहते हैं वैसे यदि आप होते और पिताजी

को मालूम पड़ता कि उनका पुत्र सचमुच एक ढोंगी तान्त्रिक के जाल में फँस गया है तो आपको कब का निकाल फेंक दिया होता, कविराज।''

कवि कलश कुछ अधिक नहीं बोल पाये। शम्भूराजा का हाथ अपने हाथ में लेकर इतना ही कहा, ''राजन् अपने आपको सँभालें।''

दोपहर के समय काली घटाएँ घिर आयी थीं। शृंगारपुर पर उनकी छाया पड़ रही थी। अपने ढाई हजार घुड़सवारों के साथ संभाजी सज्जनगढ़ की ओर निकल रहे थे। उन्हें और राणूबाई तथा दुर्गाबाई को बिदा करने के लिए आधा शहर सीमा के पास जमा हो गया था। बिदाई के समय कवि कलश का गला भर आया था। येसूबाई को लेकर आयी पालकी एक विशाल जामुन के पेड़ के नीचे रुकी थी। येसूबाई का चेहरा सूज गया था। आँखें एकदम उतर आयी थीं। उनका चेहरा आसमान के बादलों की तरह दुख से भर गया था। उनकी आँखों से आँसू बरसने लगे। आँखों का काजल गोरे कपोलों पर उतर आया। शम्भूराजा ने अपने उत्तरीय से उनके आँसू पोंछने का प्रयास किया।

येसूबाई और दुर्गाबाई राणूबाई के पास गयीं। राणूबाई ने दुर्गाबाई की पीठ पर हाथ फेरते हुए धीमी अवाज में बोली, ''सँभालो।'' शम्भूराजा ने राणूबाई से बार-बार आग्रह किया कि वे येसूबाई के साथ रहें। किन्तु राणूबाई ने कहा, ''शम्भूराजा मैं आपको सज्जनगढ़ में स्वामी जी के दरवाजे पर पहुँचा दूँगी और वहीं से वाई चली जाऊँगी।''

शम्भूराजा को कुछ उदास देखकर, येसूबाई उन्हें सान्त्वना देते हुए बोली—

''मुझे विश्वास है युवराज, आपको सज्जनगढ़ पर स्वामी जी मिलेंगे। मन का सारा भ्रम दूर हो जाएगा। ये दिन भी बीत जाएँगे।''

''युवराज्ञी अब आप भी शृंगारपुर में नहीं रहिए।''

''तो फिर?''

''शीघ्र ही पन्हाला पहुँचिए।''

''पन्हाला? वह क्यों?'' येसूबाई ने आश्चर्य से पूछा।

''आपको पता नहीं है क्या? हमारे पिताजी बहुत थक गये हैं। बहुत बुड्ढे दिखाई देने लगे हैं। उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए अपने घर का कोई उनके निकट नहीं होना चाहिए क्या?'' संभाजी राजा ने कहा। यह सुनकर येसूबाई की आँखों से आँसू अपने आप सूख गये। पति के ऊपर अभिमान के कारण उनका सिर ऊँचा हो गया।

चार

अपमान और अवहेलना का अंगार कितना दाहक होता है, इसकी कल्पना कोई भावुक और स्वाभिमानी व्यक्ति ही कर सकता है। संभाजी राजा अपने सैनिकों के साथ सज्जनगढ़ के दरवाजे के पास पहुँचे तो अत्यधिक विचार मंथन के कारण उनका सिर दुखने लगा था। ऐसे सिरदर्द की दवा यही है कि या तो गैंडे की तरह पत्थर पर सिर पटक-पटक कर हमेशा के लिए शान्त हो जाना या तुकाराम अथवा स्वामी रामदास जैसे किसी सन्त के चरणों में मत्था टेककर उनके ज्ञान के कुएँ से अमृत पान करना और उसी आधार पर जीवन की सफलता को ढूँढ़ना।

किन्तु आजकल युवराज जहाँ भी जाते थे, दुर्दैव की अघोरी छायाएँ उनका पीछा करती रहती थीं। जिस दिन युवराज सज्जनगढ़ पहुँचे उससे ठीक एक दिन पहले स्वामी जी कोल्हापुर की ओर निकल गये थे और पन्द्रह दिन तक उनके लौटने की सम्भावना नहीं थी।

येसूबाई के न रहने पर दुर्गाबाई युवराज की देखभाल कर रहीं थीं। राणूबाई युवराज को यही समझाने का बार बार प्रयत्न कर रही थीं कि आज नहीं तो कल सारी उलझनें अपने आप सुलझ जाएँगी। इसलिए युवराज को धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। शम्भूराजा भी सज्जनगढ़ पर अपना मन बहलाने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने गढ़ के एक छोर पर स्थित अन्न मारुति के दर्शन किये। अपने पीछे लगे सारे संकट दूर हो जायँ इसके लिए वे मारुति और शनिदेव की उपासना कर रहे थे। अनेक बार अपने रक्षकों की एक टुकड़ी लेकर वे बाहर निकलते थे। कभी वे डोरकटी पतंग की भाँति गढ़ के आसपास घूमते थे तो कभी रामगढ़ी के पास जाकर ध्यानस्थ हो जाते थे। आकाश में सफेद बादलों को देखकर उन्हें येसूबाई और कविकलश की बहुत याद आती थी।

एक दिन सन्ध्या काल लिम्ब गाँव का सदानन्द गोसावी दौड़ता हुआ युवराज के पास आया। उसने अपने मठ की बन्द की गयी वृत्ति को फिर से शुरू करने की माँग की। युवराज ने दूसरे दिन उसका निर्णय करने का निश्चय किया। उस रात शम्भूराजा का मन बहुत आश्वस्त और शान्त था। बहुत दिनों के बाद राज्य के कार्यव्यापार में ध्यान देने का उन्हें अवसर मिला था। दुर्गाबाई और राणूबाई के साथ चर्चा करते हुए बड़े महाराज का प्रसंग आ गया। शम्भूराजा की मुखमुद्रा विषादग्रस्त हो गयी। यह देखकर राणूबाई ने पूछा, "शम्भूराजा! कितना गुस्सा करोगे हमारे पिताजी पर?"

"पिताजी को कर्नाटक से आये कितने दिन हो गये? इसका विचार आप लोगों ने किया?"

"कितने दिन?"

"वे गर्मियों में चैत्र के महीने में स्वराज्य में लौटे। इस बात को एक दो नहीं छः महीने हो गये। आज मेरी उम्र बीस वर्ष है। इतने बड़े और समझदार पुत्र को उसका पिता छः-छः महीने तक नहीं मिल पा रहा है। वे मिलने के लिए सन्देश तक नहीं भेजते। मैंने स्वयं मिलने की इच्छा व्यक्त की तो उसका उत्तर तक नहीं मिलता। राणू दीदी, दुर्गाबाई आप ही बताएँ कि इस संभाजी ने ऐसा कौन सा पाप किया है? सारी दुनिया के लिए नदी की तरह अविरल भाव से प्रवाहित होने वाला आपके शिवाजी महाराज का हृदय अपने स्वयं के बेटे के लिए इतना शुष्क क्यों रहता है? आखिर यह संभाजी कोई भावनाहीन नींव का मौन पत्थर तो नहीं है।"

जिस प्रकार आकाश में गर्जन तर्जन के साथ बादल एकत्र होने हैं और तड़पते हुए वर्षा के पानी की मसक खाली करके नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार शम्भूराजा बहुत देर तक छटपटाते हुए लेटे रहे। दूसरे दिन लिम्ब गाँव के गोसावी के साथ पूरी पूछ ताछ करने के बाद उन्होंने कहा, "आप पर अन्याय हुआ है, यह स्पष्ट दिख रहा है। किन्तु इस सम्बन्ध में सरकारी अधिकारी होने के नाते अण्णाजी दत्तो को ही आदेश देना चाहिए। मैं आज ही उन्हें सन्देश भेज देता हूँ।"

सदानन्द गोसावी का चेहरा उतर गया। घुटनों के बल उठते हुए उसने बड़ी व्यग्रता से अभिवादन करते हुए कहा, "युवराज! ऐसा अधूरा न्याय न करें। आप अपनी मुहर लगाकर, कागज बनाकर देने की कृपा करें।"

"देखो गोसावी, पिताजी के कार्यव्यापार में हम व्यतिक्रम कैसे पैदा कर सकेंगे? सरकारी मुहर लगे कागज आपको अण्णाजी दत्तो के पास से ही मिलेंगे। आप चिन्ता न करें। अण्णाजी दत्तो को हम आज ही सन्देश भेज देते हैं। चार पाँच दिन बाद आप उनसे जाकर मिल लें।"

"जैसी आज्ञा।" कहते हुए गोसावी सिर हिलाकर बाहर निकल गये। चार सप्ताह और बीत गये। समर्थ रामदास स्वामी अभी तक गढ़ पर नहीं लौटे। उनके पट्ट शिष्य से और किले के अधिकारी बासुदेव बालकृष्ण तथा कृष्णाजी भास्कर से युवराज बार बार पूछ रहे थे कि स्वामी जी कब आएँगे? उन्हें उत्तर मिलता था कि स्वामीजी कोल्हापुर और बेलगाँव में ही अटके पड़े हैं। परली और सज्जनगढ़ के परिसर में घूम-घूमकर युवराज ऊब गये थे।

एक महीने के बाद गोसावी फिर आये। युवराज ने उन्हें देखते ही पूछा, "मिल गये कागज?"

"कैसे मिलेंगे?" सदानन्द गोसावी संतप्त होकर बोले, "युवराज, आपके आदेशानुसार तीन हफ्ते तक रायगढ़ की बाहरी सीढ़ियाँ बैठे-बैठे घिस गयीं। अण्णाजी और राहुजी की टालने वाली और उपहास करने वाली नजरों को देखते देखते ऊब गया। अन्त में हिम्मत करके अण्णाजी से पूछ लिया—"पन्त सच्चाई क्या है? हमें बता दीजिए।" तब अण्णाजी ने कहा, "हमारा राजा आजकल पन्हालगढ़ पर रहता है, सज्जनगढ़ पर नहीं।" जब दुखी होकर गढ़ से उतरने लगा तो लोगों की चर्चा सुनकर बात समझ में आयी।

"कैसी चर्चा?"

"लोग कह रहे थे महाराज की पहले जैसी कृपा आप पर नहीं है। इसलिए आपके द्वारा दिये गए न्याय का कोई अर्थ नहीं है। आपके आदेश का कार्यान्वयन तो दूर आपके द्वारा दिये कागज को हाथ लगाने का कष्ट भी अधिकारी नहीं उठाना चाहते।"

बात करते-करते सदानन्द गोसावी जलती तीली को घास की गट्ठी में फेंककर चले गये और आग भड़कती गयी। शम्भूराजा का चेहरा क्रोध मे लाल हो गया। उनकी आँखों में खून उतर आया। कनिष्ठ श्रेणी के कर्मचारियों को शम्भूराजा ने बैठक से बाहर जाने को कहा। किले के अधिकारी वासुदेव बालकृष्ण की ओर अपनी सन्तप्त दृष्टि घुमाई। वासुदेव बालकृष्ण हड़बड़ा गये। उन्होंने युवराज के सामने विनम्रता मे हाथ जोड़कर कहा, "महाराज उस गोसावी का कहना बिलकुल झूठ नहीं था। ऊपर मे आदेश दिया गया है कि युवराज द्वारा दिये गए आदेशों और निर्णयों को जहाँ तक सम्भव हो टाला जाए।"

"लिखित?"

"लिखित नहीं, मौखिक।"

"पन्हाला से? पिताजी का आदेश?"

"वहाँ से नहीं, रायगढ़ से, राहुजी सोमनाथ और अन्य लोगों से।"

"उसके ऊपर आपने क्या निर्णय लिया?"

"सरकार हम आपके नौकर हैं। जब रायगढ़ से मौखिक आदेश आया तो उसके स्पष्टीकरण के लिए हमने महाराज के पास पन्हालगढ़ दूत भेजे। किन्तु चार दिन वहाँ रहने के बाद भी दूत को महाराज से कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिला। आप ही बताएँ हम सेवक लोग इसका क्या अर्थ समझें?"

शम्भूराजा उदासी से हँसे। कर्मचारियों के सामने वे कुछ बोले नहीं। किन्तु वहाँ उनका रहना अब कठिन हो गया। वे दुर्गाबाई और राणूबाई से बोले, "कर्नाटक से लौटे लगभग आठ महीने बीत गये। पिताजी हमें मिले नहीं। यहाँ सज्जनगढ़ पर

भा हमें आये दो-ढाई महीने हो गये। समर्थ स्वामी का कुछ अता-पता नहीं। मुझसे ऐसा कौन सा पाप हो गया है कि रायगढ़ के स्वामी ने हमें इस प्रकार झिटक दिया और सज्जनगढ़ के स्वामी हमें इस प्रकार टाल रहे हैं? युवराज होते हुए भी प्रजा की शिकायत हम सुन नहीं सकते। यदि कोई फैसला दिया तो कर्मचारी ... सुनेंगे नहीं। अपने लोगों को, देश को, अपनी मिट्टी को यदि हम इतने पराये लग रहे हैं तो किसी परकीय देश में चले जाने में कौन सी बुराई होगी?"

"शम्भूराजा धीरज रखो। संकट टल जाएँगे।" राणूबाई ने युवराज को अपनी बाँहों में भर लिया। उन्हें शान्त करने का प्रयास करती रहीं।

उसी दोपहर को माहुली के सूबेदार खेलोजी नाइक भणगे युवराज से मिलने आये। खेलोजी बाबा की उम्र सत्तर की ओर झुक रही थी। किन्तु अभी भी वे एक युवक के उत्साह से कार्य करते थे। बड़े महाराज पर उनकी बड़ी निष्ठा थी। शम्भूराजा को वे प्राणों से भी अधिक चाहते थे। खेलोजी बाबा से शम्भूराजा ने कहा, "कल बड़ा पवित्र दिन है। इसलिए कल हम पवित्र स्नान के लिए आपके माहुली क्षेत्र में आ रहे हैं। मेरे आने की सूचना किसी को भी न दें। कल प्रात: एकदम शान्त चित्त से अपने स्वराज्य में स्नान करने दें।"

3 दिसम्बर, 1678

भोर में ही शृंगारपुर की अश्वसेना में से चुने हुए तीन सौ सवारों का दल लेकर संभाजी माहुली क्षेत्र की ओर निकल पड़े। सवेरा होते होते उनके घोड़े कृष्णा नदी के तट पर पहुँच गये। माहुली गाँव के पास कृष्णा और वेण्णा नदियों का संगम है। सवेरे के ठंडे वातावरण में शम्भूराजा संगम के पास खड़े थे। दोनों नदिया का पानी एक दूसरे की बाँहों में उलझ रहा था। नदी के इस पार हिन्दवी स्वराज्य अर्थात शिवाजी महाराज का प्रदेश था और दूसरी ओर बीजापुर के आदिल शाह का। उनके सतारा क्षेत्र का रहिमतपुर थाना यहाँ से अधिक दूर नहीं था। इन दोनों नदियों के किनारे बहुत पुराने पीपल और बरगद के पेड़ थे। जटाधारी बरगद तपस्या में समाधिस्थ महान सन्तों जैसे दिखाई पड़ते थे। आज पुण्य पर्व था इसलिए बहुत सवेरे से ही वहाँ संगम पर पंडितों, भिक्षुकों, यात्रियों और साधुओं की भीड़ जमा हो गयी थी।

युवराज अपने प्रिय हैबती घोड़े से जैसे ही नीचे उतरे, खेलो बाबा की सफेद दाढ़ी मूँछों में प्यार की मुस्कान बिखर गयी। शिवाजी महाराज के पुत्र का स्वागत करते हुए उनकी बूढ़ी पीठ नम्रता से और भी झुक गयी।

संगम पर पूजा पाठ आरम्भ था। किन्तु संभाजी का ध्यान उस पूजा अर्चना की ओर रंचमात्र भी नहीं था। वे नदी के पूर्वी छोर की ओर गर्दन घुमाकर बार बार .ग्त्र रहे थे। देखते-देखते प्रभात का प्रकाश फैल गया। संगम का हरा परिसर साफ

साफ दिखने लगा। घाट पर पंछियों का कलरव और भावुक भक्तों का शोर बढ़ने लगा। नदी में अनेक स्थानों पर गहरी खाई बन गयी थी। वैसे नदी में कमर के बराबर ही पानी था। अनेक भक्त इस पार से उस पार तक आ जा रहे थे। खेलोजी उनकी ओर बड़ी स्नेहभरी दृष्टि से देख रहे थे। शम्भूराजा ने भी वहीं पर स्नान किया।

नदी के उस पार के खेत से अचानक कुछ आवाज आयी। एक हरी झंडी कुछ संकेत करके अदृश्य हो गयी। इस दृश्य से खेलोजी चकित हो उठे। किन्तु वह शत्रु का क्षेत्र था, इसलिए खेलोजी ने अधिक ध्यान नहीं दिया। शम्भूराजा ने शीघ्रता से वस्त्र पहने। सिर पर जरीदार रेशमी टोप रखते ही उनका रूप निखर आया। किसी को भी बन्दी बना लेने वाली उनकी आँखें, जादू का प्रभाव डालने वाला गोरा रंग, शिवाजी महाराज जैसी ही गरूड़ सी नाक। उन्हें देखते हुए खेलोजी को लगा कि स्वयं शिवाजी महाराज ही आ गये हैं। इसी धुन में वे युवराज को देखते रह गये।

इसी समय शम्भूराजा ने अपने हैवती घोड़े की लगाम खींचकर उसे संकेत किया। घोड़ा उत्साह से नाच उठा और हिनहिनाया। जिस तरह बाघ अपने अगले पैरों को उठाकर झपट्टा लगाता है, उसी तरह घोड़ा अपने अगले पैरों को उठाकर मस्ती से झूम गया। खेलोजी कुछ क्षण के लिए मुग्ध हो गये। युवराज ने नदी के किनारे से परली की ओर घोड़ा ले जाने के बदले सीधे नदी के पानी में उतार दिया।

संभाजी राजा के पीछे उनके समर्थक सैनिकों ने भी अपने घोड़ों को नदी में उतार दिया। सूर्योदय के पूर्व ही नदी के उस पार मुगल सैनिकों की एक कतार बहुत पहले से ही आकर खड़ी हो गयी थी। हरे रंग के कुर्ते सलवार पहने, लम्बी लम्बी दाढ़ी-मूँछ वाले मुगल घुड़सवार शम्भूराजा को मुग्ध भाव से देख रहे थे। युवराज के नदी में उतरते ही मुगल घुड़सवारों ने अपने हरे झंडे और अपनी तलवारों को हवा में लहराया। 'अल्लाहो अकबर' और 'जय जय शम्भूमहाराज' के नारे लगाये।

यह अप्रिय और अभद्र दृश्य देखकर खेलोजी का कलेजा काँप उठा। वे भी जो वस्त्र पहने थे उनके साथ ही नदी में छलाँग लगा दी। हाथ में नंगी तलवार लेकर शम्भूराजा का पीछा करते हुए वे चिल्लाये—"छोटे राजा, कहाँ चले?"

शम्भूराजा ने शीघ्रता से गर्दन घुमाई और दुखी स्वर में बोले, "खेलोजी, बाबा, अब सब समाप्त हो चुका है। इसके बाद आपके और हमारे रास्ते अलग अलग हैं।"

"ऐसे क्या कट्टर शत्रु की तरह बोल रहे हो, युवराज? शिवाजी महाराज का पुत्र और खान की छाया में? पूनम कैसे खड़ी होगी अमावस के साथ?" खेलोजी जी-जान से युवराज को मना रहे थे, "बस युवराज! अब इससे आगे एक कदम भी न बढ़ाओ। चुपचाप वापस आ जाओ।"

शम्भूराजा ने पानी में ही घोड़े को घुमाया। उन्होंने आश्चर्य से देखा कि खेलोजी के पीछे तीस चालीस मराठे पानी में उतर चुके थे। वे शम्भूराजा की ओर ही बढ़ रहे थे! उन्हें युवराज को इस अविचारपूर्ण कार्य से पीछे लौटाना था।

युवराज को भय लगा कि ये मराठे उन पर बरसेंगे और उन्हें आगे जाने से रोकेंगे। इसलिए वे म्यान से तलवार खींचकर सावधान हो गये। खेलोजी ने जान की बाजी लगाकर अपने घोड़े को आगे दौड़ाया। युवराज के समीप जाकर ये बूढ़ी हड्डियाँ आँखों में आँसू भरकर बोलीं, "नहीं युवराज! ऐसी बात मुँह से न निकालो। आपके इस कृत्य से शिवाजी महाराज का कलेजा चूर चूर हो जाएगा।"

शम्भूराजा ने घोड़े पर से कृष्णा का पानी हाथ में लिया और गरजती आवाज में बोले, "खेलो बाबा, कृष्णमाता की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, उचित समय आने पर आपको मालूम हो जाएगा कि संभाजी कौन है? और कैसा है? सह्याद्रि के साथ सारी दुनिया को जीतकर आपके पास प्रणाम करने के लिए आऊँगा।"

यकायक कृष्णा नदी में भाग-दौड़ का खेल शुरू हो गया। 'रुकिए रुकिए' कहते हुए मराठे युवराज के पीछे दौड़ पड़े। युवराज का घोड़ा आगे न बढ़े इसलिए घेरा बनाकर पानी में गोल गोल घूमने लगे। यह देखकर कि मराठे युवराज को रोक रहे हैं, मुगल सैनिक पानी में कूद पड़े। मराठों के प्रयत्न का वे विरोध करने लगे।

खेलोजी बहुत हठी स्वभाव के थे। शम्भूराजा ने देखा कि खेलोजी का घोड़ा उनके घोड़े की पूँछ से भिड़ रहा है। युवराज हड़बड़ा गये। तलवार से खेलोजी का सामना करना आसान था। किन्तु यदि खेलोजी ने 'शम्भू बच्चे शम्भू बच्चे' कहते हुए युवराज को गले से लगा लिया होता तो उनकी ममता के आगे युवराज की तलवार नीचे गिर जाती। उस क्षण को टालने के लिए शम्भूराजा ने सीधे किनारे की ओर अपना घोड़ा दौडाया। युवराज के सामने एक खड़ी चट्टान थी। यह चट्टान बहुत ऊँची थी। इसके पार जाने के लिए घोड़े को दाहिनी या बाई ओर तिरछे होकर ले जाने की आवश्यकता थी। किन्तु उस भागा दौड़ी को टालने की धुन में युवराज ने अपना घोड़ा सीधे सामने की ओर दौड़ाया। किन्तु खड़ी चट्टान का अनुमान लगाकर घोड़ा अपनी जगह पर नाचने और हिनहिनाने लगा। युवराज ने क्रुद्ध होकर जोर से लगाम खींची और एड़ लगाई घोड़े की नाक से खून की धारा बहने लगी। किन्तु अपनी पीठ पर बैठे मालिक की जरूरत घोड़े की समझ में आयी। वह सचेत हो गया और खड़ी चट्टान पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। घोड़ा भी समझ गया था कि इस खड़ी चट्टान को पार करना उसके बूते का नहीं था, फिर भी वह यह पागल प्रयत्न कर रहा था। वह बहुत प्रयत्नपूर्वक आगे बढ़ने लगा और इस प्रयत्न में ही नीचे गिर गया। घोडे के साथ ही युवराज की भी मृत्यु का क्षण आ गया था, किन्तु उन्होंने घोड़े के गिरने के पहले ही छलाँग लगाकर अपने को बचा लिया।

उस कठिन प्रयास में हैबती घोड़े की हड्डियाँ टूट गयी थीं। फेफड़े के फट जाने के कारण वह अन्तिम साँस ले रहा था। उसी समय किनारे पर मुगल सैनिक 'आइए यवुराज, जल्द आइए' कहकर पुकार रहे थे। पीछे की ओर खेलोबाबा की बाँहें पकड़कर कुछ मुसलमान सिपाही उन्हें रोक रहे थे।

घोड़े का सीना फट जाने से बहुत खून बह रहा था। उसकी नाक से तेज आवाज आ रही थी। पैरों की छटपटाहट में उसकी वेदना की तड़प को युवराज से देखा नहीं गया। किनारे खड़ी मुगल सेना को भूलकर वे पीछे भागे और घोड़े की जीन से बँधी चमड़े की थैली में पानी भरकर घोड़े के मुँह में डालने लगे। देखते देखते घोड़े का शरीर अकड़ गया। उसने हमेशा के लिए अपनी आँखें बन्द कर लीं।

युवराज एक बार फिर निश्चय करके किनारे पर खड़ी मुगल सेना की ओर चल पड़े। हरे रंग में सजी मुगल सेना की ओर चलते समय उनका कलेजा फटा जा रहा था। कुछ तो भय भी उन्हें आगे जाने से रोक रहा था। नये रास्ते पर कदम बढ़ाने से पहले यह कैसा अपशकुन हुआ? किन्तु जाएँगे भी कहाँ? पीछे छूट गये स्वराज्य के वे खेत, वे लोग, वे किले, वे महल भी तो उनके कहाँ थे?

सामने वाले हरे दृश्य के आगे क्या रखा है? यह भी ठीक ठीक ज्ञात नहीं था। किन्तु क्या वीरता ही मनुष्य का सच्चा आभूषण नहीं है?

युवराज सोचते हैं—'अपने दादाजी शाहजी महाराज आदिलशाह के दरबार में नौकरी करते थे। तब पिताजी ने आदिल शाही के विरुद्ध बगावत नहीं की थी क्या? आज स्वराज्य की अविश्वास और अन्याय की खाई में सड़कर मरने की बजाय परदेश में प्रयत्न करेंगे, पराक्रम करेंगे, यश की माला पहनेंगे और फिर से पिताजी का मंगल आशीर्वाद लेने के लिए स्वराज्य में वापस आ जाएँगे। यह सब करने के लिए दिलेरखान नामक सोने की मछली के मुँह में बहादुरी से छलाँग के अतिरिक्त अपने हाथ में बचा ही क्या है?'

पाँच

सह्याद्रि का बछड़ा मुगलाई के जंगल को रौंदता हुआ तेजी से बढ़ा जा रहा था। उसके साथ चलने वाली मुगल सेना की टुकड़ी हुड़दंग मचाती हुई चल रही थी। यह घटना ही मुगलों के लिए विलक्षण थी। मराठों का युवराज बिना प्रयत्न के ही मुगलों के काँटे में फँस रहा था। इस खबर को सुनते ही दिल्ली के औरंगजेब से लेकर दक्षिण के दिलेरखान तक सभी अमीर उमराव प्रसन्न होने वाले थे।

जैसे-जैसे अपना प्रदेश पीछे छूटने लगा वैसे-वैसे शम्भूराजा के मन में घबराहट होने लगी। जलती हुई आग से बचने के लिए जब कोई आदमी बाहर निकलता है तो भी अंगारों के कण चटककर उसे क्रूरतापूर्वक जलाते हैं। ऐसी ही मानसिक अवस्था शम्भूराजा की हो रही थी। उनके इस कृत्य में बहादुरी से अधिक धोखा था। वाठार गाँव के पास दिलेरखान का मूबेदार एखलामखान और उसका भतीजा गैरत तीन हजार की सेना लेकर खड़े युवराज की राह देख रहे थे। उन दोनों ने युवराज का स्वागत किया। दिलेरखान द्वारा दी गयी हिदायतों के अनुकूल सब कुछ हो रहा था।

सालपा घाट पीछे छूट गया। नीरा नदी भी पीछे गयी। कुरकुंभ गाँव के पास सजाये गये शामियाने के पास दिलेरखान पागल की भाँति इधर-उधर घूम रहा था। उसने जान बूझकर युवराज के स्वागत के लिए एखलास को आगे भेजा था। उसका मराठा जाति पर बिलकुल विश्वास नहीं था। उसे शंका थी कि कहीं शिवाजी और संभाजी बाप बेटे ने कोई षड्यन्त्र न रचा हो? इसी आशंका से उसका मन सम्भ्रमित हो रहा था।

दिलेरखान बीच बीच में गद्गद होकर हँसता भी था। क्योंकि एक घंटा पहले दो घुड़सवार यह खुशखबरी लेकर शामियाने में पहुँचे थे 'कि शिवाजी का बेटा अपनी सेना में आ गया है।' उन दूतों के इस सन्देश पर दिलेरखान को क्षणभर के लिए विश्वास ही नहीं हुआ। पुरन्दर के जानलेवा घेरे में जब दिलेरखान ने मुरारबाजी देशपांडे की गर्दन काटी थी और खून से लथपथ हाथों को अपने किनखाफी कुर्ते से पोंछा था तब भी उस आसुरी आनन्द में आज जितनी खुशी नहीं मिली थी।

अचानक दिलेरखान की दृष्टि दो-तीन कोस के मैदान की ओर गयी। आसमान में धूल के बादल उड़ाते हुए पागल घोड़े मस्ती से दौड़ रहे थे। कुछ समय में ही सेना दिलेरखान की दृष्टि सीमा में आ गयी। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने अपनी आँखों से आनन्द के आँसू पोंछे। सामने देखता है तो सिर से पाँव तक सजाये गये हाथी हौदे में एखलासखान के साथ संभाजी राजा रोब से बैठे थे। शिवाजी महाराज और संभाजी की मुखाकृति में पर्याप्त समानता थी। दिलेरखान उस हौदे को टकटकी लगाए पागल की तरह देखता रहा। परिचारकों का दल आगे दौड़ा। उन्होंने हाथी से उतरने के लिए सीढ़ी खड़ी की। किन्तु दिलेरखान, स्वयं ही, सीढ़ियों से चढ़कर तेजी से ऊपर गया।

''आइए दक्खिन की शान! शेर संभाजी महाराज आइए।'' ऐसा कहते हुए उसने वहीं पर संभाजी को बाँहों में भर लिया। हज की यात्रा में जैसे छूटा हुआ कोई छोटा भाई दस-बीस वर्ष बाद वापस आ गया हो। उसके आने की जैसी खुशी होती

है। वैसी ही खुशी दिलेरखान को हो रही थी। वह सोच नहीं पा रहा था कि शम्भूराजा को कहाँ रखे और कैसे रखे?

दोपहरी के एकान्त में दोनों की बातें चल रही थीं। यहाँ तक आये हुए मराठों के स्वाभिमानी युवराज को अपनी किसी मूर्खता से नाराज न करके, प्यार का गलीचा फैलाकर अपने क्षेत्र में ले जाने के लिए बहुत सावधानी से कार्य कर रहा था। वह युवराज को उत्तेजित करते हुए बोला, ''युवराज, इसके आगे की आपकी जिन्दगी में आनन्द-ही आनन्द है। शहजादे, अब किसी बात की फिक्र न करना। आपकी नाराजगी और रायगढ़ के बेढंगेपन की पूरी खबर है आपके इस भाईजान को।''

शम्भूराजा चुप थे। दिलेरखान ने विश्वास का हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, ''लेकिन शहजादे, ममता से अन्धे होकर अपनी सियासती का मजहब भूलने का पाप मत करो। अपनी हुकूमत सँभालने के लिए माँ बाप यार दोस्त मेहमान आदि को अपने कब्जे में रखना पड़ता है। कल आपकी सौतली माँ सोयरारानी अपने बेटे के लिए ही राज्य माँगने वाली है। उनकी इच्छा के सामने आपके अब्बाजान शिवाजी शरणार्थी बन जाएँगे। अपने पुराणों को पढ़ो, इतिहास को पढो। रावण ने अपने भाई जान के साथ जंग किया, कुश, लव ने राम के साथ, धर्मराज ने अपने मामा शकुनी के साथ—इतना ही नहीं खुद औरंगजेब ने भी अपने बूढ़े बाप के साथ जंग किया था। जंग किये बिना फतेह नहीं फतेह के बिना कीर्ति नहीं ।''

दिलेरखान को अभी बहुत भाग दौड़ करनी थी। शम्भूराजा को मालूम हुआ कि कुरकुम्भ में उनका जो स्वागत हुआ था उससे कहीं अधिक भव्य और शानदार स्वागत की तैयारी बहादुरगढ़ पर आरम्भ हो गयी थी। बहादुरगढ़ का नाम सुनते ही संभाजी राजा का गला सूख गया। उनके तनाव भरे चेहरे के पीछे क्या कारण था? यह दिलेरखान की समझ मे भी नहीं आ रहा था। मुगलों की फौज आगे बढ़ रही थी। सह्याद्रि की श्रेणियों की कतारें पीछे छूट गयीं। भीमा नदी के किनारे का हरा भरा प्रदेश दिखाई दे रहा था।

दक्खिन प्रदेश की जिम्मेदारी औरंगजेब ने इससे पहले अपने दूधभाई बहादुरखान कोकलताश जाफरजंग पर सौंपी थी। उसी ने भीमा नदी के किनारे पेड़गाँव के पास एक बहुत बड़ा किला बनवाया था। बहादुरखान कोकलताश ने अपने ही नाम पर किले का नाम बहादुरगढ़ रखा था। शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के बाद रायगढ़ के महल में पहली बार बहादुरगढ़ का नाम संभाजी ने सुना था। इस किले पर उत्तम नस्ल वाले एक सौ कीमती अरबी घोड़ों के साथ एक करोड़ रुपये की राशि पहुँचा दी गयी है। यह समाचार सुनकर शिवाजी महाराज सावधान हो गये थे।

एक दिन अचानक लिंपण गाँव की पश्चिम दिशा से दो हजार मराठा सैनिकों के बहादुरगढ़ की ओर लुके-छिपे आने की खबर पाकर बहादुर कोकलताश बहुत

प्रसन्न हो गया। उसने पश्चिमी दरवाजे पर पहरेदारों को जानबूझकर असावधान रहने का आदेश दिया और बड़ी चालाकी से दो हजार मराठा सैनिकों को अन्दर ले लिया। किन्तु जब मराठा सैनिकों ने किले में खड़े हजारों सैनिकों को पहरा देते हुए देखा तो वे डर गये। डरी हुई मराठा फौज भैरोबा की ओर से बाहर भागने लगी। बहादुर खान खुशी से पागल हो गया । उसके सभी सैनिक मराठा सैनिकों पर जानलेवा हमला करके पीछा करने लगे।

अब बहादुर एकाकी और उदास दिखने लगा था। किले में रहने वाली महिलाओं खानसामों, बच्चों, पानी भरने वालों और मामूली नौकरों चाकरों के अतिरिक्त कोई नहीं रह गया था। यहाँ तक कि किले के बाहर दरवाजों को बन्द करने के लिए भी कोई सैनिक पीछे नहीं छूटा था। इसी समय दूर काष्ठी की ओर से घने पेड़ों और नदी नालों में छुपी बैठी सात हजार सैनिकों की खास मराठा फौज सामने आ गयी। किले पर उनका कहीं भी विरोध या प्रतिरोध नहीं हुआ। दो सौ अरबी घोड़ों को लेकर मराठे बडी आसानी से निकल गये। जाते जाते जिस प्रकार अपने द्वारा मारे गये हिरन बाघ पीठे पर लादकर ले जाता है उसी प्रकार मराठे एक करोड़ रुपयों का खजाना भी अपने साथ लेते गये। शक्तिमान शिवाजी महाराज ने शक्तिशाली मुगलों को एक बार फिर उनकी औकात बता दी थी।

आज शम्भूराजा भयानक दबाव मे थे। वे बार-बार सोचते थे—'हम स्वराज्य का नाम रोशन करने के लिए निकले हैं या डुबोने के लिए?' दूरी पर बहादुरगढ़ की आड़ी तिरछी आकृति दिखने लगी। दाहिनी ओर भीमा नदी का विशाल विस्तार दिख रहा था। शम्भूराजा के स्वागत के लिए शहनाई ढोल, तासे आदि मंगलवाद्य बज रहे थे। हाथी के ऊपर हौदे में युवराज के साथ दिलेरखान बैठा था। किले के अन्दर मुगलों ने एक जीती जागती सुन्दर और समृद्ध नगरी बसायी थी। नगर में घरों के शीर्ष पर और बुर्ज के शिखर पर औरंगजेब की हरी झंडियाँ फहरा रही थीं।

बहादुरगढ़ का किला मुगलों के अहंकार का प्रतीक था। इसकी पत्थर की दीवारें मजबूत और बुर्ज शानदार थे। यह दक्षिण की मिट्टी को पेड़ की पत्तियों की तरह नगण्य मानता था। इसके पहले बहादुरगढ़ के रहने वालों ने दक्खिन के सरदारों को सिर नीचा किये, हीरे मोती से भरी थालियों को हाथ में लिये दरवाजे के भीतर आते देखा था। अनेक दक्खिनी अमीर उमरावों का स्वागत चाबुक से किया गया था। परन्तु आज पहली बार दक्खिन के एक सुन्दर और रोबीले राजकुमार को हाथी पर बिठाया गया था। उसके लिए शानदार जुलूस निकाला गया था। अलिन्दों पर, छतों पर, और गली गली में एकत्र हुई महिलाओं और बच्चों की भीड़ शिवाजी महाराज के पुत्र को बड़े ध्यान से देख रही थी।

आज के जुलूस में उत्साह का जलवा था। बहुत सज-धज थी। किन्तु अकारण ही शम्भूराजा को किसी चीज के जलने की दुर्गन्ध आ रही थी।

युवराज का मुँह सूख गया। चमड़े की थैली को मुँह से लगाकर जल्दी जल्दी पानी पीने लगे। किन्तु उनकी प्यास बुझ नहीं रही थी।

भीमा नदी के किनारे का वह किला अनुमानतः छः सौ एकड़ जमीन पर फैला हुआ था। भीतरी प्राचीर के अन्दर मुगल नगरी बसी थी। बाहर की प्राचीर पूर्व की ओर लगभग डेढ़ कोस तक फैली थी। उसने भीमा से मिलने वाली छोटी नदी सरस्वती को भी अपने भीतर समेट लिया था। रायगढ़ या राजगढ़ जैसे पहाड़ी किलों में ही युवराज को रहने की आदत थी। जिससे बहादुरगढ़ की आयताकार हवेलियाँ बड़े-बड़े महल ऊँचे ऊँचे मन्दिरों और मस्जिदों की चोटियाँ देखकर शम्भूराजा को बचपन में देखा गया आगरा शहर याद आ रहा था। बहादुरगढ़ पर साठ-सत्तर हजार रैयत और सैनिकों का निवास था। वहाँ पर अरबी, ईरानी, खोजा, मुगल, दक्खिनी मुसलमान मराठा सैनिक, हुकूमत करने वाले उत्तर के मुगल, कुनबी, कारीगर, मिस्त्री पानी भरने वाले विविध जमातों और वर्णों के लोगों की भीड़ जमा थी।

किले के बीचोंबीच कुछ ऊँची जगह पर बहादुर खान ने एक चार बरामदे वाला बड़ा महल बनवाया था। उस सागौन और शीशम के महल में दीवारें और पर्दे नहीं थे। इसलिए वहाँ आमसभा में बैठे राज्य कर्मचारियों और प्रजा को भीमा नदी के प्रवाह का दर्शन होता था। दिलेरखान के साथ शम्भूराजा जब उस महल में प्रवेश कर रहे थे तब वहाँ दीवाली जैसी रोशनी की गयी थी। मुहल्लों और गलियों में पटाके और अनार फूट रहे थे। किनारों पर भव्य दीप ज्योति जल रही थी। जलते दीपों की ज्योति भीमा के शान्त प्रवाह में झिलमिला रही थी। यह सारी रोशनी खिलखिलाकर हँसते हुए बगल के अँधेरे से कह रही थी—"शिवाजी का पुत्र संभाजी मुगलों से मिल॰ गया।"

समारोह में शम्भूराजा की बहादुरी के गीत गाये जा रहे थे। उन्हें महँगे वस्त्र और रत्नमालाएँ अर्पित की जा रही थीं। चारों ओर बैठे दरबारियों और सरदारों पर युवराज की नजर घूम रही थी। इमी बीच शम्भूराजा के ठीक सामने बैठे एक लम्बा पतला उमराव युवगज को टकटकी लगाए देख रहा था। युवराज का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ। उस आदमी की दाढ़ी मुगलों जैसी थी। बहुत दिनों तक पराये प्रदेश में रहने के कारण उसका पहनावा, ठाट-बाट, सिर की पगड़ी आदि पक्के मुसलमान जैसा था किन्तु वह वास्तव में एक मराठा था। शम्भूराजा ने उससे आँख मिलाई तो उसके चेहरे पर घृणा का भाव आ गया और क्रोध से उसने अपनी आँखें दूसरी ओर घुमा लीं! बहुत दिनों के बाद मिलने वाला वह मराठा उमराव बजाजी नाइक का पुत्र महादजी था। इसी के साथ युवराज की बड़ी बहन सखुबाई का विवाह हुआ था।

आज शत्रु के शिविर में शिवपुत्र का बड़ा सम्मान हो रहा था। कि शिवाजी महाराज द्वारा बहादुरगढ़ के गाल पर जड़ी गयी दूसरी जोरदार थप्पड़ को बहादुरगढ़

अभी भूल नहीं पाया था। शिवाजी महाराज जब कर्नाटक की बड़ी लड़ाई के लिए निकल रहे थे तो अपनी अनुपस्थिति में उन्हें आशंका थी कि अनुपस्थिति का लाभ उठाकर दक्षिण में नियुक्त मुगल सूबेदार बहादुरखान जाफरजंग आक्रमण कर सकता था। इसीलिए उन्होंने खान के पास दोस्ती का पैगाम भेजा था। उन्होंने कहा था, ''हिन्दवी स्वराज के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण किले बादशाह औरंगजेब को बिना शर्त भेंट करके स्वयं शरणार्थी बन जाएँगे क्योंकि इस उम्र में केवल शान्ति चाहिए।'' इस प्रकार का प्रस्ताव लेकर मराठा दूत जब-जब बहादुरखान के पास पहुँचे तो उन्हें बिना सोंठ खाये ही खाँसी चले जाने जैसा समाधान मिला। काबुल, कंधार, अफगानिस्तान के साथ नित्य झगड़े से संत्रस्त औरंगजेब के मन को यह प्रस्ताव बहुत बड़ी विजय जैसा सुखद लगा।

प्रसन्नतापूर्ण वातावरण में सारी बातें निश्चित हो गयीं। इस सन्धिपत्र को व्यावहारिक रूप देने के लिए शिवाजी महाराज ने केवल एक शर्त रखी थी। उन्हें सन्धिपत्र पर बादशाह औरंगजेब के हाथ के पंजे का निशान चाहिए था। बहादुर खान ने हँसते-हँसते इस शर्त को स्वीकार कर लिया। पंजे का निशान लेने के लिए कागज दिल्ली रवाना किया गया। कागज लौटने पर ही सब कुछ निश्चित होना था। उस आनन्द की बेहोशी में खान शिवाजी महाराज को उपहार के रूप में देने के लिए एक उत्तम हाथी और एक चन्दन की पालकी तैयार रखी थी। सन्धि की शर्तों और पंजे के निशान आदि एकत्र करने में कुछ महीने बीत गये। इसी बीच शिवाजी महाराज ने कर्नाटक की लड़ाई जीत ली। वहाँ से वापस आने पर खान के दूत जब सन्धिपत्र लेकर शिवाजी महाराज के पास पहुँचे तो शिवाजी महाराज ने सन्धिपत्र को फेंक दिया। बहादुर खान एकबार पुनः धोखा खा गया। औरंगजेब उस पर इतना क्रुद्ध हुआ कि दक्षिण की सूबेदारी उसे खोनी पड़ी।

समारोह के बीच ही दिलेरखान ने बगल की ओर उँगली से इशारा किया। उसी ओर एक ऊँचा सजा-सजाया हाथी झूम रहा था। उसी की ओर संकेत करते हुए दिलेरखान ने कहा, ''शहजादे, डेढ़-दो वर्ष पहले मराठों को भेंट करने के लिए बहादुर खान साहब ने यही हाथी तैयार कर रखा था। वही हाथी आज हम आप को भेंट करते हैं।''

विशिष्ट लोगों की ओर हाथ उठाकर दिलेरखान ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, ''शम्भूराजा के लिए हमने शाही लिबास सोने और हीरे जवाहरात के गहने मँगाये हैं। हम चाहते हैं कि यह सारा उपहार हमारी ओर से युवराज के बहनोई महादजी नाइक निम्बालकर उन्हें भेंट करें।''

अगल-बगल खचाखच भरी भीड़ ने जोर से तालियाँ बजाकर दिलेरखान के प्रस्ताव का अनुमोदन किया। कुछ असन्तुष्ट और नाखुश चेहरा बनाकर महादजी नाइक उठकर खड़े हो गये। किन्तु उठते-उठते उनकी पीठ में जोर की मोच आ

गयी और वे अपना चेहरा टेढ़ा करके अपनी जगह पर बैठ गये। तब दिलेरखान ने स्वयं वस्त्र, उपहार और राजा की पदवी देकर युवराज को सम्मानित किया। समारोह की समाप्ति पर दिलेरखान के साथ अन्य बहुत से लोगों ने युवराज से हाथी पर बैठने का आग्रह किया। किन्तु संभाजी राजा ने यह आग्रह स्वीकार नहीं किया वे अपने हवेली तक पैदल चलकर आये। दिलेरखान ने किले के अन्दर ही युवराज के ठहरने की व्यवस्था की थी। महादजी नाइक का निवास भी बगल के महल में था। अपने बहनोई का हाल-चाल जानने के लिए युवराज स्वयं जाकर उनके सामने खड़े हो गये। सामने बिछौने पर बैठे महादजी अपनी जगह से जरा भी नहीं हिले। उन्होंने शम्भूराजा का तनिक भी सम्मान नहीं किया। अन्तत: युवराज ही उनसे बोले, "दाजी, कैसी है आपकी तबीयत?"

"ठीक है।" महादजी ने क्रुद्ध स्वर में कहा।

"झूठी मोच का बहाना करने से दर्द होगा भी कैसे?"

महादजी ने क्रोध मे संभाजी राजा की ओर देखा। बगल में थूकते हुए उन्होंने उल्टा प्रश्न किया—"शिवाजी महाराज को छोड़कर तू यहाँ क्यों आया संभा? क्या जरूरत थी यहाँ आने की?"

"अपने बहनोई की तरह दूसरे का गुलाम बनने के लिए सोचकर।"

"बिला वजह जले पर नमक न छिड़को संभा। मेरे जैसे मराठों की कितनी पीढ़ियाँ दूसरों की गुलाम बनती आयी हैं। किन्तु तुम बाप बेटों ने हिन्दवी स्वराज्य का जो संकल्प लिया है, वह तो पूरा करो।"

महादजी के कठोर शब्दों ने युवराज के कलेजे के टुकड़े टुकड़े कर दिये। उनके चेहरे पर से दरबार की कान्ति गायब हो गयी। वैभव से परिपूर्ण उस नगरी में शम्भूराजा असीम उदासी और अकेलेपन का अनुभव करने लगे।

दो दिन में ही रहिमतपुर से लम्बी यात्रा करके शाही पालकियाँ बहादुरगढ़ पर आ पहुँचीं। सज्जनगढ़ से निकलते समय युवराज को आशंका थी कि मुगलों के राज्य की ओर जाने मे सम्भवत: उनका पीछा किया जाएगा। यह भी सम्भव था कि तलवारें निकलतीं और लड़ाई होती। इसीलिए शम्भूराजा ने दुर्गाबाई को अपने साथ नहीं लिया था। उन्हें समीप के मुगल थाने पर अपने कुछ विश्वस्त साथियों के साथ भेज दिया था। वहाँ के थानेदार ने ही उन्हें सकुशल बहादुरगढ़ पहुँचाया था।

किन्तु दुर्गाबाई के साथ राणूबाई को देखकर शम्भूराजा को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने चिन्तित होकर पूछा—"यह क्या कर बैठी दीदी? वाई में घर गृहस्थी, बाल-बच्चे, घर-बार, नाते-रिश्ते छोड़कर यहाँ किसलिए आ गयी?"

"जाने दो शम्भू! तुम्हें कभी माँ की स्नेह छाया तो मिली नहीं। जीजा माता भी नहीं रहीं। पिताजी ने भी तुम्हारी ओर से मुख मोड़ लिया। तुम्हें माया-ममता देने वाला घर का कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ होना चाहिए न?"

दीदी की इस बात को सुनकर युवराज कुछ न कह सके। दिलेरखान ने युवराज के लिए सुन्दर ऊँची हवेली, अच्छे नौकर चाकर और धन सम्पदा की व्यवस्था कर रखी थी। शम्भूराजा की हवेली के पीछे एक नीची दीवारों वाला घर था। पुराने दिखने वाले, पत्थरों से बने मजबूत घर में किसी राजनीतिक कैदी को बन्द करके रखा गया था। अपनी हवेली से कभी रात में तो कभी दिन में शम्भूराजा की नजर उस रहस्यमय घर की ओर पड़ती थी। उस घर के दरवाजे के खुलने की आवाज न तो युवराज ने सुनी और न ही दुर्गाबाई ने। उस राजनीतिक कैदी की अवस्था किसी बड़े पिंजड़े में बन्द पशु जैसी थी। उस कैदी के लिए दिन में दो बार खिडकी से खाना फेंका जाता था।

कभी दिन के धुँधले प्रकाश में तो कभी रात में मोमबत्ती के हल्के प्रकाश में उस राजनैतिक कैदी का चेहरा दिख जाता था। लगभग साठ वर्ष का, साधारण कद काठी का, बोलती आँखों वाला वह एक मुसलमान बूढ़ा था। साधारण कैदी की तरह किसी अँधेरी कोठरी में फेंक देने के बदले उसे राजनीतिक कैदी बनाकर उसे इस खास घर में रखा गया था। थोड़े दिनों में शम्भूराजा को सूचना मिली कि उस बन्दी का नाम मियाँखान है और वह अथणी का सूबेदार था।

दो महीने बीत गये फिर भी दिलेरखान की आगे की चाल समझ में नहीं आ रही थी। शत्रु के शिविर मे शम्भूराजा का दम घुटता था। बहादुरगढ़ की जालिम हवेली में उन्हें किसी प्रकार नींद नहीं आती थी। माता भवानी के नाम का गले में बँधा ताबीज वे बार बार अपनी आँखों पर रखते थे। अपनी जन्मभूमि की, प्रदेश की, अपने प्रिय पिता की बहुत याद आती था। उनकी आँखों के सामने येसूबाई की प्रेरक पुतलियाँ बार बार दिखती थीं। युवराज का सन्ताप और सन्त्रस्त भाव की बेचैनी देखकर दुर्गाबाई और गणूबाई की जान और भी संकट में पड़ी थी। वे युवराज से भी अधिक जागरण करती थीं। अपने पति को मानसिक और भावनात्मक शान्ति देने के लिए दुर्गाबाई हर सम्भव प्रयास करती थीं।

एक रात एक भयानक स्वप्न ने युवराज के हृदय को विदीर्ण कर दिया। वे अचानक जगे और भयभीत होकर बिस्तर पर बैठ गये। आसपास के नीम के पेड़ हवा से सनसना रहे थे। दुर्गाबाई भी डरकर उठी और युवराज का मुँह देखने लगीं। शम्भूराजा की आँखों के सामने से भीषण सपना हट नहीं रहा था। दिलेरखान द्वारा भेंट किया गया सजा सजाया हाथी पागल हो गया था। उसके खम्भे जैसे पैर शम्भूराजा के शरीर के चिथड़े चिथड़े कर रहे थे। युवराज का पूरा शरीर खून से लथपथ हो गया था।

अजगर की चपेट में

एक

बहादुरगढ़ की फौलादी प्राचीरों को तोड़कर मराठी ढंग के गहने बेचने के बहाने एक सुनार किले में दाखिल हो गया। वह महाड़ पोलादपुर की ओर का रहने वाला था। वह जबान का मीठा और वार्तालाप में चतुर था। इसी कारण या किसी और कारण से उसने दुर्गाबाई को बहुत से गहने खरीदने के लिए विवश किया। वहीं बरामदे में शम्भूराजा को आते देखकर उस सुनार ने धीरे से लाखों के मूल्य की खबर सुनायी—

"छोटे मालिक आप पर देवी की कृपा हो गयी है। लक्ष्मी घर आयी है। बच्ची और बच्ची की माँ दोनों शृंगारपुर में स्वस्थ और सुरक्षित हैं।"

इस खबर को सुनकर शम्भूराजा का हृदय ममता से भर आया। उन्होंने अपने गले का हार निकालकर उस जासूस को भेंट कर दिया। अपनी पहली बच्ची के जन्म के समय मुझे शृंगारपुर में उपस्थित रहना चाहिए था। शम्भूराजा सोच रहे थे कि वहाँ यदि होता तो हाथी पर बैठकर जलेबियाँ बाँटता। राजकन्या की प्राप्ति की कल्पना मात्र से उनके रोंगटे खड़े हो गये।

अपने महल में से—विशेष रूप से महल की पिछली खिड़की से शम्भूराजा की दृष्टि उस काले रहस्यमय घर की ओर अनेक बार जाती थी। उन्हें वहाँ बीच बीच में मियाँखान दिखाई पड़ जाते थे। अथड़ी के उस आदिलशाही सूबेदार के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी शम्भूराजा को प्राप्त हो चुकी थी। मियाँखान आदिलशाही की सेवा में होते हुए भी उसकी और उसके परिवार की निष्ठा मुगल बादशाह के प्रति ही थी। मियाँखान दक्षिण की खबरें औरंगजेब तक पहुँचाने और मुगलों के हित की रक्षा करने का कार्य करता था। किन्तु मौके का लाभ उठाकर उसके शत्रुओं ने मियाँखान की शिकायत औरंगजेब से कर दी। आलमगीर स्वभाव से ही शक्की था। उसके लिए इतना मौका काफी था। उसने अथणी के लिए फौज भेजी। सिपाहियों ने मियाँखान को कैद करके बहादुरगढ़ पर खींच कर पहुँचाया।

धीरे-धीरे हर बात शम्भूराजा की समझ में आने लगी। मराठी राज्य का युवराज होने के नाते शम्भूराजा को किले में घूमने की चाहे जितनी छूट रही हो, किन्तु उनके महल के आसपास रात-बिरात धीमे-पाँव से गश्त लगाने वाली टोलियाँ घूमती रहती थीं। युवराज पर हमेशा निगरानी रखी जाती थी। यदि वे कभी भीमा नदी की विशाल धारा के किनारे घूमने जाते तो वहाँ भी उन पर निगाह रखी जाती। एक दिन शम्भूराजा ने इन स्थितियों से ऊबकर दिलेरखान से क्रोध के आवेश में प्रश्न किया—"खान साहब हम आपके मेहमान हैं या कैदी?"

दिलेरखान का उनके बारे में क्या विचार है? यह शम्भूराजा की समझ में नहीं आ रहा था। इससे वे बहुत बेचैन हो रहे थे। युवराज के रूप में इतना बड़ा मोहरा हाथ लग जाने की खबर दिलेरखान ने तत्काल दिल्ली भेज दी थी। किन्तु औरंगजेब सहज ही उस पर विश्वास करने वाला नहीं था। उसने अपने विश्वस्त लोगों द्वारा इसकी जाँच कराने का निश्चय किया। उसके लिए यह पता लगाना जरूरी था कि जो युवक शिवाजी का बेटा बनकर मुगल फौज में आया था वह सचमुच शिवाजी का पुत्र था या कोई बनावटी युवराज था।

दिल्ली दरबार युवराज के विषय में क्या निर्णय करेगा? यह दिलेरखान के लिए स्पष्ट नहीं था इसलिए दिलेरखान के मन की बात शम्भूराजा को भी स्पष्ट नहीं हो रही थी। शम्भूराजा की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उन्हें न दिन को चैन था न रात को नींद।

एक रात को उन्होंने पिछवाड़े की खिड़की से उस रहस्यमय घर में मोमबत्ती का प्रकाश देखा। खिड़की के पास मियाँखान आकर बैठा था। किसी असह्य दुख से वह व्याकुल हो रहा था। उसकी आँखों से धारासार आँसू बह रहे थे। दुख की तीव्रता के कारण उसकी नाक का अग्रभाग लाल हो गया था। लगता था वह स्वयं पर क्रुद्ध हो रहा है। असहाय होकर खिड़की की सलाखों पर सर पटकता था।

दूसरे दिन दुर्गाबाई ने भी वही दृश्य देखा। शम्भूराजा का ध्यान आकर्षित करते हुए वे बोलीं, "पता नहीं किस दु:ख से वह बेचारा तड़प रहा है? कल से देख रही हूँ, उसके आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। अगली रात में भी शम्भूराजा ने वही दृश्य देखा। मियाँखान ऐसे तड़प रहा था जैसे किसी ने छोटी मछली को तपते तवे पर रख दिया हो। उसे देखकर शम्भूराजा ने दुर्गाबाई से कहा, "आप सवेरे भैरोंबाबा का दर्शन करने पिछवाड़े के दरवाजे से ही जाती हो न?"

"हाँ, क्यों?" दुर्गाबाई का प्रश्न।

"कल सवेरा होने से पहले ही दर्शन करने जाओ और जाते-जाते स्वयं ही उसके दुख का कारण पूछ लो। किन्तु यह बात नौकर चाकरों के हाथ नहीं लगनी चाहिए। इसलिए आप स्वयं...।"

भोर होने से बहुत पहले ही दुर्गाबाई अपनी·दो विश्वस्त दासियों को साथ लेकर महल से बाहर निकलीं। सूरज की पहली किरण निकलने के पहले ही वे भैरोंबाबा का दर्शन करके वापस भी लौट आयीं। सीढ़ियों पर शम्भूराजा उनकी प्रतीक्षा में खड़े थे। दुर्गाबाई वहाँ आयीं और भावुक होकर कहने लगीं—

"बेचारा बहुत भला आदमी दिखता है। औरंगजेब द्वारा फँसाये जाने का दुख तो उसे है ही किन्तु इस समय वह एक दूसरी ही घरेलू समस्या से पागल हो रहा है।"

"क्या? हुआ क्या है?"

"उसकी बेगम बच्चों को जन्म देते ही मर गयी। उसने दो बच्चियों को जन्म दिया था। उन बच्चियों को पालने पोसने में मियाँखान ने अपनी उम्र गँवाई। छ महीने पहले बीजापुर के एक जमींदार के दो बेटों के साथ इन जुड़वाँ बहनों का विवाह निश्चित हो चुका है। चार दिनों के बाद विवाह की तिथि है।"

"फिर?"

"मियाँखान ने अपने दामादों के लिए दहेज की बहुत बड़ी रकम कबूल की थी। उन बेटियों की माँ नहीं है और बाप ऐन मौके पर कैदखाने में बन्द हो गया। वह महसूस कर रहा है कि घर के नौकर चाकरों से विवाह का कार्य ठीक ठीक नहीं हो पाएगा। शादी टूट भी सकती है। दुर्भाग्य से इसकी गलती लड़कियों के माथे पर ही आएगी। दुनिया समझेगी कि लड़कियों में ही कुछ खोट है। लड़कियों का भविष्य बर्बाद हो जाएगा। यही समस्या इस अभागे बाप को पागल बना रही है।"

उसकी दर्दभरी कहानी सुनकर शम्भूराजा का मन पिघल गया। उसी दिन वे हवेली की छत पर से इधर उधर देख रहे थे। वे यह सोचकर अधीर हो रहे थे कि अभी तक अँधेरा होते ही शम्भूराजा की उस हवेली में अनेक हलचलें उग आयीं। उन्होंने रसोईघर में काम करने वाले जैमुद्दीन को बुला लिया। युवराज उस मोटे थुलथुले दाढ़ी वाले बुड्ढे जैमुद्दीन को प्रसन्नतापूर्वक देखते ही रह गये। शम्भूराजा ने रात के अँधेरे में अपने विश्वस्त सहयोगियों के साथ जैमुद्दीन को उस रहस्यमय घर की ओर भेज दिया।

स्वयं शम्भूराजा हवेली के दरवाजे पर आकर पटाके फोड़ने लगे। उनके नौकर-चाकर भी चन्द्र ज्योति और उत्सव का आनन्द लेने लगे। आसपास सभी जगह हलचल मच गयी। शम्भूराजा के कुछ सेवक वहाँ पर एकत्र लोगों को जलेबियाँ बाँटने लगे। हवेली के सामने पटाकों की आतिशबाजी चल रही थी। उसे देखने के लिए आसपास के सभी पहरेदार जमा हो गये। उसी समय पिछवाड़े के

रहस्यमय घर का दरवाजा लोहे की रिंच से ढीला किया जा रहा था और अब शम्भूराजा का विश्वस्त खानसामा जैमुद्दीन उस राजबन्दी की जगह पर खिड़की-दरवाजे बन्द करके बड़े मजे से अन्दर बैठा था।

आधी रात बीत गयी। चारों ओर सन्नाटा छा गया। इसी समय हवेली के तहखाने में छुपा हुआ मियाँखान शम्भूराजा के सामने आया। उसने दौड़कर शम्भूराजा के पैर पकड़ लिए। वह विह्वल होकर बोला, "बेटे, मेरी पुकार सुनकर आप के रूप में अल्लाह ही आ गया।"

"इसमें इतनी क्या बात है मियाँखान? अब तो मैं भी एक बेटी का पिता बन गया हूँ। इसलिए बेटी के बाप की पीड़ा...।"

"शम्भू महाराज आपके इस उपकार को जिन्दगी भर नहीं भूलूँगा।"

शम्भूराजा ने अपने सेवक को पहले से ही बुला रखा था। उसने कुछ ही क्षणों में मियाँखान के चेहरे का भार उतार दिया। बूढ़े सिंह की तरह दिखने वाले मियाँखान लल्लू जैसे विदूषक जैसा दिखने लगा। मियाँखान शम्भूराजा के सिपाहियों के साथ सीमा के बाहर जाने वाला था।

"खान साहब! वापस कब आओगे?"

"पाँचवीं रात खत्म होने से पहले ही अपने कैदखाने में वापस आ जाऊँगा।"

शम्भूराजा कुछ बोलने को तत्पर हुए। एक लम्बी साँस छोड़ करके बोले, "मियाँखान! बेटी के अभागे बाप के आँसू—उन आँसुओं का विश्वास करके ही हम यह जोखिम उठा रहे हैं। इसमें यदि किसी प्रकार की गड़बड़ी हुई तो एक राजबन्दी बिना किसी अधिकार के मुक्त कराने का इल्जाम मुझ पर लगाया जाएगा।"

शम्भूराजा के ऐसा कहने पर आसपास खड़े लोग स्तब्ध रह गये। मियाँखान का गला भर आया। वह हाथ जोड़कर बोला—

"शम्भूमहाराज! आपका विश्वास मैं टूटने नहीं दूँगा। वह महान अल्लाहताला यदि मुझे आपकी सेवा का अवसर दे दें तो मैं अपने कलेजे के टुकड़े काटकर आपके कदमों में रख दूँगा।"

धीरे-धीरे लोगों को पता चला कि पिछले कुछ दिनों से मियाँखान की तबीयत कुछ खराब चल रही है। इसीलिए बीच में कई दिन खिड़की में उनका चेहरा दिखाई नहीं पड़ा। भीतर कुछ खटपट करने की आवाज लोगों को बाहर सुनाई पड़ती थी। कुछ दिनों बाद मियाँखान की नियमित गतिविधियाँ आरम्भ हो गयीं। शम्भूराजा की दृष्टि उस पर रोज पड़ती थी। वह प्रात:काल और सन्ध्या समय शम्भूराजा की हवेली की ओर देखते हुए बड़े आदर से उन्हें बन्दगी करता था।

दो

शम्भूराजा को बहादुरगढ़ आये तीन महीने बीत चुके थे। वहाँ की लौह प्राचीर, अमीर-उमरावों से मिलने-जुलने की मनाही, उनके ऊपर होने वाली जासूसी आदि से युवराज स्वयं को बन्दी जैसा अनुभव करने लगे थे। अन्तर इतना ही था कि उनकी हवेली पर ताले नहीं लगाये जाते थे। युवराज के स्वाभिमानी मन ने अच्छी तरह समझ लिया कि वे बन्दीखाने में कैद हो गये हैं। दुर्गाबाई और राणूबाई भी व्यक्तिगत परिचारकों के अभाव में पूरी तरह ऊब गयीं थीं।

बूढ़ा दिलेरखान अभी भी उनसे मीठी-मीठी बातें करता था, मित्रता का नाटक करता था। वर्षों से प्रतिष्ठित मुगलों की रियासत, उनकी अनुशासित सेना, इस मैदानी प्रदेश पर वर्चस्व आदि के कारण शम्भूराजा की अपनी योजना के सफल होने के आसार दिखाई नहीं पड़ रहे थे। इसलिए वे निरन्तर अस्वस्थ होते जा रहे थे।

अभी भी बहादुरगढ़ किले पर मुक्त विचरण की सुविधा शम्भूराजा को नहीं थी। वे मुगल सेना की टुकड़ी के साथ भीमा नदी के तट पर, किले की प्राचीरों पर और कभी-कभी नदी की दुर्गम ढलान पर घूमते रहते थे। वहाँ नदी के किनारे चाँद बीबी द्वारा बनवाया गया एक सुन्दर महल था। उसके दूसरी ओर कुछ यादवकालीन मन्दिर थे। ये मन्दिर सुन्दर काले पत्थरों से बनाये गये थे। उनकी चारों दीवारों और गोल छत पर यक्ष और किन्नरों के अनेक चित्र उकेरे गये थे। बहादुरगढ़ के इस भाग्यशाली जंगल ने अनेक वर्षों की ऋतुओं को ही नहीं अनेक राजाओं के शासन और संस्कृति को भी देखा और पचाया था।

इस किले के पास ही भीमा नदी ने एक वलयांकित मोड लिया था। वहाँ से कोस-दो-कोस की दूरी पर नदी की विलक्षण गहराई से एक जलाशय बन गया था। उस जलाशय में इतना पानी था कि गर्मियों में भी लाखों सवारों, सिपाहियों और जानवरों के लिए पानी की कमी न होती। सम्भवत: इसी कारण अनेक राजा इस स्थान के प्रति सम्मोहित हुए। यवन शासकों ने नदी के किनारे दो तीन स्थानों पर हाथियों से चरस द्वारा पानी निकालने के लिए लगभग चालीस फीट ऊँची पउदरें बाँधी थीं। जिस प्रकार किसान अपने कुओं पर बैलों को बाँधते और खोलते हैं उसी तरह चमड़े की भारी चरस खींचने के लिए एक साथ चार-चार हाथियों को बाँधा जाता था। अपने गले में बँधी घंटियां की लय पर हाथी चरस खींचते थे।

आज शम्भूराजा की सवारी भीमा नदी के किनारे-किनारे चल रही थी। उन्होंने रास्ते में पत्थरों से बनी सतियों की छोटी-छोटी समाधियाँ देखीं और बड़े आदर से उन्हें प्रणाम किया। बहादुरगढ़ ने असंख्य चेतनामय जीवनों के साथ अनेक मृत्यु प्रसंग भी देखे थे। घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते शम्भूराजा ने दमड़ी मस्जिद को पार किया और बाले किले की सीमा के बाहर निकल गये।

पूर्व दिशा में कुछ दूरी पर सरस्वती नदी की धारा दिख रही थी। वह यहीं गाँव के परिसर में आकर भीमा नदी में मिलती थी। उसके किनारे पर भी हाथी द्वारा चरस खींचने की एक बड़ी पउदर बनी थी। सरस्वती नदी के किनारे-किनारे किले की तटबन्दी की गयी थी। बीचोंबीच मैदान फैला हुआ था।

आज धूप में दौड़ते-दौड़ते शम्भूराजा को अचानक मूर्छा का अनुभव हुआ। हाथी से चरस खींचने वाली पउदर की ढलान पर उन्होंने जामुन का झुरमुट देखा। वहाँ पर तटबन्दी की देख रेख के लिए एक उमगव ने उन्हीं जामुन के पेड़ों के बीच हरे रंग का एक अस्थायी शामियाना खड़ा किया था। शम्भूराजा घोड़े से उतरकर शामियाने में चले गये। वे बहुत थके हुए थे इसलिए वहाँ पर रखे गये एक बिस्तर पर लेट गये। लेटे लेटे उनकी दृष्टि सरस्वती नदी के पार विस्तृत मैदान पर पड़ी। वह हिस्सा 'खंडोबा का थान' नाम से जाना जाता था। शम्भूराजा की दृष्टि उस मैदान में खो गयी। उन्हें वहाँ पर एक विलक्षण मृग मरीचिका दिखाई देने लगी।

शम्भूराजा नींद में खो गये। अचानक उनके कानों पर हाथी-घोड़ों की इतनी तेज आवाज आयी मानो आसमान फट गया हो। एक जंगल का राजा शेर मुक्त हो गया था। सारे वातावरण में कोई आसमानी विपत्ति आ गयी थी। देखते-देखते नदी की उस तटबन्दी को जोर का धक्का लगा। तटबन्दी सामने वाले जलाशय में गिरने लगी। तटबन्दी पिघलने लगी। नदी का पानी काला काला और हरा-हरा दिखने लगा। एक प्राणी की दाढ़ी के आकार की अयाल जल की सतह पर दिखने लगी। वह विलक्षण प्राणी किले की प्राचीर पर उपहास करता हुआ हँस रहा था।

के तुरन्त बाद शम्भूराजा की आँखों के सामने एक बार फिर 'खंडोबा का थान' धूप में खड़ा हो गया। वहाँ पुनः मृगमरीचिका नाचने लगी। वह सूना-सूना मैदान था। उसके सुदूर कोनों से उठने वाली सतियों की चीखें कानों को बहरा बना रही थीं। फिर बैतालों का एक जुलूस उस मैदान में दिखायी पड़ने लगा। उसमें बाद्य बहुत बड़े थे और बजाने वाले बहुत छोटे, बीमार चिड़ियों जैसे या आवारा कुत्तों जैसे। पता नहीं किसका वह जुलूस है और किसकी पालकी। मैदान काँटों से भरा है, बाजे बजाने वालों के पाँव काँटों को रौंदते हुए खून से लथपथ हैं। ये कहाँ जा रहे हैं। शम्भूराजा आँखें फाड़ फाड़कर उन आकृतियो को पहचानने का प्रयत्न कर रहे

हैं, किन्तु आकृतियाँ धुँधली पड़ती जा रही हैं। मैदान की अदृश्य चीखें असह्य होती जा रही हैं।

क्या है यह भयानक सपना? शम्भूराजा का गला सूख रहा था। वे झट से बिस्तर से उठकर बैठ गये। दृष्टि के सामने खंडोबा का सूना सूना थान यथावत था। शम्भूराजा का सारा शरीर पसीने से तर हो गया था।

तीन

दक्खिन की सूबेदारी का अर्थ है एक बहुत ही कठिन कार्य। दिल्ली के बाद मुगल सत्ता का सही सिंहासन यही सूबेदारी थी। औरंगजेब स्वयं दो बार दक्षिण का सूबेदार रह चुका था। इसलिए यहाँ की सारी बारीकियाँ, यहाँ के टंटे बखेड़े, लाभ हानि आदि से भली भाँति परिचित था। दिलेरखान का अनुमान था कि विद्रोही शिवाजी के पुत्र को बहकाकर बहादुरगढ़ के पिंजरे में बन्द करने के समाचार से प्रसन्न होकर बादशाह औरंगजेब उसे पुरस्कार देगा किन्तु इसके बदले आलमगीर ने अपने शहजादे मुअज्जम को दक्खिन की ओर भेजा। इस समाचार ने दिलेरखान को बेचैन कर दिया था।

दिल्ली से एक साँड़िनी सवार सन्देश लेकर आ गया। दिलेरखान को लगा जैसे जिससे भोजन मिलने की अपेक्षा थी उसने माथे पर पत्थर मार दिया हो। आँखें फाड़ फाड़कर औरंगजेब के शब्दों को पढ़ते हुए उसका दम घुटने लगा।

"दिलेर! हमें खबर मिल रही है कि आप रोज उठते बैठते उस संभाजी के स्वागत में जूलूस निकालते हो। नाक से मोती बड़ा नहीं होना चाहिए। दुश्मन का बेटा अपनी फौज में आया है, उसका फायदा उठाओ। अपनी फौज में उसे ढाल बनाकर हमेशा आगे रखो। मराठों के प्रदेश पर आक्रमण करो। शत्रु को ज्यादा-से ज्यादा नुकसान पहुँचाओ।"

इनाम के बदले मिलने वाली कान खोलने वाली इस भाषा ने दिलेरखान को दुखी कर दिया। उसने अपने अनुभवी दीवान से परामर्श किया। उसके दीवान जियाखान ने हँसकर कहा—

"अजी हुजूर यह सन्देश लिखते समय बादशाह ने बहुत दिमाग लगाया है।"

"मतलब?"

"उसको एक ही पत्थर से दक्खिन में अनेक पक्षियों का शिकार करना है। आलमपनाह की इच्छा है कि आप शिवाजी, बीजापुर और गोलकोंडा पर आक्रमण करो और शिवाजी के बेटे को बगल में लेकर चारों दिशाओं में घूमो।"

दिलेरखान ने जियाखान से पूछा—"मौजूदा स्थिति में हम कहाँ जंग लड़ सकते हैं?"

"भूपालगढ़।"

"भूपालगढ़? कहाँ है यह?"

"बीजापुर के रास्ते में, बानूर गाँव के पास। जत के आसपास।"

"किसका किला?"

"मराठों के ही कब्जे में है। उस किले की तटबन्दी बहुत मजबूत है। उस किले का मराठा किलेदार भी फौलादी सीने वाला है। किन्तु यदि यह किला हाथ में आ जाए तो बीजापुर की नाक में नकेल डालना बहुत आसान हो जाएगा।"

दिलेरखान के दिमाग को अनेक पैर निकल आये। उसने तत्काल भूपालगढ़ के सम्बन्ध में छोटी से छोटी जानकारी इकट्ठी करनी आरम्भ कर दी।

एक समय चाकण के पास के किले में पचावन दिन तक निरन्तर लड़ते हुए बहादुर फिरंगोजी नरसाला ने शाइस्ताखान की नींद हराम कर दी थी। वही फिरंगोजी इस समय भूपालगढ़ का किलेदार था। विट्ठल भालेराव उसका कुशल सचिव था। दिलेरखान को सूचना मिल रही थी कि किले में बड़ी मात्रा में बारूद और अनाज रखा गया था। किले पर त्राणोबा अर्थात् महादेव का जागृत मन्दिर था। वहाँ के निवासियों का फिरंगोजी और महादेव पर अटूट विश्वास था।

बहादुरगढ़ में भूपालगढ़ पर आक्रमण की योजनायें बड़ी तेजी से निश्चित हो रही थीं। एक दिन सुबह सुबह बहादुरगढ़ के किले से घुड़सवारों की फौज बाहर जाने लगी। तोपों की गाड़ी के पहिये भी आवाज करते हुए चलने लगे। फौज के साथ जाने वाला बाजार तो भोर से सक्रिय हो गया था। वणिक, पानी ढोने वाले भिश्ती आदि सभी अपने घोड़ों और खच्चरों के साथ बाहर निकल रहे थे।

शम्भूराजा अपनी हवेली में चिन्ताग्रस्त बैठे थे। एक तो दिलेरखान ने इस लड़ाई के सम्बन्ध में उन्हें स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बताया था। दूसरे दो दिन पूर्व ही शृंगारपुर से कवि कलश और रायगढ़ से रानी येसूबाई के गोपनीय पत्र एक साथ उन्हें मिले थे। दोनों पत्रों में एक ही तरह के समाचार थे। "युवराज अब वहाँ खाली मत बैठिये। कुछ कीजिये। जब से आप यवनों से जाकर मिले हैं तब से यहाँ पर आपके विरोधियों ने आपकी बदनामी के कारखाने खोल लिये हैं। कुछ लोगों ने तो ऐसी अफवाह फैलायी है कि नेताजी फालकर की तरह शीघ्र ही इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले हैं। अपनी इच्छा पूरी करने में यदि भाग्य साथ नहीं दे रहा है, आपको अपनी वीरता दिखाने का अवसर नहीं मिल रहा है तो जो है कम से कम

उसकी रक्षा का तो प्रयास करो।" इन गोपनीय पत्रों से शम्भूराजा की स्थिति और भी नाजुक हो गयी थी।

फौज के बाहर निकलने के लिए नगाड़े बज रहे थे। समय बहुत कम था। इसलिए फौलादी टोप लगाये, फौजी के वेश में दिलेरखान स्वयं युवराज के महल में आया। शम्भूराजा की बन्दगी करके दिलेरखान ने कहा, "शहजादे! चलो तैयार हो जाओ। दो दिन में हमें भूपालगढ़ पहुँचना है।"

"वहाँ जाने की मेरी इच्छा नहीं है।" शम्भूराजा ने स्पष्ट शब्दों में नकार दिया।

"लेकिन बादशाह आलमगीर का ऐसा स्पष्ट आदेश है।"

"ऐसा क्या? कौन सा प्रदेश जीतना है और कौन सा नहीं, इसके लिए सीधे दिल्ली से आदेश आने लगे, फिर तो हो गया।"

दिलेरखान के मन पर बादशाह के आदेश की स्पष्ट छाप थी।

"मराठों का शाहजादा 'संभा' एक बहुत कीमती हीरा है। होशियारी से उससे ऐसा काम करा लो कि शिवाजी की बदनामी हो और हम यवनों का फायदा ही-फायदा।"

अपनी इच्छा के विरुद्ध शम्भूराजा को भूपालगढ़ की ओर कूच करना ही पड़ा। दो तीन दिनों में ही फौज ने भीमा का प्रदेश पार कर लिया। बारामती फलटण, माणदेश होते हुए भूपालगढ़ के समीप पहुँच गयी। दिलेरखान बड़ी सावधानी से कदम बढ़ा रहा था। चाकण के किले को बहुत थोड़ी सी फौज से जीतने वाला, औरंगजेब के मामा शाइस्ताखान के दाँत खट्टे करने वाला फिरंगोजी नरसाड़ा भूपालगढ़ का किलेदार था। दिलेरखान जानता था कि फिरंगोजी आसानी से हथियार डाल देने वाला नहीं है, वह बहादुरी से लड़ेगा। इसलिए आधीरात के समय उसने अपने फौजियों को जगह-जगह तैनात कर दिया। रात में उसने संभाजी से कहा—

"कहो अपने जात भाइयों से। उनसे कहो कि लड़ाई की बात भूलकर किला छोड़कर निकल जाओ।"

दिलेरखान की धूर्तता शम्भूराजा की समझ में आ रही थी। किन्तु कंटिया में फँसी मछली की तरह छूट भी नहीं पा रहे थे। जीवित रहने के लिए तड़पना मजबूरी थी। उन्होंने अपने विश्वसनीय दूत से किले पर खत भेजा था—"किला कमजोर है और दिलेरखान की फौज बहुत बलशाली है। लड़ाई लड़ने से कोई फायदा नहीं है। पिताजी की सेना की व्यर्थ तबाही मत करो। चुपचाप किला हमारे हवाले करके निकल जाओ।"

गढ़ के नीचे खाई में फौज की छावनी बनाई गयी थी। वहीं पर एक ओर दिलेरखान और उसके पास शम्भूराजा की छोलदारियाँ खड़ी की गयी थीं। सुबह होते ही किले से जवाब लेकर दूत वापस आया। युवराज ने 'फिरंगोजी' शब्द पढ़ा और बिना कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किये पत्र को दिलेरखान के हाथ में दे दिया।

"बिना लड़े ही किला छोड़कर हाथ झुलाते हुए चले जाने की रीति शिवाजी महाराज की सेना की नहीं है। यह रीति तो यवनों की है। शम्भूराजा यह बात आप अपने मित्र को समझाते क्यों नहीं?"

जवाब पढ़ते ही दिलेरखान लाल-पीला होने लगा और चीख कर बोला, "खत का उत्तर देने का यह क्या तरीका है?"

"खान साहब, एक स्वाभिमानी मराठा इसी स्वाभिमान से व्यवहार करेगा। क्या सभी लोग इस संभाजी की तरह व्यवहार करने वाले मिलेंगे?"

अपनी स्थिति को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते समय संभाजी के चेहरे पर विषाद
छा गया।

दिलेरखान ने अपनी काजल लगी आँखों की कोर से शम्भूराजा की ओर देखा। उन्हें मनाते से स्वर में बोला, "शहजादे, रायगढ़ की फालतू बातों को याद करके कितने दिन तड़पते रहोगे? मराठी राज्य के कानूनन वारिस होने पर भी रायगढ़ जाने की मनाही, पिताजी तुम्हें अपने साथ लड़ाई पर ले नहीं जाते, सौतेली माँ राजकार्य की ओर आने नहीं देती, तुम्हारी इज्जत का चिथड़ा करने वाले तुम्हारे मन्त्री और सरदार हमेशा तैयार खड़े हैं। अरे, ऐसा गैर वाजिब वर्ताव तो किसी दासीपुत्र के साथ भी नहीं किया जाता।"

"तो क्या आग से तपी हुई मिट्टी खाते-खाते हमें मरना है?" शम्भूराजा क्रुद्ध होकर बोले।

युवराज को समझाने के लिए दिलेरखान उनके समीप आ गया और उनका हाथ अपने हाथ में लेते हुए दुखी स्वर में बोला, "शहजादे, तुम्हारे विपत्ति के दिनों में हम तुम्हारी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे हैं और तुम दुश्मन की नजर से हमें ही आँख दिखा रहे हो?"

युवराज ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे चुप बैठे रहे। अब समय व्यर्थ गँवाने में कोई लाभ न समझकर दिलेरखान ने अपने शामियाने से बाहर आकर लड़ाई का आदेश सुना दिया। फिर क्या था! खाई से तोपों के गोले दगने लगे। कान फाड़ देने वाली तोपों की आवाजें आसपास की खाइयों में प्रतिध्वनित होने लगीं।

थोड़े ही समय में खान के गश्ती सैनिकों ने खान को एक एक खत लाकर दिया। यह खत फिरंगोजी ने शम्भूराजा के लिए लिखा था। किन्तु शम्भूराजा के पास

न पहुँचकर वह यवनों के हाथ लग गया।

"युवराज आप जैसे आये हैं उसी रास्ते से लौट जायँ। यदि आप किसी संकट में हैं तो हमें बतायें। आपको बचाने के लिए हम खून की नदियाँ बहा देंगे। तुरन्त बताएँ।" दिलेरखान द्वारा इस पत्र को शम्भूराजा के पास पहुँचाने का कोई प्रश्न ही नहीं था।

दिलेरखान अपनी जगह से ही बुर्ज के ऊपर लड़ रही फौज को देख रहा था। किले की तटबन्दी को ध्वस्त करने के लिए यवनों की तोपें तेजी मे बढ़ रही थीं। किन्तु मराठों की सेना भी प्रतिकार के नशे में उन्मत्त आगे बढ़ रही थी। सामने से हो रहे आक्रमण की बिना चिन्ता किये निरन्तर आगे बढ़ रही थी। मराठी सेना ने बुर्ज के ऊपर से पत्थरों, ढेलवासों, तीरों आदि की घनघोर वर्षा आरम्भ कर दी। मराठी द्वारा मुकाबले का ढंग देखकर दिलेरखान चकित ही नहीं हुआ, घबरा भी गया। उसने अपनी अगली पंक्ति की सेना को आदेश दिया—"जैसे भी सम्भव हो भूपालगढ़ की तटबन्दी को ध्वस्त करो। उसके बिना बूढ़ा फिरंगोजी हथियार नहीं डालेगा।"

खान के इस आदेश के अनुसार तोपों की नयी टोली छुपते हुए सामने वाले रास्ते पर चढ़ने लगी। किले के ऊपर से तीरों और पत्थरों की वर्षा लगातार हो रही थी। बेलदारी फौज लोहे की बड़ी बड़ी ढालें लेकर अपनी रक्षा कर रही थी।

एक हाथ से अपने को बचाते हुए और दूसरे हाथ से तटबन्दी में छेद करते हुए फौज आगे बढ़ रही थी। छेद में सुरंग बनाकर बारूद भरी जा रही थी। मजदूर शीघ्रता से कार्य समाप्त कर रहे थे। वे सुरंग में आग लगाकर शीघ्रता से दूर भागते थे। धड़-धड़ की तेज आवाज के साथ बारूद जलने लगी। उसके प्रभाव से बुर्ज में भी छिद्र होने लगे। तटबन्दी के कुछ पत्थर भी आड़े तिरछे गिरे किन्तु तटबन्दी की जिद्दी अभेद्य दीवार वैसे ही सिर उठाए खड़ी रही।

दोपहर के बाद संभाजी ने दूसरी ओर से सेना का नेतृत्व अपने हाथ में लिया। उन्होंने तटबन्दी की दीवार पर लम्बी-लम्बी सीढ़ियाँ लगवाई उन सीढ़ियों से यवन सेना तीव्र गति से किले पर चढ़ने लगी। किन्तु सामने से आने वाले तोप के गोलों से अनेक सैनिक जलकर खाक हो गये। कुछ सैनिक गोलों से जलकर कागज के चिथड़ों जैसे झुलसकर नीचे गिर गये। अनेक सैनिकों को मराठों ने अपने तीरों से घायल कर दिया। अन्त में एक बुर्ज ने मुगलों की सेना को मार्ग दिखाया। फिरंगोजी ने किला बचाने के लिए जान की बाजी लगा दी। किन्तु संभाजी राजा और दिलेरखान के भीषण आक्रमण के सामने मराठों को पराजय स्वीकार करनी पड़ी। किले को हाथ से जाते देखकर बहुत से मराठी सैनिक भाग गये। जो बचे वे बन्दी बना लिए गये।

सूर्यास्त हो चला। खून से लथपथ भूपालगढ़ अँधेरे की चादर में अपने जख्मों को छुपाने की कोशिश करने लगा। शम्भूराज और दिलेरखान अपनी छावनी के

सामने खुले मैदान में चारपाई डालकर बैठे थे। शानदार शामियाने के भीतर दीप जल रहे थे। मशालची मशाल लेकर इधर उधर घूम रहे थे। इसी समय किले से उतरते हुए सात सौ मराठों का एक दल आया। उन सभी के हाथ पीछे पीठ पर बँधे थे। बाहर ठंडी हवा चल रही थी। शम्भूराजा के सामने उन मराठा कैदियों को दूसरी जगह स्थानान्तरित किया जा रहा था। युवराज को देखते ही मराठों का वह दल रुक गया। शम्भूराजा मराठा सैनिकों के सामने गये। उनमें से अनेक सैनिक युवराज को पहचानते थे। कुछ आश्चर्य से तो कुछ क्रोध मे शम्भूराजा को आँखें दिखा रहे थे। वे अपनी ऐंठी हुई खिचड़ी मूछों और लाल लाल आँखों से शम्भूराजा का पूरा शरीर जला रहे थे।

कुछ सैनिकों ने अपनी गर्दनें नीचे झुकाकर शम्भूराजा का अभिवादन किया। स्वराज्य की इस दौलत को देखकर शम्भूराजा का मन भर आया। उन्होंने दिलेरखान से पूछा—"खान साहब इन कैदियों को कहाँ भेज रहे हो?"

"इन्हें बहादुरगढ़ के जेलखाने में भेज रहे हैं।"

"खान साहब, याद रखिएगा, बन्दी बनाने के अतिरिक्त इन्हें और कोई सजा नहीं होनी चाहिए।" युवराज ने आदेश दिया।

दूसरे दिन सुबह युवराज की नींद लोहे के फावड़ों की आवाजों से खुली। युवराज को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। दिलेरखान ने मजदूरों की कई टोलियाँ लगाई थीं। इन मजदूरों से वह भूपालगढ़ की तटबन्धी की दीवार तुड़वा रहा था। युवराज उसकी मूर्खता को देखकर चकरा गये। वे उठकर सीधे दिलेरखान के शामियाने में चले गये। शामियाने की खिड़की से ऊपर की ओर इशारा करते हुए वे बोले, "खानसाहब यह क्या चला रखा है? एक बार किला हाथ लगने पर वहाँ शासन करने की बजाय उसे श्मशान बनाने का यह क्या तरीका है?"

दिलेरखान उपहास करते हुए बोला, " वैसे यहाँ किला बनाये रखने से चलेगा भी नहीं। अपनी बंजर जमीन पर किला देखकर कुनबी जाति के बच्चे राजा बनने का ख्वाब देखने लगते हैं।"

इन अपमानजनक शब्दों को सुनकर शम्भूराजा को क्रोध आ गया।

माहुली के पास कृष्णा नदी को पार करके मुगलों के क्षेत्र में पहुँचने के समय से ही अपशकुन सूचक घटनाएँ घटने लगी थीं।

युवराज अपने कुछ सहयोगियों के साथ गढ़ पर बाणोबा का दर्शन करने के लिए निकले। साथ में दुर्गाबाई और राणूबाई की पालकियाँ भी थीं। चढ़ाई पर घोड़े बिना सवारी के चल रहे थे। शम्भूराजा के पैर योंही पत्थरों से टकरा रहे थे। पीछे तटबन्दी तोड़ने वाले गहदालों और कुदालों की आवाज आ रही थी। पिछली सात पीढ़ियों के पुण्य के प्रभाव से शिवाजी महाराज ने राज्य का निर्माण किया। हम कहीं

उसकी तटबन्दी तो नहीं तोड़ रहे हैं। इस कल्पना से युवराज का सिर चकरा रहा था।

बीच रास्ते में एक काजी साहब मिले। युवराज को सलाम करते हुए बोले, "बादशाह औरंगजेब अगले हफ्ते से गैर मुसलमानों पर जजिया कर लगाने वाला है। ऐसी अनीति औरंगजेब के बाप तो क्या उसके दादा ने भी नहीं की थी।"

चलते-चलते शम्भूराजा स्वयं से ही बोले, "लगता है काजी के रूप में यह समाचार बाणोबा ही दे रहे हैं। हिन्दू प्रजा पर जजिया जैसा अमानवीय कर लगाने वाला औरंगजेब हमें क्या न्याय देगा?"

समय बहुत बुरा आ रहा है। यह सोचते हुए शम्भूराजा बाणोबा के शीतल गर्भगृह में पहुँच गये। भगवान के चरणों पर सिर रखकर वे बहुत समय तक बैठे रहे।

राणूबाई ने इक्कीस नारियल की माला और अपने गले का सोने का हार बाणोबा की पिंडी पर चढ़ाया। पुजारी ने उन्हें मंगल आशीर्वाद दिया। राणूबाई बड़ी व्यग्रता से पुजारी से बोलीं, "गुरुजी वचन दीजिए कि इस बार हमारे युवराज को पुत्र ही होगा।" मन्नत के फल जानने के लिए राणूबाई पुजारी से आग्रह कर रही थीं। राणूबाई की बात सुनते ही दुर्गाबाई के चेहरे पर वसन्त की बहार आ गयी। वे मुस्करा पड़ीं। शम्भूराजा आश्चर्य से दोनों की ओर देखने लगे। वे सोचने लगे कि इस भागदौड़ में यह मधुर भार उठाकर किस तरह और कितना दौड़ा जा सकता है।

संभाजी राजा के मन की शान्ति अधिक समय तक नहीं टिक सकी। वे वहाँ विश्राम कर रहे थे। इसी समय उनके चार विश्वस्त सेवक दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे। वे अत्यधिक डरे और सहमे हुए थे—'युवराजऽ युवराजऽऽ' कहते हुए वे मर्मभेदी दहाड़ें मार रहे थे। उनकी आवाज सुनकर शम्भूराजा तेजी से उठे। उन्हें विश्वास हो गया कि कोई बड़ा धोखा हो गया है। उन्होंने अधीरता से कहा, "बोलो बोलो! कहो क्या हो गया?"

"महाराज, बहुत अन्याय हो गया। बहुत अन्याय हो गया।" उनमें से एक बोला।

दूसरा अत्यन्त भयभीत स्वर में कहने लगा—"कल किले पर बन्दी बनाये सात सौ मराठा सैनिक, जिन्हें नीचे ले जाया गया था. ।"

"अरे क्या हुआ उन्हें?" युवराज की साँस फूलने लगी।

"अब कैसे बतायें महाराज?" उन सेवकों की आँखों से धारासार आँसू बहने लगे। दहाड़ें मारते हुए एक बोला, "युवराज, उन दुष्टों ने सात सौ में से आधे सैनिकों के एक-एक हाथ काटकर अपाहिज बना दिया और बचे हुए आधे सैनिकों के एक-एक पैर काटकर उन्हें लँगड़ा बना दिया। इनसानों की तो क्या ऐसी दुर्गति

तो जानवरों की भी किसी ने नहीं की होगी।"

यह भयंकर समाचार सुनते ही संभाजी राजा की क्रोधाग्नि धधक उठी। उनके सिर के नरम रेशमी बाल खड़े हो गये; हथेलियों की मुट्ठी बँध गयी। वे क्रोध से दाँत पीसने लगे। मन्दिर के बाहर ही युवराज का घोड़ा खड़ा था। वे शीघ्रता से घोड़े के पास पहुँचे और उसकी पीठ पर अपना मर्दाना हाथ रखा। पीठ का आधार देकर वे उछलकर घोड़े की पीठ पर सवार हो गये। किले के पिछवाड़े से पत्थरों और खड्ढों के बीच से उन्होंने घोड़े को दौड़ाया। पीछे से दूसरे घुड़सवार जोर जोर से चिल्ला रहे थे—"युवराज रुक जाओ, गड़बड़ मत करो घोड़ा गिर जाएगा, रुक जाओ।" किन्तु युवराज के पागलमन को कोई भी आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। देखते देखते खड्ढों भरी वह ऊबड़ खाबड़ ढलान घोड़े ने पार कर ली। पसीने से लथपथ घोड़ा दिलेरखान के शामियाने के सामने आकर रुका।

शम्भूराजा के उस आश्चर्यजनक रूप को मुगल सरदार देखते ही रह गये। घोड़े के चारों पैर खून से भीग रहे थे, शम्भूराजा की आँखों से लाल अंगारे फूट रहे थे। वे घोड़े पर से छलाँग लगा कर जमीन पर उतरे। जोर की गर्जना के साथ उन्होंने आवाज दी—"कहाँ है वह हरामखोर बुड्ढा दिलेरखान?"

दिलेरखान ने जब शम्भूराजा को किले की ढलान से उतरते देखा था तभी आने वाले भयानक संकट की आहट उसे मिल गयी थी। दिलेरखान की छावनी के चारों ओर दो हजार सशस्त्र सैनिकों का घेरा था। खेत के मेड़ में छिपे चूहे की तरह खान अन्दर छुप गया। क्रुद्ध शम्भूराजा का सामना करने की हिम्मत उसमें नहीं थी।

"डरपोक बुड्ढेऽऽ बाहर निकल।" शम्भूराजा बहुत देर तक पुकारते रहे।

कुछ समय बाद ऊपर की लहरें तो शान्त हो गयीं लेकिन समुद्र का भीतरी हिस्सा अभी अशान्त बना हुआ था। उन्होंने सामने खड़े सैनिकों से दिलेरखान के लिए सन्देश भेजा—

"जाओ, कहो अपने बुड्ढे दिलेरखान से कि एक संभाजी मुगलों से आ मिला तो क्या हुआ, शिवाजी महाराज अभी समाप्त नहीं हुए हैं और समाप्त होंगे भी नहीं।"

रात में शम्भूराजा को भयंकर बेचैनी रही। कुहनी से कटे हाथ और घुटने से कटे पाँव वाले मराठे सैनिक उनकी आँखों के सामने बार-बार आते थे। जिस क्रोधित और अपमानित नजर से वे शम्भूराजा की ओर देख रहे थे उससे शम्भूराजा उद्विग्न हो गये थे। उनका सिर फटा जा रहा था। उनकी इस बेचैन दशा को देखकर दुर्गाबाई और राणूबाई आधी रात के बाद भी उनके पलँग के पास बैठी रहीं। मस्तिष्क की भयानक पीड़ा शान्त होने का नाम नहीं ले रही थी। शम्भूराजा तेजी से उठे और कोने में पड़ा बाटे का पत्थर हाथ से उठा लिया। राणूबाइ को अपने भाई के

असीम क्रोध का अन्दाजा हो गया। उन्होंने दौड़कर पीछे से शम्भूराजा को बाँहों में भर लिया। दूसरे सैनिक भी उनकी मदद के लिए दौड़ पड़े। सभी मिलकर शम्भूराजा को सँभालने का प्रयत्न करने लगे। तब शम्भूराजा जोर से चिल्लाये—"छोड़ो-छोड़ो, दीदीजी हमें छोड़ दो।"

"क्या कर रहे हैं, युवराज?"

शम्भूराजा अपना सिर पीटते हुए बोले—"रानू दीदी इस खाई में शिवाजी के पुत्र इस संभाजी के रहते हुए उस पार थोड़ी दूरी पर, सात सौ मराठों के हाथ-पैर तोड़े जाते हैं और ऐसे अमानवीय कृत्य को हम रोक नहीं पाये तो मेरे इन हाथों का क्या उपयोग है? आप रुकिए मुझे अपने इन हाथों को ही तोड़कर प्रायश्चित करने दीजिए।"

"युवराज धैर्य रखिए, अपने को सँभालिए।" दुर्गाबाई ने हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा।

शम्भूराजा ने अपनी पूरी शक्ति से जोर का धक्का दिया। परिणामस्वरूप उन्हें पकड़कर रोकने वाले सेवक बगल में जा गिरे। यह देखते ही राणूबाई दौड़कर शम्भूराजा के पैरों में गिर पड़ी। शम्भूराजा का हाथ अपने हाथ में लेकर दहाड़ मारकर रोते हुए बोलीं, "शम्भूराजा, आज तुम अपना हाथ खो दोगे तो कल हमारा क्या होगा? पिताजी के बाद वह दुष्ट औरंगजेब हमारे देश पर आक्रमण करेगा तो उसके घोड़े के पैर को काट देने की शक्ति तुम्हारे अतिरिक्त और किसी में है क्या?"

राणूबाई की चीत्कार और व्याकुलता से शम्भूराजा के हाथ का बाटे का पत्थर नीचे गिर गया। सामने शामियाने के बीच का खम्भा था। शम्भूराजा ने उसी को बाँहों में भर लिया। जिस प्रकार भन्नाया हुआ हाथी अपने मस्तक ज्वर को शान्त करने के लिए पत्थर पर अपना माथा पटकता है, उसी तरह शम्भूराजा भी खम्भे पर अपना सिर पटकने लगे। आँखों से लगातार गिरते गर्म आँसुओं को पोंछते हुए वे बोले—"पिताजी बहुत बड़ी भूल की है मैंने, बहुत बड़ी गलती।"

चार

सिंह की नाक पर यदि किसी चूहे ने ज़रा-सी भी खरोंच की तो वनराज क्रोध से

पागल हो उठता है। शम्भूराजा बहुत ही स्वाभिमानी, भावुक और संवेदनशील थे। उनकी आयु भी अभी कुल बीस वर्ष थी। इसलिए शरीर का रक्त स्वभावत: गर्म था। दूसरी ओर मुगल सरदारों ने सात सौ मराठी सैनिकों के हाथ-पैर काट दिए थे। इस पर गर्म खून वाले, स्वाभिमानी युवराज के क्रोध की कल्पना से ही दिलेरखान अत्यधिक बेचैन हो रहा था। सबसे अधिक उसको यह चिन्ता सता रही थी कि यदि यह सिंह का बच्चा क्रुद्ध होकर चला गया तो उसकी अपनी इज्जत का क्या होगा।

भूपालगढ़ की बगल में ही सेना ठहर गयी थी। शम्भूराजा तीन दिन तक अपनी छावनी से बाहर नहीं निकले। वे भोजन का स्पर्श तक नहीं कर रहे थे। पूरे दिन में केवल आधा गिलास दूध लेते थे। पूरे समय छावनी के मन्दिर के सामने पागल की तरह बैठे रहते थे। उनकी वह दशा देखकर पत्नी दुर्गाबाई और बहन गणूबाई दोनों भयभीत हो गयीं। ये सारे समाचार दिलेरखान को लगातार मिल रहे थे। शम्भूराजा की बिगड़ती स्थिति से दुर्गाबाई को भी ज्वर आने लगा। मौके का फायदा उठाने के लिए दिलेरखान ने अपने खास वैद्य और हकीम को युवराज की छावनी में भेजना आरम्भ किया। पीछे पीछे मिठाइयों और फलों को टोकरियाँ भी जाने लगीं। हकीमों के माध्यम से चाटुकारिता भी आरम्भ हुई। बताया गया कि मराठी सैनिकों के हाथ पैर काटने की सजा दिलेरखान ने दी ही नहीं थी। बल्कि बिना कोई सूचना दिये उनके भतीजे गैरतखान ने यह अमानवीय जुर्म कर दिया था।

इसी अवस्था में चार दिन बीत गये। क्रुद्ध सागर कुछ शान्त हुआ। क्रोध की नदी की बाढ़ कुछ उतर गयी। दिलेरखान को इस आंशिक परिवर्तन का अन्दाजा हो गया। वह चोर की तरह धीरे से शम्भूराजा की छावनी में प्रविष्ट हुआ। उनके सिरहाने दयनीय भाव से बैठ गया। अपनी आँखें गीली होने का नाटक करते हुए वह व्यग्रतापूर्वक युवराज से बोला—"युवराज जो हुआ वह बहुत बुरा हुआ। हमारा गैरतखान कहाँ गायब हो गया है कुछ पता नहीं लेकिन उसको फाँसी को सजा देने के लिए मैंने आलमगीर से सिफारिश की है।"

"गैरत की फाँसी से ऐसा क्या फर्क पड़ने वाला है? किन्तु खान साहब एक पैर से लँगड़े और एक हाथ से लूले बन गये ये अभागे मराठी सैनिक जब स्वराज्य में वापस जाएँगे। तब इन्हें देखकर छोटे छोटे बच्चे भी मेरे मुँह में गोबर भरने के लिए तैयार हो जाएँगे। यदि प्रजा मुझसे पूछे कि फौज के समीप शिवाजी के पुत्र के रहते हुए इस प्रकार का अमानवीय जुर्म कैसे हुआ? तो हम क्या उत्तर देंगे?"

दिलेरखान ने सोचा कि ऐसी कुशाग्र बुद्धि वाले शम्भूराजा के क्रोध को शान्त करने के लिए कोई ठोस उपाय करना पड़ेगा। उसने पहले ही एक ग्रुप प्रस्ताव औरंगजेब के पास भेज दिया था। इसका स्मरण उसे यकाएक हो आया। उसने जियाखान को अपने शामियाने में तुरन्त बुलवाया।

पत्र की नयी इबारत बोली—"आलमपनाह, संभाजी ही मराठा का असली राजा है। वही शाहंशाह है। एक बार ऐसा ऐलान पूरे हिन्दुस्तान में करवा दें। शिवाजी की फौज में संभाजी को चाहने वाले लोग बड़ी संख्या में हैं उन लोगों को यदि आपका संरक्षण मिला तो संभाजी खुश हो जाएगा। बाप बेटे में एक बार झगड़ा शुरू हो गया तो अपने आप ही उग्र होता जाएगा। इस तरह मराठों में आपसी दरार पड़ेगी। एक बार इस दरार से यह प्रदेश बिखर गया तो उसकी तबाही करने में हमें कितना समय लगेगा!"

जियाखान ने इस सिफारिश को नमक मिर्च लगाकर शम्भूराजा को सुनाया। किन्तु युवराज ने अपनी कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। वे अच्छी तरह समझ रहे थे कि शिवाजी महाराज के विरुद्ध भड़काने का यह षड्यन्त्र था। भूपालगढ़ के पास किये गये दिलेरखान के कुकृत्य का गहरा डर युवराज के मन में बैठ गया था।

एक दिन दिलेरखान क्रुद्ध मुद्रा में युवराज के शामियाने में आया। उसके गुप्तचरों ने शिवाजी महाराज का एक पत्र प्राप्त कर लिया था। वह पत्र शम्भूराजा के सामने करते हुए दिलेरखान क्रुद्ध होकर युवराज से बोला "शिवाजी की अपने बच्चे के साथ व्यवहार करने की यह कैसी रीति है?

"क्यों? क्या गलत कर दिया हमारे पिताजी ने?" शम्भूराजा ने प्रतिप्रश्न किया।

"पढ़ो! पढ़ो न इस पत्र को। क्या आदेश दे रहे है वे किले के सुरक्षाकर्मिया को। संभाजी ने आक्रमण किया है तो शान्त मत बैठो। हर किले पर, किले के हर बुर्ज पर, तटबन्दी पर गोले दागो। अन्तिम समय तक किले को बचाने के लिए लड़ो। संभाजी राजा को हमारा बेटा मानकर किसी प्रकार का लिहाज मत करो। सुन लिया न आपने जन्मदाता की बात?"

दिलेरखान के इस क्रोध पर शम्भूराजा खिन्नता से हँसे और बोले, "मेरे पिताजी ऐसा फरमान न निकालते तो और क्या करते? अपना बेटा शत्रु की फौज में जाकर मिल गया तो क्या प्रसन्न होकर उसके गले में रत्नों का हार पहनाएँ?"

युवराज की इस प्रतिक्रिया पर दिलेरखान की जबान को ताला लग गया। चालाक और धूर्त दिलेरखान समझ गया कि शम्भूराजा की मनोदशा अब पहले जैसी नहीं रही। मुगल सेना में वे बहुत बेचैन थे। उसी रात जगकर दिलेरखान ने बादशाह के पास आधी रात को एक सन्देश भेजा।

"जहाँपनाह मेहरबानी करो। संभाजी को शाहंशाह बनाने की शाही मंजूरी शीघ्र दीजिए। सल्तनत में इस तरह का फतवा जारी कीजिए। अपने एक पत्र से बाप-बेटे में भारी बखेड़ा खड़ा हो जाएगा। मराठों की सल्तनत टुकड़ों में बँट जाएगी।"

दिलेरखान शाही जवाब की व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु उसे उधर

से कोई जवाब नहीं मिला। दिलेरखान निश्चित नहीं कर पा रहा था कि संभाजी का क्या किया जाय। उसकी बेचैनी और उतावली उमराव जियाखान समीप से देख रहा था। मौका देखकर उसने दिलेरखान से कहा, "खानसाहब वक्त बरबाद मत करो। संभाजी आजकल उन्मत्त हो गया है। उसको तुरन्त गिरफ्तार करो। तुमको बहुत बड़ा इनाम मिलेगा। आलमगीर मेहरबान तो दिलेरखान दिल्ली का दीवान।"

"बेवकूफ इसका मतलब तो यह है कि तुमने अभी तक अपने आलमगीर को पहचाना ही नहीं है।" दिलेरखान हँसते हुए कहने लगा—"आलमगीर की तकदीर बहुत बड़ी है। उत्तर के सारे दुश्मन समाप्त हो गये। संभाजी और शिवाजी भी समाप्त हो जाएँगे तो औरंगजेब इतना उन्मत्त हो जाएगा कि अपने जैसे सेवकों की अवस्था कुत्ते बिल्ली जैसी हो जाएगी।"

"फिर करना क्या है?"

"बस बेटे इतना ही! न साँप को मरने देना है, न लाठी को टूटने देना है। इतने से ही तेरे मेरे जैसे दरबारी गरूड़ों का पेट भरता रहेगा वरना कौन पूछता है अपने को?"

एक दिन शाम के समय दिलेरखान बाहर निकला। आसमान में अँधेरा छाने लगा था। दिलेरखान के आगे पीछे रक्षकों के घोड़े दौड़ रहे थे। दिलेरखान का दल सामने वाली पहाड़ी को पार करके उस पार के मैदान में गया। वहाँ उसे खाई में एक मजबूत कद काठी का आदमी खड़ा दिखाई दिया। उस धुँधली आकृति के आसपास कुछ अंगरक्षक भी खड़े दिखाई दिये। दिलेरखान ने सशंक स्वर में जियाखान से पूछा—"अरे वहाँ कौन है? अपने शम्भू शहजादे ही हैं न?"

"जी, खान साहब।"

"इस अँधेरे में वे क्या कर रहे हैं?"

"खान साहब आप इस जगह को भूल गये क्या? यहीं पर तो तुम्हारे हुक्म से पन्द्रह दिन पहले सात सौ मराठों के हाथ पैर काट लिये गये थे। यह संभाजी उस जगह पर कभी दिन निकलने से पहले कभी शाम को या रात बेगत आकर घंटों रुका रहता है। वहाँ की मिट्टी हाथ में लेकर छोटे बच्चे की तरह रोता है और बड़बड़ाता है।"

"पागल शायर।" दिलेरखान धीमी आवाज में खुद से ही बोला, "शायर है और शेर भी है। इसीलिए इस संभाजी से मुझे कभी कभी भय लगता है।"

दिलेरखान अपनी छावनी में वापस आ गया। आते ही अपने दीवानों से वह धीमे स्वर में बोला—"शैतानों के क़ब्ज़े में आयी इस जगह को जल्दी से छोड़कर हम बाहर निकल चलें तो ठीक है। नहीं तो संभाजी यहाँ रहकर पागल हो जाएगा। किसी दूसरे काम की ओर उसका ध्यान आकर्षित करना होगा।"

दिलेरखान बेचैन था। औरंगजेब की इच्छानुसार आजकल वह बीजापुर की राजनीति में कुछ अधिक ध्यान देने लगा था। बीजापुर की पहले वाली प्रतिष्ठा समाप्त हो चुकी थी। डूब रही आदिलशाही को जीवन दान देने का प्रयास शिवाजी महाराज कर रहे थे। किन्तु दरबार के कुछ सरदारों को रिश्वत की बड़ी-बड़ी गठरियाँ भेजकर अथवा आश्वासनों की खंगत बाँटकर दिलेरखान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। बीजापुर के बहुत से नग्दार मुगलों के पक्षधर बन रहे थे। सर्जाखान जैसी बड़ी मछली जब दिलेरखान के काँटे में फँस गयी तो सभी को घोर आश्चर्य हुआ।

इसी समय एक दिन दिल्ली से दिलेरखान के मित्र का एक अति आवश्यक सन्देश आया। उसमें कहा गया था—"दिलेर इसके बाद संभाजी को राजा बनाने की सिफारिश बादशाह को कभी नहीं भेजना। तुम्हारी उस सिफारिश से औरंगजेब के दिमाग पर सन्देह का भूत सवार हो गया है। दिलेरखान उस मूर्ख संभाजी की इतनी तारीफ क्यों करता है? उन दोनों की मित्रता तो नहीं हो गयी है? दिलेरखान छुपकर कहीं मराठों से मिल तो नहीं गया है? संभाजी और दिलेर दोनों मिलकर भागानगर की नौकरी तो नहीं करने वाले हैं? इसी की अनेक आशंकाओं के भूत आलमगीर को पागल बना रहे हैं।

दूसरे ही दिन दिलेरखान प्रसन्न मुद्रा में संभाजी राजा के शामियाने में पहुँचा। दोस्ती का हाथ बढ़ाते हुए बोला, "शम्भू शहजादे, आप को क्या लगता है कि हम सिर्फ मराठों के प्रदेश पर आक्रमण करते हैं, सिर्फ उनको ही जलाते हैं? चलो तैयारी करो हम बीजापुर पर हमला करेंगे। मैं आपको दिखा दूँगा कि यह दिलेरखान इस्लामी प्रदेश को भी किस प्रकार नष्ट करता है?"

पाँच

एक रात को किसी गुप्तचर के पैरों की आहट शम्भूराजा के डेरे के पास सुनाई पड़ी। रायगढ़ से अनेक वेश बदलता हुआ यह गुप्तचर लाखों के मोल का यह पत्र लेकर शम्भू महाराज के पास आया था। शम्भू महाराज ने काँपते हाथों मे वह लिफाफा पकड़ा। उस पर लगी मुहर को आँख भर देखा।

प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्व वंदिता।
शाहसूनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते।।

शम्भू महाराज ने अपनी डबडबाई आँखों को पोंछा और अपनी भावनाओं के आवेग की दबाते हुए पुन: पत्र पढ़ने का प्रयास करने लगे।

क्षत्रिय कुलावतंस महाराज शिवाजी प्रति युवराज शम्भूमहाराज दडवत प्रणाम।

जैसे सूखे काष्ठ में कीड़ा घुसकर उसे चालता है उसी प्रकार आपकी चिन्ता ने हमारे दिमाग को खोखला कर दिया है।

"शृंगारपुर के केशव पंडित से जिस समय आप रामायण पढ़ रहे थे, उसका अर्थ समझ रहे थे, उस समय आपने क्या सीखा? दशरथ जैसे अपने पिता के आदेश का पालन करने के लिए, भरे पूरे राज्य को लात मारकर प्रभु रामचन्द्र निकल गये, वनवासी बन गये। और आपने हमारे करोड़ों मुद्राओं के स्वराज्य को ठुकराया है। हमसे रुष्ट होकर शत्रु के खेमे में जाने की भूल की है। लाभ हानि का कोई विचार किये बिना आप रुष्ट होकर शत्रु के प्रदेश में चले गये। आपका यह दुर्भाग्यपूर्ण वियोग हमें निरन्तर जला रहा है। आज कल भूपालगढ़ में होने वाले अत्याचारों की कहानी सुन रहा हूँ। इस घटना से हमारी आँखों में आँसुओं की जगह खून उतर आया है। यहाँ के प्रतिष्ठित ओहदेदार जब विदेशी शासकों की सेवा का गोबर उठाने में स्वयं को धन्य समझ रहे थे, तब जंगल खाई के किसी तानाजी, किसी मुरारबाजी जैसे अनेक परिश्रमी हाथों का साथ लेकर मैंने स्वराज्य का यह मन्दिर खड़ा किया। उन्हीं हाथों को दुश्मनों द्वारा संभाजी राजा की आँखों के सामने काट दिया जाय तो इस दुर्भाग्य की क्या कहें? ठीक है आपके मन का दु:ख भी हम जानते हैं। आपके प्रति ईर्ष्या रखने वाली आँखें हमारे राज्य में कम नहीं हैं। किन्तु यदि आपको लगता है कि हम केवल उन्हीं के हाथ का पानी पीते हैं, तो यह झूठ है। आपसे ईर्ष्या करने वाले लोगों की अपेक्षा ईमानदारी से आपके लिए जान निछावर करने वाले लोगों की संख्या हमारे राज्य और हमारी फौज में ज्यादा है। एक सिहासनासीन राजा और एक उदार पिता होकर मैं इस तथ्य को कैसे झुठला सकता हूँ। जो हो गया सो हो गया। रूठना भूलकर उस नर्क से जल्दी बाहर निकलो। जैसे कृष्ण के चले जाने के बाद गोकुल के बाल-बच्चे, स्त्री पुरुष, पशु-पक्षी, वन बाग, गाय बैल दु:ख से पागल हो गये थे, वही दशा यहाँ पर आपसे प्रेम करने वालों की हुई है। इस राजा शिवाजी के साथ महाराष्ट्र के साधु संन्यासी, देवी देवता आपका पन्थ निहार रहे हैं। आओ युवराज! शीघ्रातिशीघ्र स्वराज्य में वापस आ जाओ। भबिष्य का दु:ख गोवर्धन आपको उठाना है।"

"मगर के मुँह से सुरक्षित वापस निकलना आपके लिए बहुत कठिन होगा, इसे हम जानते हैं। किन्तु चिन्ता न करें। हम सावधान हैं। बीजापुर वालों के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे हो गये हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे भी आपकी सहायता के

लिए दौड़े आएँगे। शम्भू बेटे चिन्ता मत करो। दूर मत रहो। पत्र समाप्त करता हूँ।"

शिवाजी महाराज ने इन भाव भरे शब्दों से शम्भूमहाराज के हृदय को जीत लिया। जिस प्रकार कोई छोटा बच्चा आरम्भिक अवस्था में अपनी लिखी इबारत माता-पिता को उत्साह के साथ दिखाता है, उसी प्रकार संभाजी शिवाजी महाराज के पत्र को दुर्गाबाई और गणूबाई को दिखा रहे थे। पिता के इस पत्र से मन को कितनी शान्ति मिली थी। अब उन पर एक ही धुन सवार थी कि दिलेरखाँ के व्यूह से किस प्रकार बाहर निकले?

स्वराज्य का हर समाचार किसी न किसी के माध्यम से शम्भूराजा के कानों तक पहुँच जाता था। बीजापुर का आदिलशाही शासन विनाश की देहरी पर पहुँच चुका था। बीजापुर के प्रधान दीवान मसूदखान ने शिवाजी महाराज को पत्र लिखा था— "मुगलों की फौज से हमारे बीजापुर राज्य को बचाइए।" शिवाजी महाराज भी इस अवसर का लाभ उठा रहे थे। इसी निमित्त से दक्षिण में मुगलों के विरुद्ध एक बड़ी साजिश रची जा रही थी। मुगलों के आक्रमण के साथ ही बीजापुर की प्रजा घोर अकाल का संकट झेल रही थी। भोजन और चारे की कमी के कारण आदमी और पशु क्षीण होते जा रहे थे। इसीलिए बीजापुर की प्रजा की सहायता के लिए शिवाजी महाराज ने तत्परता दिखाई। दो हजार बैलों की पीठ पर अनाज की गोनियाँ लादकर उन्होंने प्रजा की ठोस सहायता के लिए बीजापुर भेजा। संभाजी राजा बार बार अनुभव कर रहे थे कि इस भाग दौड़ के समय में उन्हें स्वराज्य में होना चाहिए था। किन्तु उन्हें यह चिन्ता सता रही थी कि घड़ियाल के जबड़े से अपने परिवार के काफिले के साथ कैसे निकलें? उसी बीच एक दिन सेनापति हंबीरराव मोहिते का सन्देश आया। उन्होंने कहा था, "युवराज! हमने बहुत बहादुर सैनिकों को आपके पास भेजा है। वे अथणी के आसपास जंगलों में घूम रह हैं। उनकी सहायता लीजिए और शीघ्रतिशीघ्र स्वराज्य में वापस आ जाइए।"

यह सूचना शम्भूमहाराज को बहुत अच्छी लगी। शम्भूमहाराज और दिलेरखान दोनों ही नियति के जटिल फन्दे में फँस गये थे। ऐसा हो रहा था जैसे दो हाथी आपस में लड़े और उनकी सूँड़ एक दूसरे से उलझ गयी हों और उनकी खम्भे जैसी टाँगें नीचे के कीचड़ में धँस गयी हों।

"सभा को तुरन्त गिरफ्तार करो और उसे बाँधकर औरंगाबाद ले जाओ।" मुगलों के वरिष्ठ अधिकारियों का यही कहना था। किन्तु दिलेरखान सोचता था कि यदि ऐसा पारस अपने हाथ से निकल गया तो आगे अपनी कीमत एक तिनके के बराबर भी नहीं रहेगी। इस विचार से दिलेरखान हड़बड़ा गया था।"

उसी बीच एक रात को जोत्याजी और कवि कलश जैसे आत्मीय मित्रों का एक गुप्त पत्र मिला। उसमें लिखा था— "शम्भू महाराज! सावधान रहें दिल्ली के

बादशाह से आपकी जान को खतरा है। इस प्रकार की सूचना मुगलों के मिरज और रहिमतपुर की चौकियों पर पहुँच गयी है। आप किसी भी समय कैद हो सकते हैं। जाल को तोड़ दीजिए और पक्षियों की तरह उड़ान भरिए।''

शम्भूमहाराज निकल भागने के लिए मौका ढूँढ़ रहे थे। किन्तु दिलेरखान रात दिन उनके आसपास ही घूमता रहता था। एक दिन दोपहर को उसने युवराज से स्पष्ट शब्दों में कहा, ''शम्भू महाराज! हमें आपके झंडे के नीचे पन्हाला जीतना है।''

खान की धूर्तता को शम्भूमहाराज समझ रहे थे। उन्होंने खिन्नता से कहा, ''इसका मतलब! तुमको मुझे आगे करके भूपालगढ की तरह पुन: लड़ाई करवानी है। हमारे प्रदेश में ले जाकर मुझे बदनाम करना है।''

शम्भू महाराज को अपनी बगल में दबोचे दिलेरखान पन्हाला की ओर जाने की ज़िद कर रहा था। उसी समय गुप्त जासूसों ने युवराज को सूचित किया—''दो साल पहले इसी दिलेरखान ने वाडकर पिता-पुत्र को मित्र बनाया था। पंचमी के त्योहार के दिन रायगढ़ में दंगा फसाद करके शिवाजी महाराज की जान लेने की योजना बनायी थी। उस पर विश्वास करना एक गुनाह ही है। खान ने अभी तक शराफत का नकाब पहना हुआ था। किन्तु इन दिनों उसके भीतर छुपा हुआ शैतान उसे चुप नहीं बैठने दे रहा था। उसने फौज के रास्ते में पड़ने वाले तिकोटा और अथणी गाँवों पर गधे का हल चलवा दिया था। वास्तव में इन दोनों गाँवों में हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान ही अधिक बसे थे। उनका केवल यह गुनाह था कि वे बीजापुर की सीमा में रहने वाले थे।

''दिलेरखान ने भयानक अत्याचार किये। उसने दुकानें लूटीं और व्यापारियों को नंगा किया। सारे खेत जला दिये। किन्तु इतने से भी उसकी भूख नहीं मिटी। दिलेर दुष्ट सैनिकों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्म की लड़कियां में कोई भेद नहीं किया। दिन दहाड़े उनकी इज्जत लूटी। बहुत सी महिलाओं को बेइज्जत करके मार डाला। उनके शव पेड़ों पर लटकाए। अनेक माँ बहनों ने भरे हुए कुओं का आश्रय लिया और अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी।''

दिलेरखान के इस क्रूर अत्याचार से बहुत से मुसलमान भी सहम गये थे। किन्तु खान के विरोध में खड़े होने की उनमें हिम्मत न थी। उन सभी लोगों ने एक साथ मिलकर शम्भूमहाराज से शिकायत की। पहले से ही नाराज शम्भूमहाराज क्रोधावेश में पैर पटकते हुए दिलेरखान की छावनी में गये। उन्होंने डाँटते हुए उससे पूछा—''आप इनसान हैं या हैवान? गरीब प्रजा पर इस तरह का अत्याचार आप कर कैसे पाते हैं?''

''शम्भूशहजादे! हो गया न यकीन? हम सिर्फ हिन्दुओं का ही गला नहीं

काटते, मुसलमानों का भी उसी तरह खात्मा करते हैं।"

"आप हो कौन? दिल्ली के बादशाह के सूबेदार या लुटेरे पिंडारियों के मुखिया? यह अत्याचार तुरन्त बन्द करो! नहीं तो— ?"

"नहीं तो क्या कर लोगे?" दिलेरखान ने मुस्कराते हुए पूछा।

शम्भूराजा के पूरे शरीर को मानो बिच्छू डंक मार गया हो। वे आँखें फाड़े अपने बिस्तर पर बैठे थे। उनकी वह विकल अवस्था देखकर दुर्गाबाई और राणूबाई के होश उड़ गये। कोल्हू में जिस प्रकार गन्ने को निचोड़ा जाता है उसी प्रकार शम्भूमहाराज का मन आक्रान्त हो रहा था। उन्होंने कहा, "दुर्गा, हम अपने ही हाथों से अपना क्या कर बैठे? यह दिलेरखान अब चुप नहीं बैठेगा। वह इसी तरह हमें पन्हाला तक खींचकर ले जाएगा। वहाँ भी वह भूपालगढ़ जैसा ही नाच करेगा और हमें जन्म जन्मान्तर के लिए बदनाम कर देगा।"

दो ही दिनों में शम्भूमहाराज को बहादुरगढ़ से एक गुप्त पत्र मिला। यह जानकर कि यह पत्र मियाँखान का ही लिखा है, शम्भूमहाराज आनन्दित हो उठे। मियाँखान ने राजाजी को लिखा था—

"मेरे प्यारे दोस्त शम्भूमहाराज!

सिर्फ आपके एहसान से मेरी दोनों लाड़ली बेटियों के हाथ में सगाई की मेहँदी लगी। आजकल जब भी मैं छोटी उम्र में ही मर गये अपने बेटों की सूरत याद करता हूँ तब महाराज आपकी ही तस्वीर मेरी आँखों के सामने आती है। यह खत इतनी जल्दी भेजने की दो वजहें हैं। एक यह खुशखबरी है कि दिल्ली के शाही फरमान ने मुझे बेगुनाह घोषित कर दिया है। जल्दी ही मेरी रिहाई हो जाएगी। लेकिन उन्हीं कर्मचारियों से यह भी मालूम पड़ा कि आने वाले दो-चार दिनों में आप गिरफ्तार हो जाएँगे। यह बहुत बुरी खबर है। इसी काम के लिए बादशाह के खास शैतान औरंगजेब से पाँच हजार की फौज लेकर कब के निकले चुके हैं। आपको हमेशा के लिए कैद करके हाथ-पैर के नाखून निकालकर चिड़ियाघर के मजबूर शेर की तरह जिन्दगी भर नचाने और शिवाजी जैसे आपके महान पिता का जीना हराम कर देने का औरंगजेब का पक्का इरादा है। याद रखो दिलेरखान सिर्फ औरंगजेब का गुलाम है। वह कभी भी किसी का दोस्त नहीं बन सकता। एक पल की भी देर नहीं कीजिए। शम्भूमहाराज! भाग जाइए, भाग जाइए।"

मियाँखान का पत्र पढ़कर शम्भूमहाराज के सिर के बाल खड़े हो गये उनकी रातें शत्रु बनकर शैतान की तरह परेशान करने लगीं। एक ओर बड़े महाराज की दुखी मन:स्थिति उन्हें परेशान कर रही थी तो दूसरी ओर भूपालगढ़ पर टूट कर गिरे सात सौ हाथ और लँगड़े हो गये पाँव भूत बनकर उनकी आँखों के सामने मशाल की तरह नाचते रहते थे। शिवाजी महाराज के अधिकार से बाहर निकला बहादुरगढ़ का वह हाथी युवराज के सारे शरीर को मसल रहा था। उनके उद्गार निकले—"नहीं

नहीं चाहिए यह अपमानित जिन्दगी! दुश्मन की सलाखों के पीछे तड़पते रहना और सूर्य जैसे पिता को जीवनभर दुखी करना, यह भी कोई जिन्दगी है?"

अपनी आँखों की ज्योति जलाये हुए शम्भूराजा रातभर मन्दिर के सामने बैठे रहे। वहीं पर दुर्गाबाई भी आ गयीं। उन्होंने आँसुओं से भीगा अपना चेहरा शम्भूराज के पैरों पर रख दिया। उनका धीरे-धीरे सिसकना फूटकर क्रन्दन बन गया।

"युवराज, हमारी चिन्ता से ही आपके जैसे वीर के पैर यहाँ अटके हैं। हमारे कारण ही आपके पंखों में उड़ान की शक्ति नहीं आ रही है। आपका कलेजा फटता है। लेकिन महाराज हम यहाँ की यातनाभरी जिन्दगी में मर भी गये तो कोई अन्तर पड़ने वाला नहीं है। किन्तु आपकी रक्षा से शिवाजी महाराज का स्वराज्य टिकने वाला है।"

शम्भूमहाराज ने आँसू पोंछ लिया। वे कुछ निश्चय करके उठे। दुर्गाबाई के गर्भ में छ: सात महीने का बच्चा था। पाँव भारी होने के कारण उनका पूरा शरीर सूजा था। उनका पीला रंग, भारी हो गया शरीर और काजल अँजी आँखें देखकर संभाजी राजा का मन भर आया। अपने भारी शरीर को लेकर दुर्गाबाई आगे बढ़ीं। वे गिर न पड़ें, इसलिए उन्हें सँभालने के लिए शम्भूमहाराज अपने आँसू पोंछते हुए आगे बढ़ आए। उन्होंने दुर्गाबाई के तप्त शरीर को बाँहों में भर लिया। दुर्गाबाई ने कहा, "महाराज हमारी ममता में आप इतना क्यों उलझ रहे हैं?"

"दुर्गा कैसी बुरी तकदीर है हमारी? हम शृंगारपुर से बाहर निकले तो येसूबाई के पेट में भी बच्चा था। आज ऐसी ही हालत में तुम्हें शैतानों के हाथ मे छोड़कर हम स्वराज्य में वापस चले जाएँ? क्या तुम यही सलाह मुझे दे रही हो? अपनी ही लताओं पर खिलने वाली कलियों को अपनी आँखों से देखने का सौभाग्य इस अभागे शम्भू को कभी मिलेगा कि नहीं?"

भोर होते ही शम्भूमहाराज ने राणूबाई को जगाया। वे पहले से ही जग रही थीं। उन सभी का भाग्य अँधेरे की खाई में था। अपनी बडी बहन को समझाते हुए शम्भूमहाराज बोले, "कल परसों जब भी अवसर मिलेगा मैं घोड़े को बाहर निकालूँगा। साथ शृंगारपुर के अश्वदल के दो सौ बहादुर सवार होंगे। पलक झपकते ही हम दोनों को यहाँ से बाहर निकलना है।"

"हम दोनों को? मतलब?" राणूबाई चौंक गयीं।

"दुर्गा यहाँ खान की छावनी में ही रहेगी।"

"शम्भूराजा! ऐसी पाँव भारी अवस्था में उनकी देखभाल कौन करेगा?" णू ने प्रश्न किया।

"पागल हो गयी हैं दीदी आप? चार दिन की मेहमानी के लिए जीजाजी ने पको मायके भेजा था। आपको यहाँ छोड़कर हम किस मुँह से वापस स्वराज्य में

जाएँ? शादीशुदा बहन को ससुराल वाले मायके क्यों भेजते हैं? इसीलिए न कि वह नयी साड़ी पहनकर वापस जाए? जनानखाने में छोड़ देने के लिए नहीं।''

राणूबाई शम्भूराजा के समीप आयी। उनका हाथ अपने माथे पर रखते हुए बोली, ''शम्भूभाई! शान्त हो जाओ! मेरी चिन्ता न करो। मुझे साथ लेकर जाने की जल्दबाजी में तुम खुद मुगलों की कैद में जिन्दगी भर के लिए अटक जाओगे। वाई के जाधव को मेरी जैसी बहुएँ बहुत मिल जाएँगी, किन्तु शिवाजी महाराज के स्वराज्य को आगे सँभालने वाला दूसरा संभाजी नहीं मिलेगा। क्षमा करो। समय मत गँवाओ। अपनी बड़ी बहन के पल्लू में सिर्फ इतनी दया की भीख दो और आप अपने स्वराज्य में वापस चले जाओ।''

बड़ी देर तक शम्भूराजा बहुत देर तक शून्य मन:स्थिति में बैठे रहे। उन्हें सूझ ही नहीं रहा था कि क्या करे? और क्या न करें? राणूबाई पुन: शम्भूराजा के पास आयीं और उनकी पीठ पर हाथ फेरते हुए बोलीं, ''शम्भूराजा, पिताजी का हृदय आपके लिए कितना पीड़ित होता है? इसका शायद आपको पता नहीं है। उन्होंने कई बार मुझसे कहा है, ''हमारे शम्भू का हृदय यदि केवल राजा का होता तो हमें कोई चिन्ता न होती। किन्तु उनके हृदय का एक हिस्सा राजा का है तो दूसरा हिस्सा कवि का। ऐसे व्यक्तियों के साथ बड़ा धोखा होता है। यदि इन्हें क्रोध आ गया तो हाथियों के झुंड की तरह गरजते हुए हमला कर देंगे। किन्तु एक बार यदि उनके मन के भाव तरल होकर प्रवाहित हुए तो झरने की तरह प्रवाहित ही रहेंगे। राजा के लिए इस तरह प्रवाहित होना ठीक नहीं है। राजा के लिए ईर्ष्या, प्रतिशोध जैसे विष के कुम्भ को उचित समय की प्रतीक्षा में सँभालकर रखना आवश्यक होता है। हमारे शम्भू के पेट में ऐसा कुछ भी पचता नहीं। इसीलिए हमें उनकी चिन्ता हमेशा लगी रहती है।''

शम्भूमहाराज बहुत देर तक वैसे ही बैठे रहे। तब उनका हाथ खींचकर उन्हें उठाने का प्रयास करते हुए राणूबाई ने कहा—

''उठो, शम्भूराजा! पिछले कुछ दिनों से भाग्य हमारे साथ जुआ खेल रहा है। जबसे हम कृष्णा नदी पार करके यवनों के प्रदेश में आये हैं तब से पिताजी की स्थिति क्या हो रही होगी? एक भी दिन उन्हें चैन की नींद नहीं आयी होगी। इस बात का मुझे पूरा विश्वास है।''

''परन्तु दीदीजी! सबके रोकने के बावजूद आप मेरे साथ यहाँ क्यों आयीं?''

''क्यों आयी? मुझे भी नहीं पता। ऐसे ही हमारा मन हमें कोस रहा था। बेवजह आपकी चिन्ता सता रही थी। इसीलिए यहाँ चली आयी। किन्तु शम्भू अब समय व्यर्थ में न गँवाओ। चलो तैयार हो जाओ। शम्भूभाई क्या आप जानते हैं कि

अपने यहाँ बहुत से किलों को बनाते समय क्या किया जाता था?"

"क्या?"

"पुराने जमाने में कभी कभी किले बनाते समय उनकी दीवारें गिर जाती थीं, बुर्ज गिर जाते थे! उस निर्माण को पक्का करने के लिए नींव में नरबलि दी जाती थी। स्त्रियों और बच्चों के रक्त में चूना घोला जाता था। तो मेरे भैया आप अपनी इस बहन और लाड़ली की चिन्ता न करें। भविष्य में यदि भाग्य ने साथ दिया तो हम सब अवश्य मिलेंगे। किन्तु वैसा नहीं हो पाया तो भी चिन्ता की कोई बात नहीं। हम मर गये तो भी कोई बात नहीं लेकिन शिवाजी महाराज और संभाजी महाराज के स्वराज्य का बुर्ज हर तूफान से टकराते हुए ऐसे ही खड़ा रहना चाहिए।"

छह

दिलेरखान की नींद अब सच में उड़ गयी थी। इतनी बड़ी फौज के सामने मराठों के युवराज के ऊपर तलवार उठाने के साहस से दिलेरखान घबरा गया था।

उसी सुबह मुनासिबखान दिलेरखान से मिलने के लिए आया। उसके साथ उसका भतीजा बालेखान भी था। कुछ महीने बीजापुर की नौकरी छोड़कर अपने भतीजे के साथ दिलेरखान से आ मिला था। मुनासिब के पास अपनी पाँच हजार की फौज थी। दिलेर खान ने चिन्तित स्वर में पूछा—"मुनासिब चाचा आगे क्या हुआ?"

"खानसाहब आपके हुक्म की तामील हो गयी। संभा के प्रदेश से आये हुए दो सौ मराठे घुड़सवारों को हमने अलग कर दिया।"

"बहुत अच्छा।"

"उनके घोड़ों को हमने अपने क़ब्ज़े में ले लिया और उन दो सौ नामर्दों को अपने बेगारियों में सम्मिलित कर लिया।"

मुनासिबखान से यह समाचार सुनकर दिलेरखान बहुत प्रसन्न हो गया। उसने बगल में रखी सुराही का शरबत गटाक से पी लिया। अपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला, "संभा के खून में खूब जलवा है। कल उसका साहस देखकर मैं

हैरान हो गया था।"

"लेकिन खान साहब इस आग को कब तक सँभालना है?"

"मुनासिब चाचा कल सुबह तक औरंगाबाद की पाँच हजार की फौज यहाँ पहुँच जाएगी। साथ में अपने पाँच हजार सैनिक दे देंगे फिर इस आग के अंगार को भेज देंगे औरंगजेब के पास। एक बार आलमगीर साहब के क़ब्ज़े में कोई चीज तो भभकती आग भी पानी पानी हो जाती है। औरंगजेब की इस शक्ति को सारी दुनिया जानती है।"

दूसरे दिन दोपहर में फौज आगे बढ़ रही थी। दिलेरखान ने जानबूझकर संभाजी को अपनी बगल में चल रहे हाथी के हौदे में बिठाया था। वह चाहता था कि कल के झगड़े का क्रोध उनके मन से निकल जाय। कम-से कम उन्हें कैद करने के लिए बादशाह की फौज से निकला घोड़ों का दल जब तक यहाँ नहीं पहुँचता, उन्हें रोक रखना था। दिलेरखान उनके साथ मीठी मीठी बातें कर रहा था। उन्हें खुश रखने का प्रयास कर रहा था।

फौज ने सामने की एक पहाड़ी पार की। हाथी घोड़े पहाड़ी उतरने लगे। शम्भूमहाराज की दृष्टि बगल की घाटी में पड़ी। वहाँ एक पानी से भरा तालाब था। उसकी बगल में एक झरना भी दिखाई पड़ा। तालाब के किनारे एक छोटा सा पत्थरों का बना पुराना शिवमन्दिर था। युवराज ने हाथी को रोकने के लिए कहा। उन्होंने हँसते हुए दिलेरखान से कहा, "खानसाहब बहुत दिन हो गये मैंने भगवान का दर्शन नहीं किया। यहाँ कुछ समय ठहरिये। मेरी इच्छा हो रही है कि स्नान करके भगवान के दर्शन कर लूँ।"

दिलेरखान ने प्रसन्नातापूर्वक हँसते हुए कहा, "युवराज इस तरह विनती क्यों करते हैं? हमें भी दोपहर में आराम के लिए रुकना ही था, कीजिए आप अपनी पूजा।"

दिलेरखान बहुत प्रसन्न था। उसका पक्का विश्वास था कि उसके कब्जे में रहते हुए संभाजी का यह आखिरी स्नान है। फौज वहीं रास्ते के आसपास, आगे-पीछे जहाँ भी जगह मिली आराम के लिए पसरने लगी। संभाजी राजा अपने खास सेवकों के साथ तालाब की ओर गये। पहले महादेव को प्रणाम करके फिर बगल के तालाब में उतरे।

आज शम्भूमहाराज का मन बहुत प्रसन्न था। उन्होंने अपने सेवकों को भी कपड़े उतारकर पानी में प्रवेश करने के लिए विवश किया। स्वयं युवराज हाथ आगे-पीछे मारते हुए, पानी उड़ाते हुए, प्यार से जल-क्रीड़ा का आनन्द ले रहे थे। उनके पहरे वाली मुनासिबखान की फौज झरने के किनारे दोपहर का भोजन ले रही थी। किन्तु सावधानी के लिए मुनासिब ने कुछ बहादुर सैनिकों को तालाब के किनारे

पहरे पर खड़ा किया था। उसी तालाब के किनारे पाँच साधु स्नान कर रहे थे। उनका मन्त्रपाठ चल रहा था। बीच बीच में वे 'जय शंभोऽऽ' कहकर पुकार रहे थे। पहले तो शम्भूमहाराज का ध्यान उनकी ओर नहीं गया। फिर कानों तक एक आवाज पहुँची—'शंभोऽऽ शिवा का शंभोऽऽ।'

शम्भूमहाराज का ध्यान उनकी ओर गया। उन्होंने ध्यान से देखा तो उनके शरीर में बिजली दौड़ गयी। उन पाँच साधुओं में एक थे जोत्याजी और दूसरे रायप्पा।

राजा की आँखें चारों ओर घूमीं। पहरेदारों को शक न हो इस दृष्टि से वे धीरे धीरे तैरते हुए आगे को सरकने लगे। साधुओं के पास पहुँचते ही मन्त्रपाठ के बहाने से जोत्याजी ने धीमे स्वर में कहा, "मन्दिर के पीछे हमारे सिर्फ चार घोड़े हैं। पहाड़ी के पीछे जंगल में सिर्फ साठ शृंगारपुरी घुड़सवार हैं। इन्हीं के भरोसे आपको साहस करना है।"

शम्भूराजा ने पानी में सूर्य को नमस्कार किया। वे पानी में बार बार डुबकियाँ लेने लगे। पहरे पर खड़े सिपाही उनकी ओर तारीफ की दृष्टि से देखने लगे। बहुत देर तक शम्भूमहाराज पानी से बाहर नहीं आये तब पहरेदार और सिपाही हैरान होने लगे। समीप के मन्दिर के पीछे से कुछ शोरगुल सुनाई पड़ा—'संभा निकल गयाऽऽ, संभा भाग गयाऽऽ, संभा गयाऽऽ।'

दिलेरखान की छावनी में हलचल मच गयी। दिलेरखान क्रोध से नाचने लगा। किन्तु उसी समय हुक्म की प्रतीक्षा किये बिना ही बालेखान अपनी पाँच हजार की सेना लेकर जंगल में घुस गया। दिलेरखान क्रोध से आग बरसाने लगा। इसी समय बूढ़ा मुनासिबखान घोड़ा दौड़ाते हुए दिलेरखान के सामने आ गया। उसके चेहरे पर चिन्ता की कोई रेखा नहीं थी। दिलेरखान मुनासिबखान से उखड़कर बोला—"ये क्या हँसी की बात है?"

"नहीं तो क्या हुजूर?" मुनासिब ने कहा, "संभा जैसा बेवकूफ लौंडा किसी ने देखा तक न होगा। हुजूर मैंने पूरी जानकारी ले ली है। गिने चुने पाँच साधु उसके साथ हैं। हमारा बालेखान पाँच हजार की फौज लेकर जंगल में घुसा है। भाग भागकर भी वह बेवकूफ संभा कितना भागेगा? पूरा जंगल छान मारता हूँ। एक-दो घंटे में ही उसकी बोटी-बोटी करके रूमाल में बाँधकर ले आता हूँ।"

मुनासिबखान का घोड़ा आगे बढ़ा ही था कि दिलेरखान चिल्लाया, "ठहरो मुनासिब मियाँ।"

"क्यों? खान साहब?"

"संभा को जिन्दा पकड़कर ले आइए। उसे मारना मत। नहीं तो शाहंशाह को यकीन नहीं होगा कि लाश संभा की ही है। आफत आ जाएगी।"

मुनासिबखान अपने साथ के सैनिकों को .लेकर जंगल में घुसा। किन्तु शम्भूराजा और उनके साथी तेज गति से आगे निकल चुके थे। उनका पीछा करते हुए बालेखान की फौज बहुत आगे जा चुकी थी। यह जानकर मुनासिब हैरान हो गया। अपने घोड़े को बार-बार ललकारते हुए, उस जानवर को अपनी जाँघों से दबाते हुए वह पवन की गति से आगे निकल रहा था।

शाम होने को आ गयी। परछाइयाँ जंगलों में उतरने लगीं। नाचता हुआ मोर जिस प्रकार अपने पंख समेटता है उसी प्रकार मूर्य की एक-एक किरण विलुप्त हो रही थी। सूर्य डूब चला। एक पहाड़ी पर से मुनासिबखान ने घाटी में देखा। वहाँ एक बड़ा झरना बह रहा था। झरने के किनारे शम्भूमहाराज को एक पेड़ के तने से बाँधा गया था। जंगल में आकर उनसे मिले साठ शृंगारपुरी सैनिकों में से आधे मरकर एक ओर गिरे थे। पीछा करते समय बड़ी लड़ाई हो चुकी थी, यह माफ साफ दिखाई पड़ रहा था।

शम्भूराजा का सारा शरीर खून से लथपथ था। चेहरा भी खून लगे खरोंचों से भर गया था। उनकी खरोंचों और उनके शरीर के घावों से स्पष्ट दिख रहा था कि इस बहादुर ने कम-से-कम साठ-सत्तर लोगों को घायल किया होगा। उनका और बालेखान का जोरदार झगड़ा चल रहा था। उनके झगड़े को मुनासिबखान ऊपर से देख रहा था। बालेखान हाथ में तलवार नचाते हुए संभाजी राजा के मामने नाच रहा था। दोनों क्रोधित होकर एक-दूसरे को गालियाँ दे रहे थे।

यह दृश्य देखकर मुनासिब का कलेजा हिल गया। वह अपने भतीजे की ओर देखकर चिल्लाया—"बेटे बालेखानऽ ठहरोऽऽ। आगे मत बढ़ोऽऽ। खुदा के वास्ते बेटेऽऽ।" ऐसा कहते हुए उसने घोड़े पर से नीचे छलाँग मारी। घोड़े पर जो हथियार लदे थे उसमें से पल्लेदार भाला हाथ में लिया। भाले के डंडे का सहारा लेते हुए सीधे रास्ते से उतरते सरकते नीचे जाने लगा। अभी भी बालेखान और शम्भूराजा के झगड़े की ऊँची आवाज उसके कानों तक पहुँच रही थी। सरकते सरकते नीचे जाने वाला मुनासिबखान बीच-बीच में बोल रहा था, "बेटे बालेखान कुछ मत करना। मैं आ रहा हूँ, बेटे।"

मुनासिब ढलान उतरकर कुछ ही दूर गया था कि उसने देखा। कि क्रुद्ध बालेखान आगे बढ़कर बँधे हुए शम्भूराजा को मुट्ठियों से मार रहा है। उन्हें गालियाँ दे रहा है। क्रोध-उन्मत्त होकर उसने शम्भूमहाराज की दाढ़ी पकड़कर खींची। शम्भूराजा बहुत चिढ़ गये। उन्होंने बालेखान के मुँह पर जोर मे थूक दिया। इस पर बालेखान अपने क्रोध पर नियन्त्रण खो बैठा। उसने म्यान से अपनी तलवार खींच ली। तलवार की नोक से शम्भूराजा के सिर पर वार करने ही वाला था कि पीछे से एक गर्जना आयी—"बालेखानऽऽ बेटेऽऽ।" उसके ठीक बाद तीर की गति से

भाला आया और उसकी नोक तेजी से बालेखान की पीठ में घुस गयी। देखते-देखते बालेखान अपने ही खून के गड्ढे में गिर गया।

स्वयं शम्भुमहाराज, उन्हें घेरकर खड़े हजारों मुसलमान सैनिक और भाला फेंकने वाले मुनासिबखान सभी आश्चर्यचकित रह गये। दूसरे ही क्षण मुनासिब बालेखान की ओर झपटा। खून से लथपथ बालेखान का शरीर उसने बाँहों में भर लिया। उसे पानी पिलाने का भी व्यर्थ प्रयास किया। बालेखान तो कब का समाप्त हो चुका था। मुनासिब उसके लिए दहाड़ें मारकर रो रहा था।

मुनासिबखान के अनेक फौजी साथी आगे आये। उन्हें अपने मालिक पर बहुत क्रोध आया। उनमें से एक ने बहुत सन्तप्त होकर पूछा—"चाचा, एक जहन्नमी काफिर को बचाने के लिए आपने यह क्या किया? अपने भतीजे को ही मार डाला?"

बालेखान के शव को देखकर एकबार पुनः मुनासिब को रोना आया। आँसू बहाते हुए वह बोला, "जो हुआ वह बहुत बुरा हुआ। दोस्तोऽऽ यह तुम्हारा मुखिया था और मेरा इस दुनिया में एकलौता वारिस।"

"वही कह रहा हूँ खानसाहब! एक मूर्ख काफिर के लिए अपने ही बच्चे की हत्या करने की आपको क्या ज़रूरत थी?"

"क्यों बेटे, सिर्फ एक मुर्दा देखकर तुमको इतना बुरा लग गया?"

"मतलब?"

अपने सहयोगियों पर एक तीखी नजर फेंकते हुए मुनासिबखान गरजा, "अथणी और तिकोटा में उस बदमाश दिलेरखान ने भरे चौक में किसकी इज्जत लूटी थी? अनेक औरतों, माँ, बहनों को नंगी करके पेड़ों पर किसने लटकाया था? भूल गये आप लोग? उन बेसहारा औरतों में हिन्दू कम मुसलमान ज्यादा थीं। किन्तु उस दारुण दृश्य को देखकर तुम में से किसी की भी तलवार म्यान से बाहर क्यों नहीं निकली?"

"याने?"

"उस अत्याचार को देखकर जिसके शरीर का खून खौल उठा था, उस अत्याचारी दिलेरखान पर आक्रमण करने जो व्यक्ति गया था, वह एक ही व्यक्ति था शिवाजी का बेटा। आप में से कोई नहीं था। तब कहाँ थीं अपनी तलवारें? कहाँ चुप बैठी थी यह मर्दानगी?"

सभी चुप हो गये। मुनासिब की बात से सभी चकरा गये। उनमें से एक ने अधीर होकर पूछा—"चाचा, आप कहना क्या चाहते हैं?"

"बस इतना ही! हम सबकी बड़ी इच्छा थी। इसलिए छः महीने पहले हम

सब अपनी बीजापुर की चाकरी छोड़कर दिलेरखान से मिल गये। वह हमारी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा गुनाह था। आज औरंगजेब का एक सरदार दक्खिन में आकर हमारी मुस्लिम माँ-बहनों पर इतना अत्याचार कर रहा है तो कल औरंगजेब के आने के बाद क्या होगा?''

''चाचा, आप ठीक कहते हैं।'' सामने से कुछ आवाजें आयीं।

''मैं ख़ुदा की कसम खाकर कहता हूँ आज शियापन्थी दक्खिन मुसलमानों के लिए सबसे बड़ा काफ़िर बादशाह औरंगजेब है। बच्चो! दिल्ली का यह शैतान मराठों का राज्य नेस्तनाबूद करने में कामयाब हो गया तो अपनी बीजापुर और गोलकुंडा की सल्तनतों को एक दिन के लिए भी ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा। हम कैसे भूल सकते हैं? पिछले साल बीजापुर की सहायता के लिए शिवाजी महाराज ने दस हजार बैलों की पीठ पर लादकर अनाज भेजा था। औरंगजेब ने नहीं। इसलिए कहता हूँ कि औरंगजेब के अत्याचारों से दक्खिनियों को मुक्ति दिलाने के लिए शिवाजी का राज्य बना रहना चाहिए।''

मुनासिबखान ने अपनी कमर की कटार बाहर निकाली। बात ही-बात में उसने शम्भूराजा के सारे बन्धन काट दिये। सामने से उसने अपने कुछ साथियों को पास बुलाया। शम्भूमहाराज को ले जाने के लिए आये हुए लोगों को पच्चीस तीस नये घोड़े दिये। शम्भूराजा की पीठ पर प्यार से हाथ थपथपाते हुए मुनासिब ने अपने साथियों से कहा, ''शिवाजी पर एहसान करने के लिए नहीं, दक्खिन की हिफ़ाज़त के लिए शिवाजी का बेटा सलामत रहना चाहिए। जाऽऽ बेटेऽऽ भाग जा। निश्चिन्त होकर निकल जाऽऽ।''.

शम्भूराजा ने ख़ून से लथपथ अपनी बाँहों में मुनासिब को भर लिया। सभी को अलविदा कहा।

संभा किस चतुराई से भाग गया? दिलेरखान को क्या बताया जाय? यही सोचते सोचते बीजापुरी फौज वापस लौटी। फौजी बालेखान का खून से भीगा शव कन्धे पर उठाये दफ़नाने के लिए ले जा रहे थे। साथ में घोड़े पर चल रहा मुनासिब अपने वारिस के शव को बार बार देख रहा था। वह अपनी बूढ़ी दाढ़ी पर निरन्तर गिर रहे आँसुओं को पोंछने का प्रयास कर रहा था।

जीव ही शिव

एक

कल देर रात शिवाजी महाराज की पालकी पन्हालगढ़ पर आ पहुँची थी। उस समय सिंह द्वार पर तोपें दागी गयी थीं। महाराज का स्वागत किया गया था। उसी भीड़ में सामने की ओर शम्भूमहाराज खड़े थे। शिवाजी महाराज ने उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया। वे अपने काँपते हाथों को उनकी पीठ पर फेरने लगे। मन भर आया। उन्हें बहुत सी बातें करनी थीं। किन्तु इस भीड़ के सामने खुलकर बातें करना उचित नहीं था।

शम्भूमहाराज को पन्हाला आये एक महीना बीत चुका था। वे प्राय: बाहर नहीं निकलते थे। उनके जैसा सुयोग्य युवराज मुसलमान शत्रुओं से जाकर मिल जाय, इस कल्पना से ही प्रजा को बड़ा दुख हो रहा था। यदि वे सहज रूप में घोड़े पर बाहर निकलते तो भी लोग उन्हें कुछ विचित्र दृष्टि से देखते थे। इसलिए महल के भीतर बैठे रहना ही युवराज को ठीक लगता था। कल रात तक शम्भूमहाराज के मन में भयंकर भ्रम बना हुआ था। वे भीतर ही भीतर बहुत तड़प रहे थे। तोप के सामने जाना उतना भयानक नहीं था जितना स्वराज्य द्रोह जैसा भयानक अपराध करके पिता के सामने जाना। कौन सा मुँह लेकर पिता के सामने जाएँ? किन्तु कल रात को पिता का आलिंगन शम्भू महाराज को बहुत आह्लादकारी और आश्वस्तिकारक प्रतीत हुआ।

सुबह संभाजी राजा ने अपने शरीर पर से चादर हटाई। खिड़कियाँ खोल दीं। प्रभात की शीतल हवा अन्दर आकर उनके शरीर का स्पर्श करने लगी। रात समाप्त हो रही थी। मस्तिष्क के गर्भगृह में पवित्रता की घंटियाँ बज रही थीं। युवराज की स्मृति अतीत की ओर मुड़ रही थी। तेरह वर्ष पहले आगरा के वे तूफानी दिन याद आ रहे थे। मराठा साम्राज्य के शिवराय भयंकर जानलेवा संकट में फँस गये थे। उस समय शम्भूमहाराज की उम्र सिर्फ नौ वर्ष थी। उनके चेहरे की शिशुता समाप्त नहीं

हुई थी। तब भी अपनी कमर में छोटी-सी तलवार सँभाले हुए दिल्ली के शाहंशाह के दरबार में उपस्थित थे। शिवाजी महाराज के लिए आगरा के उस शाही दरबार में आने की यात्रा बहुत अपमानजनक थी। मराठों के छत्रपति को साधारण पाँच हजारी मनसबदार के खूँटे से बाँधा गया था। उस अपमान से शिवाजी महाराज बहुत क्रुद्ध हुए थे। उन्होंने भरे दरबार में विरोध की फुफकार व्यक्त कर दी थी। किन्तु ऊँचे आसन पर बैठा बादशाह शान्ति से जपमाला के मनके गिन रहा था।

अन्त में दरबार समाप्त हुआ। क्रोध से काँपते हुए शिवाजी महाराज रामसिंह के साथ जयपुर महल की ओर आये। भरे दरबार में दिये गये अपमान के जलते दाग से शिवाजी का शरीर अभी भी जल रहा था। उनका दम घुट रहा था। उनके क्रुद्ध चेहरे की ओर संभाजी मासूम आँखों से देखते रह गये थे। शिवाजी ने दरबार में जो विरोध प्रकट किया था, औरंगजेब के दरबारियों ने उस पर पूरा ध्यान दिया था। दरबार ने अनुमान लगा लिया था कि यह अभिमानी मराठा इतने मे ही सन्तुष्ट न होगा, वह कल्पना से परे कुछ असम्भव कदम उठाएगा। यही कारण था कि शिवाजी और संभाजी के जयपुर महल में पहुँचने के साथ ही वहाँ पर पीछे पीछे घुड़सवारों के दल और साँड़िनियों के दल भी पहुँच गये। महल का घेराव कर लिया। शिवाजी महाराज ने झरोखे से देखा तो लगा कि महल के चारों ओर मानो अस्त्र-शस्त्रों का जंगल उग आया है।

वह समय आपातकाल का था। महाराष्ट्र की धरती आगरा मे सैकड़ों कोस की दूरी पर थी। आसपास कोई भी अपना लगा सगा नहीं था। औरंगजेब जैसा उल्टे दिमागवाला असुर सीने पर पाँव रखकर खड़ा था। पलभर को महाराज को लगा जैसे उनकी सारी शक्ति ही समाप्त हो गयी। सब कुछ समाप्त हो गया। पहरे पर लगी मशालें भयावह लगने लगी थीं। दुश्मन के घुड़सवार सैनिक महल को घेर कर ऐसे खड़े थे, जैसे भूतों के समूह ने घेरा डाल रखा हो।

बड़े महाराज फूट-फूटकर रो पड़े। उनकी गोरी और लम्बी लम्बी उँगलियों मे भी जैसे आँसू टपक रहे थे। इतने में ही एक छोटा सा हाथ उनके लम्बे लम्बे बालों में फिरने लगा। उस कोमल और ममता भरे हाथ के स्पर्श से महाराज का शरीर रोमांचित हो गया। उनके सामने नौ वर्ष के भोले-भाले संभाजी खड़े थे। महाराज ने उन्हें बाँहों में भर लिया। पश्चाताप में जलते हुए शिवाजी महाराज ने कहा, "कलेजा फट रहा है रे बेटाऽऽ। इस दुर्दैवी चक्रव्यूह में से मातृभूमि तक जाने का रास्ता कैसे मिलेगा मुझे और तुमको?"

बालराजा कुछ नहीं बोले। उन्होंने सिर्फ महाराज का मुँह अपने गुड्डे की तरह अपने पास लेकर उससे प्यार किया। उनको थपथपाया, उनके ऊपर हाथ फेरा, उन्हें प्यार किया। उस स्थिति में भी महाराज को हँसी आ गयी। उन्होंने संभाजी से

पूछा, "वाह! वाह! एकदम बड़े आदमी जैसा बर्ताव करने लगा है। ये सब कहाँ से सीखा बेटेऽऽ?"

"जीजा माता के पास! और कहाँ?"

महाराज ने निश्चय कर लिया कि चाहे जान भले ही चली जाय किन्तु औरंगजेब के अपमानजनक दरबार का मुँह वे दुबारा नहीं देखेंगे। किन्तु यह भी निश्चित था कि ऐसी अहंकारी भाषा और किसी का ऐसा गुरूर औरंगजेब कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। उसके सन्तोष के लिए कुछ तो करना पड़ेगा। इस प्रकार आग्रह करते हुए रामसिंह महाराज के पास बैठे रहे। अन्त में उन दोनों ने एक उपाय ढूँढ़ निकाला। तय हुआ कि शिवाजी महाराज बीमार हो जाने का बहाना करें और उनके स्थान पर छोटे संभाजी राजा औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हों।

पहले दिन जब संभाजी दरबार में जाने लगे तो शिवाजी ने स्वयं उन्हें तैयार किया। अन्त में उन्होंने उनके गोरे-गोरे मस्तक पर केसर चन्दन का टीका लगाया। संभाजी के गोल-मटोल चेहरे को देखकर महाराज का मन भर आया। उन्होंने बड़ी ममता से संभाजी के गालों पर, पीठ पर हाथ फेरा।

शम्भूराजा हँस पड़े। अपने छोटे-से हाथ में महाराज के हाथ को कसने का प्रयास करते हुए संभाजी बोले, "पिताजी, आप इस तरह परेशान मत होइए। जहाँ-जहाँ भी आप उपस्थित नहीं रह सकेंगे, उस जगह को भरने का प्रयास यह शम्भू अवश्य करेगा।"

सवेरे ही बड़े महाराज का सन्देश आया। उन्होंने सवेरे ही शम्भूराजा को गढ़ पर महालक्ष्मी के मन्दिर में बुलाया था। उनके आगमन के लिए महापूजा का संकल्प किया गया था। विधिवत पूजा समाप्त होते-होते बहुत समय निकल गया। अन्ततः पिता-पुत्र दोपहर को ही एकान्त में मिल पाये।

बड़े महाराज ने हँसते-हँसते कहा, "शम्भूराजा! मुसलमानों का साथ छोड़ देने पर भी आप स्वराज्य में वापस लौटेंगे इसमें मुझे शक था और इस चिन्ता ने हमें बेचैन कर दिया था। मुझे लगता था कि वहाँ आने में आप संकोच करेंगे। हो सकता था कि किसी दूसरी जगह चले जाते।"

"पिताजी, बहुत दुनिया देखी। अँधेरे में रास्ता चलते-चलते अटक गये। किन्तु फिर अपने ही हाथों से अपना फटा हुआ कलेजा जोड़ लिया। सोचा, सूर्यदेव की ओर ही जाना है तो डरना क्यों?" शम्भूराजा ने कहा।

"शम्भू, मैं कहता हूँ कि पहले आप कवि हैं, बाद में युवराज।" शिवाजी महाराज ने बड़े प्यार से कहा।

संभाजी राजा को शिवाजी महाराज अपनी आँखों में समा लेने का प्रयास कर रहे थे। एकाएक उनकी आँखों से गालों पर मोती झर पड़े। भरे गले से वे दुखी

स्वर में बोले, "तो शम्भूराजा आप अकेले ही वापस आये?"

"क्षमा करें पिताजी।" शिवाजी महाराज के प्रश्न पूछने पर संभाजी का हृदय विदीर्ण हो गया। पिता पुत्र दोनों ही बहुत दुखी हो गये थे। संभाजी बोले, "पिताजी, दुर्गा और राणू दीदी से मैंने साथ निकलने के लिए बहुत आग्रह किया। जी जान लगाकर प्रार्थना की। किन्तु उन्होंने सुना ही नहीं।"

"नहीं, नहीं शम्भू बेटे! उन बेटियों का सोचना ही ठीक था। उनको साथ ले आने की कोशिश में आप स्वयं वहाँ हमेशा के लिए अटक जाते। ठीक है शम्भू बेटे! आज नहीं तो कल, माँ भवानी आपके हाथ मं शक्ति देंगी। तब अपने मजबूत हाथों से दोनों को छुड़ाकर ले आना बग्म।" अपने होनहार पुत्र पर दृष्टि डालते हुए शिवाजी महाराज ने कहा, "शम्भ् बेटे कर्नाटक युद्ध पर आपको अपने साथ न ले जाकर मैंने आपके साथ बड़ा अन्याय किया। आप ऐसा ही समझते हैं न?"

शम्भूमहाराज कुछ हिचकिचाए अवश्य, किन्तु चुप्पी तोड़कर बोले, "क्यों न समझूँ पिताजी! मैं जब केवल नौ वर्ष का था तब भी आपने मुझे दूर रखा। पुरन्दर की सन्धि के अनुसार मिर्जाराजा जयसिंह के पास मुझे गिरवी रखा।"

"शम्भू बेटे! वे सभी बातें मुझे स्मरण हैं।" शिवाजी महाराज ने कहा।

"और थोड़ी याद दिलाता हूँ, पिताजी।" युवराज आगे कहने लगे, "औरंगजेब के शहजादे, तेज तर्रार मुअज्जम को फोड़कर पिता औरंगजेब से बगावत कराने का काम आपने मुझे सौंपा था। आपने कहा था कि बगावत के लिए मैं उसे मजबूर करूँ।"

उस बात को याद करके शिवाजी मन्द मन्द मुस्कराये। शिवाजी महाराज की प्रसन्न मुद्रा को देखकर शंम्भूराज ने बात को आगे बढ़ाया।

"क्यों पिताजी? प्रयत्न करने पर भी मुझे उस कार्य में सफलता नहीं मिली। किन्तु केवल ग्यारह बारह वर्ष की उस उम्र में आपने जिस युवराज पर, औरंगजेब के शहजादे को बाप से अलग करने का जोखिम भरा दायित्व सौंपा था, वही आपका पुत्र बीस वर्ष की उम्र में अपने पिता की उँगली पकड़कर मुहिम पर जाने के लिए अयोग्य कैसे हो गया?"

शिवाजी महाराज का चेहरा खिन्न हो गया। उन्होंने कहा, "शम्भू! कर्नाटक की मुहिम पर साथ न ले जाने की घटना मेरे जीवन के लिए एक कड़ुआ अहसास है। आप जब छत्रपति बनेंगे तभी मेरे दर्द को ठीक ठीक समझ पाएँगे। कभी कभी राज्य की, समाज की भलाई के लिए अपने प्रियजनों से जानबूझकर अन्याय करना पडता है। क्या उतना भी अधिकार आप पर नहीं था मेरा, शम्भू बेटे?"

"परन्तु रायगढ़ में तो हमें सुख से रहने दे सकते थे?"

रायगढ़ का नाम सुनते ही शिवाजी महाराज चुप हो गये। एक लम्बी आह

भरते हुए बोले, "शम्भू बेटे! रायगढ़ अब पहले जैसा नहीं रहा। साधारण लोगों की भूख एकदम छोटी रहती है। किन्तु बड़े स्त्री-पुरुषों की प्यास बहुत बड़ी होती है, उसमें भी राज्यलिप्सा जैसी जहरीली प्यास दूसरी नहीं होती। राज्य की प्यास बुझाने के लिए कभी कभी बच्चे भी अपने बाप का गला घोंट देते हैं। माताएँ भी दुश्मन बन जाती हैं। आजकल रायगढ़ में इस तरह की राज्यलिप्सा की लम्बी जबान निकलने लगी है। ये सारी बातें सोचकर ही मैंने आपको वहाँ न रखने का निर्णय लिया था।

दिलेरखान के क़ब्ज़े से शम्भूराजा के छूट जाने की महाराज को बड़ी प्रसन्नता थी। उन्होंने कहा, "आप वापस आ गये और हम भाग्यशाली हो गये। पूरे राज्य को सूर्यग्रहण लग गया था। यह तो अपने स्वराज्य का भाग्य अच्छा था, अन्यथा आपको समाप्त करने के लिए औरंगजेब ने पक्का निश्चय कर लिया था। शम्भूराजा, आपके स्वराज्य में वापस आने का समाचार मुझे जालना के रास्ते में ही मिल गया था। उस आनन्द के नशे में मैंने चार दिन में ही जालना की लड़ाई जीत ली थी। वहाँ बड़ी लूट से लदे हुए हाथी और ऊँट झुक गये थे। किन्तु—"

"क्या हुआ, पिताजी?"

"यह केवल ईश्वर की कृपा है कि आज हम आपसे मिल रहे हैं।" कुछ खिन्नता और कुछ भयभीत स्वर में शिवाजी महाराज ने कहा।

'क्यों? रास्ते में आपकी तबीयत खराब हो गयी थी क्या?" शम्भूराजा ने चिन्तित होकर पूछा।

"शम्भु बेटे, तबीयत की बात छोड़ो। हम जान बचाकर वापस आ गये हैं। यही क्या कम है?" जब लूट के सामान से लदे जानवरों के साथ हम अपनी सेना लेकर जालना से आ रहे थे, संगमनेर घाट के पास, जंगल के बीच में, रणमस्तखान नाम के मुगल सरदार ने औरंगाबाद से बीस हजार की फौज लेकर हमारा रास्ता रोक लिया। चारों ओर से हमें घेरकर संकट में डाल दिया। रायगढ़ का राजदंड हम वहाँ खो देते तो क्या होता? किन्तु ऐन मौके पर हमारे सहायक बने वहाँ के घने जंगल और अपने बहिर्जी नाइक। वह जंगल इतना घना था कि तीन दिनों तक उस जंगल में सूर्य की किरण भी हमारे पास तक नहीं पहुँच पायी।"

इस प्रसंग को सुनते सुनते शम्भुमहाराज हक्का बक्का हो गये। बड़े महाराज ने आगे कहा, "कितनी भी वीरता हो, उसका क्या लाभ? दुर्भाग्य से यदि हम मुगलों के हाथ लग गये होते तो हमारी क्या इज्जत रहती? शम्भू बेटे, मनुष्य चाहे जितना भी बहादुर हो, उसके सभी प्रयासों को भगवान का सहारा होना ही चाहिए।"

बड़े महाराज बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

"हम फिर से मिल गये, यह जगदम्बा की महती कृपा है। किन्तु एक बात हमेशा याद रखना कि मोह-माया में न फँसते हुए राजा को अनेक बार कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं।"

शम्भूराजा ने चकित भाव से महाराज की ओर देखा। महाराज आनन्दित होकर बोले, "जिस समय मैं कर्नाटक की ओर था उस समय आपने गरीब किसानों और मजदूरों के कर में छूट देने का निर्णय लिया, उसकी मैंने पूरी पूछताछ की है। उससे प्रसन्न होकर इस बूढ़े राजा ने अपने युवराज को नहीं, प्रजा के हित में कार्य करने वाले उत्तराधिकारी को शुभाशीर्वाद देने का निश्चय किया।"

शम्भूराजा शिवाजी महाराज की ओर आश्चर्य से देखने लगे। तब उनके कन्धे पर हाथ रखकर शिवाजी महाराज ने कहा, "अभी तक औरंगजेब काबुल, कन्धार जैसी अनेक लड़ाइयों में उलझा हुआ था। किन्तु शम्भू, गुप्तचरों से मिली सूचनाएँ बहुत चिन्ताजनक हैं। साल-दो-साल में औरंगजेब बड़ी फौज लेकर दक्खिन में आये बिना नहीं रहेगा। इसीलिए उसने गुजरात, बुरहानपुर और मालवा में भी डेढ़ दो लाख की नयी फौज तैयार कर ली है।"

शम्भूराजा बड़े महाराज की ओर देखकर ठठाकर हँसे। गर्व से महाराज की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "पिताजी, अब समझ में आया कि पिछले कुछ सालों से आप फिरंगियों से इतना अधिक बारूद क्यों खरीद रहे हैं?"

"बेटे! मेरे सच्चे बारूद तो आप हैं। एक मिर्जाराजा जयसिंह और दूसरा दिलेरखान, ये दो ही सरदार औरंगजेब ने महाराष्ट्र में भेजे थे। उन दोनों ने ही हमारी नाक में दम करके पुरन्दर की अपमानजनक सन्धि पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश कर दिया था। हमारी पीठ पर दहशत की तलवार लगाकर आगरा जाने के लिए विवश किया था। आज तो पूरे स्वराज्य पर दस्तूरखुद औरंगजेब के आक्रमण का भय निर्मित हो गया है। यह नहीं भूलना चाहिए कि आज दुनिया के दो तीन बड़े साम्राज्यशालियों में औरंगजेब एक है। उसका सामना दक्षिण के मैदान में केवल हमारा बेटा कर सकता है। यह घोषित करने के लिए हमें किसी ऐरे गैरे ज्योतिषी की आवश्यकता नहीं है—'बेटाऽऽ, उस कराल काल से जान की बाजी लगाकर लड़! यहाँ के हर जंगल को, पशु पक्षियों को, गरीब बच्चों को, प्रजा को मुक्ति दो'।"

शम्भूराजा झट से नीचे झुके। बड़े महाराज के पैर छूकर कृतज्ञभाव से बोले—"पिताजी, आपके आशीर्वाद से मैं इधर का पर्वत भी उधर कर सकता हूँ।"

शिवाजी महाराज मुस्कराते हुए बोले, "बेटा! जूझना, लड़ना मनुष्य के हाथ में होता है किन्तु नियति सम-विषम चाल और भाग्य की आड़ी-टेढ़ी रेखाओं पर मनुष्य का वश नहीं होता। भविष्य में आपके और औरंगजेब के युद्ध के समय मैं रहूँ

या न रहूँ, परन्तु मेरे आशीर्वाद और पुण्य कर्म आपका साथ अवश्य निभाएँगे।

दो

लगभग तीन वर्ष बाद महाराज अपने ज्येष्ठ पुत्र से मिल रहे थे। जिस प्रकार पानी में लाठी मारने से पानी नहीं फटता ठीक उसी प्रकार आत्मीय माया और ममता भी अटूट होती है। अनुभव और अभ्यास से दोनों का दृढ़ मत बन गया था कि पुत्र को ऐसा असाधारण पिता दूसरा नहीं मिल सकता है और वैसे किसी भाग्यवान पिता को इससे अधिक होनहार पुत्र मिलना असम्भव है। इसलिए इन दोनों की दिनचर्या और उनके वार्तालाप को एक अलग ऊँचाई मिल जाती थी। उनकी समझ में नहीं आता था कितनी बात करें और कितनी न करें?

प्रात:काल ही पिता-पुत्र की पालकियाँ किले पर घूमने के लिए निकलती थीं। वे कभी भवानी मन्दिर में रुकते थे तो कभी राज्य की राजकीय गतिविधियों का निरीक्षण करते थे। शाम के समय तो ठंडी हवा खाने के लिए किसी-न किसी तटबन्दी के ऊपर से पालकियाँ निकलती ही थीं।

आज शाम को पालकियाँ तीन दरवाजे के पास आकर रुकीं। पिता-पुत्र उस भव्य दरवाजे के ऊपरी छज्जे पर बैठकर पश्चिम दिशा के प्रदेश को देख रहे थे। उस ओर दूर-दूर तक गजापुर और विशालगढ़ के जंगल फैले थे। जैसे कोई भक्त भगवान की शरण में पूर्ण समर्पित होकर, कीर्तन भजन करने लगता है, आजकल उसी प्रकार शम्भूराजा शिवाजी के भक्त हो गये थे। आपस की गलतफहमियों वाली मोम की दीवारें कब की पिघल चुकी थीं। अपने तरुण और सुयोग्य पुत्र को समझदार पिता अपनी ममता की गरमाहट से कर्तव्यपरायणता की शिक्षा दे रहा था। शिवाजी महाराज ने कहा, "आप और छोटे राजाराम दोनों सगे भाई हैं। भाइयों के बीच आपसी लड़ाई का मराठी तरीका छोड़कर आपस में राजी-खुशी से मिलजुलकर रहो। माँ भवानी आप लोगों का कल्याण करेंगी।"

"पिताजी! आपके चरणों के आशीर्वाद के अतिरिक्त मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। केवल दूधभात खाकर भी मैं आपकी और हिन्दवी स्वराज्य की सेवा करता रहूँगा।"

शिवाजी महाराज किसी तीव्र विचार से प्रेरित होकर कहने लगे, "बेटे!

घोषित करके, ललकारकर, नंगी तलवार हाथ में लेकर सामने से आक्रमण करने वाला शत्रु ठीक रहता है किन्तु अपने पल्लू में छिपे अंगार को ठंडा करने में बड़ी कठिनाई होती है। सामने आने वाले शत्रु को हम एकबार क्षमा कर सकते हैं क्योंकि वह हमारा शत्रु ही है, पर मराठों के इन जमींदारों को हम कभी भी क्षमा नहीं करेंगे।''

''हम समझे नहीं, पिताजी?''

''इतनी जल्दी नहीं समझ पाओगे। हमें तो अपने जन्मकाल से ही इन लोगों की आग झेलनी पड़ी है। ये लोग शेखियाँ बघारते हुए हमेशा कहते थे कि इनका सूर्य कुल से रिश्ता है। ये लोग अपनी देहाती कोठियों में खड़े होकर मूँछों पर हाथ फेरते थे। अपने को राजा कहते थे। किन्तु इनकी सारी पीढ़ियाँ अहमदनगर के निजामशाह, बीजापुर के आदिलशाह और दिल्ली के यवनों की सेवा में ही जीवन बिता रही थीं। गाँव के इन लोमड़ों ने अपनी कोठियों की आड़ में गरीबों की बहू-बेटियों की इज्जत लूटी। मेहनत करने वाले किसानों की फसलें लूटकर अपनी जेबें भरीं। इसीलिए गाँवों की इन गढ़ियों (कोठियों) के साथ जमींदारी को दफन करके स्वराज्य के मन्दिर को खड़ा करना आवश्यक समझा। हमने कानून बनाया कि अपने गढ़ी या व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए कोई तटबन्दी नहीं बनाएगा। मैंने हिम्मत करके पुरानी गढ़ियों को नष्ट कर दिया। उस समय ये जमींदार जितना विरोध कर सकते थे, करते रहे।''

शिवाजी महाराज ये बातें बता रहे थे और शम्भूराजा बड़ी सावधानी से एकाग्र होकर सुन रहे थे। महाराज़ ने आगे कहा, ''अरे यह राझया का दुष्ट पाटिल कौन था? आज आपका सगा बहनोई फलटण का महादजी निंबालकर मुगलों की फौज में किसकी गुलामी कर रहा है? जावली के मोरे जैसे गद्दार देशद्रोही दूसरी जगह कहाँ मिलेंगे? शृंगारपुर के सुर्वे हों या हमारे दामान गणोजी शिर्के, ये शरीर से स्वराज्य में रहते हैं किन्तु मन से वे मुगलों के ही साथ हैं।''

''इस प्रकार के धोखेबाज स्वजनों के बीच रहते हुए भी आपने स्वराज्य खड़ा किया। पिताजी आप धन्य हैं।'' शम्भूराजा ने कृतज्ञ भावना से कहा।

''क्या बताऊँ शम्भू बेटे? दुश्मन को खून मे नहलाते समय मेरी तलवार तेज से चमक जाती है किन्तु सम्बन्धियों एवं घर के गद्दारों और द्रोहियों पर उठते समय वह शर्म से पानी हो जाती है। इसीलिए कहता हूँ कि इन स्वार्थी मराठों और ब्राह्मण जागीरदारों मे भविष्य में भी सावधान रहना।''

सूर्य विशालगढ़ की दिशा में डूब रहा था। समुद्र में जैसे तूफान आ जाय और उसमें लहरों की अनेक पहाड़ियाँ बनकर एक-दूसरे से टकराने लगें वैसी ही हलचल महाराज के भीतर मची हुई थी। वे अपने पुत्र को बहुत-सी बातें समझा रहे

थे।

"शम्भू बेटे! राज्यशासन चलाते समय गरीब-से-गरीब प्रजा पर यहाँ तक कि गाय चराने वाले बच्चे से भी श्रद्धा रखो। उन्हें शक्ति दो। मैं अपनी जिन्दगी में यदि सँभल पाया तो इन्हीं लोगों के भरोसे। इन जमींदारों को तो मैंने हमेशा बगल में कंकड़ की तरह दबाकर रखा। गाय-भैस चराने वालों को भी मैंने सैनिक बनाया। हल चलाने वाले किसानों को भी फौजी बनाया। उनके साहसी हाथों में भाले और तलवारें दीं। उनके भीतर छिपी चिनगारी को जागृत किया। उन्हीं में कोई तानाजी कोई मुरारबाजी पैदा हुआ। ये साधारण लोग ही स्वराज्य के साथ हमेशा निष्ठावान बने रहे।"

बोलते बोलते शिवाजी महाराज कुछ क्षण के लिए रुके। फिर शम्भूमहाराज का हाथ अपने हाथ में लेकर उन्होंने कहा, "एक समय था जब सिंहगढ़ का हरा झंडा माताजी की आँखों में काँटे की तरह चुभता था। उसी तरह जंजीरे के किले की सिद्दीकी वहाँ उपस्थिति मेरे हृदय को घायल करती रहती थी। जंजीरे पर भगवा झंडा फहराने के लिए हम आठ बार लड़े, बार बार जूझे। किन्तु उस जलदुर्ग ने हमें सदैव ही धोखा दिया।"

"जंजीरा क्या इतना महत्त्वपूर्ण है?"

"महत्त्वपूर्ण?"

शिवाजी महाराज की मुद्रा कल्पनामात्र से जवाकुसुम की भाँति अरुणाभ हँसी में बदल गयी। अपने हाथ की मुट्ठियाँ बाँधते हुए ऊर्जस्वित स्वर में बोले, "बेटे, देश-विदेश की व्यापारिक नाड़ियों को अपने पैरों के नीचे दबाकर रखने वाला जंजीरा का वह जालिम किला एक बार अपने अधिकार में ले आइये, फिर देखिए कि अपने स्वराज्य की सीमा किस प्रकार गंगा-यमुना जाकर पहुँचती है?"

पहले शम्भूमहाराज ने चार वर्ष तक रायगढ़ पर स्थानीय प्रशासन का कार्य सँभाला था। उनको प्रशासन की बारीकियों, शक्तिशाली बुर्जों, भूमिगत मार्गों की पूरी जानकारी थी। इसलिए अण्णाजी दत्तो जैसे राज्य कर्मचारी चाहते थे कि शम्भूमहाराज की जगह छोटे राजाराम गद्दी पर बैठें जिससे राजाराम को राजनीति सिखाने के बहाने वे अपना हित साध सकें और सत्ता का काजू आराम से खाते रहें। इसके विपरीत प्रजावर्ग और सेना को शम्भूमहाराज ही राजा के रूप में चाहिए थे। शम्भूमहाराज स्वार्थी राजकर्मचारियों के लिए संकट बन चुके थे।

दरबारियों की राय थी कि शम्भूराजा को कर्नाटक का राज्य दे दिया जाय और रायगढ़ के साथ मराठी राज्य राजाराम की झोली में डाल दिया जाय। दरबारी ऐसा इसलिए चाहते थे कि उनकी प्रतिष्ठा और उनके राज्याधिकार सुरक्षित रहें। स्वराज्य के बँटवारे की बात सामने आते ही शिवाजी महाराज ने हँसते हुए कहा, "हमारा

स्वराज्य किसी जमींदार की अपनी कमाई नहीं है। यह किसी की जागीर भी नहीं है। यह असंख्य लोगों के खून-पसीने से बना एक पवित्र मन्दिर है। दक्षिण की शक्ति, युक्ति और संस्कृति के प्रतीक इस मन्दिर को कैसे बाँटा जा सकता है, शम्भू बेटे?''

शिवाजी महाराज की बात सुनकर शम्भूराजा ने कातर स्वर में कहा, ''पिताजी, सत्ता की प्यास मुझे कभी नहीं थी। आप मेरे हाथों में नारियल सुपारी रखेंगे तो भी मैं उसे आपका कृपा-प्रसाद मानकर ग्रहण करूँगा। आपके चरणों की पूजा करते हुए मैं दूध-भात पर भी अपने दिन काँट लूँगा।''

गजापुर और विशालगढ़ की ओर सूर्य को सुनहरी किरणें सरक रही थीं। अस्ताचलगामी सूर्य की किरणों के आलोक में शम्भूराजा की मुखमुद्रा बड़ी लुभावनी लग रही थी। उनकी पेच में लगी रत्नमाला का एक छोर लटक रहा था। शिवाजी महाराज ने अपने हाथों से उसे उठाकर पगड़ी में लगा लिया और बोले, ''शम्भू! अपना रायगढ़ का सिंहासन कभी अच्छी तरह से देखा है क्या?''

''बहुत बार।'' शम्भूमहाराज ने हँसते हुए कहा।

''शम्भूराजा! आज जानबूझकर ये बातें मैं तुम्हारे सामने ला रहा हूँ। पिता की गद्दी युवराज को उत्तराधिकार रूप में सारी दुनिया में मिल जाती होगी। किन्तु रायगढ़ की राजगद्दी दुनिया से अलग है।''

''इसका मतलब? पिताजी!''

''वही कह रहा हूँ, शम्भू बेटे। उत्तराधिकार के हक से रकाब में पाँव रखकर घोड़ा दौड़ाने की उतावली बिलकुल मत करो। रायगढ़ के सिंहासन के सामने एकबार पुनः जाकर खड़े हो जाओ। खुली आँखों से उस पवित्र सिंहासन को बार बार देखो। पाँच सीढ़ियों वाले सिंहासन का अच्छी तरह से दर्शन करो।

''पहली सीढ़ी को ध्यान से देखोगे तो मोर के कलाप की तरह उस पर बहुत सी आँखें बनी दिखाई देंगी। ये आँखें हैं बारह मावलों और छत्तीस नेरों के किसानों और उनके पशुओं की। यदि ध्यान से उस पहले सोपान की आहट लोगे तो कृष्णा, भीमा, गोदावरी आदि पवित्र नदियों की कलकल ध्वनि और प्रवाही गति आपको सुनाई देगी।

''दूसरे सोपान पर तुम पाँव रखोगे तो सह्याद्रि पर्वत, खाई में अथवा समुद्र के तल में बनाये गये साढ़े तीन सौ गढ़ों और दुर्गों के दर्शन होंगे। इन दुर्गों के पत्थरों को यदि समीप से और ध्यान से देखोगे तो वे वीर योद्धाओं के खून से रँगे दिखाई देंगे।

''तीसरे सोपान पर तुम देखोगे जीजा माता और उनके साथ मावल की असंख्य बहू-बेटियों के चित्र। इन माँ बहनों ने स्वराज्य के लिए अपना सुहाग लुटा देने में ही गौरव माना। अपने बड़े बेटे को इन्होंने स्वराज्य के लिए प्रसन्नता से

अर्पित किया। यहीं पर आपको सुनाई देगी माँ बहनों की टूटी चूड़ियों की खनक।

"चौथी सीढ़ी पर तो बहुत सँभाल कर पाँव रखना होगा। वहाँ आपको सन्त तुकाराम की वाणी सुनाई देगी। वहाँ आप ज्ञानेश्वर की सदाबहार विराणी सुन सकेंगे। वहाँ पर समर्थ रामदास के साथ आपको सन्तों का विशाल समूह मिलेगा।

"पाँचवीं सीढ़ी पर पहुँच जाने पर आपको लगेगा ऊँची ऊँची चोटियाँ आपकी ओर बड़ी आशा, आस्था और श्रद्धा से टकटकी लगाये देख रही हैं। आधे अधूरे सपनों से बेचैन अतीत बड़ी आशा से आपकी ओर देखेगा। जो घाव अभी भरे नहीं वे आपसे दवा माँगेंगे। आपके हाथ से कुछ मांगलिक और कल्याणप्रद कार्य हो जाय, इसके लिए सूर्य की भोरहरी किरणें दुआ करेंगी। इस प्रकार मेरे सिंहपुरुष बेटे शम्भू! अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल हिरन के बच्चों की तरह आपके कदमों में रेंगते रहेंगे।

"इन पाँच सीढ़ियों का ठीक ठीक दर्शन कर लेने के बाद मेरे प्रिय बेटे, तब स्वयं से एक प्रश्न करो। इन असीम जिम्मेदारियों, अनसुलझी समस्याओं के बड़े बड़े गट्ठरों और प्रजा की पर्वताकार आशाओं आकांक्षाओं के भारी बोझ को उठाने का साहस तुम्हारे कलेजे में है या नहीं? यदि आप में यह आत्मविश्वास है तभी उस दृढ़ विश्वास से, यहाँ की मिट्टी के प्रति पूरी निष्ठा के साथ उस पवित्र सिंहासन पर सुख से बैठो। किन्तु अपनी शक्ति और साहस में थोड़ी भी शंका हो तो उस सिंहासन की हवा के लिए भी न रुको। शरीर पर अचला पहनो और संन्यासी बनकर जंगल की ओर चले जाओ।"

तीन

रायगढ़ पर दशहरा-दीवाली का उत्सवी वातावरण बना था। दो-ढाई वर्ष के बाद शिवाजी महाराज राजधानी में वापस आये थे। इस आनन्द के साथ महाराज ने एक और मांगलिक कार्य की घोषणा की थी। महाराज के छोटे पुत्र राजाराम अब दस वर्ष के हो गये थे। उनका विवाह निश्चित कर दिया गया था। इस समाचार से सभी में असीम उत्साह उमड़ रहा था। मोरोपन्त पेशवा ने हँसते-हँसते अपने दरबारी सहयोगियों से कहा, "महाराज राजाराम का विवाह किसके साथ निश्चित करेंगे? इसकी हम सभी को बड़ी उत्सुकता थी। किन्तु जब उन्होंने प्रताप राव की जानकी

को बहू के रूप में चुन लिया तो हम सभी को अपार हर्ष हुआ।''

महाराज के घर के मंगलकार्य को अपना ही मानकर सभी सरदार कार्य में लग गये थे। महाराज की निजी बैठक में अष्टप्रधानों की व्यस्तता बढ़ गयी थी। महाराज स्वयं वर के पिता होने के नाते व्यस्त थे। वे बैठक के बीच में ही उठकर अन्त:पुर में चले जाते थे। पुन: बैठक में आते थे। सेवक और परिचारक अपना कार्य शीघ्रता से कर रहे थे।

यह जानकर कि महाराज अन्त:पुर में व्यस्त हैं, बालाजी आवजी ने इसका फायदा उठाते हुए धीरे से प्रश्न किया, ''पन्त यह बात सच है क्या?''

''किस सम्बन्ध में पूछ रहे हैं?''

''यही कि पन्हाला पर येसूबाई और संभाजी को निमन्त्रण नहीं भेजा गया है?''

''बालाजी! दुर्भाग्य से यह बात सच है।'' मोरोपन्त ने दुखी स्वर में कहा।

बालाजी आवजी को बहुत दु:ख हुआ। उन्होंने कहा, ''ऐसा कहा जाता है कि कम-से-कम शादी और मातम में तो किसी भी सम्बन्धी को भूलना नहीं चाहिए। शम्भूमहाराज तो राजाराम के बड़े भाई हैं।''

वे दोनों धीमी आवाज में बात करने का प्रयास कर रहे थे। किन्तु उनका सारा भाषण दूसरी ओर बैठे अण्णाजी दत्तो के कानों में पड़ गया। उन्होंने सिर पर बँधे रूमाल को अलग किया। अपनी सफेद दाढ़ी में उँगलियों को घुमाते हुए झूठी हँसी हँसते हुए कहा, ''दूध में नमक और विवाह जैसे मंगल कार्य में अनाहूत मेहमान चाहिए ही क्यों?''

बालाजी ने कहा, ''अण्णाजी पन्त! तुम कुछ ज्यादती कर रहे हो। शम्भूमहाराज के प्रति तुम्हारी रग-रग में क्रोध कूट कूट कर भरा है।''

''युवराज की जवानी के शौक-पर-शौक पूरा करने के लिए जिन लोगों ने अपनी बहू-बेटियाँ गँवाई हैं, अपने दु:ख की यातना वही जानते हैं, बालाजी! दूर से देखने वाले उसकी कल्पना नहीं कर सकते?'' बोलते-बोलते अण्णाजी का गला भर आया।

बैठक का रंग उड़ गया। अण्णाजी की जहरीली वाणी से सभी लोग चुप हो गये।

बड़े महाराज के भय से सभी अष्टप्रधान आपस में ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे उनमें परस्पर बड़ा सौहार्द हो किन्तु वास्तव में उनके बीच बहुत तू-तू मैं-मैं होती थी। मोरोपन्त और अण्णाजी में भी सौमनस्य नहीं था। इसीलिए बड़े महाराज किसी भी लड़ाई पर दोनों को साथ नहीं भेजते थे।

दोपहर का समय हो गया। बैठक समाप्त हो गयी। पेशवा मोरोपन्त भी अन्य

लोगों के साथ बाहर निकले। उनके पीछे-पीछे प्रह्लाद निराजी भी निकले। उसी समय अण्णाजी ने निराजी का हाथ कसकर पकड़ा।

"थोड़ा रुको," उन्होंने आँखों से संकेत किया। बैठक से अन्त:पुर की ओर जा रहे शिवाजी महाराज को सामने से रोक लिया। विनम्र मुद्रा में उन्होंने बड़ी व्यग्रता से कहा, "महाराज, आप थोड़ा रुक जाएँगे तो अच्छा होगा। स्वामी से हमारा एक निवेदन है।"

"बोलो।" महाराज के कदम रुक गये। "रामदास जैसे युगपुरुष ने आपको इतना सम्मान ऐसे ही नहीं दिया है। जो कुछ भी महाराष्ट्र-धर्म बचा है वह केवल आपके कारण। ऐसे अपने महाराज से हम थोड़े न्याय, थोड़े न्यायोचित बर्ताव की माँग करें तो गलत तो नहीं होगा?"

"पन्त ऐसा आड़ा-टेढ़ा क्यों बोल रहे हो? जो कुछ कहना है साफ-साफ बोलो।" महाराज ने कहा।

"अजी अण्णाजी, महाराज जल्दी में हैं, इतना लम्बा-चौड़ा भाषण क्यों दे रहे हो?" बालाजी आवजी ने बीच में ही टोका।

अण्णाजी को बालाजी की चाटुकारिता पर बहुत क्रोध आया। वे अपना एक हाथ उठाकर न्यायाधीश की मुद्रा में बोले, "मुझे इतना ही कहना है कि स्वराज्य द्रोह जैसे अपराध के लिए शिवाजी महाराज के पास तिनके जितनी भी दया नहीं होती है।"

शिवाजी महाराज का चेहरा अत्यन्त भ्रमित हो गया। उस समय बालाजी को छोड़कर शेष सभी अधिकारी काँप उठे थे। लोगों को आश्चर्य था कि ऐसी साहसी धृष्टता अण्णाजी कर सकते हैं? अण्णाजी का आक्रामक रुख महाराज ने पहले ही पहचान लिया था। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "देखो अण्णाजी, इस प्रकार यहाँ-वहाँ ऐसे ही घोड़े दौड़ाते मत घूमो। तुम्हारी शम्भूराजा के बारे में जो शिकायत हो एक बार साफ-साफ बोल दो और मुक्त हो जाओ।"

अण्णाजी अपराधी की मुद्रा में खड़े हो गये। किन्तु शीघ्र ही साहस बटोरते हुए बोले, "क्षमा करें महाराज! मैं ही नहीं धर्मशास्त्र भी यही सिखाता है कि न्याय के पलड़े में एक चरवाहे और युवराज का स्थान समान होता है।"

अण्णाजी ने अपने उत्तरीय से चेहरे का पसीना पोंछा और पुन: हाथ जोड़ते हुए बोले, "प्रजा को ऐसी गलतफहमी नहीं होनी चाहिए कि अपने राज्य में राजद्रोह के लिए दंड के स्थान पर पुरस्कार मिलता है। अपराधी स्वतन्त्र होकर घूमते हैं।"

अन्त:पुर की ओर जा रहे बड़े महाराज के कदम रुक गये। वे वापस आकर बैठक में बैठ गये। भरे दरबार में अण्णाजी दत्तो शिवाजी महाराज का विरोध कर रहे

थे। महाराज ने निश्चय कर लिया कि जो कुछ होना है एक बार हो जाय। उन्होंने हँसने का अभिनय करते हुए कहा, "युवराज शम्भू यवनों से जाकर मिले कि उन्हें इस अपराध की सजा नहीं दी गयी। इसकी शिकायत लेकर मेरे पास कोई नहीं आया। किन्तु मुझे पक्का विश्वास था अण्णाजी पन्त शिकायत लेकर अवश्य आएँगे।"

"हमारा इतना ही कहना है महाराज! शम्भूराजा कास्तकारों को बहुत चाहते हैं। उनके लिए बहुत दया भाव रखते हैं। कर डुबाने वालों का कर माफ कर देते हैं।"

"अण्णाजी उस सारे प्रकरण की मैंने गहराई से पूछताछ कर ली है। हमारे गुप्तचरों ने उन गरीब किसानों की सही जानकारी जब मुझे दी तो मुझे मालूम पड़ा वे किसान खाने के लिए भी मोहताज थे। यदि शम्भू ने उन्हें माफ न किया होता तो यह एक अपराध होता।"

तो भी शम्भूराजा का व्यवहार अनेक बार अच्छा नहीं रहा है, महाराज।"

शिवाजी महाराज चकित हो गये। उन्हें इस बात का कतई अनुमान न था कि अण्णाजी इस प्रकार का नाजुक प्रश्न भरी सभा में उठाएँगे। इन सारी बातों का मूल स्रोत अण्णाजी से जुड़ा था इसलिए इतनी स्पष्टता से बात को उठाना उचित नहीं था। इसलिए महाराज को लगा कि अब कुछ भी छुपाना ठीक नहीं हैं उन्होंने दृढ़ता से सीधे-सीधे कहा, "देखो अण्णाजी पन्त! आप की जवान बेटी की मृत्यु जिस प्रकार दुर्घटना में हुई उसका आपको कितना गहरा दुख होगा, इसकी कल्पना हम कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में शम्भूराजा के सम्बन्ध में पूरी जानकारी लेने का काम मैंने महारानी सोयराबाई को सौंपा था। उनकी सारी पूछताछ के बाद ऐसा कोई भी सबूत नहीं मिला कि इस दुर्घटना में शम्भू दोषी हैं।"

"महाराज! आपने तो मुसलमान सूबेदार की बहू को भी साड़ी-चोली दी थी।"

"उसी तरह हम आपसे वादा करते हैं अण्णाजी पन्त, शम्भू के दुर्व्यवहार का आप कोई प्रमाण प्रस्तुत कीजिए। यदि वे अपराधी सिद्ध होते हैं तो हम अपने पुत्र को उचित दंड अवश्य देंगे। उन्हें कैद करेंगे।"

"महाराज! हमारी गोदू का क्या हुआ?" अण्णाजी पन्त पीछे हटने को तैयार नहीं थे।

"देखो, उसकी फरियाद और रंगपंचमी के दिन हुई सारी गड़बड़ी की मैंने बड़ी बारीकी से जाँच-पड़ताल कर ली है। त्र्यम्बकराव और निवासराव, पिता-पुत्र को शत्रु का साथ देते हुए रँगे हाथों पकड़ा गया। उन दोनों ने लिंगाणा के ऊपर की कालकोठरी से रात में बाहर भागने का प्रयत्न किया। इस कोशिश में वे दोनों पहाड़

के ऊपर से कालदरी में जा गिरे और चूर-चूर हो गये। इस घटना की जानकारी आप को भी है।"

दरबार में बहुत तनाव का वातावरण बन गया था। महाराज के स्वाभिमानी मन के तार को अण्णाजी पन्त ने छेड़ दिया था। अण्णाजी पन्त चाहते थे कि राजाराम के विवाह के अवसर पर या किसी अन्य निमित्त से शम्भूमहाराज रायगढ़ न आ सकें। इसीलिए उन्होंने इस प्रसंग को छेड़ा था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने महाराज के क्रोध की भी चिन्ता नहीं की। इसी समय अन्त:पुर की ओर खुलने वाले दरवाजे का पर्दा हिला। उस ओर पैर-बिछुओं के बजने की आवाज महाराज ने सुनी। यह आवाज उनकी परिचित थी। महाराज ने धमकाते हुए कहा, "महारानी जी, पर्दे के पीछे से शायद आपको हमारी सारी बातें ठीक-ठीक सुनाई नहीं पड़ेंगी। आप सीधे बाहर ही आ जाइये न?"

अपनी दृष्टि पैरों की ओर झुकाए सोयराबाई बाहर आ गयीं। बैठक में आकर एक ओर बैठ गयीं। महाराज ने विवादपूर्ण दृष्टि से महारानी की ओर देखा, मानो कह रहे हों कि संभाजी का एक और प्रेमी व्यक्ति आ गया। महाराज के प्रश्नों से अण्णाजी बहुत डर गये थे, किन्तु महारानी सोयराबाई के आ जाने से उनमें कुछ साहस आ गया। अन्य सभी प्रधान भारी तनाव में आ गये थे। महाराज ने अपने क्रोध को भीतर ही पी लिया। वे संयत स्वर में बोले, "देखिए शम्भूराजा जिस प्रकार हमारे पुत्र और आत्मीय हैं उसी प्रकार आप में से बहुतों के साथ हमारी जीवनभर की मित्रता है। आपने भी स्वराज्य के निर्माण में बड़ा कष्ट उठाया है। इसे हम कभी नहीं भूल सकते।"

अण्णाजी पन्त ने अपने ओंठ आधे खोले। उन्होंने महारानी सोयराबाई की आँखों में झाँका। उन्हें अपने प्रति विश्वास और सहानुभूति दिखाई पड़ी। अण्णाजी पन्त में साहस आ गया। उन्होंने कहा, "महाराज! क्या इन बातों का हम यह अर्थ निकालें कि ऐसी कोई घटना घटी ही नहीं। शम्भूराजा यवनों से जाकर मिले ही नहीं। वे वहाँ गये ही नहीं थे। श्रृंगारपुर के महल में ही बैठे थे— ?"

"अण्णाजी पन्त, यह मत भूलो कि शम्भूराजा दिन दहाड़े खुल्लमखुल्ला यवनों से मिले थे। प्रश्न यह उठता है कि यवनों से मिलकर उन्होंने स्वराज्य का क्या अहित किया? मोरोपन्त कहाँ हैं? उन्हें बुलाइए।"

"महाराज! युवराज अल्हड़ स्वभाव के हैं। किसी को वे उपद्रवी भी लग सकते हैं। किन्तु मैं शपथपूर्वक कह सकता हूँ कि वे मन के बहुत साफ हैं।" अण्णाजी पन्त और सोयराबाई की जहरीली नजरों की चिन्ता किये बिना, बालाजी पन्त चिटणीस ने कहा।

महाराज के आदेशानुसार एक गुप्त पत्र लेकर मोरोपन्त पेशवा दरबार में आये।

उन्होंने पत्र के साथ लगी चन्दन की डंडी महाराज के हाथ में पकड़ा दी। उसकी रेशमी डोरी खोलते हुए महाराज ने कहा, "यह देखो! कर्नाटक जाते समय मैंने शम्भू के आसपास गुप्तचरों को नियुक्त कर दिया था। शम्भू और दिलेरखान के बीच पत्राचार आरम्भ था। इसकी सूचना हमारे गुप्तचरों को थी। अनेक बार युवराज के पत्र को हस्तगत कर उसकी प्रतिलिपि गुप्तचर मेरे पास कर्नाटक भेजते थे। दिलेरखान को शृंगारपुर से भेजे गये शम्भू के पत्र की यह प्रतिलिपि देखिए। क्या लिखते हैं, हमारे बेटे इस पत्र में—

" 'हमारे पिताजी मुझ पर भरोसा रखकर परदेश गये हैं। ऐसे में उन्हें धोखा देकर, आपके साथ मेलजोल रखना, हमारे धर्म को शोभा नहीं देता।' मित्रो! आपको कुछ फर्क इसमें दिखाई देता है? सत्ता के लिए अपने सगे भाइयों और बच्चों का बकरी की तरह सिर छाँट देने वाले कहाँ मुगलों के शहजादे और कहाँ यह पिता की अनुपस्थिति में राज्य की हानि करने से डरने वाला बहादुर राजकुमार? यही अन्तर होता है मुगलों के शहजादों और मराठों के युवराज में।"

महाराज की मुखमुद्रा बहुत व्यथित दिख रही थी। उन्होंने अपने सहयोगियों से कहा, "दिलेरखान से जाकर मिलने का संभाजी का अपराध, एक प्रकार का अविवेक था। जवानी का पागल नशा था। अपने बारे में झूठो कल्पनाओं का एक दौरा था, इसमें कोई शक नहीं है। किन्तु उसी समय आपको यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि यदि मराठी स्वराज्य का गला घोंटने और माता भवानी का सिर फोड़ने की गद्दार भावना से शम्भूराजा सचमुच पागल हो गया होता तो क्या होता? बताइए, बताइए! हमारी अनुपस्थिति में सीधे गयगढ़ पर आकर बगावत का नारा लगा देते तो? यह भयानक समाचार पाने के बाद हमें घोड़ा दौड़ाते हुए यहाँ पहुँचने में कम-से-कम चार दिन लग जाते। तब तक कौन जाने कौन सी रामायण यहाँ घट चुकती?"

महाराज की बात सुनकर सभी प्रधान चुप हो गये। अब दरबार में कोई भी कुछ बोल नहीं रहा था। महाराज की मुखमुद्रा, उनके भावभरे स्वर की गम्भीरता कुछ अलग ही लग रही थी। उन्होंने दुखी स्वर में कहा—

"कुछ महीने पहले अपने दोनों पुत्रों संभाजी और राजाराम में राज्य का बँटवारा करने का मेरा विचार था। राज्य शिवाजी का हो या प्रभु रामचन्द्र का, राजा प्रधान होता है, शेष सभी अधिकारी और जनता मिट्टी के पुतले होते हैं। इसीलिए असंख्य बीमारियों ने सभी को ग्रस रखा है। आज स्वराज्य की पालकी उठाने के बदले लोग अपने-अपने स्वार्थों की टोकरियाँ ढोने में लगे हैं। परस्पर द्वेष और भेदभाव इतना बढ़ गया है कि किसी समय तोरणा किले पर किये गये मेरे मन्त्रघोष का एक भी स्वर आज बचा नहीं है। यहाँ हमारे अष्टप्रधानों में भी झगड़े हैं। एक

ओर ब्राह्मणों का दल है तो दूसरी ओर चाँद्रसेनी कायस्थ प्रभुवों का। यहाँ दरबार में अण्णाजी दत्तो पन्त और बालाजी आवजी का सुर नहीं मिलता। ऊँच नीच के भेदभाव से मराठा जाति हमेशा के लिए पंगु हो गयी है। ऐसे अविश्वासपूर्ण दूषित वातावरण में स्वराज्य का बँटवारा करना यानी संकट के कीचड़ में और गहरे धँसना है। भविष्य में जो कुछ होगा उसका निर्णय समय स्वयं करेगा।''

बड़े महाराज खड़े हो गये। प्रधानमंडल ने भी जाने की तैयारी की। उसी समय बड़े महाराज कुछ रुके। सभी की ओर देखते हुए अत्यन्त कातर स्वर में बोले—

''शम्भूराजा के जन्म के समय हम प्रतापगढ़ की लड़ाई में व्यस्त थे। जिस समय शम्भूराजा का जन्म हुआ पुरन्दर के किले पर घनघोर वर्षा हो रही थी। वह छोटा सा कोमल मांस का गोला सईबाई ने मुझे और जीजा माता को सौंप दिया। अपने इस नवजात शिशु को छोड़कर बीमारी से जर्जर उसकी माँ भगवान को प्यारी हो गयी। शम्भू को जब मैंने अपने सीने से लगाया तो उसने मेरी उँगली जोर से पकड़ रखी थी। तब से अब तक मैंने और मेरे राजसी वस्त्रों के भीतर छिपे उसके पिता ने उसे बहुत समीप से जाँचा परखा है। रानी साहिब सोयराबाई, अण्णाजी पन्त! आपको हमारे शम्भूराजा क्रोधी स्वभाव के लग सकते हैं। किसी को उद्यत भी लग सकते हैं। किन्तु उस बात को भी हमेशा स्मरण रखें जिसकी याद मुझे जीजा माता दिलाती रहती थीं, वे कहती थीं, ''शिवा! शम्भू के बाहर से दिखने वाले अनगढ़ और उद्यत स्वभाव पर कभी मत जाओ। वह खरे सोने की मुहर है। भविष्य में तुम्हारे हिन्दवी स्वराज्य पर कोई आपदा आएगी तो यही तुम्हारा पागल बेटा अपने प्राणों की बाजी लगा देगा किन्तु अपने सम्मान पर आँच नहीं आने देगा। इस बात को गाँठ बाँध लो।''

चार

भोगावती की घाटी और सुदूर विशालगढ़ की पगडंडियों से बादल उठते थे। म्हसाई के विस्तृत पठार से तैरते हुए आगे आते थे। उधर से आने वाले मेघों के आकार इतने चौड़े टेढ़े-मेढ़े और बिखरे हुए होते थे कि लगता था जैसे जटायु जैसा कोई विशाल पक्षी आकाश में उड़ानें भर रहा हो। कभी कभी फटे पंखों-सी मेघ-छायाएँ अशुभ के बीज बोती आती थीं और दैत्यों की भाँति आती थीं और भागते हुए

किले के ऊपर से निकल जाती थीं।

संक्रान्ति से एक दिन पहले शम्भूराजा की महाराज से भेंट हुई थी। उसके बाद तीन-चार दिन तक उनकी चर्चाएँ निरन्तर होती रहीं। महाराज रायगढ़ की ओर निकल चुके थे। शम्भूराजा को शिवाजी महाराज के हृदय के अमृतघट से नयी ऊर्जा प्राप्त हुई थी। किन्तु यद्यपि महाराज ने उन्हें पन्हालगढ़ की मूबेदारी सौंप दी थी तथापि उन्हें ऐसा लगता था जैसे वे वहाँ मेहमान हों। एक तो उनके साथ काम करने के लिए हिरोजी फर्जन्द, जनार्दन पन्त, सुमन्त जैसे अनुभवी लोगों के साथ सोमाजी बंकी और बहिर्जी नाइक जैसे नौसिखिये नियुक्त किये गये थे। फर्जन्द रिश्ते में शम्भूराजा के चाचा थे परन्तु उनमें अब पहले जैसा अपनापन नहीं था। किले का अन्य प्रबन्ध अष्टप्रधानों के निर्देश से चल रहा था। ऐसी स्थिति में शम्भूराजा को परायेपन का अनुभव हो रहा था।

ढाई तीन महीने पहले जब बड़े महाराज रायगढ़ के लिए प्रस्थान कर रहे थे। तब शम्भूराजा ने उनसे पूछा था—"पिताजी! हम कितने दिनों बाद वहाँ आयें?

"पिताजी, मुझे लगता है कि मेरे सम्बन्ध में आपके मन में जो संशय उत्पन्न हुआ था। वह अभी तक मिट नहीं पाया। क्या इसे हम अपना दुर्भाग्य मानें?" अपने को न रोक पाने के कारण शम्भूराजा ने कह दिया।

शिवाजी महाराज का मन गद्‌गद हो गया। उन्होंने कहा, "शम्भू बेटे! आपका हृदय कितना पाक साफ है? इसका साक्ष्य मुझे किसी और से नहीं लेना है। किन्तु रायगढ़ की जहरीली हवा अभी आपके स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं है। समय के साथ ये जहरीले काँटे अपने आप दूर हो जाएँगे। आपस की खाइयाँ पट जाएँगी, मन परस्पर जुड़ जाएँगे। इसके बाद हम सभी रायगढ़ में एकत्र होंगे। जगदीश्वर का अभिषेक करना है, आपस में बहुत कुछ बोलना है, करना है।"

उन चार दिनों में पिता पुत्र के बीच घटित दीर्घ संवाद शम्भूराजा के मानस पटल पर ताजा बना रहा। उसी बीच रायगढ़ पर राजाराम के यज्ञोपवीत संस्कार और विवाह के आयोजन का समाचार मिला। महाराज ने राजाराम का विवाह प्रतापराव की पुत्री के साथ निश्चित किया था। यह शुभ समाचार जब युवराज और युवराज्ञी को मिला तो वे बहुत प्रसन्न हुए थे। किन्तु विवाह समारोह का निमन्त्रण शम्भूराजा को नहीं आया। शम्भूराजा को पक्का विश्वास था कि आज नहीं तो कल निमन्त्रण अवश्य आएगा। किन्तु वैसा कुछ नहीं हुआ।

शम्भूराजा और येसूबाई ने भी रायगढ़ जाने का निश्चय किया था। इसी बीच रायगढ़ से हिरोजी फर्जन्द, जनार्दन पन्त और अनेक छोटे-बड़े मुंशियों तक के लिए निमन्त्रण आ गये। जनार्दन पन्त के पोते विवाह में जाने के लिए सजधज कर बैठे थे। दो-ढाई साल की छोटी भवानी दौड़ती हुई आयी और येसूबाई के गले से लिपटकर

पूछने लगी, "माताजी, रायगढ़ के विवाह में जाने के लिए वहाँ घोड़े सज रहे हैं। हम लोग कब निकलेंगे?"

शम्भूराजा ने छोटी भवानी को अपने सीने मे लगा लिया। अपनी रुलाई को छिपाते और भीतर-ही-भीतर पीड़ा के घूँट पीते हुए वे बोले, "बेटी, छोटे राजा की माता को हमारा वहाँ जाना पसन्द नहीं है।"

उन दिन पन्हाला से अनेक घोड़े सजधज कर रायगढ़ की ओर निकल गये। यदि दूसरे लोगों को भी निमन्त्रण न आया होता तो युवराज और युवराज्ञी विवाह समारोह के लिए रायगढ़ अवश्य चले जाते। किन्तु जानबूझकर दिखाया गया यह सौतेला व्यवहार बड़ा विषाक्त था। उस दिन शम्भुराजा बहुत उदास दिखाई पड़ रहे थे। नया रेशमी कुर्ता और मोतियों की माला पहने भवानी विवाह की खुशी में इधर उधर नाचती रही और अन्तत: वैसे ही सो गयी।

येसूबाई ने संभा को सँभालने का बहुत प्रयास किया। किन्तु यदि चिन्ता का भूत एक बार मन में प्रविष्ट हो जाता है तो निकलने का नाम ही नहीं लेता। वह खाली बर्तन की तरह बजता ही रहता है। शम्भूराजा ने विषाद भरे स्वर में पूछा, "येसू अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए लोग कैसे बदल जाते हैं? कैसे टूट जाते हैं सारे रिश्ते?"

"और क्या स्मरण हो रहा है, युवराज?"

"हो सकता है कि ये बातें आज किसी को अच्छी भी न लगें। किन्तु इस शम्भू के बचपन का आँगन था जीजा माता की गोद, और बचपन के चैतन्य का झूला थीं हमारी सौतेली माता सोयराबाई। वह ममत्व वह प्रेम कहाँ चला गया सब कुछ?"

युवराज की पीड़ा भरी स्मृतियों को सुनकर येसूबाई का भी मन व्यथित हो गया। उन्होंने दुखी मन से कहा, "सच है, कितने बदल जाते हैं दिन?"

रात खाने को दौड़ती थी। केवल दिन में शम्भूमहाराज अपने मित्रों के साथ पन्हाला के बाहर निकलते थे। पन्हाला के पश्चिम में तीन मील लम्बा म्हसाई का पठार था। उस पर आठ दस छोटी बड़ी पहाड़ियों के होने के कारण भीतरी भाग में अनेक खाइयाँ बन गयी थीं। काली चट्टानों के इन पहाड़ों की तलहटी में अनेक छुपने लायक जगहें बन गयी थीं। इनमें हजारों की संख्या में सैनिक रहते थे। इन सैनिकों को पन्हाला के बाहर का क्षेत्र दिखाई पड़ता था किन्तु गुफाओं की भाँति बनी जगह बाहर के लोगों को दिखाई नहीं देती थी। शम्भूराजा इन जगहों को 'बारद्वारी' कहते थे। वहाँ पहुँचकर शम्भूराजा अपने मित्रों से अभिमानपूर्वक कहते थे, "अपने सह्याद्रि के पहाड़ों-पत्थरों में ऐसी कितनी ही बारद्वारी खाइयाँ हैं। यह क्षेत्र बहुत ही कठिन और अजेय है। ये हमारे पहाड़ पत्थर अपना पेट चीर कर बड़ी

सहजता से हमें छिपा लेंगे। जहाँ सूर्य की किरणें तक नहीं पहुँच पातीं वहाँ इन पत्थर की दीवारों को भेद कर पापी औरंगजेब कैसे पहुँच सकेगा?"

रात को पलँग के अत्यन्त कोमल बिछौने पर भी शम्भूराजा को नींद नहीं आती थी। उनकी बेचैनी के कारण येसूबाई की चिन्ता भी बढ़ जाती थी। जब शम्भूराजा को कर्मचारियों और अधिकारियों की बात स्मरण होती तो उन्हें विषाद की जगह क्रोध आ जाता था। आवेश के स्वर में युवराज कहते, "आजकल हमारे फर्जन्द चाचा को भी जाने क्या हो गया है। जिस समय आगरा के महल से पिताजी निकले थे तब कुछ घंटों के लिए उन्होंने अपनी जगह पर फर्जन्द चाचा को सुला दिया था। क्योंकि फर्जन्द चाचा ठीक उन्हीं की तरह दिखाई देते थे। युवराज्ञी, उस समय मेरे बालमन को लगा था कि यदि ऐसा कोई प्रसंग घटित हुआ तो पिताजी की जगह को फर्जन्द चाचा भर देंगे। किन्तु आजकल तो हमें टालना ही उन्हें अच्छा लगता है।"

"जाने दें! आप अधिक चिन्ता न करें। यहाँ पन्हाला पर पिताजी के साथ खुलकर बातें हुई हैं न? उनका हृदय निर्मल है तो अन्य लोगों की चिन्ता क्यों करें?" येसूबाई ने कहा।

"नहीं, येसू राज्य के कार्य व्यापार को चलाने के लिए कर्मचारियों की नियुक्ति करनी पड़ती है। किन्तु अनेक बार बेड़ ही खेत खाने लगती है।"

चर्चा के दौरान येसूबाई ने कहा, "जब से सोयराबाई के छोटे भाई हंबीरराव स्वराज्य के सेनापति बन गये हैं तब से हमारी सासूजी को आसमान छोटा लगने लगा है। वे तो आजकल खुलकर कहती भी हैं कि—'शेर जैसा मेरा भाई स्वराज्य का सेनापति बन गया है तो बेटा राजाराम सिंहासन तक क्यों नहीं पहुँच पाएगा'?"

शम्भूराजा ने कुछ नहीं कहा। तब येसूबाई उनसे पूछने लगीं, "क्या स्वामी को यह बात सच लगती है? हंबीरराव उनकी इस प्रकार सहायता करेंगे?"

"क्यों नहीं, येसू? यदि करोड़ों की सम्पत्ति का राज्य अपने भांजे को मिल रहा हो तो कौन सा मामा ऐसा नहीं करेगा? आज नहीं तो कल हंबीर मामा अपनी बहन के पक्ष में जाएँगे ही। यह तो काले पत्थर की लकीर की तरह स्पष्ट है।"

विवाह का समारोह पूरा करके लोग शीघ्र ही पन्हाला आ गये। राजाराम के प्रति असीम ममता के कारण शम्भूराजा उनकी कुशल क्षेम पूछे बिना नहीं रह सके। लोगों ने बताया कि विवाह का कार्य समाप्त होने पर बड़े महाराज को प्रतापराव की बहुत याद आयी। वे बेचैन और विचलित हो गये। कुछ लोगों ने शम्भूराजा को बताया कि विवाह के ऐन मौके पर विवाह मंडप में ही राजाराम रुष्ट हो गये। यह कहकर कि—'हमारी शादी में शम्भू दादा को क्यों नहीं बुलाया गया?' क्रोध करने लगे। वे तो विवाह वेदी पर बैठने को तैयार ही न थे। हंबीर मामा ने उन्हें किसी

प्रकार यह कहकर तैयार किया कि 'शम्भूराजा आज ही पहुँचने वाले हैं।'' तब जाकर कहीं छोटे युवराज विवाह के लिए तैयार हुए।

यह कहानी सुनते सुनते शम्भूराजा का कलेजा तिलमिला रहा था। दूसरे दिन शम्भूराजा चन्दन के पीढ़े पर भोजन करने बैठे थे। उनके साथ जोत्याजी कमूरकर और अन्य मित्र भी साथ बैठे थे। इसी समय जनार्दन पन्त सुमन्त के घर से लड्डुओं से भरी टोकरी लेकर आये। येसूबाई ने तत्काल पहचान लिया कि यह रायगढ़ से आयी विवाह से सम्बद्ध भेंट है। उन्होंने आँखों के संकेत से टोकरी अन्दर रखने को कहा। किन्तु जो सेवक टोकरी लेकर आया था, उसकी समझ में कुछ नहीं आया। यह देखकर येसूबाई शीघ्रता से उठीं और टोकरी लेकर अन्दर जाने लगीं। उसी समय शम्भूराजा के कठोर शब्द उनके कानों में पडे—

''येसू क्या छिपा रही हो? क्यों छिपा रही हो? मंगल कार्य की मिठाई कहीं ऐसे छिपा कर रखी जाती है? ले आओ वे लड्डू और पूरी पंक्ति में बाँटो।''

शम्भूराजा का वह रुद्रावतार देखकर येसूबाई झटपट लड्डू बाँटने लगीं। शम्भूराजा ने टोकरी से एक लड्डू उठाकर येसूबाई के हाथ में रख दिया।

अपने आँसू को छुपाने का प्रयास करते हुए शम्भूराजा ने कहा ''जोत्याजी येसूबाई! लड्डू खाओ, खाओ, कडवे हों या मीठे, खाओ अब भले ही थाली में जहर के लड्डू परोसे तो भी उसे मीठा मानकर खाना होगा। येसू! अब हमारे सामने दूसरा कोई विकल्प रह गया है क्या?''

पाँच

फागुन की अमावस्या तिथि आयी। उस शाम को सूर्य डूबने से पहले ग्रहण ग्रस्त हो गया। पन्हालगढ़ से कुछ उत्साही लोग सूर्य ग्रहण देख रहे थे। शम्भूराजा ने उस ओर दृष्टि दौड़ाई। वे अपने महल के छज्जे पर खड़े थे। उसी समय येसूबाई वहाँ दौडती हुई आयीं। पीछे से युवराज का हाथ खींचते हुए कहने लगीं, ''अन्दर चलिए। कहते हैं कि ग्रहण के समय सूर्य की ओर देखना अशुभ माना जाता है।''

चार दिन बाद एक दिन शम्भूराजा अत्यन्त चिन्तित मुद्रा में महल की ओर लौटे। स्वागत के लिए येसूबाई दरवाजे पर खड़ी थीं। उन्हें देखकर येसूबाई ने चिन्तित स्वर में पूछा, ''आज सवारी इतनी गम्भीर क्यों है?''

"क्या कहते हैं?" येसूबाई ने साड़ी के पल्लू को अपनी ठुड्डी पर रखते हुए पूछा?

"इतना ही नहीं रायगढ़ पर प्रतिदिन कोई-न-कोई नयी घटना घट रही है। पिताजी की बीमारी का सोयराबाई ने बहुत लाभ उठाया है। समझ में नहीं आता कि उनके मस्तिष्क में क्या चल रहा है। उन्होंने रायगढ़ पर अपना शिकंजा कसने की शुरुआत कर दी है।"

"ऐसा? क्या कह रहे हैं?"

"हाँ! वहाँ पर पूरी तरह भय और आशंका का वातावरण फैल गया है। गढ़ के द्वार तो बन्द रहते ही हैं, अन्य ड्योढ़ियाँ भी शायद ही कभी खोली जाती हों। कड़ी नाकेबन्दी के कारण किले में किसी भी व्यक्ति का प्रवेश सम्भव नहीं है। येसू, अपने रायगढ़ पर कोई विलक्षण राजनीति रंग ले रही है।"

युवराज के चेहरे का रंग एकदम उड़ गया था। येसूबाई ने पलक झपकते ही युवराज का भाव पढ़ लिया। उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि यहाँ अधिक समय गँवाने की अपेक्षा यही अच्छा होगा कि वहाँ के लिए निकल पड़ें।"

बिना किसी दुविधा में पड़े आगे निर्णय लेना आवश्यक था। युवराज ने कवि कलश के लिए संगमेश्वर की ओर पत्र भेज दिया था। शृंगारपुर की ओर भी घोड़े दौड़ा दिये गये थे। युवराज ने अपने ससुर पिलाजीराव शिर्के को सावधान रहने का संकेत दे दिया था।

चैत्र की पूर्णिमा आयी। यह हनुमान जयन्ती का दिन था। युवराज भोर में ही उठे और स्नानादि से निवृत्त होकर हनुमान मन्दिर चले गये। युवराज और युवराज्ञी ने हनुमानजी की महापूजा की। किन्तु आज एक पोरिषा ऊँची हनुमानजी की पाषाण मूर्ति कुछ अलग ही दिखाई दे रही थी। हनुमानजी का सिन्दूर चर्चित मुख बहुत क्रुद्ध दिखाई पड़ रहा था। आज प्रात:काल से ही येसूबाई का मन बहुत अशान्त था। उन्हें भविष्य का कोई अनिष्ट भयभीत कर रहा था। उनका मन कहीं भी नहीं लग रहा था। दोपहर में उन्होंने घबराये स्वर में युवराज से कहा, "मुझे ससुरजी की बड़ी चिन्ता हो रही है।"

"पिताजी की तबीयत की इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो? वे तो सिद्ध पुरुष हैं। दीर्घायु होंगे ही और अभी उनकी उम्र ही क्या हुई है? पचास पूरा करने में भी अभी एक महीना बाकी है। मुझसे और तुमसे इस मराठी माटी को उनकी अधिक आवश्यकता है।"

सन्ध्या समय कवि कलश युवराज के महल में प्रविष्ट हुए। उनके पीछे ही संभाजी राजा के दो जासूस भी महाड़ और रायगढ़ वाड़ी से लौटकर आये। दोनों जासूस बहुत घबराये हुए दिख रहे थे। जासूसों ने घबराये स्वर में कहा, "हमें तो क्या, किसी को भी रायगढ़ में प्रवेश नहीं मिल रहा है। कुछ लोग कह रहे थे कि

महाराज को गुडघी रोग हो गया है।"

"कुछ लोग दबे स्वर में यह भी कह रहे थे कि सोयराबाई ने महाराज पर विष प्रयोग किया है।" दूसरे जासूस ने कहा।

जासूसों की खबरें संभाजी राजा शान्तिपूर्वक सुन रहे थे। गर्म साँस छोड़ने हुए उन्होंने कवि कलश से कहा, "कविराज स्वराज्य का चक्र उल्टी-सीधी दिशा में घूम रहा है। तैयार हो जाइए और सावधानी बरतिए ! पिताजी के स्वास्थ्य का ठीक-ठीक समाचार ले आने के लिए जितनी जल्दी सम्भव हो जासूसों को रायगढ़ भेजिए।"

चैती पूनम का दिन था। आठ दिनों तक तीव्र ज्वर से पीड़ित होने के कारण महाराज परलोकवासी हो गये।

शिवाजी महाराज के आकस्मिक निधन के कारण रायगढ़ विषाद में डूब गया। बुर्ज झुक गये। दरवाजों की कमानें झुकी हुई दिखने लगीं। गंगा सागर से लेकर काली हौज तक अनेकानेक तालाबों, बावड़ियों और झरनों का पानी फीका लगने लगा।

इस वज्राघात से मराठा राज्य की मानो कमर ही टूट गयी। यह भी प्रश्न था कि आसपास के शत्रु आक्रमण कर सकते थे। स्थिति समझ में नहीं आ रही थी। किले पर अष्टप्रधानों में कोई भी अनुभवी बुजुर्ग व्यक्ति मौजूद नहीं था। इसीलिए कान्होजी भांडवलकर, दादूजी सोमनाथ और महारानी सोयराबाई इस दुखद समाचार को छुपा रहे थे।

राजाराम के हाथों किसी प्रकार अन्त्येष्टि कर्म कराया गया। कारवार की ओर युद्ध पर निकले अण्णाजी दत्तो जल्दी ही वापस लौट आये। उनके पीछे ही नासिक त्र्यम्बकेश्वर से पेशवा मोरोपन्त भी वापस आ गये।

राज्य रावण का हो या राम का, प्रशासन के अधिकारी इस बात का ध्यान तो रखते ही हैं कि उनका स्थान और अधिकार सुरक्षित बना रहे। यही कारण था कि रायगढ़ के सचिव अण्णाजी दत्तो बहुत बेचैन थे। वे सोचते थे—"यहाँ जो भी होगा देखा जाएगा किन्तु यदि एकबार संभाजी गद्दी पर बैठ गये तो उनके लिए कुछ ठीक न होगा। उनके पक्ष वालों का भी ऐसा ही सोचना था। अण्णाजी की नींद उड़ गयी थी। आज तक उन्होंने संभाजी राजा से द्वेष करने और चार लोगों में उनके सम्बन्ध में अनाप-सनाप बकने का एक भी अवसर खाली नहीं जाने दिया था। अण्णाजी की तानाशाही प्रजा से प्राप्त धन के घोटालों, परस्पर जारी की गयी सनदें, गलत ढंग से संचित किया गया धन आदि की पूरी जानकारी शम्भूराजा को थी। इसीलिए अण्णाजी जब भी सामने पड़ते थे तो शम्भूराजा कहते थे, "अपश्यतः पश्चतामात्यान्पश्यते—यह देखो पैसा लूटने वाले अमात्य आ गये।"

शिवाजी महाराज का नारा सर्वकल्याण का था किन्तु उनके कुछ अधिकारियों का झुकाव अपना उल्लू सीधा करने की ओर था। इसीलिए वसूली की पूरी राशि सरकारी खजाने तक नहीं पहुँच पाती थी। यही नहीं, जब फ्रांसीसी, अँग्रेज पुर्तगाली आदि विदेशी अतिथि किले पर आते थे तो दरबारी अधिकारी ललचाये रहते थे कि महाराज के साथ उन्हें भी कुछ उपहार मिल जाय। बीस-बाईस वर्ष के तरुण शम्भूराजा को यह सब असह्य था। वे क्रोध से भन्नाये रहते थे परिणामस्वरूप अधिकारी उनके असन्तुष्ट रहते थे। शिवाजी महाराज के स्वर्गवास के बाद अन्य इष्ट मित्र दरबारी अण्णाजी से दबी जबान में पूछने लगे, "क्यों अण्णाजी अब शम्भूमहाराज गद्दी पर विराजमान होंगे तो आपका क्या होगा?"

अपने भविष्य की चिन्ता ने अण्णाजी को पागल कर दिया था। अण्णाजी अच्छी तरह जानते थे कि अपने बेटे को गद्दी पर बिठाने के लिए सोयराबाई शम्भूराजा का विरोध करेंगी किन्तु केवल बुद्धि और षड्यन्त्र के सहारे राज्य खड़े नहीं होते। राज्य के लिए बाहुबल की आवश्यकता होती है। स्वराज्य के सेनापति हंबीरराव मोहिते का पड़ाव कराड के समीप पड़ा था। अण्णाजी ने उन्हें तत्काल सन्देश भेजा, "आपके भांजे राजाराम साहब को गद्दी पर बिठाने का हमारा पक्का इरादा है। वे आपकी सात पीढ़ियों का उद्धार कर देंगे। किन्तु आपके सहयोग के बिना हम अपने प्रयत्न में सफल नहीं हो सकते।" सुदैव से दो ही दिनों में हंबीरराव का उत्तर आ गया—"मन्त्रीजी! आप स्वयं इतने ज्ञानी और तीव्र बुद्धि वाले हैं। स्वराज्य के किस वृक्ष मे कितने पत्ते हैं, इसका हिसाब किताब आपके पास है। आपके नेतृत्व में ही मेरे भांजे का कल्याण होगा। इस सिपाही को इससे अधिक और क्या चाहिए?"

हंबीरराव की लिखित सम्मति से अण्णाजी कुछ अधिक ही प्रसन्न हो गये। उनके पक्ष को इससे बड़ा बल मिला। किले पर आने के बाद वे सोयराबाई से दो तीन बार मिल चुके थे। अब तो उनकी जेब में हंबीरराव का पत्र भी आ गया था। इसीलिए महारानी सोयराबाई के महल की ओर जाते समय उनके पैरों में विलक्षण तीव्रता आ गयी थी।

महाराज की मृत्यु के बाद सप्त महल सूना सूना दिखाई देने लगा था। किन्तु रनिवास के बाहर एक महल के सामने अण्णाजी को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दासी द्वारा सूचित करने पर महारानी सोयराबाई थोड़े ही समय में उपस्थित हो गयीं। पति के स्वर्गवास से उनका मन टूट गया था। किन्तु अपने के भविष्य की चिन्ता में वे व्याकुल हो रही थीं। वर्तमान परिस्थिति से बिना विचलित हुए उन्होंने किले पर और किले के बाहर कड़ा बन्दोबस्त कर रखा था। अण्णाजी को महारानी का जोश, सामर्थ्य और इरादा अच्छी तरह मालूम था। इसलिए उन्हें पूरा विश्वास था

कि उनकी मनोवांछित योजना अवश्य पूरी होगी।

महारानी आकर सामने पलँग पर बैठ गयीं। अण्णाजी पन्त बड़ी आत्मीयता से अभिवादन करके कहने लगे—"महारानी! अब अधिक समय गँवाना किसी के भी लिए अच्छा नहीं है। बाहर प्रजा उलझन में पड़ गयी है, सेना भी बेहाल हो रही है। उन्हें यदि समय पर निश्चित आदेश दिया गया तो ठीक रहेगा।"

"इतनी शीघ्रता करनी होगी क्या?"

"शीघ्रता? महारानी महाराज की मृत्यु के समाचार को जितना ही छुपाया जा रहा है, यह समाचार उतनी ही तीव्र गति से बाहर फैल रहा है। इसके साथ ही सिंहासन को अधिक समय तक खाली रखना अराजकता को निमन्त्रित करना है।"

सोयराबाई और भी चिन्ताग्रस्त हो गयीं। उनकी वेदना छिप नहीं पायी। दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए उन्होंने पूछा—"किसको बिठाएँ सिंहासन पर? शम्भूराजा के बदले यदि हमने राजाराम को गद्दी पर बिठाया तो क्या प्रजा इसे स्वीकार करेगी? वरिष्ठ लोग इससे सहमत होंगे क्या?"

"आप ऐसे ऐन मौके पर इस प्रकार पीछे क्यों हट रही हैं? सोयराबाई को स्मरण दिलाते हुए अण्णाजी ने कहा, "आपने बड़े महाराज को बहुत समीप से देखा है। क्या उन्होंने कभी भी शम्भूराजा को राज्य देने की बात कही? क्या आपको ऐसा कोई प्रसंग स्मरण है?"

"किन्तु उन्हें राज्य नहीं देना है ऐसा भी तो महाराज ने कभी नहीं कहा।" अण्णाजी ने अपने रेशमी रूमाल से पसीने से तर चेहरे को पोंछ लिया। सोयराबाई को अधिक सचेत करते हुए उन्होंने कहा, "महारानी जी आप ही सोचिए बड़े महाराज के अन्तिम आठ दिनों से हवा किस दिशा में बह रही है?"

सोयराबाई कुछ सम्भ्रम के साथ बोलीं, "उन दिनों तो महाराज अर्धचेतन अवस्था में रहते थे। बीच-बीच में कुछ स्मरण करते हुए कहने लगते थे—'शम्भू को बुला लीजिए, मेरे शम्भू को बुला लीजिए'।"

"बुला लेने का मतलब यह थोड़े ही होता है कि गद्दी पर बिठाइए। मृत्यु के समय मनुष्य की जान छटपटाती है, बाल बच्चों की याद आती है। इससे अधिक इसमें कुछ नहीं है।"

अण्णाजी की इन बातों से सोयराबाई और भी दृढ़ दिखाई देने लगीं। अपने को न रोक पाने के कारण अण्णाजी चिन्तातुर होकर बोले, "महारानी जी कृपा कीजिए, जल्दी कीजिए। राज्यारोहण के निर्णय में आप विलम्ब कर रही हैं। महाराज की मृत्यु का समाचार छिपाने से बाहर लोगों में कुछ अलग ही शंका फैल रही है।"

"कैसी आशंकाएँ?"

इधर-उधर देखते हुए अण्णाजी ने धीमे कि तेज स्वर में कहा, "बाहर लोगों की जिह्वाएँ कुछ अधिक ही हिलने लगी हैं। वे कह रहे हैं कि राज्य के लोभ ने महारानी को अन्धा कर दिया है। उन्होंने ही महाराज को विष दे दिया है। सोयराबाई ने ही महाराज को मार डाला।"

इससे सोयराबाई बहुत क्षुब्ध हुई। किन्तु समय गँवाने से कोई लाभ न था। तत्परता से भविष्य का निर्णय लेना आवश्यक था।

उसी दिन दोपहर को निजी दरबार में रामचन्द्र नीलकठ, न्यायाधीश प्रह्लाद और राहुजी सोमनाथ जैसे विशिष्ट लोग चर्चा के लिए एकत्र हुए। चर्चा आरम्भ हुई। बहुत समय बीत जाने पर पेशवा मोरोपन्त पिंगले वहाँ नहीं आये। वैसे भी अण्णाजी को मोरोपन्त पर भी विश्वास न था। नासिक से रायगढ़ आने में भी पन्त को विलम्ब हुआ था। अण्णाजी पहले पहुँच गये थे। शम्भूराजा के विरोधियों को एकत्र करने का सुअवसर मिला था। इससे अण्णाजी मन ही मन बहुत प्रसन्न थे।

बैठक में मोरोपन्त के सम्मिलित न होने से कुछ लोगों की दृष्टि वक्र होने लगी। लोग सशंक होने लगे। अण्णाजी दत्तो बेचैन होकर उठ गये। वे अब तक मोरोपन्त के पास तीन बार दूत भेज चुके थे। किन्तु फिर भी वे नहीं आये। इससे अण्णाजी बहुत बेचैन हो गये। अन्ततः परिस्थिति के असह्य हो जाने पर उन्होंने राहुजी सोमनाथ से कहा, "अब आप उठिए। साथ में सेना लेकर मोरोपन्त की हवेली पर जाइए और उन्हें नजरबन्द कीजिए। इसके बिना उनके जैसे अभिमानी व्यक्ति का अहंकार उतरेगा नहीं।"

इसी समय दुबले-पतले गेहुँए रंग के मोरोपन्त पेशवा सामने आकर खड़े हो गये। अण्णाजी के कुछ शब्द उनके कानों से टकरा गये थे। इसी से मोरोपन्त की भूरी आँखें कुछ तिरछी हो गयी थीं। उन्होंने शम्भूराजा के विरोध में एकत्र इन दिग्गजों को देखा और कुछ पीछे हटकर नम्रतापूर्वक नीचे बैठ गये।

"बोलो भाइयो, बोलो! समय बहुत कठिन है। सीमा पर शत्रु खड़ा है। ऐसे समय में विवेकपूर्ण निर्णय लेना ही श्रेयस्कर होगा।" अण्णाजी पन्त जोर-जोर से कहने लगे, "अभी एक वर्ष पहले ही जो व्यक्ति मुगलों से जा मिला, जिसने अपने भूपालगढ़ जैसे मजबूत किले को खोद खोदकर गिराया, जिसने अपने पिता के राज्य में गद्दारी की, क्या ऐसे स्वराज्य द्रोही के हाथों में यह स्वराज्य सौंपना है?"

अण्णाजी दत्तो के सारे तर्क सभी को बेजोड़ लगे। किन्तु अपनी धीमी और शान्त आवाज में अण्णाजी को रोकते हुए मोरोपन्त ने प्रश्न किया—"हम कहते हैं थोड़ा धीरज रखिए इतनी उतावली किस बात की?"

"उतावली?" नीचे बैठे अण्णाजी उठकर खड़े हो गये और कहा, "क्यों? आप शम्भूराजा के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं क्या?"

अण्णाजी ने बहुत चिल्ल-पों मचाई किन्तु प्रधान मंडली में से कोई भी उनके सहयोग के लिए तत्काल तैयार नहीं हुआ। अण्णाजी भी कच्चे गुरु के चेले न थे। वे बड़े उस्ताद थे। स्वराज्य के नाम पर उन्होंने बहुत धन जोड़ रखा था। इसीलिए अन्य प्रधान सोचते थे कि शम्भूराजा के सामने यदि अण्णाजी का कच्चा-चिट्ठा खुलता है तो खुलने दो, हमें उससे क्या?

प्रधानों और अधिकारियों का उदासीन प्रतिसाद अण्णाजी को बहुत अखरा। वे दाँत से ओंठ काटते हुए और अपनी नुकीली मूँछों पर हाथ फेरते हुए बोले, "चलो हमें दिखाई पड़ रहा है कि आप लोगों को शम्भूराजा की चाटुकारिता करना ही अच्छा लगेगा। आप लोग खुशी से उनकी चाकरी करो। मुझे तो यहाँ एक पल के लिए भी चैन नहीं आएगा। उसकी अपेक्षा हाथ में कटोरा और लाठी लेकर काशी यात्रा करना मुझे अधिक अच्छा लगेगा।"

अण्णाजी ने फिर से एकबार सब पर नजर डाली। किन्तु किसी का भी समर्थन न मिलने से निराश हो गये। महारानी सोयराबाई की समझ में आ गया कि बैठक में अण्णाजी अकेले पड़ रहे हैं। उन्हें लगा कि राजमाता होकर भी उनके सारे मनोरथ टूट जाएँगे! राजमाता बनकर दरबार में बैठना तो दूर उन्हें अपने साथियों का साथ भी नहीं मिल रहा था। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो यात्रियों के साथ से छूटकर अकेले काशी यात्रा को निकली हों। फिर दरबारियों को आड़े हाथों लेती हुई बोलीं, "अण्णाजी पन्त क्या केवल अपने भले के लिए यह सब कह रहे हैं? आज महाराज के स्वर्गवासी होने से स्वराज्य के जहाज के डूबने का समय आ गया है। ऐसे समय में भले-बुरे की चिन्ता न करने वाले शम्भूराजा के पाप में सने पैर यदि सिंहासन पर पहुँच गये तो कैसे अनर्थ होगा? इसकी कल्पना किसी ने की है क्या?"

स्वयं महारानी ने नेतृत्व सँभाला तो बैठक में हवा की दिशा ही बदल गयी। वैसे सभी कर्मचारी शम्भूराजा से किसी-न-किसी कारण दुखी थे। इसलिए अब उन सभी को शम्भूराजा में कोई-न-कोई दोष दिखाई देने लगा। जो शान्त स्वभाव के थे, वे भी मौका देखकर शम्भूराजा की शिकायत करने लगे। न्यायाधीश प्रह्लाद निराजी ने कहा, "बड़े महाराज मात्र पुत्रमोह के कारण उन्हें बुरा नहीं कहते थे। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि उनके जैसे उग्र स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए राज्य सँभालना बहुत कठिन है।"

"इसीलिए कहता हूँ जल्दी कीजिए। औरंगजेब जैसा शत्रु दरवाजे पर खड़ा है। आक्रमण होने से पहले राजाराम के हाथों में सारा कार्यभार सौंप दीजिए और निश्चिन्त हो जाइए। इसी में हम सब का कल्याण है।" अण्णाजी ने सुझाव दिया।

सभी को [illegible] [illegible]के महारानी कड़े शब्दों में कहने लगीं—"घर की बात को

दरबार में कहना उचित नहीं है। किन्तु समय ऐसा आ गया है कि चुप बैठना पाप होगा। हमारे सौभाग्य अलंकार बड़े महाराज ने इस विषय पर मुझसे अनेक बार चर्चा की है। उनके विचार से शम्भू उग्र स्वभाव का ऐसा तरुण है जिसके भीतर अनेक दुर्गुणों और व्यसनों का भंडार भरा है। वह व्यवहार में उद्धत और गैरजिम्मेदार है। औरंगाबाद और बहादुरगढ़ पर रहकर आने के बाद उसका खान पान, आचार-विचार, मुसलमानो की विलासी आदतें आदि उसमें भर गयी हैं। यदि ऐसी उद्धत और विलासी प्रवृत्ति का युवक गद्दी पर आ जाय तो राज्य टूट जाएगा, डूब जाएगा।''

सोयराबाई और अण्णाजी की कहानियों से बैठक का रूप ही बदल गया। राजाराम को गद्दी पर बिठाकर उनके नाम से कार्यभार सँभालने का निर्णय लिया गया।

मोरोपन्त की भूरी आँखें चमक उठीं। उन्होंने शान्त स्वर में कहा, ''हमने तो राजाजी का नमक खाया है। उन्हीं की सौगन्ध खाकर स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि ज्येष्ठ पुत्र के जीवित होते हुए क्रिया कर्म के लिए उसे न बुलाना, उत्तराधिकार में रोड़े अटकाना, धर्मशास्त्र के नियमों को नकारना जैसी बातें मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है।''

''सुनिए, यह किसी एक का नहीं पूरे राजमंडल का निर्णय है।'' अण्णाजी ने क्रुद्ध होकर कहा।

''भाइया आप जैसा भी चाहे वैसा निर्णय लेने का आपको अधिकार है। परन्तु इस पाप कर्म में आप मुझे न घसीटें।''

मोरोपन्त की इस भूमिका से सभी के चेहरे का रंग उड़ गया। महारानी सोयराबाई तो कुछ अधिक ही बेचैन हो उठीं। अण्णाजी को लगा कि उनके अब तक के सारे प्रयत्नों पर पानी फिर जाएगा। अण्णाजी ने क्रोधावेश में सन्तप्त होकर कहा, ''पेशवा, आपको इस बात का ध्यान है कि आप क्या बोल रहे हैं?''

''अण्णाजी पन्त आप अपने दिमाग को शान्त रखें तो ठीक होगा।'' अपने स्वर को बिना जरा भी विचलित करते हुए मोरोपन्त ने कहा, ''राजाराम का विरोध करने का कोई कारण नहीं है। परन्तु भाइयो, यह समय कठिन परीक्षा का है। कल यदि दिल्लीश्वर औरंगजेब की फौज पानी के पहाड़ की तरह आकर अपने राज्य पर बरस गयी तो उसकी नाक में नकेल कौन डालेगा?''

''वाह! मोरोपन्तजी, इसका मतलब हम सभी नामर्द हैं और सिर्फ आपके शम्भूराजा अकेले बड़े बहादुर हैं।'' अण्णाजी ने उपहास करते हुए कहा।

''हाँ, हाँ, शम्भूराजा ही सच्चे बहादुर हैं। मराठी राज्य में उनकी बराबरी

दूसरा कोई नहीं कर सकता।" मोरोपन्त ने बड़े विश्वास से साफ साफ कहा, "यहीं मत रुकिए जरा बाहर भी झाँक कर देखिए कि वहाँ क्या चल रहा है? वहाँ किले के बाहर मुख्य द्वार के पास पाचाड़, रायगढ़वाड़ी से लेकर महाड़ तक हजारों की संख्या में प्रजा एकत्र हो रही है। प्रजा जोरदार माँग कर रही है कि—'शम्भूराजा को ही गद्दी पर बिठाइए।' सेना में तो युवराज का ही हुक्म चलता है। समय की माँग को पहचानिए, अपनी बुद्धि को ठिकाने रखिए।"

मोरोपन्त के स्पष्ट कथन से अण्णाजी के पक्षधर घबरा गये। इसी समय एक गद्दी पर बैठे हुए बालाजी पन्त चिटणीस आगे बढ़े बौर उत्साहित होकर कहने लगे, "अब सच ही कहना है तो "

अण्णाजी पन्त ने बालाजी को बीच में ही रोकते हुए कहा, "रुकिए, आप कुछ मत बोलिए। हमें सब मालूम है।" उन्होंने मोरोपन्त की ओर रुख करके कहा, "तो पन्त आपको सेना का डर है। आप भूल गये क्या? सोयराबाई के छोटे भाई हबीरराव मोहिते हमारे सेनापति हैं।

"किले पर जो करोड़ों का रत्न भंडार और खजाना है वह हमारे अधिकार में है। सेनापति हमारे हैं। महारानी भी हमारे पक्ष में हैं। यह सब छोड़कर पन्तजी आप जाएँगे कहाँ? उस कवि कलश के पास?" अण्णाजी ने कहा।

अण्णाजी एक मजे हुए अभिनेता की भाँति अपनी भूमिका निभा रहे थे। बात करते करते कभी अपनी आँखों को वर्तुलाकार घुमाते कभी माथे की पगड़ी को उतार कर जमीन पर फेकते। इस बीच उन्होंने दो बार अपनी शिखा को खोला और फिर से बाँधा। उन्होंने राजाराम के गद्दी पर बैठने के फायदों को फिर से दुहराया। संभाजी के दुर्व्यवहार, बुरी आदत और क्रोधी स्वभाव का पहाड़ा एक बार फिर दोहराया। एक बार पुन: कवि कलश के सम्बन्ध में उन्होंने कहा—

"अरे, एक बार शम्भूराजा के उस बदमाश कवि कलश को रायगढ़ पर आने तो दो। वह जादूगर जब भैंस की गीली खाल पर बैठकर नराधम की तरह जारण मारण क्रिया करता रहेगा, मन्त्र तन्त्र के आवेश में सुई और आलपिन से खोंसी काली गुड़िया की तरह थिरक थिरक कर नाचने लगेगा तब तुम लोगों का मस्तिष्क ठिकाने पर आएगा।"

कवि कलश से जुड़े अज्ञात भय से सभी घबरा गये। अन्त में बड़ी मेहनत के बाद अण्णाजी ने अपना वांछित फल अपनी झोली में डाल लिया। उनके प्रस्ताव पर अन्तत: मोरोपन्त ने भी हामी भर दी।

अण्णाजी पन्त और महारानी सोयराबाई ने अन्तत: चैन की साँस ली। सारी राजनीति अन्त में उनके मनोनुकूल हो गयी थी। उन्हें लगा कि अब सब ठीक हो गया है। राजाराम का राज्यारोहण प्राय: निश्चित हो गया था। परन्तु सभी के सामने

गम्भीर प्रश्न यह था कि शम्भूराजा का क्या किया जाय? उनको बन्दी बनाये बिना एक दिन भी राज्य चलाना सम्भव नहीं था।

"लिखिए पन्त, अभी का अभी लिखिए।" महारानी सोयराबाई ने कहा, "जनार्दन पन्त सुमन्त को आदेश भेजिए कि वे युवराज को पकड़कर वहीं पन्हाला के बन्दीगृह में डाल दें। उस काँटे को व्यर्थ में यहाँ ले आने की आवश्यकता नहीं है।"

मोरोपन्त ने सभी की ओर दृष्टि घुमाई फिर मीठी मुस्कान बिखेरते हुए उन्होंने अण्णाजी से कहा, "अण्णाजी पन्त! आप अपनी उतावली में राज्य के कानून भी भूल गये हैं क्या? कोई भी किलेदार या सूबेदार बालाजी आवजी चिटणीस के हस्ताक्षर और उनकी मुद्रा देखे बिना हुक्म की तामील नहीं करेगा।"

मोरोपन्त की बात सुनकर अण्णाजी का सिर घूमने लगा। उन्हें पसीना छूट गया। सोयराबाई की दृष्टि बैठक में बालाजी आवजी को ढूँढ़ने लगी। परन्तु बालाजी बैठक से कब के जा चुके थे। यह बात ध्यान में आते ही सभी चिन्तित हो गये।

छह

महल के चिराग जल रहे थे। रनिवास से थोड़ी दूरी पर जो जंगली झाड़ियाँ और पेड़ पौधे थे उनसे होकर जोर की हवा चल रही थी। हिरकणी बुर्ज से झींगुरों की किर्रऽऽ किर्रऽऽ सुनाई पड़ रही थी। रनिवास के बाहर बैठक में केवल अण्णाजी पन्त और सोयराबाई बैठे थे। दोनों बहुत तनावग्रस्त थे। अण्णाजी दत्तो ने रुष्ट होकर कहा, "इस बालाजी चिटणीस के गले यह निर्णय कौन उतारेगा? उन्हें तो पहले से ही शम्भूराजा से बहुत लगाव है।"

सोयराबाई बेचैन हो गयीं। उन्होंने कहा, "उन्हें आने के लिए सन्देश भेजा है न? मुझे विश्वास है कि मेरा आदेश वे अवश्य मानेंगे।"

थोड़ी ही देर में ताड़ की तरह लम्बे बालाजी पन्त बैठक में प्रविष्ट हुए। उन्होंने झुककर सोयराबाई का अभिवादन किया। सोयराबाई ने राज्य की कठिनाइयों का पहाड़ा बड़े मीठे शब्दों में पढ़ा और कहा—'चिटणीस! आपके हस्ताक्षर का पत्र जाना चाहिए।'

बालाजी ने कहा, "जब तक हमारी जान में जान है, यह सम्भव नहीं है।"

"किन्तु यदि आपकी मुहर के साथ पत्र नहीं जाएगा तो कोई भी किलेदार शम्भूराजा को कैद करने का साहस नहीं करेगा।"

सोयराबाई ने चिटणीस से बार-बार प्रार्थना की। किन्तु सोयराबाई की प्रार्थनाओं और धमकियों का बालाजी आवजी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। महारानी से क्षमायाचना करते हुए उन्होंने बड़े आदर से कहा, "हम इस प्रकार कैसे लिख सकते हैं? हमने तो सरकार का नमक खाया है। संभाजी राजा तो हमारे स्वामी हैं।"

"फिर भी हम जैसा कहेंगे वैसा हुक्मनामा आपको लिखना पड़ेगा।" अण्णाजी और सोयराबाई ने कठोर स्वर में कहा।

"आप हमारे ऊपर व्यर्थ दबाव न डालें। हमारी ओर से यह पाप कभी न होगा।" बालाजी ने स्पष्ट रूप से अपनी अस्वीकृति व्यक्त की। महारानी जी यह सारा मामला हमारी परम्पराओं के विरुद्ध है।

बालाजी पन्त आदेश लिखने के लिए तैयार नहीं हुए। वे अपने निर्णय से टस से मस नहीं हो रहे थे।

रात समाप्त होने को आयी। समय बीतता जा रहा था। किन्तु बालाजी कुछ भी सुनने को तैयार न थे। तब सोयराबाई ने अत्यन्त कठोर स्वर में पूछा, "चिटणीस! युवराज को कैद करने का आदेश आप लिख रहे हैं या नहीं?"

अण्णाजी दत्तो मर्म पर आघात करते हुए बोले, "बालाजी पन्त अब आप बूढ़े हो चुके हैं। आपके निलोबा, खंडोबा जैमे दो छोटे बच्चे हैं। वे फिर से जंजीरे पर जाकर चाकरी तो नहीं करेंगे। उनकी रोटी तो रानी जी के ही हाथ में है। क्यों व्यर्थ में टाँग अड़ा रहे हो? अपने ही हाथों अपने भोजन में मिट्टी मिला रहे हो?"

हुक्मनामा लिखे बिना अण्णाजी और महारानी उठने को तैयार ही न थे। रात्रि के बीतने के साथ बालाजी पर भावनात्मक और मानसिक दबाव बढ़ रहा था। वे हाथ जोड़कर धीर-गम्भीर स्वर में बोले, "आप लाख समझाइए किन्तु ये बातें हमारी समझ में नहीं आतीं। यह पाप मुझसे नहीं होगा।"

बातें करते-करते बालाजी के सामने अतीत का दृश्य प्रस्तुत हो गया। राजापुर में बेरोजगारी का दिन काटते हुए बालाजी नामक युवक का वह पत्र याद आया। उस पत्र की लिखावट याद आयी जिसने शिवाजी महाराज का मन मोह लिया था। उस स्मृति के सगुण-साकार होते ही बालाजी पन्त गद्‌गद हो गये। आँखों के आँसू पोंछते हुए उन्होंने कहा, "जिन अक्षरों ने मेरे जैसे अनाथ को हिन्दवी स्वराज्य के चिटणीस पद की ऊँचाई तक पहुँचाया, उन्हीं अक्षरों से धोखा कैसे करूँ? साक्षात् शिवपुत्र संभाजी राजा को कैद करने का हुक्म लिखने का पाप कैसे करूँ? नहीं, नहीं ऐसा नहीं होगा। अण्णाजी पन्त आप भले ही मेरे हाथों की अँगुलियों को काट डालिए पर ऐसे गलत काम के लिए हमारी कलम नहीं चलेगी।"

आधी रात को अण्णाजी दत्तो ने बालाजी को ही गिरफ्तार कर उनकी जायदाद

को जब्त कर लेने की धमकी दी। परन्तु बालाजी उस धमकी से भी नहीं डरे। अन्त में अण्णाजी ने अपनी कूटबुद्धि का उपयोग किया। मध्यमार्ग का सुझाव दिया। तब आँखों के आँसू पोंछते हुए बालाजी ने कहा, "ठीक है, अण्णाजी! आप का इतना हठ है तो मेरे बेटे से आवजीबाबा के अक्षरों में पत्र लिखवाइये। परन्तु इस प्रकार की गद्दारी भी मुझे ठीक नहीं लगती। शम्भूराजा हमारे ऊपर कितना विश्वास करते हैं। उनके हृदय को, मन को कैसा लगेगा?"

सात

शम्भूराजा की दृष्टि जब सामने वाली सज्जा कोठी की ओर जाती तो उन्हें सामने वाली प्रचंड खाई दिखाई पड़ती। उन्हें तत्काल शिवाजी महाराज का स्मरण हो आता। पिता की चिन्ता में उनके पेट में बल पड़ने लगते।

आज उन्हें लग रहा था कि सज्जा कोठी ने मन को घेर लिया है। इसलिए उन्होंने अपना घोड़ा बाहर निकाला। कवि कलश और जोत्याजी केसकर के घोड़े उनके साथ दौड़ते हुए निकले। ये तीनों घोड़े दौड़ाते हुए बाघ दरवाजे की ओर गये। समीप के एक बुर्ज के पास पत्थर की एक बड़ी शिला देखकर तीनों व्यक्ति वहीं रुक गये। दूर की ढलान से एक सर्पिल पगडंडी ऊपर आती थी। रास्ते के दोनों ओर झाड़ियों के अनेक झुरमुट बिखरे पड़े थे। ऊपर खड़े शम्भूराजा की दृष्टि सहज भाव से नीचे की ओर गयी। उन्हें निचली पगडंडी से दो व्यक्ति ऊपर की ओर आते दिखाई दिये। खड़ी चढ़ाई पर चढ़ते घोड़ों का दम फूलता था इसलिए दोनों अपने अपने घोड़ों की लगाम पकड़े धीरे-धीरे किन्तु बड़े इतमीनान से ऊपर चढ़ रहे थे।

बीच का एक घास का मैदान समाप्त हुआ। पहाड़ का अधिकांश हिस्सा चढ़कर वे दोनों ऊपर पहुँच रहे थे। अब उन दोनों की आकृतियाँ स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। संभाजी राजा अपनी पारखी नजर से उन दोनों को देखने लगे। उनमें से एक था खंडोजी नाइक और दूसरा गणोजी कावले। वे दोनों ही मँजे हुए जासूस थे। पन्हाला, विशाल गढ़ से रायगढ़ तक उनका निरन्तर आना-जाना लगा रहता था। युवराज को पक्का विश्वास था कि वे आज निश्चित रूप से रायगढ़ की ओर से आ रहे होंगे।

किसी तरह चढ़ाई समाप्त हुई। दोनों आराम दम लेते हुए सामने देखने लगे।

उनके सामने शम्भूराजा और कवि कलश भयंकर दैत्य की तरह खड़े दिखाई पड़े। वे दोनों घबरा गये। उनके पैर काँपने लगे। वे क्या बोले, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तब शम्भूराजा ने ही उनसे पूछा, "कल दोपहर को ही रायगढ़ से निकले हैं न?"

"हाँ जी।" खंडोजी ने किसी प्रकार उत्तर दिया।

खंडोजी और गणोजी की चोर नजर काँप उठी। खंडोवा ने अपनी कमर में बँधा दुपट्टा खोला। उसमें से निकालकर एक पत्र शम्भूराजा को दिया। शम्भूराजा ने वहीं पर रेशमी गाँठ खोली। खड़े खड़े ही पत्र को पढ़ा। एक कल्पित आह्लाद के अतिरिक्त उसमें कोई और बात नहीं थी। किन्तु उसकी लिखावट हमेशा की तरह बालाजी आवजी चिटणीस के हाथों की नहीं थी। आवजी की लिखावट उनके अक्षर को सभी दरबारी और युवराज अच्छी तरह पहचानते थे।

"सरकार हमें जल्दी है, हम निकलते हैं।" ऐसा कहकर दोनों गुप्तचर बाले किले की ओर चलने को हुए। शम्भूराजा को पूरा मामला कुछ विचित्र सा लग रहा था। उन्होंने उन गुप्तचरों को रोका—"अरे! रुको, रुको आपको इतनी भी क्या जल्दी है?"

"दिन के उजाले में ही किलेदार को मिलना है।" खंडोजी ने सूचित किया। शम्भूराजा ने अपनी भेदक दृष्टि दोनों पर डाली। उन्हें अँगुलियों के संकेत से अपने पास बुलाया। दोनों जासूस यन्त्रवत् वापस लौटे। भय से काँपते हुए उन्होंने युवराज का पुनः अभिवादन किया और खड़े हो गये। दोनों को पसीना छूट रहा था। शम्भूराजा ने डाँट कर पूछा, "कावले! अपनी कमर में क्या खोंसा हुआ है?"

"कुछ नहीं जी! कुछ नहीं। यह तो अपनी प्रतिदिन की डाक है। किलेदार के नाम से भेजी गयी है।" गणोजी बात धैर्यपूर्वक कर रहा था। किन्तु उसके थरथराते पैर उसे धोखा दे रहे थे।

संशय अधिक गहराने पर युवराज ने अपने साथियों को संकेत किया। कवि कलश और जोत्याजी ने जासूसों के सारे कागजात हस्तगत कर लिए। उसमें एक पत्र किलेदार विट्ठल त्र्यम्बकजी के नाम था और दूसरा हवलदार बहिर्जी नाइक के नाम।

शम्भूराजा की दृष्टि पत्र के गूढ़ शब्दों पर घूमने लगी।

"यहाँ स्थिति बहुत चिन्ताजनक है। जैसा बन्दोबस्त होगा वैसी सूचना आपको देते रहेंगे। परन्तु किसी भी स्थिति में शम्भूमहाराज को किले से बाहर न निकलने देना। युवराज को बन्दी बनाकर बड़ी सावधानी से रहिए। यहाँ का कोई समाचार महाराज तक नहीं पहुँचना चाहिए। आगे समय पर यथायोग्य आदेश मिलते रहेंगे।"

शम्भूराजा के क्रोध का पारा एकदम चढ़ गया। उनकी सन्तप्त आँखों का सामना करने का साहस जासूसों में नहीं था। घबराहट के कारण वे और भी सहम

गये। युवराज ने उनसे कठोर शब्दों में पूछा, "सच-सच बताइए वहाँ रायगढ़ पर क्या चल रहा है? मुझे बन्दी बनाने के षड्यन्त्र का सूत्रधार कौन है? हमारी पूजनीया माताजी या निष्ठावान अण्णाजी दत्तो?" उसी समय शम्भूराजा को अपने पिताजी का स्मरण हो आया। उन्होंने कातर स्वर में पूछा, "बताइए हमारे पिताजी की कैसी स्थिति है?"

युवराज ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। दोनों जासूसों का धैर्य छूट गया। दोनों शक्तिहीन होकर धरती पर गिर पड़े। दोनों बैठ गये। उन्होंने मन में सोचा कि वे स्वराज्य के भावी अधिकारी से एक बुरी खबर छुपाकर भयानक अपराध कर रहे हैं। झूठ बोलने के अपराध का बोध होते ही वे छोटे बच्चों की तरह रोने लगे। शम्भूराजा के पैर पकड़कर दया की भीख माँगने लगे—"सरकार, आप बड़े लोग हैं परन्तु आपके झगड़ों में हम गरीबों की जान आफत में है।"

शम्भूराजा ने गश्त लगाने वाले सैनिकों को संकेत किया। वे दौड़ते हुए आए। दोनों जासूसों को वहीं पर कैद कर लिया गया। युवराज जल्दी ही दरबार में आ गये। पन्हाला के किलेदार बिट्ठल त्र्यम्बक, हवलदार बहिर्जी नाइक, जनार्दन पन्त सुमन्त जैसे अधिकारियों को तत्काल दरबार में बुला लिया गया। गुप्त पत्र को सबके सामने पढ़ा गया। जासूसों की तलाशी ली गयी। शम्भूराजा ने अनुभव किया कि इस सम्पूर्ण घटना के पीछे कोई बड़ा राजनीतिक षड्यन्त्र है। शम्भूराजा ने जासूस खंडोवा से पूछा, "खंडोवा, अब बिना कोई नाटक रचे, जो है, उसे सच सच बताओ? हमारे पिताजी का स्वास्थ्य कैसा है?"

जासूस भय से काँपने लगे। जो खबर उन्होंने अब तक छुपाई थी वह इतनी भयंकर थी कि उसे बताते हुए उनका गला रुँध गया। वे जोर-जोर से रोते हुए कहने लगे, "युवराज ईश्वर ने बड़ा भारी आघात किया है। बड़ा धोखा हो गया है। बड़े महाराज हमें अनाथ छोड़कर चल बसे।"

इस भयंकर समाचार से मानो सभी पर आसमान टूट पड़ा। पूरे रजवाड़े में तहलका मच गया। सभी दहाड़ मारकर रोने लगे। विट्ठल त्र्यम्बक जैसे लोग जो षड्यन्त्र में सम्मिलित थे, उन्हें आँसू रोक पाना कठिन हो गया। सेवक, नौकर, दास-दासी सभी दुख के सागर में डूब गये। इस समाचार का शम्भूराजा पर कुछ अलग ही प्रभाव पड़ा। वे न दहाड़ मारकर रोये और न ही क्रुद्ध हुए। परन्तु जैसे अपने स्थान से कोई पाषाण मूर्ति गिर जाय, वैसे ही शम्भू महाराज भी गिर गये। लगा जैसे उनके पैर थे ही नहीं। वे मूर्छित हो गये। उनकी आँखें खुली थीं, कि शरीर में कोई हरकत नहीं थी।

सभी लोग घबराहट में इधर उधर भागने लगे। कटा हुआ नींबू और प्याज

का छिलका उनकी नाक के पास रखा गया। बहुत देर बाद एक घायल शेर की भाँति दहाड़ते ऊँची आवाज में चिल्लाये—'पिताजी'। कवि कलश के साथ अनेक सरदार उन्हें सँभालने में लगे थे। परन्तु शम्भूराजा एक भयंकर तूफान की तरह उठ खड़े हुए। अपनी सशक्त भुजाओं से सभी को ढकेलते हुए उन्होंने छलाँग लगाई। दोनों भुजाओं में न समाने वाले मोटे गोलाकार पत्थर को पकड़कर उस पर अपना सिर धुनते हुए वे करुण चीत्कार करने लगे—'पिताजीऽऽ, पिताजीऽऽ।' ऐसा लगा कि वह पत्थर का खम्भा न होकर पंढ़रपर के पांडुरंग ही खम्भे के रूप में अवतरित हो गये हों और शम्भूमहाराज उनके कन्धे पर सिर रखकर रुदन कर रहे हों। यह दृश्य सभी को मर्माहत कर गया।

बहुत देर बाद युवराज कुछ शान्त हुए। उन्हें जलपात्र मे पानी पिलाया गया। भावना का पहला ज्वार उतर गया। जासूस रायगढ़ का समाचार बता रहे थे। वह बता रहा था कि रायगढ़ की नाकाबन्दी किस प्रकार की गयी थी। नाकाबन्दी के कारण आसपास की जनता किस प्रकार बेचैन हो उठी थी, हनुमान जयन्ती के दिन दोपहर के समय किस प्रकार महाराज सबको छोड़कर चल बसे। जासूस की बातें सुनकर आसपास एकत्र लोग विलाप करने लगे।

"और राजा साहब की उत्तर क्रिया किसने की?" कवि कलश की आवाज गूँजी। इस धारदार प्रश्न को सुनकर संभाजी महाराज ने भी जासूसों की ओर घूमकर देखा।

"काल हौद के समीप कुछ लोग एकत्र हुए थे। वहीं पर चन्दनकाष्ठ और बेलकाष्ठ से मन्त्राग्नि दी गयी।"

"परन्तु अन्तिम क्रिया किसके हाथों की गयी?"

"राजाराम के हाथों सम्पन्न हुई। उनके साथ सिगणापुरवासी साबाजी भोसले को बिठाया गया था। उन्हीं की सहायता से राजारामसाहब ने सारी क्रिया पूरी की।"

"क्या आपके शास्त्री पंडित और उद्दंड कर्मचारी इस बात को भूल गये कि पिता की उत्तर क्रिया का अधिकार शास्त्रों ने केवल ज्येष्ठपुत्र को दिया है?" शम्भूराजा ने प्रश्न किया।

भगवान के गले की मोतियों की माला के धागे के जीर्ण हो जाने के कारण टूट जाने से जिस प्रकार एक-एक मोती गिरने लगता है उसी प्रकार शम्भूराजा की आँखों से अश्रुपात होने लगा। किन्तु दूसरी ओर इस अन्याय के विरोध में उनका मन विद्रोह कर रहा था। उन्होंने प्रश्न किया—

"अन्तिम संस्कार का यह निर्णय हमारी उपेक्षा करके राज्यकर्मचारियों और माताजी ने कैसे लिया? क्या शिवाजी महाराज का बेटा शम्भू जीवित नहीं था? या

अपने जन्मदाता, देवतुल्य पिता को मुखाग्नि देने के लिए उसके हाथ अपवित्र हो गये थे? एक सामान्य गड़रिया या किसान समझने पर भी मुझे सूचित करना चाहिए था। इससे कम-से कम इस अभागे संभा को अपने महाप्रतापी पिता की चिता पर चम्पा के चार फूल चढ़ाने का अवसर मिल गया होता। मैं कृतार्थ हो गया होता।"

रायगढ़ पर

एक

"बहुत दिनों मे कोई लड़ाई नहीं हुई। इसलिए मारा शरीर शिथिल हो गया है।" ऐसा कहते हुए हंबीरराव ने ठंडे पानी का लोटा उठाया और मुँह से लगाकर गरारा किया। उन्होंने कोयना नदी के किनारे उन्होंने नीचे को देखा। मूर्योदय के माथ ही नदी के किनारे हंबीरराव की बैठक चल रही थी। पाम ही किंजर वृक्षों का घना झुरमुट था। दमरी ओर आधे कोस के फामले पर उनकी मेना का पड़ाव था। बहुत दिनों मे एक ही जगह पर रुके रहने के कारण घोड़े, गधे, हाथी आदि सभी जानवर अलसाये हुए खड़े थे।

कल रात बड़ी देर से हंबीरराव अपनी तलेबीड़ की हवेली मे सेना में वापस लौटे थे। प्रतिदिन 2000 दंड बैठक निकाले बिना हंबीरराव के शरीर में म्फूर्ति नहीं आती थी। दंड निकालते ममय उनका तरीका कुछ अलग ही था। जब दंड निकालते समय जमीन पर नाक रखकर शरीर को ऊपर उठाते थे तो कोई पन्द्रह सोलह वर्ष का लड़का उनकी दोनों एड़ियों पर खड़ा हो जाता था। दंड करते समय वह लड़का हंबीरराव की लँगोट के माथ बँधी चाँदी की करधनी को पकड़े रहता था। अपनी पीठ पर यह बोझा सँभाले घंटाभर दंड निकालते रहते थे। इस दीर्घ व्यायाम से जब उनका सीना फूल आता और उनके शरीर से पसीने की धार बहने लगती तब कहीं उन्हें हल्कापन अनुभव होता था।

हंबीरराव ने अपनी तलवार के बल पर बड़ी प्रसिद्धि अर्जित की थी। उनके नाम के साथ एक कीर्ति वलय बन गया था। कृष्ण और कोयना के तट के दूध पर पले पुमे हंबीरराव सागौन के तने की तरह लम्बे थे। उनकी कड़ी ऐंठी मूछें थीं, गर्दन मोटी और मजबूत थी। पूरा शरीर मशक्त था। उनका व्यक्तित्व रोबदार दिखाई पड़ता था। नेसरी की लड़ाई में प्रताप राव गूजर अपनी जिद के कारण अपने साथियों के माथ बहलोलखान के विशाल मेना सागर में कूदकर डूब गये थे। पीछे बच गये

थे हंबीरराव। उन्होंने अपने सहयोगियों का साथ लिया। उन्होंने रूपाजी भोसले और आनन्दराव मकाजी को विशेष रूप से सावधान किया। प्रतापराव की मृत्यु के समाचार से वे निढाल हो गये थे। उन्होंने पीछे हट रही फौज को दृढ़ता से एकत्र किया। जिस तरह शिकारी जंगली सूअरों को आगे की ओर खदेड़ देते हैं, उसी तरह हंबीरराव ने बहलोलखान की सेना को बीजापुर की ओर खदेड़ दिया। शिवाजी महाराज के सौतले भाई व्यंकोजी राजा ने साम्राज्य के साथ गद्दारी की थी। तब हंबीरराव ने बड़े साहस के साथ तंजौर की सीमा तक व्यंकोजी का पीछा किया था और उन्हें पराजित किया था। हंबीरराव की प्रशंसा में शिवाजी महाराज कहा करते थे—"एक हंबीरराव के बदले में फिरंगी हमें किलों को ध्वस्त करने वाली पचास तोपें दें तो भी हम उन्हें अपने से अलग नहीं करेंगे।"

इस समय सम्पूर्ण मराठी राज्य का ध्यान रायगढ़ के गृहकलह पर केन्द्रित हो गया था। ऐसे समय में हंबीरराव जैसे शक्तिशाली सेनापति के साथ होने या न होने से दोनों पक्षों में निर्णायक अन्तर पड़ने वाला था। इसलिए दोनों पक्षों से हंबीरराव के पास निषेदन के पत्र आ रहे थे। कल रात तलबीड की हवेली से बाहर निकलते समय हंबीरराव की पत्नी रखमाबाई ने साग्रह कहा था। विदाई के लिए एकत्र हुए सभी मित्रों और सम्बन्धियों की भावना को व्यक्त करते हुए रखमाबाई ने कहा था—"सोयराबाई का पत्र आ चुका है। खून का रिश्ता जन्मभर के लिए उपयोगी होता है। बालक राजाराम तो आपका भाजा ही है। राजाराम को गद्दी दिलाने के लिए आप उसके पीछे बटवृक्ष की तरह खड़े रहें।" यह आग्रह रखमाबाई बार बार दुहरा रही थीं। हंबीरराव के चेहरे पर मन्द मन्द मुस्कान बिखरी हुई थी।

रात देर से जब हंबीरराव अपने पड़ाव पर लौटे उनके मुंशी ने पन्हालगढ़ से आया लिफाफा उनके सामने रखा। मशाल की लाल पीली रोशनी में हंबीरराव ने संभाजी राजा का पत्र पढ़ा—

"क्षत्रिय कुलावंतस श्री राजा शम्भू छत्रपति की ओर से प्रधान सेनापति हंबीरराव मोहिते को दडवत प्रणाम।

मामा साहब रिश्ते में मैं भी आपका भांजा हूँ। भोसले और मोहिते घराने का सम्बन्ध तीन पीढ़ियों का है। पूज्य पिताजी ने प्रधान सेनापति का मुकुट आपके सिर पर क्यों रखा? सोयराबाई का भाई होने के कारण नहीं बल्कि इसलिए कि महाप्रतापी प्रतापराव गूजर की खाली जगह भरने के लिए आप जैसे एक नर रत्न की आवश्यकता थी। अब पिताजी के चले जाने से हम लोग अनाथ हो गये हैं। जैसा योग्य समझें, निर्णय लें। आप स्वयं सक्षम हैं। मामा जी! और अधिक क्या लिखूँ। बस यही प्रार्थना है कि हमारे सम्बन्ध में कोई दरार न पड़ने पाये।"

हंबीरराव का व्यायाम पूरा हो गया था। अब वे पचपन वर्ष के हो रहे थे किन्तु

उनका जोश और उत्साह यौवन की देहरी पर खड़े तरुणों को भी लज्जित करने वाला था। व्यायाम समाप्त होते ही उन्होंने नदी की ओर छलाँग लगाई। दस-पन्द्रह कदम वे दौड़ते हुए गये, फिर नदी के तट तीन-चार पोरसा गहरे पानी में मल्लाहों के बच्चों की तरह छलाँग लगा दी। नदी की धारा में आड़े तिरछे हाथ मारते हुए प्रसन्नता से तैरते रहे। फिर कछार चढ़कर गीले वस्त्रों में तट पर पहुँच गये। उनके मन में उठने वाली विचार तरंगें अभी भी शान्त नहीं हो रही थीं। उनके नौकर चाकर वस्त्र आदि लेकर खड़े थे। जैसे मेले में कोई पहलवान सजधज कर खड़ा होता है, उसी प्रकार उन्होंने वस्त्रालंकार धारण किया। उनका घोड़ा दुलकी चाल से दौड़ता हुआ पड़ाव पर आ पहुँचा। रास्ते में शिलेदारों और कर्मचारियों का अभिवादन स्वीकार करते हुए हंबीरराव बड़े रौब से अपने डेरे में प्रविष्ट हुए। रूपाजी भोसले और आनन्दराव मकाजी वहाँ बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहे थे।

रूपाजी ने निवेदन किया, "सेनापति जी, रायगढ से अण्णाजी और मोरोपन्त कल रात में ही उंब्रज पहुँच चुके हैं।"

"किसलिए?" हंबीरराव ने अनजान की तरह प्रश्न किया। "आप से मान मनौवल करने के लिए। आप के साथ पन्हाला जाकर शम्भूराजा बेडियाँ पहनाना चाहते हैं।" आनन्दराव ने उन लोगों की योजना की जानकारी दी।

यह सुनकर हंबीरराव कुछ बोले नहीं। अपनी पहलवानी की नटखटी वे नदी के किनारे ही छोड़ आये थे। फौजी छावनी में समाचार पढ़ते हुए, सैनिकों को आदेश देते हुए उनमें एक अलग ही दबदबा दिखाई पड़ता था।

हंबीरराव को इसके पहले लिखे गये शम्भूराजा के एक पत्र की याद आयी। उन्होंने पत्रों का बस्ता खोला। उनकी दृष्टि लिफाफे पर घूमने लगी।

उन्होंने पत्र पढ़ा—"क्षत्रिय कुलावंतस श्री राजा शम्भू छत्रपति की ओर से राजश्री हंबीरराव मोहिते प्रधान सेनापति को।

तीर्थरूप पिताजी का महानिर्वाण हो जाने से हमारे सिर पर तो आसमान ही टूट पड़ा। ऐसी महाविपत्ति के समय एक ही अच्छी बात हुई। मृत्यु के तीन महीने पूर्व पन्हालगढ़ पर पिताजी का लम्बा साहचर्य मिला। चार-पाँच दिन तक उनके साथ निरन्तर विचार-विमर्श होता रहा। मन में जो दुविधा या किन्तु-परन्तु था, वह मिट गया। मुगलों की ओर चले जाने से मेरे अविवेक को भी पिताजी ने क्षमा कर दिया। तीर्थ रूप पिताजी का मन पहाड़ जैसा विशाल था। उन्होंने मुझे क्षमा ही नहीं किया मुगलों के विरुद्ध नया मोर्चा खोलने का आदेश भी दिया। उन्होंने मेरी जिम्मेदारियाँ भी समझाईं। पिताजी के अचानक चले जाने का कष्ट तो असह्य है। स्मरण होते ही आँखें छलकने लगती हैं। किन्तु फिर भी माँ भवानी की कृपा से पुनः कमर कसकर खड़ा होने का मैंने दृढ़ संकल्प किया है।

खेद है कि कुछ मन्त्री और अधिकारी तिरछी चाल चल रहे हैं। उनके दिल में कपट है। वे बालक राजाराम को गद्दी पर बिठाने का घातक विचार माताजी के सिर में भर रहे हैं। अपने स्वार्थ के कारण राजकुल में झगड़ा कराना चाहते हैं। मामाजी! मै आप का सगा भांजा भले न होऊँ किन्तु हिन्दवी स्वराज्य के निर्माता शिवाजी महाराज का पुत्र तो हूँ। मैं एक दिन उस पापी औरंगजेब का काल अवश्य बनूँगा।

बादशाह औरंगजेब बहुत उन्मत्त हो गया है। जजिया कर का हथियार हमारे सिर पर चलाना चाहता है। पिताजी के संकल्पों को पूरा करने की दिशा में हम अग्रसर हैं। इस अभियान में हमें आपके आशीर्वाद की अपेक्षा है।''

शम्भूराजा के संवेदनशील शब्दों ने उस दोपहर में हबीरराव को बहुत प्रभावित किया था। इसी समय उन्हें समाचार मिला कि मराठी राज्य के महत्त्वपूर्ण प्रधान उनसे मिलने आये है। हंबीरराव ने खिडकी का पर्दा हटाकर बाहर झाँका। तपती धूप में एक धूप छाँही घोडा आगे बढ रहा था। उस पर सवार मोरोपन्त पेशवा बहुत थके दिखाई पड़ रहे थे। धूप में उनकी कनपटी और नाक कुछ अधिक लाल हो गयी थी। जबरदस्ती घोडे पर बिठाये गये बच्चे की तरह वे बेचैन हो रहे थे। पीछे-पीछे काले कलूटे और गठीले शरीर वाले कहार दौडते आ रहे थे। अपने कन्धों पर रखी भारी भरकम पालकी के कारण वे बेदम हो रहे थे। पालकी में हृष्ट पुष्ट देह वाले अण्णाजी दत्तो बैठे थे। पालकी में अधिक समय से बैठे रहने के कारण वे भी उकता गये थे।

हबीरराव ने अपने डेरे से अपने विश्वासपात्र लोगों को भी हटा दिया। अब वहाँ पर अण्णाजी पन्त, मोरोपन्त पेशवा और सेनापति हंबीरराव के अतिरिक्त और कोई भी नहीं था।

अण्णाजी और मोरोपन्त को लगा कि आरम्भ में ही कुछ गड़बड़ हो गयी है। इसलिए वे मूल विषय को आरम्भ नहीं कर रहे थे। यह स्थिति हबीरराव की समझ में आ गयी। इसलिए हंबीरराव ने स्वयं ही आरम्भ किया—''पन्त जिस उद्देश्य से बड़ी अपेक्षा लेकर आप लोग इस डेरे में आये हैं, मुझे नहीं लगता कि आपकी वह मनोकामना पूरी हो सकेगी।''

आरम्भ में ही ऐसी स्पष्ट नकार मिलेगी, ऐसी तो उन दोनों ने कल्पना तक न की थी। लोग कहते हैं कि पहलवानों का दिमाग घुटने में होता है। इसलिए उन लोगों ने सोचा था कि दाव-पेंच लगाकर आरम्भ में ही हंबीरराव को चित्त कर देंगे। अपनी इच्छा के अनुसार उन्हें तैयार करके सेना के साथ पन्हालगढ़ की ओर भगा देंगे। परन्तु आरम्भ में ही उन्हें मुँह की खानी पड़ी तो उनका मुँह देखने लायक हो गया। अण्णाजी दत्तो ने क्रोध से कहा—''ऐसा कैसे? आपने लिखित वचन दिया है

कि जहाँ हम जाएँगे वहीं आप भी जाएँगे। हंबीरराव हमारी बात सुनिए, आपका ही भांजा गद्दी का अधिकारी होगा। इसमें आपका भी हित है और हमारा भी।"

"नहीं, यह सम्भव नहीं है।" हंबीरराव ने दृढ़ता से कहा। अण्णाजी बहुत क्रुद्ध हुए। हंबीरराव पर दबाव डालते हुए पूछने लगे—"नहीं, नहीं का क्या मतलब? आप राजाराम के मामाजी हो या कंस मामा हो?

अण्णाजी की इस उद्दंडता से हंबीरराव जरा भी नाराज नहीं हुए। उन्होंने शान्त स्वर में कहा—"देखिए अण्णाजी! रिश्तेदारी की बात आपसे अधिक मेरे लिए लाभदायक है। आप तो सरस्वती के पुजारी हैं। आपको हमारे जैसा सिपाही क्या कहेगा। मुझ जैसे खुद्दार व्यक्ति की समझ में तो इतना ही आता है कि भगवान की पालकी के साथ लोग इसीलिए चलते हैं कि गुलाल के कुछ कण उन पर गिरें और वे पवित्र हो जायँ। सच है न? किन्तु शिवाजी महाराज जैसे महापुरुष के साथ जन्मभर बने रहने पर हमने कुछ नहीं सीखा क्या? हमने अपना भांजा और अपना हित ही पहचाना? आज हमें सन्तुलित दिमाग से इस पर विचार करना चाहिए।"

"क्या मतलब?" दोनों ने अपनी आँखें फैला दीं?

हंबीरराव ने कहना आरम्भ किया—"आज शिवाजी महाराज जैसा हमारा तारणहार अचानक चला गया। धूल में गिरी उनकी तलवार हमें पुकार रही है। शिवाजी के सच्चे उत्तराधिकारी के रूप में उस तलवार की पवित्रता की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह कि भांजे को राजगद्दी और बहन के राजमाता पद की शहद लगी उँगली मुझे न चटाइए। हमारी बहन को किसी चीज की कमी नहीं पड़ेगी। यदि किसी चीज की आवश्यकता पड़ी तो उसके लिए थैलियाँ खुली रखने में उसका भाई निश्चित रूप से समर्थ है। किन्तु थोड़ी गहराई से विचार करें, अपने मन को साक्षी बनाकर सोचें तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आज की इस बिगड़ी हुई परिस्थिति में यदि शिवाजी महाराज का नामोनिशान सुरक्षित रखना है तो संभाजी राजा को सिंहासन पर बिठाने के अतिरिक्त हमारे पास दूसरा विकल्प ही नहीं है।" न्यायाधीश अन्तिम फैसला सुनाने और उसके सत्य निर्णय को सुनने के बाद धूर्त लोगों की जैसी दशा होती है, वैसी ही दशा अण्णाजी और मोरोपन्त की हुई। वे निरुपाय बेचारों की तरह दिखाई देने लगे। अण्णाजी ने सिर की पगड़ी उतारकर गोद में रख ली। वे हंबीरराव को क्रुद्ध आँखों से देखने लगे। जैसे उन्हें डाँट रहे हों। मोरोपन्त भी अस्वस्थ हो गये। उन लोगों को कुछ सूझ नहीं रहा था। तब उनकी आँखों में झाँककर, अपनी आँखें वर्तुलाकार घुमाते हुए हंबीरराव कहने लगे—"आपने शम्भूराजा को दरबार में अपने पिता के आगे सिर झुकाकर विनम्रता से बैठे हुए ही देखा है। किन्तु वही शम्भूराजा जब ज्वालाओं का लिबास धारण कर उतरता है, तलवार लेकर शत्रु पर टूट पड़ता है तो उस अत्यन्त तेजस्वी

रूप को आप जैसे अभागों ने कभी देखा ही नहीं है। शिवाजी महाराज जब युद्ध के लिए निकलते थे तो दस हजार सैनिकों की टुकड़ी का नेतृत्व शम्भूराजा को सौंपते थे। शम्भूराजा भी ऐसे उपलब्ध अवसरों को गौरवान्वित करते थे। युद्ध क्षेत्र में उनकी उपस्थिति ही दस हजार सैनिकों के बराबर होती है। युद्ध क्षेत्र में जब वे घोड़े को ऐड़ लगाकर जोश में नचाते हैं, तो सामान्य सिपाही के शरीर में ही दस हजार हाथियों का बल पैदा हो जाता है। हाथी-घोड़े जैसे मूक जानवरों को भी बहादुरी के पंख लग जाते हैं। बड़े महाराज गुजर गये इसलिए हमारे शत्रुओं में जोश आ गया है। कल मराठी राज्य के दरवाजे पर औरंगजेब का आसमानी सुल्तानी संकट दस्तक देने लगा तो क्या होगा? ऐसे समय में रायगढ़ के सिंहासन पर ईश्वर की कृपा से प्राप्त शम्भूराजा जैसा वीर सिपाही ही राजा के रूप में चाहिए।''

''क्या पागल जैसी बात करते हो, हंबीरराव?''

''अरे आपका भांजा रायगढ़ का राजा...''

''छोड़िए अण्णाजी! भांजा तो क्या, भांजा तो क्या, मेरा अपना बेटा भी होता तो उसे परे हटाकर इस मराठा मावले ने शम्भूराजा को ही सिर झुकाया होता।''

इन दोनों को यह अनुमान कतई नहीं था कि हंबीरराव के मुख से शम्भूराजा की प्रशंसा में ऐसा पवाड़ा सुनने को मिलेगा। यही कारण था कि अण्णाजी को कुछ सूझ ही नहीं रहा था। उनका गला सूख गया। उन्होंने लोटे से गटागट पानी पिया। तब कुछ सन्तुलित हुए। और शान्त स्वर में हंबीरराव से कहा—''अपने दीवानजी को तत्काल मेरे सामने बुलवाइए।'' अण्णाजी की इच्छानुसार दीवान रायभान सबनिस डेरे में प्रस्तुत हुए। अण्णाजी ने पुनः बड़ी सूक्ष्मता से हंबीरराव की ओर देखा। पन्त के मस्तिष्क में उठे भीषण तूफान को काबू में रख पाना उनके लिए कठिन हो रहा था। अण्णाजी ने गरजकर कहा—''फौज के दीवान! इस समय कानूनन राजाराम साहब मराठी राज्य के राजा हैं। उनके कानूनी मन्त्री की हैसियत से मैं अण्णाजी पन्त प्रभुणीकर और राज्य के पेशवा मोरोजी पन्त, हम दोनों आपको आदेश देते हैं कि राजद्रोह के अपराध में हंबीरराव मोहिते को हथकड़ी लगाओ। उनकी मुश्कें बाँधकर इसी वक्त खींचते हुए रायगढ़ के बन्दीगृह में ले जाओ।''

अण्णाजी ने एक भयानक तोप को पलीता लगाया था। किन्तु वार खाली गया। उनके हुक्म की तामील करने के लिए दीवान अपनी जगह से हिला भी नहीं। इस पर अण्णाजी का चेहरा मिट्टी के बर्तन की तरह काला पड़ गया। अत्यन्त क्रुद्ध होकर मोरोपन्त के साथ वे बाहर निकल गये। उनके साथ रायगढ़ से आयी पाँच हजार की फौज बाहर खड़ी थी। किन्तु इस फौज के चारों ओर हंबीरराव की बीस हजार सेना का सागर फैला हुआ था। फिर भी अपनी सेना की ओर जाते हुए अण्णाजी गरजे—

''चलो रे! डेरे में घुसकर हंबीरराव की मुश्कें बाँध लो।'' तब तक हंबीरराव

दरवाजे पर आकर खड़े हो गये। अण्णाजी और मोरोपन्त का हुक्म बजाने एक भी सिपाही आगे नहीं बढ़ा। उन दोनों की स्थिति भरे बाजार में हाथ नचाने वाले पागल जैसी हो गयी। हंबीरराव ने उप सेनापतियों को अपने समीप बुलाया और धीमे स्वर में कहा, "रूपाजी! आनन्दराव! इन दोनों को पकड़ लीजिए। इन्हें लेकर आज रात तक पन्हाला पहुँच जाइए। शम्भूमहाराज के सामने यह उपहार प्रस्तुत कीजिए। उनसे कहिए की कल भोर में पहली किरण के साथ यह हंबीरराव पन्हाला पर उपस्थित हो जाएगा।"

दो

कार्यों के पहाड़ सामने खड़े थे। अनेक प्रकार के कार्यों का झमेला भी बहुत अधिक था। असहयोग के कारण स्वराज्य की बिगड़ी हुई अवस्था को पुन: ठीक करना था। शम्भूराजा पन्हाला पर बहुत सावधान रहते थे। उन्हें नींद नहीं आती थी। उनकी आँखें जलती मशाल की तरह लाल हो गयी थीं। वे अपने निजी महल में आधी रात तक व्यस्त थे। इसी बीच उनके सेवक रायाजी ने अन्दर आकर सूचना दी कि रूपाजी भोसले मिलने के लिए आये हैं। ऐसा कहकर रायाजी बाहर चला गया। शम्भूराजा ने अपना कमरबन्द ठीक किया। गले में पहिनी कौड़ियों की माला से खेलते हुए शम्भूराजा बाहर के दालान में आ गये। रूपाजी ने झट से उठकर शम्भूराजा का अभिवादन किया और बड़ी प्रसन्नता से ऊँची आवाज में बोले, "महाराज हम जीत गये। आपको कैद करने वालों के ही हाथों में बेड़ियाँ पड़ गयीं।"

"मतलब?"

आज दोपहर अण्णाजी पन्त और मोरोपन्त को कराड के समीप हंबीररावजी ने कैद कर लिया। उनकी मुश्कें बाँधकर उन्हें ही कर पन्हालगढ़ आये हैं। कल सुबह तक हंबीरराव भी आपकी सेवा में उपस्थित होंगे।

"उत्तम! बहुत अच्छा! कैदियों को बन्दीखाने में बन्द कर दो। उन पर कड़ी नजर रखो। बाकी सब कल देखेंगे।" शम्भूराजा ने बड़ी प्रसन्नता से कहा।

रायगढ़ पर कहने के लिए कोई भी राजा हो किन्तु स्वराज्य की जनता शम्भूराजा को ही सच्चा उत्तराधिकारी मानती थी। इसलिए पन्हालागढ़ पर उनसे मिलने के लिए सवारों और सैनिकों का निरन्तर ताँता लगा रहता था।

अभी-अभी मिला समाचार कुछ साधारण नहीं था। राजनीतिक दृष्टि से

अण्णाजी पन्त और मोरोपन्त की गिरफ्तारी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। स्वराज्य के सेनापति शम्भूराजा से मिलने आ रहे थे। कल सारी सेना महाराज से आकर मिलेगी। इस एक घटना से भीतरी एवं सरहद पार के शत्रुओं को एक जबरदस्त झटका मिलने वाला था। अधिक सोच-विचार किये बिना शम्भूराजा ने येसूबाई को जगा दिया। पैरों को पेट में सिकोड़े भवानीबाई सोई थीं। उन्हें हल्के हाथों से अलग करके येसूबाई उठ गयीं। शम्भूराजा को अचानक देखकर उन्हें कुछ घबराहट हुई। राजा ने सुखद समाचार उन्हें सुनाया। समाचार सुनकर साम्राज्ञी तरोताजा हो गयीं। मन हल्का हो गया। उन्होंने धीरे से पूछा, "कल हंबीरराव राजा से कहाँ मिलेंगे?"

"यहीं, निजी महल में।"

"ऐसा कैसे महाराज! हंबीरराव मामा का यथोचित स्वागत करने के लिए कल पन्हाला पर दरबार लगाइए।"

"कल्पना तो अच्छी है। किन्तु येसू! अपना सिंहासन तो वहाँ रायगढ़ पर है।"

"उसकी चिन्ता महाराज को नहीं करनी है। आपके जैसा बहादुर राजा जहाँ खड़ा हो जाता है, वहीं सिंहासन निर्मित हो जाता है।"

रात को ही सभी को खबर भेज दी गयी दूसरे दिन पन्हाला पर एक छोटा-सा दरबार लगाया गया। सेनापति हंबीरराव युवराज के पक्ष में सम्मिलित हो रहे हैं। यह सुनकर चारों ओर आनन्द छा गया। दरबार सभी अधिकारी और कार्यकर्ता हंबीरराव के रास्ते में पलकें बिछाए खड़े रहे।

इसी समय लम्बे शरीर वाले हट्टे-कट्टे हंबीरराव ने बड़ी शान से दरबार में प्रवेश किया। उनकी फौजी पगड़ी में मणियों की माला चमक रही थी। उन्होंने बड़े आदर भाव से संभाजी महाराज को झुककर अभिवादन किया। महाराज भाव-विभोर हो गये। हंबीरराव ने झट से उनकी कलाई पकड़ ली। दोनों एक दूसरे के गले से लिपट गये।

शम्भूराजा को भी पक्का विश्वास नहीं था कि राजाराम का पक्ष और अपनी सगी बहन का हठ ठुकराकर हंबीरराव शम्भूराजा से आकर मिलेंगे। अपने आचार-व्यवहार से युवराज और युवराज्ञी को लज्जित किया था। शम्भूराजा ने गद्‌गद होकर कहा, "मामा साहब आपके आने से हमें बेहद खुशी हुई है। इसके बाद भी मराठी राज्य के सुरक्षा की तलवार आपके ही हाथों में रहेगी।"

"शम्भूराजा आप मेरी ओर केवल रिश्तेदारी दृष्टि से ही न देखें। शिवाजी महाराज मुझसे हमेशा कहते थे—'भोजन के आसपास जैसे रंगोली बनाई जाती है उतनी ही सीमा में रिश्तों की मर्यादा रखिए'।"

हंबीरराव की आत्मीयता और निष्ठा से शम्भूमहाराज और येसूबाई दोनों अभिभूत हो गये। शम्भूराजा ने अपने गले का रत्नहार निकालकर हंबीरराव के गले

में डाल दिया। मूल्यवान वस्त्रालंकार भेंटकर उनका बड़ा सम्मान किया। उसी समय शम्भूराजा ने कहा, "मामाजी, आज के दरबार में एक अन्य बुजुर्ग व्यक्ति का सम्मान होना है।"

"कौन है?"

"मामा साहब, अपने हिरोजी फर्जन्द चाचा। वे आते ही होंगे।" तरुणाई की मस्ती में हमसे कुछ भूलें न हो जाएँ, इसलिए आप जैसे अनुभवी बुजुर्गों की सलाह से ही आगे का रास्ता तय करना है। ऐसा हमने निश्चित किया है। हमारे सलाहकारों में फर्जन्द चाचा भी एक हैं।

दरबार का काम काज चल ही रहा था कि गोवा से पुर्तगालियों के वकील रामजी नाइक ठाकुर दरबार में उपस्थित हुए। उन्होंने पोर्चगीज वाइसराय रातानियो पाईस द सांदे का पत्र शम्भूमहाराज को दिया। पुर्तगाली वाइसराय ने शिवाजी महाराज के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया था। इसके बाद इच्छा प्रकट की थी कि गोवा के पुर्तगालियों और मराठों में भाईचारा बना रहे। पत्र पढ़ते हुए सागर की नीली-नीली लहरें शम्भूराजा की ओर संकेत करने लगीं। एक ओर गोवा का अधिक वर्षा वाला किनारा, दूसरी ओर टेढ़ी मेढ़ी खाड़ियों, घने पेड़ पौधों से भरा कोंकण का तट। जिसमें पैरों में चुभने वाले साँपों के जहरीले काँटे। जैसे पैरों में गोखरू अटक जाता है, वैसे ही मुरूड के पास का जंजीरा शम्भूराजा को अस्वस्थ करने लगा।

दरबार में हंबीरराव ने स्मरण दिलाया—"महाराज! आपका यहाँ पन्हाला पर अधिक समय गँवाना उचित नहीं है। शीघ्र से शीघ्र रायगढ़ जाकर वहाँ व्यवस्था देखना उचित होगा।"

"हंबीर मामा! इतनी उतावली की आवश्यकता नहीं है। यहाँ सेना इकट्ठा करने का काम हो ही रहा है। आप देख ही रहे हैं, फ्रेंच, अँग्रेज, पोर्चगीज आदि देश विदेश के पत्र यहीं आ रहे हैं। उन्हें भी थोड़ा समय देना चाहिए।"

दोपहर में मोरोजी पन्त और अण्णाजी दत्तो को शम्भूमहाराज के सामने प्रस्तुत किया गया। मोरोपन्त की कलाइयाँ सिर्फ डोरी से बँधी थीं किन्तु अण्णाजी दत्तो के हाथों में फौलादी बड़ी बड़ी बेड़ियाँ पड़ी थीं। मोरोपन्त के चेहरे का रंग उड़ गया था। वे बहुत ही खिन्न और अपराधभाव से पीड़ित दिखाई पड़ रहे थे।

शम्भूराजा ने बगल से पहरेदार सिपाही को संकेत से बुलाया। उन्होंने कहा, "मोरोपन्त की उम्र साठ-सत्तर वर्ष की है। उनकी कलाइयों को बाँधे नहीं।"

शम्भूराजा ने अण्णाजी दत्तो की ओर देखा। अण्णाजी ने शर्म से, अपराधभाव से या क्रोध से अपनी आँखें झुकाई नहीं। जंगली जानवर की तरह मगरूरी से खड़े रहे। देर तक न रोक पाने के कारण शम्भूराजा ही बोले—

"अण्णाजी! आप तो दगाबाजों के सुमेरु मणि हैं? हमारे विरोध में आपके षड्यन्त्र और प्रचार का क्या कारण है? आपको क्षमा करना या आपको छोड़ देना तो आत्मघात ही होगा।"

बन्दी के रूप में जकड़े हुए होने पर भी अण्णाजी दत्तो पीछे हटने को तैयार नहीं थे। वे युवराज के सामने झल्लाते हुए कहने लगे—

"शम्भूराजा! कोई भी विचारवान मनुष्य आप जैसे व्यक्ति से किसी अच्छी बात की अपेक्षा ही क्यों करेगा? बड़े महाराज चले गये और उनके साथ ही उनका बड़प्पन भी चला गया। उनके साथ सत्व भी गया और तत्व भी। इसके बाद अब गुंडागर्दी के अतिरिक्त मराठी राज्य के भाग्य में हो भी क्या सकेगा?"

"पन्त, राज्य की इतनी चिन्ता क्यों करते हो? पहले अपने को देखो। ऐसा क्या कारण था कि आपने मेरे विरोध में इतना बवाल किया?"

"कहलवाना चाहते हो? यदि आपकी शैतानी कम हो गयी हो और थोड़ी भी सभ्यता संस्कृति बची हो तो बता देता हूँ।"

"सदाचार की भाषा किसी धोखेबाज लोमड़ी के मुँह से शोभा नहीं देती। बताइए, आपका क्या करें?"

अण्णाजी दत्तो ने गरजते हुए कहा, "पहले हमारे हाथों पैरों में जो भारी भरकम बेड़ियाँ डाली हैं उन्हें निकालो।"

"पन्त राजद्रोह के गम्भीर अपराध के लिए यह सादा सा उपहार तो कुछ भी नहीं है।"

"संभाजी राजा! राजद्रोह का अपराध आप ही कर रहे हैं। आज रायगढ़ पर सच्चा राजा कौन है? उन्हीं के हस्ताक्षर और मुहर वाला आदेश लेकर आये हैं हम। इसलिए इन बेड़ियों में आपको ही जकड़ा जाना चाहिए।"

संभाजी राजा ने दीर्घ नि:श्वास लेते हुए कहा, "क्या करें रस्सी जल गयी, पर ऐंठन नहीं गयी।"

"शम्भूराजा! आप पापी हैं, दुर्विनीत हैं और बदचलन भी।" शम्भूराजा की ओर हाथ उठा उठाकर जोर जोर से चिल्लाने लगे। येसूबाई के चेहरे पर विषाद का जाल फैल गया। शम्भूराजा ने हंबीरराव की ओर देखा। उसी समय हंबीरराव ने पहरेदार से कहा, "ले जाओ यहाँ से इस बुड्ढे को। ले जाकर बन्दी खाने में फेंक दो।" मोरोपन्त उसी समय कच्चे कैदखाने में भेज दिया गया। अण्णाजी दत्तो को अँधेरी काल कठोरी में भेज दिया गया।

बहुत देर तक दरबार का कामकाज चलता रहा। हिरोजी का कहीं पता न था। दीवान ने दरबार का समय सामाप्त होने का संकेत किया। इसी बीच आठ दस सिपाहियों का जत्था अन्दर आया। सभी शम्भूराजा का अभिवादन करके भयभीत

अवस्था में शम्भूराजा के सामने खड़े हो गये। कई लोग एक साथ ही जोर जोर से कहने लगे, "महाराज? गजब हो गया, फर्जन्द भाग गये, फर्जद भाग गये।"

"कौन फर्जन्द?" शम्भूराजा ने अवाक होकर मामने देखा।

"हिरोजी बाबा फर्जन्द।" सिपाही कहने लगे।

"अरे लेकिन उन्हें हमने कहाँ बन्दी खाने में डाल रखा था?"

"भाग गये याने खजाना लेकर भाग गये। कोंकण की दिशा में भागे हैं।"

संभाजी राजा बड़े असमंजस में पड़ गये—"क्या कह रहे हो?"

"हाँ सरकार। रत्नों से भरे दो बड़े बड़े पिटारे लेकर वे भाग गये। उनके साथ पन्द्रह-बीस लोग और भी हैं।"

हिरोजी के समान अनुभवी और जानकार व्यक्ति की दगाबाजी से हंबीरराव भी सम्भ्रमित हो गये थे। उन्होंने शम्भूराजा मे कहा, "फर्जन्द का पीछा शीघ्रता मे करना चाहिए। सेना की एक टुकड़ी को उनकी खबर लेने भेजता हूँ।"

"भेज दीजिए। ऐसे भागकर कितनी दूर भागे होंगे।" शम्भूराजा ने बड़े शान्त भाव से कहा। हंबीर मामा कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे। देर रात तक विचार विमर्श के लिए बैठना होगा।

"जैसी आपकी मर्जी, महाराज!"

रात में विचार-विमर्श आरम्भ हुआ। महालोजी घोड़पड़े, हंबीरराव कृष्णाजी कंक, और प्रह्लाद निराजी बैठक में उपस्थित थे। शम्भूराजा की बगल में येसूबाई भी बैठी थीं। सभी की ओर देखते हुए शम्भूराजा ने कहा, "आज के हमारे उत्साह में हिरोजी काका ने कलंक लगा दिया। किन्तु उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। जहाँ घर होगा वहाँ दो-चार चूहे तो घुसे ही होंगे। समय-समय पर उन्हें कुचलना होगा। परन्तु भविष्य में इस भूमि पर पापी औरंगजेब दौड़कर आएगा। उसके साथ मोर्चे की उचित तैयारी सेना की पुनर्रचना, पूरी तैयारी अभी से करनी होगी। पिताजी ने तीन वार महीने पहले हमें इस धोखे की याद दिलाई थी। दुनिया के तीन चार महाबलशाली राजाओं में औरंगजेब की गणना है। कहते हैं कि उसका एक एक सूबा हमारे स्वराज्य का दुगुना-चौगुना है।"

"क्या कह रहे हैं?" प्रहलाद निराजी ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ प्रह्लाद पंत! किसी नदी की उमड़ती बाढ़ की तरह औरंगजेब की फौज हमारे राज्य की ओर आ रही है। ऐसा आभास मुझे हो रहा है। बड़े महाराज का स्वराज्य अगर बचाना है तो हर एक किले पर गोला बारूद और धनधान्य की पूरी तैयारी रखनी चाहिए।"

"ठीक है महाराज! हम एक बार रायगढ़ पहुँच गये तो सबसे पहले यही काम हाथ में लेंगे।" प्रह्लाद ने गर्दन हिलाकर कहा।

"तब से नहीं इसी पल से कार्य में लग जाइये। जंगलों में दावाग्नि सूचना देकर नहीं आती । संकट भी बताकर नहीं आते। तीन महत्त्वपूर्ण बातों पर सबसे पहले ध्यान दीजिए। गोले बारूद में कहीं आग न लग जाय, गढ़ का पानी न सूख जाय, कहीं भी अनाज और बारूद की कमी न पड़ जाय, इसके अतिरिक्त प्रत्येक किले का किलेदार कौन है? सबनिस, कारखानिस नाइक कौन है? इसकी विस्तृत सूची हमें चाहिए।"

स्वराज्य में सोयराबाई और शम्भूमहाराज में से किसी के भी पक्ष में न होने वाले कुछ तटस्थ सरदार थे। कुछ सरदार रूठे हुए थे। ऐसे सरदारों की सूची शम्भूमहाराज ने दरबार में ही तैयार की। उन्हें तत्काल मिलने के लिए आत्मीयतापूर्ण पत्र भेजे गये।

शम्भूराजा की व्यग्रता और उमंग देखकर म्हालोजी, प्रह्लाद पंत और हंबीरराव जैसे पुराने लोगों का दिल भर आया। जोत्याजी और कृष्णाजी कंक जैसे तरुणों का सीना तन आया। महल से येसूबाई के साथ निकलते हुए शम्भूराजा ने अपने सहायको की ओर देखा। उन्होंने बड़े अभिमान से कहा, "बता दीजिए उस औरंगजेब को। उसे बताइए कि हमारे दक्खिन देश का निर्माण अनेक शतकों के धधकते ज्वालामुखी में हुआ है। यहाँ के लोग फौलाद की छड़ की भाँति मजबूत हैं। हम तुम्हें ऐसी टक्कर देंगे कि आते समय तुम भले ही सोने की अंबारी में बैठकर बड़ी शान से आओ किन्तु शिवाजी के नाम पर यह सह्याद्रि तुम्हारी लाश को दिल्ली या आगरा पहुँचने नहीं देगा। तुम किसी नदी नाले की मिट्टी बन जाओगे, वह भी कोई जान नहीं पाएगा।"

शम्भूराजा संत्रस्त हो गये थे। वे युवराज्ञी से बोले—

"येसू! ये लोग ऐसा व्यवहार क्यों करते है। ये लोग गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। फर्जन्द चाचा का वर्ताव हमारे लिए एकदम अनपेक्षित और उलझन में डालने वाला है। परन्तु बालाजी आवजी चिटणीस जैसे जानकर और वरिष्ठ व्यक्ति के लिए क्या कहें?"

"बालाजी चाचा से भूल?" शब्द येसूबाई के मुँह से अटक गये।

"उनकी भूल आपकी समझ में कैसे आएगी? उठते-बैठते बहूरानी कहकर बुलाने का उनका अपनापा । उनके बेटे खंडोबा और निलोबा आपको अपने बेटे जैसे लगते हैं। परन्तु याद रखिये युवराज्ञी! केवल बाहरी प्रेम की आड़ में राजद्रोह की अपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसा करना भारी भूल होगी।"

"महाराज अन्य कर्मचारियों की अपेक्षा बाला आवजी का स्थान बहुत ऊँचा है।"

"ऐसा कुछ नहीं है, सभी एक ही माला के मोती है। यदि ऐसा न होता तो

वे पन्हालगढ़ के किलेदार को इस तरह का गुप्त पत्र भेजते?"

"महाराज! हुकुमनामे की लिखावट चिटणीस की नहीं थी, वह उनके बेटे आवजी बाबा की थी।"

येसूबाई का प्रतिवाद शम्भूराजा सहन न कर सके। उन्होंने कठोर दृष्टि से येसूबाई की ओर देखा। उन्होंने कहा, "बोलो मत! बालाजी काका की गैरहाजरी में आवजी के हस्ताक्षर और उनकी मुद्रा चलती है। यह बात स्वराज्य साढ़े तीन सौ गड़करियों और असंख्य कर्मचारियों को अच्छी तरह मालूम है।"

"मेरा मन अभी भी यही कर रहा है कि इस हुक्मनामे में बालाजी चाचा की सम्मति नही होगी।"

संभाजी का स्वभाव था कि वे जिससे प्रेम करते थे। पूरी भक्ति और निष्ठा के साथ करते थे। बालाजी आवजी और राजपरिवार में प्रगाढ़ स्नेह था। चिटणीस के साथ यह स्नेह सम्बन्ध शिवाजी महाराज और सभाजी ने अच्छी तरह निबाहा था। ऐसी स्थिति में बालाजी का दिया गया धोखा सभाजी को बहुत अखर रहा था।

कर्मचारियों के षड्यन्त्रों और असहयोग से राज्य का वातावरण बिगड़ गया था। इसलिए शम्भूमहाराज बहुत व्यथित थे। धीरे धीरे वातावरण बदल रहा था। साधारण सिपाहियों के लिए शम्भूमहाराज नाक के बाल थे। इस बीच राजधानी रायगढ़ पाचाण म्हाड पोलापुर से लेकर कोंकण पट्टी तक और घाटी में रहने वाली सामान्य जनता भी विद्रोह कर उठी थी। शिवाजी के पुत्र का प्रकृति प्रदत्त उत्तराधिकार नकारा जा रहा था। राज्य के कर्मचारी षड्यन्त्र रच रहे थे। राजा के अधिकारों को छीना जा रहा था। इसलिए प्रजा क्रुद्ध हो गयी थी।

इतना ही नहीं सन्तप्त जनता ने 16 मई, 1680 के दिन मोरोपन्त और अण्णाजो दत्तो के घर धावा बोला। दोनों के घर लूट लिए। इन विद्रोहियों ने रायगढ़ पर क़ब्ज़ा करके संभाजी के पास पन्हालगढ़ पर सन्देश भेजा—'महाराज जल्दी आइए।'

बदली हुई परिस्थिति ने शम्भूमहाराज में नया उत्साह और जोश भर दिया। उन्होंने एक ही समय में अनेक कार्यो को कर लेने की योजना बनाई। शृंगारपुर दूत भेजकर अपने ससुर पीलाजी को दस हजार की सेना लेकर रायगढ़ पहुँचने की प्रार्थना की। साथ ही हंबीरराव के नेतृत्व में पाँच हजार की नयी फौज तैयार की। अपनी फौज को दो महीने का अग्रिम वेतन दे दिया। मावल के चौबीस और नेरा छत्तीस गाँवों में शम्भूराजा का सन्देश गया। तबेलों से हिनहिनाते घोड़ों को बाहर निकालकर लोग भाले-तलवार नचाते हुए पन्हालगढ़ की ओर बढ़ने लगे।

चिन्ताएँ मिट रही थीं। पेंच खुल रहे थे। रुकावटों के लिए नये निकल रहे थे, शम्भूराजा की गद्दी के सामने के उद्यान में भाँति भाँति के फूल खिल रहे थे।

राजमहल में खेल रही नन्ही भवानी की पायल के घुँघुरू छम-छम बज रहे थे।

एक सुबह महारानी येसूबाई चौक के बड़े तुलसी चौरे में पानी डाल रही थीं। तुलसी का पौधा भी बड़ी समृद्धि के साथ पनप रहा था। पीछे से किसी पुरुष के पैर की आहट मिली। शम्भूमहाराज के चलने की शैली ऐसी नहीं थी। तो फिर बिना कोई सूचना भेजे अन्त:पुर प्रवेश करने का साहस किसने किया होगा? यह सोचकर येसूबाई झट से पीछे मुड़ीं तो देखा कि छः फीट लम्बे, दुबले पतले, साँवले, चौड़े मस्तक बड़ी बड़ी आँखों और घनी मूँछों वाले गणोजी शिर्के वहाँ हँसते हुए खड़े थे।

येसूबाई ने पूजा शीघ्रता से समाप्त करके भाई का स्वागत किया। गणोजी वहीं चन्दनी झूले पर आराम से बैठ गये। झूले के झूलने से पतली जंजीरों की आवाज आने लगी। भविष्य में रायगढ़ की महारानी बनने वाली अपनी छोटी बहन को गणोजी बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। शिवाजी का करोड़ों मुहरों वाला हिन्दवी स्वराज्य अब येसूबाई के चरणों के समीप पहुँचने वाला था।

अपने भाई का स्वागत करते हुए येसूबाई ने कहा—

"बड़े भाई साहब, यहाँ आने की बजाय आप सीधे रायगढ चले गये होते तो कितना अच्छा होता? वहाँ के कार्य, वहाँ की व्यवस्थाएँ "

"कितनी चिन्ता करोगी येसू! तुम्हारी प्रतीक्षा के दिन अब समाप्त हो रहे हैं। तुम्हारा सौभाग्य छाया की तरह तुम्हारा पीछा कर रहा है। लेकिन येसू महारानी के वस्त्राभूषण धारण करने के बाद अपने इस भाई को भूल तो नहीं जाओगी?"

"भाई साहब कितना मजाक उड़ाएँगे अपनी बहन का?"

"वैसी बात नहीं है। हम गरीबों का तो बस इतना कहना है कि अब आप सब का भाग्य पूरी तरह खिल गया है, उसमें से थोड़ा प्रकाश अपने भाई की ओर भी आने दो।"

येसूबाई ने सम्भ्रमित होकर कहा, "ऐसी पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हो?"

"पहेली क्या? साफ-साफ तो कह रहा हूँ। एक बार सत्ता के घोड़े पर सवार होकर राजा ने रिकेब में पाँव जमा लिया तो अपने करीबी लोगों को भूल जाते हैं। इसलिए सोचा कि समय पर स्मरण दिला दूँ तो अच्छा रहेगा।"

येसूबाई आश्चर्य से गणोजी की ओर देखने लगी।

अपने हाथों की उँगलियाँ व्यग्रता से नचाते हुए गणोजी ने कहा, "जिस दिन रायगढ़ में महारानी के रूप में तुम्हारे सिर पर छत्र और चँवर सुशोभित होगा, उसी दिन अपने भाई के घर पर भी जागीर का एक छोटा-सा वन्दनवार तुम बाँधोगी तो बड़ा उपकार होगा?"

"कौन-सी जागीर?"

"हम राजा शिर्के हैं। हमें कुछ नहीं चाहिए। पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आ रही दाभोल की हमारी जागीर हमें दिला दीजिए।"

येसूबाई अधीर हो गयीं। अपने बड़े भाई की कटूक्ति में किसी गम्भीर प्रकरण का आभास उनकी तीक्षण बुद्धि ने कर लिया। तब उन्होंने कहा, "राजमहल में कुछ काम धाम चल रहा है। महाराज अभी तक रायगढ़ नहीं पहुँचे हैं। अभी तक उन्होंने राज्य का सूत्र अपने हाथ में नहीं लिया है। थोड़ा धैर्य मे काम लेना है। फिर भी मैं महाराज से कह कर देखूँगी।"

दो दिन बीत गये। शिर्के राजमहल में ही बने रहे। तीसरे दिन उन्होंने येसूबाई को फिर टोका—"येसू, तुम्हारे मायके की दाभोल वाली जागीर का क्या हुआ?"

"हाँ भाई साहब, मैंने महाराज से कहा है। उन्होंने कुछ समय रुकने के लिए कहा।"

"येसू, भोसले घराने की बहू बनकर राजा शिर्के के सूर्य कुल के खून को भूल गयी हो क्या?"

"परन्तु भाई साहब मैं कहती हूँ कि इस समय इतना हठ करना उचित होगा। क्या?"

"इसमें हमारा कोई अपराध नहीं है। तुम्हारे ससुर शिवाजी ने हम शिर्के लोगों पर अत्याचार किया है। परम्परा से चली आ रही दाभोल की हमारी जागीर को जबरदस्ती हड़प लिया।" दाँत चबाते हुए गणोजी ने कहा।

"भाई साहब शिवाजी महाराज को क्यों दोष दे रहे हो? यह भूल गये क्या कि आप भी उन्हीं शिवाजी महाराज के दामाद हो?"

"बड़ा छँटा हुआ आदमी था तुम्हारा ससुर। डाँट-डपट कर दहशत से हमारी जागीर दबोच ली। ऊपर शहद की उँगली चटाते हुए कहा कि जब गणोजी राव को पुत्ररत्न प्राप्त होगा तो जागीर वापस कर देंगे। वाह रे-वाह!"

"देख येसू, दाभोल की जागीर से भोसले लोगों का कोई सम्बन्ध नहीं है। उसे बीजापुर के आदिलशाह ने हमें ईनामस्वरूप दिया था। हम तुमसे भीख नहीं, अपना हक माँग रहे हैं।"

जब गणोजी शिर्के ने बहुत आफत मचाई और बड़े भाई के अधिकार से येसूबाई की नाक में दम कर दिया। तब येसूबाई ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "जागीर जैसे नाजुक मामले में हम इस तरह उतावली में कैसे निर्णय ले सकते हैं? आप चाहें तो स्वयं महाराज से मिल लें।"

गणोजी रूठ गये। तुरन्त जाने के लिए उठ खड़े हुए। विदा देते समय येसूबाई ने झुक कर उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने कहा, "भाई साहब इस छोटी-सी बात को मन में न लाएँ, क्रोध न करें। आपकी समस्या का समाधान अवश्य निकलेगा। और

भाई साहब राजा के राज्यारोहण समारोह में आप रायगढ़ अवश्य पधारें।"

येसूबाई पर नफरत भरी नजरों से देखते हुए गणोजी ने पूछा—"किसलिए? आपके माथे पर झूलने वाले राजपद के चँवर को देखने और अपने माथे पर अपमान और उपेक्षा का ईंट-पत्थर झेलने के लिए।"

तीन

शिवाजी महाराज के महानिर्वाण को दो महीने बीत चुके थे। अब अधिक समय राजधानी से बाहर रहना उचित नहीं था। कविराज भी सुझाव दे रहे थे—'महाराज को अधिक समय तक राजधानी से बाहर नहीं रहना चाहिए।' सारे अनिष्ट दूर हो गये हैं। गढ़ पर रसद पहुँचाने की योजना निश्चित हो गयी। उसी समय शम्भूराजा अपनी सेना के साथ कराड के रास्ते से रायगढ़ की ओर निकले ।

मार्ग में प्रतापगढ़ की भवानी का शम्भूराजा ने दूध-दही से अभिषेक किया। भवानी मन्दिर से चलकर महाराज एक बुर्ज के ऊपर खड़े हो गये। वहाँ से उन्हें सह्याद्रि की हरी भरी पहाड़ियों के दर्शन हुए। घने वृक्षों की पंक्तियाँ कहीं समानान्तर कहीं वक्र तो कहीं अर्धवर्तुलाकार दिखाई दे रही थीं। पंचमी को झिम्मा खेलने वाली सहेलियों की तरह वे एक-दूसरे के गले मिल रही थीं। नीचे की ओर सह्याद्रि की खंडित चोटियाँ और ढलानें दिखाई दे रही थीं।

आसमान एकदम स्वच्छ था। इसलिए साठ सत्तर मील की दूरी पर रायगढ़ के भवानी मन्दिर का कलश स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा था। महाराज ने दाहिनी ओर महाबलेश्वर की चोटियों पर दृष्टि डाली। चैतमास के नये पल्लवों की हरी सजावट से सारा वन प्रदेश सज गया था।

सौभाग्य से आन्तरिक विद्रोह की आग कुछ समय के लिए बुझ गयी थी। हंबीरराव की प्रभावी भूमिका के कारण सभी सेनाधिकारी और पूरी सेना संभाजी के साथ हो गये थे। रायगढ़ की जनता ने सरदार मालसावन्त को कैद कर लिया था। राज्य के सारे सूत्र शम्भूराजा की मुट्ठी में आ गये थे। एक बार जिम्मेदारी का बोझ सिर पर आ जाता है तो व्यक्ति श्रद्धालु और संवेदनशील बन जाता है। मार्ग में आते हुए शम्भूराजा कोरटी के सदानन्द और मल्हार गोसावी से मिले जैसे सन्त पुरुषों से मिले। उन्होंने उनका आशीर्वाद लिया। उनके मठों एवं अन्य धार्मिक कार्यों के लिए

आर्थिक सहायता पहले से दी जा रही थी। खबर मिल चुकी थी कि औरंगजेब राजपूताना के युद्ध में उलझा हुआ है। इसलिए शम्भूराजा प्रसन्न मन और निर्द्वन्द्व भाव से यात्रा कर रहे थे।

राजा गढ़ उतर कर 'पार' नामक गाँव में पहुँचे। उसी समय पोलादपुर की घाटी की ओर से सेना की एक टुकड़ी दौड़ती हुई आती दिखाई पड़ी। टुकड़ी के समीप आते ही सेना में खलबली मच गयी। आवाज आने लगी—'हिरोजी पकड़े गये। हिरोजी फर्जन्द को कैद हो गयी।' चिवलून में महाराज के सैनिकों ने हिरोजी फर्जन्द बन्दी बना लिया था। उनके द्वारा चुराकर ले जायी गयी रत्नों की पेटियाँ और बचा हुआ खजाना जब्त कर लिया गया था। अपराध बहुत बड़ा था। किन्तु अपराधी भी कोई सामान्य व्यक्ति न था। इसलिए सभी के सामने फर्जन्द की पेशी लेना टाल दिया।

पार के पाटिल की कोठी में फर्जन्द को राजा के सामने प्रस्तुत किया गया। साठ वर्ष की उम्र पार किये हिरोजी फर्जन्द के रोबदार शरीर की ओर शम्भूमहाराज चकित होकर देख रहे थे। उनकी शंखाकार ठोड़ी, गरूड़ जैसी नाक, लम्बी सुघर दाढ़ी, शिवाजी महाराज की जैसी बड़ी-बड़ी सतेज आँखें। अपने पिता का स्मरण करते हुए स्तम्भित होकर संभाजी महाराज फर्जन्द की ओर देख रहे थे। हिरोजी के चेहरे पर तेज नहीं दिख रहा था। उनका गोरा-चिट्टा चेहरा अपराधबोध के कारण लज्जित था। शम्भूराजा के सामने एक शब्द भी बोलना उनके लिए असम्भव हो गया था।

हिरोजी के मुँह से कोई शब्द निकले उसके पहले उनकी आँखें छलछला उठीं। उनका गला भर आया। वे बड़ी कठिनाई से बोले—"शम्भू बेटे! मरे हुए को अब और अधिक न मारो।"

"हिरोजी फर्जन्द मेरे बहादुर चाचा। आपका कैसा नाम? आपकी कितनी ख्याति? बुढ़ापे में आपको यह क्या सूझी? पिताजी चले गये। हमें ममता से गले लगाने की जगह, मौके का लाभ उठाकर आप चोर उचक्कों की तरह खजाना लेकर भागे? फर्जन्द चाचा आपने यदि अपनी इच्छा प्रकट की होती तो आपके चरणों में पूरा राजकोष निछावर कर देता। आपने यह चोर-उचक्कों की राह क्यों पकड़ी?"

पास के दालान में जाकर संभाजी ने अपने सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श किया।

महाराज ने कहा, "जाने दीजिए! जो कुछ हुआ उसे भूल जाएँगे। हिरोजी को क्षमा कर देंगे।"

बीच में हस्तक्षेप करते हुए हंबीरराव ने कहा, "आपके मन का बड़प्पन हम

समझ सकते हैं। परन्तु अब आप युवराज नहीं, राजा हैं। आपकी उदारता का गलत अर्थ निकालेंगे, गलत लाभ भी उठाएँगे। दंड का डर न होगा तो गुंडे और भी गुंडागर्दी मचाएँगे।"

पूरी बात पर विचार करने के बाद शम्भूराजा ने निर्णय लिया कि हिरोजी को कुछ दिन और नजरबन्द रखा जायेगा। परन्तु उन पर बेड़ियाँ नहीं डाली जाएँगी। उनका किसी भी प्रकार का अपमान किये बिना, बाइज्जत रायगढ़ ले जाया जाएगा। शम्भूराजा ने अपने सैनिकों को इस प्रकार का आदेश दिया।

शम्भूराजा के चेहरे पर विषाद छाया हुआ था। उन्हें चिन्तित देखकर कवि कलश ने पूछा—"राजन्! आप इतने चिन्ताग्रस्त क्यो हैं?"

"कविराज! जब अपने विश्वासपात्र श्रेष्ठ जनों के षड्यन्त्र के ऐसे नाखून निकल रहे हैं। ऐसी स्थिति में मेरी बुद्धि तो कुछ काम नहीं करती।"

"कुछ भी ठीक नहीं है, अनेकों के मत्सर, द्वेष, शाप और हाय के हम लक्ष्य बन चुके हैं।"

सेना ने वीरवाड़ी पार की। महाड के समीप चाँभार की घाटी का चक्कर लगाकर सामने की घनी वृक्षावली में प्रविष्ट हो गयी। बीच बीच की छोटी छोटी पहाड़ियाँ कभी पाँव फैलाकर बैठे बैलों की तरह तो कभी शानदार हाथी की तरह दिखाई पड़ती थीं। सामने वृक्षों की संख्या कम हुई तो सामने आसन मारकर बैठे गरुड़ की तरह दिखाई देने लगा। गरूड़ जिस प्रकार सबसे ऊँचे टीले के शीर्ष पर अपना बसेरा बनाता है, वैसे शिवाजी महाराज ने रायगढ़ को चुना था। शम्भूराजा के भीतर अनेक भावनाओं की तरंगें हिलोरें ले रही थीं। यह कितना लम्बा वनवास था? रायगढ़ के जिस परिसर में शम्भूराजा ने अपना बचपन बिताया था, पुष्प पल्लवों से संवाद करते हुए जहाँ किशोरावस्था को पार किया था। उसी रमणीय परिसर का दर्शन तीन वर्षो बाद हो रहा था।

रायगढ़ ने नये राजेश्वर के स्वागत के लिए अपने पंचकोशी में नया रूप धारण कर लिया था। फूलों के भार से लदी मेहराबें झुक गयी थीं। ढोल, लेजिम, शहनाई नगाड़ा और तुरुहियां की ध्वनि के साथ शम्भूमहाराज का स्वागत हुआ। पाचाड़ के मैदान पर मानो मेला लग गया था। नीचे तलहटी में वाद्यों की तुमुल ध्वनि हो रही थी। गढ़ पर तोपों की धड़ाम धुड़ूम की आवाज उठने लगी थी। शिवाजी महाराज की असमय मृत्यु के कारण जो रायगढ़ काला पड़ गया था आन्तरिक षड्यन्त्रों के कारण पागल हो रहा था, वही अब फिर से सज सँवर गया था, उसमें नया जोश भर गया था। वह मंगलदाई दिखाई देने लगा था।

गढ़ पर इससे पहले ही राहुजी सोमनाथ कान्होजी मांडवलकर और माल सावंत जैसे षड्यन्त्रकारियों को पकड़ लिया गया था।

पाचाड़ के सिंहद्वार पर शम्भूराजा के ससुर पिलाजीराव शिर्के स्वयं उपस्थित थे। उन्होंने गढ़ सभी महत्त्वपूर्ण जगहों पर पहरे बिढ़ाकर सुरक्षा का उत्तम बन्दोबस्त किया था। अपना दामाद हिन्दवी स्वराज्य का दूसरा छत्रपत्ति बन रहा है। इससे मिलने वाला आनन्द उनके चेहरे पर स्पष्ट झलक रहा था।

येसूबाई अपने बड़े भाई गणोजी शिर्के की ओर आश्चर्य से देख रही थी। पन्द्रह दिन पहले वे यह कहकर गये थे—"जब तक मेरी जागीर का कार्य नहीं हो जाता मैं मुँह नहीं दिखाऊँगा।" किन्तु ऐसा कुछ हुआ नहीं। गणोजी शिर्के बड़े कुतूहल से येसूबाई की ओर देख रहे थे। महादजी निम्बालकर का प्रसन्न चेहरा भी महाराज से ओझल न था। जोत्याजी केसकर महाराज के कान से लगकर कह रहे थे—"आपने सुना क्या महादजी ने मुगलों की नौकरी हमेशा के लिए छोड़ दी।"

"ऐसा?" आश्चर्यचकित होकर शम्भूराजा ने कहा।

"अपने सगे साले के छत्रपति बन जाने पर दूसरे की नौकरी कौन करेगा?"

शम्भूराजा जीजा माता की समाधि के समीप गये। वे वहाँ पर नत मस्तक समाधि के खुरदुरे पत्थरों पर हाथ फेरा। उस स्पर्शमात्र से वे भाव विह्वल हो गये। उनकी आँखों में आँसू भर आये—दुख के भी और आनन्द के भी। यह दृश्य देखकर वहाँ उपस्थित लोगों का मन भर आया।

सन्ध्या का समय था। रंगीन फेटा और नये कंबलों के साथ भोइयो का जत्था खड़ा था। सोने की पालकी सजाई गयी थी। संभाजी राजा बड़ी प्रसन्नता से पालकी में सवार हो गये। कला वस्तुओं को बगल करते अपनी बाईस वर्षीय तेजस्वी मुखमुद्रा से लोगों को आनन्दित करते हुए शम्भूमहाराज आगे निकल गये।

पालकी आगे बढ़ने लगी। साथ की पालकियों मे कवि कलश, येसूबाई, पिलाजी शिर्के, हंबीरराव जैसे लोग बैठे थे। जब पालकी चितदरवाजे के पास पहुँची तो शम्भूमहाराज ने कहारों को रोका और नीचे उतरकर एक अतिसामान्य व्यक्ति को तरह पत्थर पर पैर समेटकर बैठ गये। यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। यकायक शम्भूराजा का गला भर आया। वे पिलाजी राव से अत्यन्त पीडित स्वर में बोले, "मामा साहब! अब इस सूने गढ़ पर किसलिए जाना है? भगवान के बिना मन्दिर और शिवाजी महाराज के बिना रायगढ़ देखना एक जैसा ही है।" उनका गौर और सरल चेहरा लाल हो गया।

बात करते करते संभाजी का कवि मन अत्यन्त भावुक हो उठा। शम्भूराजा भाव विभोर होकर कहने लगे—"मनुष्य कितने भी पुण्य अर्जित करे, चारों धामों की यात्राएँ करे ईश्वर का ध्यान लगाये, यह मेरे लिए व्यर्थ है। मथुरा, वृन्दावन, काशी और रामेश्वरम् किसके लिए हैं? केवल उस अभागे के लिए जिसने रायगढ़ न देखा हो।"

सहयोगियों ने शम्भूराजा को बहुत समझाया-बुझाया तब जाकर कहीं पालकी आगे बड़ी। ऊपर महादरवाजे पर शम्भूराजा का धूम-धाम से स्वागत हुआ। वहाँ से वे जगदीश्वर का दर्शन करने गये। दरबार में कार्यकर्ताओं की भीड़ एकत्र थी। महाराज ने उनसे बातचीत की।

उस रात टकमक नोंक किसी राक्षस के जबड़े की तरह भयानक दिखाई पड़ रहा था। वहाँ तूफानी हवा चल रही थी। ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से टकराती तेज हवा, सनसनाहट की आवाज से सीटी की तरह बजा रही थी। उस अँधेरी रात में विद्रोही गद्दारों की आँखों पर पट्टी बाँध दी गयी। उन्हें टकमक के ऊँचे सिरे से नीचे फेंक दिया गया। उनके शरीर ज्वारी के गट्ठे की तरह नीचे गिरते हुए पत्थरों से टकराते गये। वे गिद्धों और गीदड़ों का भोजन बन गये।

एक दिन सुबह पाचाड़ के किले का दरवाजा खुला। वहाँ से अण्णाजी दत्तो और मोरोपन्त जैसे अव्वल दर्जे के कैदियों को बाहर निकाला गया। वे पहरेदारों के संरक्षण में पैदल ही गढ़ पर चढ़ने लगे। मोरोपन्त को अपने अपराध का बोध हो गया था। वे बहुत लज्जित थे। वे थके-हारे और गलित गात्र दिखाई पड़ रहे थे। किन्तु अण्णाजी दत्तो का मन कठोर हो गया था। वे आँखें उठाकर अगल-बगल की ऊँची तटबन्दी को देख रहे थे।

अण्णाजी ने जब सुना कि विद्रोही गद्दारों को टकमक की चोटी से नीचे फेंक दिया गया तो उन्हे अनुभव हुआ कि उनका अपराध कितना गम्भीर है? किले पर चढ़ते-चढ़ते दोनों की दृष्टि बार-बार टकमक नोक की ओर जा रही थी। मोरोपन्त ने अण्णाजी से कहा, "अण्णाजी आपका साथ देकर हमने अपनी जिन्दगी नष्ट कर ली। सेवा में कलंक लगा और बाल बच्चों के बीच उपहास के पात्र बन गये।"

"जाने दो मोरोपन्त! मैंने तो अब भविष्य के बारे में सोचना ही बन्द कर दिया।" उन्होंने दुखी स्वर में कहा, "मोरोपन्त यदि भाग्य ने साथ दिया तो आप को दंड में कुछ रियायत अवश्य मिल जाएगी। किन्तु मुझसे तो ऐसा कोई भी काम नहीं हुआ है कि शम्भूराजा मुझे जीवित छोड़ें।"

उन दो राजबन्दियों को उन्हीं के राजमहलों में बन्द कर दिया गया था। दरवाजे पर सख्त पहरा बिठा दिया गया था। उसी दिन शम्भूराजा ने इन्दूलकर को सामने खड़ा किया। इन्दूलकर की आधी उम्र रायगढ़ के निर्माण में बीती थी। वे जीवन भर राजमहल गढ़िया, चौक और उद्यान बनाते रहे। शरीर को झुलसा देने वाली गर्मी में आषाढ़ की रचना करने में दिन-रात जुटे रहते थे। शिवाजी महाराज विनोद में उन्हें एक अभिमन्त्रित पिशाच कहते थे। यह सोचकर सभी दुखी थे कि ऐसा भला आदमी गद्दारों के साथ कैसे फँस गया?

भर दरबार में शम्भूमहाराज ने इन्दूलकर को अपने समीप बुलाया। इन्दूलकर की खुरदुरी अँगुलियों को अपने हाथों में लेते हुए वे बोले, "इन्दूलकर! ये बूढ़ी उँगलियाँ बड़ी पुण्यवान हैं। परन्तु आपने अविवेकी कर्मचारियों का साथ देकर इन पवित्र उँगलियों को कलंकित कर लिया।"

सभी को दो दिन पहले टकमक नोक से फेंके गये गद्दारों का स्मरण हो रहा था। सभी गम्भीर हो गये थे। इन्दूलकर के लिए सभी का कलेजा टूट रहा था। शम्भूराजा ने इन्दूलकर की उँगलियों को कसकर पकड़ लिया। इन्दूलकर की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। महाराज ने ऊँची आवाज में कहा—

"इन्दूलकर ताजमहल की कहानी मालूम है न? ताजमहल जब पूरा हो गया तो औरंगजेब के बाप शाहजहाँ ने उन कुशल कारीगरों की उँगलियाँ तोड़ डाली थीं। ऐसा कहा जाता है।"

महाराज की बातों से इन्दूलकर भीतर से टूट गये। सभी लोग घबरा रहे थे। सभी का ध्यान इसी बात पर केन्द्रित था कि महारज अन्ततः क्या निर्णय लेते हैं? शम्भूराजा हँसते हँसते कहने लगे—"पिताजी की दिव्य दृष्टि ने इन्दूलकर आपको परखा था। पारस के समान आपका यह करामाती हाथ यदि हम बचा न सके तो अगली पीढ़ियाँ मुझसे प्रश्न करती रहेंगी—'जो राजा संस्कृत, ब्रज भाषा, नाट्यशास्त्र और काव्य का गहन अभ्यासक है उसमें रसज्ञता का थोड़ा अंश था या नहीं?' जाइए अपनी उँगलियों के जादू को इसी तरह बनाए रखिए।"

शम्भूराजा के इस निर्णय से सभी स्तम्भित रह गये। इन्दूलकर ने राजा का हाथ अपने सीने से लगा लिया। राजा के सामने नतमस्तक होते हुए। वहाँ एकत्र हुए सभी लोगों की ओर हाथ उठाते हुए आँसू भरी आँखों से इन्दूलकर ने कहा, "अरे कौन कहता है कि बड़े महाराज गुजर गये हैं? वे शम्भूराजा के रूप में आज भी हमारे महाराज जीवित हैं।"

चार

दोपहर को शंभूराजा और येसूबाई ने जगदीश्वर का अभिषेक रास्ते में शिर्कोई देवी का भी दर्शन किया। आने की रात को ही उन्होंने पुतलाबाई से भेंट करके उन्हें

सान्त्वना दी। वे शिवाजी के वियोग में सूखकर काँटा हो गयी थीं।

सोयराबाई की अपेक्षा शम्भूमहाराज को पुतलाबाई अधिक याद आती थीं। अपने पति के आकस्मिक निधन से बेचारी एकदम टूट गयी थीं। उसी बीच जब शम्भूमहाराज को मालूम हुआ कि वे अग्नि में प्रवेश कर सती होने जा रही हैं तो वे और भी अधिक चिन्तित हो गये। उन्हें स्मरण हो रहा था कि शहाजी महाराज की मृत्यु के बाद जब जीजा माता सती होने के लिए निकलने लगी तो उन्हें रोकने के लिए शिवाजी महाराज को कितना प्रयत्न करना पड़ा था।

अचानक शम्भूराजा को प्रकांड पंडित गागाभट्ट की याद आ गयी। शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के समय भट्टजी के साथ उनकी अच्छी दोस्ती हो गयी थी। उस समय उन्होंने अनेक शास्त्रों और पुराण ग्रन्थों पर भट्टजी के साथ चर्चा की थी। बड़े महाराज से गागाभट्ट ने युवराज की तीक्ष्ण बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की थी। इन्हीं बातों का स्मरण करते हुए उन्होंने कवि कलश का ध्यान आकर्षित किया। कविराज उस समय पुस्तकों को क्रमानुसार रख रहे थे। उन्होंने कहा, ''कलशजी! गागाभट्ट को आज ही एक पत्र भेजिए! साथ ही एक हजार मुहरों की थैली भी।''

''राजन्!''

''हाँ कविराज! गागाभट्ट से हमें एक नया ग्रन्थ तैयार करवाना है। राजा को धर्म और नीति का पालन किस प्रकार करना चाहिए? इस विषय पर उनके जैसे अधिकारी विद्वान द्वारा लिखा गया ग्रन्थ हमारे लिए मार्गदर्शक होगा।''

सूर्य अस्त होने को था। सन्ध्या काल की सुनहरी किरणें गढ़ पर चारों ओर बिखर गयीं। मशालें और चिराग प्रज्जवलित हो गये। शम्भूराजा का मन बहुत व्यग्र था। वे पुतलाबाई के महल की ओर निकले। पुतलाबाई सफेद वस्त्रों में शिवाजी महाराज के पलँग के पास बैठी थीं। पलँग पर महाराज की खड़ाऊँ, बैजन्ती माला, रेशमी कुर्ता, फूल और अगरबत्ती जैसी चीजें रखी हुई थीं। ये सभी चीजें भक्ति भाव से रखी थीं। शम्भूमहाराज पुतलाबाई के समीप गये। पुतलाबाई ने बड़े वत्सल भाव से उन्हें गले लगाया। उन्होंने हिचकियाँ लेते हुए राजा से पूछा, ''शम्भू बेटे! मृत्यु ने इतनी जल्दी महाराज को क्यों निगल लिया? अभी उनकी उम्र ही क्या थी?''

येसूबाई और शम्भूमहाराज ने पुतलाबाई को सान्त्वना दी। जैसे काली घटा के बरस जाने के बाद आसमान साफ हो जाता है उसी तरह पुतलाबाई भी आँसू पोंछकर प्रकृतिस्थ हो गयीं। वे बोलीं, ''शम्भूराजा आप आ गये यह बहुत अच्छा हुआ। हम आपकी ही राह देख रहे थे। हमारी आँख आपकी ही ओर लगी थी। महाराज के चले जाने पर हमारे लिए यह दुनिया यह धन-दौलत व्यर्थ है। उनके साथ ही अपनी यह जीवन लीला समाप्त करने का निश्चय किया था। किन्तु दो कारणों से मुझे

रुकना पड़ा। एक तो यदि सती के वस्त्र मँगाने के लिए किसी कर्मचारी को बाहर बाजार भेजती तो महाराज की मृत्यु का समाचार बाहर फैल जाता।"

"माताजी! अब इस सारे दुख को भूल जाइए।"

पुतलाबाई कहती रहीं—"मेरे सती न होने का दूसरा कारण यह था कि राजाराम बेटे का विवाह हुआ और केवल सत्रह अठारह दिनों में ही हमारे ऊपर आसमान टूट पड़ा। अन्तिम दस-बारह दिनों में महाराज बेसुध ही रहे। अपनी आँखों को दीया बनाकर हम रात-दिन उनके पास ही बैठे रहे। एक रात महाराज को अचानक होश आया। उन्होंने मुझे समीप बुलाकर कहा —बातें सुनते-सुनते शम्भूमहाराज को रोमांच हो आया। येसूबाई और शम्भूराजा कान लगाकर सुनने लगे। पुतलाबाई अपने क्षीण स्वर में कह रही थीं—

"महाराज ने अपने दुबले पतले हाथों में मेरा हाथ थामकर कहा—पुतला, मुझे नहीं लगता कि शम्भू बेटे से हमारी भेंट हो पाएगी। उन्हें हमारा सन्देश दे देना। कहना, 'शम्भू हम अपनी अन्तिम यात्रा पर निकल चुके हैं। जनता के आँसू और पसीने से खड़ा किया गया यह स्वराज्य, कष्ट उठाने वाले श्रमिकों का यह राज्य केवल आपके हाथों में सुरक्षित रह सकता है। इसका हमें पूरा यकीन है। मृत्यु से पूर्व यदि एक बार आपको सीने से लगाकर रो लेता तो उन आँसुओं में मन का सारा मैल धुल जाता और मैं धन्य हो जाता। यदि वह पापी औरंगजेब इस पुण्यभूमि पर आक्रमण करने आता है तो उसके पैरों में लोहे के नाल ठोंककर उसे हटाने की शक्ति, शम्भू बेटे केवल आपमें है। हम अल्पायु ठहरे किन्तु भगवान और भाग्य ने हमारे ललाट पर कीर्ति और वैभव का वन्दनवार सजाया है। जगदीश्वर से हमारी प्रार्थना है कि आपके साथ भी ऐसी ही ईश्वर-कृपा सदैव बनी रहे'।"

महाराज का यह अन्तिम सन्देश सुनकर शम्भूमहाराज अपने आँसू रोक नहीं पाये। उन्होंने महाराज के मुकुट और उनकी तलवार को सीने से लगाकर कहा, "माता जी! पिताजी के स्वास्थ्य के इतने बिगड़ने पर सन्देश तो भेजना चाहिए था।"

"शम्भू बेटे! कैसे भेजती? हम विवश थे। उस समय यह राजधानी किसके क़ब्ज़े में थी। यह भी क्या कोई बताने की चीज है?"

राजधानी में पहुँचते ही शम्भूमहाराज ने राजाराम को नजरबन्द रखने का आदेश दे दिया था। सोयराबाई के स्मरण मात्र से शम्भूमहाराज प्रक्षुब्ध हो जाते थे। दो-तीन दिन तक सोयराबाई के महल की ओर जाना उन्होंने टाल दिया। पुतलाबाई के त्यागी और सेवा धर्मी स्वभाव के सामने सोयराबाई का कुटिल और महत्त्वाकांक्षी स्वभाव और भी घृणास्पद लग रहा था। अचानक एक दिन संयम का बाँध टूट गया। सन्ध्या समय शम्भूमहाराज बड़ी शीघ्रता से सोयराबाई के महल की ओर निकले।

दरवाजे के पास ही तेजस्वी आँखों वाले दस वर्ष के कोमल स्वभाव वाले बालक राजाराम दिखाई पड़ गये। शम्भूराजा को देखते ही वे 'दादा साहबऽऽ' कहकर चिल्लाये। दोनों एक दूसरे से मिलने के लिए आगे दौड़ पड़े। शम्भूराजा ने राजाराम को गले से लगा लिया। उनके गालों को बार-बार चूमा। तब रूठते हुए राजाराम ने कहा, "दादा साहब हम आपसे बहुत नाराज हैं।"

"क्यों?"

"हमारी शादी में आप नहीं आए।"

बड़े दुखी स्वर में शम्भूमहाराज ने कहा, "बच्चे, मुझे निमन्त्रण नहीं दिया गया।"

"घर के लोगों के लिए कैसा निमन्त्रण?"

शम्भूमहाराज ने गम्भीर होकर कहा, "पन्हालगढ़ के हमारे दास-दासियों को भी तुम्हारी माताजी ने निमन्त्रित किया था। आखिर अपमान की भी कोई हद होती है। जाने दीजिए। जब बड़े हो जाओगे तो स्वयं ही सब कुछ समझ जाओगे।"

प्रह्लाद निराजी के हाथ में राजाराम को देकर शम्भूमहाराज अकेले ही महल के भीतर दाखिल हुए। महल के दरवाजे पर महाराज की क्रुद्ध और उग्र मुद्रा देखकर दासियाँ और सेविकाएँ चिल्लाने लगीं। सोयराबाई पहले तो कुछ घबरायीं किन्तु तुरन्त अपनी अकड़ में खड़ी हो गयीं।

शम्भूमहाराज सन्तप्त स्वर में बोले, "माताजी! पुत्र मोह में किसी व्यक्ति को कितना पागल होना चाहिए? आप भी इन स्वार्थी और अपना पेट पालने वाले कर्मचारियों के हाथ की कठपुतली बन गयीं?"

सोयराबाई को अपने अपराधों का बोध हो गया था। अष्टप्रधानों के सहयोग से उन्होंने इस षड्यन्त्र का दाव खेला था। अपने राजाराम के लिए उन्होंने संभाजी नाम की ज्वाला को स्वयं अपने ऊपर ओढ़ा था। अण्णाजी जैसे कर्मचारियों ने उस आग पर अपना पापड़ भूनने का खूब प्रयत्न किया था। पर अब वह आग उन्हीं पर उलट पड़ी थी।

अपने हाथों से सोयराबाई को बैठने का संकेत करते हुए शम्भूराजा ने ऊँचे स्वर में कहा, "माताजी आपकी इच्छा हो या न हो, आपको अच्छा लगे या बुरा, मैंने तो अब राजमुकुट पहन लिया है। एक सामान्य शिष्टाचार के नाते आप मेरे स्वागत की शिष्टता दिखातीं?

"स्वागत की आरती उतारने की अपेक्षा मुझसे क्यों करते हो? यहाँ आते ही सात-आठ लोगों को टकमक नोक से नीचे झोंक दिया। उनकी प्रेतात्माओं द्वारा किया जाने वाला स्वागत क्या पर्याप्त नहीं है?" सोयराबाई ने क्रोध से पूछा।

"आप माँ हैं या दुश्मन? यह माँ का हृदय है या किसी पिशाचिनी का?"

"संभाजी, आपका दिमाग है या गोला बारूद का भंडार? कितना गुस्सा करते हो? सारा विवेक ही भस्म कर देते हो। हिरोजी फर्जन्द जैसे वरिष्ठ और अनुभवी सरदार को भी आपने कैद में डाल दिया। उनकी आयु का उनके अनुभव का कुछ विचार किया क्या? सोयराबाई ने पूछा सच कहें तो फर्जन्द की लिंगाणा की कालकोठरी में हमेशा के लिए झोंक देना चाहिए था। अण्णाजी दत्तो और मोरोपन्त जैसे अपराधियों को पहले तोप के मुँह में डाल देना चाहिए था। किन्तु ऐसा कुछ न करके मैंने उन्हें उन्हीं के घरों में नजरबन्द कर दिया है। उनका कोई अपमान नहीं किया। माताजी! अपने पिताजी से और कुछ भले ही न सीखा हो किन्तु राज्य व्यवहार में देशकाल परिस्थिति के अनुसार क्या करना चाहिए यह अच्छी तरह सीखा है।"

शम्भूमहाराज के क्रोधावेश की पहली लहर चली गयी। तब सोयराबाई ने कहा, "आपने और आपके मूर्ख मित्रों ने चारों ओर मेरी बदनामी फैला रखी है। कहते हैं, मैंने महाराज को विष दिया और उसी से उनकी मृत्यु हुई।"

सोयराबाई के आरोप से शम्भूमहाराज ने अपनी गर्दन झुका ली। उन्होंने कहा, "नहीं माता ऐसा आरोप आप पर किसी को भी नहीं लगाना चाहिए। आज भले ही पुत्र प्रेम ने आपको अन्धा बना दिया हो। पर आपका हृदय स्फटिक-सा शुभ्र और संवेदनशील है। इसका हमें अनुभव है। फिर भी मेरे प्रति द्वेष रखने के कारण आपके द्वारा किये गये अपराध क्षमा करने योग्य कतई नहीं हैं।"

सोयराबाई घबरा गयी। शम्भूराजा के हाथ अभी भी थरथरा रहे थे। उनका मस्तक तप रहा था। वे अब क्रूरता के चरम शिखर पर पहुँच चुके थे। उन्होंने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। इतने में उनकी दृष्टि पीछे की ओर गयी। वहाँ दरवाजे के पास बालक राजाराम घबराये हुए छिपकली की तरह दीवार से चिपके खड़े थे। यह देखकर जैसे पानी की धार से नमक पिघल जाता है वैसे ही शम्भूमहाराज द्रवित हो गये। उनके मस्तिष्क में उठा क्रोध का तूफान शान्त हो गया। शम्भूराजा आगे बढ़े और घबराये हुए राजाराम को अपने पास लेकर कहने लगे—"राजाराम, पिताजी के बाद ममता की छाया देनेवाला अब मेरे अतिरिक्त तुम्हारा है ही कौन?"

"दादा साहब, आप हमारी माताजी को बन्दी तो नहीं बनाएँगे न?" राजाराम ने पूछा।

"आप दोनों पर पापी षड्यन्त्रकारियों की नजर न पड़े। आप लोगों का उपयोग कोई प्यादों के रूप में न करे। हमारी जान को कोई खतरा न पैदा हो। इसके लिए आप लोगों को हमें नजरबन्द तो रखना ही पड़ेगा। राजा के रूप में इतनी चिन्ता तो मुझे करनी ही पड़ेगी।"

"दादा साहब, जैसी आपकी आज्ञा।" राजाराम ने कहा।

माँ बेटे से विदा लेते हुए शम्भूराजा ने सोयराबाई से कहा, "माताजी, आज हम शपथ लेकर कहते हैं कि इसके बाद यह संभाजी छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित लोक मर्यादा के अनुसार ही कार्य करेगा। प्रश्न केवल इतना ही है कि अब तक जो हुआ सो हुआ लेकिन इसके आगे आपका व्यवहार उस युग पुरुष की सह धर्मचारिणी जैसा होगा या नहीं?"

पाँच

तीन हफ्ते सूखे पत्ते की तरह उड़ गये। माघ सुदी एकादशी के दिन शिवाजी महाराज के अस्थि कलश के साथ पुतलाबाई सती हो गयी। शम्भूमहाराज ने उन्हें इस निर्णय से विमुख करने का बहुत प्रयत्न किया। किन्तु उनके अटल निश्चय के आगे किसी की न चली।

पुतलाबाई के सती हो जाने के बाद शम्भूमहाराज ने गढ़ पर बड़ा दान पुण्य किया। 20 जुलाई, 1680 को शम्भूमहाराज का सिंहासनारोहण होने वाला था। इसलिए राजधानी में सम्बन्धियों और मित्र परिवारों की बड़ी भीड़ एकत्र थी। शम्भूराजा की बड़ी बहन सखुबाई और महादजी निम्बालकर, अम्बिकाबाई और हरजी राजा महाड़िक की पालकियाँ अभी गढ़ से नीचे उतरी न थीं। गणोजी राजा शिर्के के परिवार का रूआब सबसे अधिक दिखाई दे रहा था। एक ओर शम्भूराजा की बहन राजकुँवरि गणोजी शिर्के की पत्नी थी तो दूसरी ओर गणोजी शिर्के येसूबाई के बड़े भाई थे। इस दुहरे सम्बन्ध के कारण गणोजी की साधारण बात को भी बड़ा महत्त्व मिल रहा था।

शम्भूराजा ने प्रात:काल स्नान किया और वैसे ही अधभीगे वस्त्रों में देवघर की ओर निकल पड़े। वहाँ पूजा की सामग्री तथा जैस्मिन एवं सोनजुही के सुगन्धित फूलों की टोकरी लिए येसूबाई खड़ी थीं। इतने सुन्दर प्रात:काल में भी राजा की मुद्रा गम्भीर और खिन्न दिखाई पड़ रही थी। देवघर में प्रवेश करने से पूर्व ही वे येसूबाई से बोले, "येसू, इस मंगल और उत्सव के समय में बहन राणूबाई और दुर्गा की बहुत याद आ रही है। कैसी होंगी वे दोनों?"

राजा के काँपते स्वर को सुनकर येसूबाई का कलेजा भर आया। उन्होंने बड़े दुखी मन से कहा, "महाराज! आपकी तरह ही मेरी आँखें भी तरस रही हैं। उचित

समय देखकर शत्रु पर आक्रमण करें और उन दोनों को मुक्त करके राजधानी में ले आयें।"

शम्भूमहाराज पूजा के लिए गर्भगृह में प्रवेश करने ही वाले थे कि उनके कानों में आवाज आयी—'शम्भू! थोड़ा रुकिए।' महाराज ने गर्दन घुमाकर देखा तो वहाँ शम्भूमहाराज से बड़ी किन्तु बहनों में सबसे छोटी, सबसे प्रिय बहन अम्बिकाबाई कोने में खड़ी थीं। उन्हें वहाँ देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। क्योंकि इतने सवेरे अम्बिकाबाई को उठने की कभी आदत ही नहीं थी। शम्भूराजा कुछ पूछें उससे पहले ही वे बोल पड़ीं—"शम्भू भैया, कर्नाटक की ओर का जिंजी इलाका अपने राज्य की दृष्टि से सोने की खान है।"

"बिलकुल दीदी।"

"राजा साहब! प्रश्न यह है कि वहाँ की लगान का सारा पैसा अपने खजाने तक पहुँच पाता है कि नहीं?" अम्बिकाबाई ने सीधा उत्तर माँगा।

"न पहुँचने जैसा क्या हुआ? रघुनाथपन्त हणमन्ते जैसा खरा व्यक्ति वहाँ का सर्वेसर्वा है। ऐसा श्रेष्ठ, अनुभवी और ईमानदार आदमी तो अब मिलना भी मुश्किल है। दीदी, आपको मालूम है कि रघुनाथपन्त को किसने नियुक्त किया था? हमारे दादाजी शहाजीराजा भोसले ने। तब से यानी पिछले तीस वर्षों से हमारा दक्षिणी इलाका वे ही सँभाल रहे हैं और वह भी बिना किसी शिकायत के।

रघुनाथपन्त के इतने गौरव से अम्बिकाबाई लज्जित हो गयीं। फिर भी उनके गौर ललाट पर खिंच आयी शिकन उनके बड़े कुंकुम के टीके के पीछे छिप न सकी। शम्भूराजा ने ही उनसे पूछा, "दीदी, आपको आज हुआ क्या है? आज सवेरे-सवेरे आपने यह विषय छेड़ दिया।"

"सच कहूँ संभाजी राजा, आज आप भले ही रायगढ़ के राजा बन गये हों पर हो तो हमारे प्रिय छोटे भाई ही। पिताजी के पीछे छोटे भाई की चिन्ता करना उसका ध्यान रखना बड़ी बहन का कर्तव्य है। आपका जन्म सिद्ध उत्तराधिकार होने पर यहाँ के अधिकारियों और कर्मचारियों ने गद्दारी की है।"

राजा ने हँसते हुए कहा, "दीदी, विद्रोह की वह आग अब बुझ चुकी है।"

"देखिए राजा साहब, आपको अच्छा लगे या बुरा, विश्वास हो या न हो; यही रघुनाथपन्त सोयराबाई के साथ गुप्त पत्राचार करते रहे हैं। चाहे तो पूछताछ कर लीजिए। हमें क्या? हमने तो सचेत करने का काम किया है।"

"इतनी नाराज क्यों हो रही हो, दीदी?"

"हमारा रिश्ता खून का है इसीलिए कलेजा जलता है। इसीलिए सचेत कर रही हूँ कि यदि अपने राज्य का सबसे समृद्ध इलाका विरोधी के हाथ में सौंपा गया तो धोखा होगा। शिवाजी महाराज की बेटी होने के नाते से माँ जगदम्बा ने इतनी

बुद्धि तो अवश्य दी है।" इतना कहकर अम्बिकाबाई शीघ्रतापूर्वक वहाँ से निकल गयी।

संभाजी ने जल्दी से पूजा समाप्त की फिर अपना वस्त्र धारण करके बाहर आ गये। परिचारक उन्हें मोतियों की माला पहना रहे थे। उनकी कमर में कमरबन्द बाँधा जा रहा था। इसी समय सवेरे-सवेरे मस्तिष्क में विचारों का तूफान उठाने वाली अंबिकाबाई आकार सामने खड़ी हो गयीं। संभाजी के मुख से अनायास ही निकला—"दीदी, मान लीजिए कि कर्नाटक-जिंजी का प्रदेश हमने रघुनाथपन्थ हणमंते से निकाल लिया तो उनकी जगह लेने वाला दूसरा कौन है? इतनी दूर जाकर कार्य भार सँभाल सके, ऐसा कौन है?" दीदी की पलकें एक क्षण के लिए झुकीं दूसरे ही क्षण वे राजा की आँखों में आँखें डालकर बोलीं, "मेरे पति हरजीराजा महाडिक क्या कम योग्य हैं? कम हिम्मत वाले हैं? चाहें तो अपने कलश से विचार-विमर्श कर लीजिए।"

शम्भू महाराज स्तब्ध रह गये। अम्बिकाबाई निकल गयीं। शिवाजी महाराज के शब्द उनके कानों में गूँजने लगे। उन्होंने कहा था—"हमारे चारों दामादों में हरजी राजा ही हमें शेर जैसी हिम्मत वाले लगते हैं। सीधे शेर के मुँह में हाथ डाल देने वाला शम्भूराजा के समान केवल हरजीराजा ही साहसी है।"

बात समाप्त हो गयी। बाहर बहुत सा कार्य पड़ा था। दरबार में कुछ निर्णय तत्काल लेने थे। सिंहासनारोहण के मुहूर्त के लिए केवल दो दिन शेष थे। अनेक धार्मिक अनुष्ठान आरम्भ हो चुके थे। शम्भूमहाराज जल्दी जल्दी महल से बाहर निकले।

दरबार में कवि कलश, प्रह्लाद निराजी तथा अन्य लोग राजा की प्रतीक्षा में बैठे थे। सबसे पहले अष्टागार में कुछ कोंकणी किसानों का एक समूह महाराज से मिला। इस वर्ष पनवेल, पेण से श्रीबाग, चेऊल से आगे हबसाणा की सीमा तक भयानक अकाल पड़ा हुआ था। श्रावण महीने से ही बरसात का दर्शन तक नहीं हुआ था। शम्भूराजा ने उस क्षेत्र के किसानों के लिए लगान माफी का आदेश जारी किया। साथ ही सरकार की ओर से किसानों को बीज आदि की आपूर्ति का आदेश भी तत्काल दे दिया। कृतज्ञता से शम्भूराजा का अभिवादन करते हुए किसान बाहर निकल गये।

"राजन! पिछले चार दिनों से पुर्तगाली टोपीकर आपसे मिलने के लिए काले हौद के समीप वकीली महल में रुका हुआ है।"

"ऐसा? कविराज एक साथ अनेक शत्रुओं का सामना करना बुद्धिमानी नहीं है। शत्रु चाहे घर के हों या बाहर के। परिवार के भीतरी कलह के धुएँ से मेरी साँस घुट रही है। इसके साथ ही गोवा के पानी से पुर्तगाली नाम का मगरमच्छ, कोंकण

के किनारे जंजीरे का सिद्दी नामक विषधर सर्प, आज नहीं तो कल आक्रमण करने के लिए दिल्ली में तैयारी कर रहा औरंगजेब नाम का विषैला भुजंग और इनके अतिरिक्त अँग्रेज, डच जैसे विषैले सरीसृप तो आसपास हैं ही। इन सभी के गुंजलक से स्वराज्य को बचाना है, कविराज!

"जंजीरे के हब्शियों ने औरंगजेब का मांडलिक होना स्वीकार कर लिया है। किन्तु औरंगजेब और पुर्तगालियों के बीच मित्रता होने के पहले ही गोवा के पुर्तगालियों को ठिकाने लगाना है। गोला बारूद और अस्त्र शस्त्र की दृष्टि से पुर्तगालियों की शक्ति बहुत बड़ी है।"

दो घंटे बाद पुर्तगाली वकील को दरबार में निमन्त्रित किया गया। वर्तुलाकार टोपी पहने, मोटे कपड़े की पतलून पहने, लाल रंग के लिबास में दो फिरंगी वकील दरबार में आये। उन्होंने शम्भूमहाराज को भारतीय शैली में अभिवादन किया। दुभाषिया के रूप में उनके साथ रामचन्द्र शेणवी था। उनके साथ शम्भूराजा के गोवा के वकील रामजी ठाकुर और येसाजी गम्भीरराव भी आये थे। रामचन्द्र शेणवी ने वाइसराय द्वारा भेजा गया सन्देश मराठी में पढ़कर सुनाया।

"सिंहासनाधीश्र शम्भूमहाराज गोवा के नये वाइसराय का उष्ट द-आल्व्हेर का सादर नमन! महाराज आपसे स्नेह सम्बन्ध स्थापित करने के लिए हम आपसे भी कहीं अधिक उत्सुक हैं।"

शम्भूराजा ने हँसते हुए कहा, "वाइसराय साहब की सम्बन्ध जोड़ने की इच्छा से हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है।"

पुर्तगाली दूतों ने दुभाषिये के माध्यम से स्पष्ट किया—"उसका एक कारण यह है कि सावन्तवाड़ी कुडाल के इलाके में आपकी और हमारी सीमाएँ आपस में जुड़ी हैं। इसलिए वाइसराय ने आपके लिए विशेष सन्देश भेजा है कि आप दक्षिणी सीमा पर अपना एक भी सिपाही तैनात न करें।"

"क्यों?"

"क्योंकि आपके सिपाही बनकर पुर्तगाली स्वयं उस सीमा की रक्षा करेंगे।"

"वाहऽऽ! वाहऽऽ!" राजा ने हँसते हुए दाद दी।

फिरंगियों ने अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ राजा को भेंटस्वरूप प्रदान कीं। फिरंगी शिष्ट मंडल निकलकर चला गया।

दोपहर को कुछ धार्मिक विधियाँ समाप्त हुई। राज्यारोहण की जोरदार तैयारी हो रही थी। मंगल वाद्य बज रहे थे। गढ़ पर का वातावरण अत्यन्त उत्सवी और उत्साहपूर्ण था।

सन्ध्या समय सभी नजदीकी सम्बन्धी एक वृत्त बनाकर खड़े हो गये थे। सभी की आँखें बातें कर रही थीं। संभाजी ने समझ लिया कि ये लोग किसी

महत्त्वपूर्ण मुद्दे की चर्चा करना चाहते हैं। महादजी निम्बालकर ने कहा—

"शम्भूमहाराज! रायगढ़ पर साक्षात् स्वर्ग अवतरित हो गया है। आप अब सिंहासनासीन होंगे। आपके ऊपर छत्र-चँवर सुशोभित होंगे। आपके इस आनन्द में हम भी सहभागी हैं, परन्तु...? "

"कहिएऽऽ बताइएऽऽ।"

"महाराज! आपने अपने प्रासादी को दाहिनी ओर अष्टप्रधानों के महलों की ओर कभी देखा क्या?"

"मतलब?"

पिछले दो ढाई महीनों से बालाजी पन्त चिटणीस, अण्णाजी दत्तो, हिरोजी फर्जन्द जैसे बुजुर्ग लोग नजरबन्द हैं। उनके दरवाजों पर कड़ा पहरा है। महाराज! हम सभी को लगता है कि अपने दीवाली और कर्मचारियों के घर होली का दृश्य देखना हमें अच्छा नहीं लग रहा है।" हरजी राजा महाडिक और येसूबाई ने कहा।

शम्भूराजा बड़ी देर तक वैसे ही मौन बने रहे। जैसे किसी पहाड़ और घाटी से बादल आते और जाते रहते हैं वैसे ही उनके चेहरे के भाव बदल रहे थे। थोड़ी देर बाद उनके चेहरे की रेखाएँ ढीली पड़ने लगीं। लम्बी साँस भरते हुए उन्होंने कहा—"देखिए इन कर्मचारियों के लिए मेरा मन आपसे अधिक संवेदनशील है। क्योंकि ये सभी पिताजी के समीपी लोग हैं। उनकी गोद में, उनके कन्धे पर खेलते हुए हम बड़े हुए हैं। हिरोजी फर्जन्द रिश्ते में हमारे चाचा हैं। इन सभी को क्षमा कर देने का विचार आपसे पहले मेरे मस्तिष्क में आया था। परन्तु इसके बाद क्या ये हमारे राज्य के प्रति निष्ठावान बने रहेंगे?"

शम्भूमहाराज का प्रश्न का सुनकर सभी का सिर नीचे झुक गया। राजा ने येसूबाई की ओर देखा। येसूबाई ने सहज भाव से कहा, "महाराज, आप व्यर्थ ही इतनी चिन्ता कर रहे हैं। गुनाह किससे नहीं होता? गलतियाँ कौन नहीं करता?"

येसूबाई के शब्द शम्भूमहाराज के कलेजे में कटार की तरह चुभ गये। परन्तु उन्होंने चेहरे पर यह भाव आने नहीं दिया। रात के भोजन के बाद अम्बिकाबाई पुनः शम्भूराजा के सामने खड़ी हो गयीं। उन्होंने कुछ कहा नहीं किन्तु शम्भूराजा ने उनकी आँखों के प्रश्न को पढ़ लिया।

"उचित समय पर उचित निर्णय अवश्य लेंगे।" कहकर शम्भूराजा ने उनसे बिदा ली।

वे अपने शयनकक्ष में आये तब फीकी हँसी हँसते हुए येसूबाई ने कहा, "अम्बिकाबाई के प्रस्ताव से स्वामी कितना बेचैन हो रहे हैं? छत्रपति का सम्बन्धी होना कोई गुनाह तो नहीं है न महाराज?"

शम्भूराजा ने तुरन्त कहा, "यह कोई पुण्य भी तो नहीं है। सत्ता और सम्पत्ति की पालकी के सामने ये सम्बन्धी विदूषक की तरह नाचेंगे, किन्तु यदि एक बार बुरा समय आ गया तो ये रिश्तेदार मुँह छिपाकर दूर भाग जाएँगे, येसूरानी। मैं एक बात तुम्हें स्पष्ट बताना चाहता हूँ। पिताजी ने इन सम्बन्धियों की भीड़ जानबूझकर दूर ही रखी थी। उन्होंने मिट्टी में से मुहरें चुनी थीं। इसीलिए स्वराज्यमन्दिर का यह कलश इतना चमक रहा है।"

सहजता से बात करते करते चुटकियाँ बजाते हुए शम्भूराजा ने पूछा— "युवराज्ञी, क्या आपको मालूम है कि बड़े महाराज ने सह्याद्रि की घाटी-पहाड़ियों से घिरे इस रायगढ़ को राजधानी बनाने के लिए क्यों चुना?"

प्रश्न सुनकर येसूबाई राजा की ओर देखती रहीं। तब राजा ने ही कहा, "मिर्जाराजा जयसिंह और दिलेरखान ने पुरन्दर पर आक्रमण किया था। उस समय पिताजी मुगलों के आक्रमण को कोई महत्त्व नहीं दे रहे थे। दिल्ली का दबाव बढ़ता गया। राजगढ़ के आसपास के साठ-सत्तर गाँवों को उन्होंने तहस-नहस कर दिया। भविष्य में प्रजा की कभी ऐसी हालत न हो, इसलिए अपनी राजधानी मैदानी इलाके से दूर बनाने का निश्चय किया। रायगढ़ के चारों ओर बस्ती बहुत कम है और ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से घिरा किला अपनी प्राकृतिक सुरक्षा में सिर ऊँचा किये खड़ा है। रायगढ़ पहुँचने के लिए बस एक छोटी-सी राह। रायगढ़ की चोटी पर केवल तूफानी हवाएँ और बरसाती पानी की धाराएँ ही पहुँच पाती हैं।"

शम्भूराजा रुके। फिर विषमण्डता से हँसते हुए बोले, "रायगढ़ को राजधानी बनाने का एक और भी महत्त्वपूर्ण कारण है। यहाँ की प्रकृति भरोसेमन्द है। स्वराज्य के पीछे खड़े रहने वाले कुनबी, कोली, भंडारी जैसी सामान्य जातियों के लोग बहुत ईमानदार हैं। इसके विपरीत घाट पर रहने वाले अपने भाई बन्धुओं और नाते रिश्तेदारों में आपसी झगड़े और द्वेषभाव बने रहते हैं। वहाँ के विद्रोही, अलगाववादी, स्वार्थी और अभिमानीवृत्ति के मराठों से दूर रहने के लिए रायगढ़ सर्वोत्तम स्थान है।

शम्भूराजा की बात पर येसूबाई को हँसी आ गयी। उन्होंने कहा, "महाराज! दरबार मे यहाँ आने के पहले आपने बालाजी पन्त चिटणीस, अण्णाजी दत्तो, हिरोजी फर्जन्द जैसे जिन जिन लोगों ने अपराध किये थे उन्हें बड़ी दिलेरी से क्षमा कर दिया, यह अच्छा ही हुआ। इसमें हरजीराजा ने कोई गुनाह नहीं किया उनकी स्लेट अभी कोरी है।"

"इतना भरोसा है आपको महाडिक पर?"

"हाँ, क्यों नहीं? वे बुद्धि से कुशाग्र हैं, उनमें कुछ कर दिखाने का आत्मविश्वास है।" शम्भूराजा खुलकर हँसे और कहने लगे—"चलो ठीक है

हरजीराजा तकदीर का धनी है।''

''वह कैसे?'' येसूबाई ने उत्सुकता से पूछा।

''कल ही जासूसों के पत्र मिले। आपने सुना होगा कि बंगलूर की चौकी सही अर्थों में हमारे दादा शहाजीराज भोसले ने कायम की थी। उसे विराटनगरी का रूप दिया हमारे पिताजी ने और एकोजी राजा ने दक्षिण में मराठी शासन को सुदृढ़ बनाया। परन्तु हमारे उसी दक्षिणी उपजाऊ प्रान्त के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है।''

''किससे?''

''मैसूर के चिक्कदेवराजा से। युवराज्ञी कर्नाटक की ओर तंजौर मदुरई से मैसूर और बंगलूर तक जगह जगह हमारी जागीरदारियाँ हैं। किन्तु उसी क्षेत्र में चिक्कदेवराज नीचे त्रिचनापल्ली की ओर मे घुस आया है। समय रहते उस पर अंकुश लगाना आवश्यक है। ऐसे समय में अपनी तेज बुद्धि और तेज तलवार का उपयोग करके दक्षिण का क्षेत्र सँभालने वाले एक समथ पुरुष की आवश्यकता थी।''

''इसीलिए अपने बहनोई साहब को .''

''नहीं येसूरानी, बहनोई के नाते नहीं, एक सुयोग्य, कर्तव्यपरायण और माहसी मराठा सूबेदार के नाते हम हरजी राजा को कर्नाटक की ओर भेजने का मन बना रहे हैं।''

शम्भूराजा बिछौने पर विचारमग्न अवस्था में पड़े थे। इसी बीच येसूबाई के सुबह निकले सहज उद्‌गारों का स्मरण हो आया।

'महाराज गुनाह किससे नहीं होता? गलतियाँ कौन नहीं करता?'

उन शब्दों का स्मरण करते हुए शम्भूमहाराज ने दुखी मन मे कहा, ''रानी साहिबा आपके वे शब्द मेरे कलेजे में बाणों की तरह गहराई मे घुस गये हैं। यदि आपने वैसा न कहा होता तो अच्छा था।''

''क्षमा करें महाराज! किसी भी रूप में मेरा आशय आप पर आक्षेप करना नहीं था।'' येसूबाई शान्तिपूर्वक बोली, ''महाराज, शिवाजी महाराज जैमे महान पिता को छोड़कर दिलेरखान के पाम जाना, भले थोड़े दिनों के लिए क्यों नहीं, आपका अपराध ही था।''

''नहीं येसू, वह अपराध नहीं था। वह यौवन का नशा था, एक प्रकार की बेहोशी थी। उस दिलेरखान के पाम जाकर मिलने का नाटक करना, उसे बेवकूफ बनाकर शत्रु के पेट में घुसना, फिर उसका पेट फाड़कर बाहर निकलना, कर्तृत्व का नया कीर्तिमान स्थापित करना, दूसरे प्रदेश से संचित धन प्राप्त करके सुयश चन्द्रज्योत्सना से पिताजी की आँखों को चकाचौंध कर देना ही उस बेहोशी के पीछे

छिपा साहसी सपना था। किन्तु दुर्दैव ने पासा ही उलट दिया।"

"कुछ भी कहिए। पूनम की धवल चाँदनी बिखेरता रहे तो भी चन्द्रदेवता के मुँह पर जो दाग है वह कभी पोंछा नहीं जा सकता। वैसे ही यह बदनामी का कलंक आपके साथ सदैव बना रहेगा।" येसूबाई ने स्पष्टता से कहा।

"और यदि वह चाँद जलकर खाक हो गया तो?" शम्भूमहाराज ने दाँतों से होठ चबाते हुए क्रुद्ध आवाज से पूछा।

"अँ ? यह कैसी भयानक बात कर रहे है, महाराज?"

शम्भूमहाराज झट से उठकर बैठ गये। बाहर तूफानी हवा बह रही थी। रोशनदानों और खिड़कियों से आवाजें आ रही थी। शम्भुराजा ने येसूबाई का हाथ मजबूती से पकड़ा। उन्हें लगभग खींचते हुए छज्जे में ले गये। आकाश बादलो से भरा था। जरा सी चन्द्रकोर बादलो के पहाड के पीछे छिप गयी थी। येसूबाई के हाथ को अपने सीने पर खींचकर रखते हुए शम्भूमहाराज ने चन्द्रमा की रुख किया और विवाद भरे स्वर मे कहने लगे—"येसूरानी! यदि कभी इस मिट्टी ने आवश्यकता पड़ने पर पुकार लगाइ तो आपके ललाट का यह चॉद पिताजी के हिन्दवी स्वराज्य के लिए जलकर खाक हो जाएगा। परन्तु उस आसमान के चाँद से पूछिए कि क्या किसी के लिए इस तरह जलकर खाक होने की तैयारी उसकी है?"

राजदड

एक

"राजन! किले पर धुआँधार वर्षा और दिन में भी शुभ्र अँधेरा करने वाला कुहरा छाया है। उन मेहमानों ने अपने दिन कैसे काटे होंगे?" कवि कलश ने हँसते हुए पूछा।

"कौन मेहमान?"

"ब्रिटिशों के वे दोनों वकील—गैरी और राबर्ट। औरतों और उन बेचारों का निवास भी किले के ऊपर दूर पूर्वी छोर पर है। चट्टानों के ऊपर वहाँ बड़े बड़े झरने हैं। वहाँ रहने से तीन महीने में इन साहबजादों का प्राण निकलना ही बाकी होगा। उनका बटलर कहता था कि ये दोनों रात बेरात उठ जाते हैं। दो चट्टानो के बीच गिरने वाली पानी की धारा के साथ घूमने वाली हवा से उनकी नींद टूट जाती है।"

"कविराज! इतना विस्तार क्यों दे रहे हो? साफ साफ बताइए कि आपका आशय क्या है?

"मिल लीजिए न उन बेचारों से एक बार।"

शम्भूराजा कुछ नहीं बोले। परन्तु उस रात कविराज और ज्योत्याजी केमकर के साथ बहुत देर तक विचार-विमर्श करते रहे। पुर्तगालियों से मुम्बई का टापू अँग्रेजों के हाथ में आ गया। मुम्बई में अँग्रेजों के व्यापार के साथ साथ उनकी मनमानी भी बढ़ने लगी। मुम्बई से अधिक सूरत की चौकी मराठों के लिए चिन्ता का विषय बन गयी। सूरत वाले अँग्रेज अधिकारियों को अधिक महत्त्व देते थे। वे अँग्रेजों के लिए गोला-बारूद की आपूर्ति करते थे। इसीलिए अँग्रेजों की मनमानी भी बढ़ती जा रही थी। कोंकणतट जल रहा था। इस भयंकर समय में संभाजीराजा ने कवि कलश को दक्षिण कोंकण में भेजा था। वे अभी अभी कीचड़ और वर्षा को रौंदते हुए रायगढ़ वापस आये थे। शम्भूमहाराज की इच्छा थी कि डिचोली और कुडाल में अपने बारूद के कारखाने खोले जायँ। यदि अपने कारखाने खुल जाएँ तो

गोले-बारूद के लिए अँग्रेजों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

रात बीतती रही और विचार विमर्श होता रहा। सोने के लिए बहुत देर हो गयी थी, फिर भी शम्भूमहाराज बहुत सवेरे जाग गये। उन्होंने अपने शयनकक्ष से दूर तक निगाह दौड़ाई। उन्होंने जैसे ही हल्के से खिड़की खोली वैसे ही ठंडी हवा का एक झोंका अन्दर आया। पूरा किला अँधेरे और कुहरे से भर गया था। शम्भूमहाराज सवेरे-सवेरे स्नानादि से निवृत्त होकर बाहर निकले। कार्यों की व्यस्तता में सवेरे बाहर निकलकर टहलने का अवसर बहुत कम मिलता था।

शम्भूराजा पालकी दरवाजे की सीढ़ियाँ उतरकर बाहर निकले। उनके पीछे पीछे बारह पन्द्रह हाथ की दूरी पर शस्त्रधारी सेवक चल रहे थे। अब अँधेरा कम होने लगा था। सावन का महीना अभी-अभी बीता था। किले पर चारों ओर हरियाली छायी हुई थी। पूरा रायगढ़ लाल और सफेद फूलों से भर गया था। समुद्र के पीछे, आँखों के सामने कोंकण के द्वीपों में किले का ऊपरी हिस्सा चमक रहा था।

शम्भूराजा के सामने गंगासागर फैला था। उसका पानी शंख की तरह शुभ्र दिख रहा था। नाम के अनुसार न वह गंगा थी और न ही सागर। वह सचमुच कमल पुष्पों से सजा एक सुन्दर जलाशय था। उस जलाशय की सतह को देखते ही शम्भूराजा का मन भयभीत हो गया। वे आगे न जाकर पालकी दरवाजे की सीढियाँ चढ़कर किले के भीतर आ गये। वहाँ रत्नमहल के समीप से बनी पगडंडी से होते हुए एक मनोर के पास पहुँच गये। गंगासागर के समीप होने से रायगढ़ की शोभा और भी बढ़ गयी थी। किले बारह कोंणी और पाँच मंजिली मनोर किले की अद्‌भुत शोभा हो रही थी।

संभाजी राजा मनोर की तीसरी मंजिल पर चढ़कर आये। पतला सा पर्दा हटाकर, गुंबज वाले छत के नीचे खड़े होकर वे बाहर का दृश्य देखने लगे।

इस समय तक कुहरा पूरी तरह साफ हो चुका था। सावन के बाद की चारों ओर फैली हरियाली पर सूर्य की कोमल किरणें छोटे बच्चों की तरह दौड़ लगा रही थीं। प्रकृति के उस रमणीय सौन्दर्य से संभाजी राजा का कवि मन भी सचेत होने लगा। किन्तु उनकी बावरी दृष्टि जलाशय पर जाकर रुक गयी। उस काले नीले पानी में दुर्गाबाई और राणू दीदी की आँखें दिखाई देने लगीं। वे बहुत भावुक होने लगे। उन्होंने बलपूर्वक अपनी दृष्टि वहाँ से हटा ली। किले के नीचे पश्चिम की ओर फैले समुद्र की ओर देखने लगे। वहाँ दिखाई दिया कोंकण का तथा और पानी से उठने वाला धुआँ। ऐसा लगता था मानो धुएँ के ढेर एक दूसरे पर गिर रहे थे, और दिख रहा था मगरमच्छ की पीठ की तरह दिखने वाला जंजीरे का कगार।

शम्भूराजा की आत्मा को मानो डंक लग गया। राजकार्य को सँभाले अभी केवल तीन महीने ही बीते थे। अभी तक जंजीरे के निवासियों की ओर से जंजीरे के

सिद्दी के विरुद्ध कोई जंग नहीं छेड़ी थी। सिद्दी नाम के इस कालसर्प ने मुरुड, तला, म्हसला से कोंकण तट तक के प्रदेश पर क़ब्ज़ा कर लिया था। सिद्दी मूल रूप से अफ्रीका के हब्शी थे। इसलिए इस क्षेत्र को हबसाण कहा जाता था। जंजीरा की जगह पर पहले चट्टानों से बना लगभग चालीस एकड़ का मरुस्थल था। वहाँ पर किले जैसा कुछ नहीं था। पास के मुरुड गाँव में रामा पाटिल नाम का कोली रहता था। उसी साहसी नाविक ने उस चट्टान पर अपने रहने के लिए लकड़ी का घर बनाया था। इस टापू के पास से ईरान, इराक, इस्ताम्बुल और अफ्रीका की ओर से मुम्बई की ओर जहाज आते-जाते थे। उसी लकड़ी के मकान से रामा कोली व्यापार पर नियन्त्रण रखता था।

उस समय निजाम के यहाँ रहने वाले सिद्दी ने रामा कोली को शराब के नशे में धुत करके अपनी सेना द्वारा उस लकड़ी के मकान पर कब्ज़ा कर लिया। इसके बाद बुर्हाणखान ने उस कठोर चट्टान पर एक किला बाँधने की शुरुआत की और देखते-देखते विदेशी व्यापार पर अपनी हुकूमत चलाने लगा। उसी के कारण सिद्दी शक्तिशाली हो गये। वे किसी के मित्र नहीं थे। चारों ओर वे अत्यन्त स्वार्थी, धोखेबाज, घातक और जुल्मी के रूप में विख्यात थे। परन्तु पुर्तगाली, अँग्रेज और मुगल स्वयं सपेरे बनकर उन कालसर्पो को अपने इशारे पर नचाते थे। ये कालसर्प भी बहुत होशियार थे। उन्हें अपने कंठ के जहर और अपनी दहशत की पूरी जानकारी थी। इसलिए सिद्दी स्वयं कभी-कभी अपनी आँखें दिखाता और इन सँपेरों को ही अपनी धुन पर नाचने को मजबूर करता था। उनके मुँह में उठते बुलबलों को देखकर सिद्दी कालसर्प प्रसन्नता मे अपनी पूँछ लहराता था।

दोपहर में संभाजी महाराज दरबार में गये। उसी समय नगारखाने के दरवाजे मे दो-तीन सौ की संख्या में भेड़-बकरियों की तरह जनता वर्षा मे भीगती हुई महाराज के सामने आकर खड़ी हो गयी। ये लोग नागोठणा, आपटा और नगाव के क्षेत्र के आगरी, कोली और कुनबी थे। ये सभी लोग राजा के पैरों में गिरकर प्रार्थना कर रहे थे कि—'महाराज, हमें बचाओ उस हसवा के आतंक से। उसके सैनिक गाँव में आये और गाँव की जवान लड़कियों को उठाकर ले गये।'

"हमारी लड़कियों का अब क्या होगा? वे उनकी जिन्दगी बर्बाद कर देंगे। वह सिद्दी उन्हें गुलाम बनाकर मुम्बई के बाजार में बेच देगा।" बूढ़ी औरतें रो-रोकर चिल्ला रही थीं।

उस जमात के मुखिया ने महाराज के पाँव पकड़ लिये। उन्होंने कहा, "सरकार उन सिद्दियों ने ऊधम मचा रखा है। वे जालिम हबशी हमें गुलाम बनाकर परदेश में ले जाते हैं और बेच देते हैं।" जनता की यह करुण कहानी सुनकर शम्भूराजा क्रुद्ध हो गये। इसके पहले ऐसी शिकायत नहीं आयी थी। महाराज ने

क्रुद्ध स्वर में कविराज से पूछा—"कलश, सुनी आपने यह करुण कहानी? उस अँग्रेज वकील की आप बहुत प्रशंसा कर रहे थे न? बताइए ये सिद्दी किसके बल पर इतने मगरूर हो गये हैं?"

"परन्तु राजन—?"

"मेरे पिताजी जो कहते थे वह पूरी तरह सच है। घर में घुसा हुआ चूहा जिस प्रकार सबकी नींद उड़ा देता है, उसी तरह ये सिद्दी हमारे कोंकण के तट को खा रहे हैं। ये छुपकर वार करने वाले मायावी लोग एक ओर तो औरंगजेब के साथ समझौता करते हैं, दूसरी ओर मुम्बई के अँग्रेजों से साठ-गाँठ करते हैं। इन विषैली औलादों का विनाश ही अपने लिए सुदिन होगा।"

राजा ने जनता को आश्वस्त किया कि वे हब्शियों का ठीक-ठीक प्रबन्ध करेंगे। महाराज की बात से आश्वस्त होकर लोग वापस गये।

शम्भूराजा ने कवि कलश से कहा, "आज शाम को उन अँग्रेज वकीलों को दरबार में ले आइए।"

उस दिन गैरी और राबर्ट शम्भूराजा का आदर से अभिवादन करते हुए दरबार में खड़े रहे। गैरी ने शम्भूराजा के पैरों के पास हीरे-जवाहरात से भरी परात भेंट की थी। राजा का ध्यान परात की ओर आकर्षित करने के लिए राबर्ट आँखों से संकेत कर रहा था। उसके उन दयनीय संकेतों को देखकर महाराज ने धीमे स्वर में कहा, "आपके इस तुच्छ नजराने से हम प्रसन्न हो जाएँगे, यह आपका भ्रम है। इस तरह के निरर्थक लोभ दिखाकर हमें जीतने के सपने कभी मत देखो।"

अँग्रेजी वकीलों को संभाजी राजा की आँखों में दहकता अंगारा दिख रहा था। वे अपने लाल कपड़ों में पूरी तरह सिमटकर पसीने से तरबतर हो रहे थे। घबराये हुए उन वकीलों ने दुभाषिये के माध्यम से शम्भूराजा से पूछा—"महाराज, हम गरीब फिरंगियों पर आप इतना क्रोध क्यों करते हैं?"

"क्योंकि दिये हुए वचन को निबाहना आप नहीं जानते। इससे पहले आपने शिवाजी महाराज के साथ जंजीरे के हब्शियों की कोई भी सहायता न करने का वादा किया था। उस समझौते की सारी शर्तों को आज पैरों के नीचे कुचल दिया है क्या? सिद्दी के बेड़ों को मुम्बई में आश्रय नहीं देते क्या? उनको गोला-बारूद मुहैया नहीं कराते क्या? अपना यह धन्धा चुपचाप बन्द करो नहीं तो याद रखो मुकाबला मेरे साथ होगा।"

संभाजी राजा ने इतनी ही चेतावनी नहीं दी। उन्होंने दुभाषिये को फटकारते हुए कहा, "जहाँ वकीली महल में आप लोग ठहरे हैं, उसके समीप ही एक गहरी घाटी है। उस घाटी के पीछे किले के ऊपरी हिस्से में एक बहुत नोकीली जगह है। वह कभी दिखाया साहब लोगों को?"

"अँ?...हाँ सरकार।..."

"उस टीले पर बनी काल कोठरियाँ बड़ी जालिम हैं। जिस समय सिद्दी की सहायता के लिए तुम्हारी राजापुर की अँग्रेज मंडली पन्हाला के पास आयी थी उस समय मेरे पिताजी ने अँग्रेजों को पकड़कर दो वर्ष तक उन्हीं कालकोठरियों में रखा था। समझ में आया? यह सब अपने मालिकों को ठीक से समझा दीजिए। उन्हें बता दीजिए कि हब्शियों के मैत्री और हमारे साथ ऐसी मस्ती करेंगे तो उन्हें भी उन्हीं कालकोठरियों की सैर कराएँगे।"

अँग्रेजों के वकील अपनी गर्दन झुकाए बाहर चले गये। इस अवसर पर उपस्थित कृष्णाजी कंक ने युवराज की प्रशंसा की—

"महाराज! क्या हड़काया आपने इन गोरे बन्दरों को। देखिएगा चार दिन तक उन्हें ठीक से नींद भी नहीं आएगी।"

शम्भूराजा मीठी हँसी हँसते हुए बोले, "इस तरह दम देने का मतलब है मुख से भाप का निकलना। इससे राज्य का कार्य चलता है क्या?" ऐसा कहते हुए राजा ने कवि कलश की ओर देखा।

"राजापुर बन्दरगाह पर अपने दौलतखाने के पास अपनी पाँच हजार की नौसेना और पचास बेड़े हैं। उनसे कहो कि वे तैयार रहें। जंजीरे का सिद्दी ज्यादा मस्ती करे तो उसे उसी समय कुचलकर रख देंगे। बरसात के दिनों में यदि सिद्दी उन्हें इसी तरह आश्रय देता रहा तो उनके मुम्बई के सभी गोदामों को जलाकर खाक कर देंगे।"

दो

"कुछ भी करो, किन्तु यदि अपने राज्य और धर्म को बचाना है तो सबसे पहले इस कलुष को समाप्त करना होगा।" मोमाजी दत्तो बड़ी गम्भीरता से कह रहे थे।

सिंहासनारोहण के समय सभी कर्मचारियों को मुक्त कर दिया गया था। राजाज्ञा के अनुसार उन्हें पहले जैसा मान सम्मान देने की घोषणा की गयी थी। परन्तु अभी तक कार्य का बँटवारा नहीं हुआ था। केवल बालाजी आवजी को चिटणीस का कार्य सौंपा गया था। बालाजी पीछे की सारी बातें भूलकर कार्य में व्यस्त हो गये थे। उनके पास थोड़ा भी समय नहीं था। मोरोपन्त के घर पर सभी की बैठक जमी थी। पान-सुपारी बँट रही थी, कुछ महत्त्वपूर्ण चर्चा चल रही थी।

मोरोपन्त पेशवा को अपनी बैठक में अण्णाजी और सोमाजी दत्तो का आना पसन्द नहीं था। क्योंकि अण्णाजी अतिमहत्त्वाकांक्षी और दुस्साहसी स्वभाव के कारण ही वे पिछले तीन महीने कारावास की सजा भोग चुके थे। अण्णाजी से रहा नहीं गया। उन्होंने वहाँ बैठे देवाजी से कहा, "जाओ देखकर आओ कि वहाँ दरबार में क्या चल रहा है?"

बैठक में लौंग-सुपारी घुमाई जा रही थी। सामने ही बालेकिले की दीवार थी। उसी के पीछे अन्दर की ओर दरबार की कचहरी थी। देवबा दौड़ता हुआ गया और थोड़ी ही देर में लौटकर वापस आ गया। तब तक अण्णाजी बेचैन होकर उठे और पास के झूले पर जाकर बैठ गये। उनकी बेचैनी के साथ झूले की जंजीर भी कुर-कुर करके बजने लगी। सामने झुककर खड़े देवबा से उन्होंने पूछा—"क्यों रे लड़के, क्या चल रहा है वहाँ?"

"न्याय का काम चल रहा जी! राजा के न्याय का काम।"

"राजा का न्याय? अरे लेकिन शम्भूराजा तो दोपहर को ही किले से उतर कर नीचे चले गये हैं। ऐसा लोगों ने बताया है।"

"राजा जब वहाँ है ही नहीं तो न्यायदान का कार्य कौन कर रहा है?" अण्णाजी ने पूछा।

"अपने कवि कलुशा साहब जी।"

"कहाँ? राजा की गद्दी पर?"

"नहींऽ नहीं पन्त, आप भी कैसी बात करते हैं पन्त?" देवाजी ने कहा, "ऊपर जहाँ गद्दी है वहाँ से तीन सीढ़ी नीचे कविजी बैठे हैं। वे महाराज के सिंहासन पर कैसे बैठेंगे? राजा सिंहासन पर न भी बैठे हों तो भी राजसिंहासन को नमन किया जाता है जी।"

"सिंहासन पर बैठें या न बैठें। राजा की ओर से न्याय तो आजकल कविराज ही देते हैं। लगता है आजकल फिर गंगा उल्टी बहने लगी है।"

मोरोपन्त ने अण्णाजी की ओर घबराकर देखा, उसी समय प्रह्लाद निराजी वहाँ आ गये। उन्हें देखते ही अण्णाजी को जोश चढ़ गया। उन्होंने प्रह्लाद पन्त से पूछा—

"क्यों प्रह्लाद पन्त? आजकल आपने न्यायाधीश का कार्य करना छोड़ दिया क्या? और बड़े महाराज के समय सिर पर चढ़ाया हुआ वह काजी हैदर हज की यात्रा पर चला गया क्या?"

"अण्णाजी, क्या आपको खबर मिली?"

"अजी वैसा कुछ नहीं है तो वह कन्नौजी कीड़ा कैसे अपनी चला रहा है और वह भी राजा के होते हुए।"

प्रह्लाद निराजी का चेहरा सूख गया था। वे बोले, ''राजा को एक साथ अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए अपने बहुत से कार्य दूसरे योग्य व्यक्तियों को सौंपने पड़ते हैं। बड़े महाराज कुछ जिम्मेदारियाँ दूसरों को सौंपते थे। कविराज ने उचित न्याय दिया या नहीं? प्रधान न्यायाधीश के नाते हम उसकी जाँच-पड़ताल करते हैं, उसके बाद ही उसकी तामील की जाती है। ऐसा महाराज का आदेश है, अण्णाजी पन्त।''

''और प्रह्लाद पन्त क्या फिर आप वैसा ही करेंगे? याद है हम सभी अधिकारियों ने मिलकर विद्रोह किया था। हम सभी शम्भूराजा को पकड़ने के लिए पन्हाला गये थे किन्तु आप रात में हमसे अलग होकर पक्ष बदल लिए और हमें मुँह की खानी पड़ी।'' अण्णाजी दत्तो बड़बड़ाये।

''जाने दीजिए अण्णाजी, हम अधिक क्या कहें। आपके भले के लिए ही हम सारा प्रयास कर रहे हैं। उधर महारानी के पास आपके और हमारे लाभ के लिए प्रयास कर रहे हैं। सभी की कोशिश है कि हमें पहले जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त हो।''

''किस प्रतिष्ठा की बात लेकर बैठे हैं? इस बदनाम राजा और उसके लुच्चे मित्रों के समय में किस प्रकार के मान-सम्मान की अपेक्षा करते हैं आप? अनीति और अधर्म के अतिरिक्त अब रायगढ़ पर कुछ भी नहीं मिलने वाला है।''

मोरोपन्त से अब रहा न गया, वे उठकर इधर-उधर देखते हुए दया भाव से बोले, ''बस, अण्णाजी बस, हम आपके सामने हाथ जोड़ते हैं। अपनी ईर्ष्या की भयानक आग में हमें न जलाइए। बुढ़ापा आ गया है अब तक जो हुआ बहुत हो गया। चार दिन की जो जिन्दगी बची है उसे सुख से जीने दीजिए।'' थके हुए मोरोपन्त ने अपने पुत्र निलीपन्त की ओर उड़ती नजर से देखा।

तीन

धर्म की मांगलिकता के प्रति शम्भुराजा के हृदय में जन्मजात आस्था थी। रायगढ़ की गद्दी पर बैठते ही उन्होंने एक एक निर्णय लेना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने सन्त तुकाराम के सुपुत्र महादोबा को वार्षिक उत्सव का स्मरण दिलाया। एक करहाड़ क्षेत्र के लोग रायगढ़ पर आकर शिकायत करने लगे–

''शम्भुमहाराज' चाफल में स्वामी रामदास का बनवाया एक विशाल मन्दिर

है। वहाँ रामनवमी के दिन बहुत बडा मेला लगता है। प्रतिवर्ष हजारों लोग आते हैं। परन्तु एक समस्या है।"

"कैसी समस्या? सज्जनगढ़ और चाफला के स्वर्गवासी महाराज ने जो वार्षिक अनुदान निश्चित किया था, वह हमने चालू रखा है। हमने तो अधिकारियों को कह रखा है कि स्वामीजी को जिस चीज की आवश्यकता हो उसकी तत्काल पूर्ति की जाय। उसके लिए हमारे आदेश की प्रतीक्षा न की जाय।"

"महाराज, हम वही बता रहे हैं। वे गरीब यात्रियो को कष्ट पहुँचाते हें।"

शम्भूराजा के चेहरे पर अनेक भाव बने और बिगड़े। उन्होंने तत्काल कवि कलश को आदेश दिया—"कविराज, वासुदेव बालकृष्ण को शीघ्र पत्र भेजिए। चाफला के उत्सव और स्वामी जी तथा ईश्वर के निमित्त से चाफला मे बसे ब्राह्मण परिवारों को पूर्ण संरक्षण प्रदान करें। व्यवस्था हो जाने पर हमे सूचित करे।"

"जी राजन।"

"इस पत्र की एक प्रति स्वामीजी के पट्टशिष्य देवमूर्ति दिवाकर गोसावी को भी सूचनार्थ भेज दीजिए।"

चिंचवड़ देवस्थान के स्वामी मोरेश्वर गोसावी को भी गंडो से परेशानी हो रही थी। उसकी शिकायत महाराज के पास आयी थी। उनके सरक्षण का आदेश शम्भूराजा ने अपने सेना अधिकारी को दी थी। राज्याभिषेक का समय समीप आ रहा था। एक दिन शम्भूराजा जल्दी में किले से नीचे उतरे। वे महाड, मंडनगढ़ पार करके केलशी की ओर गये। वहाँ समुद्र के किनारे याकूब औलिया फकीर की मजार थी। वहाँ बाबा की समाधि पर संभाजी राजा माथा टेकते थे। इस स्थान पर वे बड़े महाराज के साथ अनेक बार आये थे। बाबा के दर्शन किये थे। संभाजी राजा को उन सभी बातों का स्मरण हुआ। शम्भूराजा ने वहाँ पर अपने तंबू लगाए। समीप ही अपने मंडनगढ़ किले पर न जाकर वे आठ दिन तक औलिया बाबा की समाधि के आसपास ही रहे। उन्हें वहाँ बडी शान्ति मिली।

रायगढ़ पर राज्याभिषेक की जोरदार तैयारियाँ चल रही थीं। शम्भूराजा के निजी हलके में तो मानो शादी की व्यस्तता चल रही हो। आज दोपहर मे येसूबाई को समाचार मिला कि खडो बल्लाल काशी से वापस आ गये हैं। सन्ध्या हो गयी फिर शम्भूराजा अभी तक दरबार में व्यस्त थे। राजा के मुख से राज्याभिषेक का समाचार सुनने के लिए येसूबाई के कान अधीर हो रहे थे। उन्होंने बड़ी बहन सखूबाई से कहा था। "राज्याभिषेक का मुहूर्त अवश्य निकलेगा। गागाभट्ट के 'मम' बोलने की देर है, बाकी सब तैयारी तो हो चुकी है।

भोजन समाप्त होने पर येसूबाई ने धीरे से पूछा—"खंडोबा और गागाभट्ट की भेंट नहीं हो पायी क्या?"

"अँ...हाँ भेंट हुई। इसके पहले के हमारे निवेदन के अनुसार उन्होंने नीति और धर्म से सम्बन्धित 'समयनय' नामक ग्रन्थ की रचना भी कर दी है। उसे उन्होंने खंडो बल्लाल के साथ हमारे पास भेज दिया है।"

"राज्याभिषेक के समारोह में क्या वे सम्मिलित नहीं होंगे?" महारानी ने लड़खड़ाते हुए पूछा।

"हाँ, उनकी तबीयत ठीक नहीं है।" येसूबाई और सखूबाई चुप थीं। किन्तु शम्भूराजा अपने आप को रोक नहीं सके। वे एक लम्बी साँस लेकर बोले, "रानीसाहब, हमारी अपेक्षा हमारे शत्रुओं की दौड़ बहुत तेज है। हम गागा भट्ट को निमन्त्रित करने वाले हैं, इसकी सूचना मिलते ही वे खंडोबा के पहले ही काशी पहुँच गये। हमारे शुभेच्छुओं गागाभट्ट का कान भरा—"राज्याभिषेक शिवाजी के युवराज का है। किन्तु युवराज का व्यवहार और आचरण नीति-न्याय का नहीं है। चारों ओर घोर अधर्म फैला हुआ है, आदि-आदि।"

येसूबाई ने डरकर कहा, "हाय राम?"

ऐसी कड़ुई औषधि पीने की अब शम्भूराजा को आदत हो गयी थी। इसी समय जोत्याजी केसकर, दादाजी रघुनाथ देशपाडे, कृष्णाजी कंक जैसे मित्रों के दरबार में आने की सूचना रायप्पा ने दी। साथ ही येसाजी कंक, कोंडाजी बाबा फर्जन्द, केसोबा त्रिमल, म्हालोजी घोड़पडे, हंबीरराव, मोहिते जैसे वरिष्ठ लोग भी आ पहुँचे। विचार विमर्श आरम्भ हुआ। अभी-अभी कुछ दिन पहले दिवंगत हुए मोरोपन्त पेशवा की चर्चा चल पडी। बहुत हल्की-सी बीमारी में वह पका हुआ फल डाली से गिर पड़ा। उन्हें स्मरण करते हुए सभाजी महाराज ने कहा, "पेशवा मन के बहुत अच्छे इनसान थे। दूसरों के फन्दे में आकर उन्होंने जो बगावत की थी, उस भूल को उन्होंने अनेक बार मेरे सामने स्वीकार किया था।"

"महाराज उनका यथायोग्य स्मारक बनना चाहिए।" हंबीरराव ने प्रस्ताव किया।

"उनके ज्येष्ठ पुत्र निलोपन्त के गुणों को हमने अच्छी तरह परखा है। उन्हें पेशवा पद देने का हमने निश्चय कर लिया है।" शम्भूमहाराज ने सूचित किया।

राजा का निर्णय सुनकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। अपने की एक गाँठ खोलते हुए शम्भूमहाराज ने कहा—

"येसाजी काका, कोंडाजी काका आप सभी को एक बात बताना आवश्यक लग रहा है। पिताजी के समय वरिष्ठ लोगों का मैं मान सम्मान नहीं करता, वरिष्ठ अधिकारियों से द्वेष रखता हूँ उनके साथ कपट का व्यवहार करता हूँ, ऐसा दूषित प्रचार करने में हमारे शत्रु बहुत सफल हो रहे हैं। उनका यह द्वेषपूर्ण प्रचार नासिक

त्र्यम्बकेश्वर से काशी तक फैल गया है।''

''कुछ बिगड़े दिमाग वाले लोग इस प्रकार की बेतुकी बाते कर रहे होंगे। परन्तु येसाजीबाबा, हमारे हंबीरराव, केसोजी त्रिमल, म्हलोजी घोड़पड़े आदि लोग क्या आज छोकरे हैं। शिवाजी महाराज के समय से हम कार्यभार सँभाल रहे हैं। यह सारी वरिष्ठ मंडली आप के साथ है फिर इन सियारों के हुँआने की क्या चिन्ता?'' कोंडाजी फर्जन्द ने कहा।

राजद्रोह जैसे गम्भीर अपमान करने वालों को आपने जीवन दान दिया, उन्हें पद और मान-मम्मान दिया। गद्दारों को इतनी सुविधा तो शिवाजी महाराज के समय में बिलकुल नहीं थी।'' हंबीरराव ने स्मरण दिलाया।

''शम्भूमहाराज, हम पहले ही कह देना चाहते हैं। आप कुछ भी कीजिए किन्तु उस अण्णाजी दत्तो को फिर से पद पर वापस न लीजिए।'' दादाजी देशपांडे और कोंडाजी फर्जन्द एक साथ बोले।

''कोंडाजी बाबा, इतना एक पक्षीय निर्णय न लीजिए। अण्णाजी का पहले का योगदान बहुत बड़ा है।'' शम्भूमहाराज ने कहा।

थोड़ी देर बाद बालाजी चिटणीस बैठक में सम्मिलित हुए। महाराज ने उनसे कहा—''चिटणीस, स्वामी समर्थरामदास के पास दूत भेजिए। वे स्वयं समारोह में उपस्थित होने की कृपा करें, इस प्रकार का साग्रह अनुरोध मेरी ओर से निमन्त्रण में करें।''

अनेक विषयों पर चर्चा हुई। रात को विलम्ब से बैठक समाप्त हुई।

बिछौने में शम्भूराजा को नींद नहीं आ रही है। उन्होंने येसूबाई से पूछा— ''आप क्या सोचती हैं? क्या करें इस अण्णाजी पन्त का?''

''जो भी लेना हो, एक बार निर्णय लेकर मुक्त होइए, कठोर तो कठोर ही सही।''

शम्भूराजा ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, ''अण्णाजी बहुत धूर्त व्यक्ति है। तैरती हुई मछली की तरह। हाथ में आते-आते फिसल जाने वाले। वे बड़े जोर शोर से यह प्रमाणित करना चाहते हैं कि वे और उनके साथ के कुछ अधिकारी ही शिवाजी महाराज के दरबार का सारा कार्य-भार सँभालते थे। इस प्रसंग में मेरी स्थिति मोच खाये पैर जैसी हो गयी है। दौड़ो तो भी दर्द करता है, शान्त बैठो तो भी दर्द करता है।''

लगभग छ: वर्ष बाद रायगढ़ पर इतना बड़ा उत्सव हो रहा था राज्याभिषेक के लिए इतर प्रदेशों के और अपने प्रदेश के लाखों लोग रायगढ़ पर एकत्र हुए थे। राजपरिवार के अनेक रिश्तेदार सपरिवार रायगढ़ पर पहुँच गये थे।

जिस प्रकार आषाढ़ी एकादशी के दिन, चन्द्रभागा नदी के किनारे बिट्ठल

मन्दिर के पास लाखों यात्री एकत्र होते हैं, उसी उत्साह के साथ रायगढ़ पर सप्त महल से होली के मैदान तक, राजाबाजार जगदीश्वर मन्दिर से काले हौद तक लाखों लोगों की भीड़ एकत्र थी। जगह-जगह पर सेना की टुकड़ियाँ तैनात की गयी थीं। गंगासागर के पास की द्वादशकोणी मनोर और किले के बुर्जों को रंगीन पताकों से सजाया गया था।

शम्भूमहाराज सभा मंडप की ओर जाने लगे। उसी समय प्रवेश द्वार के पास पन्द्रह बीस मुसलमानों का जत्था खड़ा दिखाई पड़ा। वे सभी लम्बे, कटी नुकीली दाढ़ी वाले और मैले कपड़ों में थे। शम्भूराजा समीप आने लगे उसी समय सोमाजी दत्तो और जोत्याजी आदि चिल्लाए—"पीछे हटो, महाराज को आगे जाना है।"

मुहूर्त के लिए विलम्ब न हो जाय, इसलिए शम्भूराजा जल्दी में थे। शनिस्त्रोत के शब्द उनके कानों में पड़े—

नीलांजनं समाभासं रवि पुत्रं यमाग्रजम् ।
छाया मार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।

शम्भूराजा ठिठक गये। भयभीत स्वर में शनि का स्मरण कौन कर रहा है? कौन है इतने संकट में? उन्होंने शनि का स्त्रोत बोलने वाले उस गरीब मुसलमान लड़के की ओर देखा। महाराज वहाँ एकत्र लोगों के पास चले गये। अन्य लोग बगल हट गये। महाराज ने पृछा—"कौन हैं ये लोग?"

"महाराज, हम जाति के ब्राह्मण हैं—कोल्हटकर, श्रीबागचे, गांगाधर पन्त, कुलकर्णी। हम सब को जंजीरे के हब्शियों ने जबरदस्ती मुसलमान बना दिया।

"महाराज, आप हम लोगों को फिर धर्म में सम्मिलित करने की कृपा करें। इसी प्रकार घोर अन्याय के सताए हमारे जैसे इस राज्य में असंख्य लोग हैं।" रसूलकर ने विनय के स्वर में कहा। महाराज ने वहीं पर चिटणीस से पूछा—"बालाजी पन्त प्रत्येक व्यक्ति को धर्माचरण स्वेच्छा से करना चाहिए न?"

"जी महाराज?"

"इनकी समस्या का शीघ्रातिशीघ्र समाधान कीजिए। चिटणीसजी समारोह की व्यवस्था में व्यस्त हैं। इस समस्या की ओर मैं स्वयं देखता हूँ।" सोमाजी दत्तो ने आगे बढ़कर कहा।

महाराज और महारानी के मंडप में आने में बिलम्ब होने से लोग बेचैन होने लगे। सिंहासन की दाहिनी ओर दृष्टि टिकाए लोग वहीं पर बैठ गये। उस दरबार की शान-शौकत बादशाह के दरबार को भी मात देने वाली थी। समारोह के लिए राजा ने खुले हाथ मुहरें लुटाई थीं। मराठों की राजगद्दी पर दूसरा छत्रपति विराजमान हुआ। इस बात का दशों दिशाओं में फैलना स्वाभाविक था। दरबार की दीवारें

रामायण और महाभारत के प्रसंग चित्रों से सजाई गयी थीं। स्फटिक जैसे सुन्दर शीशों से बनाए गये झूमर दरबार की शान बढ़ा रहे थे। सम्मानित अतिथियो के लिए मखमली तख्तों की व्यवस्था की गयी थी।

रायगढ़ का वह स्वर्ण सिंहासन कब से शम्भूराजा कर प्रतीक्षा कर रहा था। उस सिंहासन के साथ मावले मर्दो का खून पसीना, प्रेम और आदर का रिश्ता था। अचानक दाहिनी ओर मंगलवाद्य बजने लगे, नगाड़े भी जोर जोर से बजने लगे साथ ही चोबदारों की घोषणाएँ गूँजने लगीं—"महाराज धीरे धीरे महाराजऽऽ। सफल शास्त्र विचारशील, धर्मज्ञ, शास्त्रकोविद, क्षत्रिय कुलावतंस श्री शम्भु महाराज आ रहे हैंऽऽ।"

चोबदारों के पीछे पीछे धीरे धीरे किन्तु दृढता से कदम रखते हुए शम्भूराजा का आगमन हुआ। दरबार में हर्षोल्लास फैल गया। केवल बाईस तेइस वर्ष के ऊँचे, बलिष्ठ रेख उठान चेहरे वाले सपनीली आँखों और सुतवाँ नाक वाले गौरांग शम्भुमहाराज सभी के सामने प्रस्तुत हुए। उनकी नुकीली दाढी शिवाजी का स्मरण दिला रही थी। उनके गले में मणियों और मोतियो की मालाएँ चमक रही थीं। किन्तु उनके मन के भीतर कुछ और ही सक्रिय था।

शम्भूराजा के पीछे पीछे छरहरी और अभिजात सौन्दर्य से मंडित येसूबाई आयीं। उनके शरीर पर अंजीरी रंग शालू था। गले में पीली पीली चमकती कोल्हापुरी माला, कमर पर स्वर्ण करधनी, भाल पर कुकुम की लम्बी लकीर, चन्द्रमा के निकलते समय आसपास झिलमिलाते बादलो का घेरा दिखाई पडता है, वैसे ही सिर पर पल्लू था। मदुरई के पुजारियो द्वारा घटो के परिश्रम से सजाई गयी मीनाक्षी देवी की भाँति येसूबाई अत्यन्त सुन्दर लग रही थीं। उनके चेहरे पर विलसने वाली मधुर मुस्कान उनके सभी वस्त्रालंकारों को मान देती थी। येसूबाई के पीछे पीछे जानकी बाई और शम्भूराजा की सौतेली माँ सोयराबाई आती हुई दिखाई पड़ीं। शम्भूराजा के साथ एक ग्यारह वर्ष का सुन्दर राजकुमार आते हुए दिखाई पड़ा। उसके शरीर पर मूल्यवान रेशमी जाली वाला कुर्ता था और विशेष प्रकार के आभूषण चमक रहे थे। लोगों को यह पहचानते देर न लगी कि वे राजाराम हैं।

धीमी गति से एक एक कदम रखते शम्भूराजा सिंहासन के पास पहुँचे। उन्होंने उस खचाखच भरे दरबार पर नजर डाली और फिर मुड़कर सिंहासन की ओर देखा। उस समय उनके पैर कुछ लडखडाये। मन कुछ सम्भ्रमित हुआ। वे सोचने लगे—उस स्वर्ण से सिंहासन पर बैठें या उसे त्याग दें, भरे दरबार से पीछे चले जायँ? शम्भूराजा उसी स्थान पर स्तम्भवत खड़े रहे। वेणुवन की गूँजती हवा के समान पन्हाला की भेंट के समय शिवाजी महाराज द्वारा कहे गये शब्द उनके कानों में गूँजने लगे—"बेटे जब अपने पाँच सोपानों वाले पवित्र सिंहासन पर बैठने का

समय आएगा तो केवल जन्मजात उत्तराधिकार से नहीं बल्कि अपने आत्मविश्वास से, मराठी मिट्टी के प्रति अटल निष्ठा से रायगढ़ के सिंहासन पर आसीन हो जाना। किन्तु यदि स्वराज्य के प्रति निष्ठा में थोड़ी भी दुविधा या शंका आये तो उस सिंहासन की हवा भी स्वयं को नहीं लगने देना। उसके बदले कफनी पहनकर, साधु बनकर प्रसन्नतापूर्वक वन की ओर चले जाना।''

शम्भूराजा ने एक बार पुन: सभा मंडप की ओर देखा। हजारों मावल वीरों की आँखों के जादू ने उनमें एक नव-चैतन्य स्फुरित किया। अभिमान से उनका सीना तन गया। वे फिर सिंहासन की ओर ध्यान से देखने लगे। उन्हें आभास हुआ कि बड़े महाराज सिंहासन पर विराजमान हैं। इस कल्पना मात्र से उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे। उन आँसुओं पर झूमरों की तेज रोशनी पड़ने से वे स्फटिक के समान चमकने लगे। वे स्वयं से ही अस्पष्ट शब्दों में कुछ कहने लगे। उनके धीरे बोले गये शब्दों को अगली पंक्ति के कुछ सम्मानित लोगों ने सुना—'पिताजी। आपकी मुहर की, पवित्र पादुका की, तलवार की और परम्परा की मैं अपने प्राणों से भी अधिक हिफाजत करूँगा।'

''वाह महाराज, वाहऽऽ!'' कवि कलश, जोत्याजी, प्रह्लाद निराजी जैमे सहकारियों ने आनन्द का उद्घोष किया।

शम्भू महाराज ऐसे ओजस्वी स्वर में बोले मानो बड़े महाराज के सामने शपथ ले रहे हों।

''जिस प्रकार जसवंती के कोमल फूल को नाखून से कुतर दिया जाता है वैसे ही यदि मेरे सिर को छाँटकर काल के चरणों में फेंक दिया जाय तो भी मुझे स्वीकार है किन्तु अपने सह्याद्रि के हीरे मोतियों मे लाख गुना मूल्यवान किलों को किसी के भी हाथ में नहीं जाने दूँगा। हिन्दवी स्वराज्य पर आँच नहीं आने दूँगा।''

इसी दृढ़ निश्चय के साथ शम्भूराजा सिंहासन पर विराजमान हुए। सिंहासन पर बैठते ही किले के मभी बुर्जो से तोपों के धड़ाके छूटने लगे। पिछले कई सालों में इस तरह नगाड़े नहीं बजे थे। शम्भूराजा पर पुष्पों की वृष्टि हुई ऐसा लगा मानो देवता उन पर वृष्टि कर रहे हों। येसूबाई की आँखों में आनन्द के आँसू उमड़ आए। छोटे राजाराम, जानकीबाई, राजा के सभी मित्र आनन्द विभोर हो गये थे।

मन्त्रपाठ, जयघोष, राज्यारोहण विधि सब कुछ साथ-साथ चल रहा था। समारोह के प्रथम चरण की समाप्ति पर राजा को भेंट सर्मर्पित की गयी। उस समारोह में स्वामी रामदास की ओर से उनके शिष्य दिवाकर गोसावी उपस्थित थे। उन्होंने स्वामीजी की ओर से आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह में सन्त तुकाराम के चिरंजीव महादोबा और नारायण स्वामी उपस्थित थे। उन दोनों का सम्मानपूर्वक गौरव किया गया। दूसरे राज्यों के वकीलों ने झुककर अभिवादन किया। समारोह के

समाप्त होते ही शम्भूराजा ने कहा, "कुछ दिन पहले मैंने एक निर्णय लिया था। बालाजी पन्त, अण्णाजी और हिरोजी के घर से चौकी पहरे उठा लिए थे। भाइयो, मैं बड़े महाराज के समय के इन अनुभवी पुराने लोगों पर नयी जिम्मेदारियाँ सौपने वाला हूँ।"

राजा के इन उद्‌गारों को सुनकर दरबार में शहनाई आदि मंगल वाद्य बजने लगे। बुजुर्गों को सम्मानित करने के उपलक्ष्य में राजा की बड़ी प्रशंसा की। इसी समय बाईं ओर झिलमिलाते पर्दे की आड़ से पहले बालाजी पन्त उनके बाद अण्णाजी दत्तो हिरोजी, राहुजी जैसे कर्मचारी आकर सभा मंडप में खड़े हो गये। उनके सिर की कलीदार पगड़ियाँ, पट्टे, महँगे कपड़े गले में पड़े रत्नहार सब कुछ बहुत शानदार लग रहे थे। उन सभी ने आकर पहले शम्भूराजा का और दरबार का अभिवादन किया। दरबार में उपस्थित प्रजावर्ग ने जोर से जय घोष किया।

शम्भूराजा ने सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा, "महानुभावो! भ्रमों और गलतफहमियों का गन्दा पानी बह गया है। मेरे मन में कोई भी शंका या द्वेष नहीं है। बताइए राज्य का चिटणीस पद हम किसे सौंपें?"

दरबार के लोग चुप्पी साध गये। तब शम्भूराजा ने हँसकर स्वयं कहा, "एक निष्ठता और सेवा भाव का ही दूसरा नाम बालाजी पन्त है। क्या उन्हें छोड़कर दूसरा कोई चिटणीस हो सकता है?"

शम्भूराजा के भावपूर्ण शब्दों से सभी के मन भर आए। सम्मान का वस्त्र देने के लिए उन्होंने चिटणीस को पास बुलाया। इसी समय कल्याण और भिभंडी के सूबों की जिम्मेदारी मोरोपन्त को सौपने की घोषणा की। पास में खड़े हंबीरराव मोहिते की ओर शम्भूमहाराज ने बड़े गर्व से देखा। उन्होंने कहा, "ऐसा कहा जाता है कि वीरों का पोवाड़ा वीरों को ही गाना चाहिए। उसी न्याय से वीरों के शस्त्र महावीर ही चलाया करने हैं। प्रतापराव गूजर के स्वर्गवासी होने के बाद मामाजी ने ही साहसपूर्वक फौलादी शस्त्र सँभाला है। इसके बाद सेनापति का पदभार हंबीरराव मामा ही सँभालेंगे।"

हंबीरराव के बाद प्रह्लाद निराजी को न्यायाधीश के वस्त्र मिले। इसी प्रकार मोरोपन्त पंडित दानाध्यक्ष, आबाजी सोनदेव सुरनवीस और दाजी पन्त वाकेनवीस बने।

काफी समय से कोने में खड़े भारी डीलडौल के अण्णाजी दत्तो परेशान से दिख रहे थे, उनके माथे पर धर्म बिन्दु एकत्र हो गये थे। उनकी दृष्टि स्थिर नहीं थी। उनका चित्र अशान्त था। अण्णाजी की शान्त किन्तु तीखी दृष्टि डालते हुए शम्भूराजा ने कहा, "पन्त इस नयी राज्य व्यवस्था में भी आपका स्थान सम्मानजनक ही होगा। हम बड़ी प्रसन्नता से स्वराज्य के मजूमदार पद पर आपकी नियुक्ति करते

हैं।'' मजूमदारी मिलने से अण्णाजी प्रसन्नता का ऊपरी दिखावा करने का प्रयास कर रहे थे, किन्तु सुरनवीसी जाने का दुख उनसे छुपाते नहीं बन रहा था। राजा ने सोयराबाई और धाराऊ इन दोनों माताओं का सम्मान किया। अपने आजीवन साथी रायप्पा महार का सत्कार करना भी शम्भूराजा नहीं भूले।

शम्भूराजा की दृष्टि समारोह में पीछे बैठे दरिया सारंग और दौलतखान पर पड़ी। तुर्की शैली में बनाए गये उनके आकर्षक फेटे, हरे रंग के कुर्ते, मेहंदी लगी दाढ़ियाँ सभा मंडप में अलग आकर्षण पैदा कर रहे थे। उनके पास ही मराठी लिबास में भायनाक भंडारी बैठा था। उन तीनों की ओर हँसती नजर डालते हुए शम्भूराजा ने कहा, ''भविष्य में अपने गढ़-किलों को सँभालकर, पूरी दुनिया में अपना झंडा फहराना हो तो पानी पर शासन करना सीखो, ऐसा हमारे पिताजी कहते थे। इसलिए अपने समुद्री सेनानियों को सम्मानित करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं।'' उन समुद्री वीरों को सम्मान वस्त्र दिये गये।

राजा ने अपनी तीनों बहनों और तीनों बहनोइयों को मूल्यवान वस्त्र और आभूषण देकर सम्मानित किया। दरबार की ओर अपनी दृष्टि घुमाते हुए शम्भूराजा ने कहा ''किसी कुटुम्ब या राज्य को कोई स्त्री किस जादुई शक्ति से सँभालती और आगे बढ़ाती है, इसकी श्रेष्ठ उदाहरण हमारी दादी साहिबा अर्थात् जीजा माता थीं। उन्होंने शिवराय को बनाया, शिवराय ने हिन्दवी स्वराज्य को बनाया। यशस्वी पुरुष के मुकुट की कौस्तुभ मणि उसकी स्त्री होती है। शम्भूराजा ने अपनी दृष्टि जब येसूबाई की ओर घुमाई तो दरबार में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। उन्होंने कहा, ''शत्रु का मुकाबला करने के लिए अनेक बार हमें अपने अष्टप्रधानों के साथ बाहर जाना पड़ता है। इसलिए गृह विभाग का सूत्र हम येसूबाई के हाथों में सौंप रहे हैं। यह स्वर्णमुद्रा और उस पर अंकित शब्दलेख 'स्त्री सखी राज्ञी जयति' सदा ही महारानी की पहचान बना रहेगा।''

उधर होली के मैदान पर अखंड दक्षिणा वितरण और दान धर्म चल रहा था। देश के कोने-कोने से आये याचकों की वहाँ भीड़ लगी थी। राजा ने दरबार में भी खूब दान-पुण्य किया। राजा ने कहा, ''हमारे पिताजी दुनिया के सबसे बड़े रत्नपारखी रहे होंगे। इसीलिए उन्होंने अकूत द्रव्यों में खेलने वाले अमीरों को किनारे करके तानाजी, येसाजी, मुरारबाजी, दौलतखान, दरियासारंग जैसे सामान्य जनों को अपनाया और उन्हें अवसर दिया। ऐसा करने से राजा का ही गौरव बढ़ा। आज हम भी अपने एक अत्यन्त निष्ठावान स्वराज्य सेवक का सम्मान कर रहे हैं जिसने कभी प्यादे के पद की भी माँग नहीं की। अपने उस कवि कलश को हम 'छन्दोगामात्य' की उपाधि दे रहे हैं और उनका अपने अष्टप्रधानों में समावेश कर रहे हैं।''

शम्भूराजा की बात सुनते ही कवि कलश उठकर खड़े हो गये। राजा के सामने झुकते हुए विनम्रता से बोले, "महाराज, आपके मुकुट के मोतियों में हम कोई कमी नहीं आने देंगे। हम मरते दम तक साथ रहेंगे।"

हिन्दवी स्वराज्य के दूसरे छत्रपति के राज्याभिषेक-समारोह पूरी गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। गढ़ पर एक लाख से अधिक लोग उपस्थित थे। नीचे उतरने के लिए केवल एक सँकरा रास्ता था। इसलिए भीड़ अधिक हो गयी। होली के मैदान पर भी दान प्राप्त करने के लिए याचकों में खूब हो-हल्ला हुआ। विशेष रूप से तैयार किया गया लकड़ी का चबूतरा भी टूट गया। हजारों याचक एक साथ टूट पड़े। ठेलमठेल और अनियन्त्रित भीड़ में दम घुटने से सौ दो सौ याचक मृत्युमुखी हो गये।

भीड़ की असीम बाढ़ के कारण लौटते समय खूब कसा कम्पी हुई। कुछ अफवाहें भी फैलीं। जिन्हें दान नहीं मिल पाया वे छटपटाकर बड़े-बड़े शाप दे रहे थे।

मार्ग में कवि कलश और उनकी मातृभूमि कन्नौज को लांछित किया जा रहा था। एक शास्त्रीजी बड़े ताव से बता रहे थे—"समझ में आया तुम लोगों को? यह सारी गड़बड़, यह सारी नरबलि उस दुष्ट कलश की करामात है। पूरे चौदह सौ मनुष्य और चार हजार भेड़ें काटी हैं उसने। ऐसा उस नराधम ने किया है।"

"किन्तु किस लिए?"

"ऐसे बच्चों जैसा प्रश्न क्या पूछते हो? उस कलुष के प्रियतम शम्भूराजा सिंहासनाधीश हो गये न? इसीलिए इस शाक्तपन्थी चांडाला का यह कारनामा हुआ है। वह मानता है कि जितनी नर बलि होगी, जितनी भेड़ों के प्राण जाएँगे उतने ही शम्भूराजा के शत्रु नष्ट होंगे।"

लोगों ने अनियन्त्रित भीड़ और अति उत्साह के कारण प्राण गँवाए थे और सारा दोष कवि कलश के माथे मढ़ा जा रहा था।

चार

शम्भूराजा के निजी कक्ष में कुछ समीपी लोग एकत्र हुए थे। मध्यरात्रि में आवभगति हो रही थी। उनमें बालाजी चिटणीस म्हालोजी घोड़पड़े कोंडाजी, फर्जन्द जैसे बुजुर्गों सहित कवि कलश कृष्णाजी कंक, निलोपन्त पेशवा जैसे तरुण भी

सम्मिलित थे। हंबीर मामा, सब कुछ निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो जाने के लिए सन्तोष व्यक्त कर रहे थे।

भोजन समाप्त हुआ। पानी परसने वाले परिचारक एक ओर हो गये। महल के पिछवाड़े छत पर अच्छी खासी भीड़ थी। हंबीर मामा से शम्भूराजा ने कहा, "हंबीर मामा! पिताजी के समय में सिंहगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़ ने खूब यश कमाया। अब हमारे शासन काल में नासिक, बगलाण की तरफ के साल्हेर, अहिवन्त रामरोज और त्र्यम्बकेश्वर को भी कुछ नया इतिहास रचना चाहिए।"

बोलते-बोलते शम्भूराजा ठिठक गये। अपना निचला पतला ओंठ दबाते हुए और मुट्ठियाँ भींचते हुए बोले, "यह औरंगजेब महाराष्ट्र पर चढ़ाई करेगा। ऐसा समाचार है न? आने दीजिए। शुरू में ही उसे ऐसा जवाब दें कि—"

हंबीर मामा हँसते हुए बोले, "शम्भू महाराज, राजा का राज्याभिषेक अर्थात् भूमि के साथ उसका विवाह।"

"हाँऽऽ वह सब तो धार्मिक विधि का ही हिस्सा है।"

"वैसे तो कुछ नहीं, सहज ही याद आया। मारवाड़ियों के लड़कों के विवाह में लड़के के मामा को खूब खर्च करके महँगी भेंट देनी पड़ती है। इस भेंट को 'मामेरा' कहते हैं। क्या ऐसा कह रहे हो कि तुम्हारे इस विवाह के लिए मैं भी भरपूर 'मामेरा' दूँ?"

किन्तु मामाजी आप किस ओर संकेत कर रहे हैं? दिशा तो बताइए?"

"सूरत।" धीमी आवाज में किन्तु सभी को सुनाते हुए मामा बोले।

"तीसरी बार सूरत की लूटऽऽ?" सभी ने एक साथ प्रश्न किया।

"हाँऽऽ क्यों नहीं? अभी भी बहुत सम्पत्ति है वहाँ।"

सूरत के अभियान की अधिक चर्चा न करने की बात निश्चित की गयी शत्रु की अनवधानता में आक्रमण करना उचित होगा। किन्तु इस नयी योजना की बात बहुत लोगों को अवगत हो गयी।

जगदीश्वर की पूजा पूर्ण होने में रात को बहुत विलम्ब हो गया। अण्णाजी दत्तो और हिरोजी फर्जन्द देवता को चाँदी का मुकुट चढ़ाकर मुक्त हुए। कुछ महीने पहले राजबन्दी के रूप में वे जब रायगढ़ की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे तो उन्हें एक-एक कदम पर आभास हो रहा था कि फाँसी के तख्ते पर ही जा रहे हैं। उसी समय उन्होंने मन्नत मानी थी कि यदि बच जाएँगे तो जगदीश्वर को चाँदी का मुकुट चढ़ाएँगे। उनकी जान ही नहीं बची बल्कि शम्भूराजा ने उनके सारे अपराध माफ करके उन्हें पुन: अष्टप्रधानों में सम्मिलित कर लिया।

पूजन-अर्चन समाप्त हुआ। राहुजी सोमनाथ ने नौकरों को आगे जाने के लिए कहा। अण्णाजी और राहुजी की पालकियाँ और हिरोजी का घोड़ा ब्राह्मणबाड़ी में

रुके। देव-देव करते पीछे आते हुए काशी पंडित ने इन विशिष्ट लोगों को भोजन का निमन्त्रण दिया था। राज्याभिषेक के अवसर पर गोवा के डिचोली से वहाँ के सूबेदार मोरो दादा आये थे। वे आते समय महाड से चाँदी का मुकुट लेते आये थे। इसलिए अण्णाजी और उनके साथियों को खरीद करने की जहमत नहीं उठानी पड़ी थी।

भोजन समाप्त हुआ। काशी पन्त की हवेली मे लोग आधीरात गप्प लड़ाने के लिए बैठे। वहाँ से रायगढ़ का बालेकिला, राजगृह और पीछे अष्टप्रधानों के आवास दिखाई पड़ रहे थे। राजगृह का सारा परिसर प्रकाश से लकलका रहा था।

थोड़ी देर बाद उस प्रकाश सज्जा की ओर देखते हुए राहुजी बोले, "हिरोजी, पेशवाओं के बाड़ों के बाई ओर वह तैयार किया हुआ बाडा देखा?"

"बताइए, किसका है?"

"शम्भूराजा ने ही बनवाया है, किन्तु अपने लिए नहीं, ब्रजभाषा पंडित कविराज कलुष के लिए, भई।"

हिरोजी कुछ अजीब-सा चेहरा बनाकर बोला, "जाने दो राहुजी, एक मित्र तो मित्र का ध्यान रखेगा ही।"

"भाई हिरोजी, तुम्हारे इस ठडे खून पर मुझे बहुत क्रोध आता है। कैसा भी क्यों न हो? आप शहाजी महाराज की सन्तति हैं। आप रिश्ते मे बडे महाराज के बन्धु और सभा के चाचा ही हैं न?"

"जाने दो राहुजी।"

"क्यों जाने दें? कौन है? किस जाति का है? गगा के किनारे से आया यह भड़भृजा। उसके लिए शम्भूराजा ने बाड़ो में व्यवस्था करवाई और अपने चाचा के लिए होली के मैदान के उधर एक साधारण सा दुमंजिला मकान, यह भी कोई न्याय है?"

बहुत देर से चुप बैठे अण्णाजी हँसते हुए बोले, "यार हिरोजी, तुम्हारे द्वारा किये गये उपकार क्या अनदेखा करने योग्य है? आगरा से बडे महाराज जब निकले तो अपनी जगह पर उन्होंने तुम्हें बिस्तर में सुला दिया था। कितना धोखा था? तुम तो मर ही गये थे। इतने बड़े त्याग का यह उपहार?"

हिरोजी का मस्तिष्क अब चक्कर खाने लगा। उन्होने सामने रखे मदिरा के पात्र को उठा लिया और खाली कर दिया। वे जोर से छींकते हुए बोले, "कुछ भी हो खजाना चुराने का अपराध तो मुझसे ही हुआ था। शम्भू बेटा बड़े कलेजे का है। उसने हमारे गुनाह पर पर्दा ही डाला न?"

"ठीक है, हम कहते हैं खजाना चुराया। लेकिन किसका खजाना? क्या अकेले शम्भूजी राजा का? अरे भोले हिरोजी, उसमें तुम्हारा भी आधा हिस्सा है।"

राहुजी और अण्णाजी के फुलाने से हिरोजी जैसे फौजी व्यक्ति का सिर

एकदम घूम गया। मदिरा का प्याला खाली करते हुए मोरो दादा के साथ आये हुए कारकुन गला फाड़कर लगभग रो पड़े।

"अण्णाजी, आपको सुरनवीसी न देकर शम्भूराजा ने बहुत बड़ा गुनाह किया है।

"हाँ, अब राजधानी में हमारी धाक कहाँ रही? कुछ भी करना पड़े किन्तु पन्त के दिन बदलने चाहिए।"

अण्णाजी को दुबारा न मिलने वाली 'सुरनवीसी' को शिष्यों ने स्मरण करा दिया। अण्णाजी दत्तो बेचैन हो गये। वे कठोर स्वर में बोले, "आजकल यहाँ न्याय-नीति से कोई लगाव ही नहीं रहा। साक्षी के लिए कहता हूँ। जाँच करके देखो, बताओ, कार्तिक सुदी सप्तमी, शक संवत् सोलह सौ एक के दिन, यह हमारा हिन्दवी स्वराज्य का दूसरा छत्रपति कहा गया था?"

"कहाँ?"

"केलशी के याकूब फकीर बाबा के मठ में। उसके पैरों में लोटने के लिए।"

"इसमें क्या नयी बात है? यह फकीर तो शिवाजी महाराज का भी गुरु था। महाराज भी वहाँ अनेक बार...।"

"हिरोजी, अरे मूर्ख! कहाँ वे महाप्रतापी शिवाजी और कहाँ यह शम्भू संकट? किसकी कहाँ और किससे तुलना करते हो? यार हिरोजी कहते हैं कि बुरा नहीं बोलना चाहिए किन्तु जब तक यह घमंडी, बदमिजाज राजा और उसी के जैसा कुपात्र कलुषा, रायगढ़ पर जीवित रहेंगे तब तक हम जैसे वफादार सेवकों का ठिकाना नहीं लगेगा। हमारे देश-धर्म पर आया यह शाक्त संकट समाप्त होने पर ही कल्याण होगा।"

खंड-दो

अशुभ मोड़

एक

आगरा और दिल्ली के बाद बुरहानपुर ही मुगलों का सर्वाधिक समृद्ध नगर था। दक्षिण का प्रवेशद्वार होने के कारण, मध्यकालीन भारत के सबसे बड़े व्यापार के रूप में उसकी ख्याति थी। यह सैनिक गतिविधियों की दृष्टि मे बड़े महत्त्व का स्थान था। इसलिए बुरहानपुर का सूबेदार बादशाह का कोई समीपी रिश्तेदार ही बनाया जाता था। खानजहान बहादुरखान बादशाह का दूधभाई था। इसीलिए उसकी नियुक्ति इस जिम्मेदारी के पद पर की गयी थी। बुरहानपुर से ही दक्षिण का शासन चलाया जा रहा था।

तापी नदी के तट पर बसी यह ऐश्वर्यनगरी उस शाम को भी नित्य की भाँति आनन्द और विलास में डूबी थी। नदी के तट पर अनेक सुन्दर महल, राजप्रासाद व्यापारियों की बड़ी-बड़ी पीढ़ियाँ, मदरसे आदि विद्यमान थे। शहर के बीच में ऊँचे और मजबूत गुम्बदों वाली मस्जिद खड़ी थी।

बहादुरखान कोकल्तास अपने भतीजी की शादी में सम्मिलित होने, चार दिन पहले औरंगाबाद चला गया था। उसका समधी भी हैदराबाद के नवाब का भाई था। बारात बड़ी धूमधाम से गोलकुंडा से आने वाली थी। अपनी शौकत में कमी न पड़े, इसके लिए बहादुरखान बहुत सचेत था। बुरहानपुर में नियुक्त आठ हजार फौजियों में से तीन हजार फौजी अपने साथ लेकर वह औरंगाबाद के लिए रवाना हुए। शाही विवाह में अपना प्रभाव दिखाने के लिए ही उसने अपने साथ फौज ली थी। उसके जाने के बाद नायबसूबेदार फाकरखान बुरहानपुर का सर्वेसर्वा था। जगह-जगह पर मशालें और बत्तियाँ जलाने का कार्य आरम्भ हुआ। तापी की धारा में उठने वाली तरंगें, रात के अन्धकार में लुप्त होने लगी थीं।

शहर के सामने बहुत बड़ी दीवार थी। उसके साथ इधर हाल के दिनों में अनेक नयी बस्तियाँ बन गयी थीं। नवाबपुर, करणपुर, शाहजहाँपुर, खुर्रमपुर जैसे

कुल सत्रह 'पुर' बस गये थे। किन्तु इन सभी पुरों में बहादुरपुर सर्वाधिक समृद्ध 'पुर' के रूप में बहादुरपुर में सूरत और हैदराबाद जैसे शहरों के व्यापारी रहते थे। वहाँ रेशम, मलमल, सोना-चाँदी आदि के व्यापार में करोड़ों रुपयों का लेन-देन होता था।

वैभव से भरी बुरहानपुर नगरी उस 30 जनवरी, 1681 की शाम बाहर से हमेशा की तरह ही लग रही थी। नायब सूबेदार काकरखान से सन्ध्याकाल की नमाज पढ़ी। हिन्दू प्रजा के साथ किए गये दुर्व्यवहार के कारण वह बहुतों के रोष का कारण बन गया था। इसलिए दो सौ सशस्त्र सैनिक उसके बाड़े के बाहर हमेशा तैनात रहते थे।

आज की दोपहर विशेष रूप से घटना प्रधान बन गयी थी। सूरत के सूबेदार की ओर से हरकारे आये थे। उन्होंने बताया कि सूरत के आसपास के जंगलों में वहाँ के ग्रामीणों ने अनेक मराठा घुड़सवारों को देखा है। इसलिए किसी भी क्षण सूरत पर मराठों का आक्रमण हो सकता है। इस आशंका से वहाँ की प्रजा बहुत भयभीत हो गयी है। विशेष रूप से गोदामों वाले विदेशी व्यापारी। इसके पूर्व पहली बार लगभग बीस वर्ष पहले और दूसरी बार बारह वर्ष पहले शिवाजी ने सूरत में लूटपाट की थी। अब ठीक बारह वर्ष बाद उनका बेटा सम्भाजी सूरत लूटेगा। इस कल्पना मात्र से लोगों की कँपकँपी छूट रही थी।

सूरत के थानेदार ने बुरहानपुर से जितनी सम्भव हो उतनी सेना तत्काल भेजने की प्रार्थना की थी। सूरत की दूसरी लूट के बाद शहर के चारों ओर तीन पोरिसा ऊँची दीवार उठाई गयी थी। आवश्यकता से अधिक फौज भी वहाँ तैनात थी। किन्तु मराठों के आक्रमण के भय से यह सारा प्रयत्न वहाँ हो रहा था।

काकरखान ने अपने सहयोगियों से विचार-विमर्श किया। अन्ततः केवल एक हजार फौज बुरहानुपर में रखकर शेष चार हजार की फौज और बड़ा तोपखाना दोपहर में ही सूरत के लिए रवाना कर दिया। सन्ध्या होने से पहले ही यह सेना पाँच कोस से आगे निकल गयी। काकरखान ने नमाज की चादर मोड़ी। उसी समय चार-पाँच गुप्तचरों के घोड़े उसके महल के सामने आकर खड़े हुए। दरवाजे के पास अपने घोड़ों को रोककर सवार नीचे उतरे। वे पसीने से तर दौड़ते हुए काकरखान के पास पहुँचे। वे घबराहट के स्वर में कहने लगे—

"हुजूर, मरगट्ठे बुरहानपुर तक पहुँच गये हैं। मरगट्ठों ने आक्रमण कर दिया है, हुजूरऽऽ।"

"क्या बकते हो? मरगट्ठे और बुरहानपुर? पागलोऽऽ उनका लक्ष्य तो सूरत था...।" काकरखान चकरा गया। उसने सुराही को मुँह से लगाकर गटागट पानी पिया—"मरगट्ठों का सिपहसालार कौन है? वह सम्भा तो इतनी दूर आ नहीं

सकता। पहुँचेगा भी कैसे? पन्द्रह दिन पहले तो रायगढ़ पर था। दूल्हा राजा बनकर अपनी ताजपोशी का आनन्द ले रहा था।"

"किसी भी हालत में वह यहाँ नहीं पहुँच सकता। घोड़े पर रात-दिन दौड़ लगाए तो भी उसे यहाँ पहुँचने में पाँच-छः दिन तो लगेंगे ही।" पास खड़े एक मौलवी ने कहा।

काकरखान और अन्य लोगों को यह सूचना सच नहीं लग रही थी। किन्तु जासूसों के भयभीत चेहरों को देखकर उनकी जबान बन्द हो गयी थी। नगर के कुछ बड़े व्यापारी भी वहाँ एकत्र हो गये थे। मराठों की सेना सचमुच बुरहानपुर में आ गयी तो क्या होगा? इस कल्पना से सभी को पसीना छूट रहा था। बाहर गली-मुहल्लों में भी यह खबर फैली परिणामस्वरूप चारों ओर भय का वातावरण पसर गया। इसी बीच तीन अन्य गुप्तचर वहाँ पर दौड़ते हुए आये। वे ताजी खबर सुनाने लगे—"यहाँ से तीन कोस की दूरी पर घने जंगल में मराठों ने पड़ाव डाला है। उनके साथ पन्द्रह-सत्रह हजार की फौज है। हंबीर मामा नाम का एक बहुत ही जिद्दी सिपहसालार उनके साथ है।"

"या अल्लाहऽऽ!!" काकरखान को मितली-सी आने लगी। वह भयभीत होकर इधर उधर देखने लगा। वह चिल्लाकर बोला, "ये मरगट्ठे तो पूरे निकम्मे हैं और हमारे जासूस बेवकूफ। सूरत का नाटक रचकर इन बदमाशों ने अब बुरहानपुर को सफाचट करने की सोची है। उस शिवाजी की अपेक्षा उसका लौंडा सम्भा महाबदमाश निकला।"

"क्या बताऊँ, हुजूर? इन मूर्खों की चालें इतनी गुप्त होती हैं कि क्या बताऊँ? उन हैवानों ने दोपहर में ही पीछे के जंगल में खाना तैयार कर लिया। रात के लिए खाना साथ लेकर वे आसपास की घनी झाड़ियों में छुपकर बैठे हैं। उनका ठिकाना बहुत बड़ा है परन्तु वहाँ पर एक चूल्हा जलता हुआ नहीं दिखेगा। सारे काम कैसे चुपचाप..."

"इतना ही नहीं हुजूर?" तीसरा जासूस कहने लगा, "उस बड़ी खोपड़ी वाले हंबीर मामा का क्या करें? आसपास के गाँवों में उनसे कुत्तों के आगे कटी हुई मुर्गियों के टुकड़े डाले। कुत्तों को लालच देकर वाणों और लाठियों से उन्हें मार डाला।"

"इसकी वजह?"

"कुत्ते ऐन मौके पर शोर न करने लगें और गाँव नींद से जागे नहीं।"

"मरगट्ठे चाहते क्या हैं?" बड़ा व्यापारी बाबरखान आगरा वाला पूछने लगा।

"कल सवेरे सूरज की किरणें निकलने से पहले बुरहानपुर पर क़ब्ज़ा जमाने की उनकी इच्छा दिखती है।" यह कहते हुए काकरखान का चेहरा काला पड़ गया।

काकरखान के दरबार में बैठक आरम्भ हुई। शहर के बड़े व्यापारी, मुल्ला-मौलवी, खानदानी मुसलमान सभी एकत्र हुए। जैसे शीत लहर के आने पर सभी ठंड से काँपने लगते हैं, वैसी ही दशा सभी की हो रही थी। बहुतों की रुलाई छूट गयी। कुछ आपस में बात करने लगे—"यह मत भूलो! सम्भा के बाप शिवाजी ने सूरत को दो बार लूटा था। तब वह नगरी पूरी तरह नग्न हो गयी थी। अपना शहर यदि एक बार सफाचट किया तो फिर खड़ा नहीं हो पाएगा। कुछ भी कीजिए लेकिन हमें बचाइए।"

कुछ व्यापारियों का धैर्य छूट गया था। व्यापारी, आढ़तिए और सुनार इतने घबरा गये कि उन्होंने मुहरों की थैलियाँ लाकर काकरखान के पैरों में रख दीं और उसका पैर पकड़कर सिसक-सिसककर रोने लगे—"कुछ भी करिए सरदार लेकिन हमें बचा लीजिए!....हमें बचाइए।"

काकरखान कठोर, ईर्ष्यालु और लड़ाकू वृत्ति का था। इसीलिए औरंगजेब ने जजिया कर की वसूली के लिए उसे विशेष रूप से नियुक्त किया था। बुरहानपुर में केवल एक हजार की फौज थी। इतनी कम सेना से इतना बड़ा शहर कैसे बचाया जाये? समझ में नहीं आ रहा था। अपने बाड़े में एकत्र नगरवासियों के सामने काकर खान साहसपूर्वक खड़ा हुआ। उसने कहा, "बचाव के लिए हमारे पास बहुत थोड़ी फौज है। व्यापारी प्रतिष्ठानों के पास लगभग एक हजार सुरक्षाकर्मी हैं, उन्हें मेरे साथ कर दें। मैं इतना ही कहूँगा कि मैं अपने प्राण दे दूँगा किन्तु बुरहानपुर को बचाऊँगा।"

काकरखान सभी को डूबती नाव को बचाने वाला कुशल नाविक लगा। निजी सुरक्षाकर्मियों और पहरेदारों को मिलाकर डेढ़ हजार की फौज तैयार की गयी। यह देखकर काकरखान का साहस बढ़ा। उसकी धमनियाँ गर्म हुईं। वह अपने दाँतों को भींचते हुए बोला, "चलिए, उठिए अब मराठों की राह देखने की बेवकूफी क्यों की जाए? चलिए हम थोड़ी हिम्मत करें। हिम्मत से छुपते-छुपाते जाएँ और आज रात में ही मराठों के खेमे पर हमला करें। आग लगाकर उनके डेरे-डंडे जलाकर खाक कर दें। उन शैतानों का सोते हुए ही कत्ल कर दें।"

"वाहऽ, बहुत खूबऽऽ!" इकट्ठी हुई भीड़ चिल्ला उठी।

मध्यरात्रि में बुरहानपुर का मुख्य द्वार चरमराया। एक हजार घुड़सवार और डेढ़ हजार पैदल साहस के साथ उस दरवाजे से बाहर निकले। सबसे आगे काकरखान का घोड़ा दौड़ रहा था। आरम्भ में पाँच-छ: सौ कदम चलने के बाद

एक बन्द पड़ी खंदक मिली। कभी-कभी उसमें शहर की सुरक्षा के लिए लकड़ियाँ जलाई जाती थीं। वह खंदक एक बार पार हुई तो सेना रास्ते पर आ जाती।

किसी तरह काकरखान अपने पाँच-छ: सौ सिपाहियों को लेकर उस अँधेरी खंदक के मुख तक आया। आसपास उसे कुछ हिलता-डुलता-सा दिखाई पड़ा। एकाएक खंदक की हजार-हजार जीभें फूट पड़ीं। उसके भीतर छुपे मराठों के घोड़े हिनहिनाते हुए बाहर निकले। 'हर हर महादेव', 'शिवाजी महाराज की जय', 'सम्भाजी महाराज की जय' चारों ओर यही उद्घोष गूँजने लगा। आसपास के अँधेरे में कुछ दूरी पर छिपे चार हजार घोड़े और भी बाहर आ गये। बुरहानपुर वासियों के सामने मौत दिखाई देने लगी। मराठे, 'मारोऽऽ, मारोऽऽ', चिल्लाते हुए उन पर हल्ला बोल रहे थे। उनके घोड़े आगे बढ़ रहे थे। उनके हाथ की भवानी तलवार 'गर्र-गर्र' घूम रही थी। सबसे आगे सम्भाजी महाराज का सफेद रंग का घोड़ा था। सम्भाजीराजा ने सिर पर लोहे का शिरस्त्राण और जाली वाला फौलादी कवच पहना था। वे सामने शत्रुओं के सिर उसी तरह छाँट रहे थे मानो ज्वार की बालें काट रहे हों। राजा के साथ युद्ध लड़ने का अवसर पाने के कारण उनके साथियों में भी बड़ा उत्साह आ गया था। वे बड़ी दृढ़ता से अपने घोड़ों को आगे बढ़ा रहे थे। भागते हुए बुरहानपुरी घोड़ों पर मराठी घोड़े टूट पड़ रहे थे। रक्त की धाराएँ बह निकलीं। बाढ़ के प्रवाह की तरह मराठी सेना बुरहानपुरी सेना का पीछा कर रही थी। काकरखान किसी तरह जान बचाकर दीवार के भीतर आया। चार-पाँच सौ घुड़सवार मारे जा चुके थे। अनेक मनुष्य और जानवर घायल होकर रास्ते में घिसट रहे थे। वे पीड़ा से चिल्ला रहे थे। 'या अल्लाहऽ, या खुदाऽऽ' कहकर हाथ-पैर पटक रहे थे।

बुरहानपुर के ऐश्वर्य का पूरा नक्शा शम्भूराजा के मस्तिष्क में स्पष्ट रूप से अंकित था। इसीलिए उन्होंने काकरखान का पीछा न करके अपने मदमस्त घोड़े को दरवाजे पर ही रोक लिया। इसी समय घोड़ा दौड़ाते हुए कवि कलश राजा के पास पहुँचे। चिराग के उजाले में उन्होंने बुरहानपुर का कच्चा नक्शा शम्भूराजा को दिखाया। अपने को आश्वस्त करने के लिए आँखें घुमाते हुए शम्भूराजा ने कहा, "अपने दो तीन सौ लड़कों को यहाँ दरवाजे पर भिड़ा दो। लड़ाई का नाटक चालू रहने दो। बाकी सभी सामने के रास्ते से उस बहादुरपुर की ओर चलें। द्रव्यों से खचाखच भरी तिजोरियाँ और सन्दूकें वहीं हैं। चलिए रात में ही दुकानें तोड़ना शुरू कर दीजिए।"

"जैसी आज्ञा, राजन।"

"और हाँ, किसी स्त्री या बाल-बच्चे को हाथ नहीं लगाना है। ध्यान रखें कि कम से-कम जनहानि हो। किन्तु यदि कोई शस्त्र लेकर आक्रमण करता है तो उसे तुरन्त आसमान दिखा दीजिए।"

दो

नींद में भी जाग कर सेनापति को अपना युद्ध धर्म पूरा करना पड़ता है। हंबीर मामा की फौज उस जंगल में विश्राम कर रही थी। किन्तु मामा अपने तम्बू में जाग रहे थे। मध्य रात्रि अँधेरे की काली चादर ओढ़े समाप्ति की प्रतीक्षा कर रही थी। इतने में कहीं दूर बुरहानपुर की ओर से 'हर हर महादेव', 'सम्भाजी महाराज की जय', 'शिवाजी महाराज की जय' ऐसी जोर की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। हंबीर मामा झटके से उठे, अपना कंबल सँभालते हुए बाहर आये। उसी समय उस रण गर्जना को सुनकर खेमे के सैनिक भाले तलवारें लिये मामा के पास इकट्ठे हो गये।

सामने खड़े मराठा वीरों के उत्साह को देखकर हंबीरराव बोले, "बेवजह गड़बड़ मत करो। ये झूठे नारे दुश्मनों के हैं। उन्हें हमारे आने की खबर लग गयी होगी। इसीलिए वे होशियारी की चाल खेल रहे हैं। अपनी तलवारों को म्यानों में रखकर सब लोग हंबीर मामा के सामने चुपचाप खड़े थे। इसी समय दूसरी ओर से घोड़ों की टापें सुनाई देने लगीं। थोड़ी ही देर में गश्ती सेना के बारह घोड़े हंबीरराव के तम्बू के बाहर आकर खड़े हो गये। घुड़सवार दूर से ही चिल्लाने लगे—"मामा साहबऽऽ, मामा साहब शम्भू महाराज! अपने शम्भू महाराजऽऽ!!"

"शम्भू महाराज? कहाँ? कैसे आएँगे शम्भू महाराज?" मामा ने आश्चर्य से पूछा। हम अपनी आँख से देखकर आये हैं। शम्भू महाराज ने वहाँ बुरहानपुर पर आक्रमण भी कर दिया है।"

"हाँ मामा! राजा के साथ आये दो घुड़सवारों ने बताया कि शम्भूराजा ने पाँच दिन और पाँच रात लगातार दौड़ लगाई। चार हजार घोड़ों को लेकर इतनी दूर की दौड लगाई है मामा!" दूसरा कहने लगा।

यह बात सुनते ही हंबीरराव के रोंगटे खड़े हो गये। उनके सिर और मूँछों के बाल खड़े हो गये। दूसरे ही क्षण 'हर हर महादेव' का जयघोष करते हुए, पन्द्रह हजार घोड़े बुरहानपुर की दिशा में दौड़ पड़े। रात में ही हंबीरराव की फौज शम्भुराजा की फौज से मिल गयी। बहादुरपुर लूटना आरम्भ हुआ। दुकानदारों के दरवाजे टूटे। तिजोरियों पर घन चलने लगे। तलघरों के जमीनी रास्ते खुलने लगे।

शम्भुराजा और हंबीरराव ने पूरे परिवार की नाकेबन्दी कर दी थी। पुराने बुरहानपुर में लड़के जूझ रहे थे। वहाँ युद्ध का नाटक चल रहा था। करणपुर में अनेक सिख सरदार रहते थे। उनके मुगलों के साथ मिल जाने की सम्भावना थी। यह सूचना पाते ही मराठों ने करणपुर को घेर लिया। सिख सरदारों को निःशस्त्र कर

दिया। शम्भूराजा ने शहर के चारों ओर सैनिकों की एक कड़ी बना दी थी। बुरहानपुर के आक्रमण की सूचना बाहर न जाये इसका पूरा ध्यान रखा जा रहा था।

इस लूट के आक्रमण में अनेक पुराने योद्धा थे। कोई बारह वर्ष पहले तो कुछ बीस वर्ष पहले शिवाजी महाराज के साथ सूरत लूट चुके थे। वैसे ही बेशुमार धन यहाँ मिल रहा था। इसके लिए शम्भूराजा और हंबीरराव ने अलग अलग गुट तैयार किये। बुरहानपुर के तलघरों में भी पारों और गहदालों से खुदाई की जा रही थी। जमीन के पेट में छिपी लक्ष्मी खोद-खोदकर बाहर निकाली जा रही थी।

सरकती रात के साथ सब काम ठीक ठाक हो रहा था। पास के एक वृक्ष के नीचे सेवकों ने एक आपातकालीन ठिकाना तैयार किया। वहीं दो बड़े पत्थरों पर शम्भूराजा और हंबीरराव समाधानपूर्वक बैठे थे। राजा के पेट में भूख के कारण चूहे कूद रहे थे। इसका अनुमान होते ही रायप्पा मक्के के भुने हुए हरे दाने ले आया। ताजे भुने हुए सोंधे दाने खाते हुए मामा भांजे आमने सामने बैठे थे। अब उजाला होने लगा था। पेड़ों पर पंछी बोलने लगे थे। शम्भूराजा के थके हुए किन्तु उत्साहित चेहरे की ओर देखकर हंबीर मामा बोले, "क्यों भांजे साहब! पीछे पीछे आने की इतनी जल्दी क्यों मचा दी? आपको 'मामेरा' नहीं मिल पाएगा। ऐसा भय लग रहा था क्या?"

"भांजे को भी अपने कर्तव्य पालन मे कोइ कोरकसर नहीं रखनी चाहिए, मामा साहब!" शम्भूराजा ने हँसते हुए कहा, राजा का काम केवल हीरे जवाहरात पहनकर दरबार में घूमना भर नहीं है। उसे रणभूमि में रक्त बहाकर अपने साथियो को प्रोत्साहित और तरोताजा भी करना होता है। उन्हें सजग बनाना होता है।"

शम्भू महाराज के इस उद्‌गार पर मामा भांजे दोनों खिलखिलाकर हँसे। हंबीरराव बीच में ही उठ गये। वे शहर के चारों तरफ के नाकों की जाँच कर रहे थे। उनका प्रयत्न था कि किसी भी हालत में एक भी जासूस इस आक्रमण का समाचार लेकर बाहर न जा सके। मराठों की लूटपाट चालू थी। हीरे मोतियों से बोरे भरे जा रहे थे। उन्हें ले जाने के लिए आसपास के गाँवों से गधे खच्चर आदि इकट्ठे किए जा रहे थे। लूटपाट करते दो दिन बीत गये। दोपहर को रायप्पा शम्भूराजा के कान में कहने लगा, "महाराज एक बहुत अच्छी खबर है। अरबी घोड़ों का एक बहुत बड़ा व्यापारी उस्मान खान यहाँ आया हुआ है। उसके पास दो हजार बहुत ही उमदा जानवर हैं।"

"क्या कह रहे हो? कहाँ है वह?" शम्भूराजा उत्साहित होकर खड़े हो गए।

"यहीं दमदमपुर के बाग में। बहादुरखान के औरंगाबाद चले जाने के कारण वह व्यापारी उसी के आने की प्रतीक्षा कर रहा है।"

इतनी बड़ी अश्व सम्पत्ति इतने पास आकर रुकी हुई है, इसका पता चलते ही शम्भू महाराज का मन प्रफुल्लित हो गया। हंबीर मामा और गश्ती सेना को साथ लेकर शम्भूराजा वहाँ के लिए तुरन्त रवाना हो गये। दमदम बाग के उन घोड़ों को देखते हुए उनकी आँखें चकरा गयीं। इस तरह की चौड़ी पीठ वाले चुस्त दुरुस्त घोड़े उन्होंने कहीं देखे न थे। एक आसमानी रंग और बड़ी-बड़ी आयल वाले घोड़े की पीठ पर उन्होंने बड़े लाड़ से थाप मारी।

सौदागर उस्मान महाराज के सामने काँपता हुआ खड़ा हो गया। उसकी ओर देखते हुए महाराज ने कहा, "ऐसी नस्ल, ऐसी जाति और ऐसी आँखें हमारे देश में तो सम्भव नहीं हैं। कहाँ से ले आये हो ये जानवर?"

"अरबस्तान से।"

"डरो नहीं, सीधे खड़े रहो। जैसे कोई शिल्पकार अपनी छेनी से शिल्पाकृति बनाता है वैसा ही जादू तुम्हारी उँगलियों में है।"

शम्भूराजा से रहा नहीं गया। उन्होंने उस आसमानी रंग के घोड़े पर छलाँग लगाई। काठी और जीन न कसी होने पर भी वे घोड़े पर बैठ गये। लगाम खींचते ही घोड़ा आगे के पैर हवा में उछालते हुए हिनहिनाया। अपनी जगह पर ही पैर झाड़ते थैया-थैया नाचने लगा। उस्मान चिल्लाया—"राजा साहब ठहरिए! उसे दौड़ाइए नहीं, आप गिर जाएँगे, बहुत बदमाश जानवर है।" परन्तु शम्भू महाराज घोड़े के साथ अदृश्य हो गये। उनके पीछे-पीछे रायप्पा और अन्य गश्ती सैनिकों के घोड़े दौड़ पड़े। उस्मान अपना सिर पीटता वहीं खड़ा रहा। उसके गम्भीर चेहरे की ओर हंबीर मामा हँसते हुए देख रहे थे। बहुत देर बाद महाराज वापस लौटे। लौटने पर ऐसा लगा कि उस घोड़े और शम्भूराजा में जन्म जन्मान्तर की मित्रता हो गयी है।

शम्भूराजा ने उस्मान से जानवरों की कीमत पूछी। पहले से ही घबराया हुआ उस्मान शम्भूराजा के पैरों में गिर पड़ा। दया की याचना करते हुए बोला—"मेरे आका मुझ गरीब का मजाक क्यों उड़ा रहे हैं? ये जानवर, ये पूरा तबेला मुफ्त में ले जाइए।"

शम्भूराजा जोर से हँसे। हंबीर मामा ने भी सौदागर उस्मान को समझाया। अन्त में महाराज ने कहा—"जो उचित हो वह कीमत बताओ। हमें तुम्हारा एक भी जानवर मुफ्त में नहीं ले जाना है।"

वह सौदागर मुस्कराया और साहस बटोरकर बोला—"अजी हुजूर आपने यहाँ दिन दहाड़े बुरहानपुर नगर को लूटा है और हमसे इन जानवरों की कीमत पूछ रहे हैं? हुजूर हमें चकमा देने का इरादा तो आपका नहीं है?"

एक अभिजात हास्य शम्भूराजा के चेहरे पर तैर गया। उन्होंने कहा—"सौदागर, जिस परिश्रम और लगन से तुमने यह अश्वलक्ष्मी एकत्र की है, उसका

अपमान करने का हमारा कोई इरादा नहीं है।"

शम्भूराजा ने सारे घोड़े खरीद लिये। अपने खेमे पर पहुँचकर उन्होंने खंडो बल्लाल से धीमे स्वर में कहा—"खंडोबा! यह सौदागर जितना माँगे उसे उतना द्रव्य दीजिए। बुरहानपुर की लूट में से नहीं अपने खजाने से ही यह द्रव्य दीजिए।" महाराज के उद्‌गार को सुनकर खंडो बल्लाल और हंबीर मामा ठठाकर हँसे।

तीसरे दिन सवेरे औरंगाबाद की ओर हरकारे आये। वे शम्भू महाराज को बताने लगे—"बहादुरखान कोकल्ताश को खबर लग गई है। भतीजी की शादी छोड़कर अपनी फौज के साथ इस ओर घूम पड़ा है। अपने फौजियों और घोड़ों को पानी के लिए भी रुकने नहीं दे रहा है। लूट का द्रव्य इतना अधिक था कि उन्हें ढोकर ले जाने के लिए गधे और खच्चर कम पड़ रहे थे। शीघ्रता से बाँधा-बाँधी आरम्भ हो गयी।"

दोपहर में ही सामानों से लदे गधे बुरहानपुर से बाहर निकलने लगे। उनकी पीठ पर एक करोड़ मोहरों की दौलत थी। आसपास के नागरिकों में काकरखान के प्रति बड़ा क्षोभ था। जजिया कर की वसूली में उसने हिन्दुओं को बहुत सताया था। उससे भेंट किये बिना शम्भूराजा को बाहर निकलना अच्छा न लगा। बुरहान के महल से पकड़कर मराठा सैनिक काकरखान को पकड़कर शम्भूराजा के पास ले आये। डर के मारे वह पहले ही अधमरा हो गया था। राजा के हुक्म से उसके मखमली लिबास को उतारा गया। सैनिकों ने उसे एक पेड़ से बाँध दिया। कुछ लोगों ने उसे दो चार हाथ मारा भी। शम्भूराजा ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, "फिर से अत्याचार करेगा तो याद रखना!"

बुरहानपुर को लूटकर मामा भांजे प्रसन्नतापूर्वक वापस आ रहे थे। रास्ते में बहादुरखान कोकल्ताश के साथ मुठभेड़ की सम्भावना थी। इसके अतिरिक्त सूरत के बाद मराठे जिस जंगली रास्ते से गये थे उसका मुगलों को पता था। इसलिए इस बात की चिन्ता थी कि बिना किसी अवरोध के यह लूट की सम्पत्ति को लेकर कैसे जाया जाय? दुश्मन की ओर से अचानक हमला हो सकता था। इसलिए सेना में व्यूह रचना की आवश्यकता थी। इसलिए मामा भांजे ने मिलकर बीस हजार सेना को चार चार हजार की संख्या के हिसाब से पाँच भागों में बाँट दिया। हंबीरराव ने कहा, "शम्भूराजा! मेरा विचार है कि औरंगाबाद जीतकर ही हम रायगढ़ आएँ। दस-बारह हजार फौज मेरे लिए पर्याप्त होगी।"

"मामाजी मेरे साथ पाँच हजार फौज पर्याप्त है।" शम्भूराजा ने कहा।

"इतनी कम फौज के साथ जान जोखिम में नहीं डाला करते, शम्भू बेटे!" मामा ने अपनी राय व्यक्त की।

निश्चित किया गया कि लूट का अधिकांश हिस्सा रास्ते में साल्हेर के किले

में रख दिया जाए। वापस लौटने के लिए धरण गाँव-चोपड़ा का मार्ग ही सुविधाजनक था। किन्तु, इस बात की सम्भावना थी कि उस मार्ग में बहादुरखान कहीं भी भुजंग की तरह सामने आ जाएगा।

उस दिन दोपहर को चोपड़ा से दस कोस की दूरी पर बहादुरखान मोर्चा बाँधकर बैठा हुआ था। वह मराठों को कत्ल कर देना चाहता था। बहुत समय तक प्रतीक्षा करते करते वह थक गया। अन्त में दोपहर को उस जंगल में घोड़ों की टापें सुनाई पड़ने लगीं। केवल पाँच-सात सौ मराठी घुड़सवारों को देखकर बहादुरखान आश्चर्य चकित हो गया। घोड़ों के सामने से निकलते ही बहादुरशाह के सैनिक उन पर टूट पड़े। घुड़सवारों ने हाथ ऊपर कर दिये। वे जोर-जोर से चिल्लाने लगे—"वकीली सरंजामऽ, वकीली सरंजामऽऽ।"

बहादुरखान के सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। सबके बीच ऊँट पर बैठे वकीलों को बहादुरखान के सामने प्रस्तुत किया गया। एक वकील थे मुल्ला काजी हैदर, दूसरे वकील थे जोत्याजी केसकर। बहादुरखान ने उन पर अपनी नजरें गड़ाकर पूछा—"कहाँ चले?"

"भागानगर के लिए, हुजूर! कुतुबशाह के लिए शम्भूराजा का पत्र ले जा रहे हैं।"

बहादुर खान ने उस पत्र को आँखें फाड़ फाड़कर देखा। जासूसों को बुलाकर शम्भूराजा के हस्ताक्षर को सत्यापित कराया। इन दोनों वकीलों ने शपथपूर्वक कहा, "चोपड़ा धरण गाँव के रास्ते से संभाजी महाराज आएँगे ही क्यों? क्या वे यह नहीं जानते कि आपको इस रास्ते का पता है?"

"तो फिर किस रास्ते से निकले वे?"

"शायद जलगाँव या औरंगाबाद—पता नहीं, किन्तु यहाँ तो वे फटकेंगे नहीं।"

समय के बीतने के साथ भ्रम भी बढ़ने लगा। मुल्ला काजी हैदर ने कहा, "मैं तो आपकी ही कौम का हूँ। मुझे भी एक सरदार के रूप में अपनी फौज मे भर्ती कर लीजिए।" जोत्याजी ने बात को आगे बढ़ाया—"खान साहब हमारे नेता पालकरजी ने क्या इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार किया था? मेरे जैसे देहाती आदमी को यदि सरदार बनाने के लिए तैयार हों तो मैं भी इस्लाम धर्म स्वीकार कर लूँ।" अँधेरा होने लगा। इसी समय नीचे की घाटी में घोड़ों की टापें सुनाई देने लगीं। बहादुरखान सावधान हो गया। उसने अपने सैनिकों को हुक्म दिया—"बिना मेरे संकेत के आक्रमण नहीं करना।"

मराठे घुड़सवार टेकड़ी चढ़कर झपाटे में ऊपर आ गये। बहादुरखान के सैनिक पेड़ों के पीछे छुपे, साँस रोके सामने का दृश्य देख रहे थे। मराठे घुड़सवार

खाली हाथ खड़े। उनके पास लूट का सामान तो क्या कोई सादी पोटली तक न थी। बहादुर खान ने उन तीन हजार घुड़सवारों को निर्विघ्न रूप से जाने दिया। जोत्याजी उत्साहपूर्वक बोले, "खान साहब! मैंने जो कहा था वह सच ही कहा था न? शम्भूराजा कोई पागल है क्या जो इस रास्ते से जाएँ?" बहादुरखान कोकल्ताश को विश्वास हो गया कि लूट का माल लेकर जाने वाले मराठे ऐदलाबाद की तरफ से ही गये होंगे।

शम्भूराजा और हंबीरराव का पीछा करना, लूट का माल उनसे हस्तगत करना, औरंगजेब के क्रोध से अपनी जान बचाना जैसे अनेक विचार बहादुरखान के मन में एक साथ उठ रहे थे। उसका दिमाग तड़फड़ा रहा था। वह तीर की तरह ऐदलाबाद की ओर दौड़ने लगा। शम्भूराजा और हंबीरराव का पीछा करने की धुन में उसे पता ही नहीं चला कि वकील बने काजी हैदर और जोत्याजी कब और कहाँ गायब हो गये? उसका ध्यान तो लूट के माल पर केन्द्रित था।

बहादुरखान के रास्ते से हट जाने का विश्वास हो जाने पर, रात के अँधेरे में इधर उधर फैले जासूसों ने आपस में संकेतों से समाचार को आगे बढ़ाया। दोपहर को जहाँ पर बहादुरखान मोर्चा बाँधे बैठा था, वहीं से मराठों की मुख्य फौज तीन घंटे के भीतर आगे निकल गयी। शम्भूराजा और हंबीर मामा अपने अपने दलों के साथ लूट का माल लेकर उसी चोपड़ा मार्ग से माल्हेर के बलशाली किले की ओर चल पड़े।

मध्य रात्रि बीत चुकी थी। घोड़े पहाड़ से नीचे गिरती जलधारा की भाँति भाग रहे थे। अत्यधिक परिश्रम के कारण घोड़ों और सैनिकों का बुरा हाल हो रहा था। उनका रक्त गर्म हो गया था। बाहर कड़ाके की ठंडक होने पर भी घोड़े और सिपाही अपने भीतर गर्मी महसूस कर रहे थे। मनुष्यों और जानवरों दोनों को आगे बढ़ने के लिए जोर लगाना पड़ रहा था। सैनिकों के साथ साथ लूट के माल का बोझा भी घोड़ों की पीठ पर था। दो पहाड़ों के बीच की घाटी से घोड़े चल रहे थे। सवेरा होने से पहले आगे का रास्ता पकड़ने का शम्भूराजा का विचार था।

इसी समय मानाजी की दृष्टि पास की पहाड़ी के दो ऊँचे कलशों की ओर गयी। उन्होंने कहा, "महाराज, यह सामने की पहाड़ी मार्कंडा किले का पिछला हिस्सा है। यह सप्तशृंगी माता की पहाड़ी है।"

राजा ने घोड़े की लगाम खींची। उन्होंने कहा, "बाकी सेना को आगे जाने दीजिए। हमारे साथ डेढ़ हजार घोड़े पर्याप्त होंगे।"

"यानी? अब इस घुप्प अँधेरी रात में कहाँ जाना है?" मानाजी ने पूछा।

"मतलब यह कि सप्तशृंगी के दर्शन के लिए जाएँगे। बुरहानपुर की ओर निकलते समय मैंने देवी से सहायता के लिए याचना की थी। अब उनकी उपेक्षा

करके कैसे आगे जा सकते हैं?"

"महाराज, हमारी सुनें, विलम्ब हो जाएगा। हमारा पीछा किया जाये, इसकी भी सम्भावना है। देवी के दर्शन के लिए फिर आ जाएँगे।" रूपाजी कहने लगे।

"नहीं ऽ! अभी जाएँगे।"

"परन्तु महाराज यह सामने की चढ़ाई चढ़ते-उतरते सारी रात बीत जाएगी।" मानाजी ने विनयपूर्वक कहा।

"होने दीजिए, अच्छे यश और आशीर्वाद के लिए कष्टकर मार्ग ही अपनाना पड़ता है।" शम्भूराजा ने दृढ़ता से कहा।

लूट का सामान लेकर जाने वाली सेना कवि कलश के साथ आगे बढ़ गयी। केवल डेढ़ हजार घुड़सवार लेकर, रात में ही शम्भूराजा ऊपर गये। भोर होने लगी थी। उस सोये जंगल में सप्तशृंगी का एक गश्ती मराठा दल जाग रहा था। हो सकता है कि श्रद्धालु, शम्भूराजा लौटते समय पीछे के रास्ते से वहाँ आएँ, इसलिए वहाँ का थानेदार भी जाग रहा था। सामने की घाटी की दूसरी ओर मार्कंडा किले की बुर्जों पर पहरेदार भी जाग रहे थे।

सप्तशृंगी माता का छोटा-सा मन्दिर पहाड़ी के कन्धों पर खड़ा था। नीचे थोड़ी समतल भूमि पर पुजारियों के घर थे। वहीं से आने वाली रोशनी के उजाले में महाराज चढ़ाई करने लगे। रास्ता सँकरा, खड़ा और दोनों ओर से करौंदे की घनी झाड़ियों से घिरा था। उस सँकरे रास्ते से एक-एक व्यक्ति ही चल सकते थे। नीचे घोड़े से उतरकर शम्भू महाराज तेजी से चढ़ाई चढ़ने लगे।

पहाड़ी के मध्य भाग में महामाया सप्तशृंगी का वह छोटा-सा मन्दिर था। मन्दिर के सामने दो-तीन सोमजुही के पेड़ थे। महाराज देवी दर्शन के लिए आने वाले हैं, यह खबर भिखारियों और वनवासी गरीबों को लग चुकी थी। वे मन्दिर के बाहर सँकरी जमीन में इकट्ठे हो गये थे। उनके साथ चार-पाँच फकीर भी हाथ में कटोरे लेकर बैठे थे। दर्शन के लिए भीतर जाने से पहले राजा वहाँ रुके। खंडो बल्लाल के हाथ में मुहरों की थैली थी। उसमें हाथ डालकर महाराज गरीबों की थालियों और फकीरों के कटोरों में मुट्ठी-मुट्ठी भर मुहरें डालने लगे। फकीरों के वेश में बैठे पठानों ने अपने नीचे छुपाई हुई तलवारें खींच लीं। वे 'मारोऽ मारोऽऽ' कहते हुए शम्भू महाराज पर टूट पड़े। शम्भू महाराज ने भी अपनी कमर से तलवार खींच ली और क्रोध से आगे बढ़े। एक साथ पाँच लोग महाराज पर आक्रमण कर रहे थे। महाराज अपनी तलवार को तेज चलाते हुए अपना बचाव कर रहे थे। राजा के कन्धों पर तलवार का वार पड़ा। वस्त्र फट गया और 'खन्न' की आवाज हुई। शम्भू महाराज ने जालीदार कवच पहनने में प्रमाद नहीं किया था। वह कवच और लौह शिरस्त्राण उनकी सहायता कर रहे थे। जैसे कोई भूखा शेर अयाल फैलाकर

अपने शिकार पर टूट पड़ता है, वैसे शम्भू महाराज उन पठानों पर टूट पड़े। चौथे पठान के दाहिने कन्धे पर तलवार का ऐसा प्रहार किया कि उसका सिर लुढ़क कर नीचे गिर गया। वह सिर कटी मुर्गी की तरह तड़पने लगा। वह पास के पत्थर के नीचे गिर गया। वह भयानक दृश्य देखकर पूरा वातावरण भयाक्रान्त हो गया। इतने में सोनजुही की झाड़ के अँधेरे में छिपा पाँचवाँ पठान शम्भू महाराज की पीठ पर कूदा। उसकी लम्बाई तीन आदमियों के बराबर थी। अपनी ताकत से उसने शम्भू महाराज को नीचे दबोच लिया। वह महाराज को नीचे दबाने का प्रयास करने लगा। नीचे पड़ने से महाराज की कुहनियाँ हिल गयीं। इसी बीच महाराज के कुछ सहयोगी आ गये और उस हत्यारे को हटाने की कोशिश करने लगे। शम्भूराजा का दम फूलने लगा था। वे किसी प्रकार एक ओर सरक पाये। दाहिना हाथ मुक्त होते ही उन्होंने अपनी कटार निकाली और दूसरे ही क्षण पठान के पेट में भोंक दिया। उस पठान का पेट फाड़ती हुई वह कटार गले के पास जाकर निकली। तब कहीं वह जल्लाद जाकर एक ओर गिरा।

पीछे आ रहे सहयोगी दौड़कर आगे आये। पास के झरने से पानी लाया गया। महाराज ने अपने वस्त्र ठीक किये। खंडो बल्लाल कहने लगे—

"महाराज! काल आया था लेकिन समय नहीं आया था।" शम्भू महाराज हँसे। वे सावधान होते हुए बोले, "सप्तशृंगी माता ने आज अलग ढग से दर्शन देने का निश्चय किया था। आज बच पाये है, तो उसी के आशीर्वाद से।" सवेरा होते होते पूजा की गयी। शम्भू महाराज बहुत देर तक सप्तशृंगी की डेढ़ पोरिसा ऊँची पाषाण मूर्ति और उसकी स्निग्ध आँखों की ओर सन्तोषपूर्वक देखते रहे।

महाराज वह ढलान उतरने लगे। अँधेरा छँटने लगा था। घाटी में पहाड़ों के अस्पष्ट आकार को फिर से आकार मिलने लगा था। मार्कंडा पहाड़ की ऊँची चोटियाँ अब स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। ऐसा लगता था मानो जटाधारी ध्यानस्थ मार्कंडेय ऋषि महाराज को आशीर्वाद देने के लिए अवतरित हुए हों।

तीन

शिलंगण का सोना लूटा जा चुका था। स्वयं शम्भू महाराज ने स्वराज्य के प्रधान सेनापति हंबीरराव मोहिते और उनकी रूपाजी, मानाजी जैसे सहयोगियों पच्चीस

हजार सेना की प्रशंसा की थी। नासिक्, बागलाठा और मराठवाड़ा में उनके वीरोचित पराक्रम से हाहाकार मच गया था। बुरहानपुर और औरंगाबाद जैसे बादशाह के प्रिय नगरों का नक्शा ही बदल दिया गया था।

रायगढ़ में शम्भूमहाराज ने एक आपातकालीन बैठक बुलाई। विजयी वीरों के स्वागत के लिए रायगढ़ के लोभ ही नहीं, वहाँ की सारी वस्तुएँ, पाषाणी, मेहराबें, छतों के खपरैल तक उत्सुक थे।

शम्भूराजा ने स्वयं दस कदम आगे बढ़कर हंबीर मामा को वस्त्र प्रदान किए, उनकी पगड़ी में हीरों के झुमकेदार फूल लगाए। वस्तुत: हंबीरराव का यह सम्मान महाराज सोयराबाई के हाथों कराना चाहते थे किन्तु सोयराबाई ने बीमारी का बहाना बनाकर भाई के सम्मान का अवसर टाल दिया।

मान-सम्मान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शम्भू महाराज ने प्रसन्नतापूर्वक प्रह्लाद मिराजी से पूछा, "पन्त हमारे लाये गये लूटे माल की गणना हो गयी क्या?"

"चल रही है महाराज! वह विशाल भंडार गिनते-गिनते कर्मचारियों की गर्दनें और आँखें दुखने लगी हैं। लेकिन सम्भवत: अभी इसका अधिकांश भाग तो साल्हेर के किले में, वहाँ खानदेश में रखा है।"

"किन्तु शत्रु भी सोया नहीं था।" हंबीरराव कहने लगे, "हमारे आक्रमण की खबर बहादुरखान को लग गयी। खबर लगते ही वह हवा की तरह दौड़ता आया। प्राप्त की दौलत के निकल जाने का समय आ गया था। किन्तु हमारी भी दूरदृष्टि कम न थी। शम्भू महाराज हमने आपके साथ वरहाँ के नक्शे का अध्ययन किया। आपके आदेशानुसार हमने चोपड़ा की राह पकड़ी और खान को चकमा देकर सही सलामत साल्हेर के किले में आ गये।"

हंबीर मामा की बात समाप्त होते ही सूर्याजी जाखड़े उठकर खड़ा हो गया। वह कुछ दुख और निराशा के स्वर में कहने लगा—"महाराज थोड़ी-सी चूक हो गयी। नहीं तो औरंगाबाद का काँटा भी लगे हाथ निकाल दिये होते। बुरहानपुर को लौटते समय बहादुरखान को हमारे आक्रमण की खबर लग गयी। वह फरदापुर की ओर से दौड़ता हुआ समय पर आ पहुँचा इसीलिए औरंगाबाद बच गया।"

"ठीक है सूर्याजी और कोई बड़ा अवसर तुम्हारी तलवार की राह देख रहा होगा।" शम्भूराजा ने कहा।

शम्भूराजा ने तत्काल मुआयना किया। शम्भूराजा ने मुगलों के क्षेत्र में अपनी सेनाएँ भेजी थीं। नासिक से बरहाड़ और नीचे भागानगर से हैदराबाद की सीमा तक ये सेनाएँ धूम मचा रही थीं। कुछ फौजी टुकड़ियाँ शोलापुर की ओर भी गयी थीं। संभाजी महाराज की नीति थी कि जितना सम्भव हो शत्रु की हानि की जाये, उनके

क्षेत्र को जलाकर खाक कर दिया जाये। युद्ध क्षेत्र में अपना राजा सैनिकों के साथ आगे रहता है, इसकी सेना में बड़ी प्रशंसा होती थी।

शम्भूराजा के राज्याभिषेक के एक पखवाड़े के भीतर ही उन्हें महत्त्वपूर्ण विजय का यश मिला था। इसलिए प्रजा ने शम्भूराजा और सेनापति की बहुत जय जयकार की। शम्भूराजा को इससे चिन्ता हुई। वे विनम्र स्वर में कहने लगे—

"अभी तो शुरुआत है। अभी बहुत आगे जाना है। आप सभी बुजुर्ग एक और बात का ध्यान रखें। राज्य के क्रिया-कलाप को जिस प्रकार आप बुजुर्ग लोग अपना हक मानते हैं उसी प्रकार महत्त्वाकांक्षी और उत्साही तरुणों की आकांक्षाओं को बहुत दिन तक रोक पाना हमारे लिए सम्भव न होगा। आज रूपाजी भोसले, धनाजी जाधव, सन्ताजी घोड़पड़े, निलोपन्त, कृष्णाजी कंक जैसे तरुणों और अनुभवी वरिष्ठों का एक समन्वित योग बनाकर हमें महाराष्ट्र धर्म की रचना करनी है।"

"महाराज, औरंगजेब उत्तर में लाखों घोड़ों और मनुष्यों की सेना सागर तैयार कर रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि उसके मन में कुछ खोट है।" बालाजी चिटणीस ने कहा।

"यह शिवाजी का बालक शिवाजी का भी सवाई निकलेगा तब औरंगजेब को पता चलेगा।" हिरोजी फर्जन्द ने बड़े आत्मविश्वास से कहा।

"फर्जन्द काका हम आपके सामने स्पष्ट कर देना चाहते हैं।" शम्भूराजा ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "अपने पिता की तरह मैं कोई अवतारी पुरुष नहीं हूँ। वैसा कोई अपना चित्र भी बनाने मैं नहीं बैठूँगा। मेरे पिताजी का व्यक्तित्व हिमालय की भाँति भव्य और दिव्य था। शताब्दियों के बाद ऐसे पुण्यात्मा और गुणी महापुरुष पैदा होते हैं। इस हिमालय से मेरी तुलना करने के चक्कर में कभी न पड़ें। किन्तु मेरी धमनियों में प्रवहमान रक्त उसी महापुरुष का है, इसे भी न भूलें।"

"महाराज!" सभी प्रमुख कर्मचारी भाव विह्वल होकर शम्भू महाराज की ओर देखते रह गये।

"हाँ बालाजी काका और हिरोजी काका! इस स्वराज्य के मन्दिर पर चार अधिक स्वर्ण कलश लगाने की शक्ति देवताओं और भाग्य ने हमें न दी हो तो कोई बात नहीं परन्तु जब तक यह संभाजी जीवित है तब तक शिवाजी महाराज के इस हिन्दवी स्वराज्य के किसी किले को तो क्या, किसी चहारदीवारी की फूटी ईट को भी उस पापी औरंगजेब को हस्तगत नहीं करने देंगे।"

दरबार की बैठक समाप्त होने पर भी शम्भू महाराज वहीं रुके रहे। स्वराज्य के कोने कोने से आये सैनिकों से उनकी बातचीत चल रही थी।

बालाजी चिटणीस महारानी के महल तक चलकर गये। उन्होंने महारानी से कहा, "आज दरबार में, आखिरी समय में शम्भू महाराज बहुत भावविभोर दिखाई दिये।"

"चलता है, शम्भू महाराज के हृदय का एक हिस्सा कठोर राजनीतिज्ञ का है तो दूसरा एक भावुक कवि का।" येसू रानी ने कहा।

"क्या कह रही हैं बहू रानी?"

"हाँ काका, जो केवल राजनीतिज्ञ होते हैं वे अपने स्वार्थों के गुलाम होते हैं। उनके लिबास के भीतर छिपी रक्तरंजित कटारें रहती हैं। इसलिए वे अपने स्वार्थ के अवसर पर पत्थर-से कठोर हो सकते हैं। किन्तु कवि का हृदय घास के गीले पत्ते जैसा होता है, इसीलिए किसी का छोटा दुख देखकर भी महाराज का हृदय द्रवीभूत हो उठता है।"

चार

कभी नहीं आते थे। किन्तु एक दिन दोपहर में शम्भू महाराज दरबार से लौट आये। वे अपने निजी कक्ष में विश्राम कर रहे थे। इसी समय एक सेवक अन्दर आया और अभिवादन करके कहने लगा—"कवि कलश बाहर आये हैं और तत्काल आपसे मिलना चाहते हैं।" शम्भूराजा की आज्ञा मिलते ही खिन्न मन कवि कलश हाथ झटकते हुए अन्दर आये।

"राजन! अघटित घट गया, धोखा हुआऽऽ।"

"हुआ क्या है? कविराज?"

"जिसको हम एकनिष्ठता की मूर्ति और स्वराज्य का एक बलशाली बुर्ज समझते थे, वह बुर्ज ही ढह गया।" हताशा के साथ कविराज ने कहा।

"साफ-साफ बताइए, क्या हुआ?"

"अपने कोंडाजी फर्जन्द जंजीरावाले उस बदमाश सिद्दी से जाकर मिल गये।"

"भाँग पिये व्यक्ति की तरह व्यर्थ में क्यों बड़बड़ा रहे हो? आपका दिमाग ठिकाने पर तो है न?" शम्भू महाराज कड़कती आवाज में पूछने लगे—"और किस फर्जन्द के विषय में बोल रहे हो? हिरोजी या कोंडाजी?"

"दुर्भाग्य से कोंडाजी ही।" कलश गर्दन नीची कर ली।

शम्भूराजा का चेहरा अचानक उतर गया उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। महारानी येसूबाई भी बहुत सम्भ्रमित थीं। उन्होंने अनेक बार अपने ससुर स्वयं

शिवाजी महाराज से कोंडाजी की भूरि-भूरि प्रशंसा सुनी थी। अँधेरी रात में पन्हालगढ़ की चोटी पर साँप की तरह चढ़कर जाने वाले और केवल चौंसठ मावलों के साथ आक्रमण करके पन्हालगढ़ जैसे किले पर अधिकार कर लेने वाले जादूगर अर्थात् कोंडाजी फर्जन्द।

शम्भू महाराज अपने क्रोध को दबाते हुए शान्त स्वर में बोले, "कविराज! बाजार में तो रोज अफवाहें उड़ती रहती हैं, किन्तु उस बात को राजा से कहने के लिए प्रधान दीवान को कुछ सबूत तो एकत्र कर लेने चाहिए।"

कवि कलश ने आँखें फैलाई और अपने हाथ का पत्र देते हुए बोले—

"पढ़िए राजन! पंक्ति पंक्ति, अक्षर अक्षर। दडाराजपुरी के सूबेदार ने अपने हाथों लिखा है। राजन! इसमें और कुछ कहने की गुंजाइश नहीं है।"

उस पत्र को पढ़ते हुए शम्भू महाराज को बड़ा क्लेश हुआ। उनका चेहरा बदल गया। उन्होंने दाँत भींचकर कड़कते स्वर में पूछा—

"कैसे गये? अकेले ही या हमारी सेना में विद्रोह की आग लगाकर?"

"अच्छे खासे ग्यारह लोगों का समूह साथ लेकर गये। ऊपर से उन चोरों का शोर कि शम्भूराजा के शासन में न्याय नहीं बचा है, दिनोंदिन अत्याचार बढ़ रहा है। ऐसी बहुत-सी शिकायतें उन्होंने उस सिद्दी कासमखान से की है।"

"देखा युवराज्ञी? कितना भरोसा किया था इन पर?"

"अपने ही लोग इस तरह धोखेबाज क्यों हो जाते हैं?"

"जागीरदारी के लिए और किस लिए?" चिन्ताग्रस्त शम्भूमहाराज एक लम्बी मुस्कान बिखेरते हुए बोले "जागीर की हवस से मराठों का ऐसा ही पतन होता है।"

कोंडाजी का विद्रोह छिपने लायक नहीं था। वह शीघ्र ही चारों ओर फैल गया। पूरे रायगढ़ पर एक अशुभ छाया सी पसर गयी। शम्भाजी महाराज बहुत तनाव में दिखे। कवि कलश ने स्पष्ट शब्दों में कहा—

"राजन, आज नहीं तो कल, इस सम्बन्ध में कोई न कोई निर्णय लेना होगा। मराठे हों या ब्राह्मण सभी जागीरदारी के विषय में एक ही तरह पूछते हैं। सभी पूछते हैं—हमारी जागीदारी का क्या हो रहा है? हमें अपनी मिल्कियत अपनी मुहर के पास कब मिलेगी? वह हमारे बाल बच्चों के नाम कब होगी? बड़े महाराज के प्रभाव से हम उनकी मृत्यु तक चुप रहे। अब और कितने दिन इस मजबूरी के निकालें?"

कवि कलश के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए शम्भू महाराज की आँखें विलक्षण रूप से चमकीं। उन्होंने कहा, "मेरे पिताजी मुझसे हमेशा कहते थे जागीर के कारण

अलग-अलग संस्थाएँ और संस्थाओं के कारण अलग-अलग जागीरदार मौज करते हैं और प्रजा की स्थिति बिगड़ती जाती है। राज्य की हानि होती है। मनुष्य तो क्या देवी-देवता के नाम पर भी जागीर नहीं देनी चाहिए। पुजारियों को बिगाड़ना नहीं चाहिए।''

''किन्तु राजन, आगे भी सारे जागीरदार यह प्रश्न मुझसे पूछते रहेंगे, उन्हें हम क्या उत्तर दें?''

''उनसे साफ-साफ कह दीजिए—चाहिए तो जागीर के बदले मेरे हाथ-पैर के टुकड़े माँग लें, हम प्रसन्नता से दे देंगे किन्तु मेरी आखिरी साँस तक मुझसे जागीरदारी की आशा न करें।''

कोंडाजी की गद्दारी का घाव शम्भू महाराज के मन में बैठ गया था। मराठों और सिद्दियों की शत्रुता को नयी धार मिलने वाली थी। उन्होंने शीघ्रता से निलोपन्त पेशवा को आदेश दिया—''निलोबा पानी के ऊपर कभी भी युद्ध आरम्भ हो सकता है। अपनी ओर से पूरी तैयार रखिए।''

''जी महाराज।''

कुलाबा और सागरी किलों पर आवश्यक धान्य भंडार, गोला-बारूद है कि नहीं, इसकी पुष्टि कीजिए। यदि रसद की कमी हो तो उसकी दुगुनी भेजिए। वह सिद्दी और उसके आश्रयदाता अँग्रेज स्वराज्य पर चढ़ आये तो अनर्थ हो जाएगा। उसके लिए समुद्र के किनारे के बुर्जों पर शत्रु की टोह लेते रहने की चौकस तैयारी कीजिए।''

''बड़े महाराज की दृष्टि भी बड़ी थी, महाराज।'' निलोपन्त पेशवा कहने लगे—''उन्होंने मृत्यु से दो वर्ष पूर्व ही कुलाबा का किला बनवाया था।''

''लेकिन कुलाबा की तटबन्दी का काम अभी बाकी है। अजोजी यादव को शीघ्र ही वहाँ भिजवाइए। चार महीने के भीतर वहाँ की तटबन्दी तैयार हो जानी चाहिए।''

''जैसी आज्ञा, महाराज।''

उस रात शम्भू महाराज देर तक जागते रहे। अप्रसन्न मनःस्थिति में भी उनके चेहरे पर किंचित हँसी आयी। यह देखकर येसूबाई पूछने लगीं—''महाराज बीच में वह क्या?''

''येसू, मुझे अपने बचपन की एक घटना स्मरण हो आयी। पुरन्दर के समझौते में पिताजी ने तेईस किले मुगलों को देने के लिए स्वीकार किया था। उस समझौते पर हस्ताक्षर करके हमारे पिताजी वापस लौटे थे। तब उनके भी चेहरे पर ऐसी ही हँसी आयी थी। इस पर जीजामाता नाराज हो गयीं। वे पिताजी से कहने लगीं—शिवबा एक रायगढ़ छोड़कर अपने सभी बलशालो किले गँवाकर आ गये

हो और उस पर हँस भी रहे हो? तब भी पिताजी की दाढ़ी-मूँछों मे हँसी गायब नहीं हुई। वे बोले—माताजी! उन तेइस किलों के बदले में मुगलों की ओर से जयसिंह ने हमें जंजीरा देना स्वीकार कर लिया है।''

''क्या कह रहे हैं महाराज? जंजीरा तभी मिल गया था?'' येसूबाई ने बीच में ही उत्सुकता से पूछा।

वह हम मराठों को मिले इसके लिए जयसिंह ने बादशाह से सिफारिश की थी—''जहाँपनाह! तेईस बलशाली किलों के बदले में जंजीरा छोड़ दें ऐसा शिवाजी का बालहठ है। जाने दें। पानी का एक सामान्य किला छोड़ दिया तो क्या बिगड़ जाएगा?''

''उस पर औरंगजेब ने क्या जवाब दिया?'' येसूबाई ने पूछा।

''वह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।'' शम्भूराजा बताने लगे, ''औरंगजेब ने मिर्जा राजा को लिखा—मिर्जा राजा आप पागल हैं। जंजीरा सिद्दी के लिए ही नहीं हमारे लिए भी कलेजे का टुकड़ा है। तुम्हारे इस दान से उस शिवा का, जंगली चूहे का मगरमच्छ में रूपान्तरण हो जाएगा और फिर उसकी पूँछ के धक्के से दिल्ली का सिंहासन भी डगमगा जाएगा।''

वे बीती बातें सुनकर येसूबाई अवाक रह गयीं। उन्होंने धीरे से पूछा—

''महाराज, क्या जंजीरा सचमुच इतना जुल्मी है?''

''आज हमें जंजीरा न जीत पाने का इतना दुख नहीं है। किन्तु उस नर वीर कोंडीबाबा को गँवा देने का हमें बड़ा दुख है। उनके उधर चले जाने से जंजीरे के सिद्दी की ताकत दुगुनी हो गयी।''

पाँच

''अल्लाहताला की मेहरबानी से दिल्ली का तख्त मुझे मिला तो नाम मेरा रहेगा और शासन केवल संभाजी महाराज करेंगे। बादशाह मेरे वालिद हैं तो भी आपके और मेरे सबसे बड़े दुश्मन हैं। इसे ध्यान में रखें। इसलिए हम दोनों के दुश्मन का खात्मा करने के लिए हम दोनों एक हो जाएँ।''

आँखों के आगे का पत्र पढ़ते-पढ़ते कविराज बीच में ही रुक गये। उन्होंने महाराज की ओर चौंककर देखा। शम्भूमहाराज विचारमग्न दिखे। मुस्कराते हुए

उन्होंने पूछा—"कविराज, यह पत्र किसकी ओर से आया है?"

"शहजादा अकबर।"

"यह बादशाह का सचमुच का बेटा है या कोई नकली?" महाराज ने चिन्तित स्वर में पूछा।

"राजन, मैंने जासूसों से इस बात की पुष्टि करवा ली है। दिलसर बानू नामक बेगम से पैदा हुआ है यह लड़का। कहते हैं कि यह बादशाह का बड़ा लाड़ला शहजादा था।"

"इसने ही क्या पिछले दिनों राजपूताना में औरंगजेब के साथ बगावत की थी? राजपूतों की कुछ सेनाएँ उसके साथ मिल गयी थीं? उन्हीं को लेकर इसने अपने को हिन्दुस्तान का बादशाह घोषित कर दिया।"

"हाँ राजन, वही बगावत करने वाला शहजादा।"

"ऐसा है! लेकिन सारा हिन्दुस्तान छोड़कर वह दक्षिण में हमारे पास ही क्यों आना चाहता है? इस शहजादे के हमारे पास आने का उद्देश्य ठीक ठीक पता लगाकर हमें खबर कीजिए।" राजा ने दरबार में इस सन्दर्भ की सभी को सूचना दी। किन्तु पहले पत्र के बाद 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की शैली में शहजादा अकबर दक्षिण की ओर चल पड़ा।

पन्द्रह बीस दिन होते-होते शहजादे की ओर से दूसरा पत्र महाराज को प्राप्त हुआ। पत्र में शहजादा बहुत उतावला दिखाई पड़ रहा था। लगता था उसे शम्भुराजा के पास आने और उनकी सहायता लेने की बड़ी उत्सुकता थी। किन्तु दूसरा पत्र पढ़ते हुए भी शम्भु महाराज के चेहरे की लकीरें हिली नहीं। यह देखकर कवि कलश अपनी घनी भौंहों को तानकर बोले—"राजन, शहजादे के पहले पत्र का भी उत्तर अभी तक गया नहीं। इतनी उदासीनता भी अच्छी नहीं?"

"देखिए कविराज, इस अकबर के बारे में और क्या क्या सूचनाएँ मिलीं? पहले वह बताइए।"

महाराज के इस प्रश्न के साथ ही कविराज कुछ हिचके, परन्तु तुरन्त स्वयं को सँभालते हुए बोले, "अपने लाडले की बगावत से औरंगजेब बहुत दुखी हो गया है। लेकिन मराठों जैसे अपने कट्टर दुश्मन से अकबर के मिलने के समाचार से बादशाह बहुत घबरा गया है। उसे डर है कि कहीं मराठों के साथ उसके अन्य शत्रु भी अकबर के साथ न मिल जाएँ। इस कल्पना से उसका धैर्य छूट गया है। शहजादे को दक्षिण जाने से रोकने के लिए जी तोड़ मुहिम चलाई है। सेना की अनेक टुकड़ियाँ भेजकर रास्ते की नदियों, पहाड़ी घाटियों, सरायों आदि पर पहरे बिठा दिये हैं। अपने बाप की व्यवस्था को चकमा देने के लिए शहजादा पागलों की भाँति भाग रहा है। वह आपसे मिलने के लिए व्याकुल है।"

महाराज ने कविराज की बात शान्ति से सुनी। उनके कपोलों में मन्द मुस्कान बिखरी। उनकी इस शान्त प्रतिक्रिया को देखकर कवि कलश कुछ नाराज हुए। अपने को न रोक पाये तो कहने लगे—"मेहरबानी करके इस ओर ध्यान दीजिए, इतना विलम्ब चलेगा नहीं। जो भी हो वह अपने कट्टर शत्रु का शहजादा है। राजनीति में ऐसे प्यादे समय पर उपयोगी होते हैं। आग से जलकर निकले मेमने की तरह बेचारा हमारी ओर दौड़ रहा है। इसलिए राजन आपको दस कदम आगे बढ़कर उसका स्वागत करना चाहिए।"

"परन्तु अपने कदमों में वह कौन सी आग लेकर हमारे दरवाजे पर खड़ा हो रहा है? क्या इसकी जानकारी नहीं करनी चाहिए, कविराज?"

एक दिन संगमेश्वर सूबे के शिवोशी और दाभोल के कुछ किसान रायगढ़ आये। उनके साथ थानेदार मल्हार रंगनाथ और अन्य लोग थे। उन्हें शम्भू महाराज से मिलना था। किन्तु उनके कार्य के स्वरूप को जान लेने पर लोग टाल-मटोल करने लगे। दरबार के लोग उन पर हँसने लगे। किन्तु मल्हार रंगनाथ पीछे हटने को तैयार न थे। किसानों के साथ वे शम्भूराजा के सामने आ गये। शम्भू महाराज ने उनकी बातें शान्तिपूर्वक सुनीं। वे किंचित विस्मय के साथ मल्हार रंगनाथ से पूछने लगे—"पन्त, यह सम्भव हो सकेगा? ढलान पर बाँध बनाकर पानी के प्रवाह को दूसरी ओर मोड़ने की बात कर रहे हो? पहाड़ के दूसरी ओर पानी ले जाना तुम किसानों के लिए सम्भव होगा?"

"क्यों नहीं महाराज? ये सभी परिश्रमी किसान हैं। मैं स्वयं। उस पहाड़ी में चौदह सौ हाथ नाला खोदकर पानी का प्रवाह घुमाया जा सकता है। यदि यह कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाये तो दो-तीन गाँवों का अकाल हमेशा के लिए मिट जाएगा।"

"ऐसा? ठीक है। आपको सरकार से क्या चाहिए?"

"थोड़ी बहुत द्रव्य की सहायता, सरकार।"

शम्भू महाराज ने निलोपन्त पेशवा की ओर दृष्टि घुमाई।

"इन्हें एक हजार मुहरों की अग्रिम राशि दीजिए।"

आज्ञा होते ही सारे किसान कृतकृत्य भाव से प्रसन्न हो गये। निलोपन्त पैसा देने से अप्रसन्न थे किन्तु राजाज्ञा का पालन तो करना ही था। प्रसन्न मन किसान दरबार से बाहर निकलने लगे। तभी शम्भूराजा ने उन्हें रोक कर कहा—

"जब थोड़ा समय मिलेगा तब आप लोगों का कार्य देखने के लिए हम अवश्य आएँगे।"

किसान बड़े हर्ष और सन्तोष के साथ बाहर निकले, अपना गला साफ करते हुए निलोपन्त ने कहा—

"किन्तु महाराज?"

"रहने दीजिए। आप जो कहने वाले हैं वह मुझे पता है। किन्तु निलोपन्त! इन लोगों के विचार उत्तम हैं, उद्देश्य पवित्र हैं। अपनी प्रजा के उत्साह का सम्मान हम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा?" सरकारी तिजोरी में जमा करते समय कर के रूप में वसूली गयी राशि में कमी आती है। कुछ कर्मचारी कर वसूलते समय प्रजा को सताते हैं, ऐसी शिकायतें महाराज के पास आ रही थीं। इसीलिए महाराज ने इस विभाग का अनुशासन बहुत कड़ा कर दिया था। उस विभाग के कामगारों से लेकर राजधानी के प्रधान कर्मचारी तक की जाँच हो रही थी। बालाजी चिटणीस तो मुख्य रूप से जाँच का ही कार्य कर रहे थे। स्वयं महारानी येसूबाई और कवि कलश दिन-दिन भर दरबार में बैठकर बारीकी से जाँच-पड़ताल कर रहे थे।

इस जाँच कार्य के आरम्भ होते ही अण्णाजी दत्तो बहुत बेचैन हो गये। उनके भाई सोमाजी बोले, "जाने दो दादा! इतनी चिन्ता क्यों करते हो?"

"तू गधा है! तुझे क्या पता कि यह सब क्यों हो रहा है? इधर के और विशेष रूप से कोंकण विभाग के बहुत से कर्मचारियों को मैंने नियुक्त करवाया है। ये सभी हमारे परिवार के व्यक्ति के समान हमारे स्नेही हैं। इसीलिए तो उनके बारे में ऐसी छानबीन की जा रही है।"

"भाई साहब ऐसा हो रहा है तो ठीक नहीं है।" सोमाजी ने कहा।

"सच है! अन्य अष्टप्रधानों को बगावत करने के बाद भी उनके पुराने पद दे दिये गये। केवल मुझे ही सुरनवीसी नहीं दी गयी। केवल मजूमदारी से सन्तोष करना पड़ा। फिर भी हम क़हीं चूकते हैं क्या? इसके लिए यह सारी छानबीन? अब अच्छे लोगों के लिए रायगढ़ पर अच्छे दिन नहीं रहे, सोमाजी अब यही सच है।"

अण्णाजी पर हो रहे घोर अन्याय से सोमाजी बहुत क्रुद्ध हो गये। एक दिन दरबार में महाराज, महारानी और चिटणीस नहीं थे। केवल निचले कुछ कर्मचारी और कविराज थे। यह देखते ही सोमाजी दत्तो से रहा नहीं गया। वे झट से कविराज के समीप पहुँच गये। वह कुछ व्यंग्य और कुछ दम देने जैसे स्वर में बोले, "क्यों कविराज! यहाँ दक्षिण में आकर हमारे धर्म-कर्म में गड़बड़ करने के लिए आपसे किसने कहा है?"

"कैसी गड़बड़, मेरी समझ में नहीं आया?" कविराज ने कहा।

वह श्रीबाग के कोल्हटकर और रसूल के यवनों का प्रसंग! आप उन धर्मभ्रष्टों को हिन्दू धर्म में मिलाने जा रहे हैं?"

"उसमें कौन-सी गड़बड़ है?" कवि कलश ने कहा, "उन गरीब ब्राह्मणों की माँग है कि उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित किया जाये। इसीलिए वे सब रायगढ़ पर आये थे। ये सारी बात महाराज को बता दी गयी है।"

"बस, कविराज, अपनी अकल को काबू में रखो। अपने को गागाभट्ट का बाप मत समझो। यह सब करने की जिम्मेदारी हमारी है। थोड़ा समय लगेगा। किन्तु उनको दोष मार्जन करना पड़ेगा। इसकी विधि है। कुछ उपचार भी है। इस काम में आप गड़बड़ न करें।"

दोपहर को दरबार में घटी घटना रात को अण्णाजी को मालूम पड़ी। उन्होंने अपने भाई को डाँटा—"सोमाजी, ऐसा अनर्थ मत कर। उस कलुषा को राजा ही समझो। शम्भूराजा अभी तरुण हैं। ऐसा खुला संघर्ष उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त श्रीबाग के कोल्हटक और रसूल के कुलकर्णी जैसे विधर्मियों को दरबार में क्यों बुलाते हो? इस प्रकरण को एक बार मिट जाने दो, अधिक बातचीत की जरूरत नहीं है।"

"इतनी चिन्ता क्यों करनी चाहिए उन विधर्मियों की? उधर जाकर इतना मजा किया। मांस खाया, मदिरा का सेवन किया। धार्मिक विधि के लिए, पाप प्राच्छालन के लिए कुछ खुले हाथ खर्च करने को कहते हैं तो हीलाहवाली करते हैं, गरीबी का ढोंग रचते हैं। कोंकण में इन लोगों के अच्छे-खासे बगीचे हैं।"

अण्णा साहब ने पता लगाया कि दरबार में जमाराशि की जाँच पड़ताल कहाँ तक पहुँची? तब सोमाजी ने कहा—

"ऐसी कौन-सी छानबीन चालू है? बड़े महाराज का शासन बहुत कठोर था। परन्तु वे भी बहुत त्रुटियों पर ध्यान नहीं देते थे। वे सच्चे जानकार राजा थे। भरा हुआ घड़ा हिलेगा तो थोड़ा-बहुत पानी इधर उधर छलकेगा ही? थोड़ा-बहुत पानी बाहर गिरेगा ही। कर्मचारियों के भी पेट है। बड़े महाराज को उनकी चिन्ता थी।"

"दादा, आज रायगढ़ गरीब दुखियों का, कर्मचारियों का, सच्चे सेवकों का नहीं रहा। महारानी की तरह पूजापाठ करना छोड़कर वह येसूबाई कभी भी दरबार में आकर क्यों बैठती हैं? भगवान ही जानें। दरबार के कामकाज में, कागज पत्रों में क्यों दिमाग खपाती हैं?"

"सच बात है। स्वयं महाराज महारानी और वह कपटी कलुषा, ऐसे तीन-तीन लोग पीछे लगेंगे तो साधारण सेवक अपनी सेवा कैसे दे सकेंगे?" अण्णाजो ने विवशता प्रकट करते हुए कहा।

छह

सूर्य डूबने लगा था। ढलते सूर्य की किरणें रायगढ़ पर पड़ रही थीं। भगवा झंडे की लम्बी छाया प्रकाश के ऊपर फैल रही थी। वस्तुत: महाराज अपने निजी महल में जाने की जल्दी में थे। उसी समय प्रह्लाद निराजी अन्दर आये और महाराज का अभिवादन करके कहने लगे—

"महाराज पुर्तगालियों के वकील पिछले तीन दिनों से आपसे मिलने की प्रतीक्षा में बैठे हैं। गढ़ के ऊपर की हवा उन फिरंगियों से सहन नहीं हो रही थी। वे जर्जर मुर्गी की तरह बेहाल हो रहे थे।"

शम्भूमहाराज हँस पड़े। उन्होंने कवि कलश की ओर देखते हुए कहा, "अपने वकील भी उनके साथ आने वाले थे न?"

"हाँ, राजन! अपने रामजी ठाकुर और येसाजी गम्भीरराव आपसे मिलने के लिए।"

"तो फिर भेजो सभी को अन्दर।"

प्रह्लाद निराजी बाहर गये और दो हट्टे-कट्टे पुर्तगाली अधिकारी महाराज के सामने आकर खड़े हो गये। उन्होंने लाल रंग का लिबास धारण किया था। उनके साथ दुभाषिया रामचन्द्र शेणवी भी था। इन पुर्तगालियों ने महाराज को नमन किया। सामान्य कुशलक्षेम की बात हुई। ये पुर्तगाली कवि कलश की ओर देखकर कुछ दुविधा में पड़ गये थे। महाराज से अगला प्रश्न पूछते हुए उस वकील ने कहा—

"महाराज, हम अपने वाइसराय की ओर से एक महत्त्वपूर्ण सन्देश ले आये हैं। हमसे एकान्त में बात करना चाहते हैं।"

कवि कलश की ओर देखकर शम्भूराज ने खुलकर हँसते हुए कहा—

"जो कोई सन्देश हो उसे मुक्त होकर पढ़ो। कवि कलश हमारे अपने ही हैं। उनसे कुछ भी छुपाने की आवश्यकता नहीं है।"

शम्भू महाराज की अनुमति मिलते ही रामचन्द्र शेणवी सन्देश का भाषान्तर करते हुए महाराज को सुनाने लगे—

"प्रिय छत्रपति संभाजी महाराज

"महाराज, इसके पहले हम डिचोली के सूबेदार की शिकायत कर चुके हैं। मोरोदादा नाम का आपका यह सूबेदार एक धूर्त और असंस्कृत व्यक्ति है। वह प्रजा के साथ बहुत छल करता है। प्रजा से पैसा वसूल कर स्वयं का पेट भरता है और राज्य की हानि करता है। इतनी-सी नाराजी से आपको स्पष्ट रूप से समझाने का प्रमुख कारण यह है कि यह खड़ूस व्यक्ति हमारी और आपकी मैत्री में दरार डालता

है। किन्तु ऐसा लगता है कि इस व्यक्ति के बारे में इतनी गम्भीर शिकायत करने पर भी उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं होगी। इसका कारण यह है कि मोरोदादा ने आपके दरबार के एक प्रधान कर्मचारी से अपना गहरा सम्बन्ध बना रखा है। वह मोरोदादा को बहुत प्यार करता है। इसलिए ये महोदय प्रजा को, राजा को या किसी को भी कुछ नहीं समझते।"

शम्भूराजा ने यह सन्देश शान्त भाव से सुन लिया। कुछ और भी बातें हुईं। पुर्तगाली शिष्ट मंडल जाने लगा तभी महाराज ने गम्भीर स्वर में पूछा—"मोरोदादा जी राव के सिर पर वरदहस्त रखने वाला मेरे दरबार का प्रधान अधिकारी कौन है?"

"हमें पता नहीं।" पुर्तगाली प्रतिनिधि ने कहा।

गोवा वाले वकीलों पर नजर टिकाकर शम्भू महाराज ने पूछा—

"क्यों ठाकुर? क्यों येसाजीराव? उस प्रधान अधिकारी का नाम तुम तो बताओगे?" उन दोनों ने नकार में गर्दन हिलाई, किन्तु उनके चेहरे उस समय बहुत तनावग्रस्त दिखे।

शम्भू महाराज क्रुद्ध होकर बोले, "तुम लोग उस भले आदमी का नाम लेने मे क्यों हिचकिचा रहे हो? इसका मतलब तो यह हुआ कि वह अधिकारी मुझसे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।"

अभिवादन करते हुए पुर्तगाली बाहर निकल गये। शम्भूराजा ने कवि कलश से पूछा—"डिचोली और कुडाल के पास अपने बारूद के कारखाने अच्छी तरह चल रहे हैं न?"

"राजन! आप डिचोली की ओर से दो महीने पहले ही लौटकर आये हैं। गोले-बारूद का निर्माण अच्छी तरह हो रहा है। अब सम्भव है कि गोले-बारूद के लिए हमें डचों और अँग्रेजों पर अवलम्बित न रहना पड़े।"

दरबार का कार्य समाप्त करके शम्भू महाराज अपने महल की ओर निकले। परन्तु पुर्तगालियों का सन्देश उन्हें व्यथित कर रहा था। उनके मस्तिष्क में एक ही प्रश्न बार-बार उठ रहा था कि अपने दरबार का वह कौन-सा अधिकारी है जो मोरोदादा से हाथ मिलाकर प्रजा का शोषण कर रहा है। मोरोदादा के सम्बन्ध में प्रजा के द्वारा भी यदा कदा शिकायत की गयी थी। किन्तु उनके ऊपर वरदहस्त रखने वाला यह प्रधान अधिकारी कौन है? अपने निजी महल के दरवाजे पर शम्भू महाराज बेचैनी से टहलने लगे। उन्होंने कुछ सेवकों को काले हौज के पास बने दूतावास की ओर भेजा। महाराज ने रात को ही रामचन्द्र शेणवी को बुलाया। शेणवी के आने की सूचना पहरेदारों ने दी। यह सूचना पाते ही शम्भू महाराज ने कवि कलश की ओर संकेत किया। कवि कलश भीतर की दालान में जाकर आड़ में बैठ गये। अब बैठक में शम्भू महाराज अकेले थे। राजा ने शेणवी से सीधा प्रश्न किया—"दरबार में शंका

की एक बड़ी गठरी छोड़कर आप लोग निकल गये, किन्तु हमारी तो भूख और नींद ही उड़ गयी। बताइए मोरोदादा जैसे भ्रष्ट सूबेदार को अभयदान देने वाला हमारे दरबार में कौन है?''

महाराज का प्रश्न तलवार की धार की तरह सीधा था। इसलिए बिना कोई टाल-मटोल किए, सिर झुकाकर रामचन्द्र शेणवी बोले—

''बारूद के कारखानों की जाँच और कर वसूली के लिए जो आजकल बार बार गोवा की ओर जाते हैं, वही।''

''कौन? कवि कलश?''

''वे अकेले कैसे जाएँगे महाराज? वे तो आपकी छाया हैं।''

''फिर...? अपने अ...?''

''हाँ महाराज, अण्णाजी दत्तो ही। मोरोदादा और उनमें बहुत घनिष्ठ प्रेम है। अण्णाजी ने अपना काला धन सावंतवाड़ी और कोंडा के व्यापारियों के पास दुगुने ब्याज पर जमा किया है। जामिनदार के रूप में वहाँ का सारा व्यवहार मोरो दादा ही देखते हैं।''

शम्भूराजा के अनुमान पर शेणवी ने पक्की मुहर लगा दी। शेणवी के चले जाने के बाद महाराज का कवि कलश के साथ विचार-विमर्श चलता रहा। शम्भूराजा ने हँसते हुए कहा, ''मेरा अनुमान एकदम ठीक निकला। क्योंकि इतनी क्रूर कठोरता अभी किसी अन्य में नहीं समा पायी है।''

''राजन! इतने बड़े प्रधान अधिकारी के विषय में मैं क्या कह सकता हूँ?''

''बोलना ही नहीं है? रायगढ़ की गद्दी हम कोई भाँग के नशे में नहीं चला रहे हैं? मुझे सारी बातों का पता है। अण्णाजी के कोई एक ही मोरोदादा नहीं हैं। ऐसे अनेक भक्त उन्होंने लाभ वाली जगहों पर नियुक्त कर रखे हैं।'' शम्भू महाराज कहने लगे—''पिताजी के राज्याभिषेक के पहले ही जीजा माता के साथ जब मैंने दरबार में कदम रखा था, तभी मैंने अपने खजाने को खाली करने वाले छिद्रों को पहचान लिया था। तब मेरी उम्र केवल सत्रह वर्ष थी। उस समय तरुणाई का नशा था। उसी के आवेश में हम पिताजी के सामने कहते थे—''ये सारे लुच्चे और धोखेबाज हैं। उसी समय से ये लोग मुझसे नाराज रहने लगे।''

कवि कलश ने शान्त स्वर में कहा, ''राजन इस समय पुर्तगाली वाइसराय के साथ अपना सम्बन्ध वैसे ही बनाए रखना होगा।''

इसलिए वस्तुस्थिति की पूरी छानबीन करके मोरोदादा पर तत्काल कार्यवाही करनी होगी। वैसे यह वाइसराय भी इतने भरोसे का नहीं है। कल को दिल्ली वाले अपने ऊपर आक्रमण करें तो इसकी सही परीक्षा हो जाएगी। किन्तु अभी उसे मैत्री के धोखे में रखना ही ठीक होगा।''

कवि कलश अपने घर जाने के लिए महाराज से आज्ञा माँगने लगे। शम्भू

महाराज ने हँसकर कहा, "मेरी नींद हराम करके आप खुद कहाँ चले?"

"महाराज?"

"झोंपड़ी हो या महल! एक बार चूहों ने सुराख कर दी और खोदना शुरू कर दिया तो सुख की नींद कैसे आ सकती है? अब जल्दी से एक काम कीजिए। अभी के अभी मोरोदादा को पदच्युत करने का आदेश निकालिए। उस फरमान की तामील के लिए आज ही मध्यरात्रि के पूर्व पाचाड़ से डिचोली की ओर घोड़े दौड़ जाने चाहिए।"

"राजन! आपकी आज्ञा का पालन मैं अवश्य करूँगा। किन्तु इस फरमान पर अपने पेशवों और सुरनवीस की स्वीकृति आवश्यक है।"

"ऐसा क्या कह रहे हैं कविराज? आप छंदोगामात्य अर्थात् सर्वाधिकार सम्पन्न पद पर नियुक्त किए गये हैं। इस प्रकार का कोई भी आदेश जारी करने के लिए यदि अष्टप्रधान उपलब्ध नहीं हैं, तो ऐसी स्थिति में नियमानुसार आपको सारे अधिकार प्राप्त हो जाते हैं।"

महाराज, आप मुझ पर पहाड़ जैसा विश्वास रखते हैं, इसके लिए लिए मैं सदैव ही आपके प्रति कृतज्ञ रहूँगा। किन्तु यह न भूलें कि यह प्रशासन है। हम इस प्रकार का आचरण कैसे कर सकते हैं?" कवि कलश ने चिन्तित स्वर में कहा, "राजन प्रशासन चलाने में उसकी सीढ़ियों को ठोकर मारने से नहीं चलता। अधिकारियों और प्रधानों की राय का ध्यान रखना पड़ता है।"

"छोड़ो भी कविराज, इन फिजूल की बातों को। प्रशासन चलाते हुए जब तक मैंने अपने हृदय में प्रजा का मगलकुम्भ सँभाल कर रखा है, तब तक किसी की चिन्ता करने का कोई कारण नहीं है। बता दीजिए उस प्रधान को कि प्रशासन के कागजी घोड़े आपके मनोरजन के नहीं, हमारे स्वप्नों को पूरा करने के लिए नचाए जाते हैं। किसी भी परिणाम के लिए राजा के रूप में हम स्वयं भी उत्तरदायी होते हैं। कविराज, संसार में जब जब क्रान्ति होती है, राजा की गद्दी डगमगाती है। तब सिर राजा का ही काटा जाता है, कर्मचारियों का नहीं।"

सात

पदच्युत होने का फरमान मोरोदादा को डिचोली में दिया गया। उसी दिन उनके निवास का महल जब्त कर लिया गया। रामजी ठाकुर ने वहाँ के कागजात, मुद्राएँ और गोदामों की चाभियाँ आदि सब कुछ अपने कब्जे में ले लिया। घंटे भर की

अवधि में मगरूर मोरोदादा अस्तित्वहीन हो गये। .

मोरोदादा के पदच्युत होने के समाचार को रायगढ़ पहुँचने में चार दिन लग गये। इस समाचार से अष्टप्रधानों की नींद उड़ गयी। इस बात की किसी को भी कोई सूचना नहीं थी कि मोरोदादा को पदच्युत करने के लिए महाराज के हस्ताक्षर और मुद्रा के साथ कोई फरमान निकाला गया था और गोवा की ओर भेजा गया था। अष्टप्रधान पूरी तरह भौचक्के हो गये थे।

इस प्रकरण से अण्णाजी दत्तो को गहरा धक्का लगा। कुछ दिनों तक तो उन्हें अन्न-पानी की भी सुधि न रही। उन्हें अविराम गति से कँपकँपी छूट रही थी। वे बालाजी चिटणीस से गम्भीर स्वर में कहने लगे—''चिटणीस, मैं श्री गजानन की शपथ लेकर कहता हूँ कि अब इसके आगे ऐसा ही होता रहेगा। अपराध की न जाँच-पड़ताल न कोई सबूत, यह तो ऐसा ही हुआ कि जो पसन्द नहीं है उसकी गर्दन पर बेरहमी से आरी चला दो।''

अण्णाजी को समझाते हुए चिटणीस ने कहा, ''जाने दीजिए अण्णाजी! एक सामान्य सूबेदार के पदच्युत होने से आप इतना दुखी क्यों हो रहे हो? सहयोगियों की राय के बिना भी राजा स्वतन्त्र निर्णय लेने का अधिकारी होता है।''

''बालाजी यह इतना सरल नहीं है? इसके मूल में एक षड्यन्त्रकारी राजनीति है। जानबूझकर मेरे आदमियों को चुन चुनकर उनके साथ धोखा किया जा रहा है। शिवाजी महाराज के समय के सभी कर्मचारी नालायक हैं, यही सिद्ध करने के लिए ये सारे षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं।''

''परन्तु इसमें वास्तविक दोषी कौन है?''

''किसको दोष दिया जाये, चिटणीस? अरे भाई, उस कलुषा ने राजा को अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। उस लम्पट के कारण हमारा धर्म, हमारी संस्कृति, सब कुछ खतरे में पड़ गया है।''

इन दिनों हिरोजी फर्जन्द और प्रधानों के बीच उठना-बैठना बहुत बढ़ गया था। राज्य अनेक जिम्मेदारी वाले कार्य महाराज ने हिरोजी को सौंपे थे, किन्तु हिरोजी कुछ असन्तुष्ट दिखाई पड़ते थे। वे अपनी जिम्मेदारियों पर ध्यान नहीं दे रहे थे। उनकी ये शिकायतें राजा के पास आ रही थीं।

एक दिन हिरोजी फर्जन्द शम्भू महाराज से मिलने दरबार में आए। दोपहर का समय था। इसकी सूचना मिलते ही शम्भूमहाराज ने उन्हें अन्दर बुला लिया। पैंसठ वर्ष के ऊँचे कद और उत्तम स्वास्थ्य वाले हिरोजी फर्जन्द ने आते ही कहा, ''शम्भूराजा कुछ हमारी सलाह भी सुन लिया करें। मौके का लाभ उठाइए। औरंगजेब का वह छोकरा आपको पत्र पर पत्र भेज रहा है, किन्तु आपने उसकी ओर मुड़कर भी नहीं देखा।''

"हाँ, देखेंगे।"

शम्भूराजा की इस उदासीनता से हिरोजी नाराज हो गये। वे अधीर होते हुए बोले, "शम्भूराजा, आपकी जगह यदि हमारे शिवाजी होते और ऐसा कोई शहजादा मदद माँगने देहरी पर आता तो मैं सौगन्धपूर्वक कहता हूँ कि ऐसा सुअवसर मिलने पर उस बहादुर ने सारा हिन्दुस्तान पैरों के नीचे रौंद दिया होता। आप भी उठिए और बादशाह के बेटे को साथ में लेकर दिल्ली पर आक्रमण कर दीजिए।"

शम्भूराजा ने कहा, "आपकी कल्पना बहुत भव्य और दिव्य है काका।"

शम्भू बेटा, अपना आगरा का अभियान याद है न? उस समय का हमारा गुर्राता हुआ बच्चा आज ठंडा कैसे पड़ गया?"

"काका साहब, रायगढ़ से आगरा जाने के लिए और आगरा से बड़ी कुशलता से बचकर दक्षिण की ओर आने के लिए पिताजी को कितनी तैयारी और कितनी योजनाबद्ध रीति से कार्य करना पड़ा था? वे जागकर बिताई गयी अनेक रातें और तूफानी दिन आपको याद हैं?"

शम्भूराजा के इस सीधे प्रश्न ने हिरोजी को निरुत्तर कर दिया। महाराज ने स्पष्ट स्वर में कहा, "आपके जैसे बुजुर्गों को ही नहीं बल्कि हम सभी को विचार करना चाहिए कि उस शहजादे का हमारे पास आने का उद्देश्य क्या है? अपने पिता के प्रति छेड़े गये विद्रोह में सच्चाई है या केवल दिखावा?"

शम्भूराजा के इस तर्क से हिरोजी शान्त पड गये। वे शीघ्रता से लौट पड़े। प्रह्लाद निराजी बड़ी उत्सुकतापूर्वक हिरोजी से पूछा, "क्यों हिरोजी, क्या तय हुआ महाराज से मिलकर? उस शहजादे का स्वागत करने के लिए क्या आप त्र्यम्बकगढ तक जाएँगे?"

"तुम भी कैसा प्रश्न करते हो प्रह्लाद पन्त? मुझे जाने दीजिए। मुझे यह सब बुरा लगता है। इतना ही कहूँगा कि उस कलुषा नाम के दुष्ट मान्त्रिक ने यदि रायगढ का पूरा खजाना लूट लिया होता तो कोई बात नहीं थी लेकिन उसने तो राजा का दिमाग ही गायब कर दिया है, इसका क्या करें?"

शहजादा अकबर के आगमन पर शम्भूराजा ने अपनी बारीक नजर रखी थी। उन्होंने हिरोजी फर्जन्द को त्र्यंबकगढ की ओर नहीं भेजा किन्तु नासिक के अपने सूबेदार पर उसके स्वागत का दायित्व सौंप दिया था। मूल्यवान रत्नहारों की भेंट देकर शहजादा अकबर और दुर्गादास का स्वागत किया गया। वहीं से शम्भू महाराज की एक बड़ी सेना और तेज दौड़ने वाले गुप्तचरों का एक दल शहजादे के साथ चलने लगा। शहजादा शीघ्रता से रायगढ़ की ओर आने के लिए निकला था। उसकी रोज की यात्रा, रुकने के स्थान और अन्य सभी गतिविधियों की पूरी जानकारी शम्भू महाराज को थी। एक बार दरबार के कार्य में व्यस्त शम्भू महाराज से कवि कलश ने

हँसते हुए कहा—

"महाराज, आप में और शहजादा अकबर में बंहुत-सी समानताएँ हैं।"

"मतलब?"

"आप दोनों की उम्र एक ही है। दोनों चौबीस वर्ष के। शहजादा अकबर औरंगजेब की चौथी सन्तान है और आप भी शिवाजी महाराज की चौथी सन्तति हैं। उस शहजादे की माँ तो उसे जन्म देकर दो महीने के अन्दर ही अल्लाह को प्यारी हो गयी, किन्तु आपकी माताजी भी आपके दो वर्ष के होने पर अचानक स्वर्ग सिधार गयीं। इतना ही नहीं—कृपया क्षमा करें। साफ बोलूँ तो बुरा न मानें—शहजादे ने अपने पिता से बगावत की है और आप अपने पिताजी से बगावत करके दिलेरखान से जाकर मिल गये थे।"

इन समानताओं को सुनते हुए शम्भूराजा चकित रह गये। उनका बड़ा मनोरंजन भी हुआ। राजा को प्रसन्नचित्त देखकर कविराज धीरे-से बोले—

"राजन, राज्यशास्त्र के कुछ अलिखित सन्देश होते हैं। आपके शत्रु की ओर से आये हुए इतने अमूल्य मोहरे की उपेक्षा ठीक नहीं है। राजनीति के पटल पर ऐसे प्यादे का उपयोग अवसर आने पर ठीक ढंग से हो सकता है।"

"कविराज, इस प्रसंग में हमारा उतावला होना, निश्चित रूप से लाभदायक नहीं है। इस अकबर का स्वागत अपनी सीमा पर हमारे प्रतिनिधि ने क्यों किया? पता है? क्योंकि शहजादे के साथ राजपूताने का एक भला व्यक्ति भी है।"

"दुर्गादास राठौड़," कविराज ने कहा।

"बिलकुल ठीक, वहाँ के हिन्दू दुर्गादास को धर्मनिष्ठ और रीति-नीति का प्रतीक मानते हैं। इसके अतिरिक्त एक और बात है जिसका आपको पता नहीं लग सका।"

"किस बात का, राजन?

"औरंगजेब अपने अन्य शहजादों को तलवार की नोंक पर नचाता है। तब भी उसका सच्चा प्रेम अकबर से ही है। कारण यह है कि उसकी माँ दिलरास बानू शाहंशाह की लाड़ली बेगम थी। कविराज यद्यपि कि औरंगजेब जैसे दुष्ट मनुष्य पाषाण हृदय के होते हैं। इसी औरंगजेब ने काशी के विश्वेश्वर मन्दिर, मथुरा के केशव मन्दिर और सोमनाथ मन्दिर जैसे हमारे देवालयों को ध्वस्त किया। किन्तु ऐसे पाषाण हृदय मनुष्यों के भी दिल के कुछ कोने नाजुक और कमजोर होते हैं।"

"वही कह रहा हूँ राजन! अब आप अधिक 'भवति न भवति' न करके शहजादे के पीछे खड़े हो जाइए।"

"वैसी जल्दी करना ठीक नहीं कविराज! शहजादे ने अपने पिता के साथ विद्रोह किया है किन्तु भविष्य में ये बाप-बेटे परस्पर कैसा व्यवहार करेंगे? इसका

ठीक-ठीक अनुमान लगा लेना भी आवश्यक है। तब तक भट्ठी में जलते लोहे को उँगलियों से उठाने की धृष्टता क्यों की जाए? अभी तो चिमटे का उपयोग करना ही ठीक है।''

शहजादे के भिवंडी और कल्याण तक पहुँचने की खबर मिली। तब शम्भूराजा ने शहजादे के साथ चल रही अपनी सेना को गुप्त आदेश भेजा कि खाड़ी पार करने के बाद सुधागढ़ के पास शहजादे को रोका जाये।

एक सुबह शम्भूराजा ने हिरोजी फर्जन्द को बुलाया। उन्हें शहजादे अकबर की यात्रा की यथोचित जानकारी देकर शम्भूराजा ने कहा, ''अब आप शीघ्रता से सुधागढ़ की ओर निकलिए, अपने उस लाड़ले शहजादे के स्वागत के लिए। हिन्दवी स्वराज्य के वकील के रूप में हमने आपका चयन किया है। रत्नशाला में से आवश्यक जवाहरात ले लीजिए। हिन्दवी स्वराज्य के प्रतिनिधि की शान के अनुरूप शहजादे का स्वागत करें।''

फर्जन्द खुशी-खुशी बड़ी शीघ्रता से बाहर निकले। तब येसूबाई ने कहा, ''अच्छा महाराज आपने बड़े धैर्य से और बहुत सोच विचार कर इस शहजादे के सम्बन्ध में निर्णय लिया है?''

''हाँ येसू, व्यर्थ के अति उत्साह का क्या काम? पागल भेड़ भेड़िये के पीछे दौडे जैसा बर्ताव राजा का नहीं होना चाहिए।

आठ

किसी का भाग्य कहाँ चमकेगा और कहाँ गोता खा जाएगा, कहा नहीं जा सकता। कुछ लोग सोने का चम्मच मुँह में लेकर पैदा होते हैं तो कुछ लोग अपने परिश्रम से या किसी आकस्मिक घटना से शाहंशाह बनते हैं। किन्तु जब कोई राजपुत्र के रूप में जन्म लेता है और ऐन तरुणाई में भिखारी बन जाता है तब उसके दुख-दैन्य की कोई सीमा नहीं रहती।

वह भी एक शहजादा था। दिल्ली के बादशाह का शहजादा। परियों जैसी दासियों का मेला उसके संकेत की प्रतीक्षा में खड़ा रहता था। वे मदनिकाएँ, वह विलास, सब कुछ चला गया। आज उसकी तकदीर उसे दक्षिण के पथरीले जंगलों में खींच ले आयी थी, जहाँ वह जानवरों के तबेले जैसे एक बड़े घर में अपने

दिन काट रहा था।

वह एक चौबीस वर्ष का तरुण था। एक मध्यम ऊँचाई का चुस्त दुरुस्त, सुदर्शन शहजादा। अभी उसके गले में मोतियों की माला उसी तरह चमक रही थी। दिल्ली के मीना बाजार में शाही दर्जी द्वारा किया गया उसका मखमली लिबास अभी भी उसके शरीर पर था। किन्तु उसका मन भीतर ही भीतर रो रहा था। जो औरंगजेब खजाने के हीरे जवाहरात खुले हाथ लुटाता था, उसी औरंगजेब का लाड़ला शहजादा अकबर दक्षिण में पागलों की तरह भटक रहा था।

औरंगजेब के लाड़ले शहजादे के रूप में जब वह आरामदेह नरम बिस्तर में लेटता था और पक्षियों की तरह अपनी आँखें धीरे-धीरे खोलता था तब उसके आदेश की प्रतीक्षा में सैकड़ों सुन्दर दासियाँ खड़ी रहती थीं। उसके शरीर की मालिश करने वाली पीली आँखों वाली कमनीय तिलोत्तमाएँ थीं। शहजादे के तैरने के लिए स्वच्छ नीले पानी का सरोवर था। थोड़ी भी थकान या शिथिलता आने पर उसका मन बहलाने के लिए मदमस्त लखनवी नृत्यागनाएँ, स्वर्गीय संगीत की लहरें, खुशमिज़ाज मसखरों और विदूषकों की हास्य की बहारें, वह सुख का स्वर्ग कहाँ चला गया?

औरंगजेब के दरबार में नृत्य-संगीत, गायन वादन आदि पर प्रतिबन्ध था। किन्तु शहजादे अकबर के दीवानखाने और दिल में प्रवेश करने के रास्ते नृत्यागनाएँ और उनके साजिन्दे खोज ही लेते थे। शहजादा आजम, मुअज्जम और कामबक्श की अपेक्षा औरंगजेब को अकबर से अधिक प्रेम था। इसलिए भावी शहंशाह के रूप में लोग उसी का अनुमान लगाते थे और उसी के अनुरूप उसका आदर करते थे। बड़े बड़े राजपूत, तुर्क, अफगान सरदार उसके आगे सिर झुकाते थे। शहजादे की उम्र अभी लगभग दो महीने की ही रही होगी कि उसकी माँ दिलरास बानू अल्लाह को प्यारी हो गयी। अपनी लाडली बेगम के आकस्मिक निधन से बादशाह बहुत दुखी हुआ। जिस प्रकार चिड़िया अपने घोंसले में लाड़ प्यार से बच्चे को पालती है, उसी प्रकार औरंगजेब ने इस नवजात शिशु को हृदय से लगा लिया।

आज उसी शहजादे की सुबह एक अजीबोगरीब गाँव मे भेड़ बकरियों की 'बेंऽऽ बेंऽऽ' की आवाजों के साथ हो रहा था। पहले वह अपनी गजदन्ती खिड़कियों से मस्जिद की ऊँची मीनारें और गजमहल की भव्य मेहराबें देखा करता था। परन्तु अब सुधागड़ पाली के परिसर में इस अपरिचित घने जंगल को देखते हुए उसका मन कुछ विचित्र सा हो रहा था। जब वह शहजादा अपने पिता के साथ अभियान पर निकलता था तो उसकी और शाहंशाह की जनानियों का खेमा तीन मील में फैला रहता था। किन्तु अब वह घास-फूस से बने एक घर में किसी प्रकार दिन काट रहा था। उसमें घर के चारों ओर कूड़ा करकट था और घर के भीतर

केलिको के पर्दे लगे थे। बैठने के लिए एक जाजिम था। शहजादा अकबर के साथ उत्तर से चार सौ घोड़े, थोड़े से पैदल और ढाई सौ ऊँट आये थे। यह छोटा सा दल दिल्ली के बादशाह के शहजादे को नहीं किसी गुम्भाई को ही शोभा दे सकता था।

इस परिसर ने शहजादे का मन खराब कर दिया था। जब वह पाली के पास आया तब उसका स्वागत रिमझिम बरसात ने किया था। बरसात के रुकने पर झुके हुए बादल उसे बेचैन कर देते थे। अनेक बार पड़ोसी के बच्चों की तरह बादल उसके घर में घुस आते थे। पन्द्रह पन्द्रह दिन तक सूर्य के दर्शन ही नहीं होते थे। कड़ाके की ठंड और तेज हवा थी। बिच्छू और साँप भी वहाँ थे। इन सब चीजों से शहजादे का जीना हराम हो गया था। वहाँ रहते कुछ महीने बीत गये थे। शहजादे ने संभाजी महाराज से निवेदन भी किया था। पत्र पर पत्र भेजे थे। परन्तु रायगढ़ से मिलने वाले उदासीन प्रतिसाद से अकबर बहुत बेचैन हो गया।

आज शहजादे की स्थिति बहुत खराब हो गयी थी। उत्तर से साथ आये दुर्गादास पर वह एकदम उखड़ गया—"दुर्गादास, यह न भूलिए कि मैं हिन्दुस्तान का बादशाह हूँ। मैं उस शंभाजी से बहुत असन्तुष्ट हूँ। अपना सारा काम छोड़कर उसे मुझे सलाम करने के लिए भागते हुए यहाँ आना चाहिए था। अभी कल तक सोच रहा था कि जब मैं दिल्ली का बादशाह बनूँगा तो दक्षिण की सूबेदारी शम्भू को दूँगा। पर अब यह नहीं होगा। यदि आप सिफारिश करेंगे तो भी सम्भव नहीं है।"

बहुत देर से दुर्गादास अपनी हँसी रोकने का प्रयास कर रहे थे। शहजादा अकबर ने कहा, "दुर्गादास, ऐसी बेअदबी आपको शोभा नहीं देती।"

शहजादे के रोष की चिन्ता न करते हुए दुर्गादास ने कहा, "यदि किसी के पास तख्त, ताज, जमीन और प्रजा न हो तो नौटंकी के नकली बादशाह जितनी भी उसकी इज्जत नहीं होती। शहजादे आज का यथार्थ क्या है? इसको समझना आवश्यक है।"

"लेकिन वह दुष्ट शंभाजी तो हमारी ओर ध्यान देने के लिए तैयार ही नहीं है।"

"और कितना ध्यान दें? आपके स्वागत के लिए मराठी राज्य के वरिष्ठ वकील और संभाजी के प्रतिनिधि के रूप में हिरोजी फर्जन्द स्वयं यहाँ आये थे। हीरों जड़ा कंठहार, आपकी टोपी के लिए रत्न कलंगी और विविध प्रकार के जवाहरातों का कितना मूल्यवान उपहार उन्होंने आपको भेंट किया। आपकी सुरक्षा के लिए उन्होंने पाँच सौ सैनिकों की सेना दी है। एक राजा ने दूसरे राजा के साथ राजा जैसा ही बर्ताव किया है। शहजादे, आपको और क्या चाहिए?"

शहजादा अकबर बिफर कर बोला, "आजकल मेरी इस फूटी तकदीर को क्या हो गया है? यही नहीं समझ में आ रहा है।"

"शहजादे, दूसरों को दोष देने की जगह अपनी निष्क्रियता और विलासी

वृत्ति को दें। आपके गले में विजय की माला पहनाने के लिए 'विजयश्री' अजमेर के पास राजपूताने की बालू में लगातार दस दिन तक खड़ी रही। किन्तु ऐन मौके पर आप सुख की नींद सोते रहे। आपकी ढिलाई का फायदा उठाने में औरंगजेब सचमुच आपका बाप निकला। इसमें किसका दोष है?''

अकबर बिना कुछ बोले उदास भाव से दुर्गादास की ओर देखता रहा। तब दुर्गादास ने उससे पुनः कहा, ''क्या बड़ा तो दम बड़ा। आज पूरे हिन्दुस्तान में औरंगजेब जैसी प्रचंड शक्ति वाले बादशाह का तुम्हारे लिए मुकाबला करने वाला शंभूराजा के अतिरिक्त कोई और साहसी नहीं है।''

दुर्गादास की बात शहजादे अकबर को ठीक लगी। शिवपुत्र संभाजी तरुण हैं। युद्ध क्षेत्र में घुड़सवार सिपाही उस पर जान देते हैं। ये सारी बातें शहजादे की समझ में आ गयीं। फिर भी शहजादे के मन के घोड़े किसी और दिशा में दौड़ रहे थे। उन्होंने दुर्गादास को अपने पास बुलाया। उनके कान के समीप लगकर बोला—''दुर्गादास थोड़ी और हिम्मत करें तो? हिरोजी फर्जन्द जैसे सम्भाजी के आदमी को फोड़कर एक नयी फौज बनाने की कोशिश करें तो?''

शहजादे की उस निरर्थक कल्पना पर दुर्गादास को बहुत क्रोध आया। वे कहने लगे—''शहजादे, इस प्रकार के व्यर्थ के विचारों को अपने मन में लाकर पागल मत बनो। एक बात हमेशा ध्यान में रखो। मराठों के ये बलशाली किले और फौलादी शक्ति वाले सम्भाजी के वफादार सरदार कभी भी फूटने वाले नहीं है।''

दुर्गादास की बात पर शहजादा जोर मे हँसा। वह कहने लगा—''मराठों के दुर्ग और किले आसानी मे जीते नहीं जा सके, यह मैं मानता हूँ लेकिन वफादारी का स्वाँग करने वाले मराठा सरदारों की वफादारी को प्रशंसा तो मेरे सामने नहीं ही कीजिए। जब समय आएगा तब सारी बातें मैं खोलकर बताऊँगा।''

नौ

चिराग के मद्धिम प्रकाश में अण्णाजी दत्तो का तैलीय स्याह चेहरा उजला दिख रहा था। उनकी तेज और बोलती आँखों में नया निखार आ गया था। पिछले दो महीने से शम्भूराजा का डेरा पन्हालगढ़ पर पड़ा था। वहीं से वे राज्य का कार्यभार सँभाल रहे थे। आज राजधानी में अनुपस्थित रहना पन्त को आपत्तिजनक लग रहा था।

बगल में बैठे रांगड़े हिरोजी से अण्णाजी ने कहा, "हिरोजी, तू कुछ भी कह, शिवाजी के जमाने में हम आठ प्रधानों का कोई स्थान था। आज वह सारा सम्मान और दर्जा चला गया।"

"मारा कार्य भार सम्भाजी और येसूबाई के हाथ में चला गया है। दूसरे किसी के लिए उन्होंने कुछ भी नहीं रखा है।" सम्भाजी दत्तो ने कहा।

"भूल कर रहे हो सोमा जी। अरे यहाँ के नाटक का तीसरा पात्र तो महाजालिम है। हमारे स्वराज्य की छाती पर सवार वह जनम-जनम का शाक्तपन्थी पिशाच। उसे कैसे भूलते हो?" धोती से हवा करते हुए अण्णाजी ने कहा।

राहुजी सोमनाथ के बीच में ही हस्तक्षेप किया। उन्होंने कहा, "इसका मतलब यह कि पिछले पन्द्रह दिनों में पन्हालगढ़ पर जो घटनायें घटीं उसका आपको पता नहीं है।"

"क्यों जी? क्या हो गया?" सबने एक साथ पूछा।

"वह हरसूल का कमबख्त सैफुद्दीन, मतलब अपना गंगाधर कुलकर्णी- "

"उसका क्या हुआ?" अण्णाजी भयभीत होकर पूछने लगे।

"वह सैफुद्दीन गंगाधर यहाँ गढ़ पर कुत्ते की तरह भटक रहा था और अन्त में शम्भूराजा से जाकर मिला।" महाराज से कहने लगा—"गरीब ब्राह्मण को फिर हिन्दू धर्म में ले लीजिए।" राहुजी ने बताया।

"फिर राजा ने क्या कहा?"

"अण्णाजी वह तो हिन्दुओं के देवता बनने निकले हैं। बहुत बड़े धर्मवीर बनना चाहते हैं। उन्होंने कहा, "बजाजी निम्बालकर और नेताजी पालकर का यदि शुद्धीकरण हो सकता है तो इस गरीब ब्राह्मण को क्यों सताते हो?"

अण्णाजी का चेहरा देखने लायक हो गया। सोमाजी ने तो अपने सिर की पगड़ी उतार ली और क्रोध में चार-पाँच बार अपना सिर पीटा। उन्होंने कहा, "शिव, शिव, शिव! सुना आप लोगों ने? गंगा के किनारे का यह भिखारी, पेशे से पुरोहित और उसका ऐसा व्यवहार? अब यह दुष्ट हमें धर्मशास्त्र और शुद्धीकरण का मतलब समझाने निकला है? इस तरह के पाप पूर्ण जीवन जीने से तो अच्छा है, पहाड़ की चोटी से कूदकर आत्महत्या कर लेना।

सैफुद्दीन गंगाधर ने सोमाजी से वादा किया था कि यदि उसे पुनः हिन्दू धर्म में ले लिया जाएगा तो वह अपने अधिकारी के चार एकड़ का नारियल का बाग सोमाजी को सौंप देगा। यह एक प्रकार की रिश्वत थी। अण्णाजी की पीड़ा अलग थी। डिचोली के मोरोदादा पर शम्भू महाराज ने अभियोग लगाया था। इसलिए अण्णाजी चोरी से चलने वाले आर्थिक सम्बन्ध धोखे में आ गये थे। मोरोपन्त दादा के हवाले से सावंतबाड़ी और पणजी में दिया गया उनका गुप्त धन लगभग डूब ही

गया था। राहुजी सोमनाथ के हाथ में पहले जमादारखाने की चाभियाँ रहा करती थीं। किन्तु येसूबाई की कड़ी निगरानी में सबको रहना पड़ता था। समय बहुत कठिन था और दिन हानिकारक थे।

हिम्मत बटोरकर राहुजी सोमनाथ ने कहा, "देखिए अण्णाजी, पिछले दो तीन महीनों से शम्भूराजा गढ़ पर नहीं हैं। इस अवसर का लाभ उठाया जाना चाहिए। सही समय पर शिकार कीजिए।"

बहुत देर से चुप बैठे हिरोजी फर्जन्द भी आगे आ गये।

"दूरदृष्टि की बात करें तो इस सम्भाजी को उसका पता तक नहीं है।"

"जाने दीजिए न इस विलासी और मनचले शम्भूराजा से क्या अपेक्षा रखते हो?" राहुजी ने कहा।

"गोब्राह्मण के प्रतिपालक शिवाजी महाराज के चिरंजीव ही अधर्म मचाने लगे हैं। शम्भूराजा को बचपन मे ही दलितों के साथ खेलने कूदने की गन्दी आदत थी। उस काजी मुल्ला हैदर को अनावश्यक महत्त्व क्यों देते हैं, उस केलशी के मुसलमान याकूब बाबा को गुरु के रूप में क्यों मानते हैं? इधर उधर बच्चों को इनाम देने का अधर्म क्यों करते हैं?"

"पन्त यह कुछ अधिक ही हो रहा है। ऐसा नहीं लगता क्या?" बीच में ही जवान निम्बालकर ने कहा।

"मुल्ला हैदर को तो शिवाजी महाराज ने ही काजी बनाया था न? तुकाराम और रामदास के साथ याकूब औलिया बाबा को स्वयं शिवाजी महाराज गुरु मानते थे न? फिर यूँ ही बुद्धिभेद की यह भाषा आप जैसे बुजुर्ग द्वारा क्यों बोली जा रही है?" सोमाजी को निलोपन्त पर बहुत क्रोध आया। वे गुराये थे—

"पिताजी के पुण्य के कारण महाराज ने आपको पेशवा बना दिया तो आप बड़े बुद्धिमान हो गये? चिरंजीव निलोपन्त! बैठिए, नीचे बैठिये।"

अब अण्णाजी पन्त से रहा नहीं गया। शिखा टूटे या सिर इससे निश्चिन्त होकर उन्होंने अपनी भड़ास निकालने लगे। वे बहुत क्रुद्ध थे। उनकी साँसों की गति बढ़ गयी थी। दाँत पीसते हुए उन्होंने कहा, "भाइयो, इस राजा ने मेरी बेटी को भ्रष्ट किया। उसकी जिन्दगी समाप्त कर दी। इसका हमें उतना दुख नहीं होता ऐसा भी नहीं है कि मैं अपने स्वार्थ के लिए बोल रहा हूँ। पर इस शम्भूराजा के कारण हमारा हिन्दू धर्म संकट में पड़ गया है और लगता है कि भविष्य में वह पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। इसी का मुझे अत्यधिक कष्ट है।"

सभी की निगाहें अण्णाजी की ओर मुड़ीं। अपने को सँभालते हुए अण्णाजी बोले, "गागा भट्ट ने अच्छे विधि विधान से राज्याभिषेक किया था फिर भी हमारे शिवाजी महाराज ने दूसरे राज्याभिषेक के समय उस तान्त्रिक निश्चल गिरि को

बुलाया ही न? माफ कीजिए अन्नदाता के सम्बन्ध में बोलते समय जबान भारी हो जाती है—पर हिन्दू धर्म की अस्तित्व रक्षा का प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण है। बड़े महाराज बस वही एक भूल हुई थी किन्तु उनके चिरंजीव ने तो उस गोड़ बंगाली शाक्तपन्थी भड़भूजे को सिर पर चढ़ा रखा है। उसका महत्त्व दिनोंदिन इतना बढ़ने लगा है कि वैदिक ब्राह्मण को भविष्य में यहाँ आश्रय ही नहीं मिल पाएगा।

अण्णाजी की बातों से दरबार का रुख ही बदल गया। निलोपन्त पेशवा अत्यन्त चिन्तित होकर उनकी ओर देखने लगे। उनके कान क्रोध से लाल हो गये।

अण्णाजी ने गरजते हुए कहा, "कहो तो हम लिखकर देते हैं कि इस राजा की वजह से हमारा धर्म और हमारे देवता संकटग्रस्त हैं क्यों निलोपन्त? अण्णाजी ने ऊँची आवाज में फिर कहा, "इस तरह मेरी ओर क्या देख रहे हो? यदि आपके पिता मोरोपन्त इस समय यहाँ होते तो शान्त बैठे रहते?"

निलोपन्त को यह प्रश्न अच्छा नहीं लगा। वे क्रोध के आवेश में बोले—

"मुजूमदार अपने ही धर्मबन्धु हैं। उन्हें परधर्मियों ने डुबाया। अपने भाई होकर वे न्याय के लिए 'कलश' के दरवाजे पर क्यों जाते हैं? इसमें तो आपकी पराजय है।"

"क्यों जाता है?"

"इसलिए कि आपकी दक्षिणा इतनी अधिक है। कपोलकल्पित पाप के प्राक्षलन के मुकाबले इतनी अधिक है कि लोगों को धर्म की अपेक्षा मरना बेहतर लगता है।"

"निलोबा, तुम बहुत अधिक बोल रहे हो।"

"झूठ तो नहीं बोल रहा हूँ न? राज्य के साढ़े तीन सौ किलों पर जो कायस्थ, ब्राह्मण और मराठा अधिकारी थे और जो शिवाजी महाराज के समय से चले आ रहे थे उनमें शम्भूराजा ने कोई बदलाव किया? उनके आसपास जैसे सेना में मुसलमान हैं, वैसे प्रशासन में ब्राह्मण हैं, किले पर प्रभु हैं, वतनदारि में पहले की तरह बन्दी हैं। महाराज से केवल एक ही भूल हुई है।" निलोपन्त सभी की ओर अपनी दृष्टि घुमाते हुए बोले, "राजद्रोह जैसे भयानक गुनाह करने पर भी राजा ने आप पर दया दिखाई, फिर से पद पर आसीन किया। आपको प्रतिष्ठा दी। यही उनका दोष है।"

किसी की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किये बिना निलोपन्त वहाँ से उठ कर चले गये। उनके चले जाने से अण्णाजी ने राहत महसूस की। उन्होंने अपने लम्बे गमछे से गंजे सिर पर पड़े धर्म के छींटों को पोंछ डाला।

शम्भूराजा जब से सिंहासनारूढ़ हुए तभी से हिरोजी के मन में एक चिन्ता घर कर गयी थी। राहुजी सोमनाथ फर्जन्द ने उनसे बहुत पहले कहा था—"हिरोजी।

आप जारज सन्तान हैं फिर भी आपके शरीर में भोसलों का रक्त है। आपकी स्थिति विदुर की है।" इसी तरह के अनेक ताने देकर सोमनाथ ने हिरोजी के मन में विषारोपण कर दिया था। अपने वंशजों का जारज की सन्तान कहा जाएगा और मुझे स्वयं में भी राजगद्दी मिलने की आशा नहीं है। ऐसे विचारों के कारण हिरोजी के मन में शम्भूराजा के प्रति कटुता और तिरस्कार की भावना निर्मित हो गयी थी।

"एक बार फैसला हो जाना चाहिए-" ऐसा कहकर हिरोजी क्रोधावेश में आ गये। उन्होंने अण्णाजी से कहा, "स्वयं राजगद्दी प्राप्त करने के लिए जो पिता की मृत्यु की कामना करता है। गद्दी के लिए जो कलशाभिषेक जैसा गक्षमी अनुष्ठान करता है, ऐसे शम्भूराजा से न्याय और नीति की अपेक्षा क्यों की जाये? अण्णाजी आप बिलकुल चिन्ता न करें। मैं आपके पीछे खड़ा हूँ।"

"वाह हिरोजी लाख रुपये की बात कही। अण्णाजी विजयी मुद्रा में चारों ओर देखने लगे। अचानक कुछ स्मरण करके अण्णाजी दत्तो ने हिरोजी से पूछा—

"अरे फर्जन्द जी, उस शहजादे के स्वागत के लिए सम्भाजी ने आपको भेजा था। पानी के साथ लकड़ी भी सड़ जाती है। इतने दिनों के साहचर्य में आपको कम से कम शहजादे को तो अपनी ओर कर लेना था।

फर्जन्द ने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा, "उसकी बात छोड़िए। उसको तो मैंने इतना प्रसन्न कर लिया है कि चुटकी बजाते ही वह पाली मे दौड़कर रायगढ़ आ जाएगा, हमारे लिए।"

फर्जन्द की इस बात मे अण्णाजी गम्भीर हो गये। उनकी आँखों में प्रतिशोध का भाव झलकने लगा। उनके चहरे का रंग बदल गया। अपने कान की बाली को खींचते हुए उन्होंने प्रश्न किया—"हिरोजी क्या तुम विश्वास के साथ कह मकते हो कि शहजादा हमारी बात सुनेगा?

"बिलकुल, चिन्ता क्यों करते हैं? आप बस निर्णय लीजिए, वह भी जल्दी से।" हिरोजी की बात सुनकर अण्णाजी भाव विह्वल हो गये। उन्होंने अपने दाँतों और ओठों को चबाते हुए कहा, "हिरोजी आपकी बात बिलकुल मच है। शहजादा अगर हाँ कहता है तो अब हम क्यों रुकें? जिमने हमारी जीवन भर की कमाई छीन ली, हमेशा हमें भ्रष्ट और चोर सिद्ध करने की कोशिश की, अपनी रानी को हीरे-जवाहरात के साज-शृगार के बदले हमारे हिसाब में ताक झाँक करने के लिए बिठा दिया, दान-धर्म छोड़कर एक स्त्री को हमारे सिर पर बिठाकर हमें अपमानित किया, हमारी बेटी की इज्जत लूटी, हमें कैदी बनाकर पन्हाला से रायगढ़ तक हमारी छीछालेदर की। ऐसे घमंडी हृदयहीन, अविचारी, अन्यायी युवराज को भगाने का अवसर आ रहा है और उसके लिए अकबर भगवान का दूत बनकर यहाँ आया है तो हम कहते हैं कि ऐसा सुनहग अवसर हम क्यों छोड़ें?"

केवल उस कल्पना से ही अण्णाजी को बड़ी राहत मिल रही थी। "परन्तु अण्णाजी यह सब होगा कैसे?" हिरोजी आगे सरक आये। पन्त के कान के पास जाकर बोले, "फिर से पहले जैसा खेल खेलेंगे। सम्भाजी को जेल भेजेंगे और उस बच्चे राजाराम को गद्दी पर बिठाएँगे।"

सारी बात अच्छी तरह निश्चित हो गयी। आखिर शहजादा अकबर कोई ऐरा-गैरा आदमी था। वह बादशाह का बेटा था। आज नहीं तो कल वह दिल्ली की गद्दी पर बैठेगा ही। उसकी सहायता मे सम्भाजी को हटाने का निर्णय लिया गया। बात चीत के दौरान अण्णाजी का चेहरा क्रोध से तमतमा गया। उन्होंने कहा—

"अब स्वराज्य में देवताओं और ब्राह्मणों के दिन नहीं रहे। इन शाक्तपन्थियों ने यहाँ का सारा वातावरण भ्रष्ट कर दिया है। मदिरापान, मांमभक्षण! छी. छी. जितना कहा जाये कम ही होगा। वह शम्भुराजा का मित्र है इसलिए हम उसे कितना सहें? उसके लिए यहाँ रायगढ़ में नये महल की व्यवस्था, वहाँ गोवा के पास डिचोली में अपने साथ साथ इस लफंगे के लिए फिरंगियों से नया महल खरीद लिया। और अब उस मलकापुर में अपने साथ ही उसका महल बनना शुरू है। अरे मैं कहता हूँ, कौन है यह टिक्कोजी राव? न अपनी जाति का न धर्म का? फर्जन्द गणेश की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, इस अमंगलमय वातावरण में हमारी जीने तक की इच्छा नहीं होती।"

हिरोजी ने अण्णाजी को स्मरण दिलाते हुए कहा, "जितना भी सत्यानाश होना है एक बार हो जाने दीजिए। परन्तु पिछली बार की तरह हमें राजद्रोही ठहराने की नौबत न आए।"

फर्जन्द की बात पर अण्णाजी बहुत क्रुद्ध हुए। वे गर्म सीसे की तरह तड़कते हुए बोले, "राजद्रोह शब्द का अर्थ कौन और किस तरह सिखाएगा? यह सम्भाजी जो दिलेर खान के पास भाग गया था और जिसने शिवाजी जैसे पिता की आँख से आँसू गिराये—वह कुलकलंक?"

रात बीतती जा रही थी। बाहर तेज हवा चल रही थी। चिरागों में दो-दो बार तेल डाला गया। फिर भी बात समाप्त नहीं हो रही थी। ईश्वर को साक्षी मानकर सौगन्धें ली गयीं। बीच में किसी ने सोयराबाई के अपने पक्ष मे आने के प्रति आशंका व्यक्त की। इस पर अण्णाजी ने धोती फटकारते हुए कहा, "यूँ ही किसी स्त्री को राजमाता का पद मिल रहा हो तो उसे बुरा लगेगा? और सोयराबाई के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या है?"

कुएँ के तल से निकलती हुई सी राहुजी सोमनाथ की आवाज आयी—

"लेकिन बालोबा चिटणीस का क्या है?"

इस नये प्रश्न से अण्णाजी का खिला हुआ चेहरा एकदम उदास हो गया। सभी लोग घबराये हुए एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

सोमाजी दत्तो ने कहा, "वह बालाजी चिटणीस सम्भाजी का पक्का पक्षधर है। परन्तु इस नयी योजना में यश प्राप्ति की सम्भावना है तो चिटणीस को अपने पक्ष में किये बिना कोई उपाय नहीं है।"

राजा के सेनापति की अनुपस्थिति में युद्ध करने का निर्णय पक्का किया गया था। किन्तु चिटणीस का बीच में आना धोखादायक था। हिरोजी ने कहा, "मेरी सुनिए, यह चिटणीस मर जाएगा लेकिन हमारे साथ नहीं आएगा।

"उसकी जाति कौन-सी है? आप लोगों को पता है?" फर्जन्द ने प्रश्न किया।

"यहाँ जाति का क्या सम्बन्ध है?"

"अरे, वही तो महत्त्वपूर्ण है। शिवाजी के जमाने से प्रत्येक किले के अधिकारी का पद 'प्रभु' लोगों को ही मिलता रहा है। वे सभी बालाजी का बड़ा सम्मान करते हैं। बालाजी को हाथ लगाया तो किले के प्रभु लोग आपके पीछे पड़ जाएँगे। इसीलिए मैं कहता हूँ कि थोड़ी शान्ति से काम लीजिए। थोड़े प्रेम से, थोड़ी मिठास से उस चिटणीस को अपने क़ब्ज़े में कीजिए।"

फर्जन्द की वह सलाह सुनकर अण्णाजी होश में आये। वे प्रसन्न होकर बोले, "हिरोजी सच कह रहे हो। कुछ भी करके बालाजी को हमें अपनी ओर करना है। उसी के हस्ताक्षर से शहजादा अकबर को पत्र लिखेंगे। सभी मिलकर औरंगजेब के बेटे के पास जाएँगे और उसके पैरों पर नाक रगड़कर कहेंगे—"बाबा रे एक बार हामी भर दो। परन्तु जब राज्यक्रान्ति सफल हो जाएगी, तब हम सबके भाग्य खुलेंगे।" बोलते-बोलते अण्णाजी की आँखें भर आयीं।

दस

पुण्य मनुष्य को एक बार आलसी बना सकता है किन्तु पाप उसे किसी भी समय सोने नहीं देता। आधी रात बीते एक घंटा हो चुका था, किन्तु राज्य कर्मचारियों की आँखों में नींद का नाम नहीं था। वे साहस करके उठे और साहस करके पीछे की ओर चिटणीस के महल की ओर चले गये। दूर कहीं पर एक कुत्ता रो रहा था। आकाश में बादल छाये थे। इसलिए एक भी तारा दिखाई नहीं पड़ रहा था। रक्षकों

के जोर से आवाज देने पर बालाजी चिटणीम चौंककर उठे। आँख मलते-मलते बाहर के दरवाजे तक आए।

आँखों पर जोर देकर बालाजी पन्त ने अविश्वासपूर्वक सामने देखा। चिराग के उजाले में कारभारियों का चेहरा साफ नजर आ रहा था। वे सभी तुलसी वृन्दावन के पास ऐसे खड़े थे जैसे उनके पैर काँटों पर हों। चिटणीस की ओर देखकर अण्णाजी पन्त ने सूचित किया कि सोयराबाई ने उन्हें तत्काल बुलाया है।

चिटणीस ने जल्दी-जल्दी जूते पहने। उन्होंने सोचा पन्हालगढ़ मे राजा का कोई सन्देशा आया होगा। कोई-न-कोई आवश्यक कार्य अवश्य होगा। अन्यथा ये प्रधान लोग आधी रात को क्यों आते? चिटणिस ने कपड़े पहने। इसी बीच सोये हुए आवजी को भी अण्णाजी ने जगा लिया था। उन पिता-पुत्र को साथ लेकर सभी लोग शीघ्रता से महल के बाहर निकले। इन अधिकारी कर्मचारियों को इतनी रात गये दरवाजे पर देखकर पहरेदार डर गये। उनकी किसी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किये बिना अण्णाजी ने उन्हें डाँटा—

"ऐसे क्यों देख रहे हो? जाकर रानी साहब को उठाओ। उनसे कहो कि आपके आदेशानुसार सभी लोग आये हैं।

सोयराबाई थोड़ी ही देर में बाहर आ गयीं। चिराग के प्रकाश मे उन्होने कर्मचारियों को देखा, बालाजी आवजी को भी ध्यान से देखा। दृश्य अविश्वसनीय था पर सच था। अण्णाजी दत्तो के चेहरे पर विजय का उन्माद छिप नहीं पा रहा था। सोयराबाई ने इसे समझा। जब सभी पहरेदार और परिचारक बाहर चले गये तब उन्होंने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया। मुँह का पसीना आँचल से पोंछते हुए बैठ गयीं।

सोयराबाई ने एक बार पुनः सभी की ओर ध्यान से देखा और शीघ्रता से पूछा, "पन्त, इस बार तो आप सब एक मत होकर आये हैं न?"

"महारानी, आप अब रायगढ़ की राजमाता होने वाली हैं। इस तरह डरने से कैसे चलेगा?" अण्णाजी ने शिकायत करना आरम्भ किया—"क्या कहें रानी साहब शिवाजी महाराज जैसे प्रतापी राजा के साथ हमने काम किया है। पर आजकल यहाँ राजधानी में इतनी गड़बड़ी मची हुई है कि क्या कहें? बहुत सह लिया। बहुत हो चुका। इसीलिए आपसे प्रार्थना है कि इस राज्य को आप बचा लें। राजाराम साहब को फिर से गद्दी पर बिठाएँ।"

"पन्त जरा धीरे बोलिए।"

"जाने दीजिए, हम किसी से डरते नहीं। जो भी होना है हो जाये।" अण्णाजी बहुत आवेश में आ गये थे।

आँखों के सामने यह सब घटित होते देखकर बालाजी चिटणीस का सारा शरीर पानी-पानी हो गया। आवजी भी घबराकर अपने पिता की ओर टकटकी

लगाकर देखने लगे। उनकी अवस्था ऐसी हो गयी थी जैसे पंछी शिकारी के हाथ आ गया हो। शेष सभी का विचार दृढ़ था। अण्णाजी के इस प्रस्ताव से सोयराबाई प्रसन्न थीं। कुछ विमुग्ध भी हो गयीं थीं। उनका कंठावरोध हो गया था। उन्होंने कहा, "आज हृदय को शान्ति मिली। क्या कहूँ? मुझे एक सामान्य गुलाम की तरह जीना पड़ रहा है। मुझे जीजामाता जैसी कठोर स्वभाव की सास मिली थीं। लेकिन उन्होंने भी कभी मुझे नीचा नहीं दिखाया। कल की छोरी इस येसूबाई के ठाट तो देखो। 'श्री सखी रानी जयन्ती ऐसी मुहर बनवायी हैं।' बुजुर्गों पर हुक्म चलाती हैं निस पर हमारे ये शम्भूराजा स्वयं को बाघ का बच्चा कहलाते हैं और बर्ताव स्त्री की तरह करते हैं। नहीं-नहीं इस जीने से तो मर जाना ही अच्छा है। मेरे सगे भाई हंबीरराव भी शत्रु से मिले हैं। अपनी तकदीर को हम क्या कहें?"

सोयराबाई की यह अवस्था अण्णाजी से देखी न गयी। वे हाथ जोड़कर बोले, "रानी साहब यहाँ का अत्याचर अब सहा नहीं जाता। यहाँ शिवाजी महाराज की दुर्दशा हो जाये और वहाँ निरंकुश अविवेकी राजा अपना हुक्म चलाकर राज्य को नष्ट कर दे। वहाँ कन्नौज का एक नालायक मान्त्रिक 'कलाश' कुछ मन्त्र फूँके और मन्त्रों के बल पर सारे दरबार पर जादू-टोना करता रहे। यह अब सहा नहीं जाता।"

"आपको क्या करना है, पन्त?" उत्तर मालूम होने पर भी सोयराबाई ने प्रश्न किया।

"रानी साहिबा, अभी समय बीता नहीं है। अभी भी हम हारी हुई लड़ाई को फिर से जीत सकते हैं।" अण्णाजी ने कहा।

"किसकी सहायता से?"

"शहजादा अकबर नाम का एक बड़ा जादूगर आया है न, अपने राज्य में। वह किसी सामान्य जमींदार का बेटा नहीं है। वह पृथ्वीपति औरंगजेब का बेटा है। यह अच्छा अवसर है। सम्भाजी वहाँ दूर पन्हालगढ़ पर अपने कामकाज में अटके हैं। तब तक हम अपना काम निपटा लेंगे।" अण्णाजी ने स्पष्ट किया।

"भगवान अपने पीछे खड़े हैं। किन्तु पिछली बार की तरह इस बार नहीं होना चाहिए। इस कान की खबर उस कान को नहीं होनी चाहिए।"

"महारानी आप चिन्ता न करें। ग्रह अच्छे हैं।" अण्णाजी ने कहा, "देखिए न इस बालाजी का विचार भी अपने जैसा ही है। ये अपने पुत्र को भी साथ लेकर आये हैं।"

सोयराबाई ने एक बार पुन: अविश्वास की दृष्टि से देखा। उन्होंने पूछा—"क्यों चिटणीस जी, बहुत देर से आप कुछ बोल नहीं रहे हैं?"

जैसे किसी भेड़िये की दृष्टि खरगोशों के झुंड पर पड़ जाये और खरगोशों के प्राण उनकी आँखों में उतर आयें और वे कातर दृष्टि से देखने लगें वही स्थिति पिता-पुत्र की हुई। सभी की नजरें उन्हें चीरने लगीं। उनके गले सूख गये।

चिटणीस घबराकर बोले—

"आपकी आज्ञा सिर आँखों पर, रानी साहब।"

"देख लीजिए चिटणीस! आप और शम्भूराजा में बहुत मेल है। आपके बच्चे उन्हीं के महल में पड़े रहते हैं। वह येसू आपके खंडो और निलो को अपने पुत्र की तरह मानती हैं।"

"पर रानी साहब पहले का समय अब नहीं रहा।"

राहुजी सोमनाथ बीच में ही बोल पडे—

"वह कैसे?"

"महाड का वह हरामजादा दादजी रघुनाथ देशपांडे पन्हाला में जाकर बैठा है। उसे शम्भूराजा से चिटणीस पद चाहिए।"

"क्या करते हो? बालाजी को निकालकर?" सोयराबाई ने कहा।

"जी हाँ! दादजी कलश का मित्र है।" राहुजी ने कहा।

पहले तो पिता पुत्र लोगों की गहरी नजर से दब गये थे। उसमें अब एक और जानकारी मिल रही थी। इस प्रकार बहाना करके उन्होने अपना पक्ष रख दिया। परन्तु सोयराबाई को उन पर भरोसा नहीं था। बालाजी ने पुनः कहा, "पन्हाला मे महाराज को कैद करने का पत्र हमारे आवजी ने लिखा था। तभी से हम उनके कोप भाजन बन गये। आपकी सूचना मही हमारा यह चिटणीस पद कितने दिन टिकेगा? भगवान ही जाने।"

बालाजी चिटणीस आँखे फाडकर देखने लगे। उन्होंने लम्बी साँम लेकर कहा, "शम्भूराजा के साथ हमारी मैत्री हमारा भूतकाल है। पर आजकल राजा का बर्ताव कुछ ठीक नहीं है। उनकी अपेक्षा हमारे रायराम साहब ही क्या बुरे हैं?"

सोयराबाई और अण्णाजी दत्तों के साथ सभी लोग चिटणीस की ओर प्रसन्नता से देखा।

ग्यारह

पन्हालगढ़ की हवा बडी आनन्ददायक थी किन्तु उतनी ही भयानक भी। सवेरे सवेरे कवि कलश ने शम्भूराजा का अभिवादन किया। राजा ने मुड़कर कवि कलश की ओर देखा। उनकी मुद्रा बहुत डरावनी लग रही थी। उनके चेहरे पर स्पष्ट दिख रही थी कि कोई न कोई भयानक घटना अवश्य घटी है।

कवि कलश को अधिक प्रतीक्षा न करवाकर सम्भाजी ने सीधा प्रश्न किया—

"कविराज, यदि कोई सामान्य कर्मचारी या लेखक राजद्रोह का अपराध करे तो धर्मशास्त्र के अनुसार उसे क्या दंड मिलना चाहिए?"

"राजन, ऐसे गुनाह के लिए देहान्त प्रायश्चित के अतिरिक्त दूसरा कोई दंड धर्मशास्त्र में नहीं है।"

"और यदि यह अपराध किसी प्रधान या मन्त्री ने किया हो तो?" राजा ने कविराज की ओर घूरते हुए देखा।

शम्भूराजा के दूसरे प्रश्न से कविराज एकदम चौंक गये।

धर्मशास्त्र के जटिल नियमों को बताते हुए उन्होंने कहा—

"कोई गरीब सेवक थोड़े से लोभ के कारण दुर्भाग्यवश ऐसे अपराध में फँस सकता है। राजा के विवेक के कारण ऐसा व्यक्ति दया का पात्र भी हो सकता है। किन्तु शत्रु के साथ मैत्री करने वाला व्यक्ति बहुत घातक होता है। शत्रु से हाथ मिलाने वाला व्यक्ति प्रधानमन्त्री या उनके स्तर का अधिकारी हो तो यह भयानक दायित्वहीनता होती है। ऐसे व्यक्ति को यदि राजा ने कठोर से कठोर दंड न दिया तो राजा और खेत में खड़े किए गये बिजूका में कोई अन्तर ही नहीं रहेगा।"

अपने द्वारा दिये गये उत्तर से कविराज स्वयं चौंक गये। किन्तु शम्भूराजा उनसे नाराज नहीं हुए। उन्हें झेंप आ रही थी। वे दुविधा में पड़ गये कि अगला प्रश्न पूछें या न पूछें? फिर भी उन्होंने पूछा—

"मान लीजिए बाल-बच्चों का विचार करके किसी प्रधान को इस प्रकार के अपराध के लिए एक बार क्षमा कर दिया, फिर भी उसी प्रधान ने इसी प्रकार के अपराध की पुनरावृत्ति की तो?"

"तो-? राजा यदि इस प्रकार रोज क्षमादान की मिठाई बाँटता रहेगा तो उस राजा को राज्य का कार्य भार छोड़कर पशुओं को सँभालना अधिक अच्छा होगा।"

राजा से बात करते-करते कविराज सावधान हुए। पीछे शीशे के खम्भे के समीप एक ऊँचे कद का राजपूत खड़ा था। उसकी छँटी हुई दाढ़ी और महीन जालीदार कुर्ता-उसके व्यक्तित्व को अलग गरिमा प्रदान कर रहे थे। कविराज से उसका परिचय कराते हुए शम्भूराजा ने कहा—

"यह गौरव सिंह हैं।"

"कहाँ से आये?"

"पाली के जंगल से। शहजादा अकबर और दुर्गादास राठौड़ ने विशेष रूप से इन्हें यहाँ भेजा है।"

कविकलश आगे के आदेश की प्रतीक्षा में खड़े रहे। उसी समय शम्भूराजा ने ग्लानिग्रस्त स्वर में कहा—

"कविराज, बहुत-बहुत विपरीत घट चुका है। एक बार नहीं अनेक बार ऐसा हो चुका है।"

"स्वामी के भोजन के साथ मछली में विष मिलाने की वह घटना?"

"हाँ कविराज। छोटे बच्चे सचमुच ईश्वर के स्वरूप होते हैं। उन्हें न स्वार्थ होता है न किसी चीज की इच्छा। विष डाले हुए उस मछली के टुकड़े का मैं जैसे मुँह के पास ले गया वैसे ही रसोईघर में एक छोटी-सी बच्ची बड़े जोर से चीखी। उस पर किसी का गहरा दबाव था। उसने स्पष्ट रूप से कुछ कहा नहीं। किन्तु उसकी घबराहट और हड़बड़ी से मुझे जो समझना था मैं समझ गया। मैंने मछली के टुकड़े कुत्ते के सामने फेंक दिये। कुछ ही क्षणों में वह बेचारा कुत्ता तड़पते हुए मर गया।"

"मेरे विचार से विष का षड्यन्त्र रचने वाले सामान्य सैनिक ही रहे होंगे?" कविराज ने कहा।

"सामान्य आदमी का लोभ होता कितना है, कविराज? राजा की मृत्यु में उन्हें क्या लेना देना?" शम्भूराजा ने मुस्कराते हुए कहा।

"मतलब यह राज्य के अधिकारियों का ही षड्यन्त्र था?"

"बिलकुल, यह घटना यहाँ पन्हाला पर घटी किन्तु इसके सूत्रधार रायगढ के ही थे। कविराज इस सारी घटना का स्मरण करके मेरा मन एक अन्य कारण से सन्तप्त होता है। हमने मनुष्य जाति की बेईमानी को सिद्ध करने के लिए अपने वफादार कुत्ते की जान ले ली, कविराज।"

शम्भूराजा ने अकबर द्वारा भेजा गया पत्र कविराज को दिया। कविराज की आँखें उस पत्र के अक्षरों पर घूमने लगीं। कविराज ने पास रखी सुराही से पानी पिया। पत्र का विषय ही पसीना छुड़ाने वाला था। उस पर महारानी सोयराबाई, हिरोजी फर्जन्द, बालाजी, आवजी चिटणीस और अण्णाजी दत्तो के हस्ताक्षर थे।

कवि कलश बार बार पत्र को आँख फाड़ फाडकर देख रहे थे।

बादशाह ए हिन्दुस्तान अकबर साहेब।

आपकी कीर्ति बहुत सुनी है। उससे हम कृतार्थ हो गये हैं। हमारे हिरोजी फर्जन्द बाबा से पीड़से में आपकी भेंट हो चुकी है। उस समय मशारनिल्हे ने आपसे हमारी बात का संकेत किया था। किसी समय हम शिवाजी महाराज के वफादार सेवक थे। आज हम चींटी जैसी जिन्दगी जी रहे हैं। सूरज की गोद में जिस तरह शनिश्चर उसी तरह शिवाजी की गोद में संभाजी। इस उद्दंड, तामसी, बदमिजाज व्यक्ति ने हमारे जैसे एकनिष्ठ सेवकों के प्राण संकट में डाल दिये हैं। हमारे अनुभवहीन राजा की छाया में कन्नौज का वह पापी कलश यहाँ रहता है। उस शाक्त मूर्ख मान्त्रिक ने हम सभी को नरक के द्वार पर ढकेल दिया है। यदि आप मन

से चाहेंगे तो इन दोनों को अवश्य नष्ट कर देंगे।

इस समय तो आप इस दुष्ट राजा को जीवित पकड़ें या उसकी हत्या करें, पर हमें मुक्ति दिलाएँ। उसके बदले में हम अपना आधा राज्य आपके कदमों में सौंपने को तैयार हैं। अन्त में हम यही चाहते हैं कि बालक राजाराम, महारानी सोयराबाई और हम कर्मचारियों को अपनी जगह तथा गरीब ब्राह्मणों एवं नेक मराठों को अपनी पूर्व सम्पदा के साथ उनका वतन वापस मिल जाये। हे दिल्लीपति! कुछ भी करके हमारे इस संकटकाल में दौड़कर आइए। सम्भाजी की कैद से हमें बचाइए। बाकी देन-लेन की बात बाद में मिलने पर निश्चित करेंगे।

कवि कलश ने एक साँस में उस पत्र को दो बार पढ़ लिया और आगे के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। राजा ने कहा—

''उस शहजादे को सुबुद्धि आयी तभी तो यह गुप्त पत्र हमारे पास तक आ सका।''

''ये षड्यन्त्रकारी हैं कहाँ? कहीं भाग तो नहीं गये?'' कविराज ने चिन्ता प्रकट की।

''नहीं, नहीं, शहजादे ने उनसे मीठी मीठी बातें करके उन्हें सुधागढ़ के महल में रोक रखा है।''

''और सोयराबाई कहाँ है? महारानी?''

''वे रायगढ़ पर ही रुकी हैं। यदि यह योजना असफल हो गयी तो अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए कहेंगी इसमें उनका कोई हाथ नहीं है।''

शम्भूराजा के सिर में पीड़ा उठ गयी थी। राज्य में ऐसी कोई घटना नहीं घटी थी कि कर्मचारी इस प्रकार प्राण के भूखे हो जाएँ, इतनी भयंकर योजना बनाएँ। पिछले वर्ष सम्भाजी ने राज्य का कार्यभार बहुत अच्छी तरह सँभाला था। कर्मचारियों के अपराधों को क्षमा करके उन्हें उनके पद वापस दे दिये थे। क्रोध से अपनी मुट्ठी बगल के खम्भे पर मारते हुए शम्भूराजा ने कहा—

''कविराज देखिए! आँखें फाड़कर देखिए। हस्ताक्षर पहचाना? बताइए! इस पत्र पर किसके हस्ताक्षर हैं?''

''चिटणीस का हस्ताक्षर है।'' कविराज का हाथ काँप गया।

''देखा कविराज यह योजना कितनी बड़ी है? चिटणीस जैसा बुद्धिमान और हमारा परमप्रिय व्यक्ति भी इस भयंकर योजना में सम्मिलित है। इसका क्या मतलब? यह हवा का झोंका नहीं तूफान है। इसे समय पर नियन्त्रित नहीं किया गया तो हम स्वयं पत्तों की तरह उड़ जाएँगे, कविराज!''

''अब पन्हालगढ़ पर अधिक समय रुकना व्यर्थ है। उसी रात को वहाँ से निकलना निश्चित किया गया। लम्बी दौड़ लगाकर संभाजी और कवि कलश

सुधागढ़ की दूसरी ओर पहुँचे। दो दिन की यात्रा करके उनके घोड़े घोडसे के क्षेत्र में पहुँच गये। वह भाद्रपद पूर्णिमा से पहले का दिन था। आसमान में तारे जगमगा रहे थे। हल्की हवा में सागौन पत्तों से संगीत मुखर हो रहा था। शम्भूराजा की दृष्टि सुधागढ़ की ओर गयी। वहीं पर राजद्रोहियों को रोका गया था, ऐसा उन्हें बताया गया था।

घोडसा में अन्दर की ओर एक बड़े घर में शहजादा अकबर ठहरा हुआ था। शम्भूराजा घोड़े पर से कूद गये। उसी समय एक चिराग की रोशनी के साथ शहजादा और दुर्गादास राठौड़ शम्भूराजा के सामने आ गये। दोनों राजा से गले मिले। उनका हाथ पकड़कर राजा ने भावुक होकर कहा, "शहजादे और दुर्गादासजी आपके उपकार मैं कम से-कम इस जन्म में तो नहीं भूलूँगा।"

"सम्भाजी महाराज आपके पिता का—शिवाजी महाराज का यह राज्य वस्तुतः सभी धर्मावलम्बियों के लिए अपना देव मन्दिर है। इसलिए यह राजस्थानी दुर्गादाम एक मुसलमान शहजादे को लेकर आश्रय के लिए आया है।" दुर्गादाम ने कहा।

"परन्तु अपनी भेंट का यह समय कितना दुर्भाग्यपूर्ण है?" लम्बी साँस लेकर सम्भाजी ने कहा, "दुर्गादास, राजस्थान और दिल्ली मे कितनी बड़ी आशा लेकर आप यहाँ मराठों के आश्रय में आये हैं। किन्तु उसी ममय हमारे राज्य के अच्छे अष्ट प्रधान अपने राजा से गद्दारी करके आपके सामने सहायता के लिए घुटने टेक रहे हैं। कितनी शर्म की बात है?"

उसी जंगल में दो-तीन दरियाँ बिछाकर बैठक तैयार की गयी। दो दिनों की यात्रा से शम्भूराजा बहुत थक गये थे। सैनिकों ने उनके हाथ में नारियल का पानी दिया। राजा का ध्यान कहीं और था। वे बार बार सिर उठाकर सुधागढ़ की ओर देख रहे थे। अब चन्द्रमा आसमान के बीचोंबीच आ गया था। शम्भूराजा की बेचैनी देखकर शहजादा अकबर ने कहा, "महाराज आप चिन्ता न करें। हमने आपके गद्दार कर्मचारियों को ऊपर गढ़ पर इतनी अच्छी तरह रखा है कि वे जान ही नहीं पाएँगे कि तीर कहाँ है और सिर कहाँ?"

परन्तु राजा फिर भी चिन्तित थे। उन्होंने उन दोनों से धीमी आवाज में कहा, "सुबह होने की प्रतीक्षा न करो। आधी रात को ही किसी को गढ़ पर भेज दीजिए। उनसे मीठी बातें करके सवेरा होने से पहले ही यहाँ नीचे ले आइए।"

"आपकी जैसी आज्ञा, महाराज।" शहजादे ने सिर हिलाया।

आधी रात को किले पर भेजे गये सिपाही नीचे उतर रहे थे। उनके हाथ की मशालें धुआँ उड़ा रही थीं। उस दल के साथ राजा ने जानबूझकर अपने पचास सैनिक भेजे थे। सैनिक नीचे उतरते हुए जोर जोर से चिल्लाने लगे—"महाराज,

महाराज धोखा हो गया।" इन शब्दों को सुनते ही शम्भूराजा और कवि कलश तुरन्त उठकर खड़े हो गये। उनकी आँखों की नींद जाने कहाँ उड़ गयी। यह सब सुनकर अकबर और दुर्गादास भी डर गये। शम्भूराजा क्रुद्ध होकर उनकी ओर देखने लगे। उनकी आँखों से आग की लपटें निकल रही थीं। सभी लोग एक साथ बताने लगे—

"महाराज! धोखा हुआ। किले की दूसरी ओर भोरप्पा नाले से नीचे उतरने के लिए जंगल की ओर जाने का एक रास्ता है। हमारे वहाँ पहुँचने के पहले गद्दारों ने वहाँ भाग जाने का उपाय किया होगा।"

"किन्तु हमारे यहाँ आने की उन्हें खबर दी किसने?"

"महाराज बाहर इतनी चटक चाँदनी छिटकी थी।"

"लेकिन हम तो जंगल से होकर आये थे।"

"नहीं महाराज, यहाँ पहुँचने से पहले बीच में एक कोस का खुला मैदान है न? वहाँ से हजार डेढ घोड़े आते हुए किसी को दिखाई नहीं पड़ेंगे क्या?"

"बाबा तुम्हारी बात सच है।" सम्भाजी निराश स्वर में बोले, "अपने अण्णाजी सियार की नजर रखते हैं। बुर्ज पर से उसी बूढ़े ने आते हुए सकट को देखा होगा।"

बारह

हताश होकर शम्भूराजा अपनी जगह पर बैठ गये। उन्होंने बहुत देर तक आँखें बन्द किये ईश्वर का स्मरण किया। आगे के कार्यक्रम के लिए वे कोई आदेश ही नहीं दे रहे थे। कुछ देर के बाद शम्भूराजा ने कहा—

"चलिए जो हुआ सो हुआ। वे गद्दार भागकर जाएँगे कहाँ? अण्णाजी पन्त तो पालकी के बिना चल भी नहीं सकते। बालाजी इस बुढ़ापे में घोड़े पर ठीक से बैठ नहीं सकते। केवल फर्जन्द काका ही इस उम्र में भी दौड़ सकते हैं। किन्तु षड्यन्त्रकारियों और दगाबाजों का समूह हमेशा साथ साथ रहता है। एक यदि आगे-पीछे हो गया तो दूसरों को फँसाएगा। इसलिए वे किसी को अधिक आगे पीछे नहीं होने देते। षड्यन्त्रकारियों की गति अपने आप धीमी हो जाती है।

सामने सागौन के तने की तरह ऊँचे और सशक्त दिखाई पड़ने वाले अपने साथियों की ओर शम्भूराजा ने देखा। उन्होंने कहा, "जोत्याजी, रूपाजी, चलिए घोड़े दौड़ाइए। दूसरी ओर की घाटी में ही कहीं होंगे वे गद्दार। भोजन के समय

तक सारा जंगल छान मारो।"

"उन राजद्रोहियों को पेड़ों से बाँध दो और तुरन्त दूत के द्वारा यहाँ समाचार भेजो। अपने बुजुर्ग और जिम्मेदार प्रधानों द्वारा इस प्रकार का धोखा किसी भी राजा के लिए सह्य नहीं होगा। शम्भूराज ने अष्ट प्रधानों को एक बार माफ कर दिया था किन्तु उन्होंने दुबारा दगाबाजी का षड्यन्त्र किया था। शम्भूराजा को इस व्यवहार से गहरा धक्का लगा था। दुर्गादास और शहजादा अकबर जेसे लोग इतनी दूर से यहाँ आये थे। किन्तु उनके साथ बात करने की स्थिति शम्भूराजा की नही थी। उन्होने दुर्गादास से स्पष्ट शब्दो मे कहा दिया—"हम पन्द्रह दिनो के भीतर आराम से मिलेंगे, आज नहीं।"

तेरह

शम्भूराजा ने किसी तरह सवेरे स्नान किया। पूजा की। नाश्ते का समय होने के पहले ही रूपाजी और मानाजी के घोडे वापस आ गये। उन्होने महाराज का अभिवादन किया। उनके प्रसन्न चेहरे को देखकर सम्भाजी ने सब कुछ समझ लिया। उन्होने पूछा, "कहाँ हैं वे सब?"

"पहाड़ के पीछे की ओर। औढ के पास पकडा उन गद्दारो को। वही पर अपनी मराठी सेना की एक टुकडी है। उन्ही की देख रेख मे उन्हे सौपा है। आगे के लिए आदेश करें, महाराज।"

शम्भूराजा ने आसपास एकत्र हुए अपने सहयोगियो की ओर देखा। अपनी सेना के बुजुर्गो को एकत्र अलग करके बगल मे सघन छाया वाले पीपल वृक्ष के नीचे दरबार लगाया। पिता की उम्र वाले बुजुर्गो को उन्होने हाथ जोडकर प्रणाम किया। उस समय अनेक बुजुर्गो ने लज्जा से सिर नीचे कर लिया।

शम्भूराजा ने उद्विग्न स्वर मे कहा, "एक पुराना कहावत है कि यदि राजा उदार हुआ तो हाथ पर कद्दू रख देता है। लेकिन भाइयो, इन अष्ट प्रधानो ने राजगद्दी से हमारा हक छीनकर मुझे कैद करने का हुक्म दिया था। उसके बाद भी मैंने उनके हाथों पर कद्दू नहीं रखा, उल्टे इन सभी राजद्रोहियो को मैने एक बार पुनः अष्ट प्रधानों के पद पर ससम्मान बिठाया। उनके सम्मान की रक्षा की। बताइएऽऽ, बताइए। क्या पिछले एक वर्ष मे मेरे हाथ से कोई ऐसा कार्य हुआ, जिससे आपके शिवाजी महाराज के यश को कलंक लगे। उल्टे इन्हा महानुभावो ने

मेरे भोजन में विष मिलाने का जघन्य अपराध किया। वहाँ पर हमेशा राजनिष्ठा की झूठी कसमें खाते हैं और यहाँ शहजादे के सामने विद्रोह का झंडा खडा करते हैं। इन बुजुर्गों की क्रूरता से हम थक गये हैं। हमारी बुद्धि कुंठित हो गयी है। अब राजा को क्या करना चाहिए। इसका निर्णय अब प्रजा को करना है।''

एक हट्टा कट्टा मूँछो वाला साठ साल का बुजुर्ग खडा होकर बोला— ''महाराज बहुत हो गया यह सब, अब आप राजा की तरह कठोर निर्णय लीजिए।''

''उन गद्दारों का गला घोंट दीजिए।'' पाँच छ: जनों ने एक साथ कहा, ''महाराज, आप भूल गये क्या कि बडे महाराज राजद्रोही गद्दारों को किस तरह की सजा देते थे?'' एक दूसरे व्यक्ति ने कहा। ''जावली के चन्द्रराव मोरे की तो दुर्दशा की ही साथ ही उसके दो जवान बेटों को जावली से पुणे तक खींचकर ले गये और वहाँ भरे बाजार में उनके गले काटकर गद्दारी का गला घोंटा था।'' आगे क्या करना है? यह सर्वसम्मति से निश्चित किया गया। इस पर शम्भूराजा ने कहा—

''इतिहास रचने वाले फर्जन्द काका को भी मैंने एक बार क्षमा कर दिया था। मैंने सोचा कि हिरोजी बाबा पिताजी के खजाने के कौस्तुभ मणि हैं। उन्हें मैंने फिर से समुचित सम्मान दिया। बादशाह औरंगजेब के शहजादे का स्वागत करने के लिए लाखों मराठियों को छोडकर मैंने उन्हें अपना वकील चुना। उन सभी बातों को भूलकर उन्होंने ही हमारे पैर में कुल्हाड़ी मारी। अण्णाजी दत्तो के सम्बन्ध में मैं क्या बोलूँ? हमारे रास्ते पर विष बोने के लिए ही जैसे प्रकृति ने उनकी नियुक्ति की है। इन सबों में मुझे केवल बालाजी चिटणीस के लिए बुरा लगता है। कौन जाने? उनका ईमानदार रक्त इस षड्यन्त्र में सम्मिलित न हो। मेरा मन तो बार-बार मुझसे यही कहता है।''

''यह भी कोई बात हुई, महाराज? इस पत्र पर बालाजी का हस्ताक्षर स्पष्ट है।'' जोत्याजी ने क्रुद्ध होकर कहा।

''और यदि वे इसमें सम्मिलित न होते तो रायगढ़ पर अपना चिटणीस का कार्यभार छोड़कर यहाँ क्यों आते?

''अक्षर उनके हैं। वे स्वयं अन्य गद्दारों के साथ यहाँ उपस्थित हैं। अब और किस प्रमाण की प्रतीक्षा करनी है?'' सभी लोग बोलने लगे।

तत्काल निर्णय लेना आवश्यक था। शम्भूराजा ने कवि कलश से कहा, ''कविराज आप मुझसे बार बार कहते हैं कि मुझे राजधर्म का पालन करना चाहिए। चलिए हमारे हुक्म की तत्काल तामील कीजिए।''

''मतलब '

"औढ़ में जाइए और वहाँ जाकर हिरोजी, अण्णाजी दत्तो, उनके साथ आये सोमाजी, आवजी चिटणीस इन सभी गद्दारों को हाथी के पैर मे बाँधकर उन्हें समाप्त कीजिए। केवल बालाजी की कोई हानि नहीं होनी चाहिए। उनके हाथ पैर में बेड़ियाँ डालकर तुरन्त रायगढ़ के बन्दीखाने में ले आइए।"

इतना होने पर भी राजा के प्राण बालाजी मे क्यो अटके हैं? यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था। सभी लोग शंकित दृष्टि मे शम्भूराजा की ओर देखने लगे। शम्भूराजा ने कुछ कहा नहीं। बहुत देर तक वे कलश की ओर देखते रहे। उनकी ओर से कोई प्रतिसाद न मिलने पर उन्होंने ऊँची आवाज में कहा, "अपने राजा की आज्ञा का पालन नहीं करना है। आप भी ऐसा निश्चय करके आये हैं क्या?"

"नहीं, नहीं, महाराज, कृपया इस प्रकार अन्यथा न समझें।" कवि कलश ने बड़ी आत्मीयता से कहा, "राजन, हमें केवल इतना कहना है कि आज आप मुझे वहाँ न भेजें। आपकी आँखों के सामने उन गद्दारों का सर्वनाश हर तरह से उचित होगा।"

शम्भूराजा खिन्नता से हँसे। उन्होंने कहा, "कविराज साँझ सवेरे चौबीस घंटे आप मेरे साथ रहते हैं फिर भी आपने अपने मित्र को ठीक से पहचाना नहीं। क्या मैं ऐसा समझ लूँ? आज राजद्रोह के भयंकर अपराध में फँसे इन लोगो को मैंने बीस बीस वर्षो से मैंने अपने पिता के साथ घूमते हुए देखा है। मृत्यु के भय से थर थर काँपते उनके चेहरे देखकर मेरा मन विचलित हो गया और अपना निर्णय बदलने का विचार बन गया तो? नहीं कविराज नहीं। यदि ऐसा हुआ तो मेरा राजपद बच्चों का खेल बन जाएगा। इस प्रकार की गद्दार प्रवृत्ति को समाप्त करना है तो कठोर दंड के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।"

"लेकिन, लेकिन महाराज मैं बाहर का व्यक्ति हूँ। अपने में से किसी को भेज दें। किसी मराठा या किसी ब्राह्मण को।" कविराज ने हाथ जोड़कर कहा।

"कविराज अब समय बिलकुल न गँवाइए। मुझे चारों ओर गहरा अँधेरा ही दिखाई दे रहा है। इन लोगों ने राजद्रोह की हद कर दी है। ऐसे समय में स्वजनों की हत्या का कलंक इस सम्भाजी के माथे पर हमेशा के लिए लग गया तो भी कोई बात नहीं, किन्तु पिताजी और सन्तों के पुण्य से प्राप्त स्वराज्य डूब गया तो भविष्य को हम क्या उत्तर देंगे?"

कवि कलश बहुत घबरा गये। उन्होंने कहा, "क्षमा करें महाराज, मेरी आत्मा कह रही है कि आप कृपा करके मुझे इस कार्य के लिए न भेजें।"

"तो फिर दूसरे किसको भेजूँ? हंबीरराव यहाँ आसपास हैं नहीं। आप जैसा भरोसेमन्द आदमी कौन दूसरा है हमारे पास?"

"मेरे महाराज शम्भू! क्षमा करें। आप मेरी कठिनाइयाँ क्यों नहीं समझ रहे हैं?" बोलते-बोलते कवि कलश की आँखों में आँसू उमड़ आए। उन्होंने कहा, "राजन, इन कर्मचारियों ने पहले मुझे स्वराज्य के बुजुर्गों का विनाशक काल घोषित किया है। तन्त्रविद्या का एक महाराक्षस कहकर डुग्गी पीटी है और मुझे जन्म भर के लिए कलंकित कर दिया है। तिस पर यदि आपने पुन: इस कठोर कार्य के लिए भेजा तो यह कवि कलश जन्म-जन्मान्तर के लिए इस धरती पर एक खल पुरुष के रूप में बदनाम हो जाएगा।"

कलश के उद्‌गारों को सुनकर शम्भूराजा ने एक तीखी नजर उन पर डाली। कवि कलश को राजा की ऐसी दृष्टि का सामना करने का अवसर नहीं आया था। वे घबरा गये। शम्भूराजा ने पीड़ा भरे स्वर में कहा—

"कविराज, विष से भरा प्याला राजा से पहले उसके मित्र को पीना पड़ता है। एक सुप्रसिद्ध कथन को कभी भूलें नहीं कविराज—

उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धव:।।

'उत्सव व्यसन अकाल में व्यापक विप्लव काल
राजद्वार श्मशान में साथ रहे सो बन्धु।'

अब रुकने का समय बिलकुल नहीं था। कविराज शम्भूराजा के सामने सिर ऊँचा करके खड़े रहे। उन्होंने राजा को बड़े आदर से अभिवादन किया। वे वहाँ से बड़ी शीघ्रता से बाहर के लिए निकले। किन्तु दरवाजे पर पहुँचकर उनके पैर रुक गये। शम्भूराजा ने रूखे स्वर में पूछा, "क्यों रुक गये? अब क्या चाहिए आपको?"

"कल कोई प्रवाद नहीं होना चाहिए। कोई यह न कहे कि कवि कलश ही सारे अपराध का मूल कारण था या कलश ने राजाज्ञा का पालन मन से नहीं किया। ऐसा आरोप मुझे नहीं चाहिए। मेरे साथ एकाध साक्षी दें।"

"कौन चाहिए?"

"'वादजी रघुनाथ देशपांडे को हमारे साथ कर दें।"

"ठीक है। ले जाइए।"

बीच में ही कविराज दुबारा राजा की ओर मुड़े। वे शम्भूराजा के एकदम समीप जाकर इतने धीरे से बोले कि केवल वे ही सुन सकें। 'राजन राजद्रोह का अपराध भयंकर है ही। किन्तु अपराधी कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। महाराज ब्रह्महत्या के पाप का कलंक आपके माथे पर जन्म-जन्मान्तर लगा रहेगा।'

"कविराज, मैं राजधर्म का पालन कर रहा हूँ। आप केवल राजाज्ञा का पालन कीजिए। बस।" शम्भू ने दृढ़ स्वर में कहा।

चौदह

गढ़ के नीचे पहुँचते ही गढ़ का बुर्ज दिखने लगता हैं। उस ओर ध्यान से देखने पर लगता है कि कोई पत्थर के विराट पंखों वाला गरूड़ किले के ऊपर बैठा है। शम्भूराजा ने वहीं पर अपना घोड़ा रोक लिया। अपने सफेद घोड़े की गर्दन थपथपाते हुए वे नीचे उतरे। उनके साथ आ रहे कवि, कलश, जोत्याजी, रूपाजी और दादजी भी वहीं रुक गये। आज राजा का मन ठिकाने नहीं था। उनके सीने में काँटे जैसी चुभन हो रही थी। उन्होंने फिर से एक बार रायगढ़ के उस पाषाण पंछी पर दृष्टि डाली। वहाँ पर उदास काली छाया देखी। आसमान में बादल घिर आये थे।

शम्भूराजा ने अपने साथियों से कहा, "आप लोग आगे चलें। मुझे नहीं लगता कि मैं अगले और चार दिनों तक राजधानी में आ पाऊँगा?"

"लेकिन राजन आप ठहरेंगे कहाँ?" कलश ने पूछा।

"यहीं दूसरी ओर जीजामाता के महल में। मेरा मन कह रहा है कि आज राजमन्दिर में ही ठहर जाएँ।" शम्भूराजा ने कहा।

कवि कलश, दादजी और जोत्याजी चितदरवाजा पार करके किले पर चढ़ने लगे। शम्भूराजा का घोडा पाचाड़ की ओर मुड़ गया। अच्छी बातें शीघ्रता मे नहीं फैलतीं किन्तु बुरी बातों के हाथ-पैर जल्दी उग आते हैं। शम्भूराजा का घोड़ा रायगढ़ पहुँचे इससे पहले ही औढ़ा गाँव के पास घटी घटना का समाचार सभी को मिल चुका था। गढ़ के ऊपर और निचले हिस्से में सैनिक और अन्य लोग आनन्द से चिल्ला रहे थे—"षड्यन्त्रकारी मारे गये ऽऽ दुष्ट विद्रोही मर गये ऽऽ।" इस समाचार को सुनकर कुछ लोग शक्कर और मिठाइयाँ बाँट रहे थे। परन्तु उसके साथ-साथ एक भयंकर खबर भी आयी। इस खबर को सुनकर लोक अवाक् रह गये। उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"बालाजी चिटणीस हाथी के पैर के नीचे कुचलकर मारे गये।"

शम्भूराजा भयभीत हो गये थे। उनके मन में भान हो रहा था कि उनके यश में कलंक लग गया है। वे जब पाचाड़ के महल में पहुँचे तब षड्यन्त्रकारियों से जिन्दा बचकर आने के कारण सभी ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। किन्तु यह भी सब अनुभव कर रहे थे कि कहीं तो कोई चूक हो गयी है। महल के प्रवेश द्वार पर चार हाथी झूम रहे थे। शम्भूराजा के स्वागत के लिए उन्हें सजाया गया था। छोटे-बड़े शीशे के टुकड़े जड़ा हुआ हाथियों का झुल्ल चमक रहा था किन्तु शम्भूराजा की

दृष्टि हाथियों के पैरों पर घूम रही थी। उन्हें लग रहा था कि हाथियों के पैर खून से लथपथ हैं।

पाचाड़ की ओर राजा के स्वागत में नौबत बज रही थी। उसकी अनुगूँज से गढ़ के सप्त महल जाग उठे थे। दोपहर के पहले ही येसूबाई की शाही पालकी गढ़ से नीचे उतरी। उनके साथ दूसरी पालकी में कविराज की पत्नी तेजरसबाई थीं। सम्भवत: किले के पास ही कविराज येसूबाई से मिले होंगे। कविराज के साथ अचानक येसूबाई को देखकर शम्भूराजा आश्चर्यचकित हुए। उनकी आँखों की भाषा समझकर येसूबाई ने कहा, "कविराज को मैं ही साथ ले आयी हूँ। कविराज के सम्बन्ध में आज गढ़ पर बड़ा प्रवाद मचा है।"

"क्यों?"

"कविराज द्वारा आपने वरिष्ठ अधिकारियों को हाथी के पैर के नीचे कुचलवा दिया, लोगों को लग रहा है कि कविराज कलश ही असली अपराधी हैं।"

"लेकिन असली गुनहगार तो मैं हूँ...।" शम्भूराजा ने कहा।

"लोगों को अन्दर की बातों का क्या पता? इसलिए उनके पूरे परिवार को लेकर मैं यहाँ आयी हूँ।"

पचाड़ के महल की वह रात बड़ी सूनी सूनी लग रही थी। षड्यन्त्रकारियों की मृत्यु के समाचार से येसूबाई बहुत प्रसन्न हुई थीं। किन्तु बालाजी पन्त की मृत्यु के समाचार से उनका मन खिन्न हो गया। वे कुछ भयभीत भी हुईं। सप्त महल के पास अष्ट प्रधानों के महल थे। वहाँ बालाजी पन्त की वृद्धा पत्नी लक्ष्मीबाई का करुण क्रन्दन सुनाई पड़ रहा था। उसे सुनकर येसूबाई का गढ़ पर रहना कठिन हो गया है। इन्हीं खबरों से बनते विपरीत वातावरण के कारण ही येसूबाई गढ़ से नीचे उतर आयीं।

बालाजी चिटणीस की आखिरी भेंट का प्रसंग येसूबाई को याद आ रहा था। सवेरे सवेरे वे किसी काम से परली की ओर जा रहे थे। जाते-जाते अपनी महारानी साहिबा से मिलने आये थे। उनके साथ हिरोजी और सोमाजी भी थे। वे लोग चिटणीस बिल्कुल पास ही खड़े थे। बालाजी की मुद्रा अत्यन्त त्रस्त लग रही थी। वे कुछ कहना चाहते थे किन्तु किसी गम्भीर दबाव के कारण वे विवश हो रहे थे। येसूबाई ने बालाजी से पूछा था—"इतनी अफरातफरी में सवेरे-सवेरे सुधागढ़ और परली की ओर क्यों जा रहे हो? राजा तो पन्हालगढ़ पर हैं?"

"राजा का ही काम है रानी साहिबा।"

"कौन सा?"

"राजा ने ही तो चिटणीस को शहजादे से मिलने के लिए कहा है। राजा ने उनसे बातचीत करने के लिए कहा है।" हिरोजी बीच में ही बोलने लगे।

"ठीक है फिर।"

बीच का चौक पार करके चिटणीस थोड़ा आगे आ गये। फिर मुड़कर तुलसी वृन्दावन के पास खडे हो गये। उन्होंने अपनी पगड़ी उतारकर सीने से लगा लिया। उन्होंने कहा—

"रानी साहिबा हम थक गये हैं। अन्तिम समय समीप आ रहा है। क्या पता कब क्या हो जाय? अगर कुछ हो गया तो हमारे खंडोबा और निलोबा का ध्यान रखिएगा।"

"आवजी कहां नजर नहीं आ रहे हैं?" येसूबाई ने पूछा।

"आवजी भी हमारे साथ जाने वाले हैं।" हिरोजी बीच मे ही बोल पड़े।

"चिटणीस अब चलना है न?" सोमाजी पन्त ने कहा।

अपनी आँखों में आँसू छुपाये बालाजी पन्त हिरोजी और सोमाजी के साथ निकलकर चले गये थे। यही उनका आखिरी दर्शन था।

येसूबाई और शम्भुराजा को आज अपना महल श्मशान की तरह भयानक लग रहा था। बालाजी पन्त चिटणीस साधारण आदमी नहीं थे। उन्हें अपना भाई मानकर शिवाजी महाराज राजापुर से रायगढ ले आये थ। पन्त अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के थे। स्वराज्य के प्रति उनकी निष्ठा अटूट थी। शिवाजी महाराज के लिए सिसोदिया वंशावली के सारे कागजात ढूँढ़ने के लिए वे स्वयं राजपूताना गये थे। उनका हस्तलेख मोती जैसा सुन्दर है। जटिल से जटिल इबारत को वे याद कर लेते थे फिर अपने सुन्दर अक्षरों में लिखकर रख लेते थे। ऐसी उनकी आदत थी। वे बड़ी बड़ी सन्धियां की लम्बी लम्बी इबारते अपने मस्तिष्क में सुरक्षित रखते थे और उन्हें हू ब हू वैसे ही कागज पर उतार देते थे मानो किसी ने मुहर लगा दी हो।

महल मे हडे काले दिखाई पड़ रहे थे। शम्भूराजा को नींद नही आ रही थी। वे इधर उधर करवट बदलते हुए मछली की तरह छटपटा रहे थे। इसी बीच येसूबाई का स्वर उनके कानों में पड़ा--"महाराज, वे कोई सामान्य आदमी नहीं थे। मामाजी अपने समय के एक पहाड थे। जब लोगों को बड़े महाराज का आगरा प्रसंग स्मरण रहेगा, वे हिरोजी मामा को कैसे भूल सकते हैं?"

येसूबाई के ये शब्द शम्भूराजा के सीने में तीर की तरह चुभ गये। वे तुरन्त बिस्तर से उठ गये। उन्होंने येसूबाइ का हाथ पकड़कर अपने सीने पर रख लिया और कहा "राजद्रोह की पहली कुटिल योजना हमने सह ली थी न? उन सभी को क्षमा कर दिया था न? येसू जो बात बहुत बुरी लगती है वह यह कि इस पागल सम्भाजी ने इन बुजुर्गों से हमेशा इतना प्यार किया और वे हमेशा मेरा प्राण लेने पर उतारू रहे।

"किसी जमाने में अण्णाजी ने दक्षिण कोकण के सूबे को एक चट्टान बनकर सँभाला था।

किन्तु अण्णाजी ने अपनी बाद की सारी जिन्दगी मुझसे द्वेष करने में ही गुजारी। इन सभी को शिवाजी के पुत्र से बादशाह का शहजादा अधिक प्रिय लगा। अण्णाजी अपनी पुत्री हंसा का दुख कभी भूल नहीं पाये। पर उसके एकतरफा प्रेम में मेरा क्या अपराध? येसू आपको क्या बताऊँ? औढ़ा के समीप उस कड़ी धूप में पहुँचने पर कलश ने फिर से मेरे पास दूत भेजा था। उन्हें आशा थी कि सम्भवत: अपने निर्णय पर हम फिर विचार करें। उन्होंने पूछा था—"महाराज क्या हम आपके हुक्म की सचमुच तामील करें?" उस समय बुजुर्गों की हत्या का आदेश देते समय मुझे कितनी मानसिक यातना हुई थी? ये सारे बुजुर्ग थे किन्तु उनके इस प्रकार राजद्रोह करने पर उन्हें मृत्यु दंड देना हमारा राजधर्म था। हमने राजधर्म का ही पालन किया। आज हम आँसू बहा रहे हैं, उनके पूर्वकृत्यों के लिए किन्तु मैंने उन्हें हाथी से कुचलवाया उनके राजद्रोह के लिए।"

"क्षमा करें महाराज! मामाजी बार-बार याद आ रहे हैं। उन्होंने इन सारे लोगों को तैयार किया था। स्वराज्य को खड़ा करने में उन सभी का महत्त्वपूर्ण सहयोग था। उन्होंने इस कार्य में अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया था।"

"परन्तु तब किसी के मन में स्वार्थ का भाव नहीं जागा था। सत्ता के एक बार हाथ में आने के बाद, स्वार्थी विचार अपने आप चिपकने लगते हैं। लोग वही होते हैं, उनका शरीर वही होता है पर मन बदल जाते हैं।"

क्षणभर के लिए येसूबाई दुविधा में पड़ गयी कि पूछें या न पूछें? अन्तत: उन्होंने पूछा—

"लोग कहते हैं कि आपके क्रोधावेश का कलश ने नाजायज फायदा उठाया। उन्होंने क्रोध का रूपान्तरण पैशाचिक दंड में किया?"

"बिलकुल झूठ है यह। सजा देने का कार्य उनके बदले किसी और को दिया जाये ऐसी प्रार्थना करते हुए वे बच्चे की तरह रोये थे। अन्तत: अपने मालिक का आदेश उन्हें मानना पड़ा।"

"परन्तु चिटणिस के सम्बन्ध में थोड़े धैर्य से काम लिया होता तो?"

"क्या करें पक्के सबूत जो थे। शहजादे को लिखे गये षड्यन्त्रकारी पत्र में उनके हस्ताक्षर थे। मैंने तो कविराज को साफ साफ कहा था कि अन्य लोगों पर मेरा कोई भरोसा नहीं है, किन्तु बालाजी को कुछ मत कीजिएगा। उन्हें सिर्फ बेड़ियाँ डालकर कैद कीजिए।"

"फिर भी कविराज ने ऐसा किया?" येसूबाई ने विस्मय से कहा, "वैसा

नहीं। हमारे लोगों ने जब पहले आवजी को पकड़ा तो बालाजी पन्त अपने बच्चे को सीने से लगाकर जोर-जोर से चिल्लाने लगे—'पहले मुझ पर हाथी चढ़ाइए फिर मेरे बच्चे को हाथ लगाइए।' राजा के पास पत्र पहुँचा कि नहीं? ऐसा भी कुछ बड़बड़ा रहे थे। ऐसी स्थिति में दंड देने का काम रोककर कविराज और दादजी देशपांडे ने हमारे पास एक घुड़सवार भेजा। उस समय हमारी स्थिति बड़ी मोचनीय थी। उन बाप बेटों को छोड़ देते तो सभी को दंड से मुक्त करना पड़ता इसीलिए मैंने आदेश भेजा कि जो भी दोषी हैं उन सब को मृत्यु दंड दे दो। ऐसा मुझे विवशता में करना पड़ा।''

जैसे-तैसे करके वह काली रात बीती। प्रात होते ही सुदूर की यात्रा करके महल में एक हरकारा आया। वह यमदूत की तरह काला और भयावना था। शम्भूराजा ने उसके हाथ का लिफाफा खोला। उनकी दृष्टि मोती जैसे सुन्दर अक्षरों पर गयी। उन्हें गहरा धक्का लगा। उनका चेहरा काला पड़ गया। पश्चाताप, उद्वेग और भय से उनके भीतर आग लग गयी। 'येसू! येसू!' कहकर वे जोर-जोर से चिल्लाने लगे। येसूबाई डर गयीं। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में पूछा—

''क्यों, क्या हुआ, स्वामी?''

''यह देखिए?''

''यह तो चिटणीसजी का हस्तलेख है।''

राजा की मुखमुद्रा ऐसी हो गयी जैसे लाल रंग में कालिख मिल गया हो। उनकी आँखें डबडबा आयीं। उन्होंने चिल्लाकर कहा, ''येसूऽऽ यह पत्र हमें पन्हालगढ पर मिलता उसके पहले ही हम गद्दारों को दंड देने के लिए सुधागढ पाली के लिए दौड़ पड़े थे। यह चिटणीस का लिखा पत्र पन्हालगढ़ पर ही रह गया। यह पत्र मेरे पास क्यों नहीं पहुँचा? क्या मैं मचमुच इतना अभागा हूँ?''

''परन्तु महाराज हुआ क्या?''

''युवराज्ञी यह पत्र पढ़िए। आपके पैरों के नीचे की जमीन खिसक जाएगी।''

येसूबाई ने डरते हुए उस पत्र को पढ़ा—

''क्षत्रिय कुलावतंस श्री राजा शम्भू छत्रपति को प्रभुकुलोत्पन्न बालाजी आवजी चिटणीस का अभिवादन।

आप पन्हालगढ़ चले गये और आपके पीछे यहाँ अनेक षड्यन्त्र हुए। आपके दरबार के लोगों ने फिर से वही कारनामा आरम्भ कर दिया है। आपको गद्दी से उतारकर चिरंजीव राजाराम साहब को नामधारी राजा बनाने की उनकी योजना है।

पाली जाकर औरंगजेब के लड़के के साथ साँठ-गाँठ करेंगे। शहजादे की संगति शस्त्र-बल प्राप्त करके स्वामी को राजगद्दी से उतार देने की उनकी साजिश

है।

आपकी अनुपस्थिति में हमारा भी भाग्य फूट गया। हमें भी उनके साथ मिलना पड़ा। वे मुझे और मेरे पुत्र आवजी को जबरन शहजादे के पास ले जा रहे हैं। षड्यन्त्र का खत भी उन्होंने बलपूर्वक मेरे हाथ से लिखवा लिया। फिर भी रास्ते में अवसर निकालकर यह पत्र आपके पास पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। खंडे राय से हमारी प्रार्थना है कि यह पत्र आपके पास समय से पहुँच जाए। हम बाप-बेटे की स्थिति साँप के गले मे अटके मेंढक की हो गयी है। ईश्वरी लीला के सामने मनुष्य विवश है।

बड़े महाराज कैलासवासी हो गये। तब इन्हीं लोगों ने आपको पकड़ने का षड्यन्त्र रचा था। उस बार पत्र आवजी के हाथ से लिखवा लिया था। इस बार हमारे पीछे पड़कर और छुरी दिखाकर मुझसे लिखवा लिया। वस्तुत: हमें शब्दों की सूली पर चढ़ा दिया।

वह पत्र लिखते समय बड़ी यातानाएँ हुई। परन्तु स्वामी आप सरस्वती पुत्र हैं, ज्ञान कोविद हैं। जितने क्रोधी हैं, उतने ही शान्त और उदार। स्वामी के भीतर तो गंगा बहती है। हमारे भाग्य में क्या लिखा है इसे कौन जाने? जो होगा सो होगा। परन्तु शम्भु महाराज आपको और महारानी येसूबाई को सुयश मिले, सदा कल्याण हो।

श्रीकृपा से जीवित रहे तो स्वामी की सेवा में पुन: तत्परता से हाजिर होंगे। अन्यथा ईश्वर पर सब कुछ अवलम्बित है। श्रम कम करें और अपनी तबीयत को सँभालें।''

बगल चन्दन के खंभे का सहारा लेते हुए शम्भूराजा पलग पर बैठ गये। उनकी दशा ऐसी हो गयी जैसे किसी व्यक्ति का मेरुदंड टूट गया हो। उन्हें पसीना छूट रहा था। नौकर ने शीतल पेय का पात्र पकड़ाया उसे 'गट-गट' गले के नीचे उतारते हुए शम्भूराजा ने व्यथित होकर कहा, "येसू, यह कितना बुरा हुआ?" शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद आज पहली बार शम्भूराजा छोटे बच्चे की तरह रो रहे थे। उनके कन्धे पर हाथ रखकर सहारा देते हुए येसूबाई ने सान्त्वना के स्वर में कहा, "स्वामी सँभालिए अपने आपको। चिटणीस के बच्चों खंडो बल्लाल और निलो बल्लाल को इसके बाद हम अपने पेट के बच्चे की तरह पालेंगे। उन्हें सेवा का अवसर देंगे। उन्हें पेड़ की तरह बड़ा करेंगे।"

परचक्र

एक

शम्भूराजा रायगढ़ पर पहुँचे। दिन भर उन्होंने स्वयं को दरबार के कार्य में व्यस्त रखा। वहाँ मन न लगने के कारण वे जगदीश्वर के मन्दिर में घोड़े पर न जाकर पैदल गये।

कुछ भी करने पर शम्भूराजा की आँखों के आगे से बालाजी की भरी आँखों वाली छवि हट नहीं रही थी। दो दिन पहले शम्भूराजा ने औढ़ा का प्रसंग कवि कलश से पुनः सुना था। वे असलियत को जानना चाहते थे। वहाँ का वह भयानक चित्र उनके मस्तिष्क में बहुत गहरे बैठ गया था। अपनी मृत्यु को सामने देखते हुए भी अण्णाजी भयभीत नहीं हुए थे। उल्टे सैनिकों के शस्त्रों की ओर सिर उठाकर निर्भीक भाव से देख रहे थे। जैसे वे आश्वस्त थे कि कभी न कभी तो दंड मिलना ही है।

बालाजी चिटणीस की कहानी बड़ी हृदय विदारक थी। उनके पत्र से सब कुछ स्पष्ट हो चुका था। शेष अपराधियों को मार देने का शम्भूराजा को कोई दुख नहीं था। परन्तु इस बात का उन्हें बड़ा कष्ट था कि इन सभी में राज्य के प्रति निष्ठावान, सहृदय और निष्पाप बालाजी चिटणीस भी मार दिये गये। शाम को शम्भूराजा अपने महल में लौटे। किन्तु उनके पैर चन्दनी दरवाजे के पास अपने आप रुक गये।

औढ़ा के मैदान में राजद्रोही अपराधी मारे गये किन्तु उन्हीं के बीच का एक व्यक्ति किले पर रह रहा है। वह भी हमारे सप्त महल में। इस बात का ध्यान आते ही शम्भूराजा क्रोध से तिलमिला उठे। वे बड़ी शीघ्रता से सोयराबाई के महल की ओर जाने लगे। जिस प्रकार अचानक दौड़ते हुए किसी घुड़सवार के बाजार में घुसने से बकरियों और मुर्गियों की भीड़ इधर-उधर भागती है उसी प्रकार शम्भूराजा को देखकर बच्चे, नौकर-चाकर इधर उधर भागने लगे। सोयराबाई के महल के दास

दासी भी आगे को भागने लगे। शम्भूराजा की उग्र मुद्रा को देखने का साहस किसी में भी नहीं था। सेवकों को एक उपाय सूझा। राजा के दरवाजे पर पहुँचने के पहले ही उन्होंने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया।

शम्भूराजा महल के दरवाजे पर पहुँचे। दरवाजे को बन्द देखकर उनकी मुट्ठियाँ बँध गयीं। वे ओठों और दाँतों को पीसते हुए बन्द दरवाजे को देखने लगे। शम्भूराजा एक आदमी की जगह जलती हुई भट्ठी बन गये थे। दरवाजे की ओर देखकर शम्भूराजा जोर से दहाड़े—"माताजी, दरवाजा बन्द कर लेने से पाप नहीं छुप सकता। मैंने जब पहली बार नजरबन्द किया था, तभी कह दिया था कि यहाँ आप दया की पात्र शरणार्थी की तरह नहीं माता के अधिकार से रहिए। परन्तु माताजी आपने तो हद ही कर दी। आपने तो राजमाता के स्थान पर एक कपटी, स्वार्थी और दुष्ट स्त्री का रूप धारण कर लिया। माताजीऽऽ अब छुपकर क्यों बैठी हो? दरवाजा खोलिएऽऽ.... ?।"

शम्भूराजा के शरीर से ज्वालाएँ फूट रही थीं। उनके रौद्र रूप के सामने जाने की हिम्मत किसी में भी नहीं थी। अपनी आँखों से जलते अंगारे फेंकते हुए शम्भूराजा ने कहा, "माताजी आप के काले कारनामे ऐसे हैं कि कैकेयी भी उनके आगे हारकर सिर झुका ले। राज्य का उत्तराधिकारी होने पर भी आप मेरी गिरफ्तारी का आदेश भेजती हैं? एक बार नहीं बार-बार मेरा प्राण लेने का प्रयत्न कर रही हैं, आप। अजी, कहाँ माताजी पुतलीबाई थीं जो शिवाजी महाराज के जूते अपने सीने से लगाकर अग्नि में कूद गयीं, सती हो गयीं, अमर हो गयीं और आप हैं कि शिवाजी महाराज का स्वराज्य अपने स्वार्थ के लिए उस औरंगजेब के लड़के की झोली में डालने निकली थीं। अरे आप हमारी माता हैं? आप तो सचमुच पूतना मौसी हैं!!...."

महल की दूसरी ओर लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। आगे बढ़ने की हिम्मत किसी में भी नहीं थी। उसी समय महारानी येसूबाई भीड़ से निकलकर सामने आ पहुँचीं। उन्होंने क्रोध से उबलते शम्भूराजा का हाथ पकड़ा और कठोर शब्दों में कहा, "स्वामी, आप राजा हैं, राजा की तरह व्यवहार कीजिए।"

शम्भूराजा ने येसूबाई का हाथ झटक दिया। अपना हाथ उठाकर वे गरज पड़े—"हमारी राजमाता डाइन की तरह व्यवहार करे? हमारे अष्ट प्रधान दुश्मन के सामने नमाज पढ़ें और हमारे गले पर छुरी रखें?"

"महाराज कृपा कीजिए। क्रोध पर काबू पाइए।"

"येसूबाई आप मेरे क्रोध का क्या लेकर बैठी हैं? यह अपने राजाराम की माता हैं इसलिए.... नहीं तो इन्हें कब का दीवार में चुनवाकर मार डाला होता।"

शम्भूराजा के भयंकर क्रोध के आगे येसूबाई हार गयीं। उनकी आँखें भर

आयीं। उन्होंने यों ही पीछे की ओर मुड़कर देखा। फिर से एक बार राजा का हाथ खींचकर उनका ध्यान दूसरी ओर घुमाना चाहा। वहाँ के नक्काशीदार खम्भे से चिपके दस वर्ष के अबोध राजाराम भयभीत दृष्टि से देख रहे थे। वह दृश्य देखते ही शम्भूराजा होश में आ गये। अपने बच्चे की ओर लपकते पंछी की तरह आगे बढ़कर राजाराम को सीने से लगा लिया। राजाराम को थपथपाकर, उनके आँसू पोंछकर वे बोले, "राजा! तुम्हारे आँसुओं में कितनी शक्ति है? तुम्हारे दो बूँद आँसुओं ने इस आग के समुद्र को निगल लिया।"

दो

सवेरे सवेरे कवि कलश मिलने आये थे। वे किसी दबाव में दिख रहे थे। उत्साही कविराज कुछ बोल नहीं रहे थे। येसूबाई ने ध्यान में आते ही उनसे पूछा, "कविराज इतने गम्भीर क्यों हो? क्या बात है?"

येसूबाई को दंडवत करते हुए कविराज ने विनम्रता से कहा, "रानी साहिबा! आज तक जितना सम्भव हुआ आपके राजा और स्वराज्य की सेवा मैंने की। अब हमें छुट्टी दें।"

"पर अब कहाँ जा रहे हो?"

"कन्नौज को।"

"वहाँ किसलिए? घर में कुछ धार्मिक अनुष्ठान है क्या?"

"हमेशा के लिए जाने को कह रहा हूँ, महारानी जी।"

"पागल हो गये हैं कविराज आप? शम्भूराजा एक बार अपनी छाया से भी अलग होकर जी सकते हैं, किन्तु आपके साथ के बिना नहीं।"

येसूबाई ने उन दोनों को अपने दीवानखाने में बिठा दिया। कविराज के प्रस्ताव पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। महारानी को ज्ञात था कि कविराज के मन को कौन सा दुख पीड़ित कर रहा था। औढ़ा के मैदान की उस घटना ने येसूबाई के हृदय को भी घायल कर दिया था। उन्होंने कहा, "सूखी घास के साथ गीली घास भी जल जाती है। चिटणीस का पत्र समय पर न पहुँच पाने के कारण यह गड़बड़ हो गयी। चिटणीस जैसा भला आदमी नाहक मारा गया। जो कुछ हुआ, बहुत बुरा हुआ। उस दिन से स्वामी आपसे भी अधिक बेचैन हैं। रात-बिरात अचानक उठ

जाते हैं और चिल्लाने लगते हैं।"

कवि कलश बड़ी नाराजी के साथ बताने लगे—"महारानी जी वह प्रसंग घटित न हो, इसके लिए मैंने भी बहुत प्रयास किया था। महाराज को भी कोई जानकारी नहीं थी। परन्तु दरबार के हमारे शत्रुओं ने हमें नष्ट करने का प्रयास बार-बार किया। सभी ने यही आरोप लगाया कि कवि कलश के कहने से ही राजा ने चिटणीस को मृत्यु दंड दिया। चिटणीस की हत्या के लिए हर तरह से मैं जिम्मेदार ठहराया गया। मैं ही जीवन भर के लिए बदनाम किया गया।"

आँखों में उमड़े आँसू को सँभालते हुए कवि कलश आगे बढ़े और येसूबाई का पैर पकड़कर बोले, "दया कीजिए महारानी जी। हमें जाने की आज्ञा दीजिए।"

"कविराज, आपके इस प्रकार अचानक चले जाने में राजा की ही हानि है। विरोधियों का क्या जाता है? कविराज, सच्चाई तो यह है कि हमें ही आपकी अत्यन्त आवश्यकता है। हम इस बात को हृदय से स्वीकार करते हैं। आप जानते हैं कि शम्भूराजा नाम के इस जलते तूफान को आँचल में बाँधकर जीवन चलाना कितना कठिन है?"

"परन्तु.... ?"

"अब जाने दीजिए। मन में आने वाले उल्टे-सीधे विचारों को निकाल दीजिए। कविराज, आप महाराज की काव्यशास्त्र विनोद की महफिल के एक रसिक मित्र हैं। कालिदास का कोई नाटक हो, गीत-गोविन्द की कोई पंक्ति हो या सूफी पन्थ की कोई चर्चा हो, हमारे स्वामी कितने ज्ञानपिपासु हैं? यह हम अच्छी तरह जानते हैं। आपके साहचर्य में ही उन्होंने संस्कृत में प्रवीणता प्राप्त की। 'बुधभूषणम्' जैसा काव्य ग्रन्थ लिखा। 'नख शिख' और 'नायिकाभेद' जैसे महाकाव्य ब्रजभाषा में लिखे। यह सब कुछ आपकी संगति से ही सम्भव हुआ। आज युद्ध भूमि में आक्रमण करने के लिए उनके साथ हंबीरराव, म्हालोजी घोड़पड़े, रूपाजी भोसले जैसे अनेक लोग हैं। परन्तु ज्ञान और सरस्वती के प्रांगण में मुक्त विहार करते समय उन्हें केवल आपकी आवश्यकता होती है।"

येसूबाई के कथन से कविराज निरुत्तर हो गये। वे व्यथित स्वर में बोले, "महारानी जी, यहाँ मुझे बहुत कष्ट है। यहाँ के लोग मुझ पर जादू-टोना करने का आरोप लगाते हैं। किन्तु रोज सवेरे हमारे महल के आसपास सुई चुभोये नींबुओं और काली गुड़ियों का ढेर पड़ा रहता है। यहाँ के भूतों का मुझे बहुत डर लगा रहता है।" येसूबाई के सामने हाथ जोड़कर कवि कलश ने दीन स्वर में पूछा, "महारानी जी, अब आप ही न्याय करें। विरोधियों के कथनानुसार क्या मैं जारण मारण क्रिया करने वाला कोई भोंदू मान्त्रिक हूँ? क्या आपको ऐसा लगता है?"

येसूबाई ने मन्द मुस्कान के साथ कहा, "जैसा वे समझते हैं वैसा कोई राजा

को बिगाड़ने वाला भयंकर मान्त्रिक हमारे दरबार में होता तो क्या हम चुप बैठे रहते? देवी शिकोई की सौगन्ध, देवी के चरणों में जैसे नारियल फोड़ा जाता है, वैसे हम स्वयं उसके सिर को चूर-चूर कर देते।''

कवि कलश सन्तुष्ट हो गये। उन्होंने येसूबाई की ओर देखा। येसूबाई की आँखों में उन्हें एक विलक्षण चमक दिखाई पड़ी। येसूबाई ने कहा—

''दस्तूरखुद्द शिवाजी महाराज ने कविराज आपको बारह-पन्द्रह वर्षो तक बहुत करीब से देखा। जैसा कि यह दुष्ट मंडली कहती है, उसके अनुसार उनका युवराज किसी भोंदू मान्त्रिक या कब्जी बाबा के प्रभाव में चला गया होता तो? .. तो कविराज महाराज ने ऐसे मान्त्रिक को कब का हाथी के पैर के नीचे कुचलवाकर मार न दिया होता?''

येसूबाई का धारदार वक्तव्य सुनकर कवि कलश की आँखें भर आयीं। वे भाव विह्वल होकर बोले, ''महारानी जी, आपको सब कुछ पता है। यह हमारा सौभाग्य है।''

''कविराज, मैं उसी अधिकार से आपको आदेश देती हूँ। यदि घोड़ों पर सामान लाद दिया हो तो उन्हें उतारकर रख दीजिए और सीधे शम्भूराजा के शिविर में चले जाइए। वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। आज एक समय में घर और बाहर के राहु-केतु, राजा को हैरान कर रहे हैं। मुगलों का मांडलिक बन जाने के बाद जंजीरे के सिद्दी समझते हैं कि स्वर्ग अब केवल दो अंगुल दूर रह गया है। गोवा के पुर्तगाली हैं, डच हैं, अँग्रेज हैं। हमारा जन्म-जन्मान्तर का शत्रु औरंगजेब अपनी बड़ी तैयारी के साथ कभी भी महाराष्ट्र पर आक्रमण कर सकता है। संकट की काली घटाओं से आसमान भर गया है। यहाँ राज्य का कार्यकलाप भी अभी तक व्यवस्थित नहीं हुआ है। ऐसे विकट समय में कविराज, महाराज को आवश्यकता है तो आप जैसे उत्साही, दिलेर, अनुभवी एवं विश्वसनीय मित्र की।''

तीन

सितम्बर 1681। इसी दिन आलमगीर औरंगजेब अजमेर से निकले थे। उनकी पाँच लाख से अधिक लड़ाकू फौज के साथ आचारो, भिस्ती मोतदार, खिदमतगार जैसे एक लाख सेवक थे। यह फौज दक्षिण की ओर चल रही थी। यह फौज नहीं एक

चलता बोलता विशाल नगर था।

मार्ग में एक छोटी-सी नदी के किनारे अस्थायी रूप से छाया करने के लिए एक छोटा-सा शाही तम्बू खड़ा किया गया था। उसमें औरंगजेब दोपहर का विश्राम कर रहा था। बादशाह की उम्र तिरसठ वर्ष की थी। राज्य का कार्यभार सँभालने के बाद उन्होंने पिछले तीस-पैंतीस वर्षों में कभी भी अपना स्वास्थ्य बिगड़ने नहीं दिया था। उनका शरीर सागौन वृक्ष के तने की तरह सीधा और बलवान था। उनकी आँखें तीक्ष्ण, भेदक एवं देखते समय किसी पर भी अपना प्रभाव छोड़ने वाली थीं। साथ ही फौज आगे-पीछे चल रही थी। सेना की अनेक टुकड़ियाँ जहाँ कहीं भी छाया मिली वहाँ विश्राम कर रही थीं।

बादशाह के उस लाल तम्बू में इस समय उनके मुख्य काजी अब्दुल वहाब और वजीर असदखान जैसे कुछ प्रमुख लोग ही थे। शाहंशाह की प्रशंसा करते हुए असदखान ने कहा, "जहाँपनाह, आज आपकी शाही हुकूमत काबुल से लेकर बंगाल, आसाम तक, नीचे बुरहानपुर खानेदेश तक है। आपने बहुत बड़ा साम्राज्य अपनी मुट्ठी में कर लिया है। आज किसी में भी ऐसी हिम्मत बची नहीं है कि आपके सामने सिर ऊँचा कर सके। आप दुनिया के बड़े से बड़े बादशाहों में एक हैं। आप इस संसार में सबसे अधिक ताकतवर हैं।"

काजी साहब ने पूछा, "जहाँपनाह आपकी इस दक्षिण मुहिम को कितना समय लगेगा?"

औरंगजेब कुछ गम्भीर होते हुए बोला, "आप नहीं जानते इस मुहिम को। दक्षिण का प्रदेश इतना आसान नहीं है। सम्राट अकबर भी दक्षिण का प्रदेश जीतने में कामयाब नहीं हो पाये थे। हमारे अब्बाजान शाहजहान भी बड़ी मुश्किल से अहमदनगर की निजामशाही को जीत पाये थे। गोलकुंडा और बीजा की शिया मुसलमानों की रियासतें मरगट्ठों का महाराष्ट्र काँटों का प्रदेश है। इसे जीतना इतना आसान नहीं है।"

इसके पहले इतनी बड़ी पाँच छः लाख की फौज लेकर औरंगजेब ही नहीं दिल्ली का कोई भी बादशाह बाहर नहीं निकला था। औरंगजेब जब अपने तम्बू में बैठता था, उस समय लगभग तीन लाख घोड़े, दो लाख पैदल सेना, दृष्टि की सीमा में न समाने वाले आदमी और जानवर देखकर उसका सीना अभिमान से भर जाता था। अपनी इस शान-शौकत और विराट सेना के प्रभाव से दहशत फैल जानी चाहिए। ऐसा औरंगजेब सोचता था। गोलकुंडा और बीजापुर के दरबार को तो डोर टूटी पतंग की तरह कहीं से कहीं फेंका जा सकता है। अपने आने और सेना के इस महासागर की खबर सुनकर उस काफिर के बच्चे सम्भा की डर से छाती फट जानी चाहिए। फिर भी दक्षिण देश की इस मिट्टी का ठीक ठीक अनुमान लगाना कठिन

है बादशाह को ऐसा लग रहा था।

आज आलमगीर के मन को एक दूसरा ही दुख बेचैन कर रहा था। अपने शहजादे द्वारा किया गया सीने पर का घाव सहज रूप से छुपाने लायक नहीं था। दिल्ली के मुगल घराने में राजपूताने के सैकड़ों राजाओं और सरदारों को अपना मांडलिक बनाकर, पैरों के नीचे दबाकर रखा था। केवल उदयपुर का घराना कभी भी दिल्ली का मांडलिक नहीं बना था। जसवन्त सिंह की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी।

किसी हिन्दू राजा की मृत्यु होने पर उसके राज्य को अपने अधीन कर लेने का अवसर मिलेगा। इस विचार से औरंगजेब प्रसन्न हो जाता था। औरंगजेब की इस घातक नीति के विरोध में राजपूताना के सभी राजा एकत्र हो गये थे। उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध तलवार निकाल ली थी। किन्तु माम, दाम, दड और भेद जैसी नीतियाँ औरगजेब के रसोईघर में पानी भरती थीं। इन्हीं के प्रयोग से औरंगजेब विजयी हो गया। राजपूतों के साथ युद्ध में एक ऐसा भी समय आया था जब औरंगजेब के भाग्य ने पूरी तरह मुँह मोड़ लिया था। सारे राजपूत औरंगजेब के विद्रोही शहजादे के पीछे खड़े हो गये थे। उसके चहेते शहजादे अकबर ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया था। परन्तु अन्त में औरंगजेब की कपट नीति के कारण बेचारे शहजादे का मस्तक फूट गया।

उस समय हुए युद्ध की असदखान ने याद दिलायी। तब लम्बी साँस छोड़ते हुए बादशाह ने कहा, "मैंने लड़ाई जीत ली। किन्तु एक बादशाह ने अपने चहेते शहजादे को नहीं बल्कि एक बेचारे बाप ने प्रिय बच्चे को गँवा दिया।"

औरंगजेब की इच्छा के अनुसार चलते रहना बड़ा कठिन था। बादशाह की चारों बेगमों से यह सम्भव नहीं हो पाया। किन्तु बादशाह के वजीरे-आजम असदखान पिछले अनेक वर्षो से अपना पद सँभाले हुए थे। रिश्ते में वह बादशाह का मौसा था। कभी पैरों पर गिरकर, कभी शरणागत होकर अपना पद सँभाले हुए था। बाल-बच्चों के हँसने बोलने कभी कोई रुचि न रखने वाला बादशाह शहजादा अकबर के साथ पहले से ही इतना अनुरक्त कैसे हो गया था? यह रहस्य असदखान से भी नहीं खुल रहा था।

उसी समय फौलादखाने से एक व्यक्ति समाचार लेकर आया—

"जहाँपनाह आपका अनुमान सच निकला।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"शहजादा दक्षिण की ओर भाग गया है। उस काफिर सम्भाजी के साथ मित्रता करने का उसका पक्का इरादा है।"

"जैसा गुरु वैसा चेला।" कड़ुआहट भरी मुद्रा बनाते हुए बादशाह ने कहा।

"शहजादे की बर्बादी का ज़िम्मेदार वह मक्कार दुर्गादास है। दुर्गादास जैसा इस्लाम का दुश्मन मैंने जिन्दगी में नहीं देखा।"

औरंगजेब की आँखों के आगे उनकी पिछली जिन्दगी का चित्र उभर रहा था। जिस समय वह अपनी उम्र का मात्र अठारहवाँ सोपान कर रहा था उसी समय बादशाह शाहजहाँ ने उसे दक्षिण की सूबेदारी का जरीदार लिबास पहना दिया था। परन्तु उस उम्र में भी औरंगजेब को अपने पिता की साजिश का पता चल गया था। राजधानी के तख्त, ताज और खजाने की संगति छोड़कर कौन शहजादा दक्षिण के जंगलों में जाना पसन्द करेगा? शाहंशाह शाहजहाँ ने तरुण औरंगजेब की महत्वाकांक्षाओं को जान चुका था। शाहजहाँ को इस बात का अनुमान लग गया था कि धीर-गम्भीर, कम बोलने वाला, हमेशा सावधान, संयमी, अपने पेट का पानी न हिलने देने वाला साहसी औरंगजेब किसी दिन संकट उत्पन्न कर सकता है। प्रिय शहजादे दाराशिकोह के रास्ते का रोड़ा बन सकता है। इसीलिए इस वृक्ष को स्वतन्त्र रूप से बढ़ने नहीं देना है। उसकी महत्वाकांक्षा की जड़ें राजमहल की दीवारों के भीतर घुसें, इससे पहले ही उन्हें उखाड़ फेंकने का निर्णय शाहजहाँ ने किया।

किन्तु जिस पेड़ की जड़ें मजबूत होती हैं उसे उखाड़कर फेंक देने पर भी वह फिर से खड़ा हो जाता है और फैलने लगता है। इसी नीति के अनुसार औरंगजेब ने भी दक्षिण में अपने पैर जमा लिए। बागलान और आवसा जैसे प्रदेशों को उसने अपने अधिकार में कर लिया। उदगीर का क्षेत्र भी उसने अपने राज्य में मिला लिया। मलिक अंबर ने खड़की नाम के नगर को बसाकर विकसित किया था। उसे औरंगजेब ने औरंगाबाद नाम देकर विकसित किया। आगे उसने गोलकुंडा को जीतकर बीजापुर पर आक्रमण करने और उसे अपने अधिकार में लेने की तैयारी की थी। उसे विश्वास था कि वहाँ के शियापन्थी मुसलमानों का तख्त उलट देने से उसे पिता की ओर से इनाम मिलेगा। किन्तु ऐन मौके पर दारा ने हस्तक्षेप किया। औरंगजेब की महत्त्वाकांक्षा के घोड़े को पकड़कर रोक दिया। दारा ने सोचा कि दो समृद्ध राज्य नहीं भी मिले तो कोई बात नहीं किन्तु औरंगजेब को इस तरह बढ़ने देना ठीक नहीं।

कुछ समय बाद शाहजहाँ बीमार पड़ गया। उसके चारों शहजादों में सम्पत्ति के उत्तराधिकार के लिए झगड़ा आरम्भ हो गया। इसी समय अपना दक्षिण का काम छोड़कर औरंगजेब दिल्ली चला गया था। दिल्ली आते समय उसके मन में एक ही भय उठ रहा था। महाराष्ट्र के पठार पर शिवाजी के रूप में एक विद्रोही रहता था। औरंगजेब की दृष्टि में शिवाजी कोई राजा वाजा नहीं थे। वे केवल एक निकृष्ट जमींदार थे। बुरहानपुर की सीमा को पार कर आगे जाते हुए औरंगजेब ने वहाँ के

थानेदार को शिवाजी का नाम लेकर ताकीद दी थी—"इस विद्रोही जमींदार पर कड़ी नजर रखो। उसे बड़ी मस्ती चढ़ रही है।"

दोपहर के उस विश्रान्ति क्षण में बादशाह को सम्भाजी के साथ शिवाजी की भी याद आयी। उत्तर में उत्तराधिकार के लिए युद्ध, उसके बाद काबुल कंधहार से लेकर बिहार बंगाल तक की मुहिम, राज्य कर्मचारियों के व्यवस्थित कार्य व्यापार सुदृढ़ करने जैसे कार्यों में हम बीच-पचीस वर्ष उत्तर में ही अटके रहे। इसी का नाजायज फायदा शिवाजी ने उठाया। अपने मामा साहब शाइस्ता खान पर आक्रमण करके उसने उनकी उंगलियाँ तोड़ दीं। अपनी सूरत जैसी समृद्ध नगरी को दो बार लूटा। ये सारी बातें औरंगजेब को याद आयीं। किन्तु शिवाजी से आगरा में हुई भेंट को स्मरण करते ही औरंगजेब व्यथित हो गया। अपने भीतर के असह्य दुख को व्यक्त करते हुए औरंगजेब बोल पड़ा—

"पुरन्दर की घटना के बाद मैंने शिवाजी को आगरा आने के लिए मजबूर किया था। किन्तु मनुष्य के हाथ कभी-कभी ऐसी चूक हो जाती है कि जिन्दगी भर उसका अफसोस करने के अलावा कुछ बचता ही नहीं।"

"जहाँपनाह ?. " असदखान और काजी साहब घबराकर बादशाह की ओर देखने लगे।

"उस शिवाजी और उसके इस सम्भाजी नाम के बच्चे को काबुल और कंधहार की मुहिम पर भेजने का मैंने पक्का निश्चय कर लिया था। मरगट्टो की इस जमीन से दूर किसी अनाम जंगल में धोखे से इन बाप-बेटे का हमें कत्ल करना था। उसी समय यदि शिवाजी समाप्त हो गया होता तो उसकी हुकूमत और मराठों की मूर्खता भी उसी समय समाप्त हो गयी होती। लेकिन अफसोस। हमने असावधानी उन्हें वहाँ भेजने में देरी कर दी और आज तक पश्चाताप कर रहे हैं। इतनी-सी भूल की कितनी बड़ी सजा।"

बीच में ही साहस बटोरकर फौलादखान ने पूछा, "गुस्ताख़ी माफ़ जहाँपनाह मुझे ऐसा लगता है कि आगरा से शिवाजी जिस समय भाग गये वही आपकी जिन्दगी का सबसे अधिक शर्मनाक और दुखद दिन है ?"

"नहीं, वह दिन नहीं। हिन्दुस्तान का कोई भी राजा मरा या मारा गया तो उसे हम अल्लाह की कृपा मानकर खुशी से पागल हो जाते हैं। किन्तु एक दिन हम इसी तरह दरबार में बैठे थे कि हरकारे ने हमारी जिन्दगी की सबसे बुरी खबर दी थी।"

"कौन-सी ? जहाँपनाह !"

"काशी से ब्राह्मण को बुलाकर शिवाजी ने अपना राज्याभिषेक कराया और उसका उत्सव मनाया। यह हमारी ज़िन्दगी की सबसे ज्यादा शर्मनाक और दुखद ख़बर थी। यह हमारी ज़िन्दगी का सबसे ज्यादा शर्मनाक दिन था।"

इस घटना की स्मृति मात्र से औरंगजेब का दिल जल उठा। वह लम्बी साँस लेकर बोला, "काजी साहब जिस समय मुझे यह ख़तरनाक ख़बर मिली उसी क्षण मैंने दरबार ख़ारिज कर दिया और तख्त से उतरकर घुटने टेक दिये। नाक रगड़ते हुए मैंने अल्लाह का नाम लिया और अपनी पीड़ा व्यक्त की।"

असदखान ने डरते हुए पूछा, "जहाँपनाह किसी ज़मींदार के राज्याभिषेक से आपके मन की इतनी बुरी दशा क्यों होनी चाहिए?"

"वजीरेआज़म! साम्राज्य का निर्माण भी होता है और साम्राज्य डूबता भी है। उसका इतना क्या? किन्तु यहाँ तो एक किसान का बच्चा खेतों में कुदाल चलाने की जगह सिंहासन पर बैउकर महाराजा बन गया था। यह बुरी खबर सुनकर हमें ऐसा लगा कि कोई लोहे की जलती हुई सलाखों से हमारे कलेजे पर वार कर रहा है।"

आलमगीर की मन:स्थिति का अनुमान लगाते हुए काजी अब्दुल वहाब ने पूछा, "बादशाह सलामत! सम्भा को पराजित करने के लिए किब्लए आलम कितने वर्ष लगेंगे?"

इस प्रश्न पर बादशाह ने अपनी सफेद दाढ़ी को बड़े प्यार से सहलाया। फिर मीठी मुस्कान के साथ काजी की ओर देखकर अपना एक अँगूठा ऊपर कर दिया। तब काजी साहब ने कहा, "एक वर्ष।"

इसके साथ ही बादशाह ने प्रसन्नता से सिर हिलाया।

औरंगजेब के साथ तीन लाख घोड़े दुलकी चाल से दक्षिण की ओर जा रहे थे। साथ में दो लाख पैदल सैनिक चल रहे थे। घोड़ों के पीछे साढ़े तीन हजार हाथी शान से चल रहे थे। उनमें सरदारों, दरकदारों और सेना के अधिकारियों के हाथी बहुत सुन्दर ढंग से सजाये गये थे। उनके गले में सोने चाँदी और किसी किसी के गले में ताँबे के घंटे लटकाए गये थे। खास खास हाथियों के पैरों में सोने चाँदी के तोड़े बाँधे गये थे।

साठ सत्तर हाथी बादशाह की जनानियों को लेकर चल रहे थे। उनमें बेगमें, शहजादे, बादशाह की बहुएँ तथा वरिष्ठ मनसबदारों के परिवार वाले शामिल थे। सबसे बड़े हाथी पर चंदन की मेघाडंबरी रखी गयी थी। उसके महीन नीले पर्दे से बेगम उदयपुरी बाहर झाँक रही थीं। उनके साथ बादशाह की लाडली शहजादी जीनतउन्निसा बैठी थीं। मेघाडंबरी में सोना-चाँदी जड़ा हुआ था। मेघाडंबरी वाले हाथी के पीछे-पीछे राजपरिवार की स्त्रियों के हाथी चल रहे थे। अंबरी के आगे-पीछे छड़ी लिए खोजों, कश्मीरियों और अफगानियों की स्त्रीरक्षक सेना चल रही थी। बादशाही जनाना समूह ऐसा लग रहा था जैसे स्वर्ग में अप्सराओं का मेला लगा हो। हाथी दल के आगे-पीछे अपनी ऊँची गर्दनों को हिलाते हुए पचास हजार ऊँट चल रहे थे।

इस चलते-बोलते नगर के साथ ढाई सौ बड़े बाजार आगे आगे चल रहे थे। फौज के साथ चल रहे मनुष्यों और जानवरों की संख्या इतनी प्रचंड थी कि फौज जहाँ रुकती थी वहाँ पचीस-पचीस, तीस तीस मील तक में पड़ाव पड़ता था। विभिन्न नगरों के सौदागर, व्यापारी, दलाल, नर्तकियाँ, उनके साजी, नौकर चाकर ऐसे पाँच छह लाख का जनसागर दक्षिण की ओर बढ़ रहा था। बाजार के सामान्य लोग और सैनिक सम्भाजी की चर्चा करके उपहास करते हुए हँसते थे। एक-दूसरे को ताली मारते हुए कहते थे—'अपने जगतविजयी आलमगीर साहब की यह चतुरंगिणी फौज सम्भाजी ने दूर से भी देखी तो उसका कलेजा फट जाएगा। वह काफिर अपनी जगह पर ही डर कर मर जाएगा।'

फौज के कूच करने के पहले ही कामगारों का समूह आगे निकलता था। हजारों कमाठी और बेगारी कन्धे पर फावड़ा और कुदाल रखकर रास्ता साफ करते हुए आगे निकलते थे। उनके पीछे बादशाह का प्रचंड तोपखाना निकलता था। बादशाह के साथ छोटी बड़ी सत्तर तोपें थीं। इन भारी तोपों को खींचकर ले जाना इतना कठिन था कि एक-एक तोप को खींचने के लिए बैलों की बीस-बीस जोड़ियाँ लगानी पड़ती थीं। रास्ते में पत्थरों और पहाड़ियों के आ जाने पर खींचने के लिए बड़े-बड़े हाथियों को जोता जाता था। इसके अतिरिक्त बादशाह के साथ तीन सौ छोटी तोपें थीं। बादशाह ने अँग्रेज, फ्रांसीसी, डच, जर्मन और पुर्तगाली गोलंदाज फिरंगियों को सेना में नियुक्त कर रखा था। इसके अतिरिक्त शाही खजाना, हीरे-जवाहरात, कार्यालय, पीने का पानी जैसी चीजों से लदी हजारों बैलगाड़ियाँ और ऊँटगाड़ियाँ दक्षिण की ओर चल रही थीं।

तोपखाने के पीछे घुड़सवार और उनके पीछे ऊँटों के काफिले थे। इसी के पीछे बादशाह का जनानखाना चल रहा था। अकेले बादशाह का सामान इतना अधिक था कि केवल उसे ढोने के लिए चौदह सौ ऊँट, चार सौ गाड़ियाँ और डेढ़ सौ हाथी लगते थे।

औरंगजेब के पीछे करीब दो सौ वर्ष का उसके बाप-दादों का पुण्य प्रताप था। उसका समृद्ध खजाना ऐसा था कि कुबेर भी देखकर सिर झुका ले। काबुल कंधहार, आगरा, मथुरा, काशी, बंगाल, उड़ीसा, मालवा, गुजरात जैसे प्रदेशों में गरीबों के पेट पर पैर रखकर यह अतुल सम्पत्ति एकत्र की गयी थी। इसके साथ ही एशिया के आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों का कारखाना और बारूदखाना औरंगजेब के पास था। इन प्रचंड शस्त्रास्त्रों एवं अतुल सम्पत्ति के सामने मराठों का छोटा-सा राज्य मानो विशाल हाथी के सामने छोटा सा बच्चा हो। शिवाजी-सम्भाजी के स्वराज्य का मतलब था मुम्बई और जंजीरे के हब्शियों का प्रदेश छोड़कर बेंगुली की सीमा से थाना जव्हार तक का कोंकणपट्टा, आगे नासिक बागलन का कुछ हिस्सा और जुन्नर को छोड़कर पुणे, सतारा, कोल्हापुर का भूभाग। इतनी ही थी उसकी भौगोलिक

सीमा। भौगोलिक क्षेत्र और आर्थिक समृद्धि की दृष्टि औरंगजेब का एक प्रदेश मराठों के स्वराज्य से दुगुना तिगुना बड़ा था। औरंगजेब के पास ऐसे बाइस प्रदेश थे।

दक्षिण की ओर चल रहे बादशाह को अपनी कुशलता और अपनी सेना की बहादुरी पर पूरा विश्वास था। इसके अतिरिक्त औरंगजेब को रात दिन आतंकित करने वाले शिवाजी अब नहीं थे। पिछले डेढ़ वर्षों से स्वराज्य सम्भाजी के अधिकार में आ गया था। तब मे गृह कलह बहुत बढ़ गया था। अनेक मराठा और ब्राह्मण वतनदारों ने दिल्ली के बादशाह को पत्र भेजे थे—"आलमपनाह आप साक्षात पृथ्वीपति हैं। जल्दी मे जल्दी दिल्ली से दक्षिण आएँ, उस दुष्ट सम्भाजी और उसके जुल्मी स्वराज्य से हमें मुक्त करें। हमारे वतन के सारे कागजात हमारी झोली में डाल दें।" इस ठोस पार्श्वभूमि पर सम्भाजी जैसे एक क्षुद्र, मामूली ग्रामीण विद्रोही को तो सहज ही कुचल देंगे। ऐसा बादशाह को दृढ़ विश्वास था। वह इसी बेहोशी में अभिमान से चारों ओर देख रहा था। अपनी चतुरंगिणी सेना को बड़े गर्व से देख रहा था।

सन्ध्या का समय हो रहा था। शाही फौज के साथ मुकाम के लिए सामान की दुहरी व्यवस्था थी। आज भी बादशाह के मुकाम पर पहुँचने के पहले ही कामगारों ने डेरे डंडे खड़े कर दिये थे। पहाड़ी पर सबसे ऊँची जगह देखकर बादशाह, उनके शहजादों और जनानियों के लिए व्यवस्था की गयी थी। वहाँ पर बादशाह का अत्यन्त आकर्षक, लाल रंग का, मछलीपट्टनम के कपड़े का तम्बू खड़ा किया गया था। बगल में बेगम और शहजादों के लिए तम्बू लगाए गये थे। इस हिस्से को 'गुलालबार' कहा जाता था।

बादशाह के डेरे के बाहर तोपखाने की एक प्रचंड सेना पहरा देने के लिए खड़ी थी। वहाँ पर रोज एक नया सरदार पहरा देने के लिए नियुक्त होता था। बादशाह के तम्बू के आगे एक बड़ा गुसलखाना और दूसरा कोतवाली का तम्बू खड़ा किया गया था।

गले में सोने का घंटा बाँधे और अनेक रूपों से सजाए हुए एक हाथी को लाल तम्बू के सामने महावत ने बैठाया। उसी समय चाँदी की एक लम्बी सीढ़ी लेकर कुछ परिचारक आगे दौड़े। अपना एक एक पैर सीढ़ी के डंडों पर रखते हुए बड़ी शान से बादशाह हाथी से नीचे उतरे। बादशाह ने अपने तम्बू के सामने खड़ा किया गया एक ऊँचा खम्भा देखा। पश्चिम में सूर्य के पहाड़ की ओट में मुँह छिपाने के पहले ही बादशाह के तम्बू के सामने के खम्भे पर चिराग जला दिया गया था। समुद्र में राह मे भटके नाविकों के लिए जिस प्रकार आकाशदीप का दीपस्तम्भ होता है उसी प्रकार लगभग तीस मील में फैली बादशाह की फौज के लिए यह आकाशदीप

एक दीपस्तम्भ था। फौज में शाहंशाह का ठिकाना कहाँ है? यह उस दीपस्तम्भ से किसी को भी ज्ञात हो सकता था।

उस ऊँची पहाड़ी और दूसरी ओर की घाटी में अँधेरा फैल गया। नित्य की भाँति फौज में अनुशासनबद्ध रीति से अपने डेरे डाल दिये। बादशाह ने अपने सहयोगियों के साथ नमाज पढ़ी। अपने अमीरों के साथ कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श किया। उसके बाद वह अपनी गुलाबबारी की ओर लौट गया।

बादशाह ने आज अपने शहजादों और सेना के अपने नजदीकी मेहमानों के लिए एक बड़ा भोज आयोजित किया था। इसलिए बादशाह के अपने खास लोगों के लिए आज की रात बहुत महत्त्वपूर्ण थी।

इस बड़े भोज के लिए उस विशिष्ट तम्बू बेगम उदयपुरी के साथ सभी खास खास स्त्रियाँ एकत्र हुई। उनके पीछे बादशाह का बड़ा शहजादा मुअज्जम, वैसे ही कामबक्श और मुअद्दीन के साथ बादशाह के सभी पौत्र एकत्र हुए। बादशाह के परिवार के लोगों के आने पर बादशाह के अन्य मेहमान और सरदार बड़े अदब से खड़े हो रहे थे। उनमें बादशाह के पीछे नित्य खड़ा रहने वाला, औरंगजेब से उम्र में बड़ा हट्टा कट्टा असदखान था। उसकी बगल में औरंगजेब का मौसेरा भाई, असदखान का बेटा जुल्फिकार खान बैठा था। सेना के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पदों पर काम करने वाले बादशाह के मेहमान थे। उन्हें महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया था।

आज का भोज शाही मेहमानों के लिए एक आश्चर्यजनक चीज थी। अन्य समयों पर अपने राजनीतिक शतरंज की चौपड़ और नमाज की चादर को छोड़कर बादशाह किसी की ओर भूलकर भी नहीं ताकता था। उसकी हास्य विनोद और संगीत में भी कोई रुचि नहीं थी। बादशाह का सेना में, दरबार में, अन्य कार्य व्यापार में बड़ा दबदबा था। अन्य मेहमानों और अधिकारियों की बात तो दूर, शहजादा आजम और मुअज्जम भी अपने पिता से आये पत्र को पढ़ते हुए थर थर काँपने लगते थे। उनके चेहरे भय से ऐसे सफेद हो जाते थे जैसे किसी ने राख या मिट्टी पोत दी हो। इसलिए ऐसे बादशाह के साथ भोजन करने में भी सभी मेहमान भीतर से बहुत डरे हुए थे। वे अल्लाहताला से दुआ कर रहे थे कि खुदा की मेहरबानी से उनके द्वारा कोई गुस्ताखी न हो जाये और यहाँ से वे सकुशल छुट्टी पाएँ।

इसी बीच औरंगजेब की दुबली-पतली, बुढ़ापे से कमजोर किन्तु किसी बालक के उत्साह से भरी मूर्ति वहाँ उपस्थित हुई। सभी की कोर्निस को स्वीकार करते हुए बादशाह ऊँचे आसन पर बैठ गया। बादशाह के पीछे-पीछे उसकी पैंतीस वर्षीय लाड़ली शहजादी जीनतउन्निसा चल रही थी। जैबुन्निसा औरंगजेब की बड़ी बेटी थी और यदि सच कहा जाये तो उसने बादशाह का दिल जीत लिया था। किन्तु शहजादे अकबर की बगावत के समय उसने छुपकर उसकी सहायता की थी। यह

समाचार पाते ही औरंगजेब के होश उड़ गये। जैबुन्निसा को उसने फूल की तरह पाला-पोसा था। किन्तु जैबुन्निसा को उसने अपने से न केवल दूर किया अपितु उसे बन्दी बनाकर दिल्ली की सलीमगढ़ किले में हमेशा के लिए कैद कर दिया। उसके बाद से जीनतउन्निसा, उसकी छोटी बेटी, उसकी लाड़ली बन गयी थी।

बादशाह ने सभी के साथ बड़ी शान्ति से खाना खाया। किन्तु खाना समाप्त होने पर बादशाह गम्भीर दिखने लगा। अपने में खोया हुआ बादशाह अभिमान से बोला, "हथियार के रूप में मैं दो तलवारों का उपयोग हमेशा करता हूँ। एक युद्धभूमि की दूसरी बुद्धि की। आप सभी जानते ही हैं कि पहली की अपेक्षा दूसरी ज्यादा चलानी आती है।"

बादशाह की बात सुनकर असदखान को उत्साह आ गया। उसने सभी को स्मरण कराते हुए कहा, "आप लोगों को कुछ दिन पहले की जादुई लड़ाई याद होगी। एक ओर एक लाख लड़ाकू राजपूत, उनके साथ वह दुर्गादास नाम का कुत्ता और अपने बदकिस्मत शहजादे अकबर। लेकिन लाखों की उस फौज को अकल की तलवार से जहाँपनाह ने उस मरुभूमि में भगा दिया। खून की एक बूँद भी गिराये बिना लड़ाई जीत ली।"

असदखान के इस गौरवपूर्ण उद्‌गार से बादशाह मन में बहुत प्रसन्न हुआ। अपनी भूरि आँखों को फैलाते हुए उसने धीर गम्भीर स्वर में कहा—

"मेरे पास एक और तीसरा हथियार भी है। वह बहुत तेज और जहरीला है।" बोलते बोलते बादशाह ने अपने कमर पट्टे से एक छोटी सी कटार निकाली। उसकी चमकती धार को दिखाते हुए बोला, "मेरे साथ किसी ने गद्दारी और दग़ाबाजी करने की कोशिश की तो मेरी यह कटार उस काफिर के पेट में बेदर्दी से घुमकर, उसकी रीढ़ की हड्डियाँ तोड़ कर ही बाहर निकलती है।"

औरंगजेब पुन. सभी पर एक उड़ती नजर डालते हुए कुछ और कठोर स्वर में बोला, "हमारे मुगल खानदान और दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाले तुर्क वंशों में अनेक बहादुर, कुशाग्रबुद्धि और कला के कद्रदान हो गय हैं। मेरे अनेक मित्र मुझे चिढ़ाने के लिए उनका स्मरण कराने की बेवकूफी करते हैं। मेरा तो हिसाब ही अलग है। हमारे जहाँगीर साहब की सारी जिन्दगी चित्र बनाने में चली गयी। मेरे हाथ रंगों की कूची के लिए नहीं हैं। उनमें तलवार उठाने का रोमांच होता है। मुझे दुश्मन के शरीर से निकलने वाले रक्त की प्यास रहती है। हमारे अब्बाजान शाहजहाँ साहब ने महल और शाही इमारत बनाने में अपनी सारी उम्र बर्बाद की। हमारे सम्राट अकबर साहब राजपूतों, हिन्दुओं को गोद में बिठाकर उनका दुलार करते रहे। इस तरह साँपों को अपने शरीर से लिपटाकर उनके साथ खिलवाड़ करना हम स्वीकार नहीं। इस तरह के खोखले भाईचारे का स्वप्न हम कभी नहीं देखते।

इनमें सबसे अधिक इज्जत में अलाउद्दीन खिलजी साहब की करता हूँ। वे यहाँ की प्रजा को ठिकाने पर ले आये थे। पालतू घोड़ा, कुतिया और प्रजा ही नहीं सभी जानवरों को काबू में रखना चाहिए। मुझे भी यहाँ की प्रजा की गर्दन पर तलवार रखकर सियासत करना बहुत पसन्द आता है।''

आज के भोज में शहजादा आजम उपस्थित नहीं था। उसे सम्भाजी के समाचार के लिए दक्षिण की ओर भेज दिया गया था। अपनी फौज में सबसे अधिक कुशल और किसी भी संकटपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने में सक्षम अपने बड़े बेटे मुअज्जम की ओर देखा। सभी पर नजर डालते हुए बादशाह ने कहा—

''इस बार की यह दक्षिण मुहिम मेरे लिए नहीं है। बल्कि हमारे दो शहजादों के लिए एक इम्तिहान है। क्यों असद खान?''

''जैसी आपकी मर्जी किबलाए आलम।''

''मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। मेरे बाद इस बादशाहत का कार्य भार कौन सँभालेगा? मेरा उत्तराधिकारी कौन बनेगा? यह निश्चित करने का समय अब आ गया है।''

बादशाह के इस कथन से मुअज्जम चौंका। उसकी बेगम आँखें फाड़कर इधर उधर देखने लगीं। उसी समय बादशाह को कुछ स्मरण हुआ। आकाश से अचानक झर झर बरसात करने वाली घटा के समान उसके चेहरे पर एक छाया आयी और चली गयी। किसी की भी चिन्ता किये बिना बादशाह कहने लगा—
''आजम क्या और मुअज्जम क्या, मेरे बाद हिन्दुस्तान के तख्त पर बैठने की इन दोनों में योग्यता नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य। क्या किया जाये? हमारी गद्दी पर बैठने और ताज पहनने की जिसमें काबिलियत थी अपना वही शहजादा बेवकूफ निकला। बगावत करके जानी दुश्मन से जा मिला। रहम आता है उस शहजादे पर। अल्लाहताला ने उसे इतना सब कुछ दिया किन्तु उसकी बेवकूफी और बदनसीबी ने सब कुछ छीन लिया।

शहजादा अकबर की याद से बादशाह का हृदय ऐसे लहूलुहान हो रहा था मानो किसी ने उसके कलेजे में कटार भौंक दी हो। यह दृश्य देखकर बादशाह के मारे मेहमान सहम गये थे। बगावत की कल्पना से बादशाह का चेहरा लाल हो गया। वह गरजा—''हमारे शासन में जो विद्रोह की कोशिश करता है, वह खाक हो जाता है। क्योंकि बगावत और गद्दारी की सही कला केवल इस औरंगजेब को आती है। मेरे जन्मदाता पिता का दिमाग जिस समय खराब हुआ उस समय उन्हें भी बुढ़ापे में मैंने सबक सिखाया। उसके लिए आगे पीछे नहीं देखा। जिस तरह किसी पेड़ की टहनी को सहजता से तोड़ दिया जाता है उसी प्रकार मैंने अपने बेवकूफ भाइयों को श्मशान का रास्ता दिखाया। दुश्मनों की खैरियत चाहने वाली बहनों को हमेशा

के लिए बन्दीखाने के अँधेरे में ढकेल दिया। मुझे इतना ही कहना है, बस! हमारे बाद दिल्ली का बादशाह कौन हो? यह निर्णय मैंने अपने पिता को भी नहीं करने दिया। किन्तु मेरे बाद दिल्ली का बादशाह कौन होगा? यह निर्णय केवल मैं ही करूँगा। हमारे शहजादों में जो दक्षिण की फ़तह हासिल करेगा, सम्भा जैसे मूर्ख को कुचल देगा, उसी के सिर पर हम अपने हाथ से गर्व के साथ हिन्दुस्तान का ताज पहनाएँगे।''

चार

हंबीरराव अपनी फौज के लिए अधिक रसद और गोला बारूद प्राप्त करने के लिए राजधानी रायगढ़ आये थे। राजधानी में सेनापति हंबीरराव मोहित येसूबाई से मिले। सोयराबाई ने इसी समय उनके लिए बुलावा भेजा। हंबीरराव इस सन्देश से चकित हुए। क्योंकि सम्भाजी के द्वारा रायगढ़ का कार्यभार सँभालने के बाद लगभग डेढ़ वर्षों में सोयराबाई से उनकी भेंट नहीं हुई थी। हंबीरराव ने स्वयं दो तीन बार सोयराबाई से मिलने की कोशिश की थी। किन्तु सोयराबाई को उनका मुँह देखना गँवारा नहीं था।

अपनी बड़ी बहन के क्रोध का कारण हंबीरराव को मालूम था। ऐन मौके पर हंबीरराव ने सब काम चौपट कर दिया। अपने भांजे का राजा बनना जब सगे मामा को ही पसन्द नहीं है तो दूसरों को क्या दोष देना? सोयराबाई की ये कटूक्तियाँ हंबीरराव के कानों तक बार-बार पहुँचती थीं।

सोयराबाई का अन्धा पुत्र प्रेम, अपने स्वार्थ के लिए शम्भूराजा के प्राणों की भूख, उसके लिए खतरनाक साजिशों में शामिल होना आदि सभी को मालूम हो गया था। इसी से सन्तप्त शम्भूराजा ने सोयराबाई के महल पर जाकर शोर मचाया था। यह बात महीने डेढ़ महीने पहले की थी। उसके बाद सोयराबाई की पालकी केवल दो बार जगदीश्वर का दर्शन करने गयी थी। रायगढ़ के निवासियों ने इसे देखा था। इसके अतिरिक्त वे पूरे दिन अपने महल में रहती थीं। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं था।

हंबीरराव ने जब अपनी बड़ी बहन को देखा तो उनका कलेजा फट गया।

सोने के गहनों से लदी रहने वाली महारानी सोयराबाई का आज का रूप ही एकदम अलग था। सफेद वस्त्र, माथे पर पड़ी झुर्रियाँ, मूखते कुएँ जैसी गहरी आँखें एकदम दुर्बल शरीर। सोयराबाई अनेक वर्षो तक तपस्या करने वाली मन्यामियों सी लग रही थीं। उनकी आवाज भी बहुत पतली हो गयी थी। उन्होंने अपने भाई को बगल के पलँग पर बैठने को कहा। हंबीरराव अपने को रोक न सके उन्होंने कहा, "माफ क र न I
दीदी जी, कारण जो भी हो आपका छोटा भाई आपके साथ नहीं रह सका। मुझे माफ करें।"

"हंबीरराव वैमी कोई बात नहीं है। यह मच है कि आरम्भ में तुम्हारे ऊपर मुझे बहुत क्रोध आया था। किन्तु बीती बातों पर गम्भीरता मे विचार किया। मारी घटना को तटस्थता मे देखा। उमके बाद निश्चित किया कि तुम्हें शाबाशी देनी चाहिए।"

"दीदीजी, आप क्या कह रही हैं?" हंबीरराव की आवाज भर आयी। उन्होंने कहा, "गजा गम के विवाह के पहले की बात है। उस ममय बडे महागज ने एकान्त में मुझमे कहा था—राजागम आप मेरे माले हैं। किन्तु यह मात्र मंयोग है। उम रिश्ते के आधार पर मैंने आपको मेनापति का पद नहीं दिया। इमके विपरीत हमारा यह विश्वाम है कि आपके मजबूत हाथो मे स्वराज्य का संवर्धन होगा।"

"मच है हबीरराव! महाराज गुणों के मच्चे पारखी थे।"

बहुत दिनों के बाद इम प्रकार खुले मन मे बाते हो रही थीं। इमीलिए अपने मन को मुक्त करने हुए हबीरराव ने कहा "महागज और शम्भूराजा की पन्हाला पर हुई भेंट के बाद महाराज ने मुझसे स्पष्ट शब्दों मे कहा था—शम्भूगजा से जो हमारी बात हुई उसमें मैंने शम्भू के मन को अच्छी तरह पढा। मुझे विश्वाम हो गया है कि स्वराज्य शम्भूराजा के हाथों में ही सुरक्षित रहेगा। गजाराम अभी अबोध है।"

"ऐसा है?" सोयराबाई गम्भीर हो गयीं।

रायगढ़ पर उत्तराधिकार के लिए हुए पहले विद्रोह की हबीरराव को याद आयी। उन्होंने कहा, "दीदी! उस सारी पार्श्व भूमि के सम्बन्ध मे मैं आपसे इतना ही कहूँगा कि हो सकता है कि एक भाई ने अपनी बहन का माथ न दिया हो या धोखा दिया हो किन्तु स्वराज्य के एक ईमानदार मेवक ने खाये हुए नमक का अदा किया है, यह निश्चित है।"

सोयराबाई ने शून्य में देखते हुए कहा, "हंबीरराव जब हम राजगढ में रहते थ तब सईबाई के बाद मैंने शम्भू को अपने पेट के बच्चे की तरह पाला पोसा। बाद म गजाराम हमारी गोद मे आये। उसके बाद शम्भूराजा को हमने कब अलग कर

दिया, इसका मुझे भी पता नहीं। आगे स्वार्थी कर्मचारिबों ने कहना शुरू किया कि शम्भूराजा दुष्ट हैं, व्यसनी हैं, वही झूठी अफवाह मैंने अपने मन में बिठा ली। क्योंकि रायगढ़ की महारानी बनने के बाद यहाँ की राजमाता बनने की मेरी इच्छा बलवती हो गयी थी।"

हंबीरराव इधर उधर देखते हुए पूछने लगे—"राजाराम साहब कहाँ हैं? कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं?"

"हंबीरराव, शम्भूराजा के यहाँ गढ़ पर रहने पर राजाराम को भूख-प्यास भी नहीं लगती। हमारे पास रुकना तो दूर की बात है।" सोयराबाई ने कातर स्वर में कहा, "अब हमें राजाराम की कोई चिन्ता नहीं है। हमारे साथ इतना कुछ हो गया किन्तु राजाराम के प्रति शम्भूराजा का वात्सल्य रंच मात्र भी कम नहीं हुआ। ऐसा लगता है कि बड़े महाराज की जगह शम्भूराजा ने ली है। उनकी कमी पूरी कर दी है। येसू भी राजाराम का इतना ध्यान रखती हैं कि मुझे लगता है कि राजाराम को अपनी माँ की भी कोई आवश्यकता नहीं है।"

"नहीं दीदी, आप ऐसे कहेंगी तो कैसे चलेगा?"

"हंबीरराव, आप हमारे छोटे भाई हैं इसलिए कह रही हूँ। मुझसे अनजाने में नहीं, जानबूझकर इतने अपराध हुए हैं कि अब जीने की भी इच्छा नहीं होती। पालकी में बैठकर जगदीश्वर के दर्शन करने जाने में भी लज्जा आती है। लोग मुझे स्वार्थी और कपटी स्त्री के रूप में देखते हैं।"

"दीदीजी, आप इतना सोच विचार क्यों करती है? आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है। कृपा करके अब आप आराम करे।"

"नहीं हंबीरराव, कभी-कभी पश्चाताप मे हमारा हृदय साफ होता है। मनुष्य की स्वार्थबुद्धि की भी कोई सीमा होनी चाहिए। एक ओर औरंगजेब जैसा हमारी तीन-तीन पीढ़ियों का शत्रु स्वराज्य पर आक्रमण कर रहा है। ऐसे समय मे माता होने के नाते शम्भूराजा को सान्त्वना और प्रोत्साहन देना हमारा प्रथम कर्तव्य था। परन्तु ऐसे समय में कपटी और दुष्ट कर्मचारियों के साथ लगकर हम शम्भू बेटे को नष्ट करने पर तुले थे। मैं भी उन कुटिल षड्यन्त्रकारियों के साथ हो गयी थी। इससे हमें अत्यधिक लज्जा का अनुभव होता है।"

बोलते-बोलते सोयराबाई का स्वर कातर हो गया। उनकी आँखों में आँसू उमड़ आए। उनके गले में जोर का ठसका बैठा। एक दासी ने तुरन्त पानी का पात्र उनके हाथ में पकड़ाया। उनकी यह दशा देखकर हंबीरराव ने कहा, "दीदी अब अपने को और अधिक कष्ट न दें, विश्राम करें, सब ठीक हो जाएगा।"

शरीर पर शाल को लपेटते हुए सोयराबाई दासी की सहायता से भीतर जाने लगीं। किन्तु तभी उन्होंने हंबीरराव को पुनः अपने समीप बुलाया। उन्होंने धीरे से

किन्तु कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, ''येसूबाई मे मेग निश्चित सन्देश दीजिए कि हमें अब किसी की बात की चिन्ता नहीं है। तुम्हारे आँचल की छाया में हमारा बेटा राजाराम सुखी और मुरक्षित रहेगा।''

अश्विन शुक्ल 11 शक सम्वत् 1603, दिनांक 27 अक्टूबर 1681 का दिन था। सप्तमहल की ओर से रोने की आवाज आने लगी। दासियाँ जोर जोर से रो रही थीं। सोयराबाई का मृत शरीर बिस्तर पर पड़ा था। शम्भूराजा और येसूबाई दौड़ते हुए वहाँ आये। सफेद शुभ्र वस्त्रों में सोयराबाई का शरीर काला दिखाई पड़ रहा था। तत्काल राजवैद्य को बुलाया गया। वैद्य ने निदान करके बताया कि पिछली रात को ही महारानी ने हीरे का टुकड़ा खाकर आत्महत्या की है।

शम्भूराजा ने काले हौद की बगल में, बड़े महाराज के अन्तिम संस्कार के स्थान के पाम मोयराबाई को मुखाग्नि दी। माथ ही भट भिक्षु, दीन दुर्बल, राही बटोही को दान दक्षिणा दी। राजाराम साहब का वे बहुत ध्यान रख रहे थे।

क्रिया कर्म का कार्यक्रम समाप्त हो गया। पूरा राजमहल रिश्तेदारों मे भरा था। सोयराबाई की याद में शम्भूराजा की आँखें भर आयीं। उन्होंने कहा, ''अपने पुत्र के मोह में हमें बन्दी बनाने से लेकर मारने तक का उपाय उन्होंने किया था। लेकिन यह मानवी स्वार्थ का एक प्रकार है। किन्तु पिताजी की जवानी में राजगढ़ के हमारे बचपन में इन्हीं ने हम दोनों को सँभाला था। उनके उस प्यार को हम कभी भूल नहीं सकते। अपनी इन्हीं माताजी पर यह अभियोग लगा कि उन्होंने बड़े महाराज को विष दिया था। किन्तु ऐसा लांछन लगाकर उनके पतिव्रत धर्म की पवित्रता को कलंकित करना है। वे स्फटिक सी शुभ्र और पारदर्शी थीं।''

पाँच

''सम्भाजी महाराज आज औरंगजेब ने पूरे हिन्दुस्तान में उपद्रव मचा रखा है। उत्तर भारत में बहुत से शक्तिशाली हिन्दू और राजपूत मरदार हैं। परन्तु वे सभी उस बादशाह के अधीन पशु की भाँति विवश हैं।''

''ऐसा?''

''तो क्या उन्हें देश की, धर्म की, किसी को कोई चिन्ता नहीं है? आपने भी सुना होगा कि औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जजिया नाम का अन्यायपूर्ण कर लगाया है।

उसने सामान्य लोगों का जीना हराम कर दिया है। ऐसे पापी और धर्मोन्मादी बादशाह की नाक में नकेल डालने की तरकीब और ताकत हिन्दुस्तान में केवल आपके पास है।''

''सच है राजन, दिल्ली और राजपूताना छोड़कर मैं और शहजादा अकबर बड़े भरोसे के साथ आपके आश्रय में आये हैं।'' भावुक होकर दुर्गादास राठौड़ ने कहा।

कल सवेरे ही शम्भूराजा अपने सहयोगियों के साथ सुधागढ़ पहुँचे थे। वे गढ़ पर सबनिम के महल में रुके थे। कल ही किले के नीचे धोड़से नामक गाँव में उनकी और शहजादा अकबर की पहली भेंट हुई थी।

कल की इस शाही मुलाकात में ही दोनों ने एक-दूसरे को हीरे जवाहरात, मूल्यवान वस्त्र, अरबी तुर्की घोड़े आदि दिए थे। इस अवसर पर शम्भूराजा ने दुर्गादास और शहजादा अकबर की बड़ी प्रशंसा की थी। इन्हें धन्यवाद भी दिया— ''अच्छा हुआ आपके निमित्त से हमारे अधिकारियों की बगावत का पर्दा उठा।''

''कर्मचारियों के उस पत्र ने उल्टे हमारा बड़ा उपकार किया, राजन!'' शहजादा अकबर ने हँसते हुए कहा, ''पिछले चार-पाँच महीने से आपने हमें इस पाली की भयंकर बरसात में भिगोते हुए अटका रखा है। हो सकता है कि हमारे उद्देश्य के बारे में आपके मन में सन्देह हो।''

शहजादे की बात सुनकर शम्भूराजा दिल खोलकर हँसे। आगत स्वगत उत्तम रीति से हुआ। अगली बैठक के लिए ऊपर सुधागढ़ किले की जगह निश्चित की गयी। उस समय शम्भूराजा ने शहजादे की ओर ध्यान से देखा। थोड़ा स्थूल शरीर, मध्यम ऊँचाई का तेजस्वी शहजादा देखने में आकर्षक लग रहा था। उससे शम्भूराजा ने कहा, ''चलिए आज हमारे साथ किले पर ठहरिये। वहीं पर विस्तार से बातें होंगी।''

''राजन, चाहिए तो दुर्गादास को साथ ले जाइये। मैं कल सवेरे पहुँचूँगा।'' अकबर ने कहा।

''आज क्यों नहीं?''

''राजन, यहाँ की भयंकर बरसात की मार से तो अपने को किसी तरह बचाया, लेकिन किले पर की सर्दी नहीं झेल पाऊँगा।''

दुर्गादास के साथ किले पर की राजा की बातचीत उत्तम रीति से सम्पन्न हुई। सवेरे शम्भूराजा और दुर्गादास ने पूजा समाप्त की। दोनों की पालकियाँ मोराई देवी के मन्दिर पहुँचीं। देवी के दर्शन करके शम्भूराजा पूर्व दिशा के बुर्ज के पास टहलने लगे। साथ में उत्साही दुर्गादास थे ही। ऊँचे कद, साँवले रंग, राजपूत शैली की

दाढ़ी रखने वाले दुर्गादास का व्यक्तित्व बड़ा विलोभनीय था। दोनों मिलकर बगल के तैलबैल किले, पीछे के घने वृक्षों और आसपास की निसर्ग शोभा को देखने लगे।

दुर्गादास की बोलचाल से उनकी निष्ठा प्रकट हो रही थी। दुर्गादास अपनी भूमिका स्पष्ट करते हुए बता रहे थे कि राजपूताना के सभी राजाओं को एक झडे के नीचे एकत्र करके अपने देश और धर्म पर संकट स्वरूप औरंगजेब को गद्दी से उतार कर शहजादा अकबर को गद्दी पर बिठाने की उनकी योजना थी। यह बताते समय राजपूताना के प्रति उनका प्रेम, शहजादे पर उनकी निष्ठा और सम्भाजी के प्रति असीम आदर की स्पष्ट अभिव्यक्ति हो रही थी।

जोधपुर के राजा जसवंत सिंह जीवनभर मुगलों के नमक के प्रति निष्ठावान बने रहे। औरगजेब को प्रसन्न करने के लिए उसका आदेश मानकर काबुल और कंधहार तक धावा बोला था। युद्ध भूमि में उन्होंने वीरता दिखाई किन्तु खैबर दर्रे के पास उनका आकस्मिक निधन हो गया। उनके जैसे एकनिष्ठ सेवक की मृत्यु पर बादशाह को दुखी होना चाहिए था। किन्तु उनकी मृत्यु मे औरंगजेब प्रसन्न हो गया। औरंगजेब ने सोचा कि एक और हिन्दू राज्य अपने अधिकार में लेने का अवसर अपने आप मिल जाएगा। किन्तु उस समय जसवन्त सिंह की पत्नी गर्भवती थी। प्रसूति हो जाने पर उत्तराधिकार की परम्परा के अनुसार राजपूतों ने नवजात शिशु अजित सिंह को गद्दी पर बिठाने की माँग की।

इस माँग को लेकर दुर्गादास ने बादशाह से भेंट की। उन्होंने आग्रह किया—

"हुजूर, उत्तराधिकार के अधिकार के अनुसार अजित सिंह को जोधपुर का राजा बनाएँ।"

"जरूर क्यों नहीं?" औरंगजेब ने हँसते हुए कहा, "कल ही हम आपके राजा को राजसी वस्त्र दे देंगे। लेकिन एक शर्त पर ।"

"कौन सी शर्त, जहाँपनाह?"

"कल अजित सिंह और उनकी माँ इस्लाम धर्म स्वीकार करें और राज करें।"

बादशाह के इस अमानवीय उत्तर से दुर्गादास थर्रा गये। उसी समय दुर्गादास ने सौगन्ध ली—'मेरा मृत शरीर श्मशान की ओर जाये उससे पहले मैं औरंगजेब को अवश्य ही रास्ते पर लगाऊँगा।' उसी क्षण से दुर्गादास आलमगीर के विरुद्ध धधक उठे थे।

उस घटना का स्मरण आते ही दुर्गादास का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने कहा, "अकबर और मानसिंह के समय से हमारी तीन-तीन पीढ़ियाँ दिल्ली की मुगल सल्तनत की रक्षा करती रही हैं, अपना रक्त बहाती रही हैं। किन्तु, यह

धर्म विक्षिप्त औरंगजेब उन सभी बातों को भूलकर दूसरी ओर पलट गया। हिन्दू प्रजा पर उसने जजिया कर लगा दिया और उसकी वसूली के लिए अकल्पनीय अत्याचार किया।"

"किन्तु उत्तर की प्रजा ने ऐसी अधम बादशाहत के विरुद्ध विद्रोह क्यों नहीं किया?" शम्भूराजा ने जानना चाहा।

"सब कुछ हुआ। औरंगजेब के जामा मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए जाते समय हिन्द प्रजा ने उन्हें रोका, उनसे प्रार्थना की किन्तु बादशाह का कठोर हृदय नहीं पिघला। उन गरीबों पर उसने मदोन्मत्त हाथी नचाया। फिर भी औरंगजेब का इरादा नहीं बदला। इन्हीं घटनाओं के परिणामस्वरूप राजपूताना में विद्रोह हुआ।"

दुर्गादास विद्रोह की कहानी सुना रहे थे।

राजस्थान की रेतीली भूमि पर भड़के उस विद्रोह को जानने के लिए औरंगजेब स्वयं वहाँ दौड़कर आया था। उसने दक्षिण से मुअज्जम और बंगाल से आजम को बुला लिया था। राजपूताना शान्त नहीं हो रहा था। किन्तु एक बार बादशाह द्वारा अपमानित शहजादा अकबर को दुर्गादास ने बड़ी कुशलता से अपनी ओर कर लिया था। उसके दिमाग में विद्रोह का बीज बोया। परन्तु दुर्गादास और शहजादा अकबर दोनों दुर्भाग्य के शिकार हुए। अकबर ने केवल बगावत का झंडा ही नहीं ऊँचा किया था, बल्कि स्वयं को नया शाहंशाह घोषित करके खुतबा पढ़ा था। अपने पिता से युद्ध करने का गुनाह किया था। इस तरह का शहजादा कहीं भी चला जाये वह बादशाह बिंना उसका प्रतिशोध लिए नहीं रह सकता। इसका अनुमान दुर्गादास और अकबर दोनों को था। इसीलिए उन्हें सह्याद्रि के सिंह की फौलादी गुफा भरोसे की लगी। दुर्भाग्य के अनेक थपेड़े खाते हुए दोनों चार महीने की कष्टकर यात्रा करके महाराष्ट्र के पठार पर पहुँचे थे।

जजिया कर का विषय निकलते ही शम्भूराजा बोल पड़े, "बादशाह द्वारा अपनी हिन्दू प्रजा पर यह कर लगाने का समाचार हमारे पिताजी को मिला था। उस समय उनकी बेचैनी को हमने बहुत निकट से देखा था। उन्हांने औरंगजेब से स्पष्ट शब्दों में कहा था। अपने इस व्यवहार से आपने अपने श्रेष्ठ तुर्क वंश को कलंकित किया है। प्रजा राजा की सन्तान जैसी होती है। उसमें हिन्दू और मुसलमान जैसा अन्तर नहीं करना चाहिए। हमारे पिताजी ने इस प्रकार का भेद कभी नहीं किया। हिन्दवी स्वराज्य खड़ा करते समय उन्होंने बीजापुर की आदिलशाही से सात हजार पठान अपनी सेना में भर्ती किये थे। आज भी दौलतखान और दरियाखान जैसे नरवीर हमारी सेना में हैं।"

दुर्गादास ने दुख से कहा, "कहाँ शिवाजी और कहाँ औरंगजेब? केवल भौगोलिक सीमा के विस्तार से कोई राज्य बड़ा नहीं होता। राजा के मन की

विशालता महत्त्वपूर्ण होती है।

शहजादा अकबर ने वचन दिया था कि वे उगते सूर्य की किरणों के साथ ही किले पर पहुँच जाएँगे। किन्तु दोपहर हो जाने पर भी उनका कहीं पता नहीं था। इसलिए दुर्गादास और सम्भाजी चिन्तित हो गये थे। अन्त में बड़ी देर से शहजादे की पालकी गढ़ पर पहुँची।" अपने क्षोभ को भीतर ही दबाते हुए शम्भूराजा ने कहा, "शहजादे, नीचे की तलहटी से किले के ऊपर आने में यदि आपको इतना समय लग गया तो इस गति से आप दिल्ली पर आक्रमण कैसे करेंगे?"

शम्भूराजा की बात सुनकर दुर्गादास हँसने लगे। शहजादे की धीमी गति को स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा, "क्या बताऊँ शम्भू महाराज, शहजादे के इसी ऐशो-आराम ने हमें पीछे रोक लिया, नहीं तो हम बादशाह औरंगजेब की दस महीने पहले ही छुट्टी कर दिये होते।"

"क्या कह रहे हैं?"

"हाँ महाराज! इस शहजादे के लिए खुदा ने स्वर्ण अवसर का दरवाजा खोल दिया था। औरंगजेब इतना अकेला पड़ गया था कि उस समय उसके पास दस-बारह हजार की फौज भी नहीं बची थी। और इस शहजादे के झंडे के नीचे हम एक लाख राजपूत खड़े थे। अब विजय हमारी है और दिल्ली की गद्दी भी अपनी। इस विचार की खुमारी में ये महाशय इतने मशगूल हो गये कि एक सौ बीस मील की दूरी तय करने में इन्हें पन्द्रह दिन लग गये। इस बीच के समय में कभी नया सिंहासन बनाने के लिए बढ़इयों को बुलाना कभी शाही वस्त्र तैयार करने के दर्जियों की फौज एकत्र करना जैसे व्यर्थ के कामों में शहजादे ने स्वर्ण अवसर गँवा दिया। हमारी इस मूर्खता भरी दीर्घसूत्रता का फायदा उस बूढ़े ने उठाया और कपट नीति से कटार भोंककर शहजादे को अक्षरशः खानाबदोश बना दिया।"

महल में खुली चर्चा चल रही थी। उसमें कवि कलश भी आकर सम्मिलित हो गये थे। दुर्गादास के बताने पर शहजादे को भी वह बुरा दिन याद आया। उसने स्पष्ट रूप से अपनी भूल स्वीकारते हुए कहा, "उस समय मेरी नालायकी ही आड़े आ गयी। इसमें कोई सन्देह नहीं। किन्तु मेरा बाप औरंगजेब है उस्तादों का उस्ताद।"

"वह कैसे?"

"क्या कहूँ राजन। अकारण ही मैं अन्धश्रद्ध हो गया था। हमारी तख्तपोशी को किसी की नजर न लगे इसलिए रोज कितने मील चलना चाहिए, इसकी सलाह एक ज्योतिषी से लेता था। मेरे अब्बाजान ने चोरी चोरी उस ज्योतिषी को रिश्वत भेज दी थी। वह बदमाश आदमी मुझे दूर का मूहूर्त बताने लगा।"

दुर्गादास यकायक बहुत गम्भीर हो गये। उन्होंने कहा, "शम्भू महाराज!

आपने अपनी जिन्दगी में मनुष्यों के बीच अनेक देव और दानव देखे होंगे। किन्तु औरंगजेब की तरह का कपटी, धोखेबाज और सियार से भी बढ़कर धूर्त व्यक्ति कोई दूसरा आपने नहीं देखा होगा। शहजादे के इतनी देर से आने के बावजूद हम लोग उस रात विजय की देहरी तक पहुँच गये थे। उस समय बादशाह का तहव्वूरखान नाम का एक बहादुर सरदार भी हमारे साथ आ गया था। दूसरे दिन युद्ध आरम्भ होने वाला था। दोनों ही फौजें एक दूसरे से भिड़ने वाली थीं। बीच में केवल एक रात का झीना पर्दा बचा था। किन्तु दुर्भाग्य से तहव्वूरखान का ससुर इनायत खान और तहव्वूरखान की बीबी और उसके बच्चे बादशाह के कब्जे में थे। उस रात बादशाह ने तहव्वूरखान के पास एक गुप्त सन्देश भेजा—तुम भले ही हमारी सेना में सम्मिलित न हो फिर भी विचार-विमर्श के लिए चुपचाप मेरे डेरे में आ जाओ। यदि तू नहीं आया तो तुम्हारे बच्चों को गुलामों के बच्चों की तरह कुत्तों से भी कम दाम पर बेच दिया जाएगा। तुम्हारी खूबसूरत बीबी को नंगी करके फौजी बाजार में इज्जत लुटाने के लिए छोड़ दिया जाएगा। उस पत्र मे तहव्वूरखान डगमगा गया। हममें किसी को बिना कोई सूचना दिये वह घबराया हुआ बादशाह के पास चला गया। आखिर जो होना था वही हुआ। बादशाह ने उस रात उसका कत्ल करके उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये।''

''इस प्रकार की कपटी और धोखेबाज चाल केवल औरंगजेब चल सकता है।'' कवि कलश ने कहा।

''कविराज, उस रात बादशाह की कपटी चाल का कमाल अभी आगे है। उस धूर्त बादशाह ने एक दूसरा गुप्तपत्र अपने इस शहजादे के नाम लिखा। उसने ऐसी व्यवस्था की कि वह पत्र हमारे राजपूतों के हाथ लगे। आधी रात को मेरे नौकर ने मुझे सोते से उठाया। वह भयंकर पत्र मेरे हाथ में दिया। उसमें लिखा था—'बेटे अकबर! अपने गुप्त समझौते के मुताबिक तुमने तो कमाल कर दिया। मारे राजपूत युद्धवीरों को इकट्ठा करके मौत के सामने खड़ा कर दिया। क्या कहना? अब बस कल सुबह होने की देर है—सामने से मेरी फौज और पीछे मे तुम्हारी फौलादी फौज! अपने दोनों के बीच राजपूतों का सर्वनाश करना है।' उस भयानक पत्र से मेरे होश उड़ गये थे। मैं अपने सोने के कपड़ों में ही बाहर निकला। उस पत्र के स्पष्टीकरण के लिए इस शहजादे के डेरे पर दौड़ता गया। किन्तु अपने इस महान शहजादे से हमारी भेंट ही नहीं हो पायी।''

''क्यों?'' शम्भूराजा ने आश्चर्य से पूछा।

''क्योंकि इस शहजादे ने अपने सेवकों को आदेश दिया था कि कुछ भी हो जाये पर मेरी नींद खराब नहीं करना। मैं उस समय बहुत चिल्लाया। पर शहजादे से भेंट नहीं हो पायी। वे उठने को तैयार ही नहीं थे। तब तहव्वूरखान के डेरे की ओर

भागा। वहाँ खान साहब भी अपनी जगह पर नहीं थे। वहाँ हमें सूचना मिली कि खान साहब पहले ही चुपचाप बादशाह के डेरे में चले गये हैं। सभी राजपूत योद्धा मुझसे नाराज हो गये। सभी ने विचार किया कि इन कपटी बाप बेटे के बीच अपनी बलि चढ़ाने से जीव बचाकर भाग जाना अच्छा है। नतीजा यह हुआ कि भोर में ही हम सभी राजपूत अपने डेरे-डंडे समेटकर अपने प्राण बचाने के लिए दूर भाग गये। क्या बताऊँ शम्भू महाराज, म्यान से तलवार निकाले बिना इस औरंगजेब नाम के व्यक्ति ने हमारी एक लाख की फौज को भगा दिया और शहजादे के लिए कब्र खोद दी।''

दुर्गादास के मुँह से सारी घटना को सुनकर सभी लोग सन्न रह गये। परिस्थिति को भाँपकर शम्भूराजा ने प्रश्न किया—

''लोग तो कहते हैं कि आप बादशाह के सबसे प्रिय शहजादे थे। ऐसा भी कहते हैं कि आज भी आपको वापस बुलाने के लिए सन्देश पर सन्देश आते हैं?''

''हाँ राजन, शाहंशाह के पत्रों में बड़े आत्मीय और प्रेम भरे शब्द होते हैं। किन्तु मैं कभी भूल नहीं सकता कि वह एक चालाक और बदमाश गीदड़ का नाटक है।'' बोलते-बोलते अकबर बहुत भावुक हो गया। वह कातर स्वर में कहने लगा—''मेरे चचाजान दारा कितने बड़े संस्कृत पंडित, विद्वान और योग्य व्यक्ति थे। वे दिल्ली की गरीब-गुर्बा हिन्दू और इस्लामी प्रजा के सहारे थे। हमारे दादाजान शाहजहान साहब के वे सबसे प्रिय शहजादे थे। उस दाराशुकोह को हमारे अब्बाजान ने धोखे से मार दिया था। अपने बचपन का वह दिन आज भी मुझे याद है। हमारे अब्बाजान औरंगजेब हम सभी को साथ लेकर राजमहल की तीसरी मंजिल पर बैठे थे। उसी समय नीचे रास्ते से भिखारियों से भी गंदा दिखने वाले एक व्यक्ति का जुलूस जा रहा था। उसके आगे पीछे शहनाई, झाँझ और तुरुहियाँ बज रहे थे। पीछे चलने वाले सभी लोग शाही दरबार के दिखाई पड़ रहे थे।

''सभी के बीच में कीचड़ और गोबर से सनी एक रुग्ण हथिनी चल रही थी। उसकी पीठ के हौदे में कोई मूलतः गौरांग किन्तु किस्मत की मार से काला हो गया एक तरुण बैठा था। उसके शरीर के शाही लिबास चिथड़े-चिथड़े कर दिया गया था। उसके शरीर पर सूखे रक्त के धब्बे थे। किसी ने उसे बेदम करके मारा था। फटे कपड़ों में सिर नीचा किये बैठे उस अभागे व्यक्ति के पीछे एक चौदह वर्ष का लड़का खड़ा था। वह लड़का भयभीत बकरी की तरह चारों ओर देख रहा था। उस पर मेरी नजर पड़ते ही मैं चौंक गया। बादशाह से चिल्लाकर बोला—''अब्बाजान, आपने हाथी पर बैठे उस लड़के को देखा? वह तो अपना सिपीर है।'

'जी हाँ, जानता हूँ। वह अभागा आदमी तुम्हारा बेवकूफ चाचा दारा है और

उसके साथ उसका बदनसीब बेटा सिफीर है।'

"मैं एकदम से चिल्लाया और नाराजी से अब्बाजान से पूछा—मेरे चचाजान और सिफीर भैया की ऐसी बुरी हालत किसने बनाई? कौन है वह मूर्ख मनुष्य? कहाँ है वह? इस पर मेरे अब्बाजान ने मेरी नाक पर ऐसा घूँसा मारा कि मैं चक्कर खाकर बगल में गिरकर कुछ समय के लिए बेहोश हो गया। दो दिनों के बाद मैंने उसी दुर्बल हथिनी की पीठ पर चचाजान की सूखी लाश देखी थी। कुछ दिनों के बाद हमारा पाठशाला में पढ़ने वाले सरदारों के बच्चों ने मुझे एक हकीकत बतायी—मरने के पहले हमारे चचाजान और सिफीर को एक अँधेरी कोठरी में रखा गया। एक रात जब बादशाह के जल्लाद उस कोठरी में घुसे, मशाल के उजाले में कत्ल करने वालों की डरावनी सूरत को छोटे सिफीर ने देखा तो वह छिपकली की तरह अपने पिता से लिपट गया। वह गाय के बछड़े की तरह रँभाने लगा। वह उन दुष्टों से प्रार्थना कर रहा था—नहीं, हमें आपका तख्त नहीं चाहिए, ताज नहीं चाहिए। हम दोनों यह देश छोड़कर चले जाते हैं। किसी दूसरे देश में जाकर, हाथ में कटोरा लेकर अल्लाह के नाम पर भीख माँगेंगे। लेकिन हमारे अब्बाजान को मत मारो। जैसे किसी के कपड़े फाड़कर उसके टुकड़े फेंक देते हैं उसी प्रकार उन दुष्टों ने छोटे सिफीर को खींचकर अलग फेंक दिया। उस समय चचाजान भी अत्यन्त दीन स्वर में कह रहे थे—'मेरे छोटे भाई औरंगजेब को मेरा सन्देश दो—तुम्हारा तख्त और ताज तुम्हें मुबारक हो। हमें भिखारियों के कटोरे दे दो। किन्तु हम बाप बेटे को जीने दो।'

"उन राक्षसों ने सिफीर को बगल की कोठरी में बन्द कर दिया। बकरा काटने वाला भी पहले बकरे को काटता है फिर उसकी खाल उतारता है। किन्तु उन दुष्ट जल्लादों ने हमारे चचाजान के जीते हुए पहले उनके हाथ पैर काटे। अन्त में सिर कलम किया। बन्दीखाने की दीवार तोड़ देने वाली अपने पिता की चीख सिफीर ने सुनी थी। हिन्दुस्तान की तख्तपोशी करके सिंहासन पर बैठने का सपना अपने पिता के लिए जिस सिफीर ने देखा था, वही सिफीर अपने उस अभागे पिता के करुण अन्त का गवाह बना।

"इसके बाद सिफीर को अब्बाजान राजमहल में ले आये। किन्तु उस मानसिक आघात से वह पागल हो गया था। शहजादा होने की हैसियत से ऐशोआराम भोगते हुए मुझे उस चचेरे भाई की मासूम सूरत मेरी आँखों के सामने हमेशा बनी रही। आज भी मुझे उसकी याद पागल कर देती है। अपने फायदे के लिए अपने घरवालों की हत्या करने वाला यह मेरा बाप मुझे तो शाही लिबास में लहराने वाला जहरीला साँप ही लगता है।"

अपने पिता की दुष्टता का पहाड़ा पढ़ते पढ़ते शहजादा अकबर भावाविष्ट हो

गया था। वह कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। उसे लज्जा का अनुभव हो रहा था। तब शम्भूराजा ने उसे सान्त्वना देने के उद्देश्य से कहा—

"और जो भी कहो, आपके अब्बाजान हैं बड़ी धार्मिक वृत्ति के। मन से पवित्र। दूसरों की स्त्रियों का आदर करने वाले एक नेक इनसान।"

शम्भूराजा के ऐसा कहने पर शहजादा विषादपूर्ण हँसी हँसा। अपने बाप के आचरण की मीमांसा करते हुए उसने कहा, "हमारे अब्बाजान हमारे दादाजान शाहजहान जैसे रंगीले तो नहीं थे किन्तु रसिक तो थे ही।"

"शहजादे! ऐसा क्यों कह रहे हो? आपके दादा ने भी तो अपनी बेगम की याद में इतना भव्य ताजमहल बनवाया। संसार के कला प्रेमियों के लिए एक आदर्श उपस्थित किया।" सम्भाजी ने कहा।

"किन्तु ताजमहल बनाने के बाद हमारे दादाजान छब्बीस वर्ष तक जिन्दा रहे। इस बात को आप भूल रहे हैं क्या राजन?" शहजादा अकबर कहने लगा, "एक ओर ताजमहल खड़ा करके उन्होंने सारे संसार को बताया कि अपनी बेगम मुमताज महल से उन्हें कितनी मुहब्बत थी। दूसरी ओर हमारे दादाजान ने सरदारों की खूबसूरत औरतों को ही नहीं उस बुड्ढे ने दरबार की दासियों तक को नहीं छोडा। मुमताज महल की बहन फर्जाना बेगम को भी अपने बिस्तर पर खींचकर ले जाने मे सकोच नहीं किया। दादाजान के इसी दोगले व्यवहार से हमारे अब्बाजान को बहुत क्रोध आता था।"

"यह सच है कि आपके पिता अपने पिता शाहजहाँ की तरह आचरण नहीं करते थे। उन्होने पराई स्त्रियों की ओर देखा तक नहीं।" कवि कलश ने कहा।

"कविराज! ऐसा समझना भी ठीक नहीं है।" अपने को न रोक पाने के कारण अकबर कहने लगा, "आपको क्या पता? हमारे अब्बाजान की आज की लाडली बेगम उदयपुरी वास्तव में दाराचाचा की बेगम थीं। परन्तु चाचाजान की हत्या करने के बाद हमारे आलमगीर ने एक महीना भी नहीं बीतने दिया और उदयपुरी के साथ शादी कर ली। दारा चाचा की एक और बेगम थीं, रामादिल। उनके लिए भी हमारे अब्बाजान पागल हो गये थे। किन्तु यह बात अलग है कि उसने इनकी दाल नहीं गलने दी।"

बोलते-बोलते शहजादा अकबर अपनी स्मृतियों में खो गया। वह बताने लगा, "एक बार मध्य एशिया से कुछ लोग अब्बाजान से मिलने आये थे। उस समय उन लोगों ने अब्बा जान को एक खूबसूरत दासी भेंट की थी। उस तुर्की दासी को अब्बाजान ने चुपचाप अपनी रखैल बनाकर जनानखाने मे रख लिया। उससे पैदा हुआ यत्लंगतोश खान नामक बेटा मुगल उमरावों के बीच घूमता दिखाई देगा।"

कुछ आश्चर्य व्यक्त करते हुए कवि कलश ने कहा, "अकबर जी! गुस्ताखी

माफ हो, हम सभी आपके पिताजी को अत्यन्त पाक-साफ और पवित्र मानते थे।''

''जाने दीजिए कविराज! माना कि मेरे अब्बाजान एक पापी आदमी हैं। परन्तु अपने जन्मदाता बाप की कितनी बुराई की जाये? इसकी भी कोई सीमा है कि नहीं?''

बोलते बोलते शहजादा अकबर बहुत गम्भीर होने लगा—''हमारे अब्बाजान के असली और नकली रूप को तो अल्ला ही जाने, किन्तु वे अल्लाह और इस्लाम की सेवा का अभिनय खूब करते हैं। दिन-रात नमाज पढ़ते हैं, मुल्ला-मौलवियों की सभा में सिर ऊँचा करके बैठते हैं, कुरान की प्रतियाँ बनाते हैं, उसमें चित्र निकालते हैं. टोपियाँ सिलते हैं और उससे प्राप्त धन को किसी मस्जिद को दान कर देते हैं। सच कहें तो मुझे कुछ और ही लगता है। हमारे अब्बाजान ने जीवनभर पाप किया, अपने भाइयों का सिर काटा, उनके शहजादों को कुचलकर मार डाला, अपने बूढ़े बाप के साथ छल किया। उनके पापों के पिशाच रात को ही नहीं दिन में भी उनकी आँखों के आगे नाचते रहते होंगे।''

जंजीरा ! जंजीरा !

एक

ब्रिटिश वकील हेनरी आक्सीडेन ने एक बार रायगढ के किल्ले पर शम्भूराजा से कहा था—'अच्छा हुआ जो आपके पिताजी नाविक के रूप में पैदा नहीं हुए नहीं तो जमीन के साथ साथ इस विशाल समुद्र के भी मालिक बन गये होते।'

हेनरी के इस कथन को शम्भूराजा कभी भूलते नही थे। जब जब समुद्र का नीला विस्तार उनके सामने आता, उनकी भावनाएँ तीव्र हो उठतीं। कभी कभी वे अपना घोड़ा लेकर समुद्र के किनारे जाते और देर-देर तक खडे होकर उसे देखते रहते। समुद्र में उठती ऊँची लहरों को देखकर वे विभोर हो जाते थे। दो दो पोरसा ऊँची उठती लहरों को देखकर शम्भूराजा उन्मत्त हो उठते थे। उनके फेफड़ों में हवा प्रविष्ट होकर एक नया तूफान पैदा कर देती थी। ऊपर सूरत से लेकर नीचे कारवार तक सम्पूर्ण समुद्री किनारे को अपने अधिकार में करना शिवाजी महाराज का चिरपोषित स्वप्न था। उस स्वप्न को पूरा करने के लिए शम्भूराजा का चित्त व्यथित और व्यग्र हो उठता था।

एक बार शिवाजी महाराज ने शम्भूराजा को अत्यन्त सरल शब्दों में बताया था—"खेत में फसल के तैयार होते ही जगली सुअर नाक उठाकर उसकी ओर देखने लगते हैं, फसलों पर आक्रमण करते हैं। ये पुर्तगाली, अँग्रेज सिद्दी आदि भी पानी के सुअर हैं। जब कोई जंगली सुअर किसी मनुष्य पर आक्रमण करता है तो एकदम सीधी रेखा में दौड़ता है। उसकी नाक के पास के दोनों दाँत तेंदुओं के काँटो से भी अधिक तीक्ष्ण और धारदार होते हैं। उनके वार से मनुष्य घायल होने से बच नहीं सकता। समुद्र के तीनों पशु समूह उन सुअरों की भाँति ही हमारे स्वराज्य को प्यासी नजरों से घूरते रहते हैं।" शम्भूराजा अपने पराक्रमी पिता को बार बार स्मरण करते।

गुप्तचर ने खबर दी कि नागण्णे और रोह्या के कुछ किसान शम्भूराजा से

तत्काल मिलना चाहते थे। उस समय शम्भूराजा अपने विश्वस्त सहकारियों और कर्मचारियों के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे। उन्होंने कुछ खिन्नता के स्वर में कहा, "अब शाम हो गयी है। उन्हें कल सुबह ही मिलने को कहो।"

"जी! जैसी आपकी आज्ञा।" गुप्तचर अभिवादन करके चला गया। किन्तु शम्भूराजा ने तुरन्त उस जासूस को रोककर कहा, "ऐसा करो, उन बेचारों को अभी भेज दो। नहीं तो किले के दरवाजे बन्द हो जाएँगे और उन बेचारों को नाहक रुकना पड़ेगा।"

शम्भूराजा के सामने आते ही उन साधारण किसानों के गले रुँध गये। वे राजा के पैरों में गिरकर रो-रोकर अपना दुखड़ा सुनाने लगे—"महाराज उन हैवान सिद्दियों ने हमारे गाँव के पचीस युवकों का अपहरण कर लिया है।"

"उनमें हमारे नागोण्णे के व्यापारियों के लड़के भी हैं।" एक व्यापारी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"कविराज! सिद्धी इन तरुणों को कहाँ ले जाता है? क्या करता है उनका?" शम्भूराजा ने पूछा।

"मुम्बई, अँग्रेज अच्छी खासी रकम देकर इन तरुणों को खरीदते हैं और उन्हें गुलाम बनाते हैं। मुम्बई में गुलामों का व्यापार अधिकांशत: हमारे प्रदेश के बच्चों से ही चलता है।" कवि कलश ने सूचित किया।

शम्भूराजा बहुत गम्भीर हो गये। उन्होंने सरकारी खजाने से इन ग्रामीणों को कुछ धन दिया। उनके कष्ट को कम करने की हर सम्भव कोशिश की। उन्होंने प्रजा को आश्वस्त करते हुए कहा, "हम शीघ्र ही इन सिद्दियों की कोई न कोई व्यवस्था करेंगे।" किसानों को कुछ राहत मिली।

शम्भूराजा ने तत्काल कवि कलश को पत्र लिखने के लिए कहा, "कविराज, मुम्बई के अँग्रेज वार्ड साहब को बताइये कि हमारे राज्य में जवानों की गुलामों की तरह नीलामी करोगे तो ठीक नहीं होगा। यह जानो कि नारियल और आदमी के सिर में अन्तर होता है। न्यायपूर्ण ढंग से रहो अन्यथा हम तुम्हें तुम्हारी गोदियों से बाहर नहीं निकलने देंगे।"

इस पत्र के बाद ही शम्भूराजा ने चौलबन्दर के सूबेदार को आदेश दिया— "समुद्र पर पहरा बैठा दो। अँग्रेजों के मुम्बई की ओर जाने वाले अनाज से भरे जहाजों को रोको और लूट लो। हमारे प्रदेश का एक भी अनाज उन गोरे बदमाशों को नहीं मिलना चाहिए।"

पत्र तुरन्त भेजे गये। विशालकाय समुद्र भँवर में फँसकर जैसे कोई चीज गोल मोल घूमती रहती है, उसी प्रकार शम्भूराजा का मस्तिष्क समुद्र के सम्बन्ध में

सोचते हुए उलझकर घूमने लगा। उन्होंने कवि कलश से कहा, "जमीन पर खड़े ये गिरिशिखर जिस प्रकार स्वाभिमानी मनुष्य को चुनौती देते रहते हैं, उसी प्रकार सागर की विशालता, उसकी गहराई, उत्ताल लहरों की गर्जना, उसकी उद्दाम गति हमें चुनौती देती रहती है।

पन्हाला किले पर शिवाजी के साथ आखिरी भेंट शम्भूराजा के लिए अमूल्य निधि बन गयी थी। उसी अवसर पर महाराज ने अपने लाड़ले शम्भूराजा को समुद्र सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनायें दी थीं। समुद्री नीति से उन्हें भली-भाँति अवगत कराया था।

जब शम्भूराजा मात्र 14 वर्ष के थे। उस समय सन् 1671 में होली की रात में रायगढ़ पर विलक्षण घटना घटी। उस भयानक रात को शम्भूराजा कभी भूल नहीं पाये। आधी रात के बाद विस्फोटों की प्रचंड आवाज सुनाई पड़ी। उस भयानक आवाज से रायगढ़ अजगर की तरह जाग उठा। किले पर घुड़सवार राउतों की भाग-दौड़ शुरू हो गयी। पहरेदारों की चीख-पुकार आने लगी। शिवाजी महागज शम्भूराजा के महल के पास भागते हुए आये। वहीं से वे अपनी ऊँची आवाज में कर्मचारियों को आदेश दं रहे थे।

उस भयंकर कोलाहल के बाद जीजामाता शीघ्रता से शम्भूराजा के शयनकक्ष में आयीं। पीछे-पीछे शिवाजी महाराज भी वहीं पहुँचे। तब तक कर्मचारियों ने सूचित किया कि कानों के पर्दे फाड़ देने वाला वह शृंखलाबद्ध विस्फोट रायगढ़ पर नहीं हुआ था। आसपास के किलों पर घाटी में भी कुछ नहीं हुआ था। शिवाजी महाराज ने बड़े प्यार से अपने लाडले की पीठ पर हाथ फेरा। उनकी वह चकित मुद्रा को देखकर जीजामाता का भी दिल बैठ गया। उनके बोलने के पहले ही शिवाजी महाराज ने कहा, "उधर जंजीरे पर कुछ विशेष घटित हुआ है।"

महाराज के स्पष्ट करने पर भी जीजामाता सम्भ्रमित थीं। रायगढ़ से जंजीरा लगभग चालीस मील दूर था। इतनी दूर से विस्फोटों की इतनी तेज आवाज कैसे पहुँच सकती थी? महाराज से चिपकते हए शम्भूराजा ने कहा, "पिताजी, आराम करने के लिए हम आपके महल में चलें?"

"क्यों? हम यहीं बैठे रहेंगे। हमें तो पूरी रात जागकर बिताना है, युवराज। जब तक हमारे गुप्तचर पूरी जानकारी लेकर नहीं आते तब तक नींद कैसी? और चैन कैसा?"

उसके बाद शिवाजी महाराज और जीजामाता बहुत समय तक चर्चा करते रहे। अपनी माताजी को चिन्तित देखकर महाराज ने कहा, "माताजी! यदि धरती के साम्राज्य को बनाए रखना है तो जलस्तर पर शासन करने की व्यवस्था करनी होगी। समय तीव्रगति से बदल रहा है। एक न एक दिन जंजीरे की अभेद्य दीवारों पर अपना

भगवा फहराने के अतिरिक्त दूसरा कोई चारा नहीं है।"

जीजामाता ने धीर गम्भीर आवाज में पूछा—"शिवा! और कितनी बार जंजीरे पर आक्रमण करोगे? जंजीरा जीतने के लिए कितनी कीमत चुकानी पड़ी? कितने लोग मारे गये? और उस जल देवना को अभी और कितनों की बलि चाहिए?"

शिवाजी महाराज ने कुछ विचित्र ढंग से मुस्कराते हुए कहा, जंजीरे के हबशी बहुत जिद्दी और कट्टर हैं। दस साल हुए होंगे, वर्षा ऋतु के होते हुए हमने जंजीरे के किनारे की दंडा और राजपुरी चौकियों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। जंजीरा हाथ नहीं आ रहा था इसलिए समीप की पहाड़ियों पर चले आये। वहीं पर पद्मदुर्ग किला बनाकर आसपास के जलपोतों पर नियन्त्रण करने लगे। हमने अनेक बार जंजीरे का सामना किया। उस पर आक्रमण किया। उसके लिए क्या क्या नहीं किया? किन्तु वर्षों की प्रतीक्षा के बाद भी जंजीरा हमारे हाथ नहीं आया।

उस रात शिवाजी महाराज बहुत देर तक अपनी माता के साथ चर्चा करते रहे। जिस प्रकार चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान अभिमन्यु ने जिस तत्परता और सावधानी से ग्रहण किया था उसी निष्ठा से शम्भूराजा ने शिवाजी की सागरीनीति को अपने कानों में और मस्तिष्क में संचित किया। महाराज जीजामाता से कह रहे थे—"माताजी! समुद्र यात्रा को हिन्दू अधर्म वा पाप मानते हैं किन्तु यदि हमें अपने राज्य का विस्तार करना है तो सागरी यात्रा को धर्म या पुण्य का कार्य मानना होगा। अपनी नौ सेना को अधिक समृद्ध करना होगा। पर्वतों की तलहटी में कूदने वाले धनगर जवान, मधुमक्खियों के छत्तों में हाथ डालने वाले, बन्दरों से भी अधिक तेजी से पेड़ों पर चढ़ने वाले कोली जवान, हमारे भावल के पर्वतों के साहसी जवान यदि समुद्र की उत्ताल लहरों पर फेंक दिये जायें तो मछलियों की तरह तैरने लगेंगे।

उसके बाद दूसरा दिन बहुत ही त्रासदायक था। समस्याओं के नुकीले रास्तों पर चलते हुए और अपने जख्मी हाथों से साम्राज्य के शिल्प को साकार करने वाले अपने पिता को बहुत समीप से देखा था। किन्तु उस दिन जैसा गमगीन चेहरा शम्भूराजा ने दुबारा कभी नहीं देखा। उसके पहले दिन होली का त्यौहार था। दांडा और राजपुरी के किनारे की चौकियों पर तैनात मराठा सैनिक कुछ असावधान थे। उसी रात सिद्दी कासिम और उसका भाई खैर्यत पाँच सौ हबशी सैनिकों को लेकर आक्रमण किये। वे अपनी सेना को दो भागों में बाँटकर नौकाओं से इस पार उतर आये।

जब इस पार होली का हंगामा मचा हुआ था। तब पानी के रास्ते छुपकर आये शत्रु ने सामने वाले बुर्ज पर सीढ़ियाँ लगाकर दोनों ओर से एक साथ आक्रमण किया। मराठों का शिविर बीच में फँस गया। शिवाजी महाराज ने भविष्य को ध्यान

में रखते हुए आगामी युद्ध के लिए किनारे पर कई बारूद से भरे गोदाम बनाए थे। दुश्मनों ने उन्हीं गोदामों में आग लगा दी थी। इन्हीं गोदामों मे प्रचंड विस्फोट हुए थे। विस्फोट की भीषण आवाज से आसपास के गाँववालों के कानों के पर्दे फट गये। इस दुखद समाचार को सुनकर शिवाजी महाराज रायगढ़ में बहुत व्यथित हुए थे। वे अत्यन्त बुझे स्वर में अपने सहकर्मियों को बता रहे थे—"पिछले सात-आठ वर्षो में अथक परिश्रम से मुरुड के किनारे जो कुछ कमाया था वह सब कुछ अग्निदेवता ने छीन लिया।"

यह पुराना इतिहास शम्भूराजा अपने सहयोगियो को बता रहे थे उसी समय कवि कलश ने पूछा—"शिवाजी महाराज ने जजीरे पर पहला आक्रमण कब किया था?"

"बहुत पहले, अपनी जवानी के दिनों मे। अफ़जल खान को मारने के पहले से ही जजीरे न उनकी नींद हराम कर रखी थी। सबसे पहले व्यंकोजी पन्त और उसके बाद मोरोपन्त पेशवा ने जजीरे पर आक्रमण किया था। मराठों के पहले आक्रमण से सिद्दी खैर्यत की आँखे सफेद हो गयी। अपनी जान बचाने के लिए उसने समझौता कर लिया। किनोर की भागरदडा, राजपुरी और अन्य चौकियाँ उसने मराठो को दे दीं। अब बाकी बचा था केवल जजीरा। पिताजी की दृष्टि जंजीरे की ओर टकटकी लगाये देख रही थी। उसी समय पिताजी ने जजीरे पर आक्रमण किया होता किन्तु दूसरी ओर से बीजापुर का अफजल खान बहुत बड़ी सेना लेकर तूफान की तरह बढता आ रहा था। आक्रमण उसकी ओर से हुआ था इसलिए न चाहते हुए भी पिताजी को जंजीरे पर आक्रमण अधूरा छोड़कर लौटना पडा।"

"फिर?"

"फिर क्या? दस साल बाद पिताजी ने एक बार फिर सिद्दियों पर आक्रमण किया। जजीरे वालों के ध्यान मे आया कि मराठे अब हार नहीं मानने वाले हैं। तब भयभीत सिद्दी दिल्ली के बादशाह औरंगजेब की शरण मे जा गिरा। वह मुगलों का माडलिक बना दिया गया। उसे मुगलों से सेना, अनाज, बारूद आदि की सहायता मिलने लगी। इस तरह वह बच गया।"

यह चर्चा जोरों पर थी कि शम्भूराजा ने निश्चय कर लिया है कि जंजीरे पर वे हर हालत में अपनी विजय पताका फहराएँगे। इसीलिए उन्होंने उस बैठक में दर्या सारंग, भायनाक भंडारी और सागरी अभियान के अनुभवी तांडेलों को भी सम्मिलित किया था। उन्होंने जंजीरा, अली बाग से मुम्बई तक के सागर तट को दिखाने वाला मानचित्र सामने रखा।

समुद्र के किनारे पर अंकित एक स्पष्ट बिन्दु की ओर संकेत करते हुए शम्भूराजा ने कहा, "यह देखो। यह मुम्बई बन्दरगाह है। यह मूलतः पुर्तगालियों के

अधिकार में था। किन्तु अपनी बेटी के विवाह में पुर्तगाल-राजा ने अपने अँग्रेज दामाद को भेंट कर दिया। तब से मुम्बई पर अँग्रेजों का अधिकार है। जंजीरे के सिद्दी और अँग्रेज दोनों ही बहुत चालाक और धूर्त हैं। वे केवल अपना लाभ देखते हैं और हमारे स्वराज के लिए संकट पैदा करते रहते हैं। किसी की बाँह में छुरा भोंक देने से वह बेकाम की हो जाती है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है। उसी तरह मुम्बई की बगल में थल गाँव के पास यह जो छोटा टापू है। उसी पर पिताजी ने नया किला बनाने का निश्चय किया था। किन्तु धूर्त अँग्रेजों ने समझ लिया था कि मराठों की सेना का यहाँ तक पहुँच जाना बगल में छुरा भोंकने जैसा ही है। मराठों के बढ़ते समुद्री प्रभाव का सीधा मतलब था सिद्दियों के खात्मे का खतरा। यह बात सिद्दी भी अच्छी तरह जानते थे। इसीलिए एक दिन सिद्दियों की तोपें इस किनारे पर गोले उगलने लगीं। आग उँगलती तोपों की अग्नि वर्षा के कारण पिताजी ने किले का निर्माण स्थगित कर दिया।''

बैठक में सभी ने शिवाजी महाराज की दूर दृष्टि की प्रशंसा की। बोलते बोलते शम्भूराजा ने खंदेरी के पास का एक छोटा बिन्दु दिखाया। और कहा, ''यह उंदेरी है जो खंदेरी से केवल दो मील की दूरी पर है। अँग्रेजों ने मराठों का मुकाबला करने के लिए सिद्दियों की बहुत सहायता की। इसी से सिद्दियों ने मराठों का सामना करने के लिए उंदेरी पर अपना किला बनाया।''

इस बैठक के दौरान शम्भूराजा बहुत भावुक हो उठे थे। उन्होंने कहा, ''हमारे पिताजी ने इस जंजीरे को जीतने के लिए बहुत कोशिश की थी। मृत्यु के दो वर्ष पूर्व भी इस जंजीरे को जीतने की पूरी कोशिश की थी। उस समय अपने प्राणों और सेना की रक्षा के लिए सिद्दी कासिम अँग्रेजों की शरण में मुम्बई भाग गया था। इस पर भी पिताजी जरा भी विचलित नहीं हुए थे। मुम्बई के मझगाँव बन्दरगाह में सिद्दी कासिम की जो युद्ध सामग्री रखी गयी थी उसे ही जला देने की उन्होंने योजना बनाई। इस कार्य के लिए उन्होंने अपने पचास विश्वसनीय, वीर और साहसी सैनिकों को भेजा था। किन्तु अचानक सावधान हुए सिद्दी ने उन सभी की निर्मम हत्या कर दी। इस प्रकार महाराज का जंजीरा अभियान अन्तिम बार अटक गया।''

''ऐसे कितने आक्रमण किये थे महाराज ने जंजीरा पर?''

उदासीनता भरी हँसी के साथ शम्भूराजा ने कहा, ''लगातार चौबास वर्षों तक यह नासूर महाराज के मस्तिष्क को पीड़ा पहुँचाता रहा। छोटे-बड़े कुछ आठ आक्रमण महाराज ने जंजीरे पर किये।''

इस पूरी घटना का वर्णन शम्भूराजा बड़े लगाव के साथ कर रहे थे। इससे यह

भी सभी अनुभव कर रहे थे कि उनके मन में कुछ उथल-पुथल चल रही है। अपने मित्रों और बहादुर सहयोगियों से विदा लेते समय अत्यन्त भाव विह्वल स्वर में कहने लगे—"जंजीरा और उसके आसपास का समुद्र तट आयात निर्यात और सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मेरे पिताजी ने एक बार मुझसे कहा था—बेटा शम्भू! अगर आप जंजीरे पर भगवा झंडा फहराने में सफल हो गये तो हमारे हिन्दवी स्वराज की सीमा को गंगा यमुना तक पहुँचने में देर नहीं लगेगी।"

दो

पहाड़ों पर अँधेरे का साम्राज्य घटने लगा था। वृक्षों और छोटी पहाड़ियों के आकार स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। पंछियों और झरनों का कलरव स्पष्टतः सुनाई दे रहा था। इस भोर में ही शम्भूराजा का खासा और कवि कलश का तुर्की घोड़ा तेज गति से दौड़ रहे थे। उनके पीछे ईमानी रायप्पा का घोड़ा था और उमके पीछे चार सौ सवारों की सेना दौड़ रही थी। पिछली रात शम्भूराजा ने पाचाड़ कोट में पड़ाव डाला था और आज मुँह अँधेरे से ही दौड़ शुरू हो गयी थी।

देखते-देखते पहाड़ का रमणीय प्राकृतिक परिसर आ गया। चारों ओर पहरेदारों की तरह चौकस खड़े पहाड़ और बीच में दूर तक फैली बाणकोट की खाड़ी दिखाई दे रही थी। दौड़ते-दौड़ते घोड़ों के मुँह के झाग निकल रहे थे। प्रातःकाल की आनन्ददायक सर्दी में भी ये जानवर पसीने के तर बतर हो रहे थे। उनके घुटनों तक लाल मिट्टी की परत चढ़ गयी थी। पूँछ के बालों में तमाम किरचें अटकी हुई थीं।

वाणकोट खाड़ी के किनारे दूर से ही अनेक तम्बू और छोलदारियाँ दिखाई दे रहे थे। शम्भूराजा का नाविक दल पास आया। बाईं ओर की पर्वत शृखला को देखते हुए शम्भूराजा घोड़े से नीचे उतरे। उनके घोड़े की लगाम पकड़ने के लिए पाँच छः कर्मचारी एक साथ आगे बढ़े।

अभी भी हवा काफी सर्द थी। शरीर पर शाल ओढे और घोड़ों पर कपड़े बिछाये वृद्ध भायनाक भंडारी, दर्या सारंग, गोविन्दराव काँथे, सन्ताजी पावला, सिद्दी मिस्त्री जैसे नौसेना के अधिकारियों ने शम्भूराजा को घेर लिया। फूल मालाओं से उनका स्वागत किया। भायनाक को तो अपने राजा पर अत्यधिक गर्व

था। वह उत्साह भरे शब्दों में कहने लगा—"वाह राजन! सूर्य निकलने के पहले ही आप यहाँ पहुँच गये। तबीयत बाग-बाग हो गयी।"

"देर तो नहीं हुई?" शम्भूराजा ने पूछा।

"नहीं नहीं, अभी तो सुतार कमाठी भी नहीं पहुँचे।" सन्ताजी पावला प्रशंसा के स्वर में बोले।

शम्भूराजा खाड़ी के किनारे खड़े हो गये। खाड़ी के दोनों ओर अनेक छोटे-बड़े आवास और यन्त्रशालाएँ दिखाई दीं। पश्चिम की ओर से आने वाली विस्तृत खाड़ी से होकर आ रही थीं। हवा पानी के साथ अठखेलियाँ कर रही थी। पानी में खड़ी गुराब, पाल, तरांडी, माचवे जैसी अनेक छोटी बड़ी जहाजें अपनी जगह पर ही हिचकोले खा रही थीं। उन पर बँधे हुए भगवे झंडे तेज हवा के साथ फहरा रहे थे।

शम्भूराजा वहीं पर स्वप्न के खोये में खड़े रहे। वे जल की सतह पर एकटक देख रहे थे। राजा की स्तब्धता से बाकी लोग भी शान्त थे। कविराज दो कदम आगे बढ़े और धीरे से कहा, "राजन?"

"हाँ कविराज, यही वह वाणकोट की खाड़ी है। पिताजी को समुद्र स्नान का बड़ा शौक था। वे अनेक बार मन भर तैरने के लिए यहाँ आया करते थे। हमने तैरना कहाँ सीखा, पता है?"

"कहाँ?"

"यहीं, इसी बाणकोट की खाड़ी में। पिताजी की पीठ का सहारा लेकर हमने पानी में हाथ पैर चलाना सीखा। उसी समय पिताजी ने एक बार मुझसे पूछा था—'बताओ शम्भू! मछली के बच्चे तैरना कब सीखते हैं?' मैंने आँखें बन्द किये हुए तुरन्त उत्तर दिया—'अपनी माँ के गर्भ से बाहर निकलते ही।' मेरा उत्तर सुनकर महाराज ने मुझे गले से लगा लिया और कहने लगे—'तुम्हें भी अब जीवन के समुद्र में हाथ पाँव चलाना सीखना चाहिए, हर समय सहारा देने के लिए बैठे थोड़े ही रहेंगे।' तब से प्रतिदिन मैं किले मे उतरकर रायगड़वाड़ी की अठारह यन्त्रशालाओं का घूम-घूमकर निरीक्षण करता रहा। कभी समुद्रतट पर, कभी पहाड़ी किलों की ऊँची मीनारों पर घूम-घूम कर अपने निरीक्षण से सीखता रहा।"

अपने नौकादल के लोगों और कर्मचारियों के साथ आगे बढ़े। तब तक दिन निकल आया था। सूरज की किरणें धीरे धीरे पानी में उतरने लगी थीं। इसी समय दादजी रघुनाथ देशपांडे का भूरा घोड़ा खाड़ी के तट पर पहुँचा। अपने से पहले शम्भूराजा को वहाँ पहुँचा देखकर अधिकारियों के होश उड़ गये। जहाज बनाने वाले कामाठी, भिश्ती आदि जल्दी-जल्दी पानी में उतर चुके थे। छोटी नौकाओं के सहारे अपने गुराबों पर या बड़ी नावों के ऊपर उछलकर चढ़ रहे थे।

सामने की नीली खाड़ी आँखों को लुभा रही थी। आगे पीछे, दाहिने-बायें धान के खेत फैले थे। सूर्य की कोमल किरणों से नहाई धान की बालें सुनहरी हो गयी थीं। धान की फसल पक कर तैयार हो गयी थी। कुछ जगहो पर कटाई का काम चल रहा था। किन्तु खेतों में केवल स्त्रियाँ और बच्चे ही दिखाई दे रहे थे। पुरुष अपने बाल-बच्चों को छोड़कर राजा के कार्य में लगे थे। कोली, भंडारी आगरी जैसे अनेक साहसी और लड़ाकू जाति के लोग शिवाजी महाराज की भाँति शम्भूराजा पर भी प्राण निछावर करते थे।

शम्भूराजा के पैरों को विश्राम नहीं था। वे ताखे से आगे बढ़ते हुए शीघ्रता से सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे और बड़ी जहाजों के कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। एक एक जहाज पर पन्द्रह-बीस बड़ी तोपें चढ़ाई जा रही थीं। उन्हें उचित जगह पर स्थिर किया जा रहा था। चिकनी, काली कलूटी काया तथा बलिष्ठ भुजाओं वाले चालीस चालीस नाविक बड़ी जहाजों को चलाने के लिए तैयार हो रहे थे।

शम्भूराजा ने जहाज पर से किनारे की ओर देखा। बैलों की बीस-बीस जोडियाँ रस्सियों और जंजीरों से बाँधकर वृक्षों के तनों को खींचकर ला रही थीं। पास सैकड़ों बढ़ई तेजी से अपना काम कर रहे थे। काटने, तरासने और जोड़ने का कार्य तत्परता से चल रहा था। भायनाक भंडारी का मजबूत पंजा अपने हाथों में लेते हुए शम्भूराजा ने प्रशंसा भरे शब्दों में कहा, "इस बार दस बीस नये बड़े जहाज पानी में तैरने चाहिए। इस महाड़ बन्दरगाह पर ऐसा काम करके दिखाओ कि लोग यह कहना भूल जायें कि केवल कल्याण में ही अच्छे जहाज बनाये जा सकते हैं।"

"महाराज आप यहाँ की चिन्ता न करें। महाड़ में ही नहीं नीचे जैतापुर और राजापुर में भी बहुत अच्छा काम चल रहा है।"

शम्भूराजा की गरुड़ दृष्टि बाण को चीरते हुए, समुद्र को पार करते हुए जंजीरे पर जा टिकी। शम्भूराजा के दीर्घ निःश्वास छोड़ते ही दरियासारंग ने पीड़ा भरे स्वर मे कहा, "कोंडाजी बाबा जैसे आदमी से ऐसी उम्मीद नहीं थी उन्होंने बहुत गलत किया।"

"जो चले गये उनका मातम न मनाओ। यह सोचो कि जो बचे हैं उनमें हाथी की ताकत कैसे भरी जाये।" शम्भूराजा गरजे।

टहलते टहलते शम्भूराजा अधिकारियों को जो परामर्श दे रहे थे उसे सभी बड़े ध्यान से सुन रहे थे। नाविक अधिकारियों की ओर घूमकर वे कहने लगे—

"साथियो! क्या आप जानते हैं कि मेरे पिताजी ने सिंधु दुर्ग किस तरह बनवाया? पानी के नीचे समतल पत्थरों में छिद्र करके उनमें पिघला लोहा डलवाया और उसके ऊपर जोड़ाई का काम करवाया। सैंकड़ों वर्षो तक समुद्र की तूफानी लहरें उससे टकराती रहें तो भी वह हिलने वाला नहीं है। इसी प्रकार उन्होंने

सह्याद्रि के नदी नालों और पर्वत-घाटियों में रहने वाले लोगों को तैयार और संस्कारित कर दिया है कि भविष्य में कितने ही आक्रमण हों वे उनका सामना करने में सक्षम बने रहेंगे।" अपने सहयोगियों को बताते हुए उन्होंने आगे कहा, "आज हिन्दुस्तान के तटों पर किसी भी फिरंगी की अपेक्षा हमारी सेना संख्या में अधिक है किन्तु पुर्तगालियों और अँग्रेजों की तोपें अधिक शक्तिशाली और लम्बी दूरी तक निशाना साधने वाली हैं। वैसा ही शक्तिशाली तोपखाना और वैसे बलवान गोलंदाज हमारे पास भी होने चाहिए।"

"राजन! इसीलिए तो कुडाल और डिचोली में हमने बारूदों के नये कारखाने खुलवाये हैं।" कविराज बोले।

"वही कह रहा हूँ।" भायनाक और दरिया सारंग की ओर देखने हुए शम्भूराजा कहने लगे—"जब जहाज से गोला बाहर फेंका जाएगा, उस समय उस धक्के से जहाज को हिलना नहीं चाहिए। अभी भी थोड़ा समय है, अपने गोलंदाजों को प्रशिक्षण दो। तोपों की गति बढ़नी चाहिए। बारूद के गोले आसानी मे बाहर निकलने चाहिए।

बोलते-बोलते शम्भूराजा ने पास में खड़े कत्थई रंग की घनी दाढ़ी वाले दौलत खान की ओर देखा।

शम्भूराजा से बात करते समय दौलतखान लगातार समुद्र की ओर देख रहा था। यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी बावरी नजर किसकी प्रतीक्षा कर रही थी। शम्भूराजा अपने सहयोगियों को बता रहे थे—"जंजीरे का सिद्दी तो हमारे पैरों में अटका हुआ साँप है। उसे तो कुचलना ही है। किन्तु अँग्रेजों और पुर्तगालियों की भी नीयत ठीक नहीं है।"

धूप अब बढ़ चुकी थी। हवा में ऊष्मा भी बढ़ गयी थी। एक नक्काशीदार भागानगरी छाता हाथ में उठाये एक नौकर शम्भूराजा को छाँह दे रहा था। शम्भूराजा का ध्यान आसपास के ग्रामीण नाविकों पर गया। धान की कटाई जोरों पर थी। पर खेतों में काम करने वाले केवल बच्चों और महिलाओं के अतिरिक्त कोई न था। सम्भाजी ने पूछा—"दादजी, फसल की कटाई तो किसानों और बलूतदारों की दीवाली ही है। फिर मजदूर कैसे मिलेंगे?"

"देखिए सरकार! बढ़ई, लुहार, चमार आदि प्रजा वर्ग के सभी लोग तो आप के यहाँ काम कर रहे हैं। फसल की कटाई के मौसम में प्रजा वर्ग को दस गुना मिलता है किन्तु वह सब छोड़कर ये सारे लोग यहाँ आये हैं। स्वराज्य के निर्माण में हिस्सा लेने।" दादजी ने सूचित किया।

दोपहर को सभी सवार, सरदार, दरिया सारंग, नाविक आदि भोजन के लिए एकत्र हो आए। बड़े जहाज पर सभी एक ही पंक्ति में बैठे कामाठी और नाविकों की

पंक्ति में ही रायगढ़ नरेश भी बैठे थे। पत्तल पर मासाड किस्म का चावल और मछली का सालन परोसा गया था। सम्भाजी राजा के साथ पंक्ति में बैठकर भोजन करते समय सभी के सीने तने हुए थे।

शाम का समय था। खाड़ी पर एक बड़ा जहाज आता हुआ दिखाई दिया। उस पर हरा झंडा फहरा रहा था। उस पर एक विचित्र प्राणी का चित्र बना था। उस बड़े जहाज को उथले पानी में ले जाने की कठिनाई के कारण गहरे हिस्से में ही रोका गया। सीढ़ियाँ लटका दी गयीं। उस जहाज की ओर भायनाक और दौलत खान ने बड़े अभिमान से देखा। शम्भूराजा भी प्रसन्न दृष्टि से देख रहे थे। एक छोटी नाव लेकर मराठा सैनिक पानी में उतर पड़े। आगत अतिथियों का स्वागत करने के लिए दौलत खान और भायनाक भंडारी आगे बढ़े। उस जहाज से उतरकर हष्ट-पुष्ट महाकाय सेनानी उतरकर आया। उसने कमर तक झुककर सम्भाजी राजा का अभिवादन किया।

"आइए जंगेखान। हमें आपका ही इन्तजार था।" ऐसा कहते हुए शम्भूराजा ने जंगेखान को अपनी बाँहों में भर लिया। वे अपने सहकारियों को गर्व से देखते हुए बोले, "ये हैं अरबों के सेनाधिकारी जंगेखान, हमारे स्वराज्य के मित्र। इन्हीं के मार्गदर्शन में हमारे गोलंदाज अचूक निशाना लगाने और समुद्री युद्ध का प्रशिक्षण लेने वाले हैं।" सभी ने उत्साहपूर्वक जंगे खान का स्वागत किया। जंगेखान अपनी सेना के साथ अरब सागर में हमेशा घूमता रहता था। विशेष रूप से अरब देश से हिन्दुस्तान आने वाले जहाजों को संरक्षण देना और अपने राज्य के व्यापारिक हित की रक्षा करना उसी की जिम्मेदारी थी। अरब के सुल्तान ने यह कार्य उसी को सौंपा था। शाम के समय एक सजे-सजाये विशेष कक्ष में सम्भाजी और जंगे खान की बातचीत चल रही थी।

"आपका दोस्त जंजीरे का सिद्दी क्या कहता है?" सम्भाजी ने हँसते हुए पूछा।

"उसकी और हमारी जाती दुश्मनी के कारण ही तो हम आप दोस्त बने हैं।" जंगे खान ने सोत्साह कहा। चर्चे के दौरान जंगे खान ने सूचित किया—

"राजन! सारे परदेशियों-फिरंगियों में बहुत से आपसी मतभेद और झगड़े हैं। किन्तु मराठों की बड़ी सेना संगठित न करने देने के मुद्दे पर सभी एक हो जाते हैं।"

"उसकी जानकारी मुझे है।" सम्भाजी राजा ने कहा।

जंगेखान कोंकण के तट पर कुछ दिन और रुकने वाला था। उसके साथी कारीगर कम समय में बड़े जहाज किस प्रकार तैयार कर लेते हैं। इसका प्रशिक्षण वह मराठी लुहारों और सुनारों को देने वाला था। सात समुद्रों का खारा पानी पचाने

वाली और पालों को फाड़ देने वाली तेज हवा का मुकाबला करते हुए अरबी जहाजें आसानी से सफर कर रहे थे। साथ ही दूर तक निशाना साधने वाली तोपों को बिठाने और निशाने पर दागने का प्रशिक्षण भी ये लोग देने वाले थे। इसलिए मराठा नाविक दल बहुत उत्साहित था।

शाम को जंगेखान ने आग्रहपूर्वक सम्भाजी राजा को अपने अरबी जहाज पर अरबी भोजन के लिए आमन्त्रित किया। अरबी जहाज पर चलते समय सम्भाजी राजा ने एक अँधेरे कोने में कुछ हलचल अनुभव की। उन्होंने मशालची को बुलाया। प्रकाश में उन्होंने देखा कि दो-ढाई सौ नंग-धड़ंग आदमी उस अँधेरी कोठरी में बन्द हैं। प्रकाश पड़ते ही ये सभी भेड़-बकरियों की तरह सहमकर काँपने लगे। उनकी दाढ़ी और सिर के बाल बढ़े हुए थे। उनके नंगे शरीर पर जख्मों के निशान दिख रहे थे। कई दिनों से स्नान न करने के कारण उनके शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी।

"चलिए राजन। इन्हें छोड़िए। ये तो हमारे गुलाम हैं।" जंगेखान ने कहा। चलते-चलते शम्भूराजा खड़े हो गये। उन्होंने जंगेखान से पूछा—

"खान साहब आप कमाठी मजदूरों का उपयोग क्यों नहीं करते?" आप इन गुलामों को ही अपने पास क्यों रखते हैं?"

"राजन अपने तबेले के घोड़ों और बाजार के टट्टुओं में अपने लिए अधिक काम का कौन है? अपना घोड़ा अपने बैल। वैसे ही ये अपने गुलाम हैं। हमारे गुलाम कितना भी बोझा उठा सकते हैं।"

"लेकिन खान साहब घोड़े, कुत्ते और इनसान की औलाद में कुछ फर्क होता है कि नहीं?"

"लेकिन राजन, ऐसे फालतू विषय पर यानी गुलामों पर आप इतना क्यों सोचते हैं?" कुछ याद करते हुए जंगेखान ने कहा, "हाँ अब समझ में आयी बात। आप तो शायर हैं न?"

"यहाँ शायरी का सवाल नहीं है, खान साहब। ये किसी मजबूरी में भगाए गये और भेड़-बकरियों की तरह बेचे गए गुलाम किसी के पुत्र हैं और मुम्बई के बाजार में बिकने वाले गुलाम हमारे हिन्दवी स्वराज्य के ही बच्चे होते हैं। इसीलिए हमारा हृदय पसीजता है।"

शम्भूराजा एक पल रुके और दूसरे ही क्षण जंगेखान की राय जाने बिना उन्होंने कविराज को आदेश दिया—"कविराज, जंगेखान को सरकारी खज़ाने से जितना चाहे उतना धन दीजिए पर कल इन सभी गुलामों की मुक्ति होनी चाहिए।"

"जैसी आज्ञा राजन!" कविराज ने गर्दन हिलाई।

उन्होंने आगे कहा, "हमारे पिताजी मनुष्य के साथ गुलामों जैसा व्यवहार

करने के खिलाफ थे। अँग्रेजों पर भी उन्होंने गुलामों के लिए चार गुना चुंगी लगाई थी। हमें भी इस अमानवीय जुल्मी प्रथा से घृणा होती है।''

अरबों के जहाज पर स्वादिष्ट मांस मटन की बहुतायत थी। कीमती मदिरा की बोतलें भी भरी पड़ी थीं। जंगेखान के विशेष आग्रह के कारण शम्भूराजा और कवि कलश ने थोड़ी-थोड़ी मदिरा ली। मदिरा के प्याले को मुँह से लगाते हुए शम्भूराजा ने कहा, ''जवानी में हम भी मदिरा के शौकीन थे, नृत्य सगीत मे भी हमें अरुचि न थी किन्तु पिताजी के स्वर्गवास के बाद से हमें एक ही नशे ने घेर रखा है और वह है पिताजी के अधूरे स्वप्नों को पूरा करना। मिद्दी, पुर्तगालियों को उनकी जगह दिखाना तथा औरंगजेब नाम के बन्दर को जीवित कैद करना।''

''वाह! बहुत खूब!'' जंगेखान गरजे।

''हमारे देश, धर्म और संस्कृति की गर्दन पर छुरा रखने वाले इस जानवर को मैं निश्चय पराजित करूँगा। जिस तरह मदारी बन्दर को रस्सियों मे बाँधकर घसीटता हुआ ले जाता है, उसी प्रकार यहाँ की ऊबड़ खाबड जमीन पर घसीटते हुए औरंगजेब की बारात निकालने की हमारी हार्दिक इच्छा है। माँ भवानी इस शम्भू को इतनी सामर्थ्य दे।'' शम्भूराजा हाथ जोडकर माँ भवानी का स्मरण करने लगे।

तीन

शम्भूराजा और महारानी येसूबाई बैठक मे उपस्थित थे। किसी बड़े आक्रमण की योजना की चर्चा हो रही थी। इसी बीच 'जय जय रघुवीर समर्थ' का मन्त्र घोष सुनाई पड़ा। सम्भाजी राजा ने चौंक कर सिर उठाया तो सामने वेद मूर्ति दिवाकर भट दिखाई पड़े। सवेरे सवेरे समर्थ रामदास के पट्ट शिष्य को आया देखकर शम्भूराजा बहुत आनन्दित हुए।

शम्भूराजा ने बड़े उत्सह से दिवाकर भट का स्वागत किया। ''आइए आइए शास्त्री दिवाकर भट जी। यहीं हमारे पास बैठिए। शम्भूराजा ने दिवाकर भट को अपने पास ही बिठा लिया। पति-पत्नी ने समर्थ रामदास के शिष्य को आदरपूर्वक प्रणाम किया। सेवक वर्ग सक्रिय हो उठा। फलाहार आया। यह जानकर कि सज्जनगढ़ से समर्थ रामदास के पट्ट शिष्य मिलने आये हैं, कर्मचारी अपना कार्य छोड़कर कुछ समय के लिए बाहर चले गये।

इस नितान्त व्यक्तिगत बैठक में बातें चलने लगीं। शम्भूराजा ने ही विषय छेड़ा—"शास्त्री जी। राज्याभिषेक के समारोह में समर्थ स्वामी यदि स्वयं पधारे होते तो हमें बहुत आनन्द आता।"

"नहीं राजन! स्वामी जी के मन में ऐसा कुछ नहीं है। आजकल उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। इसीलिए उन्होंने समारोह में दिवाकर गोसावी को भेजा था।"

"सन्तपीठ और सत्तापीठ का रिश्ता ही कुछ विचित्र होता है, शास्त्री जी!"

"निःसन्देह, शम्भूराजा! बड़े महाराज से स्वामी जी का बड़ा स्नेह था ही साथ ही प्रह्लाद निराजी, निलो सोनदेव, रामचन्द्र नीलकंठ और विशेष रूप से बालाजी भावजी चिटणीस आदि सभी का, स्वामी का बड़ा शिष्य वर्ग था।"

दिवाकर भट ने बोलते-बोलते बालाजी आवजी चिटणीस के नाम पर बल दिया। इससे शम्भूराजा का दम फूलने लगा। उन्होंने पीड़ा भरे स्वर में कहा, "हमें पता है। आजकल समर्थ स्वामी हम पर बहुत नाराज हैं।"

"ठीक है महाराज! अपने किसी गुणी ज्ञानी सहायक को हाथी के पैर के नीचे कुचलवा देना और किसी परदेशी पाखंडी को सिर पर बिठा लेना किसी राजा को शोभा देता है क्या?"

दिवाकर भट ने आरम्भ में ही अपने मन की भड़ास निकाल दी। महारानी येसूबाई शम्भूराजा की ओर भयभीत दृष्टि से देखने लगीं। दिवाकर भट ने इधर-उधर देखते हुए इसी स्वर में प्रश्न किया—"कहाँ है वह कलश? दिखाई नहीं दे रहा है। सुना है वह भोंदू हर घड़ी, हर क्षण यहीं बैठा रहता है।"

सम्भाजी राजा विचित्र हँसी हँसते हुए बोले, "कवि कलश कल ही सागरगढ़ और कोथलागढ़ के लिए गये हैं। मैंने उन्हें अष्टागार और कल्याण की बगल में रसद और बारूद की देखभाल करने और चौकियों के पहरों के निरीक्षण के लिए भेजा है। कभी ऐन वक्त पर आवश्यक होने पर उन्हें तलवारबाजी के लिए भी भेज देते हैं।"

"क्या कहते हो? उस पाखंडी को लड़ना भी आता है?"

"आता ही नहीं, वे विजयी भी होते हैं।"

"ऐसा!"

"वही तो कह रहा हूँ शास्त्री जी! अभी-अभी आपने जिन प्रधानों के हाथी के पैर के नीचे कुचले जाने पर खेद व्यक्त किया, उनमें बालाजी आवजी और उनके अभागे पुत्र को छोड़कर शेष सभी स्वराज्य द्रोही थे। शरीर में फैला हुआ साँप का विष और राजद्रोह का समय पर उपचार नहीं किया गया तो क्या आदमी और क्या राज्य, विनष्ट होने में अधिक विलम्ब नहीं होता।"

शम्भूराजा के इस प्रतिपादन से दिवाकर भट कुछ लज्जित हुए। उन्हें लगा कि शम्भूराजा के प्रशासन से सम्बन्धित जो शिकायतें सज्जनगढ़ तक आयीं थी, वे सबकी सब सही नहीं थीं! विषय को अधिक न बढ़ाते हुए शास्त्री जी ने एक रेशमी फीते से बँधी थैली शम्भूराजा के सामने रखी। उन्होंने कहा, "स्वामी जी ने अपने हाथ से लिखकर यह सन्देश आपके पास भेजा है। इसे आराम से पढ़ें।"

उस दोपहर को शम्भूराजा बैठक से बाहर नहीं निकले। उन्होंने सारे महत्त्वपूर्ण कार्य आगे के लिए टाल दिया। येसूबाई और शम्भूराजा स्वामी जी के पत्र को एक साथ पढ़ रहे थे। कभी एक साथ पढ़ते, कभी पढ़कर एक-दूसरे को सुनाते, कभी उत्सुकतावश एक-दूसरे के हाथ से खींचते। उस काव्यमय पत्र ने दोनों का मन मोह लिया था। पत्र आठ-दम बार पढ़ा गया। इसके बाद शम्भूराजा की आँखें पत्र की अन्तिम पंक्ति पर टिक गयीं—

स्मरण करो शिवराय को तृण सम जीवन जान
तरे लोक परलोक को चढ़े कीर्ति के यान
याद करो शिव रूप को उनके प्रबल विरोध
वह प्रताप जग व्याप्त जो तज सारे अवरोध
चलना, हँसना, बोलना और जगत व्यवहार
सीखो सब शिवराय मे मन के परम उदार
सभी सुखों को त्याग कर साधा अविचल योग
राज्य सदा रक्षित रहे, कितने किये प्रयोग

किसी पवित्र ग्रन्थ की भाँति ही शम्भूराजा ने उस पत्र को हृदय से लगाया, ईश्वर का स्मरण किया। उन्होंने अभिभूत होकर कहा—"युवराज्ञी सीधे सादे शब्दों का अर्थ हम आप आसानी से समझ लेते हैं पर महापुरुषों और सन्तों के शब्दों से अमृत की वर्षा होने लगती है। स्वामी रामदास ने इन शब्दों द्वारा पिताजी के विराट व्यक्तित्व का दर्शन कराया है।"

"सत्य है स्वामी।" महारानी ने कहा।

"येसू श्रीमान योगी, ज्ञानी राजा जैसी अमर विरुदावली इस महायोगी ने केवल शिवाजी महाराज के लिए ही गढ़ी है। ये विरुदावलियाँ इतनी सटीक हैं कि यदि अन्य व्यक्ति इन विरुदावलियों का धारण करे तो उपहास का पात्र हो जाएगा।"

उन काव्य पंक्तियों में रायगढ़ नरेश और महारानी इतने विभोर हो गये कि आधी रात कब बीत गयी उन्हें पता ही नहीं चला। एक बार पुन: दोनों ने उस पत्र का वाचन आरम्भ किया। तब काव्य की अन्य पंक्तियाँ उन्हें आकर्षित करने लगीं—

सावधान नित ही रहो दुविधा करो न एक
बैठ मुक्त चिन्तन करो राखो अपनी टेक
छोड़ उग्रतावृत्ति को सौम्य बनो मन साध
औरों की चिन्ता करो क्षमा करो अपराध
कार्यभार नित सौंपकर राखो अपने साथ
सुखी आश्रित जन करो सबल बनेंगे हाथ

शम्भूराजा पढ़ते-पढ़ते रुके। येसूबाई ने पत्र अपने हाथ में ले लिया। वे धीर-गम्भीर स्वर में आगे की पंक्तियाँ पढ़कर सुनाने लगीं—

अटका प्रवाह तो पानी रुक जाएगा
जन मन की गाँठ से अवरोध बन जाएगा
जन मन की प्रीति से प्रवाह चलता रहे
तो सारा कार्य भी निरन्तर बनता रहे
जन मन की गाँठ से उपेक्षा आपकी होगी
आपस में लड़ने से जीत शत्रु की होगी
समय की गति देख क्रोध को निवारिये
क्रोध आये तो भी निज अन्तर में राखिये

उन पंक्तियों का अनेक बार वाचन और मनन किया गया। सम्भाजी राजा और महारानी उसी प्रकार बहुत समय तक बैठे रहे। एक अलग पंक्ति ने मस्तिष्क में हलचल मचा दी थी।

बहुत समय के बाद येसूबाई ने कहा, "औढ़ा के पठार पर घटित घटना का समाचार अनेक बार सुनने में आया था। जिन लोगों की हत्या की गयी थी उनके स्वजन सज्जनगढ़ जाकर स्वामी जी से मिले थे।

"वे सारी शिकायतें मैंने सुनी हैं। इतना ही नहीं, उनका यह भी कहना है कि शिवाजी का पुत्र अपने पिता जैसा नहीं निकला। वह बद्‌दिमाग है, कान का कच्चा है, विलासी और पागल है। राज्य डूबेगा, विनष्ट होगा। और कुछ?"

शम्भूराजा की मुद्रा अत्यन्त कठोर हो गयी थी। उसी समय येसूबाई ने धीरे से कहा, "विशेष रूप से बाला जी आवजी स्वामी जी के बहुत समीपी और प्रिय शिष्य थे। किन्तु राज्याभिषेक के पहले पन्हाला और रायगढ़ पर जिन लोगों ने खुले आम विद्रोह किया और जिन्हें हमारे लोगों ने परास्त किया, उन सभी के स्वजनों ने स्वामी जी के पास जाकर खूब शिकायतें की हैं।"

शम्भूराजा कुछ समय तक मौन भाव से बैठे रहे। तब फिर पत्र को अपनी आँखों के सामने ले आते हुए येसूबाई ने कोमल स्वर में कहा—

"जो भी हो पर इतना तो सत्य है कि इस पत्र को भेजने में स्वामी जी का उद्देश्य मांगलिक और पवित्र ही होगा? इन पंक्तियों को सुनें—

जन जन को एकत्र करो और सबमें भर दो ऐक्य विचार
टूट पड़ो यवनों पर मिलकर राष्ट्र प्रेम का हो विस्तार
जो है उसकी रक्षा कर लो जोड़ो और करो विस्तार

उन तरल, पवित्र और सरस पंक्तियों ने शम्भूराजा के मन को फिर से उल्लसित कर दिया। मुख पर से विषाद की छाया मिट चुकी थी। उन्होंने भावुक होकर कहा—"आपकी बात सच है रानी। औरंगजेब के साथ हमारा महासंग्राम चल रहा है। स्वामी जी वहाँ अपने ध्यान, चिन्तन और परमेश्वर की सेवा में लगे हैं। यहाँ के सारे समाचार उन्हें किस प्रकार पहुँच सकते हैं? जिन्हें युद्ध भूमि ही नहीं, किसी भी प्रकार का कोई कार्य ही नहीं है वे ही समय-समय पर उल्टी-सीधी बातें करते रहते हैं। महारानी, मुझे लगता है कि हमें भी अपने मन की बात पत्र द्वारा स्वामी के पास भेजना चाहिए।"

"वाह! बहुत खूब!"

तब तक भोर बीत चली थी। एक खिड़की से कावले का पहाड़ और दूसरी खिड़की से दूरी पर स्थिर जगदीश्वर के मन्दिर का कलश दिखाई दे रहा था। शम्भूराजा ने उसी समय स्नान, पूजा, अर्चना आदि समाप्त किया। वस्तुतः शयनकक्ष में बगल में पड़ी दुलाई की तरह नींद भी रातभर अलग ही धरी रह गयी थी। खंडो बल्लाल को पहले ही सन्देशा भेजा जा चुका था। पूजा के कपड़ों में शम्भूराजा अपने मन्त्रणा कक्ष में बैठ गये। माथे पर लगा अष्टगन्ध का तिलक अभी ताजा था। गले की तुलसी माला पर हाथ फेरते हुए बल्लाल को एक-एक शब्द बोलने लगे—

"प्रति पुण्य श्लोक सन्त रामदास स्वामी गोसावी को क्षत्रिय कुलावतंस शम्भूराजा छत्रपति की ओर से सादर अभिवादन।

मराठों को संगठित करने और महाराष्ट्र का विकास और विस्तार करने की आपकी प्रबल इच्छा है। अपने हिन्दवी स्वराज्य और कैलासवासी मेरे पिताजी के प्रति स्वामी जी को अत्यधिक स्नेह था। इसके लिए हम स्वामी जी के प्रति सदैव ही ऋणी रहेंगे। जिन उदात्त शब्दों से स्वामी जी ने पिताजी को गौरवान्वित किया है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सटीक शब्द, गहन भाव और हृदय का माधुर्य शब्दों में इस प्रकार प्रवाहित होता है जैसे केवड़े के पुष्प से सुगन्ध प्रवाहित होती है। स्वामी जी ने जिन गरिमामय शब्दों में बड़े महाराज गौरवान्वित है उसके आगे तो कालिदास और भवभूति भी फीके लगते हैं।

अच्छा हुआ जो आपका पत्र समय पर मिल गया। उस समय हम बड़े समुद्री

युद्ध की तैयारी में पूरी तरह संलग्न हैं। शिवाजी महाराज के समय के कुछ वरिष्ठ और अनुभवी अष्ट प्रधानों तथा अधिकारियों की हमारे हाथों हत्या हुई है। यह सच है। किन्तु उनके परिजनों द्वारा हत्या के कारणों के जो आरोप मुझ पर लगाये गये हैं, वे सभी बेबुनियाद हैं। हिरोजी काका अन्नाजी दतो जैसे अनुभवी पुरुषों की उँगली पकड़कर हम बड़े हुए हैं। एक समय ये सभी स्वराज्य आधार स्तम्भ रहे हैं। हम बचपन में जब महल में या दरबार में घूमते थे तो उन्हें अपने सगे चाचा के रूप में ही देखते थे।

एक ओर हमारे पुण्य प्रतापी पिताजी स्वर्गवासी हो गये थे। दूसरी ओर पागल हाथियों के झुंड की भाँति औरंगजेब हिंदवी स्वराज्य पर आक्रमण कर रहा था। उस समय हमें सहारा देने की जगह अपने-अपने स्वार्थों और अपनी छोटी-मोटी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ये कर्मचारी और अधिकारी राजद्रोह पर उतर आये। नौ-दस वर्ष के बच्चे को राजगद्दी पर बिठाने की इनकी मूर्खता मैंने देखी। फिर भी मैंने इन्हें राजद्रोह की सजा नहीं दी। उन्हें निष्कासित करने का सरल रास्ता नहीं अपनाया। उल्टे हमने उन्हें हँसते-हँसते प्रधान पदों की मालाएँ पहना दीं। उन्हें पदभार का सुवर्ण कंगन पहना दिया। उन्हें जिस घोड़े से उतारा था, उसी पर फिर बिठा दिया। राज्य शास्त्र के अनुसार राज्यद्रोह जैसे अक्षम्य अपराध के लिए हमने उन्हें ऊँचे पहाड़ से कूदने के लिए विवश नहीं किया। किन्तु उन्होंने एक बार नहीं बार-बार हमारी थाली में जहर घोला। उनके अपराध के आगे भी राजा को झुक जाना चाहिए क्या?

स्वामी जी, आप कभी भी रायगढ़ पर पधारें। स्वय सभी प्रकार के कागजात देखें। यदि किसी प्रकार दोष हो तो हमें बतायें। जीजामाता की तरह की युग निर्मात्री स्त्री हमें आजी के रूप में मिलीं। उनके सामने पिताजी के आशीर्वाद से बहुत कम उम्र में ही हमने रायगढ़ का कार्यभार चार वर्ष तक स्वतन्त्र रूप से सँभाला। ब्राह्मण होने के नाते कौन लिहाज करता और मराठा होने के नाते कौन चिन्ता करता है? ऐसे विवेकशील पिता की सन्तान होने का मुझे सौभाग्य मिला। रामायण महाभारत का अध्ययन किया। कालिदास, भवभूति जैसे नाटककारों के नाटकों का पठन किया। देव भाषा आत्मसात की और कोमल ब्रजभाषा के रस सागर में भी डुबकी लगायी।

केवल बालाजी पन्त भूल से मारे गये। उस दुख से मुझे इस जन्म में मुक्ति मिलने वाली नहीं है। उस अपराध को तो हम स्वीकार करते ही हैं। किन्तु उनके परिवार को महल में आश्रय देकर उन्हें अपने परिवारजन की तरह ही पाल-पोस रहे हैं। अन्य राजद्रोहियों की बात अलग थी।

स्वामी जी, अब तो हिन्दवी स्वराज्य के सीने पर हमारा जन्म-जन्मान्तर का शत्रु औरंगजेब आ बैठा है। उसके साथ पाँच लाख पैदल और चार लाख हाथी-घोड़ों की सेना है, ग्यारह पीढ़ियों की तैमूरों की दौलत भी। फिर भी हम अपने छोटे

से नवनिर्मित स्वराज्य बचाने के लिए दिन-रात यथासम्भव प्रयत्न कर रहे हैं। आज औरंगजेब की मुगल सेना के प्रचंड प्रवाह को रोकना अपनी छोटी सेना के साथ स्वराज्य की रक्षा करना और अवसर मिलते ही औरंगजेब को समाप्त करना ही हमारा परम धर्म है। यदि इस कालसर्प को समय पर रोका नहीं गया तो इस प्रदेश के गाँवों और गली-मुहल्लों में उसका विष फैलने लगेगा और हमारे पिताजी शिवाजी महाराज के सपनों का महाराष्ट्र टिक नहीं पाएगा।

देश धर्म और मिट्टी के ईमान के लिए हम रात-दिन एक कर रहे हैं। अकर्मण्य प्रमादी पुरुषों की भाँति कुटिल और विलासी खेल खलने का समय किसके पास है? औरंगजेब के पुत्र शहजादा अकबर हमारी शरण में आये हैं। उनके साथ मारवाड़ के दुर्गादास राठौर भी हैं। औरंगजेब के विरुद्ध स्वदेशियों को पंक्तिबद्ध करने के लिए हम रात दिन विचार-विमर्श कर रहे हैं। हरसम्भव प्रयास कर रहे हैं। अम्बर के राजा राम सिंह के साथ भी हमारा पत्राचार हो रहा है। इस दिशा में सफलता मिलते ही सबसे पहले आपको सूचित करूँगा।

स्वामी जी, वस्तुत: पिछले आठ वर्षों से अपने शरीर में बारूद का भस्म लपेटे हम रणचंडी की पूजा कर रहे हैं। आप अपने मठ के भीतर परमेश्वर के चिन्तन मनन में व्यस्त हैं। बीच में बिलबिलाने वाले कीड़ों का क्या विश्वास करना। मुझे पहाड़ जैसी समस्याओं और दुर्दान्त शत्रुओं का जरा भी भय नहीं लगता। किन्तु आप जैसे महान साधक और पहुँचे हुए सन्त के कानों तक पहुँचने वाले कनखजूरों से मैं बहुत भयभीत होता हूँ।

स्वामी जी, हमारे इस धर्मयुद्ध के लिए अपना आशीर्वाद दें। जिन अधिकारियों और कर्मचारियों को दंडित होने से स्वामी जी को इतना दुख पहुँचा है, उनके बारे में हम इतना ही कहेंगे कि हमारी हर साँस के साथ आज भी हमारा हृदय तड़पता है, रोता है। उन सहकर्मियों की काली करतूतों के कारण विवश होकर बार बार उनके द्वारा राजद्रोह किये जाने के कारण उन्हें हाथी के पैरों तले कुचलवाना पड़ा।"

चार

ताड़वनों में कौवे चिल्ला रहे थे। नागोठण की खाड़ी के पास शम्भूराजा और कवि कलश का डेरा पड़ा था। शम्भूराजा की प्रात:काल से ही बहुत देर तक पूजा चलती

थी। उनके राजदरबार में आने से पूर्व कवि कलश नियमित रूप से दरबार में आते थे। अपने नियम के अनुसार आज भी वे दरबार में पहले आ गये थे। खाड़ी के निचले हिस्से में शहजादा अकबर का बड़ा तम्बू खड़ा किया गया था। शहजादे को बहुत विलम्ब से जागने की आदत थी। इसलिए उसके नौकर भी देर से ही उठते थे। किन्तु दुर्गादास नित्य की भाँति तम्बू के पास आकर बैठ गये थे। वह शहजादे से बार-बार कहते—

"अरे अकबर! कम से कम युद्ध भूमि में जल्दी उठा करो। इन मराठों को देखो, किस तरह घोड़ों पर चलते-चलते रोटी खाते हैं। हर समय युद्ध के लिए तैयार रहते हैं।"

"क्या करूँ दुर्गादास? मेरे शरीर में बादशाही खून है। ये मराठे बंजारों की तरह भटकने वाले लोग हैं। ये किसी भी तरह जी सकते हैं किन्तु बादशाह को तो अपनी शान के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिए।"

"शहजादे! ये सम्भाजी राजा अपनी सुख सुविधा, अपनी व्यवस्था का कितना ध्यान रखते हैं? उनसे तो सीखो।"

दुर्गादास जब भी ऐसा कुछ कहते अकबर हँसकर कहता, "दुर्गादास! आप हिन्दू हो इसलिए इस शम्भूराजा—जमींदार के लड़के के लिए आपके मन में इतना आदर है। लेकिन मैं भविष्य में शम्भूराजा या किसी का भी कोई एहसान अपने ऊपर नहीं रखूँगा। कल जब मैं हिन्दुस्तान का बादशाह बनूँगा, इस बेचारे शम्भू को एक के बदले दो सूबे इनाम में दूँगा।"

अकबर इस प्रकार व्यर्थ और फालतू बातें करता तो दुर्गादास अपना सिर पीट लेते थे।

कवि कलश फौजी दरबार में बहुत देर से शम्भूराजा की प्रतीक्षा कर रहे थे। शम्भूराजा ने महाड़ के दादाजी प्रभु देशपाडे को प्रात:काल ही बुलाया था। इसी समय मस्तक पर अष्टगन्ध तिलक धारण किये, तेईस वर्ष के गोरे चिट्टे, पौरुषेय मुद्रा वाले शम्भूराजा फौजी दरबार में पहुँचे। पहरेदारों और दरबारियों ने तत्परता से उनका अभिवादन किया। दरबार में बैठते सम्भाजी राजा की नजर दादजी देशपांडे पर जा टिकी। उन्हें बिना कुछ बोलने का अवसर दिये, शम्भूराजा ने कहा, "देशपांडे काका अपने स्वराज्य के अष्ट प्रधानों में एक सम्मानित स्थान मैंने आपके लिए सुरक्षित रखने का निश्चय किया है।"

शम्भूराजा के इस उद्‌गार से देशपांडे उल्लसित हो गये। दादजी देशपांडे को बड़ी लालसा थी कि अष्ट प्रधानों में उन्हें भी कोई सम्मानित स्थान मिले। दादजी ने कृतज्ञता से शम्भूराजा को नमन किया। शम्भूराजा बोले, "प्रधानों के इस आसन तक पहुँचने के लिए एक आश्वासन देना होगा।"

"कौन-सा आश्वासन महाराज?"

"कोंकण का यह टेढ़ा-मेढ़ा समुद्र तट, यहाँ के बन्दरगाह, यहाँ की खाड़ियाँ, यहाँ की ऊँची-ऊँची लहरें और लहरों को चीरते हुए जाने वाले यहाँ के रास्ते आपके परिचित हैं। आपसे अधिक उन्हें और कोई नहीं जानता। इसलिए आप बिना विलम्ब किये तैयार हो जाएँ। जंजीरे पर आक्रमण करके उस सिद्दी को समाप्त करें। स्वराज्य की इस महान सेवा से स्वयं को पवित्र करें।"

दादजी देशपांडे उलझन में पड़ गये। वे कुछ काँपते हुए स्वर में बोले—"महाराज पानी में तो क्या? आप यदि आग में भी कूदने को कहेंगे तो हम रंचमात्र भी नहीं हिचकेंगे। परन्तु इस अवसर पर एक और बात का ध्यान रखना आवश्यक है। अन्यथा धोखा हो जायेगा।"

"कौन सी बात?"

"महाराज! उस जंजीरे की तटबन्दी शिवाजी महाराज जैसे प्रतापी राजा के सामने भी नहीं झुकी। उसे मुगल दूर से सलाम करते हैं। पुर्तगाली और अँग्रेज जैसे फिरंगी भी उससे आतंकित हैं। ऐसे खतरनाक अभियान पर निकलना, इस तरह की खतरनाक योजना बनाना शेर का शिकार करने जैसा है।"

"हाँ, मुझे वह सब पता है।" सम्भाजी ने हँसते हुए कहा।

"सूबेदार! जंगल के अनेक प्राणी शरीर से बहुत बलशाली होते हैं। किन्तु उनमे से कितनो की जान उनकी छोटी सी पूँछ में बसती है।" देशपांडे की आँखें चमकीं। उन्होने बीच में ही शम्भूराजा से पूछा—"कौन है जंजीरे की पूँछ?"

"उंदेरी का टापू। कुलाबा के पास का। उसके लिए जितना धन लगे लीजिए। फौज ले जाइए। कुछ भी कीजिए। लेकिन उंदेरी यह पूँछ रौंद दीजिए।"

अपनी जरी के रूमाल से सिर का पसीना पोंछते हुए महाड़कर देशपांडे हँसते हुए बोले, "महाराज यह पूँछ भी बहुत विषैली है। उस थल गाँव के किनारे खूब मजबूत किला है। उस किले में ही अँग्रेजों का बारूदखाना है। वहाँ से पानी में एक मील पर उंदेरी टापू है। कोई भी प्रसग उपस्थित होने पर ये अँग्रेज उन हब्शियों की सहायता के लिए खड़े हो जाते हैं। अभी भी खड़े रहेंगे।"

सम्भाजी राजा कुछ गम्भीर हो गये। आगे बढ़कर उन्होंने देशपांडे के हाथ में पान, सुपारी, नारियल दिया। उसे अपने माथे से लगाते हुए देशपांडे ने शम्भूराजा को सम्मानपूर्वक प्रणाम किया। तब उनका हाथ अपने हाथ में लेकर शम्भूराजा अवरुद्ध कंठ से कहने लगे—"काका! यह राजपुर की घाटी बाजी प्रभु देशपांडे द्वारा पवित्र की गयी धरती है। इन सारी बातों को आप भली-भाँति जानते हैं। हम नया क्या बता सकते हैं? किन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि यदि आपने उंदेरी पर विजय पताका

फहरा दी तो कोंकण तट पर भी एक पवित्र नवीन घाटी की स्थापना होगी।"

अपने साथियों में उत्साह भरने के शम्भूराजा के ढंग से कवि कलश बहुत प्रसन्न हुए। उंदेरी पर आक्रमण करने का अर्थ था आग से खेलना। इसलिए दादजी देशपांडे कुछ चिन्तित दिखाई पड़ रहे थे। किन्तु शम्भूराजा केवल देशपांडे पर जिम्मेदारी डालकर चुप नहीं बैठे। वे स्वयं भी इस अभियान की तैयारी में लग गये। शस्त्रास्त्र, तरांडी, छोटी-बड़ी नौकाएँ आदि छोटी-छोटी बातों पर पूरा ध्यान दे रहे थे। समुद्रीतट पर भावी युद्ध का अनुमान शम्भूराजा को पहले ही हो चुका था। इसलिए उन्होंने शिवाजी महाराज द्वारा बनवाई गयी कुलाबा की तटबन्दी का बचा खुचा महत्त्वपूर्ण कार्य छः सात महीने में पूरा कर लिया था। वहीं पर बारूद का समृद्ध भंडार बनाया गया था। इसके अतिरिक्त सागरगढ़ पर भी अनाज और बारूद की गोदामों को खचाखच भर दिया गया था। नागोण्णा और गोध्या की खाड़ी में बाइस गलवतें तैयार की गयी थीं। दरिया सारंग, दौलतखान और भायनाक भंडारी साथ में थे ही। चार हजार सैनिक तैयारी में जुटे थे। मैनिकों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें दो महीने का वेतन पहले ही दे दिया गया था।

अभियान की तैयारी चल रही थी। उसी समय कवि कलश ने शम्भूराजा से धीमे स्वर में कहा, "राजन, किसी किसी व्यक्ति की चालाकी का अनुमान लगाना भी कठिन है।"

"किसके सम्बन्ध में कह रहे हैं आप?"

"अपने कोंडाजी बाबा फर्जन्द। उनकी उम्र पैंसठ वर्ष है। दिखते पचास के हैं। शरीर से स्वस्थ और बलिष्ठ हैं। फिर भी इस उम्र में इस प्रकार की अशिष्टता?" कवि कलश व्यथित स्वर में बोले।

"हुआ क्या है? कविराज! आपको जो कुछ कहना है साफ साफ कह दें।"

"राजन, समुद्र पार के देशों से हीरे जवाहरात इकट्ठा करने का शौक तो इन सिद्दियों को है ही साथ ही दुनिया की सुन्दरतम ललनाओं का शौक भी इन हब्शियों को कम नहीं है। सुना जाता है कि जंजीरे पर इन लोगों ने दुनिया भर की गोपियों का गोकुल बना रखा है।"

"होगा।"

"ऐसी बात नहीं है—किन्तु अब वहाँ मराठों नाते रिश्ते बन रहे हैं। इसलिए कहता हूँ।"

"मतलब?"

"वहाँ पर नवाब सिद्दी कासिम की तीन अति सुन्दर रक्षिताएँ हैं। इन्हीं में एक नीली और पीताभ आँखों वाली इरानी युवती दिलरुबा है। उसी पर हमारे कोंडी

बाबा की नजर पड़ गयी। कोंडी बाबा पर कासिम का इतना भरोसा है कि वह उसके गले का हार बन गया। सिद्दी कोंडाजी पर इतना प्रसन्न हुआ कि उन्हें दिलरुबा का हाथ पकड़ा दिया। यही नहीं दोनों के लिए अपना एक महल भी दे दिया।"

शम्भूराजा ने कवि कलश की तरफ घूरकर देखा और सीधा प्रश्न किया—"क्यों कविराज, जंजीरे की सेवा में जाने का विचार तो नहीं है न?"

शम्भूराजा के इस प्रश्न पर दोनों खुलकर हँसे। किन्तु हँसते-हँसते शम्भूराजा एकाएक गम्भीर हो गये। उन्होंने कहा, "कविराज इस सारे प्रकरण में मुझे तो कुछ दाल में काला दिखाई पड़ रहा है। अन्यथा उस सिद्दी कासिम जैसा पत्थरदिल आदमी हमारे कोंडाजी को इतना क्यों चाहता है?"

जब दादजी देशपांडे की सेना खाडी से बाहर निकलने लगी तो शम्भूराजा चिन्तित स्वर में कहने लगे—"काका देशपांडे शीघ्रता कीजिए। खबर है कि वह औरंगजेब शीघ्र ही दक्षिण में पहुँचने वाला है। उसके आने से पहले हमें इस सिद्दी को पानी में डुबाकर मारना है। एक बार इस उदेरी का काम तमाम हो जाये तो उसके बाद आपको जंजीरे पर भी आक्रमण करना है।"

"जैसी आज्ञा महाराज।"

"जंजीरे का यह अभियान सफल होने के साथ ही रायगढ़ पर अष्ट प्रधान मंडल में एक सम्मानित स्थान आपकी प्रतीक्षा कर रहा होगा।"

रोध्या से शम्भूराजा तुरन्त रायगढ़ लौट आये। राजनैतिक गतिविधियों में पुन: सक्रियता आ गयी। शम्भूराजा के अनेक सरदार मुल्हेर, सोलापुर, अहमदनगर जैसे मुगल शासित प्रदशों में गये थे। उनकी पचीस-तीस हजार की फौज मुगलों पर आक्रमण कर रही थी। लूट-पाट भी चल रही थी। हंबीरराव के नेतृत्व में मराठों की फौज एक बार पुन: बुरहानपुर पर आक्रमण कर रही थी। उसी समय दादजी के सबल नेतृत्व में उंदेरी पर आक्रमण किया गया था। शम्भूराजा को एक ही समय में अनेक स्थानों पर ध्यान देना पड़ रहा था। अलग-अलग जगह भेजी जाने वाली रसद, बारूद आदि का हिसाब रखना पड़ता था। अनेक स्थानों से गुप्तचर रायगढ़ पर आते थे। समाचार प्राप्त किये जाते थे। फिर नयी सूचनाओं के लिए गुप्तचरों को यथावसर भेजा जाता था।

इस समय राजकीय कार्य-व्यापार का भार येसूबाई ने अपने हाथ में ले लिया था। अष्ट प्रधान और अन्य सहायक तो साथ में थे ही। शिवाजी महाराज के शासन काल में जिस प्रकार जीजामाता सारी राजनैतिक गतिविधियों पर ध्यान रखती थीं उसी प्रकार येसूबाई की निगाह भी प्रत्येक गतिविधि को बारीकी से देखती रहती थी। जहाँ कहीं भी जरा-सी चूक होती, वे तत्काल पकड़ लेती थीं। इसलिए सभी कर्मचारी और अधिकारी उनसे भयभीत रहते थे।

एक दिन सुबह-सुबह गुप्तचर रायगढ़ पर आये। खबर की गम्भीरता का अनुमान कर महारानी येसूबाई ने स्वयं दरवाजा खोला। गुप्तचर बिना कुछ बोले चुपचाप खड़े रहे। राजमहल का समाचार बारूदखाने तक पहुँच गया। तेज कदमों से चलते हुए शम्भूराजा वहाँ पहुँच गये। सभी के उदास चेहरे देखकर उन्होंने अनुमान लगा लिया था। उन्होंने खड़े-खड़े ही समाचार पढ़ा। उंदेरी की लड़ाई में मराठी सेना का सर्वनाश हो गया था।

क्रोध से झुँझलाते हुए सम्भाजी बोले, "मैंने बार-बार समझाया था कि बड़ी सावधानी और चतुराई से युद्ध लड़ना है।"

गुप्तचर कहने लगा—"दादजी की योजना एकदम ठीक थी। उन्होंने आस-पास की सभी खाड़ियों की नाकाबन्दी कर ली थी। आरम्भ में ही तोप के गोले से तटबन्दी में एक बड़ी सुराख बना ली थी। उसमें से दो सौ बहादुर मराठे सैनिक दुश्मन की गोलियाँ झेलते हुए भीतर जाने में सफल हो गये थे।"

"फिर कठिनाई कहाँ पैदा हुई?"

"समुद्र के किनारे थल गाँव के पास 'खूबलढ़ा' नाम का एक किला है। उसमें अँग्रेजों का बहुत बड़ा बारूदखाना है। वहीं से फिरंगी अँग्रेज ऐन समय पर हब्शियों की सहायता के लिए दौड़ पड़े। उन्होंने अपनी तोपों से भयानक आक्रमण किया। सब समाप्त हो गया।"

"समाप्त हो गया? मतलब?" शम्भूराजा की आँखों के गोलक घूमने लगे।

"अनेक मराठों ने लड़ते-लड़ते उन्देरी पर अपने प्राण दिये। दुर्दैव से अस्सी जीवित मराठा सैनिक शत्रु के हाथ लग गये। उस दानव कासिम ने बाँस की तरह उन अस्सी मराठों के सिर बेरहमी से काट दिये। उनके शरीर ऊपर किले से पानी में फेंक दिये गये। अस्सी सिरों को चार बड़ी-बड़ी गठरियों में बाँधकर कासिम उन्हें लेकर जाने कहाँ चला गया।"

"और अपने दादजी देशपांडे कहाँ हैं?"

"उस प्रभुवीर ने बहुत पराक्रम दिखाया। उनके हाथ की खूनी तलवार छपाछप चल रही थी। किन्तु इसी समय तोप का एक गोला उनकी बाईं टाँग को छूता हुआ निकल गया। गन्धक के कुछ टुकड़े उनके पैर में धँस गये और दादजी तट के नीचे आ गिरे। अपने पुण्य प्रताप से वे नीचे खड़े जहाज में गिरे। अपने सिपाही उन्हें चेऊल ले गये हैं। वहीं उनका उपचार हो रहा है।"

शम्भूराजा बहुत उद्विग्न हो गये थे। वे इस प्रकार तिलमिलाये जैसे किसी ने बाँस से उनके सिर पर वार कर दिया हो।

चार दिनों में ही गुप्तचरों ने मुम्बई से मराठी वकील का सन्देश दिया। उसे खंडो बल्लाल ने पढ़ा और घबराई हुई स्थिति में वे शम्भूराजा के पास आ खड़े हुए।

उनके चेहरे की घबराहट देखकर शम्भूराजा ने पूछा—"क्या हुआ खंडोजी?"

"वह हैवान सिद्दी अस्सी मराठा सैनिकों के सिर लेकर मुम्बई गया था।"

"तो?"

"मझगाँव के बन्दरगाह में ले जाकर उस हरामखोर ने उनका बडा उपहास किया। भालों की नोकों में उन खोपड़ियों को खोंसकर उसने जुलूस निकाला। शराब के नशे में धुत्त सैनिकों ने ढोल-तासे बजाते हुए जुलूस निकाले।"

"क्या कह रहे हो खंडोजी?"

"जी हाँ! महाराज! यह तो कुशल हुई कि इसकी सूचना अँग्रेज गवर्नर को मिल गयी। उसने सिद्दी के इस जुलूस पर रोक लगा दी। इससे आगे होने वाला अपमान टल गया।"

शम्भूराजा अचानक खडे हो गये। उनका सिर चकराने लगा। आँखों से अंगारे फूटने लगे। क्रोध में उन्होंने पैर को जमीन पर दबाते हुए हाथ से दीवार में लगी खूँटी को खींचा। उनका आवेश और सन्ताप इतना अधिक था कि खूँटी उखड़कर हाथ में आ गयी। उस दिन सम्भाजी ने अन्नजल कुछ भी ग्रहण नहीं किया। वे मन्दिर की ओर भी नहीं गये। किन्तु उनकी अंगारों-सी दहकती आँखें और उनकी हर साँस तथा उनका हर कदम, सभी को यह मूक सकेत दे रहे थे कि 'अब रुकना नहीं है। अब नहीं रुकना है।'

शम्भूराजा के बिना कहे ही सारे घुडसवार और सैनिक उनके आसपास इकट्ठे हो गये। अधिकारी भी जमा हो गये। दरवाजे से बाहर निकलते हुए कुछ स्मरण करके वे एकाएक मुड़े और राजगृह के मन्दिर की ओर चले गये। वहाँ पर उन्होंने किसी देव प्रतिमा की ओर देखा तक नहीं। देवालय के सामने वाले हिस्से में लाल कपड़े में लपेट कर रखी गयी पादुका को उठाकर अपने माथे से लगाया। शिवाजी महाराज को स्मरण करते बैठ गये। उनके पीछे पीछे वहाँ पहुँची येसूबाई ने कहा—

"ऐसा नहीं लगता कि जजीरा इतनी सरलता से हाथ में आ जाएगा।"

"आपका कहना ठीक है महारानी। इन पुर्तगाली, डच, अँग्रेज और सिद्दी फिरंगियों को यह सह्य नहीं है कि जंजीरा मराठों की झोली में आ जाये, क्योंकि जंजीरे पर मराठी ध्वज के फहराने का अर्थ है महासागर पर मराठों की अपराजेय सत्ता। इस तथ्य को वे भली प्रकार जान चुके हैं।"

शम्भूराजा ने शिवाजी महाराज के स्मृति चिह्नों को माथे से लगाया। उनके मुँह से शब्द निकले—

'पिताजी अब प्रतीक्षा समाप्त हुई। मैं स्वयं जंजीरे के महाभयानक मगरमच्छ के मुँह में हाथ डालने जा रहा हूँ। अब देखना है कि कौन किसको निगलता है?'

पाँच

बुरहानपुर के महल में शाहंशाह टिके हुए थे। चिरागों के प्रकाश में महल चमक रहा था। सिर के ऊपर हंडेदार झूमरें जल रही थीं। बाईं ओर परदे की आड़ में उदयपुरी बेगम, शहजादी जीनतउन्निसा और दूसरी बहू-बेगमें बैठी हुई थीं। अपने निजी पारिवारिक जनों के साथ आलमगीर का विचार-विमर्श चल रहा था। इसी समय शाही खोजा घबराते हुए आलमगीर के सामने आया। झुककर अत्यन्त दीन वाणी में बादशाह के अत्यन्त प्रिय तुर्की घोड़े की मृत्यु की सूचना दी। इसे सुनते ही शाहंशाह क्रुद्ध हो गया। क्रोध में ही पूछने लगा—

"हसन मियाँ ऽ! अपने काम में आपकी कोई रुचि नहीं दिखाई पड़ती। घोड़े की पिछली टाँग में जरा-सा घाव लगा था। उतने जरा से घाव से घोड़े की मौत हो गयी।"

हजरत हसन काँपते हुए बोले, "जहाँपनाह से रास्ते में मैं बार-बार यही विनती कर रहा था कि घोड़ा बीमार है। इसके साथ पीछे चार दिन रुककर मैं आता हूँ। किन्तु स्वामी सवार ने उसे वैसे ही घसीटते हुए ले आने का हुक्म दिया था।"

"हूँ ऽऽ"

"माफी चाहता हूँ हुजूर, लेकिन जख्म के लाइलाज होने से पहले उसे ठीक कर लेना चाहिए था।"

बादशाह चमका! अपने वजीर एवं अन्य कर्मचारियों की ओर देखते हुए बोला, "देखो एक मामूली आदमी जाते-जाते सहज रूप से किस प्रकार अक्लमन्दी की नसीहत देता जा रहा है—'जख्म का इलाज होने से पहले उसे ठीक कर लेना चाहिए।"

लगभग तेईस वर्ष बाद बादशाह बुरहानपुर आया था। फिर भी तेईस वर्ष पूर्व अपने यौवन काल की स्मृतियाँ बादशाह के दिल में ताजी बनी थीं। इस परिसर में आम के कोमल पल्लवों को देखकर बादशाह अधीर हो उठता था। पत्तों से भरी डालियों के पीछे किसी की खनकती हँसी उसके कानों में पहुँचती थी। बादशाह उस समय सोलह-सत्रह वर्ष का था। तभी उसे आम के बगीचे में वह नवयौवना मिली थी। उसका नाम जैनाबादी था। किन्तु सभी उसे हीरा कहकर ही पुकारते थे।

आम के बगीचे में आम का वह वृक्ष नये कोमल पल्लवों से लदा हुआ था। बाग में औरंगजेब के आने की कोई खबर उसे नहीं थी। अपनी मदहोशी में वह ऊपर उछली और अपनी कोमल बाँहों को ऊपर उठाया। बादशाह को लगा जैसे सूर्य

की किरणों को छूकर कोई तलवार चमक उठी हो। उसकी पतली छरहरी शरीर यष्टि, कजरारी कत्थई आँखें, नाजुक गड्ढेदार चिबुक, दरके अनार से अधखुले ओंठ और उसकी खनकती हँसी का बादशाह पर यह असर हुआ मानो किसी ने उसके सीने में कटार उतार दी हो। औरंगजेब वहीं पर होश गँवाकर बैठ गया। हीरा ने औरंगजेब की जिन्दगी मे जिस तरह अचानक प्रवेश किया वैसे ही एक छोटी बीमारी के निमित्त मे चली भी गयी। लेकिन इससे बादशाह के हृदय में जो गहरा घाव लगा वह कभी भर न सका।

काफिर सम्भाजी के सैनिकों द्वारा ध्वस्त किये गये अपने प्रिय बुरहानपुर का औरंगजेब ने देखा। ध्वस्त हुए महल, लुटी हुई सराफो की दुकाने रास्ते पर टूटकर गिरे हुए दरवाजे, खडहर और मिट्टी के ढेर देखकर बादशाह आग बबूला हो गया। व्यापारियों और नगरवासियों के उदास चेहरे देखे नहीं जाते थे। मिट्टी के एक बडे ढेर के पास से गुजरते हुए बादशाह बगल म ध्वस्त हुए कब्रिस्तान को घूम घूमकर देख रहा था। उसने अपने एक पुराने और जानकार परिचित को हीरा की कब्र खोजने के लिए कहा।

मुल्ला मौलवियो ने धमकी दी थी—"यदि हमे आगे बादशाही हिफाजत नहीं मिलती है तो हम शुक्रवार नमाज भी बन्द कर देंगे।" उसी समय उसकी प्रिय बेगम दिलरस बानू का लड़का होनहार शहजादा अकबर सम्भाजी से मिल गया था। उसने अपने पिता के विरुद्ध जग का ऐलान कर दिया था। इससे आलमगीर बहुत दुखी था। अपनी वरिष्ठता का हवाला देकर बादशाह ने उसे मनाने के लिए जो सन्देशे में भेजे, उन्हें उसने अस्वीकार कर दिया। उल्टे उसने अपने पिता को पत्र लिखकर भेजा—"आपके कार्यकाल में सल्तनत रसातल को चली गयी। मुल्ला मौलवियों की इज्जत समाप्त हो गयी। बुढापे मे तुम्हारे कर्मचारी तुम्हारे अनुशासन में नहीं है। सभी अधिकारी रिश्वतखोर हो गये हैं। एक बूढे बादशाह से प्रजा उम्मीद भी क्या करे?"

अपने शहजादे अकबर के प्रसग मे औरगजेब ने सभी सहकर्मियों की घोर भर्त्सना की थी।

"उस हरामजादे दुर्गादास राजपूत के साथ शहजादा निकल गया है। जहाँ भी मिले उसे रोको, पकड़ मे नहीं आ रहा है तो उसे कत्ल कर दो। ऐसा फरमान मैंने निकाला था। किन्तु दक्षिण मे हमारे सभी कर्मचारी और अधिकारी नामर्द साबित हुए।"

"लेकिन जहाँपनाह, वह दुर्गादास राठौड़ दुनिया भर के बदमाशों का सिरमौर है।" असदखान ने कहा।

"यह बात सच है असदखान।" औरंगजेब ने दीर्घ नि:स्वास लेकर कहा,

"जसवन्त सिंह के बेटे को गद्दी का हक दिलाने के लिए वह कमीना दुर्गादास मेरे पास आया था। दिल्ली में उसने हमारे साथ बहुत बहस की। जसवन्त सिंह की दोनों रानियाँ हमारे बन्दीखाने में थीं। बन्दीखाना लाल किले के पीछे और लाल किला दिल्ली में। कड़ा पहरा और ऊँची तटबन्दी होते हुए भी इस दुर्गादास ने क्या किया? दोनों रानियों को पुरुषों का लिबास पहनाकर, घोड़े पर बिठाकर, हमारे फौलादी पिंजरे से दूर भगा ले गया, असदखान!"

"जहाँपनाह?"

"जख्म गहरा होता जा रहा है। एक खबरनाक राजपूत एक धोखेबाज मराठे से जा मिला है। वह मराठा कोई ऐरा-गैरा नहीं, शेर शिवाजी का बेटा है।"

"किब्लाए-आलम दुर्गादास का सम्भाजी से जाकर मिलना, आग से आग का मिलना है। यह भयानक आग दिन ब-दिन भड़कती ही जाएगी। बुझेगी नहीं।"

बीच में उठकर जुल्फिकार खान बोल पड़ा—

"सच है जवाँ मर्द।" चिराग के प्रकाश में बादशाह की कत्थई पुतलियाँ चमक उठीं। उसकी सफेद दाढ़ी चाँदनी सी चमक उठी। उसने अपनी जाप करने वाली माला को उठाकर आँखों से लगाया। कुरान की आयतें अस्पष्ट शब्दों में बुदबुदाई। उसके चेहरे पर एक अनोखा तेज दमक रहा था। वह गरजा—"आग भड़कने से पहले ही हम उन मशालों को बुझा देंगे।" ऊपर से बादशाह खूब आवेश दिखा रहे थे। किन्तु भीतर से अस्वस्थ और कुढ़ते हुए दिखाई पड़ रहे थे।

बादशाह के बुरहानपुर पहुँचने के दस दिन बाद हो मराठों ने लुत्फुल्लाखान कोक की छावनी पर डाका डाला था। मुगल सेना के बहुत से सैनिक हताहत हुए। दस कोस अन्दर घुसकर मराठे ऐसा साहस करेंगे, ऐसा तो औरंगजेब ने कभी सोचा तक नहीं था। औरंगजेब को वह सब अकल्पनीय लगा। उसी रात किले के पास बारूद के बड़े गोदामों में भीषण विस्फोट हुआ था। यह कोई असम्भव घटना नहीं थी किन्तु सिर मुड़ाते ही ओले पड़ने जैसी स्थिति थी।

बादशाह की उम्र तिरसठ वर्ष होने पर भी उसका शरीर बलवान था। उसकी गति चपल और उत्साहपूर्ण थी। अपनी असीम महत्त्वाकांक्षाओं के कारण उसने अपने सुख चैन को तिलांजलि दे दी थी। तिरसठ वर्ष के बादशाह का उत्साह पचीस वर्ष के तरुण जैसा था। वह अपने सारे कार्य बड़े उत्साह से किया करता था।

दिल्ली में रहकर दुनिया का एक समृद्ध और बलशाली शासक औरंगजेब हमेशा सजग रहता था। नित्य सन्ध्याकाल अपने खास गुप्तचरों से बिना समाचार लिए वह सोता नहीं था। पिछले पन्द्रह बीस वर्षों में उसने अपने गुप्तचरों, खबरियों और कुछ मराठों से भी अनेक जानकारियाँ एकत्र की थीं। इस आधार पर उसने हिन्दवी स्वराज्य का एक नक्शा बनाया था। स्वराज्य की सभी छोटी-बड़ी

नदियाँ, किले, पुराने मन्दिर, घाटियाँ आदि उस नक्शे मे दिखाये गये थे। सेनानियों अथवा कर्मचारियों के नाम लेते ही बादशाह उस जगह पर झट से उँगली रख देता था।

बादशाह अपने सहयोगियों से कहने लगा—"मैंने निश्चय कर लिया था कि एक न एक दिन शिवाजी की हुकूमत को नष्ट कर दूँगा किन्तु पिछले बीस-पचीस वर्षो में हमे फुर्सत ही नहीं मिली। सुयोग से वह शिवाजी भी कम उम्र निकला। उसकी मृत्यु के बाद एक बार लगा था कि अब दक्खिन खाली घोड़े दौडाना है। सारा प्रदेश अपने आप कब्जे में आ जाएगा। लेकिन अफसोस। इस अभियान का रंग तो कुछ और ही दिखाई पड़ रहा है। खैर ठीक है ।"

फिर से बादशाह की नजर नक्शे पर घूमने लगी। उसने असदखान से कहा, "वजीरे आजम, जजीरे के उस सिद्दी को लिखो—उससे कहो—पूरी ताकत के साथ आप कोंकण के किनारे से निकलो उस सम्भाजी का पूरा प्रदेश जलाकर खाक कर दो।"

"जी, जहाँपनाह।"

"उस पुर्तगाली गवर्नर को लिखो—देखो भाईजान सम्भाजी का प्रदेश दिल्ली के आसपास नहीं है। वह तुम्हारे गोवावासियो का पडोसी है। हमने जरा-सा अवकाश दे दिया तो सम्भाजी तुम्हे निगल जाएगा। इसलिए आप दक्षिण कोकण की ओर से मराठो पर हमला करो।"

"जैसा हुक्म हुजूर।"

बोलते बोलते बादशाह ने हसन अली खान पर नजर डाली। "हसन जवामर्द! तुम्हारे जोड का मजहब का रखवाला दूसरा कोई नहीं है। इस्लामी कौम में तुम अपनी तरह के अकेले बहादुर हो। मथुरा में फौजदार के पद पर कार्य करते हुए तुमने विद्रोही गोलुल जाट को जिन्दा पकडा था। कोतवाली में ले आकर उसके टुकडे टुकडे किये थे।"

"जी हुजूर।"

"उदयपुर के आसपास एक सौ छिहत्तर मन्दिरों को तुमने ही जमींदोज किया था। तुम्हारे जैसा धर्म का पालनहार है कोई इस दुनिया में?"

"हुक्म करो हजरत खाली हुक्म करो।" अपनी छाती ठोकते हुए आधा उठकर हसन अली गरजा।

"अपनी बीस पचीस हजार की फौज लेकर नासिक के रास्ते कोकण में जाओ। माहुली के किले पर अधिकार करके भिवंडी और कल्याण को खाक करते हुए रायगढ़ की ओर बढो। एक ओर से पानी के रास्ते जजीरे के हब्शी, दक्षिण से गोवा के पुर्तगाली और तुम पूरे मराठा प्रदेश को नेस्तनाबूद कर दो। तीनो ओर से उसे रौंदते हुए रायगढ़ की ओर आओ। उन मक्कारों के रायगढ़ पर मैं अपना चॉद

सितारा फहराते हुए देखना चाहता हूँ और वहीं पर खुदा की नमाज पढ़ूँगा। ऐसा होने पर आलमगीर को चैन की मौत आये। ऐसी मेरी दिल्ली इच्छा है। अय खुदा इससे बढ़कर मेरी कोई दूसरी हसरत नहीं है।"

बादशाह के जोशीले उद्‌गारों से सभी सवारों, अधिकारियों और कर्मचारियों में उत्साह भर गया, उनकी आँखें चमकने लगीं। शाहंशाह इधर-उधर देखने लगा। वह जहाज की टूटी लकड़ी की तरह कुरकुराते हुए कहने लगा—"देखेंगे, एक तरफ तिरसठ साल का हिन्दुस्तान की सल्तनत का बादशाह, दूसरी तरफ उस जमींदार शिवाजी का नादान-नासमझ बच्चा। एक ओर बाइस विशाल प्रान्तों की दौलत, तैमूर के पाक वंशजो की दो सौ वर्षो की विरासत और दूसरी तरफ मरगट्ठों का जरा-सा लँगोट जैसा स्वराज्य।"

"हम उनका खात्मा करेंगे हुजूर।" जुल्फिकारखान गरजकर बोला।

"पागल मत बनो। खात्मे की फिजूल बात मत छेड़ो, नीचे बैठो।" औरंगजेब कठोर शब्दों में बोला, "तुम सारे लोग मूर्ख हो। अभी चार दिन की ही तो बात है। हिन्दुस्तान के बादशाह की पाँच लाख की सेना यहाँ डेरा डाले थी। फिर भी तो हंबीरराव नामक एक मूर्ख मराठा, यहाँ से कुछ कोस की दूरी पर अपने लुल्फल्लाखान की छावनी पर डाका डाला, वहाँ की रसद लूटी इसका मतलब क्या है? बोलोऽऽ"

सभी ने गर्दने झुका लीं। गम्भीर साँस लेते हुए बादशाह पुन बोला "इसका मतलब इतना ही है कि होशियार रहो। हमारा यह दक्खिन का अभियान कठिन नहीं है लेकिन आसान भी नहीं है। एक जरा सा काँटा बहादुर मर्द के पसीने छुड़ा देता हैं। छोटी सी चींटी ताकतवर हाथी की सूड में घुसती है तो ताकतवर हाथी को कुत्ते की तरह कीचड में लोटा देती है। बेवकूफ मत बनो। जागोऽ जागोऽऽ।"

छह

जंजीरे के सामने विशाल खाड़ी का फैलाव। उसके किनारे राजपुरी नाम का एक छोटा-सा गाँव। उस गाँव के पीछे खड़ा पत्ताड़ा पहाड़। पहाड़ की छाया सामने के जलाशय में पड़ रही थी। वह छाया समुद्र में पाँव पसारकर बैठे हुए महाकाय राक्षस जैसी लग रही थी। निचले हिस्से में राजपुरी गाँव घने पेडों की छाया में छुपा हुआ था। बीच में दिखाई देने वाली मस्जिदों की मीनारें और मन्दिरों के कलश मानो

परस्पर स्पर्धा कर रहे थे। गाँव के पास समुद्र की गहरी खाड़ी कल कल ध्वनि कर रही थी।

सागर में ज्वार आया था और ऊपर आसमान मे बादल भर आये थे। आज का दृश्य कुछ और ही दिख रहा था। पानी में खड़े जंजीरा दुर्ग और किनारे पर स्थित राजपुरी गाँव की दूरी केवल आठ सौ गज थी। राजपुरी के पीछे की पहाड़ी से जंजीरे की सर्पाकार तटबन्दी स्पष्ट दिखाई देती थी। समुद्र से उठने वाली लहरों की प्रतिध्वनि मैदान तक सुनाई देती थी। दुर्ग के चारों ओर तट पर अर्धगोलाकार बुर्ज बने थे। प्रत्येक बुर्ज पर सिद्दी सैनिकों का सजग पहरा लगा रहता था। भूरे बालों वाले हब्शी बड़ी तत्परता से पहरा देते थे। सारा कार्य व्यापार रोज की भाँति चल रहा था। दोपहर ढल चुकी थी। जंजीरे के पिछले हिस्से में अचानक कुछ हलचल हुई। बुर्जो की तीन-चार तोपों में पलीते दिये गये। 'धुड़मऽऽ धामऽऽ, धुड़म धामऽऽ' जैसी कानों के पर्दे फाड़ने वाली आवाज सुनाई दी। सिद्दियों ने केवल अपना अस्तित्व घोषित करने के लिए तोपें दागी थीं। इसके तुरन्त बाद 'अल्लाहो अकबरऽऽ दीनऽऽ दीनऽऽ' जैसी गर्जनाएँ सुनाई दीं।

राजपुरी के निवासी भयभीत हो गये। किनारे पर जो छोटी-मोटी मराठों की सेनाएँ थीं उनके भी होश उड गये। सामने से साठ सत्तर नौकाओं में सिद्दी सैनिक तट की ओर आते दिखाई पड़े। सभी चिल्ला उठे—'आएऽऽ, आएऽऽ, मिद्दी सैनिक आए।' भगदड़ मच गयी। राजपुरी की प्रजा बाहर निकल पड़ी और अपने बाल बच्चों को बचाने का प्रयत्न करने लगी। प्रजा अपनी जान बचाने के लिए पीछे के पहाड़ पर चढ़ने लगी।

उस शाम को दो हजार हब्शियों ने हंगामा मचाया। इसलिए राजपुरी में ही नहीं, तट के आसपास की बस्तियों, रेवदंडा, कोलीवाडा, मुरुड, नादगाँव तक सभी छोटी बड़ी बस्ती में कुहराम मचा हुआ था। हब्शियों ने कितने ही गाँव वालों को नंगा किया, माँ-बहनों की इज्जत लूटी, तबेलों से घोड़े खोल लिए। शम्भूराजा के सैनिक चौकी छोड़कर भाग गये। यह देखकर प्रजा को बहुत दुख हुआ।

आधी मील लम्बाई और डेढ़ मील की परिधि वाला जंजीरा आज अपनी विजय से उन्मत्त हो रहा था। रात में जंजीरे के बुर्जों पर मशालें जलाई गयी थीं। सामने वाले सिंह द्वार के अगले हिस्से में मिद्दी खैरियत खान और सिद्दी कासिम खान, दोनों भाई खड़े थे। मराठों के भाग जाने और सिद्दी सेना की विजय का समाचार उन तक पहुँच चुका था। खैरियत खान ने पूछा—"कामिम भाई, आज की घड़ी में तो आलमगीर का हुक्म हमारे लिए अल्लाह का हुक्म साबित हुआ।"

"बिलकुल, भाईजान, कल सुबह हम खुद समुद्र के उस पार जाएँगे। शाम तक हमारी विजयी सेना रोहा-याण गाँव तक पहुँच जानी चाहिए।"

"जी हाँ, तब तक कल्याण और पनवेल को ध्वस्त करते हुए हसन अलीखान भी उस ओर से पहुँच जाएँगे। मुझे लगता है कि परसों तक हमारी तलवारें रायगढ़ के सीने तक पहुँच जाएँगी।"

कीमती शराब के प्याले खाली करते हुए सिद्दी बन्धुओं ने आनन्द मनाया।

दूसरे दिन प्रातःकाल अपने सात मंजिला शीश महल में कासिम की नींद टूटी। सैनिक अभियान पर प्रातः काल ही जाना था। उसने पर्दा हटाकर बाहर देखा। यह सुबह कुछ विचित्र लग रही थी। काले बादल नीले पानी में उतर आये थे। खाड़ी दिखाई देने वाला पहाड़ भी कुछ विचित्र लग रहा था। जलाशय से उठकर उसकी दृष्टि पहाड़ पर जा टिकी। वह उसी क्षण चकित होकर बिस्तर पर जा गिरा। सामने का दृश्य रोंगटे खड़े करने वाला था। पहाड़ के दायें-बायें सिरे पर भगवे झंडे फहरा रहे थे। एक रात में ही मराठों ने उस किनारे पर क़ब्ज़ा जमा लिया था और शक्तिशाली तोपों को यथास्थान व्यवस्थित कर रहे थे। पिछले दिन भागी हुई प्रजा अपने-अपने घरों में आ चुकी थी। मराठे दृढ़ थे और पैर जमाकर खड़े थे।

मराठों ने सिद्दियों को अपने राज्य में पैर फैलाने का अवसर नहीं दिया। उन्होंने सिद्दियों से पहले ही आक्रमण कर दिया। नीचे की झाड़ियों में शम्भूराजा का घोड़ा खड़ा था और मुरुड और मांदाड़ खाड़ी की ओर से मराठा सैनिक जंजीरे पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ रहे थे। मराठों की योजना बहुत शक्तिशाली थी। तट पर तैनात हब्शी सैनिक भाग खड़े हुए। वे जंजीरे की बिल में चूहों की तरह दुबककर बैठ गये।

राजपुरी पहाड़ की बगल में एक समतल भू भाग पर मराठों का शाही डेरा खड़ा किया गया था। अपने तंम्बू के सामने शम्भूराजा शान से खड़े थे। उनकी तीक्ष्ण दृष्टि समुद्र पर मंडरा रही थी। उनके एक ओर कवि कलश, जोत्याजी, केसकर और अनुभवी दरिया सारंग खड़े थे और दूसरी ओर शहजादा अकबर और दुर्गादास। बगल की एक खाट पर अरब सेनानी जंगेखान बैठे थे। रंगबिरंगी लुंगियाँ और चमड़े के कुर्ते पहने, घने जंगल-सी दाढ़ी बढ़ाए अरबी सैनिक मराठों की अपेक्षा विचित्र दिख रहे थे।

पिछले कुछ दिनों से शम्भूराजा को अरबों से उच्च कोटि का बारूद मिलने लगा था। इस वजह से सिद्दी बहुत व्यथित था।

जंजीरे की प्राचीरों की जोड़ाई बहुत मजबूत थी। अनेक वर्षों से लहरों के थपेड़े खाते हुए भी उसमें कहीं कोई दरार नहीं थी। प्राचीर को सशक्त बनाने वाले चूने और गिट्टी के मसाले को रंच मात्र भी क्षति नहीं हुई थी। पानी में डूबी किले की सीढ़ियों पर ज्वार-भाटे की लहरें टकराती थीं। वहाँ पर बुर्जों पर चलने वाली तेज हवा और लहरों के साथ हमेशा अठखेलियाँ होती रहती थीं।

शहजादा अकबर की ओर देखकर कवि कलश बोले, "जंजीरे के सिद्दी खैरियत खान और कासिम पक्के हैवान हैं। पैसे की लालच में ये किसी भी व्यक्ति को नोच डालने में संकोच नहीं करेंगे।"

"कुछ दिन पहले श्रीबाग और पेण के कुछ अमीर मुसलमान व्यापारियों को भी पकड़कर ले गये। उन्हें उंदेरी के किले में बाँधकर खूब पीटा। हमारे लोग ही नहीं अँग्रेजों के वकीलों ने भी बीच बचाव किया। किन्तु अठारह हजार नकद लेने के बाद ही उन्हें छोड़ा।" शम्भूराजा ने कहा।

इसी तरह का एक और कारनामा हब्शियों ने पिछले महीने किया था। उनकी अत्याचारी सेना ने पनवेल से लेकर चौल तक के सारे मराठी प्रदेश को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया था। उसका बदला लेने के लिए शम्भूराजा ने स्वयं जंजीरे पर आक्रमण किया था। उनके साथ बीस हजार की फौज और छोटी बड़ी कुल तीन सौ नौकाएँ थीं।

शिवाजी महाराज के स्वर्गवास का समाचार पाकर सिद्दी खैरियत और सिद्दी कासिम ने पूरे दस दिन तक जंजीरे पर उत्सव मनाया था। अपने साथ अपनी फौज को भी खूब शराब पिलाई थी। यह सोचकर सिद्दी पागल हो उठे थे कि शिवाजी के स्वर्गवास के बाद मराठा शक्ति का अन्त हो गया है और अब उन्हें कोई भी रोक नहीं सकता। किन्तु थोड़े दिनों में शम्भूराजा ने उदेरी पर आक्रमण करके सिद्दियों का घमंड तोड़ दिया।

गजपुरी के पीछे के पहाड़ पर मराठों ने अपनी पाँच हजार की फौज तैनात की थी। ऊपर पहाड़ से नीचे पानी में देखने से पानी में तैरती नावें कुछ विचित्र दिखाई पड़ती थीं। ऐसा लगता था जैसे राजपुरी के दोनों ओर से बच्चों ने कागज की नावें छोड़ रखी हैं। किन्तु वह मराठों की असली सेना थी। शिवाजी महाराज की मृत्यु के केवल एक वर्ष में ही शम्भूराजा उनसे पाँच कदम आगे निकल गये थे। सुसज्ज सेना संगठित करके पश्चिमी तट पर शासन करने वाले और कुछ शतकों से जमे हुए सिद्दियों को उन्होंने ललकारा था। तीन सौ नौकाओं का बेड़ा लेकर शम्भूराजा स्वयं जंजीरे के समुद्र में उतरे थे।

सिद्दी खैरियत और कासिम अनेक बार किले के बुर्ज पर आकर खड़े होते और भयभीत नजरों से दूरबीन की सहायता से पानी की ओर देखते। राजपुरी से लेकर मुरुड गाँव के तट पर और वहाँ से पद्मदुर्ग की ओर लगभग एक मील तक देखने पर लगभग सौ नौकाएँ तैरती नजर आती थीं। उनका नेता प्रसिद्ध नाविक दरिया सारंग था। इस दिशा से अनेक बार तोप के गोले आकर जंजीरे से टकराते थे। राजपुरी से आगरदांडा और दीघी तक के परिसर में लगभग सवा सौ नावें खड़ी थीं।

इस तरफ का नेतृत्व भयनाक भंडारी के हाथ में था। इसके अतिरिक्त मांदाड़ की खाड़ी में सत्तर नावों का बेड़ा तैयार खड़ा था। मराठा जहाजों पर भगवा झंडा फहराते देख सिद्दी बन्धुओं को पसीना छूटता था।

सिद्दियों को इस बात का अनुमान हो गया था कि वे सेना के बल पर शम्भूराजा के सामने एक दिन भी नहीं टिक पाएँगे। जंजीरे की अजेय फौलादी तटबन्दी ही उनका एकमात्र आधार था। यह किला यदि उनके पास न होता तो उन्हें अपने पूर्वजों की तरह अफ्रीका को जाने कब लौटना पड़ गया होता।

राजपुरी के पास समुद्र में दोनों ओर तरांडी, ताखे, गुरबा, पगार, शिबाड़ी जैसी अनेक जाति की जहाजें पानी पर तैर रही थीं। उन पर जंबुरे, बन्दुका, कड़ाबिन जैसी अनेक छोटी-बड़ी तोपें रखकर दोनों ओर से सेनाएँ तैयार थीं। बीच-बीच में गोले दागे जाते थे और फिर रोक दिये जाते थे। रसद और उच्च कोटि के गोला-बारूद लेकर पाँच हजार मराठा नाविक पानी में उतरे थे। जंजीरा किले पर फहराता हरा झंडा भयभीत दृष्टि से मराठा सेना की ओर देख रहा था। इस प्रकार का सुनियोजित और बलशाली आक्रमण जंजीरे पर पहली बार हो रहा था।

ऐसे समय में कोंडाजी फर्जन्द जैसे वीर पुरुष का शत्रु से मिलना और उनका सिद्दियों की गुलामी करना, अपना स्वाभिमान भूल जाना मराठी सेना को बहुत बुरा लगता था। इसलिए यदि कोई भूल से भी कोंडाजी का नाम ले लेता तो मराठा सैनिक उसे घूरकर देखते थे और जंजीरे की ओर देखकर थूक देते थे। कोंडाजी को अपनी ओर करके सिद्दी ने मानो मराठों का एक हाथ तोड़ दिया था। किन्तु शम्भूराजा भी इस प्रकार के दाँव-पेंच में कम न थे। उन्होंने जंजीरे के एक वीर सिद्दी संबल के बेटे—सिद्दी मिस्त्री को अपनी ओर मिला लिया था। अपने साथ दो सौ नाविक दल लेकर वह सम्भाजी से मिल गया था। सिद्दी मिस्त्री के साथ बैठकर शम्भूराजा जंजीरे से सम्बन्धित जानकारी लेते तो उधर कोंडाजी का कान पकड़कर सिद्दी बन्धु मराठों की शक्ति का अनुमान लगाते।

युद्ध की स्थिति अपने चरम आवेश में थी।

प्रात:काल का समय था। सर्दी बहुत थी। रात की नींद से अलसाया हुआ कुहरा धीरे-धीरे जल की सतह से ऊपर उठ रहा था। घने कुहरे के बावजूद अपनी सेना सजग और उत्साहित देखकर शम्भूराजा को बड़ी प्रसन्नता हुई। परन्तु उसी समय जंजीरे के मध्य भाग में, ऊँचाई पर चाँद सितारों वाला झंडा फहराता दिखाई पड़ा। यह शम्भूराजा के हृदय में भाले की नोंक की तरह चुभ रहा था।

दुर्गादास और शाहजादा अकबर के साथ शम्भूराजा की जब भी बात होती थी, औरंगजेब का जिक्र निकल ही आता था। शम्भूराजा ने पूछा—"दुर्गादास! अब

कहाँ तक पहुँच गये हैं शाहंशाह?"

"उन्हें अजमेर से बुरहानपुर आये पूरे दो महीने हो गये।"

"वे किसी भी समय महाराष्ट्र में पहुँच सकते हैं।" शहजादे अकबर ने अपनी राय व्यक्त की।

शहजादे की बात सुनकर शम्भूराजा कुछ सोचते हुए गम्भीर हो गये। तब जल दुर्ग की ओर संकेत करते हुए दुर्गादास ने उनसे कहा—

"शिवाजी महाराज जैसे अनुभवी राजा का ध्यान इस किले की ओर बहुत पहले जाना चाहिए था।"

"दुर्गादास जी, आपको क्या पता कि इस किले पर कब्जा करने के लिए शिवाजी महाराज ने क्या-क्या नहीं किया। पर क्या करते? यह सामने आते आते ओझल हो जाता था।"

"वह कैसे?"

"अब यही देखिए न! अपने श्रीबाग का लाय पाटिल नाम का एक बड़ा कुशल नौसैनिक था। जाति का कोली। जमीन पर चलने की अपेक्षा पानी में तैरते हुए उसने अपनी उम्र गुजारी थी। एक बार हमारे मोरोपन्त पेशवा की सलाह से उसने एक योजना बनायी। दोनों के द्वारा किये गये निश्चय के अनुसार अमावस्या की अँधेरी रात में छावनी से सीढ़ियाँ लेकर भूत की तरह जंजीरे के पिछले दरवाजे के पास पहुँच गया। वहाँ सीढ़ियाँ लगाकार पेशवों की प्रतीक्षा करता रहा किन्तु रात में झाड़ियों में पेशवे रास्ता भूल गये या उन्हें रास्ता मिला ही नहीं। अन्ततः सीढ़ियाँ उतारकर उसे वापस लौटना पड़ा। लाय पाटिल का यह साहस साधारण नहीं था। उसकी प्रशंसा में पिताजी ने उसे पालकी का सम्मान दिया था। परन्तु उसने बड़ी विनम्रता से इस सम्मान को अस्वीकार कर दिया। उसने महाराज से कहा, 'महाराज जब किला जीता ही नहीं गया तो मैं पालकी में बैठकर क्या करूँ?'

"कुल मिलाकर सब की यह राय बन गयी थी कि इस किले पर किसी भूत-प्रेत की छाया है। अन्यथा उसे प्राप्त करने के लिए सभी इतने पागल क्यों होते। उस कब्जा न कर पाने से शिवाजी महाराज और उनके साथ अन्य लोगों के मन में ऐसी टीस क्यों बनी रहती?"

शम्भूराजा को राजपुरी के किनारे डेरा जमाये दो सप्ताह बीत चुके थे। सम्भाजी जिस दिन वहाँ पहुँचे थे उसी दिन से दोनों ओर से तोपों की छुट-पुट गोलाबारी होती रही थी। किसी जहाज में आग लगती तो लगता कि पानी में लगी आग से आकाश की ओर धुआँ उठ रहा है। कभी-कभी दोनों सेनाओं में सामना भी होता किन्तु शम्भूराजा को इस आक्रमण में कोई उत्साह नहीं था। शम्भूराजा आक्रमण क्यों नहीं कर रहे थे? इसका रहस्य उनके निकट सहयोगियों को भी नहीं पता था।

राजपुर की ओर नावों पर लगी तो तोपें बेताब हो रही-थीं तो उधर जंजीरे के सिंहद्वार के ऊपर लगी बाँगड़ी व्याघ्रमुखी और लांडा कासम जैसी पंच धातुओं से बनी अजेय तोपें पूरी तरह तैयार थीं। सिद्दी का विदेशों से बड़ा व्यापारिक सम्बन्ध था। इसका लाभ उठाकर उसने पेरिस, इस्ताम्बूल से लेकर पुर्तगाल तक के सुदूर देशों से उच्च कोटि का तोपखाना बना लिया था। इन तोपों को महत्त्वपूर्ण बुर्जों पर लगा दिया गया है।

शम्भूराजा के सहकारी मुख्य आक्रमण के सम्बन्ध में उनसे घुमा-फिराकर पूछते रहते थे। शम्भूराजा इन प्रश्नों से ऊब गये थे। शम्भूराजा ने अपनी बाईं ओर खड़े शहजादा अकबर की ओर देखा किन्तु शहजादा वहाँ से उठकर पीछे चला गया था। वह अस्वस्थ दिखाई पड़ रहा था। उसकी ओर देखते हुए शम्भूराजा ने पूछा—
"क्या बात है दुर्गादास?"

"शहजादे का लड़ाई में ध्यान ही नहीं है, और क्या?"

"कहाँ गायब हो गये हैं? कहाँ?"

अन्य सहयोगियों के अलग चले जाने पर दुर्गादास शम्भूराजा के पास आकर धीरे से बोले, "रूपकुँवरि नाम की एक वेश्या है। उसका चौल के बाजार में कोठा है। उसकी अपनी कोठी है। शहजादे उसी के पास हमेशा जाया करते हैं। पिछले कई दिनों से अपने कद्रदान शहजादे के उधर न जाने से वह उदास हो गयी और दो दिन पहले यहाँ चली आयी। उसने मुरुड की बंजर भूमि पर अपना डेरा डाला है। कल से दो बार उसका शागिर्द शहजादे से मिल चुका है। तभी से अकबर बहुत अस्वस्थ हो गये हैं।"

दुर्गादास की बात सुनकर शम्भूराजा हँसे और सेवक को भेजकर शहजादा अकबर को अपने पास बुला लिया। उसे छेड़ते हुए बोले—

"अकबर, इसमें इतना शरमाने की क्या बात है? हम भी जाने-माने रसिक हैं। दिल्ली के शहजादे का दिल चुराने वाली वह नृत्यांगना कौन है? जरा हम भी तो देखें।"

उस शाम शम्भूराजा अपने डेरे से बाहर निकले। यह देखकर शहजादा बहुत प्रसन्न हुआ कि उसकी दिलरुबा का नृत्य देखने के लिए शम्भूराजा सचमुच आ रहे हैं। उस रात मुरुड की बंजर भूमि पर एक शाही तम्बू में नृत्य की महफिल सजी थी। रूपकुँवरि जन्म से हिन्दू थी किन्तु उसकी माँ का विवाह एक सिद्दी सरदार से हुआ था। गाना-बजाना उसका पेशा था। स्वयं शम्भूराजा के महफिल में उपस्थित होने के कारण रूपकुँवरि के घुंघरुओं ने विलक्षण लय और गति पकड़ ली थी। वह मोरनी-सी नाच रही थी, हँस रही थी। अपनी मीठी आवाज में गाते हुए गर्दन को झटके दे रही थी।

रूपकुँवरि नाचते-नाचते शहजादा अकबर और शम्भूराजा के सामने आ रही थी। उसके मलमल के कुर्ते पर एक रत्नहार बहुत चमक रहा था। वे रत्न इतने उच्च कोटि के थे कि पास रखे चिरागों का प्रकाश उन पर से परावर्तित हो रहा था। उस दुर्लभ प्रकाश से पूरी रंगशाला प्रकाशित हो रही थी। शम्भूराजा का ध्यान उस रत्न हार पर गया। उन्होंने उँगली से संकेत करके रूपकुँवरि को अपने पास बुलाया और उसके गले का वह रत्नहार शीघ्रता से खींच लिया। हार में लगे रत्न चमकते हुए चारों ओर बिखर गये। शम्भूराजा के इस हस्तक्षेप से संगीत रुक गया।

शम्भूराजा की क्रुद्ध मुद्रा देखकर रूपकुँवरि दस कदम पीछे हट गयी। उसके साज़ी भी डरकर दूर खड़े हुए। शम्भूराजा के उस परिवर्तन से शहजादा अकबर भी घबरा गया। शम्भूराजा ने क्रोधावेश में पूछा—"शहजादे, यह रत्नहार किसका है?"

"आपने ही मुझे भेंट किया था।" अकबर ने उत्तर दिया।

"वह मैंने एक राजा को भेंट किया था किसी नर्तकी को नहीं।"

शहजादा अकबर कुछ लज्जित हुआ। फिर भी शम्भूराजा की बात का उत्तर देते हुए बोला, "सम्भाजी महाराज, यहाँ पर हम अपनी मर्जी के शाहंशाह हैं। हमे जैसा उचित लगेगा वैसा करेंगे।"

अकबर के इस व्यवहार से शम्भूराजा भयंकर रूप से क्रोधित हुए। वे गरजकर बोले, "ऐसा है तो पहले मेरी आँखों के सामने से दूर हो जाओ और अपने मनोराज्य या दिल्ली में बादशाह बनकर बैठो।"

शम्भूराजा का यह रुद्र रूप देखकर शहजादा अकबर भयाक्रान्त होकर स्तब्ध रह गया। जो कुछ हो चुका उससे अधिक अप्रिय प्रसंग न घटित हो इसलिए दुर्गादास शहजादे को लेकर बाहर चले गये। महफिल अधूरी ही रह गयी। शम्भूराजा कवि कलश के साथ बाहर जाने लगे। इसी समय साहस करके रूपकुँवरि सामने आ गयी। शम्भूराजा का पैर पकड़ते हुए वह गिड़गिड़ाकर बोली, "महाराज, राजा-महाराजाओं की भाँति ही हम नृत्यांगनाओं की भी एक दुनिया होती है।"

"क्या कहना चाहती हो?"

"अब इसके अधिक किसको, कैसे और किस मुख से बताएँ?" कहते-कहते रूपकुँवरि की आँखें छलछला उठीं। वह रुँधे हुए स्वर में बोली—

"अब सभी जगह यही बेइज्जती होगी कि रूपकुँवरि की महफिल से महाराज बीच में ही उठकर चले गये। कोई कहेगा कि अब रूपकुँवरि को पहले जैसा नाचना ही नहीं आता। कोई कहेगा कि वह अब बूढ़ी हो गयी है। इसलिए महाराज, मैं आपके सामने आँचल फैलाकर न्याय माँगती हूँ। इस नाचीज नर्तकी पर दया करें। इस प्रकार आधी महफिल छोड़कर न जाएँ।"

रूपकुँवरि की बात सुनकर शम्भूराजा ने कवि कलश की ओर देखा। कलश

कुछ भी बोलने की मन:स्थिति में नहीं थे। इतने में ही शहजादे को दूर हटाकर दुर्गादास शम्भूराजा से माफी माँगने के लिए वहाँ पहुँचे। शम्भूराजा ने रूपकुँवरि के दुखी चेहरे की ओर देखा। अपनी कमर में बँधी सोने की मुहरों वाली थैली उसके हाथ में पकड़ाते हुए वे बोले, "कोई पूछे तो कह देना कि महाराज को कोई बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य था, इसलिए चले गये। पर जाते समय इतना धन इनाम में दे गये हैं जो दस महफिलों के बराबर है।"

रूपकुँवरि ने बड़ी विनम्रता से इनाम स्वीकार किया और सलाम करके बगल में हट गयी।

शम्भूराजा जब अपने घोड़े की ओर बढ़ने लगे तब मौका पाकर दुर्गादास अत्यन्त विनीत स्वर में कहने लगे—"महाराज, आप इस शहजादे का बचपना इतने दिनों से देखते आ रहे हैं। उसके लिए इतना बुरा क्यों मानना चाहिए।"

अनेक प्रकार के विचारों के मन्थन से शम्भूराजा की मुखमुद्रा बदल गयी थी। उन्होंने कहा, "नहीं दुर्गादास, अब इससे अधिक एक पल भी हम इस महफिल में नहीं रुक सकते। सच कहूँ तो मैं बड़ी रसिकता से इस महफिल में आया था। पर आपसे कैसे बताऊँ कि जब यहाँ तबले पर थाप पड़ती थी तो मुझे कानों के पर्दे फाड़कर कलेजे को दहला देने वाले तोपों के धमाके सुनाई पड़ते थे। अब यहाँ पर एक क्षण भी रुकना मेरे लिए अपराध होगा।"

सात

"कविराज, कर्नाटक में इक्करी के नायक और गोलकुंडा के कुतुबशाह को सन्देश भेज दिया गया?"

"हाँ, उसी दिन।" कलश ने मुस्कराते हुए राजा की ओर देखा। शम्भूराजा की प्रश्नार्थक मुद्रा को देखते हुए कवि कलश तुरन्त बोले, "कमाल है आपका महाराज, जंजीरे की इस युद्ध भूमि पर अपने तम्बू के आसपास आग बरस रही है। ऐसे समय में भी आपको कर्नाटक की राजनीति का ध्यान बराबर बना हुआ है?"

"कविराज, औरंगजेब पाँच लाख की सेना लेकर हमारे स्वराज्य की ओर बढ़ रहा है। इसका ध्यान तो है न आपको? इतनी विशाल सेना कुछ वर्षों तक युद्ध भूमि में जूझती रहेगी। औरंगजेब के साथ यह हमारी आखिरी लड़ाई होगी। उस समय

रसद और बारूद की बड़ी आवश्यकता पड़ेगी। जिंजी तंजौर जैसे दक्षिण के प्रदेशों से ही हमें वह प्राप्त हो सकेगी।

"इसीलिए तो हमने हरजी जैसा बलशाली योद्धा कर्नाटक में नियुक्त किया है।"

"वह तो बलशाली है ही, किन्तु मैसूर का राजा चिक्कदेव राय उसकी अपेक्षा कई गुना पराक्रमी है। पहले से ही वह मराठों से खार खाये बैठा है। उसके प्रदेश में जाकर उसे पराजित करना और औरंगजेब के विरुद्ध खड़ा करना अकेले हरजी के बूते की बात नहीं है।"

कविराज ने शम्भूराजा मे पूछा, "इसका मतलब कर्नाटक पर महागज आक्रमण ?"

"हाँ, क्यों नहीं?" शम्भूराजा ने कहा, "उसकी तैयारी करनी है। चिक्केराय स्वार्थी है। वह औरंगजेब से हाथ मिलाने में भी विलम्ब नहीं करेगा। कविराज, न चुकाया गया कर्ज, अनबुझी आग और बचे हुए शत्रु ये तीनों चीजें बढ़ती ही जाती हैं और अन्तत: घातक सिद्ध होती हैं।

ऋणशेषाग्निशेष: शत्रुशेषस्तथैव च।
पुन: पुन: प्रवर्धन्ते तस्माच्छेष न रक्षयते।।

"इसलिए चिक्कदेव राय को भी अपना हाथ दिखाना आवश्यक है।"

"वाह।"

"कल अगर औरंगजेब के घातक आक्रमण को रोकना है तो सम्पूर्ण दक्षिण प्रदेश को एकत्र संगठित करना होगा। इसीलिए हम कुतुबशाह, आदिलशाह जैसे लोगों को बार बार सन्देश भेज रहे हैं।"

कर्नाटक जैसी अनेक समस्याओं का समाधान खोजना है किन्तु उन सबसे पहले जंजीरे की उलझन सुलझानी है।

सामने जंजीरे की ओर देखते हुए शम्भूराजा स्वप्न में खोये हुए से प्रतीत हो रहे थे। विगत महीने भर में उन्होंने जंजीरे के असख्य अनोखे रूप देखे थे। ज्वार के समय ऊँची लहरें जंजीरे को चारों ओर से घेर लेतीं तो वह समुद्र में तैरते काले जहाज सा दिखाई देता। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय किरणे जब चमकती हुई पानी में उतरती तो वह किसी जादूनगरी के जादुई महल सा दिखाई पडता। ज्वार के समय जब तेज लहरें जंजीरे की तटबन्दी के साथ ऊपर उठतीं तो लगता जैसे समुद्र देवता इस महादुर्ग का जलाभिषेक कर रहे हैं। और जब पानी तेजी से नीचे उतरता था तथा तटबन्दी के आसपास की जगह निकल आती थी तब जंजीरे का स्वरूप कुछ और ही हो जाता था। ऐसे लगता था जैसे कोई कुशल तैराक अपने एक हाथ में मन्दिर उठाये पानी को चीरते हुए चला आ रहा है।

जंजीरे के भव्य आवास में रहने वाले सिद्दी खैरियत् खान और कासिम खान बहुत व्यथित हो गये थे। वहाँ की तटबन्दी ने इससे पहले कभी ऐसी स्थिति का अनुभव नहीं किया था। ज्वार के आते ही उन्मुक्त लहरें जोर-जोर से तटबन्दी से टकराती थीं। लगता था आधे बुर्ज को पानी ने निगल लिया है। नौ-दस फीट गहरी राजापुर के पास की खाड़ी आन्दोलित हो गयी थी। ज्वार के बाद पानी उतरते समय किले की सीढ़ियों पर पानी मेंढक की तरह उछलता हुआ नीचे आता था। किन्तु फिर भी खाड़ी का पानी अपनी निश्चित सीमा से नीचे नहीं आता था।

अभी भी शम्भूराजा पूरी शक्ति के साथ युद्ध के लिए पानी में उतर नहीं रहे थे, किन्तु वे शान्त भी नहीं थे। अनेक प्रकार की योजनाएँ बनाने में व्यस्त थे। जंजीरे से आकर मिले सिद्दी मिस्त्री ने जंजीरे की एक मोम की प्रतिकृति तैयार की थी। शम्भूराजा ने उसे बीच की चौरंगी पर रख दिया था। इसी को दृष्टि में रखकर अनेक साहसी योजनाओं पर चर्चा की जा रही थी। अँधेरी रात में जंजीरे पर सीढ़ियाँ लगाने वाले लाय पाटिल की प्रशंसा की जाती थी। दादजी प्रभु देशपांडे, दरिया सारंग, भायनाक का भाई रायनाक भंडारी, काथे जैसे लोग शम्भूराजा को घेरकर बैठते। आक्रमण सम्बन्धी विचार करते-करते मशाल का तेल समाप्त हो जाता किन्तु उनकी ललाई ज्यों की त्यों बनी रहती।

एक दिन सुबह दादजी देशपाण्डे लाठी के सहारे लँगड़ाते हुए शम्भूराजा के अभिवादन के लिए आ गये। उनके साथ हुजरे भी थे। वे एक बोरी भरकर मीठे शहाले ले आये थे। कोयते से काटकर हुजरे ने सभी के हाथ में दिया। शम्भूराजा ने दादजी की ओर देखा। उंदेरी के आक्रमण के लिए उत्साहपूर्वक निकलने वाले दादजी का पुष्ट शरीर उनकी आँखों के सामने सगुण साकार हो गया। दुर्भाग्य मे उसमें दादजी को सफलता नहीं मिली। उल्टे सिद्दी सेना मे लड़ते हुए वे तटबन्दी मे गिर गये और उनका एक पैर टूट गया। मात्र लाठी और शम्भूराजा के प्रेम के सहारे फिर से मैदान में खड़े थे।

चर्चा के दौरान सिद्दी मिस्त्री ने कोंडाजी की बात छेड़ी। उसने कहा, "दिलरुबा नाम की उस ईरानी युवती के मोह में फँसकर अपना मराठा मर्द बुरी तरह बर्बाद हो गया।"

शम्भूराजा कुछ विचित्र तरह से मुस्कराये। बबूल सा ऊँचा और मजबूत तने सा कोंडाजी का साँवला शरीर उनकी आँखों के सामने साकार हो गया। उनके साथ हरे लिबास और नीली आँखों वाली दिलरुबा की उन्होंने कल्पना की। इसी समय कवि कलश ने उन्हें स्मरण दिलाया—

"महाराज, कोंडाजी का आवास और घर द्वार जब्त करने का आदेश कब दे रहे हैं? गद्दार को सजा मिलनी ही चाहिए।"

"क्यों नहीं कविराज, एक बार यह सामने वाला जंजीरा जीत लिया तो हमें तुरन्त स्मरण दिलाइये, उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर लेंगे।"

उसी बैठक में दादजी, कवि कलश, दुर्गादास और भायनाक भंडारी की नजरें एक दूसरे से मिलीं। उन बेचैन नजरों की अभिव्यक्ति दादजी के मुख से बाहर आयी—"महाराज सेना की तैयारी ठीक-ठाक हो गयी है। इस झूठ-मूठ की लड़ाई से तो शरीर की ठंडक भी दूर नहीं होती। हाँ महाराज शिवराय का बेटा शत्रु पर किस प्रकार आक्रमण करता है, यह देखने के लिए हमारी सेना बहुत उत्सुक है।" कविराज ने कहा। सम्भाजी कहने लगे—"कभी-कभी यह जंजीरा ही हमें अद्‌भुत लगता है। इस दंडाराजपुरी के मैदान में शिवाजी महाराज जैसे महान राजा ने आठ बार आक्रमण किये। तलवारबाजों की तलवार की धार को कुंठित और बुद्धिमानों की तेज बुद्धि पर जंग चढ़ा देने वाला यह किला पता नहीं कि मुहूर्त में बनाया गया होगा?"

शम्भूराजा इस चर्चा गोष्ठी से यकायक उठकर खड़े हो गये। अपने तम्बू में जाते-जाते रुके और पीछे मुड़कर कवि कलश से बोले, "देखो कविराज पंचांग लो, अपनी तंत्र विद्या का भी उपयोग करो। एक बार इस रहस्य का उद्‌घाटन अवश्य होना चाहिए कि आखिर यह किला किस मुहूर्त में खड़ा किया गया था?"

उस दिन कविराज का मन बहुत उद्विग्न हो गया था। राजा के उस कठिन प्रश्न का उत्तर खोजने का उन्होंने निर्णय लिया। आसपास के क्षेत्रों का दौरा किया, बड़े बूढ़ों से चर्चा की, लोगों से पूछताछ की और रात को प्रसन्नचित्त होकर युद्ध भूमि में लौटे। वे बड़े उत्साह से कहने लगे—"राजन, आखिर भेद खुल ही गया। जब इस जलदुर्ग की नींव डाली गयी थी उस समय अमृतयोग था।"

"क्या कह रहे हैं कविराज?"

"हाँ, मैं इस रहस्य की जड़ तक पहुँच चुका हूँ। जिस समय हब्शियों ने यह किला बनाने का निश्चय किया उस समय पास के नादगाँव में गणेश पंडित नाम के एक जोशी बाबा रहते थे। पंचांग से मुहूर्त निकालने में उन्हें महारत हासिल थी। यह खबर जब हब्शियों को मिली तो उनके घोड़े जोशी बाबा के दरवाजे पर जा खड़े हुए। परन्तु जब उनकी छोटी बेटी ने बताया कि वे घर पर नहीं हैं तो हब्शी घुड़सवार उदास हो गये। वह छोटी बच्ची दरवाजे से बाहर आकर उनके आने का प्रयोजन पूछा। सवारों ने बताया कि नींव डालने के लिए मुहूर्त पूछना था। लड़की हँसते हुए बोली—'बस इतना ही काम था? बाबा के पास बैठकर मैंने पंचांग देखना सीखा है। मैं बता देती हूँ आपको अच्छा मुहूर्त'।

"जोशी बाबा ने अपने दरवाजे से हब्शियों के घोड़े लौटते हुए देखे तो घर आकर बेटी से सारा समाचार पूछा। बेटी ने सारी घटना कह सुनाई। उसने अपने द्वारा

निकाले गये मुहूर्त को भी पिता से बताया। पिताजी बहुत नाराज हुए। बेटी ने डरते हुए पूछा—'पिताजी, मुहूर्त का गणित ठीक नहीं हुआ क्या'?''

''बेटी गणित तो ठीक हुआ है पर निर्णय गलत हो गया।''

''वह कैसे?''

''पागल बच्ची! गाय कहाँ गयी है, यह कोई कसाई को बताएगा क्या?''

'शत्रुओं को मुहूर्त अवश्य बतानी चाहिए पर वह कुछ निम्न कोटि की होनी चाहिए। अमृतयोग की तरह अचूक नहीं'।

कविराज के इस रहस्योद्घाटन से शम्भूराजा का अच्छा मनोरंजन हुआ। किन्तु शीघ्र ही उन्हें एक चिन्ता सताने लगी। जंजीरे में सिद्दी अपने किले को बड़े अभिमान से 'जंजीरे मेहरुब' कहते थे। शम्भूराजा की आँखों के सामने समुद्र में पलीतें की तरह धधकते उस चन्द्रकोर की ओर बार बार देख रहे थे। उन्हें लगा कि वहाँ पर पचीस गज ऊँची तटबन्दी नहीं बल्कि पूरी चन्द्रकोर है जो उनके कलेजे में घुसकर भयंकर वेदना दे रही थी।

उस दिन की सुबह बड़ी विलक्षण थी। शम्भूराजा ने अपने सभी नौसैनिकों और अधिकारियों को एकत्र बुलाया था। उन सभी को सम्बोधित करते हुए शम्भूराजा बोले, ''मित्रो! जिस दिन आप इस जंजीरे पर विजय प्राप्त कर लेंगे उस दिन इस कठिन लड़ाई जीतने के उपलक्ष्य में सभी सैनिकों के हाथ में सोने का कड़ा पहनाएँगे और प्रत्येक के आँगन में आधा सेर सोना डालकर उसका गौरव करेंगे।''

शम्भूराजा ने इनाम की अग्रिम घोषणा की तो सेना को विश्वास हो गया कि अब किसी भी क्षण जोरदार आक्रमण का आरम्भ हो जाएगा। वह दिन ऐसी तरह बीत गया। सन्ध्या समय सूर्य का लाल गोला समुद्र में कूद गया। अगल बगल के परिसर में नारियल वनों और पहाड़ों से अँधेरा नीचे उतरने लगा। उस सन्ध्या बेला में कुछ समुद्री पक्षी उड़े। वे अशुभ चीत्कार करते हुए तट से समुद्र की ओर उड़ान भरने लगे। उनकी इस अशुभ चीत्कार से शम्भूराजा का मन कुछ विचलित हुआ।

दूसरे दिन शम्भूराजा ने शहजादा अकबर के सम्बन्ध में दुर्गादास से पूछताछ की। तब शम्भूराजा को ज्ञात हुआ कि शहजादा रूठकर पाली के पा अपनी छोटी सी छावनी में लौट गया है। सेना आगे के आदेश की प्रतीक्षा कर रही थी। घोड़े भी एक ही तरह का चारा खाते-खाते ऊब चुके थे। शम्भूराजा के डेरे के सामने रखी मोम की जंजीरे की प्रतिकृति उदास लग रही थी। उसकी चमक नष्ट हो चुकी थी।

तीसरे दिन शम्भूराजा अपने सहयोगियों के साथ सुबह की खिली धूप में बैठे थे। उस मोम की प्रतिकृति का पुनर्निरीक्षण कर रहे थे। बीच-बीच में वे उस जलदुर्ग पर दृष्टि डालते तो कभी ऊँचे पहाड़ की दाईं ओर निचले हिस्से में खाड़ी की ओर देखते। वार्तालाप के बीच ही उनकी नजर नीचे की खाड़ी की ओर गयी।

वहाँ कुछ हलचल सी मची थी। आठ दस मराठे एक राउत से उलझे हुए दिखाई पड़ रहे थे। वह अपरिचित सा दिखने वाला वह राउत रेत और कीचड़ से मना हुआ था। उसकी काँख में एक कसी हुई पोटली दिखायी दे रही थी। रास्ता रोकने वाले सिपाहियों से वह चिल्ला चिल्लाकर झगड़ रहा था।

"छोड़ोऽऽ, छोड़ो मुझे. मुझे ऊपर जाने दो, मुझे महाराज से मिलने दो।" वह राउत अपनी पोटली के साथ आगे को सरक रहा था। किन्तु मराठा सैनिक उसे उसी प्रकार रोके हुए थे जैसे चतुराई से भागते हुए साँप को भाले की नोंक से रोका जाता है। यह देखकर कि उसे छोडने के लिए कोई तैयार नहीं है, वह घबरा गया। वह जोर जोर से चिल्लाने लगा।

"इस तरह मेरी राह न रोको। सिर्फ एक बार एक बार ही मुझे महाराज से मिलने दो। इस भयानक बाढ़ मे एक लकड़ी के टुकड़े स साँप की तरह चिपककर किसी प्रकार यहाँ तक पहुँच पाया हूँ। एक लकडी के टुकडे के सहारे रातभर यह सामने का समुद्र तैरता रहा हूँ।"

यह कोलाहल सुनकर शम्भूराजा ने ऊपर से आवाज दी—"छोड दो उसकी राह। उसे लेकर हमारे पास आओ।"

कोई नहीं समझ पा रहा था कि अब यह कौन सी नयी समस्या पैदा हो गयी। महाराज की छावनी के सामने वाले सरदार या रक्षक ही नहीं स्वय कवि कलश भी सम्भ्रमित थे। इतने मे बडे बडे डग भरते रास्ते के पत्थरों को पार करते हुए वह राउत महाराज के सामने आ खड़ा हुआ। इस बीच महाराज अपनी छावनी के सामने अस्वस्थ मन से टहल रहे थे। उन्होंने रेत और कीचड सने उस शक्तिशाली मराठा मर्द की ओर देखा।

उस आदमी की आँखों में उतर आयी अमावस्या को देखकर शम्भूराजा के रोंगटे खड़े हो गये। उसने शम्भूराजा को नमन किया और बोरे की पोटली उनके पैरों के पास रख दी। महाराज के संकेत करते ही उसने उस गठरी को खोला। आँखों के सामने का दृश्य देखकर सभी को पसीना आ गया। उस गठरी में किसी का आधा जला हुआ सिर था। वह भयानक दृश्य देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गये।

वह व्यक्ति शम्भूराजा के पैरों पर गिर पड़ा और दुखी स्वर में बोला, "यह सिर कोंडाजी बाबा का ही हैऽऽ।"

यह समाचार स्पष्ट होते ही मराठा सवारों और सैनिकों में आनन्द की लहर दौड़ गयी। उन्होंने आपस में मिठाइयाँ बाँटीं। गद्दारों की दुर्दशा ऐसी ही होगी। सभी एक स्वर में आनन्दातिरेक में चिल्लाने लगे—"हर हर महादेव! हर हर महादेव।"

वह खबरी 'रुको, रुको,' कहकर अपनी रुआँसी आवाज में कुछ कहने का प्रयास कर रहा था। किन्तु उसकी बात सुनने के लिए कोई तैयार ही नहीं था। इसी

समय शम्भूराजा झट से उठकर खड़े हो गये। उन्होंने म्यान खींचकर तलवार बाहर निकाल ली। सामने हो हल्ला मचाने वाली भीड़ को शस्त्र दिखाते हुए वे चिल्लाये—"शान्ति रखो नहीं तो एक-एक के टुकड़े टुकड़े कर दूँगा।"

महाराज की उस गर्जना से सभी स्तब्ध हो गये। हताश महाराज वहीं पर घुटनों के बल बैठ गये। जिस प्रकार पुजारी भगवान की मूर्ति को बड़े भक्ति भाव से हाथ में लेता है उसी प्रकार शम्भूराजा ने कोंडाजी के सिर को अपने हाथ में ले लिया। दूसरे ही क्षण उन्होंने दिल दहला देने वाली दर्द भरी चीत्कार की—"कोंडाजी बाबाऽऽ। कैसे हुआ यह?"

निराश भाव महाराज ने उस आगन्तुक की ओर देखा।

वह वीर पूरी तरह विचलित हो गया था। उसकी दोनों आँखें छलछलाने लगीं। उन्हें किसी प्रकार सँभालते हुए उद्विग्न व्यक्ति की तरह कहने का प्रयास करने लगा—"महाराज, आप और कोंडाजी के द्वारा बनाई गयी गुप्त योजना के अनुसार ही सब कुछ हो रहा था। उस योजना को कार्यान्वित करने के लिए हम बारह जन हब्शियों के गढ़ में घुसे थे। वहाँ हम सबों ने तेरह-चौदह महीने किस तरह काटे इसे हमारा जी ही जानता है।"

"अरे, लेकिन यह धोखा हुआ कैसे?" शम्भूराजा ने प्रश्न किया।

"महाराज, कुदरत ने और खुदा ने थोड़ी मेहरबानी कर दी होती तो कल रात ही जंजीरे के सभी बारूदखाने जलकर खाक हो गये होते। आसमान में उठने वाली लपटों ने कल रात ही हमारा अभिनन्दन किया होता।"

"लेकिन हमारे कोंडाजी बाबा कितने बली और बुद्धिमान वीर थे!"

"क्या बताऊँ महाराज? विगत चौदह महीनों हम बारह व्यक्तियों ने अपनी योजना के सम्बन्ध में रंचमात्र भी संशयात्मक स्थिति नहीं पैदा होने दी। वे सिद्दी बन्धु और उनकी फौज के सभी कालसर्प पूरी तरह असावधान थे। कोंडाजी ने आपसे भीषण झगड़ा करके चले आने के बाद बड़ी-बड़ी कहानियाँ सुनायी थीं। एक नम्बर के बहुरूपी कासिम का बाबा पर इतना विश्वास हो गया था मानो उसे बाबा के रूप में कई जन्मों का मित्र मिल गया हो। अपनी प्रिय रक्षिता ईरानी सुन्दर युवती दिलरुबा को कासिम ने कोंडाजी बाबा को समर्पित कर दिया। दिलरुबा भी बाबा पर जान देने लगी थी। कोंडाजी और ग्यारह जन जंजीरे किसलिए प्रविष्ट हुए हैं इसका उस स्त्री को पिछले महीने तक कुछ भी पता न था।"

"चलोऽऽ इसका मतलब उसी ने अन्त में धोखा किया।"

"नहीं, नहीं, महाराज, वैसा नहीं...."

"तो फिर?"

"कल रात तक हमारी सारी योजना ठीक थी। जंजीरे के आठ बड़े बारूदखानों में एक ही समय आग लगाकर उड़ा देने की पूरी तैयारी हो चुकी थी।

वहाँ के कुछ लोगों को अधिक धन देकर बाबा ने अपनी ओर कर लिया था। कल की आधी रात के समय सभी बारूदखानों को भस्म करने का मुहूर्त था। किले के पिछले दरवाजे के पास एक नाव तैयार खड़ी थी। कार्य सफल होने के बाद जो सौभाग्य से बच जाते उन्हें पिछले दरवाजे से आकर नाव में बैठकर इस ओर निकल आना था। लेकिन ऐन समय पर दिलरुबा साथ आने के लिए हठ करने लगी। वह प्रार्थना करने लगी—"मुझे भी अपने मुल्क मे साथ ले चलो।"

"ठीक है, फिर?"

"दिलरुबा को अपने साथ ले आना कोंडाजी ने स्वीकार कर लिया। किन्तु उसकी जायरा नाम की एक प्रिय दासी थी। उसके बिना दिलरुबा पानी का घूँट भी नहीं लेती थी। इसलिए अन्तिम समय में दिलरुबा ने उस दासी को भी साथ ले आने का निश्चय किया। बारूदखानों को आग लगाने के एक घंटा पहले दिलरुबा ने जायरा को बता दिया कि कहाँ जाने की तैयारी है। जायरा ने कहा कि मैं अपने कपड़े लेकर शीघ्रता से वापस आती हूँ। ऐसा कहते हुए वह तेजी मे निकली और सीधे खैरियत खान के महल में पहुँच गयी।"

"अरे रे!" सारी कहानी सुनकर शम्भूराजा के सभी साथी चिल्ला पडे। कितनो ने तो अपना मुँह पीट लिया।

वह मराठा वीर आगे कहने लगा—"दासी से बगावत का समाचार पाते ही किले पर खतरे का घंटा बजने लगा। देखते देखते दो तीन हजार सैनिक हम बारह जनों के पीछे लग गये। हममें से तीन जनों ने बुर्ज के नीचे की ओर छलाँग लगाई, जिनमें दो तो वहीं पर चकनाचूर हो गये। कोंडाजी के साथ आठ जन एक पंक्ति में खड़े किये गये और सपासप तलवार से काट दिये गए। दिलरुबा का गला कासिम ने अपने हाथों से काटा। संयोग से एक दीवार के खड्ढे में मुझे थोड़ी सी जगह मिल गयी और मैं बच गया। अपने सभी बहादुरों के शव को कासिम के कुत्तों ने पैर पकड़कर घसीटते हुए एक जगह इकट्ठा किया। पिछले दरवाजे के बाहर एक चबूतरे पर लकड़ी जलाकर उसी में शवों और सिरों को डाल दिया। वे कुत्ते विजय के नशे में नाचते-नाचते किले की ओर निकल गये।

"उसी नशे में उनकी पीठ पीछे का पहरा ढीला पड़ गया और मैं कुछ जंगली लताओं का सहारा लेकर किसी तरह रेंगते हुए नीचे उतरा। वहीं पर मुझे कोंडाजी बाबा का अधजला सिर दिखाई पड़ा। उसी सिर ने एक बार फिर से मेरे शरीर में शक्ति का संचार कर दिया। महाराज, बड़ी कठिनाई से मैं यहाँ तक पहुँचा। मुझे पता था कि आप हमारी राह देखते किले की ओर आँख लगाए बैठे होंगे। यदि मैं यहाँ न पहुँच पाता तो कोंडाजी बाबा और उनके साथियों की वीरता की कहानी आपको कौन सुनाता? आप को तो किसी बात का पता भी न चलता।"

यह करुण कहानी सुनते सुनते सभी की आत्माएँ कराह उठीं। अपने कीमती

राजसी लिबास की चिन्ता न करते हुए शम्भूराजा ने दुख के आवेग में कीचड़ और मिट्टी से सने उस मराठा वीर को बाँहों में भर लिया। तैरकर आया हुआ वह वीर अभी रोते हुए कह रहा था—"जब भी हम एकान्त में बैठते थे तो कोंडाजी बाबा हमसे कहते थे—'केवल चौंसठ मावले वीरों को लेकर मैंने पन्हाला किले को जीता था और फूल की तरह शिवाजी महाराज के चरणों में चढ़ा दिया था। उसी तरह जंजीरा नाम के इस बद्तमीज किले को हमें प्राप्त करना है और अपने युवराज के चरणों में चढ़ाना है। दोस्तो, इसीलिए कहता हूँ कि आखिरी रात यहाँ बारूदखानों के जलने से ऐसा धमाका होना चाहिए कि उसी धमाके से यह किला पानी में चला जाये और उसी धमाके के चमत्कार से मेरा शरीर भी उड़कर समुद्र पार पर्वत पर मेरी प्रतीक्षा कर रहे शम्भूराजा के चरणों में गिरना चाहिए। मेरी जिन्दगी की यही सबसे बड़ी सार्थकता है।"

इस करुण कथा को सुनकर सभी के कलेजे फट गये। शम्भूराजा के हृदय को बहुत ही गहरा आघात पहुँचा। किन्तु उस सेनानायक ने अपने को सँभाला। आक्रोश के सैलाब को बड़ी कठिनाई से रोकते हुए उन्होंने बाबा के सिर को बड़े सम्मान से पालकी में रखा, उसे ताजे फूलों से ढक दिया। उन्होंने अपने गले से रत्नमाला को खींचकर उसके सारे रत्न कोंडाजी बाबा के सिर के अगल बगल हल्के मे रख दिया। करंजा और जांभुल के औषधीय पत्तों को सिर के चारों ओर रख दिया गया।

पालकी उठा ली गयी। सभी राजदूत कोंडाजी बाबा के जन्मस्थान की ओर चल पड़े। जल्दी जल्दी कदम बढ़ाते हुए शम्भूराजा आगे आये। उसे ऊँचे पहाड़ से अपनी जीभ से पानी चाट रहे जालिम जंजीरे को वे देखते रह गये।

दुर्गादास राठौड़ कविं कलश का हाथ पकड़कर एक ओर ले गये और धीरे से पूछा—"क्यों जी, तेरह महीने पूर्व निश्चित की गयी इतनी गम्भीर योजना के सम्बन्ध में आपने हमें एक शब्द भी नहीं बताया?"

"नहीं जी, मुझे भी कहाँ पता था?" कवि कलश ने अपना सम्भ्रम प्रकट किया। थोड़ी देर पहले जब वह मराठा जवान इस कहानी को सुना रहा था तभी आपके साथ ही मैंने भी पहली बार सुना।"

आठ

दूसरे दिन की सुबह तोपों के जोरदार धमाकों के साथ हुई। दंडा राजपुरी के परिसर

में घुड़ूमधम, घुड़ूमधम, कड़ाडधूमऽऽऽऽऽऽ जैसी कान फाड़ने वाली आवाजों से सारा वन प्रदेश भर गया। तोपों के गोलों से किनारों पर धुओं की लहर उठने लगी। जंजीरे की तटबन्दी पर गिरने वाले तोप के 'गोलों' से वहाँ के पत्थर और चूने चिथड़े होकर पानी में गिरने लगे। परिसर के पंछी भी कहीं दूर अपना घोंसला बनाने के लिए भाग गये।

वह तोप का धमाका इतना भयंकर था कि राजपुरी और आगरदांडा में बचे-खुचे लोग भी घबराकर अपना-अपना गाँव छोड़कर भागने लगे। सामानों से भरे छकड़ों, बोरों से लदे बैलों और ऊँटों को निकल जाने के लिए मराठा सैनिकों ने सहायता की। शम्भूराजा द्वारा जंजीरे पर किया गया आक्रमण बहुत भयंकर था। युद्ध भूमि विकराल हो उठी थी। यहाँ तक कि आसपास की मस्जिदों में अजान बन्द थी और मन्दिरों की ओर जाने का किसी में साहस नहीं था।

इतने दिनों से पानी में रेंगती हुई नौकाएँ अब आलस छोड़कर पूरी तरह सजग हो गयी थीं। जहाजों पर चढ़ाई गयी तोपों और छोटी-मोटी नौकाओं में गोले बारूद ठूँस ठूँसकर भर दिये गये थे। शम्भूराजा की क्रुद्ध सेना आवेश में बाहर निकली। तांडेल नाविक दल सजग हो गया। काले घने बालों वाले मध्यम ऊँचाई के हब्शी सैनिक मराठों के निशाने पर आने लगे। छोटी मोटी नावों ने जंजीरे के चारों ओर से शिकंजा कसने की शुरुआत की।

मराठों द्वारा भयंकर आक्रमण करने का समाचार सवेरे ही हब्शियों को मिल चुका था। सिद्दी खैरियत खान और सिद्दी कासिम खान प्रतिकार की भावना से किले पर नाचने लगे। बारूद भरी तोपों को आगे खींचने में उन्होंने जरा भी प्रतीक्षा नहीं की।

हब्शियों का तोपखाना भी उच्चकोटि का था। ये तोपें जहाजों पर अचूक निशाना साधने लगीं। हब्शियों के गोलों-बारूदों से पानी में मराठों की नावें जलने लगीं। जहाजें डूबने लगीं। मराठा नौसैनिक अपने जलते हुए कपड़ों के साथ पानी में कूदने लगे। जिस तरह भी सम्भव बन पड़ा अपने प्राणों की रक्षा का प्रयास करने लगे।

मराठों और हब्शियों के बीच एक जल रेखा और एक अग्निरेखा खिंच गयी थी। उस रेखा को दोनों सैन्य दल किसी को पार नहीं करने दे रहे थे। यह देखकर कि किले के आसपास का घेरा नहीं टूट रहा है, शम्भूराजा ने अपनी चाल बदली। उन्होंने फूल पत्तों में छुपाई गयी अपनी सशक्त तोपों को बाहर निकाला। अब मराठों का यह विशिष्ट तोपखाना अपनी आग की जीभ से किले को चाटने लगा। जंजीरे के तट से टकराने वाला एक-एक गोला पौने चार सेर वजन का था। जब निशाना चूककर ये गोले पानी में गिरते तो समुद्र के पेट से पानी की धार वेग से ऊपर उठती

और आकाश की ओर मुँह किये पानी में फौवारे नाचते दिखाई पड़ते।

जंजीरे के बुर्जो में लगे बड़े-बड़े पत्थर टूटकर नीचे पानी में गिरने लगे। किले का फौलादी किनारा टूटने लगा। तोपों के भयंकर धमाकों से किले के अन्दर धरती हिलने लगी। किले के भीतर बने साठ सत्तर घरों को आग लग गयी। सिद्दी का सुन्दर शीश महल तो चकनाचूर हो गया। छोटे-छोटे रंगीन टुकड़े महल में फैल गये।

धुएँ और आग के बीच मचे कोलाहल से हबशी घबरा गये। जिस समय सामने का कमान धराशायी हुई और नगारखाने की दिशा बिगड़ी उसी दिन हब्शियों के जनानखाने में हलचल मच गयी। बेगमें, बच्चे, रक्षिताएँ किला छोड़कर पिछले दरवाजे से बाहर निकले। जो भी जहाज या नाव मिली उसमें बैठकर बाहर भागने लगे।

कासिमखान और खेरियत खान डूबते हुए किले को बचाने की हर सम्भव कोशिश करने लगे। किले के सिंहद्वार से उनकी शक्तिशाली तोपें—लांडा कासिम, कलाल बागड़ी और व्याघ्रमुखी आग उगलने लगीं, उन तोपों से होने वाला प्रहार प्रचंड था। मराठों के बडे जहाजो को भी उन्होंने जलाना आरम्भ किया। इन तोपों से हब्शियो को कुछ राहत अवश्य मिली, किन्तु शम्भुराजा रुकने को तैयार नहीं थे। इस भीषण आक्रमण से सिद्दी बन्धु निराश हो चुके थे। खैरियत खान ने कासिम से कहा "यह सम्भाजी हमारी इतनी हालत खराब करेगा, यदि हम जानते तो मुगलों के मांडलिक बनते ही क्यो? मराठों की शरण में गये होते तो कम से कम प्राण तो बचते।"

जंजीरे के किले का मुख्य आधार सामने वाली खाड़ी के किनारे पर फैला हुआ हब्शियों का अधिकृत प्रदेश था। पृष्ठभाग का यह क्षेत्र रेवा की खाडी से लेकर बाणकोट की खाडी तक कइ कोस में फैला हुआ था। मुरुड, तला, म्हसला, हरिहरेश्वर, दिवेआगार दिघी जैसा सारा भूभाग हब्शियो के अधिकार में था। बाहर से रसद की आवश्यकता पड़ने पर यह प्रदेश ही हब्शियो के लिए अन्न का भंडार था। इसीलिए सिद्दियों पर दबाव बनाने के लिए शम्भुराजा ने दिघी और आगरदांडा की ओर से जंजीरे की ओर के सभी यातायात को पूरी तरह से रोक दिया था। उस ओर से मराठों की गश्ती नावें और जहाजें किसी को भी जंजीरे की ओर जाने नहीं देते थे। इस प्रकार हब्शियो की पूरी तरह नाकेबन्दी कर दी गयी थी।

डेढ मील की परिधि के जंजीरे के बीचोंबीच पहाड़ी की तरह एक ऊँचा हिस्सा था। उसी पर हब्शियों के किले का ध्वज फहराता रहता था। जब समुद्र की ओर से मराठों ने गोलाबारी शुरू की तो दोनो सिद्दी बन्धु अपनी बचीखुची सेना लेकर उसी बीच वाले टहाड़ा की बगल में जा छुप थे। वहीं गोला बारूद भेजकर

अपने बचाव की लड़ाई लड़ रहे थे। किन्तु अब तक हब्शियों की असीम हानि हो चुकी थी। इतना होने पर भी वे किला छोड़कर जाने के लिए तैयार न थे। क्योंकि यह अजेय जंजीरा और उसकी कृपा से प्राप्त यह समुद्री हुकूमत हब्शियों के गंडस्थल के समान था। उसके फूटने से सिद्दी हमेशा के लिए मिट्टी में मिल जाने वाले थे। इसीलिए उन्होंने अल्लाह और औरंगजेब की शरण ली थी।

इतनी दुर्दशा होने पर भी सिद्दी किला छोड़ नहीं रहा था। यह देखकर शम्भूराजा बेचैन हो गये। उन्होंने कवि कलश से कहा, "समझ में नहीं आता कि किस भूत ने घेर रखा है इस किले को? आधा किला पानी में गिर चुका है फिर भी सिद्दी न तो आत्मसमर्पण करता है और न किला ही छोड़ता है।"

जंजीरे का किला अजेय है, इसलिए हब्शी कभी भी पराजित नहीं होंगे। हब्शियों की प्रजा में इस प्रकार का विश्वास दृढ़ हो गया था। यही कारण था कि कोंकण के लोग हब्शियों से बहुत घबराते थे। लेकिन प्रजा ने जब शम्भूराजा को हब्शियों की आँखें सफेद करते देखा तो उनमें साहस आ गया और वे बाहर आने लगे। नादगाँव और नागाँव के लोगों ने शम्भूराजा के पैर छूते हुए कहा, "हमें इन हब्शियों के बन्धन से मुक्त करायें। हाँ महाराज, यदि कुछ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ी तो हम भी उस गिलहरी की तरह निभाएँगे।"

गाँव के लोग आकर मिले किन्तु अपेक्षित सफलता न मिलने के कारण शम्भूराजा बहुत सन्त्रस्त थे। इसी बीच ग्रामीणों के मुख से निकला 'गिलहरी' शब्द उनके मस्तिष्क में चक्कर काटने लगा। एकाएक उनके भीतर एक ज्योति फूटी। बचपन में शृंगारपुर के केशव पंडित और रमाजी पंडित से सुनी हुई रामायण की एक कथा याद आयी। लंका में जाने के लिए प्रभु रामचन्द्र द्वारा वानर सेना के साथ निर्माण किया गया वह सेतु और थोड़ी थोड़ी रेत लाकर दरारों को भरने वाली वह गिलहरी याद आयी। शम्भूराजा का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने ताली बजायी।

रात में विचार विमर्श करते समय शम्भूराजा ने प्रश्न किया—

"कविराज, दादजी सामने के इस समुद्र में ही रास्ता तैयार किया जाये तो?"

"क्या? क्या कह रहे हैं आप? कहाँ से महाराज?"

"समुद्र में!" शम्भूराजा धीमे स्वर में गरजे।

"क्यों नहीं? क्या यह असम्भव है? प्रभु रामचन्द्र ने लंका जीतने के लिए जिस तरह सेतु का निर्माण किया था वैसे इस जंजीरे को पराजित करने के लिए हम भी सेतु का निर्माण करेंगे।"

शम्भूराजा के सभी सहयोगी घबराये, विचलित हुए, किन्तु राजाज्ञा को कौन नकार सकता था? शम्भूराजा अपनी सेना के लिए प्राणों से भी अधिक प्रिय थे। शम्भूराजा कवि हृदय ही नहीं सचमुच कवि थे। किन्तु उनकी इस प्रकार की कल्पना

के पंखों को पानी पर कैसे उतारा जाये? इन हिंसक लहरों के आघात में सेतु टिकेगा कैसे?

शम्भूराजा अपने निर्णय से हटने को तैयार नहीं थे। तलवार चलाने वालों ने अपने शस्त्र अलग रखकर हाथों में कुल्हाड़ी उठा ली। दूसरे दिन ही राजपुरी की पहाड़ी की बगल के बड़े-बड़े वृक्ष कटकर गिरने लगे। जंजीरे के बुर्ज पर हब्शी सैनिकों की भीड़ एकत्र हो गयी थी। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्हें लगा मराठों का राजा कहीं पागल तो नहीं हो गया?

उस दिन बहुत से सैनिक, घुड़सवार, सरदार और अधिकारी इस कार्य में जुटे थे। इनमें कामाठियों और बेलदारों ने बहुत परिश्रम किया। दिनभर परिश्रम करने के कारण उनका शरीर थक गया था। शम्भूराजा भी दोपहर की कड़ी धूप में समुद्र के किनारे खड़े थे। 'चलो, उठाओ, ढकेल दो।' ऐसी हिदायत दे रहे थे। कभी कभी स्वयं भी वे वृक्ष के तने या बड़े पत्थर को ढकेलने के लिए हाथ लगाते थे। शारीरिक परिश्रम और मानसिक त्रास से शम्भूराजा बहुत थक गये थे। उन्होंने रात को तम्बू के अन्दर बिस्तर में अपना शरीर झोंक दिया।

बाहर जल रहे अलाव का प्रकाश बहुत दूर तक फैला था। अलाव के पास बैठे कविराज कलश, दुर्गादास, भायनाक, दादजी देशपांडे, गोविन्दराव काथे सभी चुप थे। बीच बीच में एक दूसरे की ओर चोर नजरों से देख लेते थे। सारांशत: शम्भूराजा का जो नया अभियान चल रहा था उस पर उन लोगों का भरोसा नहीं था। उस समूह में अरबी सूबेदार जंगेखान भी सम्मिलित था। मराठों की चोर नजरें उससे छिपी नहीं थीं।

"कहाँ रामायण के सपने और कहाँ शरीर को भस्म करने वाली शत्रुओं की तोपें? दोनों में कोई मेल नहीं।" दादजी बोले।

जंगेखान हँसते हुए बोला, "देखो भाई, जो जाति से ही युद्धवीर होता है, उसने यदि एक बार टक्कर देना निश्चित कर लिया तो उसके लिए पर्वत क्या और पानी क्या?"

"खान साहब तुम्हारे लोग भी काम पर गये हैं शायद?" गोविन्दराव ने पूछा।

"गोविन्दराव, भायनाक! तुम्हारे रामायण में क्या सच है? क्या झूठ है? मुझे कुछ भी पता नहीं है किन्तु वहाँ पश्चिम में एक जंग बहादुर समुद्र पर सेतु बाँधकर अपने मकसद में कामयाब हुआ था। इसका मुझे पक्का पता है।"

"कौन? कौन था वह?" बहुत देर से सिर नीचे झुकाए सब की बातें सुन रहे कवि कलश एकदम उठकर खड़े हो गए

"सिकन्दर! अलेक्जाइंडर द ग्रेट। दो हजार वर्ष पहले की बात है। न्यू

टायर नाम टापू को जीतने के लिए उसने इसी तरह समुद्र में सेतु बाँधकर पराक्रम दिखाया था और युद्ध जीता था।''

अरब सूबेदार ने सिकन्दर का उदाहरण दिया तो सरदारों और राजाओं का भी उत्साह बढ़ा। हर रोज सामने वाली खाड़ी आठ सौ गज की दूरी पाटने के लिए बडे बडे पेड़ और पत्थर डाले जाते रहे। कपास से उन्हें जोड़े रखने का प्रयास किया गया। किन्तु समुद्र की क्रुद्ध लहरें पेड़ों और पत्थरों को निगल जाती थीं। पानी में डाला गया वृक्षों और पत्थरों का ढेर दूसरे दिन अपनी जगह पर दिखाई ही नहीं पड़ता था। घोर परिश्रम से किया गया कार्य पानी में बह जाता था। किन्तु शम्भूराजा अपने संकल्प को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। धीरे धीरे आसपास के गाँवो के लोग इस कठिन कार्य में सहभागी होने लगे।

देखते देखते आधा सेतु तैयार हो गया। पानी की गहराई अधिक होने के कारण, बहुत से बड़े बड़े पत्थर अन्दर चले गये। किन्तु संकल्प और उत्साह की कोई सीमा नहीं थी। आधा सेतु बनते ही शम्भूराजा का उत्साह दुगुना हो गया। किन्तु दूसरी ओर से कलाल बांगड़ी और लांडा कासिम तोपें सेतु पर गोले फेंकने लगीं। शम्भूराजा ने भायनाक और दादजी को आदेश दिया। पानी में दाई और बाई ओर फैली हुई जहाजों को इकट्ठा किया गया। ये समुद्री जहाज एक ओर शत्रु की तोपो का सामना कर रही थीं तो दूसरी ओर सैनिको और मजदूरों के लिए सुरक्षा कवच बन रही थीं।

अब सिद्‌दी बन्धुओं ने सारी आशाएँ छोड़ दी थीं। किले में से सिद्‌दी का खजाना बाहर निकाला गया। उसके मूल्यवान वस्त्रों और आभूषणों को पेटियों में भरा गया। अब तक बहती हवा का रुख हब्शी सैनिकों को ज्ञात हो गया था। वे भीतर ही भीतर बहुत घबरा गये थे। दो तीन दिनों में ही किला गिरने वाला था। जजीरे की तटबन्दी पर मराठों की शहनाई और नगाड़े बजने वाले थे। शम्भूराजा की विजय के अन्तिम सोपान पर पहुँचने का समाचार आसपास के गाँवो में पहुँचने लगा था। गाँवों के लोग बड़े उत्साह से आगे आ रहे थे। प्रसन्नता की लहर खेतों और सिवानों में फैल रही थी।

केवल दो दिन पहले सुबह सुबह कुछ सैनिक जंजीरे के पिछवारे से किले पर आये। उन्हें देखकर ठंडे पड़े हब्शियों मे उत्साह आ गया। मराठों को लगा कि उनके पास कुछ रसद और गोला बारूद आ गया है। किन्तु शम्भूराजा की बेचैनी बहुत बढ़ गयी थी। शत्रु दल का यह उत्साह तात्कालिक नहीं था। उसमें किसी गम्भीर रहस्य का आभास मिल रहा था।

उसी रात पन्द्रह बीस घोड़े हिनहिनाते हुए राजपुरी के तट पर पहुँचे। कोथलागढ के किलेदार ने राजा को आधी रात में जगाया। वह बडी घबराहट के

साथ कहने लगा—

"राजन! धोखा हो गया है। उस औरंगजेब का हसन अली नायक सरदार, नासिक होता हुआ कोंकण में आ गया है। उसके साथ बीस हजार घुड़सवार और पन्द्रह हजार पैदल सैनिक हैं। अपना सारा प्रदेश जलाते हुए आ रहा है। कल्याण के बन्दरगाह पर उन्होंने एक झटके में क़ब्ज़ा कर लिया। वहाँ के शहर, राजवाड़ा और कमानों को भारी क्षति पहुँचायी है।"

"सरकार, शीघ्र ही पनवेल और पेन को जलाते हुए रायगढ़ पर चढ़ाई करने का उसका इरादा है।" दीवान पंडित ने चिन्ता व्यक्त की।

"फिर हमारी गश्ती सेनाएँ क्या कर रही हैं?" शम्भूराजा ने उद्विग्नता से पूछा।

"महाराज! भयंकर तूफान के सामने झोंपड़ी कैसे टिक सकती है? उसके लिए बड़ा शक्तिशाली बन्दोबश्त चाहिए।" किलेदार ने उत्तर दिया।

इस समय तक शम्भूराजा के सभी विशिष्ट सहयोगी एकत्र हो गये थे। हसन अली खान द्वारा पैदा की गयी विपत्ति से शम्भूराजा सन्न हो गये थे। वे भारी कदमों से डेरे से बाहर आये। हवा के झोंके आ रहे थे। वे वहीं खड़े होकर नीचे की खाड़ी की ओर देखने लगे। पिछले पचीस वर्षों मे देखे गये हिंदवी स्वराज्य के स्वप्न को पूरा करने वाला सेतु आधे से अधिक तैयार हो चुका था। चार आठ दिन में ही यह कार्य हो जाना था। अँधेरे मे ही संकेत करने वाला आधा ध्वस्त जंजीरा हाथ में आने वाला था। शिवाजी महाराज के शब्द शम्भूराजा के कानों में घूम रहे थे—"एक बार जंजीरा कब्जे में आ जाये तो अपनी राज्य सीमा गंगा यमुना मे जा मिलेगी।"

क्रोध, सन्ताप और उद्वेग के कारण शम्भूराजा का चेहरा लाल अंगारा हो गया था। वे गरजे—"नहीं कविराज, नहीं दाद जी, इस जंजीरे को पानी में डुबोये बिना हम पीछे नहीं हटेंगे।"

"परन्तु राजन, हसन अलीखान की समुद्र की तरह गरजती सेना को पीछे हटाना भी जरूरी है। यह संकट अपना दरवाजा खटखटा रहा है।"

महाराज पीछे हटने को तैयार नहीं थे। परन्तु दादजी, दरिया सारंग, भायनाक आदि सभी ने उनके ऊपर दबाव बढ़ाया। हर एक ने उन्हें समझाते हुए कहा—

"महाराज, जंजीरा तो महत्त्वपूर्ण है ही, लेकिन रायगढ़ उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।"

अन्ततः दादजी रघुनाथ देशपांडे के हाथों में वहाँ का कार्यभार सौंपकर, बड़ी कठिनाई से शम्भूराजा वहाँ से निकले। उनके साथ दो हजार सवारों का एक दल था। शम्भूराजा का घोड़ा बड़ी कठिनाई से पीछे के पर्वत पर चढ़ा। वहीं पर उन्होंने अपने घोड़े का मुँह पीछे की ओर तेजी से मोड़ा। जंजीरे के उस मनहूस प्रदेश के

दृष्टि से आझल होने से पूर्व उन्हे आँख भर देखना था।

समुद्र से हवा के तेज झोके आ रहे थे। ममुद्र मे बना वह सेतु राजा को अस्पष्ट रूप मे दिखने लगा था। सहयोगियो का मनाबल क्षीण न हो इसलिए अपने आँसुओ को रोकने का भरमक प्रयास कर रहे थ। किन्तु उनकी आँखो मे समुद्र उमड आया था। उसमे वह मतु भीगकर गीला हा गया था।

क्षात्र तेज

एक

शम्भूराजा राजधानी में वापस आ गये। रास्ते में पहाड़ के पास चांभारगढ़ पर एक रात का पड़ाव किया था। वहीं पर उन्हें खोजते हुए गुप्तचर वहाँ आये थे और गत मे ही उन्हें ताजा समाचार सुनाया—'हमनअली खान भिवंडी और कल्याण में भीषण अग्निकांड करके घाट की ओर चला गया। मराठों का समझकर उसने पुर्तगालियो के चालीस गाँवों को आग लगा दी।'

शम्भूराजा ने कवि कलश मे कहा—"कविराज एक हसनअलीखान चला गया। किन्तु अपने स्वराज्य को कष्ट देने के लिए औरंगजेब ने जगह जगह अनके भूत छोड़ रखे है। इस औरंगजेब से महाराष्ट्र किस प्रकार लडता रहेगा और कैसे उसे धूल चटाएगा इस पर विचार करना आवश्यक है। राजधानी में चलकर प्रमुख सहयोगियों मे युद्ध के सम्बन्ध में विचार विमर्श करना अति आवश्यक है।"

"बिलकुल ठीक, राजन!"

"कविराज, मेरे साथ गढ नहीं चलो। जल्दी ही दक्षिण कोंकण की ओर निकलो।"

"महाराज?"

"कुडाल और डिचाली में बारूद का कार्य किस तरह चल रहा है? खर्च क्या है? और उत्पादन क्या है? इसके अतिरिक्त गोवा की ओर पुर्तगालियों की क्या गतिविधियाँ चल रही हैं? इसका पूरा विवरण हमें दीजिए।"

"राजन, ऐसे चलने चलते निकलता हूँ। चौथे पड़ाव के लिए गयगढ़ पर स्वामी के चरणों में उपस्थित होता हूँ।" कवि कलश ने उत्साहित होकर कहा।

दूसरे दिन शम्भूराजा रायगढ़ पहुँच गये। महल के द्वार पर महारानी येसूबाई ने सोने की थाली में उनका परिछन किया। महागनी को देखकर शम्भूराजा चमके। उनके पेट में पाँच माह का शिशु पल रहा था। वे उनकी पीताभ कान्ति को देखते रह

गये। उस बेडौलपन में भी एक मिठास, एक मनोवांछित छवि आ गयी थी।

रात को शयनकक्ष में राजा ने कहा, "कुलदीपक का आगमन हो, ऐसी राजा की ही नहीं सामान्य प्रजा की भी आकांक्षा है। रायगढ़ को उत्तराधिकारी मिलेगा तो .."

"हाँ, कवि भाई जी के पुत्रकामेष्टि यज्ञ को यश मिला है।"

"सच है, परन्तु अपने कविराज द्वारा सुझाया गया वह यज्ञ भी कुछ लोगों के पेट में चुभ रहा था। किन्तु ऐसा यज्ञ तो पुत्रप्राप्ति के लिए महाराज दशरथ ने भी किया था।"

"मराठों के हिन्दवी स्वराज्य के लिए भी एक राम मिलेगा।" महारानी के भीतर आनन्द का ज्वार उठ गया था।

"प्रसूति के लिए कहाँ जाएँगी?" शम्भूराजा ने अचानक प्रश्न किया।

"कहाँ? शृंगारपुर नहीं तो दाभोल गणोजी राजा के यहाँ।"

येसूबाई ने बीच में रुकते हुए प्रतिप्रश्न किया—"आपने ऐसा टेढा प्रश्न क्यों किया?"

"कुछ नहीं, महज भाव से पूछ लिया।"

"हमारे पिताजी गतवर्ष भगवान को प्यारे हो गये। लेकिन इससे क्या होता है? अपनी बहन की प्रसूति व्यवस्था न कर पाने की लाचारी अभी शिर्के लोगों को नहीं आयी है। गणोजी राजा हर तरह से समर्थ और समृद्ध हैं।" येसूबाई ने अभिमान के साथ कहा।

जंजीरे का सेतु अधूरा रह गया था। उसी बीच औरंगजेब के आक्रमण ने अनन्त अड़चनों और कार्यों के पहाड़ खड़े कर दिये थे। शम्भूराजा को बहुत देर तक नींद नहीं आयी। येसूबाई को नींद आ गयी थी और देखते-देखते वे गहरी नींद सो गई। एक ही शरीर में दो प्राण विश्राम कर रहे थे। शम्भूराजा अपनी पत्नी की ओर बड़े प्यार से देख रहे थे।

अचानक राजा को स्मरण हुआ कि सन्ध्या समय अन्दर आते समय महाद्वार पर खंडोजी ने उन्हें एक गुप्त लिफाफा दिया था। अलसाए हुए चिराग के प्रकाश में उन्होंने लिफाफे की हरी गाँठें खोलीं। आरम्भ की दो पंक्तियों पर दृष्टि डालते ही उन्होंने अपनी साँस रोक ली। उनकी आँखें मियाँखान के उस पत्र पर जल्दी जल्दी घूमने लगीं।

"शम्भू महाराज, लगता है कि इसके पहले के चार गुप्तपत्र आपके पास तक नहीं पहुँच पाये। हो सकता है कि हमारे गुप्त जासूसों को समाचार की थैली सहित कैद कर लिया गया हो। अपनी बेटी के लिए बाप का कलेजा किस तरह टूटता है? इसे आपने मेरे सन्दर्भ में देखा ही है। मेरी दो दुलारी शहजादियों का विवाह केवल

आपकी कृपा से सम्भव हुआ। महाराज बहुत-बहुत शुक्रिया! आज आपको एक खुशखबरी देते हुए मुझे भी बड़ी खुशी हो रही है। आप भी एक प्यारी-प्यारी बेटी के पिता हुए हैं।" यह समाचार पढ़ते ही शम्भूराजा के सर्वांग से आनन्द की बिजली दौड़ गयी। वह धम्मभ से बिछौने पर बैठ गये। भूपालगढ़ के दिन उन्हें स्मरण हो आये। उस समय समस्याओं से ग्रस्त दुर्गा देवी का चित्र उनकी आँखों के सामने साकार हो गया।

शम्भूराजा की आँखों में आनन्दाश्रु भर आए। दूसरे ही क्षण लाडली बेटी का स्मरण करके उनका हृदय भर आया। वे आगे का समाचार पढ़ने लगे—"बेलों में फूल आने से माली खुशी से पागल हो उठता है। आप तो मराठों के बादशाह हैं। आज आपकी राजकन्या औरंगजेब के अहमदनगर के किले में कैद है और वहीं छोटी से बड़ी हो रही है। किसी बात की चिन्ता न करें। आपकी रानी, राणूदीदी और लाडली बेटी की औरंगजेब ने अच्छी व्यवस्था की है। फिर भी पिंजड़ा तो पिंजड़ा ही है, चाहे सोने का हो या लकड़ी का। किन्तु आप चिन्ता न करें।

कई जन्मों के लिए आपका शुक्रगुजार यह मियाँखान अभी जिन्दा है। बीमारी की वजह बताकर अहमदनगर किले में ही एक छोटी नौकरी कर ली है। यहाँ यह मियाँखान बादशाह की नहीं, अपनी राजदुलारी शहजादी की सेवा-चाकरी कर रहा है।"

शयनगृह में उस रात अपनी बेटी का स्मरण करके राजा के धैर्य का बाँध टूट गया। वे अपना रोना रोक नहीं सके। उनके रोने की आवाज से महारानी येसूबाई भी जग गयीं। पत्र पढ़कर उनका भी मन भर आया। वह भी रोने लगीं। शम्भूराजा सँभले। येसूबाई के पेट में भी एक शिशु था। उसे कष्ट न पहुँचे इसलिए वे येसूबाई को समझाने लगे। उन्हें धीरज बँधाने लगे। रानी के कपोलों पर अपनी उँगलियाँ घुमाते-घुमाते बेटी की स्मृति में उनका मन बहुत छोटा होता जा रहा था।

प्रातः काल राजाज्ञा हुई। रायगढ़ पर जलेबियों की परातें आने लगीं। बहुत लोगों को आश्चर्य भी हुआ। प्रजा में कानाफूसी होने लगी। खंडो बल्लाल ने शम्भूराजा से पूछा, "महाराज, अभी महारानी प्रसृति के लिए मायके गयी भी नहीं, तब तक ये जलेबियाँ?"

"क्यों?"

"नहीं, महाराज को पुत्ररत्न प्राप्त हो ऐसी प्रजा की हार्दिक इच्छा है। हम सब पेड़े चाहते हैं और आप जलेबियाँ बाँट रहे हैं।"

ऐसा है खंडोजी, बच्ची की इच्छा हुई तो आज जलेबियाँ। कल पुत्रप्राप्ति के बाद पेड़े तो हैं ही।" इसी प्रकार कुछ कहकर शम्भूराजा ने बात को टाल दिया।

दो

शम्भूराजा को राजधानी में आये पाँच दिन हो चुके थे परन्तु उनका दर्शन दुर्लभ था। वे न तो दरबार में आते थे और न ही जगदीश्वर के दर्शन के लिए बाहर निकलते थे। उन्होंने अपने महल में स्वयं को बन्द कर लिया था। वे बीमार नहीं थे किन्तु युद्ध नाम के ज्वर ने उन्हें पूरी तरह हैरान कर दिया था।

शम्भूराजा के साथ येसाजी कंक, म्हालोजी घोड़पड़े, निलोपन्त पेशवा, प्रह्लाद निराजी, खंडो बल्लाल, यानाजी मोरे जैसे पुराने प्रतिष्ठित लोग और नयी ऊर्जा के वीर सिर से सिर लगाकर बैठे थे। चार दिन किसी प्रकार बीत गये। गुप्त मन्त्रणा अखंडरूप से चलती रही। दुर्गादास राठौर और शाहजादा अकबर का निवास वकीलों के निवास के पास था। वे दिन में कभी-कभी आकर विचार-विमर्श में भाग लेते थे। उनमें केवल दुर्गादास में ही इन कार्यों रुचि दिखाई पड़ती थी।

पिछले चार दिनों से शम्भूराजा प्रात:काल आठ-नौ बजे से विचार गोष्ठी में बैठ जाते थे। वहीं पर दोपहर और रात के भोजन के लिए थालियाँ आ जाती थीं रात बीतने पर मुर्गे की पहली बाँग के साथ ही वे अपना स्थान छोड़ते थे। केवल घंटे दो घंटे की ही नींद किसी प्रकार ले पाते थे। पुन: स्नान करके घंटे भर उनकी पूजा चलती थी। इसके बाद गर्म दूध का प्याला उनके ओठों को लगता था। फिर वे जल्दी में वस्त्र धारण करते थे। निजी कक्ष से सदर की ओर जाते हुए रायप्पा और अन्य सेवक लिवासबन्द बाँधते और रत्नों के आभूषण पहनाते थे।

भीतर निजी दरबार में इतना व्यस्त कार्यक्रम चल रहा है, इसका किसी को अनुमान तक न था। लेकिन विचार-विमर्श करते समय अर्जोजी यादव और कान्होजी भांडवलकर जैसे विशेषज्ञों द्वारा बनाये गये मानचित्र एवं मोम की बनी अनेक किलों की प्रतिकृतियाँ सदैव ही रखी रहती थीं। उनका अध्ययन करते हुए, सारी रात मशाल की तरह आँख जलाते सभी रात भर जागते रहते थे। औरंगजेब के भयंकर आक्रमण से शंभृराजा बहुत सावधान हो गये थे। बादशाह की पाँच लाख की फौज और लगभग तीन लाख घुड़सवारों का समुद्र की तरह गरजते हुए स्वराज्य पर चढ़ आना उन्हें अच्छी तरह स्मरण था। इस प्रचण्ड का मुँह मोड़ने, उसे दूसरी ओर घुमा देने के लिए कौन-सा भगीरथ प्रयास किया जाय? इसी की चर्चा हो रही थी।

पिछली रात अचानक इस चर्चा में हंबीर मामा अवतरित हुए। उन्हें देखकर नये-पुराने सभी सदस्य आश्यर्चचकित हुए। शम्भूराजा ने आश्चर्य से पूछा—"मामाऽऽ आप यहाँ आयेंगे, ऐसी सम्भावना नहीं थी। आप तो वहाँ मोर्चे पर ...?"

शान्त स्वभाव के हंबीरराव मोहिते हँसते हुए बोले, "शम्भू बेटे, हम बड़े

महाराज के सेनापति रहे हैं और उनके प्रिय बहनोई भी। उनसे दो-चार अध्याय तो पढ़े ही हैं।''

''मतलब?''

''दूसरा एक बन्दा हंबीर बनकर बीमारी का स्वांग किये हमारी भूमिका निभा रहा है। हमारे शुत्रुओं को ही नहीं मित्रों को भी यही विश्वास है कि मैं मोर्चे पर मौजूद हूँ।''

''वाहऽऽ।'' शम्भूराजा ने हंबीरराव की प्रशंसा की।''

हंबीरराव की उपस्थिति से सभी में उत्साह आ गया।

जिस समय किले पर जोरों की चर्चा चल रही उसी समय रायगढ़ किले की तलहटी में निर्माण कार्य जोरों पर था। नयी सेना गठित की जा रही थी। रायगढ़वाड़ी के अठारह कारखाने रात-दिन युद्ध सामग्री तैयार करने में लगे थे।

पाँचवें दिन दोपहर को प्रमुख व्यक्तियों की बैठक आरम्भ हुई। उसके पूर्व ही कवि कलश राजधानी में वापस आ चुके थे। उन्होंने तोप गोलों का, कच्चे बारूद का, भावी योजना का सारा ब्यौरा शम्भूराजा के सम्मुख प्रस्तुत किया। बैठक शुरू हो गयी किन्तु महारानी येसूबाई अभी भी वहाँ पहुँच नहीं पायी थीं। राजा को अपनी सहचरी महारानी की प्रतीक्षा थी। उसी समय महल के बाहर पैरों की आहट सुनाई दी। महारानी के साथ गयी आठ-दस पालकियाँ वापस आयी थीं। अपनी पाँच महीने की गर्भावस्था में भी बिना किसी का सहारा लिए, अपने को सँभालते हुए येसूबाई बाहर निकलीं। उसी अवस्था में वे आकर बैठक में सम्मिलित हो गयीं।

महारानी को कुछ विलम्ब हो जाने से राजा को चिन्ता हुई। उनकी प्रश्नातुर आँखों का भाव समझकर येसूबाई बोली—''जंजीरें की लड़ाई में काम आये चार सौ सैनिकों की सूची आयी थी। उनमें से तीस बालपरवेशी निकले। उनकी व्यवस्था देखने के बाद ही मैं यहाँ आयी।''

बैठक में उपस्थित दुर्गादास राठौड़ ने शम्भूराजा की ओर दृष्टि घुमाई। शम्भूराजा ने उन्हें बताया—''हिन्दवी स्वराज्य के लिए जो युद्ध में वीरगति प्राप्त करते हैं उनके बाल-बच्चों की समुचित देखरेख के लिए पिताजी ने बालपरवेशी व्यवस्था आरम्भ की थी। आज भी हम उसका निर्वाह कर रहे हैं। ''

''बालपरवेशी, यानी क्या?''

''युद्ध में जिन बच्चों के पिता काम आते हैं, उनका पालन-पोषण अपने बच्चे की तरह राज्य की ओर से किया जाता है। ऐसे बच्चे बड़े होकर जब तक स्वयं सेना में भर्ती नहीं हो जाते तब तक उनका सारा दायित्व राज्य पर होता है। उनकी माँ का यदि कोई दूसरा सहारा नहीं है तो उसकी भी व्यवस्था बालपरवेशी गृह में की जाती है।''

''वाहऽ वाह! बहुत खूब—''

"हाथियों के पीलखाने के पास हमारा एक बड़ा बालपरवेशी गृह है। एक बार जाकर देख लो। केवल रायगढ़ पर हिन्दू, मुस्लिम, ब्राह्मण आदि सभी जातियों और धर्मों के सत्तर बालपरवेशी रहते है। उनमें जंजीरा के नये तीस और जुड़ेंगे।"

इस यथार्थ को सुनकर दुर्गादास बहुत भावुक हो गये। वे कहने लगे—"वाह शम्भू महाराज! यह दुर्गादास दिल्ली, आगरा, राजपूताना जैसे अनेक प्रदेशों में घूमा है। परन्तु शिवाजी और सम्भाजी महाराज जैसा प्रजाहितैषी राजा, कोई दूसरा देखने को नहीं मिला।"

चर्चा आगे चलती रही। युद्ध सम्बन्धी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विचार-विमर्श के लिए सभी अष्ट प्रधान, सेनापति, नये-पुराने सरदार और राजा के मुख्य सहयोगी उपस्थित थे। दादजी रघुनाथ देशपांडे ने जंजीरे की लड़ाई अभी तक चालू रखी थी। कोंकण के समुद्रतट पर प्रत्येक बन्दरगाह में पुर्तगाली-मराठा संघर्ष की आग सुलग रही थी। जिस प्रकार कोई सपेरा पूरे घर को विषैला बना देने के लिए अपने साँपों की सभी टोकरियाँ खाली कर देता है उसी प्रकार हिन्दवी स्वराज्य को समाप्त कर देने के लिए मुगलों की फौज बाहर निकली थी। ऐसी परिस्थिति में स्वराज्य के दूसरे छत्रपति सम्भाजी महाराज अपने स्वराज्य के लिए क्या निर्णय लेते हैं? इस पर सभी का ध्यान केन्द्रित था।

सम्भाजी महाराज ने अत्यन्त विनम्र शब्दों में कहना आरम्भ किया—"बहादुर जवानों, हम मराठों के लिए पर्वतराज सह्याद्रि वैसे ही जीवन और प्राण के समान है जैसे श्रीकृष्ण के लिए गोकुल था। हमारे पिताजी यही मानते रहे। उन्होंने सह्याद्रि नाम का ही लौह कवच धारण किया था। सह्याद्रि का आश्रय लेकर ही अनेक दाँव-पेंच का प्रयोग करके, हिन्दवी स्वराज्य की सोने-मोतियों की फसल काटी।"

"परन्तु शम्भूजी महाराज! हमारे समय की लड़ाइयाँ बहुत छोटी थीं। किसी की पाँच लाख की फौज तो हमारे सपनों में भी नहीं आयी थी।" युद्ध अनुभवी मालोजी घोड़पड़े ने कहा।

"वही कह रहा हूँ, घोड़पड़े काका।" शम्भूराजा ने दृढ़ शब्दों में कहा, "जब तक सह्याद्रि नाम का यह लौह कवच हमारे पास है तब किसी की क्या चिन्ता? कल तो पाँच तो क्या दस लाख की फौज का समुद्र हमारे ऊपर चढ़ आये तो भी हम उसे इस सह्याद्रि के कवच से चकनाचूर कर देंगे।"

शम्भूराजा के इस आत्मविश्वास से सभी के भीतर स्वाभिमान और वीरत्व की लहर दौड़ गयी। किन्तु आरम्भ में ही उन्होंने सभी को एक संकेत दिया।

"एक बात स्मरण रखो। औरंगजेब की इतनी बलशाली सेना का खुले मैदान में मुकाबला करना हमारे लिए वज्रघात होगा। नेसरी के जंगल में प्रतापराव गूजर ने आदिलशाही फौज पर आक्रमण करके अपने प्राण गँवा दिये। वे अमर हो गये।

किन्तु अब हमें भावावेश में नहीं, बहुत सोच समझकर सुनियोजित ढंग से अत्यन्त सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाना होगा। हम ऐसी खूबी से लड़ें कि इसी दक्षिण के जंगल में उस पापी औरंगजेब की कब्र खोद दें। हमें महाराष्ट्र के ललाट पर शिवाजी महाराज द्वारा अंकित हिन्दवी स्वराज्य की रक्षा करनी है। साथ ही अपने साढ़े तीन सौ किलों और समुद्री जहाजों में से एक भी खोना नहीं है।"

अर्जोजी द्वारा बनाये गये मानचित्र की ओर उँगली से संकेत करते हुए शम्भूराजा ने कहा, "हम मराठा लोग केवल सह्याद्रि के जंगलों में छुपकर नहीं बैठे थे। बल्कि कुडाल मालवन से लेकर बसई और तारापुर तक का हब्शियों का सारा क्षेत्र, अपवाद स्वरूप मुम्बई को छोड़कर सम्पूर्ण समुद्रतट, वहाँ के सारे बन्दरगाह, सभी खाड़ियाँ हमारे अधिकार में रहे हैं। कुकड़ी नदी के पास से लेकर नीचे कोल्हापुर, बेलगाँव तक का बारह-बारह चौबीस मावल और अड़तीस नेरे के क्षेत्र में हर नदी, हर पहाड़, हर घाटी पर जगह-जगह हमारी चौकियाँ रात दिन पहरा देती हैं। हमारे सह्याद्रि का प्रत्येक किला वस्तुत: पिघले लोहे का कुंड है।"

"महाराज! फिर भी अपना प्राणतत्व क्या है?" निलोपन्त पेशवा ने पूछा।

"जहाँ सम्भव हो वहाँ तत्काल आक्रमण करना जहाँ सम्भव न हो वहाँ कुछ समय के लिए पीछे हट जाना। हमारा शत्रु होशियार और अनुभवी है। वह यकायक सह्याद्रि पर आक्रमण कर देने की हिम्मत नहीं दिखाएगा। किन्तु यदि उसने आक्रमण कर दिया तो यहाँ की घाटियों में हम मुगल सेना को अच्छा सबक सिखाएँगे।"

"परन्तु महाराज! शत्रु जब तक सह्याद्रि की बाँहों में नहीं आ जाता क्या तब तक हम उसकी प्रतीक्षा करेंगे?" हंबीरराव ने पूछा।

"छि · छि : कतई नहीं। शत्रु और सर्प को जिन्दा छोड़ना युद्धशास्त्र की दृष्टि से घातक है। यह सच है कि एक ओर मुगलों की पाँच लाख की फौज है और दूसरी ओर हमारे साठ-सत्तर हजार सैनिक। किन्तु इसीलिए हमें रुकना नहीं है। अपनी सेना की छोटी-छोटी टोलियाँ बनाकर मुगलों की सेना और उनके प्रदेशों पर टूट पड़ना है। उन्हें जला-जुलाकर और लूटपाटकर कंगाल करना है। यही हमारी नीति है। हंबीरराव आप पहले की भाँति अपना आग का खेल जारी रखकर मुगलों को अधिक से अधिक हानि पहुँचाएँ।"

इस विचार-विमर्श में छोटे से छोटे मुद्दों पर गम्भीरता से चर्चा की गयी। अपने और पराये का विवरण प्रस्तुत किया गया। उसी समय सेनापति हंबीरराव मोहिते बोले, "परम्परा के आधार पर विचार किया जाये तो हैदराबाद का कुतुबशाह, बीजापुर का आदिलशाह, जंजीरे के सिद्दी, दिल्ली के मुगल और पुर्तगाली ये पाँच हमारे प्रमुख शत्रु हैं।"

"परन्तु हंबीरराव एक ही समय में सभी शत्रुओं के साथ युद्ध छेड़ना,

युद्धशास्त्र की दृष्टि से मूर्खता होगी। सौभाग्य से आदिलशाह और कुतुबशाह हमारे दोनों शत्रु पिताजी के अन्तिम दिनों में मित्र बन गये थे। इसके लिए पिताजी ने राजनैतिक दबाव और कूटनीति का रास्ता अपनाया था। यह मैत्री भाव हम भी चालू रखेंगे। हाँ, भविष्य में जब औरंगजेब और हमारी अन्तिम और निर्णायक लड़ाई आरम्भ होगी तब दक्षिण के सभी राजा एकत्र होंगे। उस स्थिति के लिए हम रात दिन प्रयास कर ही रहे हैं।"

सिद्दी का नाम आते ही कवि कलश अधीर होकर बोल पड़े—"राजन, वह सिद्दी नाम का नटखट चूहा उसी समय चीर दिया गया होता तो कितना अच्छा होता?"

इस प्रसंग से शम्भूराजा कुछ विचलित हो गये। किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपने को सँभाल लिया। उन्होंने कहा, "हमारे आक्रमण से जंजीरे के बुर्ज गिर गये हैं। सिद्दी पराजित नहीं हुआ फिर भी वह अन्दर मे पूरी तरह हिल गया है। अब इसके बाद सिद्दी बन्धु खुलकर औरंगजेब से मिलने के लिए भी नहीं दौड़ेंगे क्योंकि पहले आक्रमण में ही हमने उनके हौसले पस्त कर दिये हैं।"

बीच में ही येसूबाई ने खंडो बल्लाल को सामने बुलाया। वे नम्र स्वर में बोलने लगीं—"एक बार युद्ध भूमि पर घोड़े नावने लगें तो रसद की माँग बढ़ जाती है। राजधानी की ओर रसद के माँगपत्र आने लगते है। यदि बिना रसद के अपने सैनिकों के प्राण संकट में पड़ें तो इससे बड़ा दूसरा पाप नहीं। हमें नासिक से दक्षिण में जिंजी और रामेश्वर तक सेना के लिए रसद पहुँचानी पड़ती है। स्वामी को पहले ही इस ओर ध्यान देना चाहिए।"

शम्भूराजा ने तत्काल रसद सम्बन्धी जानकारी ली। विशेष रूप से उन्होंने कर्जत, कोथलागढ़, शाहपुर, माहुली के शाक्तिशाली किलों नासिक की ओर अहिवन्तगढ़, साल्हेर और मुलेर के किलों, अष्टागार के सागरगढ़, सिंधुदुर्ग, राजापुर, जैतापुर जैसे किलों में रसद और गोला बारूद की स्थिति का जायजा लिया। सभी जगहों पर जाँच की गयी। जहाँ कुछ कमी थी वहाँ रसद भेजने का ओदश दिया गया।

येसूबाई ने कहा, "इस वर्ष पूना की ओर भयानक दुर्भिक्ष पड़ा है। सरकार से कहकर हमने पहले ही अनाज के बोरे और कोंकण से पिंजड़े वाली गाड़ियाँ वहाँ भेजी हैं। इसके पहले अष्टागार का सूखा भी बहुत ही जानलेवा था।"

शम्भूराजा का चेहरा तनावग्रस्त हो गया। वे कहने लगे—"यद्यपि अतिवृष्टि और अनावृष्टि के कारण आने वाला दुर्भिक्ष राज्य के सामने घोर सकट बना हुआ है। अनेक बार प्रकृति के रौद्र रूप के सामने मनुष्य का कोई जोर नहीं चलता। किन्तु शत्रु की इतनी बड़ी फौज का यहाँ रहना और लगातार लड़ाइयों का होते रहना, इस

दुर्भिक्ष के संकट को और भी बढ़ाने वाला है।"

"खंडोबा!"

"जी महाराज!"

"इस सम्बन्ध में सेना और प्रजा को सावधान रहने की सूचना जल्दी ही दे दो।"

शम्भूराजा ने दरिया सारंग और दौलतखान को जानबूझकर जंजीरे की लड़ाई से वापस बुला लिया था।

शम्भूराजा ने कहा, "हमारे समुद्रीतटों पर लगभग सौ वर्षों से पुर्तगालियों का क़ब्ज़ा बना हुआ है। उन्हें उखाड़ फेंकना सरल नहीं है। चौल, थाने, बसई , तारापुर में फिरंगियों के साथ हमारी नोंक-झोंक जारी है। निलोपन्त, फिलहाल आपकी नियुक्ति किसी न किसी बन्दरगाह या खाड़ी के किनारे होगी। बोलिएऽऽ"

महाराज, हमारी सेना ने माहिम और तारापुर की पुर्तगाली चौकियों पर पहले ही झटके में कब्जा कर लिया था। उनमें माहिम पुन: फिरंगियों के क़ब्ज़े में चला गया। किन्तु तारापुर को पुन: हमने अपने अधिकार में खींच लिया। चोल और देवदंड क्षेत्र में हमारा आग का खेल चल ही रहा है।"

"वाह निलोपन्त आजकल पेशवा होने पर भी आपकी कलम से स्याही गिरने की जगह आपकी तलवार से फिरंगियों का खून बहता है। 'निलोबा आयाऽऽ' सुनते ही फिरंगियों की जहाजें पानी के पेट में बैठ जाती हैं। आपका यह पराक्रम देखने के लिए मोरोपन्त को जीवित रहना चाहिए था।"

शम्भूराजा ने गोवा के पास अंजदीप टापू पर तटबन्दी निर्माण के लिए सेना भेजी थी। आवश्यक पत्थर और चूना भी भेजा गया था। उसका स्मरण दिलाते हुए राजा ने पूछा—"कविराज आप डिचौली से होकर आये हैं। बतायें कि अंजदीप पर किले का निर्माण कार्य कहाँ पहुँचा है?"

"निर्माण कार्य आरम्भ होते-होते ही पुर्तगालियों के जहाज वहाँ आ गये। उन्होंने निर्माण का कार्य रोक दिया।"

"लेकिन आज तक तो वह जगह मुक्त ही थी। कविराज, आप लोगों की समझ में क्यों नहीं आता कि भविष्य में गोवा के फिरंगियों की छाती पर पाँव जमाने के लिए वह जगह बहुत ही उपयोगी है।

"वस्तुत: यही बात उस कौंट दी आल्व्होर ने भी अनुभव की है इसीलिए तो उन्होंने तत्काल काम को रोक दिया।"

सम्भाजी महाराज विचारमग्न हो गये। फिर वे एक उच्छवास छोड़ते हुए बोले, "सिद्दियों की तरह ही इन फिरंगियों को भी अपाहिज बनाकर छोड़ना चाहिए। गोवा के साथ ही इस वाइसराय को भी पानी में डुबो देना चाहिए। नहीं तो

यह रँगा सियार जल्दी ही उस औरंगजेब के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो जाएगा।''

इस विचार गोष्ठी में अनेक नये निर्णय लिए गये। घोड़ों की नस्ल सुधारने के लिए सरदारों, थानेदारों, देशमुख और देशपांडे को रुपये दिये गये।

औरंगजेब के आक्रमण को किस प्रकार रोका जाय? इस विषय पर शम्भूराजा ने बहुत विस्तार से चर्चा की। येसाजी और हंबीरराव से प्राप्त सूचनाओं पर गम्भीरता से विचार किया। शम्भूराजा सन्तुष्ट दिख रहे थे। उन्होंने कहा—

''फिलहाल अपने राज्य में भाईबन्दी में धोखेबाजी घुला पानी स्वच्छ होता दिखाई पड़ रहा है। वैसे तो स्त्रियों के बारे में छोटी-मोटी कहानियाँ गढ़कर बाजार में गप्पें लगाने और अफवाहों को फैलाने में दिमाग की कोई जरूरत नहीं होती। किन्तु औरंगजेब जैसे बलशाली शत्रु और समुद्र सी उफनती उसकी विशाल सेना का मुकाबला करने के लिए पहाड़ जैसी बलवान छाती चाहिए। शेर की तरह साहस चाहिए। माँ भवानी की कृपा और पुण्यवान पिता के आशीर्वाद से हम इस अग्निदाह से अवश्य ही सही-सलामत बाहर निकलेंगे।''

बोलते बोलते शम्भूराजा यकायक चुप हो गये। सभा में गाते हुए जैसे कोई सिद्ध गायक अपनी गायनकला में तल्लीन हो जाता है उसी प्रकार युद्ध की योजना बनाते समय शम्भूराजा की स्थिति हो रही थी। वे बोले—''कोई भी किला यदि अजेय रह सकता है तो उसमें संचित गोला बारूद के भंडार और साहसी सैनिकों के बल पर ही। गोले बारूद की आग एक बार बुझ जाये तो भी कोई बात नहीं किन्तु घोर प्रतिकार करने वाले जवानों के सीने की आग कभी ठंडी नहीं पड़नी चाहिए। क्यों हंबीरराव?''

''बिलकुली ठीक सम्भाजी राजा।''

अचानक शंभूराजा को अपनी दादी जीजामाता का स्मरण हो आया। वे प्रसन्नता से हँसे। पूर्णिमा की ज्योत्स्ना उनके चेहरे पर फैल गयी। उसी समय एक पुरानी बात उनकी स्मृति में उछली। वे भावुक होकर कहने लगे—

''किसी किले को जीतने के लिए आक्रमण कैसे करना चाहिए? और उसे किस प्रकार कब्जे में लेना चाहिए? इसकी वीरतापूर्ण कहानियाँ मैंने दादी की गोद में सिर रखकर सुनी हैं। देवगिरी का किला अजेय था। किन्तु हमारे परदादा—लखुजी जाधवराव साहब ने कैसे आक्रमण किया? इसकी कथा दादीजी ने मुझे सुनाई थी। वह मैं आप लोगों को बताऊँ?''

''हाँ, हाँ, महाराज अवश्य सुनाइये।'' बैठक में चारों ओर से आवाज आयी।

''देवगिरी का किला उँचाई पर बना है। किले के ऊपरी हिस्से में जाते समय अनेक गुप्त रास्ते बने हैं। ये रास्ते अँधेरे से होकर जाते हैं। बीच में आग और पानी की खंदकें बनाई गयी हैं। यदि किसी ने इस विशालकाय किले पर आक्रमण करने

के लिए सोचा भी तो पहले उसे किनारे की तटबन्दी पार करनी पड़ेगी फिर खंदक। यदि किसी तरह खंदक पार करने में कोई सफल हो गया तो फिर उसे ऊपर सरकने में बड़ी कठिनाई होगी। बीच में ही अनेक अन्धे मोड़ और गुप्त रास्ते हैं। यदि इन अँधेरे रास्तों का ज्ञान नहीं है तो कोई भी सेना अधिकारी अपनी फौज के साथ इन्हीं अँधेरे रास्तों से होकर गहरी गुफाओं में जा गिरेगा। या फिर किले के नीचे गिर कर मोक्ष लाभ करेगा। इस तरह के रास्तों को किले के निर्माण के समय ही योजनाबद्ध तरीके से बनाये गया है। ये समस्याएँ आक्रमणकारी के ध्यान में भी नहीं आएँगी।''

''यह कैसे?'' हंबीरराव ने बीच में ही प्रश्न किया।

''क्योंकि उनकी रचना पैरों के नीचे की जाती थी।'' शंभूराजा हँसते हुए कहने लगे—''आगे जाने के लिए पैरों के नीचे काली जमीन नहीं पन्द्रह-सोलह हाथ लम्बी लोहे की चद्दर बिछी है। यह बात किसी के भी ध्यान में नही आ सकती। जब बाहर की तटबन्दी पर कोई आक्रमण होता है तो इस लम्बी फौलादी चादर को तपा दिया जाता है। नीचे लकड़ियाँ जलाने के लिए हवा भी आनी चाहिए दीवार में सुरंगें बना दी गयी थीं। हमारे परदादा किला जीतते हुए उस तपती लौह चादर तक जा पहुँचे थे। उस समय किले के सैनिक उनके परिणाम की कल्पना करके मन ही मन हँसने लगे।

''हँसेंगे ही, उस भयानक संकट की उन्हें क्या जानकारी थी?'' महारानी येसूबाई बोली।

''नहीं, महारानी, हमारे परदादा बड़े बुद्धिमान थे। किला जीतने का संकल्प लेकर वे अन्दर गये थे। अन्दर जाते समय ही वे अपने साथ पानी से भरी हुई बड़ी बड़ी चमड़े की मोटें और डोले ले गये थे। उम तपती चादर पर शीघ्रता से पानी उड़ेल दिया गया और वह तपता तवा बुझ गया। उस अभिमानी अजेय किले ने अपना सिर हमारे परदादा के कदमों में रख दिया।''

यह यथार्थ ऋथा सुनकर सभी लोग दंग रह गये।

बैठक में हुई दीर्घकालीन चर्चा का एकबार पुनः मूल्यांकन किया गया। शम्भूराजा ने अन्त में कहा, ''सम्भव होगा तो सभी मोर्चो पर आक्रमण होगा। जहाँ सम्भव नहीं होगा वहाँ कुछ समय के लिए युक्तिपूर्वक पीछे हटना हमारी नीति होगी। लाखों की सेना लेकर औरंगजेब आएगा। उसे युक्ति से टालना होगा। रुक गया तो चकमा देंगे। सह्याद्रि की ढाल पेट और पीठ से बाँधकर उस पापी औरंगजेब से हम धर्मयुद्ध लड़ेंगे।

''वाहऽ वाहऽ'' बैठक के सभी लोगों ने राजा के निर्णय की प्रशंसा की।

खंडो बल्लाल, कविकलश, निलोपन्त एक एक को चेतावनी देते हुए और उन्हें संकल्प का रस पिलाते हुए शंभूराजा ने कहा—

''इसलिए कहता हूँ यारो! हमारे कन्धे पर शिवाजी महाराज और जीजामाता

के पुण्य और बौद्धिक चैतन्य का पावन प्रसाद है। यह दैव दुर्लभ आशीर्वाद यों ही नहीं समाप्त हो जाएगा। चलिए, निर्णय के अनुसार उस बादशाह और उसकी पाँच लाख की सेना पर टूट पड़ें।

जिस प्रकार मद्य मे पागल हाथी किले के सिंहद्वार पर सिर पटकता है और द्वार में लगे बड़े-बड़े खीले उसकी मस्ती को दूर कर देते हैं, उसी प्रकार कल रायगढ़ पर अधिकार न कर पाने के कारण औरंगजेब नाम का बूढ़ा हाथी हमारे दरवाजे पर निराश होकर धक्का मारेगा, अपना मस्तक फोड़कर हमारे सिंहद्वार पर अपना खून बहाएगा। तभी सच्चे अर्थो में विजय की रंगोलियाँ बनाएँगे और नौबत-नगाड़े बजाने का आरम्भ करेंगे।''

तीन

शम्भूराजा विचारगोष्ठी से हंबीरराव को अपने साथ अन्दर ले गये। बीच के चौक में हंबीरराव बैठ गये सम्भाजी राजा और महारानी येसूबाई हंबीरराव की ओर एकटक देखते रहे। उनकी इस दृष्टि से हंबीरराव विचलित हो गये।

शम्भूराजा ने दुखी स्वर में कहा, ''हंबीरराव, जिन पर हम प्राण निछावर करते हैं, ऐसे तीन प्राणी तीन वर्ष से बादशाह के बन्दीखाने में पड़े हुए हैं। उनके बिना यह वैभव, यह राजपद हमें दुखी करता है।''

हंबीरराव ने राजा की ओर घबराई निगाहों से देखते हुए कहा, ''एक राणूबाई और दूसरी दुर्गाबाई—क्या यही दो नहीं?''

''हंबीरराव हमें एक कन्यारत्न की भी प्राप्ति हुई है। यह समाचार बाद में मिला है। यह समाचार वहाँ के हमारे अपने आदमी ने दिया है। इसलिए खबर पक्की है। हमारी कन्या अब तीन वर्ष की हो गयी होगी।'' यह कहते हुए शम्भूराजा का स्वर काँपने लगा।

हंबीरराव को धक्के पर धक्के लग रहे थे। राजकन्या की प्राप्ति की खबर, बादशाह के अन्त:पुर तक पहुँचे शम्भूराजा के हाथ। हंबीरराव को विस्मयकारक लगा। किन्तु उन्हें सोचने के लिए अधिक समय न देते हुए शम्भूराजा गरजे—''क्यों हंबीरराव, क्यों? पिछले तीन वर्षो से हमें कहते रहे है। हमें स्वयं अहमदनगर के किले पर आक्रमण करना चाहिए था। अपने प्रियजनों को शत्रु के बन्दीखाने में सड़ता

हुआ छोड़कर, यहाँ राजा बनकर जीने का हमें क्या अधिकार है?"

"शम्भू बेटे! स्वराज्य का सेनापति होने के नाते मुझे आप से भी अधिक लज्जा आती है। हम इस बात से बहुत लज्जित हैं। परन्तु हम शान्त नहीं बैठे थे। हमारी दस-दस हजार की फौजें उस किले पर आक्रमण कर चुकी हैं। उनके बाद हमारी फौज तूफानी चक्रवात की तरह अहमदनगर के चारों ओर चक्कर काटती रहीं। परन्तु निजाम घराने का वह किला बहुत मजबूत है। वहाँ का किलेदार रूहुल्लाखान भी शक्तिशाली है। वह प्रदेश मुगलों का है और सह्याद्रि से बहुत दूर है। शत्रुओं का पहरा भी शक्तिशाली है फिर भी हम पीछे नहीं हटे।"

"हंबीरराव, कुछ तो कीजिए।" येसूबाई ने अतिस्वर में कहा।

"और यदि आपसे हो सकता है तो हमें जाने दीजिए। हम स्वयं जाकर किले का दरवाजा तोड़ेंगे।"

"महाराज! आपकी इसी उतावली प्रवृत्ति से हमें भय लगता है।"

हंबीरराव कहने लगे—"शम्भू बेटे, आप शान्तिपूर्वक सारी बातों को अच्छी तरह समझ लें। बड़े महाराज का जन्म शिवनेरी किले पर हुआ था। किन्तु उस किले से लगा हुआ जुन्नर का इलाका हमेशा मुगलों के अधीन रहा। जालनापुर से आते समय शिवाजी महाराज को संगमनेर के समीप रणमस्तानखान ने किस तरह पकड़ रखा था? उन्हीं के मुँह से आपने सुनी थी न वह कहानी? इसलिए कहता हूँ कि धीरज रखिये। लाखों लोगों की आजीविका आप पर ही निर्भर है। आप हमारे हिन्दू साम्राज्य के आधार स्तम्भ हैं। अत: इस प्रकार होशो-हवास खोकर कठिनाई में उलझने का आपको अधिकार ही नहीं है। हंबीरराव ने रात का भोजन शम्भूराजा के साथ लिया और दोनों ने अनेक राजनैतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श किया। एक ही समय में अनेक मोर्चों पर मुगलों के साथ मराठों का युद्ध आरम्भ हो गया था। इसलिए हंबीरराव का यहाँ अधिक दिन रुकना सम्भव नहीं था।"

दूसरे दिन बिदा लेने के लिए हंबीरराव राजमहल में पहुँचे। सन्ध्या का समय था। ग्यारह-बारह पालकियाँ बाहर खड़ी थीं। हंबीरराव ने देखा कि महारानी कहीं जाने की तैयारी में हैं। उन्होंने पूछ लिया—"बहूरानी पालकियाँ तो रायगढ़ की दिख रही हैं, शृंगारपुर की नहीं।"

"हाँ!" येसूबाई चौंक गयीं।

"परन्तु इतनी देर से निकल कर आप शृंगारपुर पहुँचेंगी कैसे?" हंबीरराव ने चिंतित होकर पूछा।

सत्य को छुपाना महारानी के लिए कठिन हो गया। बगल में खड़ी माताजी भी दुविधा में पड़ गयीं। "हंबीरराव हमें प्रसूति के लिए शृंगारपुर नहीं यहीं गंगोली की ओर जा रहे हैं। पुत्र का जन्म वहीं पर हो, ऐसी हमारी माताजी और भाई की

इच्छा है। येसूबाई की काजलभरी आँखों में आँसू छिप नहीं पाये।

सभी वरिष्ठों को नमन करके येसूबाई शीघ्रता से पालकी में बैठ गयीं। हाथ की लाठियों का सहारा लेकर कहार चल पड़े।

दूर जाती पालकियों को शम्भूराजा आँखभर निहारते रहे। छोटी भवानी महीन पर्दा बगल हटाकर पिता की ओर हाथ हिला रही थीं। गणोजी शिर्के ने अपनी बहन की प्रसूति के लिए ले आने के लिए पालकी आदि नहीं भेजी थी। उल्टे एक ऐसा पत्र भेजा था जिसके एक-एक शब्द छुरी के नोक की तरह शम्भूराजा के कानों को छेद रहे थे—'येसू प्रसूति के लिए आने वाली हो, इसके लिए यहाँ से पालकी नहीं भेज रहा हूँ। तुम भोसलों ने हम शिर्के लोगों के लिए छोड़ा ही क्या है? हमारे वतन को लूटा, हमे भिखारी बना दिया। फिर भी तुम प्रसूति के लिए अपनी पालकी से यहाँ आ जाना। किन्तु आते समय अपने मक्कार ससुर के किये गए वादे के अनुसार हमारे वतन के मुहर लगे कागजात साथ लाना न भूलना।'

महारानी की पालकी किले से नीचे उतर रही थी। रानी के बिना महाराज को सूना-सूना लग रहा था। उस समय बिदा लेती हुई छोटी भवानी का चेहरा बार-बार उनके सामने आ रहा था। उस भवानी से एक वर्ष छोटी बेटी भी उन्हें स्मरण हो रही थी। उन्हें याद आने लगीं अहमदनगर के किले में, शत्रु के कड़े पहरे में कैद, अपने छत्रपति पिता से मिलने के लिए आतुर वे छोटी छोटी आँखें। राजा का अन्तर्मन भीतर ही भीतर चीत्कार कर रहा था।

"महाराज मैं चलूँ क्या?" हंबीरराव ने जोर से पूछा।

"अँ- ? हाँ" सँभलते हुए शम्भूराजा ने हंबीरराव का हाथ पकड़ा वे साग्रह कहने लगे—"हंबीरराव हमारे हृदय के छोटे से टुकड़े के लिए कुछ कीजिए। कृपया इसे किसी राजा का आदेश न समझें। पर यह जिसे अभी तक देखा तक नहीं उस छोटे बच्चे को चूमने के लिए तरस रहे एक पिता की प्रार्थना अवश्य है।

"मराठों के गंडस्थल का मतलब है, उनके शैतानी किले। एक के बाद एक किला जीतते जाओ। ऐसा करते-करते सिर्फ छः महीने में पूरा दक्खन जीत लेंगे।"

"जैसा आपका हुक्म, हजरत!" शहाबुद्दीन फिरोजजंग ने अपने राजा के सामने गर्दन झुकाई। वह तूरानी जाति का आबदार आँखों वाला वह भयंकर योद्धा सरदार था।

"किस किले से शुरुआत करोगे, फिरोजजंग?"

"रामशेज से।"

"रामशेज?"

"हाँ, यह नासिक से छः-सात मील पर है। पैंतीस-चालीस हजार की फौज

लेकर जा रहा हूँ।"

"कितना समय लगेगा?"

"सुबह की नमाज के बाद बम लगाना शुरू करूँगा और किला जीतकर दोपहर की नमाज के लिए किले पर ही चादर बिछाऊँगा।"

"वाहऽ, बहुत खूब।" बादशाह बहुत सन्तुष्ट दिख रहा था।

"हमें इस सम्भा को पराजित करके गोलकुंडा और बीजापुर के राज्य नष्ट करने हैं। केवल आठ-महीने के भीतर पूरे दक्खन पर क़ब्ज़ा कर लेना है। एक वर्ष के अन्दर हजरत बाबा चिस्ती के दरबार में उत्तर की ओर अजमेर पहुँचना है।" औरंगजेब ने सूचित कर दिया।

फिरोजजंग उस दिन जल्दी ही औरंगाबाद से बाहर निकल पड़ा। उस समय बादशाह बहुत प्रसन्न था। उसे विश्वास था कि रामशेज के बाद दो-चार दिन में मराठों का कोई न कोई किला मिट्टी में मिला दिया जाएगा।

किन्तु दिनों के बाद बादशाह को दक्षिण की हवा का भी उसे अनुभव होने लगा। औरगंजेब की गर्मी बढ़ने लगी। मूँछों पर ताव देकर शेखी बघारते हुए रामशेज की ओर निकले फिरोजजंग के साथ कासिमखान, शुभकर्ण बुंदेला, पीर गुलाम, मुहम्मद खलील, राव दलपत बुंदेला जैसे अनेक बहादुर सरदार थे। औरंगाबाद में खबरें आ रही थीं कि प्रचंड तोपखाना और गोला-बारूद लेकर फिरोजजंग ने पहली ही मुठभेड़ में रामशेज को चारों ओर से घेर लिया।

चार

असदखान अपने मालिक को धीरे-धीरे बता रहा था—"बस! किब्लाए-आलम! ऐसा लगता है कि खुशखबरी यहाँ तक पहुँचने में शायद कुछ देर हो गयी है। नहीं तो अब तक तो किला दम तोड़ दिया होता।"

"वजीरे आजम, किसी पर भी विश्वास करने की मूर्खता हम कभी नहीं करते।" बादशाह ने असदखान की ओर क्रोध से देखा। उस अनुभवी सेनानी के पसीने छूट गये। ऊँचा, सुन्दर, घुँघराले बालों वाला जुल्फिकारखान बादशाह के सामने आकर खड़ा हो गया। अपने मौसरे भाई की ओर देखकर बादशाह ने पूछा—

"जुल्फिकार बीजापुर के सर्जाखान की ओर से कोई समाचार?"

"अभी तक नहीं, जहाँपनाह।"

बादशाह की मुद्रा कठोर हो गयी। उसकी भूरी पुतलियाँ तेजगति से नाचने लगी। वह गुर्राते हुए बोला, "जुल्फिकार!"

"हजरत?"

"लोग कितने पागल रहते हैं?" कुछ उदास और कुत्सित स्वर में बादशाह बोला, "हमने उस बेवकूफ सर्जाखान से वादा किया था कि हम मराठों का जितना इलाका जीतेंगे उसे बीजापुर की झोली में डाल देंगे। वह इस काफिर बच्चे के नामोनिशान मिटाने में हमारी मदद करे। उससे बस इतनी ही हमारी अपेक्षा थी। फिर भी उस घमंडी सर्जाखान ने हमारी ओर देखा नहीं।"

जुल्फिकारखान ने उद्वेग के साथ कहा, "जहाँपनाह, वह आदिलशाह सिकन्दर चौदह पन्द्रह वर्ष का बछेड़ा है। उसे अभी क्या अकल है?"

"परन्तु सर्जाखान जैसा अनुभवी सरदार ऐसी लापरवाही करे, यह दुख की बात हैं।"

"उसने खत पहुँचने की सूचना भी नहीं दी?"

"नहीं हजरत!" खान घबराकर बोला।

बादशाह खिन्न दिखाई पड़ा। उसने अपनी सफेद मुलायम दाढ़ी पर बायाँ हाथ फेरा। दाहिने हाथ की जपमाला को आँखों के समीप ले जाते हुए कुरान की एक पंक्ति का ध्यान किया। वह कड़वाहट के स्वर में बोला, "ये बीजापुर और गोलकुंडा के शिया मुसलमान सुधरने वाले नहीं हैं। सर्जाखान के साथ सभी बीजापुर वालों को उस सम्भाजी से मित्रता रखनी है। गोलकुंडा का मुख्य दीवान यादण्णा तो अत्यन्त चतुर, धूर्त और उतना बदमाश ब्राह्मण है। हम सोमनाथ से लेकर यहाँ तक हिन्दुओं के मन्दिर ध्वस्त करते आये हैं। मैंने हुक्म दिया था कि मेरे बुरहानपुर पहुँचने से पहले वहाँ के सारे मन्दिर ध्वस्त कर दिये जायें। मेरे हुक्म की तामील की गयी। हैदराबाद के मुसलमानी इलाकों में क्या हो रहा है? वजीरे आजम आपको इसका कुछ पता है?"

"हजरत?"

"वह कुतुबशाह का काफिर दीवान यादण्णा हिन्दुओं के बड़े-बड़े मन्दिर बना रहा है।"

"तोबा! तोबा! हुजूर" जुल्फिकारखान ने अपने गालों पर हल्की चपत लगाते हुए अपना असन्तोष व्यक्त किया।

बादशाह ने जुल्फिकारखान और वजीर असदखान इन पिता-पुत्र पर नजर डाली। अपनी भूरी आँखों को सिकोड़ते हुए औरंगजेब ने एक साँस ली और बोला,

"खैर, राजपूताना की मरुभूमि से निकलते समय हमारा मकसद बहुत बड़ा नहीं था। हमें अपनी एड़ी के नीचे सह्याद्रि के एक चूजे नहीं बल्कि एक चूहे के बच्चे को रगड़कर मारना था। लेकिन यहाँ की आबोहवा कुछ अलग लग रही है। क्यों वजीर! आपको कुछ अन्दाजा लग रहा है?"

"गिर जाएगा जहाँपनाह। रामशेज दो दिन में गिर जाएगा—नहीं गया होगा।"

"मैं किसी दूसरे किले की बात नहीं कर रहा वजीरे आजम।" बादशाह बीच में रुक गया। साँस लेकर हकलाते हुए बोला-"हमारी जिन्दगी में शक ही हमारा सगा रहा है। आजकल हमें लग रहा है कि इस जहन्मी सम्भाजी, उस धर्मद्रोही आदिलशाह और रात-दिन वेश्याओं के कोठों पर पड़ा रहने वाले हैदराबादी कुतुबशाह के बीच कोई समझौता हो गया है। ऐसी शंका मुझे बार-बार हो रही है।"

बादशाह के मुँह से निकली यह बात बहुत भयंकर थी इसलिए बाप-बेटे के लिए कोई प्रतिक्रिया देना सम्भव नहीं था। बादशाह ने जान बूझकर विषय को बदल दिया। कलेजे में एक चुभन होने से उसका मन उदास हो गया। उसने असदखान से पूछा—"हमारे बेवकूफ शहजादे-अकबरशाह की ओर से कोई खबर?"

"उनकी और उस सम्भा की दोस्ती बहुत बढ़ रही है। बस इतना ही।"

शहजादा अकबर बादशाह के हृदय का एक रिसता घाव था। उसके भीतर का यह गहरा घाव उसे चैन से बैठने नहीं दे रहा था। अपनी प्यारी बेगम दिलरस बानू की गोद में खेलते उस नन्हे मुन्ने बादशाह को वह भूला नहीं था। उसका बड़ा शहजादा सुल्तान विद्रोही चचेरेभाई के साथ बर्बाद हो गया था। आज तो वह कैदखाने की हवा खा रहा था। बचे हुए मुअज्जम, आजम और कामबक्स शहजादों से किसी-न-किसी कारण औरंगजेब रुष्ट था। हृदय से वह अकबरशाह को ही चाहता था। किन्तु उसने नापाक राजपूतों और उस मूर्ख दुर्गादास राठौड़ के पीछे लगकर खुद का माथा फोड़ लिया था।

मुगलों के राजतिलक का इतिहास बादशाह को याद आया। वह उदास स्वर में बोला, "आजकल हम मुगलों के उत्तराधिकार का इतिहास युद्ध खून सनी कटारी से लिखा जा रहा है। दिन ऐसे बुरे आये हैं कि कभी-कभी जाती दुश्मन भी दोस्त की तरह नजर आते हैं। वस्तुत: शहजादों की कटार का भय अधिक होता है। हमारे अब्बाजान शाहजहाँ साहब ने अपने पिता हमारे दादा जहाँगीर के विरुद्ध बगावत की थी।"

"गुस्ताखी माफ, हजरत।" वजीर ने बीच में टोका।

"आपके अब्बाजान ने ताजमहल जैसी सारी दुनिया की सबसे खूबसूरत

इमारत बनाई। इसे कैसे भुलाया जा सकता है?"

"वजीर जी, ताजमहल जैसी खूबसूरत इमारत बनाने वाले कलाकार के हाथ कितने रक्त से भरे थे? इसकी कोई जानकारी है आपको? शाहजहाँ साहब के उन्हीं हाथों ने शहरयार और अन्य सगे भाइयों की गर्दनें काटी थीं। इतना ही नहीं उन्हीं हाथों ने शहरयार के मासूम बच्चों को क्रूरतापूर्वक मार डाला था।"

बादशाह ने मन का सन्ताप व्यक्त किया। उसने महल में इधर-उधर दृष्टि डाली। असदखान और जुल्फिकार के अतिरिक्त वहाँ कोई और नहीं था। शहरयार की याद के साथ औरंगजेब मन में डर गया। उसे स्मरण हुआ कि दारा, सुजा और मुराद जैसे होनहार भाइयों को उसने किस क्रूरता से मार डाला था। इन स्मृतियों से वह बेचैन हो गया। बादशाह को यह भय सदा बना रहता था कि उसके बच्चे भी राजगद्दी के लिए ऐसा ही खून खराबा करेंगे। इसीलिए शहजादों के साथ भोजन करते समय बादशाह की संशयशील आँखें महल के कोनों में झाँकती रहती थीं। वह इस बात से सावधान बना रहता था कि उसका कोई बेटा छुपकर उसका गला न घोंट जाय। ये सरी पुरानी बातें आलमगीर को नये सिरे से याद आयीं। उसने उदास होकर कहा, "हम मुगलों के लिए तख्त ही वास्तविक ताज है।"

पाँच

माणगाँव से कुछ मील की दूरी पर जंगल में बसा गांगोली गाँव था। गाँव से थोड़ी दूरी पर महारानी येसूबाई के नाना का महल था। वैपुर्णा नामक छोटी नदी के किनारे छोटा किन्तु आकर्षक महल लकड़ियों से बनाया गया था। महल के साथ ही लगा हुआ बैजनाथ का मन्दिर और सामने वाले आँगन के साथ नदी का काला प्रवाह। येसूबाई का यह मायका शम्भूराजा को बहुत पसन्द था। सबसे अधिक तो यह कि इसी पवित्र घर ने राजा को पुत्ररत्न प्रदान किया था। इसलिए पूरा वातावरण ही सुगन्धित और पवित्र लग रहा था। महल के सामने का पहाड़ चढ़ने पर कुछ दूरी पर ही रायगढ़ था। सामने वह किला ऐसा दिखाई पड़ता था जैसे कोई हाथी पैर मोड़कर बैठा हो। महीना भर बालक शाहू को गोद में लेकर, उसकी छोटी-छोटी आँखों की ओर देकर शम्भूराजा रायगढ़ की ओर बार-बार देखते रहे।

गांगोली के प्रवास में एक सुखद दिन आया। सन्त तुकोबा के चिरंजीव

महादेव महाराज राजा से मिलने आये। बैजनाथ की सीढ़ियों पर दोनों के बीच बहुत-सी बातें हुईं। उसी समय महादेव महाराज ने कहा, "राजन, अषाढ़ में हजारों वारकरी पैदल चलकर पंढरपुर जाते हैं। इस साल से सन्त तुकाराम की पालकी ले जाने की सोच रहा हूँ।"

"पालकी? कहाँ से कहाँ तक?"

"देहू से पंढरपुर तक।"

"वाहऽऽ!" शम्भूराजा प्रसन्न हो गये। तुकाराम के पुत्र से उन्होंने कहा,

"कल्पना अच्छी है। नयी शुरुआत होगी। हर साल पालकी ले जाओ। उसके लिए जो द्रव्य लगेगा उसे सरकार से लो। मैं अधिकारियों को आदेश जारी करता हूँ कि वे पालकी को यथोचित सुरक्षा प्रदान करें।"

तुकाराम के पुत्र सन्तुष्ट होकर चले गये। राजा ने हुक्मनामा भी भेज दिया। किन्तु फिर से उनके हृदय में दुख का ज्वार उमड़ आया। मैसूर में अपने मित्रों की हत्या से बहुत बेचैन हो गये थे।

दिन तो आराम से बीत जाता था किन्तु रातें खाने को दौड़ती थीं। राजा को किसी भी प्रकार से नींद नही आती थी। मैसूर के लिए भेजे गये कृष्णाजी कान्हेरे के वापस आने की वे व्यग्र प्रतीक्षा कर रहे थे। श्रीरंगपट्टनम् की सीमा पर दादाजी काकड़े, जैताजी काटकर और तुकोजी निंबालकर की टंगी हुई गर्दनें उनकी आँखों के सामने आ जाती थीं। वे उदास हो उठते थे। वे यही सोचते कि—"कब मैसूर पर आक्रमण के बाद वहाँ के घमंडी राजा चिक्कदेवराज को पराजित करके उसे बेड़ियाँ पहनाऊँ।"

मिट्टी से सोंघी सुगन्ध आ रही थी। सभी को लग रहा था कि मृग नक्षत्र में कोंकण में तूफानी वर्षा होगी। दो तीन दिन से रोज कड़ी धूप हो रही थी। गर्मी बढ़ जाने के कारण शरीर से पसीना छूट रहा था। पसीने से कपड़े भींग जाते थे। उस दिन शाम को भारी वर्षा हुई। आसमान में बिजली चमक रही थी। बादल गरज रहे थे। वर्षा रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। लगातार तेज वर्षा ने जीना मुश्किल कर दिया।

महल के बीच वाले चौक में राजाओं का विचार-विमर्श चल रहा था। शम्भूराजा के समीप ही महारानी येसूबाई बैठी थीं। उनकी गोद में बालक शाहू सौ रहे थे। शम्भूराजा के बहुत गम्भीर हो जाने के कारण कविराज कलश जोत्याजी केसरकर, रायप्पा आदि सभी दबाव का अनुभव कर रहे थे। आज भी कान्हेरे मैसूर से वापस नहीं आये थे। इसीलिए शम्भूराजा बहुत चिंतित लग रहे थे। शम्भूराजा ने थोड़ा मुस्कराते हुए कहा, "हमारा यह साल सुख-दु:ख के हिंडोले में झूल रहा है। एक ओर हमने सिद्दियों को दहशतज़दा बनाया, बादशाह की सेना को वापस लौटा

दिया, पुत्र की प्राप्ति हुई, ये सारी सुखद घटनाएँ हैं।

"महाराज, इन सुखों के सामने इतना-सा दु:ख क्या है?"

"नहीं येसूरानी, हमारा दु:ख थोड़ा नहीं है। कोंडाजी बाबा के लिए हम शोक मना ही रहे थे कि कर्नाटक-तमिल देश ने हमारी बगल में एक के बाद एक तीन छूरे भोंक दिये। काकड़े, काटकर और निम्बालकर ये हमारे तीनों सरदार साधारण नहीं थे। उनके निधन की पीड़ा हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है। हरजी जैसा आदमी भी वहाँ भयभीत हो जाता है। इस सब की एक ही दवा है—आक्रमण, केवल आक्रमण।"

चिराग की रोशनी में शम्भूराजा की मुखमुद्रा बहुत लाल दिख रही थी। उनके सहयोगी एक दूसरे की ओर सहमकर देख रहे थे। येसूबाई ने साहस बटोरकर कहा, "परन्तु महाराज औरंगजेब जैसा शत्रु अपनी सेना लेकर वतन के सीने पर आ बैठा है। उसे यहाँ छोड़कर दूर कर्नाटक तमिल में जाना आत्मघात नहीं होगा क्या?"

"नहीं महारानी, मैसूर का वह चिक्कदेवराज बहुत घमंडी हो गया है। वह इस अभिमान में फूला हुआ है कि उसे कोई छू नहीं सकता। अधिक समय तक शान्त बैठने का मतलब है अपने तीन सरदारों की मृत आत्मा के साथ गद्दारी करना।" बाहर लगातार वर्षा हो रही थी। नदी के किनारे ठंडी हवा बह रही थी। वर्षा रुक नहीं रही थी। रात बहुत हो चुकी थी। शम्भूराजा ने शान्त और धीमे स्वर में कहा, "कल औरंगजेब और हममें महायुद्ध होगा। तब कर्नाटक और तमिल से जो रसद हमें अपने अधिकार से मिलती है वही हमें आगे ले जाएगी। आगे कदम बढ़ाने से पहले हम मैसूर गये कान्हेरे की प्रतीक्षा करेंगे। निश्चित किया गया कि कान्हेरे के आने के बाद ही कोई निर्णय लिया जाये।"

नासिक बागलाण की ओर हंबीरराव को एक सन्देश भेजा गया। अन्य मुद्दों पर भी विचार-विमर्श किया गया। आधी रात बीत चुकी थी। लोगों की आँखें भारी हो गयी थीं। शम्भूराजा उठकर शयनकक्ष में चले गये। इसी समय ड्योढ़ी के पहरेदार दौड़कर अन्दर आये। जोर-जोर से शम्भूराजा से कहने लगे—"बाहर कृष्णाजी पन्त नाम का आदमी आया है। भीतर आकर राजा से मिलने का आग्रह कर रहा है।" शम्भूराजा की नींद उचट गयी। उन्होंने तत्काल कान्हेरे को अन्दर बुलाया। सभी की निगाहें उसी पर टिक गयीं। कान्हेरे वर्षा में पूरी तरह भीग चुके थे। उन्हें सर्दी भी लग रही थी। वे बिना रुके भागते हुए मैसूर से स्वराज्य में वापस आये थे। शम्भूराजा ने अपने कन्धे का शाल कृष्णाजी पन्त के हाथ में दी। कृष्णाजी ने अपने भीगे सिर को किसी प्रकार पोंछा। इसी समय शम्भूराजा ने प्रश्न किया—

"कृष्णाजी पन्त, चिक्कदेवराजा क्या कह रहा है? हो गया कौल करार?"

कृष्णाजी पन्त ने गर्दन झुका ली और नकार में सिर हिला दिया। शम्भूराजा ने

पुनः पूछा—"फिर वह बगल में क्या है? देखूँ तो जरा।"

"रुकिए मालिक, मैं ही दिखाता हूँ कि क्या है।"

कृष्णाजी पन्त ने बगल में दबाया अपना जरीदार लाल अंगरखा बाहर निकाला और गीले वस्त्र की तरह झटककर उसे फैला दिया। वह अंगरखा अनेक जगहों पर फाड़ दिया गया था। यह देखकर सभी को पता चल गया कि मराठों के वकील का मैसूर में कैसा स्वागत किया गया था। उस अपमानित चीथड़े को देखते नहीं बन रहा था। दाँत पीसते हुए धीमी आवाज में शम्भूराजा ने पूछा—

"मैसूर के उस घमंडी राजा ने कहा क्या?"

"कैसे बताऊँ महाराज? फिर भी बताता हूँ।"

'मैं अनुमति लेकर चिक्कदेवराजा से मिला। उन्हें बताया सम्भाजी महाराज के यहाँ से आया हूँ।' वह तुरन्त बोल पड़ा—'कौन राजा? कहाँ का राजा? हम ऐसे किसी भी आदमी को नहीं जानते। जिस तरह घास उगती है उसी तरह हजारों जमींदार हर रोज पैदा होते हैं और घास की तरह सूखकर समाप्त हो जाते हैं।' मैसूर दरबार के विदूषकों ने किस प्रकार वस्त्र फाड़े और अपमानित किया था, वह सब कृष्णाजी को स्मरण हो आया। वे रो पड़े।

महारानी येसूबाई, कवि कलश और अन्य सभी भयभीत होकर शम्भूराजा की ओर देखने लगे। सभी का अनुमान था कि अब जलते हुए बारूदखाने की तरह शम्भूराजा के विराट रूप का दर्शन होगा। किन्तु शम्भूराजा क्रुद्ध न होकर गम्भीर बने रहे। अपने शयकक्ष की ओर जाते समय उन्होंने साथियों से कहा, "अब क्यों चिन्ता करें? हमारी दिशा निश्चित हो गयी है। कर्नाटक और तमिल प्रदेश में नचाये बिना हमारे घोड़ों के दाँत को पीड़ा शान्त नहीं होगी।"

"क्या मतलब महाराज?" सभी ने भयातुर होकर पूछा।

यह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा था कि महाराज स्वयं कर्नाटक तमिल की यात्रा पर निकलेंगे। इस समय पाँच लाख की सेना के साथ छाती पर सवार औरंगजेब का भी सभी को भय था। अपने भयभीत साथियों की ओर राजा ने देखा। येसूबाई की गोद में सोये बालक शाहू को उन्होंने सीने से लगा लिया। उन्होंने कहा, "राज्य का कार्यभार और राज्य का संरक्षण हम महारानी और हंबीरराव पर सौपेंगे। तीन-चार महीने की दक्षिण यात्रा किये बिना अब कोई अन्य मार्ग नहीं है।"

"किन्तु महाराज औरंगजेब?"

"उसकी कुंडली का हमने ठीक-ठीक अध्ययन कर लिया है।" शम्भूराजा ने सीने से लगाये बालक शाहू के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए आत्मविश्वासपूर्वक कहा, "अब मृग नक्षत्र से वर्षा आरम्भ हो गयी है। दशहरे तक कोंकण के कीचड़ में अपना घोड़ा लाने का साहस औरंगजेब नहीं करेगा। इसी कालावधि में हम चले

जाएँगे और जिंजी, तंजौर के साथ अपना दक्षिणी क्षेत्र सँभालेंगे।

छह

चिक्कमंगलूर की पूर्वोत्तर दिशा में वाणावर था। वहाँ के सूबेदार लिंगप्पा का सन्देश चिक्कदेवराजा के पास पहुँचा। समाचार पाते ही उसके होश उड़ गये। पत्र को ऊपर उछालते हुए वह दरबार में जोर-जोर से चिल्लाने लगा—"अपना राज्य इतना विकलांग कब से बन गया? अपने गुप्तचर इतने लापरवाह कब से हो गये?"

"क्या हुआ हुजूर?" घबराकर दीवान ने पूछा।

"वह सम्भा मराठा अपनी दस हजार की सेना लेकर वाणावर के समीप पहुँच गया है और हमें इसकी खबर तक नहीं।"

दो तीन सरदारों ने एक साथ पूछा—"वह जंगली चूहे का बच्चा यहाँ तक पहुँचा ही कैसे?"

"आप लोग किस स्वप्नलोक में रहते हैं? सम्भाजी के पास दस हजार घोड़े हैं। हुक्केरीकर बसप्पा नाइक भी उनके साथ हैं। उसकी भी पाँच हजार की सेना उसके साथ है।"

चिक्कदेवराजा अधिक समय तक शान्त बैठने वाला नहीं था। उसने झटपट सेना तैयार की। वह स्वयं वाणावर की ओर चल पड़ा। सह्याद्रि की तरह वर्षा वहाँ नहीं थी। इसलिए शम्भूराजा प्रसन्न थे। गोलकुंडा का दीवान मादण्णा पंडित जबान का पक्का था। वादे के मुताबिक उसने अपनी दस हजार सेना सम्भाजी की सेवा में हाजिर कर दी थी। हुक्केरीकर बसप्पा नाइक भी चिक्कदेवराजा से भयंकर ईर्ष्या करता था। इतनी दूर से घोड़े दौड़ाते महाराज यहाँ पहुँचे इससे हरजी महाड़िक उत्साहित थे। बहुत दिनों के बाद इन लोगों की भेंट युद्ध के मैदान में हुई थी।

शम्भूराजा ने हरजी की सराहना करते हुए कहा—

"जीजाजी आपने दक्षिण में बड़ा पराक्रम किया है। आपका प्रत्येक कदम पिताजी के दामाद के योग्य हैं। आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है।"

"केवल चिक्कदेवराजा की बढ़ती महत्त्वाकांक्षा पर हम काबू नहीं कर पाये इसीलिए हम आपकी सहायता के लिऐ दौड़े-दौड़े आये हैं।"

यह कहते-कहते शम्भूराजा को स्मरण हो आया। वे पूछने लगे—"जीजाजी,

हमारे चाचा एकोजी राजा हमारी सहायता के लिए आएँगे?"

"इसका भरोसा कौन दिला सकता है?" दुविधा में पड़े हरजी ने प्रतिप्रश्न किया।

"आपने उनकी सहायता माँगी है क्या?"

"हाँ, उम्र से पिताजी के समान, रिश्ते में मेरे चाचा हैं। उनके पास दक्षिण की मिट्टी का जन्म भर का अनुभव है। सम्भव हुआ तो उनका लाभ अवश्य उठाएँगे। स्वामी जी का कहना है—'मराठियों को एकत्र करो, महाराष्ट्र धर्म की वृद्धि करो'।

वैसे शम्भूराजा और हरजी के मन में विश्वास नहीं था। वे शिवाजी महाराज के कर्नाटक आक्रमण के समय मिलने के लिए आये थे। किन्तु रातभर में ही नदी पार करके पीछे हट गये। वाणावर में बादल छाए हुए थे। उस दिन दोपहर के बाद गर्मी बहुत बढ़ गयी थी। शम्भूराजा, कवि कलश, हरजी और वहाँ इकट्ठी पचीस हजार सेना के सामने अपने उद्देश्य को बताने लगे।

वहाँ फौजी डेरे में मराठा, कुतुबशाही सैनिक और कन्नड़ के प्रमुख सरदार बैठे थे। एक दो दिन में ही त्रिचनापल्ली तक जाना था और कावेरी का समृद्ध क्षेत्र लूटना था। ऐसा गुप्त रूप से निश्चित किया जा रहा था।

बसप्पा नाइक ने शम्भूराजा से कहा, "विगत कुछ वर्षों में चिक्कदेव की शक्ति दस गुना बढ़ गयी है। उसकी राजधानी मैसूर पर आक्रमण करना कोई आसान काम नहीं है।"

"तुम्हारी बात सच है बसप्पा। एकोजी राजा ने बैंगलौर की चालीस वर्ष पुरानी चौकी को तंजौर स्थानान्तरित किया और सारी गड़बड़ी शुरू हुई। जब तक मराठों ने बैंगलौर में पाँव जमा रखा था तब तक मैसूर पर उनकी बड़ी दहशत थी।"

शिविर में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। मैसूर पर आक्रमण करने के स्थान पर त्रिचनापल्ली की ओर से आक्रमण किया जाये। बाघ को जंगल से बाहर निकालकर फिर उसकी हत्या की जाये। ये बातें चल ही रही थीं कि एक खबर आयी—"पन्द्रह हजार की फौज लेकर चिक्कदेव राजा स्वयं हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रहा है। शाम तक दोनों सेनाएँ आपस में भिड़ जाएँगी।"

यह खबर सुनकर शम्भूराजा गम्भीर हो गये। उन्होंने कहा—

"इसका मतलब यह हुआ कि चिक्कदेव बड़ा खेल खेल रहा है। हम सावधान हों, इससे पहले ही उसने आक्रमण करने का निश्चय किया।"

अपनी सेना को तत्काल तैयार करना, आसपास की पहाड़ियों की आड़ लेकर, लड़ाई को जारी रखना महत्त्वपूर्ण और आवश्यक था। मैसूर की सेना संगठित और बलशाली है। इसकी जानकारी सभी को हो गयी थी।

उस रात अपनी सेना को अर्ध चन्द्राकार बनाकर चिक्कदेव तैयार हो गया।

दूसरे दिन सभी ओर से युद्ध आरम्भ नहीं हुआ। चिक्कदेव जितना साहसी, मगरूर और मक्कार था उतना ही ताकतवर भी। सुबह से ही दोनों सेनाओं के बीच छिट-पुट युद्ध हो रहा था। थोड़ी बहुत तलवारबाजी किन्तु कोई भी निर्णायक युद्ध नहीं कर रहा था। जैसे-तैसे दोपहर बीती दूरी पर वर्षा होने का दृश्य दिखाई पड़ रहा था। घोड़ों को सँभालते लोग, छोटी-बड़ी तोपों के गोलन्दाज, भालाधारक राउत, संरक्षक आदि सभी आश्चर्य से आसमान की ओर देखने लगे। वह सचमुच वर्षा नहीं थी। बल्कि बाणों से वर्षा थी। अचानक सूँऽ सूँऽऽ करते बाण आने लगे। ये बाण लोगों के पीठ-पेट में घुसने लगे।

आसमान से आने वाले बाणों की दिशा मालूम नहीं पड़ती थी। किन्तु पागल मधुमक्खियों की तरह जो भी मिलता था उसे काटती थीं। घोड़ों की गर्दनों में, मुँह में, आँख में, सैनिकों के पेट में, बाँहों में ये बाण घुस रहे थे। बाणों की तीक्ष्णता के कारण कि घायलों के शरीर से रक्त बहने लगा। इन बाणों की वर्षा से हड़कम्प मच गया। मराठों के होश उड़ गये। 'हे भगवानऽऽ, मर गयाऽऽ, ओ माँ' जैसी चीत्कारें मराठों की निकलने लगीं। कुतुबशाही में सुख की रोटियाँ तोड़ने वाले हट्टे-कट्टे सैनिक भी सामना नहीं कर पा रहे थे। जिस ओर भी रास्ता मिला उधर भागने लगे। 'अल्लाहऽऽ' 'तौबाऽऽ' 'बचाओऽऽ' शब्दों के अतिरिक्त उनके मुँह से कोई और शब्द नहीं निकल रहा था। लेकिन उनकी परेशानी बढ़ती जा रही थी। चालाक घुड़सवार नीचे कूदकर भाग रहे थे। बहुत से लोग वहीं गिरकर मर रहे थे। बाणों से बिंधे घोड़े उन पर गिर रहे थे। आदमी कुचले जा रहे थे। हैदराबादी सैनिकों की भाग-दौड़ सबसे अधिक थी। उनके सेनापति के पास शम्भूराजा घोड़ा दौड़ाते हुए पहुँचे। 'भागो मतऽ' 'भागो मतऽऽ' जोर-जोर से कहने लगे। उसी समय हरजी राजा आश्चर्यचकित उनके पास आये। वे अपना रक्त-पसीना पोंछते हुए पूछने लगे—"शम्भू महाराज क्या करें? चिक्कदेव बहुत बलशाली है, बाणों की गति भी अचूक है।"

"जीजाजी थोड़ी देर रुकिये, धैर्य धारण कीजिए। युद्धभूमि से पीछे हटना मराठा धर्म नहीं है।"

शम्भूराजा, हरजी और कवि कलश के घोड़े युद्धभूमि में थिरक-थिरककर नाच रहे थे। घुड़सवार राउतों को धीरज बँधाने की वे कोशिश कर रहे थे। परन्तु बाणों की धार् बहुत विषैली थी। जैसे कि इक्के-दुक्के राहगीर पर जंगल में विषैली चोंचों वाली पंछियाँ आक्रमण करें, उसी तरह बाण आ रहे थे। मराठों की युद्ध सामग्री का पूरा पता लगाकर चिक्कदेवराजा ने आक्रमण किया था। अँधेरा हो जाने पर भी बाणों की वर्षा थम नहीं रही थी। अन्य अवसरों पर जो घोड़े आग में से कूद जाते थे, वे नाक के बल गिर रहे थे। एक साथ दस-दस जवानों से लड़ने वाले

बहादुरों के भी सीने फटे जा रहे थे। तेजी से घुस जाने वाले बाणों के कारण उनकी आँखें सफेद पड़ती जा रही थीं।

राजा हरजी और सम्भाजी राजा ने बड़ी हिम्मत बाँधी थी। उसी शाम को तंजौर से एकोजी राजा की सेना आकर पहुँची। उनके साथ पाँच हजार घोड़े थे। पर विषैले बाणों के आगे उनकी भी कुछ न चली। अनेक अच्छे घोड़ों और बहादुर जवानों की सम्पदा नष्ट हो रही थी। कुतुबशाही सेना की कमर टूट गयी थी। बाणों की वर्षा में वे बेसहारा औरत की तरह चीखने लगे थे।

भोजन का समय करीब आ गया। रात हो चुकी थी। थके-हारे मैसूर के सैनिक भोजन के लिए रुके होंगे। युद्ध कुछ समय के लिए बन्द हो गया था। शम्भूराजा की आँखों के सामने ही एक मराठी जवान के सीने में विषैला बाण घुस गया। उसके रक्त के छींटे राजा की आँख में पड़े। राजा की आँखें अभी तक कड़ुआ रही थीं। एकोजी राजा ने अपने भतीजे शम्भूराजा का आलिंगन किया। दीर्घ नि:स्वास छोड़ते हुए शम्भूराजा ने कहा—"क्षमा करें चाचाजी, पराभव के समय आपसे भेंट हुई, इसका मुझे बहुत खेद है।"

"जाने दे शम्भू बेटे। अच्छे दिन भी आएँगे। माँ भवानी की कृपा से सब ठीक हो जाएगा।" एकोजी राजा ने पिता की तरह सान्त्वना दी। मराठों और उनके साथियों की सेना टूट चुकी थी। अब युद्धभूमि छोड़कर हट जाने के अतिरिक्त कोई उपाय न था। रात में आक्रमण होने की कोई सम्भावना नहीं थी। वहाँ से यथाशीघ्र हट जाने में ही बुद्धिमानी थी।

उद्विग्न हुए शम्भूराजा ने मशालची को पास बुलाया। बगल के तालाब के पास पेड़ों और बाँसों की घनी छाया थी। चिक्कदेवराजा और उसकी सेना की आँखों में धूल झोंकने के लिए पेड़ों पर मशालें जला दी गयीं। उन्हें यह आभास दिया गया कि मराठे विश्राम कर रहे हैं। तब हरजी, शम्भूराजा, कलश और एकोजी राजा बचे खुचे घोड़ों और सैनिकों को बाहर निकाल रहे थे। युद्धभूमि से भागने की अपमानजनक स्थिति शम्भूराजा की जिन्दगी में पहली बार आयी थी। एकोजी राजा ने निश्चित किया कि वे तंजौर जाएँगे। रातभर सेना भागती रही। दूसरे दिन दोपहर की धूप चढ़ी। थकी हारी सेना की गति मन्द पड़ गयी। एक तालाब के किनारे सेना रुकी। जख्मों पर पट्टी बाँधी जा रही थी। सैनिक कुछ सचेत हो रहे थे। शम्भूराजा की आँखें सूजी हुई दिखाई पड़ रही थीं। उनकी नाक पर भी चोट आयी थी। बायें हाथ में एक बाण चुभ गया था। उस घाव को देखकर ज्योत्याजी, केसकर, कविराज, रायप्पा आदि सभी उदास हो गये।

कुछ लोगों को तालाब के किनारे पहरे पर खड़ा किया गया था। वहीं पर चिक्कदेवराजा का एक हरकारा आया। चिक्कदेव ने शम्भूराजा को चेतावनी देने के

लिए सन्देश भेजा था। कवि कलश जोर-जोर से पढ़कर सुनाने लगे—

"मराठो, अपने सह्याद्रि पर्वत पर चले जाओ। तुम्हारा हमारे दक्षिण से सम्बन्ध क्या है? हमारे हाथ से जब तक बचे रहते हो उसे ईश्वर की कृपा समझो। वाणावर की सीमा रेखा हमने बाणों और तलवारों से खींची है। मैसूर राज्य पर आँखें ऊँची करके देखोगे तो तुम्हारी आँखें फोड़ देंगे।"

बहुत देर तक चर्चा होती रही। एकोजी राजा ने सुझाव दिया—

"शम्भू बेटे अब आ ही गये हो तो कुछ दिन तंजौर में चलकर रहो। अपनी सेना के साथ रहो। किन्तु रायगढ़ को छोड़कर तुम्हारा अधिक दिन तक दक्षिण में रहना ठीक नहीं होगा। शीघ्रता से सह्याद्रि चले जाओगे तो कम से कम सुरक्षित तो रहोगे।"

"चाचा साहब, यह सम्भव नहीं है।" शम्भूराजा घायल शेर की तरह गुर्राए।

"एक तो पराजित होकर अपने राज्य में जाना हमारी जाति और कीर्ति के लिए शोभनीय नहीं है। इसके अतिरिक्त वह कालसर्प हमें वहाँ जाने दे तब न वहाँ पीछे जायें?"

"कौन?"

"औरंगजेब!" शम्भूराजा बहुत दुखी स्वर में बोले, "डगमगाते हुए चलने वाले शराबी और पराजित राजा की स्थिति एक जैसी होती है। इनकी कनपटी पर जो एक चपत नहीं लगाता वह आलसी कहलाता है।"

"शम्भूराजा... ?"

"जी चाचा जी। सेना में उत्साह और संकल्प की आग फूँकने के लिए हमने कर्नाटक और तमिल पर आक्रमण किया था, पराजित होने के लिए नहीं।"

"शम्भूराजा, यह तो बताइये कि आपकी आगे की योजना क्या है?"

"पराभव के जालिम जख्म को धोने के लिए नयी विजय जैसा रामबाण उपाय दूसरा कौन हो सकता है? चाचाजी?" शम्भूराजा ने प्रश्न किया।

सात

एक रात को असदखान डरते हुए औरंगजेब से मिलने आया। उसके चेहरे पर अंकित उलझन बादशाह से छिपी न रही। किसी प्रकार शब्दों को जोड़ते हुए असदखान ने

कहा, "हजरत! रामशेज का वह बूढ़ा मराठा किलेदार सूर्याजी जेधे तो बहुत हट्टा-कट्टा है।"

"हूँऽऽ।" वजीरे आजम यह बताओ कि उस किले पर मरगट्टों की कितनी सेना है?"

"अँ... है न, काफी है। मतलब-मतलब छह सौ से एक हजार तक।"

"और किले के नीचे अपनी केवल पाँच-छ: हजार की सेना। ठीक है न?" बादशाह ने आँखों से घूरा।

"गुस्ताखी माफ हजरत! पाँच छ: हजार नहीं कुछ ज्यादा ही।"

जीभ दबाकर असदखान ने कहा, "ज्यादा-ज्यादा मतलब होंगे पैंतीस-चालीस हजार। एक मामूली किला और इतनी बड़ी फौज?"

"जहाँपनाह! किला मामूली नहीं, बहुत पुराना है। चढ़ने में बड़ी कठिनाई है। वहाँ की मराठी सेना और उनका मुखिया बुड्ढा सूर्याजी जेधे बहुत हठी है। हमारी सेना ने उन पर तोप दागना शुरू कर दिया है। हमारे सैनिक रात में रस्सियों की सीढ़ियाँ लगाते हैं, रात में ऊपर चढ़ने की कोशिश करते हैं, परन्तु ऊपर से मरगट्ठे पत्थरों की ऐसी मार करते हैं .."

"पत्थरों की?"

"अँ—कुछ अजीब जादू-टोना है उस किले पर। कहते हैं कि किले पर तोपें नहीं हैं फिर भी हमारी सेना पर गोले गिरते हैं।"

"वजीरे आजम, आज आपकी दिमागी हालत ठीक नहीं लगती। तोपें नहीं हैं फिर भी गोला बारूद उड़ता है। मतलब क्या है?"

"जहाँपनाह, उस किले पर सागौन की बहुत लकड़ी है, बैल-भैसों के चमड़े हैं। उन होशियार मराठों ने चमड़े की तोपें बनाई हैं। उनसे बाहर आने वाले गोले भी बहुत शक्तिशाली होते हैं।

"अब तक हमारे कितने आदमी मारे जा चुके हैं?"

"ज्यादा नहीं, तीन-साढ़े तीन हजार...परन्तु जहाँपनाह फिरोजजंग का यह ताजा खत देखें। वह कह रहा है—'चाहें कुछ भी हो चार दिनों में रामशेज पर चाँद सितारों वाला हरा झंडा फहराकर दिखाऊँगा'।"

बादशाह कुछ अधिक बोला नहीं। मराठों के क्षेत्र में काम कर रहे कुछ जासूसों से उसे समाचार मिले थे। रात में ही उसने उन्हें पढ़ लिया था। सम्भाजी और अकबरशाह की दोस्ती बहुत बढ़ती जा रही है। वह अकबर और दुर्गादास राठौड़ को साथ लेकर युद्ध के लिए निकलता है। यह खबर पढ़कर बादशाह बहुत हैरान था। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि केवल चौबीस वर्ष के शिवाजी पुत्र से इस प्रकार की छेड़-छाड़ की जाएगी। गुप्तचरों से आने वाली खबरों को सुनकर

बादशाह आश्चर्यचकित होता था। कभी बुरहानपुर पर मराठों की बीस हजार घुड़सवार सेना आक्रमण कर रही है तो उसी समय सोलापुर के समीप मराठों की सेना हड़कम्प मचा रही है। कभी सम्भाजी खुद जंजीरे के सीने पर पैर रखकर खड़ा हो रहा है। सम्भाजी के बिना भी उसके सहयोगी हंबीरराव, रूपाजी भोसले, मानाजी मोरे जैसे लोग अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर एक ही समय में मुगलों के अनेक क्षेत्रों में उपद्रव मचा रहे हैं। इस प्रकार के चौमुखी संघर्ष की कल्पना बादशाह ने कभी नहीं की थी।

मराठों के उपद्रव से मुगल क्षेत्र की प्रजा हैरान हो गयी थी। दो दिनों में बादशाह ने विचार-विमर्श के लिए बैठक बुलायी। रात में देर से असद खान के साथ सभी अधिकारी बादशाह के पास जमा हुए। बादशाह ने कल्याण की ओर भेजी गयी सेना की गतिविधियों की जानकारी ली। उसी बैठक में उसने शहजादा आजम और दिलेर खान को आदेश दिया—"जाओ अहमदनगर के बाहर निकलो, घोड़ नदी को पार करो। मरगट्ठों के क्षेत्र में घुस जाओ। उनके गाँव, खेत सब कुछ बर्बाद करो। सम्भा के क्षेत्र में कुहराम मचा दो।"

शहजादे आजम और दिलेरखान ने सहमति से गर्दनें हिलाईं। बादशाह की नजर हट्टे कट्टे जुल्फिक्कार पर पड़ी। उसने ऊँची आवाज में पूछा—"क्या खबर है रामशेज की?"

"जहाँपनाह शहाबुद्दीन साहब कोशिश कर रहे हैं। मरगट्ठे किले पर चढ़ने नहीं दे रहे हैं। शहाबुद्दीन साहब जिद पर अड़े हैं। वे वहाँ के बडे-बड़े पेड़ काटकर लकड़ी की एक मीनार बनाने की शुरुआत की हैं। उस ऊँची मीनार पर तोप चढ़ाकर रामशेज को ध्वस्त करेंगे, ऐसा उनका इरादा है।"

यह समाचार सुनकर बादशाह प्रसन्न हुआ। उसने असदखान को हुक्म दिया—"वजीरे आजम रामशेज और खानदेश के युद्ध पर विशेष ध्यान दो।"

"हजरत गुस्ताखी माफ।" बीच में असद खान घुटनों के बल बैठते हुए बोला, "नासिक और खानदेश में जाकर इतनी बड़ी सेना ले जाकर जाया करने की जरूरत ही क्या है? उससे बेहतर तो यह होगा कि हम सम्भा के रायगढ़ पर सह्याद्रि पर्वत पर सीधा हमला करें।"

अपने वजीर की सलाह सुनकर बादशाह ने आँखें फैलाकर देखा। एक लम्बी साँस लेकर बादशाह ने कहा, "वजीरे-आजम, आपके इरादे काबिले तारीफ हैं। लेकिन आते-आते ही रायगढ़ और सह्याद्रि पर आक्रमण करके अपने बादशाह को अपने लिए मौत का कुआँ खोदने की सलाह क्यों दे रहे हो? उससे उस शैतान सम्भा का ही फायदा होगा। वह सह्याद्रि सचमुच भूतों का डेरा है।

घने पहाड़ों में अफजलखान नाम के इस्लाम के बन्दे को शिवाजी ने बकरे की

तरह काटा था। उसी पर्वत का सहारा लेकर हमारी लाखों की सेना में घुसकर मामू साहब साइस्ता खान की उसने उँगलियाँ तोड़ दी थीं। हमें अपमानित करके वह शिवाजी रात में ही भाग गया था। उसी बैताल नगरी में उस शिवा का बच्चा शैतानी खेल खेल सकता है। वर्षा के मौसम में सह्याद्रि पर आक्रमण असम्भव है। हमारी जानकारी के अनुसार वहाँ पर एक बार बरसात शुरू हो जाये तो छोटे-छोटे नाले भी बड़ी-बड़ी नदियाँ बन जाते हैं। वहाँ के नालों को भी दो-दो महीने तक पार करना असम्भव हो जाता है।"

"पर जहाँपनाह, सम्भा वहाँ तमिलनाडु में चला गया है—बादशाह को इसकी खबर थी। वह हँसकर बोला—"देखेंगे बन्दर कितना नाचता है? उस चिक्कदेव की कैद से जिन्दा बचकर वापस आएगा तब आगे की सोचेंगे।"

"पर जहाँपनाह, शुरुआत में नासिक और बागलण की ओर इतनी बड़ी फौज भेजने का कारण क्या है?" जुल्फिकारखान ने पूछा।

आलमगीर दिल खोलकर हँसा। उसने गर्व से वजीर की ओर देखा। जुल्फिकार खान के प्रश्न से बादशाह प्रसन्न था। नक्शे पर उँगली फेरते हुए दोनों की ओर संकेत करके बोला, "यह देखो, यह बुरहानपुर से आने वाली राह खानदेश से नासिक, कल्याण और आगे रायगढ़ की ओर जाती है। अगर कल हमारी बदनसीबी से मराठों की बड़ी सेना शहजादा अकबर के साथ हो जाये और हमारे विद्रोही बेटे में इतनी हिम्मत आ जाये और अकबर तथा सम्भा इसी रास्ते से दिल्ली पर हमला बोल दें तो अनर्थ हो जाएगा। आगरा और दिल्ली में छिपे हमारे दुश्मन भी इसी प्रेत मंडली में जा मिलेंगे। इसलिए हम यहाँ धोखा नहीं खाना चाहते। नासिक से थाने तक के इलाके में इस रास्ते के सारे किलों और सारी चारी चौकियों पर हमारा क़ब्ज़ा होना चाहिए।

आठ

"रायप्पा, अच्छी तरह सँभालना बाबा। घाव को बढ़ने नहीं देना। अभी और युद्ध लड़ना है।" शम्भूराजा ने कहा।

विशाल कावेरी नदी के किनारे एक घने जंगल में मराठों की सेना थी। शम्भूराजा की बाँह पर रायप्पा पट्टी बाँध रहा था। दस दिन पहले लगा घाव अब

सूख गया था, किन्तु अभी भी एकदम ठीक नहीं हुआ था। उस जंगल में जगह-जगह मराठा सैनिक फैले हुए थे। बीच में एक बड़ा डेरा खड़ा किया गया था। दूरी पर कावेरी के तट का पुराना नगर त्रिचनापल्ली दिखाई पड़ता था। उस नगर के बीचोंबीच एक ऊँचा पहाड़ था। किसी समय यहाँ पल्लवों का शासन था। चोल और पल्लव राजाओं ने इस क्षेत्र को वैभववान बनाया था। आज त्रिचनापल्ली मदुरेकर नायक के अधिकार में था। बीस-पचीस वर्ष पहले मदुरेकर ने ही उस बीच की पहाड़ी को एक भव्य किले के रूप में रूपान्तरित किया था। मजबूत तटबन्दी और बुर्जों का निर्माण किया था। शम्भूराजा जहाँ बैठे थे वहाँ से एक ओर यह प्रसिद्ध ऊँची पहाड़ी दिख रही थी और निचले हिस्से में तमिल देश का सबसे ऊँचा गोपुर और अन्य कई छोटे मोटे गोपुर, शेषनारायण के मन्दिर का शिखर और उमरावों की हवेलियाँ आदि दिखाई दे रहे थे। वहाँ की काली-लाल मिट्टी में हाथियों के पैरों के निशान दिखाई पड़ रहे थे। शम्भूराजा बार-बार उस पाषाणी किले की चोटी पर देख रहे थे। वही त्रिचनापल्ली की नाक थी। शम्भूराजा के वहाँ पर विश्राम करते समय ही पैंसठ वर्षीय एकोजी राजा वहाँ पर आये। उनकी नुकीली दाढ़ी, लच्छेदार मूँछें, शिवाजी महाराज जैसी लम्बोतरा मुखमुद्रा बड़ी आकर्षक थीं। उनके साथ हुक्केरीकर बसप्पा नाइक भी थे। उसका चेहरा लगभग कोयले-सा काला, आँखें उग्र पर बड़ी बड़ी थीं। उसने दाक्षिणात्य शैली का वस्त्र पहना था।

अपने चाचा के सामने आते ही शम्भूराजा उठकर खड़े हो गये। उन्होंने एकोजी राजा का आदर के साथ अभिवादन किया। इधर-उधर की कुछ बातें हुईं। एकोजी राजा ने असन्तोष व्यक्त करते हुए कहा, "शम्भूराजा किसलिए इस जंगल में सड़ रहे हो। हमारा तंजौर यहाँ से डेढ़ दिन के रास्ते पर है। आप वहाँ आयें। सेना के साथ हमारा आतिथ्य स्वीकार करें। हम इस बात को आपसे कितनी बार कहें?"

"नहीं चाचाजी, पराजित होकर किसी के महल में प्रवेश करना अपराध लगता है। अभी भी वह दुख चुभ रहा है।"

"पर आप का अपना तंजौर यही पास ही है।" "यदि तंजौर नहीं जाना है तो हमारी जिंजी में ही चलिए।" दूर से ही षडज स्वर में आवाज आयी। पहलवानी शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व वाले हरजीराजा महाड़िक वहाँ आ गये। उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा, "जिंजी सिर्फ दो दिन के रास्ते पर है।"

"नहीं, यह सम्भव नहीं है जीजा जी, आप भी आग्रह न करें चाचा जी।" शम्भूराजा के चेहरे पर विषाद छा गया। उन्होंने अपने प्रियजनों से कहा, "गले में बदनामी का हार बाँधकर मूक भाव से बाड़े में लौटने वाले पशु की भाँति वापस आना हमारे खून में नहीं है। या तो फिर से जीत का झंडा फहराऊँगा या फिर यहीं से मुँह काला करके निकल जाऊँगा।"

बोलते-बोलते शम्भूराजा ने त्रिचनापल्ली की विस्तृत जानकारी लेना आरम्भ

किया। आजकल उस पाषाणी किले पर मदुरेकर चोक्कनाथ नायक अपनी मदुरई छोड़कर स्थायी रूप से रह रहा था। वह इस समय का अतिशय दुर्बल और शक्तिहीन राजा था। वैसे मदुरा सम्पन्न नगरी थी, किन्तु उसका कुछ हिस्सा मैसूर के चिक्कदेव राजा ने, कुछ हिस्सा एकोजी राजा ने, कुछ हिस्सा हरजी राजा ने अपने कब्जे में कर लिया था। आजकल चोक्कनाथ नायक चिक्कदेव राजा की कृपा पर दिन काट रहा है। त्रिचनापल्ली नगरी में और ऊपर किले पर मदुरेकर की सेना नाममात्र की थी। वहाँ की सारी फौज चिक्कदेव की थी। पहाड़ी किले पर चिक्कदेव राजा के अनेक कुशल गोलन्दाज थे। उनकी निश्चित संख्या का पता किसी को नहीं था। किन्तु नगर में ऐसी चर्चा होती थी कि वह सेना बहुत शक्तिशाली है। हुक्केरीकर बसप्पा नाइक शम्भूराजा की क्रुद्ध और उद्विग्न मुद्रा को बार-बार देख रहा था। उसने बड़े उत्साह से कहा, "शम्भू महाराज, वाणावर की लड़ाई में हमारी फौज ने भी पराजय स्वीकार की है। इसका यह मतलब नहीं है कि हम डर गये हैं या हार गये हैं। वहाँ हमारे डेढ़ हजार सैनिक शहीद हुए। किन्तु आप चिन्ता न करें। चार-आठ दिनों में हमारी पाँच हजार की सेना आपके चरणों की सेवा में पहुँच जाएगी।"

"हुक्केरीकर लड़ाई के लिए आप बहुत उत्सुक दिखाई पड़ रहे हैं।"

"क्या करें चाचा साहब?" बसप्पा ने हँसते हुए कहा।

"जब तक आपके राजा हैं तभी तक उस उन्मत्त चिक्कदेव को हम ललकार सकते हैं। उनके चले जाने पर चिक्कंदेव हमें निगले बिना नहीं रहेगा।" शम्भूराजा ने एकोजी राजा के तंजौर और हरजी राजा की जिंजी से अधिक से अधिक गोला-बारूद मँगवाया। विचार-विमर्श आरम्भ होने के पहले ही शम्भूराजा ने कवि कलश से कहा, "आज ही गोलकुंडा को दूत भेजिए। कुतुबशाह की नयी पाँच हजार सेना दस-पन्द्रह दिन में यहाँ पहुँच जानी चाहिए।" बातचीत समाप्त करते हुए शम्भूराजा ने कहा, "अपने घाव अच्छे होने के पहले शत्रु को घायल करना है।"

नौ

शम्भूराजा के उठने से पहले वहाँ पहुँचना और उनकी सेवा में खड़ा रहना, रायप्पा का जीवनभर का नियम था। परन्तु उस दिन रायप्पा को ही शम्भूराजा के दूसरे सेवक जगाने के लिए आये। उठने में विलम्ब हो गया, ऐसा सोचकर रायप्पा तुरन्त उठकर

खड़ा हो गया। आँखें मलते हुए बाहर देखा तो सुबह होने को आयी थी। वह वैसे ही शीघ्रता से राजा के पास पहुँचा। शम्भूराजा की आँखें लाल दिख रही थीं। सम्भवत: वे रातभर सोये नहीं थे। उन्होंने रायप्पा को तत्काल आदेश दिया—"रायप्पा अपने सिपाहियों को लेकर आसपास के गाँवों में जाओ। हमें अधिक से अधिक चमारों की आवश्यकता है।"

"जी सरकार।"

सेना के लोग हड़बड़ा गये। कविराज की समझ में भी कुछ नहीं आया। दक्षिण के आक्रमण के लिए निकलते समय येसूबाई ने स्वयं इस बात की निगरानी की थी कि अपनी सेना के बहादुर जवानों के पास जूते-चप्पल हैं या नहीं? रायगढ़वाड़ी में इसके लिए चर्मोद्योग का एक कारखाना ही था। राजा की आज्ञा के अनुसार आस-पास के गाँवों से अनेक चमार एकत्र हो गये। फिर शम्भूराजा ने भैंस, बैल, हाथी जिसका भी मिले चमड़ा जमा करने का आदेश दिया। चमड़े को अच्छी तरह कमाकर अच्छे जूते बनाने की आज्ञा सभी चर्मकारों को दी गयी।

जोत्याजी और कविराज को अलग उत्तरदायित्व सौंपा गया। कावेरी नदी के दोनों किनारों पर जितने भी महुआरे थे उन्हें सभी छोटी-बड़ी नौकाओं को एक साथ ले आने का आदेश दिया गया। कुछ दिनों के लिए ये सारी नावें किराये पर ले ली गयीं। लगभग एक हजार नौकाएँ उस विशाल नदी में एक कतार में खड़ी हो गयीं।

वर्षा का मौसम जैसे समीप आया, शम्भूराजा शीघ्रता करने लगे। उनके भीतर एक जुझारू युद्धवीर अधीर हो रहा था। उस सेनानायक के कन्धे उचकने लगे। हरजी महाड़िक भी राजा का संकल्प पूरा करने के लिए अपना खून-पसीना एक कर रहे थे। एक बार कावेरी में यदि बाढ़ आ गयी तो राजा की सारी योजना भी डूब जाएगी। कम से कम दो महीने तक यह नदी पार नहीं उतरने देगी। कोई साहसी व्यक्ति इसे पार कर भी ले, किन्तु भारी सामान और घोड़ों का उस पार ले जाना असम्भव था। इसी बीच कविराज ने तीन सौ बहादुर सवारों का दल छाँटकर उन्हें तीरंदाजी का अभ्यास कराना आरम्भ किया। वे बाँस और बेंत के बाणों से अभ्यास करते थे। प्रतिदिन सुबह-शाम अभ्यास होता था। किन्तु चिक्कदेव जैसे बाण मराठा फौज के पास नहीं थे। सभी को विश्वास था कि ठीक समय पर शम्भूराजा कहीं न कहीं से सामान उपलब्ध कराएँगे। तंजौर, जिंजी, गोलकुंडा और इक्केरी से नयी सेनाएँ आ गयी थीं। रायगढ़ से आये लोगों और घोड़ों में गुरूर चढ़ रहा था। घोड़े और मनुष्य दोनों ललकारने लगे। सेना में खबर फैली कि आने वाले एक-दो दिन में शम्भूराजा मछली के बड़े शिकार के लिए निकलने वाले हैं। आखिर वह सुबह आयी।

कावेरी की धारा में सवेरे-सवेरे हजारों नावें कतार में खड़ी थीं। उनकी काली

छाया पानी की सतह पर फैली थी। कुछ मराठे नावों में कूद पड़े। उनमें से अनेक ने घोड़ों की लगाम हाथ में पकड़ रखी थी। ये नाव के सहारे तैरकर दूसरे किनारों पर जाने वाले थे। यहाँ के जंगलों में हाथी बहुत थे। हरजी राजा ने पाँच सौ हाथियों का दल तैयार किया था। उनकी पीठ पर भारी सामान लादा गया। शाम से सुबह तक नदी तट पर बड़ी व्यस्तता और हलचल रही। मशाल की रोशनी में शम्भूराजा की मुद्रा दृढ़ संकल्पी लग रही थी। उन्होंने कावेरी के दूसरे किनारे पर सोई हुई त्रिचनापल्ली नगरी और वहाँ की ऊँची पहाड़ी की ओर देखा। पहाड़ी की वह चोटी उन्हें रायगढ़ की चोटी जैसी लग रही थी। उन्होंने हँसते हुए हरजी राजा की ओर देखा। संकेत मिलते ही नावें पानी को काटते हुए सर-सर आगे बढ़ने लगीं। पतवारें हिलने लगीं, पानी से छपाक, छपाक की आवाज उठने लगी। उथले पानी का अन्दाजा लगाकर महावतों ने हाथियों को पानी में उतारा। वे जल्दी जल्दी आगे बढ़ने लगे।

शम्भूराजा की चतुरंगिणी सेना सुबह होते-होते त्रिचनापल्ली से जा टकराई। अचानक हुए इस आक्रमण से अन्दर की सेना डर गयी। 'ऐदिरीऽ, ऐदिरीऽ' 'दुश्मनऽ दुश्मन' 'मराठाऽ मराठाऽ' ऐसी आवाज अन्दर से आने लगी। पर वे लोग जल्दी से उठ गये और तटबन्दी के बुर्ज पर खड़े हो गये। उनके जानलेवा तेज बाण सूंऽ सूंऽ करके छूटने लगे। अब तक पूरी तरह सवेरा हो चुका था। चिक्कदेव की सेना वाणों की वर्षा कर रही थी। किन्तु मराठे और उनकी साथी पीछे नहीं हट रहे थे। बुर्ज के कन्नड़ और तमिल सैनिक अवाक् होकर आगे देखने लगे। नावों की ओर चर्मधारी सेना थी। राजा ने सिपाहियों के लिए मोटे चमड़े के लिबास और सिर के लिए चमड़े के टोप बनवा दिये थे। आने वाले बाण नाकाम हो रहे थे। तेल लगे उन चमड़ों पर से नीचे फिसल रहे थे। चिक्कदेव के आदेश के अनुसार शस्त्रों के उपयोग का कोई लाभ नहीं हो रहा था। नाव पर शम्भूराजा, हरजी महाड़िक और इक्केरीकर मुस्करा रहे थे।

चढ़ती धूप के साथ रणचंडी ने उग्र रूप धारण किया। त्रिचनापल्ली की सेना को पीछे खदेड़ने लगी। हाथी और हाथी जितना शक्ति रखने वाले मराठे भीतर घुसने लगे। प्रवेश द्वार के दरवाजे पर हाथियों ने टक्कर मारी। इन टक्करों से दरवाजे टूट गये। मराठा मित्रों की सेना अन्दर प्रवेश कर गयी। हर ओर संघर्ष होने लगा। शाम तक त्रिचनापल्ली शहर जीत लिया गया। विजेता शम्भूराजा को हँसी आयी। उसी शाम शम्भूराजा, हरजी महाड़िक, एकोजी, कलश सभी की पालकियाँ श्रीरंगमाला पहुँच गयीं। उनमें से एक पालकी में शम्भूराजा की बड़ी बहन अंबिका बाई थीं। वह अपने पराक्रमी छोटे भाई की ओर बड़े अभिमान से देख रही थीं। कावेरी और कोलडिम नदी के संगम पर शेष शैया पर लेटे भगवान विष्णु का सभी

ने दर्शन किया। भगवान का अभिषेक किया गया। परन्तु मन्दिर से बाहर आते समय शम्भूराजा की दृष्टि बार-बार सामने के पहाड़ की चोटी से टकरा रही थी। वहाँ के बुर्जो पर खड़े पहरेदार दिखाई पड़ रहे थे। राजा की उदास मुद्रा को देखकर हरजी राजा ने कहा, "शम्भूराजा, इस समय किले पर आक्रमण करना धोखादायक है। वहाँ पर मदुरेकर नायक चोक्कनाथ रहता है।"

और कुछ दिनों तक किले के आसपास छोटी मोटी लड़ाइयाँ होती रहीं। किन्तु दोनों सेनाएँ एक दूसरे की शक्ति का सही अन्दाजा लगा रही थीं। किले की तलहटी में सात आठ एकड़ का एक तेपाकुलम नाम का तालाब था। वहाँ कावेरी के पानी में मराठा सैनिक आराम से स्नान करते थे। बीच-बीच में वे किले की ओर ललचायी दृष्टि से देख लिया करते थे। थोड़े दिनों में ऊपर किले में रहने वाले राजा चोक्कनाथ नायक की मृत्यु हो गयी।

नायक दीवान शम्भूराजा से मिलने आया। वह अपने राजा चोक्कनाथ के शव को राजधानी मदुरई ले जाने की आज्ञा माँगने लगा। शम्भूराजा ने बड़े उदार मन से उसे अनुमति दे दी। बसप्पा संकेत से शम्भूराजा को बुलाकर एक ओर ले गया। उसने धीरे से कहा, "शम्भूराजा, समय अच्छा है। राजा का शव बाहर ले जाने के लिए सिंहद्वार खुलेगा। इस अवसर को हम हाथ से जाने नहीं देंगे, अपनी सेना अन्दर ले जाएँगे।" शम्भूराजा ने रुष्ट होकर हुक्केरीकर की ओर देखा। उन्होंने कहा, "बसप्पा, हम राजा हैं, कोई चोर डकैत नहीं।"

शम्भूराजा बहुत सावधान थे। एकोजी राजा कुछ चिंतित थे। उन्हें मैसूर के राजा का भय सता रहा था। हरजी महाड़िक और कवि कलश के घोड़े रातभर नगर की सीमा पर घूमते रहे। त्रिचनापल्ली जैसी समृद्ध नगरी मराठों के अधिकार में आना चिक्कदेव से सहन नहीं होगा। वह किसी भी क्षण आक्रमण करेगा। ऐसी चर्चा चल रही थी।

चार-आठ दिन तक कुछ भी नहीं हुआ। उसके बाद आसमान में काले मेघों ने भविष्य का भय दिखाना आरम्भ कर दिया।

एक दिन शम्भू महाराज ने अपने घोड़े को बाहर निकाला और ललकारा— 'हरऽ हरऽ महादेव' 'जय शिवाजीऽऽ' 'जय सम्भाजीऽ' जैसे नारों से आसमान गूँजने लगा। दस हजार की सेना ने उस पाषाणी किले को घेर लिया। किला बहुत बड़ा और खड़ी ऊँचाई उसकी ऊँचाई। सौ गज थी। किनारों पर बहुत मजबूत तटबन्दी थी और उसके बाद पानी से भरी गहरी खन्दक। मराठी और कन्नड़ सैनिक आगे बढ़े। अन्दर की सेना बुर्ज पर आ गयी। वहाँ से उन्होंने बाणों की वर्षा आरम्भ की। मराठा, हैदराबादी और हुक्केरीकर सैनिकों ने चमड़े के लिबास का सहारा लिया। इसलिए बाणों का उनके ऊपर कोई असर नहीं हुआ।

दो-तीन दिन तक घनघोर युद्ध होता रहा। मराठे सीढ़ियाँ लगाकर तटबन्दी पर साहसपूर्व चढ़ने का प्रयास करने लगे। हाथी सिंहद्वार को तोड़ने की कोशिश करने लगे। दोनों दलों में बाणों से, भालों से और गोला-बारूद से युद्ध हो रहा था। घोड़े खून में लथपथ होकर जमीन पर गिर रहे थे। तोपों के गोलों से आहत हाथी तांडव करने लगे थे। उनकी चिंग्घाड़ कान के पर्दे फाड़ रही थी। युद्ध भयानक हो उठा था।

तीसरी शाम शम्भूराजा ने कवि कलश को आदेश दिया। उनके आदेश के अनुसार कविराज की तीन सौ तीरन्दाजों की सेना सामने खड़ी हो गयी। शम्भूराजा ने हँसते हुए कहा—

"हमारे मैसूरकर मित्र को बाण बहुत पसन्द हैं। उसे वही देंगे।"

परन्तु कविराज के सैनिकों के पास बाँस की फट्टियों के बाण थे। इन बाणों से किसी का क्या बिगड़ने वाला था। अनेक लोग कवि कलश और शम्भूराजा की ओर देखकर हँसने लगे। इसी समय मशालची दौड़ते हुए आये। उन्होंने उन बाणों में कपड़े बाँधे। उन्हें तेल में भिगोकर आग लगाना शुरू किया। अब ये अग्निबाण सूँऽ सूँऽ करके ऊपर चढ़ने लगे। इन बाणों के बारूदखाने में गिरते ही भयंकर आग लग गयी। 'धुड़मऽऽ धामऽऽ, धुडूमऽऽ धामऽऽ' की आवाज के साथ विस्फोट होने लगे। किले के ऊपर ही शीशमहल धड़ाधड़ जलने लगा। एक बारूदखाना तटबन्दी के समीप ही था। उसमें इतने जोर का धमाका हुआ कि तटबन्दी ढहकर पानी भरी खंदक में जा गिरी। धुआँ, धूल और आग के कारण होहल्ला मच गया। किले के अनेक सैनिक उस आग में जलकर खाक हो गये। दीवार गिर जाने से किले के अन्दर की भाग-दौड़ साफ दिखाई दे रही थी। किले के सरदारों के बच्चे छाती पीट-पीटकर चिल्लाने लगे। 'कापातिंगऽऽ' 'कापातिंगऽऽ' 'बचाइए' 'बचाइए' 'निरतिंगऽऽ' 'निरतिंगऽऽ' 'रुकिएऽऽ रुकिएऽऽ' इस प्रकार करुण चीत्कार करने लगे।

शम्भूराजा के संकेत पर अग्निबाण रुक गये। किला पूरी तरह पराजित हो गया। शम्भूराजा प्रसन्न हुए। हरजी और एकोजी ने राजा की पीट थपथपायी। श्री रंगपट्टनम के उस पहाड़ी किले पर मराठों का भगवा झंडा पहली बार फहराया गया।

इस विजय के बाद शम्भूराजा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। मैसूर, कर्नाटक और तमिल के कुल बाईस किले मराठों के कब्जे में आ गये। एक ओर धर्मपुरी, होसूर का क्षेत्र तो दूसरी ओर नीचे मदुरा से जिंजी बेलूर तक का क्षेत्र मराठों के अधिकार में आ गया था। यह सारा क्षेत्र मराठों के घोड़ों की टापों से प्रतिध्वनित होने लगा। कावेरी में बाढ़ आयी और चली गयी किन्तु वह शिवपुत्र सम्भाजी के पराक्रम के

आड़े न आ सकी। अनेक जगहों से वसूली एकत्र की जा रही थी। एकत्र किये गये द्रव्य की गठरियाँ घोड़ों और बैलों की पीठ पर लादकर रायगढ़ को भेजी जा रही थीं।

चिक्कदेवराजा को दुबारा सम्भाजी का सामना करने का साहस नहीं हुआ। तिलुगा, कोडग और मलायला जैसे दाक्खिनी राजाओं ने चिक्कदेव का साथ छोड़ दिया था। वे मराठों के मित्र बन गये थे। शम्भूराजा को वे कर दे रहे थे। मराठों के गुप्तचर चारों ओर घूमते थे। चिक्कदेव ने औरंगजेब को पत्र लिखकर कहा था— 'दक्षिण में आकर सभी को कष्ट देने वाले सम्भा को काबू में करो। हमारी सहायता के लिए शीघ्र आओ।' पर जाने क्यों बादशाह की ओर से उन पत्रों की कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।

शम्भूराजा ने दशहरे का सोना त्रिचनापल्ली में ही लूटा। उनकी सेना आस-पास से शीघ्रतापूर्वक कर वसूल कर रही थी। दशहरा बीत गया फिर भी शम्भूराजा वापस महाराष्ट्र लौटने का नाम नहीं ले रहे थे। उनकी उपस्थिति से दक्षिण के अमीर उमराव निश्चिन्त हो गये थे। चिक्कदेव को कर देना बन्द कर दिया था। कर न मिलने से चिक्कदेव बौखला गया था। उसकी स्थिति का पता शम्भूराजा को लगा तो उन्होंने अपने गुप्तचरों से चिक्कदेव के पास सन्देश भिजवाया—'हम कर्नाटक और तमिल राज्य पर शासन करें, ऐसी हमारी पिताजी की इच्छा थी। हमारे चाचा एकोजी राजा जैसे चाचा और हरजी राजा जैसे जीजा यहीं पर हैं। हम उस सह्याद्रि के जंगल में वापस क्यों जायें? हम यहीं पर आनन्द से रहेंगे।'

इस सन्देश से चिक्कदेवराजा डर गया। उसने बिना शर्त समझौते की बातें शुरू कीं। दीवाली के बाद त्रिचनापल्ली के पहाड़ी किले में सौ खंभों वाले सभागार में समझौता वार्ता निश्चित की गयी। उसके लिए दो करोड़ की पूँजी लेकर चिक्कदेवराजा स्वयं आने वाला था। समझौता वार्ता का दिन आ गया। चिक्कदेवराजा के बदले उसका ग्यारह साल का छोटा बेटा चिक्कदेव के हस्ताक्षर वाले कागजात लेकर आया। वह दो करोड़ के स्थान एक करोड़ की पूँजी लेकर आया था। शेष द्रव्य बाद में देने का वादा किया गया था। अपना राज्य छोड़कर इतने दिनों तक दूर रहना शम्भूराजा को भी ठीक नहीं लग रहा था। अन्ततः समझौता हो गया।

अपनी दक्षिण की विजय में यशस्वी होकर शम्भूराजा महाराष्ट्र की ओर जाने के लिए निकले। सेना में इस बात की चर्चा हो रही थी कि चिक्कदेव समझौता वार्ता के लिए क्यों नहीं आया। लोगों ने अनुमान लगाया कि उसे किसी ने बताया होगा कि सम्भाजी उसी शिवाजी के पुत्र हैं जिसने अफजल खान को मिलने के लिए बुलाया था। अफजल खान धोखा खा गया था इसीलिए चिक्कदेव ने ऐन वक्त पर अपना इरादा बदल लिया।

त्रिचनापल्ली की सीमा पर आने पर शम्भूराजा ने हरजी राजा को बाँहों में भर लिया। उम्र में छोटे शम्भूराजा को हरजी और अम्बिका दीदी ने असंख्य आशीर्वाद दिये। हरजी ने कहा, "शम्भूराजा, रायगढ़ और हिन्दवी स्वराज्य आपके हाथ में सदा सुरक्षित रहे।"

शम्भूराजा ने भावुक होकर कहा, "दुर्भिक्ष के कारण आजकल अपना राज्य जर्जर हो गया है। जीजाजी आप दक्षिण रसद आपूर्ति सँभालें। फिर दस औरंगजेब भी हमारे ऊपर आक्रमण करें तो भी उसकी परवाह कौन करता है?"

दस

शम्भूराजा कर्नाटक की लड़ाई के बाद वापस आ गये थे। झंडे लगाकर उनका जोरदार स्वागत किया गया। आते आते ही शम्भूराजा ने येसूबाई को धन्यवाद दिया और बोले, "रानी साहब, हरजी राजा को दक्षिण का सूबेदार बनाने की आपकी सलाह बहुत उचित सिद्ध हुई। वरना मुझे तो यही लग रहा था कि हम पुराने कर्मचारी हणमन्त के साथ अन्याय कर रहे हैं।

इस संवाद से येसूबाई प्रसन्नता से खिल उठीं। शम्भूराजा ने स्पष्ट शब्दों में यह भी कहा कि निंबालकर और शिर्के जैसे लोगों से महाड़िक कहीं अच्छे हैं। दो ही दिनों के बाद दुर्गादास राजा से मिलने आये और धीमी आवाज में कहने लगे— "शम्भूराजा शहजादा अकबर की प्रार्थना कुछ अलग है।"

"क्या है?"

"उनका कहना है कि आप शहजादे के साथ दिल्ली चलें।"

"रायगढ़ को छोड़कर? औरंगजेब जैसा अजगर मुँह खोलकर बैठा है। ऐसी स्थिति में हम कैसे जा सकते हैं?"

"वे कहते हैं कि आप कर्नाटक - जिंजी तक इतना बड़ा युद्ध लड़कर कैसे आ गये?"

"वह वर्षा का मौसम था दुर्गादास! मेरे पिता द्वारा जीते गये क्षेत्र में गड़बड़ी चल रही थी। उसे समय रहते ठीक करना आवश्यक था।"

"महाराज, शहजादे के साथ कम से कम सेना तो दीजिए।"

"दुर्गादास, आपकी समझ में यह क्यों नहीं आता? हमारे हिन्दवी स्वराज्य की, उसकी प्रतिष्ठा की ध्वजा भले ही आकाश में उड़ रही हो। किन्तु हमारा

स्वराज्य बहुत छोटा है। हमारी साधन-सामग्री सीमित है। बड़े महाराज के समय से आज तक हमारी सेना कभी भी सत्तर-पचहत्तर हजार से आगे नहीं गयी। औरंगजेब की सैनिक शक्ति हमसे सात-आठ गुना अधिक है। द्रव्य, साधन सामग्री और हाथी-घोड़ों की संख्या तो बहुत अधिक है।''

दुर्गादास ने गर्दन नीचे झुका ली। तब शम्भूराजा ने कहा—

''इस तरह नाराज न हों दुर्गादास। एक बार इस महासंग्राम में फँसे हमारे पैर एक बार बाहर निकल जायें तो आपकी ओर ध्यान देना हमारे लिए सम्भव होगा।''

दुर्गादास ने उत्तर के हिन्दू राजाओं, जमींदारों, कुछ मुसलमान और राजपूत सरदारों की सूची पढ़कर सुनाई। इस पर कवि कलश, दुर्गादास और शम्भूराजा में वाद-विवाद हुआ। बीच में ही शम्भूराजा ने कहा—

''हमारा पुर्तगालियों से अघोषित युद्ध चल रहा है। यदि आवश्यक हुआ तो आपको और शहजादे को गुजरात के रास्ते बाहर निकलना पड़ेगा आप तैयारी रखें।''

''हम उत्तर की ओर जाने के लिए कब से व्यग्र हैं।'' दुर्गादास ने कहा।

''आज की बैठक में शहजादे नहीं पहुँच पाये?'' राजा ने पूछा।

''महल में आराम कर रहे हैं।'' दुर्गादास ने कहा।

''महाराज, शहजादे ने आपके लिए सन्देशा भेजा है। उनका कहना है कि उन्हें विचार विमर्श की जगह प्रत्यक्ष कार्य करना पसन्द है। अपने घोड़े तैयार रखें, हम उन्हें दिल्ली ले जाएँगे।''

इस सन्देश को सुनकर शम्भूराजा और उनके बाद दुर्गादास भी हँसे। शम्भूराजा ने कहा, ''यदि ये शहजादे सचमुच बातों से अधिक कार्य में विश्वास रखते तो कितना अच्छा होता?'' कहते-कहते शम्भूराजा मौन हो गये। उन्होंने स्पष्ट किया—''मरे हुए हाथी के चमड़े की भी कीमत होती है। जो भी हो आखिर ये हैं तो शहजादे ही न। यदि हम इन्हें दिल्ली की गद्दी पर बिठाने में सफल हो जायें तो उत्तर के सारे अमलदार शहजादे के प्रेम कारण नहीं औरंगजेब के डर से, कठोर दंड के भय से अकबर के पीछे खड़े हो जाएँगे, विद्रोह करेंगे।''

''शम्भू महाराजा, कुछ कीजिए। राजपूताना से हमें अनेक सन्देश आ रहे हैं। औरंगजेब के दानवी जजिया समझौते के कारण मुसलमानों को छोड़कर शेष सभी धर्मों और जातियों के लोग परेशान हैं। बादशाह के विरुद्ध खड़ा होने वाला कोई मसीहा प्रजा को चाहिए।''

''दुर्गादास जी, अम्बर के उस राजा राम सिंह जैसे लोग इस अत्याचार के विरोध में आगे क्यों नहीं आते?''

दुर्गादास के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। वे उठकर वकीली महल

में चले गये।

बादशाह औरंगजेब को अपनी प्रचंड सेना के साथ दक्षिण में आये चौदह-पन्द्रह महीने बीत चुके थे। उसे अभी भी अपेक्षा के अनुसार कोई सफलता नहीं मिली थी। इसलिए वह बहुत निराश था। इसके विपरीत शम्भूराजा, हंबीरराव, मानाजी, रूपा जी, निलोपन्त आदि ने महाराष्ट्र में मुगल सत्ता को नष्ट करना आरम्भ कर दिया था। शम्भूराजा ने राजा राम सिंह के सम्बन्ध में कविराज से पूछा—"कविराज, इस अम्बर नरेश से आगरा दौरे के समय हमारी भेंट हुई थी। आप भी उसे पहचानते हैं। कैसा लगता है, वह आदमी आपको?"

"राज्य के कार्यों की अपेक्षा उन्हें शिकार का अधिक शौक है।"

"फिर भी वे मिर्जा राजा के पुत्र हैं। मिर्जा राजा को औरंगजेब ने बुढ़ापे में कष्ट दिया था। राम सिंह का भी बार-बार अपमान किया है। हमारे आह्वान से यदि वे खड़े हो जाएँ तो अच्छा होगा। कविराज, कुछ करना चाहिए।"

राजा राम सिंह द्वारा भेजे गये पहले के पत्र को शम्भूराजा ने कविराज से मँगवा लिया। उन्होंने तत्काल कवि कलश को पत्र लिखने के लिए कहा और स्वयं पत्र संस्कृत भाषा में लिखवाने लगे—

'राजाधिराज अम्बर नरेश राजा राम सिंह को सादर प्रणाम।

अपने हिन्दवी स्वराज्य में हमने शहजादा अकबर को आश्रय दिया है। इस सम्बन्ध में सन्तोष व्यक्त करने वाला आपका पत्र मिला। आप सभी हिन्दू हैं और सभी को मिलकर सभी के भले के लिए कुछ करना चाहिए। आपका यह विचार हमारे मन को बहुत भला लगा। किन्तु हम औरंगजेब का विरोध न करके उसकी हुकूमत को स्वीकार करें, आपका यह सुझाव एक राजपूत को शोभा नहीं देता। बादशाह का मांडलिक बनने का प्रस्ताव किसी भी स्वाभिमानी मराठा को स्वीकार न होगा। शिवाजी के पुत्र के लिए तो इसका प्रश्न ही नहीं उठता।

आपके पुत्र कृष्ण सिंह को औरंगजेब ने किस निर्दयता से मार डाला? यह बताने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु यदि धर्म की रक्षा और विकास के लिए सभी हिन्दुओं को संगठित करने का उद्देश्य है तो आप जैसे अनुभवी लोगों को इस कार्य के लिए आगे बढ़ना चाहिए। उस दुष्ट औरंगजेब को ऐसा लगने लगा है कि हम हिन्दू तत्व शून्य और दुर्बल हैं। हममें अपने देश और धर्म के प्रति कोई अभिमान नहीं है। बादशाह का यह बर्ताव हमें सह्य नहीं है। हम क्षत्रिय हैं। अपनी धार्मिक भावना और संस्कृति का अपमान हमारा क्षात्र तेज सहन नहीं करेगा।

आप अनुभव और उम्र में बड़े हैं। हम अभी नये अनुभवहीन हैं। आपके धर्माभिमान और शौर्य की बातें मैंने सुनी हैं। आप सप्तांग-राज्य सम्पन्न हैं। थोड़ा

साहस दिखायें। उस नीच यवन के अहंकार को मिटाने में हमारी सहायता करें। फिर देखें कि हम किस तरह का दिव्य पराक्रम करते हैं। इस संकट के समय में आप जैसा बलशाली और विवेकवान राजा शान्त कैसे बैठ मकता है? हमें इसी का आश्चर्य हो रहा है। हम अकबर और दुर्गादास को गुजरात के रास्ते उत्तर की ओर भेजने की सोच रहे हैं। हमारी धैर्य और साहस की वृत्ति को आप भी प्रोत्साहित करें। वह पठानों का बादशाह ईरान नरेश अब्बास भी अकबर की सहायता अवश्य करेगा। उसने ऐसा वचन दिया है। कल की यदि अकबर को गद्दी मिली तो उसमें सभी को लाभ होगा। हमारे मन्त्री कवि कलश और जनार्दन पंडित तो आपको अलग से पत्र लिखेंगे ही।'

ग्यारह

बहुत दौड़ धूप के दिन थे। बागलान की ओर मराठा मुगल युद्ध आरम्भ था। साल्हेर के किले को मुगल सेना ने चारों ओर से घेर लिया था। रामशेज विजित नहीं हो रहा था। बलशाली मुगल सेना को चिढ़ाते हुए सीधी गर्दन किये खड़ा था। वीर हंबीरराव अपनी सेना लेकर भीमा के प्रवाह की ओर प्रवेश कर गये थे। वे अपने अचानक आक्रमण मे मुगलों को पीड़ित कर रहे थे। येसूबाई फिर से दरबार में आकर कार्य-भार सँभालने लगीं। उनके पुत्र शाहू राजा वहीं बड़े हो रहे थे। दरबार के कामों, कागजात और हिसाब किताब में खोई येसूबाई महारानी को बीच-बीच में अपने राजकुमार का स्मरण हो आता था। वे उन्हें उठाकर सीने से लगा लेती थीं।

आसपास चार-पाँच किलों की देखभाल करके शम्भूराजा शाम को ही महल में आ गये थे। किस किले पर किस चीज की कमी है क्या अधिक है आदि बातों की चर्चा हुई। भोजन के समय भी राजा उदास थे। रात को राजा अपने महल में चौक के झूले पर बहुत देर तक बैठे रहे। पिछले महीने फल्टन के बजाजी निंबालकर का निधन हो गया था। अपने मामा के दुखद निधन की छाया तो उन पर थी ही, किन्तु आज वे बहुत उदास दिख रहे थे।

"महाराज, तबियत ठीक नहीं है क्या?" येसूबाई ने धीमे स्वर में पूछा।

"हमारे बजाजी मामा बहादुर और साहसी मराठा थे, किन्तु उनका सारा जीवन मुगलों की चाकरी में चला गया।"

"जाने दीजिए। अब उन पुरानी बातों को याद करने से क्या फायदा? उनके

पुत्र महादजी बाबा आपकी सगी बहन सखुबाई के पति हैं। भविष्य में आप पर यदि कोई विपत्ति आयी तो वे शेर की तरह आपके पीछे खड़े रहेंगे।''

अब शम्भूराजा के लिए चुप बैठना असम्भव हो गया। वे दाँत पीसते हुए बोले, ''शेर की खाल पहनने वाली लोमड़ी जब सामने आती है तो बड़ी बदसूरत लगती है, येसू।''

''मतलब?''

''खबर बुरी है पर दुर्भाग्य से सही है—हमारे सगे बहनोई साहब महादजी बाबा मुगलों से मिले हुए हैं ऽऽ।''

येसूबाई झट से नीचे झूले पर बैठ गयीं। उनके पेट में गोला उठ गया था। शम्भूराजा ने कहा, ''पिता के स्थान पर मुगलों ने महादजी को मनसबदार बनाया है। चार हजार जाति और तीन हजार सवारों की अच्छी मनसब दी है। इसके अतिरिक्त उनके चचेरे भाई को खानजहान की सेना में समाविष्ट कर लिया गया है।''

''पर ये लोग इतने बेशर्म कैसे हो गये?''

''उस महादजी पर उनके अन्य सम्बन्धियों ने दबाव डाला होगा। उन्होंने कहा होगा कि बादशाह की कृपा को अपनी झोली में डाल लो। यह शिवाजी और सम्भाजी का कल का स्वराज्य कितने दिन सुरक्षित रहेगा?''

चार-आठ दिन बीते नहीं कि एक दूसरी बुरी खबर राजधानी में पहुँची। महारानी येसूबाई के चचेरे भाई कान्होंजी शिर्के जाकर औरंगजेब से मिल गये। यह खबर सुनकर शम्भूराजा को धक्का लगा। उन्होंने पूछा—

''येसू, अब आपके सगे भाई गणोजी राव का क्या है?''

येसूबाई ने गर्दन नीचे झुका ली। उन्हें भी इस विषैली हवा पर भरोसा नहीं था। तब शम्भूराजा ने पीड़ा भरे स्वर में कहा—

''गणोजी राव तो केवल शरीर से स्वराज्य में घूमते हैं, मन से तो वे कब के मुगलों के राज्य में जा पहुँचे हैं।''

रात में शम्भूराजा को नींद नहीं आ रही थी। वे बहुत बेचैन थे। छत में लगी झूमर की ओर देखते हुए शम्भूराजा ने कहा—

''येसू मुझे कभी-कभी लगता है कि यह भूमि केवल ज्ञानियों, सन्तों और महन्तों की ही नहीं कृतघ्नों, मक्कारों और दलबदलू लोगों की भी हैं यह केवल राज्य की सेवा के लिए अपना सिर कमल चढ़ा देने वालों की ही नहीं, जमीन के छोटे टुकड़े के लिए, अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए अपने ईमान और स्वराज्य में बेच देने वाले पाजियों की भी है।''

येसूबाई बहुत दुखी हुई। राजा ने दर्द भरे स्वर में पूछा—

''एक ही समय में हम क्या क्या करें? मुगलों की पाँच लाख की सेना की

महाबाढ़ का सामना करें या शत्रु से जाकर मिलने वाले इन धोखेबाज लोगों को सँभालें? कुछ भी करके इन दगाबाज लोगों को काबू में ले आना होगा।''

येसूबाई अपने आँसू नहीं रोक पायीं। राजा की बाँह पर अपना सिर रखकर उन्होंने कहा, ''महाराज क्षमा कीजिये। मेरे मायके वालों ने आपको धोखा दिया है।''

शम्भूराजा ने येसूबाई का सिर अपने सीने से लगा लिया। उन्हें थपकी देते हुए वे भारी मन से बोले ''आप अपने मायके का क्या लेकर बैठी हैं? अब तो अपना ननिहाल फलटन भी हमारा नहीं रहा। वे लोग औरंगजेब के शरणागत होकर प्रसन्न हैं।''

मुकुट-हरण

एक

आज बादशाह अत्यन्त उदास दिख रहा था। पिता के सम्बन्ध का फायदा उठाते हुए अन्त में असदखान ने पूछा—

"बादशाह सलामत, आपकी तबीयत ठीक नहीं है क्या?"

"अब बिगड़ने के लिए क्या बचा है वजीरे-आजम? वह काफिर का बच्चा सम्भा समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। हमारे शहजादे अकबर का कुछ पता नहीं। वे जंजीरे के साथ शेर चीते जैसा बर्ताव करते हैं किन्तु भीतर से वे सम्भाजी से डरते हैं। वह बेवकूफ गोवा का वाइसराय मराठों के विरुद्ध खुली लड़ाई का एलान करने के लिए तैयार नहीं होता। रामशेज का वह नटखट किला इतने दिनों के बाद भी हाथ नहीं आ रहा है। हमारी सल्तनत में कोई अच्छी खबर सुनी है आपने?"

"लोग कह रहे हैं कि आपके छोटे शहजादे आजम बीजापुर की सीमा से पन्हाला की ओर वापस चले गये हैं। वहाँ पर उन्होंने मराठों के सेनानायक हंबीरराव को संकट में डाल दिया है।"

"लोग तो कुछ भी कहते हैं।" असदखान का उपहास करते हुए बादशाह ने कहा, "हमारे चारों शहजादे, बहादुर, वफादार और साहसी हैं, हम भी ऐसा ही मानते थे। लेकिन क्या फायदा? सब के सब नादान निकले। वजीरे आजम एक-एक किले से इतनी लम्बी टक्कर देनी पड़ी तो हमारी जिन्दगी कम पड़ जाएगी। बादशाह बूढ़ा, शहजादे नादान और पोते बेवकूफ! हमारे सारे अमीर उमराव गधे। हमें अब आप में से किसी से कोई उम्मीद नहीं रही।"

"लेकिन जहाँपनाह...।"

"पहले बताइए कि जयपुर के रामसिंह को भेजे सन्देश का क्या हुआ?"

"दो महीने पहले उन्होंने खत में लिखा है—'हम स्वयं सम्भाजी को पत्र लिखकर पीछे रहने के लिए कहेंगे। उनसे कहेंगे कि कम से कम अकबर को तो पकड़कर हमारे हवाले करें।"

उसी दोपहर में बादशाह के बड़े शहजादे मुअज्जम और असदखान के बीच विचार-विमर्श हुआ। मुअज्जम ने चिढ़कर असदखान से कहा-"वजीर साहब, हमारे अब्बाजान का संशयी स्वभाव और अविश्वास उनकी परेशानी और हमारी बर्बादी का मुख्य कारण है।"

"मतलब?"

"मैं और आजम दोनों पैंतालीस वर्ष के हो गये हैं पर अब्बाजान को लगता है कि हम अभी अबोध और अनजान बच्चे हैं। उन्हें किसी पर रंचमात्र का भरोसा नहीं है।"

"हमारे आजम को उन्होंने रायगढ़ न भेजकर बीजापुर-कोल्हापुर की ओर क्यों भेजा है? पता है?"

"क्यों?"

"चौदह साल पहले शिवाजी ने सम्भा को हमारे यहाँ मनसबदार के पद पर रखा था। तब आजम और सम्भा की थोड़ी जान-पहचान हुई थी। रायगढ़ जाने से उस दोस्ती को नयी शुरुआत मिलेगी और दोनों मिलकर बादशाह के विरुद्ध बगावत करेंगे। ऐसा उन्हें शक था।"

कुछ दिन ऐसे ही बीते। एक दिन पन्हाला से आजम का एक हरकारा आया। बादशाह के दरबार में वह समाचार बताने लगा—"खुशखबरी है हजरत! आजम साहब ने बहुत बहादुरी की है उस हंबीर मरगठ्ठे को पूरी तरह कुचल डाला। उसके अनेक सैनिकों को मारकर घायल कर दिया। बहुत बहादुरी दिखाई।"

हरकारा समझता था कि इस खुशखबरी को सुनकर बादशाह अपनी रत्नों की माला उसे पुरस्कार में दे देगा परन्तु बादशाह ने उसकी बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया। फिर दस दिनों के बाद आजम का एक खास दूत पत्र लेकर दरबार में विजयी मुद्रा में उपस्थित हुआ। वजीर ने उस पत्र को स्वयं पढ़कर बादशाह को सुनाया। उसमें लिखा था—'अब्बाजान दुश्मन के साथ ढाल तलवार से जोरदार मुकाबला किया। हजरत साहब की खुश किस्मती से दुश्मन के आठ सौ सैनिकों को कत्ल किया। सात सौ को जिन्दा पकड़ा है। प्रमुख स्थानों और छतरियों पर क़ब्ज़ा किया। बहुत बड़ी विजय हासिल की।'

बादशाह ने इस ताजी खबर को सुनते हुए एक बीमार पंछी की तरह आधी आँख खोली। फिर से वह कौड़ियों की माला आँखों से लगाकर अल्लाह के चिन्तन में डूब गया। जब नहीं रहा गया तो वजीर ने बादशाह के कान में कहा, "बादशाह

सलामत, हर बार इस प्रकार चुप रहने से कैसे चलेगा?"

"फिर क्या करें?"

"शहजादे को इनाम पाने की अपेक्षा है।"

"हूँ।" एक क्षण चुप रहकर बादशाह ने मुँह खोला—"मुअज्जम बेटे, इस खत को ज़रा पढ़ो।"

मुअज्जम द्वारा खत को पूरा पढ़ते ही, बादशाह ने रूहुल्लाखान को हुक्म दिया—"इसमें किस-किस ने क्या-क्या बहादुरी की? इसका ब्यौरा मुझे दीजिए।" ये आज्ञाएँ देने के बाद भी वह वजीरे-आलम की ओर देखता रहा। तब बादशाह ने खजांची से कहा, "शौकत मियाँऽऽ, शहजादा आजम की बहादुरी के लिए उसे एक लाख का ईनाम देना है। इसलिए खजाने से वह राशि निकालकर रखिए।"

चार-पाँच दिनों में पन्हाला से सच्ची खबर आयी। पहले दो आक्रमणों में सेनापति हंबीरराव जानबूझकर पीछे हट गये थे। शहजादा आजम को उन्होंने अधिक से अधिक अपने प्रदेश में आने दिया था। तीसरी बार उसने खुद आक्रमण किया। अपने प्राण बचाने के लिए शहजादा आजम सतारा के रास्ते नीरा नदी के पार भाग गया।"

उस पत्र को अपने उत्साही वजीर को पकड़ाते हुए, बादशाह ने कहा, "क्यों वजीरे-आजम? देखा? इसी वजह से शहजादे की बहादुरी पर हमें यकीन नहीं हो रहा था।"

"गुस्ताखी माफ जहाँपनाह। आपका आदेश सुनकर मैंने खजाने से राशि निकाली थी, किन्तु उसे आगे नहीं भेजा। यह कितना अच्छा हुआ।"

उस रात बड़ा शहजादा मुअज्जम और वजीर असदखान बहुत देर तक बातें करते रहे। बादशाह के आगे असहाय बने वजीर ने कहा, "बेटे मुअज्जम, मैं बादशाह को जीवनभर अपना उस्ताद मानता रहा हूँ। अभी भी उन्हीं से कुछ सीखने की कोशिश कर रहा हूँ।

"वह कैसे?"

"अब यही देखिए न। छोटे शहजादे ने अपनी बहादुरी का पत्र भेजा। उसे बादशाह ने जानबूझकर आपको पढ़ने के लिए दिया। कारण यह था कि यदि उस तरह का पराक्रम छोटे शहजादे ने सचमुच किया हो तो आप भी उससे कुछ सीखें। रूहुल्लाखान को बारीकी से समझने के लिए कहा जिससे घटित घटना की विश्वसनीयता समझ में आ जाय। तीसरी बात, ईनाम के लिए ईनाम देने के लिए खजाने से एक लाख की राशि निकालने को कहा किन्तु बुद्धिमानी से भेजा नहीं क्योंकि इतनी बड़ी रकम व्यर्थ में नष्ट नहीं होने देनी थी। ऐसा बुद्धिमान पिता

मिलना मुश्किल है।"

उस रात बादशाह को थोड़ा-सा बुखार आ गया था। उदयपुरी बेगम रातभर बादशाह के पास बैठी रहीं। उन्होंने मुअज्जम को भी वहीं रोक रखा था। बादशाह को गहरी नींद आयी। सवेरे उनका चेहरा प्रसन्न दिख रहा था। अवसर पाकर मुअज्जम ने धीरे से पूछा—"अब्बाजान, आदमी को अपनी औलाद पर तो भरोसा रखना चाहिए। कम-से-कम हर बात को अविश्वास से तो न देखें?"

औरंगजेब मुस्कराया। अपनी सफेद दाढ़ी पर हल्के से हाथ फेरकर बोला, "बेटे मुअज्जम जिसे हुकूमत का घोड़ा दौड़ाना है उसे अपनी परछाईं की ओर भी संशय से देखना चाहिए।"

दो

मुंब्रादेवी का दर्शन करके शम्भूराजा बगल की पहाड़ी की चोटी पर चढ़े। उनके साथ कवि कलश, रूपाजी भोसले एवं अन्य सहयोगी थे। उस पहाड़ी की चोटी से राजा ने बाईं ओर देखा। दूर घोड़बन्दर किले की दिशा में थाना गाँव के पास सामने की पहाड़ी से लगी विशाल खाड़ी दिखाई पड़ी। वहीं खाड़ी आगे कल्याण बन्दरगाह तक पहुँच रही थी। दाहिनी ओर नारियल के घने जंगलों में थाना और उसके आसपास के गाँव छुपे थे। वहाँ मछुआरों की बस्ती के आसपास सफेद बालू की चमचमाती पर्त दिखाई पड़ रही थी। वहीं पर अपनी तटबन्दी को पानी में डुबोये थाना का किला एक सुस्त राक्षस की तरह खड़ा था। किले की तटबन्दी पर लम्बी टोपी वाले सैनिकों का पहरा था।

शम्भूराजा बीच बीच में कल्याण बन्दर की ओर चिन्तित दृष्टि से देख रहे थे। पिछले साल इसी जंगल से मराठों ने रूहुल्लाखान को भगाया था। दो-तीन महीने बाद औरंगजेब का सेनापति रणमस्तखान कल्याण पर आक्रमण करने आया था। चोले, डोंबिवली अंबरनाथ से दूसरी ओर मुरखाड तक का क्षेत्र उसने जलाकर राख कर दिया था। मराठी क्षेत्र पर दहशत पैदा करके कल्याण के बन्दरगाह पर क़ब्ज़ा कर लिया था।

"कविराज कल्याण का बन्दरगाह वैश्विक आयात-निर्यात का केन्द्र है। यहीं

से ही इस्ताम्बूल, पेरिस, लंदन से लेकर अफ्रीका, जावा. सुमात्रा तक का व्यापार चलता हैं। इस सोने की लंका को अधिक दिन के लिए औरंगजेब के अधिकार में छोड़ना, उसकी शक्ति को बढ़ावा देना है।''

''राजन, एक और मुद्दा भी बड़े महत्त्व का है।''

''कौन-सा?''

''औरंगजेब के सरदारों का यहाँ पैर जमाकर बैठ जाना अनुचित और धोखादायक होगा। मराठों का कोंकण से नासिक और बागलान की ओर जाने का रास्ता दुश्मनों के क़ब्ज़े में आ जाएगा। एक बार रसद पहुँचाना बन्द हुआ कि खानदेश के अपने बीस-पचीस किले अपने आप पके जामुन की तरह हमेशा के लिए औरंगजेब के मुँह में चले जाएँगे।

शम्भूराजा ने गर्दन हिलाकर हामी भरी। पहाड़ी से उतरते-उतरते सूबेदार बिट्ठलराव ने राजा और कविराज को जानकारी दी—''महाराज, अभी हाल में समुद्री क्षेत्र में अरबों के जंगेखान और अँग्रेजो के नौसैनिकों में बड़ी अनबन हुई।''

''कैसी अनबन सूबेदार?''

''अँग्रेजों के प्रेसिडेंट नामक जहाज पर आक्रमण करने के लिए जंगेखान ने अपनी पाँच जहाजें भेजी थीं। उस जहाज को जला देने की अरबों ने पूरी कोशिश की।''

''आगे?''

''जहाज बहुत बड़ा था। उसका नुकसान भी बहुत हुआ। किन्तु वह डूबा नहीं। इससे मुम्बई के सारे अँग्रेज विचलित हो गये हैं।''

''अरब लोग छूट गये?'' राजा ने जानना चाहा।

''नहीं, नहीं, जंगेखान के तीन जहाज जला दिये गये। आखिर में वे पीछे हटे। कुछ भी हो निलोपन्त पेशवा से पता चला है कि जंगेखान ने अँग्रेजों को अच्छा सबक सिखाया।''

शम्भूराजा और कविराज एक दूसरे की ओर देखकर सन्तोष व्यक्त करते हुए हँसे। शम्भूराजा की दृष्टि नीचे तलहटी की ओर गयी। वहीं पर खाड़ी में घुसी हुई पहाड़ी की सूड़ पर बसा हुआ पारसिक गाँव था।

शम्भूराजा ने हाल ही में वहाँ एक किला बनाना आरम्भ किया था। पास खुदाई का काम चल रहा था। वहाँ सैकड़ों की संख्या में कमाठी मजदूर और कारीगर काम कर रहे थे। हाथियों की पीठ पर और ऊँटगाड़ी में लादकर पत्थर इकट्ठे किये जा रहे थे। इन्हीं पत्थरों से पानी के तट पर बड़े-बड़े बुर्जों का निर्माण हो रहा था।

"कविराज, रणमम्तखान की मस्ती मिटाने के लिए ही हम यहाँ आये हैं। पर उससे अधिक पुर्तगाली नाम का मूर्ख शत्रु मुझे सता रहा है।" शम्भूराजा ने चिन्ता व्यक्त की।

"सच है राजन, वह गोवा का वाइसराय बातें तो बड़ी मीठी करता है। व्यवहार में भी अच्छा है। तभी तो पुत्ररत्न की प्राप्ति के अवसर पग उसने आपको बधाईपत्र और बालक के लिए पुर्तगाल के कीमती आभूषण भेजे थे।"

कविराज के स्मरण दिलाते ही शम्भृराजा मुक्त भाव मे हँस पड़े। उन्होंने कहा, "आपने उम कपटी को अच्छी तरह पहचाना। आपको क्या बताएँ। हमारे पुत्र के लिए शृंगारपुर से उसके मामा गणोजी के यहाँ से आभृषणों का उपहार समय पग नहीं पहुँचा किन्तु, इस कपटी मामा का घोड़ा गांगोली के महल में उपस्थित हो गया।"

शम्भूराजा उस विशाल खाड़ी, पुर्तगालियों के प्रदेश और बाई ओर अभी मराठों से मुगलों द्वारा अपहृत कल्याण का क्षेत्र देखने लगे। उन्होंने कुछ उत्तेजित होकर पूछा—"कविराज जैसा मैंने कहा था गोवा को दूत भेजा गया या नहीं?"

"गजन, इस दिशा मे आप सदैव ही निश्चिन्त रहें। अपने दूत अब तक मांडवी नदी पार करके गोवा के राजप्रासाद में पहुँच चुके होंगे।"

"क्या सन्देश भेजा है उस वाइसराय को?"

"यही, कि हम मगठा और मुगलों के झगड़े म बिलकुल न पड़ें और आराम से रहें। पुर्तगालियों की अधिकार वाली नदियों से यदि मुगलों की जहाजों का आना जाना आरम्भ हुआ तो शम्भूराजा किसी भी समय गोवा पर आक्रमण करेंगे।"

मुंब्रा की पहाड़ी मे शम्भूराजा जल्दी जल्दी नीचे उतरने लगे। मुंब्रा का पहाड़ खड़ी चट्टानों वाला था। वहाँ बकरियों का चढ़ पाना भी कठिन था। घोड़ो के वहाँ पहुँचने का तो प्रश्न ही नहीं था। राजा वहाँ के पत्थरों से होते हुए शीघ्रता से नीचे आ रहे थे। पारसिक के किले की हो रही जुड़ाई की ओर बार बार देख रहे थे। पानी की सतह से पचीस फीट की ऊँचाई की प्रचंड चट्टान पर यह किला बनाया जा रहा था। उसकी नीव बहुत मजबूत थी। राजा के सामने समुद्र में लकड़ी की अनेक मजबूत फल्लियाँ बिछाकर उस पर किला जैसा बनाया था। उस पर अनेक तोपें बिठाई गयी थीं। पारसिक किले की पाषाणी तटबन्दी पर भी अनके बुर्जियाँ बनाकर उनमें बत्तियाँ लगाने की व्यवस्था की गयी थी। शम्भूराजा मन से आश्वस्त थे। कल को अगर पुर्तगाली मुगलों से जा मिलें तो उनकी नावों और जहाजों को ध्वस्त करने की तैयारी हो गयी थी। पहाड़ी से उतरने हुए शम्भूराजा ने कवि कलश से पूछा—

"कविराज, इस रणमस्तखान का नाम इससे पहले कभी सुना था?"

कविकलश ने राजा की ओर देखा तब राजा स्वयं बताने लगे—"यह रणमस्तखान फन्नी पहले आदिलशाह का सरदार था। पर बाद में मुगलों से मिल गया। कविराज, हमारे पिताजी जालना से पन्हाला जाने के लिए निकले थे। तब इसी ने उनको संगमनेर के जंगल में तीन दिन तक बन्दी बना रखा था।" एक ठंडी साँस लेकर शम्भूराजा ने कहा, "कविराज, एक बात का स्मरण रखिये। उत्तर से मुगल सेना के साथ आये सरदारों की हमें कोई चिन्ता नहीं होती किन्तु, दक्षिण के लोग अधिक खरतनाक हैं।"

शम्भूराजा पारसिक किला बनवाने में व्यस्त थे। फिर अनेक मराठा दल सोलापुर क्षेत्र में धावा करते हुए दहशत फैला रहे थे। शहाबुद्दीन खान की सेना के साथ पुरन्दर, शिवापुर और राजगढ़ में निरंतर झड़प हो रही थी। राजा ने केशव त्रिमल, निलो मोरेश्वर पेशवा और रूपाजी भोसले जैसे सरदारों को पुन: कल्याण पर आक्रमण करने के लिए भेजा था। एक समय में बादशाह के साथ राज्य में अनेक स्थानों पर आग का खेल चालू था। इसलिए कुछ प्रशासकीय कार्य भी रुके हुए थे। उन्हें निपटाने के लिए राजा रायगढ़ के लिए निकले।

शम्भूराजा ने मुंब्रा के अपने स्थान पर सन्देशा भेजा—"कविराज, पन्हाला में हंबीरराव को तत्काल सन्देश भेजिये और कहिये कि वहाँ का आक्रमण शान्त हो गया हो तो अपने घोड़े तुरन्त कल्याण की ओर ले आइए। बरसात शुरू होने से पहले रणमस्तखान की गर्दन तोड़नी चाहिए।"

"और महाराज तब तक हमारे लिए क्या आज्ञा है?" तुकोजी शिंदे ने पूछा।

"कल्याण का किला फिर से अपने क़ब्ज़े में लेकर राजा पर उपकार कीजिए। दूसरा क्या है?" राजा ने कहा।

पारसिक का किला और खाड़ी की व्यवस्था अपने सहयोगियों को सौंपकर राजा राययगढ़ चले गये। राजा रायगढ़ जा रहे तभी गुप्तचरों ने सूचना दी—"महाराज, वह फिरंगी पलट गया है। थाने की खाड़ी से पुर्तगालियों के जहाज कल्याण की ओर जाने लगे हैं?"

"अच्छा तो अपना पारसिक का किलेदार क्या कर रहा है?" राजा ने उसी जगह लगाम खींचकर घोड़ा खड़ा कर दिया।

"अपने पारसिक किले की सेना रात-दिन गोले फेंक रही है। उनकी छोटी-मोटी जहाजें और नावें जलाकर खाक कर दी गयीं। पर खाड़ी बहुत बड़ी है। उसकी चौड़ाई भी बहुत है, महाराज।"

राजा ने सुझाव दिया—"फिर आप लोग निराश न होना। जितना सम्भव हो फिरंगी को उतना नष्ट कीजिए।"

महाराज रायगढ़ पर आए। बहुत दिनों के बाद येसूबाई से भेंट हुई थी। बेटा

शाहू अब एक वर्ष का हो गया था। हाथ-पैर झाड़कर आगे निकल रहे थे। शीघ्र ही चलने की सम्भावना दिख रही थी।

अभी चार ही दिन हुए थे कि सेनापति हंबीरराव राजा से भेंट करने के लिए किले पर पधारे। महाराज उन्हें एकटक देख रहे थे। औरंगजेब भी हंबीरराव को 'आसमान में चलने वाला बिजली का गोला' कहकर उनकी तारीफ करता था। बुरहानपुर जैसे समृद्ध नगर में तीन दिन तक चलने वाली लूट हो या खानदेश में की गयी घुड़दौड़ हो, विदर्भ में अकोला और मुतिजापुर तक मुगलों का पीछा करना हो, जुन्नर और अहमदनगर का दौरा ही या अभी-अभी पन्हाला में शहजादा आजम की हार हो, 'हंबीर आयाऽऽ, हंबीर आयाऽ' ऐसा चिल्लाते हुए मुगल सैनिक इधर-उधर भाग जाते थे।

थोड़े ही दिनों में कल्याण की ओर से बुरी खबरें आने लगीं पारसिक किले से होने वाली गोलाबारी को पुर्तगालियों ने कोई महत्त्व नहीं दिया। वे अपने संरक्षण में रसद और गोला-बारूद कल्याण की ओर ले जा रहे थे। इतना ही नहीं एक रात को पुर्तगालियों की गोला बारूद मे भरी पाँच जहाजें पारसिक किले पर आक्रमण करने आ गयीं। रातभर पानी के तट पर आग नाचती रही। सुबह होने से पहले ही पुर्तगालियों ने आधे से अधिक किला जलाकर खाक कर दिया था।

पुर्तगालियों का यह समाचार सुनकर शम्भूराजा बेचैन हो गये। उन्होंने सेनापति से पूछा—"हंबीरराव, यह फिरंगी मुगलों की थूक चाटने के लिए इतना क्यों नाच रहा है?"

"महाराज, आपने भी सुना होगा कि उन दोनों के बीच एक समझौता हुआ है। कोंकण का जितना क्षेत्र मुगल जीतेंगे उसे पुर्तगालियों को देकर, उपकार का बदला चुकाएँगे।"

"हंबीरराव पुर्तगालियों और मुगलों को मिलने से पहले उन्हें तोड़ना आवश्यक है। तो तत्काल निकलिए और उन टोपीधारियों को जलाकर राख कर दीजिए।"

"जैसी आपकी आज्ञा, महाराज।"

हंबीरराव ने अपने पूर्व निश्चित स्थान की ओर न जाकर कल्याण की ओर दौड़ लगाई। हंबीरराव के पहुँचने से पहले रणमस्तखान ने बिठोजी माने नामक मराठा सरदार को बहुत पीड़ित किया था। हंबीरराव के नेतृत्व में बीस हजार सवार और दस हजार की पैदल सेना कल्याण पहुँची। औरंगजेब को पता था कि अकेले रणमस्तखान को मराठे संकट में डाल देंगे इसलिए उसने अपने मौसरे भाई रूहुल्लाखान को रणमस्तखान की सहायता के लिए भेजा।

कल्याण की खाड़ी पर युद्ध शुरू हुआ। पानी के किनारे से होने वाले

आक्रमण का उत्तर मराठे बाहर से दे रहे थे। मराठों ने रणमस्तखान की मस्ती उतारने की शुरुआत की। कल्याण और डोंबिवली परिसर से उठने वाला धुआँ और आग की लपटें पुर्तगाली थाने किले बुर्ज से देखते रह गये। मराठों के आक्रमण से रणमस्तखान कठिनाई में आ गया। कभी मुरबाड़ के जंगल से 'हर हर महादेव' का उद्घोष करते हुए मराठे कल्याण बन्दगाह पर आक्रमण करते थे तो कभी दूर मलंगगढ़ की तलहटी से धुआँ उठने लगता था। कल्याण की खाड़ी में दौड़ते हुए घुड़सवारों की परछाइयाँ पड़ रही थीं।

कल्याण की नटबन्दी गिर गयी। दुर्गाड़ी किला सूना सूना दिखने लगा। रणमस्तखान पीछे हटकर टिटवाला की ओर चला गया। टिटवाला के घाटी में गजानन की साक्षी में युद्ध आरम्भ हुआ। उसी समय डोंबिवली के शम्भूराजा के आने का समाचार हंबीरराव तक पहुँचा। यह समाचार सुनकर मराठों के शरीर का खून उबलने लगा। कल्याण बन्दरगाह परिसर के पीछे उठता हुआ धुआँ देखकर शम्भूराजा में उत्तेजना आ गयी। उन्हें खाने-पीने की भी सुध न रही। सारा दिन निलोपन्त पेशवा, कवि कलश और मानाजी मोरे की तैयारी चलती रही। शाम को ही आसपास के मछुआरों की बस्ती में खबर भेजी गयी। जंगल के निवासी और डोंबिवली के लोग तमतमा कर खड़े हो गये। सुबह होने के पहले ही मुगल और पुर्तगाली खाड़ी में कूद पड़े। अनेक लोग डूबकर मर गये। रातभर चलने वाली मराठों की भुतही लीला टिटवाला के पहाड़ से साफ-साफ दिख रही थी। रात की यह दहशत मुगलों के भीतर बैठ गयी थी।

उस दिन दोपहर को भयंकर युद्ध हुआ। अट्ठावन वर्ष के हंबीरराव के शरीर में हाथी जितनी शक्ति आ गयी। रूहुल्लाखान पर हंबीरराव की सेना तेजी से टूट पड़ी। अकरमखान, इब्राहिम बेग, राजा दुर्गा सिंह, माधोराम जैसे अनेक मुसलमान और राजपूत सरदार लड़ाई मे मारे गये।

डरा हुआ रूहुल्लाखान टिटवाला के रास्ते से भागने लगा। किन्तु उसे इस बात का पता न था कि बीस हजार की सेना लेकर स्वयं शम्भूराजा स्वागत के लिए खड़े हैं। भागती हुई रहुल्ला की सेना के दिखाई पड़ते ही शम्भूराजा ने उन पर आक्रमण किया। संयोग से रणमस्तखान और रहुल्लाखान दोनों ही घाटी में अटक गये। रात में निश्चित की गयी योजना के अनुसार एक ओर से हंबीरराव और दूसरी ओर से शम्भूराजा ने जोरदार आक्रमण किया। इसमें खान की स्थिति कुचली हुई सुपारी जैसी हो गयी।

दोपहर तक खान की सारी सेना नष्ट हो गयी। जिधर भी रास्ता मिला उसी ओर लोग भागने लगे। 'हर हर महादेव ऽ ऽ', 'जय शिवा जी', 'जय सम्भाजी' ऐसा जयघोष करते हुए विजयी सेना डोंबीवेली के अपने शिविर में पहुँची। रास्ते में

हंबीरराव के निकट सम्बन्धी रंगोजी के युद्ध में मारे जाने की बुरी खबर मिली। इसलिए शिविर में वापस आने में उन्हें बिलम्ब हो गया था।

शाम को शम्भूराजा विश्राम कर रहे थे। उसी समय रायप्पा बाहर से दौड़ता हुआ अन्दर आया। भयभीत होकर कहने लगा—"महाराज, हंबीरराव को पालकी में डालकर ले आये हैं। उनका हाथ कट गया।"

"क्या कह रहे हो?"

महाराज झट से बाहर आये और पालकी की ओर बढ़ गये। मशाल की रोशनी में उन्होंने हंबीरराव के चेहरे की ओर देखा। हंबीरराव की काली आँखों को मुस्कराते देखकर उनकी जान में जान आयी। हंबीरराव ने धीमी आवाज में बताया—"महाराज व्यर्थ में चिन्तित न होइए। एक बाण से हाथ का टुकड़ा टूट गया। इसलिए बायाँ हाथ चला गया। इतना ही तो हुआ।"

"हंबीरराव थोड़ा सँभालिए अपने आपको।" शम्भूराजा ने कहा, "दाहिना हाथ तो बचा है न? चिन्ता क्यों करते हो?" हंबीरराव मुस्करा दिये।

शिविर में हंबीरराव की देखभाल हो रही थी। स्वयं शम्भू महाराज उनके घावों पर पट्टी बाँध रहे थे। शम्भूराजा की दिनचर्या और चिन्ता की छाया देखकर हंबीरराव हँसकर बोले, "शम्भू बेटे मेरे सगे भाँजे राजाराम को गद्दी मिले, सोयराबाई जैसी महत्त्वाकांक्षी बहन की इच्छा पूरी हो इसलिए शक्ति होने पर भी मैं कभी आगे नहीं आया। अपना तो रिश्ता ही अलग है।"

शम्भूराजा ने हंबीरराव की ओर प्रश्नार्थक दृष्टि से देखा। तब हंबीरराव ने हँसते हुए कहा, "जो रिश्ता शिवाजी महाराज का इस मिट्टी के साथ था वही हमारा और आपका है।" शम्भूराजा थोड़ी देर वैसे ही बैठे रहे।

हंबीरराव को उन्होंने बर्तन से निकालकर वनस्पति की औषधि दी। उसी समय हरकारों ने सूचित किया कि वर्षा का मौसम समीप आ रहा है इसलिए औरंगजेब ने कल्याण के लिए भेजी हुई सेना को वापस आने का हुक्म दिया है। हंबीरराव के थोड़ा सावधान होने पर शम्भूराजा ने कहा, "हंबीरराव काल देवता हमारे पहाड़ जैसे पिता को लेकर चला गया। उसके बाद दूसरे पहाड़ के रूप में आप मेरे पीछे खड़े रहे। आपके साथ रहने पर मुझे अनेक बार ऐसा लगा कि पिताजी के ही साथ हूँ। पर सँभालिए अपने आप को हंबीरराव...आप ही हमारी बाँहों की शक्ति हैं। आपके हाथ का घाव बढ़ेगा तो हमारा कन्धा टूट जाएगा। कृपा कीजिए, थोड़ा धीरज रखिए।"

तीन

"दिल्ली के बादशाह की शक्ति गैंड़े की थी। उसके सामने मराठों का यह उत्साही राजा बकरी का बच्चा था। एक बार यह गैंड़ा सम्भाजी और उसके महाराष्ट्र को कुचल दिया तो फिर अपना फायदा-ही-फायदा है।" गोवा के पुर्तगाली वाइसराय कांट द आल्होर ने चिढ़कर कहा।

"वह कैसे?" उनके सचिव गोंसाल्विस ने पूछा।

"औरंगजेब जिस उत्साह से आएगा उसी उत्साह से पीछे लौट भी जाएगा फिर हम धीरे से मालवण से थाना तक का क्षेत्र अपने राज्य मे मिला लेंगे। गोवा का महाराष्ट्र बनाएँगे।" कांट साहब अपने ऊँचे राजमहल के भव्य मयखाने में मदिरा का घूँट लेते हुए बोल रहे थे।

बढ़-चढ़कर बोलने वाला वाइसराय शम्भूराजा के उस पत्र की ओर बार बार वितिष्णा के साथ देख रहा था। वह जितना विलासी था, उतना ही खुशदिल हद दर्जे का स्वार्थी और धूर्त भी था। पुर्तगालियों की राजसेवा के सारे अधिकारी और कर्मचारी सरकारी सेवा के साथ-साथ अपना स्वतन्त्र व्यापार भी करते थे। पूर्वी गोलार्ध में कुस्तुनतुनियाँ और टुला के बाद पणजी व्यापार की दृष्टि मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह था।

गोवा का वाइसराय अपनी तुलना पुर्तगाल के राजा से करता था। उसकी अपनी स्वतन्त्र सेना तो थी ही। उसमें उसने अनेक काले अफ्रीकी हबशी भी भर्ती किये थे। पणजी शहर के चारों ओर डेढ़ पोरसा ऊँची भव्य पाषाणी प्राचीर बनाकर वह प्रसन्नता से रह रहा था। दोनों ओर पंख फैलाकर बैठे हुए सशक्त पंछी की तरह दिखाई देने वाला उसका राजमहल, चाँदनी को तरह चमचमाती रेत पर खड़ा था। उसका पिछला हिस्सा समुद्र की ओर झुका हुआ था। चारों ओर हवा के साथ झूमने वाले ऊँचे नारियल के पेड़ थे। बीच में वाइसराय के पारिवारिक जनों के तैरने के लिए नीले पानी से भरा तालाब था। इस परिसर में विशेष मेहमानों के लिए अनेक महल थे। ऐसा लगता था। मानो इस राजप्रासाद के सामने स्वर्ग ही उतर आया है।

कांट साहब का व्यक्तित्व भी बहुत आकर्षक था। मध्यम ऊँचाई, थोड़े मोटे, लम्बी बाँहों वाला फूला हुआ कोट और ढीला पैंट, गालों तक कटी हुई मूँछें, भूरी दाढ़ी और भूरी भूरी आँखें उन आँखों में समीप से झाँकने पर भी यह पता लगाना कठिन था कि कांट साहब के मन में क्या चल रहा है? उनकी टाई हमेशा अच्छी

तरह बँधी रहती थी।

एक-दो दिनों में ही वाइसराय को कुछ दुर्लभ उपलब्धि करनी थी। बीच में ही उसे स्मरण हुआ तो उनके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर फैल गयी। उसी धुन में उसने सचिव से सम्भाजी का पत्र पढ़ने के लिए कहा। सचिव पढ़ने लगा—

"मराठी राज्य का कार्यभार सँभालते मुझे लगभग ढाई वर्ष हो चुके हैं। इसके पहले हमारे दूत रामजी ठाकुर के माध्यम से आपसे पत्र व्यवहार हुआ था। मित्रता की शर्तों और समझौतों के सम्बन्ध में भी बहुत पत्राचार हो चुका है। आपने ही अनेक बार स्मरण दिलाया है कि आप हमारे शीव के पड़ोसी हैं। किन्तु आप कहते कुछ हैं और करते कुछ और हैं। आपने वादा किया था कि आप दिल्ली के बादशाह की कोई सहायता नहीं करेंगे। हमारी लड़ाई के समय आप मुगलों-दोनों से तटस्थ रहेंगे। किन्तु दुर्भाग्य से आपने मैत्री समझौते की शर्त और शर्म दोनों किनारे कर दिया। सूरत की ओर से समुद्री रास्ते से आने वाले गोले बारूद और रसद को अपनी सीमा से ले आने की आपने मुगलों को इजाजत दे दी। ऐसी ही गद्दारी आपने थाना क्षेत्र में भी की थी। ध्यान में रखिए कि इस तरह के धोखे वाली चाल का परिणाम आपको एक न एक दिन अवश्य भोगना पड़ेगा।"

वाइसराय अचानक गम्भीर हो गया। एक ओर सम्भाजी की धमकी और दूसरी ओर औरंगजेब का तकाजा। दोनों ही बातें महँगी पडने वाली थीं। उसने परेशान होकर कहा, "इन दोनों शक्तियों के सामने जाना किसी मदारी के शरीर पर विषैले साँप के खेल जैसा है।"

"लेकिन सर बादशाह ने आग्रह किया है कि आप सम्भाजी के साथ खुली लड़ाई का एलान करें।" सचिव ने स्मरण दिलाया।

"ऐसा करना हमारे लिए महँगा पड़ेगा। यह सम्भा बहुत क्रोधी है, एक दम गर्म दिमाग का। हमारे कुलाबा और थाना के अनेक बन्दरगाहों पर उसने एक साथ आक्रमण किया है। बार बार का अग्निकांड तो चल ही रहा है। बसई की तरफ के दो धर्मगुरुओं को वहाँ के सूबेदार ने बन्दी बना लिया है।"

"लेकिन सर आपने भी तो उसका बदला ले लिया है। मराठों का वकील येसाजी गम्भीरराव पिछले तीन महीनों से हमारी कैद में है।"

आधी रात को येसाजी गम्भीरराव को राजभवन में बुलाया गया। उनकी ओर देखकर वाइसराय गुर्राया—"येसाजी हम दोस्ती का हाथ आगे बढाते हैं तो आपका मालिक दुश्मनी पर उतर रहा है। यह ठीक नहीं है।"

सरकार ताली कभी एक हाथ से बजती है क्या? औरंगजेब का गोला बारूद से भरा हुआ भंडार मुगलों के प्रदेश से हमारे राज्य में आप कैसे घुसने देते हैं? यह बात आपकी मित्रता की नीति के अनुकूल है क्या?"

"येसाजी आपका राजा मतवाला है।" वाइसराय ऊँची आवाज मे पूछने लगे—"आपका राजा अरबों से दोस्ती कैसे रखता है?"

"जिस तरह आप मुगलों से छुपकर दोस्ती रखते हैं। ठीक उसी तरह।"

वाइसराय और उनके सचिव येसाजी के निर्भीक उत्तर सुनकर कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहे। किन्तु येसाजी से रहा नहीं गया। अपने मन की व्यथा को प्रकट करते हुए बोले, "विजरई सरकार, सम्भाजी से मित्रता रखने की बात आपके मन में कभी थी ही नहीं। आप सिर्फ एक मौके की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"कौन से?"

"औरंगजेब की सेना से मराठों का विनाश होने वाले मौके की।"

"नहीं नहीं येसाजी ये आप क्या कर रहे हैं? भला इसमें हम पुर्तगालियों का क्या फायदा?" वाइसराय ने हँसते हुए पूछा।

"बहुत बड़ा फायदा, बेगुर्ला से चौल-पनवेल तक का समुद्री तट, वहाँ का व्यापार, धन दौलत, अनाज लूटने के लिए आप पुर्तगाली जाने कब से बेचैन हैं।"

येसाजी ने थोड़े से शब्दों में पुर्तगालियों का उद्देश्य स्पष्ट कर दिया था। किन्तु उसकी ओर ध्यान न देते हुए वाइसराय ने कहा, "आपको पात है येसाजी, अभी पिछले महीने ही आपके सम्भाजी राजा ने हमारे रेवदांडा के किले पर आक्रमण किया था। तारापुर, दहाणू, थाना के हमारे समुद्री तट पर जहाँ सम्भव हुआ अपना घोड़ा दौड़ाया। हमारा प्रदेश जल रहा है। आपके सम्भाजी ने चौल की सीमा पर छः हजार सिपाही और दो हजार घुड़सवार घुसा दिये हैं। उन्होंने वहाँ पर हमारे पूरे गाँव की नाकाबन्दी कर दी है।"

येसाजी के चेहरे पर प्रसन्नता छा गयी। तीन महीने की कैद में उन्हें अपने राज्य का कोई समाचार नहीं मिला था। बहुत दिनों के बाद अच्छी खबर सुनने को मिली थी। येसाजी को पुनः जेल में ले जाया गया। कांट द आल्होर कुछ देर तक वैसे ही विचार में डूबे रहे। फिर एक साहसी कल्पना उसके मन में आयी। उसने अपने सचिव से कहा, "दिल्ली के शाहंशाह ने आग्रह किया कि कुछ भी करके मराठों के साथ युद्ध की घोषणा कीजिए। किन्तु वह कठिन कार्य लगता है। जैसे किसी आदमी का हाथ पैर तोड़कर उसे विकलांग बना दिया जाय वैसी ही अवस्था सम्भाजी ने जंजीरे के सिद्दी की बना दी है। इसलिए उससे खुला बैर रखना साहस का कार्य लगता है।"

सचिव दुविधा में पड़ गया कि कहे या न कहे। फिर भी साहस बटोरकर उसने कहा, "सर सम्भाजी का प्रदेश अपनी सीमा से लगा हुआ है। डिचोली और कुडाल के बारूदखाने में सम्भाजी अनेक बार आते हैं।

"मुझे मालूम है।"

"बहुत बार वे शिकार के लिए निडर होकर इधर-उधर घूमते हैं। हिन्दुओं के देवस्थानों का दर्शन करते हैं। तब उसके साथ थोड़े ही सिपाही होते हैं।"

"हूँऽऽ.. "

कुछ सोचकर वाइसराय का चेहरा खिल उठा। उसने अपने सचिव को आदेश दिया—"अपनी सेना को सावधान रहने के लिए कहो। वह सम्भा इधर कब आता है? कब जाता है? कहाँ घूमता है? उसकी हर एक गतिविधि पर नजर रखो।"

दिनाँक 12 अगस्त. 1683 का वह दिन।

सुबह होते ही वाइसराय कांट द आल्होर की शाही नाव दीवाड़ी बन्दरगाह तक आ गयी थी। सामने गोवा की पंचगंगा नदी बह रही थी। आज गोकुल अष्टमी का दिन था। दीवाड़ी-बन्दरगाह पार करने के बाद सामने भतगाँव का नाखे गाँव था। नाखे गाँव के लिए गोकुल अष्टमी का दिन आनन्द का दिन होता था। ऐसा सभी का विश्वास था कि गोकुल अष्टमी के दिन नाखे के घाट पर स्नान किया तो बहुत पुण्य लाभ होता है। इसलिए गोवा बारदेश से बेगुर्ला तक के अनके हिन्दू इस पर्व का पुण्य लूटने दौड़े आते थे।

अभी तक सूर्य ठीक से ऊपर नहीं आये थे। अभी भी जल का प्रवाह काला दिखाई पड़ रहा था। दीवाड़ी के तट के ऊपर से वाइसराय अपनी भरी आँखों से नदी के पार देख रहा था। उसकी दाहिनी ओर दीवाड़ी के थानेदार और फौजदार खड़े थे। दिन निकलने के बाद कांट साहब ने फौजदार के हाथ से पीतल की दूरबीन अपने हाथ में ली। उमसे नदी के पार देखा। अब दूसरी ओर का सम्भाजी के अधिकार वाला हरा भरा क्षेत्र स्पष्ट दिखाई देने लगा। कांट साहब के मन में गुदगुदी होने लगी।

औरंगजेब ने वाइसराय को अनेक पत्र भेजे थे। सभी में उसने वही बात दुहराई थी। "सम्भाजी के जितने क्षेत्र पर आप क़ब्ज़ा करेंगे वह सारा क्षेत्र हम पुर्तगालियों को दे देंगे। किन्तु आप इस काफिर के बच्चे को किसी तरह जिन्दा या मुर्दा पकड़ लिया तो गोवा के साथ कोंकण का पूरा क्षेत्र हम आपकी दे देंगे।" किसे मालूम किन्तु वाइसराय को औरंगजेब पर बहुत भरोसा लग रहा था। किसी भी प्रकार से पुर्तगालियों को बेगुर्ला से पनवेल तक के सम्पन्न इलाके पर क़ब्ज़ा करना था। उसके लिए वे पिछले अनेक वर्षो से प्रयत्नशील थे।

दो दिन पहले गुप्तचरों ने गोवा के राजभवन में जब यह खुशखबरी दी तब पचास वर्ष का अनुभवी, अनेक देशों में घूमा हुआ वाइसराय भी खुशी से पागल हो गया। उसे कल्पना नहीं थी कि उसका भाग्य इतना अच्छा होगा? गोकुल अष्टमी के शुभ मुहूर्त में नाखे घाट पर शम्भूराजा आने वाले थे। उन्हें पवित्र स्नान करना था। यह पक्की खबर थी।

एक दिन पहले से ही पंचगंगा के दोनों तटों पर पुर्तगाली सेना की अनेक टुकड़ियाँ आसपास के जंगलों में छुपकर बैठी थीं। प्राय: तीर्थस्थान या देवपूजा के लिए जाते समय शम्भूराजा अपने साथ बहुत कम सेना रखते थे। वह सूचना वाइसराय को भी मिल चुकी थी। फिर भी सात-आठ सौ शस्त्रधारी उनके साथ होंगे। फिर भी साहस के साथ आक्रमण करके शम्भूराजा को बन्दी बनाकर बदला लेना है। ऐसी वाइसराय की इच्छा थी।

अब सुबह हो चुकी थी। पंचगंगा के दूसरे किनारे पर कुछ हिन्दू यात्री पानी में उतरते दिखाई देने लगे थे। दूसरा किनारा मराठों के अधिकार में होने पर भी पर्व के समय मराठे वहाँ नहीं आते। इस बात का वाइसराय के लोगों को अच्छी तरह पता था। यात्रियों की भीड़ बढ़ने से पहले ही आसपास चक्कर लगाएँगे और ठीक जगह से देख सकेंगे, ऐसा सोचकर कांट साहब पानी में उतरे। उनकी शाही नाव देखते-देखते दूसरे किनारे पर जा पहुँची। उसी समय पुर्तगाली थानेदार को एक बात सूझी। वह अपने मालिक से बोला, "विरजई सरकार की इस नाव को कौन नहीं पहचानता?"

अपनी भूल वाइसराय के ध्यान में आ गयी। उसने दूसरे किनारे से अपनी नाव पीछे घुमाई। उसके नाविकों को आदेश दिया कि वे नाव को झाड़ियों में छुपा दें।

इसी समय सामने से मछुवारों की नाव आती हुई दिखाई पड़ी। थानेदार ने नाविक को रोका। वाइसराय साहब को कौन नकार सकता था। कांट और उसके आठ शस्त्रधारी सिपाही नाव में बैठे। सिपाही नाव में छुपकर बैठे। नाव में हरा कुर्ता और बूटेदार हरी कफनी बाँधे एक पीर बाबा भी बैठे थे। उनके साथ चार तरुण शिष्य थे। पीर बाबा ने अपनी आँखों में काजल लगा रखा था। पीर बाबा ने अपनी शंकु के आकार की दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए अपने लम्बे मयूर पंख वाले चँवर को उठाया और प्रत्येक सिपाही की पीठ पर हल्के से मारा। 'अल्लाह अल्लाह' बोलकर फकीर धीरे-धीरे कुछ बड़बड़ा रहा था। मयूर पंख का प्रमाद अर्थात् ईश्वर की कृपा। इसलिए पुर्तगालियों के हिन्दुस्तानी सिपाही भी प्रसन्न हो गये। उन्होंने उस फकीर के पाँव छुये।

"कहाँ जा रहे हो, पीर बाबा?" पुर्तगाली थानेदार ने पूछा।

"आज तो जन्माष्टमी का दिन है।" फकीर हँसकर बोला।

वाइसराय को फकीर के प्रति बड़ा कुतूहल हुआ।

"मुसलमान होकर हिन्दुओं की तरह स्नान करने कैसे आए?" ऐसा कहकर वाइसराय ने फकीर का उपहास किया।

फकीर ने कहा, "हम फकीर लोगों का क्या है? अल्लाह और कृष्ण दोनों हमारे भगवान हैं। और पाक फकीर इस्लाम से अधिक हिन्दुओं में शिष्य मिलते हैं।

नीचे थोड़ी दूरी पर नाव रुकी। नाखे के घाट पर वह फकीर और उसके शिष्य

स्नान के लिए उतरे। नाव से उतरते समय उस फकीर ने वाइसराय का हाथ बड़े प्रेम से अपने हाथ में ले लिया। अपनी उँगली से ताम्बे की अँगूठी निकालकर वाइसराय की उँगली में पहना दी। उस समय सिपाहियों को विजरई साहब बड़े भाग्यवान लगे। उन्होंने बड़े प्यार से वाइसराय से कहा, "हुजूर फकीर से ऐसा प्रसाद खुशकिस्मत को ही मिलता है। उसे कभी खोने न दें। फकीर की अँगूठी से बड़े-बड़े संकट दूर हो जाते हैं।"

नाव थोड़ी दूर जाने के बाद वाइसराय को एकदम झटका लगा। माथे पर हाथ रखकर वे थानेदार से बोले, "ओ गाड ऑलमाइटी, इस फकीर बाबा ने सचमुच मेरी आँखें खोल दीं। अपने सभी सैनिकों को हुक्म दीजिए कि यहाँ स्नान के लिए आने वाले किसी भी हिन्दू वैरागी या गोसावी को जाने न दें। हर एक की तलाशी लो। वह शिवाजी भी अनेक बार गोसावी के वेश में घूमता था।"

दिनभर स्नान करने वाले यात्रियों की भीड़ लगी रही। हिन्दू वैरागियों और गोसावियों को आज स्नान करने की इच्छा नहीं हो रही थी। पुर्तगाली सिपाही उनके पीछे पड़ गये थे। तलाशी निरन्तर चल रही थी। गोकुल अष्टमी का वह दिन बीत गया। पंचगंगा के पाट पर अँधेरा छा गया। वाइसराय के हाथ कुछ भी नहीं लगा वे निराश होकर राजभवन लौट गये।

चार दिन बाद एकबार फिर वाइसराय ने विचार-विमर्श के लिए येसाजी गम्भीर राव को बुलवाया। चर्चा के दौरान येसाजी ने वाइसराय की अँगूठी की ओर देखा। येसाजी का बार-बार अँगूठी की ओर घूरना, वाइसराय से छिपा न रहा। उन्होंने अँगूठी निकालकर येसाजी के हाथ में दे दी।

येसाजी ने उस अँगूठी को ध्यान से देखा और उसमें लिखे अक्षर को देखकर जोर-जोर से हँसने लगे। वाइसराय ने फिर अँगूठी अपने हाथ में लेते हुए येसाजी से पूछा—"इसमें क्या लिखा है?"

"मुझसे अधिक अच्छी तरह आपके सचिव पढ़ सकेंगे। उन्हीं से पूछ लें।" येसाजी ने सुझाया।

लुइस गोंसाल्विस ने अँगूठी पर लिखा हुआ अक्षर जोर से पढ़ा—"सम्भाजी"।

वाइसराय को लगा जैसे उसके कान में किसी ने लोहे की सलाख डाल दी हो। वह पागल की तरह अँगूठी को देखता रहा। उसी समय वह हरा-भरा किनारा, वह जवान फकीर बाबा, उसकी काजल से अँजी आँखें कांट साहब के सामने घूमने लगीं।

चार

"क्यूँऽ क्यूँऽऽ फतेह नहीं हो रहा है रामशेज?" ऐसा कहते हुए बादशाह बेचैन हो रहा था। औरंगाबाद में बादशाह को ठीक से नींद नहीं आती थी। रायगढ़ की राजधानी से शम्भूराजा का घोड़ा सह्याद्रि की तलहटी में चारों ओर चौकड़ी भर रहा था। वे पूरी तरह सावधान थे। उनका ध्यान नासिक की ओर रामशेज पर भी बना हुआ था। रामशेज नासिक से सात मील की दूरी पर उत्तर की ओर था। प्रभुरामचन्द्र वनवास के समय सीता माता के साथ गोदावरी के तट पर आये थे। इसी स्थान पर उन्होंने कुछ दिन निवास किया था। यहीं उनका शयनस्थल था। इसीलिए इस स्थान को रामशेज कहने लगे।

किसी जमाने में औरंगजेब के पिता शाहजहाँ ने दक्खिन पर आक्रमण किया था। उस समय रामशेज एक शुभशकुन सिद्ध हुआ था। यहीं से उसने दक्षिण दिग्विजय आरम्भ की थी। औरंगजेब के लिए रामशेज एक भावनात्मक विषय बन गया था। इस किले पर चाँद सितारों वाला झंडा फहराने के बाद त्र्यम्बक, अहिवंत, मार्कंडा और साल्हेर के किलों पर क़ब्ज़ा करके शहजादा अकबर के लिए दिल्ली का रास्ता बन्द कर दिया जाय और फिर पूरी शक्ति से कोंकण में जाकर उस काफिर के बच्चे को पकड़ा जाय। ऐसी औरंगजेब की कल्पना थी। किन्तु महीनों बीत गये, बड़ी मात्रा में गोला बारूद व्यर्थ बर्बाद हुआ, रामशेज के आसपास हजारों लाशें गिर गयीं। फिर भी रामशेज का किला हाथ नहीं आ रहा था। औरंगजेब की बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

रामशेज का किला मराठों और मुगलों के हठ, उनके द्वेष और उनके अस्तित्व की निशानी बन गया था। देखने में वह अन्य किलों की भाँति सुन्दर और भव्यदिव्य नहीं था। किन्तु वह बेलाग, मुस्तंडा और कठोर चट्टानों की छाती वाला था। उसकी पाषाणी तटबन्दी को गिराने और किले पर क़ब्ज़ा करने के लिए शहाबुद्दीन तीस-पैंतीस हजार की फौज लेकर किले पर घेरा डाले हुए था। किला प्राकृतिक रूप से खुला हुआ था। अगल-बगल अन्य पहाड़ियों या घाटियों का साथ न था। किले पर केवल आठ-नौ सौ मराठों की सेना। इतना अवश्य था कि किले के ये सिपाही संकल्पशील और फौलादी छाती वाले थे।

रामशेज का बूढ़ा किलेदार सूर्याजी जेधे मावल का हट्टा-कट्टा साहसी, निर्भीक और बहादुर मराठा था। उसे रोलारमामा के अखाड़े में तालीम मिली थी।

उन्हें शम्भूराजा के हाथ का पत्र मिला था—"सूर्याजी जधे मामा, आप तो पिताजी के अखाड़े के पहलवान हैं। आप जैसों को हम क्या उपदेश देंगे? लेकिन शिवाजी महाराज के उस कथन को कभी न भूलें। उन्होंने कहा था—'हमारा एक एक किला औरंगजेब से पाँच पाँच वर्ष तक लड़ेगा। ऐसे हमारे तीन सौ साठ किले है। औरंगजेब को पूरा महाराष्ट्र जीतने के लिए कितने जन्म लेने पड़ेंगे?' जेधे मामा मैं इतना ही कहूँगा कि आपका किला महाराष्ट्र का प्रवेशद्वार है। दिल्ली के उस बूढ़े दूल्हे को प्रवेशद्वार पर ही रोक दो। मराठों के प्रदेश मे राक्षस विवाह करने का बादशाह का स्वप्न मिट्टी में मिला दो।"

बस इसी पत्र से सूर्याजी का जीवन ही बदल गया। उनकी बलवान हड्डियाँ एक अभेद्य बुर्ज बन गयी थीं। बहुमूल्य खजाने से भरे घड़े के चारों ओर जिस प्रकार कालसर्प घूमता रहता है, उसी प्रकार सूर्याजी किले के चारों ओर घूमते रहते थे। उन्होंने दिन रात एक कर दिया था। कब सोते थे इसका किसी को भी पता न था। थोड़ी सी रसद के सहारे ही उन्होंने लड़ाई चालू रखी।

लड़ाई शुरू करके दोपहर की नमाज की चादर किले पर बिछाने का स्वप्न देखने वाले शहाबुद्दीन को सूर्याजी ने अच्छा सबक सिखाया था। शहाबुद्दीन ने आरम्भ में बहुत जोर का आक्रमण किया। तटबन्दी के ऊपर का हिस्सा गिरा दिया। रात को मुगल गोलंदाज हँस रहे थे। सुबह होते सिंहद्वार को गिरा देंगे। यही सोचकर अपने डेरे में चले गये थे।

दूसरी सुबह मुगल सेना तटबन्दी को देखती रह गयी। तटबन्दी का गिरा हुआ हिस्सा रातभर में फिर से जोड़ दिया गया था। हाथियों के सूड़ से मनुष्यों के हाथों से सभी आबाल वृद्ध रात भर जागकर अभूर्तपूर्व पराक्रम प्रदर्शित किये थे। मुगलों को इस घटना पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। उन्हें विश्वास हो गया था कि मराठों के साथ भूत-प्रेत रहते हैं।

पिछले कुछ महीनों से वहाँ युद्ध चल रहा था। तोपों के गोले-बारूद और घोड़ों की दौड़ से पूरा प्रदेश उद्ध्वस्त हो गया था। आसपास की बस्ती से लोग गाँव छोड़कर चले गये थे। शम्भूराजा को पता था किले पर सात-आठ सौ लोग हैं। वे बार बार हंबीरराव मोहिते को रामशेज पर नजर रखने के लिए कहते थे। मोहिते को भी इस बात का पता था। इसलिए कभी कभी रात में सात आठ सौ मराठा सैनिक जंगलों से भूत की तरह निकलते थे और तीस पैंतीस हजार मुगल सैनिकों से भिड़ जाते थे। दिन में सूर्याजी रामशेज की ओर आँख नहीं उठाने देते थे और रात को हंबीरराव सोने नहीं देते थे। इसी तरह कई महीनों तक चलता रहा।

मुगलों का दो सौ मन बारूद समाप्त हो गया। 1682 के मई महीने में शरीफखान नाम का मुगल सरदार रामशेज परिसर में पहुँच रहा था। उसके साथ

रसद से लदे पाँच सौ हाथी एक हजार बैल थे। लेकिन दिन में ही गड़बडी हो गयी। सीटियों से पूरा जंगल गूँजने लगा। बगल की घाटी में छुपे सात हजार मराठा सैनिक उस रसद पर टूट पड़े। दो घंटे तक घमासान लड़ाई हुई। जाहिर खान, फैजुल्लाखान जैसे अनेक मुगल अधिकारी मारे गये।

अपनी रसद का मराठों द्वारा लूटा जाना सुनकर रामशेज के आसपास घेरा डाले मुगल सिपाही मदद के लिए दौड़े। घमासान लड़ाई हुई। लगभग छ: सौ मराठा सैनिक मारे गये। दो हजार के आसपास जख्मी हो गये। परन्तु उन्होंने रसद का बहुत नुकसान किया था। मुगलों की विशाल सेना के सामने मराठा सेना पीछे हट गयी। इस अचानक हमले से मुगलों का कलेजा फट गया था। किन्तु इस छोटी-सी जीत से शरीफखान बहुत आनंदित हो गया। उससे अपने पराक्रम की बड़ाई का पत्र औरंगजेब के पास भेजा।

असदखान को यह अच्छी तरह मालूम था कि रामशेज की विजय का समाचार सुनने के लिए बादशाह कितना आतुर है? उस पत्र सचाई को पक्का किये बिना ही वह दौड़ता हुआ गया। "बधाई हो मेरे मालिक बधाई हो। हमारी विजय हो गयी—रामशेज पर हमारी बड़ी जीत हुई है।"

"विजय? कहाँ? किले पर या किले के नीचे?"

असदखान गड़बड़ा गया। खिन्न स्वर में बोला, "जी हाँ, हुजूर! किले के नीचे तलहटी में।"

बादशाह की भूरी आँखें इस तरह नाचीं, मानो कह रही हों—'आप कितने मूर्ख हो?' उस समय वजीर को पसीना छूट गया।

बादशाह ने विषाद के स्वर में कहा—

"अपने बेवकूफ सेनाधिकारी मरगठ्ठों के तरीके क्यों नहीं सीखते? मराठे किस तरह घूम-घूमकर आक्रमण करते हैं?"

महीनों बीत गये किन्तु रामशेज हाथ नहीं आया। इसलिए बादशाह बहुत बेचैन था। शहाबुद्दीनखान भी हैरान था। किले पर थोड़ी सी ही सेना थी लेकिन अपना घोर प्रतिकार रोक नहीं रही थी। शहाबुद्दीन ने नयी रसद आने के लिए सभी रास्ते बन्द कर दिये थे। किले पर तोपें नही थीं फिर भी सूर्याजी पीछे हटने को तैयार नहीं था। किले में भैसों-बैलों का चमड़ा इकट्ठा करके उन्होंने लकड़ी और चमड़े की तोपें बना ली थीं। इन तोपों का धमाका साधारण तोपों से दस गुना अधिक था।

शहाबुद्दीन भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। किला जीतने के लिए नये-नये उपाय खोजने लगा। किले का मोर्चा तोड़ने के लिए जमीन से गोले दागना कारगर नहीं हो रहा था। इससे विजय मिलने वाली नहीं थी। यह अनुभव करके शहाबुद्दीन ने सभी लुहारों और बढ़इयों को एकत्र किया। बड़े बड़े वृक्षों को काटकर उसने एक

बड़ा बुर्ज तैयार किया। उसके ऊपर एक साथ पाँच सौ सैनिक खड़े होकर सहजता से किले पर आक्रमण करने लगे। वह लकड़ी की ऊँची मीनार जमीन से आकाश को छूने वाले पहाड़-सी दिखाई पड़ती थी। शहाबुद्दीन ने वहाँ से बहुत गोलाबारी की। किन्तु रामशेज अजेय बना रहा।

रामशेज की विजय मुगलों और मराठों दोनों के लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गयी थी। प्रतिदिन औरंगाबाद और रायगढ़ से गुप्तचर आते थे और रामशेज का ताजा समाचार लेकर जाते थे। रोज नयी-नयी योजनाएँ बनाई जाती थीं फिर भी एक मामूली-सा किला हाथ नहीं आ रहा था। इससे बादशाह बहुत त्रस्त हो गया था।

रामशेज की आग बुझने का नाम नहीं ले रही थी। इसी बीच बादशाह को सूचना मिली कि सम्भाजी अपनी सेना की सहायता के लिए एक बड़ी फौज रामशेज भेज रहे है। शीघ्र ही मराठों की सेना वहाँ पहुँचेगी। बादशाह ने बहादुरगढ़ से अपने दूधभाई खानजहाँन बहादुरखान को तुरन्त बुलवाया। उसे आगाह किया—"भाईजान पहले आपकी लापरवाही के कारण ही उस काफिर के बच्चे की बानरी सेना ने बुरहानपुर को बेचिरागी कर दिया। सम्भाजी सही सलामत निकल गया। अब रामशेज को तो हाथ से न निकलने दें।"

हजरत ऐसा नहीं है कि जो भूल एक बार हो गयी वही बार बार दुहराई जाएगी।"

"मत बताओ ज्यादा कुछ, आपकी लापरवाही बार-बार हमारा रास्ता रोकती है।"

बहादुरखान ने लज्जा से गर्दन नीचे झुका ली। थोड़ी देर बाद उसने कहा, "लेकिन हजरत, शहाबुद्दीन तो यकीन दिला रहा है कि वह रामशेज जीते बिना वापस नहीं आएगा।"

"फिजूल यकीन दिलाने में उसका क्या जाता है?—एक छोटे से किले से हमारी जो बेइज्जती हो रही है, उसका क्या? अपनी फौज का मनोबल गिरना नहीं चाहिए। चाहें तो आप दोनों मिलकर कुछ दिन कोशिश करके देखो इसके लिए हमें कोई एतराज नहीं होगा।"

रायगढ़ में सम्भाजी राजा को मालूम पड़ा कि बहादुर खान अपना सारा सामान बहादुरगढ़ पर छोड़कर नासिक की ओर जा रहा है। सम्भाजी ने शहापुर के पास माहुली किले में अपनी सेना रखी थी। रूपाजी भोसले और मामाजी मोरे की आठ हजार सेना रामशेज की ओर चल पड़ी। बादशाह ने बहादुरखान को पन्द्रह हजार की सेना दी थी। बहादुरखान किले की तलहटी में पहले पहुँचा। मुगलों की सेना इकट्ठा हो गयी। उन्हें नष्ट करने के लिए रूपाजी और मानाजी की सेना आ रही है। ऐसी सूचना पाते ही मुगलों की सेना पीछे मुड़ गयी। गणेश गाँव के पास दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। मराठों की बहुत हानि हुई और रूपाजी तथा मानाजी पीछे हट

गये। किन्तु दोनों की सेनाएँ पूरी सावधानी के साथ आसपास के क्षेत्रों में घूमने लगी। शहाबुद्दीन किला जीते बिना जाने को बिलकुल तैयार नहीं था। बूढ़े बहादुरखान के साथ उसका विचार-विमर्श चल रहा था।

उस शाम को शहाबुद्दीन और बहादुरखान अपने डेरे पर खड़े थे। सन्ध्याकाल की तेज हवा में रामशेज के ऊपर भगवा झंडा फहरा रहा था। ये दोनों उसकी ओर पूँछ कुचले साँप की तरह क्रोध से देख रहे थे। थके हुए बूढ़े आदमी की तरह सूरज डूब रहा था। अँधेरा घिरता आ रहा था। दिन में निश्चित की गयी योजना के अनुसार मुगलों के हजारों सैनिक जमा हो गये। उन सभी को दोनों ने संकेत किया—"धीरे-धीरे किले के सिंहद्वार की ओर चलना है नीचे जमीन से और दूसरी ओर लकड़ी की बनी ऊँची मीनार के ऊपर से रात भर गोले दागते रहना है।"

"कब तक?"

"पूरी रात।" शहाबुद्दीन ने कहा।

रणभेरी बजी। मशालें जल गयीं। अँधेरे का परदा फाड़कर 'अल्ला हो अकबर' का घोष आसमान से टकराने लगा। दस-बारह हजार की मुगल सेना आगे सरक रही थी। उसमें ईरानी, तूरानी, रूहेले, दक्खिनी आदि अनेक जातियों के लोग थे। रामशेज के मराठा सैनिक यह तमाशा ऊपर से देख रहे थे। मराठों को विश्वास था कि कुछ भी हो पर रामशेज की तटबन्दी को कुछ होने वाला नहीं है। उसी समय किले की तलहटी में दूसरा एक अलग नाटक चल रहा था। नारे लगाते हुए आगे बढ़ने वाले सैनिकों में शहाबुद्दीन और बहादुर खान नहीं थे। अँधेरे का फायदा उठाते हुए दोनों के घोड़े तेजी से निकले। उनके दाहिने-बायें कुछ साथी भी थे। अँधेरे में पीछे की ओर हजार-डेढ़ हजार मुगल सैनिक जमा थे। शहाबुद्दीन घोड़े से उतर कर धीरे से बोला, "दोस्तो! किसी को भी मशाल नहीं जालानी है। चिलम पीने के लिए भी आग नहीं जलानी है।"

"जी हुजूर।" उत्तर आया।

"इसी अँधेरे में साँप की तरह किले पर सर-सर चढ़ने वाले साहसी जवान हमें चाहिए।"

"जिसे मौत चाहिए वही आगे आएगा।" बहादुरखान ने कहा।

देखते-देखते मुगल सेना के सात आठ सौ जवान आगे आये। सिंहद्वार की ओर से तोपों की आवाज आ रही थी और यहाँ अँधेरे में नयी चाल चली जा रही थी।

ऊपर से मराठे नीचे का खेल देख रहे थे। लोगों की भीड़ के पीछे बूढ़ा सूर्याजी जेधे खड़ा था। वह घोड़े पर सवार था। सामने का तमाशा देखकर उसने तम्बाकू की चुटकी मुँह में डाली। उसके साले सुभान ने सूर्याजी से कहा—

"जीजा जी, ये बन्दर आज इतना अधिक क्यों नाच रहे हैं?"

सूर्याजी ने मुँह की तम्बाकू एक ओर थूक दी और धीरे-से कहा, "सुभान, तुमने अच्छी याद दिलाई। शेलार मामा कुश्ती खेल रहे थे तब उन्होंने एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कही थी।"

"कौन-सी?"

"उन्होंने कहा था कि जिस सुबह मुर्गा अधिक जोर से बोले तो समझना चाहिए कि कुछ-न-कुछ गड़बड़ है।"

तमाशा देखने वालों के बीच से सूर्याजी पीछे हटे। पीछे के लोगों को धीरे से संकेत किया। देखते-ही-देखते दो सौ लोग चुपचाप अँधेरे में निकल गये।

सामने जो शोर हो रहा था उसकी अपेक्षा पीछे की ओर पूर्ण शान्ति थी। पीछे की ओर से कुछ मुगल सैनिक चुपचाप किले पर चढ़ रहे थे। वे पेड़ों से रस्सियाँ बाँधकर अपने साथियों की सहायता कर रहे थे। रस्सियों के सहारे मुगल होशियार बन्दरों की तरह ऊपर सरक रहे थे। झाड़ियों को पकड़कर, कहीं-कहीं रस्सियाँ बाँधकर उनसे लटकते हुए, अपने पीछे आने वालों को सहारा देते हुए धीरे-धीरे ऊपर सरक रहे थे।

अन्तत: तीन चार जन एक साथ ऊपर आ गये। उनके सिर तट से ऊपर दिखे नहीं कि मराठों की गुलेलों के रबड़ तन गये। मुगलों के माथे पर सटासट बड़े-बड़े पत्थर टकराये।

'अल्लाऽऽ', 'अरे भागोऽऽ' जैसी करुण चीत्कारों से वन प्रदेश की आँखें बाहर आ गयीं। ऊपर चढ़ने वाले धड़ाधड़ नीचे गिरने लगे। 'सम्भाजी महाराज की जयऽऽ।' 'शिवाजी महाराज की जयऽऽ'।

किले के ऊपर आयी आफत का अन्दाजा शहाबुद्दीन को हो गया। तब तक मराठे आगे आ चुके थे। जो लोग दिखाई दिये उन्हें ऊपर के ऊपर ही सपासप काटकर रख दिया। जो बचे वे पेड़ों और रस्सियों का सहारा लेकर नीचे उतरने लगे। उसी समय किले के बुर्ज से बडे-बड़े पत्थर और तेल-भीगी जलती मशालें नीचे की ओर फेंके जाने लगे। कुछ लोग पत्थरों के तो कुछ आग के शिकार बने। चार सौ सैनिकों में से केवल बीस पचीस मुगल सैनिक ही बच पाये। शेष सभी को इस काली रात ने निगल लिया।

रातभर जागते रहने से शहाबुद्दीन थक गया था। वह दिनभर अपने शिविर में आराम करता रहा। किन्तु पराजय के कारण उसका सिर फटा जा रहा था। तलहटी में दिन भर सामान बाँधने का कार्य होता रहा। कनातों की डोरियाँ लपेटी जा रही थीं। बीच बीच में शहाबुद्दीन की दुखती आँखें किले की ओर क्रोध से देख लेती थीं। सामने का वह पत्थर, वह दरवाजा, वह बुर्ज देखकर वह संतृप्त होता था।

इस अशुभ जगल में रुकने की उसकी बिलकुल इच्छा नहीं थी। आज रात को उसे नासिक के पास कहीं रुकना था। शहाबुद्दीन ने घोड़े पर सवार होते-होते अपने

द्वारा बनवाई गयी लकड़ी की मीनार की ओर देखा तो उसे बहुत क्रोध आया। सामान बाँधने का काम उसने बन्द करवा दिया। पाँच सौ सैनिकों को साथ लेकर लकड़ी की मीनार की ओर दौड़ पड़ा। उस मीनार को बनाने के लिए हजारों लोगों ने तीन महीने कार्य किया था। किन्तु अब शहाबुद्दीन को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। उसने अपने सैनिकों को घास इकट्ठा करने के लिए कहा। मीनार के चारों ओर घास बिछा दी गयी।

शहाबुद्दीन क्रोध से लाल हो गया था। अपनी आँखों का आँसू पोंछते हुए उसने घास में आग लगा दी। घास जलने लगी, उसके साथ मीनार भी जलने लगी। बहादुरखान दौड़ता हुआ वहाँ आया। शहाबुद्दीन का हाथ पकड़कर पूछने लगा—"आप पागल तो नहीं हो गये हैं?"

"नहीं खान साहब, मैं अपने अशुभ हाथ की कोई निशानी यहाँ नहीं छोड़ना है। आप नये सिरे से सब कुछ शुरू करो, अल्लाह और बादशाह को जीत हासिल कराओ।"

रात में वह महाकाय मीनार धाड़-धाड़ जल रही थी। उसका प्रकाश चारों ओर फैल रहा था। उस जंगल से शहाबुद्दीन का घोड़ा वापस जा रहा था। आँखों से निकलकर दाढ़ी पर गिरने वाले आँसुओं को शहाबुद्दीन बड़े कष्ट से पोंछ रहा था।

पाँच

पूरे महाराष्ट्र में मराठी सेना और मुगल सेना में जगह-जगह पर लड़ाई हो रही थी। दोनों ने जगह-जगह पर अपने झंडे गाड़े और कहीं-कहीं उखाड़े थे। किन्तु रामशेज के चारों ओर मुगल सेना का घेरा हट नहीं रहा था। मराठे मधुमक्खियों की तरह उन्हें डसते रहते थे। किसी को भी किले के ऊपर सरकने नहीं दे रहे थे।

हमेशा की तरह बहादुरखान अत्यन्त हताश होकर किले की ओर देख रहा था। उसके साईस से उसकी यह दशा देखी न गयी। उसने दबी आवाज में कहा—

"अजी हुजूर, छोटा मुँह बड़ी बात कर रहा हूँ। व्यर्थ में समय क्यों जाया कर रहें हैं? किसी मान्त्रिक से सलाह क्यों नहीं लेते?"

"चुप बैठ, बेवकूफ!" खान साहब ने डाँटते हुए कहा।

"लेकिन हुजूर, मरगट्ठों ने भूत वश में किया है इसीलिए मैंने कहा...।"

"हर बीमारी का इलाज रहता है तो भूत-प्रेत का क्यों नहीं?"

"महँगा इलाज होगा, हुजूर।"

"खर्चे की फिक्र न कर बोल।"

उसी दिन साईस एक मान्त्रिक को खान के सामने लेकर आया।

मान्त्रिक ने आत्मविश्वास से कहा, "खान साहब मात्र सौ तोले सोने का एक साँप मुझे बनवाने दीजिए और फिर मेरे पीछे-पीछे किले के दरवाजे तक आइए। देखिये कि दरवाजा किस तरह अपने आप खुल जाता है?"

नासिक के एक सोनार को यह काम सौंपा गया। स्वर्ण सर्प तैयार होने लगा। बादशाह रोज तगादा कर रहा था। "रामशेज जीतने के लिए क्या कोशिश जारी है?" इसका समाचार बहादुरखान ने आलमगीर के पास भेज दिया था, उसमें सोने के साँप का भी जिक्र था और भी तमाम छोटी-छोटी बातें लिख दी थीं।

वह मान्त्रिक उस दिन बड़े उत्साह में था। हाथ में वह सौ तोले का सर्पराज नचा रहा था। अब दरवाजा अपने आप खुल जाएगा, यह सोचकर सारे लोग मान्त्रिक और साईस के पीछे चल रहे थे। साथ में सवार राऊत, शौकीन लोग बहादुर खान भी चले। दरवाजे के समीप पहुँचते ही किले के ऊपर से पत्थर गिरने लगे। एक पत्थर साईस के सीने में लगा। वह वहीं पर चक्कर खाकर गिर गया। दूसरा पत्थर मान्त्रिक के सर में लगा। स्वर्णसर्प उसके हाथ से छूट गया। 'या अल्लाहऽऽ' करते हुए, अपना खून से सना सिर एक हाथ से पकड़े वह आते ही जा रहे थे। रामशेज की तटबन्दी ठठाकर हँसने लगी।

बादशाह ने थोड़े दिनों बाद अपने भाई शाहजहान बहादुर खान को आड़े हाथों लिया—"आपकी उम्र जैसी-जैसी बढ़ रही है अक्ल छोटी होती जा रही है। याद है आपको बहादुरगढ़ की घटना? एक छोटी-सी फौज के साथ शिवाजी ने आपको चकमा दिया था और आप किले का दरवाजा खुला छोड़कर बेवकूफ की तरह अपनी फौज लेकर दौड़ पड़े थे। करोड़ों का खजाना लूटकर शिवाजी ने आपको मूर्ख बनाया था। इस सम्भा ने तो और भी कमाल किया। अपने ही जानवरों और लोगों की लाशें लेकर उल्टी दिशा में फेंक दीं। आप लोगों को उल्टियाँ आने लगीं और इस गड़बड़ी में अपनी रसद और बारूद किले पर पहुँचा दिया। खैर, शिवाजी का यह बच्चा भी अपने बाप की तरह हमारा बाप निकला। यह कैसी है हमारी तकदीर?"

छह

औरंगाबाद का महल बादशाह को कैदखाने से भी बदतर लग रहा था। अँधेरी रात में नगर द्वार पर आपातकाल की घोषणा करने वाले नगाड़े के बजने से जिस तरह कँपकँपी छूटती है, वैसी ही दशा बादशाह को डेढ़ वर्ष बीत चुका था फिर भी उसके हाथ क्या लगा? दो-तीन अच्छे सरदारों को बदलने पर भी रामशेज जैसा छोटा किला मुगलों के हाथ नहीं आया। चालीस-पचास हजार की सेना लेकर दो बड़े सरदार दो-दो बार कोंकण में भेजने के बावजूद सफलता नहीं मिली। शहजादा अकबर मिला नहीं और वह जहन्नुमी काफिर का बच्चा सम्भा पकड़ में नहीं आया।

जंजीरे के कासिम और खैरियत खान के तकदीर किला तो बचा लिया किन्तु वे भी सम्भाजी से अत्यन्त भयभीत थे। बादशाह ने उन्हें बारूद और रसद से भरी जहाजें सूरत के रास्ते से भेजी थीं लेकिन बादशाह के हजार कहने पर भी सिद्दी बन्धु मराठा प्रदेश पर आक्रमण करने के लिए तैयार न थे।

बादशाह के अनेक बार उकसाने पर भी गोवा का पुर्तगाली वाइसराय अपनी ओर सम्भाजी पर हथियार उठाने का साहस नहीं कर रहा था। सम्भाजी के डर से अँग्रेज अपनी कोठियों के बाहर निकलने के लिए तैयार नहीं थे। स्वयं सम्भाजी त्रिचनापल्ली में अड्डा जमाकर बैठे थे। तब मैसूर के चिक्कदेवराय ने सहायता के लिए बुलाया था। लेकिन अब यह भी अपने स्वार्थ के लिए चुप बैठ गया था।

हाल ही में बादशाह का छोटा शहजादा पराजित होकर वापस आया था। हंबीरराव ने उसे नीरा नदी के पार खदेड़ दिया था। इन घटनाओं ने बादशाह को विचलित कर दिया था। वह चाँदनी रात उसे काटने दौड़ रही थी। उसने असद खान से बड़े पीड़ा भरे स्वर में पूछा—

"वजीरे आजम, पचीस- छब्बीस वर्ष का एक लड़का हमें हैरान करके रख दे रहा है। इसका मतलब क्या है? कौन-सी चीज नहीं है हमारे पास? खजाना?"

"वह तो बहुत है।"

"जंगी फौज? जंग बहादुर सिपाही?"

"जरूरत से कुछ ज्यादा हजरत, अपनी फौज का विशाल सागर किसी ने दूर से भी देखा तो उसे कँपकँपी छूट जाती है।"

"असल बात कुछ और है वजीरे आजम।" बादशाह ने बड़े दुख से कहा।

"यहाँ के पहाड़ों में जाने की कल्पना और सम्भाजी के नाम से अपने फौजी डरते हैं।"

बादशाह अपनी मसनद से झटके से उठा और फिर बड़ी बेचैनी से बैठ गया। बेचैनी से बड़बड़ाया—"हमारी उम्र पैंसठ साल की और वह काफिर का बच्चा पचीस-छब्बीस का होगा। एक ओर हिन्दुस्तान का शाहंशाह और दूसरी ओर गाँव के जमींदार का लौंडा। वह हमारा कुछ कर ही नहीं सकता। लेकिन हम उसे रोक

नहीं पा रहे हैं। यही हमारी पीड़ा है। असदखान...''

बादशाह के मन की दशा बहुत बिगड़ गयी थी। उसने वजीर से कहा,

''चाचा जान उस कमबख्त दारा की छाया आज भी मेरा पीछा छोड़ने को तैयार नहीं।''

''यह रोहिला दिलेर खान दारा के ही पक्ष में था।''

''हजरत, आप जरा धैर्य से काम लें। यों ही हर एक पर शक करने से सल्तनत कैसे चलेगी? आपने जब दिल्ली पर आक्रमण किया था, उसी समय दिलेरखान दारा का साथ छोड़कर आपसे आकर मिला था। उसके बाद उस बेचारे ने जहाँपनाह की खिदमत करने के अतिरिक्त और किया ही क्या?''

''लेकिन यह न भूलिए वजीरे आजम, इसी बेवकूफ दिलेरखान के हाथ मे वह काफिर का बच्चा निकल गया था। उसी समय अगर उसने सम्भा को न निकलने दिया होता तो आज ये दुर्दिन न देखने पड़ते।''

''हुजूर! होती है कभी कभी आदमी से ऐसी भूल। कभी कभी थोड़ी लापरवाही हो जाती है।''

बादशाह से आँख न मिलाते हुए, फिर भी स्पष्ट स्वर में वजीर ने कहा, ''हुजूर को अगर याद हो? आगरा के कैदखाने में शिवाजी और सम्भाजी दोनों सड़ रहे थे। क्या उन्हें किसी ने जानबूझकर रिहा किया था? ऐसा कोई करेगा भी क्या?''

ठंडी साँस छोड़ते हुए बादशाह बहुत देर तक वहीं बैठा रहा। चार लाख जानवर लेकर उसने कितनी उम्मीद से तापी नदी को पार किया था। लेकिन महाराष्ट्र के काँटों भरे पठारों ने उसे परेशान करके रख दिया। बुरहानपुर की सीमा पार करके जब उसका हाथी दल खानदेश की ओर बढ़ रहा था, तब उसने अपने सिर की रत्नजटित टोपी दो-तीन बार हाथ में लेकर ध्यान से देखी थी। एक साथ चार शिरपेच अपनी टोपी में जोड़ने की उसकी उत्कट अभिलाषा थी। सम्भाजी के हाथों में बेड़ियाँ डालना, अपने नादान शहजादे को पकड़ना, अन्त में बीजापुर और गोलकुंडा के शियापन्थी मुसलमानों के राज्य को मिट्टी में मिलाना।

बादशाह का स्वप्न था कि महाराष्ट्र के पठार पर पैर रखते ही छ: महीने में पूरा प्रदेश कब्जे में कर लेंगे। जिस प्रकार हिन्दू राजा अश्वमेध यज्ञ करते थे, उसी प्रकार उत्सव मनायेंगे। लेकिन डेढ़ साल में उसके हाथ कुछ भी नहीं लगा था। अपने मुकुट में सम्भाजी नाम का मयूर पंख लगाना तो दूर रहा उल्टे एक विषैला काँटा उसके कलेजे में चुभ गया था, उसे बार बार डंस रहा था, उसके हृदय को खून से तरबतर कर रहा था। उन सारी बातों का स्मरण करते हुए बादशाह त्रस्त स्वर में गुर्राया—''रामशेज, त्र्यम्बक, साल्हेर, सतारा पुणे, पुरन्दर कितनी-कितनी जगहों पर सेनायें भेजें और एक ही समय में कितनी बार आक्रमण करते रहें?''

"सच है, हजरत, हर एक पेड़ का तना पकड़कर जिस प्रकार भूत बैठते हैं उसी तरह किलों की बुर्जों पर मरगठ्ठों की फौजें बैठी थीं।"

बादशाह की बातें सुनकर वजीर को चुप रहना ही ठीक लगा।

औरंगजेब ने आगे कहा, "शाहजादा अकबर बेवकूफ था फिर भी इन्सान भला था।"

औरंगजेब की इस टिप्पणी से वजीर की भौहें तन गयीं। तब कड़ुआ करेला खाने पर जैसा चेहरा बनता है वैसा चेहरा बनाते हुए औरंगजेब ने नफरत भरे शब्दों में कहा, "वजीर हमने जो सुना वह सच है?"

"क्या जहाँपनाह?"

चिरागों की रोशनी में बादशाह की मुद्रा बहुत क्रूर लग रही थी। वह दाँत पीसते हुए बोला—

"हमारा बड़ा शहजादा मुअज्जम भी मन से सम्भा को चाहता है। इतना ही नहीं वह उन कमबख्त मरहठ्ठों के साथ मिल षड्यन्त्र कर रहा है। क्या यह सच है?"

वजीर ने चुप रहना ही उचित समझा। बादशाह के शक्की स्वभाव का पता उसे पहले से था ही। औरंगजेब बहुत व्यवहार कुशल था। दिल्ली के तख्त पर अधिकार करते समय उसने शुजा, मुराद और दारा—इन सभी भाइयों के ठंडे दिमाग से मार डाला था। शुजा का साथ देने के कारण उसने अपने बड़े शहजादे मुहम्मद सुल्तान को जीवन भर के लिए बन्दीखाने में डाल दिया था। अपने जन्मदाता शाहजहाँ की दशा उसने नर्क से भी बदतर बना दी थी। अकबर की सहायता करने के लिए अपनी शहजादी जेबुन्निसा को भी जन्म भर के लिए बन्दीखाने में डाल दिया था। उसने जैसा बर्ताव अपने पिता और भाइयों के साथ किया था वैसा ही बर्ताव उसके बेटे भी उसके साथ करेंगे। औरंगजेब के मन में ऐसा दृढ़ विश्वास था। इसीलिए उसने अपने शहजादों और उनकी बेगमों पर स्थायी रूप से गुप्तचर लगा रखे थे। औरंगजेब के गुप्तचर किसी शहजादे के यहाँ धोबी बनकर किसी के यहाँ बावर्ची बनकर जीवन भर चाकरी करते रहे। उनमें से प्रत्येक के अन्त:पुर में क्या चलता है? इसकी विस्तृत खबर बादशाह को नित्य मिलती रहती थी।

किन्तु अपने शक्की स्वभाव के कारण बादशाह स्वयं बहुत परेशान होता था। कभी-कभी आधी रात को बेगम उदयपुरी के सामने अपना दुख प्रकट करता था— "बेगम यह सल्तनत, यह दौलत, यह शान शौकत, जैसी सारी बातों को आग लगा दूँ? हीरे जवाहरात से खजाना भरा पड़ा है। पर बादशाह के लिए पल भर की नींद हराम हो गयी है। बेगम साहिबा, हमसे अधिक तो मस्जिद की सीढ़ियों पर सोने वाले नंगे फकीर और वहाँ के मैदान में घूमने वाले आलसी कुत्ते भी भाग्यवान हैं।"

औरंगजेब ने वजीर को अधिक सोचने का अवसर नहीं दिया। उसने ठंडी आवाज में कहा—

"वजीरे-आजम हमारे उस छोटे शहजादे आजम पर भी कड़ी नजर रखिये।"

"क्या किब्लाए आलम?"

औरंगजेब के संशय का भूत दूसरे शहजादे को ग्रसेगा। इसका धक्का वजीर को लगा।

"हाँ, उस पर कड़ी निगाह रखो।"

"निगाह? क्या बात कर रहे हैं जहॉपनाह?"

"हमारे हुक्म की सिर्फ तामील करो? उस बेवकूफ दिलेरखान और शहजादे आजम को तुरन्त वापस बुलाओ।"

"मोर्चे से?"

"जी हाँ, बिलकुल।"

वजीर विवश हो गया। उसने दोनों को वापस आने का आदेश भेज दिया। यह समाचार सुनते ही शहजादे की बेगम और बच्चे भयभीत हो गये। उदयपुरी बेगम और शहजादी जीनतउन्निसा घबरा गयी।

बादशाह के पीछे असदखान उन दोनों से मिला। उसने चिन्तित स्वर में कहा "बेगम साहिबा! बेटी जीनत! सफलता मिलने से आदमी खुश होता है।, असफलता से दुख होता है। इतनी प्रचंड सेना और तीस पैंतीस बड़े बड़े सरदार युद्ध में उतरे फिर भी बादशाह को जीत नहीं मिल पायी। उसी दर्द मे वे पागलो जैसा बर्ताव करने लगे हैं। संशय के भूत ने तो उनके दिमाग पर कब्जा कर लिया है। इस भयानक पीड़ा से उन्हें मुक्त करने के लिए महल से बाहर निकलने दीजिए। उन्हें किसी यात्रा पर ले जाइये। उनके दिमाग को थोड़ा विश्राम दीजिए।"

बादशाह का मन किस तरह बहलाया जाये? यह उदयपुरी बेगम की समझ में नहीं आ रहा था। अन्त में उसे एक अच्छा विषय मिल गया। उन्होंने एक सुबह की नमाज के बाद बादशाह से प्रार्थना की—"मेरे आका अपनी जिन्दगी में इस नाचीज ने जहाँपनाह से किसी बात के लिए प्रार्थना नहीं की। अब एक ही विनती है! आप हमारे साथ एक दिन के लिए बेरूल चलें।"

बादशाह ने हँसते हुए बेगम की ओर देखा। उन्होंने कहा, "वह बेरूल काफिरों का भूतखाना है। यह मालूम है न बेगम साहिबा को।"

"जी अब्बाजान! पर वहाँ पर एक चमत्कार है। वहाँ की एक गुफा में एक नीलरंग का पंछी रहता है। उसे नीलकंठ कहते हैं। उस पंछी को आप एक बार

आँख भरकर देख लीजिए।"

बादशाह ने उपहास की मुद्रा में बेगम की ओर देखा। वहाँ पर असदखान, उसका बेटा जुल्फिकारखान और बादशाह की बहू शेहरबानू बेगम उपस्थित थे। उन सभी को बेगम और शहजादी साहिबा के विचित्र अनुरोध से आश्चर्य हो रहा था। बादशाह ने हँसते हुए कहा, "बेगम साहिबा सीने पर तलवार की नोंक रखने पर भी मेरे सामने कोई काफिर उस देवता का नाम लेने का साहस नहीं करेगा। इस तरह के उस नर्क में आप मुझे ले जाना चाहती हैं?"

"गुस्ताखी माफ़ हजरत! किसी फालतू निरर्थक बात के स्वामी से हम प्रार्थना करें ही कैसे?"

"फिर ऐसा वहाँ क्या है?"

"वही तो असली चमत्कार है हजरत! जो व्यक्ति उस नीलकंठ को एक टक निहारता है, उसे धीरे-धीरे उस गुफा में अपने भविष्य का आईना दिखाई देने लगता है। अगले जन्म में हमें क्या होना है? जानवर कि पंछी इसका वहाँ प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता है।"

बादशाह का मन स्थिर नहीं था। किन्तु बेगम उदयपुरी की बताई कहानी में उसे बहुत मजा आ रहा था। अपनी लाडली शहजादी जीनत का मन भी वह तोड़ नहीं पा रहा था। दूसरे दिन शाही दल बेरूल की ओर निकला। बहू-बेगम, पोते, बच्चे सभी साथ लेकर बादशाह बेरूल के लिए निकल पड़ा। उन्हें ले जाने के लिए सजे-सजाए सत्तर हाथी, कुछ हजार घोड़े और ऊँट साथ जा रहे थे।

शाम को लगभग चार बजे शाही दल बेरूल गुफा के पास पहुँचा। ऊँचा कैलाश मन्दिर देखकर बादशाह की भौंहें तन गयीं। वह जुल्फिकारखान से बोला, "बेटेऽऽ सम्भा के साथ इन मरहठ्ठों की हड्डी नरम करते ही हम इस कैलाश मन्दिर की जगह पर ही एक खूबसूरत मस्जिद खड़ी करेंगे। इस बात को याद रखना।"

आखिर सभी लोग गुफा के पास पहुँचे। नीले रंग के उस पंछी की ओर औरंगजेब आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। कुछ समय तक उसे कुछ साफ दिखाई नहीं पड़ा। थोड़ी देर में उसे कुछ अस्पष्ट-सा दिखाई पड़ा। वह डर गया। नहीं, उसकी मुखमुद्रा विकृत हो गयी। उसने अपने माथे का पसीना पोंछा। फिर बारीक नजर से देखकर वह चिल्लाया, "पागल कहीं के, चलो, भागो यहाँ से दूर, काफिरों के इस कबरिस्ता से।"

बादशाह ने अपना एक छोटा-सा चबूतरा बेरूल गुफा के सामने बनाने का हुक्म दिया। वहाँ के देवता, गन्धर्ववाले यक्ष-किन्नर, पत्थरों में उकेरे गये पशु-पक्षी इन सभी पर बादशाह को बहुत क्रोध आ रहा था। उसने कमाठियों की टोली को

तुरन्त बुलाकर सामने की गुफाओं को नष्ट करने का आदेश दिया। कमाठियों ने अपने हथियार उठा लिए। देवताओं की छोटी-बड़ी मूर्तियों, पत्थरों में उकेरे गये पशु-पंछियों के चित्रों का विध्वंस आरम्भ हो गया। कैलाश मन्दिर के परिसर में पत्थरों पर हाथियों के अनेक चित्र उकेरे गये थे। अनेक मूर्तियाँ भी थीं। बेलदारों के मजबूत घनों से हाथियों के सिर उड़ाये गये। चारों ओर धूल ही धूल भर गयी।

बादशाह जानता था कि उदयपुरी बेगम के अनुरोध पर वह इस नरक में आ पहुँचा था। इसीलिए रुष्ट बादशाह की सान्त्वना के लिए चार मीठी बातें करने की बेगम उदयपुरी का साहस नहीं हो रहा था। फिर भी उन्होंने बादशाह से कहा, "हजरत, आप इसके लिए इतना कष्ट न उठाएँ।"

"यह भूतों से भरा हुआ काफिरों का पहाड़ है। इसे तोड़कर नष्ट करो। नहीं टूटता है तो जलाकर खाक कर दो।"

"अब्बाजान! आप इतना कष्ट क्यों कर रहे हैं? अपने जुल्फिकार यह सब काम कर लेंगे। आपके शरीर में पहले से ही थोड़ा बुखार है। आप यहाँ से निकलें।" शहजादी ने सुझाव दिया।

उदयपुरी बेगम मीठा बोलकर बादशाह को उस पहाड़ से दूर ले गयीं। उस रात बादशाह का पड़ाव बेरूल गाँव के पास पड़ा। अभेद्य चट्टानों से बनी मूर्तियों को तोड़ पाना आसान नहीं था। कारीगरों की अनेक पीढ़ियों ने खून पसीना एक करके इस वैभववान वस्तु को खड़ा किया था। मुगलों के बेलदारों और कमाठी बहुत देर तक प्रहार करते हुए थक गये थे। उनके हाथों से खून बहने लगा। कुछ छोटी-मोटी मूर्तियाँ विकृत अवश्य हुईं। किन्तु भव्य मेहराबें, सभामंडप, मन्दिर आदि अभी भी वैसे ही खड़े थे।

जुल्फिकार ने निश्चय किया कि इस पागल बादशाह को समझाया जाय। उसने अपने सैनिकों से घास की गट्ठियाँ और गोबर गाड़ियों में भरकर लाने को कहा। मन्दिर में घास और गोबर भरकर उसमें आग लगा दी गयी। रात में आग की लपटें आसमान छूने लगीं। अनेक मूर्तियाँ प्रहारों से बच गयीं थी। किन्तु दीवारों पर बने अमर चित्रों और उनके रंगों को आग से असीम हानि हो रही थी। बेरूल की गुफा से निकलने वाली आग की लपटों को बादशाह अपने डेरे से देख रहा था। बादशाह का मन अब प्रसन्न हो गया। दो दिन बाद उदयपुरी बेगम ने देखा कि बादशाह का मन प्रसन्न है और बेटी जीनत भी घर में नहीं है तो उसने धीमी आवाज में बादशाह से पूछा—"हजरत, उस दिन बेरूल में गुफा के अन्दर आपने ऐसा क्या देख लिया जो आपको इतना अधिक क्रोध आ गया?"

"सुअरऽ" "सुअरऽऽ" ठंडी आवाज में औरंगजेब ने ही बेगम से सवाल पूछना आरम्भ कर दिया—"क्या मैं इतना बड़ा पापी हूँ कि अगले जन्म में सुअर बन जाऊँ?" बादशाह के उस प्रश्न का बेगम ने कोई उत्तर नहीं दिया।

सात

औरंगजेब के यहाँ गहरा सन्नाटा था। बादशाह ने कासिमखान, रणमस्तखान, पन्नी, खानजहानखान, वक्शी बरामदखान, मुहम्मद अमीन, असदखान, जुल्फिकारखान जैसे अपने खास सरदारों को विचार-विमर्श के लिए बुलाया था। किन्तु सभी लोग अन्दर से बहुत घबराये हुए थे। बादशाह की ऐसी अस्थिर और संशयी मन:स्थिति पहले कभी नहीं देखी गयी थी।

दिलेरखान जैसे जिन्दगी भर के बादशाह के सेवक की हालत बुरी हो गयी थी। उसे लड़ाई के मोर्चे से वापस बुला लिया गया था। उसके आगे-पीछे बादशाह की पाँच हजार की सेना लगी थी। उसके हाथ में अभी तक जंजीरें नहीं पड़ी थीं किन्तु वह दिन अब अधिक दूर नहीं था। उसे पूरी तरह अपमानित करके उसे खींचकर वापस लाया जा रहा था। वापसी की यात्रा में पड़ाव की जगहों पर कड़ा पहरा बिठाया जाता है।

बादशाह का चेहरा खिन्न था। वह हँसने की कोशिश कर रहा था, लेकिन हँसी आ नहीं रही थी। वह उदास होकर बोला, "खैर, असदखान डेढ़ दो साल से सम्भा के इस मनहूस मुल्क में इतनी बड़ी सेना लेकर इधर उधर धूम रहे हैं। भेड़ बकरियाँ लेकर घूमने वाले गड़ेरियों की तरह हम भी यहाँ वहाँ भटक रहे हैं। पर बताइए क्या लगा हमारे हाथ? सह्याद्रि की पहाड़ी में उस काफिर के बच्चे सम्भा का हुड़दंग हम एक बार समझ सकते हैं। किन्तु यहाँ अहमदनगर और बराह तक वह हंबीरराव रात-दिन दौड़ रहा है। दस-पन्द्रह हजार की फौज लेकर हमारे प्रदेश को बर्बाद कर रहा है।"

"हजरत, वह हंबीरराव पूरा शैतान है। उसके घोड़ों के पैरों में आसमानी बिजली के घुँघुरू बँधे हैं। शत्रु ही नहीं हमारे सैनिक भी खुलेआम यही बात कहते हैं।" मुसदरखान बीच में ही उठकर बोला।

"बैठ जाओ मूर्ख! यह तो उस काफिर की बदनामी नहीं तारीफ है, बेवकूफ।" बादशाह गुर्राया।

आज बादशाह का क्रोध देखने लायक हो गया था। असदखान भी डर गया था। उसके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। औरंगजेब ने जैसे ही अपनी निगाह घुमाई सभी सिर झुकाकर खड़े हो गये। बादशाह ने कहा, "आखिर मैं भी इनसान हूँ। आप दक्खन में एक दिन में बहुत बड़ी विजय प्राप्त कर लें ऐसा मैं नहीं करता। मेरा सवाल बस इतना है—जुल्फिकारखान?"

"जी मेरे आका।" जुल्फिकारखान ने आदर से घुटने टेक दिये।

"सिर्फ इतना ही बता दो कि डेढ़-दो वर्षों में उस सम्भा के चेहरे पर एक भी खरोंच आयी है? क्यूँऽ?"

बादशाह के उस प्रश्न से जुल्फिकारखान की ही नहीं, सभी की गर्दन शर्म से नीचे झुक गयी। सभी की आवाज बन्द हो गयी। बादशाह धीरे से उस बैठक से उठा। उसने बड़े रूखे शब्दों में इतना ही कहा, "मैंने अपने लिए फैसला कर लिया है। मैं दिल्ली वापस जा रहा हूँ। आक्रमण की जिम्मेदारी सँभालने के लिए शहजादा मुअज्जम, हमारे बहादुरखान कोकल्ताश साहब, ये वजीरे आजम असदखान और आप सभी हर तरह से काबिल हैं।"

औरंगजेब अपने ऊँचे आसन से धीरे-धीरे उतरकर नीचे आया। उसका यह क्रोध हमेशा की तरह नहीं था। आजकल उसकी मनोदशा में अस्थिरता, अपयश, आदि उत्पन्न निराशा का समावेश था। बादशाह का निर्णय अकाट्य था। इसलिए सभी डरे हुए सरदार अपने में सबसे बुजुर्ग और जिम्मेदार असदखान की ओर देखने लगे।

बातचीत के दौरान 'तोबाऽऽ, तोबाऽऽ' ' या अल्लाह' जैसे पीड़ाबोधक उद्‌गार निकलने लगे। असदखान से भी रहा नहीं गया। वह वैसे ही आगे की ओर दौड़ा और औरंगजेब के पैरों पर गिर गया। उसने बादशाह का दुर्बल पीला हाथ अपने हाथ की ओर खींचा। वह जोर-जोर से रोते हुए बोला, "आप रिश्ते नाते में मेरे लड़के लगते हो। लेकिन मेरे आका आपकी शक्ति समुद्र जैसी है। हमें छोड़कर कहाँ जा रहे हो, किब्लाए आलम?"

"नहीं चाचाजान मुझे मत रोको...।"

"जहाँपनाह, आप हमारे इस्लाम के रखवाले हैं। हमारे सरताज हैं, जिन्दा पीर हैं। आप हैं इसलिए यह सेना है, यह सल्तनत है। आप वापस चले जा रहे हैं। यह समाचार यदि उस सम्भा को मिला तो आप की अनुपस्थिति में वह हमारी सेना को कुत्ते की मौत मारेगा। हममें से किसी का काफिला दिल्ली-आगरा तक नहीं पहुँचेगा।"

असदखान के बाद जुल्फिकारखान, फिर बरामदखान ऐसे एक-एक करके सभी बादशाह के सामने आ गये। वे घुटनों पर बैठकर, आसमान की ओर हाथ फैलाकर बादशाह को मानने लगे।

औरंगजेब को विश्वास हुआ कि सरदारों की प्रार्थनाएँ अक्षरश: सत्य हैं। वह मन में प्रसन्न हुआ। फिर मन्दगति से चलता हुआ अपने ऊँचे आसन पर जाकर बैठ गया। फिर भी उसके सीने की आग शान्त नहीं हुई।

सभी की ओर निगाह घुमाते हुए बादशाह ने धीमे किन्तु दृढ़ स्वर में कहा,

"आप सभी इस्लाम के रखवाले हो। इस कमबख्त दक्षिण देश में हम बदनसीबी से अटके पड़े हैं। गोलकुंडा की कुतुबशाही, बीजापुर की आदिलशाही की शिया मुसलमानों की हुकूमतें काफिरों से कम खतरनाक नहीं हैं। और दोस्तोऽऽ यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि यह सम्भा नाम का एक मामूली जमींदार का नटखट बेटा सालों-साल आपके शाहंशाह को नचाता रहा है? सताता रहा है? तो बोलो—दिल से इस्लामी कौम का काम करोगे?"

"जी हुजूरऽऽ! जी आकाऽऽ!" इस प्रस्ताव को चारों ओर से प्रतिसाद मिल रहा था।

"अपने शाहंशाह की खातिर अपने इस्लाम की खातिर हम मर मिटेंगे।"

"बिलकुल हजरत हम जान की कुर्बानी देंगे।"

वहाँ के सभी लोगों पर आलमगीर ने जादू कर दिया था। वहाँ का हर एक सदस्य जरूरत पड़ने पर खाई में कूदने को तैयार था। किन्तु बादशाह को अभी समाधान नहीं मिल रहा था। उसने अपने सिर का मुकुट हाथ में लिया। उस जरीदार टोप की कला अपूर्व थी। उसमें बहुत महँगे हीरे-जवाहरात जड़े थे। बादशाह के उस किरीट की प्रभा इतनी चमकदार थी कि हीरों-जवाहरातों से निकलने वाला प्रकाश उसके चेहरे को भी मंडित कर रहा था। औरंगजेब ने पलभर में उस किरीट को हाथ से ऊपर उठाया और दूसरे ही क्षण जोर से बाईं ओर फेंक दिया। वह किरीट दीवार से टकराकर नीचे गिर गया। उसमें जड़े रत्न और मोती टूटकर बिखर गये।

अपने ऊँचे आसन पर औरंगजेब सिर उठाये खड़ा था। उसकी आँखों में झलकता निश्चय, उसकी बँधी मुट्ठियाँ, उसकी फूली हुई छाती, उसके चेहरे की तनी हुई नसें उस पैंसट वर्ष के शाहंशाह का कुछ और ही रूप प्रकट कर रही थीं। उसके माथे पर लटकते सुनहरे-सफेद बाल और आँखें किसी को भी आकर्षित कर सकते थे। नीचे बिखरे हुए किरीट की ओर उसने संकेत किया। सभी की निगाहें उस ओर मुड़ गयीं। उस समय जैसे किसी महावृक्ष की डाल टूटकर नीचे गिरी हो ऐसे बादशाह गरजा—

"इस्लाम के रखवालेऽ दोस्तोऽऽ, यह आलगीर कसम खाता है कि जब तक हम उस काफिर के बच्चे सम्भा को दक्षिण की इस सीमा से पार नहीं कर देते, उसके टुकड़े टुकड़े करके उसे जिन्दा फाड़ नहीं देते, तब तक यह किरीट यह राजमुकुट मैं अपने सिर पर नहीं पहनूँगा।"

गोवा पर आक्रमण

एक

जैसे कोई व्यक्ति बीमारी के बाद स्वस्थ होकर पुनः अपने नियमित कार्य पर लग जाये, उसी प्रकार असफलताओं और निराशाओं से बाहर निकलकर औरंगजेब ने भी अपने कार्य को सँभाल लिया। जीवन के पैंसठवें साल में भी औरंगजेब ने नयी आशाओं के साथ फिर से अपने कार्य को आरम्भ किया। उसकी इस अभिनव तत्परता ने सरदारों, शहजादों, पोतों आदि सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। असदखान अपने स्तर पर लोगों को बड़े गर्व से बता रहा था—"आलमगीर के लिए काम काम बस काम, यही एक नित्य की धुन है।"

किसी बड़ी मुहिम में संलग्न होने पर भी आलमगीर अपनी विस्तृत सल्तनत के हर कोने की खबर रखता था। इन दिनों फौजदार बलोचखान का लड़का अबूमुहम्मद बादशाह के महल में आते जाते दिखाई पड़ता था। तेईस वर्ष के इस लड़के के बादशाह के साथ बढ़ते सम्बन्ध से लोग आश्चर्यचकित थे।

उस दिन बादशाह ने जानबूझकर अबूमुहम्मद को अपनी बैठक में बुलाया। यह व्यक्तिगत बैठक थी, जिसमें विशिष्ट सरदार और अधिकारी उपस्थित थे। किसी के मुँह पर उसकी प्रशंसा करना औरंगजेब के स्वभाव में नहीं था। किन्तु उस दिन अबूमुहम्मद की की गयी खुली प्रशंसा से सभी बुजुर्ग चकित थे। अपने शहजादे मुअज्जम की ओर देखते हुए बादशाह प्रसन्न होकर बोला, "शहजादे, इस छोकरे की कच्ची उम्र को मत देखो, इसकी करामात को देखो।" शाहंशाह के संकेत करते ही, अबूमुहम्मद ने काँख में दबाए नक्शे की तहें खोलीं और उसे बैठक के सामने फैला दिया। सम्पूर्ण सह्याद्रि पर्वत का स्पष्ट नक्शा देखकर सभी की आँखें चमक उठीं।

बादशाह प्रसन्नता से पूछने लगा, "बेटे अबू! इन पर्वत शृंखलाओं के बारे में

इन सब को बताओ।''

''जहाँपनाह! यह सह्याद्रि पर्वत, बेर, बबूल जैसे अनेक काँटेदार वृक्षों के जंगल से भरा है। इसमें बड़ी खतरनाक पहाड़ियाँ और गहरी घाटियाँ हैं।''

''कुल मिलाकर कितने रास्ते और कितने घाट हैं?'' बादशाह ने प्रश्न किया, ''जहाँपनाह, सह्याद्रि के इन कठिन घाटों को पार करने के लिए कुल मिलाकर छोटे-बड़े तीन सौ साठ रास्ते हैं जिनमें पैंसठ रास्ते ऐसे हैं जिनसे हाथी, ऊँट आदि लेकर जाया जा सकता है।''

''और बचे हुए दूसरे जंगली रास्ते?''

''वे बहुत छोटे और बड़े खतरनाक हैं। वहाँ से गुजरते हुए तो शेर भी डरते हैं।''

मुहम्मद पर सभी को आश्चर्य हो रहा था। मुहम्मद के सम्बन्ध में सभी के मन में उठ रहा एक प्रश्न बादशाह के मुँह से बाहर आया, ''बेटे इतनी छोटी-छोटी बातों की जानकारी तुमने कैसे हासिल की?''

''हजरत, पहाड़ों और नदियों के साथ घूमना मेरा बचपन का शौक है। यहाँ की पर्वत शृंखलाओं को देखने के उद्देश्य से ही छः वर्ष पहले अपने क्षेत्र से मैं यहाँ आया। अनेक साधुओं, फकीरों, बैरागियों की संगति में मैंने यहाँ की पहाड़ियों के चप्पे-चप्पे को छान मारा। अपने इसी अनुभव से मैंने यह नक्शा बनाया जिससे भविष्य में मेरे जैसे यात्रियों के काम आये।''

औरंगजेब ने अपने पास के कच्चे नक्शे बाहर निकाले। उनका सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण किया। अबूमुहम्मद के नक्शे के कुछ स्थलों पर उसने उँगली रखी। औरंगजेब के इस सूक्ष्म अध्ययन से अबूमुहम्मद भी चकित हुआ। बादशाह ने अबूमुहम्मद को मुल्यवान वस्त्र और हीरे जवाहरात देकर सम्मानित किया। बादशाह ने उसी समय वजीर से कहा, ''इसी दिशा से अपना पूरा जोर लगाओ। सह्याद्रि की इन ऊँची पहाड़ियों और गुफाओं में की जानकारी प्राप्त करो। इस इलाके के रहने वाले लोगों को ढूँढ़ो। इन पहाड़ियों पर झटपट चढ़ जाने वाले लोगों को अपनी फौज में भर्ती करो, उन्हें मुँह माँगी तनख्वाह दो।''

सम्भाजी की चुनौतियों का करारा जवाब देने और अन्ततः बेड़ियों में जकड़ने का आलमगीर ने निश्चय कर दिया था। नित्य की भाँति रत्नजड़ित मुकुट आज उसके सर पर नहीं था। मुकुटहीन उसका नंगा सिर भौंड़ा और कलाहीन लग रहा था ऐसा लगता था कि अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का उसने पक्का निश्चय कर लिया है। औरंगजेब ने अपने सरदारों से कहा, ''जुल्फिकार, वह संभा अपनी फौज के साथ गोवा की ओर बढ़ रहा है। फिरंगियों को पराजित करने का उसका पक्का इरादा है। ऐसी खबर मुझे मिली है।''

"उस बन्दे को गलतफहमी तो नहीं हो गयी है कि फिरंगियों की अव्वल दर्जे की तोपों का वह मुकाबला कर लेगा।" असदखान ने हँसकर कहा।

वजीर की इस प्रतिक्रिया पर सभी सरदार हँस पड़े, किन्तु बादशाह कुछ अधिक गम्भीर हो गया। ऐसा लगा कि उसे शत्रु की हिम्मत और शक्ति का ठीक-ठीक अन्दाजा था। इसीलिए उसने अपनी अनेक रातें चिन्ता में जागकर बितायीं। उसने एक जोखिम भरी योजना बनाई। इस योजना की रूपरेखा अपने सहयोगियों के सामने स्पष्ट करते हुए बादशाह ने कहा, "सम्भा ने फिरंगियों से सम्बन्ध बिगाड़ लिया है। उसका एक पाँव फिरंगियों के जबड़े में फँस गया है। ऐसे में हम दूसरी ओर हमला करेंगे। हमारा एक गाजी चालीस-पचास हजार की फौज लेकर निकलेगा। कोल्हापुर, बेलगाँव की ओर से रामदरिया घाट पार करेगा और दक्षिण कोंकण पर हमला बोल देगा।"

"लेकिन हुजूर?" असदखान अपना आधा ही मुँह खोल पाया था।

"हाँ बोलो वजीरे?"

"इतनी बड़ी फौज के खाने पीने की व्यवस्था कैसे होगी? उन्हें रसद कौन पहुँचाएगा?"

"वाह असदखान, आपकी यह चिन्ता शाहंशाह के वजीर के लिए उचित ही है। मगर इसका भी इन्तजाम हमने कर लिया है। हमारा सूरत का सूबेदार रसद से भरी जहाजों को गुजरात के किनारे से भेजेगा। ये जहाजें अरब सागर से मुम्बई, जंजीरा, राजापुर होते हुए पणजी की ओर बढ़ेंगी।"

"लेकिन जहाँपनाह, समुद्रतट पर शिवाजी और सम्भाजी द्वारा बनाए गये अनेक जलदुर्ग और नौसेना की चौकियाँ हैं।"

"उनकी नौसेना का मुकाबला करने की शक्ति हमारी नौसेना में निश्चित रूप से है। इसके अतिरिक्त हमारी मदद करने के सिवा फिरंगियों के पास भी कोई दूसरा उपाय नहीं है।"

बादशाह की इस योजना को सुनकर अनुभवी और बुजुर्ग सरदारों ने अपनी गर्दनें हिलाईं। किन्तु जुल्फिकार लम्बी साँसें छोड़ने लगा। बादशाह ने उसकी सशंक आँखों को देखा।

"बोलो जुल्फिकार तुम्हारा शक क्या है?"

"जहाँपनाह आपका मनोबल बुलन्द है। पर रामदरिया गोवा की ओर से हमारी इतनी बड़ी फौज घुसेगी तो सम्भा वहाँ से भागकर सीधा अपने रायगढ़ के पहाड़ी गर्भगृह में जा घुसेगा, उसका क्या करना?"

बादशाह मुस्कराया फिर नक्शे पर उँगली दिखाते हुए कहने लगा, "उसी समय दूसरा गाजी दूसरी फौज लेकर कल्याण और पनवेल से होता हुआ रायगढ़

की ओर बढ़ेगा। दोनों फौजें यहाँ पहाड़ और निजामपुर के पास मिलेंगी। दोनों फौजें अपनी पूरी ताकत से काफिरों की इस पत्थर की राजधानी को बारूद लगाकर सिंहासन के साथ नीचे पटक देंगी।''

बादशाह के मायाजाल के उस विलक्षण फैलाव को देखकर सभी सरदार अवाक् थे। सभी बादशाह की प्रशंसा करने लगे। तब बादशाह ने कहा, ''इतने से खुश न हो जाइए। अपनी-अपनी जिम्मेदारी पर ध्यान दीजिए। ये दोनों फौजें वक्त पर एक साथ मिल पायीं तभी यह योजना कामयाब होगी। नहीं तो कुछ भी हाथ नहीं आएगा।''

सरदार और अधिकारी के दृढ़ चेहरे की ओर गम्भीरता से सभी देखने लगे। उसी समय बादशाह ने कहा, ''एक बार यदि दोनों फौजें एक जगह पर मिल गयीं तो मैं एक दूसरी चाल चलूँगा। ये देखो कोंकण में नीचे उतरने वाले घाट। यह बोरघाट, यह कावल घाट, यह वरंदघाट दूसरी ओर का यह अंबाघाट। यदि वक्त पर दोनों फौजें इकट्टा हो गयीं तो मैं इन घाटों से दस-दस हजार फौजों की टुकड़ियाँ और भी नीचे उतारूँगा। ये फौजें पूरे कोंकण को अंगारे पर पड़ी मछली की तरह भून डालेंगी। किन्तु यदि समय का तालमेल नहीं बैठा तो हमारी फौजें सह्याद्रि की इन घाटियों में डूब जाएँगी। पूछो क्यों?''

''क्यों जहाँपनाह?

''हमारी ताकत के जरा भी कमज़ोर होने का अन्दाजा होते ही इन वनों और जंगलों के लोग, लाड़ियों और कुल्हाड़ियों के साथ बाहर निकल पड़ेंगे। बीच रास्ते में फँसाकर हमारे लोगों को पीटेंगे। औरतें और बच्चे भी आगे पीछे नहीं देखेंगे। क्योंकि यह सारा मुल्क शिवा और सम्भा के साथ दिलोजान से मुहब्बत करता है।''

बादशाह को आगे के सभी फैसले शीघ्र लेने थे। दक्षिण कोंकण के सैन्यदल का नेतृत्व किसे सौंपना है? इस सम्बन्ध में बादशाह ने सभी से परामर्श किया। सभी ने बड़े शहजादे मुअज्जम का नाम सुझाया। मुअज्जम ऊँचा, बलिष्ठ, मर्दाना आकर्षण और लुभावनी आवाज वाला व्यक्ति था। सभी लोग उसे एक कुशल, बुद्धिमान, वफादार आदर्श शहजादा के रूप में देखते थे। वह अभी पैंतीस वर्ष का था।

मुअज्जम के नाम पर सर्वसम्मति से बादशाह एक क्षण के लिए चकित हुआ। मुअज्जम के साथ और किस-किस को भेजा जाय? इसका निर्णय भी उसी बैठक में लिया गया। इखलासखान, लतीफशाह दखनी, तोपखाने का दरोगा आतिश खान, इस प्रकार बादशाह ने एक-एक नाम लिया। इसके बाद सभी सरदार अभिवादन करते हुए एक-एक करके खड़े हो गये। इसके बाद औरंगजेब ने नेक मराठा नागोजी

माने म्हसवड़कर का नाम लिया। नाम लेते ही छः फुट ऊँचा, हट्टा-कट्टा नागोजी उठकर खड़ा हो गया।

नागोजी की ओर संकेत करते हुए औरंगजेब ने गर्व से कहा, "बेटे मुअज्जम, एक बात का ध्यान हमेशा रखना। महाराष्ट्र में कुछ ऐसे नेक, कुलीन और प्रामाणिक मराठा वंश हैं जो चाहे आदिलशाही हो या निजामशाही हो अथवा हम मुगल, ये लोग वफादार रहे हैं। इन्होने शिवा-सम्भा या विद्रोही जमींदारों को कभी अपना राजा माना ही नहीं। इन्हीं में से एक है नागोजी। भविष्य में भी यह ईमानदार आदमी बादशाह की नमकहलाली करेगा।"

बादशाह ने प्रश्न किया कि कल्याण और पनवेल का सेनानायक कौन नियुक्त किया जाए? इस जिम्मेदारी को उठाने के लिए जुल्फिकार स्वयं उठकर खड़ा हो गया। परन्तु उसके घमंड के घोड़े को लगाम लगाते हुए बादशाह ने कहा, "जुल्फिकार बेटा, तुम उम्र में कम और रिश्ते में मेरे मौसेरे भाई हो। मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहता। पर मुझे वहाँ केवल साहसी योद्धा नहीं बल्कि कोई कूटनीतिज्ञ चाहिए। उस ओर दुश्मनों का सिर और मन्दिरों का कलश गिराने वाला इस्लाम का कोई वफादार बन्दा मुझे चाहिए। इसलिए मैं पूरी तरह सोच विचारकर शहाबुद्दीन उर्फ गाजिउद्दीन फिरोजजंग को वहाँ के लिए चुन रहा हूँ।"

उत्तरी कमान का सूत्र सौंपने के लिए शहाबुद्दीन को तुरन्त सन्देशा भेजा गया। जुन्नर में ताल ठोंक कर जमे हुए शहाबुद्दीन को बादशाह ने सूचित किया। आप तुरन्त नाणे घाट से नीचे उतरें। वहाँ से उत्तरी कोंकण को जलाते हुए आगे बढ़ें। मुअज्जम और आप दोनों को सम्भा को फँसाकर पकड़ना है बहुत सावधानी से काम लें। सम्भा बहती हुई हवा है। इसके बाद उसका हाथ में आना मुश्किल है।"

रामदरा और गोवा की ओर से मराठों को नेस्तनाबूद करने के लिए मुअज्जम उर्फ शाहआलम निकला था। जोर शोर से तैयारी हो रही थी। रेवदंड और चोल में सम्भाजी की सफलता की सूचनाएँ मिलीं। उसी रात बादशाह ने मुअज्जम को अपने पास बुलाया। उसे एक सूचना सिर्फ मुअज्जम को देनी थी। बादशाह ने कहा, "वह काफिर का बच्चा सम्भा आजकल मेरे साथ खिलवाड़ कर रहा है। उसने हमारे शहजादे अकबर को गुप्तरूप से बाँधा की ओर भेज दिया है। इसमें कुछ दाल में काला नजर आ रहा है। जब तुम रामघाट से नीचे उतरो, उसी समय बाँधा पर हमला कर दो। उस मूर्ख शहजादे को बन्दी बनाओ।

दूसरे ही दिन सवेरे औरंगजेब ने अपने निजी सेवकों को बादशाही सामान इकट्ठा करने का आदेश दिया। उसने असदखान से कहा, "अब बहुत समय तक औरंगाबाद में डेरा डाले रहने से नहीं चलेगा। मुझे दुश्मनों के और मैदानेजंग के करीब जाना चाहिए। कुछ समय के लिए अब हमारा डेरा अहमदनगर में होगा।"

"जहाँपनाह इतनी जल्दी?"

"वजीरे-आजम दोस्त हो या दुश्मन, एक बात तो सच है कि शिवाजी के इस लड़के ने मुझे बुढ़ापे में भी जवान बना दिया है।"

दो

राजापुर की खाड़ी में हवा तेजी से चल रही थी। तम्बू की कनातें हिल रही थीं। न जाने क्यों शंभूराजा को नींद नहीं आ रही थी। खंडो बल्लाल तीन दिन पहले ही वहाँ आ चुके थे। राजा ने उन्हें बुलवाया। खंडोजी के तम्बू में आते ही राजा का ध्यान उनकी लम्बी नाक और तेजस्वी आँखों पर गया। कुछ क्षण के लिए उन्हें बालाजी चिटणीस के ही आ जाने का आभास हुआ। राजा ने खंडोजी को सामने बैठने का आदेश दिया। कुछ देर विचार-विमर्श करने के बाद शंभूराजा ने कहा, "खंडोबा आप हमारे राज्य के सचिव हैं। आजकल तारापुर, थाना, चोल, रेवदंडा जैसी अनेक जगहों पर समुद्रीतट में युद्ध छिड़ा है। एक ही समय में कहाँ और कितनी सेना भेजनी है? इसका विचार आपको करना है। ऐसे समय में आपका रायगढ़ पर रहना अति आवश्यक है।"

"परन्तु महाराज।"

"अकेली महारानी के कन्धों पर कितनी जिम्मेदारी देंगे? कविराज यदि वहाँ होते तो हमें वहाँ की इतनी चिन्ता न होती। मुझे लगता है कि शीघ्रातिशीघ्र वहाँ के लिए प्रस्थान करें।"

खंडो बल्लाल वैसे सिर नीचा किये बैठे रहे। उनकी निरुत्साही प्रतिक्रिया से शम्भू महाराज भी कुछ विचलित हो गये थे। यह देखकर खंडो बल्लाल ने कहा, "यहाँ मैं अपने मन मे थोड़े ही आया हूँ? महारानी साहिबा ने मुझे आने के लिए विवश किया।"

"क्या मतलब?"

"उनके विचार से आजकल आपकी ग्रह स्थिति कुछ ठीक नहीं है। इसलिए आपके साथ पराछाईं बनकर रहने के लिए कहा गया है।"

अपनी प्रिय रानी की स्मृति से शम्भूराजा का मन प्रसन्न हो गया।

शंभूराजा की प्रसन्न मुद्रा देखकर खंडो बल्लाल की जान में जान आयी। उन्होंने कहा, "महाराज यहाँ रुकने में मेरा भी कुछ स्वार्थ है।"

शंभूमहाराज की आँखें चमक उठीं। उन्होंने खंडोजी की ओर आश्चर्य से देखा। कुछ गद्दारों के कारण बालाजी चिटणीस की मौत, औदा गाँव की वह बंजर भूमि, सेना की भूलें आदि स्मरण करके शंभूमहाराज का मन भारी हो गया। वे कम्पित स्वर में बोले—''खंडोजी बालाजी काका के दुखद अन्त के बाद चिटणीस का पद मैंने आपको प्रदान किया। हमारी महारानी ने आपको और निलोगा को अपना बेटा मानकर गोद में खेलाया, परन्तु—'' शंभूमहाराज बोलते-बोलते रुक गये, उनकी जबान भारी हो गयी, आँखों के गर्म आँसुओं को उन्होंने बड़ी सावधानी से पोंछ लिया। शम्भूमहाराज ने पुन: कहा, ''औढ़ा शब्द के स्मरण होते ही मेरे कलेजे मे कुल्हाड़ियों के पाव की पीड़ा होती है। खंडोबा वह कोई षड्यन्त्र नहीं केवल एक दुर्घटना थी जिसमें बालाजी काका का अन्त हुआ। मनुष्य के जीवन में ऐसे भी प्रसंग आते हैं जब वस्तुस्थिति से हम अलग हो जाते हैं। एक ओर गद्दारों के कारण काकाजी का गिरफ्तार हो जाना दूसरी ओर दुर्भाग्य मे उनके महत्त्वपूर्ण पत्र हमारे पास तक न पहुँच पाना, कारण बन गया। खंडोजी हम अपराधी हैं। चिटणीम ही हत्या का पाप हमसे ही हुआ।''

''महाराज, इसमें किसी का भी दोष नहीं है। हमारा समय ही बुरा था। यह हमारा ही दुर्भाग्य था।'' उन्होंने आगे कहा, ''महाराज जो भी हुआ उसे भूल जाइये। आपने हमारे लिए क्या नहीं किया? चिटणीम बनाकर अपनी गोद में सँभाला -''

''खंडोजी कभी कभी लगता है कि बालाजी की मृत्यु के हम ही कारण हैं इस पाप का शमन करने के लिए, आक्रमण पर निकलने से पहले मैंने रायगढ़ के किलेदार को आदेश दिया है—''

''जहाँ हमारे बालाजी का अन्त हुआ है, औढ़ा की उस बंजरभूमि पर शिवालय के निर्माण का तो नहीं?''

''हाँ, वहाँ के शिवलिंग पर गिरने वाली शीतल जलधारा ही हमारी और बालाजी काका के लिए अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि होगी।''

खंडो बल्लाल ने उठकर शम्भूमहाराज के चरण पकड़े और बोले, ''महाराज राजसेवा करते समय इस प्रकार अनेक सैनिक शहीद होते हैं। पर उनकी याद किसी को नहीं आती। आपने हमारे बालाजी को इतनी अच्छी तरह अपनी स्मृति में रखा है। उनकी स्मृति को अपने हृदय में स्थान दिया है। आपका विशाल हृदय और वात्सल्य भाव देखकर मैं गद्गद हो गया हूँ।

शम्भूमहाराज ने उच्छ्वास लेते हुए कहा, ''खंडोबा, उस ईश्वर की महिमा अपार है। पता नहीं मनुष्य क्यों मनुष्य के प्रेम में फँस जाता है? ईश्वर और नियति का वह खेल सर्वथा अबूझ है।'' ऐसा कहते समय महाराज की आँखों के सामने अहमदनगर किले की तटबन्दी दिख रही थी। तटबन्दी के पीछे तीन वर्ष से कैदी के

जीवन बिता रही दुर्गा देवी और रानू दीदी की मूर्ति उनकी आँखों के सामने नाचने लगी। साथ ही पैरों में घुँघरू बाँधे छोटी-सी गुड़िया भी आँखों के सामने नाचने लगी।

उसी प्रवाह में शम्भूमहाराज कहने लगे, "आज भी हमें अनुभव नहीं होता कि चिटणीस काका हमारे बीच नहीं हैं। खंडोबा, कोंडाजी के बलिदान के बाद का एक प्रसंग आपको बताता हूँ। जंजीरा के सामने वाली खाड़ी के किनारे हम प्रात:काल घूम रहे थे। उस सुबह वहाँ एकदम सुनसान था। उसी समय एक मध्यम कद, पैंसठ वर्ष का, एक सुन्दर तेजस्वी व्यक्ति दिखाई पड़ा। एकदम चिटणीस काका जैसा। हम उन्हें पुकारते हुए, पानी की लहरों से भींगती हुई काली चट्टान पर बैठ गये। फिर वहाँ कोई नहीं दिखाई पड़ा। एक ओर समुद्र की लहरों का शोर और दूसरी ओर राजापुर का पड़ाव। कहाँ चला गया होगा वह व्यक्ति? समुद्र में या पहाड़ियों में?"

"वह कभी-कभी केवल आभास होता है।"

"नहीं खंडोजी, इन आभासों में भी सत्य का बड़ा अंश छुपा होता है। हमें लगता है कि बालाजी काका का बचपन जंजीरा के किले में ही बीता। कहीं यह छायामूर्ति यह तो नहीं कह रही है कि यदि मैं होता तो अवश्य ही मदद करता।"

बहुत समय से बातें चल रहीं थी। सवेरे जल्दी उठकर जाना था। तम्बू के मुख्य द्वार पर ईमानदार रायप्पा बैठा हुआ था। उसने कुछ बेचैन होते हुए पूछा—"राजाजी कब तक जागते रहोगे? कुछ विश्राम भी कर लीजिये।" वह साहस बटोकर बोला।

खंडोजी को आदेश देते हुए महाराज ने कहा, "खंडोजी कब निकल रहे हैं रायगढ़ की ओर?"

खंडो बल्लाल ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज आपके साथ जंजीरा का मुकाबला करना बाबाजी के नसीब में नहीं था। कम से कम मुझे तो गोवा के आक्रमण के लिए अपने साथ आने दें।"

तीन

अब अधिक समय नष्ट करने से क्या लाभ, राजन? यह वाइसराय केवल चालाक और धूर्त ही नहीं, बहुत बड़ा कपटी और गद्दार भी है अब रुकिए नहीं। किसी भी

तरह से उस फिरंगी को युद्ध में उतारना पड़ेगा।" दुर्गादास राठौर ने आग्रहपूर्वक कहा।

राजापुर के पास की पहाड़ियों के समीप शम्भूमहाराज का तम्बू खड़ा किया गया है। तम्बू में महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार-विमर्श चल रहा था। शम्भूमहाराज के सामने कवि कलश, दुर्गादास राठौर, शहजादा अकबर, सरदार येसाजी कंक बैठे थे। तम्बू के नीचे एक ढलान की बगल में राजापुर की खाड़ी थी। यहाँ पर पानी और हवा के साथ लहराने वाले नारियल और सुपारी के पेड़ थे।

शम्भूमहाराज, सत्तर वर्ष की आयु को पहुँच रहे येसाजी कंक की ओर एकटक देख रहे थे। येसाजी बाबा के सिर पर बहारदार पगड़ी, शरीर पर जरीदार ढीला अँगरखा, कमर में लिपटा शुभ्र जामा सुशोभित थे। ऐसी वेशभूषा में उनकी वृद्ध छवि और भी खिल उठी थी। उनकी बगल में एक आकर्षक और तेजस्वी युवक बैठा था। लगभग पचीस वर्ष का वह युवक कृष्णाजी, येसाजी कंक का पुत्र था।

शम्भूमहाराज ने कहा, "येसाजी आप हमारी थल सेना के सेनापति हैं। इस बार हम आप पर एक बड़ी जोखिमभरी जिम्मेदारी सौंप रहे हैं।"

महाराज यदि आप आग में कूदने को कहें तो भी यह बूढ़ा किसी बात का विचार नहीं करेगा। महाराज अभी कल कोंडाजी जैसा वीर आपके लिए जलकर खाक हो गया। आज यह शिवाजी का येसाजी आपके लिए जलकर खाक होने के लिए तैयार है।

गोवा पर आक्रमण करने की चर्चा होने लगी। वहाँ के बन्दरगाह वहाँ की खाड़ियाँ, फिरंगियों के किले, उनकी चर्चें, संरक्षण करने वाली फिरंगी सेनाएँ, पणजी का गोलाकार गुम्बद, सशक्त प्रवेश द्वार आदि सभी बातों पर विस्तार से चर्चा हुई। कांट दी आल्होर नामक फिरंगी से शम्भूमहाराज बहुत दुखी थे। उन्होंने कहा, "यह फिरंगी स्वार्थी, धोखेबाज और कमाल का नाटक करने वाला है। एक ओर तो यह पुत्ररत्न प्राप्ति के उपलक्ष्य में हमें बधाई का सन्देश भेजता है, बच्चे के लिए हीरे जवाहिर और मणि-माणिक्य का उपहार तो दूसरी ओर यह जानकर कि नारवातीर्थ में हम बहुत कम सैनिकों के साथ आ रहे हैं, हमें जिन्दा पकड़कर बादशाह को सौंपने की योजना बनाता है अब बताइए इसका क्या किया जाए?"

"आक्रमण, गोवा पर आक्रमण, और दूसरा क्या?" येसाजी कंक ने गरजकर कहा।

"कल यदि औरंगजेब की फौज गोवा में आयी तो ये फिरंगी मेंढक की तरह कूदकर पहले उधर ही जाएँगे। ये चोर हमारे साथ मैत्री का जितनी भी दिखावा करें हम इनकी असलियत जानते हैं। हमें पता है कि पुर्तगालियों ने बादशाह के साथ एक अत्यन्त गुप्त लिखित समझौता किया है।" राजा ने सभी को बता दिया।

"क्या कह रहे हैं महाराज?" सभी ने आश्चर्य से पूछा।

"कविराज, कहाँ है वह कागज?"

कवि कलश ने एक कागज प्रस्तुत किया। गुप्तचरों नें पुर्तगालियों और बादशाह के गुप्त समझौते की प्रतिलिपि तैयार कर ली थी। उसके अनुसार मराठों के कोंकण का जो भाग पुर्तगाली और मुगल सेना द्वारा जीता जाएगा, वह सब पुर्तगालियों को दे दिया जाएगा। उसके बदले में पुर्तगाली पणजी के समीप बादशाह को नौसेना का अड्डा बनाने की अनुमति देंगे। वाइसराय की सारी पोल खुल गयी थी।

शम्भूमहाराज ने दृढ़तापूर्वक कहा, "यह साला औरंगजेब से जाकर मिले उससे पहले ही उसे लंजुपुंज कर देना चाहिए।"

"फिर देर किस बात की? चलें गोवा पर हमला करें।" राजा के सभी सहयोगियों ने एक साथ उद्घोष किया। ऐसा लग रहा था कि उस बैठक में ही युद्ध के नगाड़े बज रहे हों।

अत्यन्त तनावपूर्ण मनःस्थिति में महाराज ने कहा, "फिरंगियों द्वारा की गयी पणजी की तटबन्दी, आगे चलने वाली उनकी तोपें, फौजों का कुशल संचालन, उच्चकोटि का बारूद और समुद्र में मुक्त रूप से घूमने वाली उनकी नौकाओं आदि का विचार करने से उन पर सीधा आक्रमण हमारे लिए खतरनाक हो सकता है। पर देखेंगे, कोई-न-कोई रास्ता अवश्य निकलेगा।"

उसी रात महाराज ने मुबई के अंग्रेजों को सन्देश भेजा। दक्षिण की ओर जिंजी में उन्हें व्यापार की अनुमति चाहिए थी। इस माँग को लेकर अँग्रेजों ने रायगढ़ की अनेक यात्रायें की थीं। महाराज ने कहा, "कविराज! जिंजी के पास वाले क्षेत्र में व्यापार की अनुमति उन्हें तुरन्त दे दी जाय। एक ही समय में सभी से लड़ाई मोल लेना हमारे लिए अच्छा नहीं होगा।"

रात में कवि कलश, खंडो बल्लाल और येसाजी कंक राजापुर की खाड़ी के किनारे टहल रहे थे। खाड़ी के भीतर टूटने वाली लहरों की प्रतिध्वनि सीधे कानों से टकरा रही थी। शंभूराजा ने अपने मन की शंका को व्यक्त करते हुए कहा, "येसाजी काका गोवा में फिरंगियों को स्थापित हुए सौ वर्ष बीत चुके हैं। इस तथ्य को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता कि उनके पास तोपें और लड़ाकू जहाजें बड़ी मात्रा में हैं। समुद्र के पानी पर हमारे घोड़ों के पाँव कैसे चल पाएँगे?" बात करते-करते शम्भूमहाराज के पैर तट की बालू में धँस गये। वे रुके और प्रसन्न होकर पूछा, "येसाजी, कविराज खंडोजी, कोई योजना बनाकर उस फिरंगी को ही अपने घोड़ों की टापों के पास खींच लिया जाये तो?"

चार

पणजी बन्दरगाह के शराबखाने मे लोगों की भीड़ थी। किनारे पर लंगर डाले हुए अनेक जहाजों के नाविक, देश-विदेश के मुसाफिर, व्यापारी, चोर-उचक्के जैसे हर प्रकार के लोगों की भीड़ होती थी। दो-तीन दिनों से कुछ अपरिचित लोग वहाँ आते-जाते दिखाई पड़ते थे। उनकी वेशभूषा से उन्हें ठीक-ठीक पहचानना असम्भव था। यदि उन्हें नीली आँखों वाले कोंकणी लोगों के रूप में जाना जाये तो उनकी लम्बी, काली, नुकीली दाढ़ी अफगानियों की थी। गोरे रंग के कारण उन्हें फिरंगी समझा जा सकता था किन्तु उनकी रहन-सहन और दबी जबान में बातचीत विचित्र थी। मदिरा का प्याला खाली करते हुए वे एक-दूसरे से कह रहे थे—''संभा ने फोंड़ा के किले पर चार-पाँच करोड़ का खजाना लाकर रखा है। बारूद का बड़ा भंडार भी रखा है कुछ दिनों में उसकी फौज भी वहाँ आनेवाली है।

दो-तीन दिनों में ही इस गुप्तचर्चा के असंख्य पैर डग आये। फिरंगियों के गुप्तचर खबरों को एकत्र करने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर सदैव बने रहते थे। उन्होंने यह खबर तत्काल कांट-द-आल्होर तक पहुँचा दी। जिन दो गुप्तचरों ने वाइसराय तक यह खबर पहुँचाई थी उनकी सूचना कभी गलत नहीं हुई थी। वाइसराय कहने लगा—''शिवाजी के इस छोकरे को पहले से ही गोवा में बड़ी रुचि है। कुछ दिन पहले वह अंजदीव टापू पर चूना-पत्थर लेकर आया था। वहाँ पर वह किला बनाना चाहता था।''

वाइसराय ने बड़ी सावधानी से जासूसों के एक दूसरे गुट से उस खबर की निगरानी की। कांट द आल्होर ने फोंडा के किले की ओर भी कुछ गुप्तचर भेज दिये। उन्हें खबर मिली की फोंडा किले की मराठा सेना बहुत कम और कमजोर है। किन्तु यह भी पता चला कि वहाँ कुछ विशेष बात है। ऐसी खबर मिलते ही कांट अपनी विजय की कल्पना करके नाचने लगा। दो महीना पहले नारवा नदी से बच निकला था। अब देखता हूँ। वाइसराय अपने आपसे बोल रहा था। उसे यह भी खबर मिल गयी थी कि शीघ्र ही औरंगजेब की सेना इधर आ रही है। उसके आने के पहले ही किला जीतकर खजाना लूट लिया जाएगा। अपनी विजय की कल्पना करके वह थैया-थैया करके नाचने लगा।

वाइसराय ने अपने सहयोगियों के साथ विचार विमर्श किया। कांट को सहायता के लिए गोवा के अनेक पादरी, कैप्टन दिओगो, आदि आ गये। अन्ततः वाइसराय ने तीन हजार थल सेना जमा की। उसमें दो हजार साष्टी महल के

कन्नड़भाषी सैनिक थे।

अक्टूबर 1683 के अन्त में एक सुहानी सुबह यह सेना पणजी से बाहर निकलने लगी। इस सेना का नेतृत्व वाइसराय स्वयं कर रहा था। दूर तक मार करने वाली बड़ी-बड़ी तोपों को खींचते-खींचते बैल व्याकुल हो रहे थे। हाथों में बन्दूक और तलवार सँभाले सैनिक एक-दो, एक-दो के क़दमताल से आगे बढ़ रहे थे। फ़ौज प्रात:काल ही पांडवी नदी की सहायक एक छोटी नदी के किनारे पहुँच गयी। पैर के नीचे की भुसभुसी मिट्टी में सैनिकों के जूते धँसने लगे। बहुत वर्षों बाद गोवा के भूमि पर एक बड़ा युद्ध होने जा रहा था। इसलिए आसपास की चर्चों पर, पेड़ों पर, पहाड़ियों पर लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गयी थी।

जैसे-जैसे दुर्भाट बन्दरगाह समीप आ रहा था, वाइसराय के सहयोगी भयभीत होने लगे। वाइसराय का सचिव चिन्ताग्रस्त स्वर में बोला—

"सर, दुर्भाट बन्दर छोड़ दिया जाय तो अच्छा होगा।"

"क्यों?"

"वहाँ पर मराठों का वीर सूबेदार दुलबा नाइक अपनी फौज के साथ हमेशा के लिए ताल ठोंककर बैठा है।"

"चलो तो सही!" वाइसराय ने सोत्साह कहा।

दुर्भाट बन्दर के पास फौज पहुँची तो सभी दर्शकों ने अपनी साँस रोक ली। सभी इस अनुमान से आँखें फाड़कर देखने लगे कि अभी दोनों फ़ौजों में घमासान युद्ध होगा। दुलबा नंगी तलवार लेकर आने की जगह मेले में किसी बालक की तरह अपनी पगड़ी उछालते और नाचते हुए आया। उसने वाइसराय को आलिंगन दिया। वाइसराय ने ममता से उसके गाल नोंच लिए। दुलबा फिरंगियों से मिला हुआ था। इसलिए फोंडा की तटबन्दी आसानी से भेदकर उस पर क़ब्ज़ा कर लेंगे, ऐसे विश्वास से वाइसराय अपना घोड़ा आगे बढ़ा रहा था।

दिन में हम कहाँ और किसलिए जा रहे हैं, इसका उसने किसी को पता ही नहीं चलने दिया। रात को सेना फोंडा किले के पास पहुँची। वहाँ ठंडी हवा ने किले के भीतर मराठों और बाहर फिरंगी सेना को परेशान कर दिया था। आधी रात तक फिरंगियों की बन्दूकों से कोई गोली दागी नहीं गयी थी। किन्तु इसी समय आकाश से बादल बरसने लगे। जैसे उछलते घोड़े दौड़ते हुए सामने आ रहे हो वैसे ही गर्जन- तर्जन के साथ बरसात ने जोर पकड़ा। उसने पेड़-पत्तों के साथ खड़ी फिरंगी सेना को खूब पीटा। एक बार किले के पास तक पहुँचकर पीछे मुड़ना भी अच्छा नहीं था वर्षा में वाइसराय के वस्त्र भीग गये। अपने ऊपर छाता ताने खड़े नौकर को भी उसने भगा दिया। तेज बारिश और अन्धकार का फायदा उठाने की बात वाइसराय ने सोची। रात में ही उसने तीन बड़ी तोपों को किले की सामने वाली पहाड़ी पर खड़ा कर दिया। चढ़ाई चढ़ते समय बैलों के पैर कीचड़ में धँसने के

कारण बैल गिरने लगे। कुछ बैलों के पैर टूट गये। तोपों को खींचने वाले सैनिक बेहाल हो गये। किन्तु वाइसराय ने किसी बात की चिन्ता नहीं की। कांट ने सही जगह पर तोपों को खड़ा कर दिया। वह जगह ऐसी थी जहाँ से किले पर सीधा निशाना साधा जा सकता था। वाइसराय ने बहुत धीमी आवाज में कहा, "मराठे नींद में बेसुध दीखते हैं। चलों उन्हें वहीं पर गाड़ देंगे।"

आधी रात को ही फिरंगियों की तोपों से धड़ाम धूम, धड़ाम-धूम करके बड़े-बड़े गोले किले पर बरसने लगे। फिरंगी सेना उत्सव मनाने लगी। कुछ ही क्षणों में सामने की दीवार थरथराने लगी। थोड़ी देर में ऊपर के बुर्ज से मराठे भी धामऽऽ धामऽऽ" धुड्म धामऽऽ प्रत्युत्तर देने लगे। तोपों से तोपों और गोलियों से गोलियों की भिड़न्त शुरू हो गयी। बरसात के पानी के साथ साथ ही आग का भी खेल आरम्भ हुआ। तोपों से निकलने वाली आग, चिनगारियों से सजकर लाल मिट्टी पर गिर रही थी। उन गिरने वाली बूँदों की शोभा निराली थी।

किन्तु दूसरी रात मराठों के लिए इतनी भाग्यशाली नहीं थी। फिरंगियों की तोपों के धमाके बहुत जहरीले थे। उन्होंने मराठों की तोपों को व्यर्थ कर दिया। एक दुखद घटना यह घटी कि गढ़ी का ऊपरी हिस्सा बारिश में भीगकर गिर गया। एक तोप भी अपनी जगह से लुढ़क गयी। किसी चट्टान की तरह वह तोप लुढ़कते हुए नीचे गिर गयी। किले के ऊपर बनी मजबूत गढ़ी भी गिर गयी। फिरंगियों में उत्साह का माहौल हो गया। तटबन्दी की दीवार टूटने पर भी कोई मराठा पीछे नहीं हटा। वाइसराय निराश हुआ। पिछले दिन से वह तीन बार भीग चुका था। तीन दिनों से मराठों के साथ मुठभेड़ चल रही थी, पर किले का दरवाजा खुल नहीं पा रहा था। वाइसराय ने दुलबा नाईक की गर्दन पकड़कर उससे पूछा, "बोल दुलबा, किले मे लोग हैं भी तो कितने?"

"सरकार मेरी जानकारी के अनुसार अन्दर सिर्फ दस बारह लोग थे।" अपनी जबान काटते हुए दुलबा ने आगे कहा, "पता नहीं पिछले तीन दिनों से उन्होंने लड़ाई जारी कैसे रखी? उस कपटी सम्भाजी ने क्या जादू किया है, कुछ पता नहीं चल रहा है?"

"जादू नहीं दुलबा, उस सम्भा ने बड़ी कुशलता मे कुछ बलवान मराठी जवानों की फौज को तैनात किया है। नहीं तो इस मिट्टी के ढेर में इतनी हिम्मत कहाँ से आती?"

एक बार फिर कांट द आल्होर ने हिम्मत करके अपनी तोपों को ऊपर से नीचे उतार दिया। उसने किले के सामने से तोपों को दागना शुरू किया। सामने वाले बुर्ज में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ने लगीं। स्थिति को समझने के लिए कांट ने कुछ समय के लिए गोलाबारी रोक दी। गन्धक और कीचड़ सने हाथों को कपड़ों से पोंछता हुआ वह बहुत देर तक वहीं पर खड़ा रहा। भीतर से किसी हलचल का संकेत नहीं

मिला। फिरंगी सैनिकों का उत्साह बढ़ गया। वे खुशी से नाचने लगे।

किले के चारों ओर गहरी खाई खोदी गयी थी। उसके कारण भीतर जाना कठिन था। फिरंगी मजदूरों ने ईंट-पत्थर आदि डालकर उस खाई को पाटने का कार्य आरम्भ किया। देखते ही देखते उस खाई पर रास्ता तैयार हो गया। उस रास्ते से फिरंगी आगे बढ़े फिर भी भीतर की ओर से कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। फिरंगी बन्दरों की तरह सीढ़ियों पर चढ़ने लगे। इसी समय किले के भीतर 'हर हर महादेव' की गर्जना सुनाई दी। अपने हाथ में दुधारी तलवार नचाते हुए येसाजी कंक दहाड़ते हुए शेर की तरह आगे बढ़े। वृद्ध येसाजी के शरीर में कमाल की शक्ति आ गयी थी। येसाजी सीढ़ियों पर चढ़ रहे फिरंगियों को सपासप काटना आरम्भ किया। उनका नौजवान बेटा कृष्णाजी सीढ़ियों को पीछे फेंकने लगा। घबराये हुए फिरंगी खाई में गिरने लगे। किले में छः सौ मराठा सैनिक हाथ में नंगी तलवारें खड़े थे। बाहर जंगले में हुए दो सौ मराठों के हाथ भी युद्ध के लिए आतुर हो रहे थे। भीतर और बाहर दोनों ओर से फिरंगी सेना पर जोरदार आक्रमण हुआ।

फोंडा किले पर क़ब्ज़ा करने के लिए फिरंगियों ने हर सम्भव प्रयास किया। पाँच दिन तक लगातार तोपें दागते रहे। तीन तगह से किले की दीवार तोड़ दी। किन्तु मराठा वीरों ने उन्हें अन्दर नहीं आने दिया। तेज बारिश और मराठा सैनिकों के तीव्र प्रतिरोध से वाइसराय पूर्णतया हताश हो गया दुलबा नाईक ने साहब को समझाते हुए बोला, "सरकार, लड़ाई बहुत हो गयी। अब हमें पीछे हटना ही होगा।"

"सात समुद्र पार पुर्तगाल से हम यहाँ किसलिए आये हैं? इन मामूली मरगठ्ठों से मार खाने?"

वाइसराय पीछे हटने को तैयार नहीं था। पीछे हटने से होने वाला अपमान उसे सत्य नहीं था।

एक दिन सात-आठ फिरंगियों को टोली तलवार भाँजते हुए एक बड़ी सुराख से भीतर घुस आयी। अचानक उनकी घुसपैठ से सामने का मराठी दल कमजोर पड़ने लगा। इस स्थिति को कृष्णाजी कंक ने देख लिया। क्रोध से उनका खून खौल उठा। उसी आवेश में वे दीवार से नीचे कूद पड़े। उनके पैर में मोच आ गयी। किन्तु शरीर में समाया हुआ युद्ध-ज्वर उन्हें शान्त बैठने नहीं दे रहा था। अपने दुख रहे पैर को घसीटते हुए वे फिरंगियों पर टूट पड़े। वह अपनी तलवार को चारों ओर घुमा रहे थे। लड़ते लड़ते उनके मुख से झाग आने लगा, फिर भी वे पीछे नहीं हटे। उनके पेट और पीठ पर अनेक गहरे घाव लग गये थे। उनके शरीर से खून की धाराएँ बह रही थीं। उन्होंने दस बारह फिरंगियों को तलवार के घाट उतारा किन्तु सूराख से आने वाले फिरंगियों की संख्या बढ़ती जा रही थी।

कृष्णाजी पर हो रहे आक्रमण पर येसाजी की दृष्टि गयी। उनके मुख से उद्घोष निकला, "बेटा"। फिरंगियों का सामना करने के लिए वे हथेली पर जान लेकर आगे बढ़े। उन पिता-पुत्र की सहायता के लिए लगभग सौ सैनिकों का एक दल वहाँ पहुँच गया। घमासान युद्ध हुआ। मराठों के तेज प्रहार के सामने फिरंगी भागने लगे। येसाजी और उनके बहादुर सैनिकों ने सभी फिरंगियों को बाहर खदेड़ दिया।

अनेक घावों से घायल कृष्णाजी गिर पड़े थे। शरीर खून मे लथपथ था और वस्त्र रक्त से भीग गये थे। मराठों ने कृष्णाजी को पालकी में बिठाकर पीछे के डेरे में पहुँचा दिया। वहाँ पर अनेक वैद्य कृष्णाजी के शरीर पर औषधियों का प्रयोग करने लगे। किन्तु घाव इतने गहरे थे कि खून का बहना बन्द ही नहीं हो रहा था। अपने बेटे की यह दशा देखकर येसाजी का ह्रदय चूर चूर हो रहा था। पालकी पर झुककर येसाजी अपने पुत्र के मुँह पर हाथ फेर रहे थे। उसका धैर्य का प्रयत्न कर रहे थे। किन्तु अभी-अभी समाप्त हुए युद्ध में येसाजी के पैर में गहरा घाव लग गया था। घाव मे बहते खून को सैनिकों ने देख लिया। उस घाव की ओर येसा का ज़रा भी ध्यान नहीं था। सेवकों ने उनके पैर को बाँध दिया।

कृष्णाजी का रक्तस्राव रुक नहीं रहा था। इसलिए निश्चित किया गया कि पीछे बांदा भेज दिया जाय। येसाजी को समझाते हुए मानाजी मोरे ने कहा, "बाबाजी, आप अपने बच्चे पर ध्यान दीजिए। पालकी के साथ आप भी चले जाइये। यहाँ पर लड़ाई का सब काम हम देख लेंगे।"

"ऐसा कैसे हो सकता है मेरे बच्चे? इन फिरंगियों की आँतों को बाहर खींचने का मैंने शम्भूमहाराज को वचन दिया है। मैं युद्धभूमि से हट कैसे सकता हूँ?"

दूसरे दिन का सूरज निकला। सवेरे सवेरे रणभूमि कुछ शान्त रही। अपमान के बोध से वाइसराय बन्दर की तरह नाच रहा था। एक बड़ी टक्कर देकर किले तबाह कर देने का उसने निश्चय किया था। इसके लिए फिरंगियों ने तट के बाहर ऊँची ऊँची सीढ़ियाँ इकट्ठी करनी आरम्भ कर दी थीं। कमर में डोर से सामान बाँधकर फिरंगी सैनिक तैयार हो गये। आगे की बहादुरी दिखाने के उत्साह में वे अपनी जगह पर ही भेड़ की तरह नाचने लगे। उसी समय नदी की ओर नारियल और सुपारी के वनों में किसी भयंकर तूफान के आने का एहसास हुआ। 'हर हर महादेव' 'शिवाजी महाराज की जय' जैसे नारों से आकाश गूँज उठा। उसके बाद दोनों में शोरगुल शुरू हुआ। किले के अन्दर किले के भीतर से 'आयेऽऽ आयेऽऽ, सम्भाजी महाराज आयेऽऽ' महाराज आये महाराज आये हाथ में नंगी तलवारें झंडे की तरह लहराते हुए मराठा सैनिक एक स्वर में चिल्लाने लगे। देखते देखते शम्भू

महाराज की फौज किले के पास पहुँच गयी। इस समाचार से ही फिरंगियों का जोश ठंडा पड़ गया। 'चलो, आगे बढ़ो' की ललकार हुई किन्तु फिरंगियों की दशा भीगी हुई भेड़, बकरियों जैसी हो गयी थी। दूसरी ओर शम्भूराजा के आगमन से प्रत्येक मराठा सैनिक में तूफान की शक्ति आ गयी थी। सम्भाजी महाराज का घोड़ा किले के द्वार पर पहुँच गया। उन्होंने किले के द्वार पर अपने श्वेत अश्व को नचाना आरम्भ किया। उनके पीछे पीछे खंडो बल्लाल का घोड़ा भी मध्यम चाल में उछलते हुए वहीं पर आ गया।

लड़ाई की स्थिति समझकर शम्भू महाराज ने अपने आठ सौ सैनिकों में से सौ सैनिक किले के चारों ओर लगा दिए। कांट साहब ने चिल्लाते हुए अपने सैनिकों को बन्दूक चलाने के लिए विवश किया। किन्तु युद्ध के लिए मदोन्मत्त मराठों के घोड़े फिरंगियों की गोलियों को जरा भी महत्त्व नहीं दे रहे थे। मराठों का बढ़ता जोश देखकर एक कैप्टन ने वाइसराय के कानों में बोला, "झट से पीछे मुड़ जाएँगे, नहीं तो हमारे पीछे सम्भाजी के सैनिक नदी में उतर जाएँगे। नदी में फँसकर हमारी मौत होगी। द पाथ ऑफ रिट्रीट बिल बी कम्प्लीटली लास्ट।" वाइसराय ने अभी तक हिम्मत नहीं हारी थी। किन्तु उसकी सेना का साहस छूट चुका था। भाग्य ही उसका साथ नहीं दे रहा था। उसने अपने आँसुओं को रोकते हुए सेना को पीछे मुड़ने का आदेश दे दिया। आदेश मिलते ही पिछले दस दिनों से बारिश की मार और मराठों के तीव्र प्रतिरोध से जर्जर फिरंगी जान बचाकर पीछे भागने लगे।

फिरंगियों की बची हुई फौज दूसरे दिन दुर्भाट की खाड़ी के पास पहुँच गयी। आगे की पहाड़ियों पर मराठों का एक दल छुपकर बैठा था। बुरी तरह अपमानित वाइसराय कांट में एक बार फिर वीरत्व जागृत हुआ। उसने पहाड़ी पर छिपी मराठों की सेना को समाप्त कर देने का आदेश दिया। पराजय स्वीकारने का बहाना बनाकर मराठों का दल पीछे हट गया। उन्होंने फिरंगियों को ठीक जगह पर सुविधा से आने दिया और फिर एकाएक उन पर टूट पड़े। फिरंगियों ने गोलियाँ दागनी शुरू कीं किन्तु मराठों ने उन्हें अपनी ढालों पर रोका। कभी घोड़े की आड़ से चकमा देकर उन पर आक्रमण किया। थोड़ी ही देर में फिरंगी सैनिक घोड़ों की टापों के नीचे कुचलकर मरने लगे।

लड़ाई हार जाने पर भी वाइसराय का जोश कम नहीं हुआ था। एक मराठा वीर आगे बढ़कर अपनी धारदार तलवार से कांट साहब के सिर पर वार किया। यद्यपि तलवार वाइसराय के चमड़े के कोट से नीचे सरक गयी फिर भी तलवार की तेज नोंक उनकी पसलियों में घुस ही गयी। इस प्रकार एक बार नहीं दो बार कांट अपने भाग्य से बच गये। बचे हुए सौ-सवा सौ फिरंगियों ने अपनी जान बचाने के लिए मांडवी नदी का सहारा लिया। जिन्हें तैरने का अभ्यास नहीं था वे डूब गये।

जिन्हें तैरना आता था वे घबराकर कीचड़ में धँस गये। जो कुछ बचकर बाहर आये उन्हें कांट ने लाठी से पीटना शुरू किया। उन्होंने फिर से युद्ध में लौटने का असफल प्रयास किया। लड़ाई हाथ से छूट गयी थी। लाल चमड़ी का वाइसराय कीचड़ और मिट्टी में बुरी तरह सन गया था। आँसुओं से उसकी आँखों में बाढ़ आ गयी थी। वाइसराय की तीन हजार की सेना को सम्भाजी महाराज के वीरों ने विनष्ट कर दिया था। बहती हुई मांडवी नदी उसका साक्ष्य दे रही थी।

पाँच

अभी केवल दस दिन पहले शम्भू महाराज ने फिरंगियों को करारी शिकस्त दी थी। उनके घाव अभी सूखे नहीं थे। वाइसराय की पसलियों का घाव भी अभी भरा नहीं था। फिर भी वह दिखावा कर रहा था कि फिरंगियों का साम्राज्य किस प्रकार अजेय है। इस प्रदर्शन के लिए उसने 25 अक्टूबर, 1683 की रात को चुना। फिरंगियों के इतिहास में इस दिन का बड़ा महत्त्व था। कुछ दशकों पूर्व इसी तिथि को उन्होंने गोवा पर अधिकार किया था। इस शुभ दिन पर पणजी नगर में विजयोत्सव मनाने का सरकारी आदेश दिया गया था।

उसी रात राजभवन में शहर के अमीर उमराओं के मनोरंजन के लिए नाच गाने का आयोजन किया गया था। यद्यपि यह सब दिखावा हो रहा था परन्तु कांट दी आल्होर मन ही मन बहुत डर रहा था। पहले उसे मराठों की वीरता और उनकी युद्ध पद्धति का पूर्ण ज्ञान नहीं था। साथ ही उसे अपनी फौजों पर अत्यधिक विश्वास था। एक और बड़ी बात हो गयी थी। शहजादा अकबर का एक वकील अपने मालिक के लिए एक जहाज की माँग करके चला गया था। इस चालाक वकील ने जाते जाते यह सलाह भी दे दी कि, ''सम्भाजी की फौज में सभी भगोड़े सिपाहियों का ही जमघट है। उसे अधिक महत्त्व देने की आवश्यकता नहीं है।''

कांट अनुभवी और शातिर दिमाग वाला था। इससे पहले उसने स्पेन की लड़ाई में अपनी तलवार का करिश्मा दिखाया था। वहाँ आने से पहले किसी मंगोल नामक स्थान पर उसने गर्वनर का कार्यभार भी सँभाला था। पणजी नगर के चारों ओर पत्थरों से बनी रक्षा दीवार थी। जगह जगह पर मजबूत बुर्ज बने थे। उसके पास गोला बारूद का बड़ा भंडार था। नदी के पास आग्वाद, मूरगाव, काबू रेश द

मागोश जैसे मजबूत किले भी थे। फिर भी मराठों के हाथ उसकी जो दुर्दशा हुई थी। कोंडा में मराठों ने उसका जो हाल किया था उससे कांट अन्दर ही अन्दर टूटता जा रहा था।

वाइसराय जितना कुशल प्रशासक था उतना ही चालाक भी। लाभ की बातों का वह स्वयं निर्णय लेता था। कहीं पर हानि की सम्भावना होती थी तो गोवा के राज्य सलाहकार की सहायता लेता था। कल रात को उसने गोवा के अमीर उमराओं अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की एक बैठक किले में आयोजित की थी। इस बैठक में उसने लड़ाई के खर्च के लिए लोगों से तीन लाख अशर्फियों की माँग की थी। बड़े मीठे स्वर और व्याकुल भाव से उसने कहा—"सम्भाजी सेना ने हमारे राज्य में चारों ओर उपद्रव मचा रखा है। उसकी अश्वसेना और थल सेना उत्तर में बसई, दमण, रेवदांडा से लेकर गोवा के पास इस्तेहांव, साष्टी से बार देश तक लूटमार मचा रखी है। हमारे पास पर्याप्त जनशक्ति नहीं है। बार-बार प्रार्थना करने पर भी पुर्तगाल से कोई सहायता नहीं आ रही है। औरंगजेब जैसा कोई मित्र हमारी सहायता करेगा, इसकी भी कोई सम्भावना नहीं दिख रही है। हमारे कुछ फिरंगी सैनिक बड़ी कठिनाई से किलों की रक्षा कर रहे हैं। अपने राज्य को बचाये रखना है तो सेना, शस्त्र और वस्त्र पर धन खर्च करना होगा। इसलिए कृपा करके हमारी सहायता कीजिए।"

उस रात बहुत सारा धन एकत्र हुआ। राज्य सलाहकार मंडल ने निर्णय लेकर लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा, "कांट सर के लिए सेना सम्भव हो सके तैयार करो। गोवा के कैदखाने के कैदियों को मुक्त करके उनके हाथों में बन्दूकें पकड़ाओ मराठों के घोड़े मांडवी नदी के पानी में उतरने न पाएँ।"

उस रात गुप्तचरों ने समाचार दिया था कि आसपास के जंगलों में कुछ मराठा घुड़सवार छुपते-छुपाते देखे गये हैं। इस खबर से कांट बहुत चिन्तित था।

जब नगर में उत्सव चल रहा था, उसी समय गोवा के उत्तर में केवल दो मील की दूरी पर, पूर्वोत्तर दिशा में एक अलग नाटक चल रहा था। पुराने गोवा के उत्तर में मांडवी नदी की दो धारायें बन जाती हैं। उसकी एक धारा के किनारे जुबे द्वीप पर पुर्तगालियों का इस्तेहांव किला था। किले की तटबन्दी प्राचीर ऊँची और बहुत मजबूत थी। पिछली रात से ही शम्भूराजा की फौज आसपास की झाड़ियों, नारियल-सुपारी के बगीचों में छुपकर बैठी थी। घोड़े पर बैठे हुए शम्भू महाराज किले की तटबन्दी की ओर बड़ी उत्सुकता से आँखें फाड़कर देख रहे थे।

"महाराज अभी कुछ ही दिन पहले फोंडा किले पर हुई मुठभेड़ में हमने फिरंगियों को दिन में ही तारे दिखा दिये थे। फिर भी उन्हें अकल नहीं आयी?"

खंडो बल्लाल ने पूछा।

"उन्हें हमसे क्या सीखना है? वह तो वे स्वयं निश्चित करेंगे। किन्तु खंडोबा, हाल ही में सूरत से अनाज से लदे कई जहाज गोवा में उतार गये हैं। फिरंगियों की रसद पर मुगल मदमस्त होकर हमारे राज्य को निगल जाना चाहते हैं।"

"यह बात तो एकदम सच है, महाराज!"

"इसीलिए कह रहा हूँ, इन फिरंगियों पर एक बार और भीषण प्रहार करके इनकी पसलियों को तोड़े बिना, ये चुप नहीं बैठेंगे।" घोड़े की लगाम खींचकर उसकी गर्दन जोर से थपथपाते हुए शम्भू महाराज ने कहा। रात दस बजे समुद्र में भाटा शुरू हुआ। मांडवी का पाट खुल रहा था। उसी का लाभ उठाते हुए शम्भू महाराज तूफान के वेग से घोड़े पर आगे बढ़े। नदी पार करते समय मराठा दल बहुत सावधान था। किसी को कानोंकान मालूम न पड़ सके, इसलिए वे दबे पाँव चल रहे थे। किसी के हाथ में मामूली मशाल तक न थी। नदी के किनारे शम्भृ महाराज अपने घोड़े को दुलारते हुए खड़े थे।

शम्भू महाराज ने खंडो बल्लाल को आगे बढ़ने का संकेत किया। उसी समय चालीस मराठा घुड़सवार सावधानी से नदी में उतर पड़े।

नदी पार करके उन्होंने मध्य रात्रि में ही इस्तेहांव किले को घेर लिया। किले की तटबन्दी ऊँची थी, उस पर चढ़ना बहुत कठिन था। किन्तु मराठा वीर उन पर सहसा टूट पड़े। खंडो बल्लाल की तलवार कलम की तरह तेजी से चलने लगी। फिरंगियों के सिर कटने लगे। आधे घंटे के भीतर ही मराठा वीरों ने किले पर अधिकार कर लिया। खंडो बल्लाल के दल ने किले की एक तोप को दाग दिया। उसकी धुडुमधामऽऽ, धुडुमधाम आवाज सुनकर शम्भूराज प्रसन्न हो गये।

विजय का संकेत मिलते ही घने जंगलों में बाहर छुपी मराठा फौज ने उद्घोष किया। तटबन्दी से तोपों की तेज आवाज और उसके साथ 'हर हर महादेव' की गर्जना से गोवा के भीतर हाहाकार मच गया। जगह-जगह पर उत्सव के लिए एकत्र हुए पादरी, ईसाई जिधर से भी रास्ता मिला भागने लगे। तोपों की आवाज से जो सोये हुए थे, वे जग गये। 'आ गये आ गये ..मराठों ने गोवा पर आक्रमण कर दिया है।'—ऐसा चिल्लाते हुए फिरंगी अँधेरे में इधर-उधर टकराने और गिरने लगे। गोवा का हृदय भय से थर्रा उठा। समुद्र तट की सफेद बालू भी भय से काँपने लगी। खाड़ी से बहने वाली हवा शान्त हो गये थी, समुद्री लहरों का नर्तन थम गया था। आस-पास के पेड़-पौधे भेड़-बकरियों की तरह गुमसुम खड़े थे। खतरे का संकेत देने वाली चर्च की घंटियाँ बजने लगीं, नगाड़े भी बजने लगे।

फिरंगी अत्यन्त भयभीत होकर चर्चों में दबी जबान से यीसू का नाम जपने लगे। शहर में घरों की खिड़कियाँ-दरवाजे बन्द होने लगे। हाथों में शस्त्र लिए कुछ लोग शहर के तट की ओर दौड़ पड़े। इनमें कांट द आल्होर सबसे आगे था! 'सर थोड़ा धीरज रखें' ऐसा उसके सहयोगी कह रहे थे। किन्तु एक दिन में दूसरा किला भी मराठों के अधिकार में चले जाने से वाइसराय पागल हो उठा। दूसरे दिन सवेरे-सवेरे अपने सहयोगियों के साथ-साथ शान्त इस्तेहांव के किले की तटबन्दी से भिड़ गया। फिरंगियों की डेढ़ सौ सैनिकों की टुकड़ी ने किले को घेरने का प्रयास किया। उसी समय शम्भू महाराज के नेतृत्व में मराठा सैनिक 'हर हर महादेव' की गर्जना के साथ फिरंगियों पर टूट पड़े। उनका जोश और आवेश ऐसा था कि उनके घोड़े को देखते ही फिरंगी भागने लगे। भागकर मांडवी नदी में कूदने लगे।

मराठों का एक तीव्रगामी दल कांट आल्होर का पीछा करते हुए उसके पास पहुँच गया। उनकी नंगी तलवारें देखकर कांट के पैरों के तले की जमीन खिसकने लगी। इसी बीच उसके कुछ घुड़सवार आकर उसे बचाकर लेकर भागे।

मांडवी के पानी में बाढ़ आ रही थी। दोनों किनारों पर पानी चढ़ रहा था। किन्तु मराठा वीर फिरंगियों का पीछा करना नहीं छोड़ रहे थे। मराठा वीरों को प्रोत्साहित करते हुए शम्भूमहाराज अपना घोड़ा आगे बढ़ा रहे थे। 'काटो-काटो, मारो-मारो' की गर्जना करते हुए वे मांडवी के बढ़ते रूप को निहार रहे थे। फिरंगी घुड़सवार वाइसराय को खींचते हुए पानी के अन्दर लिए जा रहे थे। बाद में कुछ ऐसी भाग-दौड़ शुरू हुई कि हर फिरंगी अपने शस्त्रों वस्त्रों की चिन्ता किये बिना अपने प्राणों को बचाने में लग गया। सभी फिरंगी नदी की ओर भागे। अनेक फिरंगी कीचड़ में फँस गये। उनमें से अनेक मराठों के बाणों और गोलियों के शिकार हो गये। कुछ पानी में डूबकर मर गये। जैसे मधुमक्खियों ने उनका पीछा करके बुरी तरह काटना शुरू किया हो। उसी तरह मराठों ने फिरंगियों को सताना आरम्भ किया।

वाइसराय का भाग्य अच्छा था। उसे एक छोटी किश्ती का सहारा मिल गया। उस छोटी नाव में बैठकर भय से काँपता हुआ वाइसराय आधी नदी को पार कर चुका था। उसी समय मांडवी के दूसरे तट पर पहुँचे कुछ फिरंगी पानी से लबालब भरे बाँध को काटने लगे। परिणामस्वरूप नदी का पानी वेग से बढ़ने लगा। पानी से उठने वाली खलखलाहट की आवाज बाहर भी सुनी जा रही थी। पानी बढ़ता जा रहा था। शम्भूराजा निराश भाव से वाइसराय की आगे बढ़ती नाव को देख रहे थे। शिकार हाथ से निकला जा रहा था। शम्भूराजा को जीवित रूप में बादशाह औरंगजेब के हवाले करने की योजना बनाने वाला शत्रु उन्हें चकमा देकर भाग रहा था। शम्भू महाराज का मन उद्विग्न होने लगा। उनकी दृष्टि नदी के उस ओर गोवा पर पड़ी।

वहाँ के चर्चों की ऊँची लाल आकृतियाँ, सुन्दर कमानें शम्भू महाराज के वीर हृदय को पुकारने लगीं। फिरंगी भीतर से टूट चुके थे। आगे बढ़कर गोवा पर अधिकार करने का यही सुअवसर था। गोवा हिन्दुस्तान के विदेश व्यापार की कुंजी थी। यह कुंजी कई बार शिवाजी महाराज के हाथ से निकल चुकी थी। इस अवसर को खोना वस्तुतः मूर्खता ही कही जाती।

नदी के एक तट पर महाराज खड़े थे। उनके हाथ युद्ध के लिए बेचैन हो रहे थे। वीरत्व के आवेश से हृदय की धड़कन बढ़ गयी थी। अपनी सबल हथेली से उन्होंने घोड़े का कन्धा थपथपाया। घोड़े के एड़ लगाकर उन्होंने गर्जना की "चलो।" घोड़े के मुँह में लगाम के काँटे चुभने लगे। घोड़ा जोर-जोर से हिनहिनाने लगा। उसने सामने का भयंकर जल प्रवाह देख लिया था। इसलिए वह किनारे पर ही खड़ा हो गया था। दूसरे क्षण महाराज ने उसके पुट्ठे पर प्रहार किया। लगाम को उन्होंने इतने जोर से खींचा की घोड़े के मुख को गहरा आघात लगा और वह कराह उठा। उसे एक प्राणान्तक छींक आयी। अपने मालिक के आदेश का पालन करने के लिए वह बहादुर अश्व पानी में कूद पड़ा।

पानी की पर्वताकार लहरों में घोड़े ने प्रवेश किया। पानी इतना अधिक और वेगवान था कि घोड़े का पैर टिकना असम्भव हो गया। पैर टिकते नहीं थे और ऊपर उड़ने के लिए पंख तो थे नहीं। तेज लहरों के कारण उसका तैरना भी कठिन हो गया। फिर भी शम्भू महाराज ने घोड़े को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने दोनों पैरों से घोड़े को दबाकर रखा था। उस पर जोर जोर से प्रहार करते हुए 'चल चल' की गर्जना कर रहे थे।

परन्तु पानी के बढ़ते वेगवान प्रवाह के आगे घोड़े की एक न चल पायी। घोड़े की नाक में पानी घुसने लगा। ऊँची ऊँची लहरों के तेज आघात भी उसे झेलने पड़ रहे थे। जैसे कोई सूखी लकड़ी पानी के बहाव में उलट पुलट होती है उसी प्रकार वह घोड़ा भी पानी में पलटी मारकर एक ओर झुक गया। शम्भू महाराज अपने को घोड़े से अलग करने का प्रयास करने लगे। वे हाथ-पाँव मारकर ऊपर आते थे और उसी वेग से गोता लगा लेते थे। किनारे पर खड़े सैनिक यह दृश्य देखकर जोर जोर से चिल्ला रहे थे।

शम्भूमहाराज का दुर्भाग्य यह था कि उनका एक पैर रिकेब में फँस गया था। किनारे पर हाहाकार मच गया। भीड़ से आगे आकर खंडो बल्लाल ने यह दृश्य देखा। मराठों के परमप्रिय, शिवपुत्र और रामगढ़ के राजेश्वर को काल उनकी आँखों के सामने से लिए जा रहा था।

यह दृश्य देखकर खंडोजी की धमनियों में प्रवाहित स्वामिभक्ति का खून उबल पड़ा—'महाराज, महाराज, शम्भूमहाराज' चिल्लाते हुए अपने पाखर घोड़े के

साथ वे नदी के कूद पड़े। जब उनके घोड़े के भी पैर उखड़ गये तो खंडोजी ने पानी में छलाँग लगा दी।

पानी में रास्ता बनाते हुए खंडोजी महाराज की ओर बढ़ रहे थे। इस समय तक महाराज ने कई गोते खा लिए थे। वे अव्वल दर्जे के तैराक थे। शेर से भी लड़ जाने की उनमें शक्ति थी। किन्तु उनका घोड़ा अर्धमृत अवस्था में तैर रहा था और महराज का पैर रिकेब में फँस गया था। मुँह और नाक में अनेक बार पानी चले जाने के कारण उनकी आँखें सफेद हो चुकी थीं।

महाराज ने खंडोजी को जोश के साथ अपनी ओर बढ़ते देख लिया। उन्होंने चिल्लाकर कहा, ''अरे खंडो, रिकेब की डोर काट दो उसमें मेरा पैर अटक गया है। खंडोजी ने तत्काल कमर से छुरी निकाली और उछलकर आगे बढ़े। पानी में डूबकर रिकेब की डोर काटते हुए उन्होंने भी दो-तीन गोते लगाए। सौभाग्य से सफलता हाथ लगी। खंडोजी ने महाराज को सहारा दिया। लहरों का सामना करते हुए खंडोजी के घोड़े की लगाम का सहारा लेकर बड़ी कठिनाई से दोनों किनारे पहुँचे।

शम्भूमहाराज और खंडोजी अत्यधिक थकी हुई अवस्था में किनारे की बालू तक पहुँचे और शरीर से टपकते पानी के साथ वहीं बैठ गये। बहुत देर तक उनकी साँसें तेजी से चलती रहीं। पानी के भीतर चल रहे उस युद्ध को देखकर सभी घुड़सवार और घोड़े भी सकते में आ गये थे। यहाँ तक कि पंछी भी अपने पंखों को समेटकरू नीड़ों में छुप गये थे।

मराठों के अधिकार में आया सांत इस्तेहांव का किला रात की शीतल हवाओं से भरे अँधेरे में गुमसुम खड़ा था। क़िले में शम्भूमहाराज और उनके साथी रुके हुए थे। बीच के आँगन में कुछ परिचारकों ने आग जला रखी थी। रायप्पा ने आग में बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ डाल रखी थीं। आग में लकड़ी रह-रह कर धधक उठती थी। उसका गेरूआ प्रकाश अपनी ऊष्णता के साथ चारों ओर फैल रहा था।

गरम औग कशीदाकारी की हुई शाल लपेटे शम्भू महाराज आग के पास बैठे थे। उनके साथ ही कवि कलश, जोत्याजी केसकर आदि भी थे किन्तु उन्होंने खंडोजी बल्लाल को अपने बहुत करीब बैठाया था। समुद्र के खारे पानी में गोते खाते हुए अनेक बार उनके मुँह और नाक में पानी गया था। परिणामस्वरूप उनका सिर भारी हो रहा था। आग और ऊष्णता की उन्हें अत्यधिक आवश्यकता थी। महाराज ने वहीं पर भोजन ग्रहण किया। उनके साथियों का भोजन भी हो चुका था।

शम्भू महाराज ने उठकर खंडो बल्लाल का मस्तक अपनी गोद में ले लिया। उसकी पीठ पर प्यार की थपकी देते हुए बोले—

''खंडोबा आज मराठों का राजकलश पानी में नहीं समुद्र के तल में पहुँच गया था। अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए आपने पानी में छलाँग लगाई। आपके

इस दुर्लभ जयकार के सामने मैं नतमस्तक हूँ। आपकी योग्यता को पहचानकर हिंदवी स्वराज्य सम्मानित चिटणीस पद तो हम आपको पहले ही दे चुके थे। और कुछ चाहिए तो बताइये।''

स्वाभिमान खंडो बल्लाल ने उठकर शम्भूमहाराज के पैर पकड़ लिए। उन्होंने कहा, ''आपके चरणों में मेरा जो स्थान है, उसे अबाधित बनाए रखें। इससे अधिक मुझे कुछ नहीं चाहिए।''

खंडोजी ने उसी समय अपना पाखर घोड़ा शम्भूमहाराज को देने का आग्रह किया। इस बात से शम्भूमहाराज उन पर पूरी तरह रीझ गय। उन्होंने कहा, ''अरे खंडोबा, हमें और कितना लज्जित करना चाहते हो? क्या जन्म-जन्मान्तर तक के लिए उपकार का बोझा मेरे सिर पर रखकर पुरस्कार भी मुझे ही देना चाहते हो?''

भावना के आवेश में शम्भूमहाराज के नेत्र चमक रहे थे। शब्दों में मन्दिर के घंटा नाद का प्रभाव आ गया था। खंडो बल्लाल को अपनी बाँहों में भरते हुए शम्भूमहाराज ने कहा, ''हमारे पिताजी हर किले के जमादारखाने की चाभियाँ प्रभु जमात के लोगों को सौंपकर चिन्तामुक्त हो जाते थे। उसका सही कारण मैं आज समझ पाया हूँ। मराठा हो या ब्राह्मण, शिवाजी और सम्भाजी के समय में महाराष्ट्र की धरती ने अनेक जातियाँ और उपजातियाँ देखी हैं, उनके रंग पहचाने हैं। अनेक बार ये जातियाँ अपने जातीय गुण के अनुसार ही व्यवहार करती हैं। खंडोबा आपके पिता की, बालाजी चिटणीस की राजनिष्ठा तो हीरे मोती की तरह प्रकाशवान है ही, किन्तु गजापुर खंडहर में अपने स्वामी के लिए खून से नहाने वाला बाजी प्रभु, पुरन्दर का वीर सेनानी मुरारबाजी अथवा समुद्र के गर्भ को चीरकर, शेषनाग की चोटी खींचकर पाताल लोक से सम्भाजी जैसे अपने स्वामी को ले जाने वाला खंडोजी बल्लाल हो, सभी राजनिष्ठा के बेजोड़ उदाहरण हैं। आपकी प्रभु जाति ने 'राजनिष्ठा' शब्द को इतनी ऊँचाई प्रदान कर दी है कि ऊपर के उस प्रभु ने भी आपको हजार बार वन्दन किया तो अत्युक्ति न होगी। ऐसी विलक्षण आपकी योग्यता है।''

छह

गोवा का समुद्र तट और वन प्रदेश निस्तब्ध था। युद्ध के बाद की भयावह शान्ति चारों ओर छायी थी। घने जंगल की आड़ में पणजी शहर किसी गुमसुम बैठे जानवर की तरह लग रहा था। शम्भूमहाराज का पड़ाव डिचोली में था। दो हजार सैनिकों

की फौज वहाँ से फोंडा की तटबन्दी के पास पहुँची शंम्भूमहाराज ने सूबेदार को तटबन्दी के पुनर्निमाण का आदेश दिया। आदेश पाते ही बेलदार और कामाठियों का दल अपने काम पर जुट गया।

शम्भूमहाराज का घोड़ा तट के पास से आगे बढ़ रहा था उनके पीछे-पीछे येसाजी कंक और खंडो बल्लाल के घोड़े चल रहे थे। पुर्तगालियों का वकील साराइव्ह द अल्बुकर्क सवेरे से ही महाराज की प्रतीक्षा करते बैठा था। शम्भू महाराज जानबूझकर उसकी उपेक्षा कर रहे थे। साथ-साथ चल रहे येसा से महाराज ने पूछा—

"येसाजी काका, कृष्णाजी का स्वास्थ्य अब कैसा है?"

"कल ही गाँव से खबर आयी थी। घाव अभी भी भरे नहीं हैं। अभी भी खतरा टला नहीं है।"

"तो फिर येसाजी काका आप इतना हठ क्यों कर रहे है?" घोड़े का मुँह घुमाते हुए शम्भूमहाराज ने पूछा।

"महाराज आपको संकट में कैसे छोड़ूँ? कभी आधा पेट खाकर उठ जाना सम्भव हो सकता है किन्तु लड़ाई को आधे में छोड़ देना बहुत खतरनाक होता है, महाराज।"

येसाजी का आशय समझकर महाराज चुप हो गये। आगे बढ़ते हुए वे कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। उसी समय किले के दूसरे छोर पर कुछ शोरगुल सुनाई पड़ा। महाराज का संकेत पाकर खंडो बल्लाल उसी ओर आगे बढ़ गये। थोड़े ही समय में लौटकर कहने लगे—"महाराज उधर चालिए। वहाँ बड़ा हंगामा हो रहा है। सैनिक और वहाँ के निवासी मेरी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है।"

"वहाँ ऐसा क्या हो रहा है?"

"वहाँ पर ईसाइयों की माता 'लेडी वर्जिन' की मूर्ति है, उस मूर्ति को कुछ लोग तोड़ना चाहते हैं और वहाँ पर जो छोटा-सा चर्च है, उसमें आग लगाने की तैयारी कर रहे हैं।"

यह ममाचार सुनते ही शम्भूमहाराज चिन्तित हो गये। वे घोड़े को एड़ लगाकर जल्दी से आगे बढ़े। आगे का बुर्ज पार करके वे आगे बढ़े। लोगों की सन्तप्त भीड़ चर्च को आग लगाने की तैयारी कर रही थी। एक ओर से आग लगाई भी जा चुकी थी। उसी समय शम्भू महाराज का घोड़ा वहाँ पहुच गया। उन्होंने कड़कती आवाज में डाँटते हुए कहा, "अपने हाथों को सँभालो। पहले आग को बुझाओ, नहीं तो एक-एक के टुकड़े करके रख दूँगा।" शम्भू महाराज के सहयोगी भी वहाँ पहुँच गये। आग बुझाते समय कई सैनिकों के हाथ जल गये। गोवा के कई हिन्दू वहाँ पर दिखाई पड़ रहे थे। उन्होंने ही शम्भू महाराज के सैनिकों को

भड़काया था। आग तो बुझ गयी किन्तु वहाँ की जनता अभी तक शान्त नहीं हो पा रही थी। उन्हीं में से एक मूर्ख आदमी महाराज से कहने लगा, "महाराज आपको क्या पता कि हम हिन्दू लोग यहाँ पर किस तरह का जीवन जी रहे हैं?"

"चुप रहो। किसी भी तरह की गड़बड़ मत करो।" महाराज ने डाँटते हुए कहा, "शिवाजी का नाम लेकर आप ऐमा शैतानी खेल बिलकुल नहीं खेल सकते।"

"पर शम्भू महाराज। हम पर जो अत्याचार हुआ .?"

"एक ने यदि गाय को मारा तो दूसरे को उसके बछड़े को मारना चाहिए क्या? अपने पूर्वजों को याद कीजिए मराठा देवी-देवता, सदाचार और नीति धर्म के पुजारी रहे हैं। वे मूर्ति भंजक और डाकू कभी नहीं रहे हैं।"

साष्टी, बारदेश और गोवा के दूसरे क्षेत्रों से दंगे के समाचार आ रहे थे। शम्भूमहाराज के आक्रमण को देखकर हिन्दुओं में जोश आ गया था। पिछले कुछ दशकों में ईसाइयों के अन्याय और अत्याचार से पीड़ित जनता प्रतिकार के लिए उठ खड़ी हुई थी। उनमें कुछ धर्मान्ध, स्थिति का फायदा उठाकर कहीं कहीं चर्चो को जला रहे थे। शम्भू महाराज ने फोंडा से आदेश दिया कि "किसी के भी धर्मस्थान को कोई हानि मत पहुँचाओ।" किन्तु लोगों की बढ़ती उत्तेजना से वे म्वयं निराश हो रहे थे।

महाराज एक बार फिर अपने डिचोली के पड़ाव पर पहुँच गये। घायल सैनिकों और घोड़ा का वहाँ उपचार किया जा रहा था। गोवा और कोंकण की मीमा पर स्थित डिचोली महाराज का प्रिय स्थान बन गया था। वहाँ की लाल मिट्टी, वहाँ के नारियल और सुपारी के बगीचे, छोटे-छोटे खपरैलों वाले पर, गाँव के छोटे-छोटे तालाब सब कुछ नयनाभिराम थे। वहीं पर महाराज ने अपने और कवि कलश के लिए महल बनवा लिए थे।

वाइसराय सोचता था कि फोंडा पर अधिकार कर लेने के बाद महाराज पन्हालगढ़ की ओर लौट जाएँगे। किन्तु शम्भूमहाराज ने पूरी सफलता प्राप्त करने और फिरंगियों को नेस्तनाबूद कर देने का संकल्प ले रखा था। तटवर्ती क्षेत्र में फिरंगियों के साथ अनेक स्थानों पर लड़ाई चल रही थी। रायगढ़ से नित्यप्रति समाचार आ रहे थे। सभी सैन्य दलों और राजधानी रायगढ़ के साथ महाराज का पत्राचार चल रहा था। पत्रवाहक हरकारे समाचारों के साथ सभी ओर भाग रहे थे।

डिचोली पहुँचकर महाराज ने शिविर की प्रदक्षिणा की, सभी घायल सैनिकों से पूछताछ की। वहाँ से वे अपने महल में बैठक के लिए आ गये। उन्होंने बीजापुर के आदिलशाह को पत्र लिखा, "आजकल औरंगजेब इस ओर है। इसमें प्रसन्न होने की आवश्यकता नहीं है, कल वह आपकी ओर भी पहुँच जाएगा। यह भी सोचो

कि यदि मराठे हार गये तो आप भी बच नहीं पाएँगे। इस स्थिति पर गम्भीरता से विचार करो और साथ देने का वचन दो।"

उसी समय महाराज ने हैदराबाद के दीवान मादण्णा को भी पत्र लिखवाया— "आपके कुतुबशाह जितनी समृद्धि, स ंत्ति हमारे पास होती तो हम सीधे दिल्ली पर आक्रमण करके उस औरंगजेब को यमुना में डुबो-डुबोकर समाप्त कर देते। घर में शान्त बैठकर वास्तविक शान्ति का अनुभव न करो। अन्दर छिप जाने से बाहर का तूफान शान्त नहीं होगा।"

दोपहर को एक हरकारा डिचोली पहुँचा। वह एक दुखद समाचार लेकर आया था। उस समाचार से शम्भूराजा के साथ सभी के हृदय दहल गये। गाँव में कृष्णाजी कंक के घाव फूट गये। वे भगवान को प्यारे हो गये। वह समाचार सुनकर येसाजी अपने को सँभाल नहीं पाये। वे जोर-जोर से रोने लगे। शम्भूमहाराज की आँखों से भी अश्रुपात होने लगा। उन्होंने येसाजी को अपनी बाँहों में भरकर उन्हें सांत्वना देने का प्रयास किया।

"महाराज जो कुछ हुआ वह सब प्रभु की लीला थी। किन्तु मुझे एक ही बात का दुख है।" येसाजी ने कहा, "मैं तो सूखा हुआ पीला पत्ता हूँ। आपकी सेवा में कभी भी टूट कर गिरूँगा और धन्य हो जाऊँगा। किन्तु आपके कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ने के लिए हमारे कृष्णाजी को रहना चाहिए था।"

उस रात डिचोली में अनेक मराठा घुड़सवार एकत्र हुए थे। शम्भूमहाराज ने येसाजी को अपने समीप ही बिठाया था। उन्होंने येसाजी के हाथ को अपने सीने मे लगाया। आकाश की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "येसाजी, आपका कृष्णाजी अब कभी वापस आने वाला नहीं है। इसलिए अब अधिक दुखी न हों। स्वराज्य की सेवा में जो अपने प्राण अर्पित करता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह एक सितारा बन जाता है। और ध्रुवतारे की भाँति चमकता रहता है। कृष्णाजी भी अब आकाश का एक सितारा बन गया है।"

शम्भूमहाराज ने कवि कलश और अन्य कर्मचारियों को पहले ही बुला लिया था। महाराज ने कृष्णाजी के तीन वर्ष के पुत्र के नाम एक सूबा लिख दिया। कंकवंश के लिए उन्होंने प्रत्येक वर्ष पर्याप्त धन मिलने की व्यवस्था कर दी। शम्भूमहाराज के इस तात्कालिक निर्णय और असीम औदार्य से सामान्य सैनिक भी दंग रह गये।

येसाजी ने रोते रोते ही शम्भू महाराज को अपनी बाँहों में भर लिया और कहा, "सच कहूँ महाराज! आपके साथ रहने से हमें यह भान ही नहीं होता कि शिवाजी महाराज हमें छोड़कर चले गये हैं।"

सात

गोवा की उस लाल धरती पर जोरदार लड़ाई चल रही थी। माष्टी और बारदेश में मराठा फौज डटकर लड़ रही थी। नारियल सुपारी के वनों से धुआँ उठ रहा था। अपने बलवान और बहादुर मैनिकों को महाराज ने पणजी के चारों ओर फैला दिया था।

एक महीने के बाद भी मराठा फौज डटकर लड़ रही थी उधर बेंगुर्ला मे औरंगजेब ने अपनी जहाजो का लंगर डाल दिया था। गोवा के समुद्र में रसद उतारने की अनुमति उन्हें वाइसराय कांट नहीं दे रहा था। जिन मुगलों के माथ उन्होंने समझौता किया था उनसे भी फिरंगी डरने लगे थे। मराठों का शक्तिशाली विरोध देखकर उन्होंने मुगलों की सहायता का आश्वासन दिया था। परन्तु वे यह भी सोचते थे कि परिस्थिति का लाभ उठाकर मुगलों ने ही गोवा पर कब्जा कर लिया तो क्या होगा?

शम्भूमहाराज बहुत अस्वस्थ दिख रहे थे। पाखरा घोड़े पर वे माडवी के दोनो ओर चक्कर लगाते रहते थे। पणजी की तटबन्दी उसके बडे बुर्ज बुर्जो पर लगी बड़ी-बड़ी तोपें, समुद्र और खाडी में निरन्तर गश्त लगाती जहाजें वे निरन्तर देखते रहते थे। पणजी पर अधिकार करने का उत्साह उनमें बार-बार आता था। साथ-साथ चलने वाले कवि कलश, दुर्गादास, शहजादा अकबर मे वे कहते थे—

"कुछ भी कीजिए! कोई-न-कोई योजना बनकर हमें पणजी को अपने अधिकार में लेना ही है। यदि शहर में हमारे पाँच सात सौ लोग घुसकर उपद्रव मचा सकें तो बाद में बाहर कैसे सहायता की जाये तो काम बन सकता है इमे हम बहुत अच्छी तरह जानते हैं।"

शहजादा अकबर का वाइसराय आल्होर के माथ पत्राचार चल रहा था। शहजादा अकबर ने पणजी के पास एक जहाज के निर्माण की अनुमति माँगी थी। फिरंगियों से अनुमति मिलते ही, इस ओर के तट पर लुहार-बढ़ई आदि की आवाजाही आरम्भ हो गयी। उनकी संख्या बढ़ती देखकर वाइसराय को आशंका हुई। उसने इस भीड़ और भीड़ के पणजी में आवास पर प्रतिबंध लगा दिया। समझौता करने के उद्देश्य से अकबर एक बार अपने छ: सौ सैनिकों के साथ निकला। उस समय फिरंगियों ने उनका विरोध किया। एक ओर शम्भूमहाराज गोवा को अपने अधिकार में लेने के लिए बेचैन हो रहे थे तो दूसरी ओर वाइसराय अपने राज्य की रक्षा का जी-जान से प्रयास कर रहा था।

महाराज आज कुछ तनावग्रस्त दिखाई पड़ रहे थे। दो दिन पहले ही उनकी

दो हजार की स्थल सेना और एक हजार की अश्व सेना मडगाँव मे प्रवेश कर चुकी थी। महाराज ने गोवा के अपने सभी सेनानायकों और अधिकारियों को आदेश भेजा, "पुर्तगालियों की सम्पत्ति अवश्य लूटो किन्तु किसी भी व्यक्ति को आघात पहुँचाने का कोई उपयोग नहीं है। चर्चों के साथ सभी धर्मों के प्रार्थना स्थलों का सम्मान करो।"

डिचोली के महल में शम्भूमहाराज फिरंगियों पर किये आक्रमण का समाचार ले रहे थे। उसी समय कवि कलश ने महाराज से पूछा—"पणजी पर किया गया आक्रमण अभी और कितने दिन चालू रखना है? पुर्तगालियों का वकील साराइव्ह् दे अल्बुकर्क, सुलह के लिए आपके पास बहुत चक्कर काट रहा है।"

"उससे कहिये कि सूरत से औरंगजेब ने तो रसद भेजी है उसकी आधी रसद हमारे हवाले कर दो फिर समझौते की शतरंज बिछाओ।"

कवि कलश दिल खोलकर हँसे। उन्होंने बड़े उत्साह से कहा, "राजन! एक दूसरी बात के लिए आपकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी ही कम है।"

"हुआ क्या? हमें भी तो कुछ बताइये।"

"गोवा पर अपने जोरदार हमले से वाइसराय इतना डर गया है कि राजधानी पणजी को पीछे मार्मा गोवा ले जाने का निर्णय ले लिया। अपना खजाना और कागजपत्र भी वहीं ले जाकर रख रहा है।"

शम्भूमहाराज ने प्रसन्न होकर कहा, "कविराज इतने से काम नहीं चलेगा। अगले दो-चार दिनों में हम साष्टी और बारदेश पर पूर्ण अधिकार कर लेंगे। उसके बाद मांडवी को पार करके गोवा के शिखर पर अपना भगवा ध्वज फहराएँगे।"

यह चर्चा चल ही रही थी कि बाहर किसी के चिल्लाने की आवाज आयी। वह कह रहा था—"महाराज न्याय कीजिए। हमारी व्यथा-कथा सुनिये।"

एक ही ताल-सुर में असंख्य आवाजें एक साथ भीतर आने लगीं। बाहर हजार पाँच सौ लोग एकत्र हो गये थे। कार्य में व्यस्त होने के कारण महाराज ने कवि कलश की ओर संकेत किया। कवि कलश तत्काल उठकर बाहर चले गये।

शम्भूमहाराज आक्रमण सम्बन्धी किसी कागज को पढ़ रहे थे। किन्तु बाहर का शोर बढ़ता ही जा रहा था। महाराज ने अपने एक कर्मचारी से पूछा, "इतना हो हल्ला किसलिए हो रहा है?"

"ये लोग साष्टी से आये हैं, महाराज! वहाँ के उत्साही लोग हाथ में मशालें लेकर वहाँ की चर्च को जलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु हमारे अधिकारी राणोजी मोरे ने उन्हें पीट-पीटकर भगा दिया। इसी कारण से वे लोग बहुत रुष्ट हैं और किसी भी बात सुनने को तैयार नहीं हैं।"

यह समाचार सुनते ही महाराज उठकर उन लोगों के पास पहुँचे। महाराज को देखते ही चिल्ला रहे लोग शान्त हो गये। कुछ समय तक लोग आँखें फाड़कर

महाराज को देखते रहे। उसके बाद उनके कंठ फूटे—

"महाराज आपने फिरंगियों का जो दुर्दशा की उसे देखकर हमें अत्यन्त आनन्द हुआ। किन्तु आज भी उनका गुरूर कम नहीं हुआ है।"

एक बूढ़ा आगे आकर अपने हाथों को नचाते हुए बोला, "वहाँ रायगढ़ पर रहकर आप क्या जान पाएँगे कि हम हिन्दू इन फिरंगियों के शासन में कैसे जीते हैं? हमारे मन्दिरों में देवता अब नहीं रह गये है। फिरंगियों ने बलपूर्व हिन्दूओं को धर्मान्तरण के लिए विवश किया। हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ तालाबों में फेंक दीं। इन लोगों ने कुँओं की जगत पर सामान्य पत्थर के रूप में मूर्तियों को गाड़ रखा है। पानी खींचते हुए रस्सियों की रगड़ से ये मूर्तियाँ अब टूटने लगी हैं। आप स्वयं ही चलकर देख लें।"

"मुझे सब पता है। गोवा में शान्ता, दुर्गा, महालक्ष्मी, मंगेशी जैसे देवस्थलों को भी अपने चारों ओर तटबन्दी और लोहे के मजबूत दरवाजों की आवश्यकता होती है। फिरंगियों के अत्याचार से यहाँ के देवी देवताओं को भी पसीना छूटता है।"

"वही हम भी कह रहे हैं, महाराज! जब हमारे देवताओं की ऐसी दशा है तो हम लोगों की क्या होगी? फिरंगियों से बदला लेने का यही अच्छा अवसर है, आप हमें रोके नहीं।" पाँच-छः लोग एक साथ बोल उठे।

सामने जमी भीड़ में लोग अपने भाले और लाठियाँ ऊपर उठाकर अपना आवेश व्यक्त करने लगे। किन्तु शम्भूमहाराज ने डाँटते हुए कहा—

"खामोश! किसी तरह का शोरगुल न करो। इस बात को कभी न भूलो कि गोवा पर आक्रमण शिवाजी के पुत्र का हो रहा है, औरंगजेब के किसी शहजादे का नहीं।"

महाराज की कठोर वाणी से सभी लोग सन्न रह गये, तब महाराज ने कहा, "आप लोगों की पीड़ा को मैं भली-भाँति समझ सकता हूँ। हिन्दुओं का राजा होने के नाते आप मेरे सामने अपनी हर माँग रख सकते हैं। हम आपकी हर माँग पूरी करेंगे। किन्तु इस बात का हमेशा स्मरण रखो कि किसी के द्वेष की नींव पर बनाए गये हमारे मन्दिर टिकने वाले नहीं हैं।"

कवि कलश को महाराज ने कुछ नये आदेश तैयार करने के लिए बुलाया। उन्होंने जिन हिन्दू मन्दिरों को फिरंगियों ने ध्वस्त कर दिया था, उनके लिए अपने खजाने से धन देने की व्यवस्था की जिससे उनका पुनर्निर्माण हो सके। धर्म की रक्षा के लिए कुछ योजनाएँ भी बनाई गयीं।"

सभी लोग प्रसन्न हो गये। किन्तु मडगाँव का वह वृद्ध जो अभी-अभी महाराज से बातें कर रहा था, सन्तुष्ट नहीं लग रहा था। महाराज ने उसे छेड़ते हुए उसके सामने हाथ जोड़ दिये। उसने बड़े प्रेम से कहा, "सरकार आपने हमारे

बारदेश के चारों किलों पर अपना अधिकार कर लिया। फिरंगियों के शासन से हमें मुक्त किया। पर महाराज आपसे एक और प्रार्थना है।"

"कहिए।"

"महाराज यहाँ के पादरी हम पर बहुत अत्याचार करते रहे हैं। आपका कहना है कि किसी की धार्मिक भावना पर ठेस न लगने दें। परन्तु महाराज, ये पादरी यीसु का नाम लेकर हमारे साथ जानवरों जैसा बर्ताव करते हैं। धर्मान्तरण कराने के लिए इन्होंने हमारे घर-परिवार को जलाकर रख दिया। ईसाइयों के इन पादरियों का चरित्र भी कहाँ ठीक है? यीशु का नाम लेकर इन पादरियों ने बहुत धन इकट्ठा किया है। इनके सफेद वस्त्रों में मोमबत्तियाँ नहीं, धारदार कटारियाँ रखी हैं।"

"बाबा! आपको क्या चाहिए?"

"हम किसी को उँगली से भी नहीं छुयेंगे। पर कल मडगाँव के अत्याचारी पादरियों के चोंगे उतारकर उनके सिर पर बाँधेंगे और उनका जुलूस निकालेंगे। बस और कुछ नहीं।"

बूढ़े व्यक्ति की यह माँग सुनकर महाराज के साथ सभी लोग जोर-जोर से हँसने लगे। महाराज ने उनके आक्रोश को ठीक-ठीक समझा। मडगाँव में सचमुच धर्म के नाम पर बहुत अत्याचार हुआ था। महाराज ने जुलूस की अनुमति दे दी। किन्तु अनुमति देने के साथ ही उन्होंने कवि कलश को आदेश दिया—

"इस खतरे की जवाबदारी आप पर है। जुलूस के साथ सेना की एक विशेष टुकड़ी भेजिए। किसी चर्च की इमारत अथवा किसी धर्मगुरु के प्राणों की कोई क्षति नहीं होनी चाहिए।" लोग सन्तुष्ट होकर वहाँ से चले गये। दूसरे दिन समाचार आया कि मडगाँव के पादरियों ने मराठों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। चर्चों के साथ ही उन्होंने सम्पत्ति को भी मराठों के हवाले कर दिया। चर्च पर क़ब्ज़ा लेते समय चर्च के बाहर कम से कम दो हजार फिरंगी वहाँ एकत्र हुए थे। मराठों ने सभी को शान्तिपूर्वक बाहर जाने दिया।

आठ

वाइसराय की पसलियों का घाव अब भी उसे पीड़ित कर रहा था। मांडवी के दूसरे किनारे पर 'हरऽ हरऽ महादेव' के नारे गूँज रहे थे। उस किनारे पर शम्भूमहाराज का घोड़ा निरन्तर घूम रहा था। रात में मराठा घुड़सवारों की तलवारें नारियल और सुपारी

के बगीचों में चमकती दिखती थीं। कांट द आल्होर के साथ सम्पूर्ण पणजी शहर दहशत में आ गया था। पुर्तगाली सेना की भूख-प्यास बन्द हो गयी थी। पादरी भीतर ही भीतर बहुत भयभीत हो गये थे।

वाइसराय की स्थिति ऐसी हो गयी थी जैसे कोई सियार अपनी माँद में बैठकर शिकारियों का हांका और शिकारी कुत्तों की आवाज सुनकर भय के मारे भीतर ही भीतर मरा जा रहा हो। थोड़ी-सी सेना और उससे कहीं अधिक अपनी कुशाग्र बुद्धि के बल पर उसने अब तक पणजी पर अपना अधिकार जमा रखा था। किन्तु पणजी वासियों का दबाव निरन्तर बढ़ रहा था। इसकी सूचना वाइसराय ने पुर्तगाल को भी दे दी थी। हिन्दुस्तान में पुर्तगालियों का शासन समाप्ति पर आ रहा था। चारों ओर वाइसराय और उसकी नीतियों को अन्यायपूर्ण ठहराया जा रहा था।

थाना से लेकर गोवा तक फिरंगियों की प्रत्येक चौकी पर मराठों के आक्रमण हो रहे थे। उसी बीच चौल के गवर्नर फ्रांसिस द कोश्त का सन्देश आया—

"यहाँ पर अँग्रेजों ने खुलेआम सम्भाजी की सहायता करनी आरम्भ कर दी है। वे मराठों को बन्दूकें तोपें, गोले, बारूद सब कुछ दे रहे हैं। दुगुना दाम देने पर भी हमें चुटकी भर भी बारूद नहीं मिल रही है। यदि समय से हमारी सहायता न की गयी तो हम मारे जायेंगे।"

वाइसराय की पसलियों का घाव अभी भी भरा नहीं था। शम्भूमहाराज के भय से पणजी छोड़कर भाग रहे थे। वाइसराय और उसकी सेना से फिरंगियों का विश्वास उठ गया था।

उस रात कांट ने दूरबीन से देखा। डरे हुए लोग बड़ी संख्या में दूसरी दिशा की ओर जा रहे थे। उसने अपने सचिव से पूछा, "मूर्खों की तरह वे लोग कहाँ जा रहे हैं?"

"बॉमगेसू चर्च की ओर।"

"इतनी रात को?"

"जी सर, सेंट जेवियर पर इनकी अगाध श्रद्धा है। इनका विश्वास है कि इस भयानक संकट से इन्हें सेंट जेवियर ही बचा सकते हैं। सर मुझे भी लगता है..." सचिव कुछ डर गया। उसका वाक्य अधूरा ही छूट गया।

"क्या?"

"आप भी वहाँ जाकर सेंट जेवियर के सामने अपनी झोली फैलाएँ। सेंट जेवियर से की गयी प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाएगी।"

इस समय सेंट जेवियर की पुरानी चर्च फिरंगियों की शरणस्थली बन गयी थी। वहाँ पर एकत्र लोग दबी आवाज में सेंट जेवियर का नाम जप रहे थे। रात-दिन प्रार्थनाएँ चल रही थीं। फिरंगियों की आँखों के साथ मोमबत्तियाँ जल रही थीं।

प्रार्थना के बीच-बीच में साष्टी और बारदेश से समाचार भी आ रहे थे। कभी 'शापोरा' किले के हाथ से जाने की तो कभी पुर्तगालियों के 'जिये' और 'पिये' किलों पर मराठों के जोरदार आक्रमण के समाचार आ रहे थे। आक्रमणों के समाचार सुनकर वहाँ के लोग और भी भयभीत हो रहे थे।

एक दिन सवेरे सवेरे राजभवन के काले घोड़े चर्च के परिसर में आकर रुके। शाही घोड़ागाड़ी से कांट साहब नीचे उतरे। उनकी हालत बहुत शोचनीच थी। रात में जागते रहने से आँखें लाल हो गयी थीं। आँखों के नीचे काले धब्बे पड़ गये थे। दाढ़ी कुछ अधिक सफेद लग रही थी। शरीर उत्साहहीन होने के कारण चाल में शिथिलता आ गयी थी। इस दशा में इस सद्‌गृहस्थ को वाइसराय के रूप में पहचानना कठिन था। उसे देखकर लगता था जैसे वह चोर डाकुओं से लुटा हुआ और बहुत मार खाया हुआ मुसाफिर हो।

कांट आल्होर के साथ फ्रांसिस द सौंज, आर्क बिशप, प्रिमज दौ मान्युअल, मिगेल द आल्मेदा, जैसे शहर के अनेक पादरी और उमराव वहाँ पर एकत्र हुए थे। भयत्रस्त उन सभी अधिकारियों एवं वरिष्ठ लोगों ने मशालें जला लीं। बगल की अँधेरी सीढ़ियों से मशाल के सहारे नीचे उतरे। उस तलघर में सेंट जेवियर का शव रखा गया था। वहाँ के पत्थर के चबूतरे से एक बड़ी पेटी बाहर निकाली गयी।

सेंट जेवियर का शव एकदम सुरक्षित था। इसे भी एक चमत्कार माना जा रहा था। सभी ईसाई सेंट जेवियर के नाम का जाप करने लगे। वे सभी रो रोकर कहने लगे—"सम्भाजी की आफत मे हमें मुक्त करो।"

उस महापुरुष के दर्शन मे वाइसराय भी चकित हो गया था। मोमबत्ती के पिघलते मोम की तरह वाइसराय के आँसू उसके लाल कपोलों पर लगातार गिर रहे थे। उसने सेंट जेवियर के सामने पूर्णतया समर्पण कर दिया। भारत में पुर्तगाली शासन के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि के रूप में उसने एक प्रार्थनापत्र लिखा। उस प्रार्थना के साथ एक आदेशपत्र भी सेंट जेवियर के पैरों के पास रख दिया। वह पुर्तगाल के राजा द्वारा वाइसराय के रूप में नियुक्त होने का असली दस्तावेज था। कांट की आँखों से धारासार अश्रुपात हो रहा था। उसने अपने हाथ की स्वर्ण खड्ग, अपना मुकुट, राजदंड जैसी सभी महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ और राजचिह्न सेंट जेवियर के पैरों के पास रख दिया। रोते हुए उसने कहा—

"फादर जेवियर, आज से मैं यहाँ का गवर्नर नहीं आपका गुलाम हूँ। अपना हिन्दुस्तान का राज्य हम आपके चरणों में समर्पित करता हूँ। हे दया सागर, हे महामानव! हमारी रक्षा करनी है या नहीं? इसका निर्णय अब आप ही करें।"

वाइसराय, सारे पादरी और प्रजाजन कई दिनों तक उसी तरह प्रार्थना करते रहे। वहीं पर सोना और जो कुछ मिल जाये भोजन वहीं पर होता रहा।

एक दिन वाइसराय ने अपने सचिव से कहा, "बन्दीखाने के दरवाजे खोल दो। मराठों के उस वकील येसाजी गम्भीरराव को मुक्त कर दो। उसे सम्भाजी के पास भेज दो। सम्भाजी को सन्देश भेजो कि 'सन्धि की शर्तों को आप स्वयं निश्चित करें, जैसा चाहें मसौदा तैयार कर लें। हम उस पर हस्ताक्षर करने को तैयार हैं। परन्तु हमें इस विपत्ति से छुटकारा देने की कृपा करें। अब हमें और अधिक न सताएँ'।"

गोवा पर शम्भु महाराज का दबाव बढ़ता जा रहा था। साष्टी और बारदेश पर मराठों का अधिकार हो गया था। इसके साथ आरवाद, रोशमागोश, शापूरा जैसे फिरंगियों के छोटे मोटे किले भी मराठों के अधिकार में आ गये थे। मडगाँव में मराठों की एक हजार की थल सेना प्रवेश कर गयी थी। सांमिगेल और सांत क्रिस्तोहांव आदि सभी किलों पर आक्रमण हो रहे थे।

गोवा की चर्चों में अब मोमबत्तियों की भी कमी होने लगी थी। वाइसराय आने वाले एक एक दिन को गिन गिन कर काट रहा था। किसी प्रकार से इस विपत्ति से मुक्त होने के लिए वह छटपटा रहा था। फिरंगियों के वकील बार बार आकर अपने लम्बे हाथों से शम्भु महाराज को सलाम कर रहे थे। किन्तु महाराज किसी भी कीमत पर पीछे हटने को तैयार नहीं थे।

बाईस दिन बीत चुके थे। फिरंगियों की कमर टूट चुकी थी। सेंट जेवियर चर्च में बैठे बैठे वाइसराय का दम घुटने लगा था। उसकी पसलियों का घाव अब कुछ कुछ भर गया था। परेशान होकर कांट द आल्होर ने अपने राजा को आखिरी सन्देश भेजा, "प्रलय की स्थिति बन गयी है। हमारा इससे उबर पाना असम्भव है। तोपों को चलाने वाले बहादुर सैनिक बच नहीं पाये और गोला बारूद भी लगभग समाप्त हो चुका है। जिस प्रकार टूटा हुआ जहाज पानी में गोते लगाता है, उसी तरह फिरंगीराज हिन्दुस्तान में अपनी अन्तिम साँसें गिन रहा है।"

एक दिन चमत्कार हुआ। सवेरे सवेरे चर्च में समाचार आया कि रात में मराठों ने अपना मोर्चा उठा लिया। किसी को बिना कोई हानि पहुँचाए वे अपनी फौज के साथ एकाएक चले गये।

यह समाचार सुनते ही सभी लोग सेंट जेवियर के चरणों में अपना माथा झुकाने लगे। आनन्दातिरेक से सभी फिरंगी नाचने लगे। फिर भी फिरंगियों के मन में मराठों का डर बना हुआ था। 10 जनवरी, 1684 को गोवा राज्य सलाहकार मंडल की बैठक बुलाई गयी। गोवा पर मराठों के आक्रमण की सम्भावना से उन्होंने अपनी राजधानी को मार्मा गोवा में स्थानान्तरित कर दिया।

शम्भू महाराज को मिला हुआ समाचार सच था। शहजादा मुअज्जम एक लाख की फौज लेकर रामदरा घाट पार करते हुए आगे बढ़ रहा था। फौज गोवा के

रास्ते में पहुँच जाती तो मराठों का फिरंगियों और मुगलों के बीच फँस जाना निश्चित था। इसलिए सावंतवाड़ी की ओर जल्दी-जल्दी निकल जाना आवश्यक था।

नौ

बड़े परिश्रम से फौज पहाड़ की घाटी पार करके आगे बढ़ी। महाराज की सेना चांभार घाटी पार करके रायगढ़ की ओर मुड़ गयी। नाते गाँव के खेतों में अँग्रेजों का एक दल रुका हुआ था। उन्होंने उस जंगल में ही अपने दस-बारह तम्बू खड़े कर लिए थे। वकीलों के साथ आये पाँच सौ बन्दूकधारी सैनिक उनके चारों ओर पहरा दे रहे थे। मुम्बई में पैदा हुए आलीशान घोड़ों पर गहरे लाल रंग के टोप लगाए, कम्पनी सरकार के सैनिक डटकर पहरा दे रहे थे।

शम्भू महाराज की विशाल सेना पहुँचते ही अँग्रेजों का वकील स्मिथ साहब झट से बाहर आया। अपने हाथ में टोपी को पंखे की तरह हिलाकर उसने शम्भू महाराज का झुककर अभिवादन किया। पिछले कई दिनों से वह शम्भू महाराज की प्रतीक्षा कर रहा था।

स्मिथ के आग्रह पर शम्भू महाराज कुछ समय के लिए वहाँ रुके। स्मिथ के डेरे में विचार-विमर्श आरम्भ हुआ। रामचन्द्र शेणवी दुभाषिये का कार्य कर रहे थे। स्मिथ साहब ने कहा, "महाराज, आप गोवा में अटक गये और हमें मुम्बई में अटका दिया।"

"सो कैसे?"

"अब क्या सब कुछ मुझे ही कहना पड़ेगा महराज? आपके दरिया सारंग, भायनाक भंडारी और निलोपन्त पेशवा ने कई जहाजों के साथ एक बड़ी नौ सेना खड़ी कर ली है। आप तो इस समय मुम्बई पर भी आक्रमण करने की बात सोच रहे हैं।"

"इस बात का मुझे कुछ भी पता नहीं है।" ऐसा कहकर महाराज ने बात को टालना चाहा।

"महाराज! आपसे पूछे बिना वे एक भी कदम समुद्र में नहीं बढ़ सकते। वकील होने के नाते इसकी थोड़ी बहुत कल्पना तो है। हमारे मालिक कमिश्नर

चाइल्ड और वॉर्ड को भी इसकी जानकारी है। महाराज हम आपसे विनती करते हैं—प्रार्थना करते हैं—"

महाराज कुछ समय के लिए चुप हो गये। फिर उन्होंने रुष्ट होकर स्मिथ से कहा, "हमसे कैसी प्रार्थना? आपके स्वामी तो सिद्दी हैं जो जंजीरे पर बैठे हैं। उन्हीं के चरणों पर अपना माथा टेक दो।"

"सिद्दी के पास जाकर हम क्या करेंगे? वहाँ तो सिर्फ पत्थर ही पत्थर है। धन धान्य और रसद की फसल तो आपके स्वराज्य में ही पकती है।"

"फिर भी, ये सिद्दी हमारे ही बच्चों को उठा ले जाते हैं और आप उन्हें ऊँची कीमत पर खरीदते हैं। इतने पर भी आप समझौते के लिए हमारे पास आते हैं?"

"माफ करें हुजूर, भविष्य में ऐसी कोई भूल हमसे नहीं होगी। हम सिद्दियों की कोई सहायता नहीं करेंगे।"

"हम भी आक्रमण कहाँ करना चाहते हैं?" कवि कलश की ओर संकेत करते हुए महाराज ने कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है? आपने थाना की खाड़ी से ही अपनी फौजें लगा दी हैं। शिव बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया है। इससे हमारे साहब लोग बहुत घबरा गये हैं। सूरत के अँग्रेजों का भी हमारे साहबों पर दबाव बढ़ रहा है। वे भी आग्रह कर रहे हैं कि शम्भू महाराज से समझौता करो। हमें अरबों से भी कठिनाई हो रही है।" स्मिथ ने कहा।

"मैंने भी सुना है कि उन्होंने आपके 'प्रेसिडेंट' या ऐसे ही किसी जहाज को डुबाने का प्रयास किया था।"

महाराज की बात सुनते ही स्मिथ और रामचन्द्र शेणवी हँसने लगे। किन्तु महाराज चकित हुए। स्मिथ ने कहा, "सम्भाजी महाराज, जिस समय उस जंगेखान ने हमारे शक्तिशाली जहाज को डुबोने का प्रयास किया था उस समय आपने ही उसकी सहायता की थी। यह बात हमें मालूम है।"

वकील की बात सुनकर महाराज और कवि कलश को हँसी आयी। किन्तु तत्काल स्मिथ ने कहा, "महाराज अब हमारी अधिक परीक्षा न लेकर मुम्बई के चारों ओर फैली अपनी जहाजों को पीछे हटा लें। समझौता आपके अनुसार होगा। हम अपनी गोदियों में केवल व्यापार करते हुए बैठे रहेंगे। हमारे कमिश्नर ने भी हमें ऐसी ही हिदायत दी है।"

चर्चा समाप्त हो गयी। महाराज ने कोई स्पष्ट निर्णय नहीं सुनाया। उन्होंने स्मिथ को फटकारते हुए कहा, "हमारे निर्णय की प्रतीक्षा कीजिए और अपनी

सीमाओं का उल्लंघन न करना।''

सन्ध्या समय किले पर ऊपर चढ़ते हुए कविराज ने महाराज से पूछा—

''राजन! तैयारी हो गयी है तो मुम्बई पर आक्रमण ही क्यों न कर दिया जाय?''

''कविराज मेरी भी हार्दिक इच्छा यही थी। परन्तु एक औरंगजेब जैसा शक्तिशाली शत्रु स्वराज्य का काल बनकर आगे बढ़ रहा है। बीच बीच में हमारे अपने लोग भी धोखा देने के लिए सिर उठाते रहते हैं। हमारी स्थिति तो आप जानते ही हैं। बाहर के शत्रुओं ने तो परेशान कर ही रखा है, कम-से कम घर वालों ने तो छोड़ दिया होता—तो...तो हमने अँग्रेजों के गर्वनर को कब का रायगढ़ बुला लिया होता और रोजन्दारी पर उससे सेवा करवाता।''

घमासान युद्ध

एक

अहमदनगर के किले में औरंगजेब बहुत बेचैन था। कोंकण में पहुँचे शहाबुद्दीनखान और गोवा की ओर गये मुअज्जम दोनों के रास्ते में उसकी आँखें टकटकी लगाए थीं। घोड़ों और साँड़नियों के सवार जल्दी जल्दी समाचार ले आ रहे थे। उद्विग्न बादशाह अपने महल के ऊपरी छत के पास की दालान में बैठा रहता था। वहाँ से किले का सिंहद्वार दिखाई पड़ता था। जब कोई हरकारा या साँड़नी द्वार पर आये और तब उसका सन्देशा ऊपर पहुँचाया जाय, इतनी प्रतीक्षा का धैर्य बादशाह में नहीं था। इसलिए बादशाह के नौकर आये हुए हरकारों को तत्काल ऊपर भेजने के लिए नीचे दौड़ते हुए जाते थे।

बादशाह को दृढ़ विश्वास था कि इस तीसरे आक्रमण में शहाबुद्दीन अवश्य ही विजयी होगा।

रात में बादशाह ने बहुत देर से खाना खाया। उससे पहले दूर दूर से आये गुप्तचरों से प्राप्त समाचारों पर सूक्ष्मता से चिन्तन करता रहा। अपने मुलायम बिस्तर पर लेटते ही वह गहरी नींद में सो गया। वह बहुत देर से अचानक उठा। निचली मंजिल से कुछ शोरगुल सुनाई पड़ा। बादशाह बड़ी चपलता से छोटे बच्चे की तरह बिस्तर से नीचे कूदा और पास में रखी धारदार नंगी तलवार लेकर घबराया हुआ झरोखे से नीचे देखने लगा।

हाथ में कोई बहुत महत्त्वपूर्ण लिफाफा लिये असदखान खड़ा था। वह मुख्य दरवान से बादशाह का जगाने का आग्रह कर रहा था।

"यह कैसे मुमकिन है, वजीरे आजम? बादशाह के इतने शहजादे पैदा हुए, उस समय भी यह खुशखबरी देने के लिए उनकी नींद खराब करने की हिम्मत किसी ने नहीं दिखाई—और आप ....?"

"क्या बात है वजीरे आज़म?" बादशाह ने कड़कते हुए पूछा।

"एक बहुत महत्त्वपूर्ण सन्देश—शहाबुद्दीन के पास से।"

"आवो, ऊपर आ जावो।"

बादशाह का संकेत पाते ही वजीर शीघ्रता से बादशाह के शयनकक्ष में पहुँच गया। तब तक बेगम उदयपुरी और दूसरी बहू बेटियाँ वहाँ पहुँच गयी थीं। बादशाह की दृष्टि जल्दी-जल्दी पत्र पर घूम गयी। वह खुशी से हँसा। उसने सोचा कि इस समाचार को राजपरिवार के अन्य लोगों को बताने में कोई हर्ज नहीं है। इसलिए उसने पत्र वजीर को दे दिया। वजीर ऊँची आवाज में पढ़ने लगा—"मेरे आका यह केवल बादशाह और खुदा की रहमत है। मैं सह्याद्रि की कठिन घाटी देवघाट को पार करने में सफल हो गया हूँ। रास्ते में सम्भाजी की गश्त लगाने वाली सेना की टुकड़ियों को मैंने जलाकर खाक कर दिया है। सैकड़ों मरगट्ठों और उनके जानवरों का कूर्मा बना दिया है। राहेरी की वाड़ी में यह शैतान सम्भा छुपा है, यह खबर मुझे मिली। तुरन्त में उस जहन्नमी का पीछा करते हुए उस ओर बढ़ा। मराठों के किले की तलहटी में बसी बस्ती को मैंने दिन में ही जला दिया। यह मुसीबत उसका अन्त कर देगी यह मूर्ख सम्भा के ध्यान में आ गया। वह काफिर तुरन्त बनबिलाव की तरह उछलकर भाग गया। अपनी जान किसी तरह बचाते हुए सम्भा रायगढ़ किले पर भाग गया है।"

बादशाह को बड़ा सन्तोष मिला। इस सन्दर्भ में उसने अपने शाही बाबर्ची को सभी के लिए शर्बत और ठंडाई ले आने के लिए आदेश दिया। यह इस तरह के पेयपान का समय नहीं था। किन्तु शाहंशाह की खुशी ही तो खुदा की मेहरबानी थी। मभी ने शर्बत ग्रहण किया। बांदशाह की आँखें आनन्द से चमक रही थीं। उनमें नशा छाया हुआ था। उसके मन की आँखों के आगे कुहरे में ढके रायगढ़ की कठिन चढ़ाई और साहसपूर्वक चढ़ते हुए शहाबुद्दीन के बहादुर सिपाही दिखाई देने लगे। उसने प्रसन्न होकर सभी को सम्बोधित किया—"शहाबुद्दीन हमारे खजाने का रत्न है। उसको हम इसी समय 'फिरोजजंग' अर्थात् 'युद्धरत्न' की उपाधि देते हैं।" बादशाह की इस घोषणा से सभी प्रसन्न हो गये।

अगले चार-पाँच दिनों में शहाबुद्दीन का दूसरा पत्र आया। "मैंने पाचाड़, रायरी आदि पर आक्रमण करके अब रायगढ़ से केवल दो कोस की दूरी पर डेरा डाल दिया है। सम्भा ने शक्तिशाली सरदार रूपा भोसले और हंबीरराव को बहुत बड़ी फौज के साथ भेजा था। बाण और बन्दूकों की भंयकर लड़ाई हुई। हमारे जोरदार आक्रमण से शत्रु सेना भाग खड़ी हुई। हमने सात कोस तक उनका पीछा किया। अन्त में बादशाह की फतह हुई।"

इस पत्र को सभी के सामने पढ़ा गया। बादशाह ने सभी को इस खुशी का आनन्द मनाने दिया। बादशाह ने तकलीया' कहकर बैठक समाप्त की और सभी को

जाने का संकेत किया। केवल असदखान को रुकने का संकेत किया।

"वजीरे-आज़म आपको क्या लगता है?"

"हजरत, आने वाली खबरें इतनी अच्छी हैं कि मुझे भी लग रहा है कि यदि हम इसी गति चलते रहे तो पन्द्रह दिनों में हम अगली बैठक रायगढ़ पर ही बुलाएँगे।"

बादशाह की कठोर मुद्रा और आशंकित भाव को देखकर वजीर ने अपनी जीभ काट ली। औरंगजेब ने बेचैन होकर कहा, "तुम लोग मुझ पर हमेशा इल्जाम लगाते हो कि बादशाह को खुशखबरी पर भी शंका होती है। इस सारे मामले में मुझे दो शंकाएँ हो रही हैं।"

"हजरत?"

"हाँ, पागल शहाबुद्दीन कहता है कि रायगढ़ से दो कोस की दूरी पर डेरा डाल रखा है। उसी खत में यह भी कहता है कि दुश्मन का सात कोस तक पीछा किया। कभी कहता है राहेरी गाँव जलाया कभी पाचाड़। अगर वह रायगढ़ के द्वार पर पाचाड़ जला रहा था तो रायगढ़ में मराठों की फौज क्या ढोल तासे बजा रही थी?"

"हाँ, और वह हंबीर मोहिते! वह तो किसी दूसरे ही इलाके में है। ऐसी खबर मिली थी। यह खबर पक्की है। मुझे तो कुछ दाल में काला लग रहा है। वजीरे आज़म आप इन बातों की फिक्र छोड़ दीजिए। इस पहेली को मैं अपने ढंग से सुलझाना चाहता हूँ।"

चार दिनों के अन्दर ही अबूमुहम्मद, रात-दिन एक करके, रायगढ़ के इलाके में घूमकर आया था। वह बादशाह से मिलने के लिए बेताब हो रहा था। औरंगजेब की आँखें भी उसी के रास्ते पर अटकी हुई थीं। अबूमुहम्मद आते ही बादशाह के महल में पहुँच गया। एक साँस में ही उसने बता दिया, "हजरत, आपके बहुत से शक एकदम सही हैं। खुशी से पागल होने जैसा अभी वहाँ कुछ हुआ ही नहीं है।"

"वह शहाबुद्दीन तो बार-बार कह रहा है कि उसने रायगढ़ की तलहटी में अनेक गाँव जला दिये!" बादशाह ने कहा।

"जहाँपनाह! वह रायगढ़ किला बहुत मजबूत है। उसकी रक्षा पर्वत और नदियों की विस्तीर्ण घाटियाँ करते हैं। कम-से-कम तीन दिशाओं से ऐसा दिखता है जैसे अपने मजबूत पैरों को मोड़कर, सूँड़ को आसमान की ओर उठाए कोई ब्राह्मी हाथी बैठा हो। इसलिए आसपास दस कोस तक के गाँवों को लगता है कि वे उसके पास ही बसे हैं।"

"और वह रायगढ़वाड़ी?"

"किले के नीचे है। वहाँ संभा के अठारह कारखाने हैं। वहाँ बगल के मैदान

में मराठों के दस बारह हजार की सेना हमेशा तैयार खड़ी रहती है। इस सेना पर राजधानी की रक्षा की जिम्मेदारी है। इसलिए वे कभी भी अपनी जगह से हटते नहीं हैं।"

"लेकिन शहाबुद्दीन तो कहता है—पाचाड़ जला दिया, वाड़ी को खाक कर दिया।"

"पाचाड़ की सीमा में दूर के जंगलों में बनाये गये जानवरों के कुछ तबेलों को उन्होंने लूटा, जलाया। उनकी फौज निजामपुर से गांगोली और पाचाड़ की सीमा तक स्वतन्त्रता से विचरण कर रही है, यह बात सच है। लेकिन अगर सम्भाजी की बात करें तो वे अभी तो गोवा की ओर ही हैं।"

इन बातों को सुनकर बादशाह को आश्चर्य हुआ। उसने क्रुद्ध होकर कहा, "यह शहाबुद्दीन इतना पागल निकला? और काफिर मरगट्ठों ने उसे इतने दिन जीवित कैसे रहने दिया?"

"जहाँपनाह! कोलाड गाँव के ऊपरी हिस्से में देवघाट पर पहरा देने वाली मराठों की सेना को खानसाहब ने तलवार के घाट उतार दिया, निजामपुर को भी भस्म कर दिया। यह सारी बातें सच हैं। किन्तु निजामपुर के पास ही ताम्हिणी नाम का बड़ा घाट है। वहाँ घनी झाड़ियाँ, गहरी नदियाँ और भयानक घाटियाँ हैं। इसी ताम्हिणी के पीछे खानसाहब ने अपना डेरा डाल रखा है। उनकी फौज दिन में निजामपुर का फेरा लगाकर रात में ताम्हिणी में आकर छुप जाती है। इतनी ही सचाई है। रायगढ़ और मराठों का शेष भाग पूरी तरह स्वतन्त्र है।"

"बेवकूफ, कमीना कहीं का।" शहाबुद्दीन के बड़बोलेपन पर बादशाह को बहुत क्रोध आया। उसने गुर्राकर कहा, "उस कमबख्त का आज ही तबादला कर देता हूँ। युद्धभूमि से उसे वापस बुलाता हूँ।"

"नहीं मालिक ऐसी भूल न करें।" अबूमुहम्मद कहने लगा, "जहाँपनाह, शिवाजी और सम्भा के इस इलाके में गढ़ और किले बहुत मजबूत हैं लेकिन वहाँ के सभी लोग बहादुर और ईमानदार नहीं हैं। ऐसे अनेक लोग हैं जो अपने छोटे से स्वार्थ के लिए अपना देश भी बेचने के लिए तैयार हैं ऐसे गद्दार भी बहुत हैं।"

"बेटे कहना क्या चाहते हो?" बादशाह ने शान्त स्वर में पूछा।

शहाबुद्दीन साहब ने चाकड़ से लेकर पूना तक के सभी सरदारों और जमींदारों को अपने पास बुलाया है। वे उन्हें धन एवं अन्य अनेक प्रकार का लालच देकर अपनी ओर मिलाने का प्रयास कर रहे हैं। वे बड़े-बड़े मरगट्ठों को अपने जाल में फँसाने की कोशिश कर रहे हैं। मेरे आका, एक बार ये खानदानी गद्दार जहाँपनाह के हाथ में आ जाएँ तो किलों को मिटाने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।"

"बस! बस! क्या तो तुम्हारा दिमाग और क्या ही गहरी सोच।" बादशाह ने

शान्त स्वर में कहा।

बाधोली घाटी से बीच के रास्ते कवि कलश की सेना रायगढ़ की ओर जा रही थी। सामने दूरी पर रायगढ़ के पीछे की बुर्ज दिखाई पड़ रही थी। उस तरफ कर्मचारियों के आवास थे। अष्ट प्रधानों के आवास से कवि कलश की दृष्टि पोतले घाटी की ओर मुड़ी, गोवा और दक्षिण कोंकण की ओर बहुत दिनों तक रहकर घोड़े, हाथी आदि राजधानी की ओर आ रहे थे। स्पष्ट रूप से रायगढ़ दिखाई पड़ते ही सैनिकों और जानवरों की गति मन्द पड़ गयी। पाँच हजार की यह बड़ी फौज घूमते-घूमते आगे बढ़ रही थी। शम्भू महाराज दो दिनों में ही वहाँ पहुँचने वाले थे। राजधानी पर मुगलों के आक्रमण की भी आशंका थी। इसलिए महाराज ने कविराज को आगे भेज दिया था।

कवि कलश ने सामने अचानक सामने धूल का गुबार देखा, तीन चार सौ घुड़सवारों का एक दल अतिशय वेग से सामने आकर पहुँच गया। कवि कलश शिलेदार मुरारी डाँगे दौड़ते हुए सामने आया और अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए चिल्लाया, "कविराज, जल्दी कीजिए रायगढ़ पर मुगलों ने आक्रमण कर दिया है।"

इन शब्दों के कान पर पड़ते ही कवि कलश का अलसाया हुआ शरीर एकाएक स्फूर्त हो गया। पीठ पर बिखरे अपने बालों को समेटकर उन्होंने गाँठ बाँधी। दूसरे ही क्षण अपने पाँव रिकेब में डालते हुए कविराज ने अपनी फौज के सम्मुख गर्जना की— 'चलोऽऽ आगे बढ़ोऽऽ हरऽहर महादेव'। एक के पीछे एक जानवर दौड़ने लगे। देखते-देखते पानी की लहर की तरह उस फौज ने पोतले की घाटी को पार कर लिया। घाटी के मुखद्वार पर आते ही दूसरी ओर का प्रदेश स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा। उसी समय कवि कलश ने अपने घोड़े को एड़ लगाई। एक क्षण में ही उनकी दृष्टि पाचाड़ और हिरकणी बुर्ज से होती हुई रायगढ़ के भव्य किले तक पहुँच गयी। किन्तु किले की तलहटी या प्रवेशद्वार के पाचाड़ के पास किसी प्रकार की गड़बड़ दिखाई नहीं पड़ रही थी। फिर कलश जी ने दूर गांगोली गाँव की ओर देखा। उस ओर आग की ऊँची लपटें दिखाई दे रही थीं। घास के गट्ठों और पुआलों के साथ-साथ घरों को जलाया जा रहा था। पूरे आसमान में धुआँ छा गया था। इसी समय मुरारी का घोड़ा दौड़ते हुए कवि कलश के घोड़े के पास पुन: आ गया। कलश ने कठोर स्वर में पूछा, "कौन है? कौन है वह शैतान?"

"औरंगजेब का सरदार शहाबुद्दीन। पिछले चार पाँच दिनों से उसने मार काट और आगजनी शुरू कर रखी है।"

"इतने दिन? रायगढ़ के इतने समीप पहुँचने की उसने हिम्मत कैसे की? चलो शत्रु को अभी अभी यहाँ से भगाएँगे।"

"हर हर महादेवऽऽ"

"छत्रपति सम्भाजी महराज की जयऽऽ"

"जय शिवाजीऽऽ, जय सम्भाजीऽऽ"

कवि कलश के शरीर में द्वेष, हठ, क्रोध, प्रतिशोध आदि का एक रसायन बन गया था। वे घोड़े की पीठ पर न बैठकर रिकेबों में, पाँव टिकाए, खड़े-खड़े ही घोड़े की लगाम खींचते हुए आगे की ओर झुक रहे थे और तेज आवाज में गर्जना कर रहे थे— 'चलऽऽ अरे तेज दौड़ऽऽ चलऽऽ।' घोड़ों की टापों और सेना की रणगर्जना से आकाश प्रतिध्वनित होने लगा। बादलों की भाँति गरजती वह फौज थोड़ी ही देर में गांगोली के मैदान में पहुँच गयी। सेना के आने से वहाँ के लोगों को ऐसा लगा जैसे कोई बहुत बड़ी लहर सूखी नदी के पाट में आ गयी हो। इस प्रकार किसी आक्रमण के प्रति असावधान मुगल सैनिक, 'अरे सम्भाऽऽ आया भागोऽऽ' ऐसा चिल्लाते हुए अपने घोड़ों की ओर भागने लगे। आग लगाने का काम छोड़कर मुगल झटपट अपने घोड़ों पर सवार होने लगे। तलवारें निकल गयीं। घोड़ों से घोड़े भिड़ने लगे मनुष्य मनुष्यों का गला काटते हुए आगे बढ़ने लगे।

गांगोली, पानोसे और जोरगाँव से लेकर निजामपुर तक के खेतों खलिहानों में लड़ाई छिड़ गयी। कवि कलश की तलवार इतने वेग से सपासप चलने लगी, एक के बाद दूसरा सिर काटने लगी कि उनका घोड़ा देखते ही मुगल सिपाही उनके सामने से भागने लगे। अखाड़े में पोषित उनका गठीला शरीर बहुत शक्तिशाली था। वे बड़े जोश के साथ शत्रुओं का सामना कर रहे थे। अपने स्वामी की अनुपस्थिति में रायगढ़ की लाज रखना उन्हीं का दायित्व है। इस भावना से वे बहुत उत्तेजित हो गये थे। कविराज की वीरता देखकर मराठा वीरों में बहुत उत्साह आ रहा था। वे कहने लगे—"कलम चलाने वाला बहादुर कवि दाडपट्टे की तरह सर सर तलवार चला रहा है तो क्या हमें पीछे रहना चाहिए।"

पिछले चार-पाँच दिनों से लूटपाट कर रहे मुगलों को ऐसे भंयकर प्रतिकार का अनुभव नहीं था। इसी असावधानी का लाभ उठाकर कवि कलश ने मैदान मार लिया। मुगलों की यह दुर्दशा देखकर, जंगलों में छुपी निवासियों की टोली बाहर आ गयी। वे कवि कलश की सेना की सहायता करने लगे।

सन्ध्या के चार बजे तक मुगलों ने सामना किया। तब तक मुगलों के लगभग तीन हजार सैनिक मारे जा चुके थे। दो-तीन सौ मराठा भी शहीद हुए। सन्ध्या समय के बढ़ते अन्धकार, कवि कलश के बढ़ते दबाव और घने जंगलों की भयानकता से शहाबुद्दीन डर गया। वह जोर से चिल्लाया—"चलो कुछ देर के लिए वापस चलो!" शत्रु सेना के मुख मोड़ते ही मराठों का उत्साह और भी बढ़ने लगा। पिछले कई दिनों से जंगलों में छुपे गाँव के सन्तप्त लोग भी बाहर निकल आये और मुगलों

का पीछा करने में मराठों के साथ हो गये। गाँव के सामान्य कुत्तों के साथ गड़ेरियों के पालतू कुत्ते भी मुगलों के पीछे दौड़ पड़े। खेतों की ऊँची नीची जमीन मे दौड़ते हुए मुगलों के घोड़े भी जगह जगह पर गिरने लगे। मुगलों के एक के बाद एक सिर कटने लगे।

'अल्लाऽऽ' 'खुदाऽऽ' 'भागोऽऽ' ऐसी चिल्लाहट सुनाई पड़ने लगी।

मराठा सेना मुगलों का पीछा करते करते ताम्हिणी घाट की तलहटी तक पहुँच गयी। मुगलों की बची-खुची सेना घने जंगलों में छिप गयी। थके हुए मराठा सैनिक रुक गये। घोड़े सूखी घास खाने लगे। साईसों ने घोड़ों को चने खिलाने शुरू किये। घुड़सवारों ने चने के साथ गुड़ और मूँगफलियाँ खड़े खड़े ही खाया और पास के झरने से पानी पीकर पूरी तरह तृप्त हो गये।

तब तक कविराज ने कुछ सूचनाएँ प्राप्त कर ली थीं। कुशल सैनिकों ने अपने हाथों में मशालें लीं और सामने के घने जंगल में घुसने का निर्णय लिया। आसपास के ग्रामीण, दर्शक और कुछ राहगीर भी मराठों के साथ हो लिये। जिस प्रकार शिकारी हाँका लगाकर बाघ को उठाते और फँसाते हैं, उसी प्रकार मराठा सेना आगे बढ़ रही थी। कवि कलश की दृष्टि कुछ खोज रही थी। उन्होंने एक नाले में पानी का बहता प्रवाह देख लिया। मशाल के प्रकाश में उन्होंने मार्ग ढूँढ़ा। काफी दूर जाने पर नाले का एक विस्तृत क्षेत्र मिला। वहाँ पानी की धारा की बगल में मुगलों का रसद भडार था। उसमें अनाज की बोरियाँ, जानवरों के चारे और बारूद के भंडार थे। उन सभी को कलश जी ने अपने क़ब्जे में ले लिया। मुगल ऊपर के घने जंगल में छुप गये थे।

लूटी हुई रसद के साथ सेना निजामपुर के समीप आ गयी। अब तक रात बहुत हो चुकी थी। चौकी पर एकत्र होकर सभी ने निर्णय लिया कि दूसरे दिन घाट में जाएँगे। पास की एक घाटी को पार करके कविराज की सेना मैदान में आ गयी। किसी ने चिल्लाकर कहा, "कविराज! उधर देखिए।" सभी की निगाहें एकाएक मुड़ गयी। ताम्हिणी घाट की ऊँची पहाड़ियाँ वहाँ से स्पष्ट दिखाई पड़ रही थीं। सितारों की छाया में मुगलों के घोड़े दबे पाँव आगे बढ़ते दिखाई दे रहे थे। एक ने कहा, "कविराज, वह देखिए। खान डरकर घाट पर चला गया।"

"जाएगा ही! उसकी सारी रसद हमारे क़ब्जे में आ गयी है, तो वह रुकेगा कैसे?" सभी लोग कविराज की प्रशंसा करने लगे, "कविराज, आज आपके शरीर में भवानी का संचार हो गया था क्या?" ऐसा पूछकर, उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा करने लगे। उस समय अखाड़ेबाजी से मजबूत बनी अपनी भुजाओं और छाती को गर्व से फुलाते हुए कविराज ने गर्व से कहा, "साथियो, किसी पागल हाथी को काबू में करना आसान है किन्तु किसी क्रुद्ध ब्राह्मण पर काबू पाना बहुत कठिन है।"

कविराज का घोड़ा निजामपुर पहुँच गया। ग्रामवासियों और घुड़सवारों की बड़ी भीड़ लग गयी थी। दूसरी ओर की एक घाटी में कलश की सेना को एक जीवित व्यक्ति मिला था। यह औरंगजेब का सरदार था। उसके हाथ-पैर बाँधकर ग्राम पंचायत में खम्भे से बाँधा गया था। वहाँ पर सभी लोग कविराज की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके आते ही लोग चिल्लाने लगे—

"कविराज, इस राक्षस का सिर धड़ से अलग कर दीजिए। शीघ्र ही इसका खात्मा कीजिए।"

घबराये हुए लगभग पैंतीस वर्ष के गोरे चिट्टे खान की ओर कलश जी ने देखा। गरजते हुए उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

"दुखलास खान हुजूर ऽऽ।"

शिकार बड़ा था और नामचीन भी। कवि कलश ने उसके हाथ-पैर खोलने का आदेश दिया। मुक्त हुए खान ने कविराज के पैर पकड़ लिये। अपने प्राण बचाने के लिए वह दया की याचना करने लगा।

"कविराज ऽ मारिए, मारिए इस शैतान को, नहीं तो हमीं इसके रक्त से अपनी तलवार लाल करेंगे।" घुड़सवार सैनिकों को बहुत क्रोध आ रहा था।

कलश ने हाथ के संकेत से सभी को शान्त रहने को कहा। उन्होंने दुखलास खान से कहा, "चल उठ भाग, भाग जा अपनी फौज की ओर।"

दुखलास खान अविश्वास मे और मराठा सैनिक असन्तोष मिश्रित आश्चर्य से कविराज की ओर देखने लगे। तब कविराज ने कड़ककर कहा, "केवल एक काम के लिए तुम्हें मुक्त कर रहा हूँ। बादशाह के पास तुम्हें जीवित भेज रहा हूँ।"

"हुजूर, हुजूर हुक्मऽऽ"—पैर पकड़ते हुए दुखलास खान पूछने लगा।

कविराज ने डाँटते हुए कहा, "जाओ, जाकर कहो अपने उस मूर्ख बादशाह से—तैमूरलंग के ग्यारहवें वंशज होने का अभिमान न करे। आक्रमण के नाम पर 'बें-बें' करती मामूली भेड़-बकरियों को सह्याद्रि के बब्बर शेरों के पास न भेजें। हमारे शम्भूमहाराज जब तक रायगढ़ के सिंहासन पर बैठे हैं, उसी समय में औरंगजेब को रायगढ़ के आस पास आकर लौट जाने के लिए कहो। केवल एक बार उसे यहाँ आने को कहो।"

दो

गोवा की सीमा पर बाँदा गाँव में बड़ी अशान्ति फैली थी। शहजादा मुअज्जम की विशाल फौज ने वहाँ डेरा डाल रखा था। इसलिए उस गाँव का स्वरूप ही बदल गया था। शहजादा कांट द आल्होर की राह देख रहा था। वाइसराय को तत्काल आकर मिलने के लिए उसने सन्देशा भेजा था। चार दिन तक प्रतीक्षा करने के बाद भी वाइसराय का आगमन नहीं हुआ। अन्ततः उसने अपने वकील अल्बुकर्क को भेज दिया। किसी मामूली वकील के साथ औरंगजेब के शहजादे का समझौता करना असंभव था। मुअज्जम बहुत रुष्ट हुआ। किन्तु समय ऐसा था कि शिकायत करें भी तो किससे?

अल्बुकर्क कन्धे झुकाए सामने खडा था। उसकी लाल शेरवानी और लम्बी टोपी की ओर शहजादे ने क्रोध से देखा। मुअज्जम गुर्राया, "तुम्हारा वाइसराय अपने आप को क्या समझता है? उसको कुछ शिष्टाचार, अदब, तमीज है कि नहीं?"

"माफी हो सरकार! वाइसराय बीमार हैं।"

"ये झूठे बहाने बन्द करो! वह सम्भा बीस हजार की फौज लेकर तुम्हारी गर्दन पर सवार था, तब जहाज मे बैठकर भागना पडा था, तुम्हारे इस कांट साहब को। चर्च के तलघर में बाप दादो के मुर्दो के सामने फूट-फूटकर रोना पड़ा था तुम लोगो को। वे दिन तुम लोगो को भूल गये हैं क्या?"

"हुजूर माफी चाहता हूँ।"

"उस सारे संकट से किसने बचाया? मुगल फौज ने ही न?"

"हुजूर नाराज न हों। पुर्तगालियों और मुगलों की यारी दोस्ती आगे भी पहले जैसी ही रहेगी। बताइए हमें मुगलों की क्या सेवा करनी है?"

"सूरत से आये हमारे जहाज कितने दिनों से समुद्र मे खड़े हैं? समझौते के अनुसार हमारी नौसेना के लिए पणजी में तत्काल व्यवस्था कीजिए।"

"जगह की व्यवस्था बाद में देख लेंगे हुजूर। पहले जहाजों पर लदे रसद को तो उतरवाइए।" अल्बुकर्क ने समझाते हुए कहा।

"ठीक है। हम कल ही अपनी जहाजों को माडवी में उतरने का हुक्म देते हैं।"

"सरकार, सरकार—मांडवी के इतने चौड़े पाट में क्यों जाते हैं? कांट साहब की इच्छा है कि आप अपनी जहाजों को कायसूव नदी में उतारें।"

पुर्तगाली वकील के उस स्वार्थपूर्ण कथन से शहजादा उत्तेजित हो गया। अपने पतले ओठों को दाँतों से दबाते हुए वह ऊँची आवाज में बोला, "तुम्हारा

वाइसराय मुझे बदमाशों का सिरताज दिखता है। मांडवी में जहाजों को उतारने से तुम्हारे मालिक को पणजी शहर के लिए खतरा लग रहा है? गिरगिट की तरह रंग बदलने और साँप की तरह समय आने पर पलट जाने में माहिर है तुम्हारा वाइसराय। मुझे तो लगता है कि हमारे अब्बाजान औरंगजेब साहब को भी वाइसराय से बहुत कुछ सीख लेना चाहिए।"

जिनकी सहायता के लिए मुगल इतनी दूर आए, उन फिरंगियों द्वारा ऐसा स्वागत किया जाएगा, ऐसी कल्पना शहजादे को नहीं थी। रामदरा को पार करके सावंतवाड़ी में प्रवेश करते ही मराठा फौज ने उसे जगह-जगह पर बहुत परेशान किया था। उसका बदला लेने के लिए ही वह सावंतवाड़ी, बाँदा, बंगुर्ला तक गोवा और हिन्द स्वराज्य की सीमा के गाँवों को जलाता हुआ आ रहा था।

सम्भाजी महाराज की दहशत से भयभीत वाइसराय अब मन मे ममझौता और शान्ति चाह रहा था इसलिए शीघ्रता से पुर्तगालियों ने सम्भाजी से समझौता कर लिया। बसई और दमण के लिए चौथ कर देना स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त कांट ने लिखित रूप में स्वीकार किया था कि वे अपने क्षेत्र में मुगलों को, औरंगजेब की फौज के लिए रसद और गोला बारूद नहीं ले जाने देंगे। यह सारा ममाचार सुनकर शहजादा ने क्रोधित होकर पूछा, "सम्भाजी विजयी हो गया क्या?"

प्रतिशोध की भावना से शहजादा अन्धा हो रहा था। साथ ही उसे शहजादा अकबर के डिचोली में होने की सूचना मिल गयी थी। उसने तत्काल छोटे से सुन्दर डिचोली गाँव पर आक्रमण कर दिया। अकबर वहाँ पर रुका नहीं था। परन्तु मुअज्जम ने क्रुद्ध होकर सम्भाजी महाराज और कवि कलश के सुन्दर महलों को तोपों से ध्वस्त कर दिया। कवि कलश द्वारा बड़े परिश्रम मे तैयार किया गया गुलाब का बगीचा हाथियों से रौंदवा दिया। शहजादे ने भतग्राम, नार्वे जैमे गाँवों को लूटा, पिलगाँव के राममन्दिर को ध्वस्त कर दिया, सप्तकोटीश्वर के मन्दिर का कलश तोड़ दिया। गोवा की सीमा पर जहाँ तहाँ ध्वंसलीला की। उसे खबर मिली कि शहजादा अकबर ने ईरान की ओर भाग जाने के लिए एक जहाज बनवाया है जो बेगुर्ला बन्दरगाह में खड़ा है। फिर क्या था मुअज्जम ने पूरे बन्दरगाह को जलाकर खाक कर दिया। परन्तु इस कार्य से उसने सूरत से आने वाली अपनो रसद को भी नष्ट कर दिया।

होशियार कांट द आल्होर ने सम्भाजी महाराज के साथ लिखित समझौता कर लिया था। समझौते के कागजातों को पुर्तगाल भेजकर खतरे में पड़े अपने वाइसराय पद को सँभाल लिया था। पणजी के तटों पर नयी तोपें लगाई गयी थीं। सम्भाजी के डर से मार्मा गोवा भेजे गये कागजात फिर से पणजी ले आये गये थे। वाइसराय

जानबूझकर मुअज्जम को टाल रहा था। औरंगजेब द्वारा सूरत से भेजी गयी रसद सामग्री को मराठों ने पहले ही जगह-जगह पर लूट लिया था। बची खुची जहाजों पर पुर्तगालियों के क़ब्ज़ा कर लिया।

किसी अनुशासित व्यवस्था के न होने से मुअज्जम को बहुत नुकसान उठाना पड़ रहा था। पिता औरंगजेब द्वारा भेजी गयी थोड़ी-बहुत रसद उसे मिली, लेकिन वह अधिक दिन टिकने वाली नहीं थी। चालीस हजार घोड़े, साठ हजार पैदल, तीन हजार ऊँट और उन्नीस सौ हाथियों की सेना थी। इतनी बड़ी संख्या की भोजन व्यवस्था सरल नहीं थी। अन्त में वही हुआ जो होना था। शहजादे की फौज को भोजन की कमी पड़ने लगी। प्रतिशोध की भावना से दक्षिण कोंकण के एक बड़े हिस्से को उसने जला दिया था। उसके दुस्परिणाम उसके सामने आने लगे। धन देने पर भी अनाज और चारे का मिलना असम्भव हो गया।

15 फरवरी, 1984 को शहजादे ने वापस लौटने का निर्णय ले लिया। गोवा में मुगलों के नौसैन्य दल स्थापित करने, दक्षिण कोंकण और रायगढ़ जीतने और अन्त में सम्भाजी को पकड़ने जैसे अनेक ख्वाव शहजादे ने देखे थे, ये सभी भव्य मन्सूबे थे। उसकी फौज ने पुन: रामदरा के रास्ते पर चलना शुरू किया।

शहजादे का थका भूखा हाथी आगे बढ़ा। शहजादे ने सामने की ओर देखा। सामने रामदरा का प्रचंड घाट दिखाई दे रहा था। भूखी फौज को साथ लेकर उसे पार करना था।

तीन

शहाबुद्दीनखान की काली छाया रायगढ़ के परिसर से बहुत दूर ही नाचकर चली गयी थी। गोवा आक्रमण से महाराज राजधानी वापस आ गए थे। एक बार भोजन करते समय महारानी ने कहा, "महाराज, गोवा भी हाथ आ गया होता तो कैसा रहता?"

"महारानी, हमने बहुत प्रयत्न किया। सफलता हमारे बहुत समीप आ गयी थी। किन्तु मुगलों के एक लाख जानवर और आदमी रामदरा का घाट उतरने लगे। हमें मजबूर होकर पीछे हटना पड़ा।"

"यह कोई महाराज की पराजय नहीं है।"

"निश्चय ही नहीं है।" शम्भूराजा ने साभिमान कहा, "उस पुर्तगाली ने

हमसे ऐसी दहशत खायी है कि सोते समय भी 'संम्भाजी, सम्भाजी' कहकर बड़बड़ाता होगा।''

''सुना है कि उन फिरंगियों ने आपके अनुसार समझौता कर लिया है?''

''बिलकुल! एक बात अच्छी हुई येसू, अब औरंगजेब कोई भी चाल चले, जंजीरा आक्रमण में सिद्दियों की और गोवा आक्रमण में फिरंगियों की कमर हमने तोड़ दी है। आगे औरंगजेब चाहे जितना फुसलाये, वे खुलेआम उसके साथ आने का नाम नहीं लेंगे।''

येसूबाई ने पूछा,''यहाँ आने से पूर्व ही यहाँ की खबरें आपके पास गोवा में कैसे पहुँचीं?''

''कौन-सी खबर?

''यही कि रायगढ़ पर शहाबुद्दीन के आक्रमण का कविराज ने किस प्रकार सामना किया और किस प्रकार उसे यहाँ से खदेड़ा?''

कविराज का नाम आते ही महाराज का हृदय भर आया। उनकी आँखें चमकने लगीं। वे प्रसन्न होकर बोले, ''सच कहूँ महारानी, कवि कलश की महिमा किसी दूसरे से सुनने की हमें आवश्यकता ही नहीं है। उनकी प्रेमपूर्ण निष्ठा और ईमानदारी का मूल्य हम दोनों के सिवा और कौन जान सकता है?''

''दोनों कौन?''

''जी हाँ! सम्भाजी के इस हृदय को और जिस भूमि पर हम आप खड़े हैं, उस मिट्टी को भी।''

भोजन के बाद महारानी को राजा से कुछ कहना था। उन्होंने महाराज से कहा, ''महाराज आपकी अनुपस्थिति में हमें एक कठोर निर्णय लेना पड़ा, राहुजी सोमनाथ, गंगाधर पन्त, वासुदेव पन्त और मानाजी मोरे को बन्दी बनाना था न?''

''अँ हाँ'', आश्चर्य से महाराज की ओर देखते हुए महारानी ने कहा, ''हमारे कुछ श्रेष्ठ लोग शहाबुद्दीन से मिलने भुलसी घाट की ओर गये थे। स्वराज्य को क्षति पहुँचाना उनका उद्देश्य था। हमने अपने आदमियों को उनके पीछे लगाकर पहले स्थिति की जाँच की फिर इस प्रकार का निर्णय लिया। ''

गद्दारों की भीड़ के कारण महाराज और महारानी दोनों परेशान हो गये थे। पिछले कई महीने से शहाबुद्दीनखान गद्दारों के स्वागत के लिए दरवाजे खोलकर स्वागत के लिए तैयार बैठा था। पूना में आने के साथ ही उसने अनेक प्रतिष्ठित मराठों और ब्राह्मणों को बुलाकर और उनका हृदय परिवर्तन करके स्वराज्य द्रोह के लिए उन्हें तैयार किया था। इससे पहले ही कान्होजी शिर्के, यशवन्त दलवी, नागोजी माने जैसे जाने-माने मराठे मुगलों की नौकरी में चले गये थे।

महारानी येसूबाई कुछ समय तक शान्त रहीं। फिर अपनी चिन्ता को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, "महाराज! ये लोग आपका विरोध करने के लिए मुगलों के गुलाम नहीं बन रहे हैं। ये तो पहले से ही गद्दार हैं।"

"यह बात सच है। मुगलों के समीप जाते ही इनके दिलों में हलचल शुरू हो जाती है। जागीर और धन के लोभियों से ही यह सारा खेल चल रहा है। सुपा के देशपांडे और मैसूर के जगदाले इसी लोभ में वहाँ चले गये—"

"येसू, इसका एक ही रामबाण उपाय है, उस कपटी औरंगजेब का जल्द से जल्द खात्मा।" महाराज ने कहा।

"महाराज, बाढ़ के पानी को घर के भीतर से शीघ्रातिशीघ्र निकाल देना चाहिए नहीं तो उसमें से सड़ांध की दुर्गन्ध आने लगती है।"

"महारानी, औरंगजेब से कड़ा सामना करने के अतिरिक्त हमने पिछले अनेक वर्षों में कोई और कार्य किया है?" महाराज कुछ दुखी स्वर में बोले, "येसू, यह सामान्य बाढ़ नहीं है। मुगलों के पाँच लाख मनुष्यों और चार लाख जानवरों का यह महासागर महाराष्ट्र पर उमड़ आया है। उसमें कुछ सूखी लकड़ियाँ भी तैर रही हैं। किन्तु आप रंचमात्र भी चिन्ता न करें। मेरी उम्र क्या है? छब्बीस वर्ष और औरंगजेब छियासठ वर्ष का। ईश्वर ने अगर इस देह को सलामत रखा तो देखना। एक न एक दिन जैसे कोई मदारी अपने प्रिय भालू को रस्सी में बाँधकर बाजार मे घुमाता है उसी तरह उस पापी औरंगजेब के पैरों मे बेड़ियाँ डालकर दक्षिण के पठारों पर हमें नचाना है।"

पूना के आसपास मुगलों की घुसपैठ बढ़ती जा रही थी। अपने लोगों और किलों की रक्षा के लिए जी तोड़ कोशिश कर रहे थे। घाटियों, घाटों, मैदानों आदि सभी जगहों पर मुगल-मराठा युद्ध हो रहा था। शम्भूमहाराज ने अपनी सेना में वृद्धि की थी। गद्दार मराठों पर कड़ी नजर रखने पर भी उनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही थी। कुछ मराठे अपनी निष्ठा का केवल दिखावा करते थे। गद्दारों के स्वागत के लिए औरंगजेब रेशमी वस्त्रों की गाँठ लकर बैठा था।

एक दिन राजा के पास खंडो बल्लाल आये। उन्होंने सिर नीचा करके कहा, "महाराज, जिन मराठा सरदारों को निष्ठावान मानकर उनका गौरव करते रहे हैं वे गद्दार निकले। कारी गाँव के शिवाजी जेधे ने अहमदनगर जाकर बादशाह की गुलामी कबूल कर ली।

"शिवाजी जेधे ने उस ओर जाते-जाते अपने ही देश की बर्बादी की है। उसके साथ ही उसका छोटा भाई सर्जेराव भी मुगलो की सेवा में जाने वाला था। लेकिन उसी समय राजा ने विचित्र गढ़ के सन्ताजी निंबालकर को उसके पास भेज

दिया। विचार-विमर्श कर उसके हृदय परिवर्तन के लिए कहा। गद्दारों के इस बर्ताव से शम्भूमहाराजा कुछ दिनों तक बहुत चिड़चिड़े हो गये थे। उनके स्वभाव की सरलता नष्ट हो गयी थी सारे शरीर में कठोरता और कड़ुआहट भर आयी थी। महारानी येसूबाई ने कहा, "महाराज, थोड़ा धैर्य धारण करें।"

"येसू अगर कोई छोटा बच्चा हठ करने लगे तो उसके मुँह में चुटकी भर शक्कर डालकर उसे बहलाया जा सकता है। किन्तु यदि बड़े लोग कृतघ्नतापूर्वक विश्वासघात करने लगें तो उनका क्या किया जाए?"

शम्भूराजा हर दिशा में चिन्तित थे। उन्होंने खंडो बल्लाल, रामचन्द्र पन्त अमात्य और कवि कलश की सहायता से मराठा सरदारों और वतनदारों की एक सूची तैयार की। औरंगजेब से मिलने वाले सरदारों मनाना शुरू किया। कुछ लोगों को स्तुतिपरक पत्र भेजे गये। बहुतों की प्रशंसा की गयी। कवि कलश और खंडो बल्लाल बहुतों से स्वयं जाकर मिले। इससे जेधे जैसे लोग जो शत्रु से जा मिले थे उन्हें भी अपनी मातृभूमि की याद आने लगी। यह सूचना मिलते ही राजा ने खंडो बल्लाल को अपने पास बुलाया और तत्काल पत्र लिखवाया—

"पहले आपने ही गद्दारी की। हमारे राज्य में वतनदार के रूप में आपने ईमानदारी का व्यवहार नहीं किया। इतने दिनों हमारे अन्न पर पलकर भी नमकहरामी की। आपकी बुद्धि इस तरह भ्रष्ट हुई कि चार दिन के मेहमान मुगलों से जा मिले। मुगलों ने भी आपका आदर नहीं किया। इसलिए अब आप फिर मुड़कर देख रहे हैं। एकनिष्ठता, ईमानदारी जैसे शब्दों में पवित्रता की सुगन्ध होती है, उसका भी कुछ ध्यान रखिये, किसी बदचलन स्त्री की भाँति एक ही समय दस दहलीजें लाँघने की बुरी आदत छोड़ दीजिये।"

चार वर्ष बीत चुके थे। शम्भूमहाराज और औरंगजेब का युद्ध समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा था। एक दोपहर की शान्त बेला में शम्भूमहाराज ने महारानी येसूबाई से कहा—

"येसू न औरंगजेब की फतह हो रही है और न हमें ही विजयश्री प्राप्त हो रही है। इस तरह यह युद्ध कब तक चलता रहेगा? कभी कभी मुझे लगता है कि यह कलियुग ही हम दोनों के साथ खिलवाड़ कर रहा है।"

कहते कहते महाराज रुक गये। पिछले संघर्ष के कुछ क्षण उन्हें स्मरण होने लगे। जंजीरा की खाड़ी में अथक परिश्रम से बनाया गया वह पुल, जो पूर्ण होने के समीप पहुँच गया था, उनकी आँखों के सामने खड़ा हो गया। कल्याण में मुगल फौज के उत्पात से जंजीरे की योजना दर किनार हो गयी थी। गोवा की चर्च के कंगूरे पर भगवा झंडा फहराने का समय एकदम समीप आ गया था, किन्तु उसी

समय मुअज्जम की एक लाख की फौज रामदरा उतरने लगी। उन सभी दिनों का स्मरण महाराज को होने लगा। उन्होंने कहा--

"येसूरानी जब हम गोवा से जल्दबाजी में वापस आ रहे थे और सावन्तवाड़ी के तालाव में अपनी विशाल फौज का प्रतिबिम्ब देखा तो हमारी आँखें भर आयी थीं। वह निर्यति हमारे साथ ऐसा खिलवाड़ क्यों करती है? यह तो ऐसा हो रहा है कि हम शिखर को पदाक्रान्त करने के लिए शिखर तक दौड़ लगाएँ और वहाँ पहुँचने पर शिखर ही ढहकर गिर जाए। यह तो ऐसे ही हो रहा है जैसे गहचे में खेल रहे बच्चे की गेंद छुपाकर कोई दुष्ट उसे परेशान करे। यह कलियुग हमारे पास तक पहुँचे यश को बार बार टुकड़े टुकड़े कर दे रहा है। यह मेरे साथ ऐसा विचित्र खेल क्यों खेल रहा है?"

चार

शहजादा मुअज्जम की फौज रामदरा का दुर्गम घाट चढ़ रही थी। बेगुर्ला के इलाके में शाही फौज की दशा पहले ही बहुत दयनीय हो चुकी थी। अभी भी आगे तीन मील की सँकरे रास्ते वाली खड़ी चढ़ाई थी। रास्ते के दोनों ओर कँटीली झाड़ियों के घने जंगल थे।

दक्षिण कोंकण की शुष्क हवा मुगल सिपाहियों और जानवरों को अनुकूल नहीं पड़ रही थी। कई जानवर बीमार होकर मृत्यु के शिकार बने। तीन-चार महीनों में अनाज का भंडार समाप्त हो चुका था। शम्भूमहाराज यद्यपि स्वयं रायगढ़ चले गये थे किन्तु सेना की अनेक टुकड़ियाँ उन्होंने पीछे नियुक्त कर रखी थीं। घने जंगलों में छुपकर बैठे ये मराठा वीर शान्त नहीं बैठे थे। वे अवसर देखकर मुगल सेना पर तूफान की तरह टूट पड़ते थे और उन्हें भारी क्षति पहुँचाकर जंगलों में गायब हो जाते थे। अब तक मुगल सेना का बहुत नुकसान हो चुका था।

अन्ततः अनेक रोगों से ग्रस्त होकर मनुष्य और जानवर बड़ी संख्या में मरने लगे तब शहजादे को विवश होकर घाट से लौट जाने का निर्णय लेना पड़ा। उस प्रतिकूल जलवायु वाले क्षेत्र में मुगल सेना युद्ध करने के लिए तैयार न थी। मुगल सेना का मनोबल टूट चुका था।

परिस्थितियों के थपेड़ों से जूझता शहजादा कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर

रहा था। उसके चेहरे पर उदासी छा गयी थी। रामदरा घाट की चढ़ाई मुगल सेना के लिए वस्तुतः श्मशान घाट की ही यात्रा थी। रुग्ण होने के कारण अनेक हाथी, ऊँट और घोड़े घाट पर चढ़ते-चढ़ते गिरकर दम तोड़ रहे थे। ऊँटों को केवल रेगिस्तानी रेत और उत्तर की मुलायम मिट्टी की ही आदत थी। यहाँ के पथरीले रास्तों और पहाड़ों में वे हैरान हो गये थे। अनेक ऊँटों ने इस चढ़ाई पर ही अपने प्राण छोड़ दिये। अनेक हाथियों और घोड़ों के कंकाल वहीं पर बिखर गये। जानवरों की लाशों से उठने वाली दुर्गन्ध से दूसरे लोग और पशु बीमार पड़ने लगे। उन्हें उल्टियाँ आने लगीं। उन्हें अनेक प्रकार की बीमारियाँ होने लगीं। इसी बीच मराठों की सेनाएँ घने जंगलों से निकलकर उन पर तूफानी आक्रमण करती थीं और उनकी कमर तोड़कर जंगलों में छिप जाती थीं।

इस दुर्दैवी घाट को पार करने में मुगल सेना को आठ दिन लग गये। सेना का बुरा हाल था। चालीस हजार सैनिकों में केवल नौ-दस हजार सैनिक ही बचे थे। जो बचे थे उन्हें सैनिक तो क्या आदमी कहना भी मुश्किल था। वे तो मात्र चलती-फिरती लाश थे। जिनके घोड़े मर गये थे उनके पास नया घोड़ा खरीदने के लिए पैसा नहीं था जिनके पास पैसे थे उन्हें नये घोड़े मिल नहीं रहे थे। लोग इतने कमजोर हो गये थे कि किसी प्रकार साँस ले रहे थे।

अपने पुत्र की दुर्दशा का समाचार बादशाह को मिला। उसने तत्काल शहजादे की फौज की सहायता के पच्चीस हजार अशर्फियाँ, पाँच ऊँट, पच्चीस खच्चरों और सौ घोड़े पर लदी रसद और वस्त्र भेजा। किन्तु इससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा। शहजादे के नये कपड़े भी काले पड़ गये थे। व्याधियों की काली छाया उसके शरीर पर भी दिखाई देने लगी थी।

एक मरियल घोड़े पर बैठा शहजादा मुअज्जम बादशाह के तम्बू के पास पहुँच गया। जनानखाने की औरतें उसकी ओर करुण भाव से देखने लगीं। उसका शरीर जर्जर हो गया था। एक भिखारी की अवस्था में शहजादे को देखकर अनेक लोगों की आँखों में आँसू आ गये।

वजीर असदखान मुअज्जम के सामने आया। रिश्ते में शहजादा उसके पोते की तरह था। अपने तम्बू में ले जाकर उसने मुअज्जम को फलाहार कराया। किन्तु मुअज्जम का शरीर इतना रुग्ण या कि मीठी-चीजें भी उसे जहर की तरह कड़वी लग रही थीं।

मुअज्जम को धीरज बँधाते हुए असदखान उसे बादशाह के भव्य तम्बू में लेकर गया। औरंगजेब मुजज्जम को रुष्ट निगाह से देख रहा था। अपने बायें हाथ से सफेद दाढ़ी को सहलाते हुए और दूसरे हाथ से जयमाला को छाती से छुआते हुए उसने मुअज्जम की ओर देखा। 'इतनी दुर्दशा होने पर मेरा बाप कुछ पूछ नहीं रहा

है' यह सोचकर मुअज्जम को बहुत बुरा लगा। जोर से हाँफते हुए उसने रुआँसी आवाज में कहा, "अब्बाजान बहुत तकलीफ हुई। वहाँ की खराब हवा..."

"बेटे तकलीफ तो होगी ही। निश्चित किये गये रास्ते को बदल देने से खराब हालत तो होंगे ही।"

अपने पिता के व्यंग्य को शहजादे ने पहचान लिया। उसने बड़ी मासूमियत से कहा, "आपको कोई गलतफहमी..."

"गलतफहती कैसी? हमारा पहला मकसद क्या था? पूना की ओर से शहाबुद्दीन कोंकण में पहुँच रहा था और आपको राजापुर पोलादपुर से होते हुए महाड़ पहुँचना था। वहाँ पर आप और शहाबुद्दीन को इकट्ठा होकर रायगढ़ पर आक्रमण करना था। यही निश्चित किया गया था।"

"अब्बाजान पर्याप्त रसद न मिल पाने से सेना में अकाल पड़ गया। उस पुर्तगाली कांटसाहब ने हमें फँसाया।"

"मुअज्जम, इन सारी बातों को यहाँ पर बन्द करो।" बादशाह गुर्राया— "खाली इतना बता दो कि कोंकण के बताये गये रास्ते को छोड़कर आपके पाँव रामदरा की ओर कैसे मुड़ गये?"

"लेकिन जहाँपनाह...?"

"आप अन्धे तो नहीं थे। फिर आपकी आँखों-पट्टी किसने बाँध रखी थी? कौन? कौन था वह जादूगर? रायगढ़ पर रहने वाला? सम्भा?"

औरंगजेब का स्पष्ट प्रश्न सुनकर शहजादा निराश हो गया। उसका मन हुआ कि बादशाह का पैर पकड़कर वह फूट फूट कर रोये। परन्तु इस समय उसके शरीर में उतनी भी शक्ति नहीं बची थी। रुआँसी आवाज में वह बोला, "अब्बाजान रहम कीजिए। हमारी जिन्दगी की यह दुर्दशा देखकर भी ऐसा जानलेवा मजाक न करें।"

"बेटे जहाँ हवा भी नहीं पहुँचती वहाँ भी मेरे जासूस पहुँच जाते हैं। यह बात शहजादा होने के नाते आपको अवश्य मालूम होगी।" औरंगजेब ने उदासभाव से कहा, "वहाँ रहते हुए उस सम्भा के जासूस आपको दो-बार मिले थे।"

"कबूल अब्बाजान। राजनीति में अपने दुश्मन को नष्ट करने के लिए हर कोई ऐसे खेल खेलता है बात इतनी-सी है कि ऐसे किसी लालच का शिकार आपका शहजादा नहीं हुआ।"

"क्या पता!"

"ऐसा कैसे हो सकता है अब्बाजान?" मुअज्जम की मीठी आवाज सन्तप्त हो गयी। उसने रुष्ट स्वर में कहा, "यदि सम्भा के दूतों का हमारे डेरे में आना आपको दिख जाता है तो जब पन्द्रह दिन तक हम रामदरा घाट चढ़ रहे थे, सम्भा के सैनिक हमारे ऊपर आक्रमण कर रहे थे, हमारी चमड़ी उघेड़ रहे थे, अपने बाणों से

हमारी आँखें फोड़ रहे थे तो बादशाह को क्यों नहीं दिखाई पड़ा?"

क्रोध से अपने ओंठ चबाते हुए गरजा, "लड़ने वाले बहादुर अपने मित्रों के क्षेत्र में सेना लेकर नहीं जाते। उन्हें कष्ट देना ठीक नहीं। इसी इरादे से आप पहाड़, पोलादपुर की ओर गये ही नहीं—छोड़ो उस बात को! पहले यह बताओ कि वह पैसा कहाँ है?"

"अब्बाजान पैसा तो सारा समाप्त हो गया। इसीलिए तो हमारी सेना की यह दुर्दशा हुई।"

"वह नहीं, कहाँ है सम्भा द्वारा दी गयी रिश्वत?"

मुअज्जम को सूझ नहीं रहा था कि अपने शंकालु पिता के इस प्रश्न क्या उत्तर दे? इसलिए निराश होकर वह अपने शिविर में चला गया। वहाँ अपनी खिड़कियाँ, दरवाजे बन्द करके अपने आप से बातें करने लगा। वह एक पागल की भाँति अपने को कोसने लगा। अपने आप से ही वह बोला, "जाते समय तकलीफ, वहाँ पहुँचने पर मुसीबत, आते समय जानलेवा मुसीबत, यहाँ लौटने पर ऐसा लांछन। या खुदा! कैसी फूटी तकदीर है हमारी?"

पाँच

सखूबाई निंबालकर शम्भूमहाराज से सात वर्ष बड़ी थीं। उन्हें शम्भूमहाराज के प्रति बड़ी ममता थी। किन्तु अम्बिकाबाई के पति को कर्नाटक की सूबेदारी मिल जाने के बाद गृह कलह आरम्भ हो गया। एक दिन शम्भूराजा के जीजा महादजी निंबालकर और सखूबाई जिद करने लगे। युद्धभूमि में हजारों के सामने दृढ़ और अविचल बने रहने वाले शम्भूमहाराज गृह कलह के कारण विचलित हो गये थे। उनके भीतर हलचल मची हुई थी।

सखूबाई का यही कहना था, "आपने जो व्यवहार महाड़िक परिवार के साथ किया है वही हमारे साथ भी होना चाहिए।

"ऐसा क्या दे दिया है हमने उन्हें?" महाराज ने पूछा।

"जिंजी और कर्नाटक की सूबेदारी।"

"दीदीजी आपको कोई गलतफहमी हुई है! हमने हरजी महाराज को कर्नाटक की सूबेदारी दी है, जागीर नहीं? सखूबाई बहुत नाराज नजर आ रही थीं। उन्होंने झटके से कहा, "शम्भूराजा, रिश्तेदारों के बीच ऐसा भेद-भाव अखिर

क्यों ?''

शम्भूमहाराज अत्यन्त गम्भीर हो गये। येसूबाई की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहें ? तब सखूबाई रुष्ट स्वर में स्वयं को ही दोष देकर कहने लगी, ''सारी भूल मुझसे हुई। मैंने ही निंबालकर को मिन्नत करके रोका। मैंने कहा—छोटा भाई राजा बन रहा है तो मुगलों की चाकरी क्यों करना ?''

''अब अपने किये कराये का फल भोगो...'' महादजी ने कहा। ''शम्भूमहाराज यदि आपने महाडिकों को कुछ न दिया होता तो हम भी अपना मुँह कभी न खोलते। किन्तु बिना किसी त्याग या सेवा के उन्होंने दक्षिण का सूबा प्राप्त कर लिया और हम पागल की तरह देखते रहे।''

''दिल्ली के बादशाह से जागीर मिली थी, लेकिन आप हमें भाई के स्वराज्य में खींचकर ले आयीं। हमारे लिए तो स्वार्थी स्वजनों से वह मुगल ही अच्छा था।'' महादजी ने गुर्राते हुए कहा।

महादजी और बहन सखूबाई की बातें तीर की तरह चुभ रही थीं। अन्त में शंभुमहराज ने कहा, ''दीदीजी हमारा हिंदवी स्वराज्य जनता का मन्दिर है। पिताजी ऐसा ही मानते थे और मैं भी उसी दृष्टि से स्वराज्य की ओर देखता हूँ। आप चाहे जितना भी हठ करें, हम अलग से कोई जागीर किसी को दे नहीं सकते।''

दीदी सखूबाई और महादजी चुप हो गये। दूसरे दिन उनकी पालकियाँ रायगढ से नीचे उतरकर चली गयीं।

दक्षिण अभियान

एक

एक दिन सुबह-सुबह शहरबानू ने अपने ससुर औरंगजेब से भेंट की इजाज़त माँगी। इससे बादशाह को कुछ आश्चर्य हुआ। शहरबानू ही नहीं किसी भी पुत्रवधू को यदि किसी चीज की आवश्यकता होती थी तो वह अपनी माँग उदयपुरी बेगम के सामने रखती थी। वैसे शहरबानू बहुत सुन्दर थी। वह बीजापुर की शहजादी थी। शहजादा आजम के साथ उसका विवाह हुआ था। छाती तक खिंचे हुए महीन घूँघट में भी उसकी आँखें विलक्षण रूप से चमकती थीं। इस अचानक भेंट का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए शहरबानू ने धीमे स्वर में कहा—

"जिल्लेसुभानी, आपकी सल्तनत मेरे लिए मक्का-मदीना है फिर भी मुझे लगता है कि मेरे अब्बाजान की नगरी बीजापुर और मुगलों के बीच किसी प्रकार का झगड़ा नहीं होना चाहिए। इसके लिए मैंने बुरहानपुर से आगे बढ़ने से पहले ही सर्जाखान को एक सन्देश भेजा है। मैंने उन्हें समझाया है कि बादशाह की फौज की मदद करो और काफिरों को मिटा दो।"

"बहुत खूब बेटी।" सहज रूप से बादशाह के मुख से निकला। बादशाह का स्वर ठंडा था— "तुम्हारा दिल पाक है किन्तु बीजापुर वालों का दिमाग ठिकाने पर नहीं है।" बादशाह ने बगल की मेज पर रखी कागज की थैलियों की ओर शहरबानू का ध्यान आकर्षित करते हुए कठोर शब्दों में कहा, "बेटी, ये कुतुबशाह, आदिलशाह और उस सम्भा के आपसी पत्र हैं जिसे हमारे थानेदारों और जासूसों ने इकट्‌ठा किया है। मुझे दक्खन में न घुसने देने का और मदण्णा तथा सम्भा जैसे काफिरों की औलादों की रक्षा करना इन बेवकूफों का इरादा है। बेटी तुम्हारी कोशिश के लिए शुक्रिया, लेकिन उस आदिलशाह में तो हमारे पत्रों का उत्तर देने की भी तमीज नहीं है। एक न एक दिन हमें बीजापुर को खाक करना ही पड़ेगा।"

बादशाह को कोर्निस करते हुए और उसे बिना पीठ दिखाए, रुष्टभाव से वहाँ

चली गयी। बादशाह ने बीजापुर के सम्बन्ध में वजीर से सहज ही पूछा, "असदखान! काफिरों के मददगार उस आदिल शाह पर कब आक्रमण करना है?"

"पिछले कई दशकों में आक्रमण करने की हिम्मत किसी ने की नहीं, फतह की बात तो बहुत दूर की है।"

"क्या?" बादशाह का चेहरा तमतमा गया।

"बादशाह सलामत! उस नापाक शहर के चारों ओर अतिशय मजबूत ढाई मील की तटबन्दी है। उसके साथ बहुत गहरी खाई है। उस तटबन्दी के भीतर एक और तटबन्दी है जो फौलाद की तरह मजबूत है उनके बुर्जों पर 'मालिक-ए-मैदान' जैसी बड़ी बड़ी तोपें हैं। ये तोपें बहुत दूर तक मार करने वाली हैं।"

बादशाह ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। केवल आसमान की ओर एक बार देखा। उसी दोपहर को शाहंशाह की बैठक में जुल्फिकारखान दौड़ते हुए आया और कहने लगा, "जिल्लेसुभानी, बहुत अच्छी खबर है, उस सम्भा के चार बड़े सरदार विद्रोही हो गये हैं। आपसे मिलने के लिए बाहर इन्तजार कर रहे हैं।"

बादशाह ने हाथ के संकेत से स्वीकृति प्रदान की। तब थोड़ी ही देर में कान्होजी शिर्के जगदेव राय, अर्जोजी और अचलोजी आकर बादशाह के सामने खड़े हो गये। उन्होंने जमीन पर माथा टेककर बादशाह को साष्टांग प्रणाम किया।

"क्या चाहते हो?" बादशाह ने सीधा प्रश्न किया।

"माई बाप, हमी नहीं, बहुत से मराठे खानदान उस सम्भाजी से रुष्ट हैं। उसके पास कोई न्याय व्यवस्था बची नहीं है।" कान्होजी ने अत्यन्त दीन वाणी में कहा।

"तुम्हारे हिन्दवी स्वराज्य का क्या है?"

"किस स्वराज्य की बात कर रहे हैं माई-बाप? वह तो पानी का बुलबुला है। किसी भी समय फूट जाएगा। शिवाजी ने काशी से ब्राह्मण बुलाकर अपने ऊपर फूलों की वर्षा करवाई और राजा बनने का नाटक किया। लेकिन इस तरह का दिखावा कितने दिन चलेगा?"

"असल में क्या चाहते हो, आप लोग?"

"दूसरा कुछ नहीं हम पहले के वतनदार है। उस जागीर को हमारे और हमारे बाल बच्चों के नाम कर दीजिए। हम मराठे मालिक नहीं, किसी का मांडलिक बनने के लिए जन्म लेते हैं।"

"बहुत खूब! शिर्के तुम बहुत चतुर दिखाई पड़ते हो। गणोजी तुम्हारे कौन लगते हैं?"

"सगे चचेरे भाई।"

उन चारों सरदारों ने कुछ भी न माँगने की होशियारी दिखाई थी। किन्तु

बादशाह मूर्ख नहीं था। उसने सभी को दो दो हजार की मनसबदारी लिख दी। वजीर से शाही वस्त्र भी दिलवा दिया। चारों ने कृतकृत्य भाव से बादशाह की चरण वंदना की और बाहर चले गये।

उन चारों के पीछे एक पैंसठ वर्ष का बूढ़ा खड़ा था उसकी छोटी छोटी दाढ़ी, टोपी और आँखों में लगे काजल से लगता था कि वह हिन्दू नहीं है। बादशाह की नजर उस पर पड़ते ही जुल्फिकारखान ने कहा, "किब्लाये आलम, ये हैं काजी हैदर! शिवाजी के समय से रायगढ़ में रहकर मुंसिफ के रूप में काम करते रहे हैं।"

चारों सरदार चले गये थे और काजी हैदर वहाँ अकेले उपस्थित थे। हैदर की ओर देखते हुए बादशाह ने हँसकर कहा, "दुश्मनों की सेवा करना अपने आप मे बड़ी नाइन्साफी है तो रायगढ़ पर रहकर इतने वर्ष आप कौन सी इन्साफी कर रहे थे?"

"गुस्ताखी माफ, हुज़ूर! शिवाजी जैसा राजा हमें सौभाग्य से मिला। उनके दरबार में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को समान रूप से न्याय मिलता था।"

"काजी पहले यह बताओ कि शिवाजी और सम्भा ने कितनी मस्जिदें तोड़ी?"

"बादशाह सलामत, एक भी नहीं।" काजी हैदर ने अत्यन्त मन्द स्वर में कहा, "इतना ही नहीं हुज़ूर! रायगढ़ पर एक छोटी सी मस्जिद बनाने की स्वीकृति शिवाजी ने मुझे दी थी सरकारी खर्च से मस्जिद खड़ी की गयी। दो महीने पहले मैंने रायगढ़ छोड़ा तब तक मस्जिद पूरी तरह सलामत थी।"

काजी हैदर को घूरते हुए बादशाह ने प्रश्न किया, "तुम्हारी मूर्खताभरी बातों को सुनकर लगता है कि रायगढ़ स्वर्ग है तो वहाँ के सुख को छोड़कर तुम हमारे पास क्यों आना चाहते हो?"

"बादशाह सलामत, आजकल मुझे वहाँ के कर्मचारियों और अधिकारियों से बहुत भय लगने लगा था। जो लोग अपने अन्नदाता स्वामी को मारने की दो दो बार कोशिश कर चुके हों, उनका क्या विश्वास और मैं तो था भी अकेला मुसलमान।"

बादशाह ने पुनः एक बार अपनी आँखें बन्द कर लीं। काजी ने अपनी जयमाला को छाती से छुआया। कुरान की किसी आयत का स्मरण किया। काजी हैदर की बुद्धि एवं वफादारी की परीक्षा लेने के लिए उसने सीधा प्रश्न किया— "काजी हमें सच सच बताइए। पाँच लाख की फौज साढ़े तीन लाख घोड़े हम दक्खन की छाती पर नचा रहे हैं। मेरी इतनी बड़ी फौज के चारों ओर फैले रहने पर भी एक चूहे का नन्हा सा बच्चा हमारे साथ इतनी धृष्टता कर रहा है उसके पीछे असली ताकत क्या है?"

बादशाह के इस प्रश्न पर काजी हैदर विहँसते हुए बोला, "बादशाह सलामत चूहे का बच्चा जिस बिल में रहता है उसे लोग सह्याद्रि पर्वत कहते हैं। वहाँ

आपको ऊपर तो मिट्टी दिखाई देगी लेकिन नीचे कठोर चट्टानें हैं। उस पर सिर पटके बिना उस पत्थर को जाति कैसे समझ में आएगी? वह जहरीला सह्याद्रि पर्वत पत्थरों का है, फौलाद का है।''

''और?''

''और क्या जहाँपनाह—इसके पहले मराठों और बीजापुर के आदिलशाह के बीच कई लड़ाइयाँ हुई। किन्तु इस ममय गोलकुंडा के कुतुबशाह और बीजापुर के सिकन्दर आदिलशाह तथा सह्याद्रि के कन्धे पर सवार सम्भाजी, दक्षिण की ये शक्तियाँ दिल-दिमाग से एक हो गयी हैं। जब तक इन तीनों के आपसी बन्धन टूटते नहीं या उनमें दरार नहीं पड़ती तक तक आपकी मुराद पूरी नहीं हो सकती।''

दो

26 अप्रैल, 1684 का दिन था। शम्भूमहाराज वीरवाड़ी के किले में रुके हुए थे। अँग्रेजों और मराठों के बीच बहुत दिनों से विलम्बित एक महत्त्वपूर्ण सन्धि होने वाली थी। मराठों के वकील प्रह्लाद निराजी और अँग्रेजों के वकील स्मिथ की भागदौड़ चालू थी। पिछले कुछ महीनों मे मुम्बई के चारों ओर अपनी सेना की घोरबन्दी करके सम्भाजी ने अँग्रेजों की नाक मे दम कर दिया था। मुम्बई के अँग्रेज घबरा गये थे। उन्होंने सूरत वाले अँग्रेजों से परामर्श किया। ईस्ट इंडिया कम्पनी को अपने सूरत के अधिकारियों पर अधिक भरोसा था। इसके साथ ही वसई बिरार से लेकर गोवा तक सम्भाजी महाराज ने फिरंगियों पर दबाव डालना शुरू कर दिया था। इसके अतिरिक्त मराठों ने केलवा, दन्तोरा, सारगाँव, माहिम और सोपारा चौकियां पर क़ब्जा कर लिया था। इससे अँग्रेज बहुत भयभीत हो गये थे।

चाइल्ड और वॉर्ड नामक अधिकारियों के अत्याचार से मुम्बई की जनता उनके विरुद्ध आन्दोलन कर रही थी। इस विद्रोह के कारण ही कम्पनी सरकार ने रिचर्ड केजविन की मुम्बई के गवर्नर के रूप में नियुक्ति की थी। 'रिचर्ड' के साथ सम्भाजी महाराज ने कुछ अच्छे सम्बन्ध बना लिए थे। सम्भाजी महाराज एक ओर समझौते की बात कर रहे थे किन्तु दूसरी ओर से सेना का दबाव भी बनाए जा रहे थे।

गवर्नर केजविन ने अपने दो अधिकारियों, कैप्टन गॅरी और थामस विल्किन्स

को सम्भाजी के पास वीरवाड़ी भेज दिया था। शम्भूराजा का दबाव कम हो और अँग्रेज चैन की नीद सो सकें इसके लिए वे समझौते के लिए तैयार थे। महाराज ने किले के वकीली महल में अँग्रेज वकीलों का स्वागत किया। अनेक गाँवों के अमलदार और सेना के बहुत से लोग वीरवाड़ी में एकत्र हो गये थे। वहाँ पर मेले जैसी भीड़ एकत्र हो गयी थी।

प्रात:काल में ही सम्भाजी महाराज ने निराजी को बुलाकर मेहमानों की व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की। उस समय प्रह्लाद निराजी ने धीरे से कहा, "महाराज आपकी इच्छानुसार सौदे की बात की जाती तो कितना अच्छा होता? "

"कौन-सा सौदा?"

"अँग्रेजों से मुम्बई खरीदने का सौदा।"

महाराज प्रसन्नतापूर्वक हँसकर बोले, "पन्त हमने कुछ कम प्रयास नहीं किया। मुम्बई के लिए अँग्रेजों को हम चालीस हजार पगोडा रकत देने को हम तैयार थे। वह रकम आगे चलकर अस्सी हजार तक पहुँच गयी तो ठीक था। मुम्बई की बन्दरगाह सचमुच कुबेर के खजाने की चाभी है इसे पाने के लिए हमारा मन कब से व्याकुल हो रहा है।"

"तो महाराज घोड़ा रुक कहाँ गया?"

"गवर्नर केजविन तो मुम्बई को हमारी झोली में डालकर पीछे हटने को तैयार था। किन्तु उन धूर्त सूरत वालों के कारण सौदा टूट गया। सिद्दियों ने सूरत वालों से कहा था, "यदि मराठों का कब्जा मुम्बई पर हो गया हमें जलसमाधि लेनी पड़ेगी।" "पन्त, अब क्या कहें भाग्य ने मेरे साथ एकबार फिर खिलवाड़ किया।"

विचार-विमर्श के लिए बैठक का समय समीप आ रहा था। मसौदे के कागजों पर महाराज ने एक नजर डाली। उसी समय बैठक के लिए विशेष रूप से खड़े किये गये तम्बू में दुभाषिया राम शेणवी साहब लोगों को लेकर आ गया। मुख्य रूप से अँग्रेजों को जगह-जगह पर गोदियाँ बनाने की स्वीकृति सम्भाजी से लेनी थी। जिंजी और मद्रास की ओर अँग्रेजों का विशेष ध्यान था। यह तटीय प्रदेश मराठों के अधिकार में था। गोदामें बनाने के लिए महाराज की अनुमति मिलते ही कैप्टेन गॅरी बेहद प्रसन्न हो गये। दूसरे ही क्षण उसके उत्साह को कम करते हुए महाराज ने कहा, "आप प्रसन्नता से अपने व्यापार और उद्योग बढ़ाइए। किन्तु गोदामें बनाने के नाम पर अपने गढ़ और किले बनाने की कोशिश न करें। कितनी जगह पर आप गोदाम बनाएँगे इसकी सूचना भी पहले देनी होगी। इसका स्पष्ट उल्लेख इसी समय इस सन्धिपत्र में होना चाहिए।"

महाराज की बात सुनकर गॅरी चुप हो गया। अपने सहकारियों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए उसने महाराज से कुछ समय माँगा। एक घंटे के

अन्तराल से पुनः चर्चा आरम्भ हुई। अपनी पिछली बात को आगे बढ़ाते हुए शम्भूमहाराज ने कहा, ''जिस प्रकार व्यापारी बाजारों में अपनी दुकानें लगाते हैं उसी तरह गोदामें तैयार कीजिए, किले नहीं।''

''महाराज हमें थोड़ी अधिक सहूलियत दीजिए।'' गॅरी ने कहा। अन्त में दोनों पक्षों ने समझौता किया। गोदामों की लम्बाई 60 कोविद चौड़ाई 15 कोविद, ऊँचाई ढाई कोविद निश्चित की गयी और उसे दोनों पक्षों ने स्वीकार कर लिया।

शम्भूमहाराज ने प्रश्न किया, ''आपकी गोदामों की दीवारों की चौड़ाई कितनी होगी?''

''अब जाने भी दीजिए महाराज।'' गॅरी साहब ने हँसते हुए कहा।

''गोदामों की दीवारें किलों की तरह नहीं बनतीं। इस सम्बन्ध में भी इसी समय निश्चित कर लेना चाहिए।''

दीवार की चौड़ाई आधी कोविद निश्चित की गयी। राजापुर की गोदाम बनाते समय शिवाजी महाराज ने अँग्रेजों से जो कर्ज लिया था। उसे नीति धर्म के अनुसार देना शम्भूमहाराज ने स्वीकार किया। निश्चित किया गया कि कर्ज की रकम के बदले अँग्रेज नारियल और सुपारी खरीदेंगे। नागोठणें और पेन में भी गोदाम बनाने की स्वीकृति अँग्रेजों को दी गयी। किन्तु महाराज ने कैप्टेन गॅरी से स्पष्ट कहा कि यातायात और आयात निर्यात पर कर लिया जाएगा। इसमें किसी प्रकार की छूट नहीं दी जाएगी।

अँग्रेज अपनी गोदामों और दुकानों में यहाँ के कितने लोगों को कार्य के लिए नियुक्त करेंगे, इसकी सूची स्थानीय सूबेदार या अदलदार को देना अँग्रेजों के लिए अनिवार्य होगा। यह भी निश्चित किया गया कि जिन लोगों को अँग्रेज काम पर रखेंगे उसकी पूर्व अनुमति लेना आवश्यक होगा। अन्त में महाराज ने अपने मन की बात पूछ ली, ''कैप्टेन गॅरी साहब, गुलाम लड़कों का क्या करते हैं?''

''महाराज, अब यह मुद्दा किसलिए उठा रहे हैं? आपके पिता गुलामों के लिए चौगुना चुंगी लगाते थे, आप छः गुना, आठ गुना ले लें। यहाँ उद्योग या व्यापार चलाने के लिए गुलाम हमारे लिए आवश्यक होते हैं?''

''गुलाम के नाम पर मनुष्यों के साथ कुत्तों, घोड़ों और गधों जैसा व्यवहार हमें स्वीकार नहीं। जंजीरे का वह हैवान सिद्दी हमारे कोंकणी लड़कों को भगाकर ले जाता है और मुँहमाँगी कीमत लेकर मुम्बई में बेच देता है और तुम लोग अपनी रकम वसूलने के लिए उनकी पीठ की चमड़ी उधेड़ देते हो। बिना नहाये धोये ही ये बच्चे महीनों का समय गुजार देते हैं। इस प्रकार का अत्याचार हम अपने राज्य में नहीं चलने देंगे।''

शम्भूमहाराज के शब्दों में इतनी दृढ़ता थी कि कैप्टेन गॅरी और उनके साथी

मुँह खोलने की हिम्मत न कर सके। उसी प्रवाह में महाराज ने वह भी कह दिया, "मेरी दृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने धर्म के अनुसार आचरण करने का अधिकार है।"

"महाराज! वह तो प्रत्येक के लिए होता ही है।" कैप्टेन गॅरी बोला।

"गॅरी साहब, सचाई कुछ अलग है। आपके पादरी लोग हिन्दुओं को जबरदस्ती ईसाई बनाते हैं। इसी उद्देश्य से मुम्बई और अन्य बाजारों में मनुष्यों की बिक्री होती है। यह अमानवीय व्यवहार भी बन्द होना चाहिए।"

कैप्टेन गॅरी ने यह भी स्वीकार किया। इस प्रकार अँग्रेजों और मराठों के सन्धिपत्र के सातवें क्रमांक पर स्पष्ट शब्दों में लिखा गया—'हमारे राज्य में किसी भी मनुष्य को गुलाम या ईसाई बनाने के लिए अँग्रेजों के द्वारा खरीदा नहीं जाएगा।'

सन्धिपत्र पर मुहर लगा दी गयी। उपहारों का लेन देन हुआ। मुम्बई के अँग्रेजों की मंडली प्रसन्नतापूर्वक वीरवाड़ी से बाहर निकली। महाराज का अभिवादन करते हुए प्रह्लाद निराजी ने चिन्तित स्वर में कहा, "महाराज, आपकी इच्छानुसार यदि मुम्बई मिल गयी होती...।"

"मुम्बई हमें अवश्य मिलेगी, पन्त! औरंगजेब के साथ जीवन-मरण की इस लड़ाई से हमें मुक्त होने दीजिए। एक ओर औरंगजेब की कब्र तैयार होगी और दूसरी ओर मुम्बई पर क़ब्ज़ा होगा।"

शम्भूमहाराज की आँखों में एक नयी चमक दिखाई पड़ी। हाथ की मुट्ठियाँ बाँधते हुए उन्होंने कहा, "मुम्बई हमारी ही भूमि का हिस्सा है। प्राकृतिक रूप से हमीं उसके स्वामी हैं। विश्व व्यापार की चाभी हमारे हाथ में होनी चाहिए इसके लिए अँग्रेजों को हम मुँहमाँगा मूल्य देने को तैयार हैं। किन्तु यदि इस तरीके से वे देने को तैयार न होंगे तो हमारी तलवार किस दिन के लिए है?"

तीन

शम्भूमहाराज को यह प्रातःकाल बहुत सौभाग्यसूचक लग रहा था। वे बड़े गर्व से अर्जोजी यादव की ओर देख रहे थे। अर्जोजी ने स्वराज्य में अनेक इमारतों का निर्माण कर यश कमाया था। किन्तु आज का उनका साहस उनके यश का शीर्ष बिन्दु बन गया था। हंबीरराव ने अहमदनगर के किले की तटबन्दी तोड़कर प्रवेश करने का

प्रयास अनेक बार किया था। बहादुरगढ़ की तटबन्दी में सुरंग लगाकर घुसने की कोशिश अनेक बार की गयी थी। किन्तु शम्भूमहाराज के किसी भी सहयोगी या सरकार को दुर्गादेवी और राणूबाई तक पहुँचने में सफलता नहीं मिल पायी थी। साहसी बहुरूपी अर्जोजी ने वह कार्य कर दिखाया था।

काशी वाले कपड़ा व्यापारी के रूप में अर्जोजी दुर्गादेवी से जाकर मिले थे। बहादुरगढ़ से वे सभी साहिबा का एक गुप्त पत्र भी ले आये थे। महाराज ने अधीरता से दो-तीन बार पढ़ा। फिर दुर्गादेवी, राणू दीदी और अपनी कभी न देखी हुई बेटी के बारे में पुनः पुनः पूछने लगे। अर्जोजी भी उसी बात को बार बार दुहरा रहे थे। किन्तु उसी बात को बार बार सुनने पर भी शम्भूमहाराज और येसूबाई के कान तृप्त नहीं हो रहे थे।

अर्जोजी बहुत देर तक बातें करते रहे। महाराज ने लाखों के मूल्य वाले उस पत्र को एक बार पुनः पढ़ा—

"प्रतिदिन उगते सूर्य के साथ आपकी स्मृति दीप्त होती है किन्तु सूर्य के डूबने के साथ बुझ जाती है। रात खाने को दौड़ती है मनुष्य के पास यदि दर्पण है तो वह उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखता है। एक दृष्टि से मुझे भाग्यवान कहना चाहिए। आपकी बेटी राजकुमारी कमलजा का सान्निध्य हमारे सुख का महत्त्वपूर्ण अंश है। उसके सुन्दर गौररूप की ओर मैं जब भी देखती हूँ तो आपकी कामदेव जैसी पौरुषेय प्रतिमा मेरी आँखों के सामने खड़ी हो जाती है।

लाखों लाख के वैभव वाले रायगढ़ की राजकुमारी बादशाह के बन्दीखाने में जन्मी। किन्तु है वह बहुत सुन्दर, हँसमुख, वाचाल और अपने जन्मदाता की भाँति निर्भीक और साहसी। बादशाह की शहजादी उससे पैंतीस वर्ष बड़ी है। किन्तु शहजादी को अपनी राजकुमारी से बहुत लगाव है।

स्वामी, यदि आपको स्मरण हो वह रायगढ के ऊपर का अनेक रंगों के कमलों से भरा हुआ वह तालाब। जब स्वामी किले पर होते थे तो बिना भूले हमारे लिए एक श्वेत रंग का कमल ले आते थे। उसी का स्मरण करके मैंने अपनी बेटी का नाम 'कमलजा' रखा है।

अपने पर्वत जैसे पिता और हजारों किलों के राजा रायगढ़ को आँख भर देखने के लिए राजकुमारी बहुत उत्सुक हैं। स्वामी आपसे बिछड़े हमें आठ वर्ष हो गये। ईश्वर ही जाने कि आपके चरणों का दर्शन कब हो सकेगा। किन्तु कमलजा आपका और रायगढ़ का स्मरण निरन्तर करती रहती है। हम उस पर नाराज होते हैं। उससे कहते हैं कि बन्दीखाने में रहकर अधिक अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। पर जानते हैं? अपनी राजकुमारी क्या कहती है—'माताजी, कृष्ण भगवान हमारी तरह कारागार में नहीं पैदा हुए थे क्या? भगवान की इस सारी दौलत और सारे संसार से हमें क्या

लेना-देना है? हमें तो एक बार सिर्फ एक बार अपने पिता की गोद में सिर रखना है। भगवान शिव की तरह के अपने पितामह के रायगढ़ को देखना है।'

स्वामी, राजकुमारी की देखभाल के लिए मैं और उसकी राणू बुआ पूरी तरह सक्षम हैं। कभी न कभी इस अन्धकार का पर्दा अवश्य हटेगा। उसकी इतनी क्या चिन्ता? आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। हमारे लिए जान को जोखिम में डालने की कोई आवश्यकता नहीं है। यहाँ भोजन वस्त्र की कोई कमी नहीं है। राजपरिवार के बन्दियों को सब कुछ दिया जाता है। पंच पकवान रोज ही बनता है किन्तु अपनी रसोई की रोटी का स्वाद कुछ और ही होता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। तुलजा भवानी की कृपा से आपकी और कमलजा की भेंट कभी-न-कभी अवश्य होगी।''

उस पत्र को पढ़ते पढ़ते शम्भूमहाराज की आँखें भर आयीं। येसूबाई की आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित थी। उन दोनों को धीरज बँधाते हुए अर्जोजी कहने लगे—''एक बात तो सत्य है महाराज, आपके परिवार को उस कारागार में खाने-पीने, रहने आदि की कोई कमी नहीं है। औरंगजेब राजबन्दियों के बाल-बच्चों का इतना ध्यान क्यों देता है? मैंने इस बात की बड़ी सूक्ष्मता से पूछताछ की। मुझे इस सम्बन्ध में जो जानकारी मिली वह कहानी बड़ी अनोखी है।''

''कौन-सी?''

''औरंगजेब के पिता शाहजहाँ ने अपने पिता जहाँगीर के विरुद्ध बगावत का ऐलान किया था। उस समय जहाँगीर ने औरंगजेब को उसके भाइयों के साथ अपने जुन्नर में रखा था। उन दिनों उसकी दशा कुत्ते से भी बदतर हो गयी थी। उसकी स्मृति बादशाह के दिमाग से कभी मिटी नहीं। इसीलिए वह राजबन्दियों और उनके बाल बच्चों का इतना ध्यान रखता है, उन पर दया करता है।''

चार

बादशाह के डेरे में पिछले दो-तीन दिनों से हलचल मची हुई थी। सेना को डेरे डंडे के साथ बाहर निकलने का आदेश हुआ था। इसलिए कनातों और सामानों से भरी ऊँट गाड़ियाँ, पीठ पर रसद के बोरे लादे हजारों बैल, अहमदनगर से बाहर निकल रहे थे। बादशाह ने सेना को दो दिनों के भीतर सोलापुर की दिशा में अभियान करने

का आदेश दिया था। आलमगीर के मन में क्या योजना चल रही थी। इसका अनुमान किसी को नहीं लग रहा था। इतना स्पष्ट दिखाई पड रहा था कि वे किसी कारण से बहुत चिन्तित हैं।

दरबार में बैठा बादशाह अपने हरकारों और गुप्तचरों के पत्रों को बड़ी बारीकी से पढ रहा था। शहजादा आजम की सेना बीजापुर क्षेत्र में उधम मचा रही थी। उसने नागोठणे के किले को घेर लिया था। शेख उल इस्लाम साहब को दक्षिण के दोनों राजाओं को बादशाह का क्रोध पसन्द नहीं था। शिया हो या सुन्नी, दोनों अल्लाह के बच्चे हैं। आज बादशाह संतृप्त था फिर भी उसके चेहरे पर चमक थी। शेख साहब ने यह देखते हुए साहस करके कहा, ''किब्लाए आलम, आखिर तो बच्चे ही हैं। उनकी बात को मन पर इतना क्यों लेना ?''

''कौन बच्चे हैं ?'

जहाँपनाह, वह हैदराबाद का कुतुबशाह एक अय्याश है और बीजापुर के सिकन्दर आदिलशाह की उम्र अभी पन्द्रह सोलह की ''

बौखलाये बादशाह ने शेखसाहब से स्पष्ट शब्दों में कहा ''इन दोनों को नष्ट करने से ही मरगठ्ठों की कमर हमेशा के लिए टूटेगी। मैसूर का चिक्कदेवराज इस प्रकार की सूचना मुझे बार बार दे रहा है। इसके अतिरिक्त इन दोनो की उम्र से हमें कुछ लेना देना नहीं है। उनकी मूर्खता और मूर्खता की राजनीति खुदा को भी पसन्द नहीं आएगी। हैदराबाद गोलकुंडा का वह शाह भरे दरबार में सारंगी बजाता है, सुनने वालों से वाहवाही लूटता है। हर शुक्रवार को चारमीनार चोक पर बीस हजार लड़कियाँ, बाजारू औरतों, नर्तकियों को इकट्ठा करके नचाने गवाने का नंगा नाच करता है। वह प्रजा की और खुदा की सेवा कैसे करेगा ?''

बादशाह को अचानक कुछ याद आया। उसने तुरन्त बरामदखान को बुलवाया, ''बरामद, इसके पहले हमने उस बदमाश आदिलशाह के सामने अपनी कुछ माँगें रखी थीं। उसका कोई जवाब आया कि नहीं ?''

बरामदखान घबरा गया। बादशाह शेख उल इस्लाम की भाव भंगिमा का निरीक्षण करने लगा। खान से आदिलशाह का कटु जवाब पढ़ा नहीं जा रहा था। बादशाह की भौंहें टेढ़ी हो गयीं। खान घबराकर पत्र पढ़ने लगा—''बीजापुर के क्षेत्र में नयी चौकियाँ बनाने की इजाजत क्यों माँग रहे हो ? इसके पहले बिना हमारी इजाजत के तुमने बना ली हैं उन्हें तुरन्त नष्ट कर दो। शाहंशाह को यदि सम्भाजी पर चढ़ाई करनी है तो खुशी-खुशी अपने या सम्भाजी के क्षेत्र से होकर जाएँ। उसके लिए हम अपने क्षेत्र की डेढ़ बीता जमीन भी देने वाले नहीं हैं। इसके अतिरिक्त शिवाजी और सम्भाजी का प्रदेश भी मूलरूप से आदिलशाह का ही है इसलिए

बादशाह को उस पर भी नजर नहीं डालनी चाहिए।"

इस जवाब से वहाँ के सभी लोग चकित हो गये। बादशाह के विरुद्ध किसी ने इतनी हिम्मत दिखाई हो ऐसा बादशाह को स्मरण नहीं था। बादशाह ने बरामदखान से पूछा, "हमारी दूसरी माँग क्या थी आदिलशाह से? वह भी पढ़िए।"

"सर्जाखान नाम के अपने सेनापति को नौकरी से निकालकर उसे बीजापुर से बाहर निकालिए।"

"हूँ, उस पर उस मूर्ख ने क्या जवाब दिया है?"

"...यह हमारा व्यक्तिगत मामला है। इसके अतिरिक्त सर्जाखान हमारे सिपहसालार हैं। यह औरंगजेब साहब को मालूम नहीं है क्या? वे आज जिस पद पर हैं कल भी उसी पद पर रहेंगे। उल्टे हम उनकी तनख्वाह बढ़ाने का विचार कर रहे हैं।"

"...बसऽ!" औरंगजेब के धैर्य का बाँध टूट गया। दरबार के सभी लोग चुप थे। औरंगजेब का सन्ताप उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था। तीव्र ज्वर से ग्रस्त कोई व्यक्ति जैसे बड़बड़ाने लगता है वैसी ही मनःस्थिति औरंगजेब की थी। वह अपने को न सँभाल पाने के कारण गरजा, "आदिलशाह हो या कुतुबशाह दोनों ही हरामजादे हैं। यह कुतुबशाह अल्ला की सल्तनत में कभी भी ईमानदार नहीं रहा। उस नापाक सम्भा के साथ मैसूर वालों से लड़ने के लिए दस हजार की फौज भेजता है। अपने दरबार में मादण्णा और आकण्णा नाम के दो हिन्दू पंडितों को प्रधान बनाया है। इस्लामी हुकूमत और हिन्दू प्रधानमन्त्री कैसी बेवकूफ राजनीति है वह? बोलो शेख साहब?"

"तौबाऽ तौबाऽऽ"। बाकी लोगों ने भी बादशाह की हाँ में हाँ मिलाई।

"यह कुतुबशाह नानाशाह इतना मक्कार है कि क्या बताऊँ? कुछ वर्ष पूर्व वह शिवाजी भोसला इससे मिलने के लिए गया था। उस समय इसी गधे ने शिवाजी के घोड़े को रत्नों का हार पहनाया था। घोड़े के गले में रत्नों का हार पहनाकर उनका स्वागत किया था। साथ ही एक लाख की राशि सालाना तनख्वाह देना भी स्वीकार किया। उन मादण्णा और आकण्णा जैसे हेलकट वैष्णव ब्राह्मणों के हाथ में राज्य का सारा कार्यभार सौंपने वाला कुतुबशाह इस्लाम के नाम पर एक धब्बा है।"

बादशाह के असीम सन्ताप, उसके चढ़ते हुए स्वर को देखकर वज़ीर असदखान, बरामदखान और विशेष रूप से शेख उल-इस्लाम सभी चुप थे। "काफिर सम्भाजी की रक्षा करने वाले दोनों हरामखोर अपना मन नहीं बदलते तो

आलमगीर की तलवार में कितनी धार है? यह इन जहन्नमियों को दिखाना ही पड़ेगा।''

बादशाह के इस वक्तव्य से दरबार में सन्नाटा छा गया। इसी समय कोने का पर्दा हिला। काँच की दंडियों की खनक के साथ एक कोमल और आवाज सुनाई पड़ी। ''लेकिन खाविन्द आज सारी दुनिया में एक ईरान के बादशाह को छोड़कर आपके अतिरिक्त इस्लाम का रखवाला दूसरा है कौन?''

''कौन?''

सभी की दृष्टि उसी ओर घूम गयी। बादशाह की लाडली शहजादी जीनतउन्निसा वहाँ खड़ी थी। उसके जालीदार घूँघट में उसका गोरा और तेजस्वी चेहरा दमक रहा था।

बादशाह तुरन्त उठकर खड़ा हो गया। अपने दरबारी कामकाज में घर की बहू बेगमों और शहजादियों की दखलन्दाजी उसे बिलकुल पसन्द न थी। लेकिन उसकी प्रिय शहजादी के अचानक ऐसी भूल करने से वह बहुत दुखी हुआ। वह दरबार में रुका नहीं। क्रोध में पैर पटकते हुए वह अपने निजी कक्ष में पहुँच गया। शेख काजी जैसे धर्मात्मा को टक्कर देने वाला बादशाह अपनी शहजादी की मूर्खता से बहुत दुखी हो गया था। उसके पीछे पीछे जीनतउन्निसा भी घबराई हुई भागी भागी आयी। उदयपुरी बेगम और औरंगाबादी बेगम के साथ सभी बेगमें घबरा गयी थीं। बादशाह के चेहरे का रंग एकदम बदल गया था। रात को खाना खाते समय बादशाह ने पूछा, ''बेटी, आज दोपहर को तुम्हें क्या हो गया था?''

''अब्बाजान, मैं तो अपने मजहब के लिए बोली थी।''

''बेटी जीनत, तुम्हें मालूम है कि नहीं, जेबुन्निसा मेरी कितनी प्रिय शहजादी थी? पर उस मूर्ख शहजादा अकबर के बहकावे में आकर हमेशा के लिए उस सलीमगढ़ की अँधेरी कोठरी में कैद हो गयी। शहजादी होकर भी राजनीति के कार्यक्षेत्र में दखलन्दाजी क्यों करती हो?''

किसी अज्ञात भय के कारण बादशाह के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने कातर स्वर में कहा, ''बेटी जीनत, आज मैं सिर्फ इतना बताना चाहता हूँ कि मैं अपनी एक और शहजादी हमेशा के लिए खोना नहीं चाहता।''

''रहम करो! अब्बा रहम करो।'' शहजादी ने हाथ जोड़ लिये।

''मुझे लगा आपको मुहब्बत हो गयी है।''

''कैसी मुहब्बत, अब्बाजान?''

''उस काफिर के लिए. सम्भा के लिए।'' बादशाह ने अपनी नजरें शहजादी पर गड़ा दीं।

''वह तो मुझसे पन्द्रह बीस साल छोटा है, मेरे भाई जैसा है।''

औरंगजेब ने कुछ अधिक नहीं कहा। किन्तु बादशाह के इस आक्षेप से शहजादी बहुत पीड़ित हुई। उसने सुबक-सुबक कर रोना शुरू कर दिया। बादशाह का हृदय द्रवित हुआ। अपनी शहजादी के सिर पर प्रेम से हाथ फेरते हुए उसने भावुक होकर कहा, ''बेटी तुम्हारी सच्ची मुहब्बत अपने अब्बा की तरह अपने मजहब—इस्लाम—से है। वह मुझे भी अच्छी तरह पता है। लेकिन जिन दो इस्लामी राज्यों के लिए तुम्हें दया आती है, जिनके लिए हमारे शेख काजी भी नाराज होते हैं, वे दोनों हुकूमतें काफिर की दोस्त और अल्लाह की दुश्मन हैं।''

जीनतउन्निसा ने कुछ अविश्वास से अपने पिता की ओर देखा। उसी समय बादशाह ने एक पत्र निकाला। उसे शहजादी के सामने करते हुए बोला, ''देख बेटी यह कुछ दिन पहले हैदराबाद के उस मूर्ख कुतुबशाह द्वारा बीजापुर के आदिलशाह को लिखा गया पत्र है। इसे हमारे जासूसों ने प्राप्त किया है। इसके मजमून को पढ़ो।''

शहजादी की दृष्टि पत्र पर घूमने लगी।

'भाईजान सिकन्दर आदिलशाह,

औरंग बादशाह ने शहजादा आजम को आपके राज्य में दबाव डालने के लिए भेजा है। किन्तु आप उसकी जरा भी चिन्ता न करें। मैं शीघ्र ही चालीस हजार की कुतुबशाही फौज आपकी सहायता के लिए भेज रहा हूँ। सम्भाजी राजा के हंबीर मामा, मिरज, अथणी, बारूगढ़, महिमानगढ़ से जत तक के प्रदेश में तहलका मचा रहे हैं। बादशाह की फौज को हैरान करके आपकी मदद कर रहे हैं, यह हमें भी मालूम है। दक्खन देश हमारी तीनों हुकूमतों को औरंगजेब को हैरान करके निश्चित रूप से यमुना के तट पर भगाना है। देखें यह दिल्ली का बूढ़ा हमारे दक्खिनी दिमाग के आगे कब तक टिकता है? आप जरा भी न घबराएँ। मैं और सम्भाजी राजा पूरी शक्ति से आपके पीछे खड़े हैं।

आपका भाई

तानाशाह अबुल हसन कुतुबशाह

उस पत्र को पढ़कर शहजादी को असलियत समझ में आ गयी। समय से अपनी आँख खोल देने के लिए उसने अपने अब्बा बादशाह का आभार माना। शहजादी के समझ लेने पर बादशाह आनन्दित हुआ और रात को उसे बहुत देर से नींद आयी। किन्तु वह रात बादशाह के लिए सुखकर नहीं सिद्ध हुई। सवेरे सवेरे उसका मुख्य जासूस दरवाजे पर दस्तक देने लगा। बादशाह आँख मलते हुए उठा तो दरवाजे पर असदखान और बरामदखान को खड़ा पाया। बादशाह ने परिस्थिति की गम्भीरता का अनुमान कर लिया। उनको लेकर वह स्नानगृह में चला गया। घबराया हुआ वजीर बताने लगा, ''बादशाह सलामत, बहुत बुरी खबर है।''

"क्या हुआ?"

"अपना पाँच हजार घुड़सवारों का एक दल, हमारे साथ गद्दारी करके रात को भाग गया।"

"कहाँ? सम्भा के पास?"

"खबर उतनी बुरी तो नहीं है।" वजीर ने सँभलते हुए कहा।

"वे सभी बैजापुर की ओर से दिल्ली, आगरा की ओर भाग गये।"

"क्यों? उन्हें तनख्वाह नहीं मिली?"

"दक्खन उन्हें आये आज पाँच वर्ष हो गये। उन्हें तनख्वाह मिलती है। खाने-पीने की भी कोई कमी नहीं है। किन्तु उन पागलों को अपने बाल-बच्चों की बहुत याद आ रही थी। जहाँपनाह अपनी जिन्दगी में उन्होंने इतनी लम्बी लड़ाई कभी देखी ही नहीं थी।"

"यह बात ठीक नहीं, वजीर। आज पाँच हजार गये, कल दस हजार जाएँगे, बाद में पाँच लाख जाएँगे। इस प्रकार एक-एक करके सारी शाही फौज टूट जाएगी।"

"फिर क्या हुक्म है, मेरे मालिक?"

चाहे तो चौगुनी फौज उनके पीछे भेजो, किन्तु उनकी मुस्कें चढ़ाकर खींचते हुए उन्हें पीछे ले जाओ।" बादशाह कहते-कहते रुक गया। बहुत गम्भीर होकर कहने लगा—"राजमहल में सौ खम्भे हैं। उनमें यदि एकाध आड़ा-तिरछा हो गया तो क्या बिगड़ेगा? ऐसा सोचने की मूर्खता न करो। इस प्रकार के घमंड और ऐसी मूर्खता का जिन्दगी में कोई उपयोग नहीं है। यह विनाश की शुरुआत है। बुद्धिमान व्यक्ति को इससे सीख लेनी चाहिए।"

पाँच

औरंगाबाद से दिल्ली की ओर भागती अपनी सेना को पकड़ने में औरंगजेब सफल हो गया। औरंगजेब उन सभी भगोड़े सैनिकों को समाप्त कर देने का विचार बना रहा था। किन्तु इस प्रकार के कठोर निर्णय लेने का वह समय नहीं था।

बादशाह बहुत देर तक बेचैनी के साथ बैठा रहा। अन्त में उसने वजीर से कहा, "शरीर से थकी फौज को नयी रसद पहुँचाकर तरोताजा किया जा सकता है।

किन्तु मन से थकी हुई फौज चिन्ता का विषय बन जाती है। हमें एक बात बताओ, अनाज, लिवास, तनख्वाह छोड़कर इन मूर्खो को और क्या चाहिए।''

''एक विजय।''

''मतलब!''

''आलमपनाह, पिछले पाँच-छः वर्षों में अपनी फौज ने एक लड़ाई जीती नहीं है। वह नन्हा-सा रामशेज आज भी हमारे क़ब्ज़े में नहीं आ रहा है। अगले कुछ महीने अथवा वर्ष में सम्भाजी पराजित होगा, ऐसा दिखाई नहीं पड़ता। हजरत, सम्भा के किले सचमुच फौलाद के बने हैं।''

''फिर उसी सम्भा और उसकी फौज की तारीफ?'' बादशाह ने घूरा।

''तारीफ नहीं हजरत, यह हकीकत है।'' बरामदखान बीच में बोल पड़ा। ''मराठों की फौज एक अद्‌भुत चमत्कार है, जिल्लेसुभानी। अपनी विजय बिना निश्चित किये वह सम्भा और हंबीरराव मैदान में आते ही नहीं। हथियार से हथियार भिड़ाते ही नहीं।''

''तो बड़ी फौज लेकर जाओ।''

''बड़ी फौज की गन्ध पाते ही मराठे छूमन्तर हो जाते हैं। भूतों की तरह पेड़ों और पहाड़ों में कहाँ अदृश्य हो जाते हैं, कुछ पता ही नहीं चलता। पीछा करना बन्द किया कि तूफानी गति से हमारे ऊपर आक्रमण करते हैं। हवा और पानी की लहरों की तरह उठते हैं।''

''किन्तु आज अपनी फौज की दिमागी हालत बिगड़ी है। उसका क्या?'' औरंगजेब ने महत्त्वपूर्ण मुद्दा उपस्थित किया।

बादशाह के प्रश्न पर सभी ने स्वीकृति में सिर हिलाया। असदखान ने स्वीकारोक्ति में कहा, ''जहाँपनाह, इसमें कोई शक नहीं कि अपनी सेना का दिल टूट गया है रामदरा घाट में इन मराठों ने खड़ी घास जला दी लेकिन हमारे घोड़ों को घास-दाना खाने नहीं दिया। हजरत, रामशेज का किला तो भूतखाना ही है।''

दरबार उठ गया। बादशाह के माथे से चिन्ता की लकीरें मिट नहीं रही थीं। अपना ओंठ चबाते हुए बादशाह ने कहा, ''वजीरे आजम, इन सभी बातों का एक ही मतलब है। सम्भा, गोलकुंडा के कुतुबशाह और बीजापुर के आदिलशाह की मित्रता को पहले तोड़ना होगा। यदि मराठों के प्रदेश पर जीत सम्भव नहीं हो पाती तो और कहीं सही। हमारी फौज को विजय की जरूरत है—जरूरत है।''

''जी, जहाँपनाह।''

''इन दोनों इस्लामी हुकूमतों से मराठों को मिलने वाली गुप्त सहायता तुरन्त बन्द होनी चाहिए। इसके लिए पहले इन दोनों इस्लामी हुकूमतों को नेस्तनाबूद करना है। उसके बाद पहाड़ के उस चूहे के बच्चे को पकड़कर कुचल देने के अलावा हमारे हाथ में बचा ही क्या है?''

छह

गोलकुंडा और भागानगरी का ऐश्वर्य और वैभव ऐसा था कि उसकी तुलना स्वर्ग से की जाती थी। पास के हैदराबाद शहर की शानो शौकत भी बेजोड़ थी।

हमेशा की तरह कुतुबशाह अबुल हसन सन्ध्या समय से ही नाच गान आनन्द में डूबा हुआ था। भरे दरबार में सारंगी बजाना उसे बहुत अच्छा लगाता था। गुणीजन उसकी प्रशसा करते थे। किन्तु शुष्क राजनीति में उसका मन जरा भी नहीं लगता था।

भागानगर के क्षेत्र में असख्य तालाब थे। उस क्षेत्र में अनेक छोटे मोटे बाँध बाँधे गये थे। भरपूर फसलों और फलों के बगीचों के कारण गोलकुडा की कुतुबशाही में कमाल की समृद्धि आ गयी थी। मुसी नदी के किनारे बसे हैदराबाद नगर में चौड़ी चौड़ी सड़कें बनी थीं। औरगजेब को गद्दी पर बैठे तेईस-चौबीस वर्ष हो चुके थे। इतनी लम्बी अवधि मे कुतुबशाही पर कोई भी आक्रमण नहीं हुआ था। इसलिए यहाँ की समृद्धि निरन्तर बढती गयी।

आज भी महफिल में बड़ी रौनक आयी थी। ऊँची नक्शीदार ईरानी वेशभूषा और पट्टेदार किमाँश में तानाशाह का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक लग रहा था। उसके किमाँश के तुर्रे में जड़े माणिक्य के चाँद सितारों की चमक विलक्षण आभा से मंडित थी। स्वर्ग की अप्सराओं की भाँति सुन्दर युवतियाँ उसके आसन के सामने नृत्य कर रही थीं। तानाशाह का काल साहित्य, सौन्दर्य, नृत्य आदि की दृष्टि से स्वर्णकाल लग रहा था। हैदराबाद और भागानगरी में बीस हजार से अधिक गणिकाएँ, तवायफे और नर्तकियाँ रहती थीं। प्रत्येक शुक्रवार को राजमहल के भव्य चौक में हजार हजार नर्तकियाँ अपनी कला प्रदर्शित करती थीं। अलिन्द में बैठकर तानाशाह इस स्वर्ग सुख का आनन्द लूटता था। पूरे हैदराबाद का वातावरण रसीला और नशीला था। पिछले अनेक वर्षो मे तोपों और बन्दूकों की आवाज सुनाई नहीं पड़ी थी। वहाँ तबले, हारमोनियम की आवाज और घुँघरुओं की छनक रोज सुनाई पड़ती थी। गन्धक और तोप गोले बारूद के व्यापारी विनाश के कगार पर थे। लेकिन मोगरे की बेड़ियाँ बेचने वालों ने अपने महल खडे कर लिये थे।

हर रोज की तरह आज भी तानाशाह राजमहल की सन्ध्या महफिल में नशे से बेहोश हो [illegible] थे। उसी समय मजबूत कदकाठी के, गौर कान्तियुक्त प्रशस्त भाल पर चन्दन का तिलक किये मादण्णा ने वहाँ प्रवेश किया। जरीदार वस्त्रों मे सुशोभित मादण्णा हैदराबाद के प्रधानमन्त्री थे। जाति से एक दक्खिनी वैष्णव ब्राह्मण

होने पर भी वे इस्लामी राज्य के प्रधानमन्त्री बने थे। राज्य में उनका पद यद्यपि दूसरे क्रम पर था फिर भी व्यवहार में वे कुतुबशाह के सारे अधिकार का उपयोग करते थे। इसलिए मुसलमान प्रजा उनसे बहुत नाराज रहती थी। अपनी बौद्धिक कुशलता के कारण ही मादण्णा इतनी ऊँचाई तक पहुँचे थे हिन्दी, तेलगृ और पर्शियन भाषाओं पर उन्हें पूर्ण अधिकार था।

सोने की पालकी में मादण्णा हैदराबाद में घूमते थे। उनकी पालकी को दूर से ही देखकर, शहर के बड़े व्यापारी, विद्वान हिन्दू और मुसलमान सभी उनके आगे आदर से झुक जाते थे। तानाशाह ने अपने एक सामान्य किन्तु बहुत होशियार पेशकार को प्रधानमन्त्री बनाया था। अपने प्रभाव का फायदा उठाकर मादण्णा ने इस्लामी सल्तनत की आय से अनेक हिन्दू देव देवियो के मन्दिर बनवाये थे। गोलकुंडा कुतुबशाह से मिलने आये। शिवाजी महराज के साथ अनेक फिरंगी वकीलों की भी पूरी खातिर की गयी थी। विगत तेरह चौदह वर्षो में भूलकर भी रंगमहल में पैर न रखने वाले मादण्णा को वहाँ आया देखकर सारी नृत्य सभा स्तब्ध रह गयी। सारंगियाँ बन्द हो गयीं। सभी नृत्यांगनाओं के छनकते घुँघरू भी मौन हो गये।

तानाशाह भी कुछ आश्चर्यचकित होकर अपने प्रधान की ओर देखने लगा। हुक्के की नली मुँह से बाहर निकालते हुए नशे की स्थिति में ही प्रश्न किया— "क्यों मादण्णा आपको किसलिए प्रधानमन्त्री बनाया है? हमारी नृत्य-संगीत और इश्कबाजी की गतिविधियों में किसी भी प्रकार की अडचन न आए, इसीलिए न?"

"खाविन्द, यदि इस बन्दे से कोई भूल हुई तो दया करें। परन्तु बिना कोई बहुत जरूरी काम पड़े मैं आपको कष्ट देने का साहस कैसे करता?"

"बोलो।"

"हजरत, दिल्ली के बादशाह औरंगजेब की ओर से एक जरूरी फरमान आया है।"

"क्या कहता है वह बुड्ढा?" तानाशाह हड़बड़ी में बोला, "जल्दी बताइए। ये नटखट शर्मीली लड़कियाँ अपने तोड़े को तोड़कर किस प्रकार रुक गयी हैं। उधर तबले की लय के साथ मेरे हृदय की लय भी बीच में ही किस प्रकार बिगड़ गयी है खुद ही देखिए। यह जरूर है कि यहाँ के गायन, वादन और यहाँ की रसिकता वह औरंगजेब क्या समझेगा?"

"हुजूर! हुजूर! उनका कहना है कि—बीजापुर के आदिलशाह की मदद करने का गुनाह आपने यदि किया, तो..."

"तो? ऐसे घबराते क्यों हैं? बताइए।"

"अगर बीजापुर वालों की थोड़ी-सी भी मदद करोगे तो आपका तख्त और

ताज गन्दी नाली में फेंक दिया जाएगा।"

यह खबर सुनाते हुए मादण्णा बहुत घबरा गये थे। किन्तु तानाशाह ने मजाक में लेते हुए अपनी आँखें उठाईं। मादण्णा पर उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि बादशाह के फरमान का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। अपनी अय्याशी में विघ्न पड़ने से तानाशाह बेचैन हो गया था। एक गुलाम ने तानाशाह को एक पान का बीड़ा दिया। सुदूर मछली पट्टम की एक विशिष्ट पनवाड़ी से हरे पीले रंग के पान तानाशाह के लिए लाये जाते थे। उस कोमल पान बीड़े को चबाते हुए सोने के पीकदान में पीक थूकी। उसने एक सोलह सत्रह साल की रूपवती लड़की को अपने पास बुलाया। उसके प्रत्येक अंग से यौवन झलक रहा था। तानाशाह उसके सिर को अपनी जाँघ पर रखकर उसकी रेशमी अलकों में उँगलियाँ फेरने लगा। उसने पुन: पूछा—"क्या कहता है वह तुम्हारा औरंगजेब?"

मादण्णा ने डरते-डरते उसी पैगाम को फिर से दुहाराया। तब तानाशाह ने पूछा— "मादण्णा, हैदराबाद और गोलकुंडा में अपनी कितनी फौज तैनात है?"

"लगभग एक लाख।"

"ओह! तो ऐसा करो, आज ही बीस हजार घुड़सवार सेना बीजापुर की मदद के लिए भेज दो। वह बेचारा सिकन्दरशाह, अभी उसकी पन्द्रह वर्ष की नाजुक उम्र, अपने इस पड़ोसी की हर कीमत पर मदद करना हमारा फर्ज है।"

इसी समय वहाँ कुतुबशाह की बेगम सरोभाजानी आ गयीं। बेगम के खुद वहाँ अचानक आ जाने से तानाशाह के अगल बगल बैठी एवं हाथ-पैर दबाती नर्तकियाँ तितलियों की तरह उड़कर निकल गयीं। बेगम को वहाँ देखकर तानाशाह गुर्राया, "क्या चाहती हो बेगम?"

"फर्याद।" अपने नीले घूँघट से सामने देखते हुए बेगम ने कहा, "माफ कीजिए हजरत, इस सल्तनत के इतने बुरे दिन आ गये हैं कि अपने राज्य और परिवार की ओर ध्यान देने के लिए कुतुबशाह को एक क्षण की भी फुर्सत नहीं है। इसीलिए अपने पति को मिलने के लिए बेगम को भी बेशर्म होकर इस रंडीखाने में आना पड़ता है।"

"सिर्फ काम की बात करो, सुनाओ अपनी फर्याद।"

सरोभाजानी बेगम रुकी! वहाँ पर खड़े मादण्णा पंडित की ओर जलती हुई दृष्टि डालकर बोली, "यह फर्याद सुनाते ही यहाँ की वेश्याएँ चली गयीं किन्तु यह मादण्णा पंडित यहीं बना है।"

"यह कैसे मुमकिन है बेगम? मादण्णा कैसे जा सकता है? मादण्णा हमारी छाया है, हमारी जान है।"

"वही आपकी जान ले रहा है।" बेगम ने व्याकुल होकर कहा, "आपने

अपना सारा कारोबार अन्धे की तरह इस मादण्णा पंडित को सौंप दिया है। वही आपका गला घोंट रहा है। अपने भाई आकण्णा को इसने प्रधान सेनापति बनाया है। इसका भतीजा राजकर्मचारियों का प्रधान है। राज्य के सभी बड़े ओहदे इसने अपने लोगों में बाँट रखे हैं। इसीलिए हैदराबाद की सारी इस्लामी प्रजा विरोध कर रही है। इस सारी विपत्ति के मूल कारण आप हैं। स्वामी इसका ध्यान आपको है कि नहीं?''

तानाशाह ने अपनी वक्रदृष्टि मादण्णा की ओर घुमाई। मादण्णा से पूछा, ''दीवान मादण्णा, दरबार के सारे उमराव और राज्य के सभी उलेमा आपकी यही शिकायत करते रहे हैं। मैं जब से इस राजगद्दी पर आया हूँ, पिछले तेरह-चौदह वर्षों में कभी एक भी सवाल आपसे नहीं किया। आज सिर्फ एक सवाल—

''जैसी आपकी आज्ञा महाराज।'' थरथर काँपते मादण्णा बोला।

''हमारी बेगम साहिबा ने भरे दरबार में आप पर जो इल्जाम लगाए हैं, उसमें कौन-सा इल्जाम गलत है?''

तानाशाह के इस धारदार सवाल से मादण्णा की जबान रुक गयी। वह घुटने के बल बैठते हुए बोला, ''हुजूर इसमें कुछ भी गलत नहीं है। परन्तु हुजूर यही एक प्रश्न पिछले पन्द्रह वर्षों में एक बार पूछकर मेरे कान ऐंठे होते तो हमें अकल आ गयी होती। मैं पहले गरीब ब्राह्मण। उसके हाथ में आ गयी इतनी बड़ी सत्ता—फिर क्या था? रिश्तेदारों के पंख उग आए। यहीं सारी गड़बड़ी हुई।''

तानाशाह बहुत मर्माहत हुआ। पास में रखी सुराही से उसने मदिरा के कई घूँट एक साथ पिये। उसने विषादपूर्ण स्वर में कहा, ''यार मादण्णा, तुम्हारा भी क्या दोष? सत्ता एक बहता दरिया है। पानी की इस खलखलाहट को सत्ताधीश को ही रोकना होता है। तुम्हारे इस मालिक ने यदि बीच बीच में इस रंडीखाने से अलग होकर अपने दरबार में बैठने का गुनाह किया होता तो हमारी मूर्ख जिन्दगी को यह दिन क्यों देखने पड़ते?''

सात

बादशाह की विशाल छावनी रात के अँधेरे में सोई पड़ी थी। केवल पहरे पर खड़े सिपाही जाग रहे थे। कुतुबशाह और आदिलशाह का नशा उतारने के लिए बादशाह ने सोलापुर के पास, भीमा नदी के किनारे में डेरा डाल रखा था। उसने मुअज्जम को

कुतुबशाही को और आजम को आदिलशाही का विनष्ट करने की जिम्मेदारी सौंपी थी। सम्भव हो तो युद्धभूमि के समीप रहकर दोनों फौजों को लड़ाते रहने का उसका विचार था। बीजापुर पर घेरा डाले शहजादे आजम को एक वर्ष बीत चुका था। किन्तु निकट भविष्य में जीतने के कोई भी संकेत दिखाई नहीं पड़ रहे थे। इससे औरंगजेब बहुत नाराज हो रहा था। उसी समय उसका खान ई जहान नामक सरदार मंगलवेडा और सांगोला जैसी आदिलशाह की चौकियों को जीतकर उस पर दबाव बढ़ा रहा था। इससे औरंगजेब को कुछ सन्तोष हुआ।

पहरे के सिपाही इधर उधर गश्त लगा रहे थे। लालबारी से थोड़ा दूर पर असदखान का डेरा था। अपने चाचा वजीर असदखान पर बादशाह को बहुत क्रोध आ रहा था। वजीर के साथ में उसकी एक सौ आठ बेगमें भी फौज में साथ थीं। अपने अय्याश स्वभाव के कारण असदखान राजकीय कार्यों में ध्यान नहीं दे पाता था। शाहशाह की यही शिकायत थी।

वजीर के तम्बू के पास अचानक दस बारह घोड़ों का एक दल आया। कुछ बहुत आवश्यक सूचना लेकर ये दूत आये थे। वजीर जल्दी जल्दी तैयार हुआ और दूतों को लेकर लालबारी के बीच वाले चौक में आया। बादशाह की शय्यागृह वाले विशाल तम्बू में पूरी निस्तब्धता देखकर वे सभी वापस लौटे। किन्तु इसी समय बादशाह दरवाजे पर आ गया। उसके नौकर ने असदखान को पुकारा। डेरे के बाहर घोड़ों के दबे पाँव चलने पर भी उनकी आवाज से बादशाह जाग गया इसका सभी को आश्चर्य हुआ।

घबराये दूत बादशाह के निजी बैठक में आये। उन्हें बोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। अन्त में असदखान ने बताना आरम्भ किया—"जहाँपनाह रहम करें। अपने दिन ही इतने बुरे आ गये हैं। किया भी क्या जाय? कल रात सांगोला की अपनी छावनी पर मरहट्ठों ने डाका डाला। वे जंत की ओर दौड़ते हुए आये थे। आपका खजाना लूट लिया, शाही तबले से पाँच सौ घोड़े भगा ले गए। जहाँपनाह अँधेरे और हो हल्ले का फायदा उठाकर उन लोगों ने बहुत ऊधम मचाया।"

"मराठों के इस आक्रमण मुखिया कौन था?"

"हंबीरराव मोहिता।"

इस नाम को सुनते ही बादशाह ने आसमान की ओर देखते हुए सिर ऊपर उठाया। बादशाह ने वाकेनवीस और अन्य लोगों को बाहर जाने के लिए कहा। अब अपने ऊपर कौन सी आफत आएगी, यह सोचते हुए असदखान सिकुड़कर बैठ गया। आश्चर्यचकित बादशाह पीड़ा भरे स्वर में बोला, "आजकल मैं एक बात के लिए खुदा की आयतें पढ़ता हूँ कि कुछ ऐसे दिन आएँ जब सम्भा और हंबीर का नाम कान पर न आये और परोसा हुआ भोजन मीठा लगे।"

"हुजूर!"

"आखिर कौन है यह हंबीर?"

"सम्भा का मामा—"

"वह बात नहीं। मेरा सवाल अलग है। हमारी पाँच लाख की फौज में ऐसा कोई एकाध खंबीर-हंबीर क्यों नहीं पैदा होता? कैसी है हमारी फौज—नामर्दों और हिजड़ों की बारात।"

अमदखान इस प्रकार सिर झुकाए बैठा था जैसे उसके गले की हड्डी ही टूट गयी हो। वह सिर उठाने के लिए तैयार नहीं था। तब बादशाह अपनी कठोर आवाज में बोला, "वजीरे-आजम अब आप को तीन ही बातें करनी हैं। पहली बात यह कि उस हंबीर पर करोड़ों की दौलत उड़ा दो। नहीं तो ऐसा करो—उसे नियन्त्रित करो। उससे कहो कि तुम्हारे जैसा बहादुर बलिष्ठ मर्द मुझे मिले तो तुम्हें ही हम रायगढ़ का राजा बना दें। उस काफिर सम्भा को हमेशा के लिए कारागार में डाल दें।"

"क्या बात है आका? ऐसा कुछ तो हमने सोचा भी नहीं था।" उस कल्पना मात्र से असदखान आनन्द से भरकर खड़ा रहा गया।

"वह हंबीर हमारे पास आता है तो उसके रास्ते में फूल बिछा दो, नहीं आता तो धारदार खंजर तैयार रखो—किन्तु वह जिन्दा या मुर्दा हमें नहीं मिला तो इस दक्खन की मिट्टी से कोई ऐसे शेर ढूँढ़ो जो इस हंबीर नाम के सिर दर्द से हमेशा के लिए हमें मुक्त कर दें।"

बादशाह ने असदखान के साथ बहुत देर तक विचार विमर्श किया। उस बैठक में ही हंबीरराव के लिए एक लुभावना पत्र तैयार किया गया। बादशाह ने कहा, "बारूगढ़ जाकर हमारे नागोजी माने से मिलो। वही नेक इनमान हमारी मदद करेगा। यदि सीधे यह पैगाम ले जाने की भूल करोगे तो हंबीर ले जाने वाले को कच्चा चबा जाएगा।" औरंगजेब ने मुस्कराते हुए कहा, "अब हमें अपनी फौज के आदमियों पर विश्वास नहीं रहा। अब तो दक्षिण के गद्दारों को लेकर ही काम चलाना पड़ेगा। उस सर्जाखान को भी किसी न किसी प्रकार मिलाने की कोशिश करो वजीर ए आजम।"

"लेकिन जहाँपनाह, इससे पहले आपने ही उसे बीजापुर से बाहर निकालने के लिए दबाव डाला था।"

"इसका कारण यह है कि सर्जाखान ही उसकी सच्ची लड़ाकू शक्ति है। एक कारगर हथियार है। ऐसा हथियार यदि आदिलशाह की बजाय हमारे शाही अस्त्रागार में आ जाय तो उसकी जरूरत हमें क्यों न होगी?"

आठ

अहमदनगर किले का चाँदनी बाग केवल महिलाओं के उपयोग के लिए था। बादशाह की शहजादियाँ, छोटे बच्चे, नाती-पोते एवं छोटी बच्चियाँ इसमें खूब आनन्द लूटते थे। विशेष रूप से बादशाही बेगम जीनतउन्निसा इस बाग में मनचाहा आनन्द उठाती थी। जीनतउन्निसा और कमलजा में बड़ा प्रेम था। कमलजा बादशाह के कट्टर दुश्मन सम्भाजी की कन्या होने पर भी शहजादी की प्रिय सहेली थी। यह बात किले के सभी लोगों को और फौज को भी मालूम थी।

जीनतउन्निसा ने उत्तर में ही अच्छी घुड़सवारी सीख ली थी। घोड़ा देखते ही कमलजा की बाँहें भी फड़कने लगती थीं। राजबन्दियों के बच्चो को घुड़सवारी सिखाना, बादशाही फौज के अनुसार अपराध था। किन्तु कमलजा के साथ जीनत के प्रगाढ़ प्रेम के कारण नियम का उल्लंघन किया जा रहा था। जीनत अपने साथ कमलजा को घोड़ा दौड़ाने देती थी। कमलजा भी केवल उसी के साथ लड़कियों वाले खेल खेलती थी।

एक दोपहर को लड़कियाँ चाँदनी बाग में खेल रही थीं। कमलजा जोर से घोड़ा दौड़ा रही थी। बाकी सहेलियाँ चिल्ला-चिल्लाकर उसे प्रोत्साहित कर रही थीं। उसका घोड़ा अर्धचन्द्राकार घूम रहा था। चौथाई कोस की दूरी तय करके वापस आता था। उस ओर के बुलन्द दरवाजे पर 500 की सेना तैनात थी। वे भी आज शिथिल हो गये थे। स्वयं शहजादी और उसकी सहेलियों का खेल चालू रहने से वे भी निश्चिन्त थे। फूलों के पौधों की ओट से उन्हें लड़कियों की तालियाँ सीटियाँ सुनाई दे रही थीं।

इसी बीच कमलजा के घोड़े ने बाग के बाहर छलाँग लगाई। पलक झपकते झपकते घोड़ा तेजी से पहरेदारों की आँख से ओझल हो गया। उसके पीछे 'भागोऽ भागोऽ, पकड़ोऽ पकड़ोऽ' की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। घुड़सवार सैनिक सावधान हुए। सैनिकों की टोली दरवाजे से बाहर निकली। जनानखाने का मुख्य रक्षक जैनुद्दीन बहुत साहसी और हट्टा कट्टा योद्धा था। उसने घोड़े की लगाम ढीली छोड़कर उसे खूब तेज दौड़ाया।

कमलजा का घोड़ा कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। जैनुद्दीन हैरान हो गया। कमलजा की आँखों के आगे रायगढ़ का शिखर और अपने पिता शम्भूमहाराज के महल का कलश दिखाई पड़ रहा था। इन्हीं दोनों चीजों को देखने के लिए कितनी रातें जागती रही थी। इसी के लिए वह बेचैन थी। जैनुद्दीन समझ गया कि

कमलजा का घोड़ा रुकने वाला नहीं है। उसने कमर के पट्टे से अपनी कटार निकाली और कमलजा के घोड़े को मारा। कटार चक्र की तरह घूमती हुई घोड़े के अगले पैर में जा लगी। घोड़े के पैर में कटार के चुभते ही वह जोर से हिनहिनाकर मुँह के बल गिरा और कमलजा भी बगल में दूर जा गिरी। उसके पैर में मोच आ गयी। वह उठे उससे पहले ही अनेक सैनिकों ने उसे घेर लिया। कमलजा कैद हो गयी।

जीनतउन्निसा बहुत होशियार और बुद्धिमती थी। उसने जैनुद्दीन को तुरन्त बुलवाया और कहा, "यह घटना किसी को मत बताना।" उसने अपने दरबारियों और जासूसों में किसी को धमकाया किसी को बक्शीस दी। घटित प्रसंग को दुहाराते हुए शहजादी ने जैनुद्दीन से कहा, "जो घटित हुआ यह भी हमारी खेल कूद का ही एक हिस्सा है। ऐसा ही समझना। नहीं तो यदि यह समाचार हमारे अब्बा के कान तक गया तो कमलजा भी हमारी दीदी जेबुन्निसा की तरह अँधेरी कोठरी के बाहर कभी दिखेगी नहीं।"

उस रात को महल के पास गिरकर जख्मी हुई मानकर हकीम द्वारा कमलजा का इलाज शुरू हुआ। उसकी खाट के पास जीनत बैठी थी। वह वहाँ आधी रात तक जागती रही। एकान्त देखकर शहजादी ने कहा, "कमलजा, तुममें और मुझमें एक विलक्षण समानता है। तुम और मैं ही अपने पिता से अपने प्राणों से भी ज्यादा प्रेम करते हैं।"

अपने पैर के दर्द को दबाते हुए कमलजा ने प्रश्न किया—"शहजादी दीदी पिता और पुत्री के बीच के प्रेम को ठीक-ठीक समझने का आपका दावा गलत है। यदि सचमुच ऐसा होता तो आज दोपहर को मेरा घोड़ा क्यों रोका जाता? एक अभागी लड़की जन्म से अपने कभी न देखे पिता से मिलने जा रही थी। इस बात में तो आपको आनन्द का अनुभव करना चाहिए था। क्या मैं आपके खजाने में डाका डालकर जा रही थी।"

"कमलजा तू कोई ऐरी गैरी लड़की नहीं है। तुम्हारे शरीर में तुम्हारे दादा जान शिवाजी महाराज और पिता सम्भाजी महाराज का रक्त भरा है।"

"लेकिन मैं तो खाली हाथ निकली थी। मेरे अकेले के चले जाने से शाही फौज को क्या फरक पड़ने वाला था?"

"बहुत खूब।"

"अं?"

"हाँ, पिछले सात आठ साल से तुम्हारा बचपन अदमदनगर और बहादुगढ़ किले में बीता है। इन दोनों किलों के कोने कोने का नक्शा तुम्हारी आँखों में उतर आया है। कलेजे पर अंकित हो गया है। रायगढ़ जाकर अपने पिता की आँखों के

सामने नक्शा फैला दिया होता तो? तो हमारे अब्बाजान औरंगजेब साहब की मौत पाँच दस वर्ष पहले आ जातीऽ। इसीलिए तो ''

नौ

''येसू, हमारे मराठी प्रदेश को किसी की नजर लग गयी है। आज औरंगजेब का दबाव थोड़ा दक्षिण की ओर सरका है, थोड़ी साँस लेने का अवकाश मिला तो अकाल दम तोड़ रहा है।''

''सच है स्वामी, पिछले दो तीन वर्षों में अकाल की जो करालता रही है ऐसा तो कभी किसी ने नहीं देखा। ऐसा बूढ़े लोग भी कहते है।'' इस प्रकार येसूबाई ने अपनी सहमति प्रकट की।

''येसू, अकाल ने फसलें नष्ट कर दीं, जमीन बंजर हो गयी, इसका [illegible] नहीं, यह मुझे स्वीकार है किन्तु किसानों की गोशालाएँ और तबेले नष्ट हो [illegible] यह बड़े दु:ख की बात है।''

''स्वामी, कल यदि हमारे पास अश्वधन नहीं रहेगा तो यदि कहीं लड़ाई या चढ़ाई करनी होगी तो किसके बल पर करेंगे?''

पिछले कई वर्षों से पड़ने वाले अकाल ने 1686 87 में उग्र रूप धारण कर लिया था। हिन्दवी स्वराज्य की कमर टूटने का समय आ गया था। किन्तु इस दैवी आपदा का सामना करने में येसूबाई और शम्भूमहाराज सफल हुए। अकाल से पीड़ित प्रजा के लिए उन्होंने रायगढ़ पर एक विशेष कचहरी खोली थी। निलोपन्त पेशवा की ओर से किलेदारों और अमलदारों को आदेश भेजे गये थे। यह सन्देश था—

'नयी बुआई और सिंचाई के लिए प्रजा की सहायता करो। इसके लिए सरकारी खजाने से आर्थिक सहायता दी जाए।'

जनवरी 1686 में सतारा के पूर्वी हिस्से में—माणदेश, खटाव औध, कोरेगाँव आदि क्षेत्रों में भयंकर अकाल पड़ा था। पुणे के आसपास चिचवड़, खेड़, चाकण आदि में भयंकर सूखा पड़ा था। कई महीनों तक अकाल की मार झेलते झेलते कई गाँवों के लोग गाँव छोड़कर अन्यत्र चले गये थे। प्रजा की अवस्था अत्यन्त दयनीय हो गयी थी। शत्रुओं से निरन्तर लड़ते रहने के कारण सरकारी खजाना भी खाली हो

गया था। तब भी शम्भूमहाराज ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने राजापुर और गोवा के पुर्तगालियों से अनाज की माँग की थी। किन्तु पिछले अनेक वर्षों में मराठों और औरंगजेब की बीच दक्षिण के पठारों और सह्याद्रि की पहाड़ियों में युद्ध चल रहा था। सूखे के कारण नदियाँ सूख गयी थीं, कुओं में कहीं भी पानी नहीं था, गाँवों के तालाबों में पानी की जगह सिर्फ मिट्टी बची थी। मनुष्यों को ही पीने का पानी उपलब्ध नहीं था तो पशुओं के लिए कहाँ से आता।

रायगढ़ पर चारों ओर से खबरें आती थीं। सामान्य जनता का दुख सुनकर शम्भूमहाराज का कलेजा हिल जाता था। महाराज ने सबसे पहले प्रजा से होने वाली कर वसूली रोक दी। ऐसे भयानक अकाल के समय प्रजा से कर वसूलना गरीब प्रजा की लाज ढकने वाली लँगोटी उतारने जैसा था। प्रजा के लिए राजा ने अनेक सुविधाएँ भी प्रदान कर रखी थीं।

शम्भूमहाराज ने रायगढ़ पर अपने अष्ट प्रधानों और सेना के अधिकारियों की एक विशेष बैठक बुलाई। पेट का विकट प्रश्न था। शम्भूमहाराज ने सबसे पहले प्रश्न किया, "सभी मनुष्य और पशु समाप्त हो जाएँगे तो राज्य किसके लिए करना?" उन्होंने म्हालोजी घोड़पड़े से पूछा।

"बताइये घोड़पड़े काका, इस भयंकर अकाल का इलाज क्या है?"

वृद्ध म्हालोजी ने आकाश की ओर देखा। वरुण देवता को प्रणाम किया। फिर कहा, "यह सच है कि वर्षा हमसे रूठ गयी है। परन्तु हमारे लोग भी निष्ठापूर्वक हमारी मदद कहाँ कर रहे हैं?"

"मतलब?" महाराज ने प्रश्न किया।

दक्षिण से हरजीराजा की ओर से आने वाली रसद बीच-बीच में निरन्तर खंडित होती रही है। जिस उद्देश्य से महाड़िक को दक्षिण की सूबेदारी दी गयी थी उसकी पूर्ति वे नहीं कर रहे हैं।"

"चिक्कदेवराजा की ओर से निश्चित की गयी वसूली आयी नहीं। उन्होंने सालाना द्रव्य भेजना उन्होंने स्वीकार किया था।" रामचन्द्रपन्त ने स्मरण दिलाया।

"रसद को बात को अलग रही, चिक्कदेवराजा हमारे शत्रु से मिला हुआ है। बीजापुर को घेरने के लिए आलमगीर की मदद के लिए उसने सेना भेजी है। चौदह-पन्द्रह हजार अच्छे घुड़सवार औरंगजेब की विजय के लिए बीजापुर वालों का रक्त बहा रहे हैं। बीजापुर के सिकन्दर आदिलशाह के इस पत्र को पढ़िए न महाराज।" खंडो बल्लाल ने ध्यान आकर्षित करते हुए कहा।

सम्भाजी महाराज ने वह लिफाफा तुरन्त नहीं खोला। उन्होंने बड़ी बेचैनी से कहा, "दक्षिण के चिक्कदेवराजा को मुगलों की इतनी चिन्ता क्यों है? इतनी सहायता यदि किसी दक्षिण वाले ने दक्षिण वाले की होती तो? तो इतिहास चक्र

बदल गया होता।"

खंडो बल्लाल और येसूबाई ने दक्षिण की आय का अंदाजपत्रक महाराज के सामने प्रस्तुत किया। सत्रह वर्ष का सन्ताजी घोड़पड़े व्यग्रता से लड़खड़ाते हुए बोल पड़ा, "महाराज दक्षिण की खबरों को ठीक नहीं कहा जा सकता।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"पिछले महीने जिंजी के किले पर आठ दिन तक रोशनी सजाई गयी थी।"

"किसलिए?"

"हम स्वतन्त्र हो गये हैं। महाराज की पदवी धारण करने के लिए दरबार बुलाया था। हमारे हरजी राजा ने।"

"हमारे कानों तक भी वे बातें आयी हैं।" कहते-कहते शम्भूमहाराज रुक गये। फिर वे उदास होकर बोले, "जीजाजी झूठ बोल रहे हैं। यह मुझे भी पता है। जिंजी में ऐसा कुछ नहीं है।"

बहुत समय तक विचार विमर्श हुआ। महाराज ने सभी के विचारों को समझा।

"आज औरंगजेब ने बीजापुर को घेर लिया है। कल वह गोलकुंडा की ओर मुड़ जाएगा। और फिर पहला, दूसरा और तीसरा हम मराठों को समाप्त किये बिना वह चुप नहीं बैठ सकता।"

सभी ने आश्चर्यचकित भाव से महाराज की ओर देखा। महाराज ने जोर देकर कहा, "बादशाह के विरुद्ध दक्षिण के राज्यों का एक संघ बनाने का हमने पहले ही बीड़ा उठाया है। मैसूर और तमिल प्रदेश में शान्ति बनाए रखने के लिए हमें एक बार पुनः दक्षिण पर आक्रमण करना ही होगा। इसके अतिरिक्त दूसरा उपाय ही नहीं है।"

"शम्भूमहाराज युद्धों से घिरे होने पर यह तरीका ज्यादा खतरनाक हो सकता है।" म्हालोजी बाबा ने कहा।

"चुपचाप बैठे रहने पर भी औरंगजेब से आने वाला संकट टलेगा नहीं। दो चार महीने में ही कृष्णा में नयी बाढ़ आएगी। तब तक बादशाह निश्चित रूप से बीजापुर में उलझा रहेगा। इसी बीच दक्षिण में कूद जाना चाहिए।" शम्भूमहाराज ने कहा।

अपनी चौदह हजार की घुड़सवार सेना लेकर शम्भूमहाराज दक्षिण की ओर निकल गये। शम्भूमहाराज के दक्षिण आगमन से चिक्कदेवराजा को पसीना छूटने लगा। उसने अपनी सबसे अच्छी फौज औरंगजेब की सहायता के लिए भेजी थी। इससे उसकी चिन्ता और भी बढ़ गयी। उसे बच-बचकर लड़ाई करनी पड़ रही थी। महाराज ने चिक्कदेवराजा द्वारा जीता गया बीजापुर का क्षेत्र अपने कब्जे में कर

लिया।

मैसूर, धर्मपुरी, श्रीरंगपट्टनम के क्षेत्र से शम्भूमहाराज के घोड़े दौड़ रहे थे। उन्होंने अपने हरजी जीजा पर भी दबाव बढ़ाया। उन्होंने हरजी को जिंजी में फौज के साथ श्रीरंगपट्टनम आने का आदेश भेजा। कोडक, मलेय, तिगुड और मोरस के नायक शम्भूमहाराज की सहायता के लिए आ गये थे। श्रीरंगपट्टनम की चौकी जीतने के लिए जोरदार लड़ाई चल रही थी। वहाँ के किले के संरक्षण के लिए बड़ी बड़ी खाइयाँ खोदी गयी थीं। उस खाई पर छलाँग लगाने के लिए सैनिक और घोड़े दोनों हिचक रहे थे। लड़ाई हाथ से जाने की स्थिति आ गयी। उसी समय शम्भूमहाराज ने अपना घोड़ा खाई के उस पार कुदा दिया। खाई तो पार हो गयी किन्तु घोड़ा नोक के बल गिर गया। उसने उसी जगह पर रक्त के फौवारे छोड़ते हुए और पैर पटकते हुए प्राण त्याग दिये। शम्भूमहाराज के दाहिने कन्धे की हड्डी भी मुचक गयी। उसमें पीड़ा होने लगी। यह पीड़ा धीरे धीरे असह्य होने लगी।

दक्षिण में पाँच छः महीने बीत गये। निर्णायक जीत न तो चिक्कदेवराजा की हो रही थी और न ही शम्भूमहाराज की। गोलकुंडा जीतने के बाद बादशाह की सह्याद्रि क्षेत्र में प्रवेश करने की सम्भावना थी। इसलिए लड़ाई को बीच में ही छोड़कर शम्भूमहाराज ने महाराष्ट्र वापस चले आने का निर्णय लिया।

वहाँ से आते समय महाराज ने अपनी दीदी अम्बिकाबाइ और जीजा हरजी को समझाते हुए दुखी स्वर में कहा, "जीजाजी, हमें मिली विश्वस्त खबर के अनुसार प्रमुख सत्ता से अलग होकर अपने को स्वतन्त्र राजा बनाने का आपका विचार है। इस प्रकार आप मुख्य सत्ता का विरोध कर रहे हैं।"

"ऐसा हो भी तो इससे क्या बिगड़ता है? एक और मराठी राज्य निर्मित होगा।" अपनी आँखों के भाव को छुपाते हुए हरजी ने कहा।

"वैसे बिगड़ता तो कुछ नहीं। किन्तु जीजाजी, इस बात का ध्यान दीजिए कि यदि मन्दिर का हर एक खम्भा अपने सिर के भार को छोड़कर, स्वयं को कलश समझने लगे तो राजमन्दिर खड़ा किस प्रकार रह सकेगा।" बोलते बोलते शम्भूमहाराज बहुत गम्भीर हो गये।

कर्नाटक से वापस आते समय शम्भूमहाराज, दस हजार बैलों की पीठ पर लादकर रसद और बहुत सा द्रव्य ले आये थे। कुछ समय के लिए रायगढ़ और काल नदी के क्षेत्र में लोगों को कुछ राहत मिली। किन्तु अकाल की भीषणता इतनी अधिक थी कि थोड़े ही दिनों में वह रसद भी समाप्त हो गयी। दो वर्ष बीत जाने पर भी स्वराज्य के ऊपर से अकाल की काली छाया उठ नहीं रही थी।

जगह जगह पर जमीन में दरारें फट गयी थीं, वृक्ष पत्रहीन हो गये थे

तालाब सूख गये थे। स्वराज्य के अनेक भागों की दशा अत्यंत शोचनीय हो गयी थी। अकाल के कारण चिंचवड़ हवेली क्षेत्र के लोगों ने अपने गाँवों को छोड़ दिया था। वे पानी की खोज में अन्यत्र चले गये थे। घरों में ताले लगाकर दरवाजों पर बबूल और करौंदे के झाँखर रूँध दिये थे। बारह बलूतेदारों और अठारह प्रजावर्ग के निम्नलोगों की स्थिति तो कुत्तों से भी बदतर थी। कुछ लोग जंगलों में चूहे पकड़कर उन्हें भूनकर खाते थे। कहीं कोई चूहे की बिल में पड़े अनाज को निकालकर खाता था।

अपने राज्य में महाराज जब घोड़े पर निकलते थे तो प्रजा की दुर्दशा देखकर उनका मन कराह उठता था। ग्रामपंचायत में सरकार की ओर से थोड़ा बहुत अनाज मिल जाता था। किन्तु राज्य का भंडार भी समाप्त हो रहा था। शम्भूमहाराज गाँव के देशमुख देशपाण्डे लोगों को एकत्र करके उनसे कहते थे, "जिनके पास जो भी अनाज है उसे बाहर निकालो। अपने कोठारों में चुराकर अनाज मत रखिए।" महाराज बहुत व्याकुल हो रहे थे।

महाराज, हमारी गोठें खाली हो गयीं। हमारे पशु नहीं रहे ''

"बाबा, मुझे सब कुछ मालूम है। यह सच है कि हमें पशुओं को भी बचाना चाहिए। परन्तु उसके पहले मनुष्यों को बचाओ। किसी प्रकार अपनी रक्षा कीजिए। समय हमेशा ऐसा ही नहीं रहने वाला है।" शम्भूमहाराज घूम घूमकर लोगों को धीरज बँधा रहे थे।

अनेक स्थानों पर ब्राह्मण अनुष्ठान कर रहे थे। बहुत से लोग महादेव के मन्दिर में मूर्ति को घेरकर बैठे थे। कुछ लोग सहायता के लिए हनुमानजी की प्रार्थना कर रहे थे। "कुछ भी कीजिए। तो मुट्ठीभर अनाज मिलता है उसके साथ घास पात खाइए। किन्तु मनुष्यों को किसी प्रकार बचाइए।" इस प्रकार की घोषणा महाराज कर रहे थे। एक और मराठी सेना बीजापुर और गोलकुंडा की सहायता के लिए जा रही थी। उसके लिए शम्भूमहाराज और कवि कलश को पन्हाला और मलकापुर में ठहरना पड़ता था। औरंगजेब गोलकुंडा और बीजापुर की ओर था। कुछ समय के लिए उसका संकट टल गया था। किन्तु भीषण अकाल से प्रजा की रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक हो गया था।

रसद और अनाज जुटाने के उपाय खोजे जा रहे थे। हिन्दवी स्वराज्य के सभी अच्छी पैदावार देने वाला केवल जिंजी का क्षेत्र था। वहाँ की समृद्धि निरन्तर बढ़ रही थी। अपना विश्वस्त मानकर ही महाराज ने हरजी को वहाँ नियुक्त किया था। इस समय स्वराज्य की सहायता जिंजी और कर्नाटक से ही हो सकती थी।

अकाल ने मनुष्यों और पशुओं का भाग्य फोड़ दिया था। चारा पानी के अभाव में घोड़े अपनी जगह पर ही प्राणहीन होकर गर्दन लटका दिये थे। महाराष्ट्र

की मिट्टी स्वराज्य पर आये घोर संकट को जानती थी। पिछले सात वर्षों से उसका लाड़ला युवराज कलिकाल से जूझ रहा थां। इस व्यथा का उसे पूरा ज्ञान था। अकाल की भीषणता ने सामान्य व्यक्तियों की कमर तोड़ दी थी। किन्तु षड्यन्त्रकारी कर्मचारी उत्साहित थे। महाराष्ट्र के जमींदार जागीरदार औरंगजेब से मिल रहे थे। उन्हें सिर पर उठाकर औरंगजेब नाच रहा था। जिनमें कोई पात्रता नहीं थी, उन्हें भी बड़ा सम्मान दे रहा था। जागीर के झूठे कागजपत्र बनाने में उसके बाप का क्या बिगड़ता था?

राजधानी रायगढ़ पर भी पानी का संकट उपस्थित हो गया था। पहले ही किले पर नीचे से परवालों में ढोकर पानी लाया जाता था। किले की विशेष जरूरत के लिए कुछ घोड़े छोड़कर शेष घोड़े पाचाड़, रायगढ़वाड़ी और छत्री निजामपुर ले जाये गये थे। समीप की काल नदी भी पूरी तरह सूख गयी थी। उसकी बीच धारा में बड़े-बडे गड्ढे खोदकर उसमें अपने अपने घड़े और मसकें भरकर लोग ले जाते थे। पानी भरी पखाल लेकर सीढ़ियाँ चढ़ते चढ़ते भिश्तियों की कमर टेढ़ी हो रही थी। काला हौद, पुष्करिणी और गंगासागर भी सूख गये थे।

शम्भूमहाराज और महारानी येसूबाई बहुत चिन्तित थे। चिन्ता के कारण महाराज का शरीर सूखता जा रहा था। व्याकुल होकर महारानी ने कहा, "हे भगवान, हे जगदीश्वर, हे माँ भवानी, कब बदलेगा यह दिन?"

लोगों की दशा देखकर महाराज का कलेजा विदीर्ण हो रहा था। भारी मन से उन्होंने कहा, "येसूरानी हमारी जनता छः-सात वर्ष तक मुगलों का सामना करती रही किन्तु उससे बच गयी। वह लड़ाई भी जानलेवा थी। आज हमारे सामने कितना बुरा दिन आया है। लोगों के तबेले नष्ट हो रहे हैं। स्वराज्य में पानी नहीं। अब तो हमारी आँखों का पानी भी सूखता जा रहा है। अब एक बूँद आँसू भी नहीं निकलते, माँ भवानी अपने बच्चों की कैसी परीक्षा ले रही हैं?"

"महाराज थोड़ा धैर्य धारण करें। जिंजी से हरजी राजा की अनाज मे भरी गाड़ियाँ आ जाएँगी।" येसूबाई ने धीरज बँधाते हुए कहा।

"किन्तु महारानी, बार-बार स्मरण कराने पर भी उनकी ओर से सहायता क्यों नहीं आ रही है?"

"दूर की यात्रा है रसद आने में देर तो लगेगी।"

"नहीं येसूरानी, मुझे सन्देह हो रहा है। अकाल तो अब आया है किन्तु हमारे अपने घर के लोगों ने तो मुझे कब से पराया समझ लिया है। हमारे दो बहनोइयों ने जो किया है, हरजी राजा भी वही करेंगे।"

"धीरज रखें महाराज! ऐसी कुशंका मन में क्यों ले आना?"

चार ही दिन में राजा के विश्वस्त सहयोगी का पत्र आया। दुर्दैव से महाराज

की शंका ठीक निकली। शम्भूमहाराज ने येसूबाई पर रुष्ट होते हुए कहा, "रसद की गाड़ियाँ तो दूर ही रहीं, अपने बहनोई हरजी पन्त तो अब स्वयं को जिंजी-कर्नाटक का सार्वभौम राजा मानने लगे हैं। वे स्पष्ट रूप से कहने लगे हैं कि 'रायगढ़ की मुख्य सत्ता से हमारा कुछ लेना देना नहीं है'।"

येसूबाई ने सिर नीचे झुका लिया। उन्होंने कहा, "अम्बिका दीदी के भरोसे पर मैंने उनकी सिफारिश की थी। मुझे क्षमा करें।"

हरजी राजा की ओर से आये असहयोगात्मक समाचार से महारानी बहुत बेचैन हो गयी थीं। वे महाराज से पूछने लगीं, "महाराज दो चार महीने पहले आपने स्वयं यहाँ की कठिनाइयों को हरजी राजा से बताया था। हरजी राजा कुशाग्र बुद्धि, शूरवीर, पराक्रमी व्यक्तियों के कुशल संग्राहक हैं। हमारे राज्य के कठिनाई में होने पर भी उन्हें ऐसी दुर्बुद्धि कैसे आयी?"

"याद रखिये रानी साहिबा, एक मराठा दूसरे मराठा को कभी अच्छा नहीं लगता। यदि कोई कष्ट उठाकर यश प्राप्त करता भी है तो उसका श्रेय उसकी झोली में डालने की उदारता भी हममें नहीं होती। अन्यथा जब एक ओर औरंगजेब जैसा अजगर हमारे स्वराज्य के पास कुंडली मार कर बैठा हो और दूसरी ओर अकाल की भट्ठी में प्रदेश जल रहा हो तो ऐसे समय में हरजी राजा जैसे समझदार पुरुष के मन में ऐसे विचार क्यों आने चाहिए?"

खंडो बल्लाल, निलोपन्त पेशवा आदि सभी बड़े तनाव से गुजर रहे थे। येसू महारानी ने एक दूसरी शंका व्यक्त की, "महाराज अकाल और अभाव से निपटने के लिए जिंजी हमारी एकमात्र आशा है। वहाँ से सहायता नहीं आएगी तो अनर्थ हो जाएगा।"

"आएगी, जरूर आएगी, महारानी! आखिर हमारी धमनियों में भी शिवाजी महाराज का रक्त है। जो ईमानदारी से परिश्रम करता है उसे धन्यवाद देना और जो टेढ़े चलते है उन्हें ठीक रास्ते पर ले आना हम अपने पिताजी से सीख चुके हैं।"

मोरोपन्त पिंगले के छोटे भाई केसो त्रिमल पिंगले कुछ समय पहले ही रामशेज किले से रायगढ़ आये थे। उन्हें शम्भूमहाराज ने पुराने और अनुभवी सरदार के रूप में सहायता के लिए बुलाया था। केसो त्रिमल का आदर-सत्कार करते हुए महाराज ने कहा, "केसो काका, उधर जिंजी में यानी हमारे ही राज्य के एक प्रदेश में ऐश्वर्य की गंगा बह रही है और यहाँ अकाल की छाया में हमारे लोग और जानवर तड़प तड़पकर मर रहे हैं।"

"महाराज आज्ञा करें।" केसो त्रिमल ने सिर झुकाकर कहा।

"किले के नीचे मैदानी जमीन पर अठारह हजार घोड़े खड़े हैं। उन्हें साथ लेकर रात-दिन चलते हुए जल्दी से-जल्दी जिंजी पहुँच जाइए।"

"हरजी राजा ने विरोध किया तो?"

"केसो काका, हम आपसे और अधिक क्या कहें? आप शिवाजी महाराज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाले बुजुर्ग हैं। आपको क्या समझाना? शीघ्रातिशीघ्र निकल जाइए। अकाल के जबड़े में फँसे लोगों को आपको ही बचाना है। इसलिए आप वही कीजिए जो शिवाजी महाराज के सहयोगी को शोभा दे।"

आयु की सत्तर सीढ़ियों पर पहुँचे केसो पन्त झट से खड़े हो गये। उन्होंने महाराज को नमन किया। महाराज ने केसो पन्त के साथ तरुण सन्ताजी को भेजने का निश्चय किया था। वे दोनों शीघ्रता से किले से नीचे उतरने लगे।

दस

रात हो गयी। अन्धकार फैल गया। कल आगे निकली शाही फौज ने पानी की सुविधा देखकर लालबारी के डेरे डंडे खड़े किये थे। मशालों से धुआँ निकल रहा था। बादशाह के लाल तम्बू में चिराग जल उठे। वजीर ने आलमगीर के सामने बीजापुर परिसर का नक्शा फैला रखा था। बीजापुर पर घेरा डाले बारह तेरह महीने हो गये थे। खजाने के द्रव्य से भरी चमड़े की थैलियाँ खाली हो चुकी थीं। खाली थैलियों के ढेर लगे थे। हजारों ऊँट और घोड़े मर चुके थे। किन्तु अपेक्षित सफलता मिल नहीं रही थी। इससे बादशाह बहुत सन्तप्त हो गया था।

नक्शे पर बरीकी से दृष्टि डालते हुए बादशाह ने कहा, "वजीरे आजम, बीजापुर की यह तटबन्दी कैसे पत्थरों की बनी है कि डेढ़ वर्ष होने को आया फिर भी गिरने को तैयार नहीं?"

बीजापुर नगर के चारों ओर ढाई मील की पत्थरों की मजबूत दीवार बनाई गयी थी। इसकी ऊँचाई तीस से पचास हाथ और चौड़ाई सामान्यत: बीस हाथ थी। जगह जगह पर बुर्ज और चबूतरे बनाए गये थे। बीच बीच में लम्बी नली की बन्दूकों को बाहर निकालने की व्यवस्था की गयी थी।

दीवार के बाहर चालीस से पचास हाथ चौड़ी गहरी खाई खोदी गयी थी। उसे पहले पार करने पर दीवार तक पहुँचा जा सकता था। छानवे बुर्जों में से शेरजी नामक भव्य बुर्ज पर मालिक ई-मैदान नाम की बहुत दूर तक मार करने वाली तोप रखी थी। शहजादा आजम ने दीवार के सामने ऊँचे चबूतरे तैयार किये थे। वहीं से

तटबन्दी की दीवार पर तोपें दागी जा रही थीं। खाई पार करने के लिए उस पाटना आवश्यक था। लगभग तीन-चार महीनों मे हजारों मजदूर और कुली यही काम कर रहे थे। उस भयानक खाई को पाटकर उस पर से रास्ता बनाने की कोशिश कर रहे थे। उसके लिए शहजादे को खजाने का बहुत सा धन खर्च करना पड़ रहा था।

नक्शे का निरीक्षण करते हुए जुल्फिकारखान ने कहा, "बादशाह सलामत मुझे लगता है कि सबसे पहले यहाँ के बुलन्द दरवाजे को हिलाना चाहिए।"

"बेवकूफ हो दुश्मन के दिल पर प्रहार किया जाय तो सफलता मिल सकती है। पर इसे मत भूलो कि यदि ऐसा नहीं हुआ तो हमारे सिर भी काटे जा सकते हैं।"

"जो आज्ञा जहाँपनाह।" जुल्फिकार आज्ञाकारी सेवक के रूप में खड़ा रहा।

"मैंने आजम से पहले कह दिया था। शक्तिशाली दरवाजों को तोड़ने में अपनी शक्ति व्यर्थ मत करो। दीवार के कमजोर हिस्से को खोजकर उस पर वार करो।"

बीजापुर हमले के आरम्भ में ही बादशाह बहुत सावधान था। बीजापुर की सहायता के लिए हैदराबाद से एक बड़ी फौज आने वाली थी। इसके लिए औरंगजेब ने उस रास्ते पर अपने एक नामचीन सरदार खान ई जहान को तैनात किया था। वह इन्दि गाँव के पास जहरीले साँप की तरह रास्ते पर कुंडली मार कर बैठा था।

"जहाँपनाह, बीजापुर वालों के साथ ही उन मरगट्ठों ने भी शहजादे को हैरान कर रखा है।" जुल्फिकार बीच में ही बताने लगा, "मराठों का वह सेनापति हंबीरराव तो पूरा अगिया बेताल है। कोल्हापुर मिरज, रहमतपुर से ससवड़ और अकलूज की ओर आने वाली रसद जो शहजादे की सहायता के लिए भेजी जाती है, उस पर हंबीर रात बेरात भूत की तरह टूट पड़ता है और रसद ले जाने वाले पशुओं को भगा ले जाता है।

वस्तुत: बीजापुर आक्रमण औरंगजेब के लिए बहुत महँगा पड़ रहा था। हजारों सैनिक और घोड़े मारे जा चुके थे, किन्तु बीजापुर की वह मजबूत तटबन्दी और भीतर के महल का पाषाणी पर्दा बादशाह के सामने झुकने को तैयार नहीं था। इसके साथ ही गोलकुंडा से बीस हजार को घुड़सवार फौज और भरपूर आर्थिक सहायता कुतुबशाह ने भेजी थी। इसके अतिरिक्त फरवरी 1685 में दस हजार की मराठी सेना लेकर निलोपन्त पेशवा भी बीजापुर की सहायता के लिए पहुँच गये थे। इतिहास में पहली बार बीजापुर की इस्लामी जनता ने रास्ते से जाते हुए मराठा सैनिकों के भगवा झंडों पर प्रसन्न होकर फूलों की वर्षा की थी।

इन दिनों शम्भूमहाराज बहुत दिनों तक रायगढ़ छोड़कर पन्हालगढ़ पर ही रुके रहे। वहीं से वे आदिलशाह की सहायता का प्रयास कर रहे थे। उनके

आदेशानुसार स्वयं कवि कलश सात हजार की फौज लेकर जत की ओर मे युद्ध में सम्मिलित हुए थे। वे पिछले कई महीने से अचानक छापे मार-मारकर मुग़ल सेना को हैरान कर रहे थे। हंबीरराव मोहिते भी पन्द्रह हजार की घुड़सवार सेना लेकर रात-दिन छापे मार रहे थे और मुगलों की रसद को लूट रहे थे।

सोलापुर से बादशाह हैदराबाद की गतिविधियों पर अपनी बारीक नजर रखे हुए था। इसे बादशाह का भाग्य ही कहेंगे कि कुतुबशाही फौज में आन्तरिक कलह आरम्भ हो गया। उनके दो सेनाधिकारियों—मुहम्मद इब्राहिम और शेख मिनाज के बीच झगड़ा हो गया। परिणाम यह हुआ कि कुतुबशाही फौज रात में ही डेरे-डंडे बटोर कर भाग गयी।

बरामदखान ने बादशाह को खुशखबरी दी, "कुतुबशाही फौज भाग गयी। तानाशाह उसे सँभालने की जगह स्वयं गोलकुंडा के किले में चला गया है। काफिर मादण्णा पंडित उसका मुख्य सलाहकार है।"

"बरामदखान तुमने अच्छी याद दिलाई। तुम ऐसा करो, इस कुतुबशाह की बेगम और उसकी माँ को हमारा पैगाम भेजो। उनसे कहो कि तुम्हारे राज्य की यह दुर्दशा उस काफिर के कारण ही हुई है। कुछ भी करके उसका कत्ल करवा दो।"

"जी हुजूर!"

हैदराबाद लुटेरों के क़ब्ज़े में आ गया है, ऐसी खबरें आ रही थीं। सभी ओर लूटमार, भाग दौड़ का हंगामा मचा हुआ था। अच्छे घरों के खिड़कियाँ-दरवाजे तक चोर उठा ले जा रहे थे। मुगल फौज भी उसका लाभ उठा रही थी। बादशाह ने अपने विश्वस्त सरदारों को यह निगरानी रखने के लिए कि "मुअज्जम लूट का माल कहीं और नहीं रख रहा है?"

एक दिन बादशाह के पास एक और खुशी की खबर आयी। बेगमों ने हमलावर भेजकर मादण्णा और आकण्णा की हत्या करवा दी। हैदराबाद के बीच रास्ते पर दिनदहाड़े दोनों की हत्या की गयी। इसप्रकार शम्भूमहाराज और कुतुबशाह के बीच का एक मजबूत सेतु टूट गया।

मार्च 1686 में हैदराबाद के दूत बादशाह के पास आये। वे अपने साथ प्रधानमन्त्री मादण्णा का सूखा हुआ सिर भी लेकर आये थे। उस पर हाथ फेरते हुए बादशाह को बड़ा आनन्द आया। औरंगजेब और कुतुबशाह में तात्कालिक समझौता हो गया। उसके अनुसार कुतुबशाह को एक करोड़ बीस लाख का जुर्माना देना पड़ा। मालखेड़ और सेरम जैसे उपजाऊ प्रदेश भी बादशाह को मिले। कुतुबशाह ने सौ हाथियों का नजराना भी बादशाह को दिया।

हैदराबाद के काफिरों को जड़ से समाप्त करने की सफलता से बादशाह बहुत प्रसन्न था। समझौते के कुछ समय बाद बादशाह ने अपनी शक्ति बीजापुर पर

केन्द्रित की। उसने मुअज्जम को हैदराबाद से बीजापुर बुला लिया। विगत डेढ़ वर्षों की कोशिश के बावजूद बीजापुर की तटबन्दी में दरारें नहीं पड़ पायीं। किन्तु बादशाह को तो उसे हर हालत में तोड़ना ही था।

ग्यारह

शहजादे मुअज्जम और आजम दोनों के मन में दिल्ली के तख्त को हथियाने के सपने पल रहे थे। उन्हें विश्वास था कि आज नहीं कल उनका बूढ़ा हुआ बाप दिल्ली की सत्ता उनकी झोलो में डाल देगा। इसलिए कोई बड़ा पराक्रम करके बादशाह को दिखाने की स्पर्धा दोनों के भीतर चल रही थी। कुछ वर्ष पूर्व बड़ा शहजादा मुअज्जम गोवा के पास सम्भाजी महाराज से पराजित होकर खाली हाथ लौट आया था। किन्तु यहाँ यदि अपराजित आदिलशाह को नेस्तनाबूद करके दिल्लीपति बनने की कामना से शहजादा आजम बीजापुर में घनघोर युद्ध कर रहा था।

किन्तु शहजादे का भाग्य साथ नहीं दे रहा था। उसकी निरंतर असफलता और बिगड़ती हालत देखकर उसके पास बादशाह ने पत्र भेजा, "जितना नुकसान अब तक हो चुका उतना बहुत है। अब सब कुछ छोड़कर वापस आ जाओ।" बादशाह के इस फरमान को सुनकर शहजादा आजम फूट-फूटकर रोया था। कोई पराक्रम दिखाने का अवसर उसके हाथ से निकलता जा रहा था। शहजादा आजम ने अपने पिता को तुरन्त पत्र लिखा, "यदि आपकी बची हुई फौज मेरे साथ लड़ने को तैयार नहीं है तो मैं अपनी बेगम और अपने बच्चों के साथ अन्तिम साँस तक लड़ता रहूँगा। अन्तिम क्षण तक शत्रु का सामना करूँगा। शाहंशाह हमारी लाश को बीजापुर की सीमा में ही दफना दें।"

इस पत्र को पढ़कर बादशाह आश्चर्यचकित रह गया। ऐसे दृढ़ उत्तर की उसे आशा न थी। उसे आशा नहीं थी कि उसका कोई शहजादा इतनी जिद दिखाएगा। वह अपने इस शहजादे को दाद देने का इच्छुक हो गया। उसने फिरोजजंग के नेतृत्व में पाँच हजार बैलों का दल तैयार किया। बैलों की पीठ पर पर्याप्त रसद लादी गयी। साथ में बादशाह ने गश्ती की सेना भी बीजापुर भेजी। नयी रसद को पाकर आजम की जान में जान आ गयी। उसने बीजापुर का घेरा और भी कसना शुरू

किया।

बादशाह को सारी पुरानी बातें याद आने लगीं। बादशाह बहुत उद्विग्न हो गया। उसकी आँख की आग वजीर को स्पष्ट दिखाई पड़ी। औरंगजेब ने क्रोध से कहा, "वजीरे आजम और कब तक चलेगा यह बीजापुर का घेरा? दक्खिन की इस कठोर और धोखेबाज मिट्टी के साथ कितने दिन बीत गये? इसका हिसाब कीजिए। छः सात साल! मेरी जगह कोई दूसरा बादशाह होता तो केवल यमुना के पानी को याद करके पागल हो गया होता।"

बादशाह की वह मनोदशा देखकर वजीर चुप हो गया। अन्य सरदार और सेवकों ने सिर नीचे झुका लिया। कुछ दिनो से बादशाह की गर्दन कुछ हिलने लगी थी। अपनी गर्दन को हिलने से रोकने की कोशिश की। वह यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि अभी बूढ़ा नहीं हुआ है या पका नहीं है। उसने कहा, "असदखान बीजापुर की इस जालिम जंग में बड़े शहजादे मुअज्जम को भी शामिल होने का फरमान मैंने भेजा है।"

"बड़ा शहजादा वहाँ जाएगा तो छोटे शहजादे को यह बहुत अच्छा नहीं लगेगा। हुजूर इसीलिए कर रहा था" वजीर ने लड़खड़ाते हुए कहा।

शाहंशाह के चेहरे पर विषादपूर्ण हँसी आयी, फिर भी उसने अपने अन्दर की भड़ास निकालते हुए कहा, "अब किसी को क्या अच्छा लगता है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है असदखान! इस समय सबसे महत्त्वपूर्ण दक्खिन की इस मिट्टी में फँसी हुई अपनी तकदीर को बाहर निकालना। नहीं तो मेरी कब्र के लिए आपको यहां कहीं पर जगह ढूँढनी पड़ेगी।"

❑ ❑ ❑

खंड-तीन

हंबीरगढ़

एक

1686 का जुलाई महीना चल रहा था। बादशाह का डेरा रसूलपुर में खड़ा किया गया था। वहाँ से बीजापुर की दूरी इतनी ही थी कि दूर तक मार करने वाली तोप वार कर सकें। देखते-देखते दिन बीतते गये। बादशाह को बीजापुर आये साठ दिन बीत चुके थे। फिर भी सामने की दीवार गिर नहीं रही थी। बादशाह अपने डेरे के पास खड़े होकर सन्तप्त दृष्टि से बीजापुर की ओर देखता था। तब उसे अनुभव होता था कि गन्धक और तोप के धुएँ में डूबे शहर की ऊँची मीनार उसकी ओर टकटकी लगाए देख रही है। गोल गुम्बद की भव्य इमारत बादशाह के कलेजे में काँटे की तरह चुभती थी।

शहर के चारों ओर दो सशक्त तटबन्दियाँ ही बीजापुर की शक्ति थी। किन्तु गोलकुंडा और शम्भू महाराज का पन्हाला, बीजापुर की प्रच्छन्न रक्तवाहिनियाँ थीं। यद्यपि कुतुबशाह ने समझौता कर लिया था कि बादशाह को उस पर विश्वास नहीं था। इसलिए उसने कुतुबशाह को एक चेतावनी भरा पत्र लिखा था, "यदि तुम्हें अपने तख्त को बचाने की चिन्ता है तो बीजापुर के किसी मामले मे दखलन्दाजी करने का व्यर्थ प्रयास नहीं करना।"

उसी समय मुगलों की रसद लूटने वाले हंबीरराव मोहिते का मुकाबला करने के लिए बादशाह ने एक विशेष फौज तैयार की थी।

वजीर का अनुमान सही निकला। बड़े शहजादे मुअज्जम का बीजापुर आना छोटे शहजादे आजम को अच्छा नहीं लगा। पहले ही दिन "अब यह आया है मंडी लूटने के लिए।" इस आशय से उसने अपने बडे भाई की ओर घूर कर देखा।

बड़ा भाई मुअज्जम भी छोटे भाई से उतना ही द्वेष करता था। यदि बीजापुर वाले आत्मसमर्पण करते तो उसका श्रेय आजम को मिलने वाला था। मुअज्जम के लिए यह सम्भव नहीं था। समय के साथ मुअज्जम ने भी अपनी अकल दौड़ानी

शुरू की। स्वयं बादशाह और आजम के लड़ने मे बीजापुर पर क़ब्ज़ा नहीं हो पाया। यदि अपनी किसी युक्ति से बीजापुर पर कब्ज़ा हो जाये तो उसका सेहरा मेरे माथे पर ही बँधेगा। मुअज्जम को विश्वास था कि भावी सम्राट वही होगा। उसने शहाकुली जैसे अनेक विश्वस्त सेवक अपनी महायता के लिए गुप्त रूप से लगा रखे थे।

"लेकिन शहजादे, अपने सारे पयत्नों की सूचना बादशाह को दी है या नहीं?" उसके मित्र भयभीत होकर पूछने लगे।

"अभी क्यों? सारा काम एकबार हो जाये तो इकट्ठे ही अब्बाजान को सब बताऊँगा।"

मुअज्जम ने गुप्त रूप से अपनी योजना आरम्भ की। उसकी सिकन्दरशाह के साथ पहले से जान-पहचान थी। इसलिए उमका विश्वस्त नौकर शहाकुली सामने की दीवार के दरवाजे से बीजापुर में आने-जाने लगा। समझौते की बातचीत भी गुप्त रूप से होने लगी। दुर्दैव से शहाकुली मदिरा का व्यसनी था। उसके ऊपर एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपे जाने के कारण उसका अभिमान और भी बढ़ गया। वह पहले की अपेक्षा अधिक मदिरापान करने लगा। उसका नियन्त्रण छूट गया। एक रात को वह शराब के नशे में चूर बीजापुर के तोपची गोलन्दाजों से चिल्लाकर कहने लगा, "भाई जान इस मोर्चे पर ज्यादा गोलाबारी न करो। यहाँ पर सभी अपने ही यार-दोस्त हैं।"

शहाकुली की बातों का जो परिणाम होना था वही हुआ। शहजादा आजम के सेवकों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। रात में ही उसे शाहंशाह के मामने खड़ा किया गया। उसकी पीठ और शरीर के अन्य अंगों को लोहे की तपती सरिया से दागा गया। उसका शराब का नशा पूरी तरह उतर गया। उसने मुअज्जम का नाम लेकर मारी बात उगल दी।

बादशाह के मैदानी डेरे में शहाकुली घायल कुत्ते की तरह पड़ा था। वहाँ पर मुअज्जम को बुलाया गया। सारी बात का अन्दाज लेकर बड़ा शहजादा झूठी दलीलें देने लगा। अपने बाप के हाथ-पाँव पकड़कर वह रोते हुए कहने लगा, "जहाँपनाह, यह सब जाहन है, आपकी नजरों से मुझे गिराने का षड्यन्त्र है। मेरी जिन्दगी को बर्बाद करने का यह कुटिल कुचक्र है। इस शराबी व्यक्ति से मेरा कोई मम्बन्ध नहीं।"

बादशाह ने अपने चेहरे पर क्रोध या लोभ को कोई झलक नहीं आने दी। उसने शान्त स्वर में केवल इतना ही कहा, "शहजादे मुअज्जम, कितना भी झटका दिया जाए, किन्तु पाप कुछ मनुष्यों का पीछा नहीं छोड़ता। शहजादे, आज नहीं तो कल तुम्हें इसकी मजा भुगतनी ही होगी।"

दूसरे दिन मुअज्जम के हाथ से युद्ध सम्बन्धी मारे अधिकार छीन लेने का शाही फरमान जारी किया गया। अब मुअज्जम लकड़ी के लट्ठे की तरह डेरे में ही बैठा रहने लगा।

युद्ध का संचालन अपने हाथ में लिये बादशाह को दो महीने बीत चुके थे। दिन भी बहुत बुरे आये थे। 1686 की वर्षा ऋतु का आषाढ़ महीना सूखा चला गया। बादशाह के भिश्ती चारों ओर घूमकर कहीं न कहीं से पखाल में भरकर पानी ढोकर ला रहे थे। मनुष्य और पशु किसी प्रकार जीवन रक्षा कर रहे थे। तटबन्दी के भीतर बीजापुर वालों की स्थिति भी अत्यन्त शोचनीय थी। बीजापुर वालों की शक्ति का पता बादशाह ने लगा लिया था। तटबन्दी के पीछे हैदराबाद और मराठों की ओर से कोल्हापुर तथा अथणी के रास्ते रसद की सहायता आ रही थी। रसद के उन सभी रास्तों को आलमगीर ने पूरी तरह बन्द कर दिया था।

अब बिना अन्न-पानी के बीजापुर वालों की दशा बहुत बिगड़ने लगी थी। जानवर पैर पटकते हुए तड़पकर मरने लगे। तबेले खाली होने लगे। इसलिए रात-बेरात रसद को लूटकर ले आने की शक्ति घोड़ों में बची नहीं। अन्न के अभाव में सैनिक घोड़ों और ऊँटों को काटकर खाने लगे। इस प्रकार किसी तरह जान बचाने का प्रयास करने लगे। पान-फूल से सुसज्ज बीजापुर नगरी उजड़ी हुई दिखाई पड़ने लगी।

एक दिन सवेरे सामने वाला दरवाजा खुला। वहाँ से हाथ में सफ़ेद निशान लेकर निकलने वाले लोगों को बादशाह ने देखा। वह तीस चालीस लोगों का समूह था। उनके हाथों में कोई शस्त्र नहीं था। वे सैनिक भी नहीं थे। छाती तक लम्बी दाढ़ियाँ, गोल कफनी बाँधे, ढीली लुंगी पहने वे कोई और ही लोग थे। उनका समूह ज्यों-ज्यों समीप आने लगा बादशाह की पारखी नजर ने उन्हें देखा और पहचाना। वे सामने की नगरी के काज़ी, उलेमा, फकीर जैसे इस्लाम के बन्दे थे।

मुख्य न्यायाधीश शेख-उल इस्लाम हरकत में आ गये। बादशाह को शेख की यह बेचैनी बनावटी और अनावश्यक लगी। बादशाह ने उन्हें तुरन्त डेरे में बुलाया। उन्हें तीखी नजर से देखा। शेख साहब बहुत नाराज थे। लगभग हाँफते हुए उन्होंने हाथ हिलाकर कहा, "कुरान के पवित्र आदेशानुसार बीजापुर पर आपका यह आक्रमण गैरकानूनी है।"

बादशाह ने शेख उल-इस्लाम को सिर से पैर तक ध्यान से देखा।

"ठीक है, जैसा आप कहते हैं वैसा हो भी सकता है। इस सम्बन्ध में हम बाद में विचार करेंगे। परन्तु आज आपकी तबीयत बहुत खराब हो गयी है। जाकर आराम करें। मैं देखता हूँ।"

बादशाह ने अपने रक्षकों को इशारा किया। रक्षक उनकी बाँहें पकड़कर

लगभग खींचते हुए वहाँ से दूर ले गये। वह सारा दल बादशाह के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा, "बादशाह सलामत! आप एक पाक मुसलमान हैं। एक जीवित पीर मानकर लोग आपका गौरव करते हैं। कुरान के हुक्म के बिना आपकी पलकें भी नहीं झपकतीं।"

"आपको क्या चाहिए? उतनी ही बात करो, काजी।" बादशाह ने गिने चुने शब्दों में कहा।

"शहंशाह, गुस्ताखी माफ, यह युद्ध नापाक है। इतने बड़े दिल्ली के बादशाह, एक छोटे से इस्लामी राज्य और वहाँ की गरीब प्रजा का इतना नुकसान क्यों कर रहे हैं? हजरत हम सब आपके भाई हैं।"

"काजी, कौन किसका भाई?" सन्तप्त औरंगजेब की आँखों की पुतलियाँ सुई की नोक की तरह नाचने लगीं। सभी की नजरें नीचे झुक गयीं।

"आप सभी इस्लाम के रखवाले दिखाई पड़ते हैं। एक बात बताइए, वह शिवाजी का बदमाश लौंडा, वह काफिर सम्भा तुम्हारा भाईबन्द कब से बन गया?"

"लेकिन जहाँपनाह—?" सभी हड़बड़ा गये।

"तुम दक्षिण के सभी लोग जानते हो। पहले कहाँ था मरगट्ठों का हिन्दवी स्वराज्य? उस जमींदार शिवा ने और उसके मूर्ख लड़के ने, सम्भा ने आदिलशाह के राज्य का कुछ हिस्सा निकालकर, थोड़ा निजामशाही से निकालकर मरगट्ठों की नापाक सल्तनत कायम कर ली।"

"हजरत, गनीमों की वह कार्यवाही हमें कभी मंजूर न थी।" उलेमा ने कहा।

"ऐसा है तो मराठों की फौज को पिछले दिनों बीजापुर के रास्ते पर गाजे-बाजे के साथ क्यों लेकर गये। उनका बारात की तरह सम्मान क्यों करते हो?"

"सिकन्दर आदिलशाह नासमझ है हुजूर। उसे माफ करें।"

"यह कैसी नासमझी? वह सम्भाजी और कुतुबशाह के साथ गुप्त समझौते करता है। हमारे कहने पर भी सर्जाखान को अपनी फौज से निकालने से साफ इंकार करता है। ऐसा बेमुरव्वत जवाब हिन्दुस्तान के बादशाह को देता है। इस सारे बेवकूफी वाले व्यवहार को आप नासमझी कहते हैं? उधर पन्हाला पर जाइए। अपने बाप उस सम्भा के पैर पर सिर पटकिए।"

"लेकिन हजरत फिर भी हमारी एक प्रार्थना है। सारा कुरान शरीफ तो जिल्लेसुभानी की जबान पर है। हम मुल्ला-मौलवियों का अध्ययन भी उतना नहीं है जितना आपका है। आप मेहरबानी करके एक ही सवाल का जवाब दें।" बादशाह ने उनकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। "बताइये जहाँपनाह, एक इस्लामी सत्ता को दूसरी इस्लामी शासन व्यवस्था पर हथियार उठाना कुरान शरीफ

के किस नियम के तहत आता है?''

''आपका शब्द-शब्द सच्चाई मे भरा है। आपकी हुकूमत गिराने का हमारा इरादा भी नहीं है। किन्तु एक काफिर का बच्चा आपके साथ खड़ा है। उसके आपके रिश्ते किस मजहबी आचरण के तहत आते हैं? इसे पहले बताइये। उस काफिर के बच्चे को हमारे सामने लाकर खड़ा कीजिए। दूसरे क्षण ही हम बीजापुर का घेरा उठा लेते हैं।''

मुल्ला मौलवी निकलकर चले गये। उसी समय असदखान घबराया हुआ वहाँ आया। उसने अपने हाथ हुकुमनामा बादशाह के सामने कर दिया। बादशाह ने गुर्राते हुए पूछा, ''क्या है? पढ़िए—''

''हुजूर यह अपने सरकाजी, शेख उल इस्लाम का हुक्म है— उन्होंने उन्होंने ''

''पढ़िएऽऽ'' बादशाह चिल्लाया।

''उन्होंने हमारा बीजापुर के विरुद्ध . एक इस्लामी सल्तनत का दूसरी इस्लामी सल्तनत पर किया गया हमला गैर कानूनी और नापाक बताया है।''

बादशाह ने वह खत माँग लिया। उसके टुकड़े टुकड़े करके, डेरे के बाहर बँधे घोड़ों के पैरों में फेंक दिया। सरकाजी को गिरफ्तार करके अथणी की ओर ले जाने और किसी अनजान बन्दीखाने में फेंक देने का हुक्म तत्काल जारी किया गया।

बादशाह की इच्छानुसार, रायगढ़ की नौकरी छोड़कर आये काजी हैदर को बुलाया गया। बादशाह ने हैदर से पूछा, ''काजी मियाँ, सच्चा मजहब क्या होता है?''

''राजा की इच्छा। सुल्तान की मर्जी। इसके अलावा इस दुनिया में कोई धर्म हो सकता है, मेरे मालिक?''

काजी हैदर की जी हुजूरी बादशाह को बहुत अच्छी लगी। वह देर तक जोर जोर से हँसता रहा। अन्त में काजी की तारीफ करते हुए बादशाह ने कहा, ''आप जैसे वफादार इनसान पर हमें नाज होता है। इसी तरह के हकीकतपरस्त इनसान की हर सियासत को जरूरत होती है। शिवा का रायगढ़ हो या शहंशाह औरंगजेब का दरबार, आप जैसे इनसान हर जगह उपयुक्त होते हैं। एक बार कोई कुशल दर्जी कमीज की माप लेने में कहीं चूक कर सकता है किन्तु बदलती परिस्थिति को ठीक ठीक माप लेने वाला आप जैसा इनसान मिलना खुदा की मेहरबानी है।''

उसी दिन लालबागी के दरबार में एक शाही जश्न मनाया गया। उसी में काजी हैदर को सरकाजी पद का लिबास दे दिया गया।

दो

काजियों का जत्था मिलकर चला गया। अगले तीन महीने तक बीजापुर का घेरा चलता रहा। बादशाह ने बड़ी मेहनत से नगर के किनारे की खाई को भर दिया। वर्षा शुरू हो गयी थी। शहर में अकाल कहर ढाने लगा। तटबन्दी के भीतर रसद समाप्त हो गयी थी। इसके पहले रात-बेरात बीजापुर के घोड़े बाहर झटके से निकलते थे और कहीं न कहीं से रसद ले आते थे। किन्तु अब बादशाह ने घेरे पर कड़ी नजर रखी थी। पहले पन्हाला से कवि कलश और हंबीरराव के घोड़े बीजापुर की मदद के लिए दौड़े आते थे। किन्तु अब कृष्णा नदी में बाढ़ आ जाने के कारण वह सम्भव नहीं था। मिरज-अथणी से कोल्हापुर जाने के रास्ते बन्द हो गये थे।

औरंगजेब को अपनी सल्तनत पन्द्रह बीस सूबों में से कहीं न कहीं से रसद मिल सकती थी। किन्तु दक्षिण की तीनों शक्तियों के बुरे दिन आये थे। अन्त में बादशाह ने खाई पार कर अपने घोड़े बीजापुर में भेज दिये। अब तक वह शहर श्मशान बन गया था। 26 सितम्बर 1686 को सोलह वर्षीय सुकुमार सिकन्दर ने आत्मसमर्पण कर दिया। आदिलशाह के कैद होते ही बीजापुर में शोक की लहर फैल गयी।

घोर विषाद के वातावरण में भी कुछ हिम्मतबाज अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। आदिलशाह के आत्मसमर्पण के समय बादशाह की आँख सर्जाखान पर लगी हुई थी। डूबते जहाज को छोड़कर मोटे चूहे ने उछाल मारकर दूसरी ओर शरण ले ली थी। सर्जाखान मुगलों का बड़ा मनसबदार बन गया था।

औरंगजेब का महत्त्वाकांक्षी मन बीजापुर में रुका नहीं। वह अपनी फौज लेकर पुन: गोलकुंडा की ओर चला आया। वहाँ का किला, वहाँ की तटबन्दी और खाई बहुत मजबूत थे। द्रव्य से उनके तलघर भरे पड़े थे। तानाशाह अब भी शरणागत नहीं हो रहा था। बादशाह ने उसे गद्दार घोषित किया और गोलकुंडा पर घेरा डाल दिया। गोलकुंडा के घेरे के समय बादशाह को धूप, वर्षा और ठंडी हवाओं का सामना करना पड़ रहा था। अड़सठ वर्ष के इस बूढ़े के लिए एक हल्का झूलता सिंहासन बनाया गया था। कहार उसे कन्धे पर रखकर देर सवेर घुमाते थे। शाहंशाह अपनी फौज को आदेश देता था। एक बार तोप का गोला लगने से उसके अंगरक्षक का हाथ टूट गया। औरंगजेब से सिर्फ चार हाथ की दूरी से मौत आकर चली गयी थी।

शाहंशाह ने मुकर्रबखान जैसे हैदराबादी सरदार को फोड़ लिया। अबदुल्ला फन्नी नाम के एक अधिकारी ने सवेरे तीन बजे किले का द्वार खोल दिया। कपटनीति और दगाबाजी की जीत हुई। 29 सितम्बर 1687 को गोलकुडा पराजित हुआ। वहाँ बादशाह को सात करोड़ रुपये का खजाना मिला। सालाना तीन करोड़ आय का प्रदेश मिला। केवल पचास हजार रुपये की तनख्वाह पर सिकन्दर आदिलशाह और कुतुबशाह को देवगिरि के किले के बन्दीखाने में भेज दिया गया।

जिस समय हैदराबाद जीतकर बादशाह बीजापुर की ओर लौट रहा था, उस समय विजय की प्रसन्नता के साथ उसका एक विशिष्ट विषाद से भरा हुआ था। कुछ महीने पहले हैदराबाद के घेरे के समय एक घटना घट चुकी थी। इसके पहले शहजादा मुअज्जम के पास शम्भू महाराज के पत्र पकड़े गये थे। किन्तु उस रात को शहजादा आजम के द्वेष के अथवा किसी अन्य कारण से या महत्त्वाकांक्षा की ललक में मुअज्जम ने एक दुस्साहसी कदम उठाया। अपने बाप से बगावत करके उसी रात वह कुतुबशाह से मिलकर लड़ाई की घोषणा करने वाला था। उसे केवल इस बात का डर था कि उसके जाने के बाद उसका बाप उसके बीवी, बच्चों की दुर्गति करके हत्या कर देगा। इसलिए उसने रात में ही अपने बीवी बच्चों को लालबारी से लड़ाई के मैदान में आगे ले गया। वहाँ से छलाँग लगाना सरल था।

मुअज्जम के इन कारनामों से बादशाह को बगावत का शक हुआ। उसने तुरन्त सेना भेजकर शहजादे मुअज्जम और उसके बीवी, बच्चों को हमेशा के लिए गिरफ्तार कर लिया।

वृद्ध बादशाह का काफिला आगे निकल रहा था। उसकी दृष्टि पश्चिम की ओर न जाकर बार-बार सह्याद्रि की ओर घूम रही थी। पिछले सात वर्षों से उसे सम्भाजी मिल नहीं पा रहे थे। अविजित रामशेज और हैवतीगढ़ आज भी अबाधित थे। जो कुछ पाया उसकी अपेक्षा जो खोया उसका बादशाह को बड़ा दुख था। बादशाह का स्वाभिमानी मन बहुत सन्तप्त हो रहा था। प्रवास के समय ही असदखान बादशाह के समीप आकर कहने लगा, ''बादशाह सलामत, कुछ राहत देने वाली खबर है।''

''कौन-सी?''

''अपना प्रिय शहजादा अकबर ईरान चला गया। सम्भा ने उसकी मदद की। राजापुर के बन्दरगाह में उन्होंने एक निजी जहाज तैयार किया। अन्ततः वह चला गया।''

''कहाँ, ईरान को?''

''जी मेरे मालिक।''

बादशाह एक विषंड हँसी हँसा। कभी आसमान की ओर तो कभी धरती की ओर देखते हुए उसने कहा, "किसकी किस्मत और किसकी बदकिस्मत फ़िस जंगल या किस पहाड़ में लिखी है? इसे तो खुदा ही जाने।"

तीन

एक दिन हंबीरराव ने महाराज से महज ही कहा, "शम्भू महाराज, स्वराज्य की स्थिति बिगड़ती जा रही है। जागीरों की लालच में अच्छे-अच्छे लोगों का दिमाग बदलता जा रहा है। इसको रोका भी जाये तो कैसे?"

"मामा साहब, समय ही बहुत कठिन आ गया है।"

"परन्तु महाराज, जैसा आपने कहा, इस कठिन समय को निभाना पड़ेगा। इसके लिए जैसे वह औरंगजेब जागीरें बाँट रहा है, वैसे हम भी नकली कागजातों पर कुछ लोगों को जागीरें दे दें।"

"ऐसा कैसे हो सकता है, हंबीरमामा?"

हंबीरराव के सुझाव पर शम्भू महाराज अत्यन्त गम्भीर होकर बोले, "जागीरों को बाँटना पिताजी के द्वारा दिए गये आदेशों के विरुद्ध है। पिताजी कहते थे देवताओं को भी जागीर मत दो। उन्हें भ्रष्ट न करो।" शम्भू महाराज ने विनोद में आगे कहा, "मामा साहब आपको जागीर की आशा कब से लगी?"

विनोद के भाव को न समझने के कारण यह सीधा सा विनोदी प्रश्न हंबीरराव के कलेजे में तीर की तरह चुभ गया। कुछ क्षणों के लिए उन्हें कुछ समझ में नहीं आया। फिर भी उन्होंने हँसते हुए कहा, "शम्भू महाराज, आपने अपने मामा को क्या समझा है?"

वह विनोद का प्रसंग वहीं पर समाप्त हो गया। किन्तु हंबीरराव के भीतर शम्भू महाराज का प्रश्न चुभता रहा। उनका चेहरा अपमान के बोध से फीका पड़ गया। मानहानि के बोध से उनका कलेजा टूटने लगा। उन्होंने कहा, "शम्भू महाराज इस हंबीरराव को जागीर की जरूरत ही क्या है? यदि मुझे सत्ता या राजपद की भूख होती तो अपने सगे भांजे राजाराम को रायगढ़ के सिंहासन पर बिठाकर आधे राज्य का मालिक बन गया होता। राजाराम को राजा बनाने के लिए हमारे बुजुर्ग

अधिकारी बेताब हो रहे थे। मुझे तो उसमें कोई कठिनाई नहीं थी।''

''हंबीरमामा! कृपया इस बात को इतनी गम्भीरता मे न लें मैंने तो विनोद में कहा था।'' शम्भू महाराज ने उन्हें मनाने के स्वर में कहा।

शम्भू महाराज मनाने की पूरी कोशिश कर रहे थे किन्तु सेनापति हंबीरमामा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। उन्होंने कहा, ''हमारी वफादारी की परीक्षा लेने औरंगजेब के दूत भी आये थे। हमने उनकी दाढ़ी मूँछें मुड़वाकर उन्हें भगा दिया। फिर भी आपने आज हमारी ऐसी परीक्षा ली।'' हंबीरराव का स्वाभिमानी मन विनोद में किये गये आरोप को सह नहीं पा रहा था। वे आवेश में ही वहाँ से उठकर चले गये। इस प्रसंग से येसूबाई भी आश्चर्यचकित रह गयीं। शम्भू महाराज के लिए अब वहाँ रुक पाना सम्भव नहीं हो रहा था। वह भी उठकर अपने कक्ष में चले गये।

इस छोटे से वाद विवाद से रायगढ़ का रंग ही बदल गया। अपने कक्ष में उदास बैठे शम्भू महाराज के पास येसूबाई गयीं। उन्होंने शान्त स्वर में बड़ी सावधानी से कहा, ''जो भी हुआ अच्छा नहीं है। राजा और सेनापति के बीच अनबन से सल्तनत का विनाश हो जाता है। इस घटना की भनक औरंगजेब को लगने की देर है। आप दोनों में दरार पैदा करने के लिए वह जी जान से कोशिश करेगा।''

''आखिर मैंने ऐसा क्या कह दिया था, युवराज्ञी?''

''महाराज, हंबीरमामा ने जो कुछ कहा वह भी गलत नहीं था।'' येसूबाई ने बड़े विवेक से कहा, ''चलिए उठिए उन्हें सम्मान के साथ पुनः बुलाकर ले आयें। आप उम्र में छोटे हैं। उनकी मान मर्यादा की रक्षा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।''

''हम तो बच्चे हैं। हम क्यों जाएँ उनके पास? वे बड़े हैं इसलिए उन्हें ही हमें मनाने आना चाहिए।''

इस घटना से उत्पन्न सन्ताप के कारण महाराज ने रात को भोजन में कुछ भी ग्रहण नहीं किया। बिस्तर में आधी रात तक तड़पते रहे। दूसरे दिन देव पूजन भी नहीं कर सके। विगत अनेक वर्षो में ऐसा कभी नहीं हुआ था। दोपहर को महारानी के आग्रह के कारण किसी प्रकार आधा प्याला दूध लिया।

दूसरी रात महारानी येसूबाई बेचैन हो गयीं। किले पर शीतल हवा चल रही थी। इस छोटी सी घटना को लोगों ने बहुत बड़े झगड़े के रूप मे प्रचारित कर दिया था। यह सब कुछ न सह पाने के कारण महारानी जाकर महाराज के सामने खड़ी हो गयीं। वे अपने भीतर का रोष छुपा न सकीं। उन्होंने कहा, ''बस, अब बहुत हो चुका। महाराज! आपको पता है? पिछले दो दिनों में मामा ने अन्न का एक दाना

ग्रहण नहीं किया है।''

शम्भू महाराज झट से उठकर खड़े हो गये। उनका गला भर आया। उन्होंने कहा, ''क्या कह रही हो येसू? आपने दोपहर को ही मुझे यह क्यों नहीं बताया? हमारे हंबीरमामा को आप क्या समझती हैं। पिछले पाँच छह वर्षों में पिताजी के पुण्य की छाया और हंबीरमामा का साथ के अतिरिक्त क्या किसी और ने हमारा साथ दिया है?''

शम्भू महाराज ने अपने वस्त्र ठीक किये, सेवकों ने जो रत्नाभूषण सामने किये उन्हें पहन लिये। शम्भू महाराज और महारानी दोनों हंबीरमामा के घर जाने के लिए दरवाजे से बाहर निकले। महाराज ने मशाल की रोशनी में देखा तो बाहर मन्द पवन का सेवन करते हंबीरमामा स्वयं खड़े थे। वे स्वयं महाराज से मिलने आये थे। महाराज कुछ पूछें उससे पहले सत्तर वर्ष की आयु पूरा कर चुके, मजबूत कदकाठी वाले हंबीरमामा ने बड़ी व्यग्रता के साथ कहा, ''शम्भू बेटे, आपने यह क्या चला रखा है? पिछले दो दिनों से आपने कुछ भोजन ही नहीं लिया।''

''मेरी बात जाने दीजिए। परन्तु मामा आपने उपवास क्यों रखा है?''

''हम तो पीले पत्ते हैं। हमारी इतनी चिन्ता क्यों करते हैं? आपको तो हिन्दवी स्वराज्य का भविष्य गढ़ना है। हम तो आज हैं, कल हों न हों।''

आगे बढ़ते हुए महाराज बोले, ''हंबीरमामा, ऐसी अशुभ बात मुँह से न निकालें। आपके न होने की कल्पना मात्र मे हमें ऐसा लगता है जैसे हमारे ऊपर पहाड़ टूट पड़ा हो।''

बाहर शीतल हवा चल रही थी। राजमहल के बन्द वातावरण में जाने का किसी का मन नहीं हो रहा था। मामा-भांजे साथ-साथ पश्चिम की ओर चलते रहे। कुछ दूरी पर कातीव छोर था और दूसरी ओर हिरकणी बुर्ज। वहीं पर एक समतल पत्थर पर दोनों बैठ गये। पास ही एक पत्थर पर बैठकर येसूबाई दोनों के मनोमिलाप को बड़े कुतूहल से देख रही थीं। आधी रात के समय स्वयं महाराज के बुर्ज पर आने से पहरेदारों में हलचल मच गयी थी। वहीं पर राजमहल से भोजन मँगवाया गया। महाराज और सेनापति ने वहीं पर भोजन किया।

चर्चा के दौरान कई बातें निकलीं। हंबीरमामा ने कहा, ''हमारे सगे भांजे और जवाई राजाराम को राजा बनाने के लिए राज कर्मचारी हठ कर रहे थे, इसका पता है शम्भू महाराज?''

महाराज ने सिर्फ मामा की ओर देखा।

''महाराज, उन संकट के दिनों में मैंने आपको शिवाजी के पुत्र के नाते नमन नहीं किया था बल्कि यह मानकर कि आप हमारे शिवाजी के स्वप्नों के सच्चे उत्तराधिकारी हैं इसलिए आपके सामने हमारी गर्दन झुकी थी।''

''आपके उन उपकारों को यह हिन्दवी स्वराज्य कभी भी भूल नहीं पाएगा,

हंबीरमामा। किन्तु मुझसे यदि कोई भूल हुई है तो क्षमा करें मामाजी।''

''क्षमा की क्या बात कर रहे हैं शम्भू महाराज? हंबीरराव नाम की इस तलवार को शिवाजी महाराज ने फौलाद की दहकती भट्ठी में निर्मित किया है, उमे सजाया सँवारा है। किन्तु चारों ओर उसने रणकौशल दिखाया तो आपके समय में।''

''सच है मामासाहब, कहाँ ब्रह्माणपुर, कहाँ मुर्तिजापुर, अकोला, नान्देड़, सोलापुर से अथणी-बीजापुर, कोंकण का घाट हर एक रास्ता। दक्खिन की भूमि पर ऐसी कोई नदी या नाला नहीं होगा जहाँ हंबीरराव मोहिते के घोडे ने पानी न पिया हो। पर हंबीरमामा आजकल आपको कुछ थकान महसूस होती है क्या?''

''मतलब?''

''मतलब, यदि स्वास्थ्य न ठीक हो तो आप कुछ आराम करें और हमारा मार्गदर्शन करते हुए अपना आशीर्वाद दें।''

रायगढ़ के पश्चिमी छोर की छाती पर पाँव रखते हुए हवा का एक तेज झोंका आया। हंबीरमामा ठठाकर हँसते हुए बोले, ''अम्बा भवानी का सेवक जैसे हाथ में मशाल लेकर रात रातभर नाचते हुए जागरण करता है, उसी प्रकार शिवाजी का सेवक यह हंबीरराव युद्धभूमि में तोपों की ताल पर घोडे नचाने का कार्य करता है।''

''मामासाहब इस सम्भाजी को भी औरगजेब की तोपो या ढाल, तलवारा मे जरा भी भय नहीं लगता। हमें केवल एक बात का भय लगता है—''

''—महाराज?''

''हाँ हंबीरमामा, कभी कभी लगता है कि यह देश सन्तों, महन्तो और बुद्धिमानों का न होकर, बाल बच्चों के नाम जागीरों के कागज-पत्र बनवाने के लिए आतुर जागीरदारों का हो गया है।''

''सच है महाराज, दुनिया में मनुष्य की कोख मे बच्चे ही पैदा होते हैं। किन्तु अपने महाराष्ट्र की तरह अपने बाले बच्चों और उत्तराधिकारियों से ऐमा अन्धा प्रेम करने वाले लोग दुनिया में कहीं खोजने पर भी नही मिलेंगे।''

शम्भू महाराज ने भारी मन से पूछा ''तो मामासाहब क्या किया जाय? निर्णय ले लिया जाय?''

''कौन सा?''

''स्वराज्य के टुकडे टुकडे करके सभी जागीरदारो मे खैरात बाँट देने का?''

''नहीं, बिलकुल नही।'' हंबीरराव ने दृढ़ता से कहा, ''शम्भू बेटे! उस औरंगजेब को हमारे कुछ मूर्खों को खुशी खुशी खैरात बाँटने दो किन्तु इस हंबीर और शम्भूराजा की ओर से शिवाजी महाराज के विचारों की हत्या नहीं की जाएगी।''

इस सुख संवाद मे सारी रात कैसे बीत गयी पता ही नही चला।

चार

दुर्गादास राजपूताना के लिए प्रस्थान कर रहे थे। वे महाराज से मिलने के लिए आये। भाव भरे हृदय से दुर्गादास ने शम्भू महाराज से कहा, "शम्भू महाराज, आपने हमारे लिए बहुत किया। आपने जितना किया उसके लिए हम कितना भी धन्यवाद दें, कम ही होगा।"

"दुर्गादास, हम भी और अधिक क्या कर सकते हैं? शहजादे का स्वभाव ऐशोआराम का था। किसी भी प्रकार की जागरूकता नहीं थी। थोड़ी भी हिम्मत की होती तो किसी न किसी रास्ते से हम शहजादा अकबर को दिल्ली- आगरा की ओर भेज दिए होते। उसके उधर जाने से बादशाह के दुश्मन अपने आप अकबर के झंडे के नीचे आ जाते। परन्तु क्या किया जाय? वह तो स्वभाव से ही डरपोक। दस-दस बीस-बीस हजार लोगों के सहायक होने पर क्या लाभ हो पाया?"

"जाने दें महाराज! आप भी क्या कर सकते हैं? घोड़े की नयी नाल बँधवाने का कार्य लोहार के पास दिया जा सकता है, किन्तु आदमी की रीढ़ की हड्डी बनाने का काम किसी के लिए भी सम्भव नहीं है। हमारा सात वर्षों का कष्ट, सारा संघर्ष व्यर्थ हो गया।" दुर्गादास ने दुखी स्वर में कहा।

"दुर्गादास, एक बात कहूँ?"

"आज्ञा हो महाराज।"

"अम्बर के राजा रामसिंह ने औरंगजेब के राजाओं के संगठन बनाने के हमारे आवाहन को प्रतिसाद नहीं दिया। फिर भी मैंने हार नहीं मानी। किन्तु मुझे लगता है कि आपके जैसा देशाभिमानी, धर्माभिमानी व्यक्ति हमारे पास रहे। आप किसलिए राजपूताना जा रहे हैं? आप यहीं रहिये। जिस प्रकार कविराज भूषण के रहने से रायगढ़ की शोभा में वृद्धि हुई थी, उसी प्रकार आप जैसे भले व्यक्ति के साथ होने से हमारा विश्वास दृढ़ होगा।"

"क्षमा करें महाराज! महाराज जसवन्तसिंह को मरने से पहले मैंने एक वचन दिया था। मैंने कहा था कि अजितसिंह को पाल पोसकर मैं बड़ा करूँगा। उसके अनुसार जोधपुर जाकर वहाँ की राजगद्दी की सेवा करना मेरा कर्तव्य है, महाराज।"

पाँच

सवेरे ही बादशाह ने सर्जाखान को बुला लिया। अपनी थकी आवाज में बादशाह ने कहा, "सर्जा हमने बीजापुर की कठिन तटबन्दी तोड़ दी। गोलकुंडा को ध्वस्त कर वहीं की खन्दक में डाल दिया। किन्तु यदि सच कहूँ तो यह कोई बहादुरी का काम नहीं है। एक ही पीड़ा मेरे कलेजे को आज भी जला रही है।"

"सम्भाऽऽ!"

"बिलकुल ठीक सर्जाखान बेटे। बुरहानपुर में पाँव रखने से पहले ही हम तुम्हें अपनी सेवा में बुला रहे थे। कोई बात नहीं तुम हमारे पास देर से आये हो, किन्तु दुरुस्त आये हो। हम तुमसे खुश हैं। नहीं तो सर्जाखान आजकल खुशी की कोई बात होती कहाँ है?"

"जी बादशाह सलामत।"

"तू बीजापुर वालों का सेनापति था। बीजापुर की एक बात की याद है तुमको?"

"कौन सी जहाँपनाह?"

"वहाँ के बुर्ज के नीचे बारूद की सुरंग लगाने के लिए गड्ढे खोदे जा रहे थे। किन्तु वहाँ की पथरीली जमीन में हमारे कुदाल फावड़े काम नहीं आ रहे थे। उनकी धारें टूट जाती थीं। तब हमने बगल के गाँव से एक देहाती लोहार को बुलाया। तब उस बुड्ढे लोहार ने हँसते हुए हमें उपदेश दिया, "हुजूर, जहाँ का पत्थर तोड़ना हो वहीं की माथी के बने हथियार का उपयोग करना चाहिए। क्या कुछ समझ में आया?"

"हजरत— ?"

"उस काफिर सम्भा को समाप्त करने की शक्ति हमारे तीन शहजादों, बाइस पोतों और तीस सरदारों में से किसी में भी नहीं है। उस शैतान का खात्मा तुम्हारे जैसा कोई दक्खिनी बहादुर ही कर सकता है।" बादशाह थोड़ा रुका फिर लम्बी साँस लेकर बोला, "जाओ जल्दी से जल्दी निकलो। जितनी भी फौज और रसद लेना चाहो, ले लो यदि सम्भा की गर्दन काटकर ले आया तो तू नसीब का सिकन्दर बन जाएगा। दक्खिन से बाजे गाजे के साथ तुम्हारा जुलूस हम उत्तर ले जाएँगे। लालकिले में राजसी वस्त्र पहनाकर हम तुम्हारा सम्मान करेंगे।"

"जहाँपनाह मैं जरूर कोशिश—"

"किन्तु पिछले छह सात वर्षों के अनुभव से मेरे सिर के बाल—"

बादशाह बोलते बोलते रुक गया। उसने अपने सिर पर हाथ फेरा सिर पर मुकुट नहीं था। उसके सुनहरे बाल भी विरल हो गये थे थका हुआ बादशाह बोला, "खैर सम्भा का जिन्दा मिलना तो बहुत मुश्किल है। किन्तु यदि वह न मिला तो उसका एकाध हाथ या पैर तोड़कर—"

"मतलब?"

"उसका एक बड़े से बड़ा किला—जैसे रायगढ़, राजगढ़ पन्हाला या हंबीरगढ़ऽ!"

"जरूर, जहाँपनाह जरूर।"

कोयना नदी पार कर हंबीरराव की सेना तलबीड़ पहुँच गयी। अब तक आधी रात बीत चुकी थी। घर में सभी लोग जग रहे थे। लड़ाई पर जाते समय करहाड क्षेत्र से गुजरते हुए हंबीरराव तेज हवा के झोंके की तरह अपने तलबीड़ के घर पर जाते थे। कुछ घंटे रुककर वे हवा के झोंके की तरह ही निकल जाते थे। यदि घर के लोग रात रुकने का आग्रह करने लगते तो वे कहते, "औरंगजेब को दफन किये बिना हमें पीठ टिकाने की आज्ञा भगवान कहाँ देने वाले हैं?"

परन्तु आज वे तन मन से बहुत देर तक घर पर रुके रहे। उनकी प्यारी बेटी ताराऊ रायगढ़ से मायके आयी थी। अपने मायके में आनन्दित थी। हंबीरराव ने उसके पति राजारामसाहब और महारानी येसूबाई की कुशलक्षेम पूछी। उन्होंने बड़े वात्सल्यभाव से ताराबाई से कहा, "तारूऽ, येसूबाई का बराबर ध्यान रखना। स्वराज्य पर संकट बढ़ने के कारण महाराज चिन्ताग्रस्त हैं। महाराज तनाव में हैं इसलिए येसूबाई भी तनावग्रस्त हैं।"

"बाबा, आजकल बड़ी बाईसाहब मुझे अपनी छाया की तरह लिये रहती हैं।"

"देख बेटी बराबर ध्यान रखती रहना। यह कभी न भूलना कि तुम शिवाजी महाराज की पुत्रवधू हो।"

"उसके साथ ही मैं हंबीरराव की बेटी हूँ। इस बात को मैं कभी भूल नहीं सकती, बाबा।" तारा के यह कहने पर सारा घर ठठाकर हँस पड़ा।

आधी रात हो चुकी थी। हंबीरराव और उनके पच्चीस तीस विशिष्ट साथी भोजन के लिए तैयार हुए। आँगन के मध्य में पत्तलें बिछा दी गयीं। खुली हवा में हंबीरराव सुखपूर्वक भोजन कर रहे थे। इसी समय घर के दरवाजे पर घोड़ों की टाप सुनाई दी। हंबीरराव के कान हिरनों की तरह सावधान हो गये। वे चिन्तित होकर इधर-उधर देखने लगे। हंबीरराव चार ग्रास खा लें इसलिए घर के लोगों ने हरकारे

को कुछ समय के लिए रोक लिया। किन्तु समय पूछकर नहीं आता। हंबीरराव ने ऊँची आवाज में पुकारा, "बाहर कौन है? अन्दर आ जाओ।"

हरकारा सामने आकर खड़ा हो गया। हंबीरराव ने पूछा, "क्यों र जानू? क्या खबर है?"

"सरकार, अपने देश पर औरंगजेब ने आक्रमण करने के लिए सर्जाखान को भेजा है।

"क्याऽऽ?"

हंबीरराव ने भोजन छोड़कर हाथ धो लिया। उन्होंने दुपट्टे से हाथ पोंछते हुए खड़े-खड़े ही पूछा, "कहाँ? किस तरफ है वे शत्रु?"

"वे अभी तलबीड़ पर नहीं आये हैं। किन्तु दोपहर में उनकी सेना औंधघाट के रहिमतपुर में उतरी थी। सन्ध्या समय वे कृष्णा नदी पार कर रहे थे।"

"कितनी सेना है?"

"दस बारह हजार।"

"—और दिशा उन्होंने कौन सी पकडी है?"

"प्रतापगढ की ओर जा रहे हैं। खान ने कुछ भी करके दो दिन में प्रतापगढ जीतने का बीडा उठाया है।"

अपने सामने की थाली बगल में सरकाकर सभी उठ गये। सभी शीघ्रता से घर के बाहर निकले। अपने पति को चार ग्रास खाने को भी नहीं मिलता यह सोचकर हंबीरराव की पत्नी को बड़ा दुख हुआ। उन्होंने अपने अश्रुओं को छिपाने का प्रयास किया। किन्तु उनकी ओर देखने का सेनापति के पास समय ही नहीं था। किन्तु घर की देहरी पर शुभेच्छा में हाथ हिलाती प्यारी बेटी खड़ी थी। हबीरराव ने एक क्षण के लिए घोड़े को रोका, "बोल बेटी, मायके की ओर से तुम्हारे लिए क्या करूँ?"

"बाबा कुछ नहीं। दुश्मनों के हाथ मे अपने प्रतापगढ को न जाने दें। वहीं पर अपनी भवानी का मन्दिर है।"

'हर हर महादेव' की गर्जना के घोड़ों ने अँधेरे की राह पकड़ी। रास्ते में दूसरे हरकारे मिले। उन्होंने बताया कि सर्जाखान की पन्द्रह सत्रह हजार की फौज सतारा से वाई की ओर बढ़ रही है। हंबीरराव ने अपने सहयोगी नारोजी भोसले से कहा, "अपनी मुख्य फौज तो अंबा घाट के नीचे कोंकण में गयी है। यहाँ तो हम यों ही चले आये थे। अब क्या किया जाय? इस तरह के अचानक संकट की तो हमने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी।"

"सेनापति, कुछ भी करके शत्रु को रोकना चाहिए। यदि उसने प्रतापगढ जीत लिया तो हमारी इज्जत का कचरा हो जाएगा।"

"ऐसा हम कैसे होने देंगे? औरंगजेब ने भले ही आदिलशाही और कुतुबशाही का खात्मा कर दिया हो, किन्तु लाख कोशिश करने पर भी शम्भू महाराज का एक भी किला पराजित नहीं हुआ।"

"इसीलिए हम उसका पीछा करें।"

"तब तक शत्रु वाई को पार कर परसणी घाट की घाटी चढ़ने लगेगा। भोसले यदि खिंडी पर उसने अधिकार कर लिया तो उसकी शक्ति दस गुना बढ़ जाएगी।"

"तो फिर सेनापति जी किया क्या जाय?"

हंबीरराव ने घोड़े की लगाम खींची। एक क्षण के लिए अँधेरे में वसन्तगढ़ के बुर्ज की ओर देखा। दूसरे ही क्षण उन्होंने कहा, "हम रास्ता ही बदल दें। कोयना के किनारे-किनारे, वासोटा किले के किनारे से जंगल का रास्ता पकड़ें। कल सुबह होने से पहले महाबलेश्वर पहुँच जाएँगे। वहाँ से पीछे मुड़ जाएँगे। शत्रु यदि हवा की गति से जाएगा तो भी उसे रास्ते में ही रोकेंगे।"

"किन्तु हंबीरराव, यह रास्ता बहुत ही दुर्गम है। आदमियों और घोड़ों दोनों की दुर्गति हो जाएगी।"

"मृत्यु के समान आयी इस आपदा को रोकने का दूसरा कोई उपाय नहीं। चलिए, बढ़ाइये घोड़ा। मुड़िये पीछे। हंबीरराव गरजे, "बोलो हर हर महादेवऽऽ।"

कोयना नदी के किनारे का रास्ता शुरू हुआ। जंगल में कमर तक उगी घास में घोड़े दौड़ने लगे। विगत अनेक दिनों से हंबीरराव ठीक से सोये न थे। सुख चैन की नींद क्या होती है, इसका उन्हें पता ही न था। हंबीरमामा ने रिकेब से पाँव बाहर निकाल लिया। वे दौड़ते घोड़े पर झुक गये। घोड़े की जीन के साथ हाथ रखकर वे दौड़ते घोड़े पर ही सो गये। उनके घोड़े को भी अपने मालिक की दशा का ज्ञान था। पीठ पर अपने मालिक का ध्यान रखते हुए अपनी गति को बिना कम किये, वह बेजबान जानवर दौड़ रहा था।

नींद में ही यह कठिन प्रवास हो रहा था। हंबीरराव की आँखों के सामने पहले के प्रतापगढ़ का दृश्य उभर आया। सजी हुई पालकी में बैठकर शिवाजी महाराज अफजलखान मे मिलने जा रहे थे। खान की दगाबाजी का महाराज द्वारा तत्काल लिया गया बदला। उसी तलहटी में घेरा डालकर सर्जाखान खड़ा था। प्रतापगढ़ के बुर्ज की ओर हँसते हुए देख रहा था। शिवाजी और सम्भाजी का नाम लेकर उपहासपूर्वक हँस रहा था। हंबीरराव अचानक ग्लानिग्रस्त होकर जाग गये। उन्होंने आवेश में घोड़ा दौड़ाया। उन्होंने नागेजी भोसले को सावधान करते हुए कहा, "चलो जल्दी अभी तक कोई मुगल सह्याद्रि का घाट पार करके आया नहीं है। यदि 'पारघाट' पर दुश्मन ने क़ब्ज़ा कर लिया तो गजब हो जाएगा।"

इतना लम्बा सफर हंबीरराव की सेना ने दस-बारह घंटों में तय कर लिया। दूसरे दिन सवेरे ही पूरी सेना महाबलेश्वर पहुँच गयी। शत्रु अभी वहाँ नहीं पहुँचा था, इसकी पक्की जानकारी मिली। सेना वापस मुड़कर घौड रास्ते से सीधे गुरेघर की चढ़ाई पार कर पाँचगणी पहुँच गयी। वहाँ पर सेना ने दोपहर का कुछ विश्राम किया। पाँचगणी से निकलते-निकलते अँधेरा घिर आया था। इस जंगली प्रदेश का चप्पा-चप्पा नारोजी भोसले को पता था। सर्जाखान की आधी फौज पाँचगणी का घाट पार कर ऊपर आ गयी थी। उसने रात बिताने के लिए घाट की एक खोह का आश्रय लिया।

पाँचगणी की भोर की गुलाबी ठंडक में सर्जाखान सोया हुआ था। उसी समय 'हर हर महादेव' का शोर उठा। हंबीरराव के घोड़े सर्जाखान पर टूट पड़े। वह छोटी-सी घाटी घोड़ों और मनुष्यों से भर गयी। मार काट शुरू हुई। सोते समय ही मराठों ने खान पर आक्रमण किया था। अचानक ऊपर के पहाड़ से दैत्यों की तरह दौड़ते हुए आये थे। मुगल फौज की दुर्दशा हो रही थी।

घाट के रास्ते से उनसे भागते भी नहीं बन रहा था। मराठों ने मुगलों के दो हजार सैनिकों को मार गिराया। इस भयंकर आक्रमण से मुगल सेना जान बचाकर भागने लगी। मुगल वाई की ओर भागने लगे।

सूर्य के निकलने के पहले ही हंबीरराव ने घाटी और घाट के रास्ते पर अपना कब्जा जमा लिया था। प्रतापगढ़ की ओर बढ़ने के खान के स्वप्न को चूर चूर कर दिया था। दहशत खाई बीजापुरी और मुगल फौज नदी पार कर केंजल जंगल मे भाग गयी थी। सर्जाखान की फौज तीन गुना थी। कुछ लोग हड़बड़ा गये थे किन्तु आज हंबीरराव के शरीर में प्रचड वीरत्व उत्पन्न हो गया था। अपने घोड़े को शिविर में नचाते हुए उन्होंने कहा, "चलो हमारा एक-एक वीर और एक-एक घोड़ा दस दस के लिए भारी है। बोलो हमला—"

दुश्मन थोड़ा पीछे हट गया था। किन्तु साहसी हंबीरराव ने कहा, "लगे हाथ इन्हें आज ही समाप्त कर दो। कृष्णा नदी के किनारे सर्जाखान नाम की जहरीली लता को आज ही जड़ से उखाड़ कर फेंक दो। अन्य लोगों ने पूछा, "आज के दिन थोड़ा विश्राम किया जाये तो?"

हंबीरराव का शरीर कुछ ढीला पड़ गया था। वहीं पर दरी पर एक चद्दर डालकर मामा लेट गये। थोडी ही देर में वे गहरी नींद में सो गये। वर्षो के कष्ट, परिश्रम, चारों मौसमों की भाग दौड़ से मामा का शरीर दुख रहा था। किसी प्रकार आधा घंटा हुआ होगा कि उन्हें लगा जैसे कान में कोई कीड़ा घुस गया। वे झट से उठकर बैठ गये। उन्होंने अपने सहयोगियों को जोर से पुकारा, "चलो बच्चो उठो, हमारा शम्भूराजा हमारी राह देख रहा है। अभी ऐसी बहुत सी लड़ाइयाँ जीतनी हैं,

अपने इन जन्मजन्मान्तरों के शत्रुओं के साथ।" हंबीरराव आवेश में बोल रहे थे।

सवेरे ग्यारह बजे के आसपास कृष्णा नदी के किनारे से केंजलगढ़ तक युद्ध शुरू हुआ। तलवारों से तलवारें टकराने लगीं। संख्या में कम होने पर भी मराठी घोड़े दुश्मन के घोड़ों से भिड़ गये। धक्कामुक्की, मारामारी जोर पर थी। रक्त के फौवारे फूटने लगे। दोनों दलों के सैनिकों के पेट और पीठ पर तलवारें पड़ने लगीं। सैनिकों के जिरह बख्तर फटने लगे। शस्त्रों के प्रबल आघात से सिर के टोप और हाथ की ढालें फूटने लगीं।

कृष्णा तट के घनघोर युद्ध पर पूरे आसमान का ध्यान था। सुदूर मांटरदेवी के पहाड़ पर से कालूबाई अपनी चाँदी की आँखों से उसी ओर देख रही थीं। पूर्व की ओर चन्दन वन्दन किले का बुर्ज सिर ऊँचा करके घूम-घूमकर उसी ओर देख रहा था। सूर्य के पश्चिम की ओर ढलने तक सर्जाखान बड़े जोश में था। किन्तु सन्तप्त मराठों ने सर्जाखान के तीन-चार हजार और सैनिकों को काट डाला। हंबीरराव के दो तीन सौ सैनिक मारे गये। दोपहर के बाद शत्रु की फौज युद्धभूमि छोड़कर भागने लगी। मराठों को और भी जोश आ गया। सैनिक जोर-जोर से चिल्लाने लगे 'पकड़ोऽ, मारोऽऽ मारोऽऽ' चार बजते-बजते सर्जाखान की हिम्मत जवाब दे गयी। उसने कृष्णा के किनारे से जान बचाने हेतु नीचे की ओर घोड़ा भगाया। उसके साथ ही भागने वालों की संख्या बढ़ने लगी। सर्जाखान के दल को लूटा गया। उसके तम्बू और कनात के सामान हाथ में आ गये। सर्जाखान के पन्द्रह हाथी और डेढ़ हजार घोड़े भी हंबीरराव को मिल गये।

युद्धभूमि भी थक गयी थी। खान की फौज छोटी मोटी तोपें और बारूद वहीं छोड़कर भाग गयी थी। विजय के नगाड़े बजने लगे। केंजल के नीचे सुहागिनें हंबीरराव की आरती उतारने के लिए बाहर निकल आयीं। घोड़ों की पीठ पर लूटा हुआ सामान लादकर मराठा वीर निकलने की तैयारी कर रहे थे। विजय की आभा से हंबीरराव की मुद्रा और भी तेजस्वी लग रही थी। सर्जाखान से लूटे गये हीरे जवाहरात लेकर परिचारक आगे निकल आये। हंबीरराव के घोड़े की जीन की झोली इन रत्नों से खचाखच भरी थी। 'सम्भाजी महाराज की जयऽऽ' की गर्जना से आसमान अनुगूँजित हो उठा।

मंगल वाद्य बज रहे थे। केंजल माँ-बहनें आरती उतारने के लिए कुछ दूरी पर बाहर आ गयी थीं। हरी साड़ी और नाकों में नथ पहने हुए इन सुहागिनों को हंबीरराव आश्चर्य से देख रहे थे। उन्हीं सुहागिनों में मामासाहब की महारानी येसूबाई और उनका आँचल पकड़कर आती हुई बेटी ताराऊ दिखाई देने लगी।

इसी समय बाँधवड़ी की फुलवारी में कुछ हलचल हुई। एक मुगल सिपाही खेत में बाँध के पास बेहोश पड़ा था। उसके पैर में गहरी चोट आयी थी। उसकी

एक आँख फूट जाने से गाल पर रक्त की धारा बह रही थी। वहाँ खून जम गया था। उसने पलकों को झपकाते हुए एक आँख खोली। थोड़ी ही दूरी पर घोड़े पर सवार हंबीरराव को देखा। बदले की भावना से उसका खून खौल उठा। पास ही तोप पड़ी हुई थी। उसने बड़ी कठिनाई से सामने पड़ी तोप में बत्ती लगाइ। धूम-धड़ाम की तेज आवाज के साथ गोला निकला। धूल का बवंडर उठा। क्या इसका पता लगने से पहले गोला हंबीरराव की ओर आया। धुएँ को देखकर सभी का कलेजा मुँह को आ गया। 'माँमाँऽ' 'हंबीरमामाऽऽ' चिल्लाते हुए लोग उसी ओर दौड़ पड़े। सामने हंबीरमामा का आधा जला शरीर घोड़े के साथ गिरा पड़ा था। मस्तक के स्थान पर सिर्फ जला हुआ मांस ही दिखाई पड़ रहा था। रायगढ़ की सीढ़ियों का एक बलिष्ठ शिलाखंड केंजल की भूमि पर टूटकर चूर-चूर हो गया था। मनुष्य, पशु, पक्षी यहाँ तक कि सारा आकाश अवाक् हो गया। सारे दिन दूर से युद्ध को देखते रहने वाले चन्दन वन्दन किले का चेहरा भी स्याह हो गया। पास ही बह रही कृष्णा माई का प्रवाह ठहरा हुआ सा लग रहा था। मांटरदेवी पहाड़ी की देवी कालूबाई फूट फूटकर रो रही थी। एक महान संकल्प का दुखद अन्त हो गया था।

हंबीरमामा का क्षत विक्षत शरीर उठाकर पालकी में रखा गया। उनके वीर घोड़े की भी ग्रामीणों ने आदरपूर्वक समाधि बनायी। घोड़े की जीन का सामान भी वहीं पड़ा था। मर्जाखान की सेना से लूटे गये हीरे जवाहरात भी वहीं पड़े थे। हबीरराव के रक्त मे काली मिट्टी सोना बन गयी थी। हीरे मोती की कीमत माटी के बराबर हो गयी थी।

हंबीरराव के वीरगति प्राप्त करने का समाचार रायगढ़ पर पहुँचा। सभी जगह हाहाकार मच गया। शम्भू महाराज नीचे रायगढ़वाड़ी में गये थे। वहाँ पर अठारह खारखानों का निरीक्षण चल रहा था। वहीं पर उन्हें यह भयानक समाचार मिला। यह समाचार सुनकर शम्भू महाराज दो घंटे तक एक ही स्थान पर विक्षिप्त की भाँति बैठे रहे। फिर रायगढ़ की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। अन्य समय शम्भू महाराज घोड़े को नचाते हुए एक ही बार में किले पर चढ़ जाते थे। यदि पैदल हुए तो तेज गति से बिना कहीं रुके किले पर चढ़ते थे। अपने साथ चलने वालों साथियों और सेवको को पसीने से तरबतर कर देते थे। किन्तु आज वे नंगे पॉव किला चढ़ रहे थे। रास्ते में बार बार बैठ जाते थे। सेवकों ने पालकी मे बैठने का बार बार आग्रह किया किन्तु वे नहीं माने।

महाराज किसी प्रकार किले के ऊपर आ गये। उन्होंने केवल खंडो बल्लाल से कहा, "हंबीरमामा के यथोचित अन्तिम संस्कार के लिए जितना भी आवश्यक हो, सरकारी खजाने से दे दीजिए। कराड के सूबेदार को इसकी सूचना यथाशीघ्र भेज दीजिए।" शम्भू महाराज अपने महल में न जाकर उसी स्थिति में जगदीश्वर के

मन्दिर में जाकर बैठ गये। उन्होंने सेवकों से कहा, "महारानी को सूचित कीजिए...उनसे कहिए मुझे यहीं ईश्वर के सान्निध्य में रहने दें।" दो रात, दो दिन महाराज उन्हीं वस्त्रों में मन्दिर में बैठे रहे।

चारों ओर हो हल्ला मचा हुआ था। हंबीरराव राजाराम के ससुर और ताराऊ के पिता थे। शोक सन्तप्त ताराबाई के पास येसूरानी बैठी थीं। ताराबाई के दुख की कोई सीमा नहीं थी। दूसरे दिन, राजकर्मचारी निजी बैठक में आये। जगह जगह पर युद्ध आरम्भ थे। येसूरानी ताराऊ का सिर अपनी गोद में रखकर थपथपा रही थीं। उन्हें सान्त्वना दे रही थीं। साथ ही पन्नों पर भी अपनी नजरें दौड़ा रही थीं।

महारानी के इस रूप को देखकर ताराऊ ने पूछा, "दीदीजी यह सब आप कैसे सहन कर लेती हैं? कैसे सब कुछ सँभाल लेती हैं? आपको इतनी शक्ति कहाँ से मिलती है?"

"अरे ताराऊ! हम शिवाजी महाराज की पुत्र-वधुएँ हैं। जो भी बाधा आएगी उसके आगे हमें जाना ही होगा। हमारी दौलत अपनी सम्पदा पर अभिमान करने वाली मुगलो की बादशाहत नहीं है। हम तो परिश्रमी किसानों के राजा हैं।"

"जी।"

"कोई भी, और किसी भी प्रकार की विपत्ति आ जाय, तुमको और मुझको पैर मोडकर बैठने की सुविधा कहाँ है? परिश्रमी किसानो की बहू बेटियों को कभी देखा है? हल खींचने वाला कोई बैल मर गया तो वे पल्लू बाँधकर जुआ अपनी गर्दन पर रख लेती हैं और बैल के साथ हल खींचती हैं। किन्तु बुआई अवश्य करती हैं। ताराऊ! प्रजा की भाँति ही राजा को भी रहना पड़ता है।"

हंबीरमामा के आकस्मिक निधन से शम्भु महाराज के हृदय को कितना गहरा आघात लगा था, इसे सभी जानते थे। शोक सन्तप्त शम्भु महाराज जगदीश्वर के मन्दिर से निकलने को तैयार ही न थे। पिछले दो दिनो और दो रातों के बीच उन्होंने दो-तीन बार आधा आधा गिलास दूध पिया था। इसके अतिरिक्त केवल पानी ग्रहण किया था।

तीसरे दिन प्रात:काल येसाजी कंक, म्हालोजी घोड़पड़े और प्रह्लाद निराजी जैसे बुजुर्ग मन्दिर में जा पहुँचे। महारानी भी उनके साथ थीं। इन वरिष्ठ व्यक्तियों को महाराज को समझाकर मन्दिर से बाहर निकालने में अधिक समय नहीं लगा। किन्तु धीर गम्भीर प्रवृत्ति वाले महाराज को अब अपना दुख दबा पाना असम्भव हो गया। उन्होंने कातर स्वर में कहा, "पहाड़ जैसे हमारे पिताजी हमें छोड़कर चले गये। तब भी हम मन से इतना नहीं डरे। क्योंकि पिताजी के वियोग का स्मरण हंबीरमामा ने हमें कभी होने ही नहीं दिया। हमारे आधार के लिए हंबीरमामा का मजबूत कन्धा मौजूद था। आज वह कन्धा हमें छोडकर चला गया। अब हम जाएँ

भी तो कहाँ?''

''महाराज यह तो जगत की रीति है। बूढ़ों को तो एक न एक दिन जाना ही है। अब हमारे पास खंडो बल्लाल, धनाजी, सन्ताजी जैसे नये तरुण हैं। इन्हीं में मे एकाध नया हंबीरराव...'' येसाजी बाबा ने कहा।

पहाड़ जैसे अनेक कठिन काम मामने पड़े थे। औरंगजेब जैसा बहुरूपिया शत्रु, नये नये जाल बिछा रहा था। शोक मनाने के लिए भी ममय नहीं था। शम्भु महाराज उठे। नये जोश के साथ कमर कसकर तैयार हो गये। उन्होंने उसी दिन म्हालोजी बाबा घोड़पड़े को नये सेनापति के रूप में नियुक्त करके उन्हें राजसी वस्त्र पहनाये। अपने पिता के उचित मम्मान से तरुण सन्ताजी घोड़पड़े बेहद प्रमन्न दिखाई दे रहा था।

कबड़ी–कबरी

एक

सैनिक कार्यवाही शीघ्रता से आरम्भ हो गयी। अलग अलग मोर्चों पर शम्भू महाराज के सरदार लड़ रहे थे। उन्हें पर्याप्त शस्त्रों, रसद और घोड़ों की पर्याप्त आपूर्ति हो रही है या नहीं, इसकी जाँच की जा रही थी। उसी समय बगल की नगाई कचहरी पर भी खूब भीड़ बढ़ रही थी। अलग अलग क्षेत्रों से माँगें आ रही थीं। जाँच पड़ताल के बाद किसानों को खेती के लिए कर्ज बाँटा जा रहा था। बीज आदि के लिए सरकार की ओर से धन दिया जा रहा था। दरबार में सैनिक और कृषिकार्य का काम साथ-साथ चल रहा था। शम्भू महाराज महारानी येसूबाई और कवि कलश कठिन परिश्रम कर रहे थे। प्रत्येक गाँव के मुखिया एवं सरदार को बुलाकर शम्भू महाराज ने सभी को समझाया, "स्वयं को जीवित रखते हुए अपने पशुओं को भी जीवित रखिये। अस्तबल और तबेले उजड़ जाएँगे तो भविष्य में बड़ी समस्या होगी। खेतों में अनाज पैदा नहीं होगा, तो हमारी सीमाओं की रक्षा कौन करेगा?"

हमेशा की भाँति आज भी काम की भाग दौड़ जारी थी। उसी समय द्वारपाल दौड़ते हुए भीतर आया। उसने गणोजी शिर्के के आने की सूचना दी। द्वारपाल के पीछे पीछे महाराज की आज्ञा की बिना प्रतीक्षा किये गणोजी अन्दर आ गये। उनके आते ही दरबार की स्थिति बदल गयी। यह समझकर कि कोई गम्भीर समाचार लेकर गणोजी आये हैं, अन्य लोग बाहर चले गये।

महारानी येसूबाई ने गणोजी की ओर देखा। गणोजी कल से ही आकर पाचाड़ के महल में रुके हैं। इसकी सूचना महारानी को मिल गयी थी। किन्तु उन्हें इस बात का अनुमान नहीं था कि वे इतने सवेरे गढ़ चढ़कर ऊपर आएँगे। गणोजी को देखकर महाराज और महारानी सावधान होकर बैठ गये। कवि कलश उठे और अपने हाथ के कागज पत्र पास की मेज पर रखकर बाहर जाने लगे। उनकी ओर

देखते हुए गणोजी शिर्के ने कहा, "कविराज, आपके बाहर जाने से कैसे चलेगा?"

"नहीं, ऐसे ही जाकर आता हूँ।"

"ऐसे कैसे कविराज? जा कहाँ रहे हैं? रायगढ़ के महाराज आपके बिना पानी तक नहीं पीते, श्वास भी नहीं लेते।"

"ठीक कह रहे हो गणोजीराव! राजा को ईमानदार व्यक्ति अपने समीप रखने पड़ते हैं और इसी प्रकार नालायकों को दस हाथ दूर ही रखना पड़ता है।"

शम्भू महाराज के इस उद्गार से येसूबाई का चेहरा खिल गया। महाराज ने तत्काल पूछा, "कहिये गणोजी, कैसे हैं?"

गहरी साँस लेते हुए गणोजी ने कहा, "हमारे सगे जीजा स्वराज्य के छत्रपति हैं। इतने बड़े साम्राज्य के मालिक हैं। मेरी छोटी बहन रायगढ़ की साम्राज्ञी है। किन्तु यह सब व्यर्थ है। हमारे जीजाजी ने हमें कभी अपना माना ही नहीं। क्यों येसू सच है, कि गलत?"

"किसलिए बहन को साक्षी बना रहे हैं, गणोजीराव?" सम्भाजी राजा का चेहरा तमतमा गया। वे अपने दाँतों से ओंठ चबाते हुए बोले, "दूर की बात क्यों करें? पिछले तीन महीने में आप स्वयं छुप-छुपकर औरंगजेब से कितनी बार मिले हैं इसका पक्का सबूत दूँ आपको? वे सारे प्रमाण और आपके हाथ के लिखे पत्रों को महारानी ने भी अपनी आँखों से देख लिया है।"

महाराज के सीधे आक्रमण से गणोजी कुछ घबराये अवश्य किन्तु दूसरे ही क्षण अपना मूल स्वर पकड़ते हुए आवेश में बोले, "मैं कहता हूँ, ठीक है। मैं मिला औरंगजेब से। किन्तु कोई व्यक्ति इतनी दूर तक क्यों चला जाता है इसका विचार राजमुकुट धारण करने वाले व्यक्ति को करना चाहिए या नहीं?"

"जागीर के लिए ही न?" शम्भू महाराज ने गणोजी पर दृष्टि टिका दी।

"वही कह रहा हूँ महाराज, आपके तीर्थस्वरूप पिता शिवाजी महाराज ने वचन दिया था कि मुझे यदि पुत्ररत्न प्राप्त होगा तो दाभोल की जागीर उसके नाम कर देंगे। अब हमारे चिरंजीव आठ वर्ष के हो गये हैं। कब दे रहे हैं आप हमें हमारी जागीर?" गणोजी उखड़ गये।

"गणोजीराव आप समझते क्यों नहीं? समय बहुत खराब आया है। औरंगजेब जैसा शत्रु गर्दन पर सवार है। यदि आप अकेले को जागीर दी तो दूसरों को भी देनी पड़ेगी। अराजकता फैल जाएगी। इसीलिए कहता हूँ, थोड़ा धीरज रखिये।" सम्भाजी ने समझाते हुए कहा।

बैठक में गणोजी और सम्भाजी की बातचीत चल रही थी। बातचीत की गर्म हवा बाहर भी पहुँच रही थी। बैठक की बातचीत समाप्त करने के लिए महाराज और महारानी प्रयत्न कर रहे थे कि भोजन के बहाने उठें और भीतर चले जायँ।

किन्तु सन्ताप से उफनते गणोजी राव रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। बीच में राजा के हित की चिन्ता प्रकट करते हुए गणोजी बोले, "शम्भू महाराज चाहे आप मुझे कुछ भी न दें, किन्तु कलश नाम के इस काल सर्प को पहले बाहर निकाल दें। हमारे ससुर के पुण्यप्रताप से प्राप्त इस राज्य को बचाइये।"

"गणोजीराव आपकी बात ठीक है। किन्तु कवि कलश को निकालकर मैं अपने सिर को किसके कन्धे से विश्वासपूर्वक टिकाऊँ? आपके? कौन है कविराज की जगह लेने वाला? हमारा दुर्दिन देखकर अर्जुन भोसले जैसा चचेराभाई साथ छोड़कर चला गया। सगे बहनोई महादजी निंबालकर आज वहाँ खान की फौज में हैं। हरजीराजा बहादुर हैं किन्तु लोभी हैं। बचे गणोजीराव। आप केवल शरीर से यहाँ हैं, मन से बादशाह के तम्बू में। माँ भवानी! कैसा कठिन समय आया है? स्वराज्य की नौका डूबे नहीं, इसके लिए हम एक एक व्यक्ति को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। किन्तु वहाँ शिवाजी महाराज का सगा जामाता औरंगजेब की वन्दना कर रहा है।"

शम्भू महाराज की स्पष्टोक्ति से गणोजीराव कुछ विचलित हुए। वे नितान्त अपमानित मुद्रा में लम्बी साँस लेते हुए बोले, "देखा येसू? तुम्हारे पतिदेव का मुझ पर कितना भरोसा है? और कोई बात नहीं है। उस कलश नाम के कालसर्प ने राजा के दिमाग में ऐसा जहर घोल दिया है कि उन्हें यह पता ही नहीं चल रहा है कि कौन अपना है और कौन पराया? मेरे जैसा पराक्रमी व्यक्ति भी उन्हें ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है।"

"छोड़िए भी अब गणोजी शिर्के! वह कलश तो जाति का ब्राह्मण है, फिर भी जिस समय शहाबुद्दीनखान ने रायगढ़ पर अचानक आक्रमण किया था, उस समय कवि कलश ने साहसपूर्वक अपनी शिखा में गाँठ बाँध ली थी। हाथ में तलवार लेकर साहसपूर्वक मुकाबला किया था। घोड़े को नचाते हुए रायगढ़ को बचाया था।"

"मतलब! इसका मतलब हमने कुछ भी नहीं किया।"

"यह बात आप अपनी आत्मा से पूछें। हमने इतनी लड़ाइयाँ लड़ीं। उनमें से क्या किसी भी युद्ध का नाम आप बता सकते हैं, जिसमें गणोजीराव शिर्के नाम के, शम्भू महाराज के सगे साले ने हाथ में तलवार लेकर पहली पंक्ति में लड़े हों? पीछे रहकर कपड़े सँभालने वाले बच्चों में भी आप कभी नहीं थे।"

इस तीखे प्रश्न से गणोजी सकपका गये। वे छटपटाकर बोले, "इसका मतलब आप मुझे उस कलश की पंक्ति में बिठा रहे हैं?"

"बिलकुल नहीं। इस गलतफहमी में आप न रहें। उनकी पंक्ति में बैठने के लिए आप किसी तरह से योग्य नहीं हैं। शम्भूराजा की मित्रता के लिए वह जमीन

पर रक्त का सैलाब फैलाने में भी आगा पीछा नहीं देखेगा।''

शम्भू महाराज और येसूबाई ने दोपहर का भोजन समाप्त किया। उसी समय एक दासी ने दौड़ते हुए आकर सूचित किया कि गणोजी राजा पुन: बैठक में आ गये हैं। यह सुनकर शम्भू महाराज विचित्र तरह हँसे। पति से झगड़कर कोई झगड़ालू औरत अपनी गठरी उठाकर गाँव की सीमा तक जाती है और फिर लौटकर पैर पटकते हुए दरवाजे पर आकर खड़ी हो जाती है। यही स्थिति गणोजीराव की हुई थी। हो सकता है कि अपनी बहन पर उनका प्रेम फिर उमड़ आया हो। यह भी हो सकता है कि जगदम्बा की कृपा से उन्हें अपने किये पर पश्चाताप हुआ हो। ऐसे ही कुछ महाराज ने सोचा।

किन्तु दूसरे दिन भी गणोजी अपनी ही हठ पर कायम थे। अन्त में गणोजी के भीतर का जहर आखिर बाहर निकल पड़ा। शिर्के बेचैन होकर बोले, ''सम्भाजी महाराज अभी विचार कीजिए, सीधे सीधे हमारी जागीर हमें दे दीजिए, नहीं तो इस रायगढ़ को मैं एक दिन बेचिराग कर दूँगा।''

गणोजी के मुख से ये शब्द सुनकर शम्भू महाराज झट से खड़े हो गये और गणोजी का गला घोंटने के लिए झपटे। किन्तु बिजली की तेजी से येसूबाई बीच में आ गयीं। उन्होंने अपने भाई के लिए महाराज के सामने आँचल फैला दिया। बड़े भाई के लिए उनकी आँखों में आँसू उमड़ आये। वे अपने भाई के प्राणों की भीख माँगने लगीं। महारानी के आँसुओं में ऐसी विलक्षण शक्ति थी कि महाराज का प्रलयकर क्रोध पिघलकर तरल हो गया।

विवाद आगे न बढ़े और कोई अघटित न घटित हो इसलिए येसूबाई अपने भाई को लेकर अन्दर के दालान में चली गयीं। वहाँ भी गणोजी वही रट लगाए थे। उन्होंने पक्का निर्णय ले लिया था इस बार जागीर के सम्बन्ध में फैसला कर लेना है। अपने स्वार्थ के लिए गणोजी ने महाराज पर जो आरोप किये थे उससे महारानी भी रुष्ट थीं। उन्होंने अपने भाई से चिल्लाकर कहा, ''भाई साहब पिताजी के न रहने पर आपकी जबान बहुत तेज चलने लगी है क्यों?''

''हाँ येसू, पिताजी के दबाव के कारण ही मैं इतने दिन चुप बैठा रहा। परन्तु उन्हें भी इस बात की कल्पना कहाँ थी कि समय इस तरह बदल जाएगा। इसलिए येसू एक बात मैं बहुत साफ साफ कह देता हूँ।''

''कौन सी?'

''रायगढ़ के सिंहासन पर आज कोई राजा बैठा ही नहीं है।''

''तो दूसरा कौन बैठा है?''

''एक अविचारी उल्लू।''

गणोजी के इस वाक्य से येसूबाई की आँखें क्रोध से लाल हो गयीं। उस विचारशील नारी से अपने पति का यह अपमान सहन नहीं हो पाया। वे शीघ्रता से आगे बढ़ीं। किसी को घटना का अनुमान लग सके इसके पूर्व ही उन्होंने गणोजी राजा को एक चाँटा जमाया। इस विषबाण से गणोजी घबरा गये। वे हाथ पैर झाड़ते हुए उठकर खड़े हो गये। आसपास के नौकर-चाकर, बहन भाई के इस झगड़े को अवाक् होकर देख रहे थे। क्रोध से विह्वल गणोजी ने अपनी छोटी बहन के गौर भाल की ओर देखा। उसके माथे पर कुंकुम था और आँखों से अंगारे बरस रहे थे। अपने ओंठ और दाँत चबाते हुए गणोजी ने धीमे स्वर में केवल इतना कहा, "अपने माथे का कुंकुम पोंछकर जिस दिन तू विधवा होगी, उसी दिन मैं पचास गाँवों में मिठाई बाँटूँगा, दीवाली मनाऊँगा।"

"खामोश, गणोजी! पहले अपना मुँह काला करके रायगढ़ से बाहर निकलिए।"

येसूबाई की आँखों में क्रोधाग्नि फूट रही थी। अपना ओंठ दाँत से चबाते हुए उन्होंने कहा, "अरे, पुण्यवान माता पिता से जन्म लेकर हम धन्य हुए। किन्तु जैसे कल्पवृक्ष के साथ विषवृक्ष पैदा हो जाये या कालसर्प पैदा हो जाये उसी प्रकार पवित्र शिर्के कुल में आप जन्मे हैं।"

"येसू मैं देख लूँगा। इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।" पैर पटकते हुए गणोजी गरजे।

"औरंगजेब के कुत्ते। जाओ अपने बादशाह के पास। तुम्हारे मुँह में स्वराज्य की बासी रोटी का टुकड़ा भी नहीं जाएगा।"

दो

"युवराज्ञी आपके भाई गणोजी की झोली में हमने जागीरदारी नहीं डाली तो वे नाराज होकर मुगलों को निमन्त्रित करने दौड़े चले गये। निमन्त्रण भी कैसा? शत्रु को हमारे स्वराज्य में फौजी चौकी खड़ी करने का। कितना उल्टा कार्य करने के लिए वहाँ भागा है, यह शिर्केकुलभूषणऽऽ।"

दरबार में अत्यन्त असन्तोष के साथ महारानी से कहा, "उन्हें बुद्धि ही नहीं है, अपने-पराये की समझ ही नहीं है।" महारानी का स्वर अपराध भाव से भर

गया था।

"तो क्या औरंगजेब जैसे भयंकर जानवर को दरवाजा खोलकर भीतर आने दिया जाय? मैंने तो कविराज से स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि बादशाह के गुलाम सालेराजा का ऐसा अशिष्ट बर्ताव मैं कभी सह नहीं सकता। इसलिए प्रभावली में औरंगजेब के चौकी बनाने से पहले ही शिर्के को यहाँ से निकाल दिया जाय।"

आजकल कवि कलश कभी कभी ही महाराज के सामने दिखाई पड़ते थे। महाराज ने उन्हें मलकापुर प्रान्त की जिम्मेदारी सौंपी थी। वहाँ से समीप अंबाघाट का संरक्षण भी उन्हीं के जिम्मे था। महाराज ने उन्हें आदेश दिया था कि जो भी हो, उस रास्ते से शत्रु के आदमी तो क्या एक चींटी भी कोंकण में उतरने न पाए। पन्हाला, मलकापुर, विशालगढ़ से अम्बाघाट भावी युद्ध की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। इसलिए कवि कलश अपने घोड़े पर उस क्षेत्र को छान रहे थे। उनकी बेचैनी और उनके जोश का प्रभाव वहाँ की प्रजा पर भी पड़ रहा था। गड़ेड़ियों के लड़के भी कविराज की प्रशंसा में कहते थे, "बड़ी जिद वाला है यह हिन्दुस्तानी ब्राह्मण।"

राजा की आज्ञानुसार, पिछले महीने से कविराज ने शिर्के का पीछा करना आरम्भ कर दिया था। अपने साथ एक बड़ी फौज लेकर क्रुद्ध कविराज घूम रहे थे। पहले पन्द्रह दिनों में उन्होंने शिर्के और उनके सम्बन्धियों की रीड तोड दी थी। किन्तु पिछले दस दिनों से कविराज का कोई समाचार नहीं मिल पाया था। इसलिए महाराज चिन्तित थे।

दोपहर को किले पर चढ़कर कविराज के सचिव कृष्णाजी कोन्हेरे दरबार में आ पहुँचे। कुछ विश्राम करने या भोजन करने के चक्कर में न पड़कर वे सीधे महाराज के सामने उपस्थित हुए। उनकी चिन्तित मुखाकृति को देखकर महाराज और महारानी एक दूसरे की ओर देखने लगे। शम्भू महाराज कुछ रुष्ट होकर बोले, "पिछले दस दिनों से आपकी ओर से कोई समाचार नहीं। यह क्या चल रहा है, कृष्णाजी पन्त? शम्भूराजा का आदेश कवि कलश भी भूल गये?"

"नहीं, नहीं, वैसा नहीं है।" कृष्णाजी पन्त ने बड़ी आत्मीयता से कहा, "कविराज की तलवार की अपेक्षा गणोजी की जीभ बहुत अधिक विषैली है महाराज। उन्होंने अपनी विषैली जीभ से स्वराज्य में आपके विरुद्ध गलतफहमियों का बड़वानल भड़का रखा है।"

"क्या कहता है वह?"

पन्त ने अपनी जीभ दबा ली। अपने गालों पर हल्की सी चपत लगाते हुए वे क्षमा माँगने लगे। इस पर महाराज ने ज्यों की त्यों बात कहने का आदेश दिया। तब

मन को कड़ा करके पन्त व्यग्र स्वर में बोले, "गणोजी कहते हैं, रायगढ़ का राजा पागल हो गया है। उसका दिमाग फिर गया है। सन्तुलन बिगड़ गया है। इसीलिए उन्होंने धर्मभ्रष्ट और शाक्तपन्थी कलश के अधिकार में स्वराज्य दे दिया है। यह कलश देव, धर्म और देश का घोर शत्रु है। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि अनेक मराठे और ब्राह्मण सरदार और सम्मानित लोग इसका विश्वास कर रहे हैं।"

इस समाचार को सुनकर शम्भू महाराज बड़ी देर तक अपने आसन पर चिन्ताग्रस्त बैठे रहे। खंडो बल्लाल कागज पत्रों से सिर उठाकर चिन्तित मुद्रा में महाराज और महारानी की ओर देख रहे थे। येसूबाई ने कृष्णाजी पन्त से पूछा, "अपना काम छोड़कर कविराज का विशालगढ़ की ओर जाने का क्या कारण था?"

"नहीं महारानी जी, शिर्के के दुष्प्रचार ने सारा वातावरण ही उलट दिया है। लोग यह भी भूलने लगे हैं कि असली संघर्ष शम्भू महाराज और औरंगजेब के बीच है। इसके विपरीत यह सिद्ध किया जा रहा है कि कवि कलश ही असली धर्म संकट हैं। इसलिए भ्रमित होकर कवि कलश पीछे आ गये हैं।"

बीच में हस्तक्षेप करते हुए महारानी ने कहा, "मुझे लगता है कि इसी समय रायगढ़ छोड़ देना ही अच्छा है।"

"महारानी, यह आप कह रही हैं?"

सम्भाजी राजा ने महारानी की ओर चकित होकर देखा। महारानी ने अपनी पलकें बन्द करके हुकारी भरी। शम्भू महाराज ने खंडो बल्लाल को आदेश दिया, "खंडो जी, अभी इसी वक्त कविराज को पत्र भेजिये। उनके कहिये कि वे दो दिन के भीतर संगमेश्वर पहुँचें।"

खंडो बल्लाल ने तत्काल पत्र लिखना आरम्भ किया। शत्रु से मिल जाने के कारण शम्भू महाराज शिर्के को नेस्तनाबूद करने के लिए निकलने वाले थे। किन्तु वे यह भी नहीं भूल पा रहे थे कि वह क्षेत्र उनकी प्रिय रानी का मायका है। दरबार में चक्कर काटते हुए वे बीच बीच में येसूबाई की ओर देखते थे। येसूबाई अपना आँचल सँभालते हुए राजा के सामने आ गयीं और दृढ़ स्वर में बोलीं, "महाराज, अब कोई पछतावा या दुख अपने मन में न आने दें। आप अपने निर्णय के अनुसार कार्य करें। यदि राजा की ससुराल किसी दुश्मन बादशाह का मायका बन गया है तो ऐसी ससुराल की होली जला देने से क्या बिगड़ेगा?"

महाराज कुछ कहें इससे पहले ही अपने मन का गुबार निकालते हुए महारानी ने कहा, "महाराज, पिछले आठ वर्षों की गर्मी और वर्षा को आपने झेला है। यह झेलते हुए आप अपने शत्रु के विशाल सेना सागर से जूझते रहे हैं। इस बीच परायों की कौन कहे कितने अपने भी पराये हो गये। शरीर पर पहाड़ टूटने जैसा हंबीरमामा

की मृत्यु का संकट भी आपने सहन कर लिया। किन्तु महाराज आपके चेहरे पर निराशा की एक भी रेखा नहीं उभरी। शेर जैसी हिम्मत ही आपका असली सामर्थ्य है। तुलजा भवानी से एक ही प्रार्थना है कि आपके इस दुर्दम साहस और आपकी वीरवृत्ति को किसी की नजर न लगे।''

येसूबाई के धैर्यपूर्ण उद्‌गार से सम्भाजी महाराज का मन भर आया। उन्होंने कातर स्वर में पूछा, ''येसू, क्या आपको लगता है कि इस भयपर्वत को यह शम्भूराजा पार कर सकेगा?''

''बेशक! इतने संकट आये फिर भी आपने सह्याद्रि के मजबूत किलों में से एक भी शत्रु के हाथ नहीं लगने दिया। आपके डरने या पीछे हटने का कोई कारण ही नहीं है। जब भी बड़े महाराज स्वर्ग से अपने स्वराज्य की ओर देखते होंगे, वे सन्तोषपूर्वक यही कहते होंगे कि 'मेरे शम्भूराजा, मेरा हिन्दवी स्वराज्य तुम्हारे फौलादी हाथों में सुरक्षित है'।''

तीन

खंडो बल्लाल की ओर देखते हुए शम्भू महाराज ने कहा, ''खंडोजी, गोवा के वाइसराय को सन्देशा भेजिए। उनसे कहिये, कि हम आपसे गोला बारूद नहीं माँग रहे हैं किन्तु चावल का उत्तम किस्म का बीज हमें आपसे चाहिए।''

खंडो बल्लाल और येसूबाई महाराज की ओर देखते रह गये। महाराज ने बड़े उत्साह से कहा, ''महारानी इस बार तो हमारे राज्य में अच्छी फसल होनी चाहिए। पिछले सात-आठ वर्षों में कितनी लड़ाइयाँ हुई फौजों की खेतों में भाग दौड़, फसलों की बर्बादी। कितना बुरा हाल हुआ हमारा और हमारी फौज का।''

''सच है महाराज।''

''शीघ्र ही इस युद्ध पर्व का अन्त होने वाला है। औरंगजेब अपनी फौज के साथ डूबने वाला है। उसके बाद दूसरा काम ही क्या है? किसान अपनी फसलें बोयें, सोने मोती-सी फसल पैदा करें। उत्तम फसल हम उत्तम बीज की आपूर्ति करेंगे।

उस रात महाराज ने जगदीश्वर के मन्दिर में वहाँ की ठंडी हवा का आनन्द लेने का मन बनाया था। जीवन में पहली बार महाराज पालकी में मन्दिर गये। दर्शन

किये। नौकरों ने बाहर बैठक की व्यवस्था की थी। वहाँ पर वे जोत्याजी केमकर और निलोपन्त के साथ बहुत देर तक बात करते हुए बैठे रहे। उसी समय मन्दिर के द्वार पर किसी के घोड़े की टाप सुनाई पड़ी। घोड़े से एक स्त्री उतरी। मशाल के उजाले में चेहरा स्पष्ट दिखाई दिया। महाराज ने आश्चर्य से पूछा, "गोदू तुम?"

"हाँ!"

"इधर कैसे आयी?"

"महल में महारानी ने बताया कि आप यहाँ हैं और यहाँ पर आपको विलम्ब होगा, इसलिए—"

"ठीक है। आ गयी, अच्छा किया।"

महाराज के मन में कुछ असमंजस हुई। महाराज ने सोचा, शीघ्र ही औरंगजेब के साथ जीवन मरण का युद्ध छिड़ने वाला है। फिर कौन जाने गोदू जैसे आत्मीय व्यक्ति से कब मिलना हो पाए। महाराज बैठक मे उठ गये गोदू भी यन्त्र की भाँति उनके पीछे मन्दिर की सीढ़ियाँ उतरने लगी। अँधेरे में वे दोनों काली हौद की दिशा में दूर तक चलते गये।

"गोदूऽ, अपने शिवाजी महाराज और उनके स्वराज्य के लिए तुमने अपनी जिन्दगी बर्बाद कर दी, किन्तु तुम्हें हमसे क्या मिला? केवल वनवास।"

"महाराज भगाई गयी स्त्रियों के भाग्य में और होता भी क्या है? इसके पहले स्वराज्य पर अनेक खानों ने आक्रमण किया, भेड़िया जैसे बकरियों को उठाता है, उसी प्रकार हमारी बहू बेटियों को उठाकर ले गये। कुछ को छोड़ दिया। ऐसी गरीब और अभागी लड़कियों पर एक बार बदनामी का सिक्का लग गया कि बस। उन्हें न तो ससुराल वाले स्वीकारते हैं और न मायके वाले ही अपनाते हैं। ऐसी अनेक स्त्रियों ने पानी में डूबकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। किन्तु महाराज!"

"किन्तु हमारे स्वराज्य के लिए तुम्हारा मायका छूट गया।"

"किन्तु महाराज मैं तो न सधवा हूँ न विधवा। भाग्यशाली अवश्य हूँ इसलिए महाराज आपकी और महारानी की परछाई मे मुझे अपने जीवन का पुण्य मिल गया।"

गोदू का मन भर आया था। कितने दिनों के बाद महाराज के ऐसे मुक्त साहचर्य का अवसर मिला था। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या कहे और क्या न कहे। वह बोली, "महाराज जब मैं पहली बार आपसे मिली तब मैं जवानी के उफान पर थी। जवानी के उस मादक आकर्षण में यदि कोई निर्दयी राजा मिला होता तो? तो उसने सहज ही मुझे बर्बाद कर दिया होता। उसे टोकने वाला कौन था?

किन्तु महाराज मेरे प्रति आपका व्यवहार कितना आत्मीय और मर्यादापूर्ण रहा।"

"गोदू, मैं भी जब तुम्हारे समीप आया था तब तुम्हारे इस सुन्दर और निर्मल रूप को देखकर मेरे भीतर का विकार कब का नष्ट हो गया था। गोदू हमारे बीच ऐसा कौन-सा रिश्ता है जिसे मैं कोशिश करने पर भी व्यक्त नहीं कर पाता। किन्तु-किन्तु क्या दिया मैंने तुम्हें? जीवन भर जलते रहने की सजा।"

"सभी अपने स्वार्थ के लिए भगवान की पूजा नहीं करते। अनजाने में ही मैं आपकी ओर आकर्षित हो गयी थी। संयोग से मुझे महारानी का साहचर्य मिला। उनमें जब मैंने अपनी बड़ी बहन का रूप देखा तो आपके प्रति आकर्षण के पंख अपने आप टूट गये।"

"तुम पागल हो! किसी और के साथ विवाह के लिए तैयार भी नहीं हुईं।"

"उसके लायक दूसरा कोई व्यक्ति मिला ही नहीं और मिलने वाला भी नहीं था। क्योंकि मेरे दिल का मन्दिर मेरे भगवान, केवल आपके लिए बना था।"

"अब तुम्हें क्या चाहिए, गोदू?"

गोदू ने आगे बढ़कर महाराज के पाँव पकड़ लिये। बड़ी अधीरता से वह बोली, "आपसे एक ही प्रार्थना है, जब मेरी मृत्यु हो तो मेरी चिता को आप ही आग दें।"

"चिता को अग्नि? सिर्फ अपनों की चिता को अग्नि दी जाती है, गोदू।" महाराज सहज भाव से बोले।

"तो आप मेरे कौन हैं?" यह प्रश्न करते हुए गोदू की आँखों से अश्रुपात हो रहा था।

शम्भू महाराज ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। हाथ का यह स्पर्श अत्यन्त सान्त्वनादायक था।

उसी रात जिंजी से केसो त्रिमल का सन्देश प्राप्त हुआ। उन्होंने लिखा था—"हरजीराजा काबू में आ गये हैं। उनकी महत्त्वाकांक्षा के अश्व को लगाम लगाने में हम सफल हो गये हैं। इसके बाद यहाँ से नियमित रूप से रसद कैसे भेजी जाये इसकी व्यवस्था हम कर रहे हैं। महाराज अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।" यह सन्देश पाकर महाराज को प्रसन्नता हुई।

सवेरे जल्दी उठकर शिरकाण की ओर निकलना था। किन्तु शम्भू महाराज की धार्मिक वृत्ति भीतर जग गयी। उन्होंने प्रभावली की ओर जाने से पहले पाली के बल्लालेश्वर का दर्शन करने का प्रस्ताव महारानी से किया। दूसरे दिन पचीस विशिष्ट पालकियाँ और पाँच-छह सौ घुड़सवार पाली की ओर जाने के लिए निकले। खंडो बल्लाल भी साथ में थे। पाचाँड़ के बीच वाले रास्ते से आगे बढ़ने के पूर्व महाराज रायगढ़वाड़ी के मैदान में गये। वहाँ उन्होंने 'निश्चलगिरि स्वामी' की

समाधि के दर्शन किये। वहाँ से उनके पैर जीजामाता की समाधि की ओर मुड़ गये। जीजामाता की समाधि से हटने का उनका मन ही नहीं हो रहा था। उन्हें लगा जैसे दादीजी उनसे बात कर रही हों। अपने भातुल परदादा लखोजी जाधवराव ने दौलताबाद के अजेय किले पर कैसे झंडा फहराया था? वह दादीजी की बताई हुई कहानी उन्हें याद आने लगी।

आगे का सफर तय करना था। इसलिए सहयोगीगण व्यग्र होने लगे। महाराज उठे और समाधि पर अपना सिर रखकर बहुत समय तक वैसे ही बैठे रहे। ऐसा लगा जैसे कोई नन्हा-सा पोता अपनी दादी की गोद में सिर रखकर प्यारी-प्यारी बातें कर रहा हो। वहाँ से चलने से पूर्व महाराज ने अपनी दादी से केवल इतना कहा, "दादीजी, उस औरंगजेब का सिर ऊपर रायगढ़ पर ले जाने मे पहले आपके चरणों में लाकर रखूँगा।"

सन्ध्या समय महाराज और महारानी ने बल्लालेश्वर का अभिषेक किया। मन्दिरों को महाराज ने भरपूर दान दिया। सरसगढ़ की तलहटी में डेरे डंडे खड़े किये गये थे। महाराज ने किसी प्रकार एक दो घंटों की नींद ली। आधी रात को उन्होंने खंडो बल्लाल को बुलाया। महाराज ने कहा, "हमें आसरा में वीरेश्वर के दर्शन करने हैं।" सवेरे-सवेरे आसरा के मन्दिर परिसर में घोड़े पहुँच गये।

महाराज को वीरेश्वर के परिसर में बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ मे थोड़ी ही दूरी पर औढ़ा का मैदान था। बालाजी पन्त की अकारण हत्या का स्मरण महाराज को निरन्तर दुखी करता था। उसी से मुक्त होने के लिए महाराज ने वहाँ पर महादेव का मन्दिर बनाने के लिए अर्जोजी यादव को आदेश दिया था। महाराज ने मन्दिर और पीछे बनाये गये तालाब का निरीक्षण किया। भोर में ही वे मन्दिर के भीतर गये। उन्होंने मपत्नीक देवता के दर्शन किये। शिव की पिंडी के ऊपर स्वर्णपात्र मे अमृतधार प्रवहमान थी। महाराज ने पुजारियों को आदेश दिया, "वहाँ पिंडी पर अखंड जलधार चालू रखिये।" मन्दिर के गर्भगृह से बाहर निकलते समय महाराज ने पुन: पिंडी की ओर देखा। वे अत्यन्त भाव विह्वल होकर बोले, "बालाजी काका इस पात्र से वीरेश्वर की पिंडी पर सतत गिरने वाली जलधारा, आपकी स्मृति में इस शम्भू द्वारा आँसुओं मे किया जाने वाला आपका अभिषेक है।"

महाराज जब मन्दिर मे बाहर निकल रहे थे तो उन्हें मूर्छा-मी आ गयी। उस ममय उनका एक हाथ खंडो बल्लाल ने थाम रखा था और दूसरे हाथ से वे आँसू पोंछ रहे थे।

घोड़े महाड़ की दिशा में वेग से दौड़ने लगे। चाम्भार खाटी के पास से महाराज ने रानी को विदा कर दिया। शिर्के को सबक सिखाने के लिए उनके घोड़े और लोग शिरकाण की ओर टूट पड़े।

चार

पिछले आठ वर्षों के जैसे भयंकर दिन महाराज और महारानी ने देखे नहीं थे। आने वाला प्रत्येक दिन अशुभ का सूचक बन रहा था। अब्दुल्लाखान ने सरसगढ़ के किलेदार को लालच देकर किले को मुगलों के क़ब्जे में ले लिया था। किन्तु शम्भु महाराज ने तत्काल फौज भेजकर उस पर पुनः क़ब्ज़ा कर लिया। किन्तु इस युद्ध में लगभग डेढ़ सौ मराठा वीरों को जान गँवानी पड़ी। धन जन की हानि हुई। नासिक और बागलाण के क्षेत्र में एक के बाद एक किला मुगलों के अधिकार में जा रहा था। यह संकट निरन्तर बढ़ता हुआ रायगढ़ की ओर आ रहा था। एक ओर राज्य का खजाना खाली होता जा रहा था, दूसरी ओर शत्रु की अपेक्षा भीतर के गद्दार घातक सिद्ध हो रहे थे।

नरभक्षक पक्षियों की तरह रोज संकट अपना आहार ग्रहण कर रहे थे। शम्भु महाराज बिस्तर पर लेटते थे तब भी उनका शरीर वेदनाग्रस्त रहता था। नींद उड़ गयी थी। दरवाजे पर किसी की पदचाप सुनाई दी। येसूबाई बाहर निकल आयीं। द्वारपाल दो हरकारों को लेकर आया था। महारानी ने समझ लिया कि समाचार आपात कालिक ही होगा। हरकारे शृंगारपुर-प्रभावली क्षेत्र आये थे। येसूबाई ने समाचार वाली थैली खोली। पत्र को पढ़ा। उनकी साँस घुटने लगी। इन दिनों दरवाजों के पर्दे हिले नहीं कि शम्भु महाराज अचकचाकर उठ जाते थे।

"येसू, क्या है वह?" अपनी बगल में खड़े शम्भु महाराज की आवाज सुनकर येसूबाई चकित हो गयीं। महाराज कब आकर बगल में खड़े हो गये, उन्हें पता ही नहीं चला। उन्होंने गम्भीर स्वर में कहा, "महाराज एक भयंकर समाचार आया है।"

"कौन-सा?"

"जितना सोचा गया था उससे कहीं भयंकर है। शेख मुकर्रबखान और गणोजी भाईसाहब का पन्हाला के पास एक समझौता हुआ है। उसके अनुसार संगमेश्वर और शृंगारपुर के आसपास का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र गणोजी मुगलों को देंगे। इसके साथ ही घोड़ों से भरे हुए अपने दो-तीन तबेले भी मुगलों को देंगे। वह दुष्ट खान वहाँ पर हमारे राज्य में दो फौजी चौकियाँ बनाने वाला है।"

"कहाँ, कहाँ?"

"इधर शृंगारपुर के पास मैदान में और कौंडभैरव तथा मालेश्वर की ओर

'तामनाले' गाँव में।''

इस समाचार से महाराज के होश उड़ गये। वे घायल शेर की तरह वहीं पर चक्कर काटने लगे। वे अत्यन्त बेचैन थे। वे अत्यधिक क्रोध से बोले, ''नहीं, नहीं येसू! प्रलय आ जाये तो भी ऐसी बात नहीं होनी चाहिए। नहीं तो आठ वर्षों तक हमने जो युद्ध किया, रात-दिन एक कर दिया, जिस उद्देश्य से हमारे हजारों वीर और जानवर मिट्टी में मिल गये, उन सभी के वीरत्व और बलिदान पर पानी फिर जाएगा।''

''सच है, महाराज!''

''सह्याद्रि के घाट को पार करके मुगलों को अन्दर आने देना मृत्यु को निमन्त्रण देना है। उन्हें बुलाते हुए अपनी गुफा में ले आना किसी प्रकार अच्छा नहीं। यह सम्भव नहीं है। मुगलों की फौज की तो बात ही क्या? उनके भूले भटके दो चार घोड़ों का सह्याद्रि के इस क्षेत्र में पहुँचना उचित नहीं है।''

कविराज का महल महाराज के महल के इतना समीप था कि बुलाने पर भी सुना जा सके। उन्हें तत्काल सूचित किया गया। वे तुरन्त तैयार होकर महाराज के सम्मुख उपस्थित हुए। प्रतिदिन की समस्याओं और संकटपूर्ण स्थितियों ने, शम्भू महाराज, कविराज और महारानी को इतना समीप ला दिया था कि अनेक बार उनकी झपकने वाली पलकें, रुकी हुई साँसें और व्यंजक दृष्टियाँ ही पूरा संवाद कर लेती थीं। अनेक बार प्रत्यक्ष संवाद की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी।

महाराज ने पूछा, ''कविराज, अपने कलेजे में तेज कटार भोंककर क्या किसी का जिन्दा रहना सम्भव है? उसी तरह कल यदि सह्याद्रि को पारकर कोंकण में मुगलों की चौकी बन गयी तो?—तो इस हिन्दवी स्वराज्य का टिक पाना सम्भव है क्या?''

''कौन, कौन दुस्साहसी निकला है ऐसी चौकी बनाने?'' कविराज ने प्रतिप्रश्न किया।

शम्भू महाराज ने वह गुप्त पत्र कविराज को दिया। उस पर नजर घुमाते ही कविराज चिन्तित हो गये। महाराज ने उसी क्षण प्रश्न किया, ''कविराज अपना मलकापुर के पास का तबेला कैसा है?''

''महाराज, एकदम चिन्ता न करें। मलकापुर के पास की व्यवस्था पक्की है। वहाँ पर पेरीड और कड़वा के मैदान में दस हजार तगड़े घोड़ों को मैंने तैयार रखा है।''

इस चर्चा से महाराज को सान्त्वना मिली। कविराज को भी अच्छा लगा। किन्तु येसूबाई ने चिन्तित स्वर में कहा, ''केवल मलकापुर के रास्ते पर ही सारी

फौज न रखिये। मुगलों ने चाहा तो किसी दूसरे रास्ते से भी प्रभावली में प्रवेश कर सकते हैं।"

हरकारे से प्राप्त नये समाचार से तीनों की नींद उड़ गयी थी। मामला बहुत गम्भीर बन गया था। मुगलों का आक्रमण केवल दरवाजे तक पहुँचा ही नहीं था बल्कि दरवाजे को जोर-जोर से ठोक रहा था। कोल्हापुर, इस्लामपुर, कराड, शिखल, चाकण जैसी मुगल चौकियों में शस्त्रों और गोलाबारूद को जमा किया जा रहा था। सह्याद्रि का गला घोंटने के लिए अनेक दल तैयार किये गये थे। जागीर के लोभ में अनेक प्रतिष्ठित मराठे और ब्राह्मण प्रतिदिन मुगलों से मिल रहे थे। बीजापुर से औरंगजेब अकलूज की ओर तेजी से बढ़ रहा था।

समय अब बदल गया था। गोलकुंडा की कुतुबशाही और बीजापुर की आदिलशाही को औरंगजेब समाप्त कर चुका था। इन दो राज्यों को निगलकर अजगर चुस्त हो गया था। आठ वर्ष तक अपरिचित क्षेत्र में रहकर सवार सैनिक ऊब गये थे। प्लेग जैसी बीमारी से जर्जर मन को धीरज बँधाना कठिन था। सैनिकों का मनोबल समाप्त हो चुका था। अब आक्रमण के अतिरिक्त उनके पास कोई विकल्प ही नहीं था। हीरे और मोती से सजे आगरा और दिल्ली जैसे नगरों को छोड़कर, कंकड़ों-पत्थरों की इस भूमि पर कब तक रहते। किसी भी तरह से आठ वर्ष की इम लम्बी बीमारी का अन्त तो करना ही था। इसके साथ ही शिवाजी महाराज के जामाता के साथ अनेक मराठा सरदार गद्दारी करके औरंगजेब का साथ दे रहे थे। इन गद्दारों को अपने अधीन करके अजगर का जोश बहुत बढ़ गया था। अपना मनपसन्द खाद्य भक्षण करने के लिए उसके दाँत बेताब हो रहे थे। शम्भू महाराज गम्भीर स्वर में कविराज से पूछने लगे, "अब किया क्या जाये, कविराज?"

"आप जो कह रहे हैं वही सच है। प्रभावली क्षेत्र में मुगलों की चौकी बनने देना उसी तरह है जैसे किसी जहरीले मणियार साँप को रस्सी समझकर पेट के पास रखकर सोना।"

महाराज अत्यन्त उद्विग्न अवस्था में पलंग पर बैठ गये। वे हताश और दुखी स्वर में बोले, "औरंगजेब को हमारे आँगन चौकी बनाने का निमन्त्रण हमारे सगे साले गणोजीराव ने ही क्यों दिया? गद्दारी और धोखेबाजी के लिए शिर्के खानदान पहले से ही विख्यात है।"

"महाराज जरा धीरे—" अपने मायके के इस पर्दाफाश से येसूबाई बहुत विचलित हो गयी थीं।

"क्या मैं झूठ कह रहा हूँ?" शम्भू महाराज ने पूछा।

"किन्तु—"

"जाने दो, येसू, सम्भव है कि हम भूल जायें, शायद तुम भी भूल जाओ।

किन्तु तीन सौ वर्ष पूर्व इसी संगमेश्वर और विशालगढ़ की कठिन पहाड़ियों में घटी घटना को इतिहास कभी नहीं भूल सकता। आज भी यहाँ की पहाड़ियों, घाटियों और जंगली हवाओं को तीन सौ वर्ष पूर्व के प्रसंग का स्मरण होता है तो वे पागल कुत्ते की तरह भौंकने लगते हैं।''

शम्भू महाराज ने पुराना प्रसंग छेड़ा तो कवि कलश भी उनका मुँह देखने लगे। शम्भू महाराज बहमनी साम्राज्य के सेनापति मलिक उत्तुजार की कहानी बताने लगे— मलिक उत्तुजार जिस समय अपनी सात हजार की सेना लेकर इस जंगल में आया था। उस समय खेलणा उर्फ विशालगढ़ किले पर शंकरराय मोरे का अधिकार था। उसी पर मलिक को आक्रमण करना था। उस समय मलिक अपनी सहायता के लिए शृंगारपुर के शिर्के से मिला। शिर्के ने बहमनी के सेनापति से खूब धन वसूला। विशालगढ़ का रास्ता दिखाने की शर्त स्वीकार की। किन्तु मलिक उन्हें ठीक समझ नहीं पाया था।

आरम्भ में दो दिन शिर्के ने बहुत कठिन रास्ते में उन्हें भरमाया यह जंगल इतना घना था कि शेर भी इसमें घुसने से डरते थे। यहाँ के ऊँचे पर्वत और यहाँ की गहरी खाइयाँ इतनी भयानक कि भूत और राक्षस भी वहाँ जाने से घबराते थे। तीसरे दिन शिर्के ने मलिक उत्तुजार को ऐसा रास्ता दिखाया कि मुसलमान सैनिकों को नानी याद आ गयी। इस जंगल की विषैली हवा अजगर की फुफकार जैसी थी। ऊँची ऊँची घासों में मानो साँप के दाँत निकल आये थे। तीन ओर आसमान को छूते हुए पहाड़। रास्ता काँटों से भरा और पथरीला। कोस कोस तक मनुष्य की बस्ती का नामोनिशान नहीं। बहमनी सेना को ठीक से अनाज नहीं मिल पा रहा था। रात में मलिक के सैनिकों को तम्बू गाड़ने तक की जगह नहीं मिली। सैनिक जंगल की पत्तियाँ खाकर जान बचा रहे थे। थके माँदे सैनिक रास्ते पर लकड़ी के लट्ठे की तरह पड़े थे। अन्न पानी के अभाव मे सूखे अभागे सैनिक जब विश्राम कर रहे थे उसी समय दगाबाज शिर्के ने जाकर शंकरराय को सूचना दी, ''कितने कठिन प्रयास से मैंने मलिक की फौज को आपके जबड़े में लाकर रख दिया है। अब जैसा चाहें वैसा बर्ताव उनके साथ करें।'' अपनी सुसज्ज फौज के साथ उस जंगल में शीघ्रता से पहुँच गया। जैसे सूखने के लिए कपड़े फैलाए जाते हैं, उसी प्रकार थके माँदे, भूखे प्यासे सैनिक रास्ते पर अंग समेटे सोये पड़े थे। रात में ही मोरे की फौज नें ठंड से कुड़कुड़ाते सैनिकों पर आक्रमण कर दिया। जैसे किसी मेले में हजारों बकरों को एक साथ काट दिया जाता है उसी प्रकार सात हजार सैनिकों को हलाल कर दिया गया। जिस समय अर्द्धजागृत सैनिकों की करुण चीत्कार हो रही थी उस समय हवा उल्टी बह रही थी। इसलिए उनकी आवाज किसी को सुनाई नहीं पड़ी।

इस भीषण कथा को जब महाराज ने सुनाया तो कविराज और महारानी दोनों उदास हो गये। शम्भू महाराज ने दुखी स्वर में कहा, "बताइए येसूबाई, शिर्के की औलाद पर कोई कैसे भरोसा करें?"

येसूबाई उदास भाव से हँसकर बोली, "हमारे मायके को ही आप क्यों दोष दे रहे हैं? मेरी ससुराल की बात भी कुछ अलग नहीं है। आज आपके सगे चचेरे भाई अर्जुन जैसे कुलभूषण किसके लिए लड़ रहे हैं? उस औरंगजेब के लिए ही न? शिवाजी जीजामाता आज किसकी सेवा में हैं? औरंगजेब की ही न?"

"फिर भी येसू—"

"महाराज जाति का महत्त्व नहीं होता। धर्म भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। मनुष्य का कर्म ही महत्त्वपूर्ण होता है, यह आप जैसे संस्कृत पंडित को बताने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर ने मुझे गणोजी जैसा कृतघ्न भाई दिया है, फिर भी मैंने पिलाजीराव जैसे पुण्यवान पिता के घर जन्म लिया है। आज पिलाजी शिर्के की पुत्री येसूबाई रायगढ़ की महारानी बनी है। यह येसूबाई अपने कुल का नाम उज्ज्वल किये बिना नहीं रहेगी।"

शम्भू महाराज ने पुनः अपना रुख कवि कलश की ओर किया। उन्होंने कहा, "इससे पहले भी शत्रुओं ने अनेक बार आक्रमण किया था। रायगढ़ में प्रवेश करने का प्रयास किया था। उन्हें सबसे पहले प्रभावली का ही मार्ग दिखा।"

कवि कलश बीच में ही बोल पड़े, "हमने रायगढ़ की कालनदी के किनारे कभी शत्रुओं की दाल गलने नहीं दी।"

"किन्तु कविराज, उस समय हमारे किसी गाँव वाले या जमींदार दुश्मन को आश्रय नहीं दिया था। आज तो हमारे सगे साले शत्रु की उँगली पकड़कर उसे अपने राजमन्दिर की ओर ले आ रहे हैं।"

"गणोजी को कौन पूछता है?" येसूरानी ने कहा।

"नहीं येसू, शत्रु और धोखेबाज को नज़रअन्दाज नहीं करना चाहिए। महल की रक्षा प्राचीर में थोड़ी भी दरार रहने से विषैले साँप की तरह शत्रु प्रवेश कर सकता है, हानि पहुँचा सकता है।"

"तो महाराज रंचमात्र भी शिथिलता न करें। शिर्केवंश पर आक्रमण का दायित्व आप मुझे दें। मैं स्वयं जाऊँगी प्रभावली।"

"महारानी?" महाराज ने तिरछी नजर से देखा।

"महाराज, यह येसूबाई शिवाजी महाराज की पुत्रवधू है। इसके साथ ही तलवार चलाने की शिक्षा मेरे पिता पिलाजीराव ने बचपन में दे दी है।"

सम्भाजी महाराज विचारमग्न हो गये। उन्होंने कहा, "येसू, आपका विचार

बुरा नहीं है। गणोजी आज नीचता की हद पर पहुँच गया है। उसका मुँह तोड़ने के अतिरिक्त हमारे पास कोई विकल्प ही नहीं है। किन्तु यदि आप वहाँ जाएँगी तो रायगढ़ का राजकीय कार्यभार कौन सँभालेगा?''

''क्या मतलब महाराज?''

''आज मराठा राज्य की महारानी की अपेक्षा मुख्य दीवान का दायित्व आप पर अधिक है। इसके अतिरिक्त राजकीय कार्यभार सँभालने वाला कोई समर्थ और भरोसेमन्द व्यक्ति बचा भी तो नहीं है।''

येसूबाई कुछ बोली नहीं। तब सम्भाजी महाराज ने आशाभरी दृष्टि से कविराज की ओर देखा। कविराज के चेहरे का रंग बदल गया। महाराज ने दुख से कहा, ''क्षमा करें कविराज, सभी अप्रिय कार्य करने की जिम्मेदारी दुर्दैव से आपके ही ऊपर आती है। इससे पहले हंबीरराव जैसे आत्मीय व्यक्ति पहाड़ की तरह हमारे पीछे खड़े होते थे। किन्तु दुष्ट काल ने उन्हें हमसे छीन लिया। कोंडाजी बाबा जैसे रत्न को हमने जंजीरे के लिए खो दिया। धनाजी, सन्ताजी और खंडो बल्लाल जैसे तरुण योद्धा किसी न किसी मोर्चे पर स्वराज्य के लिए लड़ रहे हैं। इसलिए आपके अतिरिक्त और कोई भरोसे का आदमी बचा ही नहीं है।''

महाराज के विषण्ण सुर से कविराज उत्साहित हो गये। वे शम्भू महाराज के सामने झुककर, उनका वन्दन करते हुए बोले, ''आज्ञा करें, राजन, केवल आज्ञा करें।''

''कल सवेरे पाचाड़ से निकलिए। पन्द्रह हजार की सेना लेकर औरंगजेब और गणोजी के फौजी समझौते होने से पहले ही प्रभावली पहुँच जाइये। शिर्के के बचे खुचे तबेले और महल बेचिराग कर दीजिए। हिन्दवी स्वराज्य का गला घोंटने से पहले ही, शिर्के के सारे षड्यन्त्र को ध्वस्त कर दीजिए। शिर्के का सारा इलाका आग के हवाले कर दीजिए।''

पाँच

लालबारी की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी। बहुत से शाही हकीम और हिन्दू वैद्य वहाँ से दबे पाँव लौट रहे थे। बादशाह का दल ही नहीं पूरी लालबारी कराहती-सी प्रतीत हो रही थी। बुखार के ऐसे रूप का मुगल सेना ने कभी अनुभव

ही नहीं किया था। फौज के कुछ फिरंगी तोपची इस रोग को प्लेग कहते थे। लालबारी के पास का आकाश दीप भी रोग के साथ ही अन्धे की भाँति टिमटिमाता हुआ रातभर इधर-उधर देखता रहता था।

बादशाह को भी थोड़ा ज्वर आ गया जिससे सभी परेशान हो गये। अब तक करीब सत्तर हजार मुगल सैनिक इस रोग की चपेट में आ गये थे। हवा में चारों ओर दुर्गन्ध फैल गयी। सैनिकों के कराहने की आवाज इतनी बढ़ गयी कि वहाँ रहना कठिन हो गया। मृत्यु का भय या उसकी भयानकता का अनुभव अब किसी को होता ही नहीं था। लोग इतने भावनाशून्य हो गये थे कि मृत्यु पर भी कोई शोक नहीं करता था। किया भी तो कौन किसकी सुनता? प्रत्येक तम्बू में खुली जगह में, तम्बुओं की आड़ में सभी जगह दुर्गन्ध फैल गयी थी। मृत्यु की काली छाया सभी ओर पहुँच गयी थी। चार-छह दिनों में ही पूरा क्षेत्र एक बड़े कब्रिस्तान में बदल गया था। मृत्यु की छाया एक पागल बन्दर की तरह औरंगजेब के पीछे पड़ी थी। बादशाह के दो पोतों की मृत्यु हो गयी। असदखान भी प्लेग के बुखार में तड़पते हुए अपने डेरे में पड़ा था। बादशाह ने एक महीने में चार बार अपनी जगह बदली थी।

पिछले सप्ताह से औरंगजेब बहुत बेचैन हो गया था। एक ओर मैदान में हजारों लाशें पड़ी थीं और दूसरी ओर लाशों को खाने वाले गीदड़ और कुत्ते भी वहाँ फटक नहीं रहे थे। इस शैतानी बीमारी का कोई इलाज भी नहीं था। अपने मन को सान्त्वना देने के लिए लोग हकीम से किसी वनौषधि का पत्ता माँगकर ले जाते थे। उसे चूसते हुए ठनकती गाँठों को काँख या जाँघ में दबाकर सो जाते थे। दो-चार दिन में मौत आ जाती थी। तम्बू में यदि कोई समीपी व्यक्ति हुआ तो शव को खींचकर ले जाता था। कब्र के नाम पर कहीं पर सिर्फ मिट्टी ढक देता था। किन्तु दफनाने के लिए भी जगह नहीं मिल रही थी। मुर्दों को खींचकर ले जाने के लिए भी कोई नहीं मिलता था। मुर्दा ढोने वाले भी मुर्दा ढोते-ढोते महामारी से ग्रस्त होकर मर रहे थे। भिश्ती समाप्त हो चुके थे।

बादशाह अपने शाही डेरे की कनात की खिड़की से दूर देख रहा था। महामारी से टूटा हुआ बीजापुर साफ दिखाई पड़ रहा था। उस नगर के सामर्थ्य और अभिमान का प्रतीक गोलगुम्बद भी काला पड़ गया था। औरंगजेब को बहुत सूनेपन और अकेलेपन का अनुभव हो रहा था। उसकी दोनों प्यारी बेगमें उदयपुरी और औरंगाबादी घबराकर उसके सिरहाने बैठी थीं। बादशाह को बुखार आ गया था। किन्तु महामारी की गाँठ बादशाह को न आये इसके लिए अल्लाह से दुआ माँग रही थीं।

बादशाह बहुत टूट गया था। महीने-डेढ़ महीने में सत्तर हजार फौज समाप्त हो चुकी थी। दुखी औरंगजेब ने आकाश की ओर देखा। गहरी साँस लेते हुए उसने कहा, "उदयपुरीऽ इतनी बड़ी लड़ाइयाँ हमने जीतीं। गोलकुंडा के उस मूर्ख तानाशाह को एक बार नहीं दो बार पराजित किया। वहाँ खाई में आधे हैदराबाद को गाड़ दिया। बीजापुर की अभिमानी तटबन्दी को ध्वस्त कर दिया। वहाँ का खजाना हासिल किया। कुतुबशाह और आदिलशाह दोनों गीदड़ के बच्चे की तरह आज हमारी कैद में पड़े हैं। किन्तु इस आसमान जैसी बड़ी विजय का फायदा क्या?"

"हजरत आप अधिक बात न करें। आराम करें—" उदयपुरी बेगम ने हाथ जोड़कर कहा।

"बेगम, आज दो बड़ी सल्तनतों की मिली विजय पर हँसें या प्लेग द्वारा कमर तोड़ दिये जाने पर रोयें?"

बादशाह को किसी तरह समझाया गया। किन्तु उसी समय जुल्फिकारखान वहाँ आ गया। उसने रोज की तरह मरने वालों की संख्या का आँकड़ा प्रस्तुत किया।

"किब्लाए आलम आज केवल दो हजार।"

"लड़ाई के मैदान में दो हजार सिपाही बिना लड़े मर जायँ तो यह कोई मामूली संख्या नहीं होती, बेवकूफ नौजवान!" बादशाह ने क्रोधावेश में कहा. "जुल्फिकारखान तुम अपने परवरदिगार से पूछो कि हमारी छावनी में हजारों सैनिक मक्खियों की तरह मर रहे हैं फिर वहाँ उस जहन्नमी सम्भा को मौत क्यों नहीं आती?"

कमजोर और बीमारी से जर्जर फौज को लेकर आगे बढ़ना सम्भव नहीं था। प्लेग मानो सम्पूर्ण मानवजाति को समाप्त करने के लिए ही आया था। लोगों को दो तीन दिन तक ज्वर आता था। उससे कुछ भाग्यशाली बच भी जाते थे। किन्तु काँख की गाँठ के साथ सारे शरीर में फैलने वाला विचित्र बुखार सचमुच जानलेवा था। जो भाग्य से बच गया तो भी उसके शरीर की सारी शक्ति निकल जाती थी। वह व्यक्ति इतना क्षीण और शक्तिहीन हो जाता था कि वह चलती-फिरती लाश बन जाता था। मैदान में हजारों लोग कराहते हुए पड़े थे।

इस विचित्र अवस्था ने बादशाह को पागल बना दिया था। किन्तु बादशाह इस बात को क्षणमात्र के लिए भी नहीं भूला था कि इस अवस्था से बाहर निकलकर सबसे बड़े तीसरे शत्रु को विनष्ट करना है। इसलिए अपने कार्यव्यापार और पत्राचार से उसका ध्यान जरा भी नहीं हटता था। असदखान डेरे में बीमार होकर पड़ा था। उसका काम जुल्फिकार सँभाल रहा था।

अपने मौसेरे भाई को सामने बैठने का संकेत करते हुए औरंगजेब ने कहा,

"आज सवेरे अपनी मेवाती और मुल्तानी फौज के मुखिया मुझसे मिलने आये थे। उन्हें दो महीने से तनख्वाह क्यों नहीं दी गयी? तनख्वाह के लिए फौजियों को कितने दिन इन्तजार करना चाहिए?"

"हुजूर अब तक आधा खजाना खाली हो चुका है—अभी आगे—?"

"क्या बकते हो? जुल्फिकार, अरे दक्षिण के दो विख्यात राज्यों को हमने जीता। उनका खजाना लूटकर ले आये। फिर भी खजाना खाली?"

"जहाँपनाह, पिछले दो महीने से बंगाल से आने वाली वसूली आयी ही नहीं। अपना सूबेदार खुर्शीद कुलीखान वहाँ टालमटोल कर रहा है। बाकी के हमारे सारे हिन्दुस्तानी सूबेदार भी नियमित रूप से राशि भेज नहीं रहे हैं। उन्हें लगता है—उन्हें"

"हाँ, बोलो, बोलो! अपने मन की बात साफ-साफ कहो।"

"हुजूर उन्हें लगता है कि बीजापुर, गोलकुंडा जीत लिया तो भी बीच में अभी मराठे हैं। उस जहन्नमी सम्भा की फौज को पार करके अपनी शाही फौज का दिल्ली पहुँचना इतना सरल नहीं है।" यह कहते हुए जुल्फिकार का चेहरा भय के कारण पसीने से भीग गया।

बादशाह ने क्रोध से अपनी आँखें घुमाई। अपने क्रोध को उसी तरह दबा लिया जैसे विष का प्याला सहज रूप से पी लिया हो। उसने जुल्फिकार की सहायता से एक बड़ा षड्यन्त्र रचा था। यह षड्यन्त्र था रायगढ से राजाराम को उठाकर ले आने का। उनका नाम सामने रखकर मराठा राज्य की दूसरी गद्दी स्थापित करने की योजना थी। बादशाही का संरक्षण देकर पूना के आसपास दूसरी राजगद्दी बनानी थी। अनुमान था कि इससे औरंगजेब की शरण में पहले ही आ चुके गद्दार और सम्भाजी से असन्तुष्ट मराठे और ब्राह्मण एकत्र हो आएँगे। वे भी प्रसन्न होंगे। सम्भाजी की शक्ति कम हो जाएगी। हिन्दवी स्वराज्य अपने आप ध्वस्त होने लगेगा।

किन्तु फौलादी सुरक्षा वाले रायगढ़ से राजाराम को उठा ले आना, गुलबकावली के फूल प्राप्त करने जितना ही कठिन था। फिर भी निर्भीक सीने वाले बोस पठान और तुर्की फौजी रायगढ़ की ओर चले गये थे। उनका स्मरण करते हुए औरंगजेब ने पूछा, "वहाँ की कुछ खबर?"

"जहाँपनाह, योजना आपके दिमाग की उपज है। उसकी तामील हम बड़ी सावधानी और होशियारी से कर रहे हैं। हमारा जैनुद्दीन गोलकुंडा का सरदार खवासखान के रूप में कभी का चला गया है। उसके साथ उन्नीस बहादुर सिपाही हैं।"

"उस सम्भा को सन्देह हो गया तो—?"

"सम्भा की गैरहाजिरी में हमारा जैनुद्दीन राजाराम से भेंट करेगा। वह भी नीचे पाचाड़ के महल में। क्योंकि रायगढ़ पर षड्यन्त्र करके नीचे आ पाना बहुत कठिन है। सम्भा किले पर रहता ही नहीं। इसी का फायदा उठाना है।"

"हर कदम फूँक-फूँककर रखो।"

"जहाँपनाह, उसकी फिक्र न करें। महादजी निंबालकर के पास बैठकर पाचाड़ का नक्शा बनाया गया है। वहाँ पर उस काफिर सम्भा ने अपनी दादी की याद में मन्दिर बनवाया है। खुली हवा का सेवन करने राजपरिवार कभी-कभी वहाँ आता है। महादजी उनका जमाई है। उसने सभी बारीक बारीक बातें नक्शे में दिखा दी हैं।"

निजी बैठक समाप्त हो गयी। बादशाह उठकर बड़े उत्साह मे चलता हुआ सामने कचहरी के डेरे में पहुँच गया। वह जुल्फिकार के साथ कागज पत्र देखने लगा। इमी समय एक पत्र को सामने करते हुए जुल्फिकार ने कहा, "जहाँपनाह यह देखिए, सम्भाजी के साले गणोजी शिर्के का यह पत्र—"

पत्र पढ़ने से पहले ही बादशाह ने पूछा, "वह गणोजी कोंकण के जंगलो में हमारे लिए दो चौकियाँ बनाने में मदद करने वाला था। उसका क्या हुआ?"

"हजरत गणोजी तो बहुत चाहता था। किन्तु उस कवि कलश एवं सम्भा ने उसे बहुत परेशान कर दिया है। उसने लिखा है—"

"हाँ, पढ़ो—"

"सारी धरती के बादशाह,
आलमगीर औरंगजेब बहादुर
बालक गणोजी नतसिर अभिवादन।

बादशाह सलामत! अब मेरे जैसे खानदानी मराठा की आप अधिक परीक्षा न लें। कृपा करके हमारी सहायता कीजिए। इस पत्र से हुजूर को स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारा मराठों का राजा सम्भाजी एकदम पागल हो गया है। उसे समाप्त कीजिए। हमारे राजा ने कवि कलश नाम के मूर्ख को आत्मीय मित्र बना लिया है। ये दोनों हमारे शिर्के प्रदेश का नाश कर रहे हैं। उन्होंने आगजनी और लूटपाट करके हमारा जीना हराम कर दिया है। रोज हमारे घर जल रहे हैं, फसलें राख हो रही हैं, तबेले आग के हवाले हो रहे हैं। जंजीरे का सिद्दी हमारा मित्र है इसलिए हमारी स्त्रियों और हमारे बच्चों को उनके किले में सुरक्षा मिल गयी है। नहीं तो इस दुष्ट सम्भा ने हमें जन्मभर बिना जागीर के रखा। हमारे लिए यहाँ न घर न द्वार। शिवा सम्भा ने हमें जंगली जानवरों की तरह दर दर भटकने के लिए विवश कर दिया है।"

पत्र पढ़ लिया गया। औरंगजेब ने आँखें ऊपर उठाकर जुल्फिकार से पूछा, "जुल्फिकार, इस गणोजी की सेना कितनी बड़ी है?"

"गणोजी की फौज—फौज" जुल्फिकारखान रुकते हुए बोला, "होगी हजार-बारह सौ की लाठी-लकड़ियों वाली भीड़। फौज कहने लायक कोई भी चीज उनके पास नहीं है।"

"हूँ, जुल्फिकार इस प्लेग की चपेट से मुक्त होते ही हमें सम्भा की ओर कूच करना है।"

"जी, हुजूर।"

बादशाह बैठक में ही था कि भीतर बदहवास नौकर दौड़ते हुए आये। नौकरों के भयभीत चेहरे को देखकर बादशाह घबरा गया। तुरन्त उठकर भीतर की ओर चलता बना। उसे जानना था कि गाँठ का ज्वर उदयपुरी को आया है या औरंगाबादी महल को। बादशाह ने भीतर जाकर देखा। औरंगाबादी बेगम को भयंकर ज्वर चढ़ा था। उसकी काँख के नीचे सुर्ख गाँठ फूल आयी थी। औरंगाबादी बेगम असह्य पीड़ा से बिस्तर में छटपटा रही थीं। जुल्फिकार ने शाही हकीम के पास सन्देश भेजा। किन्तु बहुत समय बीत जाने पर भी हकीम नहीं आया।

तब फौलादखान ने सिर नीचा करके कहा, "हुज़ूर कल रात को शाही हकीम इस जालिम रोग से अल्लाह को प्यारे हो गये।"

"उसके बेटे को बुलाइये।"

"हुजूर वह सवेरे ही अपने बाप को दफनाकर वापस आया। अब उसकी भी जाँघ में गाँठ उठ गयी है। बेचारा अपने डेरे में मुर्गी की तरह छटपटा रहा है।"

अन्त में जो होना था हो गया। गाँठ के इस दानवी रोग ने काला-गोरा, हिन्दू-मुसलमान, राजा-रंक जैसा कोई भेद किया ही नहीं था। उसने अपने जबड़े में बादशाह की लगभग पचहत्तर हजार सेना निगल ली थी। उसी में औरंगाबादी बेगम के रूप में एक और का इजाफा हुआ।

दूर देश की ऊबड़-खाबड़ जमीन पर औरंगाबादी बेगम को दफन किया गया। कब्र की एक मुट्ठी गीली मिट्टी लेकर औरंगजेब खूब रोया। सभी को लगा कि बेगम के वियोग ने उसे विकल कर दिया है। किन्तु बादशाह अपने भीतर की घोर वेदना को बाहर निकाल रहा था। पिछले छह-सात वर्षों में की गयी बादशाह की सारी कोशिश, उसकी प्रचंड महत्त्वाकांक्षा और झोली में आयी नगण्य सफलता। दैवी शक्ति के सामने मनुष्य की विवशता, दुःख, विफलता, निराशा आदि का वह सारतत्त्व था।

दस-पन्द्रह दिन और बीते। महामारी धीरे-धीरे समाप्ति पर आयी। सौभाग्य

से वजीर असदखान उसकी चपेट से बच-गया। किन्तु फिरोजजंग हमेशा के लिए अन्धा हो गया। किसी को अन्धा, किसी को बहरा करके और हजारों को सदा के लिए अपने साथ लेकर महामारी चली गयी।

बादशाह के पास प्रतिदिन नये समाचार आ रहे थे। सम्भाजी भी अकाल की बाधा से बाहर निकल रहे थे। किन्तु उनके खंडो बल्लाल, निलोपन्त पेशवा, केसो त्रिमल और सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े के कार्यों में गति नहीं आ रही थी। मराठों ने सावधानी और आक्रामक तरीके से सर्जाखान को कब्जे में कर रखा था। ऐसे संकेत मिल रहे थे कि सम्भाजी बादशाह के विरुद्ध कोई बड़ी योजना बना रहे हैं। सम्भाजी की आक्रामकता से बूढ़े बादशाह में नया जोश आ गया। 14 सितम्बर, 1688 के दिन कूच के नगाड़े बज गये। लाखों जानवरों और मनुष्यों के साथ औरंगजेब, नयी आशा से महाराष्ट्र के पठार की ओर बढ़ने लगा।

छह

जत के मैदान में बादशाह का डेरा पड़ा था। लगभग बीस मील तक शाही फौज के डेरे-डंडे फैले थे। मध्यभाग में बादशाह का लालरंग का तम्बू अधिक मटमैला दिख रहा था। लम्बी यात्रा के कारण ऊँट हड़बड़ा गये थे, घोड़े शिथिल पड़ गये थे। भरपूर पानी न मिलने के कारण हाथी भी त्रस्त दिखाई पड़ रहे थे। दो सौ से अधिक फौजी बाजार सूने-सूने लग रहे थे। शाही फौज का पहले वाला उत्साह, जोश, शान आदि कुछ भी शेष नहीं था। जैसे किसी सुन्दर पुरुष की कान्ति पर चेचक के दाग पड़ गये हों और बुढ़ापे के कारण उसका चेहरा सूख गया हो, उसी तरह शाही फौज का सारा उत्साह सूख चुका था।

प्रतिदिन की तरह सवेरे अपना नियमित नमाज अदा करके, कपड़े पहनकर, बादशाह शिविर के दरबार की ओर जाने के लिए निकला। उसी समय उदयपुरी बेगम वहाँ पर आ गयीं। उन्होंने बादशाह के उड़ते बालों को हाथ से सँवारते हुए कहा, ''हजरत, आज आपने आईना नहीं देखा क्या?''

इन शब्दों को सुनते ही औरंगजेब ने उदयपुरी के हाथ को झटककर पीछे कर दिया। उसके इस रूप को देखकर उदयपुरी बेगम घबरा गयीं। वह हाथ जोड़कर थरथर काँप रही थीं। तब बादशाह क्रोध में ही गुर्राया, ''बेगम साहिबाऽ आप कैसा

सवाल कर रही हैं? पिछले पाँच वर्षो में इस आलमगीर ने कभी आईना देखा? ऐसा कोई दिन याद है आपको?"

"हजरत क्षमा करें।"

"बेगम साहिबा, कैसे और किस मुख से आईने मे अपना चेहरा देखूँ?" विफलता के विषाद से तडपते हुए बादशाह ने कहा, "आज सारी दुनिया में शायद ही किसी के पास मेरी जितनी बड़ी हुकूमत हो। फिर भी यह शहंशाह बिना राजमुकुट के पिछले पाँच वर्षो से दक्खिन की इस नादान धरती पर दर दर भटक रहा है। कैसा शहंशाह और कैसी सल्तनत? राज्य होने पर भी सिर पर मुकुट पहनने का अवसर नहीं। तो भी बेशर्म की तरह आईने में अपना मुँह देखना चाहिए?"

"मेरे आका मुझे माफ कर दो ऐसी गलती आगे नहीं होगी।"

बादशाह ने स्वयं को सँभाल लिया। वह उदास भाव से कुछ धीमे स्वर में बोला, "बेगम साहिबा, आईने में देखते हुए काफिर हिन्दुओं की स्त्रियाँ जब अपने माथे पर कुकुम नहीं देखतीं और अनुभव करती हैं कि उनका पति जिन्दा नहीं है तो उन्हें अत्यन्त दुख होता है। मेरी स्थिति भी उन्हीं काफिर स्त्रियों जैसी हो गयी है। बिना मुकुट के अपने सिर को देखते हुए मुझे भी बड़ी ग्लानि होती है।"

खिन्न बादशाह धीरे धीरे चलते हुए, बैठक में आकर बैठ गया। असदखान ने महामारी से अपनी आँखों को किसी प्रकार बचा लिया था। किन्तु आज वह बहुत नाराज दिखाई पड़ रहा था। मेंहदी लगी अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए और असदखान पर नजरें टिकाए, बादशाह ने कहा, "वजीरे आजम आप साफ-साफ क्यो नहीं कहते कि उस काफिर सम्भा से आज भी हमारी फौज घबराती है।"

"जी हाँ जहाँपनाह, सभी घबराते हैं उस सम्भा से और वह जिस पहाड़ी पर रहता है उस सह्याद्रि पर्वत से।"

आप भी तो आजकल फौज की सारी खबरें मुझ तक कहाँ पहुँचाते हो, वजीरे आजम?

ऐसा कैसे होगा जहाँपनाह? आपको कुछ गलतफहमी—"

"फिर बताइये—ये क्या है—कबड़ी और कबरी?"

अब तो वजीर की जबान रुक गयी। उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि इतनी छोटी छोटी बाते भी बादशाह के कान तक पहुँचती हैं। उसे स्वप्न में भी इसकी कल्पना नहीं थी। वजीर पर अपनी कड़ी नजर डालते हुए बादशाह ने कड़े स्वर में पूछा, "क्या है यह कबड़ी और कबरी?"

वजीर का चेहरा ऐसा हो गया जैसे भट्ठी मे तपता हुआ कोई हथियार पकड़ लिया हो। घबराकर वजीर बताने लगा, "जहाँपनाह हमारे फौजी विश्राम के समय में एक खेल खेलते हैं। हाथ की छडी से धूल में छोटे-छोटे गोले बनाते हैं। हर

गोले की दक्षिणी दिशा को नदी का नाम दिया जाता है। कौड़ियों को इकट्ठा करके गोले में फेंकते हैं। सिपाहियों का विश्वास है कि जिस सिपाही की कौड़ी गोले में पड़ेगी, उसकी कब्र उसी नदी के किनारे बनेगी। क्या बताऊँ आलम पनाह? हमारी सारी फौज भयाक्रान्त है। हर एक भीतर ही भीतर तड़प रहा है। सभी एक दूसरे से पूछते रहते हैं कि 'हम गंगा-यमुना की ओर जिन्दा लौटेंगे या यहीं कहीं लावारिस की तरह हमारी लाश गिरेगी'?"

"वजीर यह बात यहीं तक सीमित नहीं है। तुम्हारे फौजी यह भी जानने का खेल खेलते हैं कि बादशाह की कब्र कहाँ खोदी जाएगी? क्यों? बोलो! बोलो!!" हताश बादशाह व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसकर बोला, किन्तु उसके क्रोध के पीछे जो वेदना थी उसे छुपा पाना सम्भव नहीं था। विषय को बदलते हुए बादशाह ने वजीर से पूछा, "वजीर, नासिक और बागलाण की क्या खबर है?"

"जहाँपनाह, आपके वफादार महावतखान ने वहाँ पर बड़े जोश से काम किया है। त्र्यंबक के किले पर पिछले छह महीने से घेरा डाल रखा है। रसद का एक दाना भी किले पर नहीं पहुँच रहा है। किले पर मराठे भूख से छटपटा रहे हैं। दो दिनों में ही किला कब्जे में आ जाएगा।"

इसी बीच बादशाह का तीस वर्षीय पोता मोमिन खान दौड़ते हुए आया और बड़े उत्साह से कहने लगा, "मुबारक हो जहाँपनाह। बहुत अच्छी खबर—"

"क्यों, क्या हुआ?" अपने पोते पर दृष्टि खड़ाते हुए बादशाह ने पूछा, "ओ जहन्नमी सम्भा अल्लाह को प्यारा हुआ या पकड़ा गया?"

"नहीं, नहीं, वैसा नहीं, लेकिन दादाजान—" पोता हकलाया।

"वैसा नहीं तो तुरन्त अपना मुँह काला करके निकल जाओ। इस किले पर घेरा डाला, उस किले पर घेरा डाला, ऐसी बकवास अब बन्द करो। बेवकूफो, उस पापी शिवा और सम्भा के तीन सौ से भी अधिक किले हैं। तुम्हारी इन फिजूल की बातों को सुनते-सुनते जिन्दगी समाप्त हो गयी, शैतानो।"

मोमिन खान उल्टे पैर भाग गया। क्रोधित बादशाह उखड़ते हुए फिर वजीर से बोला, "पाँच लाख की फौज और पिछले आठ-नौ वर्षों का समय? हमारे तैमूरवंश में बाबर हुए, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, इतने खुदा के बन्दे आकर गये। पिछले दो सौ वर्षों से हमने हिन्दुस्तान पर राज्य किया। परन्तु इस तरह की आठ-नौ वर्षों की जालिम लड़ाई देखी थी किसी ने?"

"बादशाह सलामत थोड़ा धीरज धारण करें।" असदखान ने आत्मीयता से कहा।

"वजीर, आपको मालूम नहीं, हमारी सारी फौज को पागल होना ही बाकी है। पिछले आठ वर्षों से हमारे सैनिकों को घर मकान, बाले-बच्चे, किसी भी बात

का कुछ पता नहीं है। फौज ने रास्ते में मिली कितनी औरतों और बाजारू वेश्याओं को बर्बाद कर दिया। बहुत-सी मर गयीं। बहुत से फौजियों को असाध्य रोग ने जकड़ लिया है। रात के अँधेरे में पुरुष ही पुरुषों पर अत्याचार कर रहे हैं। यहाँ शैतानी बारिश, महामारी और यहाँ के भयानक अकाल से सारी फौज जर्जर हो गयी है। उनका मनोबल टूट चुका है। यदि समय पर इस स्थिति से सँभाला न गया तो एक दिन ये सारे सैनिक सन्तप्त होकर बादशाह को ही जिन्दा दफन कर देंगे।''

अल्लाह ने बादशाह को बड़े जटिल चक्कर में फँसा दिया था। उसकी फौज में निरन्तर विवाद बढ़ रहे थे। अमदखान पहले शहंशाह से बड़े अदब से बोलता था। किन्तु परिस्थिति के कारण वह भी बदल गया था। वह फौज की समस्या को बादशाह से कह रहा था।

''मेरे आका, अब ज्यादा समय तक फौज को रोके रखना कठिन है।''

''हम किसी भी युक्ति से उस सम्भा को सह्याद्रि पर्वत से बाहर निकालेंगे।''

''उसकी भी सारी कोशिशें बेकार हो गयीं। सम्भा बाहर आता ही नहीं। वहाँ पर फौजी चौकियाँ बनाने में भी कोई हमारी सहायता नहीं कर रहा है। वह गणोजी शिर्के भी डरपोक निकला, किब्ला ए आलम।''

''इसे कितनी बड़ी बदकिस्मती कहा जाय, वजीरे आजम? वर्षों से उस शिवाजी के दो जामाता हमारे साथ हैं। तीसरा भी हमें ही चाहता है। उसके दस-बारह बड़े सरदार भागकर हमारे साथ आ गये हैं। फिर भी उसका लौंडा सम्भा हमारी पकड़ में नहीं आ रहा है?''

बादशाह ने कड़कते हुए कहा, ''कुछ भी करो, साम, दाम, दंड, भेद किसी भी हथियार का इस्तेमाल करो किन्तु शिकार हाथ में आना चाहिए।''

दंड भेद नीति की बात करते करते बादशाह को अचानक स्मरण हुआ, ''जुल्फिकार, क्या हुआ उस खवासखान का?''

''जहाँपनाह, वह पाचाड़ के करीब पहुँच गया है।''

''आगे की बात कर, कमबख्त।'' एकाएक बादशाह की आँखें चमकीं।

''सम्भा को छोड़ो, कम से कम राजाराम को तो हाथ में आने दो। वह छोकरा मुट्ठी में आ जाये तो मराठों का दूसरा राजसिंहासन स्थापित करूँ। तब हम गुर्राने वाले उस सम्भा को भी ठिकाने लगाएँगे।''

दो दिन में ही बहादुरगढ़ से महादजी निंबालकर और पन्हाला से गणोजी शिर्के आकर मिलने वाले थे। सचमुच उन्हें तुरन्त मिलने का आदेश बादशाह ने ही दिया था। बादशाह अपने समीपी सहयोगियों से बार-बार कह रहा था कि, ''रामशेज के किले ने हमें यह सबक सिखा दिया है कि मराठों का यह मूर्ख महाराष्ट्र तोपों के गोलों से नहीं झुकता। झुकेगा भी नहीं। किन्तु षड्यन्त्रों और

धोखों से उनकी कमर तोड़ी जा सकती है।"

एक बार फिर बादशाह की नींद उड़ गयी। वह महाराष्ट्र के अनेक जमींदारों और जागीरदारों को पत्र लिख रहा था— "खानदानी मराठो! हमारे पास आओ। हम आपका सम्मान करते हैं। मुगलों की सल्तनत आपके लिए परायी नहीं है। यह आलमगीर आपको पराया क्यों लगता है? अपने मन के सन्देह को मिटा दीजिए। भाइयो आइये और अपनी जागीरों को लिखवाकर ले जाइये। आपके शिवाजी के साथ हमारी इतनी जानी दुश्मनी थी, वह सब हमने भुला दिया। शिवाजी के जमाई राजा इस औरंगजेब के दल में ऐशोआराम भोग रहे हैं। निंबालकर को हमने बहादुरगढ़ की थानेदारी सौंपी है। जहाँ पर हमारी जनानियों का आवास, रसद भंडार और बड़े बड़े बारूदखाने हैं—ऐसी महत्त्वपूर्ण चौकी हमने महादजी को सौंपी है। महाड़िक जेधे, माने, जगदाले जैसे अनेक नेक मराठे, अनेक गाँवों के मुखिया, बुद्धिमान ब्राह्मण सभी यहाँ पर आनन्द से जी रहे हैं। शिवा का बच्चा सम्भा ही कैसे ऐसा सिरफिरा निकला, पता नहीं। चाहे तो उस बेचारे को भी लेकर आइये। प्रेम से समझाकर और तत्काल पकड़कर यहाँ ले आइये। मुगलों की सल्तनत क्या और आपका स्वराज्य क्या? हम सब एक हैं।"

बहादुरगढ़ से महादजी निंबालकर आये। उन्होंने बादशाह को एक सुन्दर उपहार भेंट किया। उनके बलिष्ठ शरीर, चौड़े भुजदंड, मजबूत गर्दन और तेजस्वी व्यक्तित्व देखकर औरंगजेब बहुत प्रसन्न हुआ। बड़े आदर मे अपने घुटनों तक झुके महादजी के मिर को हाथ मे ऊपर उठाते हुए बादशाह बोला, "महादजी आपकी तो तकदीर खुल गयी है। बहादुरगढ़ की थानेदारी करने की जगह हमने आपको रायगढ़ का मिंहासन देने का निश्चय किया है।"

"जहाँपनाह, रायगढ़ की उस पहाड़ी से आपके चरणों के पास की जमीन कहीं अधिक पवित्र है।"

"महादजी, बड़ी फौज दे रहा हूँ आपकी महायता के लिए। शिवाजी का जमाई सेना लेकर रायगढ़ पर चढ़ाई कर रहा है, यह खबर कितनी बहादुरी की मानी जाएगी।"

महादजी ने बादशाह के पैर पकड़ लिये। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया, "ऐसी बहादुरी मुझमे नहीं हो पाएगी!" उसने अधीरता से कहा, "हुजूर आपके पास रहते हुए ही मैं वहाँ का कार्य मम्पन्न करता हूँ।"

"वह कैमे?"

महादजी ने महाराष्ट्र के पठार के अनेक जमींदारों को पत्र लिखा था। उनकी प्रतिलिपियाँ उन्होंने बादशाह को दिखाईं। बाड़ी के खेमसावन्त को लिखा गया पत्र इस प्रकार था— "औरंगजेब बादशाह के समान बहादुर दूसरा कोई नहीं है। उन्होंने

गोलकुंडा को ध्वस्त कर दिया। बीजापुर के आदिलशाह की नाक में पानी भर दिया। अब उनकी तलवार के नीचे पापी और घमंडी सम्भाजी का भी बेड़ा गर्क होने वाला है। इसलिए इस खानदानी मराठा महादजी की शिवाजी के जामाता की आप सभी से प्रार्थना है कि आप सभी अपने औरंगजेब की सेवा में प्रस्तुत हो जायँ और अपनी सात पीढ़ियों का उद्धार करें।''

सीधे युद्ध में जाने से महादजी घबरा रहे थे। इसलिए बादशाह कुछ रुष्ट हुआ। रात को उसने असदखान से गम्भीर होकर बोला, ''असदखान, पिछले अनेक वर्षो से मैं इस दक्षिण में जड़ जमाकर बैठा हूँ। मैंने मराठों को अच्छी तरह पहचाना है। वजीरे आज़म बताइये, इन मराठों की कितनी जातियाँ हैं?''

''जहाँपनाह! छियानबे या बानबे, ऐसा कुछ ये लोग बकते रहते हैं।''

''नहीं असदखान, मेरे विचार से मराठों की सिर्फ दो ही जातियाँ हैं—एक माडलिक मराठा, दूसरे मर्द मराठा। जिन्होंने पहले से कुतुबशाह, निजामशाह जैसा मालिक खोज लिया, उनकी सहायता से जागीर, महल संस्थान बनाकर, शानशौकत की जिन्दगी बिताते आ रहे हैं, वे मांडलिक मराठे हैं। किन्तु जो जागीर के लिए नही बल्कि अपने देश धर्म के लिए वर्षा धूप सहकर अपनी जिन्दगी दाव पर लगाते हैं, वे मर्द मराठे हैं। ये शिवा और सम्भा मर्द मराठों के सरताज हैं।''

''जहाँपनाह, जो अपने दोस्त बने हैं उनकी तारीफ करने की जगह आप उन्हीं को दोष दे रहे हैं?''

''वजीरे आजम, वे काहे के हमारे दोस्त? वे जागीर के टुकड़ों के दोस्त हैं। उनसे हमारा फायदा हो रहा है। यह अलग बात है?''

''तो क्या जहाँपनाह सम्भा से दोस्ती करना चाहते हैं?'' असदखान ने आँखों को सिकोड़ते हुए सीधा प्रश्न किया।

''वजीरे आजम एक डेढ वर्ष पहले, जब गोलकुंडा का कुतुबशाह पूरी तरह हमारे कब्जे में आ गया था, उस समय उसकी और सम्भा की गुप्त दोस्ती का हमें पता था। कुतुबशाह की सहायता से मैंने सम्भा के पास दोस्ती का पैगाम भेजा था। सोचा लाखों की फौज लेकर इस बुढ़ापे में कितने वर्षो तक भटकता रहूँ?''

असदखान ने अपने मन की बात भीतर ही दबाकर पूछा, ''हजरत आपने सम्भा से क्या माँगा था?''

''उसके सभी बड़े किले। उसके बदले में हम सम्भा को जितनी चाहिए उतनी जागीर देने वाले थे, लेकिन मैदानी भाग की।''

''सम्भा ने क्या जवाब दिया?''

''क्या देगा?'' बादशाह का स्वर कटु हो गया, उसने कहा, ''समझौते का पैगाम लेकर गये वकील के मुँह पर इतने जोर से थूका कि वकील बहुत देर तक

अपनी आँख ही नहीं खोल सका।''

दो दिन में ही पन्हाला से गणोजी शिर्के आये। आते ही उन्होंने बादशाह के पैर पकड़ लिए। जिस प्रकार घर के किसी बड़े बुजुर्ग के मिलने पर उसके गले लगकर कोई अपने ऊपर हुए अन्याय का दुखड़ा रोकर मन हल्का करता है। उसी प्रकार गणोजी बहुत देर तक बोलते रहे। उसके बोलते हुए बादशाह बड़ी होशियारी से उससे जानकारी प्राप्त कर रहा था। पन्हाला, विशालगढ़, मलकापुर, कर्‍हाड़, पीछे की सह्याद्रि की घाटी, जंगली रास्ते जैसी अनेक बातें पूछ रहा था।

सम्भाजी और कवि कलश ने उसकी जिन्दगी किस तरह तबाह की, इसकी सारी कहानी गणोजी सुना गया। उसकी कहानी ध्यान से सुनते हुए बादशाह ने कहा, ''गणोजी तुम नेक इनसान हो, काम के आदमी हो, योग्य हो, किन्तु तुम्हारे पास कोई बड़ी फौज नहीं है।''

बादशाह की इस जानकारी से गणोजी चौंक गया। किन्तु तत्काल अपने को सँभालते हुए बोला, ''बादशाह सलामत, मेरे स्वामी, जैसा आप कह रहे है, वैसी फौजी शक्ति न होने से मैं सामने से वार नहीं कर सकता किन्तु अपने हाथ की छोटी खंजर से पीठ में ऐसा घाव करूँगा कि एकाध राज्य भी रसातल का चला जा सकता है।''

''वाह गणोजी, अरे आपके जैसे नेक और बहादुर व्यक्ति को अपने जमाई के रूप में ऐसे ही थोड़े चुना होगा, शिवाजी ने।'' बादशाह ने वस्त्र और आभूषण देकर गणोजी का सम्मान किया। उनके साथ दो दिन तक विचार विमर्श किया। गणोजी के विदा होते समय जितनी चाहिए उतनी जागीर देने का आश्वासन देकर बादशाह ने बल देकर कहा, ''हमारे शहजादे आजम साहब से तो तुम मिले ही हो। पन्हाला की ओर आते जाते रहिये। किसी चीज की जरूरत हो तो आजम साहब से बेहिचक माँग लीजिए।''

''बड़ी कृपा की आपने, बादशाह सलामत।''

''आप चिन्ता न करें। आपके पन्हाला पहुँचने के पहले ही आजमसाहब के पास हमारा सन्देशा पहुँच जाएगा।''

सात

कवि कलश शम्भू महाराज को एक खुशखबरी सुनाने लगे, ''समय पर भगवान की

कृपा हुई है, राजन! जिंजी से बड़ी अच्छी खबर आयी है।"

"कौन सी कविराज?"

"हरजी राजा ने तीन हजार बैलों पर लादकर धन और अनाज भेजा है। पन्द्रह दिन पहले ही लोग वहाँ से बैलों को लेकर चल चुके हैं।"

"अच्छा हुआ।" महाराज प्रसन्न हो गये। बड़े सन्तोष के साथ उन्होंने कहा, "हरजी शूरवीर और होशियार हैं। यहाँ की अकाल और अभाव की खबरों को सुनकर उनकी आँखें खुल गयी होंगी। कुछ भी हो जो हुआ अच्छा ही हुआ।

दो चार दिन ही बीते थे कि कृष्णाजी कोन्हेरे कवि कलश और शम्भूजी महाराज के पास दौड़ते हुए आये। अपने कन्धे के उत्तरीय को झटकते हुए कहने लगे, "पत्र आया है, अथणी से, दिगोजी निंबालकर की खबर कुछ अच्छी नहीं है।"

शम्भू महाराज और कवि कलश ने आँखें उठाकर कोन्हेरे की ओर देखा। कोन्हेरे ने कहा, "जिंजी से पीठ पर धनधान्य लादे बैल जत के मैदान में पहुँच गये। वहाँ बादशाह की फौज ने उन्हें लूट लिया। परन्तु दिगोजी पन्त का कहना है कि सम्भव है कि बैलों को हाँकने वाले रास्ता भूलकर बादशाह की फौज में पहुँच गये होंगे।"

शम्भू महाराज ने इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। दो दिन बाद ही हरजी राजा का पत्र आया। उन्होंने लिखा था, "अनाज पहुँचा या नहीं कृपया इसी हरकारे से शीघ्रातिशीघ्र सूचित करें। कवि कलश ने आश्चर्य से पूछा, "राजन गलती किससे हुई? आदमियों से या बैलों से?"

उदास भाव से हँसते हुए शम्भू महाराज ने कहा, "कविराज तीन हजार बैलों को हाँकने वाले कितने रहे होंगे?"

"कम से कम साठ सत्तर।"

"हरजी के ही न?"

"नहीं तो और किसके?"

"फिर उसका दोष उन चौपाए जानवरों को क्या दिया जाय? दो पैर वाले के दिमाग से निकली यह कोई योजना है।"

"मतलब?"

"मैं पहले से ही कहता आया हूँ कि हमारे हरजी जीजा जितने बहादुर हैं, उतने ही चालाक भी। यह योजना तो उनकी पहले से बनी बनाई है।"

"वह कैसे?"

"हमें रसद भेजने की सूचना देकर उसी समय रसद जानबूझकर औरंगजेब के पास भेज दी गयी। भविष्य में अगर हमारे दुर्भाग्य से बादशाह की विजय हुई तो

उसके पास दंडवत होने के लिए ये तैयार रहेंगे। यह भी कहेंगे कि हम तो पहले से ही बादशाह के सेवक रहे हैं। कोई और रास्ता न होने के कारण साले के पास रुके थे। वफादारी का सबूत पेश करने के लिए ये बैल उपयोगी सिद्ध होंगे।''

आठ

सवेरे सवेरे जुल्फिकार आकर बादशाह के सामने खड़ा हो गया तो बादशाह ने उसके चेहरे की ओर देखा। औरंगजेब का कलेजा काँप गया था। उसके मौसेरे भाई का चेहरा इतना ठगा सा हो गया था कि आगे कुछ पूछने की बादशाह की हिम्मत ही नहीं हो रही थी।

करुण एवं उदास स्वर में जुल्फिकार किसी प्रकार बोला, ''रहम करें जहाँपनाह! यह बुरी खबर देने के लिए मेरी जबान उठ ही नहीं रही है। हमारे जैनुद्दीन और उसके साथियों ने बड़ी कोशिश की थी। पाचाड़ के राजमन्दिर में राजाराम ने उन्हें खाने पर बुलाया था। उसी रात को उसे गिरफ्तार करना था। किन्तु उसी समय सम्भाजी की पत्नी येसूबाई वहाँ पहुँच गयी। उसने हमारे बहादुरों की आँखों में नाचती चोर दृष्टि को तत्काल पहचान लिया। 'दुश्मन, दुश्मन' कहकर ऐसा शोर मचाया कि मराठे सैनिक दौड़ पड़े। फिर क्या था, मराठों ने हमारे सारे साथियों को काट डाला। बचे हुए दो को कैद कर लिया गया है।''

बादशाह ने कुछ भी कहा नहीं। खिन्न मन से लालबारी के दरबार वाले डेरे में जाकर बैठ गया। चुपचाप नित्य की भाँति अपना कार्य शुरू किया।

उसी दिन दोपहर को मंसूरखान की एक हजार सवारों की एक फौज, दौड़ते हुए जत के मैदान में आयी। सेना अपने साथ कुछ कैदियों को भी लेकर आयी थी। औरंगजेब ने तुरन्त उन्हें भीतर बुलाया। बादशाह के सामने गोसांई की वेश भूषा में आठ हट्टे कट्टे नौजवान आँखें लाल किये निर्भीक भाव से खडे थे। उनके काले कठोर चेहरे और उनकी लाल आँखों को देखने का साहस नहीं हो रहा था।

''मंसूरखान! कौन हैं ये लोग?''

''जहाँपनाह! कल ही हिन्दुओं के एक शिवमन्दिर में मिल गये। ये बदमाश सम्भा के आदमी हैं।''

''आठ?''

''नहीं हजरत! चार पाँच और भी थे। हमारे सूबेदार ने रात को धावा बोला तो

अँधेरे का फायदा उठाकर चार-पाँच भाग गये। इनका लिबास गोसाइयों और फकीरों का है, मगर ये पेशे से फौजी हैं। एक एक के शरीर में दस दस आदमी की ताकत है।''

बादशाह ने अपनी जप माला को सीने से लगाते हुए पूछा, ''और इन लोगों का मकसद?''

मंसूरखान हड़बड़ा गया। वह अन्य उपस्थित लोगों की ओर देखने लगा। तब बादशाह ने सभी को बाहर जाने के लिए आँखों से संकेत किया। गुप्तचर, नौकर, मेहमान सभी बाहर चले गये। उन आठ लोगों पर औरंगजेब ने एक बारीक नजर डाली और तुरन्त मंसूरखान से पूछा, ''इन लोगों का मकसद?''

''आपकी मौत! जहाँपनाह।'' ऐसा कहते हुए खान ने अपना सिर नीचे झुका लिया।

मंसूरखान ने मराठों की इस टोली को पहले ही बहुत पीटा था। उनके शरीर पर अनेक घाव दिख रहे थे। किन्तु उनकी आँखों में तेज था। उनके बारे में बादशाह ने खास पूछताछ की—''मंसूरखान फौज में इनका ओहदा क्या था? सरदार सूबेदार?''

''नहीं हुजूर, साधारण सैनिक। किन्तु इनके पद की अपेक्षा इनका मकसद बहुत ही खतरनाक था। आपको बीच ही में कहीं पर फँसाकर कत्ल कर देने का इनका इरादा था। इसीलिए ये यहाँ आये थे।''

औरंगजेब ने सकट के एक और विषैले घूँट को पी लिया। अपने पर काबू करते हुए, उसने एक फौजी संन्यासी से प्रश्न किया, ''क्यों जवाँमर्द सम्भा ने तुम्हें क्या हुक्म दिया था?''

बिना एक क्षण का विलम्ब किये वह तरुण बोला, ''महाराज ने हमसे इतना ही कहा था। औरंगजेब हमारे देश, धर्म और ईश्वर के लिए सकट हैं। वह जहाँ भी और जिस रूप में मिले उसे वहीं और उसी रूप में खत्म कर दो।''

औरंगजेब मन्द हँसी हँसकर मंसूरखान से पूछने लगा, ''अथणी के देवालय में सम्भा के दूसरे साथी भाग गये थे क्या?''

''नहीं नहीं जहाँपनाह! इतना ही नहीं है।'' खाँसते और गला साफ करते हुए मंसूर ने कहा, ''अपनी जान की बाजी लगाकर आपका खात्मा करने के लिए ऐसी दस बारह टोलियाँ, जत, अथणी, पंढरपुर, मंगलवेड़ा आदि क्षेत्रों में घूम रही हैं।''

मंसूरखान का आखिरी वाक्य तपती सलाख की तरह घूम गया। प्रयत्न करने पर भी वह अपने चेहरे की भीति रेखा को छुपा नहीं पाया। वह सन्तप्त होकर बोला, ''जिस समय वह बदमाश हंबीरराव मरा, उस समय लगा था कि सम्भा झुक

जाएगा। जब काफिरों की सहायता करने वाली कुतुबशाही और आदिलशाही का खात्मा किया था, तभी भी ऐसा ही लगा था। लेकिन—लेकिन—'' बादशाह की बात अधूरी ही रह गयी।

उस दिन बादशाह ने अपना लालबारी का दरबार जल्दी ही समाप्त कर दिया। संकटों के आघात को मनुष्य झेल सकता है, किन्तु जब समय ही आघात करने लगे तो मनुष्य का अपने ऊपर से विश्वास उठने लगता है। बीजापुर की महामारी झेलकर और अपनी पचहत्तर हजार सेना गँवाकर भी बादशाह बड़े उत्साह और हिम्मत से आगे बढ़ा था। किन्तु उसका नसीब ही धोखा दे रहा था। पन्हाला की ओर से शहजादे आजम से कोई समाचार नहीं मिल रहा था। मराठों ने सर्जाखान, शहाबुद्दीन, पोलादखान, बरामदखान जैसे बहादुरों को वहीं उलझा रखा था। उसी में राजाराम को पकड़ने की खतरनाक कोशिश भी नाकाम हो गयी थी। धन का अभाव, रसद का अभाव, उत्तर से सहायता का निरन्तर कम होते जाना, दक्खिन में जगह-जगह अकाल, अन्तिम सफलता न मिलने से हताश होती फौज, उद्धत होते सवार-सरदार, मनोबल और धीरज खो चुकी फौज और ऊपर से वह कौड़ी कबरी का खेल!''

बादशाह के दिमाग में किसी ने कौड़ी-कबरी का जालिम खेल भर दिया था। उससे भी अधिक मंसूरखान द्वारा ले आये गये अथणी के वे कैदी उसे आतंकित कर रहे थे। सम्भा द्वारा इधर भेजी गयी टोलियाँ और उनके द्वारा कही गयी वह हकीकत। लगता है वह काफिर का बच्चा अपनी गर्दन पर बैठा है। बादशाह सारी रात छटपटाता रहा। डेरे की कनात के पास हवा से यदि कोई पत्ता खड़का या घोड़े के पाँव से हलकी-सी आवाज हुई तो बादशाह घबराकर उठ जाता था। किस नदी के किनारे अपनी कब्र बनाई जाएगी? मेरी जान लेने के सम्भा के द्वारा भेजे गये शैतान यहाँ कैसे आ पाएँगे? इसी प्रकार की शंकाओं ने बादशाह को पागल बना दिया था। आँखों के सामने हीराबाई, पानी के बिन तड़पता शाहजहान, रक्त से सना दारा का सिर नाच रहा था। दक्खिन का सह्याद्रि छाती पर टूटता हुआ सा प्रतीत हो रहा था।

बड़े सवेरे ही बादशाह को तेज बुखार चढ़ा। उदयपुरी बेगम उसका सिर पकड़कर पास ही बैठी थी। किसी भी उपाय से बुखार उतर नहीं रहा था। किन्तु हकीम ने बताया था कि वह प्लेग का बुखार नहीं है। यह जानकर सभी की जान में जान आयी। बुखार से तड़पते बादशाह के कानों में किसी की आवाज आयी। ''मुकर्रबखान उस ओर सांगोला के समीप आया है।'' बादशाह ने तुरन्त उसके पास हरकारा भेजा।

दूसरे दिन दुर्बल बादशाह अपने बिस्तर में पड़ा था। कनात की खिड़कियों से

डूबते सूर्य की किरणें भीतर आने की कोशिश कर रही थीं। बादशाह ने नजर उठाई तो उसे पलँग के पास मुकर्रबखान हैदराबादी दिखाई पड़ा। उसके हाथ में फलों की टोकरी थी। अपने बीमार स्वामी से मिलने के लिए वह दौड़ता हुआ आया था। बादशाह ने इशारे से अपने सिरहाने बिठा लिया। मुकर्रबखान ने चिन्तित स्वर में पूछा, "मेरे आका शाही हकीम आकर गया कि नहीं?"

बादशाह ने अपने कोमल हाथ के पंजे से मुकर्रबखान का हाथ पकड़ लिया। बड़े प्रेम से हाथ को दबाते हुए बादशाह ने भावुक होकर कहा, "मुकर्रबऽ तू ही मेरा सच्चा हकीम है।"

मुकर्रबखान को देखते-देखते औरंगजेब की डूबती आँखों में जान आ गयी। उसने उसकी ओर घूरकर देखा। बबूल के तने जैसा ऊँचे साँवले चमकती आँखों वाले तेजस्वी मुकर्रबखान को देखकर बादशाह का साहस और भी बढ़ गया। जैसे कोई व्यक्ति पुराने कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े धारण कर लेता है, वैसे ही बादशाह ने अपनी बीमारी को छोड़कर नया जोश धारण कर लिया। बादशाह उठकर बिस्तर में बैठ गया। मुकर्रबखान की हथेली को बड़े प्यार से सहलाते हुए उसने कहा, "मुझे पता है मुकर्रबखान कि," कहते-कहते बादशाह की दृष्टि पास बैठी उदयपुरी बेगम पर पड़ी। राजनीति की बात चलने पर बेगम ही नहीं, अन्य किसी को भी वहाँ रुकने की इजाज़त नहीं थी। उदयपुरी बेचारी तुरन्त वहाँ से दूसरी ओर चली गयी।

"हाँ, हाँ। मुझे पता है मुकर्रबखान! दक्खिन के सभी मुसलमान सरदारों में एक तू ही केवल बहादुर योद्धा ही नहीं अल्लाह के दरबार का सच्चा सिपाही भी है।"

"मैं तो आपका एक साधारण सेवक हूँ, बादशाह सलामत।" अब मुकर्रब खूब सावधान हो गया था। बादशाह ने किस उद्देश्य से इतनी शीघ्रता से उसे मिलने के लिए बुलाया था, यह उसकी समझ में नहीं आया था। किन्तु उसे बहुत देर तक भ्रम में न रखकर औरंगजेब ने कहा, "शेख मुकर्रब। उस नारकी सम्भा ने कितना उपद्रव मचा रखा है, यह आपको बताने की जरूरत नहीं है। वह कैसा कुत्ता और कमीना है यह भी आप जानते हैं। इस काफिर बच्चे के बाप शिवा को भी मैंने पुरन्दर की सन्धि के समय काबू में कर लिया था। किन्तु आज नौ-दस वर्षों से यह शैतान औरंगजेब को मूर्ख फकीरों की तरह दक्षिण के वनों और मैदानों में भटका रहा है।"

बादशाह ने मुक्त मन से साँस ली। बोलते बोलते वह बहुत भावुक हो गया। उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये। गाजर की भाँति बादशाह की लाल नाक और भी लाल दिखने लगी। उसने व्याकुलता से कहा, "मुकर्रब! किस बुरे मुहूर्त में मैं इस मुहिम पर निकला? कौन जाने। मराठों के महत्त्वपूर्ण किले अभी भी क़ब्ज़े में

नहीं आये। सम्भा का कुछ पता नहीं चलता। मेरे सभी शहजादे मूर्ख हैं। पोते भी बेवकूफ निकले। फौज का मनोबल भी टूट चुका है। मेरी उम्र हो गयी है। उठते-बैठते हड्डियाँ बजती हैं। अल्लाह की सेवा में टोपियाँ बनाने के लिए भी नजर काम नहीं देती। अपनी सेना पर भी अब मुझे भरोसा नहीं है। सह्याद्रि की घाटियों का स्मरण करके ही सैनिक घबरा जाते हैं। वे हरामजादे कबड़ी-कबरी का खेल खेलते हैं। वे यह अन्दाज लगाने की भी कोशिश करते हैं कि बादशाह की कब्र दक्षिण में किस नदी के किनारे बनाई जाएगी।"

"जहाँपनाह। लानत है ऐसी जिन्दगी पर।" मुकर्रब बीच में ही बोल पड़ा, "चार-पाँच लाख फौज के मालिक और हिन्दुस्तान के शहंशाह, जिसके आसपास सैनिकों का समुद्र, ऐसे बादशाह की आँखों में आँसू? फिर ऐसी फौज किस काम की?"

"इसीलिए तो हम तुम्हें पन्हाला की ओर भेज रहे हैं।"

"आप सारी फिक्र छोड़ दें जहाँपनाह। अब मैं खुले मैदान में उस सम्भा की चमड़ी उधेड़ता हूँ। नहीं तो उस जंगली बन्दर को नचाते हुए आपके पास ले आता हूँ।"

"ऐसा शैतानी ख्वाब कभी मत देखना मुकर्रबखान। अरे बेवकूफ वह सम्भा खुली जंग में बन्दी होने वाला होता तो यह बादशाह पिछले आठ नौ वर्षो तक फकीरों की तरह क्यों भटकता? आज मेरे सभी सरदार और तीन साढ़े तीन लाख की फौज नाकामयाब है और सह्याद्रि की पहाड़ियों में राज्य करने वाला वह शिवा का कुत्ता दिन-ब-दिन मगरूर होता जा रहा है।"

बादशाह खयालों में खो गया। उसने अपने आपसे कहा, 'यह सच है कि सह्याद्रि की उन पहाड़ियों पर मेरा भरोसा कभी नहीं रहा। आज तो खुद पर भी मेरा भरोसा नहीं है। इस फौजी जुलूस पर तो बिलकुल नहीं। अरे रामशेज जैसे छोटे से किले पर कब्जा करने के लिए हमारे इन हरामजादों को साढ़े छह वर्ष हो रहे हैं। तो इनका भरोसा कैसे किया जाय? रामशेज तो नाशिक के पास है जबकि रायगढ, राजगढ़, प्रतापगढ़ तो सह्याद्रि के हृदय में बसे हुए हैं।'

"तो क्या हुआ जहाँपनाह? हम जाएँगे। चलिए मैं आपके साथ हूँ।"

"हम किसलिए जाएँगे? अपनी कब्र की जगह खोजने के लिए?" बादशाह कुछ हताश हुआ। किन्तु फिर समझाने के स्वर में बोला, "मुकर्रब तू मुझे अपने सगे भाइयों से भी अधिक प्रिय है। इसलिए बताता हूँ। मुझे एक शैतानी ख्वाब रात दिन आता रहता है कि उस रायगढ़ और राजगढ़ किले पर सिंह का एक घायल बच्चा निरन्तर गश्त लगा रहा है। यह घूमता हुआ सिंहशावक मुझे रात-दिन सता रहा है।

यह ख्वाब मेरी आँखों को डँसता है और मेरे पूरे शरीर में कँपकँपी छूट जाती है।"

बादशाह की यह दीन-हीन दशा देखकर मुकर्रबखान स्वयं शर्मिन्दा हो गया। बहुत देर तक दोनों में बातें होती रहीं। अपने मन की बात मुकर्रब के सामने स्पष्ट करते हुए बादशाह ने कहा, "मुकर्रब, अब समय बर्बाद न कर तुम पन्द्रह हजार की फौज लेकर पन्हालगढ़ की ओर बढ़ो।"

"पन्हाला की ओर?" मुकर्रब ने चकराकर बादशाह की ओर देखा।

"क्यों? मैंने वहाँ शहजादे आजम को पहले ही भेजा है, इसलिए?"

"जी हाँ!"

"उसकी तुम बिलकुल चिन्ता न करो। वहाँ का सारा सूत्र मैं तुम्हारे हाथ में सौंपता हूँ। हमारा शहजादा भी तुम्हारे हुक्म के अनुसार कार्य करेगा। ऐसा फरमान मैं आज ही जारी कर देता हूँ। तुम्हारी दिशा, तुम्हारा मकसद, तुम्हारा ध्येय है सम्भाऽऽ, सिर्फ सम्भाऽऽ।"

"शुक्रिया, जहाँपनाह! इस साधारण बन्दे पर आपने असीम कृपादृष्टि दिखाई है।"

सीने पर मुट्ठी मारकर बादशाह के सामने झुकते हुए मुकर्रबखान ने कहा, "मैं भी इसी दक्खिन की मिट्टी का वीर सैनिक हूँ। उस सम्भा को ठिकाने लगाने की हर सम्भव कोशिश करूँगा। मेरी तेज नजर काफिर की हर गतिविधि पर बनी रहेगी। बिजली की तरह तेज और बाणों की तरह तीव्र गति वाले जासूसों को मैं वहाँ भेजूँगा, जो हवा के वेग से पहाड़ियों से टकराकर, उसी वेग से समाचार लेकर वापस आ जाएँगे। लेकिन बादशाह सलामत एक मेहरबानी और कीजिए। मेरे साथ भरपूर खजाना भी दीजिए।"

"बेशक, बिलकुल!"

"एक राज की बात बताता हूँ जहाँपनाह। मराठों जैसी परोपकारी और लालची जाति पूरी दुनिया में कहीं नहीं होगी। थोड़े से धन की लालच में वे अपने सगे भाई का भी गला घोंट सकते हैं।"

"वाह क्या परख है?" आलमगीर प्रसन्न हो गया।

"जहाँपनाह, मुर्गे के सामने जैसे दाने डाले जाते हैं, वैसे ही मैं इन मराठों के सामने हीरे जवाहरात फेंकने वाला हूँ। यदि खर्च बढ़ गया तो उसे सरकार द्वारा मंजूर किया जाय।"

औरंगजेब बहुत सन्तुष्ट हुआ। रामशेज पर जब क़ब्ज़ा नहीं हो पा रहा था तब औरंगजेब ने द्रव्यलोभ के हथियार का उपयोग किया था। अब्दुल करीम नाम के जमादार के माध्यम से रामशेज के नये मराठा किलेदार को लालच देकर अपनी ओर

मिला लिया था। हजारों तोपों से जो सफलता नहीं मिल पायी थी उसे विश्वासघात की तीक्ष्ण कटार ने प्राप्त कर लिया। इसी अस्त्र के उपयोग का बादशाह ने निश्चय किया था। जिस प्रकार किसी भूखे ऊँट को रेगिस्तान में हरी घास दिखाई दे जाये वैसे ही औरंगजेब को मुकर्रबखान से आशा की प्रतीति हुई। उसने मुकर्रबखान की आँखों में दृढ़ निश्चय का तेज देखा। वह प्रसन्न होकर अपनी जगह से उठा और बड़े प्यार से मुकर्रब की पीठ थपथपाते हुए बोला, "बहादुर! धन की चिन्ता बिलकुल न करो। चाहिए तो निकलते समय हमारा आधा खजाना हाथी पर लादकर भले ही ले जाओ। किन्तु कार्य में सफलता मिलनी चाहिए।" बोलते-बोलते आलमगीर पुनः गम्भीर हो गया। गहरी साँस लेकर बोला, "लेकिर मुकर्रब इस मुहिम में एक क्षण के लिए भी गफलत नहीं करना। हंगामा मचाकर वेग से आक्रमण करने, छुप-छुपकर आक्रमण करके शत्रु को परेशान की कुशलता में वह सम्भा माहिर है। वह अपने बाप शिवा से दस गुना तेज और सताने वाला है। कुछ भी करो किन्तु उस काफिर बच्चे को लगाम जरूर पहनाओ। यही अल्लाह की इच्छा है, यही उसकी सच्ची खिदमत है।"

उद्घोष

एक

सन्ध्या समय शीतल बयार चल रही थी। केल्र्या के पठार पर मुकर्रबखान का पड़ाव पड़ा था। तम्बू के द्वार पर मशालें भकभका रही थीं काले भुजंग से मशालची मशालों में तेल भरते जा रहे थे। ऊँट और घोड़ों को दो दिनों के बाद विश्राम मिला था। वे गीला सूखा जो भी चारा मिला उसे चबा रहे थे। अपने खूँटे के चारों ओर घूम कर पूँछ झाड रहे थे या जुगाली कर रहे थे।

छावनी के मध्यभाग में मुकर्रबखान का डेरा था। उसके शामियाने के चारों ओर मशालें फुरफुरा रही थीं। हाथों में नंगी तलवारें लिये सिपाही पहरा दे रहे थे। मशालों के प्रकाश में तलवारें चमचमा रही थीं। अपने डेरे पर मुकर्रबखान मखमली मसनद से टिका आराम कर रहा था। उसके चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ साफ-साफ झलक रही थीं। वह बार बार दाई ओर बनी कनात की खिड़की की ओर देख रहा था। सामने की काली पहाड़ी पर स्थित पन्हालगढ़ उस अँधेरे में जैसे उसे मुँह चिढ़ा रहा हो।

इसी समय बाहर कुछ दूरी पर कुत्ते जोर-जोर से भूँकने लगे। बीस पच्चीस घुड़सवारों का एक दल, अपने घोड़ों को हवा की गति से दौड़ाता हुआ छावनी की ओर आ रहा था। इस दल के बीच में मुकर्रबखान का एक पुत्र और एक दीवान था। उन दोनों के पीछे कुछ मराठा सैनिकों के घोड़े दौड़ रहे थे। तेजी से आ रहा दल प्रवेश द्वार पर रुक गया। शहजादे के पीछे एक पैंतालीस वर्ष का मराठा सरदार घोड़े से उतरा। उसके शरीर पर जख्मों के निशान थे और चेहरा सूजा हुआ था। कुछ दिन पहले ही उसकी एक आँख में चोट आयी थी इसलिए वह आँख लाल थी।

दल के सभी लोग खान का झुककर अभिवादन करते हुए उसके सामने गये। उस विकृत चेहरे वाले मराठा सरदार ने शान से ऐंठकर बैठे हुए मुकर्रबखान को देखा। उसे देखकर वह इतना आनन्दित हो गया मानो उसे अपने कुलदेवता का

दर्शन हो गया हो। वह मराठा सरदार रोते हुए मुकर्रबखान के चरणों में गिर पड़ा। वह अपनी आँख और नाक खान के पैरों में रगड़-रगड़कर हिचकियाँ लेते हुए बोला, "बचाओऽऽ, खानसाहब बचाओऽऽ।"

मराठा सरदार के इस अप्रत्याशित व्यवहार से मुकर्रबखान कुछ हड़बड़ा गया। उसने सलीम से पूछा, "कौन है यह पागल आदमी?"

"बाबाजान! यही है वह गणोजी राजे शिर्के। सम्भाजी का सगा साला, शिवाजी का जमाई।"

"उठिए गणोजी राजे।" कहते हुए मुकर्रबखान ने बड़े प्रेम से उसकी पीठ पर एक थपकी दी और पूछा, "गणोजी बादशाह की छावनी में तुम्हारी इतनी इज्जत है तो फिर तुम एक बेसहारा दासी की तरह यहाँ रो क्यों रहे हो?"

"क्या करें खानसाहब उस सम्भा और कलुशा ने हमारे शिर्के परिवार को बेघर कर दिया है। सारे शिर्के लोगों को खदेड़ दिया है। हमारी कुटरें गाँव की हवेली पर क़ब्ज़ा कर लिया है। हमारे दो-तीन चचेरे भाइयों को मार डाला है। मैं खुद और मेरे साथ देवजी और दौलतराव जैसे लोग भागकर मुगलों की शरण में आये हैं। क्या कहें! क्या बताएँ खान साहब! अब हमारे बीवी बच्चे भी शिरकान में नहीं रहते।"

"लेकिन भोसले तो तुम्हारे निकट सम्बन्धी हैं न?"

"ऐसे सम्बन्धी नष्ट हो जायँ तो ही अच्छा। सम्भाजी और उसके उस मूर्ख मान्त्रिक ने शिरकान में हड़कम्प मचा रखा है। हमारे खेत-खलिहान लूट लिये, खड़ी फसल ज़लाकर खाक कर दी, हमारे पहरेदारों को गड्ढे में पुआल डालकर जिन्दा जला दिया।"

गणोजी की ओर दयापूर्वक देखते हुए मुकर्रबखान हँसा और बड़े उत्साह से बोला, "अजी राजा साहब! इस तरह रोने-धोने की जगह तुम सम्भाजी पर सीधे तलवार क्यों नहीं उठाते?"

"खान साहब! पूरी तैयारी कर ली थी। सम्भा ने पहले कलुशा को हमारे ऊपर चढ़ाई करने को भेजा था। उस समय मैंने अनेक सरदारों को और दक्षिण कोंकण के सभी इज्जतदार जागीरदारों को इकट्‌ठा कर लिया था। अच्छी खासी दस हजार की सेना बना ली थी। उस समय हमने कलुशा को दूर भगा दिया था।"

"फिर?"

"फिर क्या? उस मूर्ख कलुशा ने रायगढ़ से सम्भा को बुला लिया। उन दोनों के पास सिर्फ पाँच हजार सेना थी।"

"तुम्हारी संख्या तो दुगुनी थी न?"

"उसका क्या फायदा, खानसाहब?" कौन जाने इस भोसले की औलाद ने

रणचंडिका को ही अपने बस में कर लिया है। वह सम्भा जब हवा से बात करने वाले घोड़े पर बैठकर रण भूमि में उतरता है तो उसके शत्रु भी मन्त्रमुग्ध होकर उसकी ओर देखने लगते हैं। उसकी केवल एक ललकार सैनिकों में बारह भैंसों की शक्ति भर देती है। खानसाहब क्या बताएँ? बताने में भी शर्म आती है। सम्भा ने शिरकान में कदम रखा और हमारी जागीरदारों की संगठित सेना बड़ी मुश्किल से दो-तीन घंटे ही उसके सामने टिक पायी। उसके बाद सभी उल्टे पैर खेतों और जंगलों में शरण लेने के लिए भाग खड़े हुए।"

मुकर्रबखान ने गणोजी को थोड़ी देर शान्त होने दिया। परिचारकों ने बीजापुरी ठंडा शरबत पेश किया। गणोजी का यथोचित स्वागत करके मुकर्रबखान ने उन्हें सान्त्वना दी। मुकर्रबखान ने कहा, "गणोजी, जिस तरह सम्भाजी बादशाह के लिए एक संकट है उसी तरह तुम जैसे खानदानी जागीरदारों के लिए भी है।"

"खानसाहब, इस गणोजी के पीछे अनेक सच्चे मराठा सरदार और वफादार ब्राह्मण सरदार भी हैं। पीठ पीछे सभी लोग अपनी शेखी बघारते हैं, मूँछों को घी लगाकर ऐंठते हैं किन्तु सम्भा के मैदान में उतरते ही बन्दरों की तरह पूँछ दबाकर भागते हैं! बस! अब और क्या? अब तो हम सभी का यही विचार है.. यह सम्भाजी रणभूमि में.. ।"

एकाएक गणोजी की आँखें भर आयीं। वह भरे गले से बोला, "बादशाह सलामत के हुक्म के अनुसार मैं तैयार हो गया था। मैंने उनसे वादा भी किया था कि हमारे क्षेत्र में वे आयें और जितने चाहें उतने मुगलों के मोर्चे बनाएँ। लेकिन उस महाविनाशक सम्भा ने हमारा सारा शिकराना जलाकर खाक़कर दिया। जो शिर्के कभी राजा थे आज उजड़े गाँव के भिखारी बन गये हैं। खान साहब आप जो चाहें सो करें, लेकिन उस सम्भा को कसाई के बकरे की तरह छाँट दें।"

मुकर्रबखान ने सारी स्थिति का जायजा लिया। उसने गणोजी के शरीर के अंग प्रत्यंग से, उसकी तेज चलती गर्म साँसों से, उसकी मिचमिचाती आँखों से और सम्भाजी के प्रति द्वेष से भरे उसके सिर के बालों से लेकर पैर के नाखून तक का पूरा अन्दाजा लगा लिया। अब उसे विश्वास होने लगा कि गणोजी शिर्के सम्भाजी का नहीं औरंगजेब का ही साला है।

देर रात तक विचार विमर्श चलता रहा। मुकर्रबखान की निगाह कनात की खिड़की से बार बार पन्हालगढ़ की ओर जा रही थी। चर्चा अधूरी ही रह गयी।

दूसरे दिन सवेरे ही पुनः खान और गणोजी की बातचीत शुरू हो गयी। भोर में ही शहजादा आजम और औरंगजेब की ओर से कई महत्त्वपूर्ण सन्देशे आये। उनका सूक्ष्मता से वाचन किया गया। अब पन्हालगढ़ की पहाड़ी स्वच्छ प्रकाश में जगमगा रही थी। मुकर्रब ने हँसते हुए गणोजी से पूछा, "शिर्के सिंह तो हाथ लगता

नहीं है, कम से कम सामने का वह किला तो हमारे क़ब्ज़े में दो।"

"पन्हाला?"

"हाँ, पन्हाला पर क़ब्ज़ा करो ऐसा जहाँपनाह से हुक्म आया है। इसके अतिरिक्त हमारी सैनिक गतिविधियों के लिए भी वह किला बहुत महत्त्वपूर्ण है। बस एक बार उस पर हमारा क़ब्ज़ा हो जाये फिर पीछे के मसाई पठार, उससे थोड़ी ही दूरी पर घोड़ दरी, विशालगढ़ वह अम्बाघाटी आदि सम्पूर्ण इलाके पर अपनी हुकूमत स्थापित करना हमारे लिए बहुत आसान हो जाएगा।"

गणोजी कुछ सकपकाया। गला साफ करते हुए भरे गले से उसने कहा, "खान साहब! बड़ा ही कठिन काम बताया है आपने! वहाँ के किलेदार त्र्यंबक महाड़कर और प्रह्लाद पन्त जैसे खुर्राट और निष्ठावान जैसे बुज़ुर्ग हैं। वे जरा सा भी विचलित होने वाले नहीं हैं।"

"अब जाने भी दो गणोजी राजे! अनेक मजबूत और खुर्राट मरगट्ठे लड़ते लड़ते थक गये हैं अब उन्हें शान्ति चाहिए। उन्हें सिर्फ जागीर, जमींदारी, शान्ति और सम्पत्ति चाहिए, बस। जाओ! साथ में हीरे जवाहरात भरी थैलियाँ ले जाओ। किले के रक्षकों, प्रशासकों को द्रव्य दो, उनमें फूट डालो, उन्हें फोड़ो।"

"सरकार, बाकी सभी मान जाएँगे, मात्र वह प्रह्लाद पन्त जैसा खुर्राट बूढ़ा आदमी है। उसे बस में करना बहुत मुश्किल है।" गणोजी ने कहा।

"शिर्के छोटे बच्चों की तरह बेकार की बातें मत करो। तुम अपने राष्ट्र भक्त उस प्रह्लाद पन्त का यह पत्र ठीक से देखो जो उसने शहजादा आजम को भेजा है।"

गणोजी का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उन्होंने झपट्टा मारकर वह पत्र मुकर्रबखान के हाथ से ले लिया और साँस रोककर प्रह्लाद पन्त का पत्र पढ़ने लगा—

"शहजादे आजम,

दया करो। हमें बचाओ। हमारा राजा अविचारी और विवेकहीन ही नहीं पागल भी है। किसी क्लर्क या कर्मचारी की यदि कोई शिकायत उसके पास आते ही वह एक नीति का अनुसरण करता है। वह बिना सोचे-समझे उसे पकड़वाकर मारता-पीटता है और उसका सब कुछ लूट पाट लेता है। उसके लिए कवि कलश ही उसका विश्वासपात्र है शेष सभी उसके लिए बेईमान हैं। महाराज उस कलशा के जाल में बुरी तरह फँस गये हैं। शिर्के ही नहीं किसी का भी घर बर्बाद करने में उसे कोई हिचक नहीं। जागीरदारों को बेइज्जत करना, ओछे और कमीने लोगों की बात मानना उसका स्वभाव बन गया है। वह कान का कच्चा है और एकदम पगला गया है।

बादशाह! दया करें और जुल्मी सम्भाजी के अत्याचारों से हमारी रक्षा करें। मराठों का गज्य बचा लें। हमारे राजा के साथ राज्य भी क्षयग्रस्त हो गया है। हमारे राज्य का विनाश निश्चित है। बादशाह सलामत हमारे राज्य को बचा लें। राजाराम को गद्दी पर बिठाएँ। आपकी सेवा के लिए हमलोगों की मजबूत और बुद्धिमान मंडली पूरी तरह तैयार है।''

गणोजी ने एक ही माँस में पत्र को तीन बार पढ़ लिया। उसकी प्रसन्नता छुपाए नहीं छिप रही थी। एक आँख को सिकोड़कर, अपनी मूँछों को बड़े प्यार से ऐंठते हुए गणोजी आह्लादित होकर बोला, ''बस सरकार, स्वयं प्रह्लाद पन्त की ओर से ऐसा प्रस्ताव मिल जाने के बाद और क्या चाहिए? अब आप आगे का कार्य मुझ पर छोड दीजिए।''

बीच में दो राते बीत गयीं। इस बीच गणोजी और देवजी शिर्के स्वय रात के अँधेरे में पन्हालगढ़ का चक्कर लगा आये थे। वहाँ से लौटते ही वे मुकर्रबखान के डेरे में घुस गये। दोनों मुकर्रबखान से ऐसे लिपटे मानो विवाह मंडप में साले बहनोई गले मिल रहे हों। उनके आनन्द की कोई सीमा नहीं थी। वे जोश में आकर उन्मादी की तरह बोल पडे, ''बस खानसाहब! अब केवल दो दिन और इन्तजार करें। अब पन्हालगढ पर फिर भगवा झंडा दिखाई नहीं देगा। बिना किसी कोशिश के किला स्वयं अपनी झोली में आ गिरेगा। आप बस हिम्मत से उसे अपने अधिकार में लेने की तैयारी रखें।''

दो

पन्हालगढ़ जैसे शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण किले को अजगर ने अपनी चपेट में लेना आरम्भ कर दिया था। यह खबर पाते ही कि उपराजधानी पन्हालगढ़ खतरे में है, शम्भूराजा और कवि कलश ने अपने घोड़े उसी ओर दौड़ाये। कवि कलश ने विशालगढ़ से निकलते ही मलकापुर की अपनी चौकी के लिए सन्देश भेज दिया था। शहाली और कड़वी नदी के पानी से पोसे गये दस हजार घोड़ों में से तीन हजार घोड़ों ने पन्हालगढ़ की ओर उड़ान भरी।

राजद्रोहियों ने गढ़ के ऊपर के निशान जानबूझकर हटा दिए थे। आधा किला मुगलों के अधिकार में जा चुका था। इसी बीच पश्चिम मसाई पठार की ओर से

शम्भूराजा किले में प्रवेश किये। सम्भाजी और कविराज दोनों युद्ध में कूद पड़े। किले पर चढ़कर बुर्ज की ओर भागने वाली मुगल सेना को उन्होंने काटकर गिरा दिया। इस प्रकार पुन: किले को अधिकार में कर लिया। यह ऐसा ही कार्य था जैसे अजगर के मुँह में चले गये आधे से अधिक भक्ष्य को उसका दाँत तोड़कर बाहर निकाल लिया गया हो। रात में गद्दार राजद्रोहियों की तलाशी ली गयीं। प्रह्लादपन्त को बन्दी बना लिया गया। राजद्रोही येसाजी और शिदोजी फर्जन्द को दंड के रूप में खड़ी चट्टान से नीचे फेंक दिया गया। शम्भूराजा ने अपने बाहुबल से खोये हुए किले को फिर से अपने अधिकार में कर लिया।

कवि कलश ने कहा, "राजन! हम बाल-बाल बच गये। भूख-प्यास भूलकर आप विशालगढ़ से तीर की तरह दौड़कर पन्हालगढ़ आ गये अन्यथा मुकर्रबखान तो किले को निगल ही चुका था।"

"कविराज पन्हाला की विजय से आज हमें कोई प्रसन्नता नहीं हो रही है। हमारी जरा-सी चूक से वह नीच गणोजी शिर्के हमारे हाथ से बच निकला। इसी पश्चाताप की आग से मेरा मन झुलस रहा है।"

"सत्य है राजन! उस धूर्त कुटिल सियार ने अँधेरे का लाभ उठा लिया और बगल करौदी के झुरमुट से चम्पत हो गया। यह हमारा दुर्भाग्य है, और क्या?"

"कविराज, मनुष्य के हाथ से कभी कभी ऐसी चूक हो जाती है जिसके प्रायश्चित का भार उसे आजीवन ढोना पड़ता है। जिसको अपना समझकर हमेशा सँभाला, रक्षा की, उसी ने ही कलेजा छलनी कर दिया।" शम्भूराजा ने व्यथित स्वर में कहा, "रायगढ़ पर पिछली भेंट के समय गणोजी की जीभ में नागफनी के काँटे उग आये थे। इसे येसूरानी सहन न कर सकीं और मेरी ही म्यान से तलवार खींच ली थी। भाई के टुकड़े टुकड़े कर देने के लिए वे दौड़ पड़ी थीं। उस दिन यदि मैंने उसे जीवन-दान न दिया होता तो क्या आज ये दिन देखने पड़ते?"

"सच है राजन! आज एक गणोजी बहुत महँगा पड़ रहा है।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है कविराज! स्वराज्य में आज अकेला गणोजी ही नहीं है। वह तो एक जंग लगा मुखौटा भर है जिसकी आड़ में अनेक बेचैन जमींदार, बाल-बच्चों की चिन्ता से ग्रस्त जागीरदार और न जाने कितने लोग मेरे विरुद्ध एकत्र हो गये हैं। यह व्याधि आज की नहीं बहुत पुरानी है।

"ये धूर्त जागीरदार पिताजी के समय में भी भीतर से बहुत दुखी थे। वे वस्तुत: केवल मेरे पिताजी की मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब तक वे जीवित थे तब तक उनके स्वाभिमानी और कट्टर स्वभाव के सामने जागीरदारों की एक न चलती थी। चुपचाप रहने के अतिरिक्त उनके पास कोई चारा भी नहीं था।"

"फिर?"

"फिर क्या? इस शिवाजी के पुत्र को व्यभिचारी, व्यसनी, झक्की, मनमौजी आदि कहकर पागल सिद्ध करने के अनेक प्रयास किये गये। किन्तु यह सम्भाजी इन दुष्ट और षड्यन्त्रकारी बूढ़ों के मन की गाँठों को अच्छी तरह पहचानता था। मुझे कत्ल करने के तीन प्रयास अब तक असफल हो चुके हैं। पन्हाला का यह दाँव चौथा और अन्तिम है।"

एक बार दोपहर में कराड के बाजार में नागोजी माने का मतवाला काठियावाड़ी घोड़ा चला जा रहा था। इसी समय उसे घोड़ों पर सवार गिरोजी और अर्जोजी यादव दिखाई पड़े। यादव बन्धुओं का उपहास करते हुए उसने पूछा, "क्यों रे यादवोऽऽ सम्भाजी से तुम्हें जागीर के कागजात मिले क्या?"

"हमारी जागीर का फैसला पुराना है। मिल ही जाएँगे मुहर लगे कागज।" गिरोजी ने कहा।

"मूर्ख हो तुम सभी। भोसलों की औलाद ने किसी को भी कभी इस तरह जागीर लिखकर दी है, जो तुम्हें दे देंगे? पराया होने पर भी उस बादशाह को हम जागीरदारों पर दया आती है किन्तु इन भोसलों को नहीं।"

बातों बातों में ही नागोजी ने कब इन भाइयों के दिमाग में भेद का जहर घोल दिया, उन्हें पता ही नहीं चला। वे दोनों निराश हो गये। गिरोजो जी निराशा के स्वर में बोला, "जाने दो सूबेदार जी, हमारी किस्मत ही खराब है, हमारी राशि में ही दोष है।"

"क्यों रे?"

"पिछली बार पक्का फैसला होने वाला था कि उन्हीं दो दिनों में बड़े महाराज चल बसे—" अर्जोजी ने निवेदन किया।

उन दोनों की ओर देखकर व्यंग्य से हँसते हुए नागोजी ने कहा, "अब छोटे महाराज चल बसें, इससे पहले ही अपने कागज रँगवा लो।"

"सरकार, ऐसी अशुभ बात क्यों कहते हैं?" यादव बन्धुओं ने पूछ लिया।

नागोजी की जबान सूख गयी। उसने अनुभव किया अचानक उसके मुँह से गलत बात निकल गयी है। अपने को सँभालते हुए उसने कहा, "समय किसी से पूछकर तो नहीं आता है न? अरे भाई जब तक शम्भू जीवित हैं जागीरी अपने पल्ले से बाँध लो। जो चीज गणोजी को एड़ियाँ रगड़कर भी नहीं मिल रही है वही जमाई की कृपा से तुम्हें सहज ही मिल जाएगी। इसलिए बाकी के सभी काम छोड़कर इसे पूरा कर लो। छोटे महाराज कहाँ हैं आजकल? पन्हालगढ़, विशालगढ़ या शृंगारपुर? खैर जहाँ भी हों वहीं पर जाकर उनके पैरों में गिर पड़ो। नहीं तो पछताना पड़ेगा। तब यही कहोगे कि भाग्य ने तो दिया था किन्तु कर्म ने खो दिया।"

तीन

"खानसाहब अब चाहे जो हो उस सम्भा की बोटी बोटी कर डालो और उस धोखेबाज कलुशा की मुंडी छाँटकर अलग कर दो।" गणोजी अत्यन्त उतावला हो उठा था।

चोट खाया गणोजी तो विक्षिप्त-सा हो ही गया था, मुकर्रबखान के भी बहुत बुरे दिन चल रहे थे। उसकी भी शामत आ गयी थी। सवेरे सवेरे बादशाह की ओर से एक बड़ा लिफाफा आ गया था। बादशाह ने बड़े क्रोध से लिखा था, "कितनी उम्मीद से हम तुम पर नजर लगाये हुए थे? पर जैसे अल्लाह के बन्दे से फतह किया गया पन्हाला किला हाथ से निकल गया और सलामी के समय ही तुम्हारी शिकस्त हो गयी। इससे हमें बहुत दुख पहुँचा है। कहीं ऐसा न हो कि हमें ऐसी खबर सुनने को मिले कि उस सम्भा ने तुम्हें ही अपनी गिरफ्त मे ले लिया है।"

मुकर्रबखान ने दोपहर का भोजन नहीं लिया। वह आपे से बाहर हो गया था। पन्हाला की नाकामी से वह पहले ही बहुत दुखी था। वह जब भी घोड़ा दौड़ाते अपने साथियों के साथ बाहर निकलता तो उसकी क्रुद्ध आँखो को पन्हाला की पहाड़ी अवश्य दिख जाती। एक क्षण में अपनी सफलता के हाथ से सरक जाने की स्मृति उसे कुपित कर देती थी।

शेख मुकर्रब के शरीर का दक्खिनी रक्त उसे चैन नहीं लेने दे रहा था। वह गोलकुंडा की कुतुबशाही में अपने परिश्रम से प्यादा से लेकर सेनापति तक का भार सँभाला था। उसके शरीर में एक बलशाली सैनिक और कुशल योद्धा का निरन्तर वास था। वह केवल गणोजी और नागोजी जैसे जागीरदारों पर निर्भर नहीं था। उसने पहले से ही थैलियों की गाँठें खुली रखकर विपुल धन राशि को बाँटा था। मुकर्रबखान ने अपने चारों ओर सह्याद्रि के पहाड़ों, उसकी दुर्गम घाटियों और घने जंगलों में तेजी से दौड़ने वाले विश्वसनीय जासूसों को फैला रखा था। गणोजी के जासूसों से प्राप्त खबरों की वह अपने जासूसों से जाँच पड़ताल करवाता था। वह अपने विश्वसनीय जासूसों द्वारा पुष्ट की गयी सूचनाओं पर ही विश्वास करता था।

एक सुबह मुकर्रबखान ने गणोजी को बुलाकर कहा, "क्यों गणोजी, सुना है कि सम्भाजी और कलश ने तुम्हारे उस संगमेश्वर में बड़े खूबसूरत महल बनवाये हैं? सुन्दर सुन्दर बगीचे भी तैयार किये हैं। वहीं पर बगीचे के झूले पर हवा खाते

हुए सम्भा को गिरफ्तार कर लें तो?''

''यह कैसे सम्भव है, सरकार?'' गणोजी ने हँसते हुए कहा, ''अजी वह सम्भा हवा का एक तेज झोंका ही है।''

''लेकिन सुना है कि पिछले साल उसका पड़ाव एक महीने तक संगमेश्वर में ही था।''

''इस वर्ष सम्भव नहीं लगता। सम्भाजी एक चक्कर खाता हुआ पखेरू है जिसकी चोंच तेज आरी की तरह धारदार है।''

गणोजी द्वारा अनजाने में शम्भूराजा की प्रशंसा की उपेक्षा करते हुए मुकर्रबखान ने पूछा, ''जब कभी वह सम्भा कोंकण मे विशालगढ़ की ओर जाता है तो उस ओर जाने वाला रास्ता किस गाँव से होकर जाता है?''

''जाहिर है, संगमेश्वर से होकर ही।''

मुकर्रबखान मन ही मन हँसा, बोला, ''गणोजी, तुम पहाडी लोगों को सीधा सा व्यवहार भी नहीं आता? कोई राहगीर जब एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है तो मार्ग में किसी गाँव की सराय में लोटाभर पानी पीने के लिए तो रुकता ही होगा? दोपहरी में किसी पेड़ के नीचे घड़ी भर के लिए आराम तो करता ही होगा?''

''क्या मतलब?''

''तुमने ही तो बताया कि सगमेश्वर में सम्भा और कलश के बडे बडे महल हैं।''

गणोजी धीमे और शान्त स्वर में बोला, ''मुकर्रब मियाँ हाथ में मुझे तलवार पकडने का भले ही अच्छा अभ्यास न हो किन्तु हमारी खोपड़ी कमजोर नहीं है। जानते हैं? आपकी खुफिया खबरों की जानकारी हमें भी रहती है। यह सम्भा आपके बादशाह की लाख कोशिश के बावजूद मिल नहीं रहा है। इसी दुख से बादशाह अपने सिर पर मुकुट नहीं पहनता। अब तो सम्भा के न मिलने के अपयश से उसकी हिम्मत भी पस्त हो चुकी है। ये सारी बातें हम अच्छी तरह जानते हैं। माता शिरकाई एक बुरी घटना से बचा ले तो बेहतर है।''

''कौन-सी घटना?''

''तुम्हारा खीझा हुआ, हिम्मतपस्त नाकाम बादशाह किसी दिन अचानक दिल्ली की ओर कूच न कर जाय, बस।''

मुकर्रबखान की स्थिति ऐसी हो गयी मानो सावन की कोमल धूप को पराजित करके उसके ऊपर काले बादल उमड़ आये हों। गणोजी को पास खींचकर उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए वह उसके कान में कुछ बुदबुदाया।

''यह तो अच्छा हुआ जो बात तुमने छेड़ी। सच कहता हूँ। बादशाह मुझ पर

भी सिर्फ कुछ ही दिन विश्वास रखेगा। उसके बाद—उसके बाद दिल्ली की ओर निकल जाएगा।''

मुकर्रबखान की बातें सुनकर गणोजी एकदम रुआँसा हो गया। वह खान के पैर पर गिरते हुए बोला, ''आप लोगों के दिल्ली की ओर रुख करते ही हमारी तो मौत ही हो जाएगी। उधर वारणें के दर्रे में बच्चे मकाई के भुट्टे कैसे खाते हैं? उसे तो आप जानते ही हैं। हरे भरे पत्तों के साथ भुट्टों को तोड़ते हैं फिर साफ करके उसे दहकते अंगारों में भूजते हैं, उस पर नमक लगाते हैं, फिर मजे से खाते हैं। उसी तरह सम्भा हम खानदानी जागीरदारों को बडे मजे से निगल जाएगा। हमने उसे बहुत सताया है।''

''फिर करना क्या होगा?''

''उसे लगे हाथों किसी भी तरह से ले जाइये, जिन्दा या मुर्दा। यदि आपने ऐसा नहीं किया तो हमें मरना होगा।''

मुकर्रबखान किसी प्रकार हँसकर बोला, ''गणोजी, तुम हमारी कितनी मदद करते हो? उसी पर हमारी सफलता निर्भर करेगी।''

आसपास की पहाड़ियों पर आक्रमण करने अथवा शिकार के लिए बाहर निकलना पड़ सकता है। इसलिए मुकर्रबखान ने गणोजी और नागोजी को आदेश दे रखा था कि हर जगह पर उनके विश्वसनीय लोगों और सम्बन्धियों तथा उनके जानवरों को तैयार रखा जाय।

यह अफवाह भी चारों ओर फैली हुई थी कि दक्षिण के दीर्घ प्रवास में निरन्तर असफलताओं के कारण औरंगजेब तंग आ गया है। निकट भविष्य में किसी भी समय दिल्ली की ओर कूच कर जाएगा। इस खबर से गणोजी और नागोजी जैसे जागीरदारों की धोती गीली होन को आ गयी थी। सभी बेचैन हो गये थे।

गणोजी और नागोजी ने आसपास गाँवों के जमींदारों को गुप्त पत्र भेजे थे। ये पत्र सीधे देशमुख और देशपांडे लोगों के हाथ लग गये थे।

''तुम लोग मराठे हो या ब्राह्मण। भगवान ने सभी को पेट दिया है। पेट के साथ साथ अपने पेट से उत्पन्न सन्तान की भी चिन्ता करनी होती है। आगामी पीढ़ी के हित के लिए जमींदारी जरूरी है। हम सभी परम्परा से सम्मानित जागीरदार हैं। जागीरदार का कोई राजा नहीं होता। हम स्वयं अपनी जागीर के राजा होते हैं। पिछली बारह पीढ़ियों से बारह प्रदेशों के बादशाहों ने हमें जागीरें प्रदान की थीं। शिवाजी, सम्भाजी और उनका स्वराज्य तो अभी कल की चीजें हैं। इसके पहले तो सारा देश हमारे ही बाप दादों का था। इतना ही क्यों? आज के रायगढ़ पर ही नहीं कल की रायरी पर भी हमारा ही अधिकार था। हमारा ही स्वामित्व था। इसलिए सभी जागीरदारो एक हो जाओ, नेक हो जाओ। खान की मदद करके अपनी

खानदानी शान को बचा लो।"

मुकर्रबखान का तकाजा लगातार जारी था। अभियान की निश्चित दिशा का पता नहीं लग रहा था, किन्तु उसका उद्देश्य समझ में आ रहा था। खान के आदेशानुसार, पन्हालगढ़ के उस पार योगावती की घाटी, विशालगढ़ के पार अणुस्कुरा घाट, वारणा की बस्ती में पेटलोड ही नहीं शृंगारपुर के पास शिर्को के जले हुए प्रदेश में भी गुप्त सन्देश पहुँचा दिए गये थे। ऊपर से शिवाजी और सम्भाजी की जयकार करने वाले पुराने जागीरदार भीतर से जमीन के टुकड़ों के लिए छटपटा रहे थे। उन्हें गुप्त रूप से सन्देश भेजा गया था, "अपने घोड़ों को तैयार रखें। शायद सागर की ओर किसी सौदागर की तलाश में निकलना पड़े। हट्टे कट्टे मजबूत घोड़े और रसद तैयार रखें।"

कोल्हापुर से कराड़ तक मुगल सेना के रास्ते से नागोजी माने का दस्ता लगातार भाग दौड़ कर रहा था। नागोजी जैसा अनुभवी और मँजा हुआ जागीरदार समझ चुका था कि बादशाह की सेवा का यह सुअवसर स्वयं चलकर आया है। इसलिए वह मुकर्रबखान की चाटुकारिता में खूब भाग दौड़ कर रहा था। अपने मित्रों और निकट सम्बन्धियों को भी सावधान कर रहा था।

चार

"मल्हारराव कृष्णाजी इस बुर्ज की जोड़ाई का काम हमारी आँखों के सामने दो दिन के भीतर पूरा होना चाहिए। इसके पूरा होने के पहले मैं विशालगढ नहीं छोड सकता।" सम्भाजी ने कहा।

"सरकार, हम पर भी थोड़ा भरोसा कीजिए।"

"मेरा भरोसा तुम पर तो है किन्तु उस औरंगजेब पर नहीं है।" सम्भाजी राजा बोल पड़े, "अपने सभी किले, परकोटे इतने मजबूत बनाएँगे कि एक एक किले की ओर देखते देखते औरंगजेब की जिन्दगी समाप्त हो जाय।"

जैसे कि ऊँची, हट्टी कट्टी घोड़ी के पास खड़ा बछेड़ा शोभित होता है उसी तरह सह्याद्रि की एक प्रचंड चोटी की उँगली पकड़कर विशालगढ़ सुशोभित हो रहा था। सह्याद्रि की पहाडी के पास टूटे हुए किले की सँकरी लम्बोतरी खाई ने एक छोटी सी पगडंडी बना दी थी। ग्यारहवीं शताब्दी में भोजराज ने प्रथमत: इस

जंगली किले का निर्माण किया था। सामरिक गतिविधियों की दृष्टि से इस किले का विशेष महत्त्व था। यहीं से कोंकण में उतरने के लिए, प्रभावली और देवड़ा की ओर जाने वाली जंगल की सँकरी और भयावह पगडंडियाँ थीं। यहाँ से अंबा घाट और अणुस्कुरा घाट के आवागमन पर भी अच्छी तरह नियन्त्रण रखा जा सकता था।

जिस प्रकार प्रचंड आँधी के आने से घर के दरवाजे-खिड़कियाँ खुलकर जोर-जोर से टकराने लगते हैं, उसी प्रकार औरंगजेब का आखिरी आक्रमण दरवाजे पर पहुँच गया था। चाकण, शिखण, सतारा, कराड़, इस्लामपुर से कोल्हापुर तक की सारी मुस्लिम चौकियाँ, मराठों के स्वराज्य की ओर क्रुद्ध नजरों से देख रही थीं। काबुल, कन्दहार से बंगाल तक और मालवा से बुरहानपुर तक औरंगजेब का कोई शत्रु बचा नहीं था। अब औरंगजेब घमंडी और उद्दंड हो गया था। उसने दक्षिण के मित्र राज्यों में बीजापुर, गोलकुंडा को नेस्तनाबूद कर दिया था। अब उसने अपना रुख सम्भाजी और उनके पीछे खड़े सह्याद्रि की ओर किया। दक्खन की मिट्टी आहट पा चुकी थी कि महायुद्ध का अन्तिम चरण शीघ्र ही आरम्भ होने वाला है। यह भी कि इस युद्ध का अन्त औरंगजेब अथवा शम्भूराजा में से किसी एक की मृत्यु मे होना निश्चित है।

मुंढा दरवाजे के पास सम्भाजी राजा और कवि कलश खड़े थे। उनके साथ विशालगढ़ के अधिकारी मल्हार रंगनाथ और कृष्णाजी कोंडा भी उपस्थित थे। पहले 'खेलणा' नाम से विख्यात विशालगढ़ अब जीर्ण शीण हो चला था। मुंढा दरवाजे की पीठ से लगकर खड़ा पुराना बड़ा बुर्ज, पिछले महीने अपने आप ही ढह गया था। यदि कभी किसी की सेना बीच की लम्बोतरी खाई पार करके आ जाये तो बुर्ज के ढहने मे बने रास्ते से बारूदखाने तक बड़ी आसानी मे पहुँच सकती थी। वर्तमान युद्ध संकट को देखते हुए इस धोखादायक स्थिति को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता था। इस किले का शत्रु के हाथ में जाने का सीधा अर्थ था मुगलों को दक्षिण कोंकण में घुसने का राजमार्ग प्राप्त होना।

चार दिन पूर्व ही शम्भूराजा ने यहाँ की हवेली में राजगीरों और कारीगरों की बैठक बुलाई थी। उन्होंने पूछा था, "बुर्ज के निर्माण में कितना समय लगेगा?"

"कम से-कम दो महीने।"

उत्तर सुनते ही सम्भाजी जलती मशाल के समान भभक उठे। वे गरजकर बोले, "इस गति से होने वाला काम नहीं चलेगा। केवल दो दिन और दो रातों में यह बुर्ज बनकर खड़ा हो जाना चाहिए। राजा के आदेशानुसार अणुस्कुरा से आंबा और साखरप्पा तक हर गाँव के लिए अश्वारोही दौड़ाये गये। वे जितने मिल सके उतने मजदूर, राजगीर और थवई लेकर वापस लौटे। गढ़ की कुछ तीन हजार की सेना भी अपना फौजीपन भूल गयी। स्वराज्य के संकट का अनुमान कर उन्होंने

अपनी तलवारें एक ओर रख दी थीं। फावड़ा, कुदाल, बेल्चा आदि उठा लिए थे। चारों ओर भीड़ जमा हो गयी और काम की जल्दी मची हुई थी। पत्थर पर पत्थर चढ़ रहा था। गीले चूने को पीसते-पीसते बैलों की अनेक जोड़ियाँ थककर झुकती जा रही थीं।

दो ही दिन में बुर्ज को खड़ा करने का कार्य अत्यन्त कठिन है। इसका ज्ञान महाराज को भी था। इसलिए बैठक समाप्त होने पर उन्होंने कवि कलश से धीरे-से पूछा, "कविराज, सच बताइये, कितने दिनों में यह कार्य पूर्ण होगा?"

कवि कलश जैसे तैसे हँसते हुए बोले, "राजन! किसी उफनती नदी पर बाँध बनाना भी सम्भव हो सकता है किन्तु इस गढ़ की ढालू चट्टान पर पत्थर चढ़ाना बहुत कठिन है। दो दिन में यह कार्य पूरा करना ईश्वर के लिए भी सम्भव नहीं।"

"क्यों अशुभ बोलते हो, कविराज?" राजा झल्ला उठे।

"राजन! आगे सुन तो लीजिये। यदि आप स्वयं ही रात-दिन इसी तरह पहरा देते रहेंगे तो यह कठिन कार्य चार दिन और चार रातों में पूर्ण हो जाएगा।"

शम्भूराजा बहुत चिन्तित दिखाई पड़ रहे थे। उन्होंने कहा, "कविराज, हमारे शत्रु को पंख लग गये हैं। महायुद्ध शुरू होने से पहले हमें अपने सेनापतियों और सरदारों को अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ देनी हैं, रणनीति निश्चित करनी है।"

"उसकी चिन्ता न करें, राजन! आपके आदेशानुसार चार दिनों बाद रायगढ़ लौटते समय संगमेश्वर में जो विचार विमर्श करना है, उसकी पूरी तैयारी हो चुकी है।"

"क्या हरकारे चारों ओर जा चुके हैं?"

"बिलकुल।"

"यों ही सभी को अपनी अपनी चौकियाँ छोड़कर मत बुला लेना। अन्यथा हम अपनी मसलहत में मग्न रहेंगे और उधर हमारा शत्रु बाजी मार ले जाएगा।"

"ऐसा नहीं होगा, राजन! आपके आदेशानुसार बिलकुल चुनिन्दा सरदारों को ही संगमेश्वर में बुलाया गया है। पाचाड़ से सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े आएँगे। इसके अतिरिक्त आपके सुझाव के अनुसार धनाजी और सन्ताजी नामक जवान लड़कों को विशेष रूप से बुलाया गया है।"

"बहुत अच्छा! हमलोगों ने शिर्को के क्षेत्र को बर्बाद कर दिया है। तब से गणोजी और उसके भाई, पूँछ जले सियार की तरह बेकाबू हो गये हैं। परसों की पन्हालगढ़ की घटना याद है न?"

राजा को अच्छी सफलता और यश की प्राप्ति हो, औरंगजेब जैसे कराल काल का संकट दूर हो इस समर्थ रामदास के शिष्य रंगनाथ स्वामी भी उन्हें आशीर्वाद देने के लिए आने वाले थे। उनसे संगमेश्वर में भेंट होने वाली थी।

महाराज को धूप मे बचाने के लिए किलेदार ने वहीं चट्टान पर एक कनात खड़ी कर दी थी। उसमें बैठे शम्भूराजा की नजर सामने बुर्ज के निर्माण कार्य पर लगी हुई थी। पिछले तीन दिनों में मजदूरों और सिपाहियों ने विलक्षण पराक्रम दिखाया था। बुर्ज का अधिकांश निर्माण कार्य पूरा हो चुका था। परन्तु शेष कार्य आज की रात तक पूरा हो जाना चाहिए था। राजा ने पक्का बन्दोबम्त किया था। यदि मुगल सेना दूसरे दिन भी विशालगढ़ पर आक्रमण करती तो भी छह महीने तक के लिए रसद और गोला बारूद जमा कर लिया गया था।

शम्भूराजा बोझिल स्वर में बोले, "कविराज संगमेश्वर के विचार विमर्श में दिशा निश्चित हो जाय, बस! फिर दुश्मन को महीना भर में गाड़ देंगे। चाहे कुछ भी हो जाये उम जालिम अजगर की फाँस मे महाराष्ट्र को एक दो महीने में मुक्त कर लेने का हमारा पक्का इरादा है।"

"बिलकुल गजन!"

"परन्तु कविराज, मात आठ वर्षो की लगातार लड़ाई से प्रजा की बड़ी दुर्गति हुई है। उन्हें बोने के लिए बीज दें। सरकार की ओर कुआँ-बावड़ी खोदने के लिए द्रव्य दें। किन्तु कविराज मुझे विश्वाम है—"

"किम बात का गजन?"

"यही कि जैसे ही इम औरंग्या को हम ममाप्त करेंगे, बहुत अच्छी वृष्टि हो जाएगी, एकदम मूमलाधार वर्षा होगी। आगामी दशहरा दीपावली में हमारे स्वराज्य में खेती की ऐसी उपज होगी कि हमारे खेत खलिहान अनाज से भर जाएँगे।"

"अवश्य गजन! किन्तु आपको इतनी चिन्ता क्यों है?"

शम्भूराजा ने ऊपर की ओर देखा। ऐसा लगा मानो उन्होंने सफेद बादलों को अपनी आँखों में भर लिया। वे गहरी साँस लेकर बोले, "कविराज! हम कभी भी चिन्तित या नाराज नहीं हुए। आज तक अनेक भयानक हमें निगलने के लिए आते रहे, किन्तु भवानी की कृपा से हम उनसे उबरते रहे। फिर भी आखिर मनुष्य ही हूँ, कभी-कभी ठिठककर रह जाता हूँ। मन में बार बार एक ही प्रश्न उठता है कि ईश्वर इम मम्भाजी के माथ हमेशा टेढ़ी चाल क्यों चलता है। कोई बड़ा निवाला मुँह में जाने से पहले ही नीचे क्यों गिर जाता है?"

"राजन!" कहकर कविराज अभिभूत होकर शम्भूराजा की ओर देखते रह गये। एक ठंडी साँस लेकर शम्भूराजा फिर बोले, "कविराज याद है वह जंजीरा का घेराव? कोंडाजी बाबा जैसे स्वराज्य प्रेमियों ने अपने प्राणों को पूजा-पुण्य की तरह अर्पित कर दिया। अन्ततः प्रभु रामचन्द्र का नाम लेकर भरी खाड़ी में सेतु निर्माण का कार्य आरम्भ करना पड़ा। थोड़े समय का अवसर मिल गया होता तो हम आक्रमण

करके जंजीरा बुलन्द परकोटा ध्वस्त कर देते। किन्तु उसी समय महाराष्ट्र में मुगल सेना बाढ़ के पानी की तरह गरजती हुई पहुँच गयी। नतीजा यह हुआ कि हाथ में आयी सफलता से मुँह मोड़कर दूसरी ओर दौड़ना पड़ा। हमारे साथ अन्तिम क्षण में ऐसा क्यों घटित होता है? सफलता के मुट्ठी में आने पर भी हम खाली हाथ क्यों रह जाते हैं?''

बात करते करते शम्भुराजा की दृष्टि बुर्ज के कार्य की ओर जाती थी। उनकी दृष्टि के उस ओर जाते ही मजदूर, राजगीर, सिपाही सभी हड़बड़ा जाते थे। इसी समय कृष्णाजी कोंडा ने महाराज का अभिवादन करते हुए कहा, ''महाराज! आज रात तक कार्य समाप्त करने की जिम्मेदारी हमारी है। किन्तु आपके यहाँ पर धरना देकर बैठे रहने से काम करने वाले नाहक ही बार बार हड़बड़ाते रहते हैं। कल प्रातः संगमेश्वर की ओर आपके कूच करने के पहले वह कार्य पूरा हो जाएगा।''

कविराज और शम्भुराजा ने हँसते हुए एक दूसरे की ओर देखा। दोनों कनात की छाया से बाहर निकले। राजा ने कहा, ''कविराजऽ! यहाँ आने के बाद से मन में एक बेचैनी है, पावन घाटी को एक बार देखने की बड़ी इच्छा हो रही है।''

''अवश्य राजन!''

वे तत्काल मुख्य दरवाजे से दाहिनी ओर गंजी के पठार की तरफ बढ़ गये। वहाँ से दो परिचित चेहरे गढ़ पर चढ़कर आते हुए दिखाई पड़े। उनके आगे पीछे उनके नौकर चाकर दौड़ रहे थे। राजा के कदम ठिठक गये। उन्होंने पुन: ढलान पर चढ़ते मेहमानों को घूर कर देखा। उन्होंने देखा कि अर्जोजी और गिरजोजी यादव आ रहे हैं। दोनों यादव बन्धुओं ने पाचाड़ के राजमन्दिर और स्वराज्य के अनेक निर्माण कार्य पूरे किये थे। इसलिए उनके प्रति राजपरिवार में बड़ी आत्मीयता थी। उन लोगों को अचानक आया देखकर शम्भुराजा ने मुस्कराकर पूछा, ''यादवजी आप लोगों को कैसे पता चला कि यहाँ पर बुर्ज का निर्माण कार्य चल रहा है?''

''महाराज आपके सभी कार्य पूरी निष्ठा और प्रयत्न के साथ पूरे किये हैं, किन्तु हमारा एक काम आपके पास वर्षों से अटका पड़ा है।''

''कहिएऽऽ?''

''पूजनीय बड़े महाराज के समय यह तय हो गया था कि करगड़ और औंध की जागीरदारी हमारे नाम कर दी जाएगी। किन्तु दुर्भाग्य से महाराज स्वर्गवासी हो गये और कागजात तैयार नहीं हो पाए।'' अर्जोजी यादव ने निवेदन किया।

''तो यादव! इसमें ऐसी जल्दी की क्या बात है?''

''क्षमा करें! ऐसी कोई भी बात नहीं है, सरकार! गलती आपकी नहीं है, हमारी किस्मत ही खराब है। जब-जब हमारे काम का अवसर आता है तब कुछ न

कुछ अप्रत्याशित घटित हो जाता है।''

''कैसे?''

''बड़े महाराज हमारे नाम से कागज तैयार करने वाले थे दुर्दैव से बीमार पड़ गये और फिर कभी उठ नहीं पाए। इस समय भी वैसी ही परिस्थितियाँ हैं।'' गिरजोजी के मुँह से निकल गया। किन्तु अपनी भूल का ध्यान आते ही उसने अपनी जीभ दबा ली।

''आप कहना क्या चाहते हैं, यादव?''

''ऐसा कुछ भी नहीं है। किन्तु शिर्के लोगों के नाते-रिश्ते के लोग भला बुरा कहते रहते हैं। वे कहते हैं कि राजा और राज्य सलामत है तब तक लिखा-पढ़ी करवा लो।'' गिरजोजी ने कहा।

शम्भूराजा यह सुनकर अवाक् रह गये। उन्होंने केवल इतना कहा, ''कल रात या परसों प्रातःकाल में संगमेश्वर पहुँच जाइये। वहाँ खंडो बल्लाल भी आएँगे। उनकी उपस्थिति में आपका सारा काम निपटा देंगे।''

दोपहर में राजा और कविराज घोड़ घाटी में जा पहुँचे। घोड़ घाटी पांढरपाणी और गजापुर के बीच में थी। 14 जुलाई, 1660 को वीर लड़ाकू बाजीप्रभु देशपाण्डे ने मूसलाधार वर्षा में इस घाटी की रक्षा करते हुए, अपने प्राण अर्पित किये थे। आक्रमणकारी सिद्दी जोहार को रोकने के लिए बहादुर बाजीप्रभु घोड़ घाटी में दीवार बनकर खड़े हो गये थे।

अपने चुनिन्दा साथियों के साथ वह महायोद्धा अपने शत्रु से अन्तिम समय तक लड़ता रहा। शत्रु की सहायता के लिए दो बार सेना दस्ते आये किन्तु बाजीप्रभु अपनी जगह पर अडिग बना रहा। बाजी और उसका भाई फूलाजी दोनों अद्भुत पराक्रम से जूझते रहे। अन्त में जब शिवाजी महाराज के गढ़ में सुरक्षित पहुँचने की सूचना तोप की आवाज से मिली तब दोनों भाइयों ने अपने प्राण निछावर किये।

वही ऐतिहासिक घोड़ घाटी अब पावनघाटी के नाम से जानी जाती है। वहीं करवी और करौंदे के जंगल में बाजी और फूलाजी की पत्थर की समाधियाँ बनाई गयी थीं। अट्ठाइस उन्तीस वर्ष पुरानी वह घटना शम्भूराजा के भीतर तरंगें उत्पन्न कर रही थी। उन प्रभु-देशपाण्डे बन्धुओं की समाधि पर पुष्प अर्पित करते हुए शम्भूराजा का मन भर आया।

सूर्य पश्चिम की ओर झुकने लगा तब भरे मन से शम्भूराजा गढ़ की ओर लौटे। फिर गढ़ से उतरकर खाई को पार किया और चट्टान की चोटी पर चढ़ गये। उस ऊँचाई से आसपास की गहरी घाटियाँ दिखाई पड़ रही थीं। घाटियों में अँधेरा गहरा रहा था। शम्भूराजा की निगाह सामने के किले की ओर बरगद के पठार पर गयी। उस पठार की एक चट्टान नीचे की ओर झुकी थी। उसकी ओर शम्भूराजा ने

कवि कलश का ध्यान आकर्षित किया। वहाँ के बड़े पत्थरों और वहाँ ढलानदार चट्टानों ने भिन्न-भिन्न रूप धारण किये थे। एकदम सामने का कुछ हिस्सा घोड़ों के आकार का था। उसके पीछे की ढलान ने हाथी का आकार ले लिया था। पीछे की टूटी चट्टान ने कुछ मनुष्यों के आकार ले लिए थे। कहा जाता है कि बहुत पहले कभी किसी अज्ञात शक्ति ने वहाँ से एक पूरी बारात गायब कर दी थी। इसीलिए उस पर्वतीय जंगल की चट्टानों को हाथी, घोड़ों और ऊँटों का आकार प्राप्त हो गया था। लोगों ने उस टीले का नाम बारात टीला रख दिया था। अस्ताचलगामी सूर्य की कुछ किरणें बारात टीले के शरीर पर बकरी के छागलों के समान खेल-कूदकर लुप्त हो गयीं।

आसपास के जंगल में घना अँधेरा छा गया था। शम्भूराजा की दृष्टि मुंढा दरवाजे की ओर गयी। वहाँ सैकड़ों मशालें और पलीते जल रहे थे। रात के अँधेरे में भी बुर्ज को जोड़ने का कार्य चल रहा था। शम्भूराजा के सधे कदम किले की ढाल पर चढ़ने लगे। उन्हें दूसरे दिन प्रात:काल ही संगमेश्वर के लिए निकलना था। वहाँ आगे की राजनीति और नियोजन उनकी प्रतीक्षा में थे।

पाँच

भोजन का समय बहुत पहले बीत चुका था। सिपहसालार सो चुके थे। जानवर खूँटे से गर्दन खुजलाते या जुगाली करते निश्चिन्त पड़े थे। रात की हवा में विलक्षण गति थी। तम्बू-डेरों की रस्सियों में बहुत खिंचाव था। मुकर्रबखान को किसी भी करवट नींद नहीं आ रही थी। पिछले दो-तीन दिनों से गणोजी लगातार उसके पास चक्कर लगा रहा था। दोनों एक दूसरे के निकट घंटों बैठे रहते थे। खान अनेक प्रकार की शंकाओं-कुशंकाओं के सम्बन्ध में पूछता रहता था। गणोजी शिर्के शर्त लगाकर कहता था, ''सियार मलकापुर से विशालगढ़ के बीच निश्चित रूप से कहीं है। वहाँ के किले का काम समाप्त करके वह जहाँ भी जाना चाहे, संगमेश्वर होकर ही जाएगा।''

मुकर्रबखान ने गर्म उसाँसें भरते हुए पूछा, ''रसद-पानी का क्या प्रबन्ध है?''

''यह तो पहले से ही हमारा ही प्रदेश है। मैंने अपने सम्बन्धियों से पहले ही सन्देश भेजकर कह दिया है कि महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए तैयार रहो।''

गणोजी खान को खबरें देता और बदले में खान से द्रव्यों की थैलियाँ लेकर

जाता।

गणोजी धीरे-धीरे बता रहा था, "आज या कल, शाम में या दिन में किसी भी समय निकलना होगा।" सारी बातों को याद करके खान ने बेचैनी से करवट ली। उसने कनात की खिड़की से बाहर देखा। बाहर की खिड़की से चाँदनी में पन्हालगढ़ की पहाड़ी दिख रही थी। वह आँखों में सालने लगी, इसलिए उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। आँखें बन्द हुईं तो उसे पहले कभी भी न देखी हुई सम्भाजी राजा की निर्भीक और निर्द्वन्द्व दिनचर्या आँखों में नाचने लगी। उसके मन को न शान्ति थी और न ही शरीर को विश्राम।

इसी समय खान की छावनी के बाहर घोड़ों की टापें सुनाई पड़ने लगीं। मुकर्रबखान तुरन्त उठकर अपने डेरे के दरवाजे के बाहर देखने लगा। सामने से दो हरकारे दौड़ते हुए उसके पास पहुँचे। बोलने में जरा भी समय नष्ट न करके हरकारों ने एक लिफाफा खान के सुपुर्द किया। मशाल के प्रकाश में खड़े-खड़े ही पत्र का वाचन किया गया। पत्र का आशय समझते ही खान के सिर के बाल खड़े हो गये। वजीरे आजम असदखान के पत्र को खान ने एक बार पुनः पढ़ा—

"प्यारे शेख निजाम मुकर्रबखान।

बादशाह सलामत का आपके लिए अतिआवश्यक सन्देश है। इसे शीघ्रता से भेजा जा रहा है। आपकी आँखों में हमेशा धूल झोंकने वाला वह जागीरदार रायगढ़ छोड़कर विशालगढ़ में घूम रहा है। यह पक्की खबर बादशाह को मिल चुकी है। वह बहुत लापरवाह है। भविष्य के हमलों के लिए अपने किले की बुर्जों की मरम्मत कराने में व्यस्त है। उसके साथ फौज भी बहुत कम है। अतः यह पैगाम मिलते ही शीघ्रता से निकल पड़ो। आपके हाथों अल्लाहताला की खिदमत होना निश्चित है। इसलिए अपनी जान की परवाह न करके थोड़ा साहस दिखाएँ। उस दुष्ट जमींदार को तत्काल गिरफ्तार कर लें। उस काफिर से किसी भी तरह प्रतिशोध लेना है। मुकर्रबखान आपकी बहादुरी और अल्लाहताला की मेहरबानी की ओर बादशाह की रात-दिन उम्मीद बँधी है। इस बात को आप एक क्षण के लिए भी न भूलें।"

इस साहसी अभियान की कल्पना मात्र से ही मुकर्रबखान की मुद्रा मशाल की तरह चमक उठी। आवेश में आकर वह पागल की तरह अपनी छावनी की भेड़-बकरियों से लिपटने लगा। बेचैन होकर वहीं पर चहलकदमी करने लगा। उसने अपने सभी बहादुर सिपहसालारों को एकत्र होने का हुक्म दिया। खान की उम्र पचपन वर्ष की थी, किन्तु उसका शरीर चुस्त, मजबूत और छरहरा था। अपने पेट और पार्श्वभाग पर उसने चर्बी नहीं चढ़ने दी थी। उसने अपने को सबल और फुर्तीला बनाये रखा था। वह तत्काल डेरे से बाहर निकल पड़ा। दबी हुई किन्तु

स्पष्ट आवाज में दूसरों को जगाने लगा, "जागोऽऽ, जागो।"

थोड़े ही समय में इखलासखान के साथ मुकर्रब के सभी बेटे, सिपहसालार, यार दोस्त, रिश्तेदार, फौजी सब मिलकर लगभग तीन हजार की भीड़ मुकर्रब के डेरे के सामने एकत्र हो गयी। गणोजी शिर्के और नागोजी माने को अन्दर बुलाया गया। मुकर्रबखान ने गणोजी को बाँहों में भरते हुए, प्रेमपूर्वक व्यग्रता से कहा, "गणोजी तुम हमारे भाई बन्धु ही लगते हो। तुम्हारी खबर पक्की है। बादशाह का पत्र भी आ चुका है। मेरे गुप्तचरों ने भी खबर दी है। चलोऽ! आज रात में ही आक्रमण कर दें।"

थोड़ी देर में ही विचार-विमर्श कर लिया गया। मुकर्रबखान ने नागोजी से कहा, "नागो मराठा, आप अभी, इसी वक्त शीघ्रता से कराड़ की ओर कूच करो। कराड़ के थानेदार को जगाओ और वहाँ आसपास की सारी चौकियो की फौज एकत्र करो। कम से कम दस से पन्द्रह हजार की फौज तैयार रखो। समय सूचना देकर नहीं आता।" इस स्थिति में मुकर्रबखान के चेहरे पर सफलता की कल्पना से प्रसन्नता झलक रही थी।

मुकर्रब ने अपने सभी प्रमुख सरदारां को शामियाने के अन्दर बुला लिया। सभी को वजीरे आजम के पत्र की जानकारी दी। उसने बडी अधीरता मे कहा, "यारोऽ अब नींद, अन्न-पानी के जैसी सारी बातों को भूल जाओ। अब मेरे साथ तुरन्त चल पड़ो। वक्त बुरा है। रास्ता तो बहुत ही कठिन है। अन्दर की नदी की धारा में बड़े बड़े मगरमच्छ नंगा नाच कर रहे हैं। इस बात की पूरी जानकारी होते हुए भी हमें जानबूझकर उफनती नदी में छलाँगें लगानी हैं।"

"खान साहब, जोश में होश मत खोइये—" एक जोरदार भारी भरकम आवाज कानों में पडी।

"कौन? कौन है वह?" मुकर्रब भड़क उठा।

बीजापुर का एक अनुभवी सरदार उठकर खड़ा हो गया और खान से स्पष्ट शब्दों में कहने लगा, "खानसाहब, आपकी बहादुरी और बुलन्द इरादों के बारे में हममें से किसी को कोई शक नहीं है। किन्तु बीजापुर वालों की चाकरी में रहते हुए इधर की पहाड़ियों में मैंने अनेक बार सफर किया। जिस समय पन्हाला से शिवाजी का पीछा करते हुए सिद्‌दी जौहर की फौज विशालगढ़ तक गयी थी, तब मैं एक अदना सा घुड़सवार सिपाही था। उस समय मेरी उम्र केवल बीस वर्ष थी। मैंने उस भयानक पहाड़ी को अपनी आँखों से देखा है।"

"आप कहना क्या चाहते हैं?"

"इतना ही कि यह पहाड़ी नहीं पाताल है।" वह बूढ़ा सरदार बताने लगा, "खान साहब उस रास्ते में आंबा घाटी के पास मे जाने वाली ढालू चट्टान और टीले

के बीच रास्ता इतना सँकरा है कि वहाँ पर घनी झाड़ियों और टीलों की ओट लेकर तीस-चालीस मराठे भी यदि आ जायें तो लाखों की फौज को भी श्मशान घाट दिखा सकते हैं।"

"सरदार ये झूठी और पागलपन की कहानियाँ बन्द करो।" मुकर्रब चिल्लाया।

"मुकर्रब आप नहीं जानते! इसी पहाड़ी प्रदेश में उंबरघाटी नाम की एक और घाटी है, वहाँ पर उस पापी शिवा ने....."

मुकर्रब झट से उठकर खड़ा हो गया। वह जोर से दहाड़ा, "बस! अब इसके आगे कोई एक लफ्ज भी नहीं निकालेगा।" मुकर्रब थोड़ा पीछे हटकर एक टीले पर चढ़ गया। वहाँ से अपनी सेना को हाँक देते हुए ललकारने लगा, "मेरे दोस्तो! इस साहसिक अभियान में जीने के लिए नहीं मरने के लिए निकलना है। जिसका मुझ पर और अल्लाह पर भरोसा है वही मेरे साथ चलेगा। जिनका कलेजा भेड़-बकरी का हो वे यहीं पर डेरे में निश्चिन्त होकर ऐशोआराम करते रहें।"

उसी समय मुकर्रबखान हवा के झोंके की तरह शामियाने से बाहर निकल गया। सामने खम्भे से बँधे अपने ऊँचे और बलशाली घोड़े की पीठ पर उछलकर सवार हो गया। उसके साथ ही इखलासखान और गणोजी के घोड़े भी आगे दौड़ने लगे। इस समय किसी के भी लिए रुकने को मुकर्रब तैयार नहीं था। वह एक कट्टर, तेजस्वी और दृढ़प्रतिज्ञ योद्धा था। अपनी फौज में उसने हमेशा सख्त अनुशासन रखा था। वह अपने सिपहसालारों और जानवरों को भी तरोताजा रखता था। इसलिए मुकर्रबखान के साथ उसके दो हजार घुड़सवार अँधेरे को चीरते हुए तेज गति से आगे बढ़ रहे थे। साथ में एक हजार पैदल सेना भी थी। बहुत पीछे न छूट जायँ इसलिए पैदल सिपाही घोड़ों के पीछे दौड़ रहे थे।

मध्यरात्रि में ही फौज बाघविल की घाटी चढ़कर ऊपर पहुँच गयी। गणोजी के मन में यह सोचकर गुदगुदी हो रही थी कि यदि सम्भाजी पकड़ में आ जाये तो आनन्द आ जाय। यह सोचकर गणोजी के मन में लड्डू फूट रहे थे। दाईं ओर ज्योतिबा का पहाड़ खड़ा था। उसी दिशा में देखते हुए गणोजी ने घोड़े पर से ही ज्योतिबा का स्मरण किया। उसने मन्नत मानते हुए कहा, "हे केदारी राय, किसी तरह उस नालायक सम्भा को पकड़वा दो। मैं एक सौ इक्यावन तोले का सोने का हार आपके गले में पहनाऊँगा।"

मुकर्रबखान का नसीब अच्छा था। रास्ता दिखाने के लिए चाँदनी का हल्का प्रकाश था। उस उजाले में फौज आगे बढ़ रही थी। नावली के पास मराठी सेना का पड़ाव था। वहाँ से पन्हाला की तलहटी समीप ही थी। तीन हजार की फौज यदि

किसी गाँव से गुजरती तो कुत्ते भौंकने लग जाते और पन्हाला की तलहटी तत्पर शम्भूराजा के सैनिकों को आक्रमण की गन्ध मिल जाती। इसलिए गणोजी बहुत सावधानी बरत रहा था। उसने नावली की दूसरी ओर दो कोस दूर से देवाले गाँव के जंगल से मुकर्रबखान को फौज को बड़ी सावधानी से आगे बढ़ा दिया।

मुकर्रब ने कुशल और साहसी तीरन्दाजों का दल आगे भेज दिया। ताकि यदि गाँव की बस्तियों में यदि कुत्ते भौंकने लग जायँ तो उन्हें अपना निशाना बना लें। अर्थात् भौंकते कुत्तों के जबड़ों को अपने बाणों से बन्द कर दें।

अब मरने का निश्चय करके निकला हुआ मुकर्रब होश में आ गया था। उसने अपने कुशाग्र मस्तिष्क का उपयोग किया। आगे बढ़ती हुई फौज तत्काल रोक दी। मुकर्रब ने अपने चचेरे भाई से कहा, "सूर्योदय से पहले छावनी में वापस जाओ। तुम मेरे शामियाने में मेरे ही बिस्तर पर सो जाओ। चार दिन तक वैद्य और हकीम को बुलाते रहो। ऐसा माहौल निर्माण करो कि हमारी फौज कराड़ चली गयी है और मुकर्रबखान बीमार पड़ गया है। मैं कहीं किसी शिकार पर निकल चुका हूँ, इसकी खबर हवा-पानी, मनुष्य किसी को भी नहीं होनी चाहिए।"

घोड़े और मनुष्य फिर से आगे की ओर दौड़ने लगे। सवेरा होते-होते सुपात्रे, बांबवड़े आदि गाँव पार हो चुके थे। घोड़ों की गति इतनी तेज थी कि सूर्योदय होने के साथ ही सारी फौज बहिरेबाड़ी की घाटी पार करके वहाँ के पहाड़ी टीले पर पहुँच गयी थी। आसपास घने वृक्षों से भरा जंगल था। किन्तु ऊँची चोटी से सात आठ कोस की दूरी पर बसा मलकापुर गाँव दिखाई दे रहा था। गणोजी वहाँ से महादेवखड़ी नामक पहाड़ी की ओर सिटपिटाया-सा देख रहा था। उसकी चिन्तित मुख मुद्रा देखकर मुकर्रबखान उससे सटकर खड़ा हो गया। गणोजी के कन्धे पर प्यार से हाथ रखकर मुकर्रब ने पूछा, "क्यों गणोजी राजा, क्या बात है?"

"खान साहब एक बहुत बड़ी समस्या है। मलकापुर के पास के इस सीधे रास्ते से जाने पर कठिन और ढालू चट्टानों वाला आंबा घाट आता है। खुदा की मेहरबानी से यदि उसे हम पार कर लें तो हम सीधे संगमेश्वर के पास कोंकण में उतर सकते हैं।"

"तो चलिए ऽ—"

गणोजी के कदम वहीं ठिठक गये। वह हाँफते हुए बोला, "इस सीधे रास्ते के अतिरिक्त एक दूसरा भी जंगली रास्ता है। बायें हाथ से कुछ दूर लगने वाला अणुस्कुरा घाट है, वहाँ से भी हम लोग कोंकण में उतर सकते हैं। किन्तु इस रास्ते से जाने में एक रात और एक दिन का समय और लगेगा।"

"तब तो सीधी मलकापुर वाली राह ही ठीक है।"

"मैं वही कह रहा हूँ, खान साहब! यह रास्ता सीधा तो है किन्तु सुगम नहीं है।" चिन्तित होकर लम्बी साँस लेते हुए गणोजी ने कहा, "इसी मलकापुर के

पास कवि कलश की विख्यात घुड़साल है। मलकापुर और आंबा घाट के बीच अभी भी कवि कलश के उच्चकोटि के सात हजार घोड़े गश्त लगाते रहते हैं। हम लोग कवि कलश को दुष्ट, बदफैली, चरित्रहीन कहकर चाहे लाखों इल्जाम लगाएँ, किन्तु गंगा के किनारे के उस ब्राह्मण ने एक बहुत ही साहसी और मजबूत फौज खड़ी कर दी है। उसने विशेष रूप से जंगली गड़ेरियों के मजबूत और फुर्तीले लड़कों को ही भरती किया है। ये लड़के शरीर से इतने मजबूत, चुस्त और फुर्तीले होते हैं कि वे बन्दरों की तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर सहज रूप से छलाँग लगा सकते हैं। बाढ़ के समय उफनती नदी में आसानी से तैर सकते हैं। जिन ढालू चट्टानों पर गोहें भी नहीं चढ़ पाती हैं वहाँ ये लड़के आसानी से चढ़ जाते हैं। इसके अतिरिक्त खान साहब वह सम्भा हमारा दुश्मन जरूर है, लेकिन मूर्ख नहीं है।''

''गणोजी! कहना क्या चाहते हो?''

''खान साहब सम्भाजी को मलकापुर की इसी फौज का बहुत बड़ा विश्वास है। मान लीजिये कि हम किसी प्रकार छिपते-छिपाते इसी रास्ते से आगे बढ़ने का निश्चय करें और दुर्दैव से किसी तरह मलकापुर की फौज को हमारे आने की भनक मिल जाये तो हमारी इस तीन हजार की फौज में से एक भी जीवित नहीं बचेगा जो औरंगजेब के पास जाकर सूचना दे सके।''

''क्या इतने हट्टे-कट्टे रणबाँकुरे हैं, ये फौजी?''

''बता तो रहा हूँ खान साहब! इस जंगल के छोकरे इतने तेज और फुर्तीले हैं कि तीन हजार की तो बात ही क्या? तीस हजार की फौज की नाक में दम कर सकते हैं। इन्हीं के भरोसे सम्भाजी पन्हाला और कोल्हापुर के सम्बन्ध में निश्चिन्त रहते हैं।

मुकर्रबखान ने कुछ सोचकर गणोजी से पूछा, ''तो क्या उस सम्भा को अणुस्कुरा की घाटी का पता नहीं है?''

''है, उस रास्ते की भी उस मूर्ख को पूरी जानकारी है। घाटी की तलहटी में निश्चित रूप से उसका गश्ती दस्ता तैयार होगा। किन्तु उस ओर कोंकण के देसाई दलवी जैसे जागीरदार हमारे मित्र हैं। इसलिए खान साहब यही रास्ता हमें भरोसेमन्द लगता है।''

''वह कैसे?''

''आँखों के सामने का आंबा घाट छोड़कर, अणुस्कुरा का लम्बा रास्ता कोई क्यों चुनेगा? जानबूझकर कोई स्वयं चौबीस घंटे का प्रवास क्यों बढ़ाएगा? इतनी सीधी बात तो कोई भी सोच सकता है। इसके अतिरिक्त अणुस्कुरा घाट की ढलान भी बहुत कठिन है। वहाँ के जंगलों में दिन के समय भी उतरने में राहगीर घबराते हैं। इसलिए वहाँ से कोई फौज उतर सकती है, ऐसी कल्पना सम्भा स्वप्न में भी

नहीं कर सकता। और खान साहब मैं पिछले कई महीनों से बादशाह से और आपलोगों से भी हाथ जोड़कर कह रहा हूँ कि सम्भाजी पर सामने से आक्रमण करने का सपना मत देखिए। यह तुम्हारे बाप से भी सम्भव नहीं होगा।"

"तो फिर क्या करना होगा?"

"खान साहब! हमारा इतिहास गवाह है कि शूर-वीर मराठों की छाती सामने से किये गये तलवार के वार से कभी नहीं कटती। किन्तु उनकी पीठ में भोंका गया गद्दारी का खंजर बहुत गहरे गड़ जाता है। वह खंजर यदि अपने आत्मीय जनों द्वारा चलाया गया हो तो मिलने वाली सफलता बहुत बड़ी होती है।"

"याने कि?"

"अब कुछ भी सोच-विचार न कीजिए। सामने का आंबा घाट का रास्ता भूल जाइये। मेरे पीछे-पीछे आइये। साहसपूर्वक अणुस्कुरा घाट से नीचे उतरेंगे। उस दुष्ट सम्भा को पता भी नहीं चलेगा और हम उसकी पीठ तक पहुँच जाएँगे।"

दोनों रास्तों की लाभ-हानि को गणोजी ने अच्छी तरह समझा दिया। खान के साथियों ने भी पेड़ के नीचे खड़े-खड़े ही मरलहत कर ली। सभी सहमत हो गये। मुकर्रबखान की फौज के लिए आंबा घाट सचमुच मौत का मुँह था। मलकापुर की सात हजार फौज स्वप्न में भी मुगलों को घाट न उतरने देती। अणुस्कुरा की ओर की घाटियाँ और रास्ते बहुत ही कष्टकर थे। सम्भव था कि इस घाटी को उतरते समय पैर फिसलने के कारण मरते। किन्तु उस ओर से आने पर सफलता की आशा सभी को आकर्षित कर रही थी।

मुकर्रबखान अपने घोड़े से नीचे उतरा। अत्यन्त भावविह्वल होकर वह गणोजी से लिपट गया। उसने गणोजी को चार-पाँच बार चूम लिया। अश्रुपूरित आँखों से गणोजी को अपनी बाँहों में लिये वह कहने लगा, "गणोजी राजा! लोग कहते हैं कि तुम उस शिवाजी महाराज के जमाई हो। उस सम्भा के साले हो। सच हो सकता है किन्तु मुझे उससे क्या मतलब? किन्तु खुदा की कसम खाकर कहता हूँ, गणोजी पिछले जन्म में तुम निश्चय ही मेरे सगे भाईजान ही रहे होगे।"

छह

मुँह अँधेरे में जैसे ही बुर्ज का निर्माण कार्य समाप्त हुआ, मजदूरों और सैनिकों में जोश उमड़ पड़ा। माँ भवानी और शिवाजी, और शम्भूराजा की जयकार से विशालगढ़ की घाटियाँ गूँजने लगीं। शम्भूराजा और कविराज की आँखों में भी रातभर नींद नहीं आयी थी। ठहरने का ममय नहीं था। राजा की आँखों से तो आज कल रोज नींद गायब रहती थी।

बहुत सवेरे ही शम्भूराजा, मल्हार रंगनाथ और कृष्णाजी कोंडा साथ साथ गढ़ की मस्जिद में पहुँचे। इस घने जंगल में तीन सौ वर्ष पूर्व मलिक उत्तुजार को उसके सात हजार सैनिकों के साथ कंठस्नान कराया गया था। बहमनी माम्राज्य के सेनापति उत्तुजार की खौफनाक चीख किसी ने भी नहीं सुनी थी। लावारिस मलिक का कोई भी लगा सगा नहीं बचा था। किन्तु उसकी मृत्यु के बाद इन्हीं घाटियों और दर्रों के लोग दौड़कर आगे आये। जो पत्थर मलिक के खून से रंग गया था उसे लोग श्रद्धापूर्वक उठाकर ले आये। उसी पर एक मस्जिद खड़ी कर दी। मलिक को लोग पीरबाबा कहकर स्मरण करने लगे। उसके दर्शन को हिन्दू मुसलमान दोनों विशालगढ़ आने लगे। उसके लिए मुर्गियों का ढेर लगने लगा। हर साल उसका उर्स सजने लगा, वह दीन दुखियों की मन्नतें पूरी करने लगा। पुत्र प्राप्त करना हो, घर में खुशहाली ले आनी हो, चरवाहों को अपने जानवरों की रक्षा करनी हो आदि की जिम्मेदारी उस क्षेत्र में पीरबाबा की ही थी।

शम्भूराजा ने श्रद्धापूर्वक पीरबाबा की पूजा की। वे गढ़ के पीछे काल दरवाजे मे पिछले प्रचंड दर्रे से पहाड़ी उतरने लगे। उनके साथ उनका लाडला अश्व पाखर भी चल रहा•था। कविराज भी साथ थे। बेर करौंदे की घनी झाड़ियों के कठिन रास्ते से लगभग एक हजार की सेना कोंकण की ओर तेज गति से बढ़ रही थी। रास्ते में स्थान स्थान पर कमर तक ऊँची घास थी। घास की नुकीली किरचें शम्भूराजा के लम्बे अँगरखे में चुभ रही थीं।

पौ फटने लगी थी। अँधेरे की दह में डूबी पहाड़ी अपनी गर्दन बाहर निकालने लगी थी। ढाल पर उतरते उतरते कवि कलश ने कहा, "राजन! हमने सुना है कि येसू भाभी भी रायगढ़ से संगमेश्वर की ओर निकल पड़ी हैं।"

शम्भू महाराज दिलेरी से हँसते हुए बोले, "जाने भी दो कविराज! आखिर वे हैं तो स्त्री ही। कुछ अवसरों पर वे अस्तित्व से मैदान मार ले जाती हैं। यहाँ की पहाड़ी को उठाकर वहाँ रख देती हैं। किन्तु यदि पति को हल्का सा ज्वर भी हो जाये तो एकदम छुई-मुई बन जाती हैं।'

"समझा नहीं राजन?"

"जो हमारे ध्यान में भी नहीं होता वही उनके मन में निवास करता है। इन

दिनों तो हमारी येसू के मतानुसार जहाँ कहीं दो नदियाँ आपस में मिलती हैं, वहीं पर हमारा भाग्य नया मोड़ लेता है। अब औरंगजेब के साथ हमारी अन्तिम लड़ाई शीघ्र ही आरम्भ होने वाली है। ऐसे समय में संगम के महादेव की महापूजा सम्पन्न की जाय, ऐसी उनकी हार्दिक इच्छा है। इसके अतिरिक्त हमारे विशिष्ट साथियों के साथ विचार विमर्श भी वहाँ होना है। यह कारण भी उनके लिए महत्त्वपूर्ण है।

"किन्तु किसी संगम पर आपके जीवन में मोड़ आता है। यह आप कैसे कह सकते हैं?"

"देखिए न! कृष्णा और वेण्णा का माहुली के पास संगम है। उस समय हमारे शरीर में यौवन का उफान था। उल्टा सुल्टा दुस्साहस दिखाकर, मुगलों के पेट में घुसकर, उनकी पालकी का फुँदना हमें उड़ा ले जाना था। हम कुछ दुर्लभ करिश्मा करके अपने पिताजी को प्रसन्न करना चाहते थे। इसी उन्मादी जोश में हम माहुली संगम पर दिलेरखान से जा मिले। किन्तु मेरे साथ जो धोखा हुआ उसका बोध हमें बहादुरगढ़ के पास हुआ। बहादुरगढ़ भी भीमा और सरस्वती नदियों का संगम है।"

कविराज भावविभोर सम्भाजी को देखते रह गये। शम्भूराजा ने आगे कहा, "संगमेश्वर, अर्थात् अलकनन्दा और वरुणा नदियों का दूसरा संगम। हमारी महारानी की इच्छा है कि वहाँ पर हम महादेव का दूध-दही से अभिषेक करें। उससे हमारे जीवन में कुछ तो महत्त्वपूर्ण घटित होगा, कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आएगा, अलाएँ बलाएँ टल जाएँगी।"

येसूबाई की इस पवित्र भावना की कवि कलश ने मुस्कराकर दाद दी। इसी समय शम्भूराजा फिर बोल पड़े, "सच कहूँ, कविराज! अब इस अन्ध श्रद्धा, पूजा-पाठ और अनुष्ठानों पर मेरा तनिक भी विश्वास नहीं है। किन्तु जब मनुष्य ही दानव की तरह व्यवहार करने लगे और मनुष्य का मनुष्य पर से विश्वास उठ जाता है तो हारे हुए मनुष्य का मन झुँझलाकर कोई अवलम्ब खोजने लगता है।"

कवि कलश किसी प्रकार मुस्कराये और बोले, "राजन! सच कहूँ, आपके निकट साहचर्य में इतने दिन रहने के बाद आपके विषय में कुछ दृष्टिकोण बन गया है। आपको अपने ही सगे सम्बन्धियों ने अपनी दुष्टता से बहुत-सी बाधाएँ और कठिनाइयाँ पहुँचाई हैं। ऐसे लोगों के सामने तो श्मशान के भूत भी पीछे रह जाएँगे।"

सम्भाजी की आधी फौज पहाड़ी उतरकर नीचे पहुँच चुकी थी। उस फिसलनभरी ढलान पर से घोड़े पर चढ़कर नीचे उतरना सम्भव नहीं था इसलिए घोड़े सैनिकों के साथ कोतल चल रहे थे। शम्भूराजा का लाडला घोड़ा पाखर

शम्भूराजा के बार-बार लाग-लपेट कर रहा था। उनके शरीर से वह बार-बार सट रहा था, अपना शरीर रगड़ रहा था। वह बेजुबान प्राणी क्या कहना चाहता है? यह शम्भूराजा की समझ में नहीं आ रहा था। वे बार-बार पाखर का मुँह प्रेम से अपने सीने से लगाते थे।

अब दिन अच्छी तरह निकल आया था। कवि कलश आँखों की कोर से शम्भूराजा की ओर देख रहे थे। अपनी बात कहें या न कहें, कवि कलश इस दुविधा में थे। किन्तु अन्तत: वे धीमे किन्तु स्पष्ट स्वर में बोले, "राजन! क्षमा करें। इससे पहले मैंने कभी भी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है। किन्तु........"

"क्यों इस तरह बीच में रुक गये?" शम्भूराजा हड़बड़ा गये। उन्होंने कवि कलश की ओर देखा। कविराज ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "आज मेरी आत्मा कह रही है कि आज आप मुझे अपने साथ न ले जायँ।"

"क्यों? इस प्रकार बीच में ही रुक जाने का निर्णय आपने क्यों लिया?"

"कविराज! महारानी संगमेश्वर आने वाली हैं। वहाँ पर महादेव का अभिषेक भी होना है। आपके जैसे धर्म-कर्म के विशेषज्ञ का साथ तो अच्छा ही रहेगा न?"

"राजन! क्या आप भूल गये हैं? आपके आदेशानुसार तीन-चार महीना पहले इस कनौजिया ब्राह्मण ने अपनी चोटी में गाँठ लगाई है। हाथ में तलवार पकड़ ली है। ब्राह्मण के धर्म-कर्म को भूलकर केवल क्षात्र-धर्म धारण कर लिया है।"

"फिर भी कविराज?"

"नहीं महाराज! आंबा घाट की सुरक्षा का दायित्व आपने मेरे कन्धों पर दिया है। उसी को मैं पूरा करना चाहता हूँ। अच्छा-बुरा समय सूचना देकर नहीं आता। पिछले दिनों पन्हाला पर आक्रमण के समय जब अचानक आवश्यकता आ पड़ी थी, तब मलकापुर की अश्वशाला से तीन हजार घोड़े लेकर हम उस ओर दौड़ पड़े थे न? हमारी अनवधानता में वैसा ही कोई संकट आ पडे तो क्या होगा? इसीलिए मुझे अपनी सेना के साथ यहीं रहने दीजिए।"

कवि कलश की सद्भावना देखकर राजा के मन में कुतूहल जागा। उन्होंने कहा, "कविराज! आपकी तत्परता और निष्ठा का ज्ञान मुझे है, किन्तु वैसी कोई बात इस समय है नहीं। आंबा घाट तो पूरी तरह सुरक्षित है। उस पार अणुस्कुरा घाटी उतरने पर, गोवा के रास्ते में, राजापुर के पास हमारी पाँच हजार की सेना निरन्तर गश्त लगा रही है। दूसरी ओर मालेघाट, तिवरा, आंबा आदि सभी पहाड़ियों पर अपनी चौकियों के पहरे हैं। इतना ही नहीं, जयदुर्ग, दंदराजपुरी, हरिहरेश्वर जैसे समुद्र के तटीय प्रदेशों पर भी सुरक्षा की अच्छी व्यवस्था है। यहाँ के क़िलों के सम्बन्ध में तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यहाँ जंगलों, दर्रों, घाटियों में तो हमारे भय से गरूड़ भी नीचे उतरने में खौफ खाते हैं। फिर चील, गिद्धों की तो बिसात ही

क्या ?"

देखते-देखते फौज ने काजली नदी पार कर ली। कुछ दूरी पर साखरपा गाँव दिखाई देने लगा। शम्भूराजा के अंग-अंग से उमड़ने वाला उत्साह देखकर कविराज का मन खिल उठा। उन्होंने कहा, "फिर भी राजन।"

"रहने दीजिए कविराज! आपकी चिन्ता भी ठीक है। संगमेश्वर की पूजा-अर्चना जैसी बातें बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। औरंगजेब ने अकलूज के पास पड़ाव डाल रखा है। सह्याद्रि के हरे-भरे जंगल में अब शीघ्र ही धमाका होने वाला है। उसकी तैयारी के सम्बन्ध में अन्तिम विचार-विमर्श करने के लिए ही तो हमलोग संगमेश्वर में केवल आधे दिन के लिए मिलने वाले हैं। वहाँ भी आपके समान अनुभवी और जानकार व्यक्ति की उपस्थिति आवश्यक है। आपके कुशाग्र मस्तिष्क मे नयी कल्पनाएँ आती हैं, तो हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं।

"जैसी आपकी आज्ञा, राजन।" कविराज ने कहा।

सात

सगमेश्वर का वातावरण अत्यन्त प्रसन्न और आह्लादकारक था। किसी समय रामक्षेत्र के नाम से विख्यात यह छोटी सी नगरी हरे-भरे वृक्षों के बीच बसी हुई थी। इस नगरी के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पुराने वृक्ष खड़े थे। जगह-जगह पर नारियल, सुपारी के बाग लहलहा रहे थे।

बहुत दिनों के बाद सम्भाजी राजा के महल में सवेरे से ही भीड़-भाड़ और लोगों की आवाजाही दिखाई दे रही थी। राजा के साथ लगभग दो हजार की फौज आस पास छावनी डाले थी। गत वर्ष गर्मी के मौसम में राजा के ठहरने का प्रबन्ध ऊपर कस्बे में किया गया था। उस समय इस महल की मरम्मत की जा रही थी। इसीलिए सम्भाजी ने रगोबा सरदेसाई की लकड़ी की प्रशस्त कोठी में निवास किया था। किन्तु उस समय का-सा उत्साह आज आंशिक रूप में भी दिखाई नहीं दे रहा था। युद्ध समीप था। इसलिए आगे की तैयारी और व्यूह-रचना आवश्यक थी। शम्भूराजा भी बहुत उतावली मे थे।

संगमेश्वर के ऊपरी हिस्से में, कस्बे के पीछे महादेव का एक छोटा-सा मन्दिर था। वहाँ पर एक ओर शृगारपुर की दिशा से वरुणा नदी प्रवाहित थी तो

दूसरी ओर से अलकनन्दा नदी आकर वहाँ मिलती थी। पहाड़ी चट्टानों से कूदते-फाँदते, दौड़ते, चट्टानों से टकराकर कल-कंल निनाद करते, शुभ्र और शीतल जल, संगमेश्वर के ऐश्वर्य में वृद्धि कर रहा था। इसकी विपरीत दिशा में जयगढ़ की ओर से अरब सागर की एक पतली खाड़ी संगमेश्वर से मिलती थी। ज्वार का जोश इतना जोरदार होता था कि दोनों नदियों का जल पेट में भरकर ज्वार की तूफानी लहरें गरजती हुई बढ़ती थीं। वेगवान खारा पानी नदियों के मीठे पानी को पेट में भरकर दौड़ता हुआ महादेव मन्दिर की सीढ़ियों तक पहुँच जाता था।

एक ओर नावड़ी बन्दरगाह पर आज बहुत भीड़ भाड़ थी किनारे पर अनेक छोटी किश्तियाँ और छोटी बड़ी नावें दिख रही थीं। सागर से अन्दर आकर दो बड़े जलपोत लंगर डालकर खड़े थे। शरीर पर लाल कुर्ते और सिर पर फूलवाली टोपियाँ पहने मछुआरे इधर-उधर भाग दौड़ कर रहे थे। पक्की काछ बाँधे और कमर पर मछलियों से भरी टोकरियाँ लिए मछुआरिनें जल्दी जल्दी जा रही थीं। मछुआरों ने अपने लाडले राजा के लिए मछलियों से भरे टोकरे राजमहल में भेज दिये थे। वहीं किनारे पर लगभग सौ सवारों का एक दस्ता गश्ती के लिए खड़ा था। इस दल के सभी सिपाही सावधान और चौकन्ने थे।

नदी के किनारे ही नावली और कस्बे के बीच राजा की प्रशस्त हवेली थी। वह हरे-भरे पेड़ों के बीच छिपी सी रहती थी। कवि कलश ने स्वयं अपनी देख रेख में इस हवेली का कार्य पूरा करवाया था। हवेली के बाहर बड़े बड़े गुलाबों से भरा एक उद्यान था। कल दोपहर से ही हवेली की गति तेज हो गयी थी। रायगढ़ से महारानी येसूबाई और कवि कलश की पत्नी तेजसबाई एक दिन पहले ही दोपहर में वहाँ पहुँच चुकी थीं। वे दोनों जल्दी ही महादेव के मन्दिर में पहुँच गयीं। उन्होंने अभिषेक की पूरी तैयारी कर ली थी। शास्त्री उपाध्याय और उनके साथ पधारे स्वामी रामदास के शिष्य रंगनाथ स्वामी की सहायता से पूजा विधि की सम्पूर्ण तैयारी की गयी थी। इस धार्मिक अनुष्ठान के कारण महाराज के राजधर्म में कोई व्यवधान उपस्थित न हो, इसका पूरा ध्यान येसूबाई रख रही थीं।

कल मध्य रात्रि में जब शम्भू महाराज अपनी हवेली के सामने उतरे तो उनकी अगवानी में स्वयं महारानी येसूबाई, सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े, खंडो बल्लाल, धनाजी सन्ताजी-मानाजी आदि सभी लोग खड़े थे। सभी लोग लगभग एक महीने बाद महाराज को देख रहे थे। पिछले कुछ दिनों से निरन्तर जागरण का प्रभाव शम्भूराजा के चेहरे पर स्पष्ट झलक रहा था। उसके साथ ही कष्टसाध्य यात्रा ने उन्हें तोड़कर रख दिया था। उनकी आँखें लाल और चढ़ी हुई दिखाई पड़ रही थीं थकान से चूर-चूर हुए महाराज को लग रहा था कि सीधे जाकर अपने को बिछौने में झोंक दें। किन्तु अपनी प्रतीक्षा में सारे दिन बैठे साथियों से चार शब्द बोलना भी अनिवार्य

था। आसन पर बैठते ही राजा का ध्यान सबसे पहले सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े की ओर आकर्षित हुआ। घोड़पड़े काका (शिवाजी महाराज के समय के अनुभवी बुजुर्ग) अपनी उम्र के सत्तर वर्ष पार करने पर भी शरीर से स्वस्थ और बलिष्ठ थे। वे पूरी तरह आत्मविश्वासी दिखाई पड रहे थे। निश्चिन्त भाव से शम्भूराजा ने कहा, "म्हालोजी काका! आपको और आपके साथ सभी लोगों को यहाँ देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। पिछले आठ वर्षों मे निरन्तर लडता और जूझता रहा। अब बादशाह पर एक अन्तिम हमला करना है। बस एक बार जोर लगाना है।"

"महाराज! जिस प्रकार मगरमच्छों और घड़ियालों से भरी नदी में पैर रखने की हिम्मत नहीं होती उसी प्रकार यहाँ के दर्रो में, पहाड़ियों में, घाटियों में उतरने की हिम्मत उस औरंग्या ने नहीं की। यह आपकी बहादुरी का ही नतीजा है।"

सन्ताजी, धनाजी और खंडो बल्लाल जैसे युवकों की हार्दिक इच्छा थी कि इतने दिनों बाद मिले अपने राजा से देर तक बातें करें किन्तु राजा की चढ़ी हुई आँखों और थकी हुई मुख-मुद्रा को देखकर इन युवकों ने अपनी इच्छा को भीतर ही दबा लिया।

सेनापति घोड़पड़े ने महाराज की ओर चिन्तित होकर देखा। उन्होंने येसूबाई से कहा, "महाराज को अब आराम करने दीजिए। कल बहुत काम है।"

महाराज उठे और शयन कक्ष की ओर चल दिए। बिस्तर पर बैठकर उन्होंने येसूबाई की गोरी कलाई अपने हाथों में ले ली। उनका मन कर रहा था कि अपनी लाडली रानी से खूब बातें करें। किन्तु पिछले अनेक दिनों के निरन्तर परिश्रम और जागरण के कारण शरीर विद्रोह पर उतर आया था। बात करते समय भी उनकी आँखें मुँदी जा रही थीं। शरीर पसीने से चीकट हो गया था। स्नान करने के बाद ही सोने की इच्छा थी। किन्तु वे एक क्षण के लिए ही पलँग पर लेटे थे कि उन्हें नींद आ गयी।

इतनी गहरी नींद से स्नान के लिए उठाने की इच्छा येसूबाई की नहीं हुई। उन्होंने आगे बढ़कर महाराज के गले से पन्ने की माला की रेशमी गाँठें धीरे-से खोल लीं। किमखाब का कमरबन्द भी निकाल लिया। जब उन्होंने सहज भाव से महाराज के शरीर पर हाथ फेरा तो वे चौंक गयीं। वह किसी राजा का मुलायम शरीर नहीं था बल्कि नित्य मिट्टी से जूझने वाले किसी मजदूर की खुरदुरी काया थी। महाराज के शरीर में हल्का सा ज्वर भी था। येसूबाई ने तत्काल वैद्य को बुलवाया। महाराज को थोड़ा-सा जगाया और उन्हें औषधि पिलाई। महाराज पुनः नींद के अधीन हो गये।

शयनकक्ष का चिराग बुझाकर महारानी येसूबाई हल्के कदमों से बाहर की ओर गयीं। वहाँ पर म्हालोजी घोड़पड़े और कवि कलश अभी भी बैठे थे। महारानी

ने कहा, "कविराज! महाराज बहुत थके हुए दिखाई दे रहे हैं।"

"भाभीजी! महाराज इन दिनों अनिद्रा से बहुत परेशान हो गये हैं। ऊपर से वे बहुत उत्साही और प्रसन्न दिखाई देते हैं। उनके चेहरे का तेज रंचमात्र भी कम नहीं हुआ है। किन्तु अनन्त चिन्ताओं के कारण वे भीतर से खोखले होते जा रहे हैं। कभी-कभी दायें कन्धे का जोड़ बहुत दर्द करता है। खाँसी से भी परेशान हो उठते हैं।"

बाहर गहराते अँधेरे की ओर देखते हुए येसूबाई ने कहा, "कविराज! घोड़े की पीठ पर लदा हुआ महाराज का सिंहासन और कितने दिनों तक घोड़े की पीठ पर ही लदा रहेगा?"

"भाभीजी चिन्ता न करें। थोड़े ही दिनों में यह अरिष्ट समाप्त हो जाएगा। सब कुछ क्षेम होगा।"

"कर्नाटक की लड़ाई में महाराज ने खन्दक की दूसरी ओर घोड़ा कुदा दिया था। वह जानवर तो बेचारा वहीं पर प्राण त्याग गया। किन्तु महाराज की कन्धे से गर्दन तक की हड्डी ठीक नहीं हो पायी। वह कभी-कभी बहुत तकलीफ देती है। असहनीय वेदना होती है उन्हें।"

"खैर, भाभीजी! कल का विचार विमर्श एक बार पूरा हो जाय, फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा। भाभी जी! अब उस पागल बादशाह के पास केवल दो पर्याय ही बचे हैं। या तो उसे चुपचाप दिल्ली की ओर कूच करना होगा या फिर यहीं पर आत्महत्या करके अल्लाह को प्यारा होना होगा।"

"बहुत सहा है इस लड़के ने। हमारे बड़े महाराज पर बड़े-बड़े संकट आये और गये। किन्तु इतना लम्बा अरिष्ट शिवाजी महाराज ने कभी नहीं देखा था।" म्हालोजी बाबा ने देखा।

येसूबाई ने माँ भवानी का स्मरण करते हुए आँखें मूँद लीं। उन्होंने धीमे से कहा, "माँ! किसी तरह यह संकट दूर कर दे।" येसूबाई ने आगे कहा, "कल हम यहाँ के संगमेश्वर से अपनी रक्षा की प्रार्थना करेंगे। उनकी शरण में अपने को समर्पित करेंगे। हमारे महाराज को कब सुख मिलेगा? कितना काँटों भरा जीवन और कितना कंटकाकीर्ण यह राजयोग? माँ शब्द का अर्थ जानने के पहले ही माँ का स्वर्गवास हो गया, असीम प्यार करने वाली जीजामाता भी जल्दी ही परलोक सिधार गयीं। महाराज मुगलों से जा मिले। गलतफहमियों की काली घटायें घिरीं और छँट भी गयीं। ईश्वर की कृपा से ही बड़े महाराज के साथ पन्हालगढ़ पर राजा की भेंट हुई। यह अच्छा हुआ कि इस भेंट पे बड़े महाराज की सारी गलतफहमियाँ जलकर खाक हो गयीं। उसके बाद केवल चार महीने में ही बड़े महाराज चल बसे। उसके बाद खानदान में घोर कलह, भाई-भाई की दुश्मनी, गृहयुद्ध, मुंशी-मुहररों

का विद्रोह, और पिछले आठ वर्षों में उस शैतान बादशाह के साथ निरन्तर टक्कर। इस प्रकार की कितनी परीक्षाएँ? कैसा तूफानी जीवन? संकट, बाधाएँ, कपट, धोखा, षड्यन्त्र, अपयश, प्रवाद, जैसे कितने ही एक के बाद एक विष का प्याला महाराज ने पिया और पचाया। कितनी प्रचंड शक्ति और हिम्मत है उनके सीने में?'' बोलते बोलते येसूबाई का गला भर आया। उन्होंने कहा, ''उनका परिश्रम और साहस विशाल पर्वत के समान है किन्तु उनकी सफलता मात्र एक छोटी टेकरी के समान है।''

दूसरे दिन शम्भू महाराज बहुत जल्दी ही जाग गये। महाराज और महारानी ने संगमेश्वर महादेव को पंचामृत अभिषेक कराया। धर्मशास्त्र का ठीक-ठीक पालन हो रहा है या नहीं, इसका ध्यान स्वामी रामदास के शिष्य स्वामी रंगनाथ और कवि कलश कर रहे थे। पूजा विधि में येसूबाई बड़े मनोयोग से भाग ले रही थीं।

भोर से ही चल रहा अभिषेक और उसके साथ के अन्य धार्मिक अनुष्ठान नाश्ते के समय तक समाप्त हो गये। येसूबाई और शम्भूराजा की पालकियाँ हवेली की ओर लौट पड़ीं। रंगोबा सरदेसाई अपनी हवेली के सामने खड़े थे। उनके परिवार ने महाराज और महारानी का रास्ता रोक लिया। रंगोबा और विशेष रूप से उनकी माताजी, श्रीमती कृष्णाबाई के आग्रह को महाराज टाल न सके। दही और शक्कर के निमित्त से ही सही, महाराज और महारानी को वहाँ कुछ देर रुकना पड़ा। सरदेसाई की दुमंजिली हवेली इतनी सुन्दर थी कि लोग आँखें फाड़कर देखते रह जाते थे। हवेली के पीछे से ही शास्त्री नदी बहती थी इस समय खाड़ी में ज्वार का पानी नहीं था। इसलिए घुटनों तक की गहराई का मीठा पानी कल-कल करता हुआ बह रहा था। शम्भूराजा ने हवेली के भव्य मन्दिर में जाकर श्री गजानन के दर्शन किये।

पास में ही श्री कर्णेश्वर का मन्दिर था। यह बहुत पुराना मन्दिर था। महाराज और महारानी ने मन्दिर में जाकर, शीघ्रता से दर्शन किया। राजा का पूरा दल भी शीघ्रता से हवेली पर लौट गया। मावल और कोंकण घाटी के कुछ चुनिन्दा सरदारों और अधिकारियों को महाराज ने विचार विमर्श के लिए आमन्त्रित किया था। दुश्मन राज्य की सीमा पर पहुँच चुका था इसलिए महत्त्वपूर्ण किलों और चौकियो के सरदारों को महाराज ने सूचित कर दिया था कि अपने अपने स्थानों पर पहरे और गश्त को तेज कर दें।

बहुत दिनों के बाद पिछली रात में महाराज की तीन घंटे की नींद हुई थी। विशालगढ़ के सुदीर्घ जागरण का प्रभाव अभी समाप्त नहीं हुआ था। उनके शरीर मे हल्का सा ज्वर अभी भी था। किन्तु इन सारी बातों को भूलकर उनकी तेज नजर अपने सहयोगियों का भेद ले रही थी।

परामर्श के लिए एकत्र बुजुर्गों की ओर आदरपूर्वक देखते हुए शम्भूराजा ने कहा, "आप जैसे बुजुर्गों के आशीर्वाद और पिताजी के पुण्य के बल पर ही हम पिछले आठ वर्षों से औरंगजेब जैसे शक्तिशाली शत्रु का सामना कर रहे हैं। कभी सिर पर बर्फ का ठंडा गोला रखकर टक्कर दी तो कई बार दुश्मन की लाखों की सेना को विनष्ट करने के लिए हवा के घोड़े पर सवार हुए। बुरहानपुर बागलाण से कारवार-गोवा तक और नीचे कर्नाटक-जिंजी तक भाग दौड़ करते हुए अनेक बार मुठभेड़ हुई। कई बार तो दुर्दैव से ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि जैसे पानी का भयंकर सैलाब आकर दम घोंट रहा हो। किन्तु मामा हंबीरराव, कोंडाजी, मानाजी, रूपाजी जैसे बहादुर साथियों और आपलोगों के बलबूते हम अनेक बार मुगल सेना को मात देने में सफल हुए हैं।"

सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े ने कहा, "महाराज आपकी बहादुरी और दृढ़ निश्चयी संकल्पशक्ति की कोई तुलना ही नहीं है।"

"सच है घोड़पड़े काका! इतनी बड़ी सेना जो इस भूभाग में आती है, इतने वर्ष जूझती रहती है। उसका मुकाबला करने के लिए ये पगड़ी और फटे कम्बल वाले लोग दृढ़ निश्चय के साथ खड़े हो जाते हैं। गोला बारूद न होने पर हाथ में चट्टानों के पत्थर ले लेते हैं, दर्रे घाटियों में साहसपूर्वक शत्रु का सामना करते हैं। इस प्रकार के कटु और सुदीर्घ जुझारूपन के उदाहरण विश्व के इतिहास में कम ही होंगे।" बोलते-बोलते शम्भू महाराज थक गये। उन्होंने एक लम्बी साँस ली और फिर निश्चिन्त स्वर में बोले, "किन्तु अब दिन बहुत बदल गये हैं। इतनी लड़ाइयाँ लड़ने पर भी हमारे हिस्से में थोड़ा भी यश नहीं आया। निराशा के गर्त में गोता लगाता बादशाह अब पूरी तरह से पागल हो गया है। अगले कुछ ही दिनों में वह सीधा दौड़कर हमारे ऊपर आ गिरेगा। चाहे अगले दरवाजे से आये या पिछले दरवाजे से, किन्तु पिंजरे में बन्द बिलाव की तरह वह बिना झपट्टा मारे नहीं रहेगा।"

"सच है महाराज।" म्हालोजी घोड़पड़े ने कहा।

"इसी बीच पूरे तीन वर्षों से महाराष्ट्र भयंकर अकाल मे पीड़ित है। पानी और चारे के अभाव में जनता और पशु दोनों बेहाल हो गये हैं। पिछले तीन वर्षों में सेना में नयी भर्ती भी नहीं हुई है। अनेक अच्छे घोड़ों के अस्तबल ध्वस्त होने की स्थिति में आ गये हैं। घरों के भीतर कलह है तो दरवाजे के बाहर अकाल की तपती धूप। पानी के अभाव में धरती में दरारें पड़ गयी हैं और आकाश भी मानो कुपित हो गया है। किन्तु दोस्तो! हमारे पास दो ऐसे अग्नि अस्त्र हैं कि उनसे हम बादशाह का नशा बड़ी सहजता से उतार सकते हैं।"

शम्भूराजा की बातें सुनकर युवा धनाजी, सन्ताजी, खंडो बल्लाल आदि का

ध्यान अगला शब्द सुनने के लिए आकर्षित हुआ। महारानी येसूबाई भी सँभलकर बैठ गयीं।

भावविभोर होकर शम्भू महाराज ने कहा, "हमारा पहला अस्त्र है, हमारे शिवप्रभु अर्थात हमारे पूज्य पिता का पुण्य और दूसरा अस्त्र है सह्याद्रि की पर्वत श्रेणियों में बने हमारे पहाड़ जैसे मजबूत दुर्ग। मान लीजिए कि वह उनसे बच जाता है या सँभल जाता है और सह्याद्रि की घाटियों और दर्रों में घुसने की उसे दुर्बुद्धि आ जाती है तो यहाँ के पाषाणी दुर्ग, ढालू चट्टानें उसे दौड़ा-दौडा कर भगाएँगी।"

बैठक में जमा लोगों पर एक आदेशात्मक और तेज नजर डालते हुए शम्भू महाराज बोले, "मित्रो! साधन-सामग्री की दृष्टि से यह औरंगजेब सचमुच आलमगीर है। यद्यपि वह पिछले अनेक वर्षों से दक्षिण में लड़ाइयाँ लड रहा है तथापि उसका साम्राज्य विस्तार बहुत बड़ा है। काबुल-कन्दहार से लेकर बंगाल आसाम तक और दक्षिण में मालवा तक उसका साम्राज्य फैला हुआ है। वहाँ से वह करोड़ों रुपये की लगान वसूल करता है। उसकी तुलना में अपना स्वराज्य एकदम छोटा सा है। बादशाह द्वारा शासित लगभग अठारह प्रदेशों में से एकाध किसी आधे सूबे जितना, बस। आमदनी भी उसी अनुपात में कम। बड़े महाराज की जमापूँजी या उनका खजाना मैंने कहीं भी फिजूलखर्ची में बर्बाद नहीं किया। बल्कि उस खजाने को बड़ी सूझ बूझ से मैं उपयोग में लाया हूँ। इसीलिए आठ-नौ वर्षों तक हमने दुश्मन के फौजी महासागर का मुकाबला किया है। दुर्भाग्य से पिछले तीन वर्षों के अकाल ने राज्य की कमर तोड़कर रख दी है। फिर भी मेरे रणबाँकुरो, जिस साहस और संकल्प के साथ आप जूझ रहे हैं, उसका कोई भी जोड़ नहीं है। अपने महाराष्ट्र के अतिरिक्त, अन्य कोई भी प्रदेश ने उस पागल बादशाह को कभी भी इस तरह परेशान नहीं किया।"

शम्भूराजा की आँखें नम हो गयीं। अपने जरीदार रेशमी दुशाले से आँखें पोंछते हुए वे बोले, "आज मैंने इस आपातकालीन विचार विमर्श की बैठक के लिए आपको यहाँ बुलाया है। इसमें म्हालोजी और सूर्याजी जैसे वरिष्ठ लोग भी हैं और जिनकी मसें अभी अभी भीगीं हैं ऐसे धनाजी, सन्ताजी और खंडो बल्लाल जैसे तरुण भी हैं। म्हालोजी काका, कविराज और महारानी जी हम आपसे शपथपूर्वक कह सकते हैं कि धनाजी सन्ताजी जैसे हट्टे कट्टे मजबूत जवान ही कल हमारे स्वराज्य की बागडोर सँभालने वाले हैं। मित्रोऽऽ, आज तक आप सबने यहाँ की धरती और इस राजा के प्रति जो निष्ठा दिखाई है, उसके लिए हम आपका लाख-लाख आभार मानते हैं।"

शम्भूराजा का स्वर कातर हो गया था। म्हालोजी घोड़पड़े अपनी जगह पर उठकर खड़े हो गये। वे भी भावुक हो गये थे। उन्होंने कहा, "शम्भू महाराज! हम

जैसे बलिष्ठ बूढ़ों के जीवित रहते आप तनिक भी दुखी न हों। महाराज! आप ही हमारे राज्य के सच्चे रक्षक हैं। सभी के ऊपर आकाश की तरह छाया करने वाले बड़े महाराज, हमें छोड़कर अचानक परलोक सिधार गये। तब इस राज्य का भार आप जैसे बाइस-तेइस वर्ष के तरुण पर आ पड़ा। बुजुर्ग मंडली को धैर्य से काम लेकर आपका मार्ग-दर्शन करना चाहिए था। किन्तु अनेक बुजुर्ग वह परिपक्वता नहीं दिखा सके। अनेकों ने राजद्रोह जैसे भयंकर अपराध भी किये। ऐसे भयानक अपराधियों को शिवाजी महाराज ने कभी भी माफ नहीं किया होता। इन अपराधियों के पुराने सम्बन्धों और कार्यों का ध्यान करके आपने उन्हें पुन: उन्हीं पदों पर बहाल कर दिया। आपने उन्हें रोजी-रोटी दी और उन्होंने आपके भोजन में जहर मिलाने का काम किया। महाराज! एक बार दरवाजे पर खड़े शेर या बाघ से भी लड़ा जा सकता है फिर चाहे जीत हो या हार। किन्तु घर के भीतर फैले चूहों की व्यवस्था बहुत कठिन होती है। महाराज! नितान्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आप किस प्रकार जूझते रहे, लड़ते रहे? यह इस बूढ़े ने बहुत निकट से देखा है। इसलिए मैं अपने प्राण और अपनी तलवार आपके कदमों में समर्पित करता हूँ।''

अपने पैरों के पास म्हालोजी द्वारा रखी गयी तलवार को शम्भु महाराज ने ध्यान से देखा और झुके हुए म्हालोजी का हाथ अपने हाथ में ले लिया। उनका आभार मानते हुए शम्भूराजा ने कहा, ''घोड़पड़े काका! आप स्वराज्य के पराक्रमी सेनापति हैं। इसलिए कल जहाँ भी आवश्यकता पड़े वहाँ तत्काल दौड़ पड़ने के लिए मैंने आपकी नियुक्ति पाचाड़ के दुर्ग पर की है। मुझे पूरा विश्वास है कि रायगढ़ आपके संरक्षण में पूर्णतया सुरक्षित रहेगा।''

''अवश्य! अवश्य, महाराज। स्वराज्य की रक्षा के लिए यह म्हालोजी अपनी जान की बाजी लगा देगा।'' बोलते-बोलते घोड़पड़े का गला रुँध गया। वे अभिभूत होकर बोले, ''वैसे भी महाराज जिसे भी मराठी राज्य का सेनापति होना है, उसे अन्तत: रक्षा करते-करते मृत्यु को गले लगाना ही होगा। अभी तक तो इस धरती का यही नियम रहा है। नेसरी के जंगल में बहलोलखान से लड़ते हुए प्रतापराव जलकर खाक हो गये। उनके बाद उन्हीं की रक्तरंजित तलवार उठाकर हंबीरराव ने सेनापति पद सँभाला। वाई के युद्ध में उन्होंने सर्जाखान के साथ कड़ा मुकाबला किया। 'शम्भु महाराज की जय' की गर्जना करते हुए हंबीरराव ने अपने प्राणों का अर्पण कर दिया। महाराज! अब वही तलवार आपने बड़े विश्वास के साथ मुझे सौंपी है। भगवान जाने, भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है?''

भविष्य में आने वाले संकटों के सम्बन्ध में विचार-विमर्श हो रहा था। खंडो बल्लाल और येसूबाई, रायगढ़ और अन्य पहाड़ी किलों पर रखे गये द्रव्य और गोला-बारूद की जानकारी दे रहे थे। अन्तिम लड़ाई को जीतने के लिए किस प्रकार

के दाँव पेंच किये जाएँगे, कितनी सामग्री अपेक्षित होगी? आदि बातों पर शम्भू महाराज बड़ी सावधानी से विचार कर रहे थे।

यद्यपि अकाल से प्रजा त्रस्त हो गयी थी, फिर भी शम्भू महाराज और येसूबाई पर उनकी असीम श्रद्धा थी। यही महाराज की सच्ची शक्ति थी। किन्तु जिस गति से सम्भाजी महाराज के सगे सम्बन्धी, स्वराज्य छोड़कर औरंगजेब की शरण में भागे जा रहे थे, वह भी आज की बैठक में होने वाले विचार-विमर्श की दृष्टि से एक बड़ी चिन्ता का विषय बन गया था। मनसबदारी के लोभ में अनेक मराठा सरदारों और ब्राह्मणों ने स्वराज्य के साथ विश्वासघात किया था।

"म्हालोजी काका! अब आपको क्या लगता है?"

"क्या लगना है? बात तो स्पष्ट ही है—अब सह्याद्रि पर्वत उसकी तलहटी का प्रदेश ही अन्तिम युद्ध का क्षेत्र बनेगा। यहीं पर अन्तिम मुठभेड़ रंग लाएगी।"

"इसीलिए महाराज ने खानदेश, बागलाण, नासिक आदि क्षेत्रों से अपनी अधिकांश फौज हटा दी है। सारी सेना का रुख सह्याद्रि की ओर मोड़ दिया है।" येसूबाई ने कहा।

शम्भूराजा ने सहज रूप से बात करते करते एक कच्चा नक्शा निकालकर सामने रखा। उन्होंने कहा, "पन्हाला, शीखण, पुणे, चाकण, पनवेल, चौल, हरिहरेश्वर से पुन: संगमेश्वर होते हुए पन्हाला, इस तरह का फौलादी घेरा हमलोग बना रहे हैं। हमारा यह चक्रव्यूह भेदकर मनुष्य ही नहीं किसी चींटी का प्रवेश करना भी हमारे लिए ठीक नहीं होगा। वह सुरक्षात्मक घेरा अपने अनुशासन और अपनी मस्ती से बादशाह को लड़ाता रहेगा। फिर हम भी देखेंगे कि वह बुड्ढा बादशाह यहाँ की मिट्टी और यहाँ के पत्थरों से कितने दिनों तक लड़ता रहता है।"

खानदेश की फौज पीछे हटा लेने से एक प्रकार की बड़ी हानि हो गयी थी। वहाँ के अनेक जागीरदार और जमींदार मराठे एक एक करके मुगल सेना से जा मिले। इससे बड़ी हानि हुई। शम्भूराजा के विरोध में सावन्तवाड़ी का खेम सावन्त, मुगलों से मिल गया था। उसने महाराज के बहनोई महादजी निंबालकर के सुझाव का बहुत अच्छा उपयोग किया था। पुणे की जेधे मंडली स्वराज्य के अनुकूल रही है। वे लोग शम्भूराजा को मन से चाहते हैं। किन्तु पुणे, सतारा, फलटण, अकलूज, तुलजापुर से उस्मानाबाद तक की हवा समान रूप से जहरीली हो गयी थी। कुछ स्वार्थी जागीरदार विषैला प्रचार कर रहे थे कि, "पृथ्वीपति बादशाह के सामने सम्भाजी पराजित हो जाएँगे। उनका राज्य समाप्त हो जाएगा। तो हम अपनी जागीरदारी क्यों नष्ट करें।" कुछ जागीरदारों ने अपने बन्धु-बान्धवों को गुप्त पत्र भेज दिए थे। सह्याद्रि के पास निरन्तर आग के खेल में उलझे शम्भू महाराज इन बातों से अनभिज्ञ थे। मुगलिया प्रभाव से तीव्र गति से जाने वाले इन पत्रों की सूचना

रायगढ़ तक नहीं पहुँच पाती थी। हरकारों के मार्ग अवरुद्ध हो गये थे। सम्भवतः परिवर्तित वातावरण के कारण ही कुछ खानदानी मराठे भी मुगलों से हाथ मिला रहे थे। यह बीमारी सुपे और पुणे प्रदेशों में सर्वाधिक फैल रही थी।

मुगलों के साथ होने वाली अन्तिम लड़ाई की गन्ध, फौज को, जंगलों को और पराक्रमी पुरुषों को लग चुकी थी। आज कवि कलश की गौर मुखमुद्रा अत्यन्त तेजस्वी लग रही थी। उनकी ओर हाथ से संकेत करते हुए शम्भूराजा ने कहा, "कविराज पन्हाला और विशालगढ़ का जंगली इलाका, हमारे राज्य की बलिष्ठ भुजाएँ हैं। आप उस ओर पूरी तरह सावधान रहें। जागरूक पहरे रखें।"

"राजन! आप निश्चिन्त रहें। कड़वी और शहाली जैसी जंगली नदियों के जल से जिनका पालन-पोषण हुआ है, उन घोड़ों ने कभी पराजय का मुँह नहीं देखा है। मलकापुर की घुड़साल तो हमारी शक्ति है ही। किन्तु—" कहते-कहते कविराज ने अपने लम्बे बालों की गाँठ बाँधी। अपनी गिरती मूँछों पर हाथ रखते हुए कवि कलश बोले, "राजन! आपकी संगति में काव्यानन्द की धुन में मैंने सरस्वती का मन्दिर महका दिया था। राजन! आपके साथ जीने में मुझे सदैव ही आनन्द आया है। आपके लिए मरने में भी मुझे स्वर्ग सा आनन्द आएगा। औरंग्या से दो दो हाथ करेंगे। राजन! हमारे बनारस की ओर एक कहावत कही जाती है, "बिगड़ा हुआ ब्राह्मण, भगवान के भी होश उड़ा देता है। फिर राजन! यह बादशाह यह बादशाह किस खेत की मूली?"

बादशाह के आक्रमण का स्वरूप क्या होगा? उसके सबल पक्ष कौन कौन से हैं। उसकी कमजोरियाँ कौन सी हैं? आदि बातों पर विस्तार से चर्चा हो रही थी। युद्ध का कच्चा नक्शा सामने रखा गया था। कवि कलश और शम्भू महाराज प्रत्येक चौकी का गम्भीरता से विचार कर रहे थे। शम्भू महाराज की नींद न पूरी होने के कारण लाल आँखें पश्चिमी किनारे की जाँच कर रही थीं। महाराज ने कहा, "हमारी पहले की सूझ बूझ अच्छी ही रही। बादशाह के यहाँ पहुँचने के पहले ही हमने पुर्तगालियों और सिद्दियों को रौंद दिया। यही कारण था कि पिछले छह सात वर्षों में बादशाह के दक्षिण में स्वयं उपस्थित रहने पर भी न तो पुर्तगाली आँख उठा सके और न सिद्दी ही जंजीरे की बिल से बाहर निकल सके। किन्तु अब स्थितियाँ बदल गयी हैं। मुझे लगता है कि इस अन्तिम और निर्णायक संग्राम में बादशाह, जंजीरे के सिद्दियों और गोवा के पुर्तगालियों को बिना अपने साथ लिये नहीं रहेगा। इसलिए सिद्दियों और पुर्तगालियों के पैर तोड़कर, उन्हीं के क्षेत्र में पीछे ढकेल देना हमारा प्रथम कर्तव्य होना चाहिए।"

राजा के सुझाव से सभी लोग विचार मग्न हो गये। शम्भू महाराज ने रेख उठान वाले तरुण धनाजी की ओर संकेत किया। धनाजी जाधव तत्काल उठकर खड़े

हो गये और महाराज के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। महाराज ने कहा, "धनाजी, रत्नागिरि की चौकी पर आपको पैर गड़ाकर खड़ा रहना होगा। औरंगजेब की सहायता से फिरंगियों का आक्रमण उस ओर से होने की आशंका है। हमारे सगे रिश्तेदार, सावन्तवाड़ी वाले महादजी खेमसावन्त के साथ औरंगजेब से मिल गये हैं। गोवा और सावन्तवाड़ी की सेनाएँ एक साथ मिलकर युद्ध में उतर सकती हैं।"

शम्भूराजा ने एक बार पुनः धनाजी की ओर देखा। तब धनाजी मुस्कराकर बोले, "महाराज! कनखजूरे के चाहे कितने ही पैर हो जायँ, यदि एक बार उसकी कमर कुचल दी जाये तो वह समाप्त हो जाता है। आपने मुझ पर जो दायित्व सौंपा है उसे हम निश्चित रूप से पूरा करेंगे।"

महाराज ने सन्ताजी घोड़पड़े को अपने पास बुला लिया। नक्शे पर हरिहरेश्वर, दंडाराजपुरी, चौल से पनवेल तक का प्रदेश और पश्चिमी किनारे के सारे बन्दरगाह और खाड़ियाँ उन्हें दिखाईं। फिर महाराज ने ललकारते हुए कहा, "संतोबा, आप पर हमारा अटूट विश्वास है। अभी अभी आप जिंजी तक दौड़ लगाकर लौटे हैं। जंजीरा के मगरमच्छों को दुबारा याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है। सिद्दी बहुत बड़ा लुच्चा है। वह ऐन मौके पर धोखा करेगा। इसलिए आप हरिहरेश्वर से पनवेल तक निरन्तर दौड़ लगाते रहें।"

सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। वे अपने तरुण पुत्र को आनन्दविभोर होकर देख रहे थे। सन्ताजी ने येसूबाई, अपने पिता म्हालोजी और खंडो बल्लाल की ओर दृष्टिपात करते हुए शम्भू महाराज से कहा, "महाराज! सागर के इस किनारे की ओर से तो आप निश्चिन्त हो जाइये। आपने मुझ जैसे नवयुवक पर विश्वास करके यह दायित्व सौंपा है। मैं स्वयं को धन्य अनुभव कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि दंडाराजपुरी के जंगलों में घोड़ा कुदाते हुए मुझे कोंडाजी बाबा की आत्मा मिलेगी। जहाँ कहीं भी हम भटकेंगे, कोंडाजी बाबा हमारा मार्ग-दर्शन करेंगे। इतना अवश्य कहूँगा, महाराज! कि आज इस सभा में बैठे खंडो बल्लालजी से मुझे ईर्ष्या हो रही है।"

सन्ताजी की बात को सुनकर सभी लोग उनकी ओर आश्चर्य से देखने लगे। सन्ताजी ने ही कहना आरम्भ किया, "महाराज खंडो बल्लाल भी मेरी ही उम्र के हैं। गोवा की लड़ाई जब सागर की तूफानी लहरें बहाये लिये जा रही थीं तब इन्हीं खंडोबा ने पानी में छलाँग लगाकर आपके प्राणों की रक्षा की थी! यदि कल यहाँ आग का दरिया बहने लग जाये और उस उमड़ती आग में कूदकर मैं आपकी थोड़ी-सी भी सहायता कर सकूँ तो अपना जन्म सार्थक मानूँगा।"

धनाजी और सन्ताजी के उद्‌गारों से विचार-विमर्श के लिए बैठे सभी लोगों में उत्साह आ गया।

सुदूर तमिलों के प्रदेश जिंजी में केसो त्रिमल के पास सात-आठ हजार की सेना थी। उस पर भी विचार किया गया। म्हालोजी घोड़पड़े ने कहा, "उस ओर जब तक केसो पन्त की सुसज्ज सेना का दबाव बना रहेगा तब तक हरजी महाड़िक की स्वार्थी महत्त्वाकांक्षाओं को बढ़ने का अवकाश नहीं मिलेगा। उन्हें अपनी जगह पर ही रुका रहना होगा।"

महारानी येसूबाई और खंडो बल्लाल ने अपना हिसाब-किताब बैठक के सामने प्रस्तुत किया। प्रत्येक किले पर कितने गोले-बारूद और कितने हीरे-जवाहरात हैं? प्रत्येक क्षेत्र में कितनी सेना है? जंगलों, पहाड़ों और घाटियों में कितनी चौकियाँ हैं और उन पर पहरे की कैसी व्यवस्था है? प्रत्येक किले में कितने अनाज का भंडार है? यदि आसन्न युद्ध तीन वर्ष तक चलता रहे तो किस किले पर कितने दिन का अनाज कम पड़ेगा? आवश्यकता पड़ने पर रसद किस क्षेत्र से ले आयी जा सकती है? इस प्रकार के विषयों पर विस्तृत चर्चा हो रही थी। यद्यपि यह सारा विवरण लिखित में रखा गया था, किन्तु महारानी येसूबाई और खंडो बल्लाल को सबको जबानी याद था। शम्भूराजा चुप न रह सके। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "महारानी येसूबाई! आप यह सारा हिसाब-किताब सँभालती हैं इसीलिए मुझ जैसे सिपाही को रात-दिन युद्ध के मैदान में दौड़-धूप करने का अवसर मिलता है।"

शहजादा आज़म अपनी बीस हजार की सेना के साथ चाकण के पास घेरा डाले बैठा था। वह किसी भी समय कोंकण में उतर सकता है। इसके अतिरिक्त फिरोजजंग सम्भवतः किसी बीच के रास्ते का फायदा उठाकर राजगढ़ में प्रवेश करने की तैयारी कर रहा था। गुप्तचरों द्वारा इस प्रकार की खबरें मिल रही थीं। इन दोनों मोर्चों पर किस प्रकार की तैयारी की जाय? इसका निर्देश भी महाराज ने दिया। इसी बीच संगमेश्वर के सूबेदार एक हरकारे के साथ बैठक में प्रविष्ट हुए। घबराया हुआ हरकारा बताने लगा, "महाराज इस खबर का पक्का प्रमाण तो नहीं है किन्तु बाहर लोग इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि इस जंगल में महाराज के प्राणों को खतरा है। इसलिए यहाँ से तत्काल कूच कर जाना ही उचित होगा।"

शम्भू महाराज क्षण भर के लिए चिन्तित दिखाई पड़े। उन्होंने तत्काल कहा, "सच है, हमें यहाँ अधिक समय नहीं गँवाना चाहिए। बैठक समाप्त हो गयी है। रात्रि-भोजन पूरा हो जाने के पश्चात् सभी को अपने-अपने कार्य पर चला जाना है।"

उस गुप्तचर के आने के बाद बैठक में कुछ सुगबुगाहट आयी। उस समय शम्भूराजा ने हँसते हुए कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है। हमने यथायोग्य सावधानी बरती है और आगे भी सावधान रहेंगे। इस प्रदेश के घनघोर जंगल में, दिन में भी आवागमन करते समय शेर को भी पसीना छूट जाता है, सूर्य की किरणें

भी जमीन पर पहुँचने के पहले पेड़ों की टहनियों पर झूलती लटकती हैं। नीचे उतरने के लिए उनसे अनुमति माँगती हैं।" बोलते-बोलते शम्भूराजा रुक गये। उनकी नजरें चौकन्नी होकर देखने लगीं। उन्होंने हरकारे से केवल एक प्रश्न पूछा, "वह मुकर्रबखान कहाँ है?"

"कोल्हापुर के पास केर्ला के पठार पर। कहते हैं कि उसे अचानक ठंडे बुखार ने घेर लिया है। वह पिछले तीन दिनों से अपने डेरे से बाहर ही नहीं निकला। इसकी मेरे पास पक्की खबर है।"

"और अपना मलकापुर का अश्वदल?" महाराज ने कवि कलश की ओर मुड़ते हुए पूछा।

"महाराज! मलकापुर में केवल चार हजार घुड़सवार हैं। शेष छह हजार अश्वदल आंबा घाटी के मुहाने पर और विशालगढ़ के रास्ते पर तैनात हैं।"

"कविराज!" महाराज ने आश्चर्यचकित होकर कहा।

कवि कलश ने कहा, "हाँ, राजन! विशालगढ़ की ढलान उतरने मे पहले ही मैंने मलकापुर के लिए दूत भेज दिये थे। राजन! समय का कोई भरोसा नहीं होता। प्रतिकूल समय कहकर नहीं आता। एक बार हवा के साथ भले ही खिलवाड़ कर लें लेकिन समय के माथ कभी खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।"

महाराज ने अपने आस पास मौजूद सेना का अन्दाजा लगाया। समीप ही श्रृंगारपुर में पाँच हजार घोड़े तैयार खड़े थे। ऊपर प्रतीचगढ़ पर पाँच सौ मिपाहियों का दल था। निवरे के रास्ते ऊपर जाने वाले और आगे कराड़ की ढलान पर मालेघाट पर एक हजार सवारों का रात दिन सावधान पहरा था। यह मार्ग घनघोर और दुर्गम जंगल से होकर जाता था। इस ओर से किसी के प्रवेश करने की सम्भावना नहीं थी। दूसरी ओर गोवा मार्ग पर हातखंबे के पास दो हजार सिपाही पहरे पर तैनात थे। इसके अतिरिक्त जयगढ़ और नावड़ी बन्दरगाह पर भी पहरा बैठाया गया था। कुल मिलाकर थल अथवा जल मार्ग से किसी के भी संगमेश्वर पहुँचने की कोई सम्भावना नहीं थी। फिर भी वहाँ से शीघ्र निकलकर राजगढ की ओर बढना महाराज को आवश्यक लग रहा था।

बड़े उत्साह से विचार विमर्श चल रहा था। देखते देखते सूर्यास्त हो गया।

संगमेश्वर के जंगल में अँधेरा गहराने लगा था। चर्चा के अधिकांश मुद्दे समाप्त हो चुके थे। शम्भु महाराज ने अपने सभी साथियों को पान सुपारी भेंट की। उन्होंने अपने महल से बाहर के अँधेरे की ओर देखा। हरी-भरी पर्वत-श्रेणियाँ अन्धकार के गह्वर में डूब चुकी थीं। नारियल, सुपारी एवं अन्य वृक्षों से हवा के टकराने की ध्वनियाँ कानों में पड़ रही थीं। शम्भू महाराज ने बड़ी गम्भीर मुद्रा में सभी की ओर देखा। उन्होंने आशा भरे स्वर में पूछा, "दोस्तो! क्या आपको लगता

है कि भय के इस भयानक पर्वत को लाँघकर हम आगे बढ़ सकेंगे?"

"क्यों नहीं? क्यों नहीं महाराज?" खंडो बल्लाल कहते हुए खड़े हो गये। उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा, "महाराज! आपने बहुत झेला और सहन किया है। नासिक-वगलाण की ओर कुछ टूट-फूट हुई होगी। फिर भी आपने सह्याद्रि पर्वत के बहुत से सशक्त किलों में से एक भी उस गीदड़ औरंगजेब के क़ब्ज़े में नहीं जाने दिया। बड़े महाराज के जंगी बेड़े में से एक भी जहाज कम नहीं होने दिया है। उल्टे आपने उनमें साठ-सत्तर जलपोतों की वृद्धि की है। हमारे पास इतनी शक्ति है कि हम आने वाले पचास वर्षों तक उस पापी औरंगजेब के सेना-समुद्र को पछाड़ते रहेंगे।"

उस महत्त्वपूर्ण बैठक के समाप्त होते-होते शाम घिर आयी। सन्ध्या समय की ठंडी हवा चल रही थी। महल में चिरागों की लव फरफरा रही थी। मन्त्रणा समाप्त हो जाने पर भी महाराज के पैर वहीं पर ठिठके हुए थे। आगे नहीं बढ़ रहे थे। यह देखकर अन्य लोग भी वहीं पर खड़े हो गये।

महाराज ने गर्जना की, "दोस्तो! औरंगजेब जैसे कलिकाल का मुकाबला करने के लिए मैंने हर सम्भव उपाय किये। आप ही लोगों की सहायता से हमने जंजीरे के सिद्दियों को ऐसा कुचला कि औरंगजेब जैसे सहायक के होने पर भी वे जंजीरे की बिल से बाहर नहीं निकल सके। गोवा के पुर्तगालियों की सारी मस्ती उतारकर हमने उन्हें वहीं पर रोक दिया। एक ओर अरबों से मित्रता की तो दूसरी ओर अंग्रेजों को छावनियों से निकलने नहीं दिया। तमिल और कर्नाटक पर दो-दो बार आक्रमण करके उनके किलों पर भगवा झंडा फहराया। बीजापुर और गोलकुंडा वालों से मित्रता करके दिल्लीश्वर बादशाह को लाचार बना दिया। उसकी पाँच लाख की सेना को आठ वर्ष तक नंगा नाच नचाया और महाराष्ट्र को बचाया।"

"वाह! महाराज, वाह!" सभी ने एक साथ गर्जना की। ऐसा लगा मानो शम्भू महाराज की बात सुनकर वर्षा ऋतु के मेघ घहराने लगे। महाराज की आँखों की पुतलियाँ कड़कती बिजलियों की तरह चमकने लगीं। उन्होंने सभी की ओर देखकर धीमे किन्तु दृढ़ स्वर में कहा, "एक शिवाजी महाराज के यश की ध्वजा, आकाश की ऊँचाई तक फहराने के लिए, मेरे जैसे सैकड़ों सम्भाजी सिरों की बौछार युद्ध भूमि में हो जाये तो अच्छा ही होगा।"

घात और अपघात

एक

ऐसा भयानक धोखा करने वाला और भयंकर ढलान वाला जंगल अपने सात जन्मों में भी नहीं देखा था। पिछले एक दिन और एक रात इन लोगों ने बड़ी दौड़ की थी परन्तु अणुस्कुरा के जंगल में उतरते ही उन्हें छठी का दूध याद आ गया।

अणुस्कुरा घाटी की उतराई इतनी कँटीली और ढालू थी कि पहले झटके में ही मुगल फौज का सारा जोश ठंडा पड़ गया। मुकर्रबखान, इखलास और गणोजी के साथ सभी लोग चुपचाप घोड़ों से उतर गये। जहाँ जानवरों को खाली शरीर भी उतर पाना कठिन हो रहा था वहाँ पीठ पर बोझा लादकर कैसे उतरते?

घाटी की उतराई पर ऊँचे-ऊँचे पेड़, घनी लताएँ, कँटीली झाड़ियाँ, घनी जंगली घास आदि भरे पड़े थे। इसलिए जमीन तक चन्द्रमा की किरणें तक नहीं पहुँच पा रही थीं। जिस पगडंडी पर वे चल रहे थे वह भी हाथ-डेढ़ हाथ से अधिक चौड़ी न थी। उस रास्ते से एक बार में केवल एक घोड़ा आगे बढ़ सकता था। वह उतराई की राह कभी उल्टी-पुल्टी गोलाकार होती तो कभी एक लकीर की तरह सीधी हो जाती, कभी तिरछी होती तो कभी सर्पीली तो कभी सिर तक ऊँची घासों के बीच में छिप जाती थी। कभी-कभी ऐसा लगता कि वह लकड़ी का सहारा लेकर थकी हुई किसी बुढ़िया की तरह धीरे-धीरे नीचे उतर रही है।

कभी-कभी नीचे फैली काई के कारण घोड़ों के पैर रपट जाते और भयभीत जानवर आसपास किसी पत्थर की चट्टान देखकर सहारा पाने के लिए उस पर अपने को झोंक देते। इस प्रकार अपनी लम्बी जीभ को बाहर निकालकर प्राणों की रक्षा का उपाय करते। परन्तु कुछ घोड़े पत्थरों और सूखी घासों से इस प्रकार फिसलते कि उनके सावधान होने के पहले ही उनका सन्तुलन बिगड़ जाता था। जैसे कोई भरी गागर किसी खाली कुएँ में गिर जाये वैसे ही ये घोड़े बगल की घाटी में गिर जाते थे। कँटीली झाड़ियों से होकर गिरने वाले घोड़ों की करुण चीत्कार फौज के कलेजे

को कँपा देती थी। बचे हुए घोड़े अपनी जगह पर रुक जाते और भय से देखते हुए मूतने लगते।

उतराई पर पैरों की गति इतनी धीमी हो जाती कि समझ में ही नहीं आता कि यह कठिन राह कभी समाप्त भी होगी या नहीं? दूसरी ओर की घाटी से रात की ठंडी हवा शरीर को छू रही थी। परन्तु घबराये हुए मनुष्यों और जानवरों को पसीने छूट रहे थे। उनका शरीर पसीने से तर हो रहा था। उस दानवी रास्ते ने देखते-देखते चालीस घोड़ों को निगल लिया। उस रात के अँधेरे में अनेक प्राणी पहाड़ से नीचे गिर गये। कुछ पन्द्रह-सत्रह फौजियों के जाते मुकर्रबखान के पेट में भी भय का गोला घूमने लगा। मुकर्रब के साथी उसके आसपास इकट्ठे हुए। अँधेरे के कारण उनके चेहरे का भाव स्पष्ट नहीं हो रहा था। किन्तु उनकी अवरुद्ध साँस, नाक से निकलने वाली गर्म हवा एक ही प्रश्न पूछ रही थी, "खान साहब! इस मौत के कुएँ में हमें लेकर कहाँ जा रहे हैं?"

मुकर्रब ने उन्हें निश्चयपूर्ण शब्दों में उत्तर दिया, "मैंने तो पहले ही कह दिया था कि जिन्हें मौत कबूल हो वही हमारे साथ चलें।"

मुकर्रब के इस उत्तर से रुके हुए पैर फिर से चलने लगे। घोड़ों के पैरों में गति आ गयी। उतार पर चलते हुए जंघाओं और पिंडलियों में गोले फूट रहे थे। पैरों के फिसलने से नाखूनों का टूटना-फूटना तो मामूली बात थी। अनेकों के पैर फिसले और वे मोच खाकर पंगु हो गये थे। उस भयंकर उतार पर अब कोई किसी के लिए रुकने को तैयार न था। घोड़े एक-दूसरे के शरीर को रगड़ते हुए चल रहे थे। सैनिक एक-दूसरे को हाथों का सहारा दे रहे थे। ठंड से ठिठुरते हुए सैनिक और जानवर किसी प्रकार अपनी जान बचाते हुए नीचे उतर रहे थे। बीच में किसी सैनिक का पैर फिसल जाता तो वह लकड़ी के गट्ठे की तरह बगल की खड़ी चट्टान से नीचे गिर जाता। 'या खुदाऽऽ, या खुदाऽऽ' की करुण चीत्कार की ओर कोई ध्यान न देता। नीचे गिरा सैनिक किसी का चचेरा या मौसेरा भाई हुआ तो भी कोई ध्यान न देता। सभी को अपनी जान बचाकर जल्दी से नीचे उतर जाने की चिन्ता थी। गिरे हुए सैनिक के सम्बन्ध में केवल 'कौन था?' जैसी मामूली पूछताछ कर ली जाती थी। आगे बढ़ते सैनिक अपने ठिठुरते स्वर में एक-दूसरे से बीच बीच में कानाफूसी करते, 'यह शैतान गणोजी हमें कहाँ लिये जा रहा है?'

इस प्रकार के घने जंगल, पहाड़ियाँ, घाटियाँ हमेशा मराठों के अनुकूल होती हैं। यही सोचकर मुकर्रब की फौज को भय लग रहा था। मराठे यदि बन्दरों की तरह छलाँग लगाते अचानक सामने आ जाएँगे तो हम जाएँगे कहाँ? इस शैतानी रास्ते में नष्ट हो जाने का खतरा था। भय के कारण घोड़ों के मुँह से फेन निकल रहा था। उनकी पीठें पसीने से भीगी थीं।

रात समाप्त होने को आयी। आकाश में चाँद और चाँदनी डूबने लगे। दिन निकल आया। सैनिक अपनी जगह पर ही ठिठक गये। पीछे के ऊँचे पहाड़ की खड़ी चट्टान देखकर आँखों के आगे अँधेरा छा गया। अभी तक केवल आधा रास्ता ही पार हुआ था। पीछे ऊँची खड़ी चट्टान और सामने गहरी खाई। सैनिकों और जानवरों की देह भय के मारे गोल-गोल घूमने लगी। रात के अँधेरे के कारण ही वे यह भयानक यात्रा कर सके थे। अन्यथा एक मुकर्रबखान को छोड़कर दूसरा कोई भी सैनिक इन चट्टानों से उतरने के लिए तैयार न होता। दाहिने हाथ की बड़ी खाई और पैरों के नीचे की भयंकर उतराई देखकर जानवर भी हड़बड़ा गये। समीप के पत्थरों और पेड़ों से चिपककर नाक फुलाये खड़े हो गये। मुकर्रबखान जोर से चिल्लाया, "चलो बेवकूफो, जल्दी चलो नहीं तो मराठे पीछे पड़ जाएँगे।"

घोड़ों की लगाम पकड़े सैनिक उन्हें नीचे की ओर खींचने लगे। परन्तु एक भी जानवर आगे पैर रखने को तैयार न था। तब जानवरों के शरीर पर बेंत और कोड़े पड़ने लगे। नीचे उतरने के स्थान पर जानवर वहीं पर झुक गये। भयभीत होकर मूतने और लीद करने लगे। किन्तु भय के कारण एक ने भी आगे कदम नहीं बढ़ाया। मुकर्रब ने सभी की ओर संकेत किया। उसने अपनी नुकीली टोपी पर बँधा हुआ साफा खोला और उस लम्बे साफे से अपने घोड़े की आँखें बाँध दीं। अन्य सैनिकों ने भी ऐसा ही किया। जिनके पास साफे नहीं थे उन्होंने अपने लम्बे कुर्ते उतारे और घोड़ों की आँखों पर पट्टी बाँध दी। जो भी हो वह भयानक उतराई घोड़ों की आँखों से दूर हो गयी। उन्हें भी कुछ साहस मिला। उनके पैरों में शक्ति का संचार हुआ। घोड़े अपने मालिकों द्वारा खींची जाने वाली लगाम के सहारे चलने लगे। जानवरों का सहारा लेकर सैनिक भी बचते-बचाते घाटी में उतरने लगे। दोपहर होते-होते तीन हजार की फौज वह दुर्गम घाटी उतरकर एक बार नीचे आ गयी।

घाटी में उतरते हुए जब सैनिकों और जानवरों ने सामने का समतल मैदान देखा तो वे खुशी से नाच उठे। सैनिकों के पाँव, मोच खाकर अकड़कर, ऐंठकर, लचककर बेजार हो गये थे। घोड़ों ने सामने घास से भरा मैदान देखा तो खुशी से दौड़ने लगे। अपने शरीर को विश्राम देने के लिए जैसे हाथी पानी में अस्त-व्यस्त होकर लेट जाता है उसी तरह घोड़े घास पर लोटने लगे। सिपाहियों ने भी बकरी के बच्चों की तरह उछलते हुए अपने को घास पर झोंक दिया। विश्राम कर रहे सैनिक और घोड़े रस्सी की तरह लटकने वाली चट्टान की पगडंडी को आश्चर्य से देख रहे थे। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वे सचमुच इसी पगडंडी से उतरकर नीचे आये हैं।

घास के मैदान पर सैनिकों और घोड़ों का फैला हुआ वह मेला बगल के

पीपल के नीचे खड़े गाँव वाले बड़े कुतूहल से देख रहे थे। कल हवा के पैरों से भागने वाले कुछ हरकारों और कुछ मार्ग दिखाने वालों को गणोजी ने आगे भेजा था। गणोजी ने सन्देश भेजा था कि मुगलों की सेना का एक हिस्सा मराठों के साथ मिल गया है। वह दल सम्भाजी राजा से मिलने के लिए इसी रास्ते से आने वाला है। आसपास की बस्तियों में भोर से ही रोटी-नाश्ते की व्यवस्था कर ली गयी थी। गाँव वाले रोटी-चटनी लेकर इसी सेना की प्रतीक्षा कर रहे थे।

थोड़े विश्राम के बाद लोग रोटी-चटनी और जानवर हरी नरम घास पर टूट पड़े। वहाँ बहुत समय रुकना खतरे से खाली नहीं था। मुकर्रबखान और गणोजी ने जल्दी मचाई। सभी तरोताजा होकर दलान के सामने का रास्ता नापने लगे।

सामने का रास्ता चट्टान की ढलान की तरह नहीं था। फिर भी ठीक तरह से दिखाई नहीं पड़ रहा था। ऊबड़-खाबड़ गड्ढों पोरसाभर ऊँचे-ऊँचे पत्थरों और कँटीली झाड़ियों से होकर रास्ता आगे सरक रहा था। मुकर्रब के साथियों से जब न रहा गया तो उन्होंने खान के सामने ही गणोजी की शिकायत की, ''यह शैतान गणोजी हमें कहाँ लिए जा रहा है? उस ओर गोवा की ओर से आने वाली घोड़ों के लिए सुगम राह को क्यों छोड़ रहा है?''

इस शिकायत पर गणोजी हँस पड़े। मुकर्रब के सैनिकों से उन्होंने कहा, ''वह गोवा की ओर से आने वाला रास्ता सीधे आगे जाता है। परन्तु संगमेश्वर तक कम-से कम दो जगहों पर सम्भाजी की पाँच पाँच हजार की सेनाएँ तैयार खड़ी हैं। आपको हमारे पीछे पीछे आना है या सीधे सम्भाजी के जबडे में पहुँचना है?''

गणोजी ने किसी को जवाब देने का मौका ही नहीं दिया। अँधेरा होते-होते एक गाँव के मैदान में घोड़े रुक गये। गणोजी द्वारा पहले भेजे सन्देश के अनुसार कोंकण क्षेत्र से खेममावन्त, देशमुख, दलवी जैसे अनेक जागीरदार पूरे प्रबन्ध के साथ वहाँ एकत्र हुए थे। गणोजी से मिलते ही उन लोगों ने उन्हें बाँहों में भर लिया। गणोजी के निर्देश के अनुसार उन लोगों ने चार सौ हृष्ट-पुष्ट घोड़े तैयार रखे थे। मुकर्रब ने शीघ्रता की। उसने थके हारे और जख्मी घोड़ों को बदल दिया। तरोताजा घोड़ों के मिलने से मुस्लिम सैनिक प्रसन्न हो गये।

अब संगमेश्वर तक का रास्ता केवल एक रात का रह गया था। अब लगातार तीसरी रात का वह जानलेवा रास्ता आरम्भ हुआ।

इसी समय कुछ गुप्तचरों से गणोजी को समाचार मिला। डेढ़-दो दिन पहले शम्भूराजा विशालगढ़ से उतरकर इसी रास्ते से संगमेश्वर से आगे गये हैं। यह खबर सुनते ही मुकर्रब थरथरा गया। उसके सैनिक भी चौकन्ने हो गये। जिस शिकार के लिए पिछली तीन रातों से इस भयानक जंगल में वे कुत्तों की तरह दौड़ रहे थे उस शिकार की गन्ध आसपास के जंगल मे उनकी नाक में आने लगी। यह सोचकर

सभी प्रसन्न हो रहे थे। प्यारे गणोजी ने खाने पीने की कोई कमी नहीं होने दी थी। अब केवल आगे-आगे बढ़ना था। यदि शम्भृ महाराज संगमेश्वर छोड़कर चले गये तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। अपने हिस्से में अपयश आने का भी भय था। यदि शम्भू न मिले और अपयश का भागी होना पड़ा तो इस रास्ते से पीछे आकर सुरक्षित ठिकाने पर पहुँचना बहुत कठिन था। यह तो सीधे मृत्यु के सामने खड़ा होना था।

मुकर्रब जिस हट्टे-कट्टे घोड़े पर सवार था उसे कभी हाथों से थपकियाँ दे रहा था तो कभी चमड़े के पट्टे से मारकर नचा रहा था। उसे सामने जंगल की गड्डेदार पगडंडी की कोई चिन्ता न थी। वह इस तरह भाग रहा था मानो शिकार उसके हाथ में आ गया हो। सैनिक और जानवर सभी उत्साहित हो गये थे।

आधी रात हो गयी। मुगल सेना के साथ उस वन-प्रान्तर में चारों ओर चाँदनी छा गयी। उनकी थकान दूर करने के लिए ठंडी हवा बहने लगी। ऐसा लगा मानो गणोजी दादा के साथ प्रकृति भी दुश्मनों के साथ हो गयी थी। मुकर्रब पूरी तरह एकाग्र हो गया था। उसकी आँखें जग रही थीं। उसके घोड़े के आगे गणोजी के रास्ता दिखाने वाले दस-पन्द्रह घोड़े दौड़ रहे थे। उन्हीं की सहायता से मुकर्रब और तीन हजार की फौज पूँछ की तरह पीछे-पीछे भाग रही थी।

मुकर्रब को लगा कि कोई उसे पुकार रहा है। उसने उसी क्षण घोड़े को रोक दिया। उसका जवान बेटा इखलास 'अब्बाजानऽऽ, अब्बाजानऽऽ' कहते हुए उसके पास आ गया। अपने पिताजी के घोड़े के बहुत समीप आकर इखलास ने मुकर्रब के कानों में कुछ कहा। घोड़े अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गये। फौज के पीछे पीछे चलने वाले गणोजी को आगे बुलाया गया। गणोजी मुकर्रबखान के पास आये। उनका उतरा हुआ चेहरा रात की चाँदनी में भी स्पष्ट दिख रहा था। गणोजी को देखते ही मुकर्रब ने उन्हें फटकारते हुए कहा, "क्यों गणोजी! क्या बात है?"

"सरकार! मैं आपको बाघ की खोह तक ले आया हूँ। मेरे रहबर, मेरी रसद सब आपकी सेवा में हैं। पर सरकार मुझ पर रहम कीजिए। मुझे यहाँ से पीछे जाने की इजाज़त दीजिए।"

"आप पागल तो नहीं हो गये?"

गणोजी का गला भर आया। आवाज भरभरा गयी। वे बड़ी कठिनाई से बोले, "खानसाहब! आपसे क्या कहूँ? इन पहाड़ियों के भोले और पागल लोग उस शिवाजी और सम्भाजी को भगवान मानते हैं। कल यदि सम्भा हाथ से निकल गया तो वह आग का खेल खेलेगा। हमारी जड़-शाखा कुछ भी उपचार के लिए नहीं बच पाएगी।"

मुकर्रबखान और इखलास ने आपस में बात की। उसके बाद मुकर्रब ने शिर्के

से कहा, "गणोजी आप घबराइये नहीं। हम आपको अगुआई करने के लिए नहीं कहेंगे। आपको फौज के पीछे रखेंगे। किन्तु किसी भी स्थिति में आपको साथ तो चलना ही है।"

"परन्तु सरकार आपके साथ रसद, राह दिखाने वाले सब कुछ दे देता हूँ किन्तु मुझे वापस जाने की इजाजत दीजिए।" गणोजी ने दोनों हाथ जोड़कर घबराये हुए स्वर में कहा।

पहले ही देर हो चुकी थी। फौज बीच में रुकी थी। गणोजी ऐन मौके पर हिम्मत हार रहा था। यह देखकर मुकर्रब लाल-पीला होने लगा। घोड़े पर से ही अपने मजबूत दाहिने हाथ से गणोजी के गले की पट्टी पकड़कर खींचा और कहा, "शिर्के, तुम क्या मुझे मूर्ख समझते हो? तुम्हारे बाप दादों ने कुछ शताब्दी पहले इन्हीं जंगल-घाटियों में सात हजार की फौज के साथ मलिक उत्तुजार बन्दे को धोखे से मार दिया था। वैसी स्थिति आयी तो मैं भी डूब मरूँगा लेकिन तुम्हें साथ लेकर। चलो, बचपना छोड़ो।"

छिटकी चाँदनी में फौज की दौड़ पुनः आरम्भ हो गयी। घोड़े सरपट भाग रहे थे। रास्ते की छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ और खाइयाँ पीछे छूटती जा रही थीं। भोर के समय संगमेश्वर से निकलकर आ रहे कुछ पथिक मिले। उनसे खबर मिली कि कल दिन भर सम्भाजी राजा संगमेश्वर में ही थे। किन्तु आने वाली सुबह को रायगढ़ की ओर निकलने वाले हैं। यह समाचार सुनते ही मुकर्रब के घोड़ों को मानो पंख उग आये। मुकर्रब, इखलास और गणोजी साथ तीन हजार की फौज तेजी से भागते हुए कँटीले रास्ते को पार करने लगी। संगमेश्वर के संगम पर जीवन-मृत्यु की आर-पार की लड़ाई ही अब उनका एकमात्र लक्ष्य था।

दो

पानी में छपाक से कुछ गिरने की आवाज सुनाई दी। येसूबाई की आँख एकाएक खुल गयी। वे बिस्तर पर उठ बैठीं। उन्होंने अनुमान लगाया कि पीछे की नदी में कोई पेड़ की डाली गिरी होगी। येसूबाई अचकचाकर इधर-उधर देखने लगीं। महल के पर्दे हल्की हवा से सरसरा रहे थे। पर्दों के साथ बँधे घुँघरुओं की भी आवाज आ रही थी। चिरागदान का तेल समाप्त होने को आया था। थोड़ी देर पहले

ही पानी में उठी उस आवाज से घर के बाहर बँधे घोड़े हिनहिनाए थे और फिर शान्त हो गये थे। थके-हारे शम्भू महाराज बिस्तर पर लकड़ी की तरह बेसुध पड़े थे।

येसूबाई को पसीना छूट रहा था। मुँह से शब्द निकल नहीं रहे थे। इतना भयानक स्वप्न उन्होंने जिन्दगी में कभी नहीं देखा था। वे अपने मस्तिष्क में स्वप्न की टूटी कड़ियों को जोड़ने का प्रयास कर रही थीं। दिगाम पर बहुत दबाव डालने पर वह दु:स्वप्न उनकी मन की आँखों के आगे फिर से घूम गया।

ऐसी दानवी भैयादूज संसार की किसी बहन ने भी कभी स्वप्न में भी नहीं सोची होगी। येसूबाई पसीने से भीग रही थीं। सपने में उन्होंने देखा कि वे भैयादूज के लिए सुन्दर रंगोली सजाकर भाई के लिए चन्दन की चौकी रखी। पूजा की थाली और उपहार की वस्तुएँ तैयार कीं। किन्तु चौकी पर भाई की जगह उन्हें कोयले का ढेर दिखाई पड़ा। ऐसे कोयले जिन्हें अभी-अभी धधकती आग से निकालकर बुझाया गया हो। आरती की सोने की थाली के समीप दिखने वाला हाथ परिचित था। उस कलाई पर सर्पाकार सुवर्ण कंगन निश्चय ही गणोजी का था। सपने में भी आरती उतारने के बाद येसूबाई ने अपना सिर गणोजी के पैरों में रख दिया था। परन्तु अपने भाई से मिले भयानक उपहार से वे थरथर काँप रही थीं। भय से कलेजा मुँह को आ रहा था। पूजा की थाली में वह उपहार! वह रेशम जैसे लम्बे-लम्बे केश कलाप, ताजे खून से चिपकी दाढ़ी, किसी शिल्पाकृति की भाँति अधखुली गहरी आँखें और थाली में गिरा वह खून। यह सिर तो शम्भू महाराज का है। येसूबाई जोर से चिल्लाने को हुई। परन्तु समीप ही गहरी नींद में सोये सम्भाजी पर उनकी दृष्टि पड़ी। ऐसा लगा जैसे किसी लम्बी यात्रा से लौटा चन्द्रपुर का कोई राजकुमार मेघों की दुलाई ओढ़े शान्तिपूर्वक सोया हो। शम्भूराजा की मुद्रा जितनी थकी हुई थी उतनी ही पवित्र लग रही थी।

येसूबाई का दम घुट रहा था। महल के अलिन्दों से आने वाली तेज हवा पेड़ों से गिरने वाले पत्तों को ही नहीं पूरे ब्रह्माण्ड को भयभीत कर रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे किसी अज्ञात शक्ति ने इस संगमेश्वर के वन प्रदेश को अपने वश में कर लिया हो। यहाँ अधिक समय तक रुकना नहीं है ऐसा आग्रह उन्होंने पिछली रात ही शम्भू महाराज से किया था।

रात की मन्त्रणा पूरी होने के बाद शम्भूराजा ने अपने सहकारियों से कहा, "जिनके लिए सम्भव हो वे इसी समय निकल जायँ। जिसके लिए जो जगह निश्चित की गयी है, कल शाम तक वहाँ पहुँच जायँ। उसी समय सेना की कुछ टुकड़ियाँ सगमेश्वर से निकल पड़ीं। किन्तु शम्भूराजा के पैर थम गये। उन्होंने अर्जोजी यादव के निवेदन को सुनने का वचन दिया था। दूसरे कुछ अन्य गरीबों को

न्याय देना था। इन सभी कार्यों को निपटाकर नाश्ते से पहले संगमेश्वर छोड़ देने का शम्भूराजा ने निश्चय किया था। येसूबाई तत्काल निकलने का आग्रह कर रही थीं। तब म्हालोजी घोड़पड़े ने कहा, "बहूरानी इतनी जल्दी क्यों मचा रही हैं। कल सवेरे सब लोग निकलेंगे।"

"ऐसी कोई बात नहीं है। किन्तु. "

"बेटी सुनो! रात को घाट से यात्रा करते समय कुछ मालूम नहीं पड़ता। आकाश की छिटकी चाँदनी मामूली चिराग की तरह रोशनी देती है। पैरों के नीचे की जमीन भी किसी प्रकार का धोखा नहीं देती।"

"परन्तु यहाँ किस बात का भय है?"

"यह कोंकण की बस्ती है। यहाँ पेड़ों की घनी छाया के कारण चाँदनी भी जमीन तक नहीं पहुँच पाती। इसके यहाँ मणियार, फेटार कराइत जैसे विषधर पाए जाते हैं। तुम श्रृंगारपुर में पली-बढ़ी हो। तुम्हें यह सब बताने की आवश्यकता है क्या?"

अनेक आग्रह थे। किन्तु येसूबाई ने संगमेश्वर के सूबेदार को आदेश दिया था कि चाहे जो भी हो एकदम सुबह निकलना है। उन्होंने यह भी कहा था कि पालकी और ढोने वाले मजबूत कहारों को तैयार रखे। किन्तु रात को मोने के पहले मूबेदार मोरे दौड़ते हुए आये। उन्होंने सूचना दी कि औंध से अर्जोजी और गिरोजी यादव यहाँ पहुँच गये हैं। राजा ने तीन दिन पहले उन्हें विशालगढ़ पर संगमेश्वर में मिलने का समय दिया था। अर्जोजी एक विश्वासपात्र आदमी थे। दुर्गाबाई और राणू दीदी को बहादुरगढ़ में मिलने के लिए उन्होंने छद्मरूप से प्रवेश किया था। शम्भूराजा के सामने संकट था कि यादव बन्धुओं की बात कल सुबह सुनें या आगे का समय दें। किन्तु यह बात भी सच थी कि यादव बन्धु पिछले कई वर्षों से त्रस्त थे।

सूबेदार ने धीरे से कहा, "महाराज और भी दो तीन प्रार्थना पत्र हैं।"

"ठीक है, सबकी फरियाद सुनेंगे। परन्तु इन सभी को सूर्योदय से पहले यहाँ आने को कहिए। नाश्ते से पहले सभी मामलों को समाप्त करना होगा। वहाँ रायगढ पर कामों का अम्बार लगा है।" शम्भूराजा ने कहा।

येसूबाई को इन मामलों में समय गँवाना उचित नहीं लग रहा था। आधी रात देखा हुआ वह भयानक स्वप्न येसूबाई के रक्त के प्रत्येक कण में व्याप रहा था। उन्हें लग रहा था कि जितनी जल्दी यहाँ से निकल जायँ उतना ही अच्छा।

प्रात:काल महाराज उठ गये। उन्होंने स्नान करके पूजा की। येसूबाई ने भी स्नान करके पूजा की। इसी बीच सूबेदार ने आकर कहा, "महाराज! बाहर पालकी आदि सब तैयार है।"

येसूबाई की चिन्ताग्रस्त मुखमुद्रा को देखकर शम्भूराजा ने कहा, "महारानी आप इतनी चिन्तित क्यों हैं? आप आगे निकलिए हम भी पीछे-पीछे घोड़ा भगाते

हुए आ जाएँगे।"

"महाराज! आज का दिन अशुभ-सा लग रहा है। यहाँ पर बिलकुल न रुकिए।"

"ऐसा बर्ताव हम कैसे कर सकते हैं? हम इस प्रदेश के राजा हैं। मैंने यादवों को मिलने का वचन दिया था। यादव बन्धु आते ही होंगे।"

सूबेदार ने कहा, "वे गये ही कहाँ थे? कल रात से ही ड्योढ़ी पर अड्डा जमाये बैठे हैं।"

"सुनो येसू? जैसे दहाड़ मारकर रोते हुए बच्चे को छोड़कर कोई माँ नहीं जा सकती वैसे ही दरवाजे पर न्याय माँगने के लिए खड़ी प्रजा को छोडकर कोई राजा आगे नहीं जा सकता।"

सूचना देने के लिए सूबेदार बाहर चला गया। येसूबाई के पीछे-पीछे शम्भू महाराज भी भीतर के दालान में आ गये। परन्तु येसूबाई की भीतरी घबराहट उन्हें शान्ति से बैठने नहीं दे रही थी। आवेश में वह बगल के खम्भे पर हाथ रखकर रोने लगीं। यह देखकर शम्भूराजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे महारानी के समीप आये। जैसे कोई लता वृक्ष से लिपट जाती है येसूबाई ने उसी तरह शम्भूराजा को बाँहों में भर लिया। शम्भू महाराज बिना कुछ बोले येसूबाई के सिर पर हाथ फेरने लगे। उन्हें सान्त्वना देते हुए विनोदभाव मे बोले, "येसू आज तुम्हें क्या हो गया है? पूरे महाराष्ट्र को कठोर अनुशासन में रखने वाली हमारी महारानी आज एक सामान्य घरेलू औरत की तरह व्यवहार क्यों कर रही है? तुम्हारा प्रभुत्वमय और रोबदार अनुशासन कहाँ चला गया?"

शम्भूराजा कुछ भी सुनने को तैयार न थे। उन्होंने येसूबाई को आश्वस्त किया कि नाश्ते तक यहाँ का सारा काम पूरा करके हम निकल चलेंगे। निकलने का सारा प्रबन्ध हो जाने पर सूबेदार ने पुन: आकर सूचना दी। तब शम्भूराजा ने येसूबाई से कहा, "आपकी पालकी के साथ आठ सौ घोड़े निकलेंगे।"

"इतने किसलिए? फिर आपके साथ कौन रहेगा?" येसूबाई ने कहा।

"चार सौ घोड़े रहेंगे मेरे साथ।"

"नहीं, नहीं राजा की सुरक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है।"

"नहीं येसू, दुर्गाबाई और राणूदीदी की याद के अंगारे हमें जीवन भर जलाते रहे हैं। तुम्हारे ऊपर कोई भी संकट नहीं आना चाहिए।"

"फिर हम ऐसा करेंगे कि साथ-साथ ही निकलेंगे।"

"नहीं, नहीं आप निकलिए।"

अन्त:पुर में कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। येसूबाई ने शम्भूराजा के पैरों पर अपना सिर रखकर गर्म आँसुओं के फूल चढ़ाए। उनकी यह दशा देखकर शम्भूराजा का मन भर आया। उन्होंने अपनी प्रिय महारानी को बड़े वात्सल्य से सीने से लगा

लिया। राजा के उस प्रगाढ़ आलिंगन में येसूबाई को अपने पिता पिलाजीराव का स्मरण हो आया। येसूबाई की आँखों के आँसुओं को अपनी उँगलियों से पोंछते हुए शम्भू महाराज ने हँसते हुए कहा, "इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो? तुम्हें इतना भी भरोसा किसी पर न रहा? सह्याद्रि का यह हरा-भरा जंगल, यहाँ की यह लाल मिट्टी, शिवाजी के पुत्र सम्भाजी के साथ धोखा करेंगे? क्या तुम्हें ऐसा लगता है?"

बहुत विलम्ब हो रहा था। बाहर दिन निकल आया था। सूर्योदय के पूर्व ही संगमेश्वर से बाहर निकल जाना था। दरवाजे पर पन्द्रह-बीस पालकियाँ तैयार खड़ी थीं। कुछ दासियाँ भी साथ थीं। राजा को एक बार पुन: प्रणाम करके येसूबाई अपनी पालकी में बैठ गयीं। चन्दनी मेहराब के झरोखे से वे बाहर झाँकने लगीं। महल की सीढ़ियों पर शम्भू महाराज खड़े थे। राजा को दंडवत करके कहारों ने पालकी उठा ली। उसी समय शम्भू महाराज ने धीमे स्वर में कहा, "रुको!" महाराज तेजी से चलते हुए पालकी के पास आ गये। येसूबाई ने पूछा, "क्या बात है स्वामी?"

"महारानी जरा भी चिन्ता न करें। आपकी पालकी दोपहर को चिपलूण की वशिष्ठी नदी के किनारे पहुँचेगी। वहाँ अमराई में दशमी का निवाला मुख में रखने से पहले ही मैं घोड़ा दौड़ाते वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

राजा के इस प्रकार भरोसा देने से येसूबाई उस वियोग के क्षण में भी बड़ी मधुरता से हँस पड़ी। शम्भूराजा ने पुन: कहा, "परसों हम रायगढ़ के पायदान तक पहुँच जाएँगे। वहाँ आपको एक महत्त्वपूर्ण कार्य करना है।"

"कौन-सा?"

"प्रवेशद्वार के चितदरवाजे पर लगने वाली पत्थर की देहरी को ध्यान से देखकर रखिए।"

"किसलिए?"

"आने वाले कुछ दिनों में हम अवश्य ही विजयी होंगे। वह औरंगजेब कहीं-न-कहीं मुझे अवश्य ही मिलेगा। उसका सिर काटकर हमें उसी देहरी के पत्थर के नीचे दफनाना है।"

तीन

प्रात:काल होते ही दरबार की कार्यवाही आरम्भ हुई। महाराज घंटे-दो घंटे के लिए वहाँ रुकने वाले थे। यह जानने पर सन्ताजी, धनाजी, कवि कलश और खंडो

बल्लाल ने भी वहीं रुकने का निश्चय किया। उन्होंने तय किया कि महाराज के निकलने के साथ ही वे भी निकलेंगे। इस बीच रंगनाथ स्वामी और कवि कलश के बीच आध्यात्मिक विषयों पर रात से ही चर्चा चल रही थी। यह चर्चा अनेक धार्मिक अनुष्ठानों और विधियों पर हो रही थी। दोनों ही शम्भूराजा के लिए बहुत चिन्तित थे।

दिन निकल आया। लोगों के नित्य के क्रिया कलाप आरम्भ हो गये। किन्तु फरवरी महीने की ठंडक अभी विद्यमान थी। महाराज ने बाग की खुली हवा में फरियादें सुनने का निर्णय लिया था। सेवकों ने तत्काल गद्दे तकिये लगा दिये। सूरज की कोमल किरणें ऊँचे पेड़ों से नीचे झरकर मृगशावकों की भाँति आसपास खेलने लगीं। पीछे शास्त्री नदी पर कुहरे के ढेर के ढेर आसमान की ओर सरकने लगे।

बगीचे में शम्भूराजा द्वारा न्यायदान का कार्य आरम्भ हुआ। खंडो बल्लाल की कलम तेजी से चल रही थी। महाराज मामलों के निर्णय में व्यस्त थे। कवि कलश ने समय का उपयोग करना चाहा। स्वामी जी और कवि कलश शास्त्री नदी पर गये। उन्होंने वहाँ रेती पर कुछ पूजा-विधि सम्पन्न की। शम्भूराजा के सुख और कल्याण के लिए देवी-देवताओं की पूजा की जा रही थी।

अर्जोजी और गिरजोजी स्वभाव कृपण थे। दोनों यादव बन्धु अपनी अपनी कैफियत रख रहे थे। शम्भू महाराज गर्मी और धूप को बढ़ते हुए देखकर बेचैन हो रहे थे। उन्होंने यादव बन्धुओं से आग्रह किया, "मुद्दे की बातें करिए, शब्दजाल न फैलाइये।" किन्तु यादव बन्धु पीछे हटने को तैयार न थे। उनकी फरियाद सुनने में लगभग पौने दो घंटे बीत गये। शम्भूराजा ने पूरी बात सुनी और खंडो बल्लाल को निर्णय लिखने के लिए बताया। वहाँ उपस्थित गरीब जनता की शिकायतें कुछ बड़ी न थीं। उन सभी पर आधे घंटे में शम्भू महाराज ने विचार कर लिया। किन्तु अब तक बढ़ती धूप की आँच आने लगी थी।

सुबह के नौ बजने को आये। महाराज एक अति गरीब व्यक्ति की फरियाद सुनने में व्यस्त थे। इतने में जैसे किसी के पेट में भाला घुस जाये और वह चीखने-चिल्लाने लगे, उसी तरह दूर से आक्रमण का शोर सुनाई देने लगा।

महाराजऽऽ, महाराजऽऽ, गजब हो गया। धोखा हो गया है। उस आवाज को सुनकर शम्भूराजा धक्क से रह गये। बगल में रखी तलवार हाथ में लेकर खड़े हो गये। दरवाजे पर हलचल मच गयी। बाग के शोरगुल को सुनकर कवि कलश भी तेजी से नदी की कछार चढ़कर ऊपर आ गये।

इसी बीच एक हरकारा पसीने से तर-ब-तर शम्भू महाराज के सामने आकर खड़ा हो गया। जिस घोड़े पर वह सवार था, उसके मुँह से फेन गिर रहा है। उसके घुटने पथरीले रास्ते पर दौड़ते दौड़ते फट गये थे। हरकारा बड़े लाचार स्वर में

चीखते हुए कहने लगा, "महाराज, दुश्मन, संगमेश्वर पर आक्रमण करता चला आ रहा है। छह सात सौ सवारों का दल मैंने अपनी आँख से देखा है, महाराज।"

इधर-उधर घूम रहे सैनिक अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो गये। शम्भूराजा ने जोर से आवाज दी, "पाखर्याऽऽ"। पाखर्या नाम का उनका घोड़ा दौड़ता हुआ पास आ गया। पाखर्या महाराज के सामने आकर खड़ा हो गया। आगे की यात्रा के लिए वह पहले से ही सोने और हीरे-मोतियों के गहनों से सज गया था। अपने स्वामी के स्वर की हताशा उसकी समझ में आ गयी। शम्भू महाराज शीघ्रता से घोड़े की पीठ पर सवार हो गये। रणांगण में शत्रु का सामना करने के लिए कवि कलश पहले ही तैयार हो गये थे। वृद्ध म्हालोजी घोड़पड़े की आँखों से आग की लपटें निकलने लगीं। उन्होंने हथेलियों पर जल्दी-जल्दी तम्बाखू मली और जबड़े में रखा। हाथ के भाले की चमचमाती नोंक को ऊपर उछाला।

चार-पाँच सौ सैनिकों को लेकर सुरक्षात्मक युद्ध कैसे किया जाय? इसकी योजना शम्भू महाराज ने शीघ्रता से निश्चित की। इतने में सामने के हरे भरे पेड़ों के पीछे से शोर सुनाई देने लगा, 'अल्लाहो अकबरऽऽ अल्लाहो अकबरऽऽ, दीनऽ दीनऽऽ' पीछे से आते मुगलों के घोड़े सामने दिखाई देने लगे।

इधर से म्हालोजी घोड़पड़े ने 'हर हर महादेवऽऽ' का नारा लगाया। उसके बाद सन्ताजी और धनाजी जैसे युवकों ने जोरदार गर्जना की, 'शिवाजी महाराज की जयऽऽ, सम्भाजी महाराज की जयऽऽ'

घोड़े घोड़ों से भिड़ गये। तलवारें बजने लगीं। घोड़े हिनहिनाने लगे! लोग बेहोश होकर गिरने लगे।

चौड़ी पीठ वाले एक ऊँचे घोड़े पर मुकर्रबखान बैठा था। उसने चमड़े का कुर्ता पहन रखा था। तीन-चार दिन की लगातार यात्रा से वह पूरी तरह थक गया था। किन्तु लड़ाई के मैदान में उसने जैसे ही शम्भू महाराज को देखा, उसके शरीर में भयंकर जोश व्याप गया। इसी अकेले शम्भू को मारने या पकड़ने की आकांक्षा से वह पिछले कितने दिनों से पागल हो रहा था।

देखते-देखते मुगलों ने शम्भूराजा की कोठी और सामने के परिसर को घेर लिया। कुछ लोग नदी की ओर भागे, किन्तु शत्रुओं ने उस रास्ते को भी रोक दिया। आरम्भ से मुगल भारी पड़ रहे थे। मुगलों के पास कम से कम हजार-बारह सौ घोड़े थे। उनसे चारों ओर से घिरे शम्भू महाराज के चार सौ सैनिक बहुत विवश दिखाई दे रहे थे। इतने वर्षों से पीछा करने के बाद; लाखों सैनिकों की हानि, सुदीर्घ प्रयास, जानलेवा मानसिक यातना के बाद भी अप्राप्य-सा सम्भाजी घात-अपघात से अप्रत्याशित रूप से हाथ लग रहा था। इस कल्पना मात्र से मुगल सैनिकों में अपार जोश भर गया था। सपासप तलवार चलाते हुए मुगल सैनिक शम्भू महाराज की ओर बढ़ रहे थे। मराठी सेना सैनिकों की भयंकर बाढ़ में टूटी नाव की तरह अटकी

दिखाई दे रही थी।

आरम्भ में इस अकल्पित और अनपेक्षित आक्रमण से मराठी सैनिक घबरा गये थे। किन्तु जब अपने प्राणों से प्रिय राजा की जान का खतरा उन्हें महसूस हुआ तो सभी मराठी सैनिक भड़क उठे। सन्ताजी और खंडो बल्लाल तो आग-बबूला हो उठे। उन्होंने अपने भाले सँभाले। मराठों के घोड़े मुगलों के घोड़ों पर आक्रामक हो उठे। 'पकड़ो', 'मारो', 'कुचल दो' जैसे शब्द युद्धभूमि में लाई की तरह फूटने लगे।

कुछ मराठा सैनिक बगल के घने पेड़ों और झाड़ियों की आड लेकर भाले चलाने लगे। अपने राजा को बचाने के आवेश और जोर-जोर से चिल्लाने से इतना शोर उठा कि मुकर्रब को लगा कि जितने लोग सामने हैं उसके दुगुने झाड़ियों में छिपे हैं। परन्तु अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना मुकर्रब सम्भाजी की ओर दौड़ पड़ा। मुगल सैनिकों ने एक साथ सम्भाजी को चारों ओर से घेरने का प्रयास किया। शम्भू महाराज भी ऐसी लड़ाई नहीं किये थे। इसलिए उनके रक्त-मांस में असीम जोश भर गया था। शम्भूराजा के मजबूत हाथों में बहुत पैनी धार वाला भाला था। अपनी पूरी ताकत लगाकर वे तलवारबाजी कर रहे थे। दीवाली के अवसर पर जैसे चकरी चिनगारियाँ चारों ओर बिखेरती अपनी जगह पर घूमती है उसी तरह शम्भू महाराज अपनी जगह पर चारों ओर घूमते हुए अपना घोड़ा नचा रहे थे।

शम्भूराजा की सहायता के लिए धनाजी, सन्ताजी और खंडो बल्लाल एक साथ आगे बढ़े। उन्होंने अपने घोड़ों को आक्रामक बनाया। उन्होंने भयानक तलवारबाजी की। इसी बीच नदी की ओर से कुछ पठान धोखे से शम्भूराजा पर टूट पड़े। उनका मुकाबला करने के लिए शम्भूराजा उनकी ओर मुड़े। मुकर्रब इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि शम्भूराजा उसकी ओर से किसी तरह असावधान हों। अपने हाथों में हैदराबादी नंगी तलवार लिए मुकर्रब शम्भू महाराज की ओर दौडा। शम्भूराजा की पीठ उसकी ओर थी। मुकर्रब अपने घोड़े को दौड़ाते हुए शम्भू महाराज के घोड़े पर चढ़ाने लगा। उसकी तलवार चमक उठी। वह ऐसा वार करना चाहता था कि कम से कम शम्भू महाराज का एक हाथ कन्धे से अलग हो जाय। इसी उम्मीद से उसने शम्भूराजा पर तलवार चलाई। किन्तु इसी बीच एक चमत्कार घटित हुआ।

शम्भूराजा के शरीर पर तलवार पहुँचे इसके पहले ही बीच में कोई आ गया। अपने घोड़े से छलाँग लगाकर शम्भूराजा के घोड़े पर कोई आ गया और शम्भूराजा को अपनी गोद में ले लिया और शम्भूराजा के लिए आड़ बन गया। खान की तलवार उस व्यक्ति के कन्धे में कचकचाकर धँस गयी। हड्डियाँ चूर चूर हो गयीं। चारों ओर गर्म खून के फौवारे उड़ने लगे। शम्भूराजा का मखमली कुर्ता भी गर्म लहू से भीग गया। राजा की जान बचाने के लिए अपनी कुर्बानी देने वाला यह हृष्ट-पुष्ट

व्यक्ति बीच में गिर पड़ा। शम्भूराजा ने अपना घोड़ा घुमाया और रक्तस्नात उस व्यक्ति की ओर देखा।

ये थे सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े। म्हालोजी बाबा के धराशायी होते ही मराठे पूरी तरह भड़क उठे। सन्ताजी को अपने पिता के शव की ओर देखने का अवकाश नहीं था। सन्ताजी, धनाजी, खंडो बल्लाल आदि जान लगाकर लड़ रहे थे। इसी समय किसी ने मुकर्रब के घोड़े के कूल्हे पर तलवार से जोरदार आघात किया। पैरों की हड्डियाँ टूट जाने से घोड़ा जोर से हिनहिनाता हुआ बगल में गिर गया। घोड़े के नीचे आने के पहले ही खान ने दूसरी छलाँग लगा दी। इससे पहले किसी ने मुकर्रब को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं था। परन्तु अपने पहनावे और रोब-दाब से वही मुगल सरदार लग रहा था। शत्रु का सरदार बिना घोड़े का हो गया है, यह देखकर मराठे उसकी ओर दौड़े। मुगल सैनिक भी पूरे जोश में थे। दोनों दल के सैनिकों में घमासान युद्ध हो रहा था। एक दूसरे की गर्दनों पर तलवारें भाँज रहे थे। तलवारों के चपल वार से सिर कट-कटकर बगल में गिर रहे थे। लाल खून से पूरा बगीचा भर गया था।

घोड़े से नीचे गिरना मुकर्रब को अपशकुन-सा लगा। मुगल सैनिकों ने उसे पीछे खींच लिया। सिपाही मुकर्रब को दूसरे घोड़े पर बिठाने लगे। इस बीच मराठों ने उन्हें दबाते-कुचलते बगीचे से बाहर निकाला। इसी समय दूर विश्राम कर रहे पचास-साठ मराठी सैनिकों का दल 'हर-हर-महादेव' की गर्जना करते हुए बड़े वेग से महादरवाजे से निकलकर आया। मुकर्रब की दृष्टि उस ओर गयी। उसे लगा कि कोठी में अभी भी हजार-दो हजार की फौज होगी। मराठों का मुकाबला कठिन और जानलेवा था। दूसरे घोड़े पर बैठते हुए मुकर्रबखान ने अपने आसपास देखा तो सैकड़ों पठानों और दक्खिनी मुसलमानों के शव बिखरे पड़े थे। उसके बारह सौ में से कम-से-कम चार सौ सैनिक जान गँवा चुके थे। खान उस जंगल की रहस्यमयी कोठी और आसपास के हरे-भरे जंगल से पूरी तरह घबरा गया। अपनी बची-खुची सेना को उसने धीमे स्वर में आदेश दिया, "भागो पीछेऽऽ।"

शत्रुसेना लड़ाई छोड़कर पीछे हट गयी। शम्भूराजा की दृष्टि बगीचे पर गयी। खलिहान में मक्के के गट्ठों की तरह चारों ओर शव बिखरे पड़े थे। जो जिन्दा थे वे तड़प रहे थे, चिल्ला रहे थे, 'या अल्लाह!' 'हे भगवानऽऽ' कराहने की ऐसी आवाजें सुनाई पड़ रही थीं। घायल घोड़ों का पीड़ा से हिनहिनाना सुना नहीं जा रहा था। अपनी हुकूमत के इलाके में शत्रु इतनी दूर तक कैसे चला आया? यह सोचकर शम्भूराजा को धक्का लग रहा था। चारों ओर के रास्ते पर सेनाएँ तैनात हैं, हर चौकी पर पहरे लगे हैं। समुद्र से लेकर थल तक के रास्ते पर कड़े पहरे लगे फिर वह शत्रु इतने समीप तक कैसे आ गया? निश्चय ही कहीं धोखा हुआ है। किसी धोखेबाज की उँगली पकड़कर ही शत्रु-सेना यहाँ तक आ पायी है।

अधिक विचार करने का समय नहीं था। कम से कम साढ़े तीन सौ मराठे बलिदान हो चुके थे। शम्भूराजा के साथ केवल सौ-सवा सौ मावल ही बचे थे। सन्ताजी, धनाजी, खंडो बल्लाल जैसे मँजे हुए वीर शम्भू महाराज के अगले आदेश की प्रतीक्षा करते खड़े थे। अगली यात्रा जल्दी हो सके, इसलिए राजा ने अपनी लड़ाकू सेना को बड़े आत्मविश्वास के साथ कल रात से ही भेजना आरम्भ कर दिया था। अब उनके साथ बहुत मामूली संख्या में फौज थी। पेड़ों और कँटीली झाड़ियों से भरी यह दुर्गम जगह जहाँ सूर्य की किरणें भी सरलता से नहीं पहुँच पातीं वहाँ शत्रु पहुँच जाएगा, वह भी इतनी सरलता से, ऐसा तो किसी ने सोचा तक नहीं था। खंडो बल्लाल, धनाजी सहित अनेक वीरों के छोटे-बड़े घावों के कारण उनके कपड़े खून से सने थे। अभी भी अनेक सैनिकों के ललाट और गालों से खून बह रहा था। लड़ाई के दौरान एक पठान का बाण कवि कलश की कलाई में घुस गया था। उन्होंने जल्दी जल्दी में पट्टी बँधाई थी, परन्तु खून अभी भी रिस रहा था। इसी समय किसी तरह अपनी जान बचाते हुए दो गुप्तचर भागते हुए वहाँ पहुँचे। वे चिल्लाकर कहने लगे, "महाराजऽऽ महाराज अभी भी कम से कम डेढ़ हजार की फौज पीछे से भागती हुई आ रही है। घर के ही किसी व्यक्ति ने धोखा किया है।"

"महाराज! बड़ा धोखा है। जल्दी से आगे निकल जाइये।" दूसरे गुप्तचर ने कहा। धनाजी और सन्ताजी राजा के सामने अपने घोड़े चक्राकार घुमा रहे थे। दोनों में से प्रत्येक ने कम से कम पचास मुगलों की जान ली थी। उनके हाथों की नंगी तलवारों से अभी भी खून टपक रहा था। चेहरों पर, कपड़ों पर अभी रक्त दाग दिख रहे थे। खंडो बल्लाल की आँखों में अभी भी रक्त के फौवारे छूट रहे थे। सभी लोगों ने चिल्लाते हुए पूछा, "महाराज आज्ञा। महाराज आज्ञाऽऽ।"

शम्भूराजा ने एक क्षण के लिए आँखें मूँद लीं। भगवान का स्मरण किया। उन्होंने कहा, "मित्रो! मैं आपके जोशभरे पौरुष की उमंग समझ सकता हूँ। परन्तु परिस्थिति ने धोखा किया है। अब तलवार से नहीं बुद्धि से लड़ाई लड़नी होगी।"

"याने किस तरह?"

"यहाँ न रुककर, हमलोग अलग-अलग रास्तों से जाएँगे। सन्ताजी और खंडोवा आप एक भी क्षण अब यहाँ न रुकें। चलिए हवा की गति से आगे बढ़िए। चिपलून की वाशिष्ठी नदी के घाट तक कहीं भी न रुकिए। वहाँ अपनी बड़ी चौकी है।"

"पर महाराज आपको छोड़कर?" सन्ताजी का स्वर भर्रा गया।

"नहीं भाई, अब एक दूसरे की माया में न अटकिये। सन्ताजी और खंडोवा आपलोग चिपलून की ओर भागिए। रास्ते में येसूरानी और अन्य राजपरिवार की स्त्रियों की पालकियाँ मिल जाएँगी। उनकी रक्षा कीजिए। धनाजी आप बचे-खुचे लोगों को लेकर हातखंबा की ओर निकल जाइये। कुछ भला-बुरा प्रसंग आ जाये

तो गोवा की ओर के रास्ते को रोककर रखिये।''

"और महाराज आप?" धनाजी की-आवाज दयनीय हो गयी। सन्ताजी और खंडो बल्लाल ही नहीं, सभी युवक एक-दूसरे को दुखी होकर देखने लगे। उनकी आँखें भर आयीं। वे घोड़े पर बैठे शम्भू महाराज को ऊपर से नीचे तक देखने लगे। "चलो निकलो, छिटक जाओऽ।" शम्भूराजा ऊँची आवाज में आदेश दे रहे थे। किन्तु युवकों की दृष्टि शम्भूराजा के पैरों से चिपक रही थी।

"नहीं महाराज, हम आपको अकेला छोड़कर नहीं जाएँगे।"

"तो आपके हठ का विपरीत परिणाम होगा। यदि सभी एक साथ मिलकर जाने की कोशिश करेंगे तो सभी पकड़े जाएँगे। यदि ऐसा हुआ तो अनर्थ हो जाएगा।"

"महाराजऽऽ" ऐसा घोष करते हुए सन्ताजी घोड़े पर ही औंधा गये। उन्होंने शम्भूराजा की गोद में सिर रख दिया। महाराज उनके खून से मने चीकट बालों में हाथ फेरने लगे। उसी समय महाराज ने धनाजी और खंडो बल्लाल के कन्धों पर हाथ रखकर थपथपाया। युवकों को धीरज बँधाते हुए महाराज ने कहा, "चलो बच्चो, निकलो, अपनी-अपनी रक्षा स्वयं करो। और साथ ही हिन्दवी स्वराज्य की रक्षा करो। इसी दक्खिन की मिट्टी में औरंगजेब की कब्र बनानी है।"

"पर महाराज आपको छोड़कर?"

"अरे किसलिए हमारे प्राणों की इतनी चिन्ता करते हो?" शम्भूराजा की मुद्रा आत्मविश्वास और स्वाभिमान से भर आयी थी। वे विश्वासपूर्वक गरजे, "माँ के स्तन से दूध पीने वाले बच्चे को अलग करना जिस प्रकार कठिन है उसी प्रकार इस सह्याद्रि की गोद में खेलने वाले इस शम्भू को इससे दूर ले जाना बहुत कठिन है। आपलोग निश्चिन्त होकर आगे जाइये।"

चार

सम्भाजी और कवि कलश दोनों बड़े वेग से घोड़े दौड़ा रहे थे। पानी और रेत से होकर ये जानवर अपनी जान की बाजी लगाकर भाग रहे थे। कवि कलश के हाथ में असीम वेदना हो रही थी। रक्त बहना बन्द नहीं हो रहा था। अपने प्राणप्रिय राजा को उलझाना भी उचित नहीं लग रहा था। महाराज ने अपने साथ केवल पन्द्रह घुड़सवार लिये थे। उन्हें इस अकल्पनीय संकट से बच निकलना था। शत्रुओं से भरे

इस घने जंगल से जान बचाकर, पहले बाहर निकलना था।

कवि कलश घोड़ा दौड़ाते हुए विनती के स्वर में बोले, "राजन आप आगे जाइये, अपनी जान बचाइये, राज्य बचाइये। मेरी चिन्ता न करें। मुझे यहीं पर रुकने दें।"

कविराज का काले करौंदे जैसा भरा मुख महाराज ने देखा। परन्तु उस स्थिति में कविराज से निवेदन करते हुए निश्चिन्तता से कहा, "नहीं कविराज! यह असम्भव है। 'राजद्वारे स्मशाने च यस्तिष्ठति स: बांधव:।' "जो राजदरबार और श्मशान में साथ देता है वही सच्चा बन्धु होता है। चलिए चिन्ता न कीजिए।"

नावड़ी बन्दरगाह से घोड़ा दौड़ाते हुए उन्होंने लगभग दो कोस की दूरी तय की थी। शम्भूराजा ने दाहिनी ओर देखा। सामने झाड़ियों के बीच नदी के किनारे सरदेसाई की कोठी दिखाई दे रही थी। दाहिनी ओर मन्दिर और हरी झाड़ियों में अधछिपे उनके कलश, सब कुछ शान्त लग रहे थे। तट की पथरीली सीढ़ियाँ ऐसी लग रही थीं जैसे कोई पथिक पानी में पैर लटकाए बैठा हो। महाराज ने घोड़े की लगाम खींचकर उसे रोका और पीठ पीछे शास्त्री नदी के पाट को देखा। नदी तट की रेत धूप में चमचम चमक रही थी। बीच बीच में छोटी-छोटी धाराएँ और रेत दिख रही थी।

नावड़ी पर अचानक हुए आक्रमण का यह कस्बे की ओर अधिकांश लोगों को कोई समाचार न था। पीड़ा और खून मे बेचैन हाथ को कविराज ने अपने सीने से दबाकर रखा था।

शम्भूराजा ने एक क्षण में निर्णय लिया कि मार्ग में अन्यत्र कहीं रुकने की अपेक्षा यहीं पर वेषान्तर और दिशान्तर करना अच्छा है। क्योंकि इस तरह राजसी वस्त्रों और हीरे जवाहरात के आभूषणों के साथ आगे जाना धोखादायक हो सकता था।

महाराज ने जल्दी से अपना घोड़ा दाहिनी ओर आड़ में ले लिया। अन्य साथियों ने भी अपने घोड़े आड़ में कर लिए। महाराज ने अपने घोड़े पाखर्‍या के गले से सारे साज उतार लिए। आगे बढ़ते बढ़ते अपने शरीर से भी सारे आभूषण उतार लिये। उन्हें समेटते हुए वे सरदेसाई की सीढ़ियों पर पहुँच गये।

बाहर से अचानक खून सने कपड़ों में शम्भूजी महाराज और कविराज ने प्रवेश किया तो नौकर-चाकरों में खलबली मच गयी।

रंगोबा सरदेसाई बाहर दरवाजे पर ही बैठे थे। नाई उनके बाल काट रहा था। खून से सने कपड़ों में राजा को देखकर रंगोबा उठकर खड़े हो गये। घर के अन्य सदस्य—स्त्री-बच्चे भागते हुए बाहर आये। उन्होंने यह अनुमान लगाया कि निश्चित रूप से कुछ धोखा हुआ है, कोई संकट आया है।

"महाराज, यह क्या हुआ? ऐसा कैसे हुआ? बताइये मैं क्या करूँ? बताइये महाराज।" सरदेसाई ने घबराकर कहा।

"घबराओ नहीं। लेकिन जल्दी करो! कविराज के हाथ की मरहमपट्टी कर दो। हमें आगे जाने की जल्दी है।" शम्भूराजा ने कहा।

एक भी क्षण नष्ट किये बिना राजा नाई के सामने बैठ गये। उन्होंने संकेत किया और नाई ने उनके रेशम से मुलायम बालों और नोकदार दाढ़ी को काटना आरम्भ किया। सरदेसाई के नौकरों ने आँगन लगी औषधीय वनस्पति का गूदा निकालकर कविराज के घाव में भरा और फिर चारों ओर कसकर पट्टी बाँध दी।

सिर और दाढ़ी को सफाचट कर देने से शम्भूराजा का चेहरा किसी योगी के समान दिखाई दे रहा था। रंगोबा की बूढ़ी माँ कृष्णाबाई दौड़ती हुई बाहर आयी। सभी अनुभव कर रहे थे कि महाराज पर कोई भयानक संकट आ गया है। रंगोबा की माँ सत्तर वर्ष की थीं, पतली, लम्बी, छरहरे शरीर की। उनकी गोरी झुर्रियों से भरी मुखाकृति को देखकर शम्भूराजा को जीजामाता की याद आ गयी। उन्होंने अपने हाथ की मोतियों की माला को उन्हें पहना दिया। कृष्णाबाई ने गद्‌गद होकर राजा को गले से लगा लिया। पूरी कोठी में हाहाकार मच गया था।

बाहर नदी के किनारे झाड़ियों में पन्द्रह-सोलह घोड़े खड़े थे। तोप से निकली गोली की तेजी से वे दो कोस तक भागते हुए आये थे। रेती और पत्थरों से होकर भागते हुए उनके घुटने फट गये थे। पाखर्‍या की नाक से खून बह रहा था। महाराज ने लगाम को इतने जोर से खींचा था कि उसकी नाक रगड़ खा गयी थी।

आगे की दौड़ और भी खतरनाक थी। इसके बाद कब और कहाँ रुकना है कुछ निश्चित नहीं था। जितना पी सकते हैं पी लेना चाहिए। आगे की दौड़ के लिए तैयार रहना चाहिए। उन मूक जानवरों ने ऐसा सोचा होगा। पाखर्‍या ने बड़ी सावधानी से आसपास देखा। आगे-पीछे, इधर उधर कोई जीव जन्तु तक दिखाई न दिया। वह प्यासा घोड़ा थोड़ा आगे सरक गया। धीरे से पानी में अगले दो पैर डालकर, पीठ झुकाकर पानी पीने लगा। उसके साथ अन्य घोड़े भी सरक गये और सामने साफ पानी पीने लगे।

पानी पीते पीते कुछ समय बाद पाखर्‍या को सामने पानी में हिलती-डुलती आकृति दिखाई दी। वह होशियार जानवर घबरा गया। उसने कान खोलकर और गर्दन सीधी करके सामने के तट पर देखा। दूसरे किनारे पर रेती में दबे पैरों से लुकते-छिपते शम्भूराजा की खोज में शत्रु का एक दल आ गया था।

सामने की बालू पर अत्यन्त घबराया हुआ गणोजी शिर्के खड़ा था। अपने 'बाप को दिखाओ नहीं तो श्राद्ध करो' ऐसे आवेश में मुकर्रबखान गणोजी को खींचकर वहाँ ले आया था। उसके साथ साठ-सत्तर घुड़सवार तैयार खड़े थे। बगीचे

की लड़ाई में गणोजी ने अपने को पेड़ों की आड़ में छिपा लिया था। परन्तु पहले आक्रमण में थोड़ी-सी तलवारबाजी करके शम्भूराजा निकल गये। उसी समय मुकर्रब ने गणोजी को खींचकर बाहर निकाला। खान की दो हजार की फौज अभी भी संगमेश्वर के मैदान में थी वह अभी तक गाँव तक पहुँची न थी। मुकर्रब को यह भी जानना था कि शम्भूराजा के पास युद्ध के लिए कितनी फौज है? इसलिए सलामी में उसने थोड़ा पीछे हटकर अन्दाजा लिया। पीछे रह गयी फौज का नेतृत्व मुकर्रब का बेटा इखलामखान कर रहा था। अब इखलास अपनी दो हजार फौज के साथ संगमेश्वर पहुँच गया था। कोई शोरगुल या हो-हल्ला किये बिना पिता-पुत्र ने नदी के किनारे से झाड़-झंखाड़ों वनों-जंगलों से अपनी खोज शुरू कर दी थी।

बालू में खड़े गणोजी की जली-कटी नजर नदी के दूसरे किनारे पर गयी। उस झाड़ी में चुपचाप चोर की तरह पानी पीते घोड़े, उनके शरीर पर रेशमी वस्त्र, पाखर्‍या के पैरों में घुटनों के ऊपर सोने के चार-चार तोड़े उसे दिखाई पड़े। गणोजी धीरे से किन्तु उत्साहित स्वर में मुकर्रब से बोला, "खान साहब! वह, वह देखिए सम्भा का घोड़ा।" पाखर्‍या ने साँस रोककर अपनी ओर देखते हुए शत्रुओं को देखा। देखते ही वह ईमानदार घोड़ा पीछे मुड़ा और कोठी की ओर तेजी से भागा। वह हिनहिनाते हुए शम्भूराजा को खतरे का संकेत देने लगा।

इस समय तक शम्भूराजा ने तैयारी कर ली थी। वे रंगोबा की माँ से विदा ले रहे थे। इसी समय महाराज ने पाखर्‍या का अशुभसूचक हिनहिनाना सुना। उनका कलेजा मुँह को आने लगा। उनकी समझ में आ गया कि निश्चित रूप से कोठी को घेरा जा रहा है। उन्होंने एक क्षण के लिए जीजामाता, शिवाजी महाराज और जगदम्बा का स्मरण किया। यही समय था घने जंगलों से फरार होने का। जंगली पंछी के समान उड़ान भरने का। उन्होंने कवि कलश की ओर देखा उनका हाथ सीने के साथ ठीक से बाँध दिया गया था। फिर भी हाथ से खून टपक रहा था। चेहरे पर असहनीय वेदना झलक रही थी। कविराज ने झट से शम्भूराजा के पैर पकड़ लिये वे रोते कलपते कहने लगे, "राजन आप यहाँ से निकल जाएँ नहीं तो बन्दी बना लिए जाएँगे। कुछ भी करें लेकिन पहले यहाँ से निकल जाएँ।"

अब कृतज्ञता के दो आँसू बहाने का भी समय न था। रंगोबा ने समीप रखी तलवार शम्भूराजा के हाथ में पकड़ा दी। कृष्णाबाई ने चावल लेकर राजा की नजर उतारी जिससे उनकी सारी ईड़ा-पीड़ा भाग जाय। 'पाखर्‍या' ऐसी आवाज लगाते हुए शम्भूराजा कोठी से बाहर निकले अपने स्वामी को असुविधा न हो इसलिए वह मूक जानवर अगले पैरों को नीचा किये कोठी के बाहर खड़ा था। राजा ने छलाँग लगाई और लगाम खींचकर सामने देखा।..

जैसे बाढ़ का पानी अचानक चारों ओर फैल जाये, उसी तरह फौज ने पूरे

इलाके को चारों ओर से घेर लिया था। कोठी के बाहर कर्णेश्वर मन्दिर के सामने वाले शृंगारपुर के रास्ते से, उधर नावड़ी की ओर से, पीछे नदी के किनारे से घोड़े ही घोड़े आ रहे थे। शत्रु संकेत की सीटियाँ बजा रहे थे। पठान, दक्खिनी मुसलमान और गणोजी शिर्के के साथ के सौ-दो सौ मूर्ख ऐसे डेढ़ हजार घुड़सवारों ने कोठी को चारों ओर से घेर लिया था। चारों ओर से भालों, बर्छियों और तलवारों का जंगल खड़ा हो गया था। दुष्ट कालियानाग का मर्दन करने गये कृष्ण को कालिया ने ही दबोच लिया था। दैवगति के सामने सारे मानवीय प्रयत्न निष्फल हो चुके थे।

बलिदान की भावना और रणोन्माद की तरंगों से शम्भूराजा का शरीर भभक उठा था। हाथ में नंगी तलवार लिये उन्होंने अपना घोड़ा अपनी जगह पर ही वर्तुलाकार घुमाया। इतनी बड़ी फौज होने पर भी इस बलवान शेर को कैद करने का साहस किसी को नहीं हुआ। दूर से ही रस्सी के फन्दे में फँसाने का प्रयास मुकर्रब कर रहा था। इसी बीच इखलासखान ने पीछे से अपनी तलवार का वार घोड़े के पुट्ठे पर किया। खून की धारा बहने लगी। घोड़ा जोर से हिनहिनाया। विकल होकर पैर पटकने लगा। इतने में साठ-सत्तर पठान एक साथ महाराज पर टूट पड़े। उनमें से एक ने भाले की लाठी का एक जोरदार वार महाराज की जाँघों पर किया। शम्भूराजा असह्य पीड़ा से बेजार हो गये। उनके हाथ से तलवार गिर गयी। वे खाली हाथ खड़े हो गये।

शत्रुओं ने मौके का फायदा उठाया।

सह्याद्रि का शम्भू महाराज कैद हो गये।

यह करुण.दृश्य देखकर कृष्णाबाई ने पत्थर पर अपना सिर पटक दिया। रंगोबा का सिर चकरा गया और वे गिर पड़े। शम्भूराजा को बन्दी बना देखकर भीड़ में खड़ा गणोजी शिर्के आनन्द विह्वल होकर रोने लगा। बीच बीच में आँसू पोंछते हुए वह हँसता था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह दृश्य सत्य है या झूठ? ऐसे में उसकी स्थिति पागलों जैसी हो रही थी।

पिछली तीन रातों से निरन्तर जागती हुई सावधान शत्रु सेना अब 'अल्लाहो अकबर' कहकर किलकारियाँ मारने लगी थी। कुछ सैनिकों ने आसपास इस दृश्य को देखने के लिए एकत्र प्रजा को लाठियों से पीटना शुरू किया। बगल के घरों और सरदेसाई की कोठी को आग लगा दी।

शत्रु सेना भी इस बात के लिए सम्भ्रमित हो गयी थी कि इस अचानक प्राप्त सम्पदा का क्या करें? शम्भूराजा और कविराज पर कम्बल उढ़ाया गया। पकड़े गये चोरों की तरह उन्हें गाँव से दो कोस के फासले पर ले जाया गया। बायें हाथ पर वरुणा नदी का पाट था। वहीं नदी के किनारे मुकर्रबखान रुका। वहाँ निर्णय लिया गया कि मुकर्रब अपने साथ केवल छह- सात सौ घुड़सवारों को लेगा। शेष थके हुए

घोड़ों और घुड़सवारों तथा गणोजी के दो सौ साथियों को पीछे रखा जाएगा। वे वहीं से पहरा देंगे। यदि पीछे से आक्रमण हुआ तो वे उसे रोकेंगे। मुकर्रब ने अपने सहयोगियों को आदेश दिया, 'जो कुछ भी खाने के लिए है उसे शीघ्रता से समाप्त कीजिए।' उनके थैलों में जो खाद्य सामग्री बची थी उमे सिपाहियों ने खड़े-खड़े ही खा लिया। बगल की नदी में घोड़ों ने पानी पिया। सैनिक और घोड़े तैयार हो गये।

शम्भूराजा और कवि कलश अवाक् हो गये थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि वे स्वप्न की स्थिति में हैं या यथार्थ की। इखलासखान ने आगे बढ़कर हाथ-पाँव बँधे शम्भूराजा और कवि कलश के मुँह पर तमाचा मारा। शम्भूराजा को तमाचा लगाने से पहले ही कवि कलश ने इखलासखान के मुख पर जोर से थूक दिया। इस पर अपनी कमर पर बँधा चाबुक इखलास ने बाहर निकाल लिया। उसने शम्भूराजा और कवि कलश के सिर पर, गालों पर वार किया। मुड़े हुए उनके सिरों और गालों पर काले-नीले निशान उभर आये। दोनों को घोड़ों पर बाँधा गया। उनके शरीर के राजसी कपड़े फाड़ दिये गये। उनकी जगह उन्हें हरे रग के मुसलमानी ढंग के कपड़े पहनाये गये।

नुकीली दाढ़ी, कन्धे पर लहराते लम्बे मुलायम रेशमी बाल साफ हो गये थे। मुंड़ा हुआ सिर और उस पर घावों के निशान, शरीर पर हरे कुर्ते। इस वेषान्तर से शम्भूराजा और कविराज दोनों ही एकदम अलग दिख रहे थे। उन्हें सही रूप में पहचान पाना किसी के भी लिए असम्भव था।

शम्भूराजा के इस परिवर्तित रूप को देखकर गणोजी पेट पकड़कर जोर-जोर से हँसा। वह ईर्ष्या भाव से बोला, "वाह-वाह रायगढ़ के शम्भू महाराज!" मुकर्रबखान अपनी कड़क आवाज में गणोजी को डाँटते हुए बोला, "गणोजी, पागल, यह हँसी-मजाक करने का समय नहीं है। आगे का रास्ता दिखाओ।" आसपास के पर्वत और गहरी घाटियों को देखकर वह घबरा गया था। उसने घबराहट भरे स्वर में कहा, "खान साहब वह दूरी पर दिखाई देने वाले पर्वत की चोटी को दिन के उजाले में पार किया तो अच्छा होगा। नहीं तो मधुमक्खियों के छत्ते फूटने की तरह मराठे हमारी दुर्गति कर देंगे।"

"किन्तु गणोजी! खुदा की खैर से मिला यह शिकार आसानी से पचने वाला नहीं है। कुछ भी करो! अधिक रात होने से पहले हमें कराड़ के अपने मुगली क्षेत्र में पहुँचना है।"

"चिन्ता क्यों करते हैं, मुकर्रब मियाँ? कराड़ का रास्ता हमारे शृंगार के क्षेत्र से ही होकर जाता है। यह तो हमारा ही क्षेत्र है।"

बिना एक क्षण भी कहीं रुके, आठ नौ सौ चुस्त दुरुस्त घोड़े मार्ग पर बढ़ने

लगे। नायरी के पास शास्त्री नदी पर एक लकड़ी का पुल था। इसे शम्भूराजा ने बनवाया था। नदी को पार करके घोड़े तेज गति से दौड़ने लगे। शम्भूराजा की दुखी दृष्टि शास्त्री नदी का प्रवाह देखने लगी। यह धारा उनकी प्यारी रानी येसू के मायके शृंगारपुर से नीचे की ओर आ रही थी। उनका स्मरण आते ही अनायास आँखों से आँसू की चार बूँदें टपक पड़ीं।

अब ससुराल, स्वराज्य, सौख्य के रास्ते, सुख के अनुभव, मित्रों के स्थान, मन्दिर, पानी से भरे घाट आदि एक-एक करके पीछे छूट रहे थे। सामने का छाती तक ऊँची घासों और कँटीली झाड़ियों से भरा रास्ता कट नहीं रहा था।

निवली के मैदान पर गड़ेरियों के आठ स्वस्थ तरुण लड़के खड़े थे। सिर पर लाल भड़क या नीली पगड़ी बाँधे, हाथ में लाठियाँ और कमर में दो दिनों के लिए रोटियाँ बँधी थीं। जंगल घासों के बीच लुप्त हुए रास्ते की ओर वे देख रहे थे। ऐसी सूचना दी गयी थी कि दिन कभी भी मेहमान आ सकते हैं। इसलिए आठ-नौ सौ लोगों के लिए रोटियाँ बनाकर तैयार रखें। पिछले दो दिनों से रोज इतने लोगों के लिए रोटियाँ बनाकर निवली के पास गड़ेरिये खड़े रहते थे।

दो दिन पूर्व गणोजी शिर्के का कर्मचारी गोवर्धन पन्त स्वयं निवली आ गया था। गोवर्धन पन्त ने वहाँ लोगों को बताया था कि जयनगर बन्दरगाह के पास कुछ ईरानी चोरी से हीरे की तस्करी करते हैं। उन्हें पकड़ने के लिए शिर्के की एक सेना वहाँ तैनात है। उन परदेशी व्यापारियों को पकड़कर कराड़ के रास्ते सतारा ले जाने के लिए शम्भू महाराज ने आदेश दिया है। इस बहाने से शिर्के और शम्भू महाराज की अनबन समाप्त हो गयी है, ऐसा स्थानीय लोगों ने अनुभव किया था। लोग आपस में तालियाँ बजाकर कह रहे थे, 'अन्त में पत्नी का भाई साला, मीठे सम्बन्धों में आला।'

गोवर्धन पन्त एक कंजूस व्यक्ति के रूप में पूरे इलाके में विख्यात थे। किन्तु इस समय वह बहुत उदार हो गया था। रोटी बनाने वाली गड़ेरियों की स्त्रियों को उसने अँजुरी-अँजुरी भर रुपये बाँटे। किसी ने उनसे विनोद में पूछ भी लिया था, "सरकार! रोटियाँ दो-तीन दिनों के लिए चाहिए या एक महीने के लिए? इसी बीच गोवर्धन पन्त ने कहीं से दो सौ हृष्ट-पुष्ट घोड़े भी पैदा कर लिए थे। उन्हें निवली झरने के समीप पेड़ों की आड़ में बाँध दिया गया था। इसी से गाँव वालों ने अनुमान लगा लिया था कि शिकार कोई बड़ा ही होने वाला था।

गड़ेरियों के आठ हृष्ट-पुष्ट युवकों को रहबर के रूप में चुन लिया गया था। घाट का वह जंगली रास्ता बहुत कठिन था। उसमें अनेक खतरे थे। कम से कम आठ-दस हट्टे-कट्टे लोगों के साथ होने पर ही कोई उस जंगल में प्रवेश करने का साहस करता था। शेरों की गर्जनाएँ और जंगली सूअरों की गुर्राहटें आसपास सुनते

हुए ही घाट चढ़ना पड़ता था। कभी कभी ही कुछ व्यापारी हजार-पाँच सौ बैलों की पीठ पर सामान लादकर इस घाट से ऊपर चढ़कर दूसरी ओर पाटण या कराड़ की ओर चले जाते थे। इस रास्ते से परिचित होने पर भी व्यापारी निवली या नेदरवाड़ी के युवकों को राह दिखाने के लिए अपने साथ ले जाते थे। उन्हें साथ लेकर आगे बढ़ते थे।

कल से लोग राह देखते बैठे थे। स्त्रियाँ टोकरी टोकरी भर रोटियाँ बनाकर मेहमानों की प्रतीक्षा कर रही थीं। बैठे-बैठे लड़कों का हँमी-मजाक भी चालू था। किमी ने मजाक में पूछा, "गोवर्धन पन्त कभी इस घाट पर चढ़े हैं क्या?" इस पर दूसरा युवक हँसते-हँसते बोल पड़ा, "पन्त की बात तो छोड़ो, गणोजी शिर्के के बाप-दादाओं तक ने यह घाट कभी देखा नहीं है।"

दोपहर की धूप तमतमाने लगी। इसी समय ऊँची घासों और घने पेडों के बीच से आठ-नौ सौ घोड़े एक साथ बाहर निकले। मामने की चढ़ाई के कारण सभी पसीने से तर हो चुके थे। गोवर्धन पन्त ने शीघ्रता से झरने के पास बँधे दो सौ घोड़ों का काफिला बाहर निकाला। मुसलमान सैनिक अपने अपने घोड़ों मे छलाँग लगाकर नीचे उतरे। गड़ेरियों की स्त्रियों ने रोटियों की टोकरियाँ आगे कर दीं। थके-हारे सैनिकों ने चटनी के साथ रोटियाँ खड़े-खड़े ही निगल लीं। जिनके घोडे थक गये थे, जख्मी हो गये थे या तीन-चार दिन की लगातार दौड़ के कारण अशक्त हो गये थे उन्हें बदलकर पन्त ने नये घोड़ों की लगाम सैनिकों को पकड़ाई।

राह दिखाने वाले लड़कों की आँखें सौदागरों को ढूँढ़ रही थीं। दोनों सौदागर उन्हें दिखाई पड़े। चौड़ी पीठ वाले ऊँचे घोड़ों पर उन्हें जकड़ दिया गया था। दोनों का चेहरा पिटाई और सूजन से मनहूस दिखाई पड़ रहा था। उनके हाथ पीठ पर कसकर बाँध दिए गये थे। साथ वे रो या चिल्ला न सकें, इसलिए उनके मुँह मे कपड़ा ठूँसकर एक पट्टी कान के पीछे बाँध दी गयी थी। यह वही ढंग था जैसे घोड़ों के मुँह में नकाब बाँधी जाती है। गड़ेरियों के लड़के बड़े कुतूहल से उनकी आँखों को देख रहे थे। वे आपस में बात कर रहे थे, 'शिरपा भाई। इन दोनों की आँखें तो हीरों से भी अधिक चमक रही हैं। इन दोनों की आँखों से रह रहकर आँसू भी टपक रहे थे। उद्वेग से, ग्लानि से उनकी आँखें जल भी रही थीं और सूख भी रही थीं।'

थोड़ा विश्राम मिलते न मिलते, घोड़े पर बैठा गणोजी शिर्के चिल्लाया, "खान साहब जल्दी चलिए, उठिए नहीं तो मेरा गला कट जाएगा। मुकर्रब और इखलासखान दोनों बाप-बेटे हँस पड़े। उन्हें भी जाने की बहुत जल्दी थी। देखते देखते घोड़े निवली का जंगल पीछे छोड़कर नेदरवाड़ी की दिशा में दौड़ने लगे।

गणोजी की तरह ही मुकर्रबखान भी डर रहा था। ऐसा भयानक जंगल उसने

इससे पहले कभी नहीं देखा था। कमर भर ऊँची घास जब हवा के झोंकों के साथ सरसराकर लहराती तो हाथियों के लोटने का आभास होता। बायीं ओर की पहाड़ी पर शृंगारपुर का वनप्रदेश था। उधर के खड़ी चट्टानों वाले पहाड़ों और घने जंगलों को देखकर मुकर्रब को पसीना छूट रहा था।

अचानक दूर से घोड़ों के पैरों की आवाज आने लगी। देखते-देखते सामने की घासों के बीच से पचास-साठ घोड़ों का जत्था दौड़ता हुआ सामने आ गया। यह देखकर मुकर्रब हक्का-बक्का रह गया। इखलासखान भी चौंक गया। कहाँ से आ गयी यह मराठों की सेना? पीछे जाने और कितने छिपे हैं? बाप-बेटे घबरायी हुई नजरों से एक-दूसरे को देखने लगे। उन्हें लगा जैसे पूरा जंगल ही घोड़ों से घिरा है। मराठों की सेना द्वारा रास्ता रोक दिए जाने पर खान की सेना घबरा गयी। वह अपनी ही जगह ठहर गयी। घोड़ों के साथ घोड़े सिमटने लगे। वे अपने शरीर को सिकोड़कर खड़े हो गये। मुकर्रब की आँखें डरकर सफेद पड़ गयीं। गणोजी ने सामने सूर्याजी भोसले को देखा। उसने पहचान लिया कि यह शृंगारपुर की गश्ती सेना है।

अपने साथ की सेना में पन्द्रह-बीस मराठों को देखकर, गणोजी ने उन्हें संकेत किया। गणोजी ने जोर से नारा लगाया, 'सम्भाजी महाराज की जयऽऽ।' यह नारा सुनकर सूर्याजी अपना घोड़ा लेकर आगे आ गये। उसने गणोजी को पहचाना। उसने पूछा, "क्यों गणोजी यहाँ कहाँ?"

"बस यहीं, यहीं चला हूँ उंब्रज की ओर।"

"अरे लेकिन आप यहाँ कैसे? और ये लोग आपके साथ कौन हैं? मैंने तो सुना था कि आप मुगलों के पास गये थे।"

गणोजी अपना घोड़ा बढ़ाकर सूर्याजी के पास आ गये। उनके कन्धे को थपथपाते हुए बोले, "अरे सूर्याजी, खून के रिश्ते भी क्या कभी इतने कच्चे होते हैं? क्यों? बीच-बीच में कभी हो जाती नोक झोंक। किन्तु सगी बहन के महारानी होने पर भी हम मुगलों के पास जाने की हरामखोरी क्यों करेंगे?"

"ठीक है, घोड़े पर लाद फाँदकर किसे ले जा रहे हो?

"ये? क्या है कि ईरानी सौदागर हैं दोनों। जयनगर बन्दरगाह के समीप ये दोनों हरामखोर पकड़े गये। हीरों और अन्य रत्नों की तस्करी करते थे। इन मक्कारों को ले जाकर हाजिर करेंगे शम्भू महाराज के सामने।" गणोजी ने कहा।

"यदि ऐसी बात है तो रुकिए नहीं, जल्दी ही निकलिए। दिन के उजाले में पहाड़ उतर जाइये। यह रास्ता बहुत कठिन है।"

सूर्याजी की सेना पीछे छूट गयी। घोड़े फिर से दौड़ने लगे।

जंगल की बहुत-सी पगडंडियाँ निकलती गयीं। मालेघाट समीप आ गया

इस घाट की चढ़ाई जैसे ही आरम्भ हुई, मुकर्रब की फौज को नानी याद आने लगी। शम्भूराजा और कविराज को छोड़कर शेष सभी लोग घोड़ों से उतर गये। करौंदे की कँटीली झाड़ियाँ, पैरों तले ऊबड़-खाबड़ जमीन, रास्ते के टूटे-फूटे पत्थर, बारिस के पानी से जगह-जगह बने गड्ढे इतने कष्टकर थे कि घोड़ों और पैदल चल रहे सवारों को रोना आ गया। बहुतों के पैरों में मोच आ गयी। ठोकर लगने से कुछ की उँगलियाँ फट गयीं। उस सँकरी राह से चलते हुए घोड़े अनेक बार झुक जाते थे। उन्होंने लीद की और मूतने लगे।

घंटे-डेढ़ घंटे बीत गये किन्तु चढ़ाई समाप्त नहीं हो रही थी।

पल-पल और कण-कण अपना प्रदेश पीछे छूटता गया। सारा शरीर रस्सी और जंजीरों से बँधा हुआ था। मुँह में लगाम की तरह कपड़ा ठूँसा हुआ था। केवल आँखें खुली थीं। शम्भूराजा क्या और कैसे बोलते? शरीर पर कोई चट्टान अचानक टूट पड़े, अचानक कोई आक्रमण हो जाये और बुद्धि हतप्रभ हो जाये तो बोलने वाला बोले भी क्या?

पिछले चार दिनों से निरन्तर जागते हुए मुकर्रब के सिपाही तंग आ गये थे। यदि गणोजी शिर्के ने घोड़ों के बदलने और रास्ते में स्थान-स्थान पर खाने-पीने की व्यवस्था न की होती तो इस भयानक जंगल ने मुकर्रब की फौज को कब का लील लिया होता। सह्याद्रि की इन कँटीली झाड़ियों से भरी पहाड़ियों में उन्हें रास्ता ही न मिल पाता। फौजी और जानवर भूख से तड़पकर कब के मर गये होते। तीन सौ साल पहले जैसे मलिक उत्तुजार की सात हजार की सेना को इसी विषैले जंगल ने समाप्त कर दिया था, वैसे मुकर्रब की फौज भी ममाप्त हो जाती।

इस भयानक मालेघाट की चढ़ाई में मुकर्रब के साथ कुछ ऐसे अनुभवी सिपाही थे जिन्होंने शहजादे आज़म के साथ शमदरी की कुख्यात चढ़ाई देखी थी। उनके पैजामों को भय से गीले हो जाने का समय आ गया था। लोगों को शका होने लगी कि इस रास्ते से ले जाने में गणोजी का कोई षड्यन्त्र न हो? लोग गणोजी की ओर शंका से देखने लगे। मुकर्रब स्वयं मजबूत कद काठी का व्यक्ति था किन्तु उसके पैरों में दो बार मोच आ चुकी थी। पैरों की नसों और मांस में भयानक पीड़ा होने लगी। भयानक पीड़ा से वह विकल हो गया। उसने गणोजी से क्रोध में पूछा, "गणोजी, ठीक-ठीक बताओ यह राह कहाँ जा रही है? कराड़ को या जहन्नम में?"

"थोड़ा धीरज रखिए खान साहब! सिर्फ इसी रास्ते से आप शाम तक कराड़ पहुँच सकते हैं। दूसरे किसी रास्ते से हम निकलते तो मराठी सेना सचमुच हमें जहन्नम ही भेज देती। शिवाजी और सम्भाजी इस इलाके में भगवानस्वरूप हैं।"

उतावले होकर बौखलाये सिपाहियों और उनके बेदम हुए घोड़ों को देखकर

गड़ेरियों के लड़के भीतर ही भीतर हँस रहे थे।

यह विकट राह उनकी नित्य प्रति की जानी पहचानी थी। इसीलिए वे रहबर बकरी के बच्चों की तरह छलाँग लगाते हुए सबसे आगे चल रहे थे। चढ़ाई चढ़ने में जैसे-जैसे विलम्ब हो रहा था उसी क्रम में गणोजी का कलेजा पानी-पानी हो रहा था। भय के कारण गणोजी पूरी तरह घबरा गया था। वह सोचता था कि कहीं कोई चूक हो गयी या कोई धोखा हो गया तो सम्भाजी उसे जीवित नहीं छोड़ेंगे।

दोपहरी बीत गयी। शाम की ठंडी हवा बहने लगी। आधा आकाश पार कर सूर्य पश्चिम की ओर झुक गया। फिर भी पैरों के नीचे का रास्ता समाप्त होने को नहीं आ रहा था। निरन्तर के परिश्रम से पूरी तरह थके हारे मुगल घुड़सवार हैरान हो गये थे। उनकी जलती निगाह कह रही थी, 'गणोजी को खा जाऊँ या पीसकर पी जाऊँ?' मुकर्रब गणोजी की ओर सशंक नजरों से देखने लगा। किसी के आदेश की प्रतीक्षा किये बिना घोड़े बीच राह में ही बैठने लगे। थके-हारे सैनिक भी जमीन पर लेटने लगे। भिश्ती पानी से भरी चमड़े की थैलियाँ सेना में घुमाने लगे। इसी अवसर का लाभ उठाकर गणोजी मुकर्रब को एक पेड़ की आड़ में ले गया और हाथ जोड़कर बोला, "सरकार, इस मुफ्त की विपत्ति को क्यों जिन्दा रखते हो? धोखा हो जाएगा। इस प्रकार का खतरा मत उठाओ।"

"तो क्या करना चाहते हो?"

"सम्भा की और उस कपटी कलुशा की मुंडी यहीं पर छाँट दो। उसे सीधे ले जाकर बादशाह के सामने पेश कर दो।"

"नहींऽऽ यह मुमकिन नहीं है।" मुकर्रब गरजा। "सम्भा को जीवित पकड़ने का बीड़ा मैंने बादशाह के सामने उठाया है।"

"खान साहब, जिन्दा क्या और मुर्दा क्या? काम होने से मतलब।" गणोजी ने झुँझलाकर कहा।

"नहीं गणोजी! पिछले आठ वर्षों से पाँच लाख की फौज जो कार्य नहीं कर पायी उस पर मुकर्रबखान के इस दक्खिनी मुसलमान सरदार ने विजय हासिल की है। सारी दुनिया में मेरा कितना नाम होगा? बादशाह तो खुशी से पागल हो जाएगा।"

घुड़सवार सिपाहियों के पैरों में असह्य पीड़ा हो रही थी। किन्तु सम्भाजी और कवि कलश के कलेजों पर वेदनाओं का नृत्य हो रहा था। उनका सारा शरीर रस्सियों से इतना कसकर बाँधा गया था कि वह शरीर को काट रहा था। चढ़ाई पर चढ़ रहे घोड़ों के शरीर की हरकत के साथ रस्सियाँ शरीर में चुभ रही थीं। खून बह रहा था। शरीर की पीड़ा में हाथ-पैर फटकारने का व्यर्थ प्रयत्न उन दोनों ने कब का छोड़ दिया था। शम्भूराजा और कविराज की ऐसी दशा हो गयी थी जैसे गरुड़ का

सारा शरीर अजगर की चपेट में आ गया हो, उसका शरीर, उसके पंख निगलने के बाद अजगर के तीखे दाँत गरूड़ की गर्दन पर टिक गये हों और गरुड़ अपनी अभागी आँखों से बाहर का डूबता संसार देख रहा हो।

पैरों के नीचे का विषैला रास्ता समाप्त होने को आया। मालेघाट के माथे पर मराठों के गश्ती पहरे की अन्तिम चौकी थी। कविराज को इस बात का पूरा ध्यान था। मुँह में लम्बा-चौड़ा कपड़ा भरा था किन्तु उस ममय कविराज के दाँतों में ही बुद्धि आ गयी थी। दाँतों में ही सारी शक्ति केन्द्रित हो गयी थी। उन्होंने धीरे-धीरे दाँतों से मुँह का कपड़ा चूहों की तरह कुतरना आरम्भ कर दिया। घाट के माथे पर की चौकी समीप आने लगी। चौकी के सिपाहियों की आवाजें आने लगीं। इन आवाजों से मुकर्रबखान भयभीत हो गया। उसने गणोजी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। गणोजी ने आँखों से ही उसे शान्त रहने का संकेत किया।

अब एक बार मालेघाट समाप्त हो गया तो दो-ढाई घंटों में कराड़ आ जाएगा। कराड़ में पन्द्रह हजार की मुगल सेना तैयार थी। वहाँ से आगे मुगलों का प्रदेश आरम्भ होता था। एक बार यदि शम्भू महाराज वहाँ चले गये तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा। कवि कलश ने बड़े ध्यान से सुना। चौकी से आवाजें आ रही थीं। जैसे डूबते हुए जहाज के पास यदि कोई लकड़ी का टुकड़ा दिख जाये तो डूबता हुआ व्यक्ति उस तैरते टुकड़े को पकड़ने के लिए छटपटाने लगता है, वही स्थिति कवि कलश की हो रही थी। मुँह में ठुँसा हुआ कपड़ा निकल चुका था। उनके शरीर में जितनी शक्ति थी, उसे एकत्र कर कवि कलश अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाए, "बचाओऽऽ, बचाओऽऽ मेरे शम्भूराजा को बचाओऽऽ।"

कलश का यह घातक चिल्लाना सुनते ही इखलासखान ने अपने हाथ के चाबुक को कविराज के मुंड़े हुए सिर पर इतने जोर से मारा कि कविराज के सिर से निकलने वाला खून का फौवारा इखलास की दाढ़ी तक पहुँच गया। कविराज बेहोश हो गये। उनकी गर्दन एक ओर झुक गयी। नीचे से आवाज सुनकर ऊपर चौकी सजग हो गयी। "कौन है बे? कौन है वहाँ?" ऊपर से आवाज आयी। मुकर्रब घबरा गया। किन्तु उसी समय गणोजी ने ऊँचे स्वर में नारा लगाया, "सम्भाजी महाराज की जयऽऽ।"

चौकी के थानेदार ने सभी की बारीकी से जाँच की। पूछताछ करने के लिए अधिक था ही क्या? गणोजी रायगढ़ की महारानी येसूबाई के सगे बड़े भाई थे। थानेदार की नजर खून और धूल से लथपथ उन दो सौदागरों पर भी गयी। कवि कलश के सिर पर खून के ताजा निशान थे। किन्तु चक्कर आ जाने से उनकी गर्दन एक ओर लुढ़क गयी थी। शम्भूराजा के शरीर पर मुसलमानी पहनावा था, दाढ़ी-मूँछ सफाचट थी। मुँड़े हुए सिर पर सूखे हुए खून के काले-नीले निशान थे। धूर्त

गणोजी ने दोनों की बची-खुची भौंहें भी निकाल दी थीं। शम्भूराजा अपने प्रदेश को पहचान रहे थे किन्तु उनके सूजन भरे सफाचट मनहूस चेहरे को कोई नहीं पहचान रहा था।

थानेदार ने पूछा, "लेकिन गणोजी भाई साहब! आप शम्भू महाराज के पास क्यों जा रहे हैं?"

"अरे भाई इन दोनों सौदागरों को उनके चरणो में डालना है। यह मुगलों की सेना भी औरंगजेब से अलग होकर हमारे साथ आ रही है। यह देखकर शम्भू महाराज बहुत प्रसन्न होंगे।" गणोजी ने बड़ी प्रसन्नता से कहा।

"जाइये, जाइये दिन रहते ही पहाड़ उतर जाइये।" थानेदार ने सुझाव दिया।

अब सामने का पाथरपुंज गाँव समीप आने लगा। छायाएँ लम्बी होने लगीं। सूर्य पश्चिम की ओर झुकने लगा। विगत आठ वर्षो में महाराष्ट्र के पठारी प्रदेश की सभी नदियों, समुद्रतट, गहरी खाइयों, बुरहानपुर की मुगलाई ही नहीं, कर्नाटक की धर्मपुरी, जिंजी, मदुरा से लेकर लोलापुर के मैदानी भाग तक हजारों बहादुर मराठों को प्रेरणा की संजीवनी देने वाला, अपने खून का पानी करके, शिवाजी महाराज के गौरवपूर्ण स्वराज्य के जहाज को पार लगाने वाला सौदागर ही आज काल के कराल गाल में खिंचा जा रहा है।

पिछले अनेक वर्षों में माँ की गोद की तरह शम्भू महाराज को सुरक्षित रखने वाला सह्याद्रि अब तेजी से पीछे छूट रहा था। सुदूर अँधेरे में कराड़ की मुगल छावनी पर जलते हुए पलीते दिखाई देने लगे थे।

महत्त्वाकांक्षा और जुलूस

एक

पाथरपुज के मैदान में गड़ेरियो की एक बस्ती थी। राह दिखाने वाले गड़ेरियो के लड़के बहुत प्रसन्न थे। प्रत्येक को सोने की तीन तीन मोहरें मिली थी। इनमे इल्या पीर्‌या और धाकल्या उम्र में बड़े थे। पीर्‌या की मौसी पाथरपुंज की गडेरियावाडी म रहती थी। इतना बड़ा इनाम मिलन की खुशी में पीर्‌या ने अपनी मौमी को मुर्ग काटने के लिए कहा। घर में मुर्गे का सुस्वादु रस्सा तैयार हो रहा था। इस बीच लड़कों ने रास्ते पर ही गोटियों का खेल रचा लिया था। उन्होंने निश्चय किया था कि मुर्गा रोटी खा लेने के बाद मालेघाट उतरेंगे।

परन्तु थोड़ी देर में कुछ लोग डरे-सहमे भागते हुए अपने गाँव की ओर आये। रास्ते में एक दूसरे के साथ कानाफूसी कर रहे थे। उस रहस्यमयी स्थिति और भागदौड को देखकर लडकों को कुछ शका हुई। उन्होने अपना खेल छोड दिया।

दूसरी ओर पीपल के नीचे पाथरपुज के सात आठ किसान एकत्र हो गये थे। वे बहुत गम्भीर होकर दबे स्वर में आपस में कुछ खुसुर फुसुर कर रहे थ।

"बहुत बुरा हुआ।"

"हे भगवान! ऐसा नहीं होना चाहिए था। बड़े महाराज को गुजरे अभी दस वर्ष हुए हैं और उनके बेटे की ऐसी दुर्दशा हो गयी?"

पीर्‌या हिम्मत करके आगे बढा और गाँव वालों से पूछने लगा "क्या बात है दादाजी? इतनी कानाफूसी किसलिए हो रही है?"

"अपने शम्भूराजा को उनके सगे साले ने ही धोखा दिया है। बच्चो! अपने राजा को बैलों की तरह बाँधकर वह बादशाह के पास ले गया है रे ऽऽ।" वह किसान अपने आँसू पोंछते हुए कह रहा था। "आज शाम को वह नीच गणोजी शिर्के ने शम्भूराजा के साथ धोखा किया और पकड़ ले गया। आज दोपहर को इसी

रास्ते से गये हैं वे सब।''

उस किसान की बात कानों में पड़ते ही गड़ेरियों के बच्चों के चेहरे सफेद पड़ गये। वे घबराकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। कुछ धीरज धारण कर धाकल्या चिल्लाया, ''क्या कह रहे हैं राव? हम दोपहर को वहीं पर थे। गणोजी शम्भूराजा को नहीं, हीरे के दो सौदागरों को लेकर गये हैं।''

गाँव वालों ने उन बच्चों की ओर ध्यान नहीं दिया। परन्तु उनकी गम्भीर बातें चलती रहीं। यह समाचार आसपास के जंगलों में दावाग्नि की तरह फैल रहा था। स्त्रियाँ और बच्चे रोने लगे। सभी को ऐसा लगा मानो उनके घर का ही कोई गुजर गया है। इतनी जल्दी से बदलने वाले इस वातावरण को देखकर गड़ेरियों के लड़के घबरा गये। वे शोकमग्न हो गये। वे सोचने लगे, 'अनजाने ही हम शिवाजी महाराज के राजपुत्र शम्भू महाराज को संकट में डाल दिये। रायगढ़ के राजेश्वर को पकड़वा दिया। हम शत्रु के रहबर बन गये।' यह कल्पना उन बच्चों के लिए असह्य हो रही थी। बच्चों की आँखों के सामने दोपहर में घोड़े पर बैठा सौदागर प्रत्यक्ष हो गया। उसकी विलक्षण तेज नजर, चमकदार आँखें बच्चों की कल्पना में फिर से प्रकट हो गयीं। वे जंगली पंछी इस कल्पना से पूरी तरह विचलित हो गये। आठों बच्चे बगल की आड़ में चले गये। पीर्‍या जामुन के तने पर अपना सिर पटकने लगा। धाकल्या ने अपने ही गालों पर तमाचे लगाना शुरू किया। कुछ लोग वहाँ की वनभूमि पर लोटने लगे। एक-दो ने त्रस्त होकर अपने मुँह में मिट्टी भर ली। पीर्‍या उठकर खड़ा हो गया। उसने कमर में खोंसी हुई स्वर्ण मुद्राओं को बाहर निकाला। गणोजी और मुकर्रबखान द्वारा दिया गया इनाम उसे साँप के विषैले दाँत की तरह लगने लगा। सभी लड़कों ने अपनी मोहरें दूर फेंक दीं। ऐसा करने से उन्हें कुछ हल्का लगा। किन्तु कलेजे में घुसी पश्चाताप की मधुमक्खी उनका पीछा छोड़ने को तैयार न थी।

लड़के एक दूसरे के गले में बाँहें डालकर रोने लगे। उनमें सबसे छोटी उम्र के बिरज्या ने पीर्‍या से पूछा, ''दादा, अब हमलोग क्या करेंगे?'' अपने गालों को पीटते हुए और रोते हुए पीर्‍या बोला, ''भगवान मल्हारीराय! यह क्या घोटाला हो गया? वह कुत्ता गणोजी शिर्के? उसकी शैतानी धोखेबाजी हमारी समझ में नहीं आयी। भाइयों हम अपने माँ बाप को एक बार भरे कुएँ में ढकेले जाते देख सकते हैं किन्तु हमारे शम्भूराजा को कोई उँगली भी लगाये तो हमसे सहन नहीं होगा। लड़के जोर-जोर से रोते हुए आपस में बातें करने लगे।

इल्या जोर-जोर से रोने लगा। उसका मामा कापुरहोल में रहता था। वहाँ की धाराऊ शम्भू महाराज की दूधमाता थी। उसी का दूध पीकर ही शम्भूराजा छोटे से

बड़े हुए थे। उसका स्मरण करके इल्या कहने लगा, "अपनी ही माई-मौसी के दूध से शम्भूराजा पले बढ़े हैं, आज हमने ही उनके गले पर छुरा मारा है।"

बिरज्या रोते हुए कहने लगा, "मैंने भी अपनी माँ की गोद में यह गीत बहुत बार सुना है।" वह आँखें पोंछते हुए स्वयं गाने लगा—

जब भी होंठ शम्भु के सूखे धाराऊ का दूध उमड़ता।
निपट गरीबों की कुटिया में सुवन शिवाजी का है पलता।।

आँसुओं की पहली बाढ़ सूख गयी। आठों लड़कों की कान की नसें गर्म हो गयीं। ऐसा लगा जैसे उनके शरीर में आग लग गयी है। उनके हाथों में सुरसुरी उठने लगी। सभी ने एक स्वर में पीरया से पूछा, "बता दादा, हमें अब क्या करना होगा?"

"अरे गधो पूछते क्या हो? भेड़ बकरियों के बीच घुस आये भेड़ियों पर टूट पड़ने वाले और जिन्दा भेड़ियों के जबड़े तोड़कर उन्हें मारने वाले गड़ेरियों की औलादें हैं हम। हमारी आँखों को चकमा देकर शैतान हमारे राजा को ले गया है, हम उसकी हड्डी पसली एक कर देंगे।"

सभी एक स्वर में चिल्ला उठे, "चलो चलोऽऽ हम गणोजी के कर्मचारी पन्त को पहले समाप्त करेंगे।"

"पन्त को किसलिए? जड़ को ही पहले समाप्त करेंगे। उस गणोजी शिर्के का ही गला घोटेंगे।"

लड़के भूख-प्यास भूल गये। वे धरती पुत्र आठ बालक खाई, पहाड़, झरने, पेड़-पौधे पार करते हुए कराड़ की दिशा में दौड़ने लगे। उनके पैरों में दस हाथियों की शक्ति आ गयी थी। उनकी छाती धक धक कर रही थी। हृदय में प्रतिशोध की भावना भी धधक रही थी। शिवाजी और उनके पुत्र शम्भृ महाराज को स्मरण करके सिर चकरा रहा था। रायगढ़ का वह राज्याभिषेक, वह राजा का उत्सव, जनता उल्लास, वे पालकियाँ, उनकी सजावट आदि इन लड़कों में से तीन-चार ने अपने पिता अथवा चाचा के कन्धे पर बैठकर स्वयं देखा था। इन लड़कों ने शम्भू महाराज का राज्याभिषेक स्वयं देखा था। गड़ेरियों ने अपना विशेष नृत्य गजनृत्य प्रस्तुत किया था। शिवाजी के राज्याभिषेक के समय इन लड़कों के पुरखों ने उल्लास से भाग लिया था। वे बड़े बडे ढोल बजाते हुए नाचे-गाये थे। इनके चाचा मामाओं ने बचपन में शम्भूराजा को अपने कन्धे पर बिठाकर, शृंगारपुर के खेतों खलिहानों में घुमाया था।

इन धरतीपुत्रों को जागीर का अर्थ नहीं मालूम था। उन्हें स्वार्थ की विषैली हवा नहीं छू सकी थी। उनके लिए शिवाजी और सम्भाजी प्राणों से भी बढ़कर थे। सूर्य और चाँद थे। वे मानते थे कि इन दो छत्रपतियों के कारण ही सिर की शिखा

सुरक्षित थी। वे जागीरदारों और जमींदारों के शोषण से बचे हुए थे। सह्याद्रि के खाई-पठारों में गोकुल का सुख फैला था। उसी शिवपुत्र को आज शत्रु इसी रास्ते से निकालकर ले गया। जाने-अनजाने हमने भी शत्रुओं की सहायता की है। इसी एहसास से लड़कों का शरीर आग की तरह जल रहा था।

बिना रुके और एक क्षण भी गँवाये, आठों लड़के रातभर दौड़ते रहे। उनकी कमर की करधनी में बँधे कोयले और छुरे सरसराते रहे। हाथ की मुट्ठियाँ भींचते अपने दाँतों को चबाते, हवा की पीठ पर सवार वे यही सोचते रहे कि कहाँ है वह गणोजी ?

कराड़ की मुगल छावनी गहरी नींद में थी। बगल के कोयना नदी के पाट से ठंडी हवा आ रही थी। छावनी में केवल पहरेदार और चौकीदार जाग रहे थे। जगह-जगह मशालें जल रही थीं। जिस प्रकार बकरियों के झुंड में छिपकर बैठे भेड़िये को पकड़ने के लिए गड़ेरिये दबे पाँव चलते हैं वैसे ही ये लड़के दबे पाँव आगे बढ़े। एक पहरेदार ने उन्हें रोका और पूछा, "क्या रे, कहाँ चले ?"

"जी हमें गणोजी शिर्के सरकार ने बुलाया है।"

"कहाँ से आये हो ?"

"आज शम्भूराजा का शिकार करने शिर्के सरकार आये थे। उन्हें राह दिखाने वाले हमी हैं।" इल्या ने कहा।

पहरेदार थोड़ा-सा विचार में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। इसी समय सामने की छोलदारी से एक सैनिक बाहर निकला। वह भी पिछले दिन सेना के साथ था। उसने लड़कों को देखा। उसने हँसते हुए पहरेदार से कहा, "अरे ले जाओ इनको गणोजी के पास, ये सब अपने ही छोकरे हैं।"

छावनी में गहरा सन्नाटा था। मुकर्रब के साथ आये सात आठ सौ सैनिक बिलकुल त्रस्त हो गये थे। उन्होंने अपने थके हाथ पैर धरती पर लम्बे कर दिये थे। दोनों पहरेदार एक तम्बू के पास रुके। उन्होंने अन्दर से बन्द किया गया कपड़े का दरवाजा लड़कों को दिखाया। देखते ही बच्चों ने नारा लगाया "बिरुबा की जयऽऽ, बिरुबा की जयऽऽ"। इसके साथ ही वे अपने साथ आये पहरेदारों पर झपट पड़े। उनके हाथों की मशालें अपने हाथों में ले लीं। मशालों की लपट से पहरेदारों की दाढ़ी के बाल जल गये। कहीं आँखों की पुतलियाँ भी न बाहर आ जायँ, इस भय से पहरेदार भाग खड़े हुए। लड़कों ने जलती मशालों को सामने के तम्बू से लगा दिया।

देखते-देखते तम्बू धू धूकर जलने लगा। भीतर के सामान के साथ सारी कनातें जलने लगीं। भीतर घोड़ों के लिए रखी घास भी सुलगने लगी। धुएँ की धारा बाहर निकलने लगी। चारों ओर से एक ही आवाज आने लगी, 'भागोऽ भागोऽ आगऽ आगऽऽ' तम्बू के भीतर से 'या अल्लाऽऽ बचाओऽ बचाओऽऽ' जैसी करुण

चीत्कार बाहर सुनाई देने लगी। इसके बाद आग से अपने को बचाते हुए कुछ लोग सामने के दरवाजे से बाहर निकलने लगे। तब तक लड़कों ने तम्बू में लगी मजबूत लाठियाँ अपने हाथों में ले लीं और सामने आने वाले लोगों को पीटने लगे।

तम्बू में लगी आग से इन लड़कों के दिल में लगी प्रतिशोध की आग अधिक तेज थी। वे गला फाड़कर चिल्ला रहे थे, "आओ गणोजी शिर्के, बाहर आओ, हम तुम्हारी बोटी-बोटी कर देते हैं।"

परन्तु इन बच्चों के आवेश से मुगलों की शक्ति बहुत अधिक थी। आसपास से पहरेदार और सैनिक सैकड़ों की संख्या में भागकर आगे आ गये। उन आठ जंगली पंछियों को कैद कर लिया गया। शीघ्र ही आग पर भी काबू पा लिया गया। अन्दर सोये अनेक लोगों ने आग को भड़कता देखकर दूसरी ओर नदी में छलाँग लगा दी थी। इस तरह अपनी जान बचाई थी।

आग ने अपना प्रभाव तो छोड़ा ही था। वहाँ तीन शव कोयले की तरह काले होकर गिरे थे। काले-कलूटे, धुएँ से सने शव पहचान में नहीं आ रहे थे। उनके वस्त्र और सिर के बाल जलकर खाक हो गये थे। उनकी आँखों की पुतलियाँ बाहर आ गयी थीं। शवों की खाल जगह-जगह झूल रही थी। मुसलमान सैनिक धीरे धीरे आपस में बात कर रहे थे, "एक गणोजी होगा, दूसरा नागोजी। परन्तु यह तीसरा फौजी कौन हो सकता है?"

आग और दंगा दोनों शान्त हो गये। किन्तु मुकर्रब के तम्बू मे कोई जागा नहीं। इतना दंगा-फसाद और शोरगुल होने पर भी अनेक दिन थके मुकर्रब को जगाने का साहस थानेदार को नहीं हो पाया।

दूसरे दिन दोपहर को मुकर्रबखान अपने तम्बू से बाहर आया। वह सामने की चारपाई पर बैठकर अँगड़ाइयाँ ले रहा था। उन आठ जंगली पंछियों को खान के तम्बू के बाहर मुस्कें बाँधकर खड़ा किया गया था। आग लगाने का दंड देने के लिए उन्हें चाबुक से पीटा गया था। पीटे जाने के कारण लड़कों के मुँह सूज गये थे। उनका शरीर जगह-जगह फट गया था। फिर भी वे सभी निडर भाव से सीना ताने मुकर्रब की ओर देख रहे थे।

मुकर्रब ने पूरी घटना का ब्यौरा लिया। गणोजी और नागोजी के जलकर खाक होने की बात उसे बताई गयी। उस ओर ध्यान न देते हुए उसने तत्काल थानेदार से पूछा, "सम्भा कहाँ है?" राजबन्दी सुरक्षित हैं, यह जानते ही मुकर्रब शान्त हो गया। इसी बीच एक कनात के पीछे से गणोजी और नागोजी जल्दी-जल्दी आते हुए दिखाई पड़े। उनकी ओर देखते हुए मुकर्रब हँसकर बोला, "गणोजी, मैंने तो सुना आप जल चुके हैं।" गणोजी अपने गालों में हँसते हुए बोला, "खान साहब!

अब तो समझ में आया कि उस सम्भा को पकड़ने से हमारे भाई-बन्धु मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे? सुबह होने से पहले ही ऐसी आशंका मेरे मन में आयी। मैंने नागोजी को तत्काल जगाया और दूसरे तम्बू में जाकर सो गया। नागो बाबा उठने को तैयार न थे। देखिए क्या से क्या हो गया।''

गणोजी की बातें सुनकर मुकर्रब ने हँसकर कहा, ''चिन्ता मत कीजिए गणोजी, बादशाह आपको जागीर और जवाहरात देकर मालामाल कर देंगे।''

''आगे का आप देखो, खानसाहब! हमारी जिम्मेदारी अब समाप्त हुई।'' नागोजी माने ने कहा।

नागोजी ने आगे कहा, ''रात की घटना तो एक छोटी झंझट थी। हमें जागीर मिले या न मिले पर आप सम्भाजी नाम की इस बला को जल्दी ही यहाँ से ले जाइये, नहीं तो लोग हमारा नामोनिशान तक मिटा देंगे।''

''इन विद्रोही लड़कों का क्या करें?'' थानेदार मुकर्रब से पूछने लगा। मुकर्रब को एक क्षण को मालेघाट की वह जानलेवा चढ़ाई याद आयी। गणोजी का उपकार उसके ऊपर पहाड़ के समान था। किन्तु उन जंगल घाटियों में इन बहादुर लड़कों जैसे रहबर न मिले होते तो मुगल सेना को आज यह दिन देखने को न मिलता। औरंगजेब को मोहरा चाहिए था वह तो मुकर्रब को मिल ही गया था। उसे पाने में इन लड़कों का भी गिलहरी का हिस्सा था। कृतज्ञता के इस भाव से उसने थानेदार से कहा, ''छोड़ दो, जंगल के पंछी हैं जंगल की ओर ही जाएँगे।''

कैद हुए लड़के मुक्त हो गये। पैर घसीटते हुए वे जंगल की ओर आधा कोस ही गये होंगे कि इनके पैर अटकने लगे। उनके हृदय में चटकती प्रतिशोध की आग उन्हें चैन नहीं लेने दे रही थी। शम्भूराजा को जंगली पशु की तरह बाँधकर खींचते हुए ले जाने वाला असली व्यक्ति मुकर्रबखान है। मुकर्रब की कल की गति, उसका वह आवेश जैसी बातों को लड़के भूले न थे। दबी आवाज में पीऱ्या बोला, ''भाइयो! इस खान ने हमें तो छोड़ दिया किन्तु हमारे शम्भू महाराज को नहीं।''

पीऱ्या के शब्दों को सुनते ही सभी के पैर ठिठक गये। उनके शरीर का खून गर्म होने लगा। अपने पास कोई हथियार न होने पर भी वे झट से पीछे मुड़े। ऐसा लगा जैसे उनका शरीर ही भाला बन गया हो।

उनमें से किसी ने नारा लगाया, 'जय मल्हारऽऽ' और दूसरे ही क्षण वे आठों मानवी भाले, मुकर्रब और गणोजी का गला घोंटने के लिए हवा की गति से भागने लगे। उन दोनों का गला दबाने के लिए दोनों के हाथ सुरसुराने लगे। उनके शरीर को प्रतिशोध के पंख लग गये थे। गरुड़ की भाँति ये जंगली पंछी खान की ओर दौड़े। मुकर्रब के चारों ओर सिपाहियों का कड़ा पहरा लगा हुआ था। उसका अनुमान इन लड़कों को नहीं था।

ये सीधे खान का गला घोंटने के लिए भिड़ जाने वाले थे। किन्तु इनके पहुँचते ही इन पर तलवार के सपासप वार हुए। खून की धारा बहने लगी। उस गर्म खून को देखकर मुकर्रब, गणोजी और नागोजी भी सन्न रह गये। उस अचानक हुए आक्रमण से मुकर्रब भी हिल गया। ये तीनों भय से काँप गये।

थोडी देर में हशम आगे आये। उन्होंने इन आठ शवों को उठाकर बोरो में भर लिया। उन्हें ले जाकर बगल मे बह रही कोयना नदी की धारा में फेक दिया।

शाम होने को आयी। सूर्य धीरे धीरे पश्चिम की दिशा में उतर रहा था। सूर्य की अरुणाभ किरणें कोयना के पानी में उतर रही थीं। खंडोवा के गले में पहनाई गयी फूलों की माला, सूखने के बाद निर्माल्य होकर जैसे देवता के पैरो में आ गयी हो उसी प्रकार ये आठ शव कोयना के रक्तिम प्रवाह में तैरते दिखाई पडे।

दो

धूप तप रही थी। दोपहर को येसूबाई का दल वाशिष्ठी नदी के तट पर पहुँचा। चिपलून की अमराई में महारानी पहुँची। वहाँ नदी के किनारे जलपान के लिए सेना रुकी थी। पीछे से आने वाले शम्भू महाराज की महारानी को प्रतीक्षा थी। इसी समय पीछे की राह पर दूर झाड़ियों में कुछ शोर सुनाई पड़ा। पाँच-छह घोडे तेजी से दौड़ते हुए आगे आये। महारानी ने हँस कर कहा, ''महाराज ने कहा था दशम्या (दूध से गुँथे आटे की रोटियाँ) खोलकर रखना। पहले निवाले के समय मै पहुँच जाऊँगा। उन्होंने अपनी बात पूरी करके दिखाई।''

आगे का रास्ता पार करना था। खंडोजी ने येसूबाई से कहा, ''मातेश्री! लीजिए राजाजी आ ही गये। अब दशम्या खोल दीजिए। महारानी पहला निवाला मुँह में डालने ही वाली थी कि पीछे से आने वाले सवारों मे जो सबसे आगे था वह इतनी विकलता से चिल्लाया जैसे उसे साँप ने काट लिया हो।

''रानी साहब धोखा हुआ, शत्रु ने धोखा किया।''

मुँह का कौर गिर गया। खंडोजी, येसबाई, दास-दासी सभी झट से उठकर खड़े हो गये। पसीने से तर-ब-तर हुए घुड़सवार आगे आये और एक साथ बोलने लगे, ''संगमेश्वर पर शत्रुओं ने आक्रमण कर दिया। वहाँ पर कम से कम एक हजार मुगल सैनिकों को अपनी आँखों से देखा है।''

"और महाराज? हमारे महाराज कहाँ हैं?" खंडो बल्लाल ने विह्वल होकर पूछा।

"महाराज शत्रु पर टूट पड़े हैं। कवि कलश की कोठी के सामने घनघोर युद्ध हो रहा है।"

"हाँ-हाँ महाराज को बड़ी कुशलता से लड़ते हुए मैंने देखा है। किन्तु आक्रमण अचानक हुआ और हमारी सेना बहुत कम है। इतने में उन दो-तीन घुड़सवारों के पीछे दो-तीन सौ घोड़ों की टापें सुनाई देने लगीं। चिपलून के सराई के समीप यह सेना रुकी। घुड़सवार छलाँग लगाकर नीचे उतरे। उनका चेहरा सम्भ्रमित था, उनके कपड़ों पर खून और धूल के धब्बे दिखाई पड़ रहे थे। उन्हें देखकर येसूबाई दौड़ती हुई आगे आयीं। उन्होंने व्यग्रता से पूछा, "सन्ताजी क्या हुआ? महाराज कहाँ हैं?"

"माताजी घबराने का कोई कारण नहीं है। सवेरे अचानक शत्रु ने संगमेश्वर पर आक्रमण कर दिया। कुल सात-आठ सौ सैनिक थे। हमारी संख्या बहुत कम थी। किन्तु हमने उनका मुकाबला किया हमने उन्हें पीछे हटा दिया।"

"और महाराज? महाराज कहाँ हैं?" यह पूछते हुए येसूबाई का हृदय जोर मे धड़कने लगा।

"चिन्ता न करें मातुश्री! महाराज सकुशल हैं। महाराज और कविराज बीच वाले जंगल के रास्ते से सीधे रायगढ़ पहुँच जाएँगे।"

"परन्तु महाराज को छोड़कर तुम आगे आये कैसे सन्ताजी?"

"महारानी जी, महाराज वहाँ रुके नहीं हैं। उन्हें आपकी बड़ी चिन्ता थी। आकाश से अचानक बरसते बादलों की तरह शत्रु ने अचानक हमला कर दिया। यह पता ही नहीं लग पाया कि और कितने शत्रु किस दिशा से आ जाएँगे? इसलिए महाराज ने मुझे चिपलून की चौकी सँभालने का आदेश दिया। महारानी के साथ की बीस-पचीस पालकियों के लोग सकपकाये से खड़े थे। महारानी ने सन्ताजी से पूछा, "सन्ताजी हमारे शिरकान के शृंगारपुर के रास्ते से तो हवा भी घुसने की गुस्ताखी नहीं करती फिर दुश्मन कहाँ से घुस आये?"

"महारानी जी, यह अपने लोगों द्वारा किया गया धोखा है। परन्तु अब उसका विचार न करें। यहाँ से जल्दी निकलें। नहीं तो पालकियों को रायगढ़ पहुँचने में विलम्ब हो सकता है।"

कहारों ने पालकियाँ उठा लीं। वे तेज गति से आगे की ओर बढ़े। सन्ताजी बेचैन हो रहे थे। उन्होंने चिपलून के थानेदार को अपने साथ लिया और दिनभर चिपलून के बन्दोबस्त में व्यस्त रहे।

शाम को दो घुड़सवार संगमेश्वर की ओर से भागते हुए आये। उनके स्याह

पड़ गये चेहरे बेहाल थे। समाचार देते हुए वे रो पड़े, "सरदार धोखा हो गया। आप लोग वहाँ से निकले और शत्रुओं ने पुनः गाँव पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने गाँव को आग लगा दी और हम पूरी तरह हार गये।"

"परन्तु महाराज कहाँ हैं?"

"कुछ लोग कहते हैं कि बगल की खाड़ी का लाभ उठाकर महाराज निकल गये। किन्तु कुछ लोगों का कहना है कि महाराज और कविराज को शत्रु पकड़कर ले गये।"

"पकड़कर? तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया है?" सन्ताजी सन्तप्त हो गये। सही खबर समझ में नहीं आ रही थी। सन्ताजी और थानेदार खड़े-खडे बातें कर रहे थे। उन्हें विश्वास होने लगा कि पीछे कुछ भयंकर घटित हुआ है। अब चिपलून में बैठे रहने में बुद्धिमानी नहीं थी। सन्ताजी पाँच सौ घुड़सवारों की सेना लेकर चिपलून से संगमेश्वर की ओर चल पड़े। सन्ताजी के साथ घोड़े संगमेश्वर की ओर भागने लगे।

पहाड़ी, जंगल, झरने, खोह आदि लाँघते हुए सन्ताजी की सेना वेग से दौडने हुए जब संगमेश्वर पहुँची तब घना अन्धकार हो गया था। सगमेश्वर की स्थिति देखते नहीं बन रही थी। इस सुन्दर कस्बे का हुलिया ही बदल गया था। क्षेत्र मे अपना आतंक जमाने के लिए शत्रु ने आग लगा दी थी। अब भी कुछ कोठियाँ-हवेलियाँ जलती हुई दिखाई पड़ रही थीं। चारों ओर लाशें बिखरी पड़ी थीं। टिड्डियों के दल आने के बाद जैसी स्थिति होती है उसी प्रकार पूरा कस्बा तहस नहस हो गया था। कस्बे में कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ बूढे, कुछ लूले लँगड़े भाग न सकने के कारण आड़ में छिपकर बैठे थे। वहाँ अफवाह फैल गयी थी कि अभी फिर से औरंगजेब की सेना आने वाली है। इसी भय से बागों और जंगलों में छिपे लोग बस्ती में जाने को तैयार न थे। सन्ताजी की सेना के आने का समाचार पाकर कुछ छिपे हुए बूढ़े बाहर आये। उनसे पक्की खबर मिली कि शम्भूराजा और कविराज को शत्रु सेना जीवित पकड़कर ले गयी। यह समाचार सुनते ही सन्ताजी का चेहरा काला पड़ गया। ऐसा लगा जैसे किसी ने तपते सोने पर कोयले का घोल डाल दिया। उन्हें जोर से रुलाई आ गयी। दूसरी दिशा से पाँच घोड़े दौड़ते हुए आये। उसी ओर से धनाजी जाधव अपनी सेना लेकर लौटे थे।

धनाजी और सन्ताजी एक-दूसरे से मिले। घोड़ों पर से ही कुछ बातें कीं। धनाजी ने कहा, "सन्ताऽऽ मैं दो घंटे से चारों तरफ दौड़ रहा हूँ। बहुत खोज की, लेकिन समझ में ही नहीं आ रहा है कि महाराज को लेकर दुश्मन किस रास्ते से चले गये। लोग अपने अनुमान से दशों दिशाओं की ओर बताते हैं।"

"पर धनाजी इस तरह रुके रहने से क्या होगा? अपने सूर्य को शत्रु लेकर

चला गया। बाकी बचा यह जनसमुद्र लेकर हम क्या करेंगे?" सन्ताजी ने घबराये स्वर में कहा।

आपस में विचार-विमर्श हुआ। गोवा और चिपलून का रास्ता छोड़ दिया जाये तो आंबाघाट का एकमात्र रास्ता बचता था। निश्चित कि कोल्हापुर की ओर से शत्रु उसी दिशा से आये होंगे। यहाँ से आंबाघाट पहुँचने के लिए कम से कम पाँच-छह घंटे लगने वाले थे। रास्ता सँकरा, खड़ी चढ़ाइयों वाला और गहरी घाटियों वाला विकट रास्ता था। सन्ताजी और धनाजी के एकत्र लगभग एक हजार घोड़े आंबाघाट की ओर दौड़ पड़े। किन्तु इसी बीच कोई भीड़ से आकर सन्ताजी के घोड़े से चिपक गया। अपने रिकेब में रखे पैर को पकड़कर खड़े उस दुबले-पतले ब्राह्मण को सन्ताजी ने देखा। उसका चेहरा जाना-पहचाना लग रहा था। सन्ताजी को ध्यान आया यह तो संगमेश्वर के थानेदार के सहयोगी त्र्यंबक शास्त्री थे। सन्ताजी ने शीघ्रता से पूछा, "कहिए शास्त्री बाबा, क्या कहना चाहते हैं?"

"बस, एक क्षण के लिए मेरे साथ आइये।"

बगल में कवि कलश की कोठी जलकर राख हो गयी थी। अन्दर उठने वाली लपटें अभी भी बाहर दरवाजे तक धधक रही थीं। सामने पचास-साठ शव गिरे पड़े थे। उसमें से एक शव पर चादर उढ़ा दी गयी थी। शास्त्री जी ने धीरे से चादर को हटाया। सामने का दृश्य देखकर सन्ताजी उलझन में पड़ गये। दिनभर की भाग-दौड़ और शम्भूराजा पर आये संकट में सन्ताजी भूल ही गये थे कि उनका कोई पिता भी है जो हिन्दवी स्वराज्य का सेनापति है। दोपहर की लड़ाई में शम्भू महाराज को बचाते-बचाते वृद्ध सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े गिर गये थे। अपने पिता का शव देखकर सन्ताजी पूरी तरह विचलित हो गये।

शोक सन्तप्त सन्ताजी को सँभालने का प्रयास धनाजी कर रहे थे। सन्ताजी ने अपने मृत पिता के मुख पर हाथ फेरा, उन्हें सीने से लगा लिया। फिर अधिक समय न गँवाकर उन्होंने पिता के सिर को हल्के से नीचे रख दिया। उन्होंने अपने गले की रत्नों की माला को शास्त्रीजी को सौंपते हुए कहा, "शास्त्री महाराज, मेरे पिताजी के साथ और जितनों का सम्भव हो अन्तिम संस्कार कर दीजिए। मुझे आगे बढ़कर शत्रु का विनाश करना है।"

एक घंटे तक घोड़े दौड़ते रहे। मार्ग में एक पानी का झरना मिला। दिनभर की निरन्तर भाग-दौड़ से घोड़े थक गये थे। प्यासे घोड़ों ने पानी पिया। पीठ पर बैठे सैनिकों की चिन्ता किये बिना वे मूक जानवर वहीं बैठने लगे। आगे का रास्ता अभी भी शेष था। समीप के गड़ेरियों की बस्ती से घोड़ों के लिए सूखा चारा लाया गया। वहाँ के तीस-चालीस घर जग गये थे। जल्दी जल्दी नाचनी की रोटियाँ बनाई गयीं। एक या डेढ़ रोटी सभी को मिली। सैनिकों ने उसे चटनी के साथ खा लिया।

घोड़ों को दो-ढाई घंटे का आराम मिल गया। एक-एक करके घोड़े स्वस्थ होकर खड़े होने लगे। अपने मालिकों की स्थिति उन्हें भी महसूस हुई होगी। वे फिर तैयार हो गये। आंबाघाट चढ़ते चढ़ते दोपहर ढल गयी। वहीं बीच में मराठों की चौकी थी।

सन्ताजी और धनाजी को अचानक आया देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। घाट के बीच-बीच में कविराज ने अपनी सेना बिखेर रखी थी। यह सेना घाट के पार अम्बा गाँव तक फैली थी। वहाँ पर कविराज के सहयोगी कृष्णाजी कान्हेरे सन्ताजी और धनाजी का स्वागत करने आये। वहाँ सात हजार की तरोताजा सेना देखकर सन्ताजी चकित हो गये। उन्होंने शम्भूराजा के बारे में कान्हेरे मे पूछताछ की। कान्हेरे ने कहा, "क्या कहते हैं, सरदार साहब? हम पिछले बहुत दिनों से यहीं पर टिके हुए हैं। कविराज ने मुझे विशेष रूप से तैनात किया है। इस रास्ते से न कोई आया और न कोई गया।"

"क्या कह रहे हैं? शत्रु की सेना यहाँ से ऊपर नहीं चढ़ी?"

"कैसे चढ़ती सरकार? हम छह-सात हजार सैनिक क्या यहाँ चूड़ियाँ पहनकर बैठे हैं? हम शत्रु को यहाँ से कैसे जाने देते? यहाँ से कोई नहीं गुजरा। हम कविराज के आदेश की राह देख रहे हैं।"

उन दोनों युवा सरदारों की उलझन देखकर कान्हेरे भी घबरा गये। यह सूचना मिलते ही शम्भूराजा पर संकट आ गया है, स्वराज्य संकट में पड़ गया है, वहाँ उपस्थित सभी लोग घबरा गये। महाराज का क्या हुआ होगा? "बहुत बड़ा धोखा हो गया।" कृष्णाजी कान्हेरे ने कहा, "रुकिए, अभी थोड़ी देर पहले रत्नागिरि के सुनार नरहरिपन्त प्रचितगढ़ के रास्ते से पहाड़ी चढ़कर आये हैं। उनकी पुत्रवधू पाटण की है उनके साथ तीस-चालीस लोग मेरे डेरे में विश्राम कर रहे हैं।"

नरहरिपन्त को शीघ्रता से बुलाया गया। नरहरिपन्त बताने लगे, "अपनी बहू को लेकर हम प्रचितगढ़ और कुंडीघाट के बीच के रास्ते से तीन दिन की पहाड़ी यात्रा करके आये हैं।" धनाजी ने जल्दी पूछा, "आते समय बीच वाले पट्टे में कुछ आदमी, कोई फौज या ऐसी कोई चीज आपको दिखाई पड़ी?" "वैसा कुछ खास नहीं दिखा. " नरहरिपन्त अपनी बगुले जैसी गर्दन हिलाते हुए कहने लगे। कुछ स्मरण करते हुए वे जल्दी से बोले, "हाँऽऽ कल शाम से पहले पाथरपुंज के जंगल में अपने दादाजी दिखाई पड़े थे।"

"कौन दादाजी?"

"अपने गणोजी शिर्के, अपने शम्भूराजा के साले साहब।"

धनाजी और सन्ताजी झट से आगे आ गये, उनकी साँसें तेज चलने लगीं। सन्ताजी ने हड़बड़ाकर पूछा, "गणोजी वहाँ क्या कर रहा था?"

"कुछ नहीं, सात-आठ सौ की फौज चल रही थी, कराड़ की दिशा में जा रही थी। गणोजी सबसे आगे घोड़े पर थे। उनके पीछे यवन सैनिक थे मराठा सैनिक बहुत कम थे।"

"और क्या क्या देखा?"

"मैं आगे क्यों जाता। मेरी बहू गहनों से लदी थी। व्यर्थ में राहजनी का संकट क्यों बुलाता? इसलिए दूर झाड़ी में छुपकर ही उस फौज को देखा। परन्तु सेना के आगे-आगे दो कैदियों को घोड़े पर लादकर ले जा रहे थे।"

"देखने में कैसे थे वे कैदी?"

"थे तो एकदम गोरे-चिट्टे, मजबूत कद काठी वाले पर उन पर बहुत मार-पीट हुई थी। उनके मुँह में खून सने कपड़े ठुँसे थे। पूरा शरीर रस्सियों और जंजीरों से बाँधा गया था।"

"ऐसा?"

"फौज के आगे निकल जाने पर मैंने गड़ेरियों के बच्चों से पूछताछ की तब उन्होंने बताया कि गणोजी ने समुद्र के किनारे दो सौदागर पकड़े हैं। उन्हें लेकर उंब्रज की ओर जा रहे हैं।"

नरहरिपन्त के बयान से सारी बातें स्पष्ट हो गयीं। सुनने वालों के चेहरे पर प्रेतछाया-सी फैल गयी। सन्ताजी भाव विह्वल हो गये। उन्होंने धनाजी से लिपटकर रोना-कलपना आरम्भ कर दिया। वे विकल होकर चीख पड़े, "धनाऽऽ धोखा हो गया रेऽऽ, यह गणोजी शिर्के रूपी कालसर्प ही अपनी दौलत को डँस गया।"

सभी की आँखों में आँसू भर आये। दुख के आवेग से सैनिक अपनी जगह पर उठने-बैठने लगे। वहाँ कुछ हलचल मच गयी। सन्ताजी ने अपने गर्म आँसू पोंछ लिये। उन्होंने अपनी तलवार को म्यान से बाहर निकाल लिया और ललकारकर बोले, "चलो धनाजी! अभी भी अपने पास छह सात हजार की फौज है। ऐसे ही भागकर चलेंगे और कराड़ पर आक्रमण कर देंगे। उस हरामखोर गणोजी के साथ मुगलों को भी जलाकर खाक कर देंगे।"

"सन्ताजी सुनो! मेरी बात शान्ति से सुनो। इस आड़ी-तिरछी पहाड़ी चढ़ाई से कराड़ पहुँचने में हमें कम-से-कम दो-तीन दिन लग जाएँगे। तब तक क्या शत्रु हमारी राह देखता वहाँ बैठा रहेगा।" धनाजी ने कहा।

"मतलब?"

"पाथरपुंज से कराड़ अधिक दूर नहीं है। रात को भोजन के समय तक मुगल महाराज को लेकर कराड़ पहुँच गये होंगे। वहाँ आसपास रहिमतपुर, इस्लामपुर, औंध जैसी जगहों पर औरंगजेब की चौकियाँ हैं। अब तक उन दुष्टों ने दस-पन्द्रह हजार की सेना साथ लेकर कराड़ भी छोड़ दिया होगा।" धनाजी ने स्पष्ट किया।

"धनाजी तुम ऐसे ही हो। हमेशा मेरे उत्साह पर पानी फेर देते हो।" सन्ताजी ने रुआँसा होकर कहा।

धनाजी ने आगे बढ़कर सन्ताजी को गले से लगा लिया। धनाजी उन्हें समझाते हुए बोले, "सन्ताजी, भावना के आधार पर नहीं बुद्धि के सहारे से लड़ो। ऐसा अपने शम्भूराजा क्यों कहते थे? इस पर भी थोड़ा सोचो, थोड़ा विचार करो। अपने सेनापति, आपके पिता अभी कल ही शहीद हो गये। महाराज को मुगल ले गये। सेनापति दिवंगत हो गये। अपनी मातेश्री महारानी रायगढ़ पहुँचीं कि नहीं, इसका भी पता हमें नहीं है।

"तो हम क्या करें?"

"यहाँ आंबा घाटी में सुरक्षा के लिए दो हजार सैनिकों को छोड़कर बाकी सेना को लेकर हमें रायगढ़ पहुँचना है। वहाँ महारानी की राय लेंगे। सन्ताजी अपने महाराज को कराल काल खींचकर ले गया है। कम-से-कम राजधानी तो बचाएँ। वह भी चली गयी तो?—मेरे भाई तब तो संसार ही डूब जाएगा।"

एक हाथ से आँसू पोंछते-पोंछते सन्ताजी ने दूसरा हाथ अपनी कमर की पेटी पर रखा। सभी ने अपनी कमर कस ली। कृष्णाजी के साथ दो हजार की फौज रख दी गयी। पुनः सभी लोग रात में ही आंबाघाट उतरने लगे। उन्हें शीघ्रातिशीघ्र राजधानी रायगढ़ पहुँचना था।

तीन

उस सूनी शाम को महारानी येसूबाई राजप्रासाद के भव्य तुलसी चौरे के पास बैठी थीं। वे चिन्तित होकर सोच रही थीं कि उनसे पहले पहुँचने का आश्वासन देने वाले शम्भूराजा अभी तक क्यो नहीं आये?

इसी समय तीन घुड़सवार वहाँ प्रस्तुत हुए। उनके पीछे-पीछे येसाजी कंक और उनके साथी उसी ओर आते दिखाई पड़े। उन सभी के घबराये चेहरे को देखकर महारानो का कलेजा धड़कने लगा।

तीनों घुड़सवार घोड़े से उतर पड़े। महारानी के पैर पकड़कर जोर-जोर से रोते हुए कहने लगे, "रानी सरकारऽऽ हमारे ऊपर पहाड़ टूट पड़ा है, गजब हो गया है गजब। शत्रु अपने महाराज को पकड़कर ले गये।"

"क्या?" येसूबाई ऐसे थरथराई मानो उन पर बिजली गिर गयी हो। दासियों ने उन्हें सहारा देकर सँभाला।

"कौन पकड़कर ले गया दादासाहब को?" येसूबाई के समीप खड़ी ताराऊ ने पूछा।

"मुकर्रबखान।"

"मराठों के राजा को पकड़कर ले गये? क्या कहते हो तुम? वे क्या कोई गाय या घोड़ा थे? ऐसा कैसे हो गया?"

कुछ समय के लिए लगा कि महारानी की रीढ़ की हड्डी ही चिपक गयी। वे उसी तरह नीचे बैठ गयीं। वे पसीने से भीग गयीं। उन्हें चक्कर आ गया। लोग भाग-दौड़ करने लगे। दासियों ने सफेद प्याज फाड़कर उनकी नाक के पास रखा। महारानी थोड़ी ही देर में मूर्च्छा से बाहर आ गयीं। राजारामसाहब भी वहाँ पर आ गये। उनकी मूर्च्छा का कारण वह धक्कादायक समाचार था।

विगत नौ वर्षो तक रायगढ़ की युवराज्ञी का खून खौल गया। उन्होंने हरकारे से पूरा समाचार जान लेने का प्रयास किया।

तब तक वहाँ खंडो बल्लाल, जोत्याजी केसकर, रायप्पा महार जैसे अनेक लोग एकत्र हो गये थे। रायप्पा अपना रोना रोक नहीं पा रहा था। "ऐसे स्वामी को छोड़कर मैं यहाँ आया ही किसलिए?" ऐसा कहते हुए वह जोर जोर से रोने लगा। महारानी को जब पता चला कि कविराज और महाराज को मालेघाट से लेकर गये हैं, उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया। उन्होंने कहा, "नहीं नहीं ऐमा कभी नहीं हो सकता मालेघाट? उस भयानक जंगल से तो जाते हुए भूत प्रेत भी घबरा जाते हैं। ऐमी भयानक राह खान को मिलेगी ही कैसे?"

"क्या कहें महारानीजी दाँत भी अपने और होंठ भी अपने।"

"क्या हुआ ठीक-ठीक बताओ? यहाँ मेरी साँस अटक रही है।"

"आपके—आपके भाई गणोजी शिर्के स्वयं मुकर्रबखान के साथ थे।"

"नहीं, उस वीरान जंगल का रास्ता गणोजी को भी कहाँ पता है?"

"उन्होंने ही राह दिखाने वालों की व्यवस्था की, भोजन और घोड़ों की व्यवस्था भी उन्होंने ही की थी। उनके सहयोगी गोवर्धन पन्त भी उनके साथ थे।"

आँखों से गिरने वाले गर्म आँसू महारानी ने अपने पल्लू से पोंछ लिये। दूसरे ही क्षण उन्होंने हरकारे से पूछा, "धनाजी और सन्ताजी कहाँ हैं?"

"महारानीजी कौन बता सकता है? महाराज पर संकट का पहाड़ टूट पड़ा है, सभी ओर अफरातफरी मची है।"

"परन्तु महारानीजी चिन्ता की बात नहीं है। धनाजी बहुत तेज बुद्धि के व्यक्ति हैं। वे सन्ताजी को लेकर यहीं आ रहे होंगे। आपकी आज्ञा लिए बिना वे कोई कार्य नहीं करेंगे।" खंडो बल्लाल ने कहा।

इस भयानक समाचार से पूरा रायगढ़ थरथरा गया था। हर बुर्ज हर दरवाजे से निकलकर लोग राजमहल की ओर भागे आ रहे थे। राजमहल के सामने तीन-चार हजार लोगों की भीड़ एकत्र हो गयी थी। महाराजऽऽ शम्भू महाराज कहाँ चले गये आप? ऐसी दुखभरी चीखें और दहाड़ें अन्दर सुनाई पड़ने लगीं। बाहर की आवाजें सुनकर येसूबाई सँभल गयीं। उन्हें किसी बात का ध्यान आ गया। उन्होंने अपने सहयोगियों से कहा, "चलो खंडोबाऽऽ चलो तराऊऽऽ।"

वे सब महल के बाहर आ गये। सभी एक ऊँचे चबूतरे पर खड़े हो गये। महारानी को देखकर सभी ने एक साथ पूछना आरम्भ कर दिया, "महारानीऽऽ हमारे महाराज कहाँ हैं?"

आक्रोश में उद्विग्न प्रजा को शान्त करने के लिए महारानी ने हाथ जोड़ लिये। उन्होंने कहा, "सुनिएऽऽ आपलोग इस प्रकार का हो हल्ला मत मचाइये। औरंगजेब के साथ हमारा युद्ध चल रहा है। युद्ध में तो आगा-पीछा होता ही रहता है।"

"परन्तु महाराज? हमारे महाराज?"

"घबराइये नहीं। एकाध बार क्षण पल के लिए कोई दाँव उल्टा पड़ गया तो इसका मतलब यह नहीं होता कि औरंगजेब जीत गया। अब शीघ्र ही रायगढ़ से सेना निकलेगी। हम शत्रु पर टूट पड़ेंगे। महाराज को औरंगजेब की मुट्ठी से ही नहीं यमराज के जबड़े के भीतर से भी निकालकर ले आएँगे।"

उस समय वहाँ एकत्र हजारों की भीड़ ने महाराज और महारानी का जयघोष किया। उन्हें शान्त करते हुए येसूबाई ने कहा, "सैनिको! आप सभी अपनी-अपनी जगह पर चले जाइये। अपने पहरे, मोर्चे, बुर्ज आदि छोड़कर कहीं भी न जाइये। अधिक होहल्ला करोगे तो शत्रु का ही लाभ होगा।"

जमा हुई भीड़ बिखरने लगी। राजाराम अपने बड़े भाई पर आये संकट से बहुत विह्वल हो गये थे। वे अधीर होकर पूछने लगे, "भाभीजी! हमें दुश्मन की मुट्ठी से छुड़ाकर ले आने वाले भाईसाहब स्वयं शत्रु के हाथ कैसे लग गये?"

येसूबाई ने पूछा, "खंडोबा, कम से कम दस-पन्द्रह हजार की सुदृढ़ फौज तैयार करने में कितना समय लगेगा?"

"यहाँ पाँच छह हजार की फौज है। परन्तु सामान इकट्ठा करना, शस्त्रास्त्र जुटाना भी आवश्यक है। शेष सेना तो स्वराज्य में जगह-जगह तैनात की गयी है।"

"ऐसा कीजिए, सुधागढ़, सागरगढ़ और खिारी के किले पर शीघ्रातिशीघ्र दूत भेजिए। सुबह नाश्ते से पहले वहाँ की फौजें पाचाड़ पहुँच जानी चाहिए।"

"महारानी चिन्ता न करें। निश्चित समय पर बाँधणी के मैदान पर घास-दाने के साथ फौज तैयार रखूँगा। तब तक सन्ताजी और धनाजी भी आ ही जाएँगे।"

खंडो बल्लाल ने आश्वस्त किया।

महारानी येसूबाई और उनकी देवरानी ताराबाई सारी रात जागती रहीं।

दूसरे दिन युद्ध पर निकलने का निश्चय किया गया था। बहुत-सी तैयारी हो चुकी थी। सभी लोग अपने-अपने लिए निश्चित कार्य के लिए निकल गये थे। राजमहल सूना हो गया था।

महाराज को स्मरण करते हुए महारानी को आवेश आ गया। वे देवघर की ओर दौड़ पड़ीं और भवानी माता के चरणों में गिर पड़ीं। उनके मन से मालेघाट, शिर्के लोगों का क्षेत्र और गणोजी का ध्यान हट नहीं रहा था। 'येसूऽ तुझे विधवा हुआ देखना मुझे बहुत अच्छा लगेगा।' गणोजी के इन विषैले शब्दों का उन्हें स्मरण हुआ। यह स्मरण होते ही वे थरथरा उठीं और विह्वल होकर रोने लगीं। उनके मुँह से शब्द निकले, 'भाई साहब आपने अपनी छोटी बहन पर अच्छा उपकार किया है। भैयादूज की ऐसी भयानक भेंट संसार के किस भाई ने दी होगी?'

चार

जैसे किसी चोर-उचक्के के हाथ अचानक कोहिनूर जैसा अनमोल हीरा लग जाये और उसकी रक्षा की चिन्ता में वह पूरी तरह घबरा जाये वही स्थिति मुकर्रब की हो रही थी। शम्भू महाराज जैसा अकल्पित शिकार उसके हाथ लग गया था। अब उसका एकमात्र लक्ष्य था उसे जल्दी से जल्दी औरंगजेब को सौंप देना। इसके लिए वह रात दिन एक कर रहा था। उसने दो दिन के भीतर ही इस्लामपुर औंध मिरज, रहिमतपुर जैसी आसपास की जगहों से पच्चीस-तीस हजार की मुगल सेना तैयार की।

शम्भूराजा और कविराज को बीच में करके यह सेना जल्दी जल्दी आगे बढ़ी। कृष्णा और कोयना का क्षेत्र पीछे छूट रहा था। दोपहर का विश्राम लेकर सामने के पहाड़ की श्यामगाँव घाटी में पहुँचना था। वहाँ पहुँचने के पहले प्राकृतिक कारणों से भी रुकना नहीं है। ऐसा खान का हुक्म था।

शम्भू महाराज की भावभरी दृष्टि आसपास के क्षेत्र पर बार-बार घूम रही थी। वसन्तगढ़ की तलहटी और फिर पायथे के तलबीड़ गाँव पर उनकी दृष्टि अटक गयी। शम्भूराजा को हंबीरमामा का स्मरण हो आया। उनके अन्त:करण में प्रश्न

उभरा, 'मामा यदि आप आज होते तो?' कविराज का मन निरन्तर क्रन्दन कर रहा था। कृष्णा कोयना के आसपास का परिसर पीछे छूटता जा रहा था। शम्भू महाराज की स्थिति देखकर उनका कलेजा तार तार हो रहा था। सामने की पहाड़ी पार हुई। कराड़ के समीप का संगम स्थान पीछे छूटने लगा। फौज मुगलों के शासन क्षेत्र की ओर मुड़ गयी। इसी समय कवि कलश में आवेश आ गया। वे हाथ उठाकर जोर जोर से गा उठे मानो किसी कवि सम्मेलन में कविता पाठ कर रहे हों—

गले लिपट कृष्णा नदी, कह कोयना बिलखाय।
दीदी लख ये यवन खल, शिवा सुवन ले जाय।।

"चलो भागो, चलो जल्दी करो," मुकर्रब और इखलास चिल्ला रहे थे। उन्हें अभी भी इस बात का भय था कि मराठी सेना कहीं से अचानक टूट पड़ेगी और इस प्रकार आक्रमण करके अपना दुर्लभ यश छीनकर ले जाएगी। इसी चिन्ता से उनकी हालत खराब हो रही थी। साथ में पचीस तीस हजार की सेना थी फिर भी बाप-बेटे को भरोसा नहीं था।

कराड़ की छावनी में मुकर्रबखान ने नागोजी और गणोजी से आग्रहपूर्वक कहा था, "आप दोनों हमारे साथ चलिए।"

"कठिन परिस्थिति और दुर्गम रास्ते से बाहर निकाल दिया न? अब आगे का खुद देखिए। अन्यथा रायगढ़ से बड़ी फौज बाहर निकली तो ये लोग हमें पत्थरों से कुचल डालेंगे।" नागोजी ने कहा।

"इसके अतिरिक्त यदि कहीं दाँव उल्टा पड़ा तो हम दोनों के घर अपनी जगह पर नहीं रहेंगे।" गणोजी ने स्पष्टीकरण दिया।

नागोजी और गणोजी वहाँ से भाग खड़े हुए और मुकर्रबखान की चिन्ता बढ़ गयी। श्यामगाँव की घाटी तक सेना पहुँच गयी। वहाँ से कृष्णा के तट की बस्ती पर नजर डालते हुए मुकर्रब ने अपने बेटे से कहा, "बेटे इखलास! इतनी बड़ी फतह हासिल करने पर लोग जश्न मनाते हैं, मगर ये दोनों बदतमीज तो डरकर भाग गये। इसका मतलब यह है कि हम अभी भी खतरे से बाहर नहीं हैं।"

महाराज की दृष्टि आसपास के वनों और मैदानों पर घूम रही थी। क्षण-क्षण अपना स्वराज्य पीछे छूटता जा रहा था। रास्ते में किसी नाले या झरने के आने पर जान उसमें गुँथ जाती थी। रास्ते के समीप वाले पेड़-पौधों को बाँहों में भर लेने का मन होता था। मैं कहाँ जा रहा हूँ? मेरा स्वदेश मुझ पर इस तरह क्यों क्रुद्ध हो रहा है? विजय के यश का अधिकारी होने पर भी कर्ण का रथ ऐन मौके पर युद्धभूमि की मिट्टी में अटक गया था। कवच कुंडल का दान करते हुए, अपने रक्तरंजित कानों को देखकर कैसा लगा होगा उस महान योद्धा को? गुरुदक्षिणा के बहाने एकलव्य का अँगूठा काट लेने वाले गुरु द्रोणाचार्य और धोखे से पीठ में खंजर भोंकने वाले गणोजी की प्रवृत्ति में अन्तर ही क्या है?

शोक सन्ताप से भरी यह यात्रा समाप्त नहीं हो रही थी। कालरूपी घड़े का पानी उठकर ऊपर आ रहा था। पश्चाताप, सन्ताप, उद्वेग और अतीत-स्मृतियों से महाराज का शरीर सन्तप्त हो रहा था।

''पिताजी कितनी गहरी है यह बाणकोट की खाड़ी...
इसीलिए कहता हूँ शम्भू पीठ को हाथ से मत छोड़ो
पिताजी आप ही तो कहते हैं, मछली के बच्चे को तैरना सिखाना नहीं पड़ता
शम्भूराजा! कभी कभी भाग्य का पासा उल्टा पड़ जाता है
शान्त सागर के भीतर से लहरों के पहाड़ उठते हैं
शम्भू वह देखो लहरें-ही-लहरें
शम्भू कहाँ चले? शम्भूराजा?

'मराठों के राजा को शत्रु लेकर दूर चला जा रहा है। शम्भूराजा को जिन्दा पकड़ लिया है।' ऐसी चीख-पुकार गाँवों वनों जंगलों में सुनाई पड़ने लगी। रास्ते के सारे गाँव और कस्बे घबरा गये। प्रजा के मन में शिवाजी महाराज और सम्भाजी का स्थान देवता के समान था। वह अशुभ समाचार सुनकर गाँव के लोग आक्रोशित हो गये। स्त्रियाँ और बच्चे भी जोर-जोर से रोने-कलपने लगे। जिन्होंने पहले स्वराज्य के सैनिक के रूप में अपना घोड़ा नचाया था, उनके शरीर में आग भड़क उठी। म्यान से तलवारें निकालकर वे अपनी-अपनी घुड़सालों की ओर भागे। किन्तु लम्बे अकाल ने सब कुछ तहस-नहस कर दिया था। घुड़साल में सूने खूँटे और सूनी नाँद की दशा देखी न जाती थी। उनके पास घोड़ा नहीं है, इस अनुभव से उमका कलेजा फटा जा रहा था।

माथे पर धूप चिलचिला रही थी। लू की गर्मी सहन नहीं हो पा रही थी। घोड़े को लगाम लगाने की तरह दोनों के मुँह बाँधे गये थे। शरीर पर पसीने की धारा बह रही थी। गला सूखा जा रहा था। घोड़े पर बँधे शम्भूराजा का मन ग्लानिग्रस्त हो रहा था। भरी गगरी की तरह काल हिल रहा था।

ए शम्भूदादा, शम्भूदादा...
चुप रह पागल। तुम्हारे साथ मैं बरगद की जटाएँ खेल रहा हूँ तो क्या हुआ?
हमारी शादी हो चुकी है
बड़े होकर हम घर-संसार बसाएँगे।
अच्छा बोल क्या चाहिए तुम्हें?
शृंगारपुर के केशव पंडित का प्रयोगरूप रामायण मैंने देखा

उसमें दुष्ट रावण सीता का अपहरण कर रहा है
बेचारा राम कितना दुखी दिखाई दे रहा था?
चलता है बालिके, वियोग-विरह
जैसे शब्दों का भी बड़ा गहरा अर्थ होता है।
परन्तु देखो मुझे एक शंका होती है।
हाँ शम्भूदादा देखिए बेचारी सीता माई
अकेली अपनी कुटी में बैठी है
और बाहर ही बाहर कोई राम को ही भगाकर ले जाये तो?
पागल कहीं की। राम को भगाकर ले जाये तो?
ऐसा उल्टा रामायण रचने का साहस?
ऐसा साहस किसी में होगा क्या?

रास्ते में अनेक गढ़ियाँ थीं। गाँव-गाँव के जमींदार कोई कोई देशमुख तो कोई देशपाण्डे थे। भयभीत प्रजाजन इन लोगों की ओर भाग रहे थे। उनके दरवाजों पर अपनी व्यथा व्यक्त कर रहे थे, "जमींदार साहब! धोखा हो गया है। कुछ कीजिए, हमारे शम्भूराजा को बचाइये।" जागीरदार और जमींदार बड़ी उलझन में पड़े थे। परन्तु अन्दर से उन्हें प्रसन्नता थी। उनके चेहरे पर भय था। वे सोच रहे थे—क्या सचमुच शम्भूराजा कैद हो गया? वे घर के भीतर जाकर खुशी से शराब का घूँट लेते थे। पिछले कुछ वर्षो में जबसे स्वराज्य आया जागीरदारी और गढ़ियों का वैभव समाप्त हो गया था। अब ऐसा नहीं था कि वे जो कुछ करें वही कानून हो। अन्यायी जागीरदारों के लिए हिन्दवी स्वराज्य एक संकट था। इसीलिए शम्भूराजा के कैद हो जाने के समाचार से उन्हें गुदगुदी होने लगी।

वे ऊपरी तौर पर प्रजा को सान्त्वना देने का प्रयास कर रहे थे "भाइयो! इतनी गड़बड़ मत करो। राजा को कुछ नहीं होगा। हम किस दिन के लिए हैं?"

"परन्तु सरकार! खान की सेना पुसेसावली के मैदान तक पहुँच चुकी है। राजा और कविराज को बीच में ले रखा है। चारों ओर से पचीस हजार की फौज है।"

"कितनी फौज बताई?"

"पचीस हजार।"

"सुना आप लोगों ने इतनी बड़ी फौज शत्रु के पास है। तो यहाँ इकट्ठे हुए पचास-साठ हट्टे कट्टे लोगों से क्या होगा?"

"हम जलकर राख हो जाएँगे। हम हर तरह का खतरा उठाएँगे परन्तु अपने शम्भूराजा को छुड़ाकर ले आएँगे।"

उन उत्साही युवकों, बूढ़ों, स्त्रियों और बच्चों पर जमींदार लोग दृष्टि डालते थे और सूझबूझ की मुद्रा में कहते थे, "ऐसी भूल मत करो। खान की सशक्त सेना अपने गाँव पर आक्रमण कर देगी तो अपना सारा गाँव जलकर खाक हो जाएगा।"

आँसू भरी आँखों से युवक कहते, "तो सरकार हम करें तो क्या करें?"

"हम हैं न? चिन्ता क्यों करते हो? हमने अभी कुछ देर पहले बुध के जमींदार साहब के पास घोड़ा भेजा है। उन लोगों की भी सलाह लेंगे। थोड़ा समय लगेगा, परन्तु सभी मिलकर राजा को छुड़ाएँगे।" आवेश से प्रज्वलित युवकों के उत्साह पर बड़े कौशल से व्यवस्थित रूप से पानी डाला जा रहा था।

पाँच

तीसरे दिन भोर होते होते धनाजी और सन्ताजी पाचाड़ पहुँच गये। महारानी येसूबाई पाँच-छह हजार की सेना तैयार करके नीचे उतर आयी थीं। अत्यन्त दुखी धनाजी और सन्ताजी की ओर देखा न जाता था। राजमन्दिर में अनुभवी लोगों के साथ विचार-विमर्श हुआ। येसाजी कंक के साथ परामर्श करके येसूबाई ने अपनी राय प्रकट की, "अनेक गढ़ों-किलों से फौज हटाकर खान के पीछे भागना ठीक नहीं होगा। यदि दूसरी ओर से बादशाह की सेना ने आक्रमण किया तो धोखा हो जाएगा।" खंडो बल्लाल ने समर्थन करते हुए कहा, "सच है महारानी।"

कुल सात-आठ हजार की फौज लेकर बाहर निकलने का निश्चय किया गया। महारानी घोड़े पर सवार हुईं। ताराऊ और राजाराम को पीछे छोड़कर, 'हर हर महादेव' का उद्घोष करती हुई सेना बाघोली घाटी के नीचे उतरने लगी। यम के दाँतों तले से अपने सत्यवान को खींच ले आने वाली सावित्री का शौर्य येसूबाई में सम्भ्रमित हो गया था। धनाजी और सन्ताजी के घोड़े रणोन्माद से उन्मत्त हो गये थे। बाघोली की घाटी पार होते न होते हंबीरराव के भाई हैबतराव सामने आ गये। वे रायगढ़ के लिए ही निकले थे। रास्ते में महारानी को घोड़े पर सवार देखकर हैबतराव मोहिते घोड़े से नीचे उतर पड़े। रिकेब में पड़े महारानी के पैरों को पकड़कर वे जोर-जोर से रोने लगे। वे छोटे बच्चे से भी अधिक अधीर हो गये थे। येसूबाई को ही उनका धीरज बँधाना पड़ा। येसूबाई ने कहा, "पोंछ डालिए अपने आँसू। उल्टी दिशा में लौट पड़िए। सम्भाजी राजा को छुड़ाकर ही रायगढ़ जाएँगे।"

"अब कहाँ से और कैसे छुड़ाएँगे हम उन्हें, महारानी? परसों दोपहर में ही मुकर्रबखान ने श्यामगाँव की घाटी छोड़ दी। उसके साथ पचीस हजार की तैयार सेना है।"

"अरे यह क्या हो गया? महाराज हमारी आँखों से दूर चले गये।" ऐसा कहकर जोत्याजी केसकर और रायप्पा रोने लगे।

अब तक बहुत आघात हुए थे। उनसे कभी न डरने वाली येसूबाई हताश दिखाई देने लगीं। वे घोड़े से नीचे उतर पड़ीं। दुखी मन मे उन्होंने अपनी नजर चारों ओर घुमाई। आसमान बोझिल हो गया था। ऐसा लगा मानो दुखद समाचार सुनकर बादलों ने भी अपनी यात्रा स्थगित कर दी थी।

महारानी की यह अवस्था देखकर धनाजी और सन्ताजी भी घोड़े से उतर पड़े। महारानी के सामने हाथ जोड़कर उन्होंने कहा, "महारानीजी आप चिन्ता न करें। हम फौज लेकर भागते हुए आगे जाएँगे और शत्रु के कब्जे से महाराज को छुड़ाकर ले आएँगे।"

येसूबाई का गला भर आया। जैसे किसी व्यक्ति के कलेजे में कटार घुस जाये और उस पीड़ा को सहन करते हुए वह बोले, उसी तरह येसूबाई बोलीं, "ऐसा नही लगता कि इसका कुछ उपयोग हो सकेगा।"

"क्यों? महारानी क्यों? हमे आगे उड़ान भरने की आज्ञा तो दीजिए।" दोनो हठ करने लगे।

"महाराज ने ही एक बार अपनी काव्यमयी शैली में एक दृष्टान्त बताया था। 'यक्ष किन्नरों का महत्त्व भगवान के दरबार में होता है। वे नीचे धरती पर आ जाते हैं तो मिट्टी के पुतले बन जाते हैं'।"

"इसका अभिप्राय महारानीजी?"

"कराड़ से आगे पूरब का सारा प्रदेश समतल और बिना जगल घाटियो का है। वहाँ अपना कोई दाँव नहीं चलेगा।"

"ऐसा क्यों? हंबीरमामा की फौज ने तो बागलाण से लेकर कर्नाटक तक अपना घोड़ा दौड़ाया था।"

"अचानक आगे बढ़कर आक्रमण करना, शत्रु को हैरान करना एक बात है किन्तु बादशाह की चार लाख की फौज से आमने सामने मुकाबला करना एकदम दूसरी स्थिति है।"

वृद्ध अनुभवी लोगों और उत्साही युवकों का एकत्र विचार विमर्श हुआ। दुर्भाग्य से मुकर्रबखान अपने प्रदेश की सीमा पार करके कब का आगे निकल गया था। इस स्थिति को बिना समझे अन्धों की तरह आगे बढ़ते जाना सह्याद्रि के भीतर बने किलों को भी गँवा देना हो सकता है। महारानी ने कहा, "ऐसे समय में

महाराज ही कोई उपाय सुझा सकते हैं। किन्तु मगरमच्छ की मुट्ठी में फँसे महाराज तक पहुँचें कैसे?"

इस चर्चा के दौरान रायप्पा को सिसकी आ गयी। उसने कहा, "कम से कम अब तो मुझे न रोकें। बारिश हो या तूफान, महाराज के पास कैसे पहुँचना है, इसे मैं देखूँगा।"

खंडो बल्लाल ने मसौदा लिखा। महारानी ने उसे मुद्रांकित किया। सभी से विदा लेकर रायप्पा अपने भाई देवप्पा को साथ लेकर वहाँ से बाहर निकला। उनके घोड़े कराड़ की दिशा में दौड़ पड़े।

सूर्य पश्चिम की ओर झुक गया था। पहाड़ और घाटियों में अँधेरा भरने लगा। लिंगाणा किले की ऊँची उठी गर्दन आज टूटी-सी दिखाई दे रही थी। धनाजी और सन्ताजी बहुत मायूस हो गये थे। महारानी के ललाट का कुंकुम माथे पर बिखर गया था। उन दोनों उद्विग्न तरुणों की ओर देखकर महारानी बोलीं, "धनाजी, सन्ताजी धीरज से काम लो। हमारा कुंकुम बचाने के लिए स्वराज्य का भाग्य फूटना नहीं चाहिए।"

छह

दोपहर का समय, बाहर की बंजर भूमि पर लू चिलचिला रही थी। औरंगजेब का डेरा अमदनगर के बंजर मैदान में पड़ा हुआ था। इन दिनों बादशाह ने अकलूज, अमदनगर जैसे नाम रख दिए थे। अकलूज, दौंड, चांभारगोंदा जैसे क्षेत्र सदैव अकाल की चपेट में आते थे। इसी कारण से फरवरी का महीना होने पर भी यहाँ तेज धूप निकली थी। दिन अनेक स्थानों पर मृगमरीचिका दिखाई पड़ती थी। इन दिनों औरंगजेब बादशाह बड़ी उलझन में था। कितनी बड़ी फौज, कितने वर्ष का समय, कितने धन का अपव्यय और कैसा दुर्भाग्य? वह काफिर का बच्चा सम्भा हाथ ही नहीं लग रहा था। औरंगजेब की जिन्दगी की यह सबसे बड़ी मुहिम एक मृगमरीचिका ही सिद्ध हो रही थी।

बादशाह दरबार में अपने मुंशियों को कुछ लिखित सूचनाएँ दे रहा था। ऐसे समय में बादशाह के कार्य में किसी भी प्रकार का व्यवधान महापाप समझा जाता। उच्चासन पर बैठा बादशाह कुछ बोल रहा था और मुंशी उसे लिख रहा था। इसी बीच एक दूत साहस करके बादशाह के पास आकर खड़ा हो गया। उसका वहाँ

पहुँचना और बादशाह के समीप खड़ा होना सामान्य स्थिति में इसे धोखादायक और आपत्तिजनक माना जाता। इतना ही नहीं इस प्रकार की धृष्टता किसी अन्य व्यक्ति ने की होती तो पहरेदारों ने उसके सिर को मुर्गे की तरह छाँट दिया होता। किन्तु उस दूत के वहाँ तक पहुँचने के पहले ही पहरेदारों में कानाफूसी शुरू हो गयी थी। साथ ही उनके चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी थी।

वह समाचार ही इतना आनन्ददायी था कि सभी सैनिक आनन्द से विह्वल हो रहे थे। हँसी के ऐसे फौवारे छूट रहे थे मानो कि सन्तानहीन सम्राट को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई हो। बाहर से आने वाली आनन्द लहरियों से भीतर बैठे लाग चकित हो रहे थे। वे ठीक ठीक समझ नहीं पा रहे थे कि वहाँ क्या हो रहा है? अष्टावधानी बादशाह सावधान था। मसौदा लिखाने में व्यस्त होने पर भी दरबार की गतिविधियों पर उसकी कडी नजर थी। उसके सेवक कोई खुशी की खबर देने के लिए बेताब हो रहे हैं इसका अन्दाजा उसकी अनुभवी नजरों ने पहले ही कर लिया था। परन्तु यह खुशी की खबर ज्यादा से ज्यादा क्या हो सकती है, इसका भी अनुमान उसने कर लिया था। इसलिए बिना विचलित हुए अपना कार्य करता रहा। परन्तु थोड़ी देर में शराब पिलाए गये ऊँट की तरह उसका सेवक बेताब हाने लगा। इस बात के ध्यान में आते ही वह विचलित हुआ। अपना कार्य छोड़कर बड़े कठोर स्वर म बादशाह ने दूत से पूछा "क्या बात है?" बादशाह ने दूत की ओर नफरत से देखा और व्यग्यपूर्ण शब्दों मे बोला "ईरान में हमारे बेवकूफ अकबर का कुछ भला बुरा हुआ है क्या?"

"नही आलमपनाह! इससे बडी बहुत बहुत बडी खुशी की खबर है। वह शैतान सम्भा कैद हो गया।"

"कौन?" बादशाह ने अपनी गर्दन झट से घुमाई।

"वही, शैतान सम्भा।"

"क्या हुआ उसका?"

"कैद हो गया। अपने हाथ लग गया।"

"किसने कैद किया?" बादशाह ने धीमे स्वर में पूछा।

"मुकर्रबखान ने।"

"कहाँ?"

"सह्याद्रि की घाटी मे।"

बादशाह ने अविचल भाव से उस दूत को अपने पास बुलाया। उसे अपने कानों तक आने दिया। किन्तु इसके बाद बादशाह का धैर्य छूट गया। वह झट से उठकर खडा हो गया और पटापट दूत के गालो पर चाँटे जड दिये।

बादशाह की गोरी चिट्टी मुखमुद्रा क्रोध और अविश्वास से तप्त हो गयी। उसका हाथ रुक नही रहा था। किन्तु मार खाने वाले दूत की हँसी भी कम न हो

रही थी। बादशाह ने क्रोध से कहा, "तेरी ये हिम्मत? आलमगीर का मजाक उड़ा रहा है?" औरंगजेब के मन में एक क्षण के लिए आया कि इस पागल दूत को खौलते हुए तेल के कड़ाह में फेंकने का हुक्म दे दे।

बादशाह की नजर सामने गयी तो उसने देखा कि उसके पोते, सभी अमीर उमराव, नजदीकी सरदार, बादशाह के तम्बू की ओर भागते हुए आ रहे हैं। जिस प्रकार नमाज पढ़ते समय घुटनों पर झुकते हैं उसी प्रकार सभी घुटनों पर झुक गये थे। हाथ ऊपर उठाकर और आँखों में आँसू लिये सभी ने एक स्वर से कहा, "अल्लाहोऽऽ अकबर, अल्लाहोऽऽ अकबर।" बाहर हँसी के फव्वारे छूट रहे थे। बादशाह के हुक्म के बिना ही ढोल तासे बजने लगे थे। सभी किसी मंगल की सूचना दे रहे थे।

समाचार की पुष्टि की आवश्यकता अब नहीं थी। बादशाह के चेहरे की क्रोधभरी वक्र रेखाएँ अब समाप्त हो गयी थीं। आनन्दातिरेक से बादशाह ने अपने मुँड़े हुए सिर पर हाथ रखा। उसके बाल अब बिलकुल पतले हो गये थे। उसके सिर पर विगत छह वर्षों में किसी ने ताज नहीं देखा था। परन्तु उसकी कोई ग्लानि अब उसके चेहरे पर नहीं थी। खुशी से उसका चेहरा रक्ताभ होकर दमक रहा था। बादशाह की आँखों से भी आनन्दाश्रु टपक पड़े। वह भी घुटने टेककर बैठ गया। आसमान की ओर आँखें उठाकर खुदा की इबादत करने लगा, "या खुदा या अल्लाह! शायद आसमान में बैठे फरिश्ते ने मेरी आवाज सुन ली होगी। अल्लाह के नाम से की गुहार जन्नत तक पहुँची होगी। दीन दुनिया के बादशाह अल्लाह तेरा लाख लाख शुक्र।"

बादशाह का अभिनन्दन करने के लिए असदखान समीप आ गये, तब असदखान का हाथ अपने हाथ मे लेकर बादशाह ने प्रसन्नता से कहा, "असदखान, अल्लाहताला के हम बहुत एहसानमन्द हैं। अल्लाह ने मेरे जैसे नाचीज पर बड़ी मेहरबानी की है। उसने हमें ऐसा उपहार दिया है जिसे पाकर मैं इतना खुश हूँ कि कोई जन्मान्ध आँखें पाकर या सन्तानहीन सन्तान पाकर भी इस तरह खुशी से पागल न होगा।"

सात

इधर मुकर्रबखान का दल बहादुरगढ़ की ओर बढ़ रहा था और उधर बादशाह की चिन्ता बढ़ रही थी। वह अधिक सावधान होने लगा था। इतने वर्षों का संघर्ष एक

बार समाप्त हो गया था। खुदा ने मेहरबानी की थी। प्रसन्नता से सभी की नींद उड़ गयी थी। किन्तु बादशाह को अपनी छाया से भी भय लगता था। अनेक बार वह चिन्तित हो जाता था, अपनी चौकन्नी नजरों से इधर उधर देखते हुए डेरे से बाहर आ जाता था।

भीमा नदी के विशाल तट के आसपास किसी बड़े पहाड़ या गहरी खाई जैसी छिपने की जगह नहीं थी। इसलिए टिड्डी दल की तरह अचानक मराठा फौज के टूट पड़ने की कोई सम्भावना नहीं थी। किन्तु मुकर्रबखान कोई भेड़ बकरी लेकर बादशाह के पास नहीं आ रहा था। वह बागी, शिवाजी के पुत्र को बाँधकर खींचता हुआ बादशाह के पास ले आ रहा था। थोड़ी सी असावधानी से भी रंग में भंग हो सकता था। इसका बादशाह को पूरा ज्ञान था।

बादशाह वजीरे-आजम असदखान से बार-बार पूछता था, "शेख मुकर्रब के साथ कितनी फौज है?" असदखान का जवाब होता, "पच्चीस हजार।" अपने विश्वसनीय गुप्तचरों से बादशाह बार बार इस संख्या की पुष्टि करता। अपनी फौजी शक्ति के प्रति आश्वस्त होने पर भी बादशाह का डर कायम था।

सम्भाजी की गिरफ्तारी के समाचार ने बादशाह के सैनिकों और सरदारों को खुशी से पागल कर दिया था। यह सोचकर कि दक्खिन का दशावतार समाप्त हुआ, लोग प्रसन्न हो रहे थे। उन्हें लगता था कि शीघ्र ही दक्खिन से उत्तर जाने का अवसर मिलेगा। समीपी रिश्तेदार और सरदार बादशाह की खुशी में सम्मिलित होने के लिए बहादुरगढ़ की ओर दौड़ पड़े थे।

बादशाह ने एक सुबह असदखान को हुक्म दिया, "वजीरे आजम! यहाँ चंभारगोंदा, अकलूज, पंढरपुर, दौंड आदि इलाकों में शीघ्रता से एक फरमान जारी कीजिए।"

"जी मेरे आका!"

"सभी काफिरों को सूचित कर दीजिए कि किसी की घुड़साल में, किसी के दरवाजे पर, या रास्ते पर एक भी घोड़ा दिखाई नहीं पड़ना चाहिए।"

"लेकिन-लेकिन जहाँपनाह ऐसा कैसे हो सकता है? वे अपने जानवरों को भेजेंगे कहाँ?"

"कुछ दिनों के लिए उन्हें अपनी घुड़साल खाली करनी पड़ेगी। अपने अपने जानवर चाहे हट्टे-कट्टे हों या दुबले, उन्हें बाजार में या रिश्तेदारों के घर भेजना होगा। परन्तु यदि कोई मराठा बच्चा, दिन में या रात में घोड़े पर सवार दिखाई देगा तो उसके हाथ या पैर तोड़ दिये जाएँगे।"

हुक्म की तामील जल्दी ही की गयी। रात मे ही आस-पास के सभी घोड़े गायब हो गये। सवेरे एक बार मसनद के साथ बैठ जाने पर दोपहर तक तम्बू में बने

रहना बादशाह का रोज का नियम था। किन्तु पिछले चार दिनों से बादशाह बहुत बेचैन था। तम्बू के भीतर बैठे उससे रहा ही न जाता था। चन्दनी अम्बारी में सजे और सूँड़ से पूँछ तक स्वर्णालंकारों को धारण किये अपने शानदार हाथी पर वह बड़े ठाट से बैठता। उसके आगे-पीछे पाँच पाँच सौ घुड़सवारों की सेना रहती। बादशाह भैरवनाथ मन्दिर के समीप वाली लम्बी सीमारेखा को पार करता। वहाँ से उसका काफिला पूरब की ओर सरस्वती के सूखे पाट में घुस जाता। वहाँ से काफिला खंडोवा के विस्तृत समतल मैदान पर पहुँच जाता। औरंगजेब अपने हाथी पर से अपनी नजर चारों ओर घुमाता। बहादुरगढ़ के आसपास की धूप उसे परेशान करती। वह मन ही मन कहता, "अल्ला करें, उस जहन्नमी सम्भा का यहाँ आना मृगजल न बन जाय।" इन विचारों से बादशाह काँप उठता था।

दोपहर के बाद बादशाह का काफिला नदीतट की दूसरी ओर एक चक्कर लगाता था। यह काफिला जब दमड़ी मस्जिद के सामने पहुँचता तो मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठा बूढ़ा फकीर अपने झुलसे होठों पर काली चिलम रखता और फूँकते हुए बादशाह को देखकर जोर से हँसता। बहादुरगढ़ और उसके आस-पास के इलाके की चार लाख की बस्ती में यह फटीचर फकीर अकेला व्यक्ति था जो औरंगजेब को दूसरों की तरह झुककर सलाम नहीं करता था। फकीर होने के बावजूद बादशाह के सामने झोली नहीं फैलाता था। उसने स्वयं एक एक दमड़ी इकट्ठी करके दमड़ी मस्जिद खड़ी कर ली। उस फकीर की अनासक्त मुद्रा देखकर बादशाह को शिवाजी महाराज का स्मरण हो आता था। शिवाजी नाम के एक जमींदार ने फकीर की दमड़ी की तरह ही एक-एक व्यक्ति को एकत्र किया था और हिन्दवी स्वराज्य का एक मंगल मन्दिर खड़ा कर लिया था। शिवाजी समाप्त हुए तो बादशाह ने सन्तोष से अपनी आँखें बन्द कर ली थीं किन्तु उसकी आँखें खुलें इसके पहले ही दूसरी घटना घट गयी। सम्भाजी नाम का गरूड़ स्वराज्य मन्दिर के कलश पर अपने बलशाली डैने फैलाए जमकर बैठ गया था। उसके पंख जलाने के लिए आतुर बादशाह को निरन्तर भ्रमण करते हुए दक्षिण में अपने जीवन के आठ वर्ष गुजारने पड़े थे। उसकी दहशत बादशाह ही नहीं उसके सैनिकों और जानवरों पर इतनी गहरी बैठ गयी थी कि सम्भाजी सचमुच गिरफ्तार हुआ है क्या? यदि हुआ है तो मुगल सेना तक पहुँचेगा क्या? ऐसी अनेक शंकाएँ शाहंशाह को घेर रही थीं।

भीमा नदी के नीले पाट में बादशाह की फौज का प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगता। बादशाह का हाथी चाँदबीबी महल के सामने रुक जाता था। नौकर जल्दी से सीढ़ियाँ लेकर, दीवार की तरह ऊँचे हाथी से लगाते थे। बादशाह बड़े अभिमान से नीचे उतरता था, फिर जल्दी जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर जाकर महल के छज्जे में खड़ा हो जाता था। वहाँ से कभी नदी के विस्तृत पाट को कभी पीलखाने की

ओर देखता था। बीच-बीच में महल के दरवाजे के पास ढह गये भग्नावशेष को देखता था। वहीं पर कभी एक सातमंजिला महल था, जो अब मिट चुका है। उसी जगह पर एक गुप्त खजाना है, ऐसी अफवाह पूरे बहादुरगढ़ में फैली थी। वहाँ के गुप्त धन को प्राप्त करने का पागल प्रयास अनेक साहसी लोगों ने किया था। किन्तु वहाँ कुदाल मारते ही भयानक चमत्कार घटित होता था। बडे बड़े डसने वाले जहरीले भौंरे बहुत बड़ी संख्या में निकलते थे और शरीर के अंग प्रत्यंग को बींधने लगते थे। बादशाह इन्हें मूर्खताभरी बातें मानता और उपेक्षा करता।

उस दिन बादशाह बहुत देर तक छज्जे में खडा रहा। उस ढहे हुए अवशेष को ध्यान से देखता रहा। उसी के नीचे गुप्त धन है यह बात उसके ध्यान में आती रही। उस रात बादशाह ने एक भयानक सपना देखा—

स्वयं बादशाह के हाथों में एक बड़ा गहदाला था। वह स्वयं, उसका वजीर, उसके शहजादे, पोते और सरदार बड़े परिश्रम से उस जगह को खोद रहे थे। वे भी पसीने से तरबतर हो गये थे। अन्ततः वे गुप्त धन की सन्दूक तक जा पहुँचे। सन्दूक के अन्दर बहुत कीमती जवाहरात चमक रहे थे। सबसे बडा तेजस्वी हीरा बादशाह ने झपटकर ले लिया। तेईस साल पहले बादशाह ने आगरा में दो पानीदार चमकती आँखे देखी थीं। उनकी चमक इन्हीं हीरों जैसी थीं। वे आँखें सम्भाजी महाराज की थीं। वही अनमोल हीरा अचानक हाथ में आ गया था। इसलिए बादशाह प्रसन्न होकर खिलखिलाकर हँसने लगा। उसके साथ दमडी मस्जिद वाला फकीर भी जोर जोर से हँसने लगा। इसी बीच बगल से भौंरो का दल उठा। उनकी विचित्र और विकट ध्वनि सुनाई देने लगी। एक ही साथ दसों दिशाओं में भौंरों ने बादशाह पर हल्ला बोल दिया।

'हर हर महादेव, हर हर महादेव' का उद्घोष होने लगा। जहाँ देखिए वहाँ भौंरे ही भौंरे। भौंरों ने बादशाह के लिए दिल्ली की राह रोक दी थी। भौंरों के झुंड के पार एक सूनी जगह पर बादशाह को अपनी कब्र दिखाई देने लगी। उस पर बिछी चादर के टुकडे-टुकडे हो गये थे।

उस भयानक सपने से बादशाह का गला सूख गया। वह आधी रात में ही बिछौने से उठ गया। बाहर बैठक में आकर उसने अपने वजीर, सेनापति और शहजादों को जगा दिया। सभी पर एक तीखी नजर डालकर केवल इतना ही कहा "असदखान जुल्फिकार, बरामदखान अभी का अभी हुक्म की तामील करो। कम से कम तीस हजार की फौज किले के बाहर तैयार करो। आसपास के सौ डेढ सौ गाँवो में फौज भेज दो।"

"लेकिन लेकिन हुजूर! हुक्म की तामील हो गयी है। किसी भी गाँव में घोडा तो क्या कोई खस्ताहाल खच्चर भी नहीं बचा है।" असदखान ने कहा।

"घोड़ों को नहीं दो पैर वाले गधों को कोड़े लगाओ। हर हट्टे कट्टे आदमी को लाठी-डंडे से पीटो। दो ही दिनों में मुकर्रबखान उस काफिर बच्चे सम्भा को लेकर आने वाला है। उस दुष्ट के हमारे पाम आने तक पूरी सावधानी बरतिए। आसपास की पंचकोसी में कोई भी मरगट्ठा गर्दन सीधी करके चलते नहीं दिखाई देना चाहिए। सभी मूर्ख मराठों को सबक सिखाना जरूरी है।"

इस जारी किये गये हुक्म की तामील तत्काल की गयी। मुकर्रबखान की फौज भीमा नदी के दूसरे तट पर पहुँच गयी। इसके पहले ही बादशाह ने वहाँ के मराठों की हड्डी पसली एक कर दी थी। रास्ते के आष्टी और लिंपनगाँव जैमे गाँव तो सिपाहियों की मार से पथरा गये थे। भीमा नदी की दाहिनी ओर बायीं ओर केवल विह्वलताभरी चीखें और कराहें ही सुनाई दे रही थीं। कोई भी पुरुष गली कूचों से निकलकर रास्ते पर चलता दिखाई नहीं दे रहा था। यहाँ तक कि कुत्ते भी बाहर निकलने से घबरा रहे थे। वे बीच बीच मे अपने करुण स्वर में चिल्ला उठते थे। उनकी अशुभसूचक करुण चिल्लाहट को सुनकर पेड़ पर बैठे उल्लू भी पत्तों के पीछे छिपने लगे।

आठ

केवल इस समाचार से कि सम्भाजी को जिन्दा पकडा गया है और उमे बादशाह का कैदी बनाया गया है, बहादुरगढ़ की फौजी छावनी में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया था। मभी लोग अत्यन्त हर्षित थे। एक बड़ा तमाशा, जुलूस और उत्मव देखने को मिलेगा, इम कल्पना से लोगों को चार दिन से नींद नहीं आ रही थी। पागल तो पूरे पागल बने ही थे, सयानो को भी पागलपन के दौरे आने लगे थे। जिन्हें सर्दी, खाँसी और हल्के ज्वर जैसी छोटी-मोटी बीमारियाँ थीं, वे भी इस समाचार से भले चंगे हो गये।

मभी की नजरें मुकर्रबखान के आगमन पर लगी थीं। कैसी अजीब थी यह शैतानी मुहिम। पिछले आठ सालों में सिपाहियों ने अधूरी नींद ही ली थी। लम्बी-लम्बी दौड़ों, रामदरी जैमी घाटियों की घोर यातनाओं, प्लेग जैसी भयंकर बीमारियों आदि मे दक्षिण में सिपाहियों का दम घुटने लगा था। राजपूतों को अपने प्रदेश के मपने आने लगे थे। जोधपुर, बीकानेर की अपनी-सी लगने वाली रूपहली बालू,

कँटीली झाड़ियाँ, अरावली की ओर से बहने वाली शीतल हवायें उन्हें अपनी ओर खींचते थे। मुसलमान सिपाही सोचते थे कि कब आगरा और बरेली की ओर जायँ और अपने बाल-बच्चों को एक बार फिर देखें। वे सोचते थे कि दरवाजे पर खेलने वाले बच्चे अब कितने बड़े हो गये होंगे? बड़े बूढ़ों का क्या हुआ होगा?

सभी रोज की फौजी जिन्दगी से ऊब गये थे। इसके पहले काबुल कन्दहार की लड़ाई में बर्फ के ऊपर तलवारबाजी करके आठ-दस महीने में ही अपने बीवी बच्चों में वापस आ गये थे। परन्तु दक्षिण की यह मुहिम तो बहुत पीड़ादायी साबित हुई।

एक बार कभी बादशाह बूढ़ा होकर अल्लाह को प्याग हो गया तो उसका भूत उठ खड़ा होगा और फौज को चलाएगा। ऐसा सभी फौजियों का विश्वास था। फौज के भीतर घुसुर फुसुर बहुत होती थी किन्तु बगावत करने का साहस किसी में भी नहीं था। जिस किसी के मन में भी ऐसा विचार उठा, उमका सिर हाथी के पैर के नीचे कुचलकर नारियल की तरह चूर-चूर कर दिया गया।

पिछले दो-तीन सालों में गोलकुंडा और बीजापुर के अनेक सरदार आकर औरंगजेब से मिल गये थे। उन्हें अपनी-अपनी जागीरें पाने की बड़ी उतावली थी। गाँवों और कस्बों के किसान भी प्रमन्न थे। वे सोचते थे जो कुछ भी हो, एक बार यह युद्ध तो रुक जाएगा। पिछले मात आठ वर्षो में खेती में कुछ अधिक पैदावार नहीं हो पायी थी। सूखे के कारण ममय पर बोवाई ही नहीं हो पायी।

अब यह आपदा समाप्त होने वाली थी।

पिछले चार दिनों से फौज में ईद से भी बढ़कर उत्सवी वातावरण बना हुआ था। फौज के बाजार खुशी से जगमगा रहे थे। लोगों को नींद ही नहीं आ रही थी। सभी आँखें मुकर्रब की राह देख रही थीं। बाजा बजाने वालों ने अपने तासों पर नया चमड़ा चढ़ाया था। शहनाई की पत्तियाँ बदली गयी थीं। खिलाड़ी अपने खेलों का अभ्यास कर रहे थे। नमाज में सभी लोग हाजिर रहते थे। फौज के साथ जो सुनार, दर्जी जैसे व्यवसायी थे, उनके कार्य में बड़ी बरकत आ गयी थी।

अपने प्राणप्रिय बालसखा को शत्रु पकड़कर ले गया, यह समाचार पाते ही रायप्पा महार काँप गया था। महारानी ने उससे कहा था, "राय मामा! प्राणों पर संकट आ जाये तो भी यह पत्र महाराज तक पहुँचा दो।" महारानी के ये शब्द रायप्पा के कानों में गूँज रहे थे। सम्भाजी के साथ हुए धोखे के कारण रायप्पा को कुछ सूझ नहीं रहा था। देवप्पा के साथ घोड़े पर सवार वह रात में ही पंढरपुर की ओर निकला। रास्ते में पूछ-पूछ कर उन्होंने बहादुरगढ़ के रास्ते का पता किया। परन्तु भीमा नदी के किनारे उन्होंने जो स्थिति देखी उससे वे पानी-पानी हो गये। आसपास के गाँव भय से तितर-बितर हो गये थे। घुड़सालें खाली हो गयी थीं।

अपने-अपने घरों को ताला लगाकर प्रजा गाँव छोड़कर चली गयी थी। गाँव श्मशान बन गये थे। लोग कहीं बाँधों की आड़ में या नदी-नालों की खोहों में छिपे हुए थे।

जो भी हो रायप्पा को तो बहादुरगढ़ पहुँचना था। उसी इलाके में उसकी भिश्तियों की एक टोली से भेंट हुई। चमड़े के बड़े-बड़े थैलों में पानी भरकर ले जाना और फौजियों को पिलाना उनका मुख्य कार्य था। इन दोनों ने भी कहीं से चमड़े की बड़ी मशक उपलब्ध की। साथ में मशक, फटी हुई पगड़ी बढ़ी हुई दाढ़ी और काले रंग के कारण ये दोनों भाई बड़ी सहजता से उन दक्खिनी भिश्तियों में मिल गये।

रायप्पा अन्दर का भेद जानने की कोशिश कर रहा था किन्तु दहशत के कारण कोई कुछ बोलने को तैयार न था। भावनाविकल रायप्पा को रात-बेरात हमेशा सम्भाजी राजा का स्मरण होता था। कालनदी की समतलभूमि और निजामपुर की पहाड़ियों में किये गये शिकार का स्मरण उसे होता। वह विकल होकर पगड़ी का कपड़ा मुँह में डालकर रोता था। उसकी यह अवस्था देखकर देवप्पा ने उसके पास का पत्र निकाल लिया। उस चिट्ठी को देवप्पा ने बड़ी सावधानी से अपनी कमर में खोंस लिया।

जुलूस के दिन भिश्तियों के मुखिया को फौजदार का आदेश आया आज किसी बड़े राजबन्दी को लेकर सेना किले में प्रवेश करेगी। उन्हें जो टोली पानी पिलाने के लिए तैनात हुई, उसमें रायप्पा सम्मिलित हो गया। उसी टोली को किले के अन्दर भी जाना था। यह जानकर इन दोनों भाइयों को बड़ा सुख मिला।

दोपहर में धूप बढ़ने लगी थी। गर्मी भी बढ़ी, प्यास लगने लगी, पानी की माँग बढ़ गयी। बगल में भैंसेगाड़ी पर पानी से भरी बड़ी-बड़ी पखालें रखी थीं। भिश्ती अपने चमड़े के थैलों में पखाल से पानी भरते थे और फौजियों को पिलाते थे। बादशाह के हुक्म के अनुसार मुकर्रबखान के स्वागत के लिए सभी प्रमुख सरदार गाँव के बाहर मैदान में एकत्र हुए थे। ढोल-तासे आदि जोर-जोर से बज रहे थे। तब तक रायप्पा को यह पता नहीं था कि यह जुलूस किसके लिए निकाला जा रहा है। पानी बाँटते-बाँटते वह किले में अन्दर की ओर जा रहा था।

सम्भाजी राजा के शरीर की जंजीरें खड़खड़ाईं। सामने दो बदरंग ऊँट खड़े थे। उन खस्ताहाल जानवरों की पीठ पर जीन काठी नहीं थी। पाँच-छह जनों ने जंजीरों से जकड़े सम्भाजी राजा को ऊपर उठाया और उन्हें ऊँट पर बिठाया। राजा ने अपनी दृष्टि इधर-उधर घुमाई। सामने हजारों फौजियों के हाथों में नंगी तलवारें दिखीं। मैदान में सैकड़ों तम्बू और छोलदारियाँ थीं। बीच में दोनों ओर मार करने वाली तोपों की पंक्तियाँ थीं। तोपों के पीछे काले-कलूटे रंग के गोलन्दाज खड़े थे। उस दुष्ट नगरी में राजा के जुलूस की नहीं उनके उपहास की तैयारी चल रही थी।

सामने की ओर से फौजी पंक्तियों का जुलूस जाने वाला था। समुद्र के उमड़ते प्रवाह की तरह जुलूस निकलने वाला था जिसमें गाँव के लोग, सैनिक और देखने वालों की भीड़ के बीच से सैनिक आगे निकलने वाले थे। उनकी सुरक्षा का दायित्व बहादुरगढ़ के थानेदार महादजी निंबालकर को सौंपा गया था। विशेष रूप से शिवाजी के जामाता और सम्भाजी के बहनोई यह दायित्व बड़ी ईमानदारी से निभा रहे थे। वे व्यवस्था की निगरानी करते इधर-उधर घूम रहे थे किन्तु सम्भाजी से आँखें मिलाना टाल रहे थे।

खुले ऊँट पर बिठाए गये सम्भाजी को रस्सियों और जंजीरां से कसकर बाँधा गया था। बाँधने का यह काम एक राजपूत सरदार अमरसिंह स्वयं कर रहा था। सम्भाजी राजा ने बहुत दिनों से बन्दी होने के कारण बाहर का प्रकाश ही नहीं देखा था। पिछले कुछ दिनों से न उनके हाथ खुले थे और न ही वे ठीक से साँस ले पा रहे थे। किसी से बात करने का तो प्रश्न ही नहीं था। परिस्थिति ने ही उन्हें मौन बना दिया था। अपने शरीर के चारों ओर रस्सी बाँधने वाले, लम्बी सुघड़ दाढ़ी वाले अमरसिंह को सम्भाजी राजा ने देखा। उन्होंने अमरसिंह का हाथ पकड़ा और भावविभोर होकर बोले, "तुम जाति से राजपूत लग रहे हो हमारे दुर्गादास के प्रदेश के?"

"जी हाँ" उसने हुंकारी भरी।

"मित्र! तुम्हें तुम्हारे ईश्वर का वास्ता देकर कहता हूँ। बहुत हो गया यह अपमान, हमें इस बेइज्जती से, इस यातना से मुक्त कर दो।"

"लेकिन शाही हुक्म महाराज।"

"बन्धु! एक हिन्दू के नाते तुम्हें खून की सौगन्ध है। शिवाजी के बेटे को इस तरह कुत्ते की मौत मरते देखना क्या तुम्हें शोभा देगा? चलो दोस्त बस एक उपकार कर दो।" सम्भाजी ने बड़ी हताशा से कहा।

"क्या करूँ महाराज?"

"झट से उठाओ अपनी तलवार और कर दो हमारे टुकड़े-टुकड़े। रुको मत बन्धु।"

अमरसिंह भावविभोर हो गया। उसने सम्भाजी राजा की आँखों में उमड़ते आँसुओं को देखा, तत्काल उसका हाथ म्यान पर पड़ा। वह तलवार निकालने ही वाला था कि किसी दूसरे के मजबूत हाथों का पंजा पड़ा। परिणामस्वरूप यह प्रयास वहीं रुक गया। बगल में क्रूर चेहरे वाला इखलासखान खड़ा था। उसने पूछा, "क्यों सरदारजी क्या इरादा है?" सचमुच अमरसिंह को सम्भाजी पर बड़ी दया आ गयी थी। किन्तु मुक्ति का यह अवसर वहीं पर समाप्त हो गया।

विडम्बना और अपमान की कोई सीमा न रही। जिस राजा के शरीर पर महँगे

से महँगे जेवरात और कपड़े अपने हाथ सें पहनाने के लिए सूरत से पणजी तक के दर्जी टूट पड़ते थे, उसी सम्भाजी राजा और कविराज के वस्त्र रास्ते पर उतार दिए गये। उन्हें विदूषकों वाले रंग-बिरंगे कपड़े पहनाए गये। जिनके गले में हीरे-मोती के हार चमकते थे उनके गले में गाय-बैल के गले में भी चुभने वाली ईरान में जिस तरह बड़े अपराधियों के सिर पर लकड़ी की लम्बी टोपियाँ रखी जाती थीं उसी प्रकार इन दोनों के सिर पर लकड़ी की लम्बी टोपियाँ रख दी गयी थीं। उन पर अनेक छोटे-छोटे चिह्न रँग दिए गये थे। उन पर छोटे-छोटे घुँघरू बाँध दिये गये थे। कुछ नौकर दोनों ऊँटों को पकड़कर आगे चलने लगे। तासे-तुरुहियाँ जोर-जोर से बज रही थीं। राजा और कविराज को ऊँट पर उल्टा बिठाया गया था। उन्हें उन जानवरों से बड़ी क्रूरता के साथ बाँधा गया था। राजा का हाथ ऊपर उठवाकर उसमें एक सुराख वाली पट्टी डाल दी गयी थी। पट्टी में दोनों हाथ फँसा दिए गये थे। उन दोनों की गर्दनें भी लकड़ी की पट्टी में अटका दी गयी थीं। इसलिए वे अपनी गर्दन भी इधर-उधर हिला नहीं सकते थे।

एक समय के रायगढ़ के राजेश्वर को, करोड़ों मुहरों के धनी को, बत्तीस माणिक सोने से बने सिंहासन पर बैठने वाले मराठों के नरेश को, उनके मुख्य प्रधान को, मरियल ऊँट पर बिठाया गया था। उन्हें विदूषकों के भड़कीले कपड़े और लकड़ी की टोपी पहनाए गये थे। ये दोनों कैदी स्त्रियों और बच्चों के लिए अच्छे खासे मनोरंजन बन गये थे। उद्धृत बच्चे उन कैदियों पर छोटे-छोटे पत्थर और कीचड़ के गोले फेंक रहे थे। जैसे किसी पेड़ पर बैठे घायल बन्दर को बच्चे चिढ़ाते हैं, उसी तरह इनके साथ भी बन्दर उपहास चल रहा था। ढोल-तासे बज रहे थे इनका कोलाहल सुनाई दे रहा था। जुलूस में सबसे आगे महादजी थानेदार चल रहा था।

अब नपुंसकों में भी बड़ा जोश आ गया था। नौकर भी ऊँटों को जोर-जोर से भगा रहे थे। यह उनकी शरारत थी। भगाते-भगाते वे ऊँटों को अचानक घुमा देते थे। ऊँची पीठ वाले ऊँटों के अचानक घूमने से बन्दियों को झटका लगता था। शरीर से बँधी रस्सियाँ और जंजीरें शरीर में चुभ रही थीं। सम्भाजी राजा और कविराज की आँखों के सामने लाल-पीला दिखाई पड़ रहा था, उन्हें चक्कर आ रहा था। वे एक ओर लटक जाते थे। उन मूक जानवरों का भी बुरा हाल हो रहा था। बार-बार लगनेवाले धक्कों और हिचकोलों से राजा के शरीर में भयानक वेदना उठ रही थी। उनकी यह स्थिति देखकर मूर्ख लोग उनका मजाक उड़ा रहे थे।

रायप्पा पानी की थैलियाँ देते और पानी पिलाते आगे बढ़ रहा था। 'मरगट्ठे दो कैदी' ऐसे शब्द उसके कानों में पड़े। बहुत देर के बाद 'सम्भा' शब्द उसके कानों तक आया। यह शब्द सुनते ही वह थरथरा उठा। वह भीड़ में अपना रास्ता बनाता हुआ और पानी देने का नाटक करता हुआ सम्भाजी के ऊँट के पीछे-पीछे

चलने लगा। एक मोड़ पर उसने सम्भाजी राजा की ओर देखा। राजा की अत्यन्त तेजस्वी, बड़ी-बड़ी आँखें उसने देखीं, आँख से आँख मिली। राजा अत्यन्त उदासी से हँसे। उन्होंने सोचा, 'होगा कोई अपने रायप्पा जैसा दिखाई देनेवाला भिश्ती।'

सरस्वती नदी के किनारे खंडोवा का मैदान इससे पहले कभी भी इतना भयभीत नहीं हुआ था। बहादुरगढ़ के आसपास रहने वाले बड़े विश्वास से कहते थे कि इस मैदान में अमावस्या और पूर्णिमा के दिन भूतों का जुलूस निकलता है। इस जुलूस के आगे-आगे बैताल अपनी जटाएँ हवा में लहराते हुए भयानक नृत्य करते हैं। किन्तु आज का यह कबन्धों का नंगा नाच अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण था। आज का दुर्भाग्यपूर्ण जुलूस ढोल-तासे बजाता आगे निकल रहा था। शिवाजी महाराज की मृत्यु के केवल नौ वर्षो बाद उनके राजहंसी बेटे का खुलेआम अपमानजनक जुलूस निकाला जा रहा था। वह भयानक दृश्य, वे मरियल ऊँट, विदूषकों का वह पहनावा और मराठों की इज्जत की धज्जियाँ उड़ते देखकर बहादुरगढ की मिट्टी तक काँप उठी थी। श्मशान और मैदान के भूत पिशाच शर्मिन्दा होकर बाहर निकल गये थे। अपने आपको तैमूर का वंशज कहने वाले, दिल्ली की राजगद्दी की पाँच सौ वर्षो की परम्परा का उत्तराधिकारी मानने वाले इस निरंकुश और बेवकूफ बादशाह पर सभी जड़-चेतन हँस रहे थे।

जुलूस आगे निकला। नासमझ बच्चे और स्त्रियाँ सम्भाजी राजा पर थूक रहे थे। इस प्रकार का अभद्र व्यवहार कर रहे थे। अपने राजा की यह अपमानजनक स्थिति देखकर निष्ठावान रायप्पा का कलेजा टुकड़े टुकड़े हो रहा था। जंजीर की कड़ियाँ और रस्सियाँ राजा के शरीर में चुभ रही थीं। पहले तो राजा के शरीर मे असह्य पीड़ा उठी परन्तु धीरे-धीरे उनका शरीर संवेदनशून्य हो गया। मानो वह सूखा काठ हो गया हो। उस दुर्देवी जीव को अब किसी का भय, कोई शर्म शेष ही नहीं रहा। अब न किसी के प्रति क्रोध था, न ही अस्वीकार। बड़ी बड़ी गम्भीर आँखें सीधे सामने की ओर देख रही थीं।

कहाँ गयीं वे पालकियाँ? राज्यारोहण के समय रायगढ़ पर निकली वह शोभा यात्रा? कहाँ गये वे हाथ जिन्होंने राजा को देवता की तरह पालकी में बिठाकर घुमाया था, राजा को स्वराज्य भर में गौरव दिया था। कहाँ वह माणिक मोतियों से सजा राजमुकुट? और कहाँ यह घुँघरुओ वाली विदूषक की लकड़ी की टोपी? कहाँ गले में चमकने वाले हीरे जवाहरात के गहने? और कहाँ यह शरीर मे चुभने वाली, जगखाई जंजीरों का अशोभनीय बोझ?

माघ मास का तपता सूर्य सिर पर अगारे बरसा रहा था। जिस सिर पर देवो की भाँति पुष्प वृष्टि होती थी, उसी सिर पर आज फटे जूतों और पत्थरों से प्रहार हो रहा था। यह कैसा जुलूस? यह तो देवदूतों का सिर फोड़ने वाली शोकयात्रा थी।

वे बड़ी बडी आँखें झपक नहीं रही थीं। उन्हीं खुली आँखों से होकर अतीत

के अनेक दृश्य मन-पटल पर उभर रहे थे। डचों, पुर्तगालियों या अँग्रेजों का कोई प्रतिनिधि जब रायगढ़ आने लगता था तो उसके वरिष्ठ सुझाव देते थे, 'वहाँ जा ही रहे हो तो शिवाजी से मिलने के पहले राजपुत्र सम्भाजी से अवश्य मिलना। सम्भाजी नाम का यह युवराज बहुत होशियार, तेजस्वी और आत्मीय है। वह शिवाजी की तरह ही तेजपुंज, नीतिज्ञ और काव्यशास्त्र निपुण है। ऐसा लगता है मानो सम्भाजी शिवाजी महाराज के ताज में चमकने वाला तुर्रा है।' इस प्रकार के अनेक प्रसंग स्मृतिलोक में सगुण-साकार होने लगे।

'पिताजी जहाँ-जहाँ आप अनुपस्थित रहेंगे वहाँ यह सम्भा दौड़कर पहुँच जाएगा।' आगरा में बालक सम्भाजी के मुख से निकले इस उद्गार को काल भी विस्मृत नहीं कर सकता। केवल नौ वर्ष का वह चुलबुला बच्चा अपने पिता की अनुपस्थिति की रिक्तता को भरने के लिए दौड़ पड़ा था। बादशाह की आँखों में आँख डालकर देखने वाले राजकुमार को विदूषकों का लिबास पहनाकर शैतान के दरबार में ले जाया जा रहा था।

उस जुलूस में पहरा देने वाले मुगल सिपाही भी डरे हुए थे। इस मरियल ऊँट पर लदा हुआ व्यक्ति सम्भाजी ही है, इस बात को अच्छी तरह जानने पर भी उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था। उनमें से अनेक पिछले आठ सालों में बुरहानपुर, सोलापुर, गोवा, कल्याण जैसे किसी न किसी स्थान पर सम्भाजी की सेना से लड़े थे। उस समय की सम्भाजी की दहशत, उनका दबदबा वे अभी तक भूल न पाए थे। उस समय उनकी रातों की नींद उड़ गयी थी।

ढोल-तासों की कान फाड़ने वाली आवाज बहादुरगढ़ के शाही द्वार पर गूँजने लगी। छतों पर, छज्जों पर, स्त्रियों और बच्चों की भीड़ बढ़ गयी। बहादुरगढ़ के एक महल में महाराष्ट्र के तीन दुष्ट व्यक्ति इस तरह मुँह लटकाए खड़े थे मानो उनका बाप मर गया है। उनके साथ महाराष्ट्र के कुछ स्वार्थी मराठा और कुछ ब्राह्मण जागीरदार, कुछ शास्त्रीपंडित भी गम्भीरता से राह देखते खड़े थे। आसमान में काले मेघों की सेना जमा हो गयी थी। उन काली घटाओं के पीछे मानो देवता और दानव भी रो रहे थे। यहाँ की मिट्टी पर सोने का मुलम्मा चढ़ाने वाले शिवाजी महाराज के योग्य पुत्र का इस प्रकार खुला अपमान किया जा रहा था। यह कृत्य देवादिकों को भी असह्य था।

उस मरियल ऊँट पर से सम्भाजी राजा ने आसमान में छाए काले मेघों की ओर देखा। उन काले बादलों में उन्हें जीजामाता की काली आँखों का आभास हुआ। उनका स्मरण होते ही उनकी सूनी आँखों से आँसुओं के चार फूल गालों पर टपक पड़े। जीजामाता ने शिवाजी के आठ विवाह इस दृष्टिकोण से किये थे कि इन सभी जागीरदार घरानों का शिवाजी को सहयोग मिलेगा। यह उनकी व्यावहारिक सोच थी कि संकट के ये सारे घराने शिवाजी के सहाय बनेंगे। परन्तु संसार की

अलग है। मराठे हों या अन्य, जागीर और धन के लोभ ने उन्हें पागल बना दिया था। हड्डियाँ चबाने वाले कुत्ते जिस प्रकार किसी भी हालत में हड्डियाँ छोड़ने को तैयार नहीं होते वैसे ही ये जागीरदार थे। इसलिए पहाड़ जैसे उपकारों को भूलकर यहाँ के अनेक जागीरदार अपनी बुद्धि को शत्रु की सेज पर सुलाकर पूरी तरह रिक्त हो गये थे।

जुलूस आगे बढ़ रहा था। रायप्पा सम्भाजी की घायल और वेदनामय अवस्था को बार बार देख रहा था। उसे एक घटना का स्मरण हुआ। जब सम्भाजी केवल बीस वर्ष के थे तो सांदोशी के जंगल में एक बाघ उत्पात मचा रहा था। दूसरी ओर दृष्टि केन्द्रित किये सम्भाजी इस बाघ के शिकार के लिए बैठे थे। उस समय पीछे की ओर से बाघ ने सम्भाजी पर छलाँग लगा दी थी। उसी क्षण रायप्पा ने अपने तेज कोयते से चौड़ी पीठ वाले बाघ के टुकड़े टुकड़े कर दिये थे। अब मुगल बैतालों के घेरे में वह अपने राजा की नौका डूबते देख रहा था। यह उसकी आँखों से सहा नहीं जा रहा था।

जुलूस किसी तरह बहादुरगढ़ के नगर द्वार तक पहुँचा। सामने का महादरवाजा खुला। राजा के लिए कुछ करने का यही अवसर था। रायप्पा का निष्ठावान खून खौल उठा, कान गर्म हो गये, नसें जलने लगीं। सोचने समझने में कुछ समय लगे इसके पहले ही उसने बन्दोबस्त में लगे एक राजपूत की तेज धार वाली तलवार खींच ली। लोग कुछ समझ पाएँ इससे पहले ही उसने बगल के अधिकारियों को सपासप छाँट दिया।

'महाराजऽऽ शम्भू महाराजऽऽ' ऐसा उद्घोष करता हुआ वह आगे बढ़ा। अपनी तलवार से राजा के शरीर पर बँधी जंजीर को काटने का व्यर्थ प्रयास करने लगा। इतने में 'सम्भा का आदमी.. दुश्मन...' ऐसा शोर मुगलों ने किया। ऊँट से अकेले जूझने वाले रायप्पा की ओर एक साथ असंख्य तलवारें खिंच गयीं। रायप्पा के सिर, बाँहें, पीठ आदि सभी अंगों पर तलवारों के घाव हुए। खून के फव्वारे उड़े। एक ही क्षण में रायप्पा के शरीर के तीस-चालीस टुकड़े हो गये। मगरूर मुगलों पर इस घटना का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। रास्ते में पड़े रायप्पा के मांस के टुकड़ों को कुचलते हुए जुलूस आगे निकल गया। घटना का ज्ञान सम्भाजी को हो गया था। रायप्पा के गर्म खून की धार सम्भाजी के पैरों पर पड़ी थी। शिवाजी, सम्भाजी और हिन्दवी स्वराज्य को बनाने वाले सच्चे और निष्ठावान श्रमिकों के खून से किया गया यह आखिरी अभिनन्दन था। उन ईमानदार गरीबों के परिश्रम और साहस का स्मरण सम्भाजी को हुआ। उनका हृदय कृतज्ञता से भर आया।

भीमातट की करुण कथा

एक

शीर्ष भाग पर चाँद तारों की मीनार से सुशोभित सज धज शानदार दिखने वाले महल के सामने से जुलूस आगे निकल रहा था। उस महल के भीतर तीन प्राणियों को कैद किया गया था। ढोल, तासों और तुर्रहियों की आवाज इन तीनों बन्दियों के कानों में पड़ रही थी। तीनों व्याकुल हो गये। यदि उनके धक्के से सामने की दीवार टूट सकती तो उन्होंने यह प्रयास भी किया होता। उन्हें सूचना मिल गयी थी कि सम्भाजी को कैद कर लिया गया। उनकी मुश्कें बाँधकर उन्हें बहादुरगढ़ लाया जा रहा है। उस दुखद समाचार से तीनों निरन्तर विलाप कर रही थीं।

बादशाह के हुक्म के अनुसार इखलासखान और हमीदुद्दीनखान सम्भाजी राजा और कविराज को दीवाने खास की ओर जुलूस के साथ ले जा रहे थे। बादशाह के दरबार में मक्का मदीना जैसे उत्सव का वातावरण बन गया था। दरबार में सभी अमीर उमराव, शहजादे, पोते, रिश्तेदार आदि उपस्थित थे।

इसी समय मुकर्रबखान, इखलासखान और बहादुरखान बादशाह के सामने प्रस्तुत हुए। उन्होंने झुककर बादशाह को सलाम किया। बादशाह ने पिता पुत्र को अनेक मूल्यवान उपहार देकर मालामाल कर दिया। वे दोनों झुके झुके ही बगल में सरक गये। बादशाह ने सामने की ओर नजर उठाई। जंजीरों से पूरी तरह जकड़े हुए सम्भाजी राजा और कवि कलश खड़े थे।

इस दृश्य को देखकर बादशाह बहुत प्रसन्न हो गया। उसकी भावभरी प्रसन्न अवस्था को देखकर दरबार में उपस्थित अनेक लोगों की आँखों में आँसू उमड़ पड़े।

बादशाह से रहा नहीं गया। वह अत्यधिक भाव विभोर हो अपने रत्नजड़ित सिंहासन से उठकर खड़ा हो गया। कौड़ियों की माला सीने से चिपकाए सिंहासन की सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आया। पूरा दरबार उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगा। बादशाह ने जमीन पर अपना माथा टेका। अल्लाहताला का एक धुँधला बिम्ब उसकी

आँखों के सामने आया। बादशाह की नाक जो स्वभावत: कुछ लाल थी अब और भी लाल दिखाई देने लगी। उसके पतले होंठ काँपने लगे। सुनहली दाढ़ी के बाल थरथराने लगे। आनन्दातिरेक से वह कुछ उन्मत्त-सा हो उठा था।

अल्लाहताला से याचना करते हुए बादशाह को लोग पहली बार देख रहे थे। भरे दरबार में बादशाह सिंहासन से पहली बार नीचे उतरा था। सोलह सत्रह साल पहले शिवाजी महाराज ने रायगढ़ पर अपना राज्याभिषेक करवाया था। यह समाचार जब बादशाह को दरबार में मिला तो उसका मन घृणा से भर गया था। शर्मसार बादशाह तब भी तिलमिला कर सिंहासन से नीचे उतरा था। तब भी उसने जमीन पर झुककर कहा था—या अल्लाह! कितना बुरा समय आ गया? काश्तकारों और किसानों के हँसिया लेकर जंगलों में घास काटने वाले बच्चे भी सिंहासनों पर बैठने लगे?

आज भी बादशाह गदगद होकर भरे दरबार में अल्लाह को पुकार रहा था। वह कृतज्ञता के भाव से भर गया था। पूरा दरबार भावनाओं से आन्दोलित हो गया। जमीन पर झुके बादशाह को कवि कलश ने देखा। उनकी कल्पना जागृत हो उठी। जंजीरों से बँधे कवि कलश की छाती गर्व से फूल गयी। वे अपनी सरस मर्दानी आवाज में गा उठे—

यावन रावन की सभा शम्भु बँध्यो बजरग।
लहू लसत सिन्दूर सम बहु खेल्यो रण रंग।।
ज्यों रवि सारी लखत ही, खद्योत होत बदरंग।
त्यों तुव तेज निहारि के तख्त तज्यो अवरंग।।

इसके बाद बादशाह धीमी गति से एक-एक कदम रखते उन दोनों कैदियों के सामने आकर खड़ा हो गया। वे दोनों औरंगजेब की आँखों में आँखें डालकर दहकती नजरों से उसे देख रहे थे। शरीर को जकड़कर बाँधने वाली जंजीरों की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। उन्हें देखकर इखलासखान चिल्लाया, "सम्भाऽऽ! पागलऽ तुझे जिन्दगी प्यारी है या नहीं? बादशाह को तमीज से देखो।"

किन्तु वे दोनों औरंगजेब को उसी तरह देखते हुए खड़े रहे। बादशाह फिर से सिंहासन की ओर मुड़ा तब फौलादखान हंटर की तरह सम्भाजी राजा पर टूट पड़ा, "पागलो! बादशाह को सलाम करो। अपनी जिन्दगी बचा लो।"

परन्तु वे दोनों अपनी बड़ी-बड़ी आँखें ताने दरबार की ओर देखते रहे। बादशाह के सरदार और सेवक हाथ से उनकी ओर संकेत कर रहे थे। बेचैन होकर फौलादखान कवि कलश की ओर गया। उनकी भुजा को नोंचते हुए चिल्लाया,

"पागलऽ अपने बाप को सलाम कर।"

खान के शब्द कविराज के सीने में घाव कर गये। कविराज ने क्रोधावेश में आकर खान की कमर पर जोर से लात मारी। फौलादखान मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा। गिरने की आवाज सुनकर बादशाह ने पीछे मुड़कर देखा तो फौलादखान अपना अँगरखा झाड़ते हुए खड़ा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं था।

औरंगजेब ने जुल्फिकारखान को अपने पास बुलाया। सिंहासन के पास जाकर जुल्फिकार नीचे घुटनों के बल बैठ गया। बादशाह ने उसके कान में कुछ महत्त्वपूर्ण बात कही। जुल्फिकार ने विनम्र आज्ञाकारी की भाँति सिर हिलाया। जुल्फिकार बड़ी तेजी से कदम बढ़ाते हुए दरबार से बाहर निकल गया।

उन दोनों राजबन्दियों को बन्दीखाने में भेज दिया गया। बहादुरगढ़ पर उत्सव का वातावरण था। शर्बत के बड़े-बड़े बर्तन खाली हो रहे थे। हिन्दुओं की दीवाली की तरह रोशनी की जा रही थी। बादशाह की बहुत बड़ी विपत्ति टल गयी थी। अब लोग दिल्ली की ओर लौट सकेंगे, इस कल्पना से ही सभी प्रसन्न हो गये थे।

इस खुशी के भीतर एक डरावना सन्नाटा भी छा गया था। मुगल और दक्खिनी सिपाही, एक-दूसरे के कान में कुछ खुसुर फुसुर कर रहे थे।

"शायद जहन्नमी सम्भा के लिए यह रात आखिरी रात साबित होगी।"

"बिलकुल, क्यों नहीं? दारा जैसे अपने सगे भाई का सिर दो तीन दिनों में ही छाँट दिया था।"

"ठीक कहते हो मियाँ! उस गोकल की याद है न? वह किसानों का विद्रोही नेता। उसे पकड़कर, बोटी-बोटी काटकर बाहर फेंक दिया गया था। मथुरा के मन्दिर भी जलाकर खाक कर दिये गये थे।"

"सच है भाईजान। एक बार अल्लाह ताला इन काफिरों को माफ कर सकता है किन्तु बादशाह औरंगजेब कभी नहीं।"

दो

सखुबाई का मन्दिर बहादुरगढ़ के थानेदार को बहुत प्रिय था। बहुत-सी देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और धातुओं पर खुदी हुई तस्वीरें रखी थीं। छत से नीचे तक लटकने वाली सोने-चाँदी की घंटियाँ, विशेष रूप से कमर तक ऊँची म्हालजाई

देवी की मूर्ति वहाँ विद्यमान थीं। महादजी रात को कुछ देर मे घर लौटे। उन्होंने मन्दिर के सामने, संगमरमर के नंगे फर्श पर अपनी पत्नी को निढाल होकर पड़े देखा। शरीर पर एक भी आभूषण नहीं, शोक की व्याकुलता में बाल बिखरे हुए थे।

महादजी के बाहर आने की आहट पाते ही वे घायल सिंहिनी की तरह झट मे उठीं। उनकी आँखें क्रोध मे अंगार की तरह जल रही थीं। वे गरज पड़ीं, "आइएऽऽ आइएऽऽ आ गये? बहुत बड़ी बहादुरी करके लौटे हैं? आइए मैं अपने बहादुर स्वामी की आरती उतारती हूँ।" महादजी क्रोध और सन्ताप से व्यग्र हुई अपनी पत्नी को मनाने की कोशिश करने लगे। सखुबाई क्रोधावेश में प्रश्नोत्तर करने लगीं।

"हमारे छोटे भाई सम्भाजी राजा का ऐसा घोर अपमान हो रहा था। नासमझ छोटे बच्चे भी उन पर गोबर के गोले फेंक रहे थे। यह सब देखकर आपका खून उबला कैसे नहीं?"

"परन्तु सखु . . ?"

"वह शिवाजी जैसे प्रतापी का पुत्र था। वह जीजामाता जैसी युगस्त्री का पोता था। इस मिट्टी का अंश था। उसको पीड़ित करने वाले शत्रु का प्रत्युत्तर क्यों नहीं दिया आपने?"

"सखु उस बादशाह परमेश्वर को कौन प्रत्युत्तर देगा।"

सखुबाई का गला भर आया वे रोते हुए बोलीं, "सम्भाजी राजा का जहाज डूब रहा है। उसे छोड़कर सब लोग औरंगजेब से आकर मिलें। इस प्रकार का पत्र आपने सभी जागीरदारों को लिखा था। उस समय क्या मैंने आपसे एक भी शब्द पूछा था?"

सखुबाई के एक भी प्रश्न का उत्तर महादजी के पास नहीं था। सखुबाई बिना रुके गरज रही थीं, "अजी, आप एक बार इस बात की उपेक्षा भी कर दें कि वह शिवाजी का बेटा है परन्तु यह कैसे भूल सकते हैं कि उसकी धमनियों में बहने वाला रक्त निंबालकर की बेटी का है। वह निंबालकर का नाती है। मैं पूछती हूँ कि यह आपको क्यों नहीं याद रहा? खून की पुकार पर खून मदद को क्यों नहीं दौड़ा?"

सखुबाई के प्रश्नों की बौछार के सामने महादजी हतप्रभ हो गये। वे वहीं मन्दिर में ही बैठ गये। दुख, पीड़ा और पश्चाताप के स्वर में महादजी कहने लगे, "सखु तुम्हारे सीधे प्रश्नों का उत्तर देने में मुझे कोई संकोच नहीं है इस भूमि के अनेक जमींदारों और जागीरदारों ने अरबों-खरबों कमाये। किन्तु इस भूमि पर कोई छत्रपति बन सकता है, राजा बन सकता है इसका उदाहरण तुम्हारे पिता शिवाजी

महाराज ने ही प्रस्तुत किया। तुम्हारे पिता और तुम्हारे भाई—शिवाजी और सम्भाजी समय को अतिक्रान्त करके हजारों योजन आगे जाने वाले महापुरुष ही थे। हम जैसे जमींदारों और जागीरदारों तथा शिवाजी सम्भाजी के बीच यही अन्तर है। आज जो घटना घटी है, जो हादसा हुआ है उससे हम बहुत शर्मिन्दा हैं।

तीन

बहुत देर रात में जुल्फिकारखान सैनिक की वर्दी पहने बादशाह के सामने उपस्थित हुआ। वह कहने लगा, "जहाँपनाह! शाम के समय से ही मेरी फौजी टुकड़ियाँ बहादुरगढ़ से बाहर जाने लगी हैं। हुक्म की तामील हो गयी है।"

"कुल मिलाकर कितनी फौज होगी?

"मैं अपने साथ यहाँ से बीस हजार ले जाता हूँ। इसके अतिरिक्त पूना और चाकण में तैयार हैं। वहाँ से बीस हजार लेता हूँ और सीधे जाकर रायगढ़ को टक्कर देता हूँ।"

"शाब्बास।" जीत का आनन्द औरंगजेब के चेहरे पर छुप नहीं पा रहा था। वह प्रसन्नता से बोला, "बेटे जुल्फी अब तो वैसे करना भी क्या है? सम्भा की गिरफ्तारी सुनकर मरगट्ठे अपनी जान बचाने के लिए इधर उधर भाग गये होंगे। तुम्हें बस इतना ही करना है—"

"हुक्म, जहाँपनाह!"

"आजतक हमें भूत की तरह चिढ़ाने वाली सह्याद्रि की पहाड़ी पर थूकना होगा और वहाँ के एक एक प्रदेश को जीतने की शुरुआत करनी होगी।"

जुलूस के बाद दूसरे दिन नाश्ते का समय बीत गया फिर भी सूर्य बादलों के पर्दे से बाहर निकलने को तैयार न था। वजीर असदखान, औरंगजेब के सभी शहजादे, सभी जनानियाँ आदि सभी की एक ही चिन्ता थी कि आगे क्या होगा? बादशाह सम्भाजी के बारे में क्या निर्णय लेगा, इसका अनुमान वजीरे आज़म असदखान भी नहीं लगा सकता था। उस दिन जब असदखान सजधजकर अपने डेरे से बाहर निकलने लगा तो उसकी एक बेगम ने पूछा, "अजी, उस काफिर के बच्चे का क्या होगा?"

"जो कुछ भी होगा, आज ही होगा।" असदखान ने उत्तर दिया, "घात-अपघात कुछ भी हो जाये किन्तु जब तक अपना दुश्मन समाप्त नहीं हो जाता तब

तक चुप बैठना अपने आलमगीर के स्वभाव में नहीं है।''

अचानक असदखान अतीत की स्मृतियों में खो गया। उसने कहा, ''बेगम, दारा शिकोह पकड़ा गया था, तब हमारे शाहजहाँ साहब बीमार होकर बिस्तर में पड़े थे। किन्तु बूढ़े बीमार बाप पर क्या गुजरेगी? इसकी चिन्ता जहाँपनाह ने बिलकुल नहीं की थी। सिर्फ दो तीन दिनों में ही उन्होंने निश्चिन्त भाव से अपने सगे भाई का सिर छाँट दिया था। इतना ही नहीं दारा के सिर को मिठाई के डिब्बे में ढककर शाहजहाँ साहब के पास भेज दिया था। जो अपनों का ऐसा हाल कर सकता है उसके लिए सम्भा जैसे दुश्मन की क्या बात है? सम्भा किसी भी हालत में कल का सूर्य नहीं देखेगा।''

बोलते बोलते एक भयंकर कल्पना से बूढ़ा असदखान पसीना पसीना हो गया। अपना माथा पोंछते हुए बोला, ''खुदा करे कि उस सम्भा की गर्दन पर वार करने की जिम्मेदारी मुझ पर वजीर के नाते न आये।''

दोपहर को धूप निकली किन्तु बहादुरगढ़ के आसपास बादलों की छाया दूर नहीं हुई थी। हवा एकदम धीमी और घुटनभरी थी। मनुष्य और पशु आने वाली रात की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अन्ततः छावनी के ऊपर अँधेरा फैल गया। जगह जगह मशालें जला दी गयीं। चिरागों के प्रकाश में महल जगमगा उठे। भीमा नदी की ओर से ठंडी ठंडी चुभने वाली हवा बहने लगी। छावनी में जगह जगह कुत्ते करुण स्वर में विलाप कर रहे थे। दमड़ी मस्जिद का वह फकीर उदास होकर पागलों की तरह हँस रहा था। सरस्वती की छोटी धारा के उस पार खंडोवा का बंजर मैदान जाग रहा था। वहाँ के भूत, बैताल और चुड़ैलें बरगद और पीपल की ऊँची डालों पर चढ़कर, लटकते हुए औरंगजेब की छावनी की ओर सहमी नजरों से देख रहे थे। भूत इत्यादि भी यह जानने के लिए उत्सुक थे कि बादशाह की गद्दी तक पहुँचा, इनसान के रूप में यह बैताल अब क्या कदम उठाएगा?

अचानक असदखान के महल के पास किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। वह सावधान हो गया। इतने में उसके ही कुछ सैनिक दौड़ते हुए अन्दर आये। उन्होंने बताया, ''बादशाह ने सम्भा के बन्दीखाने की ओर रूहुल्लाखान को भेजा है।''

अपने ऊपर की विपत्ति टल गयी, यह सोचकर असदखान ने बड़ी कृतज्ञता से अल्लाह का नाम लिया। अब बहादुरगढ़ की पूरी छावनी का ध्यान रूहुल्लाखान की आगे की कार्यवाही की ओर लगा था।

चार

"सम्भाजी और कलश राजबन्दी नहीं लुटेरे हैं।" बादशाह ने स्पष्ट शब्दों में अपनी यह राय अनेक बार अपने कर्मचारियों और सहयोगियों के सामने दी थी। इसीलिए इन बन्दियों को बहादुरगढ़ के शाही कैदखाने में उन्हें नहीं भेजा गया था। एक किनारे पर खुले मैदान में बाँस और लकड़ी के मजबूत खम्भों से एक मजबूत कैदखाना एकदम नये रूप में बनाया गया था। उसे चारों ओर से लम्बी घास की छाजन से घेरा गया था। उस कैदखाने के चारों ओर पाँच हजार हैवानों की फौज नंगी तलवारें लिये तैनात थी। अन्दर बैठने के लिए कोई फटी पुरानी दरी भी नहीं थी। जिम प्रकार काबू में न आने वाले जंगली भैंसों या पागल हाथियों को बन्द कर दिया जाता है उमी तरह मम्भाजी और कवि कलश को अन्दर फेंक दिया गया था। उनके बिछाने के लिए थोड़ा बहुत धान का पुआल और नंगी मिट्टी ही थी।

उन दोनों को कल ऊँट पर इस तरह आड़ा टेढ़ा दौड़ाया गया था कि इम अमानवीय यातना से उनके शरीर पत्थर हो गये थे। उनके शरीर का खून और उनकी चर्बी गीली मिट्टी के गोले की तरह हो गयी थी। उनके हाथ पीठ की ओर जंजीरों द्वारा मजबूती मे बँधे थे। पाँवों में जानवरों की तरह बेडियाँ डाली गयी थीं। कल ऊँट की नंगी पीठ पर बैठने मे उनके पुट्ठों और उनकी जाँघों की चमडी रगड़कर छिल गयी थी। किन्तु यह आघात और दुर्भाग्य का जहरीला घाव इतना अकल्पनीय और क्रूर था कि उमके सामने चमड़ी का छिल जाना कुछ भी नहीं था।

उन दोनों की लाल आँखें प्रकाश में भयानक, दिल दहला देने वाली और चमकीली दिख रही थीं। उन कैदियों की दयनीय अवस्था देखकर कलेजा फटता था। रूहुल्लाखान का दिल भी दहल गया। वह अनजाने ही बोल पड़ा, "सम्भा बेटा ये तेरी कैमी हालत है? कहाँ गये तुम्हारे तैंतीम करोड़ देवी देवता? कहाँ भाग गये आग के ममुद्र में छलाँग लगाने वाले शिवाजी के मर्द मावले?"

सम्भाजी राजा और कविराज दोनों ही चुप थे। वे चेतनाशून्य दिखाई पड़ रहे थे। उनकी आँखें झाड़ियों में फँसे बाघ के बच्चों की तरह लाल लाल दिख रही थीं। वे दोनों रूहुल्लाखान की ओर आक्रोशभरी नजरों से देख रहे थे।

रूहुल्लाखान ने आते ही बादशाह का अतिमहत्त्वपूर्ण मन्देश पहुँचा दिया। "सम्भा, बादशाह को तुमसे दो और सिर्फ दो ही चीजें चाहिए। साफ साफ बता दे कि कहाँ रखे हैं तेरे जर जवाहरात और कहाँ हैं तुम्हारी रत्नशाला?"

सम्भाजी के होंठ हिले नहीं। इसके विपरीत सम्भाजी राजा और कविराज खान की ओर व्यंगभरी नजरों से देखने लगे। खान को यकीन था कि पहला प्रश्न निरुत्तर रहेगा। इसलिए उसने तरकस से और तेज धार वाला तीर निकाल निशाना लगाने की तरह दूसरा प्रश्न किया, "तुम्हारे करोड़ों मुहरों के खजाने को जानकर बादशाह तुम पर फिदा हो जाएगा।"

सम्भाजी राजा चुप थे किन्तु रूहुल्लाखान पीछे हटने को तैयार न था। उसने हठ करते हुए पूछा, "बोल, कौन, कौन हैं वे लोग?"

"कैसे लोग?" कविराज ने मुँह खोला।

"वही मूर्ख लोग। जो पिछले अनेक सालों से खाते हैं बादशाह का नाम और तुम मराठों के साथ गुप्त सम्बन्ध रखते हैं। बताओ कौन हैं वे बदमाश?"

उन दो प्रश्नों के लिए खान ने बौछार लगा दी थी। जैसे भी हो दूसरे प्रश्न का उत्तर तो सम्भाजी को देना ही चाहिए। उत्तर न मिलने से वह बहुत खौखला रहा था। बड़ी दया दिखाकर राजा और कविराज को समझा बुझा रहा था, "सम्भा अभी बहुत जिन्दगी बाकी है। तुम्हारी अभी उम्र ही कितनी है? सिर्फ बत्तीस साल। हमारे बादशाह औरंगजेब की मर्जी से चलोगे तो अभी भी अपनी जिन्दगी बचा सकते हो। मेरी बात सुनो मूर्खो।" काल की चालाक अदृश्य कलाओं ने दोनों के होठ सिल दिए थे। वे दोनों किसी भी बात का सुराग नहीं लगने दे रहे थे। रूहुल्लाखान परेशान हो गया। वह चिढ़कर जोर से चिल्लाया, "अरे शैतानो याद रखो— बादशाह सलामत ने अपनी जिन्दगी में किसी भी शत्रु पर इतना रहम नहीं दिखाया है। कस्मे वादे तोडकर, अपने खून के रिश्ते वालों को भी जहन्नुम में भेजने के लिए वे ज्यादा मशहूर हैं। अच्छी तरह से कबूल करो, बोलो तुम्हारा खजाना कहाँ है? तुम्हारे साथ हमारे कौन कौन से गद्दार सरदार हैं?"

"ज्यादा से ज्यादा क्या कर सकता है तेरा वह नीच बादशाह?" कविराज ने जोर से पूछा।

"पागल मत बनो। इस कैदखाने में भूखे कुत्ते छोडे जाते हैं वे तुम्हारी चर्बी को काट काटकर खाएँगे।"

"मतलब कि बादशाह अन्त में अपनी मदद के लिए अपने भाइयों को बुलाने वाला है।" कलश की इस बात पर सम्भाजी को उस अवस्था में भी हँसी छूट गयी।

किन्तु आवश्यकता मनुष्य को अधम बना देती है। इसी वजह से रूहुल्लाखान ये गालियाँ, ये व्यंग सहन कर रहा था। कलश ने उसे अपने पास बुलाया। ऐसा संकेत दिया कि कुछ भेद की बात करनी है। जब रूहुल्लाखान पास आ गया तो कलश ने उसके मुँह पर थूक दिया। इस घोर अपमान से खान बहुत चिढ गया।

उसने अपनी कमर पर हाथ रखा। वहाँ से तेज धार वाली कटार निकालकर कविराज की ओर झपटा। किन्तु उसी क्षण उसे बादशाह की याद आ गयी। उसे लगा कि बादशाह सोच सकता है कि इतने महत्त्वपूर्ण राजबन्दी को मैंने अपनी किसी स्वार्थ बुद्धि अथवा किसी दुष्टता से मार डाला। ऐसे शक्की और चालाक मालिक का क्या भरोसा? उसने अपने पर काबू पा लिया। कटार उसके हाथ से नीचे गिर गयी।

धमकियों का डर दिखाने का इन राजबन्दियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। उसे जो चाहिए था वह भी सम्भव नहीं हो पा रहा था। इसलिए खान बहुत उतावला हो गया था। वह मिन्नत करते हुए बोला, "सम्भा बेटा, तेरी उम्र के मेरे दो बच्चे हैं। उनकी कसम खाकर कहता हूँ। सोने सी जिन्दगी का सर्वनाश क्यों कर रहे हो? फिजूल की इतनी जिद दिखाते हो?

"खान साहबऽ तुम्हारे बादशाह पर मुझे बड़ी दया आती है।" सम्भाजी महाराज के मुँह से शब्द बाहर निकले।

"क्यूँ?"

"कोई पराजित राजा बन्दी बनाया जाता है, तो राजनीति में उसके साथ व्यवहार करने का कुछ ढंग होता है। किन्तु उस व्यवहार का कोई अंश भी तुम्हारे बादशाह में दिखाई नहीं देता। किसी गन्दे कुत्ते को हीरे मोती का हार पहनाकर, उसे मखमली वस्त्र पहनाकर सिंहासन पर बिठाया जाये तो भी वह रहेगा अपने गन्दे पैरों के साथ ही।"

"तौबाऽऽ तौबाऽऽ—सम्भा कैसी बातें करते हो? आलमपनाह की बराबरी एक कुत्ते के साथ?"

"हाँ, कुत्ते की भी एक श्रेणी रहती है। तेरे बेवकूफ बादशाह से वह गरीब जानवर कितना नेक और वफादार होता है?"

रूहुल्लाखान के पसीने छूट गये। वह पैर पटकते हुए कैदखाने से बाहर निकल गया। वह सोचने लगा, 'सम्भा ने आलमगीर को तोहफे में जो गिन गिनकर उपाधियाँ दी हैं उसे बादशाह से कैसे बताएँ?'

रात बहुत हो चुकी थी। ठंडक भी बढ़ गयी थी। दोनों के शरीर के नीचे की मिट्टी और भी कुछ अधिक ही ठंडी हो गयी थी। पहरा देने वाले पाँच हजार सैनिक जाग रहे थे। हवा के तेज झोंके लकड़ी और घास से बने कैदखाने में घुसने की कोशिश कर रहे थे। कैदखाने की छत को ठीक करने के बहाने एक हट्टा कट्टा पहरे पर बैठा सूबेदार आगे आया। उसने जल्दी से घास के गट्ठर भीतर किये। कुछ बाँधने के लिए घास के गट्ठर खोलने का अभिनय किया। उसके साथ काम करने वाले उसके खास आदमी थे।

वह सूबेदार आगे बढ़ा। घास के गट्ठर जल्दी से खोलकर वहीं गीली जमीन पर एक हल्का-सा बिछौना तैयार किया। दुखने वाले शून्य हुए शरीर वाले सम्भाजी और कविराज को हाथ का सहारा देकर, धीरे से खींचकर बिछौने पर लिटा दिया। अँधेरे में उसका चेहरा भी पहचान में नहीं आ रहा था। किन्तु उसके काँपते हाथ बहुत दयालु और प्यारभरे थे। उस सूबेदार ने उन दोनों को वहाँ पर ठीक से सुला दिया। यह स्थिति देखकर उसका मन अचानक भर आया। वह वहीं पर नंगी जमीन पर बैठ गया। सम्भाजी का पैर पकड़कर वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसके गर्म आँसुओं से सम्भाजी राजा की चेतना जाग गयी। सम्भाजी ने व्याकुलता से पूछा, "कौन भाई मियाँखान?"

पाँच

"जहाँपनाह! आज भी यदि किसी ने 'रामशेज' ऐसा कहा तो ऊँट और घोड़े थरथर काँपने लगते हैं। बेजुबान जानवरों का यह हाल है तो फौजियों का क्या होगा?" असदखान ने कहा।

"वजीरे आजम! आपने हार मान ली क्या?" बादशाह की कत्थई आँखें उग्र हो गयीं।

मुझे बस इतना ही कहना है, मेरे आका। रामशेज जैसे मराठों के साढ़े तीन सौ किले हैं, उनको जीतने के लिए बची हुई जिन्दगी को व्यर्थ में गँवाने के बदले सम्भा के साथ मीठी बातें करके पहले उसके किलों पर क़ब्ज़ा कर लेना चाहिए, हजरतऽऽ।"

औरंगजेब ने प्रश्नाकुल नजरों से रूहुल्लाखान की ओर देखा। तब खान बोला, "मेरे आका, सम्भा और कवि कलश जन्मजात बदमाश हैं। वे शाहंशाह को गाली देते हैं।" बादशाह अपने सहयोगियों की बातें शान्तिपूर्वक सुन रहा था। वह अपना मत प्रकट नहीं कर रहा था। वह सोच रहा था, 'सम्भा को तत्काल समाप्त न करके उसके साथ मीठी मीठी बातें करके, आवश्यक होने पर थोड़ी दहशत देकर उसके किलों पर क़ब्ज़ा कर लेना चाहिए।' यही राय अनेक सरदारों की भी थी। दक्खिन में आठ-नौ वर्षों की संघर्षशील जिन्दगी बहुत हो गयी। अब कोई युद्ध नहीं चाहिए। अब तुरन्त उत्तर की ओर लौट जाएँ। इन्हीं विचारों में सभी बेताब हो रहे थे।

आजकल बादशाह की मानसिक अवस्था बहुत अच्छी थी। वह अपने परिवार

के साथ खाने का आनन्द लेता था। रिश्ते में चाचा लगने वाले असदखान को भी बड़े आग्रह से बुलाता था। बीच-बीच में उसे हास्य-व्यंग्य की लहर-सी आती थी। उसके व्यंग्य पर बेगमों को स्वयं पर नियन्त्रण रखना पड़ता था। बादशाह का नूर देखकर बेगमें मन्द-मन्द मुस्कराती थीं। एक बार बादशाह ने पूछा, "उदयपुरी! जब गोधूलि बेला—काफिरों की भाषा में साँझ होती है, तब काफिरों की औरतें क्या करती हैं?"

उदयपुरी से कोई जवाब देते नहीं बना। तब बादशाह ने प्रश्नसूचक दृष्टि से असदखान की ओर देखा। असदखान ने सहजता से कहा, "ऐसे समय में वे औरतें इधर उधर घूमते हुए मुर्गे मुर्गियों और भेड़ बकरियों को इकट्ठा करती हैं।" इस बात पर रसोईघर में हँसी की लहर उठी। तब बादशाह ने अपनी शहजी की ओर गर्व से देखते हुए कहा, "जीनतउन्निसा बिटिया, तू ही बता इस सवाल का सही जवाब।"

"अब्बाजान, साँझ के समय हिन्दू औरतें अपने मन्दिरों में दीप जलाती हैं। देवता को प्रणाम करती हैं। आँगन में आकर अपने पति की प्रतीक्षा करती हैं। घर के आसपास जब कहीं पति के घोड़े की टाप सुनाई पड़ती है तो उनके ह्रदय में खुशी का सागर लहराने लगता है।"

"सम्भा को गिरफ्तार किये कितने दिन हो गये?" औरंगजेब का चेहरा एक कुटिल आनन्द मे खिल उठा। अपना पतला होंठ मगरूर दाँतों से दबाकर वह बोला, "सम्भा अपनी बेगम से कितनी मुहब्बत करता है, इसके अफसाने हम सुनते आये हैं। वह मूर्ख अपनी रियासत में अपनी औरत के नाम के सिक्के चलाता था। ऐसा लोग बताते हैं। खैर...सम्भा की पत्नी अब पागल हिरनी की तरह इधर-उधर भाग रही होगी, बावली होकर।"

"क्या कहना चाहते हैं अब्बाजान?" शहजादी ने पूछा।

"आज नहीं तो कल, अपने शौहर की जिन्दगी की भीख माँगती हुई वह जंगली हिरनी यहाँ जरूर आएगी।"

"अब्बाजान?"

"हाँ बिटिया, वह अकेले नहीं सारे किले की चाभियाँ साथ लेकर आएगी।" गर्व से चारों ओर नजर घुमाते हुए बादशाह ने कहा, "सम्भा की जिन्दगी की खातिर बेताब होकर वह मेरे पैरों पर नाक रगड़ेगी, वह जरूर आएगी।"

औरंगजेब की सावधान नजरों से कुछ ओझल नहीं रह पाता था। शहजादी जीनतउन्निसा आजकल बिना किसी कारण के ही बेचैन दिखती थी। बादशाह को महसूस हुआ कि जबसे सम्भा का जुलूस निकाला गया तबसे शहजादी की बेचैनी

बहुत बढ गयी थी। पिछले दस वर्षो मे दुर्गाबाई राजबन्दी के रूप में बादशाह की कैद में दिन काट रही थीं। औरंगजेब को पता था कि उसकी शहजादी को दुर्गाबाई और कमलजा मे बहुत प्रेम था।

उदयपुरी हों नवाबबाई हां या औरगाबादी महल, इन सभी बगमों की अपेक्षा औरगजेब शहजादी जीनत की बात अधिक सुनता था। उसकी बात मानता था। यह बात सभी को मालूम थी। खाना खाते खाते जीनत ने बादशाह से पूछा, "अब्बाजान! उस सम्भा को जान से मारने का इरादा दिख रहा है आपका?"

"अभी तक निश्चित नहीं है।" ऐसा कहते कहते बादशाह ने सावधान होकर पूछा, "क्यूँ? आपको क्या तकलीफ है?"

"बस ऐसे ही अब्बाजान।"

बादशाह कुछ अन्य कारणों से बहुत खुश था। उसने अपनी शहजादी से कहा "भरे बाजार में जैसे मुर्गा नचाया जाता है—लकड़ी का मुर्गा। वैसे ही शिवा के इस नापाक बच्चे को चौराहे चौराहे पर नचाएँगे। हो सकता है कि ये मरगट्टे बगावत करके हमारे ऊपर आक्रमण करें।"

"बगावत कैसी जहाँपनाह?" शहजादी के मुँह में खाना अटक गया। राजनीति के मामले में बोलना चाहिए कि नहीं? यह सोचकर शहजादी चुप हो गयी। किन्तु अपने को न रोक पाने के कारण फिर बोली "फिर भी अब्बाजान मुझे लगता है कि आपको रहम करनी चाहिए।"

"कैसी रहम बिटिया?"

"उस सम्भा को जिन्दगीभर के लिए कैदखाने की गन्दगी में फेंक दीजिए मगर उसे जान से मत मारिए।"

"हूँऽऽ" औरंगजेब असन्तोष से बोला, "देखेंगे, लेकिन वह मूर्ख है बड़ा हठीला। टूट जाएगा मगर झुकेगा नहीं।"

"अब्बाजान, जब आदमी हँसी-खुशी की जिन्दगी जी रहा होता है तब उसे कुछ अनुभव नहीं होता। मगर एक बार मौत का दरवाजा दिख जाये तो बड़े बड़े शैतान भी घबरा जाते हैं।"

"नहीं, शहजादी, शिवा का यह छोकरा बड़ा जिद्दी है। हम तो इस जहन्नमी से पूरे हैरान हो गये हैं। इन दोनों बदमाशों का इतना बुरा हाल किया गया, नरक से भी ज्यादा तकलीफें दी गयीं। खुदकुशी करने का मन करता होगा, फिर भी दोनों झुकने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। वे अपना सिला हुआ मुँह खोलते हैं तो सिर्फ हमें शाप और गालियाँ देने के लिए।"

"लेकिन अब्बाजान! दुर्गा, राणू और कमलजा जैसे उसके निकट सम्बन्धी

हमारे कैदखाने में हैं। उन रिश्तेदारों के माध्यम से अपनी बात क्यों नहीं कहलवाते आप? अपने खून से सम्बन्धित लोग मिलते हैं तो बड़े बड़े पहाड़ भी पिघल जाते हैं। सम्भा को तो लोग बताते हैं कि शायर है।"

औरंगजेब ने बड़े गर्व से अपनी शहजादी की ओर देखा। बादशाह का चेहरा दमक उठा। उसे पुराना इतिहास स्मरण हुआ। इसके पहले जब दुर्गाबाई और राणूबाई अहमदनगर के किले में कैद थीं, तब सम्भाजी ने अनेक बार दस दस, पन्द्रह-पन्द्रह हजार की फौज भेजकर अहमदनगर के किले को ध्वस्त करने की कोशिश की थी। इसीलिए उन राजबन्दियों को औरंगजेब ने हमेशा के लिए बहादुरगढ़ किले में लाकर रखा था। बादशाह अच्छी तरह जानता था कि अपनी पत्नी और बहन के प्यार में सम्भा पागल हो जाता है। अब यदि दस ग्यारह वर्ष के बाद शायद सम्भा के सामने उसके परमप्रिय व्यक्तियों को खड़ा किया तो?

यकीनन सम्भा का फौलादी सीना पिघल जाएगा। राजगद्दी से भी अधिक प्रिय अपने आत्मीय जनों से मिलने के लिए वह घायल पंछी की तरह तिलमिला उठेगा। ऐसी स्थिति में वह किसी भी सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर कर देगा। उसे लगा कि सारी उलझन सुलझ गयी। बड़ी प्रसन्नता के साथ बादशाह जनानखाने से बाहर निकला।

शहजादी के मुख पर हाथ फेरकर उदयपुरी बेगम बोलीं, "बिटिया, हजरत के सामने बात करने का साहस तुम्हें कैसे होता है?"

"नहीं अम्मीजान, किसी का भी दुख देखती हूँ तो मेरा कलेजा दुख से मरोड़ने लगता है।" जीनत जब यह तो उसे अपनी बड़ी जेबुन्निसा की बड़ी याद आयी। जेबुन्निसा सलीमगढ़ के पीछे मरते दम तक कैद की यातना भोगती रही। जीनत की आँखों में पानी उतर आया।

छह

उस रात जीनतउन्निसा को लाख कोशिश करने पर नींद नहीं आ रही थी। अपने बाप की जिन्दगी का एक-एक चित्र उसकी आँखों के सामने उभर रहा था। "मेरा बाप एक कुशल और सजग राजनीतिज्ञ हो सकता है मगर उसकी जिन्दगी काली करतूतों से भरी पड़ी है।" वह बीती घटनाएँ स्मरण कर रही थी।

लगभग पन्द्रह वर्ष पहले, सिखों के पाँचवें गुरु तेगबहादुरसिंह को औरंगजेब

ने बेहाल करके जान से मार डाला था। उसी क्रूरता मे गुरु के शिष्य भाई मतिदास, सतिदास और दयालसिंह की दिन दहाड़े हत्या करवाई थी। उस घटना को सुनने वालों के शरीर अभी भी थरथराने लगते हैं। उन विषैली यादों मे जीनतउन्निमा बुरी तरह हैरान हो रही थी।

दयालदास को दिन दहाड़े चाँदनी चौक में खौलते हुए तेल के कड़ाह में डाल दिया गया था। वह जानवरों की भाँति चीखते चिल्लाते, तड़प-तड़प कर मर गया। उसके शरीर की बची हुई चमड़ी अपने आप छिलकर नीचे लटक गयी थी। दयालदास की डरावनी लाश बादशाह ने बहुत दिनों तक चाँदनी चौक में लटका रखी थी। उम दिशा में भयभीत पंछी भूलकर भी उस ओर जाने का साहस नहीं करते थे।

सतीदास की हत्या की कथा तो और भी अमानवीय थी। उसे चाँदनी चौक में एक खम्भे के साथ कसकर बाँध दिया गया था। सतीदास के पीछे एक और-एक हथियारबन्द व्यक्ति को खड़ा किया गया था। उनके हाथों में तेज नोंकवाले बघनखे लगाए गये थे। बादशाह के इशारे पर दोनों शैतान एक ही समय पर सतीदास के शरीर को फाड़ने लगे। जिस तरह कपड़े को फाड़ा जाता है उसी तरह उसका शरीर फाड़ा जा रहा था। उसके शरीर के मांस को खरोंच खरोंचकर निकाला जा रहा था। भयानक पीड़ा से तड़पता सतीदास जानवरों से भी ज्यादा जोर से चिल्ला रहा था। उसकी करुण चीत्कार न सह पाने के कारण दो महिलाओं को गर्भपात हो गया था।

बादशाह के साथ कोई समझौता हो सके इसलिए शहजादी ने राणूबाई और दुर्गाबाई का मार्ग सुझाया था। किन्तु अपने बाप की क्रूरता का उसे पूरा अनुमान था। उस समय सतीदास का बघनखे से नोचा हुआ, खून मे लथपथ जिन्दा शरीर उसकी कल्पना में बार बार उभर रहा था। दूसरे ही पल उसे अपने अब्बाजान की जगह हाथ में तेज कटार लिये एक नर राक्षस दिखाई देने लगा। यह सपना वह जागते हुए देख रही थी और पसीने से तरबतर होकर बिस्तर में तड़प रही थी।

सात

बारह वर्ष पहले बहादुरगढ़ किले में मियाँखान दुर्भाग्य से बन्दी बनाया गया था। दो बेटियों की शादी करने और उनका भविष्य सँवारने में सम्भाजी ने मियाँखान की

बड़ी सहायता की थी। स्वयं भारी खतरा उठाकर, अपनी जान संकट में डालकर, सम्भाजी ने उसे किस प्रकार बाहर भेजा था, मियाँखान को भूला नहीं था। सब कुछ साफ-साफ स्मरण था। यही कारण था कि सम्भाजी राजा की दशा देखकर मियाँखान का कलेजा टूट रहा था।

इन्तजाम देखने के बहाने मियाँखान, उस दुर्गन्ध भरे बन्दीखाने में अनेक बार जाता था। उसके साथ उस पर जान छिड़कने वाले नौकर अन्दर जाते थे। राजा और कविराज को जितना सम्भव होता उतना फलाहार देने, जितनी सम्भव हो उतनी सेवा करने में मियाँखान स्वयं धन्य मानता था। इस जालिम कैदखाने में मियाँखान ही सम्भाजी और कविराज के लिए आँख कान था। उसी से बहादुरगढ़ के समाचार उन तक पहुँचते थे।

एक बार मियाँखान ने सम्भाजी राजा से धीरे से कहा, "महाराज! कुछ भी करके आपके इस गुलाम ने आपको बहादुरगढ़ के इस फौलादी किले से बाहर निकाल दिया होता, मगर..."

"मियाँखान?"

"हाँ सम्भाजी महाराज। यहाँ से बाहर निकलने में मुश्किल नहीं है। मगर इसलिए कि चारों ओर सौ-सौ कोस तक केवल मुगलों का ही शासन है। इस जुल्मी बादशाह ने किसी के भी तबेले में घोड़े नहीं रखने दिये। हर गाँव से बहुत सारे युवकों को मार-मारकर भगा दिया। आसपास का सारा इलाका मुगलों के क़ब्ज़े में है।"

"जाने दो खानसाहब! जिन्दगी का इतना मोह क्या? कुछ लोग जन्म ही बुरी घड़ी में लेते हैं, क्या कहा जाए? ऐसे लोग अपनी जिन्दगी से नहीं अपनी मौत से यश प्राप्त करते हैं। ऐसे तेजस्वी लोगों की मालिका में सम्मिलित होने के लिए ही जगदम्बा ने हमें बनाया होगा? फिर दोष किसको दें?"

रायप्पा महार ने जुलूस के समय अपना जीवन-पुष्प सम्भाजी महाराज के चरणों में चढ़ा दिया था। उसकी बौखलाहट का अनुमान करके उसके भाई देवप्पा ने महारानी की चिट्ठी अपने पास रख ली थी। संयोग से देवप्पा और मियाँखान की भेंट हो गयी। परिणामस्वरूप चिट्ठी और देवप्पा दोनों सही जगह पर पहुँच गये।

उस दिन अमलदार की हैसियत से मियाँखान बन्दीखाने में रात को गया। उसके सहयोगी कर्मचारी साथ थे। अन्दर जाकर उन्होंने कैदखाने का दरवाजा बन्द कर लिया। हजारों फौजियों के कड़े पहरे के बावजूद मियाँखान की सहायता से येसू महारानी का पत्र सम्भाजी राजा तक पहुँच गया। अपनी प्रिय रानी के अक्षरों को पढ़ते समय सम्भाजी की आँखें भर आयीं। महारानी ने लिखा था—

"महाराज, चिन्ता न करें। हमने बड़े पैमाने पर फौज एकत्र करना आरम्भ कर

दिया है। बादशाह के बहादुरगढ़ पर आक्रमण करके युद्ध करने की तैयारी हम कर रहे हैं। औरंगजेब जैसे मगरमच्छ के मुँह में से आपको निकाले बिना हम कैसे शान्त बैठ सकते हैं?" आगे जो लिखा था उसे पढ़कर महाराज का कलेजा काँप गया। महारानी ने लिखा था, "महाराज, आपके बन्दीखाने का रास्ता मेरे मायके से होकर गया है, यह हमारा दुर्भाग्य है। महाराज, आप अपनी येसू को माफ कर दें।"

राजा बहुत समय तक चिन्तन-मनन करते रहे। मियाँखान अपने साथ दो बीजापुरी ब्राह्मणों को वेष बदलकर ले आया था। ये दोनों बहुत बुद्धिमान थे। उनसे महाराज ने कहा, "हम जो कुछ कह रहे हैं उसे बहुत सँभालकर कान में रखो। यहाँ से बाहर जाने के बाद सावधानी से उसे स्मरण करो और जो कुछ मैंने जिस रूप में कहा है उसे उसी रूप में रायगढ़ भेज दो। समाचार के साथ प्रमाण के लिए मैं अपनी अँगूठी दे रहा हूँ। इससे समाचार इच्छित स्थान पर पहुँच जाएगा।"

महाराज ने बोलना आरम्भ किया—

"येसूरानी! मन दुखी मत हो। जो समय हमारे सामने आया है वह किसी भी व्यक्ति की गति को रोक सकता है? यह मस्तिष्क को बेचैन कर देने वाला समय है। किन्तु समय अभी समाप्त नहीं हुआ है। हमें आशा है कि मुसीबतें अभी भी टल सकती हैं। किन्तु येसूरानी, अपने मायके वालों को व्यर्थ में दोष मत दो।"

आगे का वाक्य बोलते हुए सम्भाजी राजा बहुत बेचैन हो गये।

"गणोजी की हरामखोरी के लिए अपने शिर्केकुल को भी दोष न दो। हम रायगढ़ पर सत्ता ग्रहण करने जा रहे थे तब हमारे साथ आपके पिता पिलाजीराव पहाड़ बनकर खड़े थे। महाराष्ट्र की सबसे कार्यकुशल महारानी के रूप में जिस येसूबाई ने सात-आठ वर्षों तक रायगढ़ का कार्यभार सँभाला, उसे जन्म देने वाले कुल को कौन बुरा कह सकता है? येसूरानी, कुल बुरे नहीं होते। यह तो इनसान है जो इतना दगाबाज, समझ में न आने वाला और अकल्पनीय होता है। मिट्टी में कीड़े तो रहेंगे ही और भव्य महलों में भी नाले तो होते ही हैं। आप इसी तरह हिम्मत से खड़ी रहें। हमारी ओर से अगला संकेत मिलने तक सह्याद्रि में बने अपने अजेय किलों को खोना मत।"

"मेरी चिन्ता में आपका हृदय विदीर्ण हो गया होगा। किन्तु मेरी चिन्ता रंचमात्र न करें। हमारे पूज्य पिताजी ने महाराष्ट्र के माथे पर अपना चिह्न गोदवाया है। उसे सुरक्षित रखने के लिए यदि आवश्यक हो तो अपनी माँग का सिन्दूर पुछाने के लिए भी आप तैयार रहना। किसी भी स्थिति में अपने किलों का अधिकार शत्रु के हाथ में न जाने पाए।"

आठ

जब कैदखाने के लिए दुर्गाबाई, राणूबाई और दस वर्ष की राजकुमारी कमलजा निकलीं तो अपने प्रिय व्यक्ति से मिलने की उत्सुकता में वे विकल हो गयी थीं। उनका मन स्थिर नहीं था। एक दशक के सुदीर्घ विरह और असह्य दूरी निश्चित रूप से भयंकर थी। पिछली रात मियाँखान ने दुर्गाबाई से कहा था, "लगता है दुष्ट बादशाह का पत्थर दिल पिघल जाएगा और आप अपने प्रिय सम्भाजी से मिल सकेंगी। इसके बाद तीनों को पूरी रात नींद नहीं आयी।"

आज वे तीनों बड़ी उमंग से निकली थीं। बन्दीखाने के आसपास पाँच हजार पहरेदार अपनी नंगी तलवारें नचाते हुए बड़ी सावधानी से पहरा दे रहे थे।

घासफूस से बनाया गया बन्दीखाना बहुत गन्दा था। जंगल में खुले हाथियों को बाँधने के लिए भी ऐसा कैदखाना किसी ने नहीं बनाया था। उन तीनों को नदी के किनारे की ओर से वहाँ ले जाया गया। वहाँ की गन्दगी देखकर वे तीनों भौंचक रह गयीं।

धड़कते दिल से वे तीनों सामने देखने लगीं। सामने जमीन पर मटमैला-सा फटा-पुराना कपड़ा बिछाया गया था। यह नहीं मालूम पड़ रहा था कि चीथड़ा मिट्टी पर है या मिट्टी चीथड़े पर। उस चीथड़े की तरह ही सूखे हुए, बहुत थके हारे सम्भाजी राजा और कवि कलश बाँस की दीवार के सहारे बैठे थे। वे लगभग अचेत अवस्था में दिखाई पड़ रहे थे। राजा के शरीर के कपड़े फटे हुए और उनका रंग उड़ गया था। हाथ-पैर जंजीरों से बँधे थे।

जुलूस, यातनापूर्ण समय, हाथ-पैर में लगे घाव, ऊँट की नंगी पीठ पर बैठने के कारण कमर की छिली चमड़ी, शरीर पर जगह-जगह जमे खून, काले नीले दाग आदि शरीर पर यातना के चिह्न की तरह दिखाई पड़ रहे थे।

वे दोनों अचेतावस्था में अधमरे से पड़े थे। वहाँ अँधेरे के साथ बदबू भी बहुत थी। राणूबाई को हीरे-मोती की मालाओं से सजाए गये घोड़े पर बैठकर, रायगढ़ पर चलने वाले अपने छोटे भाई का स्मरण हो आया। आज उसी राजकुमार को इस अवस्था में देखकर उनके पेट में भय का गोला घूमने लगा। जैसे नदी की ऊँची कछार पर गाय का बच्चा अटक जाये और दूसरी ओर कछार पर अटकी गाय चिल्लाए, उसी तरह राणूबाई जोर से चीखीं, "शम्भूऽऽ, बाल राजाऽऽ...शम्भूराजाऽऽ।"

राजा के कानों पर यह मीठा स्वर दस वर्ष बाद पड़ा था। अपनी बहन की उस

व्याकुल तड़प को सुनकर सम्भाजी झट से उठकर खड़े हो गये। क्षणभर के लिए उनके शरीर के घाव और उनसे उठने वाली पीड़ा लुप्त हो गयी।

शरीर से बँधी जंजीर बजी और सम्भाजी आगे दौड़े। उन्होंने राणू दीदी को बाँहों में भर लिया। रायगढ़ के राजकुमार, शिवाजी महाराज के पुत्र और अपने सुहाग को भिखारी से भी बदतर अवस्था में देखकर दुर्गाबाई का धैर्य छूट गया। उन्होंने राजा के थके हुए मांस के गोले जैसे शरीर को अपनी बाँहों में भर लिया। वे दहाड़ें मार-मारकर चिल्लाने लगी, ''महाराजऽऽ महाराजऽऽ। दस वर्ष की कमलजा आजतक मराठों के राजा, अपने पिता की शौर्य गाथाएँ सुनती आ रही थी। अपने पिता पर आये इस वज्रघाती प्रहार और दुर्भाग्य की दारुण दशा को देखकर वह टूट गयी थी। राजा के शरीर का जो भी हिस्सा उसकी पकड़ में आया उसी में लिपटकर वह भी रोने लगी। वह भी चिल्लाने लगी, ''पिताजीऽऽ, पिताजीऽऽ।'' जिस प्रकार तेज तूफान आने पर बकुल वृक्ष के सर्वांग से पुष्प झरने लगते हैं, उसी प्रकार इन चारों का अविरल अश्रुपात हो रहा था।

दुख की इस वर्षा ने सभी को भिगो दिया। राणूजीजी और दुर्गाबाई को अभी भी रोना आ रहा था। सम्भाजी ने कहा, ''राणू दीदी! कितना बुरा समय है यह ? इस दुर्भाग्य ने हमें कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। नहीं तो राणू दी औरंगजेब की चमड़ी उतारकर उसमें भूसा भरने, उसके मांस को गिद्धों के सामने फेंकने और मनुष्य के साथ भगवान को भी मुक्त करने का हमारा पक्का संकल्प था।''

''शम्भूराजा, क्या कहूँ कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है। एक न एक दिन यह दुष्ट समय समाप्त हो जाएगा, हम रायगढ़ वापस आएँगे और अपने भाई को स्वर्ण सिंहासन पर बैठा हुआ देखेंगे। हमने यही एक सपना मन में पाल रखा था। इसी नशे में दस वर्षों का सुदीर्घ कारावास हमने आराम से काट लिया।''

राजा के नेत्र भीग गये। वे व्याकुल होकर बोले, ''क्षमा करें दीदीजी और दुर्गा रानी! आपलोगों के लिए हम कुछ भी नहीं कर सके।''

''ऐसा न कहें शम्भूराजा, बहुत लड़े आप; उस पापी औरंगजेब पर आप भरे बादल की तरह फट पड़े।'' राणूबाई ने कहा।

''हम राजबन्दिनी महिलाएँ होते हुए भी यहाँ की तेज गतिविधियों से हवा के रुख को समझती थीं।'' दुर्गाबाई ने कहा।

''इतना ही नहीं, औरंगजेब की फौज के साथ घूमते समय हमारी और कान खुले ही थे। पिछले सात-आठ वर्षों में मुगलों के आदमी ही नहीं जानवर भी आपकी दहशत से डर के मारे सहम जाते थे। आसमान में तारे भी चमकते तो बादशाह के जानवरों को तारों की जगह भाले और बर्छियाँ दिखाई देती थीं।''

शम्भूराजा ने अपने हृदय की गहन वेदना को व्यक्त करते हुए कहा, "दुर्गा, राणूदीदी और बेटी कमलजा, आप तीनों को स्वराज्य में वापस ले आने के लिए हमने जान की बाजी लगा दी थी। बहुत बार अहमदनगर किले के आसपास हमारी दस-दस, बीस-बीस हजार की फौजें चक्कर काटकर आयी, हंबीरमामा ने भी बड़ी कोशिश की। अन्त में किले की खाई की बगल से एक सुरंग बनाने की गुप्त योजना हमने तैयार की। किन्तु शत्रु को खतरे की भनक लग गयी। उसने आपलोगों को बहादुरगढ़ भेज दिया। ईश्वर ने और भाग्य ने साथ दिया होता तो दो महीनों में आपलोग राजधानी पहुँच गये होते। उस समय हम स्वयं को कितना भाग्यवान समझते?"

कितनी बातें करें? क्या बातें करें? सभी की स्थिति वर्षा में भीगी बेल की भाँति हो गयी थी। अपने पिता के फटे कपड़ों, आधे-अधूरे बढ़े सिर और दाढ़ी के बाल देखकर कमलजा घबरा गयी थी। किन्तु पिता की आँखों में तेज देखकर उसका मन गर्व से खिल उठा। महाराज ने कमलजा को अपने पास बुलाया। अपने जख्मी हाथों से पकड़कर बड़े प्यार से चूमा। उन्होंने अपनी बेटी को बाँहों में भर लिया और सीने से चिपका लिया। वे बड़े अधीर स्वर में बोले, "बेटी, कितनी बड़ी हो गयी तुम? यदि हम रायगढ़ पर होते तो हम अपनी लाड़ली बेटी का किसी राजकुमार के साथ बड़े ठाट बाट से विवाह किया होता? मंगल अक्षतों के साथ गढ़ पर तोपों की गड़गड़ाहट हुई होती।"

राणू दीदी ने सम्भाजी राजा के बालों में अपनी उँगलियाँ घुमाई। वहाँ भी आधे-अधूरे बढ़े बालों में घावों के निशान दिखे। वे सान्त्वना के स्वर में बोलीं, "शम्भूराजा धीरज रखो। ये दिन भी कट जाएँगे।"

"दीदीजी! समय ने इतने कठोर तमाचे हमें ही मारे? यह कैसी घात करने वाला समय आया है। यह कितना मनहूस समय है? अपनी इस बिटिया को इससे पहले हमने कभी देखा ही नहीं। आज पहली बार उसे सीने से लगाकर हृदय आनन्दित हो गया। किन्तु यह भी कैसा दुर्भाग्य? दुनिया के इतिहास में होगा कोई ऐसा राजा जो अपनी प्यारी बेटी को दस वर्ष के बाद मिल पाया हो? अपनी राजकन्या के साथ दस वर्ष बाद मिलना और वह भी फिर कभी न मिलने के लिए।"

सम्भाजी की बात सुनकर सभी का कलेजा दहल गया: इतने में ही पहरेदार दुलारसिंह यमदूत की तरह अन्दर झाँका। गला साफ करके ऊँची आवाज में बोलने लगा, "जल्दी करो! आपलोगों के लिए समय बहुत कम है।" पहरेदार के शब्दों में दुष्टकाल का चेहरा दिखाई पड़ने लगा। उस लोकोत्तर मिलन में पलभर के लिए

अद्भुत सुख की अनुभूति हुई। सम्भाजी राजा दुर्गाबाई का हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोले, "दुर्गा, एक स्त्री के रूप में, एक पत्नी के रूप में या एक इनसान के रूप में हम आपके लिए कुछ भी नहीं कर सके।"

"महाराज, हमारे हिस्से में जो आया वह भी मेरे लिए बहुत था। शिवाजी महाराज की पुत्रवधू और सम्भाजी राजा की पत्नी होने पर जो आदर मुझे मिला, क्या वह कम है?"

राणूदीदी कुछ आगे सरक आयीं और हड़बड़ी में पूछा, "क्या-क्या चाहिए उस दुष्ट राक्षस को?"

"राणू दीदी! दुर्गा! बादशाह ने अनेक बार सन्देशा भेजा है कि वह आपलोगों के साथ मुझे भी छोड़ने को तैयार है।"

"किन्तु इसके बदले में?" राणू दीदी और दुर्गाबाई ने एक साथ पूछा।

"हमें अपने स्वराज्य के सारे किलेदारों को यहाँ बुलाकर, सभी किलों की चाभियाँ और उनकी हुकूमत बादशाह को सौंपनी होगी। हमें अपना यह मुल्क छोड़कर जाना होगा। हिन्दुस्तान के किसी दूसरे हिस्से में बादशाह हमें कोई खास जागीर देकर जिन्दगी भर के लिए ऐशो-आराम की सुविधा कर देगा। ऐसा आश्वासन वह मुझे दे रहा है।"

"नहींऽऽ नहींऽऽ, बिलकुल नहीं, अपनी जान चली जाये तो भी अपना एक भी किला उसे मत दो।" दुर्गाबाई चिल्लाई।

"अपने पिताजी की आन से पीछे न हटना।" राणू दीदी बोलीं।

शम्भूराजा खिन्न मन से हँसते हुए बोले, "दुर्गारानी बादशाह की मेहरबानी से कितने दिनों के बाद हम मिल रहे हैं। उनकी इच्छा के अनुसार उन्हें प्रसन्न करेंगे तो अपनी जान छूट जाएगी। अपने सुहाग की जिन्दगी काट सकेंगी आप।"

दुर्गाबाई जोर से रो पड़ीं। रोते हुए व्याकुलता से उन्होंने सम्भाजी से कहा, "नहींऽऽ महाराज विनोद में भी ऐसा न कहें। हमारे पूज्य ससुर शिवाजी महाराज के स्वप्न और लक्ष्य के सामने मेरे सुहाग की क्या कीमत है? वैसे भी महाराज पिछले दस-बारह सालों में विधवा की जिन्दगी जीने की आदत पड़ गयी है। बची-खुची जिन्दगी भी काट लेंगे।"

"सच है शम्भू बेटा। हमारी जान रहे या चली जाए, हमारी जान के मोह में ऐसा कोई समझौता न करना जिससे पिताजी के सम्मान को धक्का लगे।" राणू दीदी ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

इसी समय पहरेदार दरवाजे पर लकड़ी से ठोकने लगा। इस तरह समय समाप्त होने का संकेत देने लगा। वियोग की कल्पना से ही सभी का कलेजा हिल

गया। राणूदीदी, सम्भाजी राजा, दुर्गाबाई और कमलजा ने एक दूसरे को बाँहों में भर लिया। आवेग से व्याकुल एक दूसरे को चूमने लगे।

'पिताजीऽऽ पिताजीऽऽ' कहकर रोने वाली कमलजा के बरसते हुए आँसुओं को सम्भाजी राजा ने देखा। प्यार से विह्वल उन चार प्राणियों ने चूमते हुए एक-दूसरे के आँसू पी लिए।

वे तीनों आँसूभरी आँखों से सम्भाजी राजा को देखते हुए धीमी गति से पीछे जाने लगे। इतने में एक कोने से कवि कलश की आवाज आयी, "राणू दीदीऽ।"

उस आवाज को सुनते ही राणू दीदी चौंक गयीं। कविराज की ओर तेजी से गयीं और व्याकुल होकर बोलीं, "कविराज दुख में, सुख में और मौत के दरवाजे पर भी आपने हमारे प्यारे शम्भूराजा का साथ निभाया। अगले जन्म में हमारे शम्भूराजा के मित्र बनकर, नहीं तो हमारे सगे भाई बन जन्म लीजिएगा।"

दुर्गाबाई और कमलजा ने कवि कलश के चरणों के दर्शन किये। कविराज का गला भर आया। वे गदगद होकर बोले, "दुर्गा भाभीऽ, राणूदीदी सह्याद्रि घाटियों और पहाड़ों में अभी भी औरंगजेब के विरुद्ध लड़ने वालों को हमारा यह सन्देश भेज दीजिएगा—

फाँसी की फाँस गले से लगाय चले हम मौज की चाल सदाही
जानि परै अजहूँ पग के तल लोहे की तेज सतेज गड़ाहीं
लोभ नहीं जिनगी का कभी थां पै हाथ पे होती जो हाथ खड़ग दुधारी
साथ तुम्हारे महारण में लड़ता नितही बन वीर जुझारी।"

नौ

उजाला हो गया किन्तु सूर्य कहाँ है? सम्भाजी हाथ लग गया किन्तु मराठों का प्रदेश क़ब्ज़े में कहाँ आया? औरंगजेब की स्थिति विचित्र हो गयी थी। प्लेग के कारण औरंगाबादी महल उसे छोड़कर चली गयी थी। इसलिए वह कुछ बेचैन हो गया था। एक ओर जहाँ सम्भाजी के कैद करने की उसे प्रसन्नता थी वहीं दूसरी ओर शहजादा मुअज्जम को कैदखाने में बन्दी बनाना पड़ा था। शहजादा अकबर जैसा प्रिय शहजादा हमेशा के लिए उसे छोड़कर चला गया था। ईरान के बादशाह की

सहायता लेकर वह हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था। जुल्फिकारखान और शहजादा आजम सह्याद्रि की घाटियों में पहुँच अवश्य गये थे। किन्तु उनकी सफलता का कोई समाचार मिल नहीं रहा था।

भाग्य ने औरंगजेब को बेहाल कर दिया था। रात को खाना खाते समय औरंगजेब बिना भूले बेगम उदयपुरी और शहजादी जीनतउन्निसा को अपने पास बुला लेता था। उनसे अपने मन की बात कहने में उसे हल्कापन महसूस होता था।

आज बादशाह की मुद्रा कुछ ठीक नहीं दिखाई दे रही थी। उसने चिढ़े हुए स्वर में अपनी शहजादी से कहा, "जीनत, हमारे कर्मचारियों ने बहुत कोशिश की, किन्तु वह निकम्मा काफिरबच्चा तो एकदम उल्टी खोपड़ी का निकला।"

"क्यूँ, अब्बाजान?"

"वह पत्थर जरा भी नहीं पिघलता। खुफिया लोगों से पता चला है कि सम्भा की औरत, बहन और बेटी भी बहुत जिद्दी और घमंडी हैं। ये सबकी सब फाँसी के तख्ते पर चढ़ने को तैयार हैं किन्तु समझौता नहीं करना चाहतीं।"

"अब्बाजान धीरज रखिए सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

"नहीं बेटी, सम्भा तो शैतान ही है। अपनी आँखों की कोर में उस जहन्नमी के लिए जरा भी रहम रखने की भूल मत करो।"

बादशाह के कान बाहर भी लगे थे। पिछले दिन से शहाबुद्दीनखान बे लगाम होकर बोल रहा था। बादशाह उसे किसी प्रकार समझाने की बात सोच रहा था। तोला माशा का सन्तुलन रखने वाली बेगम उदयपुरी कुछ दूरी पर थीं। उन्होंने बादशाह और शहजादी के संवाद में भाग नहीं लिया था। इसी बीच कुछ खुफिया और दासियाँ बाहर से आयीं। उनसे खड़े खड़े बात करके बेगम उदयपुरी अन्दर आयीं। उस समय उनकी मुखमुद्रा क्रोध से लाल हो गयी थी।

बेगम उदयपुरी क्रोधावेश में बादशाह के सामने आकर खड़ी हो गयीं। बादशाह की आँखों में आँखें डालकर बेगम बोली, "बादशाह सलामत! आदमी की जोर जबरदस्ती की कोई सीमा होती है कि नहीं? एक समय दारा जैसे पवित्र और जिन्दादिल शहजादे के साथ मेरी शादी हुई थी। उसका कत्ल करके और सिंहासन से हटाकर आपने मुझे छीन लिया। तख्त तो लकड़ी का था वह बेचारा क्या करता? किन्तु मेरी भावनाओं की आपने कभी परवाह की? कभी नहीं, किन्तु वह सब कुछ चुपचाप पीकर मैं पूरी जिन्दगी बादशाह की इच्छानुसार जुर्मों की सेज सजाती रही। क्या मैंने कभी विरोध किया?"

"खामोश बेगमऽ तुझे आज हो क्या गया है?" औरंगजेब भयंकर रूप से सन्तप्त होकर कभी उदयपुरी और कभी शहजादी की ओर देखने लगा।

"सुनने दीजिए शहजादी को। वह कोई नासमझ बच्ची नहीं है। किन्तु

हजरत, जिस व्यक्ति ने भरे बाजार में शौहर का कत्ल कर दिया हो, उसकी सेज सजाते हुए जिन्दगी भर जुर्म सहने के लिए बहुत बड़े साहस की जरूरत होती है। किन्तु अब उसकी भी हद हो गयी है।"

"लेकिन बेगम, ऐसा क्या हो गया?"

"आपका कुत्ता शहाबुद्दीनखान, जो जिन्दगी भर बड़ी-बड़ी बातें करता रहा किन्तु सम्भाजी दाहिनी ओर से आता है ऐसा सुनकर बाईं ओर भागने वाला चूहा। उसकी इतनी मजाल?"

"क्या हुआ? बताओ तो सही—" बादशाह ने चिल्लाते हुए पूछा।

"उस बुड्ढे शहाबुद्दीनखान ने आज सम्भा के पास सन्देश भेजा है—अपने किलों की चाभियाँ और कब्जे दे दो, नहीं तो भरे बाजार में तुम्हारी औरत पर नौकरों और गुलामों के लड़के छोड़े जाएँगे। उसकी इज्जत लूटी जाएगी।"

"बस इतना ही? मुझे तो लगा आपके सिर पर आसमान ही गिर गया था।" बादशाह शान्त होकर नीचे बैठ गया। किन्तु उदयपुरी के क्रोध का पारा ऊपर चढ़ता गया। शहजादी क्रोध से काँपने लगी। उन दोनों को समझाते हुए बादशाह ने कहा, "कितनी चिन्ता करती हो? इतनी बहस करने का क्या कारण है? क्या कुत्ता और क्या कैदी? दोनों बराबर ही होते हैं।"

अब तक उदयपुरी का क्रोध अपनी सीमा पर पहुँच गया था। वे बादशाह के सामने बैठ गयीं। वे जिन्दगी में पहली बार बादशाह से विवाद कर रही थीं। "वह दुर्गा—वह राणू केवल सम्भाजी की पत्नी और बहन नहीं हैं, वे शिवाजी की पुत्रवधू और बेटी हैं। शिवाजी ने जिन्दगी भर दंगाफसाद और खूनखराबा किया परन्तु किसी मुसलमान बहू-बेटी का स्पर्श नहीं किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् स्वयं आपने शिवाजी की इस विशेषता की तारीफ की थी। वह सम्भा बड़ा बदमिजाज है, इश्कबाज है, दारूबाज हैं, इसकी साक्ष्य मराठों के बड़े-बड़े पंडित दे रहे हैं, किन्तु किसी मुसलमान ने ऐसी शिकायत कभी भी नहीं की। इसके विपरीत हर मुसलमान माँ-बहन को सम्भा ने अपने पिता की भाँति ही हमेशा इज्जत दी।"

महिलाओं के इस आक्रमण से बादशाह सकपका गया। उसने तत्काल शहाबुद्दीन को सन्देशा भेजा कि वह अपनी अकल ठिकाने रखे। इससे बुड्ढा शहाबुद्दीन ठिकाने पर आ गया।

दिन बीत रहे थे। महाड़ से जुल्फिकार पत्र पर पत्र भेज रहा था। आज अपनी सेना बिखाड़ी तक पहुँच गयी। कल अवचितगढ़ तक पहुँच जाएँगे। किले की तलहटी में घेरा डाल दिया है। इन पत्रों को पढ़कर बादशाह असदखान पर भड़कता था, "आपका बेटा मुझे नक्शा पढ़ने का तरीका सिखा रहा है क्या?"

जुल्फिकार रायगढ़ पर सीधे आक्रमण करने मे घबरा रहा था। महारानी के शरणागत होने के कोई चिह्न दिखाई नहीं पड़ रहे थे। बादशाह के चित्त को रंचमात्र भी शान्ति नहीं मिल रही थी। सम्भाजीराजा पर उसका क्रोध जरा भी कम न हुआ था। उसने खिन्नता से शहजादी से कहा, "जीनतऽ, उस पापी सम्भा को मुकर्रबखान द्वारा कैद किये आज बीस दिन हो गये। दारा जैसे सगे भाई को दो-तीन दिन में ही कत्ल करके जहन्नुम भेजने वाला यह शहंशाह औरंगजेब उस काफिर बच्चे को बीस दिन तक कैसे जिन्दा रखता है, इस कल्पना से अनुभवी लोग चकित होते हैं। शहंशाह डरपोक हो गया है ऐसा सोचकर बच्चे छुपकर हँसते हैं। मेरा मजाक उड़ाते हैं। बादशाह का ऐसा अपमान पहले कभी नहीं हुआ था।"

"मेरे आका! आपके प्राण उस सम्भा में नहीं बल्कि मराठों के किलों मे अटके हैं।" उदयपुरी ने कहा।

"और नहीं तो क्या बेगम? कल को रामशेज की तरह एक एक किले को जीतने में छह-छह वर्ष लगेंगे तो इस प्रदेश को जीतने के लिए यह जिन्दगी कम पड जाएगी?"

"अब्बाजान, तो आप स्वयं जाकर क्यों नहीं मिलते उस सम्भा से? जो तलवार मे सम्भव नहीं है उसे आप जबान की मीठी कटारी से कर सकते हैं। आपके शब्दों की शक्ति मैंने अकबर भैया को लिखे गये आपके पत्रों में देखी है।"

"किन्तु शहजादी हिन्दुस्तान का बादशाह बन्दीखाने में जाएगा? वह भी उस काफिर बच्चे से मिलने?" औरंगजेब के माथे की सिकुडन भयंकर लग रही थी।

दस

एक दिन अपने महल में बादशाह शोर मचाने लगा, "सब के सब बेवकूफ हैं। कैसे पहरे करते हैं? किस तरह का बन्दोबस्त करते है? दुश्मनों के कुछ जासूसों के बहादुरगढ़ आने की खबर मिली है। उनकी इतनी हिम्मत होती कैसे है?" वह असम्भव घटना घटी है इसका विश्वास दिलाने के लिए औरगजेब तूफान मचा रहा था। "उस करीमखाँ को बुलाओ। उस शैतान बगमद को बुलाओ। वह पागल दस्तगीरखान कहाँ चला गया?" औरंगजेब ने अपने दस बारह कर्मचारियों को रात मे ही महल में बुलाया। पहरे में ढिलाई के कारण उनकी खूब फजीहत की। उनमें

से एकाध ने हिम्मत करके कहा, "जहाँपनाह, चाहें तो आंप स्वयं आकर बन्दोबस्त देख लें।"

"क्यों नहीं? तुम्हारी मूर्खता के लिए अब मुझे गश्तीवालों की तरह रात में घूमना पड़ेगा?" ऐसा कहकर बादशाह रुका नहीं, वह तत्काल बाहर निकला।

उस रात बादशाह ने अनेक चौकियों और पहरों का निरीक्षण किया। दूसरी रात को भी चक्कर लगाया। तीसरी रात को वह उस ओर गया जहाँ वे खतरनाक राजबन्दी कैद किये गये थे। उसके साथ केवल असदखान था। वहाँ पहुँचने से पहले बादशाह ने इस बात की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली थी कि कवि कलश और सम्भाजी को बेड़ियों और जंजीरों से ठीक तरह से बाँधा गया है कि नहीं? उनके बन्धन ढीले तो नहीं हैं? यह जान लेने के बाद ही बादशाह ने वहाँ पाँव रखा था।

बन्दोबस्त के निरीक्षण का नाटक करते हुए बादशाह उन बन्दियों तक पहुँचा था। उन दोनों का भोजन बहुत कम हो गया था। मार-पीट के कारण शरीर के वस्त्र फट गये थे। किन्तु उनकी गर्दन की अकड़ और आँखों का रोष जरा भी कम न हुआ था। वजीर असदखान पीछे रुक गये। जिस प्रकार कोई चिड़ियाघर में बँधे बाघ के बच्चे को देखता है उसी प्रकार औरंगजेब ने सम्भाजी राजा को देखा। राजा की ओर क्रोध और कुत्सा से देखते हुए बादशाह ने कहा, "सम्भा, जवाँमर्द, इस घटना को लगभग तीस वर्ष हो गये। अपने सगे भाई, शहजादा दारा का एक मरियल हाथी पर ऐसा ही जुलूस दिल्ली की सड़कों पर निकाला था। उस समय उस बेवकूफ की बेइज्जती पर मैं खूब हँसा था।"

"बादशाह तू मूर्ख है। दारा एक भला, नेकदिल इनसान था। हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों का प्रिय शहजादा।" बीच में ही कवि कलश बोल पड़े।

"पागल शायर, तू अपनी जबान पर लगाम लगा नहीं तो चटर चटर बोलने वाली इस लाल जीभ को जड़ से उखाड़ना पड़ेगा।" बादशाह कड़ककर बोला।

कलश थोड़ा चुप हुए, तब बादशाह ने आगे कहा, "प्रजा को मोहित करने की कला दारा को अच्छी तरह मालूम थी। इसीलिए खुली सड़क पर दारा का जुलूस देखकर अनेक लोग छाती पीट रहे थे। औरतें दीवारों पर सिर पटक रही थीं। हमारी मूर्ख प्रजा ने कितना रोना-धोना मचाया था? और इधर शिवाजी की धरती से, विदूषकों का लिबास पहनाकर मैं तुझे मुर्गे की तरह नचाते हुए यहाँ ले आया तो मेरे घोड़े की लगाम पकड़ने के लिए कोई माई का लाल आगे नहीं आया। बोलो, यह तुम्हारी हार है या जीत?"

"केवल धोखा। बेवकूफ बादशाह इस तरह धोखे और बेईमानी के दाव-पेंच से गढ़ी गयी कहानी को तुम यदि अपनी जीत मानते हो तो तुम गद्दारों के बादशाह माने जाओगे, हिन्दुस्तान के नहीं।" शम्भू महाराज ने कहा।

"ऐसा रंग और ये मस्ती?"

"क्यों नहीं? अभी भी हिम्मत है तो हमारे शरीर की ये बेड़ियाँ खोल दो और तुम्हारा कोई भी सिपहसालार, शहजादा या कोई सामने आये तो आमने सामने की लड़ाई में हमारे हाथों की नाचती तलवार तुम्हारे सवालों का सही जवाब दे देगी।"

बादशाह कुछ नहीं बोला। कुछ समय तक उसी तरह चुप रहकर नाटकीय ढंग से बोला, "सम्भा तुम्हारे जुलूस के समय क्या कम लोगों ने तुम्हें देखा? कौन आया तुम्हारी मदद के लिए? बेवकूफ राजा, अपनी प्यारी जिन्दगी बचा। आरजू, हसरत, महत्त्वाकांक्षा आदि छत से लटकती झूमर के समान हैं। एक बार टूटकर गिरीं तो उनका काँच बटोरने के लिए भी कोई नहीं रुकता।"

शम्भूराजा कुछ बोल नहीं रहे थे। किन्तु क्रुद्ध लाल आँखें बादशाह पर घूम रही थीं। सम्भाजी को समझाने का प्रयत्न करते हुए औरंगजेब ने कहा, "दुनियादारी की तराजू में सिर्फ व्यवहार तौला जाता है। जो व्यवहार शिवाजी के सभी जमाई राजाओं ने समझा वह अक्ल तुम्हें कब आएगी? शिवाजी के जमाई राजाओं की तरह ही उनके राजकुमार का भी बादशाही फौज में सम्मान किया जाएगा। मन की शंका को निकाल दो। मुझे अपना मानो।"

"मेरा जुलूस निकालकर आपने मेरा कितना सम्मान किया? यह दुनिया को अच्छी तरह पता चल गया है।"

"वह जुलूस एक सबक था। केवल आपके लिए नहीं बल्कि अल्लाहताला द्वारा बहाल की गयी इस सल्तनत में जो भी बदमाश सिर उठाएँगे, उन सबके लिए।"

शम्भूराजा कुछ अधिक नहीं बोले। बादशाह भीतर ही भीतर बहुत उद्विग्न हो गया था। शम्भूराजा को कैद किये बीस दिन बीत गये थे। बादशाह के हाथ किलों की चाभियाँ नहीं लग रही थीं। जुल्फिकारखान का गुप्त पत्र आया था। "अभी तक रायगढ़ पर क़ब्ज़ा नहीं हुआ। हमलोग महाड़ में डेरा डाले हुए हैं। रायगढ़ को घेरने की कोशिश कर रहे हैं कि धनाजी और सन्ताजी के खुफिया लुटेरे रात बेरात टिड्डियों की तरह हमला कर देते हैं और हमारी बड़ी बर्बादी करते हैं। सह्याद्रि में हम प्रविष्ट तो हो गये हैं किन्तु किलों पर विजय पाना मुमकिन नहीं लगता।" यह समाचार दिल दहलाने वाला था। रायगढ़ की रानी भी शरण में आने का नाम नहीं ले रही थी। थोड़ा बहुत यश मिलना बादशाह के लिए आवश्यक हो गया था। अपनी मधुर वाणी की मोहिनी शम्भूराजा पर डालने का प्रयास करते हुए औरंगजेब ने कहा, "सम्भा तुम्हारे पिता, उस काफिर शिवा से मुझे हमेशा ईर्ष्या होती है।"

सम्भाजी राजा ने गहरी साँस ली। उन्होंने बादशाह की आँखों में अपनी क्रुद्ध

दृष्टि से घूरते हुए देखा। बादशाह ने कहा, "एक जंगली चूहा, मामूली जमींदार मरगट्ठों की सल्तनत खड़ी कर ले, यह कितनी बहादुरी की बात है?"

"बादशाह, मेरे पिताजी की दौलत किसी घमंडी सुल्तान की गद्दी नहीं थी। वह गरीब गुर्बो का, उनके सपनों का साम्राज्य था।"

थोड़े गम्भीर स्वर में औरंगजेब ने कहा, "कितना खुशकिस्मत है वह शिवा जिसने तुम्हारे जैसे होनहार बेटे को जन्म दिया। तुम पर हमें बहुत नाज होता है। आदमी अनुभव से सीखता है, ठेस लगने से सावधान होता है। तुमने मुझे आठ वर्ष तक चक्कर कटवाया है। उस अनुभव से मैं तुम्हारी वीरता खुले रूप में स्वीकार करता हूँ। शहजादे, यह तुम्हारी तारीफ नहीं हकीकत है। अपने पिता की, मरगट्ठों की गद्दी को सँभालने के लिए जिस तरह तुमने मुकाबला किया अपने किलों को बचाकर रखा, समुद्र के पानी में आग लगाई, ऐसी थोड़ी-बहुत औकात मेरे चार शहजादों में से किसी में भी हो तो— ?"

सम्भाजी राजा ने गहरी साँस ली। वे बादशाह की नजरों में अपनी क्रुद्ध नजरों मे देखते हुए बोले, "औरंगजेब बादशाह ऐसी झूठी प्रशंसा करने के बदले तुम्हें जो चाहिए वह साफ-साफ कहो और छुट्टी पाओ।"

"तुम्हारा सबसे समृद्ध खजाना कहाँ है?"

"हर किले पर।"

"हमारी फौज के कौन-कौन से गद्दार शैतान तुम्हारे साथ मिले हैं?"

"पता नहीं।"

"घमंडी सम्भा, अब तो होश में आओ। एक मूर्ख शायर के साथ मिलकर नादान मत बनो। तुम्हें इस बात का अनुमान नहीं है। हमारे जुल्फिकारखान की चालीस हजार की फौज अब तक रायगढ़ में घुस चुकी होगी। रायगढ़ के किले पर घेरा भी डाल दिया होगा।"

"बेवकूफ बादशाह, हमारा रायगढ़ बालू की दीवार से नहीं बना है?"

"फौलाद का बना हो तो भी उसे पिघला दो। ऐसी आज्ञा देकर ही मैंने जुल्फिकार को वहाँ भेजा है।"

"पत्थर का है। उसके दो टुकड़े भी नहीं हो सकते।"

"बेमुरौवत काफिर बच्चे अपनी जान बचाओ! किसके भरोसे तुम इतना घमंड करते हो? तुम्हारे प्रदेश की हर घाटी में हमारी फौज घुसने लगी है। यह भी बारीकी से देखो कि तुम्हारे मुल्क के सारे जागीरदार हमारे दरबार में दौड़ लगा रहे हैं।"

"जागीर के टुकड़ों के लोभ में जी हुजूरी करने वाले कुछ जागीरदारों का मतलब महाराष्ट्र नहीं है। मर्दों का सच्चा महाराष्ट्र झुकेगा नहीं, झुकेगा तो नहीं

ही।''

बादशाह मन मसोसकर रह गया। वह फिर एक बार जोर से हँसते हुए बोला, ''सम्भा तुमसे मुझे दो ही बातें चाहिए। एक तो धोखेबाज गद्दारों की सूची और दूसरे सह्याद्रि के सभी महत्त्वपूर्ण किलों की चाभियाँ, क़ब्ज़े के साथ।''

बादशाह की उस गर्जना को सुनकर सम्भाजी राजा को उम परिस्थिति में भी हँसी छूटने लगी। औरंगजेब का उपहास करते हुए सम्भाजी महाराज बोले, ''मूर्ख बादशाह, सह्याद्रि के कन्धों पर बने हमारे मजबूत किले ही हमारी शोभा, सामर्थ्य और प्राण हैं। किससे क्या माँगने की मूर्खता कर रहे हो? कल तू ईद के चाँद मे माँगेगा कि आकाश की सारी चाँदनी निकालकर मुझे दे दे, तो क्या ऐसा सम्भव है?''

सम्भाजी राजा के जवाब के इस ढंग से कोने से हँसी के फव्वारे छूटे। कवि कलश बादशाह की मूर्खता पर खिलखिलाकर हँस रहे थे।

सम्भाजी राजा और कवि कलश द्वारा किये गये अपमान और उपहाम मे बादशाह भीतर ही भीतर बहुत बिफर गया था। वह अपने को बहुत बेइज्जत अनुभव कर रहा था। उसे रामशेज किले की याद आयी। एक अकेले रामशेज ने साढ़े छह वर्षों से नाक में दम कर दिया था। उसके अनेक बहादुर सरदार आँखों के आगे प्रत्यक्ष हो गये। वह सोचने लगा, इस हिमाब से मराठों के सभी बलशाली किलों को जीतने के लिए कितना ममय लगाना पड़ेगा? इस कल्पना से बादशाह मन ही मन घबरा गया। फिर भी उसने राजबन्दियों के सामने अपनी बात रखी, ''सम्भाऽऽ तू एक बात ध्यान रखना, दया माया, प्यार मुहब्बत जैसे झूठे जलवे हम अपने कलेजे से चिपकाकर कभी नहीं रखते। हम खुले सत्य के पुजारी हैं। हम तुमसे वादा करते हैं। तुम अपने सारे किलों का कब्ज़ा मेरे अधिकारियों के ताबे में दे दो और अपने इस दोस्त के साथ ऐयाशी करने के लिए किसी भी प्रदेश में चले जाओ।''

''वाहऽ बादशाह।'' कवि कलश खखाकर हँसे।

''यह मजाक नहीं है, मूर्ख शायर! चाहो तो कुरान शरीफ पर हाथ रखकर हम तुम्हें वचन देते हैं।''

बादशाह की ओर देखकर सम्भाजी राजा व्यंग्य से हँसे। वे कहने लगे, ''हमारे गढ़ों-दुर्गों की चाभियाँ लेने के लिए तू बहुत ही बेताब दिख रहा है बादशाह! बिना लड़े ही चुपचाप किलों का क़ब्ज़ा दे देने को कह रहा है तू?''

''बिलकुल।''

''ऐसी फूँका फूँकी और बिना प्रयत्न के अधिकार जमाना है तो तू उधर उत्तर की ओर क्यों नहीं जाता? वहाँ तुम्हारी तरह के लोगों को चाभियाँ मिल जाती हैं। किन्तु उसके लिए नक्षत्र जैसी अपनी बहू बेटियों के हाथ दुश्मनों के हवाले करके

दौलत को बचाने वाली औलादें वहाँ रहती हैं। हम मराठों का सिद्धान्त अलग है हम किले के प्रत्येक पत्थर पर अपने रक्त का सिन्दूर चढ़ाते हैं और उसकी रक्षा में अपना बलिदान करते हैं।"

ग्यारह

"मेरे आका, सियासत के मामले में मैंने कभी कोई दखलन्दाजी नहीं की। किन्तु नौ दस वर्षों से रोज अभियान, रोज नयी जगह पर पड़ाव। नयी नयी जगह पर बादशाह का डेरा। ऐसा क्यों हो रहा है? इस खानाबदोश की जिन्दगी मे मैं ऊब गयी हूँ।" उदयपुरी बेगम ने कहा।

"शाही डेरे में रहने वालों का यह हाल है तो जंगे मैदान में रोज धूल धक्कड़ भरे दमघोटू वातावरण में रहने वाले सिपाहियों का क्या हाल होता होगा?" बादशाह ने उल्टा सवाल किया।

बाजार त्रस्त हो गये थे। फौजी वापस जाने के लिए बेताब हो रहे थे। अनेक कर्मचारी वेतन बढ़ाने के लिए अड़े बैठे थे। ये सारी स्थितियाँ बादशाह को पीड़ित कर रही थीं। उदयपुरी ने आगे कहा, "अब बाकी क्या रह गया है। सम्भा तो अब मिल गया न?"

"लेकिन उसके किले, उसका राज्य अभी तक कहाँ क़ब्ज़े में आया?"

"यदि वैसा आवश्यक लगता हो तो सम्भा को अपने साथ ले लें।"

"दिल्ली की तरफ?"

"क्यों नहीं?"

"बेगम, यह जंग मैंने ऐसे मुकाम पर ला दी है कि इसे छोड़ना हमारे लिए मुमकिन नहीं। हमारे पीछे मराठे दौड़े आएँगे। मेरा और सम्भा का जो भी फैसला होगा, इसी मिट्टी में होगा।" बादशाह दीर्घ उच्छ्वास छोड़ता हुआ बोला।

एक रात में बादशाह को अचानक एक विचार सूझा। उसे स्मरण आया कि कवि कलश सम्भा का प्राणतत्त्व है, यह बात मराठों के घर घर में छोटे बड़े सभी जानते थे। बादशाह ने सोचा, यदि इसी धागे को पकड़ा जाये तो? बादशाह रात में ही उठ गया। वह महल से बाहर निकला। गश्ती वाले पहरेदार सावधान हो गये। उन्होंने अनुमान लगाया कि बादशाह निरीक्षण के लिए बाहर निकला होगा। फौज में

घबराहट फैल गयी। किन्तु बादशाह निकलकर उस बदनाम बन्दीखाने की ओर नहीं गया। वह आधी रात में रूहुल्लाखान के डेरे में पहुँचा और वहीं पर कवि कलश को लेकर आने का हुक्म दिया।

कविराज रूहुल्लाखान के डेरे में पहुँचे। सामने तकिये के सहारे बैठे औरंगजेब को अस्वस्थ मन:स्थिति में देखकर वे मन ही मन हँसे। सम्भाजी राजा से अलग बुलाए जाने का रहस्य उनकी समझ में आ गया।

आज तक औरंगजेब ने कविराज और सम्भाजी राजा को धमकियाँ देने, धाक जमाने, डाँट फटकार, झूठे वादे, तुरन्त जान से मार देने की धौंस जैसे अनेक कड़वे काढ़े पिलाकर देख लिया था। इस प्रकार की किसी भी औषधि का असर उन दोनों पर नहीं हुआ। इसीलिए बादशाह ने कवि कलश को अकेले बुलाकर नयी टेढ़ी चाल चलने की सोची। तीक्ष्ण बुद्धि के कविराज की समझ में सब कुछ आ गया।

रूहुल्लाखान के डेरे में चिराग जल रहे थे। उस अरुणाभ प्रकाश में खान और बादशाह की मुद्रा कुछ अलग ही दिख रही थी। कविराज के अन्दर आते ही, खान के संकेत से कविराज के शरीर और कन्धों से बेड़ियों का अधिकांश बोझ उतार दिया गया। बादशाह की परवाह न करते हुए कविराज ठठाकर हँसते हुए और बादशाह पर व्यंग्य करते हुए बोले, "देखिए एक बेवकूफ बादशाह एक नादान शायर से सौदा करने के लिए खुद चलकर आ गया।"

आरम्भ में ही बादशाह ने कवि कलश से हँसते हुए पूछा, "बोलो कविराज, क्या चाहते हो?"

इस सवाल पर दिल खोलकर हँसते हुए कविराज ने कहा, "शायर और कवि के दिमाग में मस्ती का बारूद भरा रहता है, शहंशाह! हमारी दुनिया में सिंहासन का मूल्य कौड़ी भर भी नहीं होता। हमारी मस्ती ही हमारा सिंहासन है।"

बादशाह ने कवि कलश की ओर दयाभाव से देखा और उपहास करते हुए बोला, "पागलखाने की दीवारों को फाँदकर जो भागते हैं उन्हीं को दुनिया शायर कहती है तू भी एक मूर्ख शायर है, बस!"

"बिलकुल।"

"इसीलिए तुम्हें जागीर, हीरे-जवाहरात जैसी किसी भी चीज की चाहत नहीं होगी।"

"जी हाँ, शरीर पर लाज बचाने भर का लिबास और सम्भाजी राजा जैसे मित्र नहीं फरिश्ते का साथ मिल जाये तो तो दूसरा और कुछ नहीं चाहिए।" कवि कलश ने लापरवाही से कहा।

"लेकिन तू सिर्फ शायर ही नहीं एक ब्राह्मण भी है, वह भी कोई मामूली ब्राह्मण नहीं, कन्नौज का ब्राह्मण।" कलश की आँखों में घूरते हुए बादशाह ने कहा।

"पर उससे क्या फर्क पड़ता है?"

"तुम कन्नौज वाले अपना पेट भरने के लिए देव-धर्म का पाखंड करते हो। गंगा-स्नान के लिए आये यात्रियों की दौलत लूटते हो। उनके शरीर के गहने-कपड़े छीन लेते हो। बेचारे तीर्थयात्रियों को गंगा की बालू में दफन कर देते हो और उन बदनसीब यात्रियों के घर सन्देश पहुँचा देते हो कि उन्हें जन्नत मिल गयी।"

"हुजूर आप कहना क्या चाहते हैं?"

"तू भी उसी कन्नौज का एक ब्राह्मण है, एक भूखा-प्यासा ब्राह्मण।"

"परन्तु बादशाह!"

"तुमसे हमारा छोटा-सा काम है। सम्भा के मुख्य दीवान या प्रधानमन्त्री के रूप में सारा महाराष्ट्र जानता है। सभी मराठे तुम्हें पहचानते हैं। उस सम्भा के साथ ही तू भी गिरफ्तार हुआ है, यह भी सब जानते हैं। इस समय बस, तुम्हें इतना ही करना है...।"

"क्या?"

"तुम्हारी मुहर और हस्ताक्षर के साथ मराठों के सभी किलेदारों को खुला हुक्म देना है। उन्हें लिखना है कि सम्भाजी ने अपनी जान बचाने के लिए बादशाह औरंगजेब से सौदा कर लिया है। समझौते के अनुसार सभी किलों को खाली कर देना है। किलों का क़ब्ज़ा मुगलों को दे दिया जाए। इस प्रकार का आदेश देने के लिए स्वयं सम्भाजी ने कहा है।"

"झूठा हुक्म? सम्भाजी राजा के नाम से झूठा हुक्म?" कलश ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"हाँ! क्यों नहीं? कमबख्त शायर, इस छोटी सी शाही सेवा के बदले हम तुम्हें मालामाल कर देंगे। बोलो, कौन-सी जागीर चाहिए तुम्हें? बरेली, सामाराम, कानपुर या आगरा?" अपना उल्लू सीधा करने के लिए उतावला बादशाह पूछने लगा।

कलश ने व्यंग्यभरी दृष्टि से बादशाह को नीचे से ऊपर तक देखा। बादशाह की कुत्सित नजरों में अपनी निश्चयपूर्ण दृढ़ दृष्टि से देखते हुए कविराज ने कहा, "बादशाह सलामत आप बहुत कमीने हैं। यह हमें शहजादा और अन्य अनेक लोगों ने बताया है। लेकिन आज तो विश्वास हो गया कि आप दुनिया के कमीनों और मक्कारों के सिरताज हैं।"

"जबान सँभालो बेवकूफ!" बादशाह कड़ककर बोला।

"अरे, अपने स्वार्थ के लिए सगे भाई के पेट और पीठ में छुरा भोंकने वाला तू, अपने दारा जैसे विद्वान भाई का तूने सिर काट लिया। उस सिर को गोद में खिलौने की तरह रखकर तू देर तक देखता रहा, इतना बड़ा हैवान तू। अपने

जन्मदाता माता पिता का पानी रोकने वाला तू एक नम्बर का हरामजादा है। यारी दोस्ती का सच्चा जलवा क्या होता है यह तुम्हारे जैसे पत्थर हृदय मनुष्य को क्या पता चलेगा?"

"ठहरो पागल! बिना मतलब जिन्दगी गँवा बैठगा।"

"तू मेरा क्या बिगाड़ लेगा? बूढ़ा सियार कहीं का।"

"पागल बाभन, तुझे मैं फाँसी पर लटकाऊँगा।"

"अरे छोड़, सम्भाजी राजा जैसे दिलदार दोस्त के लिए यह नाचीज जिन्दगी कभी भी और कैसे भी समाप्त हो जाये तो बेहतर।" कलश ने सगर्व उद्गार व्यक्त किया।

इस मुँहतोड़ उत्तर को सुनकर बादशाह आग बबूला हो गया। उसने चाबुक लाठियाँ लेकर खड़े अपने सैनिकों को अन्दर बुलाया। कविराज के शरीर पर सपासप कोड़े पड़ने लगे। कुछ लाठियाँ भी पड़ीं। उनके मस्तक से खून की धारा फूट पड़ी। जख्मी जानवर की तरह कविराज को वहाँ से खींचते हुए बाहर ले गये।

बारह

जिस दिन बादशाह ने बहादुरगढ़ छोड़ने का निश्चय किया था उसकी पिछली रात फौलादखान बादशाह के कान में धीरे धीरे कहने लगा, "जहाँपनाह! सम्भा नहीं तो उसका दीवान ही सही। अन्त में वह कलश फूट गया है। जहाँपनाह से मिलकर वह स्वयं अपना उद्देश्य स्पष्ट करना चाहता है।"

बादशाह को अपने कानों और अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। किन्तु यदि इस तरह से कोई बात बनती थी तो वह उसके अनुकूल थी। इसलिए औरंगजेब कलश से मिलने के लिए उत्सुक था। पिछली भेंट में भी कविराज को मुँहमाँगी जागीर देने की तैयारी बादशाह ने दिखाई थी। किन्तु जागीर के मन्त्र से इस तरह और इतनी जल्दी जादू की छड़ी फिर जाएगी, इसकी कल्पना बादशाह को न थी। अनेक दिनों के उपवास और फौजियों द्वारा की गयी पिटाई के कारण कविराज के शरीर की चमक जा चुकी थी। शरीर थका थका सा और सिर के बालों में जूएँ भर गयी थीं। इत्र के शौकीन कविराज के शरीर से खून और पसीने की बदबू आ रही थी।

बादशाह ने कलश को अपने सामने वाली गद्दी पर बैठने का इशारा किया। किन्तु कलश खड़े ही रहे। औरंगजेब कुछ कड़ी आवाज में बोला, "क्यों कविराज कौन-सी जागीर चाहिए? आगरा, बरेली, लखनऊ या सासाराम? बोलो कौन-सी?"

"सिर्फ एक फरियाद लेकर आया हूँ आपके दरबार में।" कविराज का स्वर दयनीय था।

"कैसी? और कौन-सी फरियाद?"

"शहंशाह! आप मेरे टुकड़े-टुकड़े करके कुत्तों के आगे डाल दें तो भी कोई बात नहीं। किन्तु मेरे राजा के साथ आप एक राजा जैसा ही बर्ताव करें।"

कलश का कथन सुनकर बादशाह चकरा गया। उसने क्रोध से पूछा, "किसलिए आये हो? अपनी जान बचाने के लिए या सम्भा की?"

"हम तुम्हारे आगे भीख नहीं माँग रहे हैं। तैमूर के महान वंश का दम भरने वाले बादशाह से हम सिर्फ इतना कहना चाहते हैं, 'बकरे काटने वाले कसाई और हिन्दुस्तान के सिंहासन पर बैठने वाले राजा के व्यवहार में कुछ तो फर्क होना चाहिए'।"

कवि कलश के ऐसा बोलने से वहाँ उपस्थित सैनिक और सेवक थरथर काँपने लगे। बादशाह की गुस्से से घूमती आँखों को देखकर ऐसा लगा मानो माथे में घुसी जा रही हों। कलश की जबान की तलवार झपाझप चल रही थी।

"कितनी घोर विडम्बना है। क्या जुलूस निकाला। अपने आसुरी आनन्द का ऐसा खुला प्रदर्शन, द्वेष का ऐसा नग्न दर्शन, दुष्ट बुद्धि का ऐसा नर्तन संसार के किसी भी सत्ताधीश ने कभी भी न किया होगा।"

"काफिरों का सम्मान करने की हमारी यही रीति है। बेवकूफ!"

"बादशाह को दुश्मनों से तो कुछ तहजीब और दिलदारी सीखनी चाहिए।"

"किस तहजीब और दिलदारी का पाठ हमें पढ़ा रहा है तू, पागल शायर?"

बादशाह पूरी तरह खिसिया गया था।

"यह शायर थोड़ा-थोड़ा इतिहास भी जानता है। तुम्हारी और सुजा की जब निर्णायक लड़ाई चल रही थी, तब पंजाब में मिर्जाराजा जयसिंह तुम्हारे विरोध में लड़ रहे थे। उस समय लाख के जंगल में तुम्हारे ऊपर बहुत बुरा समय आया था। उस जंगल में तू जयसिंह को एकदम अकेला मिल गया था। ठीक वैसे जैसे सिंह के पंजे में किसी भेड़-बकरी का पैर आ जाए। उसी समय यदि बिना दया दिखाए उसने तुम्हारा गला चीर दिया होता तो औरंगजेब नाम का यह संकट आज के लिए बचा न रहता।"

कलश की उस जानकारी से बादशाह बौखला गया। अपने को सँभालते हुए

सिपाहियों की ओर चिल्लाया, "बदमाशोऽऽ, पागलोऽऽ, क्या देख रहे हो? खींच लो इस बेशर्म शायर को। उसकी टाँगें तोड़कर हमेशा के लिए किसी गन्दी नाली में फेंक दो।"

बादशाह के सिपाही जल्दी से कविराज को खींचकर ले जाने लगे। उस समय पीछे मुड़कर कलश दाँत पीसते हुए जोर-जोर से कहने लगे, "अल्लाह की सेवा सिर्फ टोपियाँ सीने का नाटक करने से नहीं होती। पागल बादशाह, तुम्हारे दिमाग के टाँके ही ढीले पड़ गये हैं।"

"अरे देखते क्या हो कमबख्तो? ले जाओ घसीटकर इस मूर्ख शायर को।"

बादशाह का हुक्म पाते ही सैनिक उस पर टूट पड़े किन्तु कलश उनकी पकड़ में नहीं आ रहे थे। वे जोर जोर से कविता गा रहे थे—

'पाप कर्म करके सदा करता बिस्मिलाह
ढोंग किया, टोपी सिया मिले नहीं अल्लाह
निज दिमाग को टाँक लो पागल शाहंशाह'

कविता की इन आधी अधूरी पंक्तियों के कान में पड़ते ही बादशाह क्रोध से पागल हो उठा। वह अपनी कटार हाथ में लेकर गरजा, "क्या सुन रहे हो? पहले इस मगरूर शायर की जीभ काट दो। इसकी लाल चटचटाती जीभ काट दो।" सिपाही छुरी-कटारी लेकर कलश की ओर दौड़े।

बलवान शरीर वाला एक पठान कलश की छाती पर बैठ गया। दूसरे दो लोगों ने पैरों को गन्ने की तरह मरोड़कर पीछे खींचा। दोनों ने अपने राक्षसी हाथों से कविराज की खोपड़ी पकड़ी। एक ने उनके मुँह पर जोर का तमाचा मारा, जबड़े में हाथ डाला। इस प्रक्रिया में कविराज के चार दाँत टूटकर नीचे गिर गये। वह जल्लाद कविराज की जीभ बाहर खींचने का प्रयास कर रहा था। कविराज की आँखें सफेद पड़ गयीं। साँस फूल रही थी। इसी बीच आगे खींची हुई कविराज की जीभ कटार से छाँट दी गयी। उनकी स्थिति आधी खोपड़ी टूटी चटपटाती मुर्गी की तरह हो गयी। कविराज के मुँह से शब्दों की जगह रक्त की धारा बह रही थी। घायल होने के कारण आँखों से आँसू बह रहे थे। साँसें तिलमिलाकर लम्बी हो रही थीं।

तेरह

सुराही का पानी बादशाह ने गटागट पी लिया। उसकी थकी हारी देह में थोड़ी सजगता आयी। उसने अपने गंजे सिर पर हाथ फेरा। भावुक होता हुआ वह उदयपुरी बेगम से बोला, "बेगम, तुम्हारे सामने एक बात कहकर मैं अपने दिल को हल्का करना चाहता हूँ।"

"ऐसी कौन-सी बात है, मेरे आका?"

"जी हाँ बेगम। मेरी अपेक्षा इस जहन्नुमी सम्भा का बाप कितनी बड़ी किस्मत वाला था जिसने सम्भा जैसे बहादुर बेटे को जन्म दिया। हमारे चार चार शहजादे लेकिन बस, गधों की भीड़। इस सम्भा जैसा एकाध होनहार बच्चा हमारे यहाँ जन्मा होता तो मैं अल्लाह से केवल दो ही चीजें माँगता—जपने की माला और नमाज की चादर। बस इन्हीं दो चीजों को लेकर मैं एक पाक फकीर की तरह हमेशा के लिए मक्का मदीना की यात्रा पर चला गया होता।"

उदयपुरी ने बादशाह के जीवन के अनेक चढ़ाव उतार, यश अपयश को बहुत समीप से देखा था। किन्तु आजकल की बादशाह की मनोदशा उससे देखी नहीं जा रही थी। उदयपुरी को अपने पति पर दया आ रही थी। वे बोलीं, "मेरे आका हमारी इच्छा के अनुसार ही अल्लाह ने हमारा साथ दिया है। बीजापुर समाप्त हो गया, गोलकुंडा अपनी शरण में आ गया, शिवा का बेटा भी मिल गया। लेकिन इस विजय का आनन्द बादशाह के चेहरे पर दिखाई नहीं दे रहा है। आखिर बात क्या है मेरे हजरत?"

बादशाह ने कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। जाप की माला को छाती से लगाए बहुत देर तक कुरान की आयतों का मनन करता हुआ वह उसी तरह बैठा रहा। बादशाह के मन को बहलाने के उद्देश्य से ही उदयपुरी ने कहा, "हजरत आपकी जवानी की वह जंग आपके साथी तो क्या जानवर भी नहीं भूले होंगे। वह बल्ख के आक्रमण का घमासान युद्ध। दिन ढलने लगा था, हजरत के सायंकाल के नमाज का वक्त हो गया था। आप जंगे मैदान में ही चादर डालकर नमाज पढ़ रहे थे। उस समय आपकी दाहिनी और बाईं ओर तोप के गोले छूट रहे थे, बाणों की बौछारें उड़ रही थीं। उस जंगे मैदान में एक आपको छोड़कर इतना बेधड़क कोई नहीं था। उस लड़ाई में हाथियों, घोड़ा, ढालों की आड़ में तो हर कोई जंग लड़ रहा था किन्तु आप बिना विचलित हुए निश्चिन्त भाव से नमाज पढ़ रहे थे। आपको देखकर लोगों की आँखों में आँसू उमड़ आये। सारे फौजी कहते थे, 'वह देखो जिन्दा पीर' ऐसा कहते हुए जिल्लेसुबहानी की ओर उँगली उठाते थे।"

"अब्बाजान, अनेक फौजियों से यह हकीकत मैंने भी सुनी है।" शहजादी जीनतउन्निसा ने कहा। "गुस्ताखी माफ़ अब्बाजान, मुझे भी डर लग रहा है। सन्देह पैदा होता है। इतने-इतने बड़े युद्धों की आग झेलकर भी आप कभी डरे नहीं। आज अपने तीनों बलवान दुश्मनों को मिट्टी में मिला देने के बाद भी आपके चेहरे पर रौनक क्यों नहीं दिख रही है?"

"बेटी कुतुबशाही और आदिलशाही को मिट्टी में मिला दिया। वे दोनों बादशाह हमारे कैदखाने में पड़े हैं। मरगट्ठों का सम्भा भी हमारे कैदखाने में पड़ा जंग खा रहा है। यह भी सच है। किन्तु मराठों की इस भूमि में शिवा और सम्भा ने ऐसा कोई सुरंगी बारूद भर रखा है, किसे पता? राजा के गिरफ्तार होने पर भी मराठों का राज्य समाप्त नहीं हुआ है। हमारे द्वारा भेजे गये जुल्फिकार जैसे सेनानी का हाथ अभी भी खाली है। जिस तरह पेड़ की चोटी पर बन्दर बैठते हैं वैसे ही प्रत्येक किले के संरक्षण के लिए बुर्ज बुर्ज पर मराठे हथियार लेकर बैठे हैं। सम्भा के गले में गिरफ्तारी की जंजीर बाँधे एक महीना हो गया पर उसकी महारानी, वह डाकिन येसूबाई रायगढ़ का कब्जा छोड़ने को तैयार नहीं है। चाबुक मार मारकर कलश और सम्भा की पीठ छलनी कर दी फिर भी वे कोई भेद देने को तैयार नहीं। यह कैसी फतह है बिटिया?"

बादशाह बहुत देर तक विचारमग्न बैठा रहा। बाद में उसने असदखान को अपने निजी कक्ष में बुलाकर कहा, "वजीरे आजम, इस बहादुरगढ़ की जगह ही अशुभ है। यहाँ के महल गर्क होते हैं। यहाँ की जमीन खोदो तो शरीर पर कीड़े उड़ते हैं। यह फतह मिलने पर भी फतह की खुशी हासिल नहीं होती।"

"हुजूर?"

"हाँऽ, असदखान। कल ही यहाँ से डेरे डंडे बाहर निकालिए। अपने दोनो राजबन्दियों को कड़े बन्दोबस्त में साथ ले लो।"

"लेकिन जहाँपनाह, जाना कहाँ है? उसके अनुसार आदेश दूँ।"

"पुणे के आसपास।"

दूसरे दिन बादशाह के कुछ लाख घोड़े और सैनिक भीमा नदी के किनारे किनारे ऊपर की ओर सरकने लगे। कोरेगाँव और तुलापुर के बीच छावनी बनाने का बादशाह ने निश्चय कर लिया था। उसका विचार था कि पूना के पास पहुँचकर पूना और चाकण के क्षेत्र पर आक्रमण किया जाए। उसके धूर्त मस्तिष्क में इस तरह के विचार सक्रिय थे। उत्तरी कोंकण में उतरने से बादशाह की दहशत फैलने वाली थी, जगह बदल जाने से घोड़े और सैनिक भी कुछ चैतन्य हो जाने वाले थे। बादशाह को यह भी समीप से देखने का अवसर मिल जाता कि जुल्फिकार वहाँ कोंकण में कौन-सा खेल खेल रहा है?

बादशाह के साथ वे दोनों राजबन्दी भी थे। उन पर शारीरिक और मानसिक अत्याचार पहले की तरह ही हो रहा था। बादशाह सोचता था कि इन कैदियों की चीख-पुकार सुनकर शायद रायगढ़ पर महारानी का कलेजा फटे और वे अपने पति की जान बचाने के लिए तुलापुर की ओर दौड़ी चली आयें। यह कल्पना बादशाह को भी बहुत व्यग्र कर रही थी।

3 मार्च, 1689 को बादशाह की फौज कोरेगाँव के मैदान तक पहुँच गयी। तुलापुर के पीछे पहाड़ की तलहटी में भीमानदी के किनारे बादशाह का खेमा फैला हुआ था। एक ओर से बहती हुई आती सन्त तुकाराम की इन्द्रायणी और दूसरी ओर से सीमा। इन्हीं दो नदियों के संगम पर तुलापुर बसा हुआ था। दोनों नदियों के बीच एक छोटी पहाड़ी जैसा ऊँचा स्थल था। उसी पहाड़ी पर औरंगजेब ने अपना लालबारी डेरा खड़ा किया था। उसकी बची हुई तीन लाख सेना बडू कला और बडू खुर्द से लेकर कोरेगाँव तक डेरा डाले पसरी थी।

लालबारी के डेरे-डंडे जिस दिन वहाँ लगे उसी दिन शाम को बादशाह ने मियाँखान को अकेले में बुलाया। मियाँखान के कान में औरंगजेब फुसफुसाया, "अपनी फौज के सबसे अधिक विश्वासपात्र के रूप में मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया है, मियाँखान?"

"जहाँपनाह आपकी खातिर तो जान भी हाजिर है।"

"हमें एक सन्देह हो रहा है। सन्देह नहीं विश्वास हो गया है कि हमारी छावनी के कुछ लोग खुफिया तौर पर अभी भी उस सम्भा के साथ मिले हुए हैं।"

"क्या कह रहे हैं, मेरे आका?" मियाँखान के गले में जैसे कुछ अटक गया।

"इसीलिए जानबूझकर मैंने तुम्हें बुलाया है। हमारा अब किसी पर भरोसा बचा नहीं है। कौन हैं ये मक्कार? आप ही इन्हें ढूँढ़ निकालिए।"

"ठीक है, मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूँगा, मेरे आका।" मियाँखान ने सौगन्ध खाई।

तुलापुर की छावनी में दिन बीतने लगे। जुल्फिकारखान की ओर से फतह की कोई सूचना नहीं आयी। मराठों की महारानी और उसकी सेना शरणागत होने का नाम नहीं ले रही थीं। बादशाह को बहुत क्रोध आ रहा था। उन दोनों राजबन्दियों को पकड़े पूरा महीना बीत गया था, फिर भी राजबन्दी जीवित थे। बादशाह ही नहीं, सभी सैनिकों की आँखों के सामने अतीत की क्रूर कथाएँ बार-बार साकार हो रही थीं। मथुरा में नेस्तनाबूद किये गये वे गोस्वामी, दारा शिकोह, भाई मतीदास, भाई सतीदास, दयालदास और गुरु तेगबहादुर...। सम्भा और कलश को मारने पीटने से भी कुछ हाथ नहीं लग रहा था। बादशाह को अनुभव हो रहा था कि छावनी के सारे अधिकारी ही नहीं, फौजी बाजारों के आवारा लड़के भी उसकी ओर

देखकर उपहास से हँसते हैं। उसे दुर्बल और डरपोक समझने लगे हैं।

क्रोध के आवेश में एक सुबह औरंगजेब ने रूहुल्लाखान को हुक्म दिया, "जाओ उस कवि कलश की आँखों में तपती सलाई घुमाकर, उस कुत्ते की आँखें निकाल लो।"

खुफिया नौकर और अन्य फौजी बन्दीखाने की ओर दौड़े। हुक्म की तत्काल तामील की गयी। कविराज की पानीदार आँखें और उसमें चमकती हुई पुतली निकाल ली गयी। उनकी आँखों का केवल भयानक खाँचा बचा रह गया।

बादशाह राजबन्दियों की रोज बारीकी से पूछताछ करता था। दोनों राजबन्दियों का शरीर व्यायाम के अभ्यास से पोषित था। इसलिए वे बहुत मजबूत और धैर्यवान थे। उनकी जगह यदि कोई अन्य होता तो कब का तड़पकर मर गया होता। कविराज और सम्भाजी राजा का खाना-पीना बहुत कम हो गया था।

एक दिन सवेरे-सवेरे औरंगजेब ने सम्भाजी राजा को अपने दरबार में बुलाया। उनकी अति पानीदार आँखों को देखकर बादशाह विषाद से हँसा। अपने सरदारों के सामने सम्भाजी राजा की खिल्ली उड़ाते हुए बोला, "सम्भाऽऽ मुझे लगता था कि अपने दोस्त की आँखों की ओर देखकर तुझे अक्ल आ जाएगी। पर खैर चलो—"

औरंगजेब जैसे शैतान की ओर देखना सम्भाजी राजा को पाप जैसा लग रहा था। उनकी लाल सुर्ख आँखें औरंगजेब की क्रोधाग्नि में घी का काम कर रही थीं।

बादशाह क्रोधावेश में बोला, "तेरे दोस्त की जीभ मैंने पहले ही छाँट दी है। तुम्हारी इसलिए छोड़ रखी थी कि उससे हार की, पराभव की बात सुन सकें। किन्तु तुम्हारी तो तकदीर ही खराब दिखती है। उसके लिए तुम्हारे तैंतीस करोड़ देवता भी क्या कर सकते हैं?"

फतह हासिल करने पर भी बादशाह के हाथ कुछ नहीं लग रहा था। इससे बादशाह बहुत दुखी और क्रुद्ध था। वह दाँतों से जीभ चबाते हुए धीमे स्वर में बोला, "सम्भा अब तुम्हें नयी दृष्टि देने की जरूरत है।" पूर्व निश्चित योजना के अनुसार पास ही तपती हुई सलाइयाँ तैयार थीं। उन तीलियों की जलती लाल भभक औरंगज़ेब ने स्वयं देखी। सरदारों की भीड़ में पीछे की ओर भयभीत मियाँखान खड़ा था। बादशाह की दृष्टि उस पर पड़ी। बादशाह ने जोर से पुकारा, "आओ मियाँखान, सामने आओ।"

मियाँखान सामने आकर लड़खड़ाते पैरों से खड़ा हो गया। सम्भाजी राजा के हाथ पीछे की ओर बँधे थे। मियाँखान की हैरान आँखों की ओर देखकर औरंगजेब खुशी से हँसा। उसने कहा, "वजीरे-आज़म, सम्भा को नयी दृष्टि देने की नापाक कारगुजारी के लिए हमें एक ईमानदार आदमी की जरूरत है। और मियाँखान के समान दूसरा वफादार आदमी हमारी फौज में कौन मिलेगा?"

मियाँखान बादशाह के सामने टालमटोल करने लगा। तभी बादशाह जल्लादों पर चिल्लाया, "मियाँखान ना कहता है तो सम्भा से पहले उसकी ही आँख निकाल लो।" मियाँखान का हाथ थर-थर काँपने लगा। उसने काँपते हाथों में जलती सलाइयों को पकड़ लिया। धीरे धीरे चार कदम रखता हुआ सम्भाजी राजा के पास पहुँच गया। सम्भाजी राजा की तेजस्वी आँखों के पास उन तपती सलाइयों को ले जाते- ले जाते अचानक उन्हें अपने पेट में चुभा दिया। जोर का शोर उठा। बादशाह के इशारे पर नौकर आगे दौड़े। उन्होंने मियाँखान के शरीर पर तलवार से सपासप वार किया। मियाँखान का रक्त मांस सम्भाजी राजा के पैरों में बिखर गया।

बादशाह की आज्ञा से जल्लाद आगे बढ़े। तप्त लाल सलाइयाँ सम्भाजी राजा की आँखों में घुमाई गयीं। चर्र चर्र की आवाज हुई। आँखों से धुआँ उठा। चेहरे का चमड़ा भी थरथराया। किन्तु मुँह से भय या आक्रोश की कोई चीख नहीं उठी। यह देखकर औरंगजेब को बहुत दु:ख हुआ।

चौदह

जिंजी के भव्य किले के नीचे केसोपन्त त्रिमल का निवास था। दिन डूबते डूबते आज यह दुखद समाचार वहाँ पहुँच गया। 'शम्भूराजा कैद हो गये उन्हें औरंगजेब की सेना जंजीरों से बाँधकर ले गयी।' इस समाचार ने केसोपन्त का कलेजा टूक टूक कर दिया। केसोपन्त त्रिमल के भीतर का ईमानदार रक्त उन्हें शान्त बैठने नहीं दे रहा था। ऊपर किले पर हरजी राजा के पास भी यह समाचार पहुँचा था। केसो त्रिमल को विश्वास था कि समाचार पाते ही हरजी राजा उन्हें बुलाएँगे। इसीलिए उन्होंने तैयारी आरम्भ कर दी थी। उन्होंने अपनी सेना को तैयार रहने का संकेत दिया। उन्होंने कहा, "किसी भी समय औरंगजेब से बदला लेने के लिए हमें महाराष्ट्र वापस जाना पड़ सकता है।"

केसो त्रिमल के बड़े भाई मोरोपन्त शिवाजी महाराज के अष्टप्रधानों में पेशवा थे। उन्होंने महाराज के साथ लेखनी ही नहीं तलवार भी चलाई थी। पिंगले घराने के वफादार खून की परम्परा को केसोपन्त ने रामशेज के किले पर भी प्रमाणित किया था। दो वर्षों तक किले पर आँच नहीं आने दी थी। एक विश्वासपात्र के रूप में ही सम्भाजी राजा ने उनकी नियुक्ति दक्षिण के तमिल और कर्नाटक प्रदेश में की थी।

हरजी राजा का सन्देश आया, "महल से निकलकर तुरन्त पूना के लिए प्रस्थान करना पड़ेगा। विचार-विमर्श के लिए फौरन ऊपर आइए। आपकी राह देखते हम दरवाजे पर ही खड़े हैं।" तब वृद्ध केसो त्रिमल जिंजी का वह किला चढ़कर ऊपर आये। पसीने से तरबतर हरजी महाड़िक के सामने खड़े हो गये।

हरजी प्रसन्न मुद्रा में झूले पर बैठे दिखे। दालान के कोने से किसी की रोने की आवाज आ रही थी। सम्भवत: वह आवाज अम्बिकाबाई की होगी। आखिर शम्भूराजा उनके छोटे भाई थे। केसो पन्त कुछ हड़बड़ाए हुए से सामने रखे आसन पर बैठने लगे। उसी समय कोने में खड़े अपने सिपाहियों को संकेत किया। आठ दस लोग केसोपन्त पर टूट पड़े। उन्हें बन्दी बनाकर कैदखाने की ओर ले जाया गया। केसोपन्त की वफादार आत्मा आहत हुई और अपमान से उनका चेहरा लाल हो गया। मराठों का राजा दूर अपनी मातृभूमि में कैद हो गया। उसकी मदद के लिए दौड़कर जाने के बदले हरजी राजा जैसा व्यक्ति, राजा का सगा बहनोई इस प्रकार का धोखा करेगा, ऐसा तो त्रिमल ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था।

हरजी राजा ने केसो त्रिमल को ले जाते हुए देखा। हरजी प्रसन्नता से हँसे। महाड़िक के कर्मचारी लेखन सामग्री लेकर पहले से ही बैठे थे। हरजी राजा औरंगजेब को पत्र लिखवाने लगे।

"ऊपर ईश्वर की महिमा का आसमान और नीचे बादशाह मेहरबान। यही सत्य स्थिति है। इसे हम भली प्रकार जानते हैं। आपने जिस प्रकार हमारे साढ़ू भाई गणोजी शिर्के और महादजी निंबालकर पर दयाभाव रखा है वैसी ही कृपा हमारे ऊपर भी रखिए। यद्यपि हम शिवाजी के जामाता हैं फिर भी हमारा सिर उनके पुत्र सम्भा की तरह फिरा नहीं है। कहने का मकसद यह है कि आप हम पर कृपा करके बादशाही की सेवा का देवदुर्लभ अवसर प्रदान करें।"

पन्द्रह

रायगढ़ पर शोक की लहर फैली थी। दस वर्ष पूर्व शिवाजी महाराज के आकस्मिक निधन से राजधानी को भूकम्प का झटका लगा था। अब दस वर्ष बाद मुगलों द्वारा सम्भाजी राजा को जीवित पकड़ा गया था। हिन्दवी स्वराज्य को यह दूसरा भीषण झटका लगा था। सम्भाजी राजा जैसे ध्येय धुरन्धर रणवीर और कर्तव्यपरायण राजा

का जीवन केवल बत्तीस वर्ष होने का प्रजा को बहुत दुख था।

येसूबाई महारानी पर तो मानो पहाड़ ही टूट पड़ा था। जैसे किसी ऊँचे पहाड़ से फिसलकर हिरन नीचे गिर जाये और उसकी मृत देह को देखकर हिरनी पागल होकर छटपटाए, अपने हृदय की असह्य वेदना को दबाकर नाचने लगे, वही स्थिति येसूबाई महारानी की हो रही थी। जो जन्म से राजा और प्रवृत्ति से राजर्षि था, ऐसे अपने प्राणप्रिय पति के भाग्य में ऐसा दुर्दिन आएगा? इसकी तो कल्पना तक नहीं थी।

महारानी को सम्भाजी राजा की स्मृतियाँ बार-बार आती थीं। क्रूरकर्मा औरंगजेब चुप बैठेगा इसका विश्वास नहीं होता था। शम्भूराजा भी किसी तोड़ जोड़ या समझौते के लिए तैयार न थे। इसलिए मन के भीतर मृत्यु का घंटा बजता सुनाई पड़ता था। कराल काल का भयानक दरवाजा करकरा रहा था। महारानी को रोज का कार्यव्यापार—पत्राचार, लेना-देना, हर किले के किलेदारों और सरदारों का धैर्य बँधाना, जहाँ आवश्यक हो वहाँ सेना को पहुँचाना, रायगढ़ को निवाले की तरह निगलने के लिए तत्पर जुल्फिकारखान के आक्रमण को रोकने का प्रबन्ध आदि करना पड़ रहा था।

महारानी को राजमहल खाने को दौड़ता था। चौकियों के पहरे के निरीक्षण के निमित्त से वे कभी-कभी बाहर निकलती थीं। साथ में ताराबाई, खंडो बल्लाल और अन्य लोग होते थे। वे रायगढ़ के बुर्जों से सामने के गहन अँधेरे को देखती थीं। उन्हें लगता था कि इस तहीभूत अँधेरे को ही अपने पास बुला लें। महाराज कब मिलने वाले थे? इस जन्म में या दुर्दैव से अगले जन्म में ही। सिर के ऊपर आकाश चन्द्र की ओर वे देखती ही नहीं थीं। यदि कभी असावधानी से चन्द्र दर्शन हो जाता तो उनका मन शम्भूराजा की स्मृति में पागल हो जाता था।

येसूबाई के माथे का सौभाग्य सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ रहा था। क्रूरकर्मा औरंगजेब पीछे हटने को तैयार नहीं था। ऐसी खबरें आ रही थीं कि औरंगजेब की सेना बहादुरगढ़ छोड़कर तुलापुर की ओर बढ़ रही है। आसपास की घाटियों में आकर स्वराज्य के बुर्जों को ध्वस्त करने का निश्चय बादशाह ने कर लिया है। अनेक अनुभवी और सम्मानित लोग अपने स्वार्थ की रोटी सेंकने और जागीर के टुकड़े के लिए औरंगजेब के तम्बू की ओर दौड़ लगा रहे हैं। ऐसे समय में सह्याद्रि की घाटियों के साढ़े तीन सौ किलों की रक्षा करना आवश्यक है। यही सोचकर येसूबाई रात-दिन एक करके हिम्मत के साथ आये हुए संकट का मुकाबला कर रही थीं।

सम्भाजी राजा की मियाँखान और कुछ अन्य मुगलों से मैत्री थी। यह बात

किसी को ज्ञात न थी। इससे आधे-अधूरे ही सही किन्तु राजा के सन्देश रायगढ़ तक पहुँच जाते थे। इधर शम्भूराजा के सन्देशों में प्रयुक्त निर्वाण की भाषा से येसूबाई बहुत विकल हो गयी थीं। राजा का सन्देश आया था, "येसूरानी! मेरे द्वारा बताए गये सन्देश के अनुसार कलिकाल का मुकाबला करने के लिए तैयार रहिए। महाराष्ट्र के माथे पर पिताजी द्वारा गोदवाए गये स्वराज्य के गोदने की रक्षा के लिए अपने माथे का कुंकम पोंछने के लिए आप तैयार रहिए। मुझे भूलिए और राज्य को सँभालने की तैयारी कीजिए।"

ग्रह-नक्षत्र विपरीत हो गये थे। मराठों पर काल उलट गया था। फिर भी जलते घरों की अग्नि पर अपने स्वार्थ का बैंगन भूनने वालों की कमी नहीं थी। येसूबाई के मन में यह तिलमिलाहट थी कि किसी तरह यह कराल काल बदल जाये और राजा फिर से स्वराज्य में लौट आयें। एक दिन सिर नीचे झुकाए पुनवड़ी के बड़े व्यापारी कान्तासेठ बिहारीमल आये। उनके साथ बारामती के जीवाप्पा नाइक, तुकोबा सोन साखले जैसे व्यापारी थे। इनकी पीढ़ियाँ पुणे में थीं। गोलकुंडा, बीजापुर और औरंगजेब के बाजारों में उनका व्यापार चल रहा था।

ये सभी लक्ष्मीपुत्र रायगढ़ पर महारानी से मिले। वे धीमे स्वर में महारानी से कहने लगे, "बादशाह के खजानची रूहुल्लाखान और उनके तीन सौ बाजारों के साथ हमारा रोज का सम्बन्ध है। हमारी मध्यस्तता से महाराज के प्राण अभी भी बचाए जा सकते हैं।"

महारानी ने उन पर दृष्टि डाली। ऐसी कल्पना सुनने में भी बहुत मधुर लग रही थी। कान्तासेठ और उनके साथियों ने धीमे स्वर में किन्तु आशापूर्ण स्वर में कहा, "बादशाह की फौज के अधिकारी बहुत भ्रष्ट हैं। यह बात आपके कान तक भी आयी होगी।"

येसूबाई एक क्षण के लिए रुकीं, किन्तु तुरन्त खंडो बल्लाल की ओर देखते हुए बोलीं, "खंडोवा इस कार्य के लिए इन्हें जितना धन चाहिए दे दीजिए।"

महारानी दरबार से उठीं। किन्तु उनके पैर ठिठक गये। इस कार्य में उनके साथ विश्वासघात होने की पूरी सम्भावना थी। उन्होंने अनुभव किया कि इस मंडली की आँखों में विश्वास का कोई लक्षण दिखाई नहीं पड़ रहा था। महारानी के पीछे-पीछे आकर ताराबाई भीतरी दालान में उनसे बोलीं, "दीदी, यह धन चोरों की झोली में जाने की ही अधिक सम्भावना है।"

"तारा, मेरी भी समझ में ऐसा ही कुछ आ रहा है। परन्तु यदि इम अन्धी सम्भावना का आधार पकड़कर महाराज के प्राण बच सकें तो?"

"मुझसे भूल हुई, दीदी। दादासाहब के प्राणों के सामने मुट्ठी भर द्रव्य की क्या कीमत?"

पैसे देकर काम सिद्ध करने के नाम पर ये महानुभाव मोटी-मोटी थैलियाँ

लेकर चले गये। उनके डगमगाते पैरों का बादशाह की छावनी तक पहुँचना सम्भव ही नहीं था। रास्ते में इन लोगों के बीच घुसर-फुसर चल रही थी। वे सोच रहे थे कि औरंगजेब के भयंकर धक्के के सामने महारानी भी कितने दिन जी पाएँगी। चलते हुए ये महानुभाव अपनी अन्नदात्री महारानी के सम्बन्ध में इस प्रकार की चर्चा कर रहे थे। राज्य की सीमा पर पहुँचकर उन चोरों ने सारा द्रव्य आपस में बाँट लिया और वहाँ से अपने इष्टमित्रों अथवा व्यापार स्थलों पर चले गये।

शम्भूराजा के अमानवीय जुलूस, उनके साथ दुर्दैवी घात आदि की कथाएँ राजधानी तक पहुँच रही थीं। इस समय सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि इस अनिश्चय की स्थिति को कितने दिन झेला जा सकता है? इस भयानक व्यूह रचना से बाहर निकलने का उपाय कैसे ढूँढ़ा जाए? कौन-सी गोजना बनाई जाए? प्रह्लाद निराजी, येसाजी कंक, रामचन्द्र पन्त जैसे वरिष्ठ अनुभवी लोग इसी उधेड़बुन में व्यस्त थे। प्रायः सभी इस बात पर सहमत थे कि इस प्रकार की भ्रामक और अनिश्चित परिस्थिति में महारानी का रहना ठीक नहीं था। महारानी भी आखिर कितने दिनों तक राज्य का कार्यभार सँभाल सकती थीं?

"सच बात तो यह है कि रायगढ़ के सिंहासन को रिक्त रखना किसी के भी हित में नहीं है।" येसाजी ने अपना स्पष्ट मत व्यक्त किया।

येसूबाई, राजाराम साहब और ताराबाई की ओर मुखातिब हुईं। उन्होंने पूछा, "आप लोगों की क्या राय है?"

"दादाजी महाराज पर बुरा समय आया है। राज्य पर उनके अनेक उपकार हैं उनकी जीवन्त यादगार के रूप में उनके चिरंजीव बालक शाहू को गद्दी पर बिठा दीजिए। हम हर प्रकार से उनके पीछे खड़े रहेंगे।" राजाराम साहब ने अपना मत व्यक्त किया।

अधिकारी वर्ग के दुष्ट तत्त्व यद्यपि समाप्त हो चुके थे किन्तु ईर्ष्या-द्वेष की प्रवृत्ति अभी समाप्त नहीं हुई थी। राजाराम साहब ने अपना बड़प्पन दिखाया था। किन्तु अनेक लोग आपसी रिश्तों की बुनियाद पर ईर्ष्या की आग भड़काने के लिए फूँक मारने में लगे थे।

महारानी येसूबाई ने कहा, "सन्तुलित और मूल्यनिष्ठ विचार से ही राज्य चल सकता है। छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए जूझना हमें शोभा नहीं देगा। भोंसले खानदान की तीन-तीन पीढ़ियों को उजाड़ने वाले औरंगजेब जैसे सबल शत्रु का एकजुट होकर मुकाबला करना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।"

"इसलिए हम अपने बालशाहू का राज्याभिषेक शीघ्रातिशीघ्र कर लें।" सभी ने एक साथ मत व्यक्त किया।

"नहींऽऽ।" धीमे किन्तु दृढ़ स्वर में महारानी ने असहमति व्यक्त की। उन्होंने कहा, "सात वर्ष के बाल शाहू की अपेक्षा राजाराम साहब अधिक समझदार

और कर्तव्यनिष्ठ हैं। सिंहासन पर उन्हें ही बिठाएँगे।''

जिस दिन यह निर्णय लिया गया उसी दिन छोटेखाँ ने राज्याभिषेक की सभी विधियाँ पूरी कर लीं। राजाराम साहब हिन्दवी स्वराज्य के तीसरे छत्रपति बन गये। उन्होंने कृतकृत्य भाव से अपनी बड़ी भाभी का वन्दन किया, उनका आशीर्वाद लिया।

समय के साथ रायगढ़ के आसपास फन्दा कसता जा रहा था। जुल्फिकारखान ने आसपास के अनेक जंगली एवं घाटियों के रास्ते रोक दिए थे। शत्रुओं की सेना एक दिन रायगढ़ के बिलकुल समीप पहुँच गयी। किले का संरक्षण करने वाली घेराबन्दी, किले के मुख्यद्वार, चितदरवाजे से अन्दर सरक गयी। अनेक घायल और रक्तरंजित घुड़सवार किले की ओर भागे। उनके विकृत चेहरे देखे नहीं जा रहे थे। बाहर निकलने का एकमात्र मार्ग भी बन्द हो गया था। इस प्रकार का भयानक संकट राजधानी रायगढ़ पर पहले कभी नहीं आया था।

अधिकारी, कर्मचारी और प्रजाजन सभी चिन्तित हो गये। वे सोच रहे थे कि यदि शिवाजी महाराज का दूसरा उत्तराधिकारी भी मुगलों के हाथ लग गया तो स्वराज्य समाप्त ही हो जाएगा। सारा कार्यव्यापार समाप्त हो जाएगा। किन्तु प्रश्न यह था कि इस भयानक चक्रव्यूह से निकलें भी तो कहाँ? और कैसे? मुख्यद्वार चितदरवाजा से महाद्वार की ओर निकलने के अतिरिक्त दूसरा कोई अन्य मार्ग न था। इस मार्ग के अतिरिक्त एक बार एक स्त्री जिसका नाम हीरकणी था, दूसरे रास्ते से किले से नीचे उतरी थी। यह बड़े जोखिम का काम था। किन्तु शिवाजी महाराज ने उस रास्ते को भी बन्द करवा दिया था। रायगढ़ के पंछी, हवा और वर्षा के पानी की बात छोड़ दें तो किले से बाहर जाने के लिए मुख्यद्वार के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं था।

उस दिन सन्ध्या समय ताराबाई और येसूबाई ने जगदीश्वर का अभिषेक किया। उनकी पालकियाँ मन्दिर से राज्यप्रासाद की ओर चलीं। रास्ते में किले पर ब्राह्मणबाड़ा था। वहीं पास में गड़ेरियों के घर थे। उनकी भेड़ें बेंऽऽ बेंऽऽ करती हुई अपने बाड़े की ओर लौट रही थीं। भेड़ों के पचीस तीस छोटे मेमने बड़े-बड़े झाबों के भीतर ढकेले जा रहे थे। राज्यप्रासाद के पन्त, कर्मचारी, पहरेदार सभी चिन्तामग्न थे। सभी की एक ही चिन्ता थी कि मुगलों के फन्दे से राजपरिवार को कैसे बचाया जाए?

महारानी के कानों में अभी भी भेड़ों के बच्चों का मिमियाना अनुगूँजित था। उन्होंने सैनिकों को बुलाया। सैनिक गड़ेरियों के बड़े बड़े झाबे लेकर आये। आधी रात को बाघ दरवाजे के पिछले बुर्ज से रस्सी लटकाई गयी। कुछ सैनिकों को झाबे में बैठाकर नीचे उतरने का घातक अभ्यास कराया गया। दूर जंगल में मुगलों की फौज में जलती मशालें दिखाई पड़ रही थीं। उनकी गतिविधियाँ चालू थीं। येसूबाई

ने राजाराम और ताराबाई को एक बड़े झाबे में बैठने की आज्ञा दी। साथ में कुछ सैनिक भी जाने वाले थे। येसूबाई ने चिन्तित स्वर में कहा; "समय एकदम नष्ट न करो। चलिए पहले बाहर निकलिए। अपने किले में अभी भी अनेक स्थलों पर किलेबन्दी बची हुई है। उसी ओर भागिए। अपनी जान बचाइए, राज्य बचाइए, लड़ते रहिए।"

"किन्तु भाभी जी आप?" राजाराम ने कातर स्वर में पूछा।

"नहींऽ दीदी आपको भी हमारे साथ आना होगा। आप पीछे रह गयीं तो कैद हो जाएँगी।" ताराबाई हकलाते हुए बोली। उनकी आँखें अश्रुपूरित हो गयी थीं।

"मैंने जानबूझकर कैद होने की तैयारी कर ली है। तुम दोनों जितनी जल्दी हो सके निकल जाओ। नहीं तो हम सभी कैद हो जाएँगे।"

"मतलब?"

"मेरे कैद होने में लाभ है। शम्भू महाराज के कुटुम्ब के बन्दी हो जाने के आनन्द से हमारा शत्रु दो-चार दिन के लिए ढीला पड़ जाएगा। उसी अवधि में आप दोनों खतरे की सीमा के पार निकल जाइएऽ।"

येसूबाई की असाधारण उदारता और अद्‌भुत बौद्धिक कौशल देखकर राजाराम और ताराबाई को बहुत आश्चर्य हुआ। वे रो पड़े। शत्रु की फौज रायगढ़ पर अधिकार करने के लिए रात में ही कूच कर चुकी थी उनका शोर अब पास ही सुनाई देने लगा था। हाथ ऊँचा करके महारानी से विदा लेने तक का अवसर राजाराम और ताराबाई को नहीं मिला। मजबूत रस्सियों में बँधे झाबे में बिठाकर वे नीचे छोड़ दिये गये। येसूबाई ने सन्तोष की साँस ली और थोड़ी देर के लिए अपनी आँखें मूँद लीं। मन ही मन जगदीश्वर का आभार माना।

सोलह

"बेवकूफ बादशाह, मौत हमें कबूल है किन्तु तुम्हारा धर्म स्वीकार करना नहीं। यह शिवपुत्र तुम्हारे मजहबी जाल में कभी भी फँसने वाला नहीं है।" सम्भाजी ने मुँहतोड़ उत्तर दिया।

"मजहब के लिए मैं रुका भी नहीं हूँ।" औरंगजेब कुत्सित हँसी हँसते हुए बोला।

"खजाने की बात करते हो तो हमारा प्रत्येक किला खजाना ही है। तेरे बूढ़े शरीर में यदि अभी भी कुछ ताकत बची हो तो अल्लाह के घर जाने से पहले शिवाजी-सम्भाजी के किले जीतकर दिखा।" सम्भाजी ने चुनौती भरे शब्दों में कहा।

"सम्भाऽऽ, हमारा सवाल मजहब की आरज़ू और खजाने की चाहत से परे है। हमें हिन्दुस्तान की राजनीति आगे भी चलानी है। इसलिए शासक होने के नाते तुमसे साफ साफ जवाब चाहता हूँ। बोलऽ, तुम्हारे साथ और उन दो शिया राजाओं के साथ हमारे कौन-कौन से लोग खुफिया के तौर पर शामिल थे। इस एक सवाल का ठीक ठीक जवाब दोगे तो अभी भी अपनी प्यारी जिन्दगी बचा सकते हो।"

"हमारी मौत का फतवा तो तुम्हारे काजी ने कल दोपहर में ही जारी कर दिया है।"

"काज़ी, मौलवी, फतवा आदि तो हम राजनीतिज्ञों की कटारों के मखमली आवरण होते हैं। जब चाहें कोई भी फतवा खारिज कर दें। फतवे का अमल करना न करना हमारी मुट्ठी में होता है। बोलऽऽ, हमारे कौन कौन से धोखेबाज तुम्हारे साथ मिले हुए थे। वे कौन हैं जिन्होंने पिछले नौ वर्षों तक दक्खिन के जंगलों में मुझे फकीर की तरह भटकाया और उन बदमाश मक्कारों ने तेरे जैसे जहन्नमी की मदद की? कौन हैं वे लोग?"

सम्भाजी राजा का पेट पीठ से सट गया था। पिछले कुछ दिनों से पेट में अन्न का एक टुकड़ा तक न गया था। उनके होंठ सूख गये थे। आँखों के आगे अँधेरा छा रहा था। स्वास्थ्य एकदम खराब हो गया था। इस अवस्था में भी सम्भाजी राजा बेहोशी में हँसे और बादशाह से बोले, "जो जवाब तुम्हें चाहिए वह हम कभी भी नहीं दे सकते—"

"क्यूँ?"

"हम अपने शत्रु पर सामने से तलवार चलाते हैं और अपने मित्रों की पीठ बचाकर रखते हैं। हम ऐसा उनकी पीठ थपथपाकर शाबासी देने के लिए करते हैं, धोखे से उनकी पीठ में खंजर भोंकने के लिए नहीं।"

सम्भाजी के आखिरी उत्तर से बादशाह जलभुन उठा। उसे सम्भाजी राजा से कोई भी बात मालूम नहीं हो सकी। इससे वह बहुत चिढ़ गया था। बन्दीखाने के चारों कोनों में धुआँ फेंकती मशालें बादशाह के अगले कदम की प्रतीक्षा कर रही थीं। पास में रखी सुराही का पानी उसने गट गट पिया। उसने ध्यानपूर्वक सामने देखा। सामने कवि कलश आपाद मस्तक जकड़े हुए रखे गये थे।

बादशाह को वहाँ अधिक देर तक ठहरना नहीं था। वह उठा और तेज कदमों से कैदखाने से बाहर आ गया। मशालों के उजाले में सैकड़ों आँखें उसकी ओर घूर

रही थीं। थोड़ी दूर जाकर बादशाह के पैर ठिठक गये। वह स्वयं से प्रश्न पूछने लगा, 'आखिर तुमने क्या निश्चित किया? अपने जन्मजात शत्रु को यों ही जिन्दा रखना है? काजी के फतवा जारी करने के बाद भी?'

सत्रह

वह अमावस्या के पहले की रात थी। भीमा नदी के किनारे सन्नाटा पसरा पड़ा था। अँधेरा घनीभूत हो गया था। नदी में बाढ़ का बहाव था और हवा तेजी से बह रही थी। तुलापुर की पहाड़ी की दूसरी ओर रह-रहकर सियारों का शोर उठता था। कहीं कोई कुत्ता गला फाड़कर रोने लगता था। कहीं कोई बेपरवाह टिटिहरी नदी की धारा पर टींऽऽ, टींऽऽ की कर्कश आवाज करती, इधर-उधर उड़ती थी।

नदी के किनारे ही बाँस और घास से बना वह बन्दीखाना था। जैसे जानवरों को घेरकर रखा जाता है, उसी प्रकार सम्भाजी राजा और कवि कलश को रखा गया था। इन दोनों हतभाग्य प्राणियों को पिछले अड़तीस-चालीस दिनों से ठीक से नहाने को नहीं मिला था। मियाँखान और उसके कुछ साथी अभी भी बन्दीखाने के पहरे पर थे। ये लोग यथा सम्भव राजा की सेवा शुश्रूषा कर दिया करते थे। उन दोनों राजबन्दियों के शरीर पर बहुत खुंजली उभरती थी दुर्गन्ध आती थी, ऐसी शिकायतें समय-समय पर की गयी थीं। इसी कारण बीच-बीच में पानी का बर्तन लेकर आते थे। जिस प्रकार बैलों या भैंसों पर पानी मारा जाता है उसी प्रकार कभी चार दिनों में इनके ऊपर पानी फेंक दिया जाता था। इन दिनों बार-बार की मार-पीट के कारण उनके शरीर में जगह-जगह पर छाले पड़ गये थे। सिर के बाल भी पहरेदारों ने अनेक बार खींचे थे। बालों की जड़ें टूटने से वहाँ अभी भी पीड़ा हो रही थी। इस प्रकार की यातनाएँ शरीर के अंग-प्रत्यंग को आग की तरह जला रही थीं। कविराज के तो जीभ ही नहीं थी। वे तो अपनी वेदना को व्यक्त भी नहीं कर सकते थे।

मध्यरात्रि बीत गयी। नदी के पाट के बहाव पर हवा का एक आवर्त निर्मित हुआ। कुछ समय तक यह आवर्त वहीं पर घूमता रहा। देखते-देखते हवा का वह झोंका मानवी आकार में बदल गया। करुण और वेदनामय आवाज करता हुआ वह हवा का झोंका नदी की कछार चढ़कर ऊपर आया। देखते-देखते वह बन्दीखाने की दरार मे भीतर चला गया।

वह सरसराती हवा सम्भाजी राजा के शरीर के साथ खेलने लगी। जैसे कोई वैद्य सिर पर हाथ रखकर घाव को सहला रहा हो उसी तरह वह हवा सम्भाजी राजा के मस्तक के आसपास घूमने लगी। उनके सारे शरीर के साथ क्रीड़ा करने लगी। उन्हें अपने आलिंगन में लेने लगी।

सम्भाजी राजा ग्लानि से जागे। उन्होंने सोचा कि इस मनहूस काली रात में कौन है जो अपनी ममतामयी उँगलियाँ बालों में घुमा रहा है? यह किसके पैरों की आवाज है। घावों से जर्जर इस शरीर को कौन अपनी ममतामयी गोद में ले रहा है? किसके शरीर की गन्ध और किसकी उष्ण साँस है यह? यह कौन है नितान्त अपना सा, पहचाना सा? सम्भाजी राजा का शरीर प्रफुल्लित होने लगा। जख्मी और ज्योतिहीन आँखों से चिपचिपा द्रव बहने लगा। वे पूर्णरूप से मोहमुग्ध हो गये। शरीर के अंगों की भीतरी वेदना पर आनन्द की लहर दौड़ गयी। सामने के अदृश्य हाथों की हथेली सम्भाजी राजा के माथे को सहलाने लगी। कपोलों पर चुम्बन का स्पर्श हुआ। उस शरीर से सोनचम्पा की सुगन्ध आ रही थी, उसके स्पर्श में अपूर्व ममता थी। उस आभासमूर्ति की गोद में अपनी देह को झोंकते हुए सम्भाजी राजा अपूर्व आनन्द का अनुभव कर रहे थे। वे आनन्द से किलकते हुए बोले, "पिताजीऽऽ पिताजीऽऽ, आखिर आप आखिरी रात में आ ही गये अपने बालक सम्भा से मिलने।"

माथे पर फिरने वाला हाथ अब सम्भाजी राजा के पीठ पर फिरने लगा। वह आभासमूर्ति और भी समीप आ गयी। उसने सम्भाजी को प्रगाढ़ आलिंगन में ले लिया। आभासमूर्ति करुणार्द्र स्वर में बोली, "शम्भू बेटे! कितनी क्रूर है यह दैव गति?"

"पिताजीऽऽ आप।"

"हाँ, मैं ही हूँ।"

"पिताजी, आप आखिर मिल ही गये। मैं तो धन्य हो गया। इस शम्भू से कोई भूल चूक हुई हो तो क्षमा कर दीजिएगा।"

"मेरे बेटे ऐसा मत बोलो। घोड़े की पीठ पर अपना सिंहासन लादने वाला ऐसा कोई विरला योद्धा ही होगा जो देश, धर्म और भूमि के लिए आठ वर्षों तक निरन्तर लड़ता रहे। यश अपयश और घोर आक्रमणों की परवाह किये बिना, केवल बत्तीस वर्ष की आयु में औरंगजेब जैसे कराल कलिकाल से तुम्हारा मुकाबला अद्वितीय और अद्‌भुत है, बेटा शम्भू।"

"पिताजी, शरीर में जितना बल था, जितनी शक्ति थी, वह सब मैंने देश-सेवा में लगा दी।"

"नींद का स्वाँग करके सोने वाले स्वार्थी कुम्भकर्ण तुम्हारे इस महान साहस

का अनदेखा कर सकते हैं। किन्तु सह्याद्रि की प्रत्येक घाटी और रास्ते, घाट और मैदान, बुरहानपुर से तमिल देश तक, जिन पत्थरों और भूखंडों को तुमने और तुम्हारे हजारों सहयोगियों ने अपने रक्त से सींचा है। वह मिट्टी और पाषाण तुम्हें कैसे भूल सकेंगे? क्या मनुष्य जाति इतनी कृतघ्न है?''

''पिताजीऽऽ हम तो बदनाम—''

''बिलकुल नहींऽऽ, बिलकुल नहीं, धीरोत्तम राजकुमार, बलशाली, सच्चा महाराष्ट्र पुत्र। ऐसी दुर्बल भावना कभी मन में भी नहीं ले आना। ऊपर आकाश की चाँदनी की आँखों से पिछले आठ वर्षों से निरन्तर देखता रहा हूँ।''

''शम्भू बेटे! तुम्हें एक सच्ची बात बताऊँ?''

''पिताजी— ?''

''जन्म मृत्यु के दैवी चक्र से हमारे हाथ बँधे हुए हैं, नहीं तो स्वर्ग के महादरवाजे से निकलकर हम कब के बाहर आ गये होते। अपने पराक्रमी बेटे की सहायता के लिए मैं स्वयं तुम्हारे पास भागता हुआ आया होता।''

''पिताजी, भाग्य का यह दुश्चक्र, अपने आत्मीय और विश्वस्त लोगों द्वारा कलेजे पर घात, मन बिलकुल भर गया था। कराल काल ने हाथों से शस्त्र छीन लिये, आँखें ले लीं।''

''शम्भू बेटे! अन्धकारपूर्ण और काँटोंभरी राहों पर चलते हुए तुमने अपने क्रिया-कलाप में निराशा का एक रोड़ा भी कभी आने नहीं दिया। अब दिल के किसी कोने में भी अपराध भावना को स्थान मत दो। आज नहीं तो कल तुम्हारे कार्यों के समक्ष सभी को आदरभाव से नतमस्तक होना ही पड़ेगा। अपने बुद्धिबल और बाहुबल से तुमने पाँच लांख सैनिकों और चार लाख जानवरों वाली विशाल मुगल सेना की महाबाढ़ को इतने दिन रोक रखा। अन्यथा दुर्भाग्यवश पाँच छह महीने में ही सब कुछ समाप्त हो जाता और औरंगजेब की जीत हो जाती। हाथ में जजियाकर का अस्त्र लेकर आयी मुगल सेना के सामने अपना प्रदेश विनष्ट हो गया होता, फिर तुकोबा रामदास और शिवाजी का महाराष्ट्र कहाँ और कितना बच पाता?''

सम्भाजी राजा ने महाराज के कन्धों पर अपना सिर टिका दिया। उस ममतामयी ऊष्मा से सम्भाजी राजा स्वयं को कृतार्थ अनुभव कर रहे थे।

''शम्भू, मेरे बहादुर बेटे, औरंगजेब अनेक राहु-केतुओं को मिलाकर बनाया गया एक दुष्ट और क्रूरकर्मी है। संसार की एक बलशाली शक्ति को तुमने बड़ी हिम्मत से टक्कर दी है। इससे पहले जब यह महादैत्य दिल्ली या आगरे के राजमहल में बैठता था तब उसके सन्देश मात्र से ही दक्षिण के राज्य थरथर काँपते थे। आदिलशाही और कुतुबशाही जैसी हुकूमतें उसकी परछाईं से ही डर जाती थीं।

शम्भू बेटे, उस राक्षस के कारण न चाहकर भी तुम्हारे साथ आगरे तक जाना पड़ा था। पुरन्दर की वह घटना हमारे जीवन का अपमानपर्व था। बेटे, इस प्रकार का घातक, कपटी और निरंकुश शत्रु जब विशाल सेना समुद्र लेकर महाराष्ट्र तक आया तो कोई अन्य व्यक्ति उस सागर की तरंगों को देखकर ही जान बचाकर भाग गया होता। किन्तु बिना तनिक भी घबराए, अपनी पीठ पर सह्याद्रि की श्रेणियों को बाँधे उस दुष्ट से बड़ी कठोरता से दीर्घकाल तक लड़ते रहे।

"जब बहुतों की तलवारों को जंग लग रही थी, बुद्धिमानों की प्रज्ञा समाप्त हो चुकी थी, मर्दों के पैर पंगु हो गये थे, सामान्य जनता भुखमरी से जूझ रही थी, तब बचे खुचे लोगों को एकत्र करके, मुसीबतों से टकराते हुए तुमने संकट की कन्दराओं से अपना मार्ग निकाला। इतनी बड़ी फौज के साथ, इतने कम साधनों में, इतने लम्बे समय तक मुकाबला करने वाला, जवाँ मर्द खोज करने के लिए इतिहास के पृष्ठों में गहन शोध करनी पड़ेगी। सच कहूँ शम्भूऽऽ, मुझे तो लगता है कि तुम्हारे भावी पराक्रम को ध्यान में रखकर ही तुकोबा माउली ने ये पंक्तियाँ रची थीं—

पुत्र हो तो ऐसा मुस्तंडा,
जिसका तीनो लोक मे झंडा।

"बस, बस, पिताजी, मृत्यु महामन्दिर की ओर प्रयाण के पूर्व आप मिल गये यह मेरा सौभाग्य है। आपके इन शब्दों ने मुझे इतना तृप्त कर दिया है कि अब शरीर पर सहस्रों मरणों की वर्षा भी मुझे दुखी नहीं कर सकती।"

"शम्भू बेटे, आज इस शिवाजी का कलेजा तिल तिल करके टूट रहा है तो केवल दो बातों के लिए। अपने स्वजनों ने घात करके तुम्हारे पराक्रमी पैर तोड़ दिये। दूसरे नियति क्रूर चक्र को देखकर भी आत्मा आहत होती है—"

"पिताजीऽऽ!"

"हाँ, शम्भू बेटे, क्या मेरी जिन्दगी में ऐसी कठिन परीक्षा के क्षण कम आये हैं? कुटिल अफजलखान से मिलने हम पालकी में जा रहे थे। कहारों के पदक्षेप के साथ मृत्यु मेरे साथ चल रही थी। वहाँ से मैं केवल भाग्यवश ही बच सका। आगरे के कैदखाने के सामने हजारों यवनों का घेरा क्या कम भयानक था? तुम्हारे साथ ही वहाँ से भी सकुशल छूट गये। जालनापुर जीतकर लौटते हुए संगमनेर के पास जंगलों में रणमस्तखान की धोखादायक कुटिल रणनीति से तो बाल बाल बचा था। थोड़ा ही अन्तर पड़ा था, नहीं तो जो दुर्दैव तुम पर संगमेश्वर में आया, वह मुझ पर संगमनेर में आ गया होता।"

शिवाजी महाराज रुके, उन्हें जोर का झटका लगा। शम्भूराजा की ओर

देखकर, विशेष रूप से उनकी आँखों के रिक्त खाँचों की-ओर देखकर वे बुरी तरह काँप गये। शम्भूराजा के श्रान्त और जख्मी सिर को अपनी छाती से सटाकर वे आर्द्र स्वर में बोले, "शम्भूऽऽ मेरी जिन्दगी में ईश्वर ने, भाग्य ने, सद्भाग्य की पिटारी भरकर मेरे कदमों में रख दिया था। क्या ही अच्छा होता कि उसमें से दो-चार मुट्ठी बचाकर मेरे शम्भू के लिए रख लिया होता। यही सोचकर दुख होता है।"

"पिताजीऽऽ!"

"मेरे बच्चे, कहाँ गयीं तेरी तेजस्वी आँखें?"

"पिताजी, केवल जागीर के लोभी अपनी भूमि के अनेक लोगों ने हमारे साथ धोखा किया। आज मृत्यु से पहले मेरे नेत्र चले गये तो अच्छा ही हुआ। जागीरों के लोभ के लिए स्वाभिमान को नष्ट करने वाले इस महाराष्ट्र को देखने की अपेक्षा तो नेत्रों का चला जाना ही अच्छा है।"

"बेटा, तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है। अकाल के प्रकोप का प्रजा ने सामना किया। सामान्य गरीब लोग हिन्दवी स्वराज्य की रक्षा के लिए तुम्हारे झंडे के नीचे खड़े हुए। उन्होंने अगरबत्ती की तरह अपनी देह जला दी। किन्तु यहाँ के स्वार्थी जागीरदारों ने तुम्हारे साथ धोखा किया। अन्यथा संगमेश्वर से तुलापुर तक की लम्बी यात्रा में सभी ने मिलकर एक साथ पत्थर फेंके होते तो भी बादशाह कभी का परलोक सिधार गया होता। परन्तु यहाँ के स्वार्थी सयाने लोग तो यही सोचते हैं कि राजा मरे चाहे राज्य डूबे, उनकी जागीर बची रहनी चाहिए। तुम्हारे साथ हुआ यह भयानक धोखा इसी प्रवृत्ति का परिणाम है।"

"आपके शब्दों ने अनेक जटिल प्रश्नों को सुलझा दिया, पिताजी।"

"वाह, महाराष्ट्र! सफलतापूर्वक जीवन कैसे जिया जाए? इसे इस शिवाजी ने तुम्हें सिखाया होगा, परन्तु देश, धर्म और मिट्टी के लिए प्राण कैसे दें इसका बोध प्रजा को मेरे बेटे शम्भू से सीखना होगा। हे महाराष्ट्र, इस शिवाजी के गौरव के उन्माद में हमारे शम्भूराजा के बलिदान को दुर्लक्षित करने का प्रमाद कभी न करना। शम्भू पराक्रम से भरे तुम्हारे यश कलश को देखकर एक बात कहने की इच्छा हो रही है। कुछ वर्ष पूर्व सिसोदिया वंश के साथ अपने सम्बन्धों की खोज के लिए मैंने बालाजी चिटणीस को राजपूताना भेजा था। किन्तु शम्भूराजा के जुझारू जीवन की गाथा जिस दिन लोगों के सामने आएगी और लोग तुम्हारे अपूर्व पराक्रम से परिचित होंगे तब कोई अपनी वंशावली की खोज के लिए राजस्थान की रेत की ओर नहीं दौड़ेगा। इसके विपरीत बाहरी योद्धा सहनशीलता के इस फौलादी महापर्वत से अपना सम्बन्ध खोजते दौड़े आएँगे।"

"पिताजी, आपके शब्दों से हम पावन हो गये। मृत्यु की देह देहरी पर पहुँचकर अब मेरे कलेजे में कोई भी काँटा बचा नहीं है। इसके विपरीत मृत्यु को

गले लगाने के लिए हम अधीर हो रहे हैं। इस मम्भा की मृत्यु में यदि मृतप्राय महाराष्ट्र जागृत हो सके, आलमगीर बादशाह की कब्र यहीं दक्षिण में बनाई जा सके, तो ऐसी मृत्यु को मैं सौभाग्यशालिनी मानूँगा।"

अट्ठारह

नदी के किनारे से आवाजें आने लगीं। सवेरे सवेरे ठंडी हवा तेजी से बह रही थी। सम्भाजी राजा की आँख के सामने अँधेरा था। उन्हें दिन और रात के परिवर्तन का चराचर की हलचलों से ही पता चलता था। सवेरे समय उन्हें बड़ी प्रगाढ़ और शान्तिमयी नींद आयी थी। कुएँ के भीतर बुलबुल की तरह सम्भाजी राजा की आवाज फूटी—"कविराज—?"

कविराज के कानों से आवाज टकराई। उनके मुँह में जीभ नहीं थी। आँखों का गोलक समाप्त होकर केवल कोटर बचा था। उन दोनों राजबन्दियों के मन में अन्न पानी के प्रति कोई आकर्षण शेष न था। बादशाह के दुष्ट सैनिक उनके बालों को पकड़कर बेरहमी से झटकते थे। किसी प्रकार जीवित बनाए रखने के लिए चुल्लू भर दूध पिलाते थे। दोनों ही बहुत दुर्बल हो गये थे। सम्भाजी राजा के नेत्र गर्म सलाई से खोदकर निकाल गये थे। औरंगजेब का अनुमान था कि इन यातनाओं से थककर ये लोग जिन्दगी की भीख माँगेंगे। मृत्यु का भय उन्हें विवश करेगा। इसी आशा में सम्भाजी राजा की जबान अभी तक नहीं काटी गयी थी।

सम्भाजी राजा उदासी से हँसे। उनके कविराज शब्द के उच्चारण पर एक मानवीय रक्त मांस का फटेहाल जीवित गोला उनकी ओर सरका। राजा ने उस घिसटते कवि कलश का हाथ अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने कहा—

"पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात।
देखत ही छुप जाएगा ज्यों तारा परभात।।

मनुष्य का जीवन पानी के बुलबुले की भाँति क्षणभंगुर है। देखते-देखते यह प्रभातकाल के तारे की तरह लुप्त हो जाता है। उसके लिए दुख और खेद कैसा? हम एक दृष्टि से भाग्यशाली हैं। कल रात हवा का झोंका बनकर मेरे पिताजी आये थे। बहुत प्रेम से मिले। बहुत समय तक हम दोनों के बीच कुशल-क्षेम चलता

रहा। उस आनन्द के प्रवाह में हम डूब गये थे। उस भेंट से शरीर इतना पावन हो गया कि मृत्यु का कोई भय नहीं रहा। अब जब चाहें वे यमदूत आ जाएँ।''

कविराज आगे सरके। राजा का खुरदुरा और थका हुआ हाथ अपने गालों के पास रखा। उनका मन भर आया। उस राक्षसी बन्दीखाने में पाशविक बेड़ियाँ भी हँसने लगीं। सम्भाजी राजा कहने लगे, ''मृत्यु एक हठी मेहमान है। धक्का देकर हटाएँ तो भी दरवाजे पर पालथी मारकर बैठ जाने वाली। किन्तु अब वह कभी भी आ जाये चिन्ता नहीं है। वह जीभ लपलपाती आये, वज्रयात बनकर आये, ज्वालामुखी का लावा बनकर आये या राज्यप्रासाद का खम्भा बनकर गिरे, कोई चिन्ता नहीं है। अब इस शरीर को मृत्यु का भय रहा ही नहीं।''

बोलते-बोलते सम्भाजी राजा की नाक से गर्म श्वास निकलने लगी। उन्होंने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। वे बेचैन होकर कहने लगे, ''एक ही बात की तीव्र इच्छा थी जो अधूरी रह गयी। उस पापी औरंगजेब का सिर काटकर, चितदरवाजे की देहरी के नीचे एक बार गाड़ दिया होता तो निश्चिन्त मन से हँसते-हँसते स्वर्ग की सीढ़ियाँ चढ़ा होता। इसी बात का दुख हो रहा है। जिन हाथों सुदूर कावेरी की धारा में घोड़ा कुदाया, त्रिचनापल्ली के गर्वीले पाषाणकोट की तटबन्दी में सुरंग लगाई, जिसके भय से पुर्तगालियों के वाइसराय को नाव में बैठकर जान बचाकर भागना पड़ा, जिसने सिद्दियों की पूँछ तोड़कर जंजीरे की बिल में घुसाकर रखा, औरंगजेब की पाँच लाख की फौज देहाती कुत्तों की तरह दूर-दूर से गुर्राती रही किन्तु सह्याद्रि में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं हुई। किसी दूसरे किले पर भी मुगल अधिकार न जमा सके, उसी सम्भाजी की पीठ में अपने लोगों ने ही बगावत की विषैली कटार भोंक दी। खैर, इस सम्भाजी ने जिन्दगी में कभी भी मृत्यु की चिन्ता नहीं की। मृत्यु को मैंने अनेक बार धक्का दिया है। हुआ यह कि अनेक बार मृत्यु स्वयं डरकर भाग गयी। युद्धभूमि में मृत्यु मिल गयी होती तो उसे बाँहों में भर लेता। उस रूप में जलकर खाक होते हुए सात जन्मों की कृतार्थता का अनुभव करता। किन्तु आज इस प्रकार चोर उचक्के की तरह दबे पाँव आ रही है, इसका दुख हो रहा है।''

दोपहर में अचानक वाहनों की घड़घड़ाहट सुनाई पड़ने लगी। उनकी अस्पष्ट फुसफुसाहट और तीव्रगति से होने वाली हलचल से सम्भाजी राजा ने जान लिया कि वे मृत्यु दूत थे। सम्भाजी राजा सावधान हो गये। पर वे भयानक कदम दूसरी ओर ही रुक गये। कवि कलश के साथ कुछ हाथापायी सुनाई दी। ऐसा लगा कि उन शैतान यमदूतों ने कविराज को जकड़ लिया है। पदचाप दूर जाती सुनाई दी। आँखों में दृष्टि नहीं थी। किन्तु राजा के रोम-रोम अपने आत्मीय मित्र के लिए क्रन्दन कर रहे थे।

सम्भाजी राजा ने कठोर स्वर में पुकारा, ''ठहरोऽऽ इधर आओऽऽ।'' यह

आवाज इतनी तेज और धारदार थी कि यमदूतों के पैर लड़खड़ा गये। वे यन्त्रवत कवि कलश को लेकर सम्भाजी राजा के सामने आ गये। दोनों की साँसों को एक दूसरे की आत्मीय पहचान थी। सम्भाजी राजा ने 'कविराजऽऽ' कहकर दहाड़ मारी। दोनों के शरीर एक दूसरे की ओर खिंचते गये।

दोनों के ही हाथ पीठ पर बँधे थे। एक दूसरे के गले मिलने की दोनों की प्रबल आकांक्षा थी, किन्तु यह सम्भव नहीं था। चकमक पत्थर पर पत्थर रगड़ने से जिस प्रकार चिनगारियाँ निकलतीं उसी तरह दोनों के शरीर परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर रहे थे। उनकी करुण श्वासों और हुंकारों ने एक विचित्र वातावरण निर्मित कर दिया था। जीभ के अभाव में कविराज बोल नहीं पा रहे थे। उन दोनों की छटपटाहट विलक्षण थी। पंखकटा जटायु भी इतना न तिलमिलाया होगा।

शम्भूराजा ने रोते हुए पूछा, "कविराज, चल पड़े आप मृत्यु के महामन्दिर की ओर? मुझसे भी पहले? कितने भाग्यवान हैं आप?"

कविराज की देह तमतमा गयी। औरंगजेब की दुष्ट कटार से जीभ काट दी गयी थी। किन्तु उनकी तनी नसें, खुले हुए रन्ध्र, शरीर पर खड़े रोम रोम अर्थात् पूरा शरीर बोलने लगा। श्वासों में स्वर फूटे, "हाँ राजन, मैं सचमुच भाग्यवान हूँ। इसीलिए तो आपसे पहले दौड़ पड़ा हूँ उस स्वर्ग मन्दिर की ओर। ईश्वर के दरबार से फूलों की डलियाँ लूटकर ले आऊँगा और सारे फूल आपके रास्ते में बिछा दूँगा। इतने दिनों के घोर परिश्रम के कारण आपके पैर आहत और श्रान्त हो गये हैं। इतनी सुविधा ही उन्हें दे सकूँ तो धन्य हो जाऊँगा।"

यह क्षणिक स्पर्श भी अधिक देर तक सम्भव न था। उन यमदूतों ने कविराज को खींचकर अलग कर दिया। कविराज को खींचते घसीटते नदी के किनारे ले गये।

औरंगजेब के जल्लादों ने दोपहर को ही सारी तैयारी पूरी कर ली थी। कविराज के हाथ पैर आदि प्रत्येक अवयव काट दिए गये। उनके अवयव एवं रक्त मांस को नदी के किनारे बिखेर दिया गया। पन्द्रह कोस की परिधि में पसरे बादशाह के शिविर में सन्नाटा छाया हुआ था। कविराज की इस अमानवीय हत्या की खबर चारों ओर फैल गयी। फौजी खेमे ने अनुभव किया कि कवि कलश पर होने वाला यह नृशंस अत्याचार, सम्भाजी राजा पर होने वाले अत्याचार का पूर्वाभ्यास था। बादशाह की फौज में काम करने वाले गरीब भिश्ती, जो मराठी थे, छिप छिप कर रो रहे थे। शिवाजी महाराज के केवल दस वर्ष बाद उनके पुत्र, महाराष्ट्र के दूसरे छत्रपति का इस प्रकार पीड़ित किया जाना उन्हें डरा रहा था।

बादशाही खेमे में मृत्युदंड देने के लिए अलग एक तख्ता बनाया गया था। किन्तु कविराज और सम्भाजी राजा को वहाँ न ले जाने का निर्णय स्वयं औरंगजेब ने

लिया था। जहाँ-जहाँ और जब-जब अवसर मिलता था; औरंगजेब यही बताने का प्रयत्न करता था कि कवि कलश और सम्भाजी राजा मामूली कैदी हैं। वह अट्टहास करते हुए कहता था कि इनकी औकात फाँसी के तख्ते पर ले जाने की नहीं है। इसी का परिणाम था कि कविराज के शरीर के टुकड़े भीमा नदी के किनारे फेंक दिये गये थे।

यह खबर फैल गयी कि सम्भाजी को मृत्युदंड बादशाह के सामने दिया जाना था। इसी के लिए बादशाह निकल चुका था। इसकी खबर मिलते ही असदखान ने खेमे के दरवाजे पर ही उन्हें रोक लिया। असदखान ने कहा, "जहाँपनाह, आप बार-बार कहते हैं कि सम्भा एक मामूली कैदी है उसकी ऐसी क्या औकात कि उसकी सजा अमल में लाते समय स्वयं किब्लाए आलम वहाँ उपस्थित हों?"

बादशाह ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। वह रुका भी नहीं। उसकी सवारी तीव्रगति से नदी की ओर चल पड़ी।

बादशाह नदी के किनारे पहुँच गया। भीमा नदी में सूर्य का बिम्ब छुपने लगा था। आसपास के तम्बुओं, डेरों, घरों के नेत्र उग आये थे। सभी की दृष्टि नदी के किनारे की ओर लगी थी। वृक्षों की डालियों में पंछी मौन हो गये थे। दो टिटहिरियाँ टीं-टीं करती हुई नदी के पाट वेग से पार करती हुई चली गयीं। बेड़ियों से जकड़े शम्भू महाराज नदी की ढाल पर खड़े थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनकी आँखों के कोटरों से कुछ मोम जैसा द्रव बह रहा था। डेढ़ महीने के बढ़े हुए दाढ़ी के बाल कड़े होकर ऐंठ गये थे। वे योगी की मुद्रा में खड़े थे। सभी गतिविधियों में हर्ष और उन्माद का भाव दिख रहा था। इतने संकटों के बाद भी और तूफानी हवा के झोंकों में मौत की दहशत सामने होने पर भी सम्भाजी राजा गर्दन और पीठ सीधी करके खड़े थे।

"चलोऽऽ बेवकूफो हटो, कैदी के तो आँख ही नहीं है, उसे टोपी क्यों पहना रहे हो?" इसके साथ ही टोपी दूर फेंक दी गयी।

औरंगजेब स्वयं जाकर उस खम्भे के पास खड़ा हो गया। उसने जल्लादों को दूर हटने का इशारा किया।

खम्भे से जकड़े हुए उस देह को औरंगजेब किसी उन्मादी की तरह देख रहा था। इसी नर शरीर ने पाँच वर्षों तक औरंगजेब के सिर से ताज को खिसका दिया था। इसी ने औरंगजेब को दुख, अपमान और विफलता का बोध देकर दक्खिन की खाक छनवाई थी। वही हठी विद्रोही देह आज औरंगजेब की मुट्ठी में आ गयी थी। इसका वह हार्दिक समाधान और सन्तोष अनुभव कर रहा था। खम्भे के साथ, जंजीरों से जकड़े सम्भाजी राजा की ओर देखते हुए औरंगजेब ने कहा, "जहन्नमी सम्भाऽऽ, तूने अपने बाप की अपेक्षा हमें दस गुना ज्यादा परेशान किया है, सताया

है। हमारी एक भी बात तूने नहीं मानी। कम से कम एक बार शरणागत होने की बात तू कहे, इसीलिए ही तेरी जुबान हमने सलामत रखी है। किन्तु तुमने अपनी जुबान का इस्तेमाल नहीं किया। वर्षों से मेरे साथ विश्वासघात करने वाले गद्दारों का नाम बताने के लिए भी तू तैयार नहीं है। तुम्हारी आँखों के कोटर से गोलक को निकाले आज सात दिन हो गये। तुम्हें अँधेरे के समुद्र में ढकेल दिया, फिर भी तुम्हारे अभिमानी पैर काँपे नहीं, मौत के दरवाजे पर तेरा पशुओं जैसा जुलूस निकाला गया फिर भी रायगढ़ पर तुम्हारी रानी जरा भी नहीं घबराई। किलों की चाभियाँ लेकर वह तुम्हारी जिन्दगी भी माँगने मेरे पास नहीं आयी। सह्याद्रि के पहाड़ों की भाँति तुम दोनों को कितना अभिमान है। सम्भा इसके बाद भी तुम्हें जीवित रखा जाए, इसकी कोई वजह तो नहीं बची है।"

मृत्यु की दहलीज पर वह महायोगी, बिना रंचमात्र भी विचलित हुए खड़ा था। कमाल की ठसक, न हाँ न हूँ। जीवन-मरण की कल्पना से वह योजनों ऊँचे उठ चुका था। बादशाह की फौज, उसका कैदखाना, उसकी राक्षसी कुटिलताएँ आदि उसे नगण्य लग रहे थे। उसके भीतर केवल जगदम्बा, जगदीश्वर और शिवाजी महाराज की स्मृतियों का आवर्तन हो रहा था। बादशाह बड़ी दृढ़ता से कदम बढ़ाता हुआ उस तेज पुंज योद्धा के पास आकर बुदबुदाया, "सम्भा, काफिर बच्चे, मैंने पिछले आठ वर्षों में जंग ए मैदान में तुम्हारे जलवों को देखा है। उन्हें दाद देने के लिए, तुम्हारे सारे गुनाहों को माफ करके, तुम्हें राजबन्दी बनाकर उम्रकैद में रखने की इच्छा मेरे जैसे बादशाह के मन में हुई तो इसमें बुराई क्या है? इसलिए एक आखिरी मौका ले लो। हमें बता दो कि तुम्हारे हीरे-जवाहरात से भरे खजाने कहाँ हैं? यह भी बता दो कि वे गद्दार कौन हैं जो जिन्दगीभर बादशाह का नमक खाकर भी दुश्मनों का गुणगान करते रहे।"

बादशाह की इस कुटिल चाल का कोई उपयोग नहीं हुआ। वह सीधी गर्दन और पीठ बादशाह के सामने जरा भी नहीं झुकी। औरंगजेब अपनी विफलता से आहत, पीड़ा भरी हँसी हँसते हुए बोला, "सम्भा, यह तो खुदा की ही मेहरबानी है कि तू धोखे से एक दक्खिनी सरदार के हाथ लग गया। नहीं तो जंगली पंछी और बहती हवा को कौन पकड़ पाता है? इससे आगे तुम्हें जीवित रखने का गुनाह हम कतई नहीं करेंगे। क्योंकि यदि इस बार मैंने तुम्हें जिन्दा छोड़ दिया तो हमें पूरा यकीन है कि तू मेरा ही खात्मा कर देगा। इस बात को तुम भी जानते हो और मैं भी अच्छी तरह जानता हूँ।"

अधिक विलम्ब न करके बादशाह ने जल्लादों की ओर घूरकर देखा। उनके हाथों में धारदार तलवारें और कुल्हाड़ियाँ थीं। तलवारें और कुल्हाड़ियाँ मशालों की [illegible] चमक रही थीं। पास ही भीमा नदी की अँधेरे में डूबी धारा थी। इस

क्रूर शैतानी दृश्य को देखने से बचने के लिए प्रकाश अँधेरे की ओट में भागा जा रहा था। आज कुछ जल्दी ही सूर्यास्त हो गया था। कहीं से कुत्तों के रोने की आवाजें आ रही थीं। सम्भाजी राजा 'जगदम्ब, जगदम्ब' का जाप कर रहे थे। आँखों के कोटर में नेत्रकमल नहीं थे। किन्तु राजा के मन की आँखों के सामने अनेक दृश्य झिलमिलाने लगे थे।

पुरन्दर पर तेज बरसाती धाराएँ, हिन्दवी स्वराज्य के छत्रपति के पुत्र के रूप में जन्म लेना, वहाँ का आनन्दोत्सव, उस गोरे-चिट्टे तेजस्वी बालक का पालने में सुलाया जाना, सोने की जंजीरों से लटकते पालने का हल्के से झुलाया जाना। जीजामाता और सोयराबाई का मधुर गीत—

सोजा, सोजा शम्भू बाल
शिवबा के प्राण पियारे लाल
सोजा सोजा शम्भू बाल।

पास पलंग पर रुग्णावस्था में सईबाई बैठी हैं। अपने श्रान्त नेत्रों से गोर चिट्टे राजकुमार को बड़े प्यार से देख रही हैं। वे बाणकोट की खाड़ी की लहरें। शिवाजी महाराज के कन्धों का सहारा लेकर तैरते राजकुमार सम्भाजी अपनी बालपन की कोमल काय पर वस्त्रालंकार सँभालते, बादशाह की नजरों में सीधे देखते केवल नौ वर्ष के राजकुमार, शृंगारपुर में शिक्षा ग्रहण करते हुए अपनी सहपाठिनी येसूबाई के साथ की गयी ठिठोलियाँ, बुरहानपुर से दक्षिण में कावेरी की धारा में धँसे त्रिचनापल्ली क़िले की दीवारें, सह्याद्रि के साथ ही दक्षिण की प्रत्येक घाटी में देश, धर्म और मिट्टी के लिए हजारों साथी, अकाल की चिन्ता न करने वाले त्रस्त जानवर, पेट-पीठ एक हो जाने पर भी बादशाह के विरुद्ध खड़े रहने वाले तलवार और भालों से सुसज्ज बहादुर, आठ वर्षों के निरन्तर संघर्ष में मृत्यु पाने वाले असंख्य घोड़े। क्या कुछ नहीं याद आ रहा था, सम्भाजी राजा को?

सम्भाजी बादशाह की कोई भी बात सुनने को तैयार न थे। यह देखकर वह भयंकर रूप से क्रुद्ध हो गया। उसने फर्सियाँ लेकर खड़े दल को एक ओर कर दिया। हाथों में बघनखा पहने दूसरा दल पास ही तैयार खड़ा था। बादशाह ने उनकी ओर इशारा किया। इशारा पाते ही वे आगे दौड़ पड़े। शम्भूराजा को खम्भे के साथ बाँध दिया गया था। दो हट्टे कट्टे राक्षस आगे बढ़े। एक ने पीठ की ओर ऊपरी मनके के पास और दूसरे ने आगे से गले के पास बघनखे घुसा दिए। उन राक्षसों को प्रोत्साहित करने के लिए ढोल-नगाड़े जोर-जोर से बजाए जाने लगे। वे दोनों 'दीनऽऽ—दीनऽऽ' करके चिल्लाने लगे। वे राजा के अंग में घुसे बघनखों को जोर

लगाकर नीचे खींचने लगे। राजा की त्वचा चर्र-चर्र करके फटने लगी। चमड़ी छिलने लगी, अँतड़ियाँ टूटने लगीं। उन दोनों जल्लादों के हाथों से छिलने पर रक्त के फौवारे छूटने लगे। रक्त की धारा नीचे जमीन पर गिरने लगी।

सम्भाजी राजा ने अपनी जान बचाने के लिए कोई मिन्नत नहीं की। वे अपने दाँतों को बिठाकर अत्याचार को सहने का प्रयास कर रहे थे। किसी पुराने कपड़े की तरह राजा का शरीर चिन्दी-चिन्दी हो रहा था। वह रक्तरंजित गोला अपनी जगह पर थरथरा रहा था। अंगों से रक्त के फौवारे छूट रहे थे। महादेव की पिंडी पर चढ़ाया गया दूध-दही जिस प्रकार नीचे जमा हो जाता है उसी प्रकार राजा के पैरों के पास रक्त जमा हो रहा था। बकरे की तरह राजा की छिली देह को देखकर औरंगजेब खिलखिलाकर हँस रहा था। राजा का फटा हुआ जीवित शरीर अपनी जगह पर फड़फड़ा रहा था।

दोनों जल्लाद सम्भाजी राजा के शरीर को छीलकर एक तरफ हो गये। उसके बाद बादशाह ने फर्सीधारी पाँच जल्लादों की ओर इशारा किया। उन दैत्यों के हाथों में हलचल हुई। दूसरे ही क्षण वे सम्भाजी राजा पर टूट पड़े। एक ने अपनी कुल्हाड़ी की तेज धार सम्भाजी राजा की गर्दन में घुसा दी। रक्त की धार उठी, आधी खोपड़ी कट गयी। गर्दन से नीचे लटकने लगी। इसके बाद ही एक दूसरा वार किया गया जिससे सिर धड़ से अलग हो गया।

सम्भाजी का सिर उठाकर बादशाह के सामने लाया गया। औरंगजेब ने उसे हाथ में लिया। उसने रक्त से सनी हुई दाढ़ी पर हाथ फिराया। वह बहुत प्रसन्न था। कुछ वर्ष पूर्व उसने अपने बड़े भाई दारा की खोपड़ी भी बड़ी भावशून्य दृष्टि से देखी थी।

इस खोपड़ी को असदखान को सौंपते हुए बादशाह गरजा, "इस काफिर बच्चे के सिर को भाले में लटकाकर गाँव-गाँव घुमाओ, सभी के बीच दहशत फैलाओ। यह औरंगजेब जब तक जिन्दा है तब तक दक्खन में कोई दूसरा सम्भाजी पैदा न हो।"

औरंगजेब ने जल्लादों की ओर पुनः इशारा किया। वे सम्भाजी राजा पर टूट पड़े। खम्भे से जकड़े शरीर से रक्त की धारा बहने लगी। धारदार कुल्हाड़ियों से कटकर शरीर का रक्त-मांस नीचे बिखरने लगा। भीमामाई सहम गयी। अँधेरे में डूबा सगा सह्याद्रि दुःख से काँप गया।

शाही हुक्म हुआ। उसके अनुसार हाड़-मांस के टुकड़े एकत्र किये गये। मुर्दाखोरों ने उन्हें भीमा नदी के किनारे फेंक दिया। कुछ टुकड़े नदी की धारा में पड़े और कुछ किनारे पर।

बादशाह को अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण कार्य को पूरा करने की प्रसन्नता हुई।

बादशाह सामने की कछार चढ़कर झपाटे से उस अँधेरी रात में ऊपर आया। इस विजय के लिए आलमगीर ने कितना खून पसीना बहाया था? लाखों मनुष्यों और जानवरों को मारा था, पागल कर दिया था अथवा भयंकर रोग के मुख में झोंक दिया था।

थका-हारा बादशाह उस रात्रि बेला में, तुलापुर के भीमा कछार पर आकर खड़ा हो गया। उस घुप्प अँधेरे में नदी की काली धारा की ओर आहत दृष्टि से देखने लगा। बादशाह के डेरे में विजय की सूचक नौबत बजी। हर्षोल्लास से सैकड़ों तासे-ढोल एक साथ बजने लगे थे। हजारों मुगल सैनिक बाजार में खुशी से नाचने लगे थे। मशालों का नृत्य आरम्भ हो गया था। 'सम्भा मर गयाऽऽ, सम्भा कत्ल किया गयाऽ' ऐसा चिल्लाते हुए घुड़सवार जोर-जोर से शोर मचा रहे थे। यह अमावस्या की रात इन दैत्यों के लिए उत्सव की रात बन गयी। आसमान में विजय की चन्द्रज्योति प्रकाशित हुई। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण छाया था।

कछार पर खड़ा बादशाह आतंकित-सा बार बार नदी की धारा की ओर देख रहा था। वह क्षणभर के लिए हैरान हुआ कि कहीं वहाँ काले पानी में सम्भाजी तो नहीं खड़ा है? उसे शंका हो रही थी, किन्तु उसके आसपास त्योहार जैसा उत्सव फौज मना रही थी। शंका के लिए कोई अवकाश शेष नहीं था! समाप्त कर दिया गया काफिर बच्चा अन्ततः समाप्त हो गया था। पिछले आठ वर्षों में जिसने मुगल सेना के लाखों लोगों और जानवरों को विनष्ट करने के लिए जमीन-आसमान एक कर दिया था, आखिर समाप्त हो गया। उस जहन्नमी शिवाजी का दुष्ट छोकरा समाप्त हो गया।

औरंगजेब बड़ी राहत का अनुभव कर रहा था। वह बड़ी प्रसन्नता से हँसा, खिलखिलाकर हँसा, बार-बार हँसा। यह सफलता इतनी बड़ी थी कि बादशाह विदूषक की भाँति खूब हँसा। धीरे धीरे उसकी हँसी बन्द हो गयी। पहला दौर समाप्त हो गया। बादशाह के अंगों में कूट-कूटकर भरा हुआ क्रूर हैवान आलमगीर के अति हिंसात्मक रूप को देखकर दूर भाग गया। बादशाह के अंग-प्रत्यंग में एक अनाम खालीपन भर गया था। वह घबराने लगा। उसे अपनी कामयाबी से ही भय लगने लगा। खालीपन उसे खाने लगा, बेचैन करने लगा। वह सोचने लगा कि यदि सम्भा सचमुच समाप्त हो गया है तो इसके बाद वह लड़े तो किसके विरुद्ध?

'बादशाह सलामत चलिए! हजरत चलिए।' इस आवाज से औरंगजेब का ध्यान टूटा। वह होश में आया। शहाबुद्दीनखान, रूहुल्लाखान, हसनअलीखान जैसे बड़े सरदार नदी के किनारे की ओर दौड़ पड़े थे। उन्हें अपने मालिक की इस दिग्विजय पर बधाइयाँ देनी थीं। रूहुल्लाखान बड़े उत्साह से बोला, "चलिए हजरत आपको मुबारकबाद देने के लिए सारी फौज बेताब हो रही है। अपने खास

सरदारों ने वहीं पर फतह की बड़ी महफिल सजा रखी है।"

"वहाँ पर मरगट्टों के बड़े बड़े ब्राह्मण, जमींदार और अनेक मराठा जागीरदार खासतौर पर हाजिर हैं। चलिए, उनसे मुलाकात कीजिए।" हसनअलीखान ने साग्रह कहा।

बादशाह कुछ अजीब ढंग से हँसते हुए बोला, "क्या मिलना उन मराठा कुत्तों से? जागीर की लालच में आये कुत्ते, उनकी परवाह कौन करता है?"

"लेकिन, लेकिन जहाँपनाह?"

"उन मूर्खो पर गर्व करने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें यदि आज धक्का मारकर बाहर निकाल दिया जाये तो कल वे फिर पैरों में पूँछ दबाए ये नामर्द फिर आ जाएँगे।"

"लेकिन जहाँपनाह, फौज को आपसे एक बहुत जरूरी काम है।" इखलासखान बादशाह के नंगे सिर की ओर देखते हुए बोला। "आपके सिर पर कितने सालों से ताज नहीं—"

"अँ?"

"जी हाँ, मेरे आका, चलिए आपऽ। वर्षो से आपके ताजविहीन सिर को देखकर हम फौजियों को शर्म आती रही है। सम्भा का खात्मा किये बगैर सिर ताज धारण न करने की सौगन्ध आपने पाँच वर्ष पहले ली थी। कल्याण के एक विशेष सुनार से आधे करोड़ की कीमत का, हीरे जवाहरात वाला राजमुकुट हमने आपके लिए तैयार करवाया है।"

"हाँ, हाँ हुजूर! चलिए आज वह मुकुट पूरी शानो शौकत के साथ आपकी खिदमत में पेश करना है।" एक साथ पाँच-छह लोग बोल पड़े।

"इसकी क्या वजह है?" बादशाह ने खिन्न मन से पूछा।

"आपकी इस महान बहादुरी के लिए। एक निहायत नापाक, नादान दुश्मन को आपने आज जिन्दा कत्ल कर दिया। आपने तो बहुत बडी फतह हासिल की है हजरतऽ।"

अपने साथियों द्वारा की जाने वाली प्रशंसा से बादशाह ऊब चुका था। वह चलते चलते रुक गया। ऐसा लगा जैसे उसका दम फूल रहा हो। वह सोच नहीं पा रहा था कि सत्य बात को कहे या न कहे। उसके भीतर का कठोर शासक उसके पापों के द्वार पर कड़ा पहरा दे रहा था। किन्तु उसके अन्तरतम में बैठी मानवीय आत्मा द्रवित हो गयी थी। वह अपने बादशाह के अनुशासन को धोखा दिया। आँखों की पुतलियों के पीछे भरे आँसुओं को वह सँभाल नहीं पाया, उनकी सीमा टूट गयी। पहरेदारों की चिन्ता किये बिना उसकी आँखों से तीन बूँद आँसू ढरक गये, गालों से होते उसकी सफेद दाढ़ी में समा गये।

औरंगजेब उदास स्वर में बोला, "अरे बेवकूफोऽ कैसा जश्न मना रहे हो? मारने वाला मर गया और मरने वाला अमर हो गया। जिसने कत्ल किया वह मर गया, जिसका कत्ल हुआ वह अमर हो गया।"

उन्नीस

भूकम्प के बाद के उजड़े हुए कुरूप दिन की तरह वह भयानक दिन था। भीमा के तट पर कोरेगाँव परिसर में अनेक गाँवों में डरावना सन्नाटा पसरा हुआ था। छह सात गाँवों के बाहरी हिस्से में फैला, तीन-साढ़े तीन लाख का फौजी खेमा दिन में भी झपकियाँ ले रहा था। संगीत और गायन-वादन के विरोधी बादशाह ने मौज मस्ती की खुली छूट दे दी थी। काफिरों के निपात के उपलक्ष्य में रातभर गाना बजाना चलता रहा। आज सवेरे देर से बादशाही खेमा जगा।

बढू गाँव की स्थिति अन्य गाँवों से अलग थी। कल शाम को शम्भूराजा की नृशंस हत्या की खबर कुछ ही लोगों को थी। शेष गाँव के हट्टे कट्टे युवक अपने घरों में घायल होकर पड़े थे। दो दिन पहले ही बादशाही फौज के हत्यारे सैनिकों ने घरों में घुसकर उन्हें बुरी तरह पीटा था। पिछले पाँच-छह दिनों से गाँव में शाही फौज के घोड़े आते थे और खड़ी फसल में घुसकर उन्हें तहस-नहस कर देते थे। विशेष रूप से रूहुल्लाखान के खेमे के घोड़े खुले छोड़े जाते थे।

इस ध्वंसलीला के कारण गाँव के लोग बहुत चिढ़ गये। युवकों ने लाठियाँ लेकर घोड़ों को मार भगाया। घोड़ों का झुंड नदी पार चला गया। इससे रूहुल्लाखान बहुत क्रुद्ध हुआ। उसी रात रूहुल्लाखान के दो-तीन सौ सैनिकों ने बढू गाँव पर आक्रमण कर दिया। काफिरों के युवकों का यह प्रतिशोध उससे सहन नहीं हुआ। सैनिकों ने घरों में घुसकर युवकों, बूढ़ों आदि सभी को खींच-खींचकर बाहर निकाला और चौराहों पर लाकर उन्हें मारते-मारते बेदम कर दिया। इस बात को अभी दो ही दिन हुए थे। युवकों का घायल शरीर उनका साथ नहीं दे रहा था। लोग आहत और विवश अपने घरों में पड़े थे। बादशाह के विरोध में शिकायत करें भी तो किससे? वे अपनी मार की असह्य पीड़ा झेलते हुए, अपने झोपड़ों की आड़ में निढाल पड़े थे।

दोपहर बीती। गाँव के दामाजी पाटील के बाड़े से धोने वाले कपड़ों का बड़ा

गट्ठर लेकर जना धोबिन बाहर निकली। शाम होने के पहले उसे कपड़ों को धो डालना था। वह भीमा और इन्द्रायणी के संगम के बहाव की ओर गयी। नदी के पाट में अनेक जगहें निकल आयी थीं। दूसरी ओर तुलापुर के किनारे पर जगह जगह फौजियों के डेरे-तम्बू लगे थे।

उस ओर नदी का स्वच्छ पानी और धोने के लिए एक बड़ा और चौड़ा पत्थर जना को दिखाई पड़ा। वह उसी ओर तेजी से बढ़ गयी। पाटील की बारहबन्दी पानी में खंगालकर धोने लगी। जना की उम्र तीस वर्ष की थी। मायका पाबल और ससुराल बढू। बचपन से ही उसने लोक गायकों से शिवाजी महाराज के पवाड़े सुने थे। इसलिए रायगढ़ के प्रति उसके मन में बड़ा आकर्षण था। विवाह से पहले उसने अपने पिता से कई बार कहा था, "तात्या आप मेरे लिए रायगढ़ के आसपास का कोई दूल्हा क्यों नहीं ढूँढ़ देते?"

"इतनी दूर क्यों रे छोकरी?" पिता ने पूछा था।

"वहाँ रही तो किसी न किसी दिन शिवाजी महाराज और सम्भाजी महाराज के कपड़े धोने को मिलेंगे न? ऐसा होने पर जन्म सार्थक हो जाएगा।"

जना के भाग्य में बढू गाँव ही था। गाँव की धोबिन के नाते दामाजी पाटील के घर के कपड़े धोने को मिलते थे। रोज की तरह सहज भाव से उसका कार्य शुरू था। उसी समय तुलापुर गाँव का बैजा गड़ेरिया अपनी भेड़ों को लेकर आता दिखाई दिया। कपड़ों को और स्वच्छ करने के लिए जना थोड़े गहरे पानी में उतर गयी। कपड़ों को पानी में खँगालते समय एक विचित्र वस्तु उसके हाथ लगी। रस्सी की तरह की उस लिजलिजी वस्तु को किनारे की ओर सरकाते-सरकाते तंग आकर जना चिल्ला पड़ी।

"कौन युवा है यह? आदमी है कि जानवर? बकरे की अंतड़ी को पानी में डालने की बेवकूफी लोग क्यों करते हैं?"

जना की बात सुनकर बैजा गड़ेरिया फीकी हँसी हँसते हुए बोला, "जना वह अँतड़ी बकरे की नहीं, आदमी की है।"

"हैंऽऽ? क्या कह रहे हो?"

"तुम्हें पता नहीं है क्या? कल रात उस बादशाह ने शिवाजी महाराज के बेटे शम्भू महाराज को यहीं नदी के किनारे, बकरे की तरह काटा है। ध्यान से पीछे देख, उन्हीं का रक्त-मांस पीछे चटाई पर पड़ा है।"

"क्या कह रहे हो, मामा?"

"हाथ नहीं लगाना। घर भाग जा। शम्भूराजा के रक्त-मांस को छूना नहीं। यह बादशाह का हुक्म है। खान के सिपाही तुझे बेदम करके मारेंगे।"

धोने वाले कपड़ों को वैसे समेटकर जना तत्काल पीछे मुड़ी। वह अपने गाँव की ओर सरपट भागने लगी। उसने पाटील के बाड़े में कपड़ों की गठरी को नीचे गिरा दिया। उसकी यह दशा देखकर राधाबाई पाटील ने पूछा, "क्या हो गया है, आज तुझे? कपड़े बिना धोये ही वापस लेकर आ गयी। नदी के घाट पर कोई साँप बिच्छू देख लिया क्या?"

"अपने गाँव के सयानों में साहस नहीं रह गया तो क्या जाता है? वैसे ही नाग की तरह मुवों को घूमने दो।" जना ने चिढ़कर कहा।

"क्या कह रही हो, जना?"

"माँ जी, शिवाजी महाराज के बेटे की अंतड़ियाँ निकालकर उस बादशाह ने नदी की रेत में फेंक दी हैं। इसकी शर्म हमारे गाँव के मर्दों को क्यों नहीं आ रही है? ये मुये रणुए क्यों मूँछों पर ताव देते हैं और बाजार में सीना तानकर चलते हैं?"

यह खबर सुनते ही राधाबाई पाटील के हाथ का निवाला नीचे गिर गया। पाटील के बाड़े के पास बढ़इयों के बाड़े और गाँव की चौपाल में भी यह दुखद समाचार पहुँचा। समाचार पाते ही गाँव का कलेजा दहल गया। महादेव के मन्दिर में पिछले कुछ दिनों से गोरखनाथ बाबा ठहरे हुए थे। गाँव के वरिष्ठ लोग दौड़कर गये। वे भी दुख से काँप गये। यह दुखद समाचार उनके कानों तक पहले ही पहुँच चुका था।

उसी शाम को दामाजी पाटील कोरेगाँव से लौट आये। लोग आकर उनके आसपास जमा हो गये। 'दुहाई हो माई-बाप' गोपाल नाक चिल्लाते हुए आया। पुन: महादेव मन्दिर के चबूतरे पर गाँव वालों का जमावड़ा हुआ। सभी के मन उदास थे। बादशाह के कृत्य से सभी का कलेजा काँप गया था। भय के कारण उनके शरीर में कँपकँपी छूट रही थी। शम्भूराजा की हत्या के समाचार से सभी को पीड़ा हो रही थी। अनेक लोगों की आँखों में आँसू भरे थे।

अपने को न रोक पाकर गोरखनाथ जी बोले, "और तो कुछ नहीं, किन्तु महाराज के बेटे का रक्त-मांस अपने गाँव की सीमा के पास पड़ा रहे और हम चुपचाप बैठे रहें, यह सोचकर दुख हो रहा है?"

"आपकी बात सच है महाराज।" मन्दिर के बाहर बैठा गोविन्द नाक बोला, "शिवाजी महाराज ने इस प्रदेश में अपने बाल-बच्चों पर कुछ कम उपकार किये हैं क्या? आज उनके बेटे की अंतड़ियों के लोथड़े हमारी सीमा पर पड़े हैं और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें यह ठीक नहीं है। पाटीलजी आप सोचें।"

दामाजी पाटील आस्तिक वृत्ति का व्यक्ति था। पंढरीनाथ की नियमित सेवा करता था। तुकोबा के चिरंजीव, नारायण महाराज को पिछले कुछ वर्षों से सरकारी सहायता मिल रही थी। शम्भूराजा के समय में ही देहू से पंढरपुर के लिए पालकी

यात्रा आरम्भ हो गयी थी। उसके साथ दामाजी ने चार बार यात्राएँ की थीं। गोविन्द नाक ने अपने जीवन में शम्भूराजा की बहादुरी की असंख्य कहानियाँ सुनी थीं। उसका सगा मौसेरा भाई रायप्पा नाक अपने भाई के साथ बहादुरगढ़ की ओर निकल गया था। उसे शम्भू महाराज से मिलना था। परन्तु वे दोनों भाई लौटकर नहीं आये। वहीं कहीं शहीद हो गये। शिवाजी और सम्भाजी के साथ सारे गाँव का ऐसा ही आत्मीय रिश्ता था। इसलिए सभी छोटे-बड़े तिलमिला रहे थे।

आज का यह प्रसंग बहुत जटिल था। सभी की बातें सुनकर दामाजी पाटील ने निर्णायक स्वर में कहा, "भाइयो, शम्भू महाराज के लिए आप लोगों की अपेक्षा मेरे दिल में अधिक दर्द है। पर करना क्या है? गाँव के सामने ही तीन-चार लाख की फौज का घेरा लगा हुआ है। बादशाह की शक्ति असीम है। बादशाह ने फरमान जारी किया है कि शम्भू महाराज के रक्त-मांस को किसी को छूना नहीं है।"

"सच है पाटील, आज दिनभर आसपास के दस गाँवों के लोग दिनभर घर से बाहर नहीं निकले। सभी भयभीत होकर सोच रहे हैं कि बादशाह के साथ बेवजह पंगा क्यों लिया जाए? अपने गाँव के साठ-सत्तर युवकों को चार दिन पहले सैनिकों ने इतना पीटा है कि उन युवकों ने अभी भी बिस्तर नहीं छोड़ा है। अब फिर गाँव में नयी मुसीबत नहीं चाहिए। पाँच कोस के क्षेत्र में अन्य सभी गाँव चुपचाप बैठे हैं तो हम ही क्यों यह आफत मोल लें?"

भोजन का समय हो गया था। गाँव के पाटील ने अपना निर्णय सुना दिया। गाँव वाले अपने अपने घरों को लौट गये। वे रोटी खाकर बिस्तर में जाने की तैयारी करने लगे।

किन्तु जना धोबिन बड़ी साहसी महिला थी। राधाबाई पाटील के साथ उसकी घनिष्ठ मित्रता थी। जना आज अपना दाना पानी भूलकर राधाबाई के बाड़े में ही बैठी थी। राधाबाई ने भोजन परोसते समय पुनः पाटील से निवेदन किया, "शम्भू महाराज के लिए कुछ तो कीजिए जी?" राधाबाई ने बहुत आग्रह किया किन्तु मुगल सेना के विरुद्ध खड़े होने की दामाजी की इच्छा न थी।

अन्ततः बाड़े में राधाबाई और जना ही बैठे रह गये थे। राधाबाई ने गोविन्दा के द्वारा गाँव की महिलाओं को सन्देश भेजा। सन्देश पाते ही गाँव की माताएँ, बेटियाँ आदि पाटील के बाड़े में इकट्ठा हो गयीं। गाँव की उन महिलाओं को हाथ उठाकर जना ने सम्बोधित किया, "इतनी निर्दयता? दुनिया पर क्या पानी पड़ गया है? अपने गाँव के एकदम पास शम्भू महाराज के मांस के लोथड़े इस तरह क्यों पड़े रह जाएँ? पाटीलबाई, मैं तो कहती हूँ कि हमारे पूर्वजों ने पिछले जन्मों में जरूर बड़े पुण्य किये होंगे। इसीलिए तो शिवाजी महाराज का बेटा हमारे गाँव की सीमा की गोद में सोने के लिए इतनी दूर आ गया।"

शिवाजी और सम्भाजी राजा के विषय में चर्चा होने लगी। उनकी स्मृतियों से महिलाओं का कलेजा काँपने लगा। रात काफी बीत चुकी थी फिर भी वहाँ से हटने के लिए कोई तैयार नहीं था। मन्दिर के गोरखनाथ बाबा को पाटीलबाई ने अपने बाड़े पर बुलवा लिया। गोरखनाथ बाबा कुछ वर्ष पहले सज्जनगढ़ पर शम्भू महाराज से मिले थे। उसकी चर्चा करते हुए बाबा को स्मरण हुआ कि स्वराज्य के युवराज कितने साहसी और उदार थे। यह चर्चा करते-करते उन्होंने अपनी आँखें पोंछीं। अन्य उपस्थित लोग भी भीतर ही भीतर हिल गये। इसी बीच इस पूरे प्रसंग से व्यथित गोविन्दा नाक वहाँ आ गया। अपनी लाठी को पेट पर टिकाते हुए वह कुछ दूरी पर बैठ गया।

जना क्रोध से आगबबूला हो रही थी। वह गोरखनाथ बाबा से क्रोधावेश में पूछने लगी, "बाबा, मान लीजिए कोई बड़ा भूकम्प आ जाये तो उसमें पूरा गाँव नीचे धँस सकता है कि नहीं?"

"सच है।"

"जंगल में जब दावाग्नि लगती है तो वहाँ के गाँव जलकर खाक होते हैं कि नहीं?"

"बिलकुल होते हैं, बिटिया।"

"तो मैं कहती हूँ कि हम ऐसे ही निकलकर चलें और शम्भू महाराज के रक्त मांस को इकट्ठा करके ले आयें, उनका दाह संस्कार करें। आखिर बादशाह करेगा भी तो क्या? गाँव को जला देगा, इतना ही न?"

जना की बात सुनकर राधाबाई भी उठकर खड़ी हो गयीं। उनका भी खून उबल पड़ा। इसी बीच गोरखनाथ बाबा बोल पड़े, "अपनी परम्परा के अनुसार गाँव के आसपास यदि कोई लावारिस शव पड़ा हुआ मिले तो उसे उठाकर दाह संस्कार करना चाहिए, इस प्रकार मनुष्य शरीर को मुक्ति दी जाती है। शास्त्रों और पुराणों का भी ऐसा ही आदेश है।"

और यहाँ शिवाजी महाराज के बेटे के शरीर के लोथड़े पड़े हैं। फिर भी हम सारे नामर्द चूड़ियाँ पहनकर चुप बैठे हैं।" दूर से गोविन्दा की आवाज आयी।

उस एकत्र भीड़ में मानो क्रोध और दुख से प्रेरित नशा चढ़ गया। सारी अबलाएँ सबला बनकर खड़ी हो गयीं। क्रोध से वे आगबबूला हो रही थीं।

"चलोऽऽ, नदी की ओर चलोऽऽ" चारों ओर से शोर उठा। ये महिलाएँ डंडे, लकड़ी, मूसल जो कुछ भी मिला वह लेकर जाने के लिए तैयार हो गयीं। बाहर घना अँधेरा था किन्तु सभी माताएँ और पुत्रियाँ आँचल कमर में खोंसकर अपने लक्ष्य के लिए तैयार हो गयीं।

बाड़े के भीतर उठने वाला शोर दामाजी पाटील के कानों में पड़ा। भीतर सोये

हुए पाटील हड़बड़ी में बाहर आ गये। वे गुर्राये, "भागवान यह क्या बचपना चला रखा है? बादशाह गाँव पर गधे का हल चलाएगा तब पता चलेगा आपको।"

"देखिए जी! शिवाजी महाराज के बेटे का मांस चील और गिद्धों को देने से पहले यदि हम मर जाएँ तो क्या बुरा है? ऐसा गाँव और ऐसा जीवन चाहिए किसलिए? सँभालिए अपना गाँव और घर। हम तो चले।"

राधाबाई पाटील ने हाथ में भाला ले लिया और बाड़े से तीर की तरह बाहर निकलीं। उनके साथ जना धोबिन और हाथ में कमंडल लिये गोरखनाथ बाबा निकले। साथ बढूगाँव की सारी स्त्रियाँ भी निकल पड़ीं। गाँव की सीमा पार कर सब नदी की ओर दौड़ने लगीं। आगे आगे हाथ की लाठी नचाता गोविन्दा नाक था।

नदी का किनारा समीप आने पर स्त्रियाँ बड़ी सावधानी से नदी कछार उतरने लगीं। वे नहीं चाहती थीं कि शाही फौज को इसकी भनक लगे। आसमान में घना अँधेरा था। महिलाओं ने सहजभाव से पीछे मुड़कर देखा। गाँव के सारे पुरुष उनके पीछे दौड़ते हुए नदी के किनारे आ गये थे। उनमें दामाजी पाटील भी थे। जो लड़के घायल हो गये थे, उनमें से भी कुछ बड़े उत्साह से लँगड़ाते हुए पीछे-पीछे दौड़ते आ गये थे।

दगामस्ती मौज मजा करने के बाद, बादशाह के सैनिक देर से सोये थे। इसलिए उन्हें गहरी नींद आ गयी थी।

गाँव वाले दुबके-दुबके नदी का पाट पार किये। दूसरे किनारे पहुँचकर गाँव वालो ने माचिस कांड़ी जलाई। उसके फुरफुरे प्रकाश में नदी का किनारा प्रकाशित हो गया। शम्भू महाराज के कान, हाथ पैर के टुकड़े जैसे एक-एक अवयव मिलने लगे। गाँव वालों ने अपनी धोतियाँ खोलीं और शम्भूराजा के मांस के टुकडों को उनमें इकट्ठा किया।

अपना काम कर लेने के बाद सभी ग्रामीण झपाटे से वापस लौटे। वे गाँव की चौपाल पर वापस पहुँच गये।

लड़के अपने घरों की ओर भागे। कोई उपले लेकर आया तो कोई लकड़ी लेकर आया। दाहक्रिया की पूरी तैयारी की गयी। किन्तु कठिन प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि क़िसकी जगह में चिता रचाई जाए?

दामाजी पाटील तो अपनी सारी जमीन निछावर करने को तैयार था किन्तु उसकी जमीन कोसभर की दूरी पर थी। गाँव के अन्य जमीन मालिक घबरा रहे थे उन्हें भय था कि कल बादशाह के कर्मचारी आकर उनकी गर्दन पकड़े तो?

अमीरों का वह पाखंड गोविन्दा से सहन नहीं हुआ। वह आगे बढ़कर अपनी जमीन दिखाते हुए बोला, "आइए, इधर आइए। यह हम महारों की जमीन है। यहीं

हमारी ही जमीन में शम्भू महाराज का दाह संस्कार कीजिए। आप अमीर लोग हैं आपको घर चाहिए, जमीन चाहिए। हम महार हैं, हमें आप जैसा ताम-झाम कहाँ लगता है? कल बादशाह का संकट आया तो परिवार लेकर चले जाएँगे।"

"अरे, गोविन्दा का मौसेरा भाई रायप्पा भी शम्भूराजा का सेवक था।" बीच से कोई बोला।

"सिर्फ रायप्पा ही नहीं महाराज, शिवाजी महाराज की पालकी को कहार के रूप में जन्मभर कौन ढोता रहा? हमारी ही जाति के लोग न? और इन शम्भू महाराज की बात क्या कहें? हम महारों के लड़कों की थाली में हाथ डालकर साथ खाने वाला यह पहला राजा था भाइयो। हम उन्हें कैसे भूल सकते हैं?"

गोविन्दा की ही जमीन में शीघ्रता से चिता तैयार की गयी। अन्तिम संस्कार शीघ्रता से पूरा करना था। बादशाह के गुंडों के कभी भी आ जाने की आशंका थी। दामाजी पाटील ने गाँव के बाहर युवकों की फौज खड़ी कर दी थी। उन्हें निर्देश दिया गया था कि यदि बादशाह के घुड़सवार किसी ओर से अचानक आयें तो उन्हें गाँव की सीमा के बाहर रोका जाए। ढेलबाँस और पत्थरों के टुकड़ों के साथ खड़े इन युवकों को कहा गया था कि प्राण चले जायें तो भी दाह संस्कार में रुकावट नहीं आनी चाहिए। इसी आदेश के अनुसार गाँव के लड़के सीमा पर पहरा देते खड़े थे।

गोरखनाथ बाबा ने चिता पर बेलपत्र और तुलसीपत्र चढ़ाए।

शम्भू महाराज की चिता को अग्नि दी गयी।

आग धधक कर जलने लगी।

आग की लपटें काले अँधेरे में आसमान की ओर उछलने लगीं।

इसके साथ ही गाँव वालों ने विलाप करना आरम्भ कर दिया। स्त्रियाँ और बच्चे जोर-जोर से रोने लगे। एक-दूसरे से लिपटकर रोने वालों का विलाप पूरे गाँव में फैल गया।

"अरे रायगढ़ के राजेश्वरऽऽ, तू कहाँ से आ गया रेऽऽ, अरे उड़ते पखेरूऽऽ हे शम्भू महाराजऽऽ।"

भोर होने से पहले ही चिता बुझा दी गयी। महाराज की गर्म राख लेकर पुनः सारा गाँव भीमा नदी के किनारे की ओर दौड़ा। किरणों के फूटने से पहले वह राख नदी को अर्पित कर दी गयी।

अब उजाला होने लगा था। पखेरू जाग गये थे। नदी के तट पर एकत्र गाँव के लोग एक-दूसरे को अभिमान से देख रहे थे। एक महान कार्य के सम्पन्न कर पाने का सन्तोष उनके चेहरों पर विद्यमान था। वरिष्ठ स्त्रियों के मुख पर वीरता की श्री झलक रही थी।

भीमा की धारा की ओर देखते हुए गोरखनाथ बाबा ने हाथ जोड़ लिए। श्रद्धाभाव से उन्होंने धारा की वन्दना की। बाबा के आसपास गाँव के लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। बाबा गदगद स्वर में बोले—

"गाँववालों यह बात सच है। तुम्हारे पूर्वजों के महान पुण्यों के कारण ही शिवाजी महाराज का यह पराक्रमी बेटा चिरनिद्रा में लीन होने के लिए, तुम्हारे गाँव की मिट्टी की गोद में आया। उधर उस इन्द्रायणी को देखिए। कुछ वर्ष पहले कुछ दुष्ट समाज कंटकों ने तुकोबा माउली की अभंग गाथा को उसकी धारा में डुबो दिया था। कहते हैं कि स्वयं माता इन्द्रायणी ने उसे पानी के बाहर निकाल दिया। उसी प्रकार काल के भीतर समायी हमारे शिवपुत्र की पराक्रम गाथा को ऊपर आने में कितने वर्ष लगेंगे, किसी को भी ज्ञात नहीं। किन्तु आज, कल, परसों, नरसों या कुछ शतकों के बाद ही क्यों न हो, वह ऊपर आएगी अवश्य। क्योंकि सत्य से अधिक शाश्वत चीज संसार में दूसरी नहीं है। जब कभी भ्रम और अफवाहों के पर्दे फाड़कर वास्तविकता समाज के सामने अपने सही रूप में आएगी तब देहू और आलेंदी की तरह इस बद्‍ गाँव में भी मेले लगेंगे। देश के लिए, धर्म के लिए, मिट्टी के लिए और स्वाभिमान के लिए मृत्यु को गले लगाने वाले इस वीर पुरुष की समाधि के दर्शन करने के लिए, इस शक्ति-स्थल की ओर दुनिया दौड़ेगी।"

सम्भाजी : यथार्थ और अयथार्थ

1. सम्भाजी के व्यक्तिचित्र को धूमिल, अवास्तविक और विकृत बनाने का आरम्भ मल्हार रामराव चिटणीस ने किया। ये बालाजी आवजी के वंशज थे। उन्होंने यह विवरण सम्भाजी महाराज की मृत्यु के एक सौ पचीस वर्ष बाद लिखा। उनके पूर्वज बालाजी आवजी और उनके पुत्र आवजी को हाथी के पैर के नीचे कुचलवाकर मार दिया गया था। इसका दुख मल्हारराव के मन में पहले से ही था। यह इतिहास लेखन वस्तुत: उसी प्रतिशोध का परिणाम था।

2. मल्हारराव ने अपना अधिकाधिक असन्तोष कवि कलश को लेकर व्यक्त किया है उनके अनुसार उस अघोरी कापालिक के कारण ही राजा और राज्य के लिए खतरा पैदा हुआ। यही उनका प्रमुख अनुमान है। परन्तु सम्भाजी राजा, औरंगजेब जैसे प्रबल शत्रु और उसकी बलशाली सेना के साथ आठ वर्षों तक किस तरह जूझते रहे, यह उनके ध्यान में नहीं आया।

विशेष रूप से सम्भाजी के दक्षिण कर्नाटक पर किये गये दो आक्रमण, बुरहानपुर पर उनका दबाव, कुशल अँग्रेजों पर उनके प्रभाव, अरबों के साथ मैत्री, बसई से लेकर पणजी तक पश्चिमी तट के प्रत्येक बन्दरगाह पर पुर्तगालियों के साथ संघर्ष, का कोई विवरण मल्हारराव के पास नहीं है। उन्हें बस एक सत्य मालूम है कि सम्भाजी ने अपने वरिष्ठ कर्मचारियों और सगे सम्बन्धियों को कैद किया था। विशेष रूप से 1685 के पश्चात् महाराष्ट्र के भयानक अकाल और उसके दुखद परिणाम, उसी प्रकार गोलकुंडा और बीजापुर के शासकों को मिलाकर औरंगजेब के आक्रमण के विरुद्ध सम्भाजी द्वारा छेड़ा गया अभियान और महासंग्राम की तैयारी की ओर इस इतिहास में कोई ध्यान नहीं दिया गया।

3. मराठों का विश्वसनीय इतिहास लिखने में रियासतकार सरदेसाई ने अद्वितीय कार्य किया। ग्रंट डफ के बाद उन्होंने ही मराठों के क्रमवार इतिहास लेखन का कार्य सम्पन्न किया। इतिहास के कोनों में अलक्षित तथ्यों को उन्होंने स्पष्ट रूप से आलोकित किया। 1832 में 'हितचिन्तक' मासिक पत्रिका में आपने

'भाऊसाहब पेशवा के जीवनवृत्त की रेखाएँ' शीर्षक से एक आलेख लिखा था। 'पानीपत' उपन्यास लिखते समय भाऊसाहब के अभिनव चरित्र चित्रण में मैंने उस लेख का सुन्दर उपयोग किया था।

किन्तु रियासती में सम्भाजी के समय का इतिहास लिखते समय सरदेसाई के भीतर का अनुशासित, सजग और नीर-क्षीर विवेकी इतिहासकार दिखाई नहीं पड़ता। मल्हारराव द्वारा किये गये मिथ्या और द्वेषपूर्ण चित्रण से सम्भाजी के चरित्र पर धूल की इतनी मोटी पर्त जम गयी है कि उसे हटा पाना परिश्रम का कार्य है। इसलिए सरदेसाई ने भी लगभग मल्हारराव की कार्बन कापी ही तैयार की। 'रियासत' में अनेक असत्य और विकृत विधान भरे पड़े हैं।

शिवाजी महाराज ने कभी भी पन्हालगढ़ पर सम्भाजी को कैद अथवा नजरबन्द नहीं किया था। ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह प्रमाणित है। दिलेरखान के पास जाते समय उनकी पत्नी दुर्गादेवी साथ थीं न कि येसूबाई, परन्तु रियासतकार येसूबाई को वहाँ भेज देते हैं और बड़ी नाटकीयता से उन्हें पुरुषवेष में तैयार करके उन्हें मुक्त भी करा देते हैं। अपनी रियासत के पहले खंड 'शककर्ता शिवाजी' के पृष्ठ क्रमांक 344 पर (सद्य:प्रकाशित पापुलर प्रकाशन का संस्करण देखें) रियासतकार लिखते हैं कि 'सोयराबाई सम्भाजी द्वारा मारी गयीं।' इसके विपरीत इस बात के असंख्य प्रमाण तब भी थे और आज भी हैं कि सम्भाजी के सिंहासनारोहण के वर्ष डेढ़ वर्ष बाद तक सोयराबाई जीवित रहीं।

4 सम्भाजी के सम्बन्ध में अत्यधिक मात्रा में पुर्तगाली दस्तावेज मूल रूप में उपलब्ध हैं। कवि कलश और उनके बीच हुए पत्राचार और अँग्रेजों के साथ हुई सन्धि के मूल दस्तावेज उपलब्ध हैं। आज भी वाराणसी की काशी नागरी प्रचारिणी सभा में सम्भाजी के संस्कृत काव्य महाकाव्य, ब्रजभाषा काव्य सम्बन्धी जानकारी सुरक्षित है। दुर्दैव से किसी अध्येता ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इसके विपरीत अध्येताओं में इस बात की होड़ लगी रही कि वे किस प्रकार सिद्ध कर सके कि शिवाजी महाराज जैसे युगपुरुष का बेटा कितना मद्यपी, विषयासक्त, उद्धत और अशिष्ट था।

औरंगजेब ने ऐसी प्रतिज्ञा की थी कि काफिर का बच्चा सम्भा जब तक हाथ नहीं लगता, तब तक मैं मुकुट नहीं पहनूँगा। इसके अनुसार अपने नंगे सिर, हिन्दुस्तान का शहंशाह सम्भाजी की खोज में जंगल-जंगल भटकता रहा। इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध होने पर भी हमारे नाटककारों को उसमें कोई नाट्यतत्त्व दिखाई नहीं पड़ा। इसके विपरीत विषयी, क्रोधी और दुष्ट राजकुमार उन्हें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ड्रामेटिक डिवाइस दिखाई पड़ी। इतिहासकारों ने भी उसी

का समर्थन किया। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। कुडालकर बाकरे शास्त्री संस्कृत दानपत्र में, जो आज भी उपलब्ध है, सम्भाजी का वर्णन करते हुए बताते हैं कि वे भावुक मन के राजकुमार और स्फटिक से भी निर्मल थे। रियासती का 'उग्र प्रकृति सम्भाजी' खंड शीर्षक के साथ ही मिथ्या विधानों से भरा पड़ा है।

5 यह सब विस्तार से लिखने का कारण यह है कि मल्हारराव की बड़ी भूलों को रियासतकार ने ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया। नाटककारों ने 'रियासती' को श्रेष्ठ ऐतिहासिक कृति के रूप में देखा। सम्भाजी मराठी नाटकों के लिए एक अन्यतम विषय सिद्ध हुआ। मराठी में इस एक विषय पर सत्रह से भी अधिक नाटक लिखे गये हैं। नाटककारों को प्रतिभा के अनेक विलक्षण पंख फूटे हैं। रायगढ़ पर गंगासागर नामक तालाब में उन्होंने कल्पना की नाव छोड़ी। उसी नाव में बैठकर येसूबाई नौकाविहार करती हैं। नाव से उतरकर वे झटपट रंगमंच पर प्रवेश करती हैं। मंच पर उनका प्रवेश अपने चरित्रभ्रष्ट पति की आलोचना के लिए ही होता है।

कवि कलश के परिचय के लिए जब मंच पर पर्दा उठता है तो उन्हें भैंसे की खाल पर अनुष्ठान करते हुए बिठाया जाता है। भैंसे की गीली या सूखी खाल कितनी सख्त और मोटी होती है? उसे बिछाने के लिए कितने लोग लगेंगे? इस पर बैठने वाला व्यक्ति कितना विचित्र लगेगा? एक पुराने रंगकर्मी ने मुझे बताया कि कवि कलश के मंच पर प्रवेश के लिए हम भैंसे की खाल की जगह बकरे की खाल बिछाते थे।

6 प्रा नरहर कुरुंदकर 'श्रीमान योगी' की प्रस्तावना में लिखते हैं, "सम्भाजी ने पुर्तगालियों के तीन-चौथाई राज्य को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। कर्नाटक का राज्य दुगुना हो गया, सेना पहले से दुगुनी हो गयी। शिवाजी की राजनीति का विकास सम्भाजी में दिखाई पड़ता है।" कुरुंदकर ने सन् 1960 में एक विस्तृत लेख लिखकर सम्भाजी के चरित्र पर उज्ज्वल प्रकाश डाला था। अरबी और फारसी दस्तावेजों के आधार पर सेतु माधव पगड़ी जैसे वरिष्ठ अध्येता सम्भाजी के सम्बन्ध में जीवनभर बड़े आदर और गौरव से लिखते और बोलते रहे। शिवपुत्र सम्भाजी ने हिन्दुस्तान के पुर्तगाली शासकों को किस तरह हैरान किया? इसका प्रमाण उन पत्रों में उपलब्ध है जो पुर्तगाली वाइसराय कांट दी आल्होर ने अपने पुर्तगाल के राजा को लिखे थे। किन्तु इन सभी बातों की पूर्णतः उपेक्षा की गयी।

प्रा कुरुंदकर ने अपने अध्ययन के अन्त में स्पष्ट किया है कि, "सम्भाजी की भ्रष्टता का आरोप 1690 के बाद आरम्भ हुआ। श्री पगड़ी का भी यही मत है। इसका अर्थ यह है कि सम्भाजी के कठोर अनुशासन से जिन्हें कष्ट पहुँचा था अथवा जागीर न बाँटने की शिवाजी महाराज की नीति का सम्भाजी ने जिस कठोरता से

पालन किया था, उससे महाराष्ट्र के बहुत से जागीरदार और जमींदार दुखी हो गये थे। उन्होंने सम्भाजी की मृत्यु के पश्चात ही बड़े पैमाने पर सम्भाजी की बदनामी करनी आरम्भ की।

7. शिवाजी महाराज के अष्टप्रधानों में और प्रमुख कर्मचारियों में दुर्भाग्य से अनेक आगे चलकर विश्वसनीय नहीं रहे। बालाजी आवजी और मोरोपन्त जैसे वरिष्ठ एवं सम्मानित व्यक्ति इसमें सम्मिलित थे। राजनीति में कुशल अण्णाजी दत्तो और उनके द्वारा स्थान-स्थान पर नियुक्त स्वार्थी कर्मचारियो द्वारा भ्रष्टाचार और अविश्वसनीयता का वातावरण बढ़ रहा था। वय से तरुण और हृदय मे पवित्र सम्भाजी ने उनके विरोध में आवाज उठाई। इससे प्रभावित अधिकारियों ने शिवाजी महाराज से शिकायत की। इसलिए ऐन मौके पर शिवाजी महाराज ने कर्नाटक युद्ध में उन्हें साथ ले जाने से मना कर दिया। यहीं से सम्भाजी और अधिकारियों के बीच संघर्ष आरम्भ हुआ। पीढ़ियों के बीच का अन्तर भी इसमें कारणीभूत था।

शिवाजी के पुत्र और दूसरे छत्रपति बने सम्भाजी के भोजन में विष मिलाकर उन्हें मारने का प्रयास इन अधिकारियों ने अनेक बार किया। इस राजद्रोह और विश्वासघात को बार-बार क्षमा करने पर भी इसकी पुनरावृत्ति होती रही। उन लोगों ने अपने राजा को समाप्त कर देने का प्रयास बार बार किया। इसीलिए अन्त मे इन कर्मचारियों को राजदंड देने के कर्तव्य का निर्वाह सम्भाजी को करना पडा। इन्हीं कर्मचारियों के वंशजों ने बाद में सम्भाजी के चरित्र का हनन किया। पानीपत के युद्ध के समय भाऊसाहब का साथ छोड़कर जो लोग महाराष्ट्र भाग आये थे उन्होंने अपने सम्मान की रक्षा के लिए पानीपत का जो झूठा इतिहास रचा उसमें और जानबूझकर सम्भाजी की की गयी बदनामी में एक ही मनोवृत्ति काम कर रही थी।

8 औरंगजेब के महाआक्रमण का मुँह मोड़ने के लिए सम्भाजी ने हर सम्भव प्रयत्न किया था। कुतुबशाह और आदिलशाह ही नहीं, इक्केरी के बासप्पा नाईक तक दक्षिण के अनेक राजाओं का एक संघ सम्भाजी ने तैयार किया था। परन्तु कुतुबशाह विलासी वृत्ति का और आदिलशाह उम्र में कम और अनुभव में शून्य था। फिर भी दक्षिण की रक्षा करने में सम्भाजी राजा, हंबीरराव मोहिते, निलोपन्त पेशवा, खंडो बल्लाल केसो त्रिमल पिंगले आदि की भूमिका उल्लेखनीय है। औरंगजेब के सेना समुद्र से यदि सम्भाजी आठ वर्षों तक लगातार न लड़ते, दो-चार महीने में ही हथियार डाल दिया होता तो आज का महाराष्ट्र कहाँ होता?

9 कवि कलश के सम्बन्ध में नाटककारों ने एक कपटी, पाखंडी और धूर्त व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया है किन्तु कविराज की उपलब्ध काव्य-पंक्तियाँ उन्हें एक ईमानदार और राजनिष्ठ व्यक्ति प्रमाणित करती हैं। एक ओर जहाँ शिवाजी महाराज के सभी जामाता औरंगजेब के साथ जाकर मिल गये थे वहीं यह कनौजी

ब्राह्मण, सम्भाजी का साथ मृत्यु की सीढ़ियों तक निभाता रहा। विशेष रूप से 1685 के बाद जब महाराष्ट्र के अनेक मराठा और ब्राह्मण जागीरदार जागीर प्राप्त करने के लिए औरंगजेब के कदम चूम रहे थे. ऐसे समय में कवि कलश ने पत्र लिखा था, "राजद्रोह नहीं करूँगा। सम्भाजी महाराज का साथ नहीं छोड़ूँगा।" ऐसे अनेक मूल पत्र उस समय के कागज पत्रों में उपलब्ध है। पेशवा कार्यालय में कवि कलश का ऐसा पत्र भी सुरक्षित है जिसमें उन्होंने लिखा था कि अत्याचार के कारण धर्मान्तर करने वाले हरसूल के कुलकर्णी को पुन: हिन्दू धर्म में सम्मिलित किया जाए, उनका शुद्धीकरण किया जाए। इन कागज पत्रों और प्रमाणों पर यदि गम्भीरता से विचार किया जाये तो नाटककारों और इतिहासकारों के आक्षेप अपने आप निर्मूल हो जाते हैं।

10. 'बुसातीन उस्-सलातिन' नामक ग्रन्थ में उल्लेख है कि सम्भाजी का एक ब्राह्मण कन्या के साथ प्रेम था। वे उससे मिलने के लिए रात को किले से बाहर जाते थे। यह कन्या थी अण्णाजी दत्तो की बेटी, ऐसा भी कुछ लोग मानते हैं। 'द मिलिट्री सिस्टम ऑफ मराठाज़' जैसा शोधपरक और उच्चकोटि का ग्रन्थ लिखते हुए डॉ सेन ने कुछ बहुत महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया है। उनके अनुसार उस समय प्रत्येक किले के किलेदार सन्ध्या समय किले के दरवाजों को अपने से भीतर से ताला लगाते थे। दूसरे दिन वह स्वयं चाभी लेकर जाते थे और उनके सामने दरवाजा खोला जाता था। स्वयं शिवाजी महाराज के किले पर रहते हुए ऐसी परिस्थिति में आधी रात सम्भाजी का घूमना सर्वथा असम्भव कल्पना है। गोदावरी की एक लोककथा है। श्री द.ग. गोडसे ने उसे बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। किसी सुन्दर और शौर्यवान पुरुष से अनेक स्त्रियाँ एकतरफा प्रेम कर सकती हैं। परन्तु इसका अर्थ उस पुरुष का स्त्रीलम्पट अथवा चरित्रहीन होना नहीं होता।

11. जिस समय सम्भाजी संगमेश्वर में पकड़े गये उस समय असावधान थे क्या? अथवा उस समय विनोद विलास में डूबे होने के कारण पकड़े गये? इतिहासकारों ने इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि इस प्रवास के समय राजा के साथ कौन-कौन थे। रायगढ़ का स्थानीय कार्यभार सँभालने वाली महारानी येसूबाई, हिन्दवी स्वराज्य के सेनापति म्हालोजी घोड़पड़े, रामदास स्वामी के पट्ट शिष्य रंगनाथ स्वामी, धनाजी, सन्ताजी जैसे कुशल और आत्मीय जनों के बीच सम्भाजी भोग विलास में कैसे रम सकते थे? इतिहास साक्षी है कि संगमेश्वर पहुँचने के पहले सम्भाजी ने पास के विशालगढ़ के किले के गिरे हुए बुर्ज को दो तीन दिन में ठीक करवाया था। यदि दूसरा समय होता तो इस कार्य में महीनों लग जाते। उसी समय सुदूर दक्षिण के तमिल प्रान्त में केशव त्रिमल के नेतृत्व में अठारह हजार की सेना लड़ रही थी। आंबा घाट पर सात-आठ हजार की मलकापुरी फौज

तैनात थी। फिर यह राजपुत्र असावधान कैसे था? शादी-ब्याह के अवसर पर सौ-दो सौ लोगों की अतिरिक्त व्यवस्था करनी पड़े तो कमर टेढ़ी हो जाती है। यह बत्तीस वर्ष का शिवपुत्र प्रचंड अकाल, बादशाह से मिल गये अपने सगे बहनोइयों, धोखेबाज देशद्रोही जागीरदारों से अकेला जूझ रहा था। अपनी साठ-सत्तर हजार की सेना लेकर औरंगजेब की विशाल सेना का मुकाबला करने के लिए शिवपुत्र को कितनी तैयारी करनी पड़ी होगी? इसकी कल्पना की जा सकती है।

12. सम्भाजी महाराज ने दक्षिण में जो दो अभियान किये, उसकी ओर डॉ. बी. मुद्दाचारी के अतिरिक्त किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया। आज भी दक्षिण में सम्भाजी के अभियान की साक्षी देने वाले अनेक शिलालेख तमिल और कन्नड़ भाषा में उपलब्ध हैं। किन्तु उनकी ओर ध्यान देने वाला कोई नहीं है।

कुछ महीने पहले मैं अपने एक आई.ए.एस. श्रेणी के अधिकारी आनन्द पाटील (जिलाधिकारी, शिवगंगा, तमिलनाडु) के साथ त्रिचनापल्ली गया था। आज पाषाणकोट वहाँ पर बोधचिह्न के रूप में प्रयुक्त होता है। आज भी पाषाणकोट के पास बैठकर कावेरी के पाट को देखते हुए दिल धड़कने लगता है। एक समय कावेरी नदी में घोड़ा कुदाकर सम्भाजी ने पाषाणकोट को किस तरह जीता? इसकी कल्पना से शरीर काँप उठता है।

जंजीरा के पास सम्भाजी द्वारा बनाए गये सेतु के कुछ पत्थर आज भी उस अतीत का साक्ष्य दे रहे हैं। सम्भाजी के साथ धोखा शृंगारपुर के पास मालेघाट की सँकरी राह आज भी उतनी ही भयानक, अन्धकारभरी और रहस्यमय दिखाई पड़ती है। बस के आने जाने के लिए दूसरी ओर अणुस्कुरा घाट को तोड़कर रास्ता बनाया गया है फिर भी अनेक वाहनों के लिए प्राणघातक सिद्ध होता है। उसके समीप से आज भी सम्भाजी के समय की टूटी-फूटी राह विद्यमान है।

'मगनलाल ड्रेस वाला' के किराए के कपड़े पहनकर मद्यपी के रूप में रंगमंच पर नाचने वाला सम्भाजी कोई और है। किन्तु सह्याद्रि की घाटियों को ढाल की तरह उपयोग करने वाला, घोड़े पर अपना सिंहासन लादकर बादशाही फौज से जीवनभर संघर्ष करने वाला, महाराष्ट्र के इतिहास को कल्पान्त तक कायम रखने वाला सम्भाजी बहुत-बहुत अलग है।

13. सम्भाजी का दुखद अन्त बहुत दारुण था। जिस प्रकार नाटककार तीसरे अंक में औरंगजेब और सम्भाजी को आमने-मामने खड़ा करते हैं, वस्तु स्थिति वैसी नहीं है। संगमेश्वर में धोखे से पकड़े जाने के बाद से उनकी तुलापुर की मृत्यु तक की चालीस दिनों की कालावधि अत्यन्त पीड़ादायी है। बादशाह ने दारा जैसे अपने सगे भाई को भी दो-चार दिन की ही कैद दी थी। किन्तु सम्भाजी से उनके सभी

महत्त्वपूर्ण किलों का अधिकार औरंगजेब को लेना था। उस कालखंड में महारानी येसूबाई, दुर्गाबाई और सम्भाजी के सभी कुटुम्बियों पर कितने अरिष्ट टूट पड़े थे इसकी केवल कल्पना की जा सकती है।

14. ताराबाई के समय के दस्तावेजों में अर्जोजी यादव का मूल पत्र मौजूद है। उसमें 'मातो श्री दुर्गाबाई से मिलकर आया' ऐसा स्पष्ट उल्लेख है। इससे यह शंका निर्मूल हो जाती है कि दुर्गाबाई सम्भाजी की पत्नी थीं अथवा उपपत्नी।

15. बखरकार और इतिहासकार जिस तरह दिखाते हैं, वैसी औरंगजेब की विवाहयोग्य उस समय कोई लड़की नहीं थी। इसलिए नाटकों के अनुसार सम्भाजी द्वारा उसके हाथ माँगने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसके अतिरिक्त यह कहना कि सम्भाजी जीवन भर विलासी और बदचलन था किन्तु आँखों के आगे मृत्यु को देख धार्मिक बन गया। एक दिन के लिए ही क्यों न हो 'धर्मवीर' बन गया, ठीक नहीं है। जिन्दगीभर व्यसनी और बदचलन व्यक्ति बादशाह के पास जनानखाने की चाभी माँगेगा। क्योंकि उसकी मूलवृत्ति वही है। बाकी की बकवास क्यों करता बैठेगा?

कुछ लोग सम्भाजी राजा की मृत्यु के सन्दर्भ में फिल्मी ढंग से हृदय परिवर्तन की बात करते हैं। यह पूर्णतया असत्य है। सत्य तो यह है कि युगपुरुष शिवाजी महाराज के योग्य पुत्र सम्भाजी राजा अपने पिता के पुण्य के प्रति सजग बने रहे। औरंगजेब के विरुद्ध अंबर के राजा रामसिंह को संस्कृत में लिखा गया पत्र आज भी उपलब्ध है। उसमें औरंगजेब जैसे शत्रु को नेस्तनाबूद करने के लिए उत्तर के राजाओं को एक होने का आवाहन किया गया है। सम्भाजी राजा को मराठा नौसेना का महत्त्व अच्छी तरह ज्ञात था। इसीलिए शिवाजी महाराज के बाद उन्होंने एक भी बेड़ा कम नहीं होने दिया। मुम्बई बन्दरगाह का महत्त्व समझने के कारण ही उन्होंने अँग्रेज गवर्नर केजविन से मुम्बई खरीदने का प्रयास किया। अन्त में उन्होंने कराल काल के मुँह में अपना सिर दे दिया किन्तु सह्याद्रि का एक भी महत्त्वपूर्ण किला औरंगजेब के हाथ में नहीं जाने दिया। त्रिचनापल्ली से बुरहानपुर तक उन्होंने अपनी तलवार का चमत्कार दिखाया। जिस उद्देश्य से वे आठ वर्ष तक जूझते रहे, उसी ध्येय से आयु के मात्र बत्तीसवें वर्ष में मृत्यु के सामने गये।

16. इस बृहद उपन्यास के लेखन में मेरे अनेक मित्रों और शुभेच्छुओं ने आत्मीय सहयोग प्रदान किया, उन सभी का मैं हृदय से आभारी हूँ। महान शोधकर्ता डॉ. र.वि. हेरवाडकर की पुत्री सौभाग्यवती शिरीन कुलकर्णी ने हेरवाडकर के संग्रहों में से अनेक ग्रन्थ उपलब्ध कराए। इन ग्रन्थों से मुझे बड़ी सहायता मिली। इसी प्रकार डॉ. सदाशिव शिवदे ने अपने संग्रह से अनेक दस्तावेज उपलब्ध कराए। इसके लिए मैं उनका सदैव ऋणी रहूँगा। आज महाराष्ट्र में सम्भाजी के साहित्य पर

गहराई से शोध करने वाले डॉ. जयसिंह राव पवार और डॉ. सदाशिव शिवदे ख्यात शोधकर्ता हैं। इन दोनों के साथ समय-समय पर होने वाले विचार-विमर्श और उनके द्वारा दिए गये सुझावों का मुझे बहुत लाभ हुआ है। इसके अतिरिक्त पुणे के डेकन कॉलेज की ग्रन्थपाल सौभाग्यवती मोरे, लोकमान्य तिलक ग्रन्थालय, चिपलूण के कार्यवाह, मेरे मित्र प्रकाश देशपाण्डे, सुधागढ़ पाली के श्री सूर्यकान्त ताटे और सुरेश पोतदार का सहयोग भी मेरे लिए मूल्यवान है। पत्रकार श्री मधुकर भावे, और उल्लासदादा पवार ने मुझे इस संकल्प सिद्धि की प्रेरणा निरन्तर दी है।

बहादुरगढ़ (तहसील श्रीगोंदा) की यात्रा के समय मेरे मित्र प्रकाश और श्री अरुण जाखड़े ने बहुत समय दिया। शृंगारपुर और संगमेश्वर देखते समय श्री मुरलीधर बोरसूदकर, सत्यवान बिचारे, श्रीकान्त बेड़ेकर, शृंगारपुर के दीपक म्हस्के व विनायक म्हस्के तथा मेरे अधिकारी मित्र दिनकर पाटील व. वसन्त पाटील ने उत्साह से सहयोग किया। भयंकर मालेघाट देखते समय सत्यवान बिचारे सर्पदंश के शिकार हो गये थे। साधन सामग्री की आपूर्ति करने वाले पूर्व केन्द्रीय मन्त्री रमाकान्त खलप और नासिक के लोकेश शेवड़े का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। श्री उद्धव ठाकरे ने स्वयं हेलिकाप्टर से जंजीरा और रायगढ़ किले के स्वयं लिए गये दो छायाचित्र उपलब्ध कराए। मैं उनका आभारी हूँ। इस ग्रन्थ के महत्त्व की वृद्धि करने वाले अनेक छायाचित्र खींचने वाले, स्थान-स्थान पर मेरे साथ भटकने वाले छायाचित्रकार प्रवीण देशपाण्डे का मैं आभार मानता हूँ।

इस उपन्यास के लेखन में मेरे मित्र उपन्यासकार श्री अनन्त सामन्त श्री सम्भाजी जाधव, मेरी पत्नी सौभाग्यवती चन्द्रसेना पाटील, बन्धु सुरेश पाटील, कविवर्य केलुसकर के साथ हुई चर्चाओं का बड़ा उपयोग हुआ है। मेरे मित्र ग़ज़लकार श्री दिलीप पांढरपट्टे के साथ विचार-विमर्श से उर्दू भाषा के उपयोग में महत्त्वपूर्ण सहायता मिली। इस उपन्यास की पांडुलिपि तैयार करने में श्री पंडित आलुगड़े की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। मैं उनकी लगनशीलता और कार्यकुशलता के लिए उन्हें शाबासी देता हूँ।

श्री शंकर सारडा, डॉ. म.द. हातकडंगलेकर, निर्मल भट्टाचार्य, वामन भोवाल, सुहास सोनावणे, कल्याण तावरे, डॉ. सुवर्णा निंबालकर विलास राठौड़, डॉ. हिकमत उदाण, प्रा अशोक गोडबोले, श्री रमेश कीर आदि ने मुझ पर और मेरे साहित्य पर सदैव ही स्नेह की वर्षा की है। उनके ऋण से उऋण होना सम्भव नहीं।

चित्रकार श्री चन्द्रमोहन कुलकर्णी ने चित्रांकन की जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाई। उसी तरह इस वृहद उपन्यास को समय पर और सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित करने के लिए श्री अनिल और सुनील मेहता—पिता-पुत्रों का आभारी हूँ। प्रकाशन के सन्दर्भ में 'मेहता पब्लिशिंग हाउस' की श्रीमती चारुलता पाटील और

अश्विनी खेर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ।

मुझे विश्वास है कि आज तक जिस आत्मीयता से मेरे उपन्यासों का मराठी भाषा में आदर होता रहा है उसी प्रकार 'सम्भाजी' का भी होगा। उसी प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं में असंख्य पाठकों की ममता मुझे मिलेगी।

प्रस्तुत उपन्यास में दिनांक, सन् और अन्य विवरण अँग्रेजी पद्धति से केवल पाठकों की सुविधा के लिए दिए गये हैं। पाठक कृपया इस बात को ध्यान में रखें।

17. सम्भाजी महाराज के व्यक्तित्व और चरित्र पर अभिनव प्रकाश डालने का महत्त्वपूर्ण कार्य सबसे पहले वा.सी. बेन्द्रे ने किया। उसके पश्चात् सेतु माधवराव पगड़ी, कमल गोखले, विजय देशमुख से लेकर डॉ. जयसिंहराव पवार और डॉ. सदाशिव शिवदे तक लोगों ने निरन्तर यह कार्य किया है। स्वातंत्र्यवीर सावरकर जैसे क्रान्तिपुरुष ने भी सम्भाजीराजा के गौरवपूर्ण कार्यों का उल्लेख अनेक बार बड़े आदर से किया है।

दिनांक 26 फरवरी, 1908 को सन्ध्या समय सोलापुर में दासनवमी के उत्सव के अवसर पर लोकमान्य तिलक ने एक भाषण दिया था। उस भाषण में शिवपुत्र सम्भाजी का गुणगान करते हुए उन्होंने एक स्वरचित संस्कृत श्लोक कहा था। उसी श्लोक से मैं अपने इस निवेदन की पूर्णाहुति करता हूँ—

"स्वधर्मे निधनं श्रेयो
गीतावचनं उज्ज्वलम्
शिवसुतोश्च हौतात्म्यं
धर्मराष्ट्रकृत्ये खलु ते।।"

—विश्वास पाटील

सन्दर्भ साधने

1. ऐतिहासिक साधने (1588 से 1821) — सम्पादक : शां. वि. आवळसकर
2. श्री शिवछत्रपतींची 91 कलमी बखर आणि भोसले घराण्याची चरित्रावली — वि. स. वाकसकर
3. हिन्दवी स्वराज्य आणि मोगल — सेतुमाधवराव पगडी
4. श्री शिवछत्रपती-संकल्पित शिवचरित्राची प्रस्तावना, आराखडा व साधने — त्र्यं. शं. शेजवलकर
5. भारतवर्षीय मध्ययुगीन चरित्रकोश — सि. वि. चित्राव
6. अर्वाचीन महाराष्ट्रेतिहासातील राज्यकारभाराचा अभ्यास (भाग 1 ला) — शं. ना. जोशी
7. मराठ्यांच्या इतिहासाची साधने खंड 1 ते 8 — वि. का. राजवाडे
8. कोकणचा राजकीय इतिहास — डॉ. वि. गो. खोबरेकर
9. मोगल-मराठा संघर्ष (फारसी साधने) — सम्पादक : सेतुमाधवराव पगडी
10. महाराष्ट्राचा पत्ररूप इतिहास — सम्पादक : द. वि. आपटे व प्रा. रा. वि. ओतुरकर
11. कवीन्द्र परमानन्दकृत श्री शिवभारत — सम्पादक : सदाशिव महादेव दिवेकर
12. मल्हार रामराव चिटणीस विरचित श्रीमन्त छत्रपती सम्भाजी महाराज आणि थोरले राजाराम महाराज यांची चरित्रे — सम्पादक : र. वि. हेरवाडकर
13. मराठ्यांच्या इतिहासाची साधने-पोर्तुगीज — सम्पादक : ए. बी. द. ब्रागांस परेरा
    दप्तर-खंड तिसरा आशिया विभाग (1 ते 5) — अनुवादक- स. शं. देसाई

14.	मराठी साम्राज्याची छोटी बखर	र. वि. हेरवाडकर
15.	औरंगजेब-शक्यता आणि शोकांतिका	रवीन्द्र गोडबोले
16.	रायगडची जीवनगाथा	शान्ताराम विष्णू आवळसकर
17.	सम्भाजीकालीन पत्रसारसंग्रह	सम्पादक : शं. ना. जोशी
18.	श्री छत्रपती आणि त्यांची प्रभावळ	सेतुमाधवराव पगडी
19.	ताराबाईकालीन कागदपत्रे खंड 1 ला	सम्पादक : अप्पासाहेब पवार
20.	कृष्णाजी अनन्त सभासद-विरचित शिवछत्रपतींचे चरित्र	सम्पादक : प्रा. दत्ता भगत
21.	मराठे व औरंगजेब	सम्पादक : सेतुमाधवराव पगडी
22.	मराठी रियासत खंड 1	गोविन्द सखाराम सरदेसाई
23.	मराठ्यांचे स्वातंत्र्ययुद्ध (खाफीखानाचा साधनग्रन्थ)	सम्पादक : सेतुमाधवराव पगडी
24.	शिवकालीन महाराष्ट्र	वा. कृ. भावे
25.	पोर्तुगीज-मराठे सम्बन्ध- अर्थात पोर्तुगीजांच्या दप्तरातील मराठ्यांचा इतिहास	डॉ. पांडुरंग सखाराम पिसुर्लेकर
26.	महाराष्ट्राची धारातीर्थे (भाग पहिला, दुसरा)	पं. महादेवशास्त्री जोशी
27.	प्रभूरत्नमाला	सखाराम गणेश मुजुमदार
28.	श्री शिवछत्रपती विजय	सौ. विभा वा. दातार
29.	आज्ञापत्रे आणि राजनीति-रामचन्द्रपन्त अमात्य	सम्पादन : शं. ना. जोशी
30.	श्री मच्छंभुनृपविरचितम बुधभूषणम् (संस्कृत-इंग्लिश)	एच. डी. वेलणकर (सम्पादक)
31.	तंजापुरी श्री बृहदीश्वरालयस्थ शिलालिखित भोसले वंश चरित्र- श्री. वे. निवासाचार्य (द्राविडी भाषान्तर) श्री. एस. गोपालन-	
32.	मराठ्यांच्या इतिहासाचा मागोवा (पूर्वार्ध)	पी. एन. देशमुख
33.	सह्याद्री (महाराष्ट्र स्तोत्र)	सदाशिव आत्माराम जोगळेकर
34.	श्री छत्रपती सम्भाजी महाराज यांचे विचिकित्सक चरित्र	वा. सी. बेंद्रे
35.	अहकामे आलमगिरी-औरंगजेबाची आज्ञापत्रे	सेतुमाधवराव पगडी

36. शिवपुत्र सम्भाजी — डॉ. सौ. कमल गोखले
37. औरंगजेबनामा — अनुवादक : मुंशी देवीप्रसादजी
38. मराठ्यांचे स्वातंत्र्यसमर (पूर्वार्ध) छत्रपती सम्भाजी — प्रा. श. श्री. पुराणिक
39. साद सह्याद्रीची! भटकंती किल्ल्यांची — प्र. के. घाणेकर
40. छत्रपती सम्भाजी स्मारक-ग्रन्थ — डॉ. जयसिंगराव पवार
41. शहेनशहा — ना. सं. इनामदार
42. ज्वलज्ज्वलनतेजस सम्भाजीराजा — डॉ. सदाशिव शिवदे
43. आंगरेकालीन अष्टागार — प्रकाशक : शां. वि. आवळमकर
44. असे होते मोगल — ज स. चौबळ
45. महाराणी येसूबाई — डॉ. सदाशिव शिवदे
46. रायगड किल्ल्याचे वर्णन — गोविन्द बाबाजी जोशी
47. राजेशिर्के घराण्याचा संक्षिप्त इतिहास — राम राजेशिर्के
48. शिवस्नुषा महाराणी येसूबाई — सुशीला खेडकर
49 नियतीच्या विळख्यात औरंगजेब — सेतुमाधवराव पगडी
50. मराठेशाहीतील मनस्विनी — डॉ. सु. र. देशपांडे
51. हुतात्मा सम्भाजी : एक विवाद्य व्यक्तिमत्त्व — शंकरराव सावन्त
52. मराठेशाहीचा मागोवा — डॉ. जयसिंगराव पवार
53. श्रीमान योगी — रणजित देसाई
54. शहजादा दारा शुकोह — सदाशिव आठवले
55. इतिहासाचा मागोवा — सेतुमाधवराव पगडी
56. दर्यादिल — काका विधाते
57. धर्मवीर छत्रपती सम्भाजी महाराज — अरुण जाखडे
58. मराठ्यांच्या इतिहासाची साधने — विश्वनाथ काशिनाथ राजवाडे
59. राजा शिवाजी : वाङ्मयीन मिथ — डॉ. दत्ता पवार
60. तारे जंजिऱ्याचे — गजानन बागडे
61. अर्घ्य — नयनतारा देसाई
62. छत्रपती सम्भाजी — प्र. के. घाणेकर
63. इथे ओशाळला मृत्यु (नाटक) — वसन्त कानेटकर
64. शिवपुत्र — राजकुंवर बोबडे
65. रायगडाला जेव्हा जाग येते (नाटक) — वसन्त कानेटकर
66. राजा शम्भू छत्रपती — विजय देशमुख

67.	छावा (नाटक)	शिवाजी सावन्त
68.	महाड गॅझेट	प्रभाकर रघुनाथ भुस्कुटे
69.	बेबंदशाही (नाटक)	वि. ह. औंधकर
70.	इतिहाससंग्रह	सं. : दत्तात्रय बळवन्त पारसनीस
71.	राजसंन्यास (नाटक)	राम गणेश गडकरी
72.	भोसला दरबार के हिन्दी कवि	डॉ. कृष्ण दिवाकर
73.	छत्रपती शिवाजी महाराज जीवन-रहस्य	नरहर कुरुंदकर
74.	मराठ्यांचा आत्मयज्ञ (नाटक)	नाथमाधव
75.	सती गोदावरी (नाटक)	शंकर बळवन्त चव्हाण
76.	छत्रपती सम्भाजी	लोककवी मनमोहन
77.	शोधनिबन्ध संग्रह	भास्कर धाटावकर
78	कादंबरीमय शिवकाल	गो. नी. दांडेकर
79.	सम्भाजीमहाराजांचे चरित्र	कै. भाऊसाहेब पवार
80.	Military History of India	Sir Jadunath Sarkar
81.	Gazetters of the Bombay Persidency Kolaba District, Ahmadnagar, Poona and Kolhapur Districts.	—
82.	The History of Maratha People	C.A. Kincaid and Parasnıs
83.	History of Aurangzib Vol. I to IV	J.N. Sarkar
84.	The History of India ·	Elliot and Dowson 8 vols.
85.	Shivaji Souvenir	Edited by G.S. Sardesai
86.	Shivaji and his times	Jadunath Sarkar
87.	Mogul India or Storia Do Mogor Niccolao Manucci-Vol. 1,2,3,4	translated by William Irvine
88.	Administrative System of the Marathas	Surendranath sen
89.	House of Shivaji	J.N. Sarkar
90.	Aurangzib-And the Decay of the Mughal Empire	Stanley Lane Poole
91.	The Military System of Marathas	Surendranath Sen
92.	The Grand Rebel	Dennis Kincaid
93.	Anecdotes of Aurangzib and Historical Essays	J.N. Sarkar

No.	Title	Author
94.	Mughal Rule in India	S.M. Edwardes and H.L.O. Garrett
95.	Maratha History Seminar Volume Bombay University	
96.	The Mughal-Maratha Relations	G.T. Kulkarni
97.	History of the Rise of the Mohomedan Power in India-Translated from the original Persian of Mohomad Kasim Ferishta–Vol. I, II, III, IV	John Briggs
98.	Tavernier's Travels in India Ball. Crooke-V.Ball Vol. I, Vol. II	Editor : William Crooke
99	Shivaji's Visit to Aurangzib at Agra (Rajasthani Records)	Jadunath Sarkar and Reghubir sinh
100.	The mysore-Maratha Relation in the 17th Century	B. Muddachari
101.	Mughal Administration	Jadunath Sarkar
102.	Durgadas Rathod	Raghubir Sinh
103.	Gazetters of Tamil Nadu Tiruchirappalli District	Edited by Dr. K.S.K. Velmani
104.	Rajah Serfoji-II (With a Short History of Thanjavur Marathas)	Prince Tulajendra Rajah P. Bhosale
105.	History of Tamil Nadu (A.D. 1336-A.D. 1984)	N. Subrahmanian
106.	Jedhe Chronology (Kareena)	Jadunath Sarkar
107.	Historical Fragments of Mughal Empire	Orme

❑ ❑ ❑

श्री विश्वास पाटील की साहित्य सम्पदा

1. पानीपत — मराठी, राजहंस प्रकाशन, पुणे (24वाँ संस्करण)
   हिन्दी अनुवाद—मो.ग. तपस्वी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली (5वाँ संस्करण)
   गुजराती अनुवाद—डॉ. प्रतिभा दवे, नवभारत साहित्य मन्दिर, अहमदाबाद
   पंजाबी अनुवाद—प्रकाशन विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला
   कन्नड़ अनुवाद—डॉ. चन्द्रकान्त पोकळे, साहित्य अकादमी, बंगलोर
2. पांगिरा — मराठी, राजहंस प्रकाशन (पाँचवाँ संस्करण)
   हिन्दी, प्रकाश भातभेड़कर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
   कन्नड़, डॉ. चन्द्रकान्त पोकळे, साहित्य अकादमी, बंगलोर
3. झाड़ाझड़ती — मराठी, राजहंस प्रकाशन (ग्यारहवाँ संस्करण)
   हिन्दी, डॉ. गजानन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली (तीसरा संस्करण)
   कन्नड़, डॉ. चन्द्रकान्त पोकळे, साहित्य अकादमी, बंगलोर
   अँग्रेजी, डॉ. कीर्ति रामचन्द्र, इंडिया लॉग प्रकाशन, दिल्ली
   उर्दू, साजिद रशीद, साहित्य अकादमी, दिल्ली
   गुजराती, डॉ. प्रतिभा दवे, नवभारत साहित्य मन्दिर, अहमदाबाद
   मलयालम, कालियाथ दामोदरन, साहित्य अकादमी, दिल्ली
   असमिया, भरत ठाकुर
4. महानायक — मराठी, राजहंस प्रकाशन, पुणे (आठवाँ संस्करण)
   हिन्दी, डॉ. रामजी तिवारी और रमेश तिवारी, भारतीय

ज्ञानपीठ, दिल्ली (छठाँ संस्करण)
गुजराती, डॉ. प्रतिभा दवे, आर.आर. सेठ एंड कं. अहमदाबाद। (दूसरा संस्करण)
कन्नड़, डॉ. चन्द्रकान्त पोकळे, साहित्य अकादमी बंगलोर (दूसरा संस्करण)
राजस्थानी, सत्यनारायण स्वामी, साहित्य अकादमी, दिल्ली
मलयालम, प्रा.पी. माधवन पिल्लई, डी.सी. बुक्स, कोट्टायम
अँग्रेजी, डॉ. कीर्ति रामचन्द्र, इंडिया लॉग प्रकाशन, दिल्ली (दूसरा संस्करण)
बंगाली, दीपेन चक्रवर्ती, आनन्द बुक पब्लिशर्स कलकत्ता
उड़िया, न्यू एज पब्लिकेशन, कटक
तमिल, डॉ. एस. सुब्रह्मणम् (प्रकाश्य)

5. रणांगण (नाटक) — मराठी, मजेस्टिक प्रकाशन, मुम्बई 2000

6. चन्द्रमुखी — मराठी, राजहंस प्रकाशन, पुणे (दूसरा संस्करण)
हिन्दी, डॉ. रामजी तिवारी और रमेश तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
मलयालम, कालियाथ दामोदरन, मातृभूमि प्रकाशन, त्रिवेन्द्रम